Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PRKASHAN SAMACHAR 1953 G.K.V.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112148

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष १ नवम्बर, १९५३ अंक ३
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक २॥)
एक प्रति ।)

...मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक...ताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

...बीज' अमृतराय का नया उपन्यास है। ...ायती तरीके पर तो 'बीज' को सामा- ...जनीतिक उपन्यास ही कहना चाहिए ...ात यह है कि 'बीज' आपकी नई ... के संघर्ष का बीज है। हमारी- ... आँखों के सामने ... दुनिया मर रही ... एक नई दुनिया ... रही है। 'बीज' ...ंघर्ष की कहानी ...ह संघर्ष जीवन ...ी क्षेत्रों में हो ...। घर के अन्दर, ... बाहर, राजनीति ...जनीति में, नैतिक ...में। उसी अनेक- ...घर्ष को लेखक ने ... की कोशिश की ...सी अर्थ में 'बीज' ...तिक मूल्यों का, एक नये जीवन का ...स है, जिसमें समूची जिन्दगी को नये युग की आँखों से देखने की कोशिश की गई है। लेखक को इसमें सफलता मिली है या नहीं, या मिली तो कितनी मिली, यह तो आप स्वयं ही उपन्यास पढ़कर निर्णय कर सकेंगे। लेकिन यह कहने में कोई बुराई नहीं है कि 'बीज' पहले उपन्यास है फिर और कुछ। शुष्क सिद्धान्त- चर्चा के बदले रक्त-मांस के पात्र खुद बोलते हैं और सबसे पहले कहानी अपनी बात कहती है। पढ़ कर देखिए, आपको अनूठी तृप्ति मिलेगी। मौनो की छपाई; बहु-रंगा, आकर्षक आवरण। पृष्ठ संख्या पाँच सौ सत्ताईस। मूल्य साढ़े सात रुपये। बुकसेलरों और पुस्तकालयों को उचित कमीशन। पत्र व्यवहार करें।

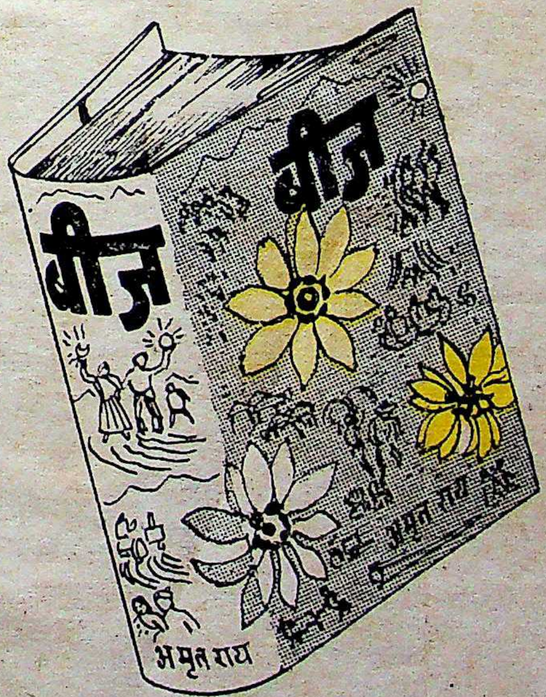

हंस प्रकाशन १३, आौरी रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३ ३/४"×६" या २ ३/४"×८"। चौथाई पृष्ठ: २ ३/४"×३ ३/४"। एक कालम इंच : १"×२ ३/४"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५ १/२"×६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में, ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट सहित, १००)
- वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112148 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :
: अंक ३ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

112148

अक्तूबर मास में इन पंक्तियों के लेखक को पटना, गया, बनारस, इलाहाबाद, कानपुर तथा लखनऊ के हिन्दी के प्रमुख प्रकाशकों से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर मिला। हर्ष का विषय है कि प्रकाशक-संघ की आवश्यकता सभी जागरूक प्रकाशकों को अनुभव हो रही है। आज के यन्त्रयुग में समस्याएँ व्यक्तिगत नहीं रहीं, वर्गीय हो गई हैं। जो समस्या एक स्थान के प्रकाशक के सम्मुख प्रस्तुत है, वही समस्या अन्य सभी स्थानों के प्रकाशकों की है। इन समस्याओं को व्यक्तिगत प्रयास से हल नहीं किया जा सकता; इन्हें वर्ग-स्तर पर सुलझाना आवश्यक है। समय आ गया है कि देश के प्रकाशक एक ऐसे सुव्यवस्थित और सुदृढ़ संघ की स्थापना करें जिसे देश के सभी प्रकाशकों का सक्रिय सहयोग प्राप्त हो।

हमारा विनम्र प्रस्ताव है कि हिन्दी प्रकाशक-संघ के निर्माण के लिए प्रकाशकों का प्रथम सम्मेलन जनवरी अथवा फ़रवरी मास में दिल्ली में बुलाया जाय। दिल्ली देश की राजधानी है और आज हिन्दी के पुस्तक व्यवसाय का महत्त्वपूर्ण केन्द्र भी। इस योजना में उत्तरी भारत के प्रमुख प्रकाशकों की सहमति प्राप्त हो चुकी है।

नवम्बर मास में एक अस्थायी संयोजन-समिति की ओर से यह प्रस्ताव देश-भर के प्रकाशकों में वितरित कर दिया जायगा। जिन समस्याओं पर इस प्रथम सम्मेलन में विशेष रूप से विचार होना चाहिए, संयोजन-समिति अपने निमन्त्रण में उनका उल्लेख कर देगी। प्रकाशकों से निवेदन है कि वे पत्रों द्वारा संक्षेप में उन प्रकाशकीय समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करें जिन पर प्रकाशकों को सोच-विचार के बाद निर्णय कर लेने चाहिएँ। संयोजन-समिति इन सब सुझावों का अपने निमन्त्रण-पत्र में आकलन कर लेगी।

हम प्रयत्नशील हैं कि सम्मेलन में भाग लेने के लिए आने वाले प्रकाशकों को रेलवे की ओर भाड़े में कंसेशन मिल जाय। यद्यपि सम्मेलन की बैठकों में केवल प्रकाशक ही भाग ले सकेंगे, हमारा सुझाव है कि पर्यवेक्षक के रूप में अपना मन्तव्य देने के लिए लेखक और पुस्तक-विक्रेताओं के कुछेक मान्य अग्रणी भी इस सम्मेलन में उपस्थित रहें। इससे प्रकाशकों का बहुत सा कार्य सुगम हो जायगा। प्रकाशक-संघ की सफलता लेखकों और पुस्तक-विक्रेताओं की सद्भावना और सहयोग से ही सम्भव है। यदि संयोजन-समिति ने इस सुझाव को स्वीकार्य ठहराया तो प्रमुख लेखकों और पुस्तक-विक्रेताओं को सम्मेलन में निमन्त्रित किया जायगा।

प्रकाशकीय समस्याओं के कई रूप हैं। कुछ समस्याएँ प्रकाशकों के अपने ही व्यापार से सम्बन्ध रखती हैं। फिर ऐसी समस्याएँ हैं जो लेखकों अथवा पुस्तक विक्रेताओं से सम्बन्धित हैं। कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिनका सम्बन्ध केन्द्र (बुकपोस्ट की बढ़ी हुई दरें) अथवा राज्यों (पुस्तकों पर बिक्री कर) के शासनों से है। कानून से सम्बन्धित समस्याएँ भी हैं, जैसे कि सरकार द्वारा कापीराईट कानून में संशोधन पर विचार, जिसमें प्रकाशकीय प्रतिनिधियों का सहयोग नहीं लिया जा रहा। इस प्रकार इन विविध समस्याओं पर हम सब दो-तीन दिन के सम्मेलन में विचार करेंगे और प्रकाशकों के हितों हम स्वयं ही प्रकाशकीय नीति और कार्य-दिशा का निर्धारण करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की अन्तरात्मा

लेखक

श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(भारत के उपराष्ट्रपति)

हिन्दू-धर्म की अन्तरात्मा, ईश्वर के समक्ष में हिन्दू-मत, इस्लाम तथा भारतीय विचार-धारा, हिन्दू-मत और ईसाई-धर्म, बौद्ध-धर्म तथा भारतीय दर्शन का विवेचन करने वाला अनुपम, दार्शनिक, नया प्रकाशन ।
मूल्य ३।।)

हमारे अन्य प्रकाशन

स्वतन्त्रता और संस्कृति	सर्वपल्ली राधाकृष्णन	३।।)
मनोविज्ञान	मार्क्विस और वुडवर्थ	१२।।)
राजनीति शास्त्र (दो भाग)	एडि आशीर्वादम्	११)
महाभारत (सचित्र)	श्रीशचन्द्र 'देव'	३)

व्यापाराना शर्तें बहुत उदार हैं ।

अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड

लिटरेचर पैलेस, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

इंग्लैण्ड में हर किस्म की दुकानों की कुल संख्या ५,३१, १४३ है, जिनमें से पुस्तकों की दुकानों की संख्या केवल ६,५२८ है। कुछ दूसरे धन्धों की दूकानों की संख्या का व्यौरा इस प्रकार है : ग्रोसरी (बन्द डिब्बों में व विभिन्न रसद बेचने वाली)—१,२६,३४५;अन्य खाने-पीने की चीजें बेचने वाली —१,२६,७०१; मिठाई, तम्बाकू व अखबार आदि बेचने वाली—६६,३१२; कपड़ा बेचने वाली—८६, ०८६; लोहे का सामान व बरतन वगैरह बेचने वाली—३०,२२३; दवाई-औषधि आदि बेचने वाली—१६,७३३।

✧ ✧ ✧

१९५१ के वर्ष में चेकोस्लोवाकिया में पुस्तकों की कुल १० करोड़ ३० लाख प्रतियों का प्रकाशन हुआ, जबकि १९३७ में ३ करोड़ २० लाख पुस्तकें ही छपी थीं। प्रत्येक संस्करण की औसतन १८ हजार प्रतियाँ छपीं जब कि १९३७ में यह औसत केवल २००० थी। १९५२ में इस देश के सार्वजनिक पुस्तकालयों से पढ़ने के लिए १५ लाख सदस्यों ने २ करोड़ पुस्तकें निकलवाईं जब कि १९३७ में ९ लाख ५६ हजार सदस्यों ने केवल ९० लाख पुस्तकें पढ़ने के लिए ली थीं। चेकोस्लोवेकिया की जन संख्या लगभग १ करोड़ है।

✧ ✧ ✧

यहूदियों के नये देश इजरायल में १९५२ में ८४० नई पुस्तकें प्रकाशित की गईं। इस देश की जनसंख्या केवल १५ लाख के लगभग है।

✧ ✧ ✧

१९१७ और १९५२ के अरसे में रूस की लगभग २०० प्रकाशन-संस्थाओं ने १० लाख से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जिनकी १५ अरब से अधिक प्रतियाँ छापी गईं। देश की सभी प्रादेशिक भाषाओं में पुस्तकें छापी जाती हैं। क्रान्ति के बाद रूस की विभिन्न ८१ भाषाओं में पुश्किन की कृतियों के, ७५ भाषाओं में टाल्स्टाय की कृतियों के और ७१ भाषाओं में गोर्की की कृतियों के अनुवाद प्रकाशित किये गए हैं। शेक्सपीयर के नाटकों का रूस की २५ विभिन्न भाषाओं में अनुवाद छापा गया है और इन अनुवादित नाटकों की कुल २३ लाख १० हजार प्रतियाँ छपीं। चार्ल्स डिकन्स के उपन्यासों के १६ भाषाओं में किये गए अनुवादों की प्रकाशित प्रतियों कीसंख्या ४० लाख के लगभग है।

✧ ✧ ✧

३-डी (थ्री डाइमैंश्नल) फिल्म की तरह अमेरिका की एक प्रकाशन-संस्था ने बच्चों के लिए सचित्र ३-डी पुस्तकों का प्रकाशन किया है। रंगदार चश्मे के लगाए बिना चित्र धुँधला व अस्पष्ट दिखाई देता है लेकिन पुस्तक के साथ ही बिकने वाले चश्मे की सहायता से चित्र अपनी पूरी गहराई में नजर आते हैं।

✧ ✧ ✧

सन् १९५२ में अमेरिका में नई-पुरानी कुल ११,८४० पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, जब कि १९५१ में ११,२५५ का हुआ था (अपेक्षातर कहीं छोटे देश इंग्लैण्ड में १९५२ में १८,७४१ छपी थीं, और १९५१ में १८,०६६)। विषयानुसार प्रकाशित पुस्तकों की संख्या इस प्रकार थी :

उपन्यास	२०६७	दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र	३६५
बालकोपयोगी	१२४५	भूगोल, यात्रा-विवरण	३२६
धार्मिक	७६४	कानून	३२०
चरित्र, आत्मकथा	७१९	कला	२९८
विज्ञान	६७८	शिक्षा	२८१
साहित्य, आलोचना	५८३	गृहस्थ-व्यवस्था (होम इकनामिक्स)	२७२
इतिहास	५६६		
समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र	५६६	व्यापार	२४८
मेडिकल, स्वास्थ्य	५०६	खेल, व्यायाम	२०१
कविता, नाटक	४६८	भाषाशास्त्र	१५६
टेकनिकल, सैन्यशिक्षा	४६६	बागबानी	१५३
विविध	४१५	संगीत	८१

इन ११,८४० प्रकाशनों के ६३ प्रतिशत प्रकाशन ३३४ प्रकाशकों ने छापे। २५ प्रमुख प्रकाशकों ने वर्ष के कुल प्रकाशनों की ३६ प्रतिशत पुस्तकें प्रकाशित कीं और इन प्रकाशकों से अपेक्षातर छोटे ३७ प्रकाशकों ने २२ प्रतिशत पुस्तकें प्रकाशित कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित किशोरीदास वाजपेयी की लिखी कुछ मौलिक पुस्तकें

○ ब्रजभाषा का व्याकरण
भाषा-विज्ञान की मौलिक कृति ३)

○ राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत रचना ४)

○ हिन्दी निरुक्त (भाषा-विज्ञान)
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत २।)

○ साहित्य-निर्माण
साहित्य-निर्माण की कला का दिङ्-निर्देश
उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत २।)

○ राष्ट्रभाषा का इतिहास
अपने विषय की एक मात्र कृति ३)

○ अच्छी हिन्दी का नमूना
बाबू रामचन्द्र वर्मा की 'अच्छी हिन्दी' का परिष्कार २॥।)

○ अच्छी हिन्दी
अच्छी टकसाली हिन्दी लिखने की चाह रखने वालों के लिए कल्पलता समझिए २॥)

○ काव्य में रहस्यवाद
'रहस्यवाद' का रहस्य खोला गया है ।=)

○ कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास
एक तटस्थ दृष्टिकोण से 'कांग्रेस' का विश्लेषण १।)

○ श्री सुभाषचन्द्र बोस और मि० ह्यूम की परम्परा
कांग्रेस के अन्तःकलह के बीज की खोज १।)

○ मानव धर्म-मीमांसा
'धर्म' का विश्लेषण, जो अन्यत्र प्राप्त नहीं २।)

○ साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण
वाजपेयी जी की नवीनतम रचना २॥)

डाक-खर्च पृथक्। मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

द्वितीय महायुद्ध के दिनों में इंग्लैण्ड की सरकार ने पुस्तकों पर सेल्स-टैक्स लगाने का प्रस्ताव रखा था लेकिन उस देश का पुस्तक-व्यवसाय इतना सुव्यवस्थित है कि प्रकाशक-संघ की ओर से विरोध के एक पत्र को पाकर ही इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया। हमारे जनतन्त्री देश के कई राज्यों में, जहाँ कि १०० में से १५ व्यक्ति भी साक्षर नहीं हैं, ज्ञान के प्रसार में, पुस्तकों की बिक्री पर कर लगाकर, बाधाएँ डाली जा रही हैं। (बुकपोस्ट की दरें बढ़ाना इस आरोप की सत्यता की ज्वलन्त साक्षी है!)

देश के विभिन्न राज्य इस ओर अलग-अलग नीति बरत रहे हैं। दुख इस बात का है कि केन्द्रीय सरकार पुस्तकों पर सेल्स-टैक्स लगाने के अनौचित्य को विभिन्न राज्यों के मन्त्रि-मण्डलों को समझाने में असमर्थ और असफल रही है।

पुस्तकों पर सेल्सटैक्स सर्वप्रथम मद्रास में लगाया गया। एक रुपये की पुस्तक पर तीन पैसे का सेल्स-टैक्स लगाया जाता है। बंगाल में भी तीन पैसा रुपया टैक्स है। बम्बई में यद्यपि टैक्स की दर एक पैसा रुपया है लेकिन इसे बिक्री के प्रत्येक स्तर पर लगाया जाता है। बिहार में दो पैसा रुपया टैक्स है। इस अक्तूबर मास तक स्कूली किताबों की बिक्री पर भी टैक्स लिया जाता था लेकिन अब प्रस्ताव किया गया है कि उन्हें टैक्स के बोझ से उन्मुक्त कर दिया जाय।

अविभक्त पंजाब में सर सिकन्दर हयात खाँ के प्रधान मन्त्रीत्व के दिनों में किताबों पर सेल्स-टैक्स लगाया गया था लेकिन सार्वजनिक विरोध के कारण एक मास में ही हटा दिया गया। बम्बई-राज्य में पुस्तकों पर बिक्री का घोर विरोध हुआ है लेकिन कांग्रेस के लोकतन्त्री प्रधान-मन्त्री श्री मोरारजी देसाई टस-से-मस नहीं हुए। कहते हैं कि इस टैक्स के विरोध में जब इंग्लैण्ड की प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था 'जार्ज ऐलन एण्ड अन्विन' के अध्यक्ष सर स्टैनले अन्विन अपनी विश्वयात्रा के दिनों में श्री देसाई से बम्बई में मिले तो उन्होंने कहा कि हमारे देश में पढ़े-लिखे लोग ही कितने हैं! यदि उनसे टैक्स वसूल कर लिया जाय तो कोई हानि नहीं है!! अधिकांश जनता तो निरक्षर है ही!!!

प्रसन्नता की बात है कि भारतीय भारत (इण्डियन इण्डिया) के राज्यों में पुस्तकों पर सेल्स-टैक्स नहीं लगाया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में विज्ञान साहित्य के प्रकाशन की उपेक्षा

हिन्दी राष्ट्र-भाषा है, किन्तु....

यशदेव शल्य

आज विज्ञान-साहित्य का हिन्दी में प्रायः अभाव ही है। लेखक ने इस ओर प्रकाशकों का ध्यान आकृष्ट किया है। प्रकाशन का कार्य मुख्यतः एक व्यवसाय ही है; व्यावसायिक पहलू पर विचार करते हुए इस ओर अपना कर्त्तव्य निबाहना प्रकाशक का कर्त्तव्य है।

"हिन्दी एक महान् राष्ट्र की महान् भाषा है, यह इंग्लिश को पूर्णतः स्थानान्तरित कर सकती है।" इसके समर्थन में बहुतों ने बहुत-कुछ कहा और लिखा है, विशेषतः टण्डन जी, राहुल जी तथा सेठ गोविन्ददास जी ने, किन्तु एक दूसरा पक्ष भी है, जिसमें दिग्गज शिक्षा-शास्त्री और वैज्ञानिक हैं। यह पक्ष इसके एकदम विपरीत विचार रखता है। मुझे यहाँ इस विवाद में नहीं पड़ना है, क्योंकि इसके योग्य (competent) मैं नहीं हूँ, किन्तु मुझे यहाँ हिन्दी के लेखकों, प्रकाशकों और पाठकों के सम्बन्ध में अवश्य कुछ कहना है, जिन पर इस भाषा का भविष्य निर्भर है और जो बिना सोचे-समझे इस की वकालत करते हैं। मैं स्वयं भी हिन्दी का एक लेखक हूँ और इस नाते मुझे कुछ कटु अनुभव हुए हैं, इसलिए मैं भी समस्या का एक पहलू प्रस्तुत कर सकता हूँ, यद्यपि इसमें मेरी पूर्णतः स्वार्थ-भावना ही है।

जैसा कि सभी समझदार व्यक्तियों को ज्ञात है, कोई भी भाषा केवल कवियों, कहानीकारों या उनके आलोचकों के बल पर समृद्ध नहीं हो सकती (कोई समाज तो इन लोगों पर निर्भर कर ही नहीं सकता); समृद्ध भाषा को, यदि उसे समृद्ध देश की राष्ट्र-भाषा होना है, तो विज्ञान, दर्शन और गणित इत्यादि के उन्नततम विचारों का भी वाहन होना होगा। हिन्दी में ऐसे शब्द बन सकते हैं या नहीं, यह विवाद इस प्रसंग में इतना उपयोगी नहीं है जिस प्रकार इसे प्रायः प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए हमें समस्या को दूसरे ढंग से समझना होगा। यद्यपि शब्द-निर्माण की बातें करना भी एकदम भोलापन है, क्योंकि अमरीका, इंग्लैंड-जैसे देशों में प्रतिदिन भूत-विज्ञान और जीव-विज्ञान में नवीन खोजें हो रही हैं और प्रतिदिन बीसियों शब्दों का निर्माण होता है। उदाहरणतः नवीन राकेट और चन्द्रयात्रा के लिए गुब्बारों की खोजों तथा परमाणु-सम्बन्धी अनुसंधानों की आज भरमार है; कहाँ से बनाएँगे हमारे हिन्दी के पण्डित इनके लिए शब्दों को ?

लगभग एक वर्ष पूर्व श्री राहुल जी का एक लेख दैनिक हिन्दुस्तान के एक रविवार-अंक में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने लिखा था कि 'संसार के सभी उन्नत देश इंग्लिश भाषा पर निर्भर नहीं करते; जर्मन, रूसी, फ्रैंच आदि सभी विज्ञान, दर्शन इत्यादि में अपनी भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं, तब हम हिन्दी में इन विषयों को क्यों नहीं लिख सकते ?' किन्तु समस्या का एक दूसरा पहलू भी है, जो अधिक महत्त्वपूर्ण है, (जहाँ तक जर्मन, फ्रैंच और रूसी आदि भाषाओं का सम्बन्ध है, इनकी वैज्ञानिक शब्दावली लेटिन से ली जाती है और वह अन्तर्राष्ट्रीय होती है) और वह है कि इन देशों में वैज्ञानिक और दार्शनिक विचारों और सिद्धान्तों का विकास इनकी अपनी भूमि से हुआ था, वे हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान इनके लिए परमुखापेक्षी नहीं थे। इसके विपरीत हम सब 'काम की बातें' इंग्लिश के माध्यम से ही सीखते, (और निकट भविष्य में) सीख सकते हैं। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि यूरोपीय भाषाओं से अपरिचित कोई भी व्यक्ति विज्ञान, गणित और दर्शन में आज मौलिक देन देना तो दूर किसी प्रकार के उच्च स्तर के ज्ञान का अधिकारी भी नहीं हो सकता। इसका कारण स्पष्ट है कि हिन्दी में कोई ऐसी पुस्तक नहीं है; हिन्दी के ९९ प्रतिशत लेखक तो यहाँ तक नहीं जानते कि मनु और शुक्राचार्य का युग बीते कितने दिन हो गए हैं—आज कुछ नवीन, सर्वथा भिन्न और कहीं अधिक उन्नत का आविर्भाव हो चुका है। एक बार मैंने हिन्दी के एक बहुत प्रसिद्ध पत्र में एक निबन्ध **'प्रवृत्ति** (instinct) की **वैज्ञानिक व्याख्या'** प्रकाशनार्थ भेजा। वह निबन्ध लौटाते हुए सम्पादक महोदय ने लिखा कि इसमें मोर्गन, टिन्बर्जन और ल्लायड इत्यादि विदेशी विद्वानों की ही चर्चा है जब कि मनु, याज्ञवल्क्य इत्यादि भारतीय दार्शनिकों ने भी इस सम्बन्ध में बहुत-कुछ लिखा है···उनको प्रश्रय नहीं दिया गया इत्यादि। यह दयनीय स्थिति है!

यह अवस्था केवल 'देश-भक्तों' की ही नहीं है। भारत में सामान्यतः सर्वत्र जीवनी शक्ति का अभाव है। दो-चार ए० एम बोस, नार्लिकर, भासी तथा रमन-जैसे वैज्ञानिकों के अतिरिक्त, जो कि अपनी व्यक्तिगत लगन से ही कार्य कर रहे हैं, इस ओर हमारा कोई झुकाव नहीं है और ये थोड़े से वैज्ञानिक भी इंग्लैंड में ही शिक्षित हुए हैं और अँग्रेजी में ही लिख सकते हैं। यदि वे कहीं हिन्दी में ही लिखने की प्रतिज्ञा कर लेते तो हिन्दी के पाठक और लेखक उन्हें पागल करार दे देते, तथा प्रकाशक और सम्पादक उनकी पाण्डुलिपियों को अपशकुन समझकर दरवाजे से ही लौटा देते। इसमें रत्ती-भर भी अत्युक्ति नहीं है। पीछे मैंने एक पुस्तक 'मनस्तत्व का जीव वैज्ञानिक अध्ययन' लिखी थी। उसकी पांडुलिपि मैंने अपने एक शुभचिन्तक, दर्शन में अच्छे अध्ययनशील तथा हिन्दी के एक अत्यन्त प्रसिद्ध लेखक-मित्र के पास भेजी। उन्होंने जो सलाह मुझे दी वह बहुत समझदारी-पूर्ण और निराशाजनक थी और टण्डन जी तथा गोविन्ददास जी को वह अवश्य सुननी चाहिए। उन्होंने मुझे लिखा—"इस पुस्तक के हिन्दी में कितने पाठक होंगे? ऐसी पुस्तकें अँग्रेजी दाँ ही पढ़ते हैं और उन्हें ऐसी पुस्तकें अँग्रेजी में ही प्राप्त हो जाती हैं।" मुझे उनकी यह सम्मति पढ़कर कुछ अच्छा नहीं लगा, किन्तु उस पर जब दिल्ली के एक प्रकाशक ने भी यही मुहर लगाते हुए मुझे पाण्डुलिपि लौटाई तो स्वभावतः ही मुझे बहुत निराशा और खीझ हुई। प्रकाशक ने मुझे सम्मति देने से पूर्व पूछा—"यह पुस्तक आपने किन पाठकों की दृष्टि में रखकर लिखी है?" और फिर वही अँग्रेजी-दाँ इत्यादि···। आखिर वह पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी को भेज दी गई, जहाँ वह प्रकाशन की प्रतीक्षा न जाने कब तक करेगी। इसके पश्चात् मैंने कुछ और निबन्ध भी मनोविज्ञान और थ्यूरेटिकल फिजिक्स में लिखे जिनमें कुछ सप्रयास सरल लिखे गए थे, किन्तु फिर भी वे केवल इसी भय से किसी पत्र में प्रकाशनार्थ नहीं भेजे गए कि कहीं सम्पादक अधिक सदय होकर दबा ही न लें कि 'लेखक को लेख लौट आने पर दुःख होगा।'

इस प्रकार आज मुख्य समस्या शब्द घड़ना नहीं है बल्कि विज्ञान और वैज्ञानिकदर्शन के प्रति पाठकों और लेखकों में रुचि उत्पन्न करना, अथवा पाठक और लेखक उत्पन्न करना है। यद्यपि यह भी इंग्लिश की सहायता के बिना नहीं हो सकता, किन्तु उस अवस्था में इंग्लिश को स्थानान्तरित करने के स्वप्न हम देख सकते हैं। हिन्दी में साहित्य के अतिरिक्त अन्य किसी विषय का कोई पत्र तक नहीं है। साहित्यिक पत्रों में ही कभी भूलकर कोई निबन्ध इन विषयों पर फटक पड़ता है और वह निराशाजनक रूप से सस्ता और 'जनता के लिए लिखा गया' होता है। इन पत्रों में इससे अधिक के प्रकाशन का कुछ अर्थ भी नहीं है, क्योंकि ऐसे निबन्धों के महत्त्व को इन पत्रों के सम्पादक नहीं समझ सकते और न पाठकों को ही इनमें रुचि हो सकती है। लेखकों का दोष तो हो ही क्या सकता है क्योंकि इन विषयों के लिए न तो कोई पाठक है और न प्रकाशक।

मेरी इच्छा थी कि कोई संस्था 'वैज्ञानिक-दर्शन' नाम से कोई अच्छा पत्र प्रकाशित करने का साहस करती। इसके लिए मैंने एक-दो बड़े प्रकाशकों और लेखकों से बातचीत भी की थी, किन्तु उन्हीं से मुझे ऐसे उत्तर मिले कि आगे किसी से बात करने की हिम्मत नहीं हुई। एकेडेमी और साहित्य-सम्मेलन को लिखने का अनेक बार विचार करके भी मैं उन्हें नहीं लिख सका, क्योंकि जिन लोगों का इन संस्थाओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधिपत्य है उन्हें भक्त-कवियों के आध्यात्मिक चमत्कारों-सम्बन्धी लोकोक्तियों के संग्रहों से ही अवकाश नहीं मिलता, फिर विज्ञान-जैसे अभारतीय और अधार्मिक विषय से वैसे भी हमें बचना ही चाहिए। दर्शन की महान् विरासत हमारे पास है ही, इसलिए कुछ और की क्या आवश्यकता ? किन्तु ऐसी अवस्था में हिन्दी की उन्नति असम्भव है, चाहे फिर वह भारत ही क्या सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया की भी भाषा क्यों न बन जाय और यदि इस प्रकार की निराशाजनक अवस्था में ही इंग्लिश का बहिष्कार कर दिया जाता है, जैसा कि चीन ने कर दिया है और सेठ गोविन्ददास जी बार-बार माँग कर रहे हैं, तो तुलसी, राजेन्द्र प्रसाद जी और टण्डन जी के ही ग्रन्थ पढ़ने को रह जायँगे और हम सैकड़ों से हजारों वर्ष तक दूसरों से पीछे जा पड़ेंगे। यहाँ मेरा उद्देश्य इन महानुभावों का उपहास उड़ाना नहीं है प्रत्युत यह बताना है कि ये ग्रन्थ हमारे बौद्धिक-विकास में सहायक नहीं होते, उसके लिए किसी दूसरी चीज की आवश्यकता है।

कबीर साहब का मुख्य ग्रन्थ

मान्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित

कबीर बीजक

इस पुस्तक के मूल पदों के अन्त में शब्द कोश, संख्यावाची शब्दकोश, योग सम्बन्धी शब्दों की व्याख्या, अन्तर्गत कथाएं, रूपक उल्टवासियाँ तथा प्रतीकात्मक शब्दों का विवेचन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है, जिससे कबीर बीजक तथा कबीर साहब के अन्य पदों के समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

मूल्य ५॥) मात्र

कबीर ग्रन्थ प्रकाशन समिति

हरक, बाराबंकी

श्री महावीर शरण अग्रवाल की प्रसिद्ध रचनाएँ

हिन्दी साहित्य का प्रसिद्ध गद्य-काव्य

पुस्तक में रवीन्द्र बाबू की गीताञ्जलि जैसी उड़ान है।

मूल्य २॥)

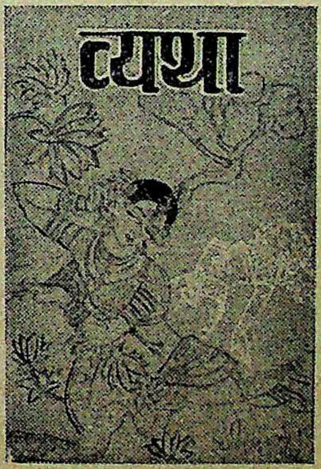

मौलिक उपन्यास

एक नवयुवती की प्रेमपूर्ण कथा जो पाठकों को रोमांचित कर देती है। चित्रपट पर आ रहा है।

मूल्य १।)

बिना ऐनक के नेत्रों को निरोग कीजिए

नेत्र सुधार मूल्य ३)

मूल लेखक : डॉ० आर० एस० अग्रवाल

रघुपति राघव राजा राम — श्री मन्दिर कार्यालय

दीवाली के शुभ अवसर पर पुस्तक विक्रेताओं एवं लाइब्रेरियों को हमारे प्रकाशन की किसी भी पुस्तक की एक प्रति आधे मूल्य पर भेजी जायगी। तीनों के आर्डर भेजने पर पोस्ट माफ।

श्री मन्दिर कार्यालय

१५, दरियागंज, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भवन
के
कुछ चुने हुए प्रकाशन

उपन्यास

सुबह के भूले	इलाचंद जोशी	५)
मुक्ति पथ	इलाचंद जोशी	५।)
केलाबाड़ी	नित्यानन्द वात्सायान	१।)
मूक तपस्वी	कंचनलता	४)
युग संदेश	पृथ्वीनाथ शर्मा	३।।।)

नाटक

वत्सराज	लक्ष्मी नारायण मिश्र	१।।।)
दशाश्वमेध	,,	१।।)
रक्षा-बन्धन	हरिकृष्ण प्रेमी	१)
शिवसाधना	,,	२)
प्रतिशोध	,,	१।।)
आहुति	,,	१)
सेवापथ	सेठ गोविंददास	१)
प्रताप-प्रतिज्ञा	मिलिंद	१)
मुकुट	वात्स्यायन	१।।)
साध	पृथ्वीनाथ शर्मा	।।।)
विक्रमादित्य	उदयशंकर भट्ट	।।।≡)
आठ एकांकी नाटक	रामकुमार वर्मा	२)
सरस एकांकी नाटक	,,	१।।)

साहित्यिक ग्रन्थ

प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन	नन्ददुलारे वाजपेयी	२।)
भारत की भाषाएँ और भाषा सम्बन्धी समस्याएँ	डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या	३)
भारतीय वाङ्मय के अमर-रत्न	जयचन्द विद्यालंकार	१)
हिन्दी कलाकार	डा० इन्द्रनाथ मदान	५।।)
साहित्य मीमांसा	डा० सूर्यकान्त	४)
साहित्य समालोचना	डा० रामकुमार	१।।।)
हिन्दी नाटक-साहित्य का इतिहास	डा० सोमनाथ गुप्त	४)
तुलसी	रामबहोरी शुक्ल	३)
काव्य-प्रदीप	,,	३)
प्रबन्ध प्रभाकर	गुलाब राय	४।)
सामयिक निबन्ध	इन्द्र एम० ए०	४)
हिन्दी साहित्य अनुशीलन	अँचल	३।।)
भूषण ग्रन्थावली		५)

इतिहास ग्रन्थ

इतिहास प्रवेश	जयचन्द विद्यालंकार	८)
लघु इतिहास प्रवेश	,,	५)
हमारा राजस्थान	पृथ्वीसिंह विद्यालंकार	५)

शिल्प माला
(विद्याधरी जौहरी एम० ए०, एल० टी०)
बुनाई सीखने की अनुपम पुस्तक, १३७ चित्रों सहित। चौथा संस्करण। मूल्य ६)

गांधी चरित मानस
(श्री विद्याधर महाजन एम० ए०)
रामचरित मानस की शैली पर गांधी जी का चरित्र, दोहे चौपाइयों में। इस मास का नया प्रकाशन। मूल्य ५।।≡)

हिन्दी भवन, जालन्धर तथा इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

पुस्तकों का विक्रय कैसे हो

प्रतीच्य देशों में पुस्तकों और समाचार-पत्रों की जितनी बिक्री होती है वैसी भारतवर्ष में नहीं होती। सभी दुकानदार यह चाहते हैं कि उनकी पुस्तकों की बिक्री अच्छी हो। जो पुस्तकें शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत होती हैं उन्हीं की बिक्री अच्छी होती है, अन्य की नाम-मात्र। इसके कई कारण हो सकते हैं। पहली बात तो यह है कि यहाँ शिक्षा का अभाव है। देहातों में शिक्षा एकदम नहीं है। जो शिक्षित है, उन्हें पुस्तकें व समाचार-पत्रों को पढ़ने की रुचि ही नहीं है। एक व्यक्ति के हाथ में यदि कोई समाचार-पत्र होता है तो उसको माँगकर पढ़ने वालों की संख्या अधिक होती है। किसी को क्रय करके पुस्तकें पढ़ने की इच्छा ही नहीं है, पर पश्चिमी देशों में लोगों को पढ़ने की इतनी उत्कट अभिलाषा है कि साधारण से भी साधारण पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या लाखों तक पहुँच जाती है। पुस्तकों के प्रकाशक ही नहीं वरन् लेखक तक लक्षाधीश बन जाते हैं, पर भारत के लेखक भूखों मरते हैं। अपने ही देश में बंगला, गुजराती और मराठी आदि प्रान्तीय भाषाओं की पुस्तकों की बिक्री अच्छी है और हिन्दी की अपेक्षा विशेष सौभाग्यशालिनी है।

साधारणतः अच्छे ग्रन्थों का मूल्य बहुत अधिक रख दिया जाता है और उसके प्रचार का प्रयत्न कम किया जाता है। यदि अच्छे ग्रन्थों को सस्ता बेचा जाय तो उनकी अधिक बिक्री होगी। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रायः जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं सब अत्यन्त सस्ती हैं। ऐसा ही प्रयत्न अन्य प्रकाशकों को भी करना चाहिए।

आज अनेक उपयोगी विषयों पर लिखने वाले विद्वान् लेखक हैं और यदि प्रोत्साहन प्राप्त हो तो प्रसिद्ध विद्वान् हिन्दी में लिखने को उद्यत हो सकते हैं। आज हिन्दी में प्रकाशन-व्यवसाय की दशा शोचनीय है। यदि किसी लेखक ने कहानी, उपन्यास, अथवा काम-कला, की पुस्तकों के अतिरिक्त कोई धार्मिक या अन्य कोई साहित्यिक पुस्तक लिख दी तो उसके लिए प्रकाशक मिलना दुष्कर हो जायगा। जब लेखकों को कोई प्रकाशक नहीं मिलता है तो वे स्वयं प्रकाशन का साहस करते हैं। परिणाम यह होता है कि उनकी पुस्तकें पड़ी-पड़ी नष्ट हो जाती हैं। एक बार अपना रुपया और समय नष्ट कर चुकने के पश्चात् कोई भी लेखक हिन्दी में पुस्तक लिखने का साहस न करेगा।

कथा, कहानी, उपन्यास और कामशास्त्र पर लिखने वालों के नाम भी बैंकों में कोई बड़े-बड़े एकाउन्ट नहीं हैं। उन्हें भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, पर उनको प्रकाशक मिल जाते हैं और रायल्टी भी मिल जाती है।

हिन्दी-प्रकाशकों की एक यह विषैली मनोवृत्ति है कि लेखक को क्या यही कम पुरस्कार मिलता है कि उसकी पुस्तक प्रकाशन में आ जाती है। हिन्दी के उपन्यास-सम्राट श्री प्रेमचन्द को जब आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा तो साधारण लेखक को कौन पूछे? कविवर पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' को भी आर्थिक संकट के कारण अपनी पुत्री के रुग्णावस्था में उपचार से वंचित होना पड़ा और अन्त में वह लड़की भी परलोकवासिनी हो गई।

लेखक को भूखा रखकर, निर्धन हिन्दी पाठकों के लिए पुस्तकों का मूल्य अधिक रखकर, अधिक-से-अधिक कटौती देकर बाजार में खपाने का जो प्रयत्न किया जा रहा है इस ओर हिन्दी-प्रेमियों को ध्यान देना चाहिए।

सबसे आवश्यक बात यह है कि हिन्दी-पाठकों की रुचि की ओर ध्यान दिया जाय। हमारे उच्च श्रेणी के प्रकाशकों और लेखकों ने एक यह भी भूल की है कि उन्होंने ग्रामीण पाठक-वर्ग के लिए कोई सरल, मनोरंजक साहित्य प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं समझी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि अश्लील, गन्दे, चित्रपट के गाने, श्री नत्थामल की नौटंकी, साढ़े तीन यार, त्रिया चरित्र, किस्सा तोता मैना, सारंगा सदाबृक्ष प्रभृति पुस्तकों ने ग्रामों में अपना प्रभुत्व जमा रखा है।

यदि विवाह के शुभ अवसर पर वर-वधू को पुस्तकें भेंट देने की प्रथा चल पड़े तो प्रकाशक और लेखक दोनों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानून तबला

ले० : पं० भरतजी व्यास; प्रकाशक : बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलानी, राजस्थान।

संगीत के प्रायः सभी प्रसिद्ध उस्तादों के बोलों का संग्रह, साथ में संगीताचार्यों की जीवनियाँ भी। तबला ज्ञान के लिए अनिवार्य पुस्तक।

हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएं

सं० श्री अखिल विनय और गींडाराम वर्मा 'चंचल'
प्रकाशक : हिन्दी-साहित्य-समिति, बिड़ला कालेज, पिलानी, राजस्थान।

प्रो० सहल द्वारा लिखी हुई ४० पृष्ठों की शोधपूर्ण भूमिका जिसमें हिन्दी पत्रों के पिछले १२५ वर्षों का इतिहास; पत्र-पत्रिकाओं की वैज्ञानिक पद्धति पर की हुई वर्गीकृत सूची। हिन्दी में अपने ढंग की पहली पुस्तक।

पृष्ठ संख्या २००; मूल्य ३ रुपया ८ आना

इंडिया इन कालिदास

श्री भगवतशरण उपाध्याय : किताबिस्तान, इलाहाबाद

बहुत ही व्यापक पद्धति पर कालिदास के ग्रंथों का अध्ययन। भूगोल, शासन-प्रबन्ध, सामाजिक जीवन, ललित कलाएँ, आर्थिक परिस्थितियाँ, शिक्षा और ज्ञान, धर्म और दर्शन, सभी आधारों को लेकर निष्कर्षों की स्थापना। साहित्य के आधार पर इतिहास के पुनर्निर्माण का पहला सफल प्रयास। पुस्तक अंग्रेजी में है।

मूल्य २५ रुपया

मरुभारती

राजस्थान-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की चातुर्मासिक शोध-पत्रिका। राजस्थान से सम्बन्ध रखने वाले महत्त्वपूर्ण विषयों पर अधिकारी विद्वानों द्वारा शोधपूर्ण निबन्ध। प्रथम वर्ष के तीन अंक निकल चुके हैं। वार्षिक मूल्य ६ रुपया।

पिलानी इंडस्ट्रीयल कारपोरेशन लि०

बुक एन्ड स्टेशनरी डिपार्टमेंट, पिलानी।

लाभ हो सकता है।

आलोचक-वर्ग को भी अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिए। आजकल अधिकांश पुस्तकें मित्रता के कारण अच्छी-से-अच्छी सम्मतियाँ पा जाती हैं और परिणाम यह होता है कि हिन्दी पत्रों के पाठकों की दृष्टि में उन सम्मतियों का कोई मूल्य नहीं रहता है और न है। पाठक-वर्ग यह समझते हैं कि ये सम्मतियाँ आशीर्वादात्मक हैं। आलोचना के कार्य में प्रकाशकों को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि एक सत्य-समालोचक अपना उत्तरादायित्व समझता है, पर वह प्रकाशकों के कारण अपने शब्दों का मूल्य भूल जाता है।

एक तो हिन्दी-पुस्तकों के क्रय करने वाले कम हैं और जो हैं भी उन तक नूतन पुस्तकों की सूचना पहुँचाने का कोई साधन नहीं। **प्रकाशन-समाचार** के संचालकों का यह कार्य स्तुत्य है। हम आशा करते हैं कि यह पत्र हिन्दी-पाठकों को सूचना पहुँचाने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होगा।

पण्डित एण्ड कम्पनी, पोस्ट बा० नं० ४६, बड़ौदा से प्रकाशित **पुस्तक-विक्रेता** मासिक पत्रिका का भी इस ओर कार्य अच्छा है।

अन्त में हम प्रकाशक महोदयों से एक निवेदन करना चाहते हैं कि वे अपने धन्धे का संगठन करने के साथ-साथ लेखकों के प्रति अपनी नीति उदार बनावें जिससे हिन्दी में सुन्दर साहित्य का निर्माण हो सके।

हमें आशा है कि प्रकाशक और लेखक-वर्ग इस ओर ध्यान देंगे, तभी राष्ट्रभाषा का कल्याण होगा।

—*आचार्य शिवपूजनसिंह 'कुशवाहा'*
कानपुर।

आत्मशिक्षा

लेखक : स्नातक श्री काशीप्रसाद आयुर्वेदाचार्य

आज जो 'खाओ पीओ और मौज उड़ाओ' की नीति को अपना कर मनुष्य आगे बढ़ रहा है, उसके निराकरण का ध्यान रखते हुए पुस्तिका को उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है।

मूल्य ।।।)

आनन्द प्रकाशन मन्दिर

हरिराम गुप्ता, बुकसेलर, अचल रोड, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा पहला उपन्यास

उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

सफल नाटककार, कहानीकार, कवि व कथाकार श्री अश्क ने आठवीं जमात में उपन्यास लिखने की अपनी पहली कोशिश का यहाँ वर्णन किया है।

अपना पहला उपन्यास मैंने, जहाँ तक मुझे याद है, आठवीं जमात में लिखना शुरू किया। उस जमाने में जासूसी उपन्यास पढ़ने का बड़ा शौक था। जासूस ब्लेक पर खुरशीद साहब के नावेल उर्दू में छपते थे। मेरा पहला उपन्यास कुछ जासूसी ही होने जा रहा था। और तो उसके बारे में कुछ याद नहीं, केवल इतना स्मरण है कि उसमें डाकू के पास एक ऐसी सुई थी जिसे वह बड़ी सफाई से अपने प्रतिद्वन्द्वी की नाड़ी में चुभो देता था और उसे बेहोश करके वह बड़ी सफाई से बहुमूल्य गहने और माणिक-मोती उड़ा ले जाता था। जासूस ने उस डाकू को कैसे पकड़ा, यह सब मुझे याद नहीं। उपन्यास खत्म भी हुआ या नहीं, यह भी कह सकना मुश्किल है; शायद नहीं हुआ। यह जरूर है कि जब वह आधा लिखा गया था तो उसे छपवाने की कोशिश मैंने की थी।

लेकिन इस बीच में जासूसी उपन्यास छोड़कर मैं प्रेमचन्द और सुदर्शन की कहानियाँ पढ़ने लगा और उनके आगे जासूसी उपन्यास फीके और हास्यास्पद लगने लगे। तब मैं स्वयं सामाजिक कहानियाँ लिखने लगा और मेरी पहली कहानी १६२६ में छपी जब मैं नवीं कक्षा में था।

इसके बाद १६३४ तक उपन्यास लिखने की बात मन में नहीं आई। कहानियाँ जरूर लगातार लिखता रहा। १६३४ में अचानक मैंने फिर उपन्यास लिखना शुरू किया। बात यह है कि माँ से सुनी हुई एक कहानी बराबर मेरे मन में कोंचती थी। जाने कौनसी सती थी जो अपने अपाहिज पंगु पति को टोकरे में लिये-लिये फिरती थी। कोई युवती लड़की अपने पंगु पति को टोकरे में लिये-लिये कब तक फिर सकती है, यथार्थ-जीवन को देखते हुए यह विचार बार-बार मेरे मन में आता था। हिन्दू-देवियों ने बहुत ही असम्भव दीखने वाले काम किये हैं, लेकिन वे काम धर्म और भावना की जंजीरों में जकड़कर ही किये जा सकते हैं। आज की पढ़ी-लिखी, स्वतन्त्र और स्वच्छन्द युवती कहाँ तक किसी अपाहिज को टोकरे में उठाये-उठाये फिर सकती है, इस प्रश्न के समाधान के लिए मैंने यह उपन्यास लिखना शुरू किया। लिखते-लिखते और बहुत सी बातें बीच में आ गईं और जब वह खत्म हुआ तो मूलभूत प्रश्न की ओर संकेत न कर एक आनुषंगिक समस्या की ओर संकेत करता हुआ नाम 'सितारों के खेल' मैंने दे दिया।

पैसा परमेश्वर (नाटक)

लेखक—रामनरेश त्रिपाठी

वर्तमान सभ्यता में पैसे का नग्न-नृत्य देखना हो तो इसे जरूर पढ़िये। सजिल्द ३)

हिन्दी-मन्दिर प्रकाशन,

२६, जैन मन्दिर, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षा जगत

नया साहित्य (मासिक : कलकत्ता : अक्तूबर ५३) में डा० कमल कुलश्रेष्ठ की लिखित **हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य १५००-१७५० ई०** (प्रकाशक : चौधरी मानसिंह, अजमेर) की समीक्षा करते हुए कहा गया है : "हिन्दी के इस अंग-विशेष का ऐसा सांगोपांग विवरण अब तक उपलब्ध न था। लेखक ने बड़े परिश्रम और सूझबूझ के साथ इसे तैयार किया है। पुस्तक साहित्य के प्रत्येक अध्येता के लिए आवश्यक एवं उपादेय है।"

✧ ✧ ✧

शूद्रक (ले० श्री चन्द्रबली पांडे : प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास बनारस) की आलोचना करते हुए **राष्ट्र भारती** (मासिक : वर्धा : अक्तूबर ५३) में **अजातशत्रु** लिखते हैं कि श्री पांडे जी ने राजाशूद्रक और कवि शूद्रक के विषय में विवाद-ग्रस्त प्रश्नों का "मंथन करके जो सामग्री जिज्ञासु पाठकों के समक्ष उपस्थित की है, वह उपेक्षणीय नहीं। उससे अन्वेषण का मार्ग प्रशस्त होता है।...संस्कृत-साहित्य के सम्बन्ध में प्रकाश डालने वाले इस प्रकार के ग्रंथ स्वागत करने योग्य हैं।"

✧ ✧ ✧

साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, द्वारा प्रकाशित **सौन्दर्य-शास्त्र** (ले० डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा) की समीक्षा **सरस्वती** (मासिक : इलाहाबाद : अक्तूबर ५३) ने इन शब्दों में की है : "सौन्दर्यानुभूति का महत्त्व किसी भी कलाकार, रसिक अथवा दार्शनिक से छिपा नहीं है। सौन्दर्य उस तृप्ति का नाम है, जिससे जीवन विकासोन्मुख हो उठता है, और हृदय के द्वार उदात्त वेदना और कल्पना का नवीन आलोक पाने के लिए खुल जाते हैं। यद्यपि अंग्रेजी और संस्कृत में सौन्दर्य शास्त्र पर प्रचुर साहित्य उपलब्ध है, किन्तु हिन्दी में एतद्-विषयक अध्ययनपूर्ण सामग्री बहुत कम प्रकाश में आई है। प्रस्तुत पुस्तक लेखक के गहन-गम्भीर अध्ययन का फल है, जिस में सौन्दर्य-शास्त्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विभिन्न कलाओं और हमारे युग की प्रवृत्तियों का अच्छा विश्लेषण किया गया है।"

अब तक आप
प्रकाशन समाचार
की उपादेयता से परिचित हो गए होंगे।
यदि आप अब तक इसका वार्षिक मूल्य २।।) भेजकर स्थायी ग्राहक नहीं बने तो आज ही बन जाइए।

✧ ✧ ✧

बिहार के ख्यातिप्राप्त तरुण कवि और आलोचक श्री हंस-कुमार तिवारी ने **अवन्तिका** (मासिक : पटना : अक्तूबर ५३) में श्री राहुल सांकृत्यायन की नवीन कृति **हिमालय परिचयः गढ़वाल** (प्रकाशक : इलाहाबाद लॉ० जर्नल प्रेस, इलाहाबाद) की समीक्षा की है। श्री तिवारी लिखते हैं : "हिमालय ने बहुत पुराने जमाने से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है और उस मौन की पुकार पर आज तक न जाने कितने लोग उसके विभिन्न आंचलों की दुस्साहसिक यात्राएँ करते रहे हैं—कहीं पुण्य के बहाने और कहीं बाधाओं-विपत्तियों में लिपटे हुए अनन्त आनन्द-रस की प्राप्ति के लिए। तीर्थ और यात्रा के हिसाब से इस इलाके की खास-खास बातों का पूरा विवरण इस पुस्तक में है। केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, मानसरोवर, कैलास आदि प्रसिद्ध स्थानों की सुषमामयी महिमा इसी इलाके की देन है। इन स्थानों में जाने के कितने और कैसे रास्ते हैं, वे क्या हैं, उनकी यात्राओं के सहज-सुगम तौर-तरीके क्या हैं, उनकी इतनी अच्छी रूप-रेखा शायद ही किसी दूसरी पुस्तक में तैयार की गई हो।...इसमें परिचय को इतिहास, भूगोल और सांस्कृतिक तथ्यों से पूर्ण और उपादेय बनाया गया है।...राहुलजी की दृष्टि जैसी चौतरफ़ा होती है, तथ्यान्वेषण की उनकी जो जागरूकता सर्वपरिचित है, उसका परिचय इस किताब में उनके नाम के अनुरूप ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री दुलारेलाल भार्गव

यज्ञदत्त शर्मा

हिन्दी-प्रकाशन-जगत् श्री दुलारेलाल भार्गव के प्रति अपने आभार को नहीं भूल सकता जिन्होंने साहित्यिक कृतियों का १९१७ में नये ढंग से प्रकाशन आरम्भ किया था।

भाई दुलारेलाल जी भार्गव का जन्म लखनऊ (यू० पी०) के एक प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित और धनी परिवार में हुआ। नवलकिशोर-कुल में श्रीमान् प्यारेलाल जी के आप ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका लालन-पालन नवलकिशोर प्रेस के उस उर्दू-वातावरण में हुआ जहाँ से उर्दू तथा फारसी की लगभग ४०००पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उर्दू-वातावरण में पालित यह नवयुवक एक दिन हिन्दी का महान् समर्थक और पक्षपाती बन सकेगा, इस महत्त्वपूर्ण रहस्य का उस समय किसे ज्ञान था!

बाल्यकाल से ही अपनी माता के तुलसीकृत-रामायण पाठ से अनुप्राणित होकर हिन्दी-प्रेम इस बालक की धमनियों में प्रवाहित हो उठा। स्कूल और कालेज में यह अध्यापकों द्वारा प्रतिभा-सम्पन्न समझा जाने वाला विद्यार्थी रहा।

किशोरावस्था में इनका विवाह अजमेर के प्रसिद्ध रईस

श्रीमान् फूलचन्द जी जज की सुपुत्री गंगादेवी से हुआ। इसी काल में लगभग १५ वर्ष की आयु में आपने 'भार्गव पत्रिका' का सम्पादन-भार (१९१३ में) अपने ऊपर लिया। यह पत्रिका उर्दू में निकलती थी जिसे आपने हाथ में लेते ही हिन्दी में कर दिया। दुर्दैववश कुछ समय पश्चात् ही आपकी स्त्री का देहान्त हो गया। 'गंगा-पुस्तक-माला' इसी देवी की अमूल्य स्मृति हिन्दी-साहित्य के देन है जिसके अन्तर्गत श्री दुलारेलाल जी ने हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों की कृतियों का प्रकाशन किया है। इस माला का पहला पुष्प था माला के अध्यक्ष मालाकार दुलारेलाल जी की लिखी हुई 'हृदय तरंग' पुस्तक, जिसका समर्पण वसन्त पंचमी १९१७ में उन्होंने अपनी प्राणाधिक स्वर्गीया सहधर्मिणी को उनकी प्रेरणात्मक शक्ति की याद दिलाते हुए किया है। आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की लिखी हुई 'सुकवि-संकीर्तन', 'अद्भुत आलाप', 'साहित्य सन्दर्भ', पं० श्रीधर पाठक का 'भारतगीत', समालोचक-प्रवर मिश्रबन्धु-लिखित 'हिन्दी-नवरत्न', 'मिश्रबन्धु विनोद', कविवर श्रीयुत जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' लिखित 'बिहारी-रत्नाकर', उपन्यास-सम्राट् श्री-युत प्रेमचन्द जी लिखित 'रंगभूमि', 'कर्बला', 'प्रेम-द्वादशी', 'प्रेमपंचमी', 'प्रेम-प्रसून', समालोचक-प्रवर पं० कृष्णबिहारी जी मिश्र लिखित 'देव और बिहारी', हिन्दी के प्रमुख उपन्यास-कार आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित 'हृदय की परख', 'हृदय की प्यास', लोकप्रिय उपन्यासकार श्री विश्वम्भरनाथ जी कौशिक कृत 'माँ', 'चित्रशाला', श्री वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'गढ़कुण्डार', श्री प्रतापनारायण मिश्र कृत 'विजय', श्री रूप-नारायणपाण्डेय कृत 'पराग', विनोदशंकर व्यासकृत 'तूलिका', गोविन्द वल्लभ पन्त कृत 'वरमाला', भगवानदास केला कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

,भारतीय अर्थशास्त्र', दयाशंकर दुबे कृत 'विदेशी विनिमय', महाकवि निराला कृत 'परिमल' और 'अप्सरा', डा० रामकुमार वर्मा कृत 'पृथ्वीराज की आँखें' इत्यादि लेखकों ने अपनी रचनाएँ दे-देकर इस माला में अपने मनकों को पिरोया है और पिरोने वाला है वही हिन्दी का अनन्य भक्त दुलारेलाल भार्गव।

पं० दुलारेलाल भार्गव को एक कोरे प्रकाशक के रूप में ही देखना उस महान् व्यक्ति के साथ अन्याय करना होगा। मैंने इस व्यक्ति को निकट से देखने का प्रयत्न किया है और उसके व्यक्तिगत या बहिर्जीवन पर समालोचनात्मक दृष्टि डाली है। हिन्दी को यह व्यक्ति एक सम्पादक के रूप में मिला, एक प्रचारक के रूप में मिला और एक विचारक के रूप में मिला। उसके सम्पादक-रूप ने हिन्दी को 'माधुरी' और 'सुधा' प्रदान कीं जिनके सम्पादन से आपने हिन्दी भाषा और हिन्दी लेखकों का बहुत बड़ा हित किया, बहुत बड़ी व्यवस्था दी, भाषा को माँजा और लेखों को सुधारा। आपने अपने प्रकाशन का सम्पादन, यह खूबी है कि, एक ही धारा प्रवाह के अन्तर्गत किया है और भाषा में फैलाव न लाकर बात को संक्षेप में कह देने की प्रवृत्ति को अपनाया है। साथ ही प्रकाशन संस्था द्वारा मूल्यवान कृतियों का प्रकाशन करके पाठकों को प्रदान किया तथा समय की विशृङ्खल प्रतिभा को एकत्रित करके सुरक्षित रखने में सहयोग दिया। प्रचारक के नाते आपने हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है और अपने भरसक प्रयत्नों तथा प्रयासों द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में कटिबद्ध होकर कार्य किया है। विचारक के नाते आपने प्रकाशन-जगत् को अपनी विविध योजनाएँ प्रदान की हैं जिनमें बहुत सी बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। आपकी एक लाख पुस्तकालय बनाने की एक बहुत सुन्दर योजना है।

दुलारेलाल भार्गव के उक्त तीन रूपों के अतिरिक्त उनका एक कवि रूप है जिसके द्वारा आपने हिन्दी-साहित्य को अपनी अमर याती 'दुलारे दोहावली' प्रदान की है। पुस्तक बहुत सरस है जिसकी प्रशंसा डा० गंगानाथ झा, श्री मधुसूदन शर्मा ओझा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, कन्हैयालाल बी पोद्दार, कामता प्रसाद गुरु, श्री गुलाबराय एम० ए०, विश्वम्भरनाथ कौशिक, श्री मैथिली शरण गुप्त, शुकदेव बिहारी मिश्र, ठाकुर श्रीनाथसिंह, डा० रामकुमार वर्मा, गुरुभक्तसिंह इत्यादि विद्वानों ने की है।

हिन्दी में अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन

विश्व परिचय

सामान्य ज्ञान के विषय में ऐसा विस्तृत ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। इसमें संसार-भर का भौगोलिक, ऐतिहासिक, पारिभाषिक और सामाजिक विवरण तथ्यों सहित प्रकट किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान्य ज्ञान का अध्ययन करने पर तो लगता है कि भारत का समूचा मानचित्र चित्रपट की भाँति सामने आ गया है। विद्यार्थियों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं (Competitive Examinations) के छात्रों के लिए परम उपयोगी है। नगरपालिका, ग्राम-पंचायतों तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं वाचनालयों के लिए संग्रहणीय। अनेक विद्वानों द्वारा प्रशंसित, सजिल्द ग्रंथ का मूल्य ६) मात्र है।

मेहरचन्द मुन्शीराम

संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य की पुस्तकों के प्रकाशक तथा विक्रेता

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से दी जा रही हैं। कोई पुस्तकालय यदि इस सूची से छूट जाए तो सूचना मिलने पर उनका नाम अगले अंकों में प्रकाशित कर दिया जायगा।

—अन्नामलाई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पो० आ० अन्नामलाई नगर (मद्रास)।
—अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (लिटन लाइब्रेरी), अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।
—आंध्र यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, वाल्टेयर (मद्रास)।
—आगरा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, आगरा (उ० प्रदेश)।
—आल इंडिया रेडियो लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
„ „ इलाहाबाद।
„ „ साल्टवाडा, बड़ौदा।
„ „ क्वीन्स रोड, बम्बई।
„ „ कलकत्ता।
„ „ मधुपुर होम, कटक।
„ „ लखनऊ।
„ „ एगमोर, मद्रास।
„ „ नागपुर।
—आसफिया स्टेट लाइब्रेरी, हैदराबाद।
—इलाहाबाद यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, इलाहाबाद (उ० प्र०)
—उत्कल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, कटक (उड़ीसा)।
—उत्तर प्रदेश विधान पुस्तकालय, विधान भवन, लखनऊ।
—उस्मानिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, हैदराबाद।
—एस० एन० डी० टी० विमंज यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बम्बई
—कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, कलकत्ता (प० बंगाल)।
—कर्नाटक यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, धारवाड़ (बम्बई)।
—गवर्नमैंट सैंट्रल प्राविंशियल लाइब्रेरी, ५३, महात्मा-गांधी मार्ग, इलाहाबाद (उ० प्र०)।
—गौहाटी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, गौहाटी (आसाम)।
—जम्मू एण्ड काश्मीर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, श्रीनगर।
—ट्रावन्कोर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, त्रिवेंद्रम (ट्रावन्कोर)।
—दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी बिल्डिंग्स, दिल्ली—८।
—नागपुर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, नागपुर (मध्य प्रदेश)।
—नेशनल लाइब्रेरी, बैल्वेडेयर, अलीपुर, कलकत्ता।
—पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, शिमला (पंजाब)।
—पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पटना ([illegible])।
—पब्लिकेशन डिवियन लाइब्रेरी, मिनिस्ट्री ऑफ इन्फर्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, ओल्ड सैक्रेटेरियट, दिल्ली।
—पूना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पूना (बम्बई)।

हमारी नई पुस्तकें

मायाजाल	(उपन्यास)	श्री गुरुदत्त	५)
सूर मीमांसा		डा० ब्रजेश्वर वर्मा	५)
संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण		डा० व्यास	२॥)
छिक छिक	(बालोपयोगी)		१॥)
अमर संदेश	(„)		१।)

हमारा नया उपन्यास
राग और त्याग
छप रहा है।

ओरिएण्टल बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो लाइब्रेरी, गवर्नमैंट आफ इंडिया, 'एन' ब्लाक, हटमैंट्स, रायसीना रोड, नई दिल्ली।

—बड़ौदा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, ओल्ड रेज़िडैंसी आफिस बिल्डिंग, सैंट्रल ब्लॉक, बड़ौदा—२।

—बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बनारस (उ० प्र०)।

—बम्बई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मेयो रोड, फ़ोर्ट, बम्बई–१

—बिहार यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पटना।

—मद्रास यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मद्रास।

—मैसूर एजूकेशनल लाइब्रेरी, आफिस आफ दि डाइरैक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शंज मैसूर, बंगलोर।

—मैसूर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मैसूर।

—राजपूताना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, जयपुर (राजस्थान)।

—रुड़की यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, रुड़की (उ० प्रदेश)।

—लखनऊ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (टैगोर लाइब्रेरी), लखनऊ (उ० प्र०)।

—लाइब्रेरी आफ़ दि आफ़िस आफ़ दि डिप्टी इंस्पैक्टर आफ स्कूल, गोलपाड़ा (आसाम)।

—लाइब्रेरी आफ दि प्राविंशियल एडवाईजरी बोर्ड आफ़ एजूकेशन, आफिस आफ दि डाइरैक्टर आफ़ पब्लिक इंस्ट्रक्शंज पंजाब, शिमला।

—लाइब्रेरी आफ दि स्टेशन डाइरैक्टर, आल इंडिया रेडियो, नई दिल्ली।

—विश्वभारती, शान्तिनिकेतन, बोलपुर (प० बंगाल)।

—सागर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, सागर (मध्य-प्रदेश)।

—सैक्रेटेरियट लाइब्रेरी, रीवा (विंध्य प्रदेश)।

—सैक्रेटेरियट लाइब्रेरी, होम डिपार्टमैंट आफ वैस्ट बंगाल, कलकत्ता।

—सैंट्रल एजूकेशन लाइब्रेरी, मिनिस्ट्री आफ एजूकेशन, गवर्नमैंट आफ इंडिया, नई दिल्ली।

कालेज लाइब्रेरियाँ

अजमेर

—गवर्नमैंट कालेज लाइब्रेरी, अजमेर।

आसाम

—आसाम एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, जोरहाट।

हमारे हिन्दी प्रकाशन

सरल राज्य विज्ञान — मूल्य

- **१. मूल सिद्धान्त** ४॥)
- **२. विश्व के प्रमुख संविधान** ४॥)
- **३. भारतीय वैज्ञानिक प्रगति और राष्ट्रीय आन्दोलन**—ले० प्रो० बम्बवाल ४)

नवीन त्रिकोणमिति—कैलाश सिन्हा, स्वर्णकान्ता सचदेव ४)

प्रायौगिक भौतिक विज्ञान—ले० गर्ग तथा गर्ग ४॥)

कार्बनिक रसायन शास्त्र—ले० बहल तथा रोहतगी ६)

द्रव्य विनिमय तथा बैंकिंग का परिचय—ले० राजनारायण माथुर ८)

भारतीय मुद्रा का इतिहास—ले० गिरिराज प्रसाद गुप्त ३।।।)

भारत का आर्थिक विकास—ले० दयाशंकर नाग ५।)

भारतीय अर्थशास्त्र—ले० केवलकृष्ण ड्यू वेट १५)

अकार्बनिक रसायन शास्त्र—तुली तथा बहल ७॥)

अर्थशास्त्र के आधुनिक सिद्धान्त—ले० ड्यू वेट तथा गुरुचरण सिंह १२॥)

होटल डी ताज—मन्मथनाथ गुप्त (रोचक उपन्यास) २)

माध्यमिक भौतिक विज्ञान २ भाग—बासु तथा चटर्जी १५)

अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त—केवलकृष्ण, ड्यू वेट ७।)

दुर्गम-पथ—संतराम विचित्र (देश-विदेश सम्बन्धी साहस और खोज की कहानियाँ) २)

भारतीय-संविधान और हमारा राज—संतराम विचित्र ॥)

आज का चीन—श्री वांचू ५)

मजदूरों की समस्याएँ—श्री सत्य प्रकाश 'मिलिन्द' आधुनिक श्रम विषयक समस्याओं का परिचय और उपाय २)

आर्थिक व वाणिज्य भूगोल (प्र० भाग)—ले० श्री ए० दास गुप्ता ७॥)

भारत तथा पाकिस्तान का भूगोल—श्री ए० दास गुप्ता ५॥)

भारतीय सभ्यता तथा विज्ञान कला—हंसराज अग्रवाल २॥)

आत्म-निर्माण—स्वर्गीय ला० हरदयाल के **Hints for Self Culture** का हिन्दी अनुवाद ४)

हमारा दैनिक जीवन—अर्थशास्त्र की प्रारम्भिक पुस्तक—ले० चमनलाल कपूर १॥)

आलोचना की ओर—डा० ओम प्रकाश १।।।)

प्रीमियर पब्लिशिंग कं०, फव्वारा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—आसाम मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, डिबरूगढ़।
—आसाम वैटरनरी कालेज लाइब्रेरी, गौहाटी।
—एम० सी० कालेज लाइब्रेरी, बारपेटा।
—करीमगंज कालेज लाइब्रेरी, करीमगंज।
—काटन कालेज लाइब्रेरी, गौहाटी।
—गुरुचरन कालेज लाइब्रेरी, सिल्चर।
—जगन्नाथ बुरूहा कालेज लाइब्रेरी, जोरहाट।
—डिबरूगढ़ एच० एस० के० कालेज, लाइब्रेरी, डिबरूगढ़।
—दरंग कालेज लाइब्रेरी, तेजपुर।
—नालबरी कालेज लाइब्रेरी, नालबरी।
—नौगांग कालेज लाइब्रेरी, नौगांग।
—बी० एन० कालेज लाइब्रेरी, धुबरी।
—बी० बुरूहा कालेज लाइब्रेरी, गौहाटी।
—यूनिवर्सिटी लॉ कालेज लाइब्रेरी, गौहाटी।
—लेडी कीने गर्ल्स कालेज लाइब्रेरी, शिलाँग।
—सैंट एन्थोनीज़ कालेज लाइब्रेरी, शिलाँग।
—सैंट एडमण्ड्स कालेज लाइब्रेरी, शिलाँग।
—सैंट मेरीज़ कालेज लाइब्रेरी, शिलाँग।
—हांडीक गर्ल्स कालेज लाइब्रेरी, गौहाटी।

उड़ीसा

—काल्लीकोट कालेज लाइब्रेरी, बरहामपुर (गंजम)
—क्राईस्ट कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—गंगाधर मेहर कालेज लाइब्रेरी, सम्बलपुर।
—नरसिंह चौधरी कालज लाइब्रेरी, जाजपुर (कटक)।
—फकीर मोहन कालेज लाइब्रेरी, बलासोर।
—भ्रादक कालेज लाइब्रेरी, भ्रादक, (बलासोर)
—महाराजा पूर्णचन्द कालेज लाइब्रेरी, बरीपदा।
—रवेन्शा कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—राजेन्द्र कालेज लाइब्रेरी, बोलंगीर।
—राधानाथ ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—विक्रमदेव कालेज लाइब्रेरी, जेपुर (कोरापट)।
—श्री एस० सी० बी० मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—श्री कृष्णचन्द्र गजपति कालेज लाइब्रेरी, परलाकीमेडी, (गंजम)।
—श्री रामचन्द्र भंज मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, कटक।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

देहली के प्रमुख प्रकाशक

: : :

राजकमल प्रकाशन

आत्माराम एन्ड सन्स

राजपाल एन्ड सन्स

: : :

के हिन्दी प्रकाशन

क

कमला

लो

टाइप फाउन्ड्री

द्वारा निर्मित टाइपों में छपते हैं।

हिन्दी मराठी गुरुमुखी अंग्रेजी १० से ७२ प्वाइन्ट तक के कमला टाइपों का बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा नवीन आलोचना साहित्य

व्यक्ति और वाङ्मय : प्रभाकर माचवे

प्रभाकर माचवे अनेक भारतीय भाषाओं के अध्ययनशील विज्ञ हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्होंने प्राय: सभी प्रादेशिक भाषाओं के कवियों की रचनाओं एवं उनके व्यक्तित्व का सूक्ष्म पर्यवेक्षण किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में आदि कवि व्यास से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न भाषाओं के कवियों की रचनाओं का काल एवं स्थान की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। मू० ७)

समीक्षा की समीक्षा : प्रभाकर माचवे

प्रस्तुत समीक्षा-ग्रंथ अपने ही ढंग का नवीनतम प्रकाशन है। इसमें प्रमुख आलोचना-ग्रंथों तथा आलोचकों की सूक्ष्म समीक्षा की गई है। माचवे जी का प्रस्तुत प्रयास नवीन दृष्टिकोण उपस्थित करता है। मू० ५)

विवेचन : कन्हैयालाल सहल

प्रस्तुत समीक्षा-ग्रंथ उच्च-शिक्षार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। विद्वान लेखक ने इसमें हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्यकारों की रचनाओं पर समीक्षात्मक निबन्ध प्रस्तुत किये हैं। मू० ३)

नवीनतम प्रकाशन

कोठी की बात (उपन्यास)

ले० दयाशंकर मिश्र

मू० ३)

साहनी प्रकाशन

५७, एस्प्लानेड रोड, दिल्ली

—शैलबाला विमन्स कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—सदाशिव संस्कृत कालेज लाइब्रेरी, पुरी।
—स्टूअर्ट कालेज लाइब्रेरी, कटक।
—सामन्तचन्द्र शेखर कालेज लाइब्रेरी, पुरी।

उत्तर प्रदेश

—आगरा कालेज लाइब्रेरी, आगरा।
—इंजीनियरिंग कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—इंजीनियरिंग कालेज लाइब्रेरी, दयालबाग, आगरा।
—ईवनिंग क्रिश्चियन कालेज लाइब्रेरी, इलाहाबाद।
—ईसाबेला थॉबार्न कालेज लाइब्रेरी, लखनऊ।
—उदय प्रताप कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—ए० के० कालेज लाइब्रेरी, शिकोहाबाद।
—एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, इलाहाबाद।
—एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, कानपुर।
—एन० आर० ई० सी० कालेज लाइब्रेरी, खुर्जा।
—एम० पी० कालेज लाइब्रेरी, गोरखपुर।
—एम० एम० एच० वी० कालेज लाइब्रेरी, गाजियाबाद।
—एस० एम० कालेज लाइब्रेरी, चन्दौसी।
—एस० एन० मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, आगरा।
—करामत हुसैन गर्ल्स कालेज लाइब्रेरी, लखनऊ।
—कान्यकुब्ज कालेज लाइब्रेरी, लखनऊ।
—कारोनेशन हिन्दू कालेज लाइब्रेरी, मुरादाबाद।
—कालेज आफ आयुर्वैदिक लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ इंडोलोजी लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ एग्रीकल्चरल लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ ओरियंटल लर्निंग एण्ड थियालोजी लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ टैकनालोजी लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ माईनिंग एण्ड मैटलर्जी लाइब्रेरी, बनारस।
—कालेज आफ म्यूजिक एण्ड फाईन आर्ट्स लाइब्रेरी, बनारस।
—क्राईस्ट चर्च कालेज लाइब्रेरी, हिमाल, कानपुर।
—किशोरी रमन कालेज लाइब्रेरी, मथुरा।
—के० ई० एम० यू० जाट कालेज लाइब्रेरी, लखावती (बुलन्दशहर)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—के० एन० कालेज लाइब्रेरी, ज्ञानपुर (बनारस)।
—के० जी० के० कालेज लाइब्रेरी, मुरादाबाद।
—गांधी फैजग्राम कालेज लाइब्रेरी (फ़जलुर्रहमानखाँ लाइब्रेरी), शाहजहाँपुर।
—गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज लाइब्रेरी, मुरादाबाद।
—चौधरी महादेवप्रसाद डिग्री कालेज लाइब्रेरी, इलाहाबाद।
—जाट वैदिक कालेज लाइब्रेरी, बड़ौत (मेरठ)।
—टी० डी० कालेज लाइब्रेरी, जौनपुर।
—टीचर्स ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—डी० ए० वी० कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—डी० ए० वी० कालेज लाइब्रेरी, देहरादून।
—डी० ए० वी० कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फरनगर।
—डी० ए० वी० कालेज लाइब्रेरी, कानपुर।
—डी० एस० कालेज लाइब्रेरी, अलीगढ़।
—दयानन्द वैदिक कालेज लाइब्रेरी, उरई।
—दिगम्बर जैन कालेज लाइब्रेरी, बड़ौत (मेरठ)।
—देवीलाल श[illegible]ह गंगोला डिग्री कालेज लाइब्रेरी, अलमोड़ा
—धर्म समाज [illegible]ालेज लाइब्रेरी, अलीगढ़।
—नानकचन्द ए[illegible]लो संस्कृत कालेज लाइब्रेरी, मेरठ।
—फैज़ाबाद डिग्र[illegible] कालेज लाइब्रेरी, फैज़ाबाद।
—बराहसेनी काले[illegible] लाइब्रेरी, अलीगढ़।
—बरेली कालेज ल[illegible]इब्रेरी, बरेली।
—बसन्त कालेज ला[illegible]ब्रेरी, राजघाट, बनारस।
—बलवन्त राजपूत क[illegible]ेज लाइब्रेरी, आगरा।
—महिला विद्यालय ला[illegible]ब्रेरी, लखनऊ।
—मेरठ कालेज लाइब्रेरी, [illegible]ेरठ।
—मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, [illegible]ेरठ।
—यू० पी० कालेज आफ वैटीर[illegible]ी साइंस एण्ड एनीमल हस्बैंड्री लाइब्रेरी, मथुरा।
—युवराज दत्त कालेज लाइब्रेरी, ल[illegible]मपुर खेरी।
—रघुनाथ कालेज फ़ार विमन लाइब्रे[illegible] मेरठ।
—रज़ा कालेज लाइब्रेरी, रामपुर।

फोन—८५६ **हमारे नवीनतम प्रकाशन** तार—'सेवक'

मीराँ एक अध्ययन	श्री 'शबनम'	३॥)
मीराँ-बृहद्-पद संग्रह	,,	६)
नवनिबन्ध	श्री परशुराम चतुर्वेदी	३)
पैरों में पंख बाँधकर	श्री बेनीपुरी	४॥)
फुट-पाथ	श्री राधाकृष्ण	३)
सजला (२ खण्ड)	,,	४)
गांधी जी का भूत	श्री बेढब बनारसी	१॥)
महत्व के गुमनाम पत्र	,,	१॥)
अवशेष	श्री सुधाकर पाण्डेय	२)
नागरिक और नागरिकता	श्री शुभदा तेलंग	४॥)
पार्लमेण्टरी सरकार	श्री विश्वनाथ राय	४)
प्राथमिक जीव विज्ञान	श्री बक्शी ए. पी. सिन्हा, श्री के. पी. वर्मा	३)

बाल मनोवैज्ञानिक सिरीज, पशु से मानव, अंगूर का गुच्छा, मानव की कहानी, समाज की कहानी

सम्पादक : श्री उमाशंकर श्रीवास्तव, एम. ए. (एडिन) उदयन। प्रति पुस्तक का मूल्य १) मात्र

लोक सेवक प्रकाशन, बुलानाला, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज कर्मचारियों और सर्व-साधारण में
राज भाषा के बोध और प्रयोग हेतु

राज-काज शब्द-कोश

सर्वोपयोगी सर्वोत्तम साधन

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, तीनों भाषाओं के परस्पर पारिभाषिक शब्द एवं वाक्यों में पूरित एक साथ तीन ही भाषाओं की यह अनूठी

डिक्शनरी ऑफ गवर्नमेन्ट टर्मेनोलॉजी

DICTIONARY OF GOVT. TERMINOLOGY

जिसमें राजकीय विभागों, न्यायालयों और नित्य काम आने वाले विविध विषयों के पर्यायवाची शब्दों का समावेश है। राजभृत्य नामावली सहित।

४ भाषाओं का यह बृहदाकार सजिल्द 'कोष' केवल १५) में

रा ज-भा षा स द न

मण्डी (हिमाचल प्रदेश)

—राधास्वामी एजूकेशनल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, आगरा।
—लखनऊ क्रिश्चियन कालेज लाइब्रेरी, लखनऊ।
—लॉ कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—वसन्त कालेज फार विमन लाइब्रेरी, बनारस।
—विमन्स कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—विमन्स ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, दयालबाग, आगरा।
—वी० एस० एस० डी० कालेज लाइब्रेरी, कानपुर।
—शिबली नेशनल कालेज लाइब्रेरी, आजमगढ़।
—शिया कालेज लाइब्रेरी, सीतापुर रोड, लखनऊ।
—श्री सरस्वती विद्यालय डिग्री कालेज, हापुड़।
—सतीशचन्द्र कालेज लाइब्रेरी, बलिया।
—सनातन धर्म कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फर नगर।
—साइंस कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—सुभाष नेशनल कालेज लाइब्रेरी, उन्नाव।
—सैंट एंड्र्यूज कालेज लाइब्रेरी, आजमगढ़।
—सैंट जॉन्स कालेज लाइब्रेरी, आगरा।
—सैंट्रल हिन्दू कालेज लाइब्रेरी, बनारस।
—स्टेट गवर्नमेंट डिग्री कालेज लाइब्रेरी, नैनीताल।
—हिन्दू डिग्री कालेज लाइब्रेरी, मुरादाबाद।

कुर्ग

—गवर्नमेंट कालेज लाइब्रेरी, मरकरा।

क्या आपने

प्रकाशन समचार

का वार्षिक मूल्य २॥) मात्र भेज दिया? यदि न भेजा हो तो आज ही मनीआर्डर द्वारा भेज दें। वी. पी. पी. भेजने का नियम नहीं है।

प्रकाशन समाचार, राजकमल प्रकाशन, १ फैज़ बाज़ार दिल्ली।

साहित्यसम्मेलन की सं॰ २०१० की परीक्षाओं में सफलता के लिये

विशेष जानकारी के लिये

सूचीपत्र बिना मूल्य मंगाईये

प्राप्तिस्थान **रीगल बुक डिपो** नई सड़क देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

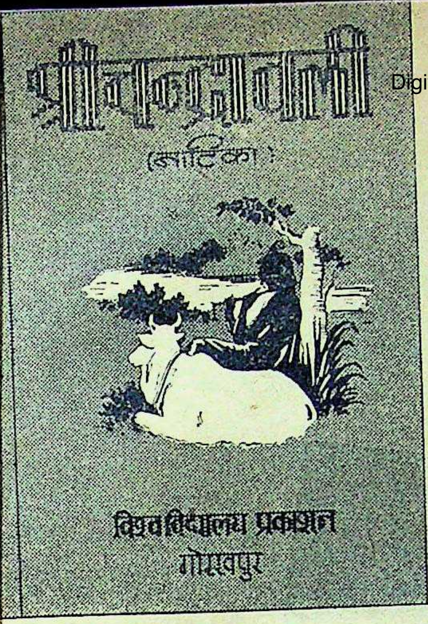

हमारे साहित्यिक प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतेन्दु के दो नाटक

श्रीचन्द्रावली
और
भारत दुर्दशा

सं० डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

हिन्दी विभाग
प्रयाग विश्वविद्यालय

मूल्य
प्रत्येक—डेढ़ रुपया

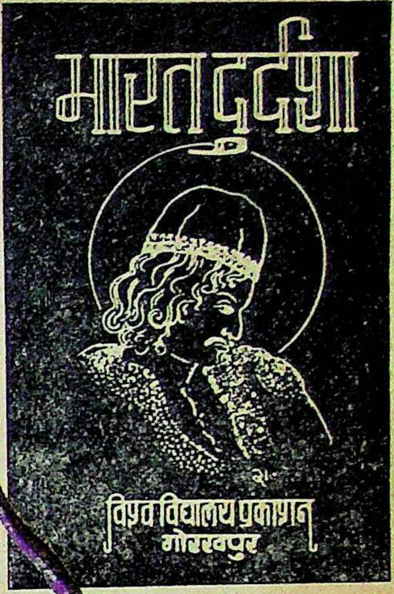

राठौड़राज प्रिथीराज कृत

वेलिक्रिसन रुकमणी री

० प्रो० आनन्द प्रकाश दीक्षित एम० ए०

मूल्य—पाँच रुपया

"विद्वानों तथा विद्यार्थियों के लिए
स्तुत वेलि का यह संस्करण लेखक
 गहन अध्ययन एवंपांडित्य का परि-
ायक है।"

—डा०रामकुमार वर्मा

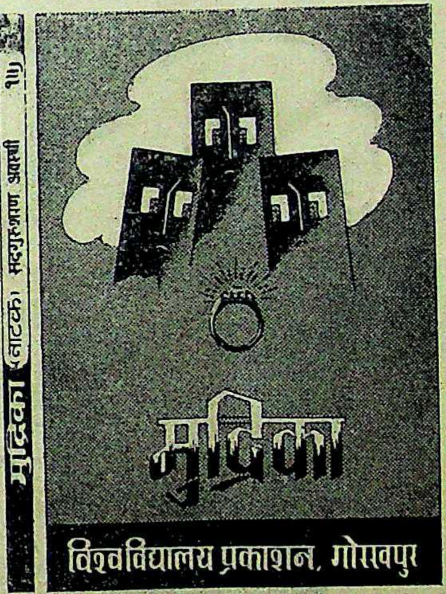

रीतिका[illegible]ीन हिन्दी कविता और सेनापति

ले० प्रो० रामचन्[illegible] तिवारी एम० ए०

मूल्य —[illegible] रुपया

"लेखक ने रीतिका[illegible] की परम्परा तथा तत्कालीन प्रवृ[illegible]यों की पृष्ठ-भूमि में सेनापति का संगठित अध्ययन प्रस्तुत किया है जो हिन्दी साहित्यिकों एवं विद्यार्थियों के लिए बड़ा ही उपयोगी सिद्ध होगा।" —डा० भगीरथ मिश्र

मुद्रिका

सद्गुरुशरण अवस्थी

मूल्य—डेढ़ रुपया

•

अन्य प्रकाशन

प्रारम्भिक-रचनानुवाद-कौमुदी
मूल्य—एक रुपया

रचनानुवाद-कौमुदी
मूल्य—तीन रुपया

ले० डा० कपिलदेव द्विवेदी

इन पुस्तकों द्वारा संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का ज्ञान ६ मास में होगा।

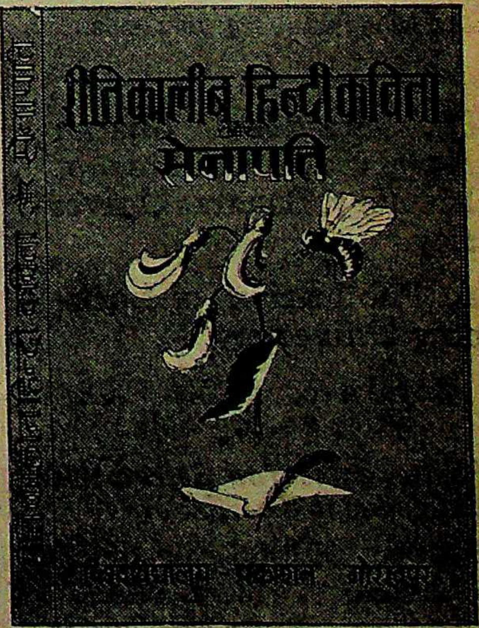

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

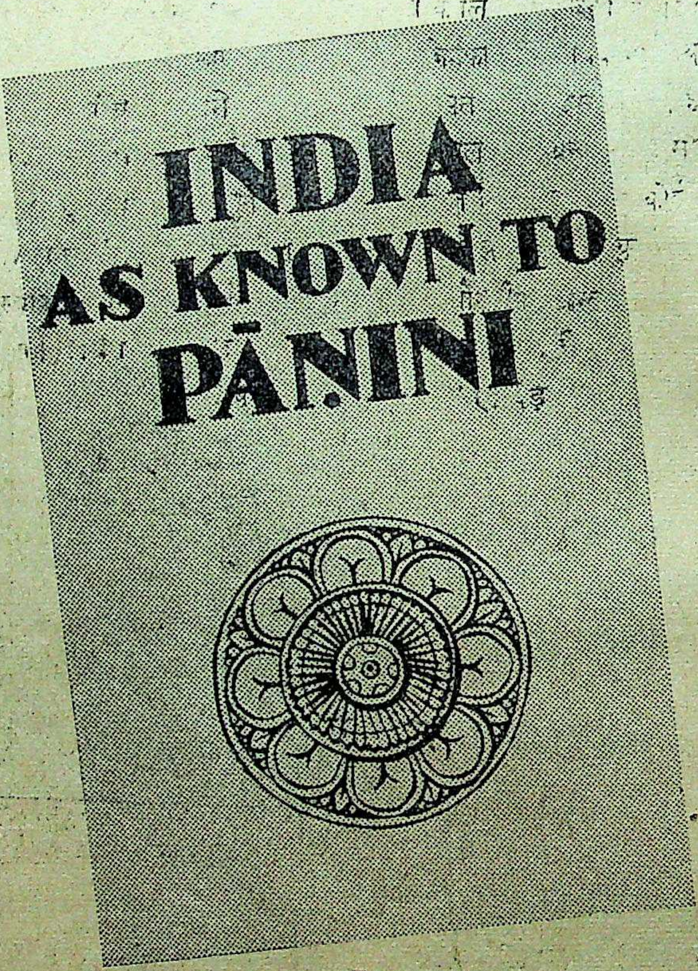

IMPORTANT CONTRIBUTION TO INDOLOGICAL LITERATURE

INDIA AS KNOWN TO PANINI

Ancient and dull Sutras of Panini's Ashtadhyayi have been made to yield enormous data of cultural and historical significance.

by

Dr. Vasudev Sharan Aggarwal, College of Indology, Banaras University.

A Publication of Lucknow University.

Royal 4 to, pp. 550/-+XX
Price Rs. 50/- only.

Please write for descriptive catalogue to distributors :

RAJKAMAL PUBLICATIONS LIMITED

1 Faiz Bazar Delhi — **Himalaya House** Hornby Road, Bombay

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के एक बहुत बड़े प्रकाशक का सम्बोधन

लेखकों के प्रति

सर स्टैनले अन्विन इंग्लैण्ड की प्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था "जार्ज एलन एण्ड अन्विनलि०" के अध्यक्ष हैं। यह लेख "ट्रुथ एबौट पब्लिशिंग" नामक [illegible]काशन- व्यवसाय-सम्बन्धी उनकी अद्वितीय पुस्तक की भूमिका का अनुवाद है, जो शी[illegible] ही हिन्दी में प्रकाशित होगी।

प्रकाशक न तो सब-के-सब निःस्वार्थ परोपकारी होते हैं और न पक्के बदमाश! इसी प्रकार वे बहुधा न तो करोड़पति सेठ होते हैं न कंगाल भिखारी ही। उनकी दशा को समझने के लिए आप यह समझ लीजिए कि वे साधारण मनुष्यों की ही तरह होते हैं जो एक असाधारण रूप से कठिन व्यापार में अपनी जीविका कमाने का प्रयत्न करते हैं। प्रकाशक बन जाना तो आसान है, परन्तु बहुत समय तक प्रकाशक बने रहना बहुत कठिन है; दूसरे उद्योगों और पेशों की अपेक्षा इस व्यापार में शिशुकाल में मृत्यु कहीं ज़्यादा होती है।

याद रखिये कि प्रकाशक को जब तक आपकी रचना से दिलचस्पी नहीं होगी तब तक उसे आपमें भी कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती—चंचल और सुन्दर स्त्रियों की बात छोड़

सर स्टैनले अन्विन

दीजिये, लेकिन ऐसी स्त्रियों को शायद ही कभी सर्वोत्तम रचना का श्रेय प्राप्त होता हो। इसलिए आप अपनी पाण्डुलिपि को अपना दूत समझिए और प्रकाशक से मिलने का अनावश्यक दुराग्रह करके अपनी पाण्डुलिपि का महत्त्व कम न कीजिए। यदि प्रकाशक को आपकी रचना रुचिकर प्रतीत होगी तो वह आपको शीघ्र ही [illegible]लवा भेजेगा।

आपकी पाण्डुलिपि निस्संदेह [illegible] सर्वोत्कृष्ट रचना है, परन्तु आप यह बात प्रकाशक से स्वयं क[illegible] न कहिये, क्योंकि उसके पास जो बुरी-से-बुरी पाण्डुलिपियाँ भी [illegible]ाई हैं, उनके बारे में भी उनके लेखकों ने शायद यही बात [illegible] होगी। अपूर्व प्रतिभाशाली रचनाओं का बहुधा ढिंढोरा[illegible] पीटा जाता और प्रकाशक ऐसी ही रचनाओं की प्रतीक्षा में [illegible]ता है।

आपकी पाण्डुलिपि आपके बच्चे के समान है, [illegible]दाचित् वह आपकी एकमात्र सन्तान हो। परन्तु प्रकाशक को प्र[illegible]दिन प्रातःकाल अपने द्वार पर इस प्रकार के लगभग एक दर्जन बच्चों को देखने का अवसर मिलता है। इसके अतिरिक्त कई हज़ार इससे बड़े बच्चे उसके गोदाम में और उसके सारे दफ़्तर और प्रेस में भरे पड़े हैं और, उनमें से हर एक यह चाहता है कि प्रकाशक अपना सारा ध्यान उसी की ओर दे।

इसलिए प्रकाशक लाख चाहने पर भी आपकी पाण्डुलिपि की ओर केवल सीमित ध्यान ही दे सकता है। प्रकाशक का जितना भी समय आप अनावश्यक मुलाकात में या टेलीफ़ोन पर[1] झुंझला देने वाली बातचीत में व्यर्थ करते हैं उतना ही कम समय वह आपकी रचना पर विचार करने में लगाता है, जो कि अपेक्षतः अधिक महत्त्वपूर्ण है।

यदि आप चाहते हैं कि आपकी रचना का अच्छा प्रभाव पड़े तो उसकी पाण्डुलिपि तैयार करने की ओर थोड़ा ध्यान दीजिए और प्रकाशक को उसे छोटे-छोटे अंशों में देखने के लिए न दीजिए। उसके बाहरी रूप का इतना महत्त्व नहीं है,

१. हिन्दुस्तान में प्रकाशक-लेखक का सम्पर्क भेंट होने पर अथवा मुख्यतया पत्र-व्यवहार द्वारा ही सम्पन्न होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु लापरवाही से लिखी हुई पाण्डुलिपि का और असंगतियों का प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। प्रकाशक को इस बात से इतनी परेशानी नहीं होती कि पृष्ठों के कोने मुड़े हुए हों जितनी इस बात से होती है कि एक ही क्रम लगातार एक ही ढंग से न लिखा गया हो; या जैसे अंग्रेज़ी की पाण्डुलिपि में वही शब्द एक पृष्ठ पर तो कैपिटल अक्षर से आरम्भ किया गया हो और दूसरे पृष्ठ पर न किया गया हो; या पहले और तीसरे अध्यायों के तो शीर्षक हों पर दूसरे अध्याय का शीर्षक न हो; या उद्धरण ग़लत दिये गए हों; सारांश यह कि लेखक ने अपना काम लापरवाही से टाल दिया हो। इसका प्रकाशक पर और प्रकाशक के रीडर पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रकाशक से लम्बी-से-लम्बी मुलाकात या अच्छे-से-अच्छे परिचय-पत्र की अपेक्षा पाण्डुलिपि की तैयारी करने में थोड़ा-सा समय अधिक लगाना लेखक के हित में कहीं ज़्यादा [illegible]गी है।

यह बात ध्यान रखिये कि दूसरे मनुष्यों की तरह प्रकाशक भी ग़लती कर सकते हैं। मेरे विचार में, वे सब चाहते हैं कि वे ग़लतियों से मुक्त हों, परन्तु वे सब जानते हैं (और इस बात को स्वीकार करते हैं) कि वे गलतियों से मुक्त नहीं हैं। प्रकाशक के हिसाब-किताब में 'प्रकाशक का ग़लत अनुमान' इतना मँहगा पड़ता है कि वह इसकी अवहेलना नहीं कर सकता। यदि कोई प्रकाशक आपकी पाडुलिपि वापस कर दे तो यह समझ लीजिये कि यह एक मनुष्य का निर्णय है, जो ग़लत भी हो सकता है, और दूसरे प्रकाशक को आजमाइए। पहले प्रकाशक को डरा-धमकाकर यह बताने पर विवश न कीजिये कि उसने आपकी पाण्डुलिपि क्यों वापस कर दी। (अधिकांश उदाहरणों में) कोई मूर्ख प्रकाशक ही होगा जो आपको इसका कारण बता दे, क्योंकि यद्यपि हर लेखक पूरा ज़ोर देकर आश्वासन देता है कि वह अपनी आलोचना सुनने को भी तैयार है, परन्तु शायद सौ में एक लेखक ऐसा होता हो जो अपनी रचना के सम्बन्ध में प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ सुनना चाहता हो।

यदि प्रकाशक आपकी पाण्डुलिपि स्वीकार कर ले तब भी याद रखिये कि लेखक के पुरस्कार का निर्णय अन्तिम रूप से

HINDI LITERATURE

हिन्दी साहित्य का इतिहास (अंग्रेजी में)

***Prof.* RAM AWADH DWIVEDI, M. A., D. Litt.**
Dept : of English, Banaras Hindu University.

A History of Hindi Literature from the earliest beginnings to the present times. Such a book was long overdue, since earlier works by Grierson, Grieves and Kaye were extremely sketchy and have become thoroughly out-of-date. The work is characterised alike by mastery of material and soundness of critical judgement. The author, who is an eminent scholar and a distinguished teacher, has brought to bear upon this work great care and wide and deep erudition. Sinc e Hindi has become the National Language of India, this book is bound to be welomed equally by people living in different parts of the country. It is also likely to be more useful for those who have offered Hindi as one of their subjects for University examinations of Indian Universities in Hindi-speaking and more specially Non Hindi-speaking areas. It is also expected to make the people of South, Bengal, Assam etc. better acquainted with Hindi Literature. It will serve to introduce Hindi Literature to foreign readers. The book is written in easy and elegant English.

PRICE RS. 5/- ONLY

HINDI PRACHARAK PUSTAKALAYA
P. O. Box No. 70, Gyanwapi, BANARAS.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकगण ही करते हैं; यह भी याद रखिये कि जनता का कोई ठीक नहीं रहता, और यदि वह गन्दी कहानियाँ लिखने वाले लेखक को मुँहमांगा पुरस्कार दे और विद्वत्तापूर्ण इतिहासज्ञ या दार्शनिक को कुछ न दे तो इसमें प्रकाशक का कोई दोष नहीं है। यदि जनता आपकी पुस्तक नहीं खरीदती है तो प्रकाशक न आपके लिए लाभ कमा सकता है और न अपने लिए। इतनी सीधी-सी बात को दोहराने पर विवश होना कुछ विचित्र तो जरूर है, परन्तु पुस्तक को छापकर तैयार करने की लागत और प्रकाशक को पुस्तक-विक्रेताओं से जो-कुछ मिलता है उसका अन्तर ही लाभ होता है। यदि पुस्तक को उसकी लागत पर बेच दिया जाय तो लाभ नहीं हो सकता, लेकिन आश्चर्य की बात है कि अनेक लेखक समझते हैं कि ऐसा करने से भी लाभ हो सकता है। वास्तव में वह यह मान बैठते हैं कि अंकगणित के नियम प्रकाशकों पर लागू नहीं होते।

हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती। बहुधा सबसे अधिक प्रभावकारी विज्ञापन वह नहीं होता जो सबसे भड़कीला होता है, जैसे, बहुधा सबसे कुशल डाक्टर वह नहीं होता जिसका साइनबोर्ड सबसे बड़ा होता है। किसी पुस्तक को दुनिया के कोने-कोने में विस्तृत रूप से वितरित करने का आदि और अन्त दो समाचार-पत्रों के साप्ताहिक विशेषांक में विज्ञापन दे देने से नहीं हो जाता। यह काम एक पूरी शृङ्खला के समान है जिसे एक-एक कड़ी करके पूरा करना पड़ता है। किसी पुस्तक को दस या बारह सप्ताह तक बेच लेना तो आसान बात है, पर किसी पुस्तक को दस या बारह वर्ष तक बेचते रहना बिलकुल ही दूसरी बात है। अपना प्रकाशक चुनते समय आपको ये बातें ध्यान में रखनी चाहिएँ। परन्तु इनके अतिरिक्त और भी बातें हैं। क्या वह सचमुच अपने काम को समझता है? यदि वह समझता है तो आप पूरे विश्वास के साथ उसे काम सौंप सकते हैं; यदि वह नहीं समझता तो उसके पास मत जाइए। क्या उसकी आर्थिक-दशा अच्छी है? इस विषय में किसी प्रकार का सन्देह बाकी न रहना चाहिए। यदि उसकी आर्थिक-दशा अच्छी है तो उसकी कड़ी-से-कड़ी शर्तों को भी स्वीकार करना आपके लिए एक दिवालिया-कम्पनी की आकर्षक-से-आकर्षक शर्तों को स्वीकार करने की अपेक्षा अधिक लाभदायी हो सकता है।

१० प्रतिशत [illegible]ायल्टी, जो हमेशा निश्चित समय पर मिल जाय, उस २० प्रतिशत रायल्टी से अच्छी है जो कभी वसूल ही न हो।

सबसे अधि[illegible]स्थायी प्रकाशक बहुधा वे होते हैं जो बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशि[illegible] कर चुके हों और लगातार फ़ायदे पर किताबें बेचते रहे[illegible]ों। ऐसे प्रकाशकों को अपना व्यापार जमाने के लिए जु[illegible]ा खेलने की आवश्यकता नहीं रह जाती।

अपना प्रकाशक चु[illegible] लेने के बाद, उसके साथ पूरा सहयोग कीजिए, परन्तु उसे [illegible] सिखाने का प्रयत्न न कीजिये कि उसका काम क्या है। जो [illegible]म आप एक पोस्टकार्ड या पत्र लिखकर उतनी ही अच्छी तर[illegible] या शायद अधिक प्रभावशाली ढंग पर कर सकते हैं, उसके लि[illegible] प्रकाशक को टेलीफ़ोन करना उसके साथ सहयोग करना नहीं [illegible]ल्कि उसके काम में निश्चय ही बाधा डालना है। जो काम न[illegible]) [illegible] विभागों का[1] है, उसके लिए संस्था के प्रधान व्यवस्थापक [illegible]को परेशान न कीजिए। बहुधा प्रकाशक न तो अच्छे शार्टहैं[illegible]टाइपिस्ट ही होते हैं, न टेलीफ़ोन ऑपरेटर, परन्तु शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब लेखक उससे यह काम लेने का (और बिलकुल व्यर्थ ही) प्रयत्न न करते हों। यदि टेलीफ़ोन पर लम्बे आदेश देना आवश्यक हो जाय (बाद में इन आदेशों को पत्र द्वारा भी भेज देना चाहिए), तो यह अधिक बुद्धिसंगत होगा कि किसी शार्टहैन्ड-टाइपिस्ट से उन्हें लिख लेने को कहिये, बजाय इसके कि आप यह आशा करें कि संस्था का प्रधान व्यवस्थापक अपना सर खपाकर उनको लिखे। संस्था के प्रधान व्यवस्थापक से ही बात करने का आग्रह करने और उससे ही यह कहने के बजाय कि वह टेलीफ़ोन करके अपने किसी विशेष विभाग से आपके लिए कोई इच्छित सूचना प्राप्त कर दें, आप सीधे उस विभाग से वह सूचना ज़्यादा जल्दी प्राप्त कर सकते हैं।

जिस प्रकार आप घोड़े को पानी तक ले तो जा सकते हैं पर उसे पानी नहीं पिला सकते, उसी प्रकार प्रकाशक नयी पुस्तक को पुस्तक-विक्रेता के पास ले तो जा सकता है पर उसे

---

१. भारत के बहुत ही कम प्रकाशकों के यहाँ कार्य-विभाजन के अलग-अलग विभाग हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरीदने पर बाध्य नहीं कर सकता। प्रतिवर्ष दस हजार[1] से अधिक नई पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और पुस्तक-विक्रेता अपनी आवश्यकतानुसार केवल कुछ ही पुस्तकें अपने पास रख सकते हैं। यदि आपके मित्र इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि आपकी पुस्तक उनके स्थानीय पुस्तक-विक्रेता के यहाँ प्राप्य नहीं है तो कोई कारण नहीं है कि आप भी आश्चर्य प्रकट करें।

यदि कोई अति-प्रचलित पुस्तक या किसी पुस्तक का सस्ता संस्करण रेलवे-स्टेशनों की बुकस्टालों पर प्राप्य है तो यह कोई कारण नहीं है कि आपकी पुस्तक भी वहाँ प्राप्य हो। केवल किसी बुकस्टाल पर रख देने से ही कोई पुस्तक अति-प्रचलित पुस्तक नहीं हो जाती; अधिक सम्भावना इस बात की है कि वह कुछ दिन तक गर्द-धूल खाने के बाद रद्दी-किताबों के स्टाक में पहुँच जाय। रेलवे-बुकस्टालों के मालिक सभी नई पुस्तकें देखते हैं और वे ही इस बात को सबसे अच्छी तरह समझ सकते हैं कि वे कौनसी पुस्तक बेच सकते हैं और कौनसी नहीं। और यदि वे आप की पुस्तक स्वीकार करने से इन्कार कर दें तो ९९ प्रतिशत उदाहरणों में समझ लेना चाहिए कि उनका निर्णय ठीक ही है।

बड़े प्रकाशकों द्वारा प्रकशित की जाने वाली सभी नई पुस्तकें प्रकाशन से पहले लन्दन के पुस्तक-विक्रेताओं को दिखाई जाती हैं[2] और प्रकाशन से पहले या प्रकाशन के शीघ्र बाद दूसरे प्रान्तों के प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं को भी दिखाई जाती हैं। यदि किसी खास पुस्तक-विक्रेता के कर्मचारी से बात करने पर आपको यह मालूम हो कि उसने कभी आपकी पुस्तक के बारे में सुना भी नहीं, तो यह आपके प्रकाशक की लापरवाही का प्रमाण नहीं है। बल्कि इसके विपरीत, इसका एक मतलब तो यह हो सकता है कि जब आपकी पुस्तक "ग्राहकों के पास भेजी गई थी" तो उस पुस्तक-विक्रेता ने उसे अस्वीकार कर दिया था, या इसका दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि वह कर्मचारी पुस्तक-व्यापार से सम्बन्ध रखने वाली पत्रिकाओं में नई पुस्तकों की सूची को[1] उतने ध्यान से नहीं देखता रहा है जितना कि उसे चाहिए।

परन्तु यह अवश्य सम्भव होना चाहिए कि कोई भी पुस्तक-विक्रेता या बुकस्टाल आर्डर देने पर आपकी पुस्तक फ़ौरन मंगवा सके और यदि इसमें कोई कठिनाई हो तो आपको अपने प्रकाशक को फ़ौरन सूचना देनी चाहिए।

इस तथ्य के विपरीत आम धारणा कुछ भी हो, परन्तु नई पुस्तकें बेचना प्रायः कभी भी लाभदायी व्यापार नहीं होता; बहुत ही थोड़े लोग नई किताबें ख़रीदते हैं। शायद आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि आपके ही कितने मित्र और परिचित लोग निःसंकोच आपकी पुस्तकें मुफ्त ही "हथिया लेने की कोशिश" में रहते हैं। अपने स्वाभिमान को (या अपनी तिरस्कार की भावना को!) एक क्षण के लिए भूलकर आपको उनसे साफ़-साफ़ कह देना चाहिए कि यदि वे पुस्तक को इतना महत्त्व नहीं देते कि उसे ख़रीदकर पढ़ें तो अच्छा होगा कि वे उसे पढ़ें ही नहीं। आप जन साधारण को **नेशनल बुक लीग**[2] में शामिल होने और उसके लिए काम करने के लिए प्रेरित करके उनमें पुस्तकों के प्रति एक अधिक गहरी रुचि पैदा कर सकते हैं।

इस पुस्तक को लिखने में मेरा प्रयत्न यह रहा है कि विवादग्रस्त समस्याओं पर जहाँ तक सम्भव हो सके, निष्पक्ष रूप से प्रकाश डालूँ और हमेशा मेरा लक्ष्य विरोधी तथ्यों के बजाय उन बातों का पता लगाना रहा है, जिन पर विरोध न हो।

साहित्य का बढ़ता हुआ व्यवसायीकरण—जो कदाचित् अनिवार्य है—लेखकों और प्रकाशकों के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक नहीं हो रहा। इसका आधार यह गलत धारणा है कि पाण्डुलिपियाँ और

१. यह भूमिका १९२९ में लिखी गई थी जब कि वर्ष में लगभग १०,००० पुस्तकें छपती थीं। इंग्लैण्ड में १९५२ में लगभग १८,००० पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

२. प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता के बीच भारत में उतना गहरा सहयोग नहीं है जो कि आवश्यक है। न हमारे देश में किसी पुस्तक-विक्रेता की ही इतनी व्यवस्थित संस्था है कि उसका सहयोग किसी पुस्तक की बिक्री पर गम्भीर प्रभाव डाल सके।

१. हमारे देश में नई पुस्तकों की आधुनिक ढंग पर तैयार की जाने वाली एक ही मासिक तालिका है: प्रकाशन समाचार, जिसका सदुपयोग अधिकाधिक होना चाहिए।

२. भारत में 'नेशनल बुक लीग' (किताब-क्लब) जैसी संस्थाओं का नितान्त अभाव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें केवल क्रय-विक्रय की वस्तुएँ हैं; वे जीवित नहीं मृत वस्तुएँ हैं। इस धारणा में लेखक और उसकी रचना के विचित्र और वास्तव में पिता-पुत्र के-से सम्बन्ध पर उचित ध्यान नहीं दिया गया है, और इसी सत्य का ज्ञान होना प्रकाशक में बुद्धिमत्ता का पहला चिह्न है।

मुझे आशा है कि प्रकाशकों की कठिनाइयाँ बताने के उत्साह में मैंने लेखकों के प्रति असहानुभूति का प्रदर्शन नहीं किया है। मैं सचाई के साथ यह बात कह सकता हूँ कि यदि मैं लेखकों के दृष्टिकोण को इतनी स्पष्टता से न देखता होता तो शायद इस पुस्तक को लिखना बहुत ही आसान हो जाता।

मुख्यतः अनुभवहीन लेखकों को प्रकाशन के गूढ़ रहस्यों को समझने में सहायता देने और इस प्रकार के कार्य को सरल बना देने की आशा में ही कई नये लेखकों के कहने पर मैंने पुस्तक-प्रकाशन का यह संक्षिप्त विवरण लिखने का काम स्वीकार किया।

यदि मुझे अपने इस प्रयास के द्वारा नये लेखकों का मार्ग सरल बनाने में किञ्चित्मात्र भी सफलता प्राप्त हुई हो और यदि इस पुस्तक के द्वारा लेखकों और प्रकाशकों के बीच अधिक रुचिकर और अधिक समझदारी के सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता मिली हो तो मैं अपने-आपको कृतार्थ समझूँगा।

दो अन्तिम बातें। यदि किसी प्रकाशक को आप पर इतना विश्वास रहा हो कि वह आपकी आरम्भ की और कदाचित् अपरिपक्व रचनाओं के प्रकाशन में अपना धन खोता रहा है तो यह आपके लिए उचित न होगा कि आप अपनी पहली सफल रचना, जो आसानी से बिक सकती हो, उस प्रकाशक को दिखाए बिना ही किसी दूसरे को दे दें या आशा करें कि वह दूसरे प्रकाशकों के साथ होड़ लगाकर आपकी उस रचना के लिए बोली लगाये, जब कि उन दूसरे प्रकाशकों ने आपकी ख्याति स्थापित करने में एक [illegible] भी खर्च नहीं की। यह बात और भी अनुचित है कि आप [illegible] साहित्यिक

हिन्दी कथा-साहित्य एवं चिनगारी-प्रकाशन की अनमोल पुस्तकें

स्व० कुशवाहा 'कान्त' कृत—
पपिहरा ४) पारस ३॥) लाल रेखा ३॥) परदेसी (दो खंड) ५)

ज्वालाप्रसाद 'केशर' कृत—
चितायें १॥) सितारा १॥) संगीनें २॥) कामरेड ३) भटकती रूह २॥) पुखराज ३॥) चित चोर २॥) तीन फायर २)

ब्रह्मदेव 'मधुर' कृत—
लपटें २॥) छैला (दो खंड) ५) चोट २॥)

रमेशचन्द्र झा कृत—
चलती लकीरें १) धार के फूल १॥) धरती की धूल १॥) रूप की राख १॥)

गोविन्दसिंह कृत—
लगन २॥) राजरानी १॥) मौत की मौत १॥) मिटती रेखायें १॥)

पं० 'हरीश' कृत—
बदलती तस्वीरें ३॥) चौराहा १॥) पथ की प्रेरणा १॥) आँसुओं का मूल्य १॥) अधूरा स्वप्न १॥)

रमेश वर्मा कृत—
संग्राम १॥) ग़द्दार १॥) रेडियम १॥) कंगारू १॥) सिसकती रात १॥) गिद्ध और बाज़ १॥)

विन्ध्याचलप्रसाद गुप्त कृत—
किनारे की ओर १॥) नीली साड़ी १॥) उल्टा उस्तरा २)

विनोदशंकर शर्मा कृत—
धूप-छाँह १॥) जाल १॥) दो सितारे २॥) ज़मीन आसमान २॥)

बुकसेलरों तथा पुस्तकालयों के लिए समुचित कमीशन की व्यवस्था। बृहत् सूचीपत्र मंगा लें।

चिनगारी-प्रकाशन, पो० बा० ७८, बनारस

112148

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनिधि (लिटरेरी एजेण्ट)[१] की सहायता से उसी थाली में छेद करें जिसमें आप खाते हैं।

अन्त में, अपना समझौता-पत्र (कन्ट्रेक्ट) ध्यान से पढ़िये और याद रखिये कि प्रकाशक को भी आपसे अपने वचन पर दृढ़ रहने की आशा करने का उतना ही अधिकार है जितना आपको उससे अपने वादे को पूरा करने की माँग करने का है।

१. सब अर्वाचीन देशों में प्रकाशक और लेखक के बीच 'लिटरेरी एजेन्ट' द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस साहित्यिक प्रतिनिधि का काम यह देखना होता है कि अमुक कृति का साहित्यिक स्तर क्या है, और कौन प्रकाशक उसे छापने के लिए स्वीकार कर सकता है। लेखक के अधिकारों की रक्षा भी वह उचित शर्तनामे द्वारा करवा देता है।

पाँचवें अंग्रेज़ी संस्करण की भूमिका

चूँकि मैंने उन अनेक उदाहरणों की ओर ध्यान आकर्षित किया है जिनमें कुछ लेखक प्रकाशकों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं कि वे स्वयं अपने हितों को नुकसान पहुँचाते हैं, इसलिए कुछ लोगों का विचार है कि मेरे द्वारा खींचा हुआ लेखक का सम्पूर्ण चित्र "आकर्षक नहीं है।" यदि यह नहीं समझा गया कि मैं केवल उन विशेष प्रकार के लेखकों को सम्बोधित कर रहा था जिनका मैंने विवरण दिया था, तो मैं अपने आलोचकों से सहमत हूँ। इसलिए मैं अब यह लिख दूँ—जिसे मैं उस समय बिलकुल अनावश्यक समझता था—कि बहुत से लेखक ऐसे होते हैं जो उनमें से कोई भी बेहूदगियाँ नहीं करते जिनका मैंने उल्लेख किया है; कुछ लेखक तो बिलकुल देव-तुल्य होते हैं; और फिर अन्त में यह भी कह दूँ—शायद किंचित् क्षुब्ध होकर—कि किसी धवल पृष्ठभूमि पर सबसे पहले दृष्टि कलंक पर ही पड़ती है।

आवश्यकता है

अपने प्रकाशनों के लिए सभी स्थानों पर

स्टाकिस्टों की।

पत्र व्यवहार करें

हमारे प्रकाशन

देश की हत्या	ले० श्री गुरुदत्त	मूल्य ५॥)	भावुकता का मूल्य	ले० श्री गुरुदत्त		मूल्य ६)
विश्वासघात	,, ,,	,, ५॥)	विकृत छाया	,,	,,	,, ४॥)
बहती रेता	,, ,,	,, ५)	अन्तिम यात्रा	,,	,,	,, १)
विडंबना	,, ,,	,, ६)	अलका (क० सं०)	ले० श्रीमती शान्तिसिंहल		२॥)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

कवि और आलोचक श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' बच्चन के बाद के हिन्दी-कवियों के काव्य और जीवन पर प्रकाश डालने वाली एक पुस्तकमाला 'नई पीढ़ी के कवि' के नाम से तैयार करने में संलग्न हैं। इनमें से लगभग ३० कवियों के विषय में समग्र सामग्री तैयार भी है। जो प्रकाशक इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करना चाहें वे निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें: श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन', ३६७१ हाथीखाना, पहाड़ी धीरज, दिल्ली ६।

✧ ✧ ✧

श्री नरेश मेहता (३३ कैनिंग लेन, नई दिल्ली) के पास निम्न रचनाएँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं:

लाल मिट्टीवाला गाँव (उपन्यास, पृष्ठ-संख्या ३००), सनोवर के फूल (१० एकांकियों का संग्रह), गोमती के गीत (कविता-संग्रह), उषस् (कविता-संग्रह), लेखक के चारों ओर (स्केच संग्रह)।

जो प्रकाशक इनके प्रकाशन में रुचि रखते हों, वे लेखक महोदय से पत्र-व्यवहार करें।

✧ ✧ ✧

प्रयाग के कुछ उत्साही तरुण कवियों ने सहकारी आधार पर एक छोटी सी प्रकाशन-संस्था का सूत्रपात किया है जिसका एकमात्र ध्येय 'नई कविता' के नाम से एक षाण्मासिक पत्रिका का प्रकाशन होगा। इस पत्रिका में एक समीक्षात्मक निबन्ध व शेष सब कविताएँ ही छपा करेंगी। 'नई कविता' का सम्पादन डॉ० जगदीश गुप्त (मोती महल, दारागंज, इलाहाबाद) करेंगे और वितरण राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, द्वारा होगा।

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक साहित्य का लोकप्रिय प्रकाशन

राजकमल अमर साहित्य
संस्कृत के सनातन साहित्य के प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद। प... दशकुमार चरित, मेघदूत प्रकाशित।

राजकमल कथा-साहित्य
उच्च स्तर के नये उपन्यासों का कम मूल्य में प्रकाशन। ६ भाग प्राप्य। पृष्ट १४४ से २५६; मूल्य प्रत्येक १।।।=)

राजकमल मनोविज्ञान माला
मनोविज्ञान जैसे गूढ़ विषय का सुगम प्रतिपादन ६ भाग प्राप्य। पृष्ठ ५० से १०० मूल्य प्रत्येक १)

राजकमल

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अनुशीलन की केन्द्रीय संस्था

भारतीय हिन्दी परिषद का ११वाँ अधिवेशन

८, ९ तथा १० अक्तूबर को पटना में हुए सम्मेलन का वृत्तान्त। परिषद् का मुख्य कार्यालय इलाहाबाद में है।

भारतीय हिन्दी-परिषद् विश्वविद्यालयों और डिग्री-कालेजों के हिन्दी अध्यापकों तथा शोधकार्य करने वाले विद्वानों की एक प्रतिष्ठित संस्था है। इसका ११वाँ वार्षिक अधिवेशन अक्तूबर में सम्पन्न हुआ। आमन्त्रकों में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के अतिरिक्त पटना तथा बिहार विश्वविद्यालय थे। प्रबन्ध के लिए बिहार के लगभग १०० साहित्यिकों और अध्यापकों की स्वागत-समिति बनाई गई थी जिसके अध्यक्ष बिहार के शिक्षा-मन्त्री आचार्य बदरीनाथ वर्मा थे। उद्घाटन राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर ने और सभापतित्व क० मा० मुन्शी ने किया। अधिवेशन में अनेक प्रदेशों के विश्वविद्यालयों के लगभग १३३ सदस्य और प्रतिनिधि उपस्थित थे—कलकत्ता ४, शान्ति निकेतन १, दक्षिण भारत २, मध्यप्रदेश ४, विन्ध्यप्रदेश ३, मध्यभारत ६, राजस्थान ४, अजमेर १, दिल्ली ६, पंजाब ३, पटना १०, बिहार २६, आगरा ८, लखनऊ ६, अलीगढ़ ३, इलाहाबाद २१, काशी ४, अन्य १५। इनमें पं० ललिताप्रसाद सुकुल, श्री नन्दकिशोर गौड़, प्रो० देवनारायण सिंह, डा० विश्वनाथ प्रसाद, डा० राम खेलावन पांडेय, श्री नलिन विलोचन शर्मा, डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पं० चन्द्रबली पांडेय, डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० रामकुमार वर्मा, डा० दीनदयालु गुप्त, डा० केसरीनारायण शुक्ल, डा० नगेन्द्र, डा० इन्द्रनाथ मदान, पं० विनयमोहन शर्मा, पं० रामनरेश त्रिपाठी, श्री यशपाल, श्री प्रभुदयाल मीतल, पं० कृष्णानन्द पन्त, श्री रामधारीसिंह दिनकर आदि प्रमुख थे। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य नरेन्द्रदेव, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त आदि महानुभावों ने शुभकामनाएँ भेजीं।

राज्यपाल मुन्शी ने कहा कि हिन्दी भारतीय राष्ट्र की एकता का प्रतीक है, लेकिन इसकी प्रगति सन्तोषजनक ढंग से नहीं हो रही। अंग्रेजी को निकालने की चेष्टा तो की जा रही है, परन्तु उतनी द्रुत गति से हिन्दी उसका स्थान नहीं ले रही। इसकी अभिव्यंजना-शक्ति बढ़ाने के लिए संस्कृत और अंग्रेजी अनिवार्य है। श्री मुन्शी ने उन लोगों की निन्दा की जो यह कहते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रादेशिक हिन्दी से भिन्न होगी, क्योंकि इससे राष्ट्रीयता को खतरा है। लेकिन, हिन्दी को उदार होना पड़ेगा। राज्यपाल दिवाकर ने हिन्दी की अभिवृद्धि के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान ले लेना है। यह तभी सम्भव है जब सभी प्रदेशों में हिन्दी किसी-न-किसी कक्षा में अनिवार्य विषय हो और बी० ए० के बाद सभी विषयों का माध्यम भारत के सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी ही हो। साथ ही हिन्दी में ज्ञान और साहित्य का अधिक-से-अधिक प्रकाशन होना चाहिए।

विचार-विनिमय के लिए तीन गोष्ठियाँ हुईं, जिनके विषय थे—(१) हिन्दी भाषा की प्रगति, (२) विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पाठ्यक्रम और (३) हिन्दी का स्थिरीकरण। प्रथम गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि हिन्दी-भाषी क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों की शिक्षा में भी हिन्दी को माध्यम बनाने का प्रयोग अत्यन्त मन्द गति से हो रहा है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक विषयों की शब्दावली या साहित्य के निर्माण का दायित्व विश्वविद्यालयों और हिन्दी राज्यों का है। किन्तु वे इस दिशा में उदासीन हैं। वे भी उस केन्द्रीय सरकार का मुँह ताक रहे हैं जिसका पिछले छः-सात वर्ष का कार्य सन्तोषप्रद नहीं है। इस अवसर पर डॉ० हरदेव बाहरी, प्रधान मन्त्री, हिन्दी परिषद्, ने हिन्दी की प्रगति पर एक विवरण पढ़ा। विचार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिमय में यह मत प्रगट किया गया कि केन्द्र में एक अलग मन्त्रालय—हिन्दी-मन्त्रालय के नाम से—संगठित होना चाहिए। हिन्दी प्रदेशों की सरकारों और विश्वविद्यालयों से विशेष अनुरोध किया गया कि वे पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए एक पंचवर्षीय योजना तैयार करके मौलिक और अनूदित ग्रन्थों का सृजन करायें।

दूसरी गोष्ठी ने कई सुझाव दिए। इनमें दो-तीन अधिक महत्त्वपूर्ण हैं—(१) बी० ए० के हिन्दी पाठ्यक्रम में आधुनिक और प्राचीन साहित्य का अनुपात दो और एक का होना चाहिए, (२) एम० ए० में आधुनिक और प्राचीन साहित्य बराबर-बराबर रखा जाना चाहिए, (३) एम० ए० हिन्दी के पाठ्यक्रम में कम-से-कम एक मूलभूत प्राचीन या आधुनिक भाषा का ज्ञान अनिवार्य होना चाहिए। इस गोष्ठी का सभापतित्व डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने किया। तीसरी गोष्ठी डॉ० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के सभापतित्व में हुई। डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा ने लिपि और डॉ० हरदेव बाहरी ने वर्णविन्यास के स्थिरीकरण के सम्बन्ध में सुझाव दिये।

दो अन्य ोष्ठियों में शोध-सम्बन्धी निबन्धों का पाठ हुआ। एक ग ठी के सभापति श्री विनयमोहन शर्मा और दूसरी के राजा ाधिकारमण प्रसाद सिंह थे। डॉ० कामिल-बुल्के, पण्डित च बली पांडेय, श्री रामपूजन तिवारी, डॉ० हरवंशलाल शर्मा, ॉ० भगीरथ मिश्र, प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव और डॉ० क्रमसिंह तोमर के निबन्धों पर गम्भीर विचार-विमर्श हुआ।

पटना विश्वविद्याल की ओर से लोकगीतों, नृत्यों और 'चाणक्य' पर आधारित सांस्कृतिक प्रदर्शन हुआ। लगभग ६० प्रतिनिधि और सद नालन्द और राजगृह देखने गए। भारतीय हिन्दी-परिषद् के दस्यों एवं नगर के प्रमुख साहित्यिकों और पत्रकारों को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से जलपान और अजन्ता प्रेस ि मिटेड तथा श्री मोतीलाल बनारसीदास की ओर से सहभोज ए।

अन्तिम अधिवेशन में बिहार के प्र मन्त्री डॉ० श्रीकृष्ण सिंह ने भारतीय हिन्दी-परिषद् को ब ई दी और उसके कार्य की सराहना की।

भारत में अंग्रेजी राज के दो सौ वर्ष

लेखक
श्री केशवकुमार ठाकुर

भारत में अंग्रेजी राज के आरम्भ से अन्त (सन् १९४७) तक के दो सौ वर्षों में अंगरेजों द्वारा जिस कूटनीति, छल-कपट, विश्वास-घात और अनेक तरह के अनुचित तरीकों से भारत का विनाश और पतन हुआ है उनका विस्तार से वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। बड़े साइज के ८०० पृष्ठों की मोटी जिल्ददार पुस्तक का मूल्य १०)

देश के अनेक प्रसिद्ध विद्वानों तथा समाचार-पत्रों ने इस पुस्तक की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए देश के सभी लोगों को सलाह दी है कि भारत में अंग्रेजों के दो सौ वर्ष की गुलामी के इस इतिहास को अवश्य पढ़ना चाहिए। अनेक समाचार-पत्रों में से बम्बई का प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक "Bombay Chronicle" अपनी राय देते हुए अपने २० जुलाई १९५२ के अंक में लिखता है : "……इस पुस्तक की उपयोगिता के सम्बन्ध में इतना ही लिखना काफी होगा कि जिस अमूल्य पुस्तक को प्रसिद्ध विद्वान् पं० सुन्दरलाल जी ने सन् १८५७ की क्रान्ति तक ही लिखा था उसे अब श्री केशवकुमार ठाकुर ने आरम्भ से सन् १९४७ तक सम्पूर्ण करके इतिहास की एक बड़ी कमी को पूरा किया है।"

हमारे अन्य प्रकाशन :—प्लासी का युद्ध ५); सन् '५७ का विप्लव ५); महाराज नन्दकुमार को फाँसी ४॥); गोरा : रवीन्द्र बाबू ५); जलजला : रवीन्द्र १॥।); चरित्रहीन : शरत् बाबू ५)

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, ४१९ अहियापुर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अमिताभ प्रकाशन, पटना

—**विष के दांत**, ले० प्रो० ...लिन विलोचन शर्मा की कहानियों का संग्रह। ...ाई आकार में, मूल्य ३)। शिक्षा सदन, नया टोला, ...टना, से प्राप्य।

अशोक प्रेस, पटना

—**आज फिर ...**, श्री व्रजबिहारी प्रसाद। बालोपयोगी कहानियाँ।

—**भूग... की बातें**, दो भागों में। श्री अंजनीकुमार। बालोपयोगी भौगोलिक बातें।

—**हम इनसे सीखें**, श्री सुरेशकुमार विद्यार्थी। बालोपयोगी कहानियाँ।

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—**तुलनात्मक अध्ययन**, ले० प्रो० कृष्णचन्द्र शर्मा व देवीशरण रस्तौगी। हिन्दी के प्राचीन तथा रीतिकाल के प्रमुख कवियों का तुलनात्मक अध्ययन।

—**पृथ्वीराज रासो का 'पद्मावती समय'**, ले० प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त। पद्मावती समय की विस्तृत व्याख्या और उसके साहित्यिक सौन्दर्य की गम्भीर समीक्षा।

—**पुनरुद्धार**, श्री कंचनलता सब्बरवाल। मौर्य तथा गुप्तकाल के ऐतिहासिक-कथानक के आधार पर वीरत्व से ओतप्रोत मर्मस्पर्शी उपन्यास।

—**व्रज की लोक-कथाएँ**, श्रीमती आदर्शकुमारी जैन। प्रस्तावना—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी। व्रज में प्रचलित लोक-कथाओं का सरल तथा रोचक शैली में चित्रण।

—**मानव की परख**, ले० देवीदयाल सेन, प्रस्तावना—माननीय जगजीवनराम जी। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित सामाजिक क्रान्तिकारी उपन्यास।

—**माता**, डा० सोमनाथ गुप्त। गुप्त जी द्वारा लिखित गद्य-कविताओं का संकलन।

—**विन्ध्य प्रदेश की लोक-कथाएँ**, ले० श्रीचन्द जैन अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव। विन्ध्यप्रदेश की प्रचलित लो कथाओं का सरल और रोचक शैली में लिखा प्रतिपाद

आभा प्रकाशन, दिल्ली

—**परिधि**, ले० श्री राजेन्द्र शर्मा। युद्धकाल के बाद से ल कर वर्तमान समय तक की पृष्ठभूमि पर लिखी कहानियाँ। मूल्य २)

—**मंगल-गीत**, ले० श्री राजेन्द्र शर्मा। आशावादी गीतों का स्फूर्तिदायक-संग्रह जिसमें प्रकृति और जीवन अद्भुत समन्वय किया गया है। मूल्य २)

आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर

—**उपवास से लाभ**, ले० श्री विट्ठलदास मोदी। उपव की चिकित्सा के गुण। पृष्ठ-संख्या १७४। मूल्य तीसरा संस्करण।

उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस

—**पथ के राही**, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनुवाद: क बी० ए०। मूल्य २॥)

—**माँ**, मैक्सिम गोर्की, अनुवाद: लक्ष्मीनारायण सरो मूल्य ४)

—**शेष का रहस्य**, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनुवाद: कमल ए०। मूल्य २॥)

उपन्यास बहार आफ़िस, बनारस

—**चिन्ताहरण जंत्री सन् ५४**, पं० बचान प्रसाद त्रिपा तिथि पत्रिका, पञ्चाङ्ग और ज्योतिष-शास्त्रोक्त भ फलादेश।

ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना

—**जीवन संग्राम**, श्री जयनारायण पाण्डेय। युवकोपयो जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने के लिए उत्साहव लेखों का संग्रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—तिरिच मीर, हिमालय के एक शिखर के अभियान की कहानी। यह शिखर पश्चिमी पाकिस्तान में पड़ता है। १९५० में नार्वे वालों का दल गया था। इस अभियान-कारी दल के विभिन्न सदस्यों द्वारा लिखित विवरण का संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद। युवकोपयोगी।

—भू-स्वर्ग काश्मीर, ले० श्री हंसकुमार तिवारी। युवको-पयोगी। काश्मीर-यात्रा-विवरण।

—विश्व-इतिहास की भूमिका, ले० श्री रामशरण शर्मा। पहला भाग, प्राचीन काल से मध्य काल के अन्त तक के विश्व-इतिहास की प्रमुख धाराएँ। पुनर्मुद्रण।

तरुण भारत ग्रन्थावली, कानपुर व इलाहाबाद

—सदाचार दर्पण, ले० स्व० पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी। विद्यार्थियों व नवयुवकों में सदाचार व नैतिकता का संचार करने वाली अपूर्व पुस्तक।

देश-सेवा मंडल, इलाहाबाद

—घेरा, ले० सागर वालूपुरी। सामाजिक उपन्यास।

जननी कार्यालय, इलाहाबाद

—कौटलीय अर्थ-शास्त्र की भूमिका, देवदत्त शास्त्री। कौटलीय अर्थशास्त्र और उसके रचयिता की विस्तृत समीक्षा।

—कौशाम्बी के अन्तःपुर में, देवदत्त शास्त्री। कौशाम्बी-नरेश महाराज उदयन तथा महारानी वासवदत्ता की जीवन-घटनाएँ।

—वरदाम्बिका परिणय चम्पू, देवदत्त शास्त्री। चम्पू काव्य का हिन्दी अनुवाद, और ग्रन्थ तथा ग्रन्थकार की विस्तृत समीक्षा।

—बार्हस्पत्य अर्थ-शास्त्र, देवदत्त शास्त्री। बार्हस्पत्य अर्थ-शास्त्र के सूत्रों की हिन्दी टीका, तथा ग्रन्थ और ग्रन्थकार की विस्तृत समीक्षा।

पब्लिकेशन्स डिवीजन, भारत सरकार, दिल्ली

—हमारा झंडा, राष्ट्रीय झंडे का इतिहास और विकास।

—हमारा संविधान, भारतीय संविधान का परिचय।

—हमारी राष्ट्रीय योजना, पहली पंचवर्षीय योजना का विवरण।

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई

—औपनिवेशिक व्यवस्था का संकट, रजनी पाम दत्त, अनुवाद [illegible]ोमप्रकाशसंगल। राजनीतिक व्याख्या। मूल्य ।।)

—स्तालिन [illegible] एक जीवनी, श्री राहुल सांकृत्यायन। डिमाई आकार के [illegible]८० पृष्ठों में स्तालिन की जीवनी। मूल्य ३)

मसिजीवी प्रक[illegible]न, दिल्ली

—पर्दे के पीछे, श्री उदयशंकर भट्ट। आठ एकांकियों का संकलन। भू[illegible]-लेखक डा० नगेन्द्र।

मेहरचन्द मुन्शीरा[illegible] दिल्ली

—मर्यादा, वी० ड[illegible] सेवक। लगभग ३०० पृष्ठों का उपन्यास। मूल्य ४[illegible]

—विश्व-परिचय, हरिबा[illegible] कंसल एम० ए०। प्रायः सभी प्रकार का सामान्य ज्ञान क[illegible] वाली पुस्तक। पृष्ठसंख्या ४५०। मूल्य ६)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्[illegible] ७

—रवीन्द्र साहित्य, भाग १४। [illegible]बाबू के 'विसर्जन' (नाटक) व 'नष्ट नीड़' (उपन्यास) के [illegible] धन्यकुमार जैन द्वारा अनुवाद का पुनर्मुद्रण। मूल्य २।)

—रवीन्द्र साहित्य, भाग १५। रविबाबू के 'मालिनी' (नाटक), ५ कहानियों और 'स्मरण' के श्री ध[illegible]कुमार जैन द्वारा अनुवाद का पुनर्मुद्रण।

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—आओ, दोस्त बनाएँ, लेखिका सईदा सय्यदान। नौ बरस की सईदा की कहानी 'शंकर्स वीकली' में छपी थी जिसके लिए अर्जेंटाइना की एक प्रसिद्ध कलाकार ने स्वतः चित्र बनाकर लेखिका को उपहारस्वरूप भेजे। उन्हीं चित्रों से विभूषित बालोपयोगी प्रकाशन।

—चीन की कहानियाँ, दो भाग। (१) **तीरन्दाज़ ई,** (२) **पीली बत्तक।** चीन की बालकथाएँ। मूल विदेशी रंगीन चित्रों से विभूषित। प्रत्येक का मूल्य १)। रायल साइज।

—रूस की कहानियाँ, दो भाग। (१) **बरफ़ीले देश में,** (२) **पहला शिकार,** रूस की बालकथाएँ। रूसी कला-कारों के रंगीन चित्रों से विभूषित। प्रत्येक का मूल्य १)। रायल साइज।

—मेघदूत, कालिदास कृत, अध्ययनः डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल व अनुवाद सहित, पाण्डित्यपूर्ण, सांस्कृतिक समीक्षा। ६ रंगीन व सादे चित्रों से सुशोभित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—**सच्ची नागरिकता,** मनरो लीफ़। बच्चों को खेल-खेल में नागरिक-भावना की शिक्षा देने वाली अद्वितीय पुस्तक। दोरंगा प्रकाशन। पृष्ठ-संख्या ८८, रायल साइज़। मूल्य १॥)

रामनारायण लाल, इलाहाबाद

—**उर्दू-हिन्दी कोष,** पं० केदारनाथ भट्ट। इस कोष में उर्दू शब्दों के हिन्दी रूपान्तर दिए गए हैं। उर्दू शब्द नागरी लिपि में हैं।

—**पुस्तपालन तथा लेखाकर्म, भाग १,** पन्नालाल बल्दुआ एम० ए०, बी० कॉम०। बुककीपिंग और एकाउंटैंसी। इस विषय की अनुपम पुस्तक।

—**भारतीय शस्त्र ऐक्ट १८७८,** टीकाकार राधाकृष्ण एडवोकेट। कानून की पुस्तक। १८७८ के। Indian Arms Act की टीका।

—**हिन्दी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास,** डा० रामकुमार वर्मा। हिन्दी-साहित्य की आलोचना पर प्रमुख पुस्तक का नया संस्करण। इस पुस्तक पर लेखक को नागपुर विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि मिली है।

रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—**भारत में सम्पत्तिकर,** बाबूलाल गोयल एवं नेमीचन्द गोयल। १५ अक्तूबर ५३ से लागू सम्पदा-कर (मृत्यु-कर), टीका सहित।

रीगल बुक डिपो, दिल्ली

—**पद्मावत भाष्य,** मनमोहन गौतम। पद्मावत, टीका सहित।

—**प्रियप्रवास, एक अध्ययन,** भवानीशंकर त्रिवेदी। प्रिय-प्रवास की टीका व आलोचना।

—**भाषाविज्ञान, एक अध्ययन,** श्री द्वारकाप्रसाद एम० ए०। भाषा-विज्ञान की एक प्रामाणिक सहायक पुस्तक।

—**श्रैनिक बिम्बसार,** आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री। पौराणिक उपन्यास।

लोकसेवा प्रकाशन मण्डल, आगरा

—**गौरवी,** रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'। राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह।

—**बन्दी का बेटा,** मनुजेश विद्यावाचस्पति। क्रान्तिकारी सामाजिक उपन्यास।

—**शीशदान,** रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'। पाँच एकांकी नाटकों का संग्रह।

—**सोमनाथ,** रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'। प्रसिद्ध सोमनाथ के मन्दिर की ऐतिहासिक कथा पर लिखा श्रेष्ठ नाटक।

विज्ञान मन्दिर, कलकत्ता

—**दिल की प्यास,** आगा हश्र काश्मीरी। प्रसिद्ध नाटक का पुनर्मुद्रण।

—**लतिका,** गुलाबरत्न वाजपेयी। काव्य-पुनर्मुद्रण।

—**स्त्री-पुरुष,** गुलाबरत्न वाजपेयी। पुनर्मुद्रण।

शिशुज्ञान मन्दिर, इलाहाबाद

—**सात बालोपयोगी प्रकाशन,** प्रत्येक का मूल्य ।)। पृष्ठ सं० २४। (१) अ-र-र-र धम्म, (२) जादूगरनी बुढ़िया, (३) टीपू के खेल, (४) दोनों पिटे, (५) भगा भूत-सा बनकर, (६) मास्टर फूचू, (७) शैतान बन्दर।

संगीत कार्यालय, हाथरस (अलीगढ़)

—**संगीतांजलि भाग २,** संगीत-सम्राट् पं० ओंकारनाथ ठाकुर। विविध रागों की पूरी-पूरी गायकी।

—**संगीत सुधा,** सम्पादक लक्ष्मीनारायण गर्ग। संगीत का विशेष प्रकाशन। इसमें २०० रागों का विवरण पद्यों में दिया गया है।

सद्ग्रन्थ प्रकाशन, दिल्ली

—**सूर साहित्य-दर्पण,** ले० जगन्नाथ राय शर्मा। पृ० सं० लगभग २५०। डिमाई आकार। मूल्य ४॥)

सरस्वती विहार, नागपुर

—**जैमिनीय ब्राह्मण,** डा० लोकेशचन्द्र। वेदों के व्याख्या-स्वरूप ब्राह्मणों में आधारभूत सामवेदीय शाखा का अद्वितीय ग्रन्थ जो पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

—**भोट विनय-वस्तु,** सम्पादक डॉ० रघुवीर। बौद्ध-भिक्षुसंघ की दिनचर्या के विशद विवरण का भोट अर्थात् तिब्बती अनुवाद। इसका संस्कृत-मूल लुप्त होने के कारण अति महत्त्वपूर्ण।

—**सार समुच्चय,** सम्पादक डॉ० रघुवीर। हिन्देशिया में भारतीय संस्कृति के अद्वितीय प्रसार को समझने के लिए अपरिहार्य ग्रन्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—**ईशावास्य उपनिषद्**, ले० श्री विनोबा भावे। मूल उपनिषद्, पद पाठ और अर्थ सहित।

—**मानवता के झरने**, ले० गणेश वासुदेव मावलंकर। बन्दियों के जीवन की हृदयस्पर्शी यथार्थ घटनाएँ।

—**शिष्टाचार**, ले० श्री कंचनलता सब्बरावल। आचरण सम्बन्धी उपयोगी विचार।

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—**धरती के लाल**, रूमानिया के प्रसिद्ध उपन्यास 'दी मड हट ड्वेलर्ज' का श्री वीरेन्द्र त्रिपाठी द्वारा अनुवाद।

साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद

—**गद्यपथ**, श्री सुमित्रानन्दन पन्त। विचारात्मक निबन्धों का संग्रह।

—**महाकवि भूषण**, श्री भागीरथ प्रसाद दीक्षित। आलोचनात्मक ग्रन्थ, संकलन सहित।

—**विचार और वितर्क**, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। विचारात्मक निबन्धों का नवीन संस्करण।

साधना मन्दिर, बनारस

—**दिवालोक**, श्री शम्भूनाथ सिंह की नवीनतम कविताओं का संग्रह। राजकमल से प्राप्य।

स्टुडेन्ट्स स्टोर्स, जबलपुर

—**कारा**, श्री भागवत प्रसाद मिश्र। शाहजहाँ, बहादुरशाह, भगतसिंह, गांधीजी आदि पर काव्य-संग्रह। विद्यार्थियों के लिए उपयोगी।

—**भारतीय शासन**, श्री शंकरधर द्विवेदी। स्वतन्त्र भारत का केन्द्रीय, राजकीय एवम् स्थानीय प्रशासन, रक्षा-विभाग तथा नगर-ग्राम समस्याएँ। विद्यार्थियों के लिए उपयोगी।

—**रसायन, एक अध्ययन**, स्व०श्री इन्द्र बहादुर खरे। रसायन द्वितीय भाग का आलोचनात्मक अध्ययन। मूल्य ३॥)

—**हिन्दुओं के राजनैतिक सिद्धान्त**, श्री रामचन्द्र संघी। डाक्टर घोषालकृत 'ए हिस्ट्री आफ़ हिन्दू पोलिटिकल थ्योरी' का हिन्दी रूपान्तर।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस

—**भारतीय इतिहास का परिचय**, डॉ० राजबली पाण्डेय। भारत का इतिहास।

—**राजस्थानी भाषा की रूपरेखा**, श्री पुरुषोत्तमदास मेनारिया। मूल्य १।)

—**रामायण** [illegible]**त्र**, तुलसीकृत। मूल्य २५)

—**हिन्दी-साहि**[illegible] **और साहित्यकार**, प्रो० सुधाकर पांडेय। हिन्दी-साहित्य [illegible] इतिहास। मूल्य १॥)

हिन्दी-साहित्य भ[illegible]र, लखनऊ

—**काव्य कुसुमावल**[illegible] **की टीका**, तेजनारायण टण्डन। इस नाम की पद्य-पु[illegible]क की अहिन्दी प्रान्तों के लिए सुबोध टीका का दूसरा [illegible]करण।

—**जय-पराजय समीक्षा**, जय[illegible]र नाथ मिश्र। श्री 'अश्क' के प्रथम मौलिक उपन्यास का आलोचनात्मक अध्ययन।

—**प्राचीन पद्य-संग्रह की टीका**, [illegible] योगेन्द्रनाथ शर्मा। हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, की प्र[illegible]शित संग्रह की सरल टीका।

—**संक्षिप्त सेवासदन : एक अध्ययन**, [illegible] खेलावन चौधरी। 'सेवासदन' के पाठ्य-संस्करण [illegible] सरल समालोचना।

हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ

—**संस्कृत के विद्वान् और पण्डित**, रामचन्द्र मालवीय। संस्कृत के विद्वानों के जीवन और उनके कार्यों का संक्षिप्त विवरण।

हिमालय एजेन्सी, कनखल

—**साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण**, श्री किशोरीदास वाजपेयी। आत्मकथात्मक साहित्यिक संस्मरण।

भूल-सुधार

प्रकाशन समाचार के अंक२में पृष्ठ ७९ पर मुद्रित सजनी प्रेस, इलाहाबाद के विज्ञापन में श्री नरसिंह राम शुक्ल का नाम भूल से गलत छप गया है। पाठक शुद्ध कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र

आर० डी० होरा अग्रवाल, [illegible] वनमाली, अंकेक्षण, डिमाई, ४२८, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, ८।।।
इन्द्रदत्त शर्मा, आधुनिक संविधान, डिमाई, ३५५, मालवीय पुस्तक भवन, लखनऊ, ८
एम० पी० गर्ग व रा[illegible]रण, **सरल अर्थशास्त्र**, क्राऊन, ५००, पापुलर बुक डिपो, जयपुर, ५
उदयप्रकाश श्रीवास्[illegible] व कृष्ण प्यारे दुबे, **भारतीय प्रशासन और नागरिक जीवन**, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, ५।।
कृष्णकुमार, [illegible]शास्त्र, क्राऊन, २८४, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद, ४
केदारनाथ [illegible]द, **सार्वजनिक अर्थशास्त्र एवं आर्थिक पुनर्निर्माण**, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, ८
चन्द्रभा[illegible] गुप्त, **आयकर विधान एवं हिसाब लेखे**, क्राऊन, २२६, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, ५
राम[illegible]द्र संघी, **हिन्दुओं के राजनीतिक सिद्धान्त**, क्राऊन, २५४, स्टूडेन्ट्स स्टोर्स, जबलपुर, ४।।।≡)
शंकरधर द्विवेदी, **भारतीय शासन**, क्राऊन, २१२, पु० मु०, स्टूडेन्ट्स स्टोर्स, जबलपुर, २।-)
सक्सेना व हुक्कू, **सरल वाणिज्य प्रणाली**, क्राऊन, ५५०, पापुलर बुक डिपो, जयपुर, ५)
विष्णु अनुग्रहनारायण, **इंग्लैंड का आर्थिक इतिहास**, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, २।।।)
विष्णु अनुग्रह नारायण, **इंग्लैंड का सामाजिक इतिहास**, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, २।।)
विश्वम्भर सहाय, **मार्केट रिपोर्ट्स एवं सारांश लेखन**, क्राऊन, २०८, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, २)

आलोचना, भाषा विज्ञान, साहित्य, साहित्यिक इतिहास

आलोचना पुस्तकमाला, **हिन्दी-गद्य की प्रवृत्तियाँ**, रायल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, २)
आलोचना पुस्तकमाला, **हिन्दी-काव्य की प्रवृत्तियाँ**, रायल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, २)
आलोचना पुस्तकमाला, **हिन्दी के गौरव-ग्रन्थ**, रायल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, २)
कुमुद विद्यालंकार, **मध्यमा हिन्दी पथ-प्रदर्शक**, क्राऊन, ६७६, रीगल बुकडिपो, दिल्ली, ६)
चिन्तामणि शुक्ल, **मध्यमा हिन्दी प्रश्नोत्तर**, क्राऊन, ३७८, रीगल बुक डिपो, दिल्ली, ४)
दीनदयालु गुप्त डॉ०, **सूरप्रभा**, क्राऊन, १५६, विद्या मन्दिर, लखनऊ, १।।)
नरेन्द्र नारायणलाल, **बनफूल**, क्राऊन, ६२, श्री गिरिजा पुस्तकालय, पटना, १।।)
ब्रजरत्नदास, **भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग २ व ३**, डिमाई, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, प्रत्येक का ६)
बालबन्धु, **हिन्दी साहित्य की प्रश्नोत्तरी**, क्राऊन, १५६, पु० मु० विद्यामन्दिर, लखनऊ, २)
भोलानाथ तिवारी, **शब्दों का जीवन**, क्राऊन, १२३, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, २)
पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, **आदर्श और यथार्थ**, क्राऊन, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, २।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव', **हँसता जीवन**, क्राऊन, १८८, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, २)
रामकृष्ण शिलीमुख, **निबन्ध प्रबन्ध**, क्राऊन, ३१८, रीगल बुक डिपो, दिल्ली, ४)
रामरतन भटनागर डॉ०, **प्रबन्ध प्रभाकर**, क्राऊन, २५६, रामनारायणलाल, इलाहाबाद, २।)
शिवप्रसाद शास्त्री, **शब्द-रचना प्रदीप**, क्राऊन, १६२, माधव पुस्तकालय, दिल्ली, २)
सुरेशचन्द्र गुप्त, **आधुनिक कवियों की काव्य-भावना**, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, ११।)
लक्ष्मीनारायण टंडन रामखेलावन चौधरी, **अयोध्याकाण्ड एक अध्ययन**, क्राऊन, ६[illegible], विद्या मन्दिर, लखनऊ, १)

इतिहास, संस्कृति

ब्रजरत्नदास, अनु०, **मुगल दरबार भाग ४**, क्राऊन, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, ५)
मोतीचन्द्र डाक्टर, **सार्थवाह**, रायल, २६०, २० आर्ट-प्लेट, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, ११)
हरिहर प्रसाद राय, **प्रवेशिका विश्व इतिहास**, क्राऊन, २४८, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, २)

उपन्यास

अमृतराय, **बीज**, क्राऊन, ५२७, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, ७॥)
उग्र, पांडे बेचनशर्मा, **चाकलेट**, क्राऊन, १८०, टण्डन ब्रदर्स, कलकत्ता, ३॥)
ओंप्रकाश, **भूखा इन्सान**, क्राऊन, उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस, २॥।)
गोविन्दसिंह, **थपेड़े**, क्राऊन, उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस, २॥)
गोविन्दसिंह, **हम लड़ेंगे**, क्राऊन, उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस, ३)
जगन्नाथ दास गुप्त, **घेरे के भीतर**, क्राऊन, १२८, श्री गांधी ग्रन्थागार, बनारस, २)
द्वारका प्रसाद एम० ए०, **सुनील एक असफल आदमी**, क्राऊन, २८६, टण्डन ब्रदर्स, कलकत्ता, ५)
नकाबपोश भेदी, **बूढ़ाफकीर**, क्राऊन, १५२, देश सेवा मण्डल, इलाहाबाद, १॥)
रमेशचन्द्र झा, **चीखती दीवारें**, क्राऊन, ११२, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस, १॥)
रमेशचन्द्र झा, **जीवनदान**, क्राऊन, ११२, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस, १॥)
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु०, **आँख की किरकिरी**, क्राऊन, ३५०, बिहार प्रकाशन मन्दिर, बनारस, ३॥)
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु०, **राजर्षि**, क्राऊन, २००, बिहार प्रकाशन मन्दिर, बनारस, २॥)
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु०, **नौकाडूबी**, क्राऊन, ३५०, बिहार प्रकाशन मन्दिर बनारस, ३॥)
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु०, **मंझली दीदी**, क्राऊन, १२०, पु० मु०, श्री गांधी ग्रन्थागार, बनारस, १॥)
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु०, **शुभदा**, क्राऊन, २००, श्री गांधी ग्रन्थागार, बनारस, २॥)
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु०, **सविता**, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया, ४)
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु०, **देवदास**, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया, १॥)
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० **विप्रदास**, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया, २॥)
सत्यप्रसाद भट्ट, **तूफान से पहले**, क्राऊन, उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस, ३॥)
साधुशरण 'पुष्प', **मालिन**, क्राऊन, ४५०, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, ५)
सुशील, **आंधियाँ**, क्राऊन, २०८, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस, ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

कालिदास, अनुवाद : स० प्रो० संसारचन्द, मेघदूत, सम्पूर्ण, रायल, ४६२, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस,
भगवतप्रसाद मिश्र, **कारा**, क्राऊन, ७२, स्टूडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर,
श्यामसुन्दर 'अशान्त', **मधुमाया**, क्राऊन, ४८, शान्ति सन्देश कार्यालय, मुंगेर,
श्यामसुन्दर 'अशान्त', **नया मसीहा**, क्राऊन, ८४, शान्ति सन्देश कार्यालय, मुंगेर,
वीरेन्द्र प्रसाद जैन, **दिव्य कविताञ्जलि**, क्राऊन, २८, महावीर प्रकाशन, अलीगंज (एटा)

कहानी

व्रजेश, **अन्तर्द्वन्द्व**, क्राऊन, मध्यांचलव प्रकाशन मन्दिर, सुलतानिया (म० भा०),
मोपासाँ, अनु, **पन्द्रह कहानियाँ**, क्राऊन, १२८, ज्ञान मन्दिर, कानपुर,
राहुल सांकृत्यायन, **राजस्थानी रनिवास**, क्राऊन, ३४६, राहुल प्रकाशन, मसूरी,

चिकित्सा-विज्ञान

प्रेम नारायण शर्मा, डा०, **डाक्टरी गाइड**, क्राऊन, ३२०, माधव पुस्तकालय, दिल्ली,
हरिशरणानन्द वैद्य, **आसव विज्ञान**, क्राऊन, २५०, आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला, अमृतसर,
हरिशरणानन्द वैद्य, **कूपीपक्व रस-निर्माण विज्ञान**, क्राऊन, ४५०, आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला, अमृतसर,
हरिशरणानन्द वैद्य, **भस्म विज्ञान**, क्राऊन, ६००, पु० मु०, आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला, अमृतसर,
हरिशरणानन्द वैद्य, **त्रिदोष मीमांसा**, क्राऊन, २५०, पु० मु०, आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला, अमृतसर,

धर्म, संस्कृति, चरित्र-निर्माण, आत्मचरित

घनश्यामदास बिड़ला, **ध्रुवोपाख्यान**, क्राऊन, २४, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,
जयदयाल गोयनका, **महाभारत के कुछ आदर्श पात्र**, क्राऊन, १२८, पु० मु०, गीताप्रेस, गोरखपुर,
देवदत्त शास्त्री, **स्मृतियों की छाँह में**, क्राऊन, १२०, जननी कार्यालय, इलाहाबाद,
बलदेव उपाध्याय, **भागवत सम्प्रदाय**, क्राऊन, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस,
वेदव्यास, **श्रीमद्भागवत महापुराण**, क्राऊन, ७६६, पु० मु०, गीताप्रेस, गोरखपुर,
सत्यव्रत स्वामी, **महावीर का अन्तस्तल**, क्राऊन, ३८०, सत्याश्रम, वर्धा,
हनुमानप्रसाद पोद्दार सं० **गीता दैनन्दिनी १९५४**, ५½" × ३⅞", ४१६, गीता प्रेस, गोरखपुर,
हनुमानप्रसाद पोद्दार सं०, **प्रत्येक अध्याय के महात्म्य वाली गीता**, क्राऊन, ४२४, गीताप्रेस, गोरखपुर,
हनुमानप्रसाद पोद्दार सं०, **आरती संग्रह**, क्राऊन, ७२, पु० मु०, गीताप्रेस, गोरखपुर,
हनुमानप्रसाद पोद्दार सं०, **बड़ी रामायण**, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर,
हनुमानप्रसाद पोद्दार सं०, **रामायण सटीक**, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर,
तुलसीदास गो०, **रामायण गुटका**, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर,

नाटक

डी० एल० राय, अनु० रूप नारायण पाण्डेय, **चन्द्र गुप्त**, क्राऊन, १६०, राष्ट्रीय प्रकाशन मंदिर, लखनऊ
नरेन्द्रनारायण लाल, **अमर सिपाही**, क्राऊन, ४८, श्री गिरिजा पुस्तकालय, पटना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, **अपना पराया**, डिमाई, ६६, अशोक प्रेस, पटना, २)
राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, **धर्म की धुरी**, डिमाई, ६६, अशोक प्रेस, पटना, २)
रूपकान्त शास्त्री, **सर्वोदय**, क्राऊन, १११ ग्राम सन्देश प्रकाशन, सूर्यगढ मुंगेर, १)
लक्ष्मीनारायण मिश्र, **वितस्ता की लहरें**, क्राऊन, १२८, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १॥)
सीताराम चतुर्वेदी, **अजन्ता**, क्राऊन, १००, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, १।)

बालोपयोगी, किशोर-साहित्य, जीवनियाँ

कमलचन्द्रदास, **अपना पराया**, क्राऊन, १६२, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना, १।)
काशीनाथ अग्रवाल, **सुनहले नगर में टार्जन**, क्राऊन, १६०, श्यामलाल हीरालाल, मथुरा, १)
काशीनाथ अग्रवाल, **टार्जन और जवाहरात की घाटी**, क्राऊन, १६०, श्यामलाल हीरालाल, मथुरा, १)
काशीनाथ अग्रवाल, **पाताल में टार्जन**, क्राऊन, १४४, श्यामलाल हीरालाल, मथुरा, १)
जगन्नाथ प्रभाकर, **चार लाल बुझक्कड़**, फुलस्कैप ८ वो, ३२, नैश्नल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, ॥।)
जगपति चतुर्वेदी, **आकाश-लोक**, क्राऊन, ११२, जनता ग्रन्थालय, मुजफ्फरपुर, १॥)
जाकिर हुसैन डॉ०, **ईमानदारी**, क्राऊन, ३२, पु० मु०, मकतबा जामिया, दिल्ली, ॥)
देवदत्त शास्त्री, **भूमिका**, क्राऊन, ८०, जननी कार्यालय, इलाहाबाद, ॥।)
देवदत्त शास्त्री, **चन्द्रशेखर आज़ाद**, क्राऊन, १६०, जननी कार्यालय, इलाहाबाद, १॥)
नरेन्द्रनारायण बाल, **कंगालों की टोली**, क्राऊन, ५२, श्री गिरिजा पुस्तकालय, पटना, ॥।)
पुरुषोत्तमलाल, **एक दो तीन**, क्राऊन, १६, नैश्नल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, ॥)
बालभद्र, **गोलाठस**, क्राऊन, ३२, सुशील कार्यालय, दिल्ली, ।=)
बालभद्र, **हनुमान की हूँ**, क्राऊन, ३२, सुशील कार्यालय, दिल्ली, ।=)
बालभद्र, **मेंढक की कचहरी**, क्राऊन, ३२, सुशील कार्यालय, दिल्ली, ।=)
माधव, **स्वर्ग पर चढ़ाई**, फुलस्कैप ८ वो, २४, नेश्नल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, ॥=)
यमुनाधर मिश्र, **श्रम ही जीवन है**, क्राऊन, ११६, जनता ग्रन्थालय, मुजफ्फरपुर, १।)
लक्ष्मीनारायण शर्मा, **बिलाड़ और चूहा**, क्राऊन, २०, तारामण्डल, पटना, ।)
शकुन्तला मसानी अनु० रामचन्द्र टण्डन, **जवाहरलाल की कहानी**, १०४, ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई, १॥।)
शकुन्तला देवी, **पंचतन्त्र की कहानियाँ भाग ३**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १)
शुकदेव दुबे, **आचार्य विनोबा भावे**, क्राऊन, ५२, बालशिक्षा-समिति, पटना, ॥)
श्री शंकर, **कहानी से मनोरंजक सच्ची घनटाएँ**, क्राऊन, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, १।)

भूगोल

रामनारायण मिश्र, **उत्तर प्रदेश**, क्राऊन, ४५०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद, ५)
रामनारायण मिश्र, **पंजाब प्रदेश**, क्राऊन, ४८४, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद, ५)
रामनारायण मिश्र, **राजनैतिक भूगोल**, क्राऊन, ४००, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद, ५)

मनोविज्ञान

नारायण प्रसाद अरोड़ा, **बच्चों से व्यवहार**, क्राऊन, १७६, ज्ञान मन्दिर, कानपुर, १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम सूरजलाल व रामगोपाल मिश्र, साधार[illegible] मनोविज्ञान, क्राऊन, ४४४, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद, ७॥

विविध

अमृतराय, सुबह के रंग, क्राऊन, २००, (यात्रा विवरण), हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २)
गंगाप्रसाद मिश्र व कृपाशंकर मिश्र, आ[illegible]निक पत्र व्यवहार पद्धति, डिमाई, १६२, हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ, ३)
चन्द्रोदय दीक्षित, ग्रामोद्योग और पंच[illegible]यत क्राऊन, १२०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ, १॥
जगपति चतुर्वेदी, प्रकाश की ओर, [illegible]ऊन, १६२, (वैज्ञानिक) जनता ग्रन्थालय, मुजफ्फरपुर, १॥
जयदयाल गोयनका, स्त्रियों के लि[illegible] कर्तव्य शिक्षा, गीता प्रेस, गोरखपुर,
देवेशचन्द्र दास, रजवाड़ा, १५०, डिमाई, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, ५)
पब्लिकेशन्स डिवीजन, पहली [illegible]चवर्षीय योजना की प्रगति, डिमाई, २६, भारत सरकार, दिल्ली, ।)
पब्लिकेशन्स डिवीजन, रेडि[illegible] संग्रह, रायल, ६६, भारत सरकार, दिल्ली, ॥)
मोतीलाल सेठ, कृषि ह[illegible]कारक कीट पतंग, रायल, ८८, देशसेवा मण्डल, इलाहाबाद, १॥)
राजेन्द्रप्रसाद डॉ०, गां[illegible] जी की देन, क्राऊन, ११२, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, १॥)
रूपकान्त शास्त्री, [illegible]हादेव झा, बिनोबा प्रकार, क्राऊन, २०, ग्राम सन्देश प्रकाशन सूर्यगढ़, मुंगेर, =)
सुबोध अदाव[illegible] [illegible]रतीय शिक्षा सिद्धान्त, क्राऊन, ३५०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद, ८)
सोवियत क[illegible]युनिस्ट पार्टी, सोवियत-संघ की कम्युनिस्टपार्टी के पचास वर्ष, क्राऊन, ४८, प्राग्स पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, ।)
हनुमान[illegible]साद पोद्दार, विवाह में दहेज, क्राऊन, १६, गीता प्रेस, गोरखपुर, ॥)

विज्ञान

जिन्दल व कुमार, अनु० रामकीर्तिशरण, अकार्बनिक रसायन-शास्त्र, डिमाई, ८२३, रामनारायणलाल, इलाहाबाद, ७)
महेन्द्र नारायण वर्मा, प्रारम्भिक यान्त्रिकी, (गणित) क्राऊन, ११६, रामनारायणलाल, इलाहाबाद, १॥)

यशस्वी कवि, नाटककार तथा उपन्यासकार

श्री उदयशंकर भट्ट

की कृतियों के प्रकाशक

★ **मसिजीवी प्रकाशन** ★

नई दिल्ली

उपन्यास

नये मोड़ ३॥)

नाटक

विद्रोहिणी अम्बा १॥)

सगर विजय २)

इस मास का प्रकाशन

पर्दे के पीछे (आठ एकांकी) ३)

★

एकाधिकारी वितरक

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं के लिए सर्वोत्तम लाभार्थ पुस्तकें

[सं० २०१० (सन् १९५३) के नए पाठ्यक्रम के अनुसार नई पुस्तकें]

साहित्य रत्न प्रथम खण्ड के लिए

- उत्तमा दिग्दर्शन (नया द्वितीय संस्करण) ले० श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०, श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०, श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा द्वारिकेश एम० ए० मूल्य ७॥)
- उत्तमा प्रश्नोत्तरी सं० २००२ से २००९ तक। ले० श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० (पृष्ठ संख्या लगभग १५००) मूल्य १५)
- कामायनीः आलोचनात्मक अध्ययन (प्रश्नोत्तर में) ले० श्री भारत भूषण 'सरोज' एम० ए० १)
- प्रियप्रवास ,, ,, १)
- साकेत ,, ,, १॥)
- चिन्तामणी दर्शन ले० श्री हरिहरनाथ टंडन एम ०ए० ३)
- उद्धवशतक समीक्षा ले० श्री रामनारायण मिश्र एम० ए० १॥)
- हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रश्नोत्तर में) ले० श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० २॥)

साहित्य रत्न द्वितीय खण्ड के लिए

- उत्तमा दिग्दर्शन (नया प्रथम संस्करण) ले० श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०, श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०, श्री द्वारिका प्रसाद शर्मा 'द्वारिकेश' एम० ए० मू० ६) विशेष कवि सहित मू० ८)
- उत्तमा प्रश्नोत्तरी ले० श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०, सं० २००२ से २००९ तक ११)
- भाषा विज्ञान तत्व ले० श्री प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०, १॥)
- साहित्यालोचन सिद्धान्त ,, १॥)
- भाषा विज्ञान (प्रश्नोत्तर से) श्री भारत भूषण 'सरोज' एम० ए० २॥)
- तुलसीदास ,, ,, २॥)
- सूरदास ,, ले० श्री वासुदेव शर्मा 'शास्त्री' २॥)
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,, ले० श्री रामजीलाल वचौतिया एम० ए०, २॥)
- कवि प्रसाद ,, ले० श्री शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० २॥)
- गद्यकार प्रसाद ,, ,, २॥)
- साहित्य समीक्षांजलि (२७ भिन्न भिन्न उच्चकोटि के विद्वानों के लिखे २९ निबन्धों का संकलन) सम्पादक—डॉ० सुधीन्द्र ४)

मध्यमा के लिए

- मध्यमा दिग्दर्शन (नया तीसरा संस्करण) ले० श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री, एम० ए०, ३॥)
- मध्यमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी सं० २००३ से २००९ तक ४॥)
- ,, इतिहास ,, सं० २००४ से २००९ तक ४॥)
- ,, भूगोल ,, सं० २००४ से २००८ तक ४)
- ,, अर्थशास्त्र ,, सं० २००४ से २००९ तक ४)
- ,, कृषिशास्त्र ,, सं० २००४ से २००८ तक २)
- ब्रज माधुरी सार टीका (नए पाठ्यक्रम के अनुसार ७ कवियों की टीका) २॥)
- कवितावली (टीका सहित) १॥)
- हिन्दी निबन्ध ३)
- रस अलंकार पिंगल २॥)
- शैलियाँ १॥)

प्रथमा के लिए

- प्रथमा दिग्दर्शन ले० श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री ३॥)
- काव्य संग्रह टीका भाग १ ३)
- ,, भाग २ ४)
- सूर पदावली टीका ॥=)
- प्रश्नोत्तरी, हिन्दी, इतिहास, भूगोल आदि अन्य पुस्तकों के लिए सूचीपत्र अलग से मँगाइए।

इनके अतिरिक्त सम्मेलन की पाठ्य पुस्तकों तथा अन्य साहित्यिक पुस्तकों के लिए सूचीपत्र मंगाइए।

विनोद पुस्तक मन्दिर, हिन्दी पुस्तकों के विक्रेता, हास्पिटल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D—594

जैनेन्द्र की कहानियाँ १—फाँसी, जय सन्धि, स्पर्धा तथा अन्य क्रान्तिकारी कहानियाँ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ २—पाजेब, दो चिड़िया तथा अन्य वात्सल्य-मय प्रेम की मार्मिक कहानियाँ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ ३—नीलम देश की राजकन्या, लाल सरोवर तथा दार्शनिक सत्यों की प्रतीकात्मक कहानियाँ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ ४—घुंघरू, पत्नी, ब्याह, भाभी तथा अन्य प्रेम-सम्बन्धी कहानियाँ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ ५—परदेशी, नादिरा, एक रात, उर्वशी आदि सौन्दर्य की सरस कहानियाँ।

जैनेन्द्र की कहानियाँ ६—चलित चित्त, कः पन्थाः, साधु का हठ आदि मनोवैज्ञानिक व दार्शनिक कहानियाँ।

प्रत्येक का मूल्य ३॥)

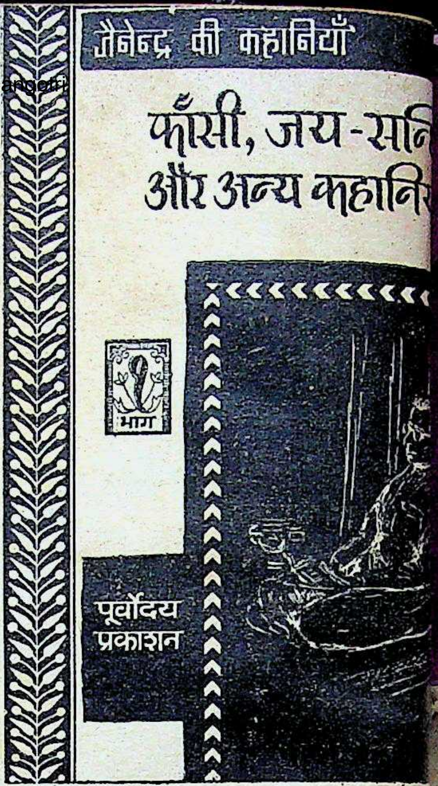

तीन उपन्यास

व्यतीत ३॥)
विवर्त ४॥)
सुखदा ४)

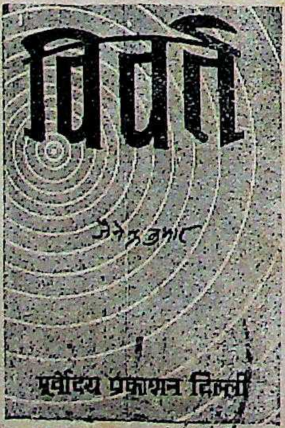

काम, प्रेम और परिवार

सेक्स का जीवन में क्या स्थान है, वह व्यक्ति और समाज के निर्माण में किस रूप में योग देता है—आदि प्रश्नों का मौलिक समाधान। मूल्य ३)

प्रस्तुत प्रश्न

जीवन और जगत् का दार्शनिक सहज विवेचन। मूल्य ४॥)

पाप और प्रकाश

टालस्टॉय के प्रसिद्ध नाटक 'दी पावर आफ़ डार्कनेस' का कलात्मक अनुवाद। मूल्य २॥)

साहित्य का श्रेय और प्

साहित्य और कला के पहलुओं पर मौलिक दृष्टि समीक्षात्मक निबन्ध। मूल्य

पूर्वोदय

सांस्कृतिक निबन्ध। मूल्य ४)

मन्थन

तात्विक निबन्धों का संग्रह। मूल्य ५)

ये और वे

साहित्यकारों और नेताओं के संस्मरण और रेखाचित्र। मूल्य ५)

सोच-विचार

कहानियों से भी रसपूर्ण निबन्ध। मू

पूर्वोदय प्रकाशन ७, दरियागंज, दिल्ली

श्री देवराज ... राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, १ फ़ैज़ बाजार दिल्ली के लिए ... दरियागंज दिल्ली से मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

ंक २॥) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

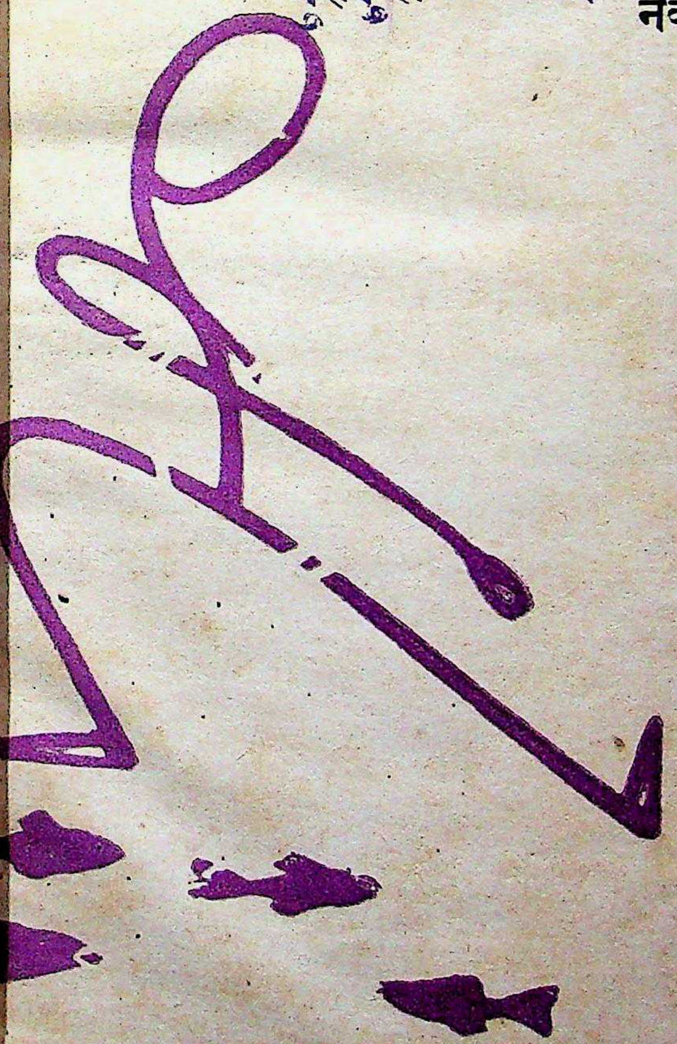

नवीनतम उत्कृष्ट उपन्यास

सागर, लहरें और मनुष्य

लेखक

श्री उदयशंकर भट्ट

प्रकाशक

मसिजीवी प्रकाशन

वितरक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष
(ले०—भगवान दास मित्तल)
कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार पर नवीन ग्रन्थ । मूल्य ४) डाक खर्च ॥।=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष
भूत भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें । मूल्य ६) डाक खर्च १।)

ज्योतिष विज्ञान
(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी)
ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक है । मूल्य ६) डाक खर्च ॥।=)

व्यापार चमत्कार
व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ । मूल्य ५) डाक खर्च ॥।=)

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बेसिक ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज ३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १)
६. इं० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्स ३)
७. सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग ६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
१०. आयल इंजन गाइड ६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड ४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
१५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईंडिंग ६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग ६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स ६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन) ४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साजी ४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ७॥)
३४. वीविंग गाइड ४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा २॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी) ५)
३७. B " " " इंगलिश ५)
३८. A जन्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी) १॥)
३८. B " " " इंगलिश १॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर १०)
४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड) ६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो ३॥)
४५. मोटर प्राइमर १।)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४७. बिना बिजली का रेडियो १।)
४८. बच्चों का रेडियो १।)
४९. बच्चों का टेलीफोन ॥।)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल १।)
५१. लोकल रेडियो सैट १।)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान १।)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
५४. बच्चों का वायरलैस १।)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे) १०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन (गृहनिर्माणकला) १०)
५७. सोप मेकर्ज गाइड ६)
५८. मेटल पालिश २॥)
५९. फरनीचर बुक १०)
६०. पम्पिंग गाइड
६१. जनरल मैकेनिकल गाइड
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
६३. स्टीम टरबाईन
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साजी २॥)
२. प्लास्टिक गाइड २॥)
३. बूट पालिश २॥)
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना २॥)
५. कन्फेक्शनरी २॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) २॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा १।)
९. पैन्ट्री का काम ४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ४)
११. परफ्यूमरी मास्टर २॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साजी) २॥)
१३. आतिशबाजी का व्यापार २॥)
१४. हलवाई मास्टर २॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
१६. पान की दुकान २॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग) २॥)
१८. कुकरी बुक ४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार २॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
२२. फिनायलसाजी (कीड़े मार दवाइयाँ २॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाजी) २॥)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना २॥)
२५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना २॥)
२६. स्लेट और स्लेट लीड पैंसिल बनाना २॥)
२७. रबड़ की मोहरें बनाना २॥)
२८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाना २॥)
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़ ६)
३०. सिलाई कटाई गाइड १।)
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार ४॥)
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा) २॥)
३३. हरफन मौला १॥)
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग २॥)
३५. शर्बत विज्ञान २॥)
३६. बुक बाईंडिंग ३)
३७. दर्जी मास्टर २॥)
३८. व्यापार दस्तकारी २॥)
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान ३)
४०. वीविंग कैल्कुलेशन २)
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई ३॥)
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन ३॥)
४३ पोल्ट्री फार्मिंग ४)
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री ४)
४५ पोल्ट्री सर्जन ४)

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशांत लिखित १५ पुस्तकें

१. आलू की खेती ॥)
२. टमाटर की खेती ॥)
३. गोभी की खेती ॥)
४. जीरा, धनिया, अजवाइन ॥)
५. तरकारियों की खेती १॥)
६. अच्छे बीज ॥)
७. अच्छी खाद २॥)
८. कपास की खेती १)
९. गन्ने की खेती ॥)
१०. फूल-फुलवारी २॥)
११. धान की खेती १॥)
१२. संतरे की बागबानी २॥)
१३. आम की बागबानी ३)
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान ६)
१५. तम्बाकू की खेती ॥)
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड) १॥)
१७. फलों की खेती ३)
१८. तरकारी साग भाजी की खेती ३॥)
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी ६)

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ट का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगावें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :

: अंक ५ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

गत वर्ष ८ दिसम्बर के दिन प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली में फ़ैडरेशन आफ़ पब्लिशर्स एंड बुक्सेलर्स असोसिएशन्स इन इंडिया के वार्षिक अधिवेशन के सम्मुख भाषण देते हुए कहा कि लेखकों और प्रकाशकों के बीच सदैव संघर्ष रहता आया है और देश के प्रकाशक, मुख्यतया हिन्दी के प्रकाशक, लेखकों का शोषण करते आए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रकाशन और पुस्तक-बिक्री का धन्धा लेखक पर ही आश्रित है, इसमें प्रकाशन का शिल्प तथा विक्रय की कला का स्थान लेखन की अपेक्षा गौण है।

श्री जवाहरलाल नेहरू ने 'लेखक' के रूप में ही यह भाषण देते हुए लेखन-प्रकाशन बिक्री के व्यवसाय-चक्र पर केवल 'लेखक' के दृष्टिकोण से विचार किया है। किसी सार्वजनिक संस्था ने उनकी पुस्तकों के अनुवाद छापकर उन्हें प्राप्य पारिश्रमिक या रॉयल्टी नहीं दी, इस तथ्य को भी श्री नेहरू ने अपने भाषण में घोषित किया। लेखकों और प्रकाशकों के बीच के सम्बन्धों पर सार्वजनिक रूप से विचार व्यक्त करते हुए इस प्रकार वह वस्तुगत दृष्टिकोण नहीं अपनाए रख सके। अपने या कुछ दूसरे लेखकों के व्यक्तिगत कटु अनुभवों के कारण किसी समूचे वर्ग के प्रति विषम धारणा बना लेना तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता।

लेखक-वर्ग हमेशा से वाचाल (वोकल) रहा है और रहेगा भी। जिन प्रकाशकों को लेखकों की ज्यादतियाँ सहनी पड़ी हैं, उनके उदाहरण कम नहीं हैं, उनकी शिकायतों का ढिंढोरा न कभी उन्होंने पीटा है, न किसी को उन्हें सुनने की फुरसत रही है। यदि श्री नेहरू के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति ने प्रकाशक-वर्ग पर ऐसे लांछन लगाए होते तो हम आज वह सब कहने पर मजबूर न होते जिसे कहने-लिखने पर प्रकाशकों को सदा से संकोच रहा है।

जिन लेखकों के शोषण का आरोप प्रकाशकों पर व्यापक रूप से लगाया गया है, उनके एक खासे हिस्से से श्री जवाहरलाल नेहरू परिचय पा लें तो अच्छा होगा। हिन्दी-संसार के बड़े-बड़े नामी लेखक अपने छुटभैयों से, और विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक हुए तो अपने विद्यार्थियों से, पुस्तकें लिखवा कर, नाम रखने को उन्हें फूटी कौड़ी देकर, भरपूर पारिश्रमिक स्वयं पा रहे हैं, यह कौन नहीं जानता? कहा जाता है कि कई स्वनामधन्य लेखकों ने अपनी एक ही पांडुलिपि की प्रतिलिपियों को विभिन्न प्रकाशकों के हाथ एक ही दिन में बेचा और पैसे वसूले हैं। आए दिन लेखकों द्वारा अन्य सम्मानित लेखकों के विरुद्ध सामग्री की चोरी के आरोप इधर-उधर प्रकाशित होते रहते हैं। इंगलैण्ड और अमरीका से आने वाली अंग्रेजी की पत्रिकाओं में छपी कविताओं और लेखों के अनुवाद अपने नाम से छपवाकर कितने ही कवि और आलोचक हिन्दी के मंच पर इतराकर डोल रहे हैं, यह कितने ही कवि और आलोचकों का दूसरों के बारे में दावा है। प्रकाशकों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार कितने ही लेखकों ने अग्रिम प्राप्त किया और उसे पी गए। सजग पाठकों का यह भी कहना है कि कई एक सुप्रसिद्ध लेखकों ने अपने कथा-निबन्धों के संकलनों को विभिन्न नामों से प्रकाशित करवाया है, अथवा उनमें दो-एक नई कृतियों को जोड़कर नई-से-नई पुस्तकों का झांसा देकर उन्हें ठगा है।

लेखक किसे कहते हैं! क्या उन्हीं को जिनके व्यवहार की एक झलक यहाँ दी गई है! इन्हीं लोगों द्वारा की गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकायतें श्री नेहरू तक पहुँचती हैं। आज कागज पर कुछ पंक्तियाँ लिखने वाला तथा उन्हें किसी तरह छपवा लेने में समर्थ प्रत्येक व्यक्ति अपने को 'लेखक' मानता है, फिर चाहे उसका लिखा हुआ किसी दुःस्वप्न लेकर उठते हुए व्यक्ति की बड़बड़ाहट के ही बराबर हो, अथवा केवल उसके अन्तश्चेतन की आदिम और असामाजिक प्रवृत्तियों से उत्प्रेरित हो, अथवा उसकी कृतियों में आशा और आस्था को जगाने वाले अथवा मानवीय सहानुभूति और साहचर्य के क्षेत्र को बढ़ाने वाले तत्त्वों का नितान्त अभाव हो। जिन लेखकों के विषय में ये शब्द नहीं कहे जा सकते, वे हिन्दी-संसार में इने-गिने ही हैं और उनकी ओर से कब, किसकी शिकायत हुई है? शोषण की शिकायत तो नवोदित व्यवसायी-लेखक द्वारा ही की जाती है जो अपने लिखने के बल पर जीना चाहता है, जो कि आज की परिस्थितियों में सम्भव नहीं है।

आज की परिस्थितियाँ क्या हैं—देश में अनपढ़ों का भारी अनुपात, जनता की हीन क्रयशक्ति, नैतिक और सांस्कृतिक ह्रास की पराकाष्ठा। देश के पढ़े-लिखे लोगों में, विशेषकर हिन्दी के संसार में, बहुत ही कम पुस्तकें पढ़ने के

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन!

अवधी-कोष

संपादक: श्री रामाज्ञा द्विवेदी

- जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम चरण है।
- इसमें मूल शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनसे बनने वाले संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि तथा विभिन्न जिलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिये गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।
- व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोक-गीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और बढ़ गई है।
- कोष नितांत संग्रहणीय है।

रायल अठपेजी आकार :: २५६ पृष्ठ :: एंटिक कागज

सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद (उ० प्र०)

आदी हैं; खरीदकर पढ़ने वालों का भाग तो प्रायः नगण्य है। प्रकाशक फलस्वरूप किसी पुस्तक की एक या दो हज़ार पुस्तकें छापता है और उन्हें दो से पाँच वर्ष तक बेच पाता है। ऐसी पुस्तकों से लेखकों को जो भी लाभांश मिलता है, वह इतना कम होता है कि जीविका के किसी अन्य साधन के न रहने पर 'लेखक' को भूखों मरना पड़ता है। पर इसमें दोष क्या प्रकाशक का है? दोष समाज की उस व्यवस्था का है जिसने अपने नागरिकों को पढ़ाया-लिखाया नहीं, अज्ञान के गर्त में सदियों से गिरा रहने दिया। दोष राष्ट्रीय स्तर पर उस नैतिक और सांस्कृतिक दैन्य का है जिसके परिणामस्वरूप हम लोग कल्पना-जगत् की पलायनवादी फिल्मों को देखने के लिए पैसा जुटा लेते हैं और झकझोर के चेतनता की ओर अग्रसर करने वाले यथार्थपरक साहित्य के प्रति उदासीन रहते हैं। किताबें बिकती ही नहीं तो लेखक को और प्रकाशक को भी, मिलेगा क्या, और कहाँ से?

इसका व्यावसायिक पक्ष भी विचारणीय है। सामान्य पुस्तकों की इतनी कम बिक्री और परिणाम में कम मुनाफ़ा होने के कारण प्रकाशन-व्यवसाय में 'न' के बराबर पूँजी लगी है। हिन्दी में एक भी पूँजीपति प्रकाशक नहीं। आवश्यकता से नितान्त कम पैसा लगाकर, मुद्रण और संयोजन के आधुनिक साधनों के महान् अभाव में हिन्दी प्रकाशक ने एकमात्र अपने श्रम और अध्यवसाय से प्रकाशन की गौरवपूर्ण परम्परा बना ली है।

श्री जवाहरलाल नेहरू के भाषण से हिन्दी-प्रकाशन व्यवसाय को अपनी कठिनाइयों से उबारने वाले कोई सुझाव नहीं प्राप्त हुए; अपने को 'अमृतस्य पुत्राः' कहने वाले हिन्दी के लेखकों के प्रकाशकों से सम्बन्ध अवश्य बिगड़े हैं और बिगड़ेंगे। श्री नेहरू की स्थिति के व्यक्ति से और समन्वयात्मक, अधिक रचनात्मक वक्तव्य की अपेक्षा थी।

●

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २॥)

मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्यसमिति की एक साधारण बैठक दिल्ली में २९ नवम्बर, १९५५ ई० को हुई।

पिछले निश्चयों में से जो कार्यान्वित नहीं किए जा सके, उनके सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री ने सदस्यों को सूचित किया कि संघ का वार्षिक अधिवेशन किन परिस्थितियों में ६ और ७ नवम्बर, ५५ को इलाहाबाद में नहीं बुलाया जा सका। बनारस के 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन' के प्रधान मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र बेरी, जिन्होंने दोनों संस्थाओं के सम्मिलित अधिवेशन के लिए निमन्त्रण पर हस्ताक्षर करने थे, अपनी व्यस्तताओं के कारण विचार-विमर्श के लिए बनारस से इलाहाबाद नहीं आ सके। कमीशन सम्बन्धी प्राप्त विचारों का विश्लेषण इसलिए नहीं प्रस्तुत किया जा सका कि जिस महोदय को यह कार्यभार सौंपा गया था, वह रुग्ण हो गए। पुस्तकों की सरकारी खरीद के टेंडर सिस्टम द्वारा होने के विरुद्ध जो शिष्ट-मण्डल केन्द्र के मन्त्रियों के पास संघ की ओर से जाना था, उसके लिए लोक-सभा के सदस्यों की स्वीकृति कार्यालय की अत्यधिक व्यस्तता के कारण नहीं प्राप्त की जा सकी।

प्रधान मन्त्री ने सूचना दी कि "अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ" (स्विट्ज़रलैंड) की सदस्यता के लिए ५०० स्विस फ़ैंक की मांग हुई है। सदस्यों ने इसे स्वीकार किया और प्रधान मन्त्री को आदेश दिया कि यह रकम भेजने की व्यवस्था कर दी जाय।

"अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन" (बनारस) व संघ के सदस्यों—श्री मार्तण्ड उपाध्याय, श्री देवनारायण द्विवेदी, श्री वाचस्पति पाठक और श्री ओंप्रकाश—ने जो दोनों संस्थाओं के एकीकरण की बातचीत की है, उसका विस्तृत विवरण प्रधान मन्त्री ने सदस्यों के सम्मुख उपस्थित किया। निश्चय किया गया कि कार्यसमिति की यह बैठक बनारस के सम्मेलन के कार्यकर्ताओं के साथ किये गए निश्चयों का समर्थन करती है।

लोकसभा के पिछले अधिवेशन में कापीराइट के एक नये कानून के मसविदे को प्रस्तुत किया गया है। लेखकों और प्रकाशकों के हित के लिए कापीराइट के एक सुविचारित कानून की परम आवश्यकता है और इस दृष्टि से अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्यसमिति की यह बैठक इस प्रयास का स्वागत करती है।

कार्यसमिति की दृष्टि में प्रस्तुत कापीराइट की कई धाराएँ-उपधाराएँ ऐसी हैं जिनसे बुद्धिभ्रम पैदा हो सकता है, लेखकों और प्रकाशकों के सम्बन्धों में नई उलझनें उठ खड़ी हो सकती हैं और ज्ञान के प्रसार में भी बाधा उपस्थित हो सकती है।

कापीराइट के कानून के इस प्रारूप पर विस्तार से विचार के लिए कार्यसमिति दिल्ली, इलाहाबाद और बनारस में सामूहिक प्रकाशकीय विचार के लिए क्रमशः श्री दीनानाथ, श्री ओंप्रकाश और श्री देवनारायण द्विवेदी को संयोजक नियुक्त करती है तथा उन्हें अधिकार देती है कि वे अपने-अपने नगरों के प्रकाशकों के इस सम्बन्ध में विचार जानने के लिए उपसमितियाँ बनाएँ और १५ दिन के अन्दर इन उपसमितियों के विचार संघ के इलाहाबाद के कार्यालय के पास भेज दें।

संघ का दिल्ली-स्थित कार्यालय इस प्रकार इकट्ठे किये गए विचारों को एवं प्रकाशकीय मन्तव्य को अधिकारियों तक पहुँचाने के लिए एक शिष्ट-मण्डल को केन्द्र के प्रधान मन्त्री, विधि मन्त्री और शिक्षा मन्त्री के पास भेजे।

प्रकाशकीय मन्तव्य को राज्यसभा और लोकसभा के सब सदस्यों में छपवाकर प्रचारित किया जाय।

कार्यसमिति निश्चय करती है कि संघ के जिन सदस्यों से सम्मिलित सूची के लिए उनकी निजी प्रकाशन सूचियाँ तथा शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है, यदि अब पत्र लिखने के एक सप्ताह के अन्दर उनसे सूचियाँ और शुल्क प्राप्त नहीं हो जाते तो सम्मिलित सूची उनके प्रकाशनों की सूची के बिना ही प्रकाशित कर दी जाय।

[शेष पृष्ठ ६८० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-व्यवसाय सम्बन्धी

श्री जवाहरलाल नेहरू के विचार

८ दिसम्बर '५५ को 'फेडरेशन ऑफ़ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स असोसिएशन्स इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन के सम्मुख भाषण करते हुए प्रधान मन्त्री ने दैनिक 'स्टेट्समैन' के अनुसार कहा :

प्रकाशकों का कर्त्तव्य है कि वे नवयुवक लेखकों को प्रोत्साहन दें, जैसा कि यूरोप की कतिपय सुविख्यात प्रकाशन-संस्थाएँ कर रही हैं, क्योंकि लेखक के रचनात्मक प्रयास के अभाव में न तो प्रकाशक का कोई अस्तित्व होगा और न पुस्तक-विक्रेता का। हमारे देश में प्रकाशकों को विस्तृत बाजार प्राप्त हो सकता है, उसका पूर्ण उपयोग करने के लिए केवल साहसपूर्वक कार्यारम्भ करने की आवश्यकता है।

इस कार्य को सस्ती पुस्तकों की बिक्री बढ़ाकर सम्पन्न किया जा सकता है, यद्यपि पुस्तकों की छपाई भद्दी नहीं होनी चाहिए। उदाहरण के लिए पेंग्विन (Penguin) या अन्य देशों की ऐसी ही ग्रन्थमालाओं को लिया जा सकता है, जो संसार के प्रत्येक पुस्तक-भण्डार में अत्यन्त सस्ते मूल्य पर प्राप्य हैं।

यद्यपि हमारे देश में हिन्दी जानने वालों की संख्या बहुत अधिक है, फिर भी हिन्दी-पुस्तकों और समाचार-पत्रों की बिक्री अपेक्षाकृत कम है। साहित्यिक हिन्दी के समर्थकों ने इसे इतना कठिन बना दिया है कि वह जनता की भाषा से कोसों दूर जा पड़ी है। किसी भी भाषा के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि साहित्यिक भाषा और जनता की भाषा के बीच का व्यवधान बहुत थोड़ा हो। अतएव हिन्दी को प्रोत्साहन देने वालों का यह कर्त्तव्य है कि वे अपनी भाषा में परिवर्तन करें, उसे सरल बनाएँ, जिससे वह भारत की हिन्दी जानने वाली विशाल जनता तक पहुँच सके।

इसके अतिरिक्त देश में पुस्तकालयों को प्रोत्साहन देने की भी अत्यधिक आवश्यकता है। कुछ-लोगों की यह भ्रान्ति पूर्ण धारणा है कि पुस्तकालयों की संख्या अधिक हो जाने से प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के व्यवसाय को ठेस पहुँचेगी। तथ्य तो यह है कि पुस्तकालयों की संख्या-वृद्धि होने से लोगों में पढ़ने की आदत निश्चित रूप से अधिक बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप पुस्तकों की अधिकाधिक माँग होगी।

मुझे कुछ दिन पूर्व बम्बई के पुस्तकालय-संघ का एक तार मिला था, जिसमें प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता-सं[घ] की इस प्रवृत्ति की शिकायत की गई थी कि अधिक संख्या में पुस्तकें खरीदने वाले पुस्तकालयों से अपेक्षाकृत अब अधि[क] मूल्य लिया जा रहा है और उचित बट्टा देने से भी इन्कार किया जाता है। मेरा तो प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं से यह अनुरोध है कि वे पुस्तकालयों को सस्ती दर पर पुस्त[कें] देने का भरसक प्रयास करें, क्योंकि यह पुस्तकों के लि[ए] विस्तृत बाजार तैयार करने का एक सशक्त साधन है।

पुस्तक-प्रकाशन के क्षेत्र में सरकार के प्रवेश करने का यह उद्देश्य है कि 'क्लासिक' और अन्य पुस्तकें अधिक-से-अधिक संख्या में और सस्ते मूल्य पर प्रस्तुत की जा सकें। सरकार अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं करेगी कि प्रकाशक अपनी नीति में परिवर्तन करें, क्योंकि उन्होंने यों ही काफ़ी विलम्ब कर दिया है। प्रकाशन-व्यवसाय के लिए भी य[ह] अन्ततः अत्यन्त हितकर सिद्ध होगा, क्योंकि प्रकाशकों को सरकार के साथ प्रतियोगिता करनी होगी।

भारतवर्ष में पुस्तकों की खपत के लिए अत्यन्त विस्तृ[त] बाजार प्राप्त हो सकता है। अब तक जिन लोगों को ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : ,, ,,
रेखाचित्र : ,, ,, ४
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द ३)
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवत शरण उपाध्याय ४)
शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथ कुमार एम० ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० १)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्जन का अवसर नहीं मिला, वे अब ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं, किन्तु उन्हें उपयुक्त पुस्तकें नहीं प्राप्त हो रही हैं, अतएव प्रकाशकों का यह कर्त्तव्य है कि उन्हें इस प्रकार की पुस्तकें प्राप्त कराएँ।

विधान में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा घोषित किया गया है किन्तु दिल्ली जैसे नगर में, जो हमारे देश की राजधानी है, उर्दू के समाचारपत्रों का वितरण हिन्दी के समाचारपत्रों से कहीं अधिक है। उत्तरप्रदेश वालों में हिन्दी को लेकर काफ़ी हो हल्ला है, उनका कहना है कि हम लोग उर्दू को एक प्रादेशिक भाषा के रूप में नहीं स्वीकार करेंगे। किन्तु फिर भी उत्तरप्रदेश, पंजाब और दिल्ली में उर्दू फल-फूल रही है और उसका व्यापक प्रचार है, जो उचित भी है। पंजाब में हिन्दी और पंजाबी को लेकर विवाद चल रहा है, किन्तु दोनों ही दलों के लोग अपने तर्क उर्दू में पेश करते हैं। विशाल जन-समूह के सम्मुख बोलते हुए मेरा केवल यही दृष्टिकोण रहता है कि किस प्रकार अपनी बात श्रोताओं तक पहुँचा सकूँ। यह तो अत्यन्त गौण बात है कि मैं अंग्रेजी में बोलता हूँ, या उर्दू, फ्रेंच, जर्मन अथवा हिन्दी प्रयोग करता हूँ: मेरा उद्देश्य यही रहता है कि मैं श्र श्रोताओं के लिए बोधगम्य हो सकूँ और उन तक अ सन्देश पहुँचा सकूँ। जहाँ तक शुद्ध हिन्दी बोलने का प्र है, यदि मैं वैसा बोलने में समर्थ होता तो सम्भव है सराहना होती, किन्तु उस स्थिति में मैं श्रोताओं के लि बोधगम्य न हो सकता और न मेरे बोलने का मुख्य उद्द पूर्ण होता। मेरा विश्वास है कि यदि कोई उद्यमशील व्य साधारण जनता की भाषा में साप्ताहिक या दैनिक-पत्र निक तो उत्तरी भारत में उसकी बहुत बड़ी संख्या में माँग होगी

मैं सोचता हूँ कि शायद प्रकाशकों ने यह कोई अ चुनाव नहीं किया कि इस अवसर पर उनके बीच एक ऐ व्यक्ति भाषण दे, जो स्वयं एक लेखक है, क्योंकि प्रकाश और लेखकों के बीच संघर्ष सदैव चलता ही रहता प्रत्येक लेखक ऐसा सोचता है कि प्रकाशक बहुत बुरे हैं और लेखकों का शोषण करने के लिए तत्पर रहते इस प्रकार की धारणा केवल भारत तक ही सीमित नहीं

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य **प्रत्येक भाग ८)**

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाँ, कुछ देशों में लम्बे अनुभवों के उपरान्त प्रकाशकों और लेखकों में एक प्रकार का अस्थायी समझौता अस्तित्व में देखने को आया है।

मेरी जानकारी में कई ऐसे दृष्टान्त आए, जिनमें लेखकों के साथ प्रकाशकों ने दुर्व्यवहार किया, विशेषतया ऐसे उदाहरणों का सम्बन्ध हिन्दी-प्रकाशकों से है। इन प्रकाशकों ने कतिपय श्रेष्ठ कवियों और लेखकों के साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया और उनकी विपत्ति से लाभ उठाकर उन्हें बहुत थोड़ा धन देकर उनकी पुस्तकों से अनुचित मुनाफ़ा कमाते रहे। ऐसा हमेशा नहीं होता, किन्तु इस प्रकार का एक उदाहरण भी कम भद्दी बात नहीं है, क्योंकि इससे किसी विशिष्ट व्यवसाय की प्रतिष्ठा को धक्का लगता है।

यह अत्यन्त स्पष्ट है कि प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता लेखक पर इस अर्थ में निर्भर रहते हैं कि वे लेखक की ही पुस्तकों का प्रकाशन और विक्रय करते हैं। कभी-कभी प्रकाशक स्वयं पुस्तक लिख लेता है, चाहे वह अच्छी हो या खराब। किन्तु सामान्य रूप से प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेताओं के व्यवसाय का स्रोत लेखक ही है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि यदि लेखक न हो, तो न प्रकाशक ही होगा और न पुस्तक-विक्रेता ही। चूँकि रचनात्मक प्रयास लेखक की ओर से होता है, अतएव अन्ततः उसे ही प्रोत्साहन देना चाहिए। अन्य लोग भी महत्त्वपूर्ण अवश्य हैं, किन्तु फिर भी लेखक के महत्त्व की तुलना में वे गौण हैं। लेखक के इस रचनात्मक प्रयास को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

एक अन्य बात यह है कि अधिक-से-अधिक पाठकों को पुस्तकें प्राप्त कराई जायँ। यह लेखक और प्रकाशक अथवा पुस्तक-विक्रेता दोनों के लिए हितकर है। किन्तु ऐसा करने में लेखक को हानि न पहुँचने पाये। प्रायः यह दलील दी जाती है कि पुस्तक का मूल्य कम करने के लिए लेखक को उसकी रॉयल्टी आदि न दी जाय। कोई स्वयं अपने लाभ को कम करने की नहीं सोचता। कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जो सिर्फ़ मुनाफ़े की दृष्टि से नहीं स्थापित हुईं और जो यह

भूत और वर्तमान कालीन भारत

भारत दर्शन चित्रों में

भारत की कहानी दिग्दर्शित करने वाले विविध चित्रों का यह अनमोल संग्रह है। इसमें देश के निवासी, पशु, वनस्पति, उसकी प्राकृतिक रचना आदि का विहंगावलोकन है। भारतीय जीवन, विचारधारा, परिस्थिति, प्राकृतिक दृश्य इत्यादि विभिन्न पहलुओं का इसमें स्थलानुरूप समावेश किया गया है। मूल्य ७॥)

भारतीय कला का सिंहावलोकन

मोहिन्जोदारो के समय से लेकर वर्तमान भारत की कला का अनुरेखन करने वाले ३७ रंगीन और १०० एकरंगी चित्रों का यह संग्रह, भारत के प्राचीन मध्ययुगीन तथा आधुनिक कला की मनोरंजक विभिन्नताएं प्रस्तुत करता है। मूल्य ६॥)

हमारा संविधान

यह पुस्तिका भारत के संविधान के विषय में है। इसमें संविधान के मुख्य-मुख्य विषय लोकप्रिय परंतु ठीक-ठीक रूप में संक्षेप में लिखे गये हैं। मूल्य १)

A-S 55/108

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरिएट, दिल्ली-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सोचतीं कि लेखक को भी, जिसने अपने 'रक्त और अश्रुओं' से किसी पुस्तक की रचना की है, सहायता की आवश्यकता है। इसी प्रकार की कुछ संस्थाओं ने मेरी कई पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित किये हैं और उन्होंने मुझे सूचित किया है कि उनके यहाँ रॉयल्टी देने का नियम नहीं है। खैर, मेरी कोई बात नहीं, लेकिन मैं इस सिद्धान्त का घोर विरोध करता हूँ कि लेखक को उसका प्राप्य न दिया जाय। सामाजिक उद्देश्यों को लेकर चलने का दावा करने वाली इन संस्थाओं का कहना है कि चूँकि वे जनता का शोषण करना नहीं चाहतीं, अतएव लेखक को भी कुछ नहीं दे सकतीं। उसके साथ यह भी तो कहा जा सकता है कि इस उच्च सामाजिक उद्देश्य के लिए मुद्रक या पुस्तक-विक्रेता भी कुछ न ले, किन्तु उनसे ऐसा कहने का साहस कोई नहीं करता। मैं चाहता हूँ कि यह सब व्यवहार अत्यन्त न्यायपूर्ण ढंग से हो और प्रकाशन-शिल्पियों, लेखकों व मुद्रकों सभी को अपना उचित प्राप्य प्राप्त हो, क्योंकि केवल इंगलैण्ड, जर्मनी, रूस, अमरीका या तिब्बत की पुस्तकों के अनुवादों को प्रकाशित करने के अतिरिक्त समस्त प्रकाशन एवं पुस्तक-बिक्री का व्यवसाय अन्ततः लेखक पर ही निर्भर करता है। यदि आप लोग केवल विदेशी प्रकाशनों का मुद्रण या पु[नर्]मुद्रण करके ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहते, तो आपका [यह] कर्त्तव्य है कि लेखकों को प्रोत्साहन दें।

[पृष्ठ ६७५ का शेष]

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा ''नेशनल बु[क] ट्रस्ट'' की स्थापना का प्रश्न कार्यसमिति के सम्मुख प्रस्[तुत] हुआ, लेकिन निश्चय किया गया कि इस प्रश्न पर आगा[मी] बैठक में विस्तार से विचार हो।

◈ ◈ ◈

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यापीठ, हजरतगंज, लखनऊ [के] प्रधान मन्त्री ने सूचना दी है कि विद्यापीठ की प्रवेशि[का], मध्यमा, उत्तमा, शिक्षण-विभाग एवं संगीत की परीक्षा[ओं] के लिए प्रकाशक विचारार्थ १० जनवरी '५६ तक अ[पने] प्रकाशनों की पाँच-पाँच प्रतियाँ भेजें। ५) से अधिक मू[ल्य] की पुस्तकों की केवल दो-दो प्रतियाँ भेजना आवश्यक है। पुस्तकों के पार्सल पेड भेजे जायँ; स्टेशन लखनऊ हजरतगं[ज] आऊट एजेन्सी है। स्वीकृत पुस्तकें १९५६, ५७ और ५[८] तक चलेंगी।

हमें भी

आप अपना

सहयोगी

समझिये।

ह मा रे ती न न ये प्र का श न

उपन्यास

१. सुनन्दा	जगदीश आनन्द	३।।)
२. साथी	महावीरशरण अग्रवाल	२।)

आलोचनात्मक

३. डिंगल साहित्य में नारी	हनुवन्तसिंह देवड़ा	२)

गु प्ता बु क ए जें सी,

बिस्सोमल कालोनी, चाँदनी चौक, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

ण्ड में १ जनवरी, १९५६ से पुस्तकों को डाक द्वारा की दरों में वृद्धि की जाने की घोषणा से घोर असन्तोष या है। यह वृद्धि लगभग वर्तमान दरों को दुगुनी कर २६ नवम्बर, ५५ को डाक-विभाग के इस प्रस्ताव के 'टाइम्स' जैसे प्रभावशाली दैनिक में एक पत्र छपा पर जॉन मेसफील्ड, वाल्टर डि ला मेयर, टी० एस० ट, डॉ० जी० एम० ट्रेवेलियन, सर स्टैनले अन्विन सुप्रसिद्ध साहित्यिकों एवं शिक्षाविदों के हस्ताक्षर हैं। कहा गया है, "पुस्तकों से सम्बन्धित डाक की दरों के दुगुना हो जाने से न केवल पुस्तक-विक्रेताओं के बल्कि लयों के माध्यम से भी ज्ञान, संस्कृति और शिष्ट मनो- के होने वाले प्रचार-प्रसार पर संघातक चोट पहुँचेगी। य को भी कोई नहीं भूल सकता कि एक शताब्दी से अवधि से नये प्रस्तावों के कार्यान्वित होने तक, इस डाक-विभाग ने पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के विशिष्ट को स्वीकार किया है। यदि इस परिवर्तन को कार्यान्वित दया गया तो इसमें सन्देह नहीं कि दुनिया के सभ्य देशों ब्रिटेन ही अकेला ऐसा देश माना जायगा जिसने ऐसे मी कदम को उठाया होगा।"

ाक की नई दरों के अनुसार इंगलैण्ड में १६ औंस सेर) के पुस्तकों के पार्सल पर ८½ पेंस (७ आने) इस वृद्धि के विरोध में जो आन्दोलन उठ खड़ा , उसे देखते हुए आशा की जाती है कि डाक की दरों के प्रस्ताव को रद्द कर दिया जायगा।

◈ ◈ ◈

इंगलैण्ड की 'बुकसेलर्स असोसिएशन' (पुस्तक-विक्रेता-संघ) की ओर से १९५६ की मार्च १६ से मार्च २० तक ऑक्सफोर्ड में पुस्तक-विक्रेताओं के लिए एक 'स्कूल' चलाया जायगा जहाँ इस व्यवसाय की विशिष्ट बातों और नये ढंगों की शिक्षा दी जायगी।

◈ ◈ ◈

"एच० एम० एस० युलिसिज़" नामक पुस्तक की २३,००० प्रतियाँ (प्रकाशक कॉलिन्स) नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में बिकीं। प्रकाशित होने के दो महीनों में पुस्तक की कुल २ लाख ३ हज़ार प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

◈ ◈ ◈

अजमेर के प्रधान मन्त्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय को, जो राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ हिन्दी के अनन्य सेवी और साहित्य के प्रणेता और मर्मज्ञ भी हैं, उनकी ६४वीं वर्षगाँठ (२ अप्रैल '५६) के दिन अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट करने के उद्देश्य से अजमेर में एक समिति बनी है। इसके मन्त्री श्री ओंकारनाथ दिनकर (राधाकृष्ण भवन, हाथीभाटा, अजमेर) चाहते हैं कि जिन महाशयों के पास श्री उपाध्याय जी के पत्र व चित्र हों, वे उन्हें भेज दिए जायँ। लेख-संस्मरण भी भेजने की कृपा की जाय। पत्र और चित्रादि उपयोग के बाद लौटा दिए जायँगे।

◈ ◈ ◈

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ ने पुस्तकों की कवर-जैकटों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी की योजना बनाई है। यह प्रदर्शनी मार्च '५६ में इलाहाबाद में होगी और इसके बाद देश के प्रमुख प्रकाशन केन्द्रों में घुमाई जायगी। लगभग २० विदेशों के सहयोग का आश्वासन मिल चुका है।

देशी भाषाओं के जैकेटों में और हिन्दी की पुस्तकों के जैकेटों में से सर्वश्रेष्ठ को संघ की ओर से स्वर्ण-पदक भी प्रदान किए जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

संत कबीर दर्शन : कबीर के जीवन और कृतित्व पर लिखा गया आलोचनात्मक ग्रन्थ है जिसका प्रकाशन **साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद** ने किया है। इस खोजपूर्ण ग्रन्थ के लेखक हैं श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, एम० ए०। मूल्य २)।

◆ ◆ ◆

भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ : पं० परशुराम जी चतुर्वेदी के विचार-प्रधान निबन्धों का नवीनतम संग्रह है। इन निबन्धों के माध्यम से चतुर्वेदी जी ने भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का मौलिक ढंग से विवेचन किया है। यह ग्रन्थ भी **साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद** की ओर से प्रकाशित हुआ है। मूल्य ३॥)

◆ ◆ ◆

नये स्वर : सुरुचिपूर्ण कविता-संकलन है जिसके पूर्वार्द्ध में सत्रह ऐसे कवियों की प्रतिनिधि कविताएँ संकलित हैं जो नई-हिन्दी-कविता के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं और उत्तरार्द्ध में सत्रह नये कवियों और उनकी कविताओं से परिचित कराया गया है। इसके सम्पादक हैं श्री सुरेन्द्रपालसिंह तथा भुवनेश चतुर्वेदी। **झंकार-प्रकाशन, प्रयाग** ने इसका प्रकाशन किया है और इसके वितरक हैं **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली**। मूल्य १)

◆ ◆ ◆

उगता आसमान : श्री धर्मेन्द्रकुमार गुप्त द्वारा सम्पादित कहानी-संकलन है। इसमें सात नये कहानीकारों की एक-एक कहानी संकलित है। इन तरुण लेखकों का यह 'सहयोगी आयोजन' उनके उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करता है। इसका प्रकाशन **किञ्जल्क प्रकाशन, इलाहाबाद** ने किया है। मूल्य १)

◆ ◆ ◆

आधुनिक निबन्धावली में श्री अखिलेश्वर प्रसाद के हाई-स्कूल तक के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी १०० निबन्ध संग्रहीत हैं। **भारती-भवन, पटना** से प्रकाशित पुस्तक का मूल्य ३) है। यहीं से प्रकाशित उसी लेखक की दूसरी पुस्तक **कॉलेज निबन्धावली** है, जिसके निबन्धों का स्तर लगभग इण्टरमीडिएट का है, जिसका मूल्य २।) है।

◆ ◆ ◆

विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-७ से प्रकाशि 'अनिता' और 'नया इन्सान' क्रमशः सर्वश्री शा और यादवेशचन्द्र शर्मा के सामाजिक उपन्यास हैं, जि तरुण लेखकों ने जीवन के प्रति अपना आस्थापूर्ण दृष्टिको व्यंजित किया है। प्रत्येक का मूल्य ३) है।

◆ ◆ ◆

विवाहित जीवन : श्री अमरनाथ शुक्ल की यौन-समस्याओं सम्बन्धित पुस्तक है, जिसमें लेखक ने 'दाम्पत्य जीवन आद्योपान्त स्वस्थ नवीन व्याख्या' की है। **विद्या प्रकाश मन्दिर, दिल्ली—७** से प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य २॥) है

◆ ◆ ◆

यशोधरा : एक समीक्षा में प्रोफ़ेसर वासुदेव ने गुप्त जी 'यशोधरा' का मूल्याङ्कन प्रस्तुत किया है। इसके अन्त लेखक ने 'यशोधरा' की साहित्यिक विशेषताओं, उस काव्य-कला, उसके भावोत्कर्ष, चरित्र-चित्रण आदि सम्यक् प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त इसकी टीका पुस्तक में सम्मिलित है। **भारती भवन, बाँकीपुर, पटना** प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य ३॥) है।

◆ ◆ ◆

रजकण : कुमारी सन्तोष सचदेव के मुक्तक पद्यों का संग्रह यद्यपि इन सभी मुक्तकों में भावना और विचारों का तारत है। प्रस्तुत संग्रह इस तथ्य का द्योतक है कि आस्थाव कवयित्री युग के ऊहापोहों और मानव-मन के द्वन्द्वों को कि निकट से पहचानती है और उन्हें व स्वाभाविक प्रवाह भाषा में सप्राण अभिव्यक्ति दे सकती है। **अग्रसेन पुस्त भण्डार, २१, जानसेन गंज, इलाहाबाद** से प्रकाशित पुस्तक का मूल्य २) है।

◆ ◆ ◆

मुक्त नारी : प्रसिद्ध मराठी उपन्यासकार श्री चन्द्रका काकोडकर के लघु सामाजिक उपन्यास 'क्षण आला भाग्याचा' का हिन्दी-अनुवाद है, जिसे श्री आर० आर० सर्वटे प्रस्तुत किया है। अनुवाद सुन्दर बन पड़ा है। **आन पुस्तक भवन, पहड़िया, बनारस-२** से प्रकाशित उपन्यास का मूल्य २।) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

सुश्री सरोज ठाकुर, एम० ए०, साहित्यरत्न, पालाबाई का बाज़ार, लश्कर, ग्वालियर, लिखती हैं कि उन्होंने भारत की नई पीढ़ी के बालकों के चरित्र-निर्माण को बल देने के लिए तथा प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकता को मिटाने के उद्देश्य से तीन कदम शीर्षक से एक पुस्तक लिखी है। इसके लिए प्रकाशक की आवश्यकता है। 'मध्यभारत कला परिषद्' इस पर पुरस्कार भी दे चुकी है।

⟡ ⟡ ⟡

प्रो० राजकिशोर राय, एम० ए०, अध्यक्ष, उड़िया विभाग, पुरी कॉलेज, पुरी, की १५ उड़िया कहानियों का हिन्दीकरण प्रस्तुत है। जो प्रकाशक इन्हें पुस्तकाकार प्रकाशित करना चाहें, वे उक्त लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

⟡ ⟡ ⟡

'साहित्यिक मित्र मण्डल', मुजफ्फरनगर, ने एक काव्य-प्रतियोगिता का आयोजन किया है। प्रत्येक मास की अन्तिम तिथि तक मण्डल के कार्यालय में कविताएँ भेजी जा सकती हैं; चार आना प्रति कविता प्रवेश-शुल्क का (टिकट के रूप में) भेजना आवश्यक है। तीन पुरस्कार दिये जायँगे और कविताओं के प्रकाशन का अधिकार मण्डल को होगा।

⟡ ⟡ ⟡

श्री प्रेमनारायण अग्रवाल के संयोजन में अखिल भारतीय हिन्दी-लेखक संघ के निर्माण की सूचना मिली है, फिलहाल कार्यालय का पता है : अजीतमल, इटावा। संघ के संविधान का प्रारूप भी मुद्रित कर प्रचारित कर दिया गया है। लेखक नाम के मासिक अथवा अर्द्ध मासिक-पत्र के प्रकाशन की योजना है। सदस्यों से ३) प्रवेश-शुल्क और ५) वार्षिक शुल्क लिया जाया करेगा तथा मुख्य उद्देश्य लेखकों की हित-रक्षा का होगा।

⟡ ⟡ ⟡

जिस पुस्तक की भारतीय पत्रों ने एक स्वर से प्रशंसा की है, वह है हास्य-रस-प्रधान कविता संग्रह

महिला-शासन

[ले० श्री चिरंजीलाल पाराशर]

"पुस्तक की विशेषता यह है कि फूहड़ और अश्लील प्रसंग उपस्थित कर पाठकों को जबर्दस्ती हंसाने का प्रयत्न न करके सामाजिक जीवन के विद्रूप के प्रति व्यंग कर अन्तराल को गुदगुदाया गया है। रचनाओं में इतना बल है कि वे लेखक को इस दिशा में आगे बढ़ने को प्रेरणा करती रहेंगी।"

—दैनिक 'हिन्दुस्तान', नई दिल्ली

"अपनी कहानियों में लेखक ने आज के जीवन का सच्चा दिग्दर्शन पाठकों को कराया है। प्रत्येक बुराई की खुलकर हास्यमिश्रित कठोर आलोचना की है। आशा है हिन्दी-पाठक उक्त पुस्तक से ज्ञान और स्वास्थ्य की वृद्धि करेंगे।"

—'नवभारत टाइम्स', दिल्ली

"पुस्तक में व्यंगात्मक ढंग से समाज में व्याप्त कुरीतियों पर इस तरह से प्रकाश डाला गया है कि पुस्तक की मनोरंजकता के कारण एक बार पुस्तक हाथ में लेने पर छोड़ी नहीं जा सकती।"

—'भारत', इलाहाबाद

"पुस्तक में दैनिक जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का सुरुचिपूर्ण ढंग से समावेश है तथा कहानियों में जीवन के विशिष्ट पहलुओं की स्पष्ट झाँकी है। भाषा मुहावरेदार प्रभावपूर्ण है। राजनीति, परम्परा, संगीत तथा साहित्य सभी पर मनोरंजक छींटे हैं। सभी वर्ग की जनता के लिए पुस्तक पठनीय है।"

—'विशाल भारत', लखनऊ

"'महिला-शासन' की भाषा मुहावरेदार है। समाज के विविध व्यंगों का खुलकर विवेचन है। सुरुचिपूर्ण व्यंग से तमाम कुरीतियों पर खुलकर कुठाराघात किया गया है।"

—'युग धर्म', नागपुर

"हिन्दी हास्य में 'महिला-शासन' ऐसी पुस्तक है जिसमें जीवन के समस्त पहलुओं की झाँकी मिलती है, जिसमें उस गन्दे हास्य को नहीं अपनाया गया, जिसे हास्य कहते भी लज्जा आती थी। पुस्तक सुरुचिपूर्ण हास्य से ओत-प्रोत सभी दृष्टियों से पढ़ने योग्य है।"

—'समाज', दिल्ली

मुख्य वितरक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक

श्री यदुनन्दन कपूर

एम० ए० (बी० ए० आनर्स) एम० एड०द्वारा लिखित इस ग्रन्थ-रत्न में भारतवर्ष के देवानां प्रिय सम्राट् अशोक के जीवन, साम्राज्य, शासन-प्रबन्ध, धर्म, धर्म-चार, तत्कालीन सामाजिक तथा आर्थिक जीवन और कला के विकास पर प्रामाणिक रूप से प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ द्वारा विश्व के इतिहास में अशोक का स्थान और उसकी महत्ता स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाती है।

अशोक सम्राट् अशोक के समग्र इतिहास को प्रस्तुत करने वाली अद्भुत और महत्त्वपूर्ण रचना है।

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल एम० ए० पी-एच० डी० काशी विश्वविद्यालय लिखते हैं :—

"...'अशोक' पुस्तक के लिखने में आपने अच्छा परिश्रम किया है। हिन्दी में इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता थी। ...प्रत्येक साहित्यिक अपनी रुचि और शक्ति के अनुसार शोध का कार्य करे—यही मेरी आस्था है।"

Prof. C. D. Chatterjee, Reader, Deptt. of History, Lucknow University, Lucknow. says—

"......let me congratulate you for your excellent monogram on Asoka, which, I believe, is the first of the kind in Hindi language."

मोनो टाइप, कलात्मक शैली में छपा (डिमाई साइज़) पृष्ठ २६०

मूल्य ६।) रुपये

प्रकाशक

कालिज बुक स्टोर्स, बड़ा बाज़ार, अलीगढ़

आगरा विश्वविद्यालय बी० ए० (हिन्दी) द्वितीय वर्ष में निर्धारित 'भारत-दुर्दशा' और 'अजातशत्र' का आलोचनात्मक विवेचन

दो प्रतिनिधि हिन्दी नाटक

लेखक

प्रोफेसर श्री देवर्षि सनाढ्य, शास्त्री, एम० ए०, धर्म-समाज कालेज, अलीगढ़।

'अभी तक ऐसी पुस्तक देखने में नहीं आई' 'परीक्षार्थियों के लिए अपने विषय की सर्वोत्तम पुस्तक !'

निम्नलिखित विद्वान अध्यापकों की स्पष्ट सम्मतियाँ

प्रोफेसर भरतसिंह उपाध्याय, जैन कालेज, बड़ौत, डॉ० चन्द्राकर शुक्ल, गवर्नमेंट डिग्री कालेज, नैनीताल, प्रोफेसर शील, एस० एम० कालेज, चन्दौसी, प्रोफेसर महावीरप्रसाद अग्रवाल, दरबार कालेज, रीवा, डॉ० कमलेश, आगरा कालेज, प्रोफ़ेसर रामप्रकाश अग्रवाल, मेरठ कालेज, प्रो० जगदीश बाजपेयी, एस० डी० कालेज, मुजफ्फरनगर, प्रो० रत्नलाल वैश्य, ए० के० कालेज, शिकोहाबाद, प्रो० अम्बादत्त पंत, एन० आर० ई० सी० कालेज, खुर्जा।

पुस्तक लिखने में बीस श्रेष्ठ ग्रन्थों से सहायता ली गई है।

मूल्य २)

प्रकाशक

कालिज बुक स्टोर्स, बड़ा बाजार, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्यक्रम की पुस्तकें और उनकी प्रदर्शनी

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह

राष्ट्र की बहुमुखी उन्नति में शिक्षा का बहुत बड़ा हाथ होता है। संसार का प्रत्येक राष्ट्र अपने यहाँ के विद्यार्थियों को सर्वोत्तम कोटि की शिक्षा प्रदान करने की चेष्टा में प्रयत्नरत है। शिक्षण-कार्य के संचालन के लिए पाठ्यक्रम-सम्बन्धी उत्तम पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। यही पुस्तकें राष्ट्र के भावी नागरिकों को ज्ञान का गरिमामय आलोक प्रदान करती हैं, अतः इन्हें प्रस्तुत करते समय अत्यन्त सजगता एवं सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। पाठ्यक्रम-सम्बन्धी पुस्तकें अन्य प्रकाशित पुस्तकों से कुछ भिन्न प्रकार की होती हैं। उनके आकार-प्रकार, छपाई-सफाई, मुखपृष्ठ, बाइंडिंग, पाठ्य-सामग्री तथा मूल्य आदि सभी बातों में एक विशिष्टता होती है। शिक्षण-संस्थाओं द्वारा स्वीकृत पुस्तकों के अतिरिक्त पाठ्यक्रम-सम्बन्धी अन्य पुस्तकों (सहायक ग्रन्थों) को प्रस्तुत करते समय तो प्रकाशक की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। यदि वह पर्याप्त सतर्कता तथा दूरदर्शिता से काम नहीं लेता तो उसे निश्चित रूप से घाटा उठाना पड़ता है। इस प्रकार की पुस्तकें प्रस्तुत करवाते समय विद्यार्थियों के हित और रुचि का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। पाठ्यक्रम के लिए कोई भी पुस्तक प्रस्तुत करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है—

१. जिस कक्षा के लिए पुस्तक प्रस्तुत की जा रही हो उसके स्तर के अनुसार, विषय के विस्तृत विवेचन पर पर्याप्त बल दिया जाय। इसके लिए किसी सुयोग्य शिक्षक या विशेषज्ञ की सहायता लेनी चाहिए। कम पैसे में काम करा लेने के मोह में किसी अधकच्चरे या नौसिखिये लेखक के जिम्मे इतना गंभीर काम भूलकर भी नहीं सौंपना चाहिए।

२. इन पुस्तकों को मुद्रित करवाते समय विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए। किसी भी पाठ्य-पुस्तक की रद्दी छपाई और प्रूफ-सम्बन्धी भूलें क्षम्य नहीं कही जा सकतीं।

३. इन पुस्तकों के मुखपृष्ठ पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। जिस कक्षा के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक प्रस्तुत की जा रही हो उसी के अनुसार मुखपृष्ठ भी होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि छोटी कक्षा के बच्चों के लिए कोई पुस्तक प्रस्तुत की जा रही हो तो उसके लिए रंग-बिरंगा, भड़कीला मुखपृष्ठ होना चाहिए किन्तु ऊँची श्रेणी के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तक के मुखपृष्ठ की डिजाइन सादी, आकर्षक तथा सुरुचिपूर्ण होनी चाहिए। मुखपृष्ठ की डिजाइन का ठीक चुनाव न कर पाने के कारण ही पाठ्यक्रम सम्बन्धी पुस्तकों के अनेक प्रकाशकों को घाटा उठाना पड़ता है।

४. चूँकि ये पुस्तकें बहुत अधिक बार प्रयुक्त होती हैं अतः इनकी बाइंडिंग तथा कागज दोनों ही मजबूत किस्म के होने चाहिएँ। ढीली-ढाली कमजोर बाइंडिंग तथा जल्दी फटने वाला कागज इन पुस्तकों में कभी नहीं लगाना चाहिए।

५. उपरोक्त चारों बातों के अतिरिक्त पाँचवीं बात है इनके मूल्य की। यदि ये पुस्तकें सस्ती होंगी, तभी वे बाजार में अपना स्थान बना सकेंगी और उनकी खपत भी अधिक हो सकेगी। सभी दृष्टिकोणों से उत्तम कोटि की और साथ ही सस्ती पुस्तकें प्रस्तुत करना यद्यपि काफी कठिन कार्य है फिर भी दूरदर्शी तथा प्रबन्ध-कुशल व्यवस्थापक अपनी सूझबूझ से सारी चीजों को इस प्रकार सुव्यवस्थित करता है कि अच्छे ढंग से प्रस्तुत की गई उत्तम कोटि की पुस्तकों का दाम भी कम हो सके। उत्तम कोटि की, पाठ्यक्रम-सम्बन्धी सस्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें प्रस्तुत करना बहुत बड़ी राष्ट्र-सेवा है, और इस महान् सेवाकार्य में हाथ बटाना प्रत्येक समर्थ प्रकाशक का पुनीत कर्तव्य है।

पाठ्यक्रम-सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशक को बहुत बड़ा खतरा (risk) उठाना पड़ता है। यदि पुस्तक चल गई तब तो फिर लाभ-ही-लाभ है, किन्तु यदि दुर्भाग्यवश, जिस संस्था के लिए पुस्तक प्रस्तुत की गई है उसने उसे अस्वीकृत कर दिया या किसी विशेष खामी के कारण बाजार में स्वतन्त्र रूप से वह अपना स्थान नहीं बना सकी तो फिर उसमें लगाई हुई पूरी रकम डूब जाती है। यही कारण है कि विदेशों में बहुत कम प्रकाशक पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशन का साहस करते हैं। जनता और सरकार दोनों की ओर से ऐसे प्रकाशकों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम-सम्बन्धी उत्तम ग्रन्थों का अभा[व] है, अतः हमें अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के मौलि[क] तथा अनूदित ग्रन्थों का सहारा लेना पड़ता है। हिन्दी जै[सी] भाषा के लिए, जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र के बौद्धिक विकास [का] उत्तरदायित्व है, यह स्थिति अत्यन्त अशोभनीय है। भार[तीय] प्रकाशकों तथा विशेषज्ञों, दोनों को इस ओर विशेष रूप[से] ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार की ओर से भी इ[स] कार्य के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन मिलना चाहिए, जिसके लि[ए] केन्द्रीय तथा प्रान्तीय दोनों सरकारों का सहयोग मिलन[ा] चाहिए।

कुछ प्रकाशकों ने इस दिशा में साहसपूर्ण कदम उठा[ए] भी है, किन्तु उनमें से अधिकांश सुसंगठित प्रयास के अभा[व] एवं अनुभवहीनता के कारण उत्तम कोटि की पाठ्य पुस्त[कें]

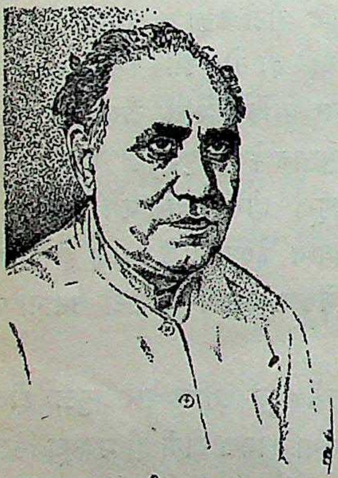

श्री गुरुदत्त का नवीन उपन्यास

'मा न व'

१५ जनवरी १९५६ तक प्रकाशित हो जायगा।

• • •

श्री गुरुदत्त की रचनायें

१. वाम मार्ग	७)	७. पथिक	६)	१३. गुण्ठन	५)
२. विडम्बना	६)	८. स्वराज्य दान	६)	१४. विलोमगति	५)
३. भावुकता का मूल्य	६)	९. विश्वासघात	५॥)	१५. बहती रेता	५)
४. उन्मुक्त प्रेम	६)	१०. देश की हत्या	५॥)	१६. विकृत छाया	४॥)
५. उमड़ती घटाएँ	६)	११. प्रवंचना	५)	१७. अन्तिम यात्रा	१)
६. स्वाधीनता के पथ पर	६)	१२. मायाजाल	५)	१८. लुढ़कते पत्थर, १५ जनवरी '५६ तक प्रकाशित हो जायगा।	

पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को उचित छूट दी जाती है।

भा र ती सा हि त्य स द न,

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली–१

नोट—विकृत छाया का द्वितीय संस्करण छप कर तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

नया प्रकाशन

प्रिय महोदय,

हमें सूचित करते हुए हर्ष होता है कि हमारी निम्नलिखित पुस्तकें छपकर तैयार हो गई हैं। आशा है आप अपना अमूल्य आदेश-पत्र भेजकर हमें अनुगृहीत करेंगे :—

आलोचनात्मक

हिन्दी-काव्य-विमर्श : बाबू गुलाबराय ३।।) क
आलोचना के सिद्धान्त : व्योहार राजेन्द्रसिंह ४) ख
तुलसी-साहित्य और सिद्धान्त : यज्ञदत्त शर्मा २।।) ग
साहित्य-शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश : राजेन्द्र द्विवेदी ८) ख
प्रसाद जी का जीवन, कला और कृतित्व : महावीर अधिकारी ८) ग
हिन्दी-वक्रोक्तिजीवित : आचार्य विश्वेश्वर १६) ख
हिन्दी-गद्य : विकास और विमर्श : चन्द्रकान्त बाली शास्त्री १।)

उपन्यास तथा कहानियाँ

जी जी जी : पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' २।।) ग
बुझते दीप : दयाशंकर मिश्र ३) ग
निशिकान्त : विष्णु प्रभाकर ५) ग
पर्णा : गोविन्दवल्लभ पन्त ४) ग
नव-कहानी-कुञ्ज : शिवदानसिंह चौहान ४) ग
आधुनिक कहानियाँ : शिवदानसिंह चौहान ३।।) ग

कविता

प्रथम सुमन : सत्यवती शर्मा १) ग
जिप्सी (सचित्र) : (पुश्किन) अनु० वीर राजेन्द्र ऋषि २) ख
राधा-कृष्ण : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह २।।) ग
संकलिता (सचित्र) (कविता संग्रह) : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह २।।) ग

नाटक तथा एकांकी

यशस्वी भोज : देवराज 'दिनेश' १।।) ग
समाज के स्तम्भ (इब्सन का अनूदित नाटक) : सीताचरण दीक्षित २) ग
अ-पूर्व बंगाल : बी० वी० वरेरकर १।) ग
आधुनिक एकांकी : विजय चौहान २) ग

भूगोल और इतिहास

मानचित्र प्रवेशिका : रामस्वरूप वशिष्ठ ३) ख
भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास : हरिदत्त वेदालंकार ३) ख
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त (भाग १) : प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, भूमिका—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ६) ख
हमारे राष्ट्रपिता : गोपालप्रसाद व्यास २) ग

सचित्र लोक-कथाएँ तथा बाल-साहित्य

केसर के फूल : मोहन कृष्ण दर, प्रस्तावना – जवाहरलाल नेहरू २) ग
निमाड़ी-लोक-कथाएँ (१) : कृष्णलाल 'हंस' १।) ग
निमाड़ी लोक-कथाएँ (२) : कृष्णलाल 'हंस' १।) ग
मनोरंजक लोक-कथाएँ (१) : नन्दलाल चत्ता १।) ग
मनोरंजक लोक-कथाएँ (२) : नन्दलाल चत्ता १।) ग
काश्मीर-लोक-कथाएँ (२) : नन्दलाल चत्ता १।।) ग
हमारी लोक-कथाएँ (१) : 'रहबर'—पंछी १।) ग
गार्गी के बाल-नाटक (सचित्र) : परितोष गार्गी १।) ग
बाल नीति कथा (सचित्र) : विष्णुदत्त 'विकल' भाग १, १); भाग २, १।) ग
बालकों के चलन (चरित्र) (तीसरा संस्करण) : सन्तराम विचित्र २) ग
महाराणा प्रताप (चित्रमय कहानी) १) ग
वीर बालक (चित्रमय कहानी) ।।।) ग

धार्मिक, मनोरंजक तथा कलात्मक

कुरान और धार्मिक मतभेद : सय्यद जहूरुल हुसैन, भूमिका—डॉ० राजेन्द्रप्रसाद २) ग
सचित्र व्यंग्य-विनोद : अरुण, एम. ए. ६।।) ग
कला की परख : के. के. जसवानी ४) क

आत्माराम एण्ड संस, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं प्रस्तुत कर सके हैं। आज स्थिति यह है कि यदि हम चाहें तो भारतीय प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम-सम्बन्धी स्थायी महत्त्व की समस्त पुस्तकें एक बहुत छोटे पुस्तकालय में ही रख सकते हैं। विदेशों में पाठ्यक्रम सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशकों के मार्ग-निर्देशन तथा उत्साहवर्द्धन के लिए इन पुस्तकों की प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं। जो पुस्तकें पाठ्य-सामग्री, सफाई-छपाई, बाइंडिंग, कागज, मुखपृष्ठ आदि सभी दृष्टिकोणों से सर्वोत्कृष्ट ठहरती हैं, वे ही प्रदर्शनी में रखने के लिए चुनी जाती हैं। इस प्रकार की प्रदर्शनी के लिए किसी पुस्तक का चुना जाना उसके प्रकाशक के लिए बड़े गर्व की बात समझी जाती है। इसका असर उस पुस्तक की बिक्री तथा प्रस्तुतकर्ता की ख्याति दोनों पर समान रूप से पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रतिवर्ष इस प्रकार की प्रदर्शनी अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से आयोजित की जाती है। इस प्रदर्शनी में वर्ष-भर में प्रकाशित पाठ्यक्रम-सम्बन्धी पुस्तकों में से चुनी हुई सर्वोत्कृष्ट पुस्तकें प्रदर्शित की जाती हैं। इन पुस्तकों के चुनाव में बड़ी सावधानी बरती जाती है क्योंकि इसका असर वहाँ के समूचे पुस्तक-उद्योग पर पड़ता है। पहले इन पुस्तकों के चुनाव के लिए एक निर्णायक-मण्डल बना लिया जाता था जो अन्तिम रूप से प्रदर्शनी के लिए आई हुई पुस्तकों में से सर्वोत्कृष्ट कोटि की पुस्तकों का चुनाव करता था, किन्तु कुछ लोगों को इसमें त्रुटि दिखलाई पड़ी। कुछ प्रकाशकों को शिकायत थी कि निर्णायक-मण्डल के सदस्यों का निर्णय एकांगी होता है जिसमें बहुत-कुछ अंशों में उनकी व्यक्तिगत रुचि तथा पक्षपातपूर्ण नीति काम करती है और इस प्रकार बहुत सी उत्कृष्ट पुस्तकों के साथ उचित न्याय नहीं हो पाता। इस त्रुटि को दूर करने के लिए १९५५ ई० में आयोजित प्रदर्शनी में एक नया ढंग अपनाया गया। पुस्तकों के चुनाव के लिए चार प्रकार के मत-पत्रक बनाये गए—(१) प्रकाशक का मत जानने के लिए। (२) शिक्षक का मत जानने के लिए, (३) डिजाइनर का मत जानने के लिए तथा (४) मुद्रक का मत जानने के लिए। प्रत्येक पुस्तक इन मत-पत्रकों के साथ अलग-अलग चार ऐसे व्यक्तियों के पास भेज दी गई जो अपने-अपने व्यवसाय के विशेषज्ञ थे। फिर इन्हीं मत-पत्रकों की सहायता से पुस्तकों की उत्कृष्टता के अंक जोड़ लिये गए। इस वर्ष की उपरोक्त प्रदर्शनी के लिए आई हुई कुल ६१ प्रकाशकों की ३५६ पुस्तकों में से प्रत्येक दृष्टिकोण से सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली ५५ पुस्तकें चुनी गईं। चुनाव-कार्य में कुल १२ निर्णायकों ने भाग लिया। समस्त पुस्तकों को तीन भागों में विभाजित कर दिया गया था—(१) कालेज के लिए, (२) हाईस्कूल के लिए तथा (३) प्राइमरी स्तर के लिए उपयुक्त। प्रत्येक विभाग के लिए उपरोक्त चार व्यवसायों से सम्बन्धित चार निर्णायक नियुक्त किये गए जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से अलग-अलग कार्य किया।

यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि निर्णायकों ने पर्याप्त परिश्रम और निष्पक्षता से काम किया, फिर भी कुछ विशेष कारणों से उचित पुस्तकों के चुनाव में प्रतिवर्ष की भाँति ही इस वर्ष भी आंशिक सफलता ही मिली। एक तो यह प्रणाली एकदम नई थी, निर्णायकों को इस प्रकार के कार्य का अभ्यास बिलकुल नहीं था; दूसरे पुस्तकों को सम्पूर्ण रूप से नहीं जाँचा गया। प्रत्येक निर्णायक चूँकि मात्र अपने ही व्यवसाय का विशेषज्ञ था अतः उसका निर्णय सर्वथा एकांगी होता था, इस तरह चार प्रकार के एकांगी निर्णयों में उचित रीति से समन्वय नहीं स्थापित किया जा सका और इसे कर पाना अत्यन्त कठिन भी था।

पूर्व-प्रचलित प्रणाली में जहाँ एक ओर यह दोष था कि निर्णायक-मंडल में इस प्रकार के विशेषज्ञों का अभाव था, वहीं इस नई प्रणाली में इन विशेषज्ञों को एक समिति के रूप में इकट्ठा बैठकर कार्य नहीं करने दिया गया जिससे वे अपनी सामूहिक जिम्मेदारी महसूस कर सकते और अपनी-अपनी जानकारी से एक-दूसरे की मदद कर सकते। इस प्रकार यदि चारों प्रकार के निर्णायक एक स्थान पर बैठकर कार्य करते तो सफलता की काफी आशा थी। आशा है भविष्य में यही तरीका अपनाया जायगा।

जहाँ तक भारतवर्ष का प्रश्न है, अभी तक इस प्रकार की प्रदर्शनियों के आयोजन का कार्य नहीं किया गया, किन्तु निकट भविष्य में इस प्रकार की प्रदर्शनियाँ आयोजित करना आवश्यक है। हो सकता है प्रारम्भ में विशेष सफलता न प्राप्त हो, किन्तु इस विशिष्ट प्रकार के पुस्तक-उद्योग के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उपरोक्त प्रकार के आयोजनों की अनिवार्यता से इन्कार नहीं किया जा सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, लखनऊ
—डॉ० प्रिमरोज़ की आत्मकथा, ओलिवर गोल्डस्मिथ, अनु० श्री शिवकण्ठ त्रिवेदी, ४)
—डॉ० जैकिल और मिस्टर हाइड, श्री रूपनारायण पाण्डेय, २)
—अधखिला फूल, पर्ल बक, श्री गंगारत्न पाण्डेय, ४)
—भारत की अन्तरात्मा, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्, श्री विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, ३॥)

आनन्द प्रकाशन लिमिटेड, बनारस
—मार्ग प्रकाशिनी, मैबल कॉलिन्स, अनु० श्री रामचन्द्र शुक्ल, अध्यात्म-विषयक, ।≈)
—मार्ग प्रकाशिनी, एनी बेसण्ट व चार्ल्स लेडबीटर, अनु० श्री रामचन्द्र शुक्ल, २)

आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
—आशीर्वाद, श्री साधुराम शुक्ल, २।)
—अधूरी प्यास, श्री 'लहर', २।)

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
—माया जाल, श्री गुरुदत्त, पु० मु०, ५)
—लुढ़कते पत्थर, श्री गुरुदत्त, ६)
—यथार्थ से आगे, श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी, ५॥)
—रहीम, सेठ गोविन्ददास, २)
—भारतेन्दु, सेठ गोविन्ददास, २)
—आलोक साम्य, श्री सन्त गोकुलचन्द्र, २॥)

किताब महल, इलाहाबाद
—भागो नहीं दुनिया को बदलो, श्री राहुल सांकृत्यायन, पु० मु०, ३॥)
—बचपन की स्मृतियाँ, श्री राहुल सांकृत्यायन, १॥।)
—भौगोलिक शब्दकोश और भाषाएँ, डॉ० अमरनाथ कपूर, १०)
—नई इमारत, श्री अंचल, ४॥)
—श्रीमती जी, श्री अज़ीम बेग चगताई, अनु० श्री रतिभानुसिंह 'नाहर', ३)
—अन्धा युग, डॉ० धर्मवीर भारती, २॥)
—सिद्ध साहित्य, डॉ० धर्मवीर भारती, १०)
—अंक ज्योतिर्ज्ञान, श्री हरिनारायणाचार्य चतुर्वेदी, २॥)

गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा
—पश्चात्ताप के आँसू, श्री बलदेव उपाध्याय, १)
—जबा को, डॉ० राजेन, २॥)

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—लोको फिटर, श्री हरीचन्द्र रत्ता, १०)
—गृहनिर्माण कला, श्री राम अवतार 'वीर', १०)
—स्टीम टरबाइन, श्री एच० सी० कपूर, १०)
—फरनीचर बुक, श्री चन्द्रभान, १२)

नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
—पंचशील, श्री मालसिंह, १)
—अलीबाबा की कहानी, श्री गोपीचन्द्र सक्सेना, ।≡)
—अनधिकृत डंगर एक्ट, श्री मालसिंह, ॥।)
—संचिता, सं० श्री अक्षयचन्द्र शर्मा,

नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
—कबीर साहित्य समीक्षा, श्री शिवस्वरूप गुप्त, ४)
—परिणीता, शरतचन्द्र, श्री जी० एस० वर्मा, १।)
—देवदास, शरतचन्द्र, श्री जी० एस० वर्मा, २)

भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
—हवेली का रहस्य, श्री नकाबपोश भेदी,

मयूर प्रकाशन, झाँसी
—ललित विक्रम, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, १॥।)
—अहिल्या बाई, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, २।)
—भुवन विक्रम, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, ३।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसरोवर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद

—मौत की टक्कर, श्री सुशीलादेवी, २)

- तीन लहरें एक फूल, श्री दीपक, २)

—कीचड़ और कमल, श्री दीपक, २)

रंगमहल कार्यालय, दिल्ली

—प्रेत की छाया, श्री ओम्प्रकाश शर्मा, १)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता–७

—रवीन्द्र साहित्य, भाग २१-२२, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० श्री धन्यकुमार जैन, पु० मु०,

—आँख की किरकिरी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० श्री धन्यकुमार जैन, पु० मु०, ४॥)

—रवीन्द्र साहित्य, भाग १६, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु०श्री धन्यकुमार जैन, २।)

लता प्रकाशन, पटना

—मेघदूत एक अनुचिन्तन, श्री रञ्जन सूरिदेव, ५॥)

रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—हमारी आर्थिक समस्याएँ, श्री गिरिराज प्रसाद जैन, ५)

—औद्योगिक संगठन, श्री पी० एल० गोलवलकर, ५)

—स्टेटिस्टिक्स, श्री चन्द्रभान गुप्त, १०)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—केनिल वर्थ, सर वाल्टर स्कॉट, अनु० श्री मगनलाल जै १॥)

—आइवन हो, सर वाल्टर स्कॉट, अनु० श्री मगनला जैन, १॥)

साहित्य प्रकाशन मन्दिर, लश्कर-ग्वालियर

—धन और धरती, श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव

—आराम हराम है, श्री व्यास, ॥=)

—नया भारत, श्री व्यास, ॥=)

—निबन्ध रचना तथा पत्रलेखन, प्रो० हरिराम वर्मा व श्री ठाकुरप्रसाद शर्मा, १)

हिन्दिया प्रकाशन, दिल्ली

—माँझी, पतवार और किनारा, श्री कमल शुक्ल, २)

—कुछ और कन्या, श्री कमल शुक्ल, २)

—नये रास्ते, श्री राम शर्मा 'राम', ३)

—अन्तिम पत्र, श्री अमृता प्रीतम, ३)

हिन्दी प्रचारक मण्डल

—स्वप्न की कहानियाँ, श्री रामदास मिश्र, 'विजय', १॥

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

—रणजीत सिंह, श्री सीताराम कोहली, ५)

हिन्दी की पुस्तकों के लिए बृहत्तम भण्डार

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना-साहित्य-संस्कृति-निबन्ध

आधुनिक गद्य संग्रह, १३२, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १।)
उमाशंकर सिंह, निराला का निरालापन, १२५, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना २)
काव्य कला, ७४, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ।।।)
किशोरीदास वाजपेयी,, हिन्दी शब्द निर्णय, पु० मु०, ३२, क्रा०, हिमालय एजेन्सी, कनखल ।=)
गेटे, अनु० हरि कपूर, सुबह शाम, १४६, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली २।।)
दुर्गाशंकर प्रसादसिंह, कुंवरसिंह एक अध्ययन, ३५०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना ६)
धर्मचन्द्र सन्त, हिन्दी गद्य साहित्य का आविर्भाव और विकास, १२५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो २।)
परमेश्वरीदीन वर्मा व बद्रीविशाल विद्यार्थी, सूरदास, २८०, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ २।।)
प्रचलित हिन्दी, पु० मु०, ११२, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ।।।)
प्रसिद्ध ना० सिंह, भोजपुरी वीरकाव्य, १४०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना २)

आलोचना

रतनलाल रामपुरिया, साम्प्रदायिक मृग मरीचिका, रामपुरिया प्रकाशन, कलकत्ता ।=)
रामचन्द्र संघी, हिन्दुओं के राजनीतिक सिद्धान्त, स्टुडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर ४।।।=)
शिवस्वरूप गुप्त, उद्धवशतक अनुशीलन, २००, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ २।।)
शिवस्वरूप गुप्त, विनय पत्रिका अनुशीलन, ११४, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ १।।)
हरिशंकर उपाध्याय, हिन्दी मुहावरा, पु० मु०, ६६, क्रा०, गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा १।)

उपन्यास

अंचल, चढ़ती धूप, पु० मु०, ३२४, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर० आर० सर्वटे, मुक्त नारी, पु० मु०, ३२४, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
कुशवाहा 'कान्त', पपिहरा, पु० मु०, २५५, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस
कुशवाहा 'कान्त', पराजिता, १३७, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस
गौरीशंकरलाल, जाली नोट, ११२, क्रा०, मानसरोवर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
गौरीशंकरलाल, ढाई लाख, १७२, क्रा०, मानसरोवर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
धर्मेन्द्र, विश्वमित्रा, २१२, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
नकाबपोश भेदी, प्रधान मन्त्री, १३८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
नारायणलाल परमार, छलना, १६०, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस
निर्मला देवी, खूनी दुल्हन, १६०, क्रा०, मानसरोवर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद
प्रताप, बसन्त सेना, २५६, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
प्रताप, मिट्टी : मीनार, २५६, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
बंकिमचन्द्र, अनु० सुनीता अग्रवाल, देवी चौधरानी, २०४, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
भगवतीप्रसाद वाजपेयी, निर्यातन, १८६, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
भट्ट, श्री उदयशंकर, सागर, लहरें और मनुष्य, ३१०, क्रा०, मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली
रमेशचन्द्र 'प्रेम', पाप की छाया, १६०, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
विश्वनाथ राय, प्रेम के आँसू, १६०, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
शिवराम कारान्त, अनु० श्री बाबूराव कुमठेकर, धरती की ओर, ५६४, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सुगन्ध गुप्ता, समुद्र के गर्भ में, १६८, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस
सुशीलादेवी, जासूस का जाल, १२८, क्रा०, मानसरोवर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद

कविता

आधुनिक काव्य संग्रह, २००, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पा० गोपालकृष्ण कौल, शान्ति लोक, १२७, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
भगवतप्रसाद मिश्र, कारा, ७०, क्रा०, स्टुडैण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर
रञ्जन सूरिदेव, गीत संगम, १४०, डि०, लता प्रकाशन, पटना
वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ०, पद्मावत, ८५६, रा०, साहित्य सदन, चिरगाँव
सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, केशव ग्रन्थावली खण्ड २, २३८, रा०, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
सूरदास, श्रीकृष्ण बाल माधुरी, गीताप्रेस, गोरखपुर

कहानियाँ

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य, भाग ७, पु० मु०, १२८, क्रा०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता
राहुल सांकृत्यायन, शैतान की आँख, पु० मु०, १६८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
शम्भूदयाल सक्सेना, चित्रपट, पु० मु०, २५०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहासन बत्तीसी, १२८, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा १)

नाटक

रामकुमार वर्मा, डॉ०, रिमझिम, ३२२, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद ३॥)
सिपाही सिंह, द्वापर की क्रान्ति, ८८, कापी सा०, गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा १)
सेठ गोविन्ददास, सबै भूमि गोपाल की, ६४, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवासंघ प्रकाशन, बनारस ।)

बाल साहित्य–प्रौढ़ साहित्य

इन्द्रनाथ मदान, देश-देश के बालक, भारत के बालक, क्रा०, ओरिएण्ट लाँगमैन्स लि०, नई दिल्ली ॥)
कृष्णनन्दन प्रसाद, बुलबुल या वीरबाला, पहला भाग, १४४, क्रा०, तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद १॥)
कृष्णनन्दन प्रसाद, बुलबुल या वीरबाला, दूसरा भाग, १४४, क्रा०, तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद १॥)
जयचन्द्र विद्यालंकार, पुरखों का चरित (पहली पोथी), १३२, क्रा०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद २)
जयचन्द्र विद्यालंकार, पुरखों का चरित (दूसरी पोथी), ६६, क्रा०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद १॥)
जयचन्द्र विद्यालंकार, पुरखों का चरित (तीसरी पोथी), ११६, क्रा०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद १॥)
जानकीशरण वर्मा, टोली विधि, पु० मु०, १४०, क्रा०, तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद १।=)
नरेन्द्र प्रसाद सिंह, ग्राम सुधार, ६०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
शम्भूदयाल सक्सेना, दो नगरों की कथा, १५०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १॥)

विविध

अंग्रेज़ी अपठित गद्यांशों को कैसे हल करें, भारतीय पुस्तक भवन, आगरा ।=)
अंग्रेज़ी में विराम आदि का प्रयोग, भारतीय पुस्तक भवन, आगरा ।=)
एम० विनायक, हाथ की चक्की, ६४, डि०, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, बनारस ॥)
कृष्णदत्त भट्ट, भूमि क्रान्ति का तीर्थ कोरापुर, ४६, क्रा०, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, बनारस ।)
के० प्रसाद, मधु के गुण, १२८, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली २॥)
के० सी० जैन, बुनियादी शिक्षा, १५०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर २)
कैलाशनाथ शर्मा व शम्भूरत्न त्रिपाठी, पारिवारिक समाज-शास्त्र, २५५, डि०, किताब महल, इलाहाबाद ३॥)
कैलाशनाथ शर्मा व मदनमोहन सक्सेना, समाज-शास्त्र के मूल सिद्धान्त, भाग २, २५६, डि०, किताब महल इलाहाबाद ४)
नरेन्द्रनाथ, इलैक्ट्रिक गाइड, पु० मु०, ८००, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६)
नरेन्द्रनाथ, इलैक्ट्रिक लाइटिंग, ३७६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६)
मालसिंह, राजस्थान काश्तकारी कानून, १००, डि०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १।)
मुहम्मद असगर अली कादरी, पुस्तक कला दर्शन, भाग १, ६७, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद ॥)
मुहम्मद असगर अली कादरी, पुस्तक कला दर्शन, भाग २, ८४, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद असगर अली कादरी, पुस्तक कला दर्शन, भाग ३, ६६, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद |||

भगवानदास मित्तल, अखण्ड त्रिकालज्ञ, २००, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ४

भूमि वितरण, ६०, क्रा०, अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, बनारस |-

रामचरण महेन्द्र, आनन्दमय जीवन, गीता प्रेस, गोरखपुर |||)

रामनारायण वैद्य, देहाती जड़ी-बूटियाँ, ४६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ७

राष्ट्र भाषा प्र० सर्व संग्रह, ६६, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १

राहुल सांकृत्यायन, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, पु० मु०, ३२, क्रा०, हिमालय एजेन्सी, कनखल |=

रेखा चित्र, १०६, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १)

लक्ष्मीधर वाजपेयी स्व०, गार्हस्थ्य शास्त्र, पु० मु०, १८४, क्रा०, तरुण भारत ग्रन्थावली, इलाहाबाद २

सनातन षोड़श संस्कार विधि, गोयल एण्ड कं०, दिल्ली ३

सूचना

'प्रकाशन समाचार' का अक्टूबर में प्रतीक्षित सूची-विशेषांक जनवरी के इस अंक के साथ परिशिष्ट के रूप में आपके पास भेजा जा रहा है। इस विशेषांक में हिन्दी की सभी विषयों की लगभग १००० उत्कृष्टतम पुस्तकों की सूची है, जिसे अधिकारी सम्पादन-समिति ने अथक परिश्रम से तैयार किया है। पुस्तकों के चयन में इस सूची से आपको अत्यधिक सहायता मिलेगी। अपनी प्रति सुरक्षित रखें।

इस सूची-विशेषांक का मूल्य १) एक रुपया है, किन्तु स्थायी ग्राहकों को यह साधारण मूल्य में ही मिलता है। यदि ग्राहक न होने के कारण आपको यह विशेषांक नहीं मिला तो आज ही २॥) मनीआर्डर से भेजकर चालू वर्ष के लिए ग्राहक बन जायँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २।।) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$"×६" या २$\frac{3}{4}$"×८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १"×२$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$"×६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७।।)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रन्थ

१. हिन्दी-साहित्य का आदिकाल—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। प्राचीन रचनाओं के उदाहरण भी। मूल्य पौने तीन रुपये, अजिल्द, पृष्ठ-संख्या १३२। आदिकालीन साहित्य का प्रामाणिक विश्लेषण।

२. यूरोपीय दर्शन—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। आधुनिकतम दार्शनिक प्रगति भी। मूल्य सवा तीन रुपये, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ११५। लेखक का दुर्लभ चित्र और परिचय।

३. हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य सजिल्द साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और १८८ इकरंगे ऐतिहासिक चित्र। प्राचीन भारत के वैभव का काव्यात्मक वर्णन।

४. विश्वधर्म-दर्शन—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द, विश्व के प्रमुख धर्मों का इतिहास और परिचय। भारतीय संस्कृति का विशद विवेचन।

५. सार्थवाह—डा० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। १०० ऐतिहासिक चित्र तथा दो दुरंगे मानचित्र। सर्वत्र प्रशंसित। सजिल्द। अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक।

६. वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—डा० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये। गवेषणापूर्ण और मननीय। अनुसंधायकों के अध्ययन-योग्य।

७. सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। सजिल्द, मूल्य चौदह रुपये। सात तिरंगे और बारह एकरंगे चित्र। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ। शोधपूर्ण समीक्षात्मक।

८. काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत)—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत 'संस्कृत-रत्नाकर'-सम्पादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये, प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट। सजिल्द। मूलयुक्त।

९. श्री रामावतार शर्मा-निबन्धावली—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये। पाण्डित्यपूर्ण पठनीय निबन्ध। सजिल्द। लेखक का सचित्र परिचय।

१०. प्राङ्मौर्य बिहार—डा० देवसहाय त्रिवेद। मूल्य सवा सात रुपये। प्राचीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह एकरंगे ऐतिहासिक चित्र। सजिल्द। सुन्दर आवरण।

११. गुप्तकालीन मुद्राएँ—डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। सजिल्द। प्राचीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक। मुद्राशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक।

१२. भोजपुरी भाषा और साहित्य—डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ६२५। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सुविस्तृत भूमिका-सहित। सजिल्द।

१३. राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त—श्री गोरखनाथ सिंह (भूतपूर्व शिक्षा-निर्देशक, बिहार)। मूल्य डेढ़ रुपया। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२। राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

१४. रबर—श्री फूलदेव सहाय वर्मा, (कालेज-इन्स्पेक्टर, बिहार-विश्वविद्यालय), सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये, पृष्ठ २२६, चित्र ६१। ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक, आकर्षक आवरण।

१५. ग्रह-नक्षत्र—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०। पृष्ठ ११८, रेखाचित्र ५०। मूल्य सवा चार रुपये। खगोल-जगत् का अद्भुत दृश्य-दर्शक रोचक वर्णन। सजिल्द।

१६. नीहारिकाएँ—डा० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ७२, चित्र २१। मूल्य सजिल्द सवा चार रुपये। वैज्ञानिक विषय का मनोहर साहित्यिक वर्णन। नेत्ररंजक आवरण।

१७. हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०, पृष्ठ १३४, मूल्य सजिल्द तीन रुपये। भावात्मक चित्रमय आवरणयुक्त जिल्द।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी, १९५६ वर्ष ३ अङ्क ६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक २।।) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
गुरुकुल पत्रिका

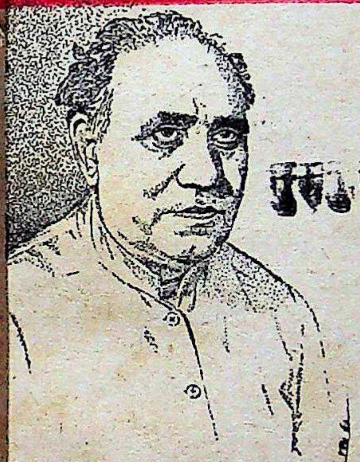

हिन्दी जगत् के प्रसिद्ध उपन्यासकार
श्री गुरुदत्त जी की नवीन रचना

मा न व

सुन्दर रूपरेखा, आकर्षक तीन रंग का पालिश्ड जैकेट, सुदृढ़ जिल्द, पृष्ठ संख्या ३७२, मूल्य ५)

मनुष्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य में विघ्न-बाधाओं को पार कर सफलता की ओर अग्रसर होने की प्रबल इच्छा रहती है। मनुष्य जितना आगे बढ़ने का यत्न करता है, उतना ही वह मानव-प्रकृति को रखने वाला माना जाता है।

संसार के सब महात्मा यह गुण रखते हैं और विघ्न-बाधाएँ उनको और भी आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती हैं।

इस पृष्ठ-भूमि पर 'मानव' नाम का यह उपन्यास अति रोचक बना है।

- गुरुदत्त जी उन लेखकों में से हैं जो एक निश्चित उद्देश्य को लेकर साहित्य-निर्माण की ओर अभिमुख होते हैं। —'आजकल' दिल्ली
- श्री गुरुदत्त के उपन्यासों का एक आधार यदि खोजा जाय तो वह है हिन्दू संस्कृति पर पूरा-पूरा गर्व और आधुनिक मतवादों के प्रति एक सशंक दृष्टिकोण। —'प्राची'
- लेखक की शैली मँजी और परिपक्व है। —'धर्मयुग'
- लेखक केवल कला के लिए कला के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। वे जो कुछ लिखते हैं, एक निश्चित विचारधारा और लक्ष्य सामने रखकर। —'वीर अर्जुन'

भा र ती सा हि त्य स द न

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

श्री गुरुदत्त के उपन्यासों की पूरी सूची पृष्ठ संख्या ६६७ पर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रंथ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। प्राचीन रचनाओं के उदाहरण भी। मूल्य पौने तीन रुपये, अजिल्द, पृष्ठ-संख्या १३२। आदिकालीन साहित्य का प्रामाणिक विश्लेषण।

२. **यूरोपीय दर्शन**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। आधुनिकतम दार्शनिक प्रगति भी। मूल्य सवा तीन रुपये, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ११५। लेखक का दुर्लभ चित्र और परिचय।

३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य सजिल्द साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और १८८ इकरंगे ऐतिहासिक चित्र। प्राचीन भारत के वैभव का काव्यात्मक वर्णन।

४. **विश्वधर्म-दर्शन**—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द, विश्व के प्रमुख धर्मों का इतिहास और परिचय। भारतीय संस्कृति का विशद विवेचन।

५. **सार्थवाह**—डा० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। १०० ऐतिहासिक चित्र तथा दो दुरंगे मानचित्र। सर्वत्र प्रशंसित। सजिल्द। अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—डा० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये। गवेषणापूर्ण और मननीय। अनुसंधायकों के अध्ययन-योग्य।

७. **सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन**—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। सजिल्द, मूल्य चौदह रुपये। सात तिरंगे और बारह एकरंगे चित्र। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ। शोधपूर्ण समीक्षात्मक।

८. **काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत 'संस्कृत-रत्नाकर'-सम्पादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये, प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट। सजिल्द। मूलयुक्त।

९. **श्री रामावतार शर्मा-निबन्धावली**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये। पाण्डित्यपूर्ण पठनीय निबन्ध। सजिल्द। लेखक का सचित्र परिचय।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—डा० देवसहाय त्रिवेद। मूल्य सवा सात रुपये। प्राचीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह एकरंगे ऐतिहासिक चित्र। सजिल्द। सुन्दर आवरण।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। सजिल्द। प्राचीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक। मुद्राशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ६२५। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सुविस्तृत भूमिका-सहित। सजिल्द।

१३. **राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त**—श्री गोरखनाथ सिंह (भूतपूर्व शिक्षा-निर्देशक, बिहार)। मूल्य डेढ़ रुपया। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२। राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

१४. **रबर**—श्री फूलदेव सहाय वर्मा, (कालेज-इन्स्पेक्टर, बिहार-विश्वविद्यालय), सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये, पृष्ठ २२६, चित्र ६१। ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक, आकर्षक आवरण।

१५. **ग्रह-नक्षत्र**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०। पृष्ठ ११८, रेखाचित्र ५०। मूल्य सवा चार रुपये। खगोल-जगत् का अद्भुत दृश्य-दर्शक रोचक वर्णन। सजिल्द।

१६. **नीहारिकाएँ**—डा० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ७२, चित्र २१। मूल्य सजिल्द सवा चार रुपये। वैज्ञानिक विषय का मनोहर साहित्यिक वर्णन। नेत्ररंजक आवरण।

१७. **हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०, पृष्ठ १३४, मूल्य सजिल्द तीन रुपये। भावात्मक चित्रमय आवरणयुक्त जिल्द।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :

: अंक ६ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

पहले अंक से इस पत्र को देखने-पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात का साक्षी होगा कि हमारा दृष्टिकोण लेखक-वर्ग के प्रति आदरपूर्ण रहा है। हमने कभी भी लेखकों की अवज्ञा में कोई बात नहीं कही है। अपने कर्तव्य से उन्मुख प्रकाशकों के विरुद्ध लेखकों की शिकायतों ने पत्रों और विशेष लेखों के रूप में **प्रकाशन समाचार** के कई-एक अंकों में स्थान पाया है। इस पत्र ने प्रकाशकों को अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत करने की तथा लेखकों से उदार और नैतिक सम्बन्ध स्थापित करने की ओर सदैव प्रेरित किया है।

हमें मालूम हुआ है कि गत अंक के अग्रलेख पर कुछ लेखकों ने तीव्र क्षोभ प्रकट किया है। कहा गया है कि प्रकाशकों द्वारा लेखकों के शोषण का आरोप सत्य है। हमारे लेख का गलत अभिप्राय समझते हुए यह भी कहा गया है कि यदि श्री नेहरू ने प्रकाशकों के समूचे वर्ग पर कोई आरोप लगाने की भूल की थी तो **प्रकाशन समाचार** को सभी लेखकों को व्यवहार का कपटी बतलाने की धृष्टता न करनी चाहिए थी। यह भी सुनने में आया है कि अपने वर्ग के प्रति कुछ उत्साही लेखक हमारे अग्रलेख के उत्तर में प्रकाशकों द्वारा किये गए दुष्कृत्यों की लम्बी तालिका प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

ईमानदारी से हम सबसे पहले इस बात का अपने विश्वास और ईमानदारी से खण्डन करना चाहेंगे कि अपनी टिप्पणी से हम किसी रूप में, किसी अंश में भी, लेखक-वर्ग के प्रति निरादर का भाव व्यक्त करने का प्रयास कर रहे थे। देश और काल की सीमाओं से हटकर साहित्यकार का मानव-समाज में जो शीर्ष स्थान है, हम उससे परिचित हैं। आज का लेखक यदि लेखन का व्यवसाय बनाकर बढ़ता है तो हम उसकी विवशताओं को भी जानते हैं, उसकी प्रतिभा के प्रति व्यावसायिकता की इस पुट के कारण ही हम अविश्वास और सन्देह की भावना नहीं लिये रहते हैं।

गत अंक में हमने लेखकों के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा, वह बहुत संकोच और खेद से कहा गया था। हमारे कहने का तात्पर्य यही था कि जिस प्रकार प्रकाशकों में कुछ लोग अपने दुर्व्यवहार से प्रकाशन-व्यवसाय के व्यापक लांछन का कारण बनते हैं, यदि इस तर्क में कोई औचित्य है (जिसे हम स्वीकार नहीं करते) तो लेखकों में भी उस प्रकार के आपत्तिजनक व्यवहार के अपराधी हैं और गिनाये जा सकते हैं। हमारा यह कहना है कि प्रकाशकों द्वारा लेखकों के सामान्यतया शोषण के आरोप की बात नये, अपने कर्तव्यों से परिचित, प्रकाशकों की भावनाओं को ठेस पहुँचाये बिना अब नहीं कही जा सकती। हमने अपने अग्रलेख में पुस्तकों की अत्यधिक सीमित बिक्री की समस्या की ओर भी संकेत किया था जो अन्ततः हिन्दी के लेखकों के प्रकाशकों के विरुद्ध सहज क्षोभ का कारण है।

लेखकों के क्षोभ का एक दूसरा, महत्त्वपूर्ण कारण प्रकाशन-व्यवसाय से उनका नितान्त अपरिचित होना है। पश्चिम के देशों में लेखक (क्योंकि आज लेखन को वह स्वयं भी व्यवसाय मानता है, एक विशेष प्रकार का) अपने करीब के (और प्रकाशक से कौन उसके अधिक करीब है!) व्यवसाय के अन्तरंग को जानने की कोशिश करता है, उसकी कठिनाइयों और सफलताओं को एक हद तक अपनी मानने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार रहता है। समाजवादी देशों का लेखक अपने कृतित्व की सफलता को सामाजिक उपयोगिता की कसौटी पर परखने में संकोच नहीं करता; वहाँ का समाज इस कारण उसका जितना सम्मान करता है वह अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं के देशों में दुर्लभ और असम्भव है। हमारे देश का लेखक इस व्यावसायिक पक्ष को अपने ऊपर आक्षेप समझता है, यद्यपि वास्तव में अपनी कृतियों को प्रकाशित देखने की और उनसे उचित पारिश्रमिक पाने की उसकी उत्कण्ठा अन्य देशों के लेखकों से किसी प्रकार कम नहीं है, जो ठीक भी है। न ही हमारे देश में आज के लेखकों का एक वर्ग समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग है; देश के महान् निर्माण-काल में स्वान्तःसुखाय लिखने की वैयक्तिक स्वतन्त्रता उसे अधिक अभीष्ट है। लेकिन इस प्रश्न का प्रस्तुत कठिनाई से विशेष सम्बन्ध नहीं है, और फिर लेखक किसी भी प्रकाशकीय पत्र द्वारा इस प्रकार के विचारों को व्यक्त करना उसकी अनधिक चेष्टा से अधिक क्यों मानेगा ?

गत अंक में हमने जो कुछ लिखा, उसके विरोध में बहु कुछ कहा गया है, लेकिन यह कहीं-नहीं कहा गया कि व असत्य है। यदि वह लेखकों को बुरा या अटपटा लगा तो केव इस कारण कि उन्होंने वर्ग-भावना से प्रेरित होकर सोचा। य भी असत्य नहीं है कि हमें भी प्रकाशक-वर्ग की हित-चिन्त से ही लिखना पड़ा था। शायद वर्ग-भेद की दृष्टि से इ प्रश्नों पर सोचना हितकर नहीं है। प्रकाशकों में अप कर्तव्यों को निबाहने में सभी अडिग नहीं रहते, यह हम कई बार इसी पत्र में कहा है। यदि लेखक भी इस सत्य क उसी रूप में स्वीकार कर लें कि उनमें भी सभी लोग व्यव हार के सच्चे नहीं हैं तो पारस्परिक उलझनों को सुलझा लेन आसान हो जायगा।

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य *प्रत्येक भाग ८)*

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा पक्ष

इस पत्र के गत अंक की सम्पादकीय टिप्पणी पर प्रयाग के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' (२२ जनवरी, ५६ का साप्ताहिक संस्करण) के सम्पादकीय अग्रलेख का यह रूपान्तर दिलचस्पी से पढ़ा जायगा। हिन्दीकरण श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव ने प्रस्तुत किया है।

नई दिल्ली में ७ दिसम्बर, १९५५ को 'फेडरेशन ऑफ़ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स असोसिएशन्स इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री नेहरू ने भाषण देते हुए प्रकाशन-व्यवसाय की कटु निन्दा की। उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि वह लेखक-प्रकाशक संघर्ष पर लेखक के दृष्टिकोण से विचार कर रहे हैं। निःसंदेह ही इस आलोचना का आधार उनके अपने स्वयं के अनुभव और उन लेखक-भाइयों के अनुभव थे जिन्होंने अपनी दुःख भरी गाथा उनके कानों तक पहुँचाई थी। इन तथ्यों से उन्होंने कुछ निष्कर्ष निकाले और उनके आधार पर देश के उन प्रकाशकों की कटु निन्दा की जो निर्धन लेखकों की प्रतिभा और श्रम का शोषण करते हैं। प्रधान-मंत्री ने यह भी कहा कि साहित्य के उत्पादन व वितरण के व्यवसाय में लेखकों का स्थान प्रकाशकों अथवा पुस्तक-विक्रेताओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।

प्रधान-मंत्री के भाषण की समीक्षा करते हुए इस पत्र (लीडर) ने अपने दैनिक-संस्करण के सम्पादकीय-स्तम्भ में इस दृष्टिकोण का समर्थन किया था कि लेखक उन समस्त सहयोगियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, जिनके संयुक्त प्रयास के फलस्वरूप साहित्य पाठकों तक पहुँचता है। यह सत्य है कि साहित्य की उपयोगिता उसके अन्ततः पाठकों तक पहुँचने में है और लेखन के इस वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति में प्रकाशकों का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। समस्त सहयोगियों में लेखक सबसे महत्त्वपूर्ण है—इस कथन का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रकाशक का कोई महत्व नहीं है। वास्तव में देखा जाय तो लेखक या प्रकाशक से भी अधिक महत्त्वपूर्ण तो पाठक है, जिसके सक्रिय सहयोग के अभाव में तो प्रकाशकों के लिए सिवाय इसके कोई रास्ता ही न रह जायगा कि वे पुस्तक-व्यवसाय ठप करके साइकिल या बटनों का पेशा चालू करें। लेखक भी—चाहे उसकी प्रेरणा कितनी ही दिव्य क्यों न हो—यदि केवल निजी मनोरंजन के उद्देश्य से लिखता है, तो उसका यह कार्य 'रोप ट्रिक' के समान ही है, जिसकी चर्चा तो बहुत होती है, किन्तु जो देखी कभी नहीं गई।

हिन्दी-लेखक यह बाजीगरी चाहे न दिखा सके, लेकिन और सभी कुछ कर सकने की आशा उससे की जा सकती है। प्रधान-मन्त्री की आलोचना से क्षुब्ध होकर हिन्दी प्रकाशन-जगत् के

श्री गुरुदत्त जी की रचनाएँ

१. स्वाधीनता के पथ पर	मूल्य	६)
२. पथिक	,,	६)
३. उन्मुक्त प्रेम	,,	६)
४. विकृत-छाया	,,	४॥)
५. भावुकता का मूल्य	,,	६)
६. स्वराज्य दान	,,	६)
७. बहती रेता	,,	५)
८. विश्वासघात	,,	५॥)
९. विडम्बना	,,	६)
१०. देश की हत्या	,,	५॥)
११. प्रवंचना	,,	५)
१२. मायाजाल	,,	५)
१३. वाम मार्ग	,,	७)
१४. विलोम गति	,,	५)
१५. उमड़ती घटाएँ	,,	६)
१६. गुण्ठन	,,	५)
१७. मानव	,,	५)
१८. लुढ़कते पत्थर	,,	५॥)
१९. अन्तिम यात्रा	,,	१)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख मासिक पत्र **'प्रकाशन समाचार'** ने अपने सम्पादकीय में जनता के समक्ष उस संघर्ष का दूसरा पहलू रखने का प्रयास किया है। बगैर किसी नाम का उल्लेख किये हिन्दी-लेखकों के अनेक उदाहरण दिये गए हैं, जिन्होंने शीघ्र ही विश्वास कर लेने वाले प्रकाशकों को दूसरी जगह से ली गई सामग्री को मौलिक सामग्री के रूप में देकर या अपनी पुरानी सामग्री को कतर-ब्योंत के बाद नया रूप देने का धोखा दिया है या उन्हें ऐसी सामग्री देकर मूड़ा है जो पहले से ही मुद्रित और प्रकाशित है और जिसका पारिश्रमिक उन्हें अन्यत्र से प्राप्त हो चुका है। अत्यन्त ही आक्रोशपूर्ण और चोट खाए-से स्वर में इस मासिक पत्र ने प्रकाशन-व्यवसाय की ओर से यह प्रश्न उठाया है कि क्या ऐसे लेखकों का ही लेखक के रूप में आदर करने के लिए कहा जाता है और क्या यही लेखक हैं, जिनकी शिकायतों की ओर प्रधान-मन्त्री ध्यान देने जा रहे हैं? और भी अधिक क्रुद्ध स्वर में इस पत्र ने अपना दृढ़ मत व्यक्त किया है कि हिन्दी में विरला ही ऐसा लेखक होगा जिसकी कृतियों के सम्बन्ध में यह न कहा जा सके कि उनमें और एक ऐसे व्यक्ति के प्रलाप में समानता नहीं है, जिसकी नींद किसी दुःस्वप्न के कारण टूट गई हो, या उनके साहित्य का निर्माण उनकी आदिम और असामाजिक वृत्तियों के आधार पर नहीं होता है, अथवा उनकी रचनाओं में यह क्षमता है कि वे मानवीय आशा व विश्वास को जगा-कर सहानुभूति और मैत्री के क्षेत्र का विस्तार कर सकें। यह अत्यन्त कटु आलोचना है और वस्तुतः इतनी कटु है कि इससे लोगों में वाञ्छनीय प्रभाव उत्पन्न होने की आशा नहीं की जा सकती। हम यह स्वीकार करते हैं कि वर्ग के रूप में हिन्दी-लेखकों के विरुद्ध बहुत-कुछ कहा जा सकता है, किन्तु जो-कुछ और जिस प्रकार कहा गया है, या जिस सन्दर्भ में कहा गया है, उसकी उपयोगिता में हमें सन्देह है। जो कुछ भी आक्रोश या दुर्भावना से कहा जाता है, वह कभी भी स्वस्थ प्रभाव नहीं उत्पन्न कर पाता, चाहे वह नितान्त सत्य ही क्यों न हो और उसका आधार कितना ही दृढ़ क्यों न हो। जो कुछ प्रधान-मंत्री ने किया, वह यही था कि उन्होंने एक स्थिति के एक विद्रूप पक्ष की ओर ध्यान आकर्षित किया और **प्रकाशन-समाचार** उसके दूसरे पहलू की ओर ध्यान आकर्षित करता है। भाषण और उसका प्रत्युत्तर दोनों एक-दूसरे का खंडन नहीं कर पाते, वरन् दोनों मिलकर एक अत्यन्त निराशाजनक स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

किन्तु इतना सब कुछ कहने के उपरान्त भी यह सत्य है कि मस्तिष्क में यह प्रभाव तो बना ही रहता है कि हिन्दी के लेखक-वर्ग में कहीं भारी गड़बड़ी अवश्य है। यह सोचने का उपक्रम करना व्यर्थ होगा कि **प्रकाशन-समाचार** में दिए गए उदाहरण चौंकाने वाले हैं या गलत हैं या अतिरंजित हैं। उन उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य विविध प्रकार के भी अनैतिक कार्य हैं जिनकी अब जन साधारण पर कोई प्रति-क्रिया नहीं होती। यह एक अत्यन्त निराशापूर्ण सत्य है किन्तु कुछ भी हो, सत्य तो है ही। जिन्हें अपने चारों ओर की परिस्थितियों से सही-सही जानकारी है, उनसे यह तथ्य छिपा नहीं है कि बेशुमार पैसा पैदा करने वाली कितनी ही पाठ्यपुस्तकें में भ्रष्टाचारी प्राध्यापकों के बेनाम विद्यार्थियों द्वारा कूड़ा-कचरा एकत्र कर दिया जाता है। साहित्य की अनेक तथाकथित उत्कृष्ट कृतियाँ शब्दाडम्बर-मात्र हैं। कितने ही स्वनामधन्य साहित्यिकों की प्रतिष्ठा का आधार केवल वह दृष्टि-भ्रम है, जो उनके किसी आलोचक-मित्र की जादुई लकड़ी के प्रभाव से पैदा कर दिया जाता है·········! किन्तु उदा-हरणों की इस शृंखला को लम्बी करते जाने से कोई लाभ नहीं। यह सब तो सभी लोग अच्छी तरह से जानते ही हैं। रोग के लक्षणों की सूची तैयार करने के बजाय उसका उपचार करने की आवश्यकता है। प्रधान मन्त्री और **प्रकाशन-समा-चार** दोनों की स्पष्टवादिता से उपचार का कार्य तत्काल प्रारम्भ किया जा सकता है बशर्ते कि लोगों का ध्यान इस समस्या से हटाकर प्रश्नों को उठाने वाले व्यक्तियों की ओर नहीं मोड़ दिया जाता।

भूल-सुधार

हमें खेद है कि 'प्रकाशन समाचार', जनवरी अंक, पृष्ठ ६८३ पर विज्ञापन में हास्य-रस प्रधान कहानी-संग्रह 'महिला-शासन' को भूल से कविता संग्रह लिखा गया है। पाठक-गण सुधार लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'रंगभूमि' द्वारा प्रस्तुत—

अंजो दीदी

लेखक अश्क

निर्देशक: राजजोशी

२२ जनवरी, १९५६ को इलाहाबाद में प्रसिद्ध नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का यह सामाजिक, समस्यामूलक नाटक अतीव सफलता से खेला गया। इलाहाबाद के एमेचर नाटकों के इतिहास में दर्शक न कभी इतना तल्लीन हुए, न इतना हँसे।

अंजो दीदी की तरह अश्क के अन्य नाटक भी उतने ही अभिनेय और सुपाठ्य हैं:

जय पराजय	३॥)
पैंतरे	३।)
कैद और उड़ान	२॥।)
अलग-अलग रास्ते	२॥)
छठा बेटा	२।)
एकांकी :	
देवताओं की छाया में	२॥।)
चरवाहे	३)
पक्का गाना	३)
पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ	३॥।)
अंधो गली (प्रेस में)	४)

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में हिन्दी के सभी प्रकाशकों को शोषक बतलाया था। इस आरोप को चुपचाप सह लेना अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत प्रकाशकों के लिए असम्मानजनक था। मेरी सम्मति में आपने जनवरी अंक के सम्पादकीय में इस प्रश्न को उठा के ठीक ही किया है।

दूसरी ओर यह कहना भी उतना ही गलत होगा कि 'सभी' लेखक अनीतिपूर्ण व्यवहार करते हैं। न सब प्रकाशक ही खरे हैं और न सब लेखक ही दूध के धोये। कर्तव्यच्युत व्यक्ति प्रकाशक और लेखक दोनों के समाज में पाए जाते हैं।

यह बात ठीक है कि लेखकों की बात सब जगह सुनी जाती है, प्रकाशकों को अक्सर चुप ही रहना पड़ता है।

वाचस्पति पाठक,
भारती भण्डार, इलाहाबाद।

प्रिय सम्पादक जी,

जनवरी अंक ५ प्राप्त हुआ, सम्पादकीय पढ़ा। अपने जन-नायक प्रधान-मन्त्री नेहरू के वक्तव्य के प्रति आपने जो समीचीन व साहसपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया है, वह स्तुत्य है। मैं हैरान था कि इतने प्रकाशकों में से किसी को प्रत्युत्तर देने की सूझ न आई। यह सही है कि कभी किसी जमाने में कुछ कतिपय प्रकाशकों ने ऐसा-कुछ किया हो पर उस पर से प्रकाशक-वर्ग पर कीचड़ उछालना क्या उचित है? लेखकों के सम्मान के साथ क्या प्रकाशकों को सम्मान अपेक्षित नहीं है? अपने साहसपूर्ण प्रत्युत्तर पर हमारा साधुवाद स्वीकार करें।

राजनारायण अग्रवाल,
व्यवस्थापक, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल,
आगरा

प्रिय सम्पादक जी,

'फेडरेशन ऑव पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने जो भाषण दिल्ली में दिया है, उसका प्रकाशित विवरण यदि सत्य है तो वह विचारणीय है। विशेषतया लेखक और प्रकाशक के सम्बन्ध को लेकर जिस 'शोषण' की चर्चा की गई है वह कदापि उपेक्षणीय नहीं है।

लेखक अपने युग और समाज की बौद्धिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक ही नहीं होता अपितु वह समाज का निर्माता भी है। अतएव वह हमारे श्रद्धा एवं सम्मान का पात्र है। हम उसके सम्मान पर गर्व अनुभव करते हैं तो उसके अपमान पर क्षोभ अथवा ग्लानि। इसी प्रकार प्रकाशक अथवा विक्रेता लेखक और पाठक के बीच की अनिवार्य कड़ी है। वह किसी भी प्रकार लेखक अथवा पाठक के हित का विरोधी नहीं अपितु दोनों के हित का साधक अथवा सहायक है। उसका अनैतिक आचरण स्वयं उस व्यवसाय के लिए भी घातक है, जिस पर वह आश्रित है। उस पर पर्दा डालना अथवा समर्थन करना कदापि अभीष्ट नहीं।

परन्तु श्री नेहरू ने जिस 'शोषण' की चर्चा की है वह न केवल एकांगी है अपितु अशोभन भी। बेईमानी बेईमानी ही है चाहे जिसके द्वारा की गई हो। इसके बारे में दो राय नहीं हो सकतीं। इस प्रवृत्ति की जितनी भी निन्दा अथवा भर्त्सना की जाय वह थोड़ी है।

फिर भी आरोप लगाते समय श्री नेहरू जैसे व्यक्तित्व के महापुरुष को चाहिए था कि पुलिस की तरह किसी एक पक्ष को अपराधी मानकर प्रमाण न जुटावें अपितु केवल प्रमाण के आधार पर ही किसी को अपराधी घोषित करें। मैं नहीं जानता कि ऐसा करते समय उनके मन में अथवा सामने क्या बात रही है? परन्तु यदि यह उनके अनुभव की बात है तो उन्हें अपनी प्रकृति के अनुसार साहसपूर्वक सार्वजनिक रूप में प्रकाशन-विशेष की ओर स्पष्ट संकेत करना चाहिए था अथवा अपराधी को दण्ड दिलाने का मार्ग अनुसरण करना चाहिए था। इसके विपरीत यदि उनके वक्तव्य का आधार सुनी-सुनाई बातें हैं तो उसकी पूरी छानबीन के बाद ही पूरे व्यवसाय को लाञ्छित करने का गौरव उन्हें प्राप्त करना चाहिए था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपने दैनिक जीवन का हमें अनुभव है कि हमें प्रत्येक क्षेत्र में भले-बुरे से काम पड़ा करता है। परन्तु हम पूरे समाज को एक ही स्वर में भला अथवा बुरा नहीं कह दिया करते। आपने जनवरी के सम्पादकीय में इस ओर ध्यान देकर उचित ही किया है।

भवदीय,
नर्मदेश्वर चतुर्वेदी,
इलाहाबाद।

◈ ◈ ◈

प्रिय,

'प्रकाशन समाचार' के वर्ष ३, अंक ५ में आपने ६७३वें पृष्ठ पर फ़ेडरेशन ऑव पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स असोसिएशन्स इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन में दिये गए प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के भाषण की चर्चा की है और लिखा है, **'किसी सार्वजनिक संस्था** ने उनकी पुस्तकों के अनुवाद छापकर प्राप्य पारिश्रमिक या रॉयल्टी नहीं दी, इस तथ्य को भी श्री नेहरू ने अपने भाषण में घोषित किया।' उसी अंक में आपने नेहरूजी के उक्त भाषण को 'दैनिक' 'स्टेट्समैन' से लेकर उसका अनुवाद प्रकाशित किया है। उस भाषण में एक वाक्य है, 'इसी प्रकार की **कुछ संस्थाओं** ने मेरी कई पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित किये हैं और उन्होंने मुझे सूचित किया है कि उनके यहाँ रॉयल्टी देने का नियम नहीं है।' 'स्टेट्समैन' में देखने से पता चला कि पण्डितजी ने **'इन्स्टीट्यूशन'** शब्द का प्रयोग किया है। आपने अपने नोट में उसका अनुवाद **सार्वजनिक संस्था** कर दिया है, जो सही नहीं है। उसे कृपया सुधार दें।

उक्त वक्तव्य की ओर हमने पण्डितजी का ध्यान आकर्षित किया था। इस सम्बन्ध में उनके कार्यालय से उनके निजी सचिव का १७ जनवरी, १९५६ का पत्र हमें प्राप्त हुआ है, जिसमें लिखा है, "मुझे आपको यह भी सूचित करने की आज्ञा मिली है कि प्रधानमन्त्री के वक्तव्य के बारे में 'स्टेट्समैन' में जो रिपोर्ट छपी है, वह सत्य है। किन्तु प्रधानमन्त्री का उक्त कथन उनकी पुस्तकों के **हिन्दी अनुवादों पर लागू नहीं होता,** वरन् अन्य पुस्तकों पर।"

आपने जिस ढंग से टिप्पणी की है, उससे पण्डितजी के हिन्दी-अनुवादों के सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना है। अतः आशा है, आप इस आशय का स्पष्टीकरण 'प्रकाशन समाचार' में देने की कृपा करेंगे।

मार्तण्ड उपाध्याय,
मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली।

◈ ◈ ◈

महोदय,

जनवरी के 'प्रकाशन समाचार' में लेखक-प्रकाशक सम्बन्धों पर प्रधान मन्त्री के भाषण के प्रत्युत्तर में आपका सम्पादकीय पढ़ा।

वास्तव में जो-कुछ प्रधान मन्त्री ने अपने भाषण में कहा वह सही है। दुर्भाग्य से हिन्दी में प्रकाशक द्वारा लेखकों के शोषण की परम्परा रही है और किसी हद तक आज भी है। लेकिन इस बात को सामान्य रूप से पूरे प्रकाशक-वर्ग पर लागू कर देना न तो मेरे विचार से उचित होगा और न भविष्य में लेखक-प्रकाशक सम्बन्धों के लिए हितकर। अब तक इस क्षेत्र में काफ़ी सन्देह का वातावरण रह चुका है जिसके फलस्वरूप लेखक प्रकाशक को और प्रकाशक लेखक को धोखा देते रहे हैं और एक दूसरे को निश्चित हानि पहुँचाते

श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित
नवीन उपन्यास
सागर, लहरें और मनुष्य
छपकर तैयार है।
सुन्दर छपाई : मूल्य ३॥)
प्रकाशक
मसिजीवी प्रकाशन
वितरक
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। इस प्रकार की दूषित नीति की गुञ्जाइश न तो सृजन के क्षेत्र में है और न प्रकाशन-व्यवसाय के।

पारस्परिक दोषारोपण के बजाय आवश्यकता भाव-परिवर्तन (change of heart) की है ताकि उचित और महान् सृजन भी हो सके और देश का एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय उन्नति कर सके और भविष्य में इसको सिद्ध करने के लिए शब्दों की नहीं, वास्तविक व्यवहार की आवश्यकता होगी। भूत में क्या निन्दनीय रहा है इसको उभारना किसी पक्ष के लिए भी हितकर न होगा।

भवदीय,
विष्णु शर्मा, इलाहाबाद।

◈ ◈ ◈

प्रिय सम्पादक जी,

आपके 'प्रकाशन समाचार' द्वारा मुझे नित नई प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है इसलिए मैं उसका उत्सुकता से इन्तज़ार करता हूँ और उसे दिलचस्पी से देखता हूँ। उसके सभी अंक मेरे पास सुरक्षित रखे हैं इसीसे इसकी महत्ता जानी जा सकती है। यूँ तो मैं उसकी सामग्री, सूचनाओं तथा कलेवर आदि से पूर्णरूपेण सन्तुष्ट हूँ किन्तु कुछ बातों को कहने का लोभ संवरण नहीं कर पाता।

सर्वप्रथम तो मेरा नम्र निवेदन यह है कि हिन्दी की सभी जानी-पहचानी प्रकाशन संस्थाओं के सञ्चालकों की परिचयमाला छापी जाय। इसे ५३ के कुछ अंकों में चलाया भी गया था किन्तु इस परम्परा को आगे नहीं बढ़ाया जा सका जिसका फिर से चालू करना अति आवश्यक है।

हिन्दी के सभी जीवित साहित्यकारों के बारे में जानकारी-पूर्ण लेख दिये जावें जिनमें उनके साहित्य के सम्बन्ध में (आलोचना से मेरा मतलब है) अपेक्षाकृत कम सामग्री देते हुए, विशेष बल उनकी जीवन-घटनाओं पर दिया जाना चाहिए। समय-समय पर दूसरी भाषाओं के साहित्यकारों का भी परिचय देते रहना चाहिए।

विदेशी और प्रान्तीय भाषाओं के परिचयात्मक लेख अवश्य कभी-कभी पत्र में होने चाहिएँ।

'देश विदेश' के अन्तर्गत विदेशों के प्रकाशन जगत् के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संकलन नियमित रूप से किया जाना चाहिए।

जिस प्रकार प्रकाशक बन्धु लेखकों का शोषण करते हैं उनकी आपबीती लेखकों से लिखाकर दी जावे और उनकी समस्याओं पर अधिक विस्तार से विचार होना चाहिए।

इस मास के तथा आगामी या पिछले मास के प्रकाशनों की सूचनाएँ अधिकतर गलत होती हैं। हमारे प्रकाशक लोग नियमता का पाठ कभी सीख सकेंगे इसे तो भगवान् ही जाने। उदाहरणस्वरूप—

'गांधी श्रद्धाञ्जली' ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ, 'सुबह शाम' के प्रकाशित किये जाने की सूचना इधर ३,४ मास से बराबर आपके पत्र में छप रही है। कभी उसकी कीमत ५) लिखी जाती है तो कभी २॥), असली क्या है समझ में नहीं आता। अज्ञेय का **बावरा अहेरी** कई महीने हुए छप चुका है किन्तु उसके प्रकाशन को नवम्बर में गिना जा रहा है। इसी प्रकार **विविध** के अन्तर्गत (दिसम्बर मास में) की कई पुस्तकें नवम्बर से पहले छप चुकी हैं।

नवम्बर भारतभूषण अग्रवाल का कविता-संग्रह (भारतीय ज्ञानपीठ) अभी तक नहीं छपा है। **लहर प्रकाशन** की पुस्तकों का भी यही हाल है। जीवन संग्रह (नानकसिंह) अक्तूबर में तो क्या अभी तक नहीं छापा गया।

इसी प्रकार कितनी ही किताबों का नाम लिया जा सकता है। इस सम्बन्ध में आपने एक बार लिखा भी था, किन्तु उसका कुछ अच्छा असर होता नहीं प्रतीत होता।

एक बात समझ में नहीं आती कि एक ही पुस्तक के दो-दो तीन-तीन, कभी-कभी तो चार-चार भी अनुवाद प्रकाशित हो जाते हैं। उनमें शुद्ध कौनसा है कुछ पता नहीं, कीमतों के मामले में भी इतनी धाँधलीबाजी होती है कि कुछ हिसाब का भी पता नहीं चलता।

अन्त में मैं जनवरी अंक को आपके सम्पादकीय के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दूँगा। वास्तव में वह कमाल का लिखा गया है।

आपका,
प्रभातकुमार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के नवनिर्माण में

प्रकाशकों का योगदान

श्री रामचन्द्र टण्डन

यह लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) के २१ जनवरी, ५६ के अंक में छपा है और पत्र के सौजन्य से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी देश की जागृति अथवा नवनिर्माण में उस देश में प्रकाशित साहित्य का एक विशिष्ट स्थान होता है। इतिहास के पन्नों को टटोलने से यह बात स्वयंसिद्ध-सी जान पड़ेगी। इसका श्रेय ऐसे साहित्य के रचयिताओं को तो मिलना ही चाहिए। लेकिन किसी भी साहित्य के प्रकाशन में उसके प्रकाशक का भी हाथ होता है। ऐसे भी उदाहरण मिलेंगे जहाँ भूले-बिसरे, उपेक्षित साहित्य को प्रतिष्ठा प्रदान कराने में प्रकाशक ने योग दिया है। किन्तु इस धंधे में प्रकाशक स्वयं इस मुद्रण-युग में एक उपेक्षित साझीदार रहा है। यह कुछ अपने देश में ही स्थिति नहीं, सभी देशों में ऐसा हुआ है। अच्छी परिस्थितियों में सर्वत्र लेखकों और प्रकाशकों में एक भाईचारे का सम्बन्ध रहा है। प्रकाशकों ने सभी प्रकार की जोखिमें उठाई हैं और अपने लेखकों की प्रतिष्ठा में आत्म-संतोष माना है। कहने का तात्पर्य यह कि साहित्य के उत्कर्ष और प्रचार में प्रकाशकों का एक मूल्यवान योग होता है और होना चाहिए।

प्रश्न यह है कि अपने देश की वर्तमान स्थिति में, नवजागरण के युग में, जबकि सर्वतोमुखी उन्नति हमारा ध्येय है, हमारे प्रकाशक हमारे आगे के पथ में कितना और कहाँ तक साथ दे सकते हैं? वस्तुतः कार्य-क्षेत्र अपरिमित है। हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निर्माण और व्यवसाय के क्षेत्र में, समाज-संगठन के क्षेत्र में, आर्थिक सम्पन्नता की दिशा में, नये आदर्शों की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील हैं और इन सभी प्रयासों में हमें विशिष्ट जानकारी की आवश्यकता है, जिसकी पूर्ति में पुस्तकों, अधिकाधिक पुस्तकों, की हमें अपेक्षा है। हमारे प्रकाशकों को, जैसा कि मैं कल्पना करता हूँ, न केवल अपने लेखकों का साथ देना है, बल्कि ऐसे लेखकों को उत्पन्न करना है, जो राष्ट्र के सर्वतोमुखी प्रयास में योग दे सकें और न केवल हमारे गौरव-साहित्य की वृद्धि कर सकें, बल्कि विज्ञान, शिल्प, उद्यम आदि विषयक साहित्य की कमी को पूरा कर सकें। भारत की राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए, एक भारतीय भाषा के साहित्य को दूसरी भारतीय भाषा के पाठकों के सामने पहुँचाना है, और यह एक ऐसी दिशा है जिसमें हमारे प्रकाशक अपनी सामर्थ्य का अच्छा अंश उपयोग में ला सकते हैं।

प्रकाशकों को आगे बढ़ने की आवश्यकता

किन्तु सामने का कार्य इससे कहीं अधिक विस्तृत और बड़ा है। संसार की सभी भाषाओं के गौरव-ग्रन्थों को और विशिष्ट वैज्ञानिक, शिल्प-विषयक तथा उपयोगी साहित्य को अपने यहाँ लाना है। यह एक ऐसी महान् चुनौती है, जिससे पुष्ट-से-पुष्ट प्रकाशक समुदाय सहम सकता है। उन्नत देशों के प्रकाशन-व्यवसाय को देखते हुए हमारे यहाँ तो यह कहा जा सकता है कि हम प्रारम्भिक सीढ़ियों पर हैं। हम नहीं कह सकते कि अपेक्षित कार्य की विशालता को देखते हुए हमारे प्रकाशक-वर्ग के कंधे पर्याप्त रूप में सबल भी हैं। 'लन्दन टाइम्स' के साहित्यक परिशिष्ट, इस एक साप्ताहिक पत्र को ले लीजिए। प्रति सप्ताह आलोचित श्रेष्ठ अंग्रेजी प्रकाशनों की सूची देखकर और उसके मुकाबले में अपने प्रकाशनों की संख्या तथा स्तर देखकर जी बैठ जाता है। मन में प्रश्न उठता है कि अंग्रेजी में जो साहित्य प्रति सप्ताह प्रकाशित हो रहा है, वैसा और उतना साहित्य क्या महीने, छः महीने, साल-भर में भी हमारे यहाँ प्रकाशित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है ? मैं कोई हीन भावना नहीं उत्पन्न करना चाहता, एक विचारणीय स्थिति सामने रख रहा हूँ। कहने का उद्देश्य यह है कि हमारे प्रकाशक-वर्ग को बहुत आगे बढ़ने की आवश्यकता है ।

व्यावसायिक कुशलता

यह बात नहीं कि प्रकाशक-वर्ग अपनी जगह पर स्थिर हो, वह आगे बढ़ न रहा हो, किन्तु समय को देखते हुए उसकी गति धीमी है । और जो बात किंचित् आशंका उत्पन्न करने वाली है वह यह कि वह परमुखापेक्षी बन रहा है—वह मुखापेक्षिता चाहे सरकार की हो चाहे औरों की । मैं मानता हूँ कि प्रकाशन एक व्यवसाय है—उसी भाँति जिस भाँति कि लेखन भी एक व्यवसाय है । प्रकाशक को जीना है, किन्तु उसे अपनी व्यवसाय-कुशलता का सहारा लेना है—अच्छे-से-अच्छे अर्थों में व्यवसाय-कुशलता का सहारा लेना है । उसे लेखक से अच्छे और न्याय्य सम्बन्ध स्थापित करने हैं; उसे मुद्रण, जिल्दसाजी, उत्पादन में उपयोग में आने वाले अन्य साधनों में उन्नत देशों में जो उन्नति हुई है उसे समझना है, पुस्तकों के निर्माण का कलात्मक आधुनिकतम ज्ञान प्राप्त करना है, उसे सुथरे ढंग से अपने माल का प्रचार करना भी सीखना है । इस व्यवसाय के लिए—क्योंकि इसका घनिष्ठ सम्बन्ध ज्ञान के प्रसार से भी है—संरक्षण की आवश्यकता न होनी चाहिए । प्रकाशक-वर्ग को समझना चाहिए कि संरक्षण उसके लिए घातक हो सकता है । राष्ट्र के नवजागरण में योग देने के प्रति प्रकाशक में उत्साह की आवश्यकता है । साथ ही उसे दूरदर्शिता दिखानी है, उसे अपनी आदर्शवादिता के ध्येय को नीचे नहीं गिराना है ।

मैंने प्रकाशन को एक व्यवसाय माना है, किन्तु मैं यह भी मानता हूँ कि इस व्यवसाय की अपनी आदर्शवादिता भी होनी चाहिए । इस दृष्टि से प्रकाशन एक सृजनात्मक कार्य भी है । एक प्रकाशन की एक सुन्दर आकर्षक पुस्तक प्रस्तुत करने में वैसे ही आनन्द का अनुभव होना चाहिए, जैसा कि एक कवि को एक सुन्दर छन्द रचने पर होता है । किसी भी सुन्दर कृति को एक उपयुक्त कलेवर देने के लिए न केवल उत्पादन-सम्बन्धी विशिष्ट और बहुमुखी ज्ञान की आवश्यकता है, बल्कि एक कल्पना की भी । राष्ट्र के नव-निर्माण में योग दे सकने के लिए हमें ऐसे ही प्रकाशकों की आवश्यकता है ।

साहसिक यात्री के समान

प्रकाशन एक व्यवसाय है और एक सृजनात्मक कार्य भी; प्रकाशक को यह न भूलना चाहिए कि वह एक साहसिक यात्री भी है। उसे बहुत ऊँच-नीच देखने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे लोक-रुचि, पाठकों की रुचि की पूर्ति ही नहीं करनी है, उसे इस रुचि का निर्देशन भी करना है, उसे रुचि को ऊपर उठाना है। ऐसा करने के लिए उसे जोखिम भी उठानी पड़ सकती है, किन्तु इसके लिए उसे तैयार रहना है। कहा नहीं जा सकता कि कौनसी पुस्तक, जिस पर बड़ी आशाएँ बाँध रखी हैं, आर्थिक दृष्टि से गिर पड़े। साथ ही यह भी नहीं कहा जा सकता कि किस साधारण, उपेक्षित पुस्तक को जन-रुचि उठा ले और वह बहुत सफल प्रकाशन सिद्ध हो। अच्छा प्रकाशक स्थिति समझता-बूझता है, साथ ही उसे विस्मय के लिए तैयार रहना चाहिए और इसीलिए प्रकाशन-व्यवसाय का सादृश्य एक साहसिक यात्रा से दिया गया है।

आज हमारे प्रकाशकों के सामने साधनों की कमी है। देखा जाय तो इस व्यवसाय के महत्त्व को देखते हुए इसमें पूँजी आकर्षित नहीं हुई है। इससे वह राष्ट्र के नव-निर्माण में वैसा योग-दान नहीं कर पा रहा है, जैसा वह कर सकता था। इसीलिए प्रकाशक-वर्ग को मिलकर अपने साधनों का संचित उपयोग करना सीखना है। निश्चय ही बाद में पूँजी इधर खिंचेगी। किन्तु इस समय यह देखना है कि जो साधन उपलब्ध हैं, उनका दुरुपयोग न हो। आज के मुद्रणालयों के विशाल पेट से जो कुछ निकलता है, क्या वह सब उपयोगी है, उसमें स्थायित्व या अपेक्षाकृत स्थायित्व भी है ? देश के नव-निमाण में प्रकाशक-वर्ग को यदि ठीक-ठीक योग देना है तो उन्हें काम का यथाशक्ति बंटवारा करा लेना होगा, घटिया साहित्य के प्रकाशन के लोभ का संवरण करना होगा, ऐसी योजना करनी होगी कि काम को दुहराया न जाय, सुथरे ढंग को अपनाया जाय। कार्य-क्षेत्र इतना विशाल है कि आपस में होड़ की आवश्यकता नहीं पड़ सकती, और होड़ भी हो तो होड़ की मर्यादाओं को समझकर।

हमारे चेतन प्रकाशक, जहाँ तक मैं जान सका हूँ, अपने महान आदर्शों तथा दायित्व के प्रति जागृत हो रहे हैं, यह एक शुभ लक्षण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री राजमल जैन, रिपोर्टर, विधान सभा, भूपाल के पास 'अमीरी गरीबी' नाम के उनके दूसरे उपन्यास की पाण्डुलिपि तैयार है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

श्री महादेव 'आज़ाद' '७६—१' कमलानगर दिल्ली सूचित करते हैं कि उनके पास निम्नलिखित पांडुलिपियां तैयार हैं:—(१) एमिल जोला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी-रूपान्तर, जो कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ, (२) उर्दू के प्रसिद्ध लेखक ताजवर सामरी के उपन्यास 'खेत में लहू' का हिन्दी रूपान्तर, (३) 'युग-पुरुष' नाम से कार्ल मार्क्स, लेनिन, स्टालिन, माओत्से-तुंग, जूलियस फूचिक, हो ची-मिन्ह, महान् पुरुषों के जीवन चरित्रों का संग्रह। इनकी जीवन-समीक्षा और उनके विचार भी अलग से दिये गए हैं। इन्हें प्रकाशित करने के इच्छुक महादेव जी से सम्पर्क स्थापित करें।

◆ ◆ ◆

श्री भगवानदास पुरोहित, हिन्दी प्रचार समिति, बोलपुर, पश्चिमी बंगाल, लिखते हैं कि डॉ० भवतोषदत्त द्वारा लिखित और विश्वभारती विश्वविद्या-माला में प्रकाशित 'धन-विज्ञान' नाम की पुस्तक के हिन्दी रूपान्तर के लिए प्रकाशक की आवश्यकता है। पृष्ठसंख्या ६७ है तथा हिन्दी अनुवाद की अनुमति प्राप्त कर ली गई है।

सबकी एक ही राय

संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

कुछ सम्मतियाँ

"संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ" लिखकर श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जी ने एक ऐसी दिशा में काम किया है, जिसकी ओर अभी हिन्दी विद्वानों का ध्यान नहीं गया था। —श्री राहुल सांकृत्यायन

'संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ" प्रकाशित करने की नई सूझ पर बधाई। आपने इस साहित्य को सुलभ बनाकर हित किया। —डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल

पुस्तक देख गया हूँ। अच्छी है। —श्री अगरचन्द नाहटा

ऐसी गवेषणापूर्ण पुस्तक से ही साहित्य की श्री-वृद्धि होती है। —श्री शिवपूजन सहाय

हिन्दी में अपने ढंग की संगीत-विषयक यह पहली पुस्तक है। प्रारम्भ में आपने संगीताचार्यों के सम्बन्ध की बहुत-सी ज्ञातव्य बातें प्रकाश में ला दी हैं जिनसे पुस्तक की उपादेयता बहुत बढ़ गई है। —श्री रामनरेश त्रिपाठी

श्री चतुर्वेदी जी ने इस संग्रह को प्रस्तुत करके आगामी अध्ययन परम्परा की पहली कड़ी प्रस्तुत कर दी है। सम्भवतः हिन्दी में अपनी तरह का यह प्रथम प्रयास है जिसके लिए हम श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी को साधुवाद देते हैं। —अमृत पत्रिका, इलाहाबाद

यह पुस्तक जहाँ हिन्दी के एक भारी अभाव की पूर्ति करती है, वहाँ साहित्य और संगीत के प्रेमी पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपादेय है। —आल इण्डिया रेडियो, दिल्ली

'हमें प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से अत्यन्त उपयोगी और महत्त्व के विषय का यथाशक्य श्रेष्ठ और रुचिकर परिचय प्राप्त होता है। पुस्तक के विषय की नवीनता और उपयोगिता स्वतः स्पष्ट है।' —अजन्ता, हैदराबाद

साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना के १७वें अंक की विषय-सूची

- सम्पादकीय
- निबन्ध

रमाशंकर तिवारी	साधारण किरण का नवीन स्तर
लक्ष्मीकान्त वर्मा	प्रयोग, प्रगति और परम्परा
ब्रजविलास श्रीवास्तव	हिन्दी उपन्यास में नये प्रयोग
स्वेतोजार पेत्रोविच	यूगोस्लावियन साहित्य की वर्तमान समस्या

- प्रस्तुत प्रश्न

शम्भूनाथ सिंह	लेखक का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है
विजय देवनारायण साही	साहित्यिक 'अश्लीलता' का प्रश्न
डॉ० हरदेव बाहरी	व्रीडा जुगुप्सा मंगल व्यंजकत्वात्

- अनुशीलन

डॉ० बद्रीनारायण श्रीवास्तव	रामानन्द सम्प्रदाय में योग

- मूल्यांकन

बच्चनसिंह	नया साहित्य : नये प्रश्न
बालकृष्ण राव	अतिमा : आधुनिक और पुरातन का सन्तुलन
डॉ० रामरतन भटनागर	वर्तमान कविता में नए गीत स्वर
प्रयाग नारायण त्रिपाठी	रीति, गीति और नयी कविता
लक्ष्मीकान्त वर्मा	संत्रस्त पात्रों की घटनाहीन कथा
रामस्वरूप चतुर्वेदी	संस्कृति-संघर्ष और वैयक्तिक सम्बन्ध
रविप्रसाद सिंह	संवेदनात्मक तत्त्वों की एकसूत्रता
गिरिजाकुमार माथुर	निकष : नवीन दृष्टिकोण का प्रतीक
डॉ० कामिल बुल्के	मानस की 'रूसी' भूमिका
दत्तात्रेय पाण्डेय	भागवत सम्प्रदाय
मोहन राकेश	एण्टन पेखव : एक इंटव्यू
डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	नये समाज का उदय
कृष्ण खेमका	भारतीय संस्कृति में तुलसी का योग
रामपूजन तिवारी	हिन्दी साहित्य पर सूफ़ीमत का प्रभाव
डॉ० सत्येन्द्र	लोक साहित्य का अध्ययन

- टिप्पणियाँ

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश सरकार की

हिन्दी प्रकाशन योजना

उत्तर प्रदेश की सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा हिन्दी-प्रकाशनों की योजना को प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष है।

भारत की राज्य-भाषा हिन्दी का वाङ्मय सब प्रकार से भरा-पूरा हो, इसकी चिन्ता प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी मनीषी को है और इस प्रकार की माँग चारों ओर से आ रही थी कि हिन्दी में जिस प्रकार के साहित्य की कमी पिछले कुछ वर्षों से अनुभव होने लगी थी उसे अविलम्ब दूर किया जाय। हिन्दी जगत् की वर्तमान परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हैं कि जिनमें हिन्दी-संस्थाओं के पूर्ण रूप से सक्रिय होने पर भी प्रगति आशानुकूल नहीं हो रही है। निदान, यह अनिवार्य-सा हो गया कि देश की वे सरकारें जो हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों से संबंध रखती हैं, इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें। हिन्दी परामर्श समिति के लिए यह गौरव की बात हुई कि जिस प्रकार उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्य मंत्री, डा० सम्पूर्णानन्द ने सन् १९४७ में, जब वह शिक्षा-मंत्री थे, हिन्दी परामर्श समिति और हिन्दी लिटरेचर फंड को जन्म दिया उसी प्रकार मुख्य मंत्री होते ही उन्होंने हिन्दी-जगत् की इस अनिवार्य आवश्यकता और तत्संबंधी मौन पुकार को सुना और हिन्दी-प्रकाशन योजना के लिए प्रेरणा दी।

इस योजना के अन्तर्गत जिन विषयों पर पुस्तक प्रकाशन का विचार हो रहा है उनसे न केवल वाङ्मय का संवर्द्धन होगा वरन् हिन्दी भारत की ३६ करोड़ जनता के लिए अपने में आकर्षण पैदा कर सकेगी और भारतीय संविधान द्वारा निश्चित १५ वर्ष की अवधि समाप्त होते-होते वह विदेशी भाषाओं की तुलना में देखी जा सकेगी। किन्तु यह स्पष्ट रहे कि यह योजना इस प्रकार बनाई गई है कि इसके द्वारा अन्य सरकारी अथवा गैर-सरकारी योजनाओं को न किसी प्रकार की क्षति पहुँचेगी और न उनकी पुनरावृत्ति होगी। इस योजना के अन्तर्गत प्रायः वे सब विषय ले लिये गए हैं जिन पर संसार के किसी भी उन्नतिशील साहित्य में ग्रन्थ प्राप्त हैं और इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि इनमें से प्राथमिकता उन विषयों अथवा उपविषयों को दी जाय जिनकी हिन्दी में नितान्त कमी है। इधर विश्वविद्यालयों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए प्रायः सभी विषयों पर हिन्दी में पुस्तकें लिखी जा रही हैं, किन्तु उनमें विषय का प्रतिपादन केवल विद्यार्थियों की आवश्यकता का ध्यान रखकर किया जा रहा है और उससे आगे नहीं। इससे हिन्दी की एक कमी तो अवश्य पूरी हो रही है किन्तु हिन्दी वाङ्मय में ऐसे ग्रन्थ नहीं लिखे जा रहे हैं जो इस विषय पर हिन्दी के लिए गौरव का कारण हों। इस योजना में इस पक्ष पर विशेष ध्यान दिया गया है।

हिन्दी में पाठकों की कमी होने के कारण ऐसे बहुत से विषयों पर लेख उपलब्ध होने पर भी प्रकाशक इन विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित करने का साहस नहीं कर रहे हैं और यदि यह दशा बनी रही तो हिन्दी के लिए अन्धकार का युग बहुत दिनों तक चलता रहेगा। अतः इस बात की भी आवश्यकता समझी गई कि जब इस योजना के अन्तर्गत इन पुस्तकों का प्रणयन हो तो उनमें भारतीय दृष्टिकोण को सामने रखकर विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ लिखे जायँ और उनका प्रकाशन किसी ऐसे अभिकरण से हो जिसे किसी प्रकार के आर्थिक मुनाफे का लोभ न हो।

हिन्दी की यह प्रकाशन-योजना भी पंचवर्षीय योजना है और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के साथ-ही-साथ यह भी समाप्त होगी। किन्तु इसकी भूमिका के लिए यह आवश्यक था कि प्रारम्भ में इसके लिए कुछ रुपया उपलब्ध कराया जा सके और यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि उत्तर प्रदेश शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने १६५५-५६ में इसके लिए एक लाख रुपया प्रस्तुत किया। अगले ५ वर्ष के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना में लगभग २५ लाख रुपये व्यय करने का विचार है। इस योजना का कार्य १ अप्रैल, १६५५ से प्रारम्भ कर दिया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत ३०० पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था है, जिनमें १०० मौलिक ग्रन्थ, १०० अनुवाद ग्रन्थ और १०० ऐसे ग्रन्थ होंगे जिन्हें हम इस समय सुविधा के लिए सामान्य ग्रन्थ कहेंगे। किन्तु आशय यह है कि जिस प्रकार अंग्रेजी में होम युनिवर्सिटी लाइब्रेरी सिरीज इत्यादि ग्रन्थ-मालाओं में प्रायः सभी विषयों पर साधारण पाठकों के लिए ग्रन्थ तैयार होते हैं वैसे ही इस सामान्य ग्रन्थ-माला में तैयार कराये जायँगे। मौलिक और अनुवाद ग्रन्थ कम-से-कम ४०० पृष्ठ के होंगे और सामान्य ग्रन्थ कम-से-कम २०० पृष्ठ के होंगे। कुछ ऐसे भी ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं जिन्हें सन्दर्भ ग्रन्थ की संज्ञा दी जायगी और उनकी पृष्ठ-संख्या १,००० या उससे अधिक भी हो सकती है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष तीनों प्रकार की ६० पुस्तकें प्रकाशित होंगी और प्रकाशन-योजना के इस वृत्त में सभी विषय, चाहे वे वैज्ञानिक हों अथवा विज्ञानेतर, समाविष्ट कर लिये गए हैं जैसा कि परिशिष्ट २ में दी हुई तालिका से स्वयं स्पष्ट हो जायगा। इस तालिका को बनाते समय बिहार प्रदेशीय सरकार, केन्द्रीय तथा अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रकाशन-कार्यक्रम को भी दृष्टि में रख लिया गया है, जिससे कि एक ही विषय पर अनावश्यक पुनरावृत्ति न हो। हाँ, यह अवश्य है कि पाठ्य-पुस्तकों की उपेक्षा की गई है, क्योंकि जैसा ऊपर कहा जा चुका है शासन का उद्देश्य इस प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करना नहीं है वरन् उन विषयों पर प्रामाणिक मौलिक भारतीय दृष्टिकोण से पांडित्यपूर्ण ग्रन्थ प्रणयन करना है।

उपर्युक्त क्रम-विभाजन के मौलिक वर्ग की पुस्तकें प्रस्तावित विषयों के विशेषज्ञों और लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा लिखाई जायँगी और जैसा कि पहले कहा जा चुका है ऐसे विषयों को प्राथमिकता दी जायगी जिन पर पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। उदाहरण के लिए कतिपय विषयों की चर्चा यहाँ अप्रासंगिक न होगी। हम सबसे पहले भाषा-विज्ञान, भाषा-सर्वेक्षण (लिंग्विस्टिक सर्वे), गणितीय इतिहास, पाश्‍ आलोचना का इतिहास, भूगोल-शास्त्र, पूर्वी आलोचन विकास, सामाजिक विज्ञान तथा देश के रासायनिक खनिज पदार्थों के सम्बन्ध में अधिक सचेष्ट हो रहे हैं। प्रकार दूसरे वर्ग में अर्थात् अनुवाद-ग्रन्थों में अरस्तू, ब्रै रूसो, डार्विन, फ्रायड, एडलर, तथा जुंग आदि पाश्‍ दार्शनिकों तथा अन्य विद्वानों और वैज्ञानिकों की विश्‍ कृतियों के अनुवाद की व्यवस्था की जा रही है। सामान्य ग्रन्थ भी मौलिक ग्रन्थ होंगे किन्तु उनका प्रणयन ढंग से होगा कि वे थोड़े समय में पढ़े जा सकें और सर्वसाधारण की रुचि बढ़े। इसलिए इस वर्ग में सा तथा आधुनिक विषयों पर पुस्तकें लिखी जायँगी।

इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्तकों विषय-निर्धारण एवं लेखकों का चुनाव हिन्दी परामर्श स करेगी। वर्तमान समिति के सदस्य निम्नलिखित हैं: (१) डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष, (२) डॉ० धीरेन्द्र सदस्य, (३) डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा सदस्य (४) श्री वि हरि सदस्य, (५) डॉ० नगेन्द्र सदस्य, (६) डॉ० निहाल सेठी सदस्य और (७) श्री भगवतीशरण सिंह मंत्री।

इस योजना के अन्तर्गत मौलिक तथा सामान्य व पुस्तकों के लेखकों को १० रु० प्रति पृष्ठ पारिश्रमिक छपे मूल्य पर १० प्रतिशत रायल्टी दी जायगी। अन ग्रन्थों पर ५ रु० प्रति पृष्ठ पारिश्रमिक तथा ५ प्रति रायल्टी दी जायगी। ये पुस्तकें डिमाई अठपेजी आका प्रकाशित होंगी। इसी प्रकार संदर्भ-ग्रन्थों के प्रणय लिए, जो रायल चौपेजी (वेब्स्टर डिक्शनरी साइज) के सम्पादक को २ रु० तथा लेखक को ६ रु० प्रति पारिश्रमिक दिया जायगा। समिति को यह पूरा विश्वास है विद्वान् लेखकों का इसमें इस आधार पर समुचित सह प्राप्त होगा।

प्रकाशित पुस्तकों पर सर्वाधिकार उत्तर प्रदेशीय शा का होगा और यह समस्त योजना हिन्दी परामर्श समिति तत्त्वावधान में कार्यान्वित की जायगी। समिति द्वारा अभी सभी आवश्यक विषयों का आकलन पूर्ण रूप से नहीं सका है, यद्यपि जिन विषयों पर समिति ने पुस्तकें लिख नितान्त आवश्यक समझा उनसे सम्बद्ध विद्वानों से समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्ष ने पत्र-व्यवहार कर दिया है और यह प्रसन्नता की बात है कि उनमें से प्रायः १२ लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने हमारी इस योजना के अन्तर्गत पुस्तकें लिखना स्वीकार कर लिया है।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है मौलिक क्रम-विभाजन के अन्तर्गत संदर्भ-ग्रन्थों के प्रणयन की भी व्यवस्था है। इस प्रकार के ग्रन्थों में समिति ने 'हिन्दी साहित्य कोष' को प्राथमिकता प्रदान की है तथा संपादन-कार्य के सुचारु संचालन के लिए **डा० रामप्रसाद त्रिपाठी** की अध्यक्षता में सात सदस्यों के एक संपादक-मंडल का गठन किया है। संपादन-मंडल के अन्य सदस्य निम्नलिखित हैं :—(१) श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, (२) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, (३) हजारीप्रसाद द्विवेदी (४) डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, (५) डॉ० माताप्रसाद गुप्त, (६) डॉ० नगेन्द्र और (७) डॉ० दीनदयाल गुप्त।

यह ग्रन्थ रायल चौपेजी आकार (वेब्सटर डिक्शनरी के आकार) में प्रायः दो हजार पृष्ठों में प्रकाशित होगा और बारहवीं सदी के आरम्भ से १९५५ पर्यन्त की कालावधि के हिन्दी साहित्य का प्रामाणिक कोष होगा। विषय के विस्तार तथा महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए इसके ६ विभाग किये गए हैं और प्रत्येक के सम्पादन का भार सम्पादक-मण्डल के एक-एक सदस्य को सौंपा गया है।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, हम प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों और उनके विद्वानों तथा सम्बद्ध विषयों की सूची समय-समय पर प्रकाशित करते रहेंगे किन्तु समिति को तथा शासन को इस बात का अधिकार होगा कि वह आवश्यकता होने पर उनमें परिवर्तन करते रहें। इस समय शासन की सुविधा के लिए और साथ-ही-साथ हिन्दी-प्रेमियों की सुविधा के लिए एक ऐसी सूची प्रकाशित की जा रही है जिसके देखने से इस योजना की गतिविधि का कुछ आभास मिल सकेगा। हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन की यह योजना इसी वर्ष प्रारम्भ होगी। इसकी भूमिका के रूप में इसी वर्ष कम-से-कम छः पुस्तकें प्रकाशित करने का संकल्प किया गया है। इस बात का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि इन छः पुस्तकों के अतिरिक्त लगभग १ दर्जन से अधिक पांडुलिपियाँ इसी वर्ष प्राप्त हो जायँ और इसके लिए समिति के अध्यक्ष ने जो व्यक्तिगत प्रयत्न किया है वह अत्यन्त सराहनीय है।

पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों के लिए........

हिन्दी अक्षर ज्ञान

(बच्चों को अति सरलतापूर्वक अक्षर ज्ञान करवाने के लिए) हर अक्षर के साथ चार रंग में छपा चित्र और उसका नाम, आकर्षक चार रंग की छपाई, मोटा कागज, मूल्य दो आना, कमीशन अलग। १००० इकट्ठा लेने पर आपका नाम बिना अलग खर्चे के छापकर, मुफ्त नमूने और बच्चों की अन्य पुस्तकों की सूची के लिए लिखें।

श्री एस० एल० प्रकाशन

१३, हाथीखाना, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका की अदालतों में कापीराइट सम्बन्धी

दो नये फैसले

'पब्लिशर्स वीकली' (फ़िलाडेलफ़िया) की सूचनाओं पर आधारित इस लेख को श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव ने तैयार किया है।

यदि आप किसी को ऐसा विलक्षण विचार (idea)—जिसका न तो सर्वाधिकार सुरक्षित है और न यह अधिकार प्राप्त ही किया जा सकता है—सुझाएँ और वह उसका उपयोग अपने लाभ के लिए कर ले, तो क्या आपको उससे क्षति पाने का अधिकार है या नहीं ? हालीवुड की चलचित्र कम्पनी के एक निर्माता-लेखक-निर्देशक की धारणा थी कि विचार सुझाने वाले को क्षति पाने का अधिकार नहीं है और जब विचार सुझाने वाले व्यक्ति ने उनके विरुद्ध मुकदमा दायर किया, तो उन्होंने अपने पक्ष में निर्णय पाने के लिए पैरवी की। किन्तु निर्णय उनके विरुद्ध दिया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन लोगों को संरक्षण के लिए, जिनकी विलक्षण सूझ-बूझ से दूसरे लाभ उठा लेते हैं, आवश्यकता पड़ने पर न्यायालय—विशेषतया केलीफोर्निया के न्यायालय—के कानून में खींचतान की जाती है।

वह विचार यह था कि फ्लॉयड कालिन्स की कथा के आधार पर एक चलचित्र तैयार किया जाय। लगभग २५ वर्ष पूर्व फ्लॉयड कालिन्स एक गुफा में पाया गया था; दो सप्ताह तक उसको जीवित रखने के लिए सभी प्रकार के प्रयास किये गए, किन्तु अन्त में वह बच नहीं सका। वादी (जिसका यह विचार था) ने उस निर्माता के सेक्रेटरी से ही यह विचार प्रकट किया, जिसने कालान्तर में फ्लॉयड कालिन्स की कथा पर आधारित चलचित्र का निर्माण किया। पहले, वादी ने सेक्रेटरी से इस विचार का उल्लेख किया और उसे विकसित करके ६० पृष्ठ की कथा भेजने के लिए कहा। इसके उपरान्त उसने सेक्रेटरी को टेलीफोन पर बोलकर शार्टहैन्ड में तीन या चार पृष्ठ की रूपरेखा भी लिखवाई।

वादी का कथन था कि उसने सेक्रेटरी को यह स्पष्ट कर दिया था कि यदि कथा का उपयोग किया गया, तो उसका पारिश्रमिक देना होगा और सेक्रेटरी ने यह मान भी ली थी। किन्तु उस कहानी का उपयोग तो [illegible] गया लेकिन उसे कुछ दिया नहीं गया। इसमें कोई [illegible] नहीं कि फ्लॉयड कालिन्स से सम्बन्धित सामग्री 'न्यू[illegible] टाइम्स', 'दि अमेरिकन मरकरी' आदि पत्रों के समा[illegible] विवरणों पर आधारित थी जिसका उपयोग सर्वसा[illegible] कर सकता था। इसी कारण एक निम्नस्तर के न्याय[illegible] में निर्णय प्रतिवादी के पक्ष में दिया गया। वादी ने [illegible] फ़ोर्निया की कोर्ट में अपील की। इस न्यायालय ने स्वी[illegible] किया कि केलीफ़ोर्निया विधान के अन्तर्गत कोई [illegible] (naked idea) 'वायु के समान युक्त' है। "[illegible] अतिरिक्त प्रतिवादी का यह तर्क है कि वादी के द्वारा [illegible] वादी को प्राप्त हुई रूपरेखा में न तो कोई ऐसी नवीन[illegible] न मौलिकता, जिसके आधार पर कापीराइट संरक्षण के [illegible] के अन्तर्गत क्षतिपूर्ति की जा सके।" इतना होने प[illegible] न्यायालय ने यह कहा कि "यदि कोई खरीदने के लिए [illegible] है तो कोई विचार या उसकी ठोस अभिव्यक्ति दो[illegible] (यद्यपि उसमें संरक्षणीय गुण का अभाव रहता है) [illegible] के विषय हो सकते हैं।" न्यायालय ने यह भी कहा कि [illegible] तथ्य उसी प्रकार हैं, जैसा कि प्रतिवादी का कथ[illegible] (न्यायालय ने निर्णय देने के लिए वैसा मान भी लि[illegible] तो भी इस स्वीकृति से, कि सुझावों के उपयोग होने पर [illegible] दान के रूप में धन दिया जायगा, एक निहित अनु[illegible] (implied contract) की उत्पत्ति हो गई है। न्या[illegible] का कहना था कि प्रतिवादी को "इस तथ्य से परिचित [illegible] चाहिए था कि यदि वादी के समान कोई व्यक्ति किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हस्तलिपि पुरस्कार पाने के लिए देता है और यद्यपि वह इस कार्य या सेवा के बदले में कुछ माँग नहीं करता तो भी लाभ उठाने वाला व्यक्ति देनदार है। यदि हस्तलिपि देने वाले ने यह सेवा रकम पाने की आशा से की है।"

केलीफ़ोर्निया न्यायालय ने यह स्वीकार किया कि अन्य क्षेत्रों के (विशेषकर न्यूयार्क के न्यायालयों) की धारणा इससे भिन्न हो सकती है, किन्तु उसने अपने फैसले की लम्बी रिपोर्ट में बराबर इसी बात पर बल दिया कि "उस सामग्री से, जो अन्यथा सार्वजनिक क्षेत्र की है, एक निहित अनुबन्ध की उत्पत्ति हो सकती है।"

न्यायालय ने अपनी राय व्यक्त करने के दौरान में इस निहित अनुबन्ध के सिद्धान्त से और आगे बढ़कर यह भी कहा कि वादी को फ़्रॉयड कालिन्स पर चलचित्र बनाने के सुझाव के लिए प्रतिदान के रूप में रक़म मिलनी चाहिए, क्योंकि उसने इस विचार का उद्घाटन इसी आशा से किया था कि उसका उपयोग होने पर उसे प्रतिदान मिलेगा। न्यायालय ने यह स्पष्टतया स्वीकार किया कि प्रतिवादी ने उपाधारभूत सुझावों के अतिरिक्त रूपरेखा की कुछ सामग्री का भी उपयोग किया होगा—"वादी की रूपरेखा की सामग्री सार्वजनिक क्षेत्र से सम्बद्ध थी और प्रतिवादी उसके किसी भी या सभी तथ्य या घटना का उपयोग करने के लिए स्वतन्त्र थे, तो भी प्रतिवादियों को अपने तथ्यों के लिए मौलिक स्रोत तक जाना पड़ा और यह जानकर वादी ने अपने कार्य के लिए पुरस्कार की आशा की है, उन्होंने उसके सुझावों का उपयोग करके अपने कार्य को सरल नहीं बनाया और इस प्रकार वे वादी के प्रति ऐसे उपयोग के लिए देनदार हैं।"

न्यायालय ने अपने सामने मौजूद सभी तथ्यों के आधार पर यही निष्कर्ष निकाला कि "क़ानूनन यह नहीं कहा जा सकता कि प्रतिवादियों ने वादी की रूपरेखा का तरीका भी उपयोग नहीं किया।" यह मुक़दमा पूरी जाँच के लिए परीक्षण न्यायालय (Trial Court) में भेज दिया गया जहाँ कि वादी अपने अधिकारों को सिद्ध करके क्षति-प्राप्ति का भागी हो सके।

यह अभियोग एक प्रश्न खड़ा कर देता है कि इस प्रकार की परिस्थिति में सुझाव देने वाला और सुझाव स्वीकार

हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध लेखक

सत्यप्रकाश संगर

का नया कहानी-संग्रह

लम्बे दिन जलती रातें २॥)

छपकर तैयार हो गया है।

संगर की अन्य पुस्तकें

१. कली मुसकराई (उपन्यास) (दूसरा संस्करण) ३)
२. घर की आन (उपन्यास) ३॥)
३. अफ्रीका का आदमी (कहानी संग्रह) (दूसरा संस्करण) २॥)
४. नया मार्ग (कहानी संग्रह) २)
५. अवगुण्ठन (कहानी संग्रह) (दूसरा संस्करण) २)
६. कितना ऊँचा कितना नीचा (कहानी संग्रह) २॥)

प्राप्ति स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाला दोनों ही अपने हितों की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं। दोनों ही पक्षों की दलीलें न्यायोचित हैं। यदि आपके पास चलचित्र से सम्बन्धित कोई विचार (idea) है और आप उसके बदले में पुरस्कार पाने की आशा में उसे किसी चलचित्र कम्पनी के सामने प्रकट करते हैं और यदि उस कम्पनी के सामने पहले से वह विचार नहीं था और वह उसके आधार पर किसी चित्र का निर्माण करती है तो इसका यह अर्थ है कि आपने उसमें कुछ योग दिया है और कोई कारण नहीं कि आपको उसके प्रतिदान-स्वरूप कुछ नहीं मिले। किन्तु ऐसा भी होता है कि चलचित्र कम्पनियों, ब्राडकास्टिंग संस्थाओं और प्रकाशकों को ऐसे भी 'विचार' सुझाए जाते हैं, जिनमें से अधिकांश से वे पहले से परिचित रहते हैं और अन्य लोगों ने भी उसे सुझाया है। वे प्रत्येक स्थिति में इस प्रकार के विचारों अथवा सुझावों के उपयोग के लिए दोषी नहीं ठहराए जा सकते, चाहे चलचित्र, प्रसार-कार्य क्रम अथवा पुस्तकों में उनका उपयोग उनके प्रकाश में आ जाने के बाद ही क्यों न किया गया हो।

इन तथ्यों के पर्याप्त दृढ़ आधार पर ही अपील सुनने वाली अदालत ने फ्लॉयड कालिन्स के मुकदमे में वादी के पक्ष का समर्थन किया। परन्तु यह समस्या अभी बराबर बनी रहेगी। इस निर्णय से सम्भव है कि किसी समीचीन सिद्धान्त का उदय हो सके, किन्तु अभी तो ऐसा कुछ हो नहीं सका है।

अभी एक हाल का मुकदमा हमें एक ऐसी बात की याद दिलाता है, जिसे हममें से भी अधिकांश (वकील भी) प्रायः भूल जाते हैं और वह यह है : कॉपीराइट के उल्लंघन का आधार नकल करने में निहित है।

इस मुकदमे में ऐसे वादी और प्रतिवादी थे, जिन्होंने रेडियो और टेलीविज़न की व्यावसायिक पत्रिकाएँ (trade magazines) प्रकाशित कीं। वादी ने यह अभियोग लगाया कि प्रतिवादी ने एक या अधिक सर्वाधिकार सुरक्षित विज्ञापन-सम्बन्धी डाइरेक्टरियों की नकल कर ली है। प्रतिवादी ने यह निर्देश किया कि वादी की डाइरेक्टरियों के कुछ नाम दूसरे प्रकाशकों की डाइरेक्टरियों में भी हैं और इस प्रकार यह तर्क उपस्थित किया कि वादी का उसके ऊपर कॉपीराइट उल्लंघन का अभियोग लगाने का आधार नहीं है। न्यायालय ने इसका इन शब्दों में विरोध किया :

"प्रतिवादी का तर्क यह है कि चूँकि वादी की डाइरेक्टरियों में लिखित कुछ नाम दूसरे प्रकाशकों द्वारा वितरण की गई डाइरेक्टरियों में भी मिलते हैं, अतएव वादी की डाइरेक्टरी के कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं होता, यह तर्क बिल्कुल थोथा है। यदि प्रतिवादी ने वादी की डाइरेक्टरी से सचमुच नामों की नकल की है, तो कॉपीराइट उल्लंघन के अभियोग से बचने का यह कोई आधार नहीं है कि प्रतिवादी के नाम अन्य स्रोतों से भी प्राप्य थे।

यह मुकदमा मनोरंजक भी कम नहीं है, क्योंकि न्यायालय ने तथ्यों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि वादी को वस्तुतः जिस बात के लिए शिकायत है, वह यह नहीं है कि प्रतिवादी ने उसकी डाइरेक्टरियों की नकल कर ली है, वरन् उसने उनका उपयोग किया है। न्यायालय ने संक्षेप में यह कहा कि ऐसी स्थिति में यदि वादी का किसी बात के लिए दावा है, तो वह कॉपीराइट के उल्लंघन के लिए नहीं है।

"यद्यपि मूल डाइरेक्टरी की सामग्री उसके रूप (form) और विन्यास की हूबहू नकल कॉपीराइट संरक्षण के अन्तर्गत आती है, किन्तु केवल डाक की आवश्यकताओं के उद्देश्य को लेकर दूसरे की डाइरेक्टरियों से की गई नकल (जिसका और कोई उपयोग न किया जाय) कॉपीराइट संरक्षण विधान के अन्तर्गत नहीं आती (यद्यपि वह अनुचित स्पर्धा के दावे के लिए पर्याप्त कारण हो सकती है)। निश्चय ही यदि कोई व्यक्ति नामों के संग्रह या डाइरेक्टरी को सर्वाधिकार सुरक्षित घोषित करता है, तो कॉपीराइट विधान के अन्तर्गत इसका यह अर्थ नहीं है कि जिन लोगों के नाम सूची में दिये गए हैं, उनसे व्यावसायिक सम्बन्ध रखने का उसे एकाधिकार मिल जाता है।"

शंका हो सकती है कि उपयुक्त तर्कों के फलस्वरूप वादी की शिकायतों का, जिसने वास्तव में क्षति उठाई थी, कोई निराकरण नहीं हुआ। किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं हुआ। मुकदमे का निर्णय वादी के ही पक्ष में हुआ, यद्यपि निर्णय के कारण दूसरे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों की कुछ कठिनाइयाँ

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन की साहित्य परिषद् में स्वागताध्यक्ष श्री रामलाल पुरी, संचालक आत्माराम एण्ड सन्स, का भाषण यहाँ उद्धृत है।

भारत की राजधानी दिल्ली में आपका स्वागत करते हुए मैं बहुत ही हर्ष और गर्व महसूस कर रहा हूँ। साहित्यकार और विचारक नवचेतना और जागृति के अग्रदूत होते हैं और विचार और संस्कृति के विकास में सदा जनता का पथ-प्रदर्शन करते हैं, इसलिए सभ्य और सुशिक्षित देश अपने साहित्यकारों का समुचित आदर और सम्मान करते हैं। आज हमारा देश स्वतन्त्र है और हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा है और हम यह बात बिना किसी अतिशयोक्ति के कह सकते हैं कि हिन्दी के लेखक राष्ट्रीयता के प्रचार में, स्वतन्त्रता-संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने, उत्सर्ग करने और यातनाएँ सहन करने में सदा आगे रहे हैं। इसलिए हम उन पर जितना गर्व करें थोड़ा है। आज भी, जबकि देश स्वतन्त्र है और हिन्दी राष्ट्र-भाषा है, हमारे साहित्यकार अपने कर्तव्य के प्रति भली भांति सजग हैं, और यह सजगता इस बात से सिद्ध हो जाती है कि आप लोग आज की साहित्य-परिषद् में 'साहित्यकार के उत्तरदायित्व' पर विचार करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। साहित्य परिषदें पहले भी होती रही हैं और उनमें भिन्न-भिन्न विषयों पर विचार होता रहा है, लेकिन आज विषय अपने आपमें अनूठा और निराला है और आपको यह निर्देश करने की आवश्यकता नहीं कि आज की ऐतिहासिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ है।

इस परिषद् की एक निराली और अनूठी बात यह भी है कि मैं एक प्रकाशक, स्वागताध्यक्ष के नाते आपका स्वागत कर रहा हूँ। स्पष्ट है कि साहित्यकार और प्रकाशक में चोली-दामन का सम्बन्ध है, आपकी समस्याएँ हम प्रकाशकों की भी समस्याएँ हैं। आप लोग जिस साहित्य का निर्माण करते हैं, हमें उसका प्रसार करना और उसे जनता तक पहुँचाना होता है। इस दिशा में हमें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वे अंततोगत्वा आपकी कठिनाइयाँ बन जाती हैं। आपस में न मिल बैठने और एक-दूसरे की समस्याओं को न समझने से ही हममें और आपमें बहुत सी गलतफ़हमियाँ पैदा हो जाती हैं। हम जिस ऐतिहासिक युग में जी रहे हैं वह आपस में झगड़ने का नहीं, एक-दूसरे को समझ लेने का युग है।

मैं यह बात कहे बिना नहीं रह सकता कि देश के स्वतन्त्र होने और हिन्दी के राष्ट्र-भाषा बनने के बाद जहाँ आप साहित्यकारों का उत्तरदायित्व बढ़ा है, वहाँ हम प्रकाशकों का उत्तरदायित्व भी उतना ही बढ़ गया है। आज आपके और हमारे सामने समस्या यह है कि हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर उसी के सदृश समुन्नत और समृद्ध भाषा बनाया जाय और यह तभी सम्भव हो सकता है जब हिन्दी में हर प्रकार का साहित्य उपलब्ध हो सके। यह बड़ा ही गम्भीर और कठिन-साध्य कार्य है, जिसके लिए साहित्यकारों, प्रकाशकों, पाठकों और सरकार—चारों का सहयोग आवश्यक है।

इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी में ललित साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और इसमें से कुछ ऐसा भी है जो विश्व-साहित्य में बेजोड़ है। किन्तु शिक्षा, मनोविज्ञान, वाणिज्य, भूगोल, इतिहास, यात्रा, कानून, कृषि, कला, उद्योग-सम्बन्धी और विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य अभी भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त हमें विश्व-साहित्य की उत्कृष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ कला कृतियों से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाना है और प्रान्तीय भाषाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उल्लेखनीय साहित्य भी हिन्दी में उपलब्ध करना है। यह सब हमें सरल और रोचक भाषा में—जनता के लिए जनता की भाषा में—प्रकाश में लाना है। इससे समस्या की गम्भीरता और काम का अनुमान सहज ही स्पष्ट हो जाता है। यह काम पंचवर्षीय या दसवर्षीय योजना ही से पूरा हो सकता है। इसके लिए जहाँ साहित्यकारों को कठिन साधना और कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा, वहाँ प्रकाशन-कार्य को सफल बनाने के लिए बड़ी पूँजी की भी आवश्यकता है। जहाँ हमें साहित्य के स्तर को ऊँचा करना है, वहाँ अपने इस वैज्ञानिक युग के साधनों एवं कला और सौन्दर्य के मापदण्ड को सम्मुख रखते हुए पुस्तकों के गेट-अप को भी सुन्दर बनाना है, और यह तभी हो सकता है जब पुस्तकों की माँग बढ़े और वे अधिक-से-अधिक संख्या में छपें, ताकि अधिक छपने से खर्च कम पड़े और जल्दी बिक जाने से नये प्रकाशकों के लिए रुपया शीघ्र लौट आये।

लेकिन इस समय की वस्तु-स्थिति यह है कि हिन्दी में पाठकों की कमी है। पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में बिकती नहीं हैं। कोई पुस्तक चाहे वह कितनी ही अच्छी हो, अगर किस परीक्षा में न लगी हो तो पाठकों का ध्यान अपनी ओ आकर्षित नहीं कर पाती, यहाँ तक कि दो हजार का संस्करण भी वर्षों पड़ा रहता है। प्रकाशक के पास नई पुस्तकें छापने के लिए रुपया नहीं आता और लेखक को यह शिकाय रहती है कि उसे उसका पारिश्रमिक क्यों नहीं मिला और उसकी पांडुलिपि को क्यों नहीं प्रकाशित किया गया।

मेरे विचार में प्रकाशन का कारोबार अन्य सब कारोबा से कठिन तथा जोखिम का है। इसीलिए बड़े-बड़े पूँजीप इसमें आना पसन्द नहीं करते। वे कहते हैं कि यह कैस धन्धा है जिसमें दस लाख रुपये का माल होते हुए भी बैं से दस हजार रुपया भी नहीं मिलता है। रुपया लगाने फँसाने और खोने का क्षेत्र इसमें विशाल है। एक-ए पुस्तक के प्रकाशन में हजारों रुपये खर्च हो जाते हैं, परन्तु बैंकों के लिए यह सब एकदम रद्दी है। पुस्तकें बहुत धीरे धीरे बिकती हैं और जब तक बिक न जायँ, तब तक दुकान में चाहे लाखों का माल भरा पड़ा हो उसकी मार्केट वैल्यू धेला भी नहीं। कोई बैंक उस माल के बदले में अगाऊ दे की जोखिम नहीं लेता। कई बार ऐसा भी होता है कि सचमुच सारी पुस्तकें डेड स्टाक होकर रहती हैं। प्रकाश का सारा रुपया डूब जाने पर भी लेखक की ओर से उस पारिश्रमिक का तकाजा बना रहता है।

प्रकाशन-कार्य में कुछ कठिनाइयाँ मैंने संक्षेप आपके सामने रख दी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन को उचित स्तर पर लाने के लिए ह सरकार की सहायता, आपका और पाठकों का सहयो चाहिए। हम और आप भली भाँति जानते हैं कि हमा देश महान् और विशाल है। जब जनता में साक्षरता बढ़े तो प्रकाशन-कार्य स्वतः फूले-फलेगा और आपका तथा ह लोगों का सम्बन्ध दिनों-दिन घनिष्ठ होता जायगा।

किसी भी हिन्दी पुस्तक
की
आवश्यकता के लिए
राजकमल
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

प्रकाशन समाचार
का वार्षिक मूल्य २॥)
मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।
पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत

[प्रथम वार्षिक साहित्य-संकलन]

प्रधान सम्पादक : उपेन्द्रनाथ अश्क

सम्पादक : कमलेश्वर मार्कण्डेय

- हिन्दी के सभी प्रतिनिधि कथाकार, कवि, नाटककार, निबन्ध-लेखक और आलोचकों के सहयोग ने इसे सर्वांग सम्पन्न, महत्त्वपूर्ण और प्रतिनिधि बना दिया है।
- समस्त हिन्दी प्रदेश के नये और पुराने गण्यमान साहित्यिकों की वर्ष-भर की उत्तमोत्तम और प्रतिनिधि अप्रकाशित कृतियाँ इसमें संगृहीत हैं।
- हिन्दी प्रेमी पाठकों और पुस्तकालयों के लिए आधुनिकतम हिन्दी-साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकने का यह अपूर्व माध्यम है।

इसमें एक लघु उपन्यास, एक पूरा नाटक, बारह कहानियाँ, चार एकांकी, दो निबन्ध, पाँच स्कैच, पचास कविताएँ एक डायरी, तीन संस्मरण, एक रिपोर्ताज़, एक उपन्यास का अंश, आठ आलोचनाएँ, उर्दू के एक कवि का परिचय, और चुनी कविताएँ तथा उर्दू के, अन्य प्रतिनिधि कवियों की कविताएँ प्रस्तुत हैं।

और इसे अजितकुमार, अनिलकुमार, अमृतलाल नागर, अमृतराय, ओम्प्रकाश, ओम्प्रकाश श्रीवास्तव, ओंकार शरद, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, कमल जोशी, कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, कल्पना, कीर्ति चौधरी, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध, गंगाप्रसाद पाण्डेय, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव, गिरिजाकुमार माथुर, गोपालकृष्ण कौल, गोविन्दवल्लभ पंत, जितेन्द्र, जगदीशचन्द्र माथुर, ठाकुरप्रसाद सिंह, तेजबहादुर चौधरी, त्रिलोचन शास्त्री, दिनकर, दुष्यन्त कुमार, देवराज, नागार्जुन, नरेन्द्र शर्मा, नरेश मेहता, नामवर सिंह, निराला, नलिन विलोचन शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, प्रभाकर माचवे, प्रयागनारायण त्रिपाठी, फणीश्वरनाथ रेणु, बच्चन, बालकृष्ण राव, बालकृष्ण शर्मा नवीन, बैकुंठनाथ मेहरोत्रा, भगवतशरण उपाध्याय, भवानीप्रसाद मिश्र, भारत भूषण अग्रवाल, भीष्म साहनी, भुवनेश्वर, भैरवप्रसाद गुप्त, महादेवी वर्मा, मामा वरेरकर, मोहन राकेश, यशपाल, रामानाथ अवस्थी, रामसिंह, राजेन्द्र किशोर, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण, रामकुमार, रामकुमार वर्मा, रामदरस मिश्र, रामविलास शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, वंशीधर पण्डा, वृन्दावनलाल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र, विद्यासागर नौटियाल, विश्वनाथ, विष्णु प्रभाकर, शकुन्त माथुर, शरद् जोशी, शमशेर बहादुर सिंह, शिवदानसिंह चौहान, शिवमंगल सिंह सुमन, शिवप्रसाद सिंह, शिवपूजन सहाय, श्रीकांत वर्मा, श्रीकृष्ण दास, श्रीपतराय, शान्ति एम० ए०, सज्जाद ज़हीर, सत्य, सत्येन्द्र शरत्, सिद्धनाथ कुमार, सुमित्रानन्दन पन्त, सुदर्शन, सुरेन्द्रकुमार दीक्षित, सुरेन्द्र तिवारी, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, हृषीकेश, हरिशंकर परसाई आदि आदि का सहयोग प्राप्त हुआ है।

डिमाई साइज़, ऐंटिक कागज़, पृष्ठ ६००,

साथ में अनेक चित्र तथा कलाचित्र

मूल्य : १२)

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत की वाणी

स्वाधीनता और उसके बाद

१९४६ और १९४९ के बीच दिए गए पंडित जवाहर लाल नेहरू के कुछ महत्त्वपूर्ण भाषणों का संग्रह। ४०० पृष्ठों की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक की कीमत ५)

आठवां साल

अप्रैल १९४९ से मार्च १९५५ के दरम्यान के भारत सरकार, राज्य सरकार तथा सारे देश के अनेकविध कार्य तथा उनके संपादन के प्रामाणिक सर्वेक्षण का नवीनतम वार्षिक प्रकाशन। भारत के शासन तथा व्यवसाय संबंधी लगभग सारे क्षेत्र व्याप्त करने वाले आंकड़े इसमें संकलित करके प्रकाशन को एक अत्यंत उपयुक्त संदर्भ-ग्रंथ बनाया है। कीमत १।।) (छप रहा है)

भारत की एकता का निर्माण

अगस्त १९४७ से दिसंबर १९५० तक का काल, भारत के इतिहास का तेजस्वी काल है। इसी महत्त्वपूर्ण कालावधि में नव भारत की नींव डाली गई। इस काल में दिए गए सरदार वल्लभ भाई पटेल के २७ महत्त्वपूर्ण भाषण, जो स्वतंत्र भारत के निर्माण का यथार्थ प्रमाण है, कई दुर्लभ तस्वीरों समेत संग्रहीत किए गए हैं। ४०० पृष्ठों की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५)

भारत-१९५५

इस वार्षिक संदर्भ-ग्रंथ में भारतीय संघ के राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक आदि सारे पहलुओं का यथार्थ विवरण है। मूल्य ७।।)

मिलने का पताः–

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

AC 55/109

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

१९५५ के वर्ष में इंग्लैण्ड में प्रकाशित हुई पुस्तकों की कुल संख्या १९९६२ थी। इतनी पुस्तकें अब तक इससे पहले कभी प्रकाशित नहीं हुई। गत कुछ वर्षों में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या इस प्रकार रही है: १९५०: १७०७२, १९५१: १८०६६, १९५२: १८७४१, १९५३: १८२५७, १९५४: १९१८८, १९५५: १९९६२। इन १९९६२ पुस्तकों में से केवल ५७७० पुस्तकें पुनर्मुद्रित अथवा पुरानी पुस्तकों के नये संस्करण थे, शेष सब पुस्तकें नई थीं।

◈ ◈ ◈

उपन्यासों का प्रकाशन १९५५ में १९५४ की अपेक्षा काफ़ी कम हुआ जबकि शिक्षा-सम्बन्धी, व्यापार और उद्योग-सम्बन्धी, इंजीनियरिंग, कला और स्थापत्य सम्बन्धी, टेकनिकल तथा धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन अपेक्षातर अधिक हुआ।

◈ ◈ ◈

विषयानुसार पुस्तकों का प्रकाशन निम्नलिखित संख्याओं में हुआ:

उपन्यास	३७०२
शिक्षा सम्बन्धी	१८४४
बालोपयोगी	१७५६
धार्मिक	१०५८
टेकनिकल	८८१
मेडिकल	७८५
कविता, नाटक	६५८
राजनीति आदि	६५१
व्यापार, उद्यम	६२६
कला, स्थापत्य	५९१
जीवन-चरित्र, संस्मरण	४९६
कानून, वैधानिक	४३७
खेलें	४३३
इंजीनियरिंग	४१३
डायरेक्टरीज	४११
समाज शास्त्र	४०५
लोक-साहित्य, भूगोल	३९९
पदार्थ विद्या, रसायन शास्त्र	३३५
फौजी शिक्षा से सम्बन्धित	३०५
साहित्यिक इतिहास	३०४
जीवविद्या, प्राणिशास्त्र	२९५
कृषिशास्त्र	२८५
इतिहास	२३५
गार्हस्थ्य शास्त्र	२२१
अर्थशास्त्र	२२०
पशु-चिकित्सा शास्त्र	२०४
भ्रमण	१९९
दर्शनशास्त्र	१८७
खनिज शास्त्र	१५७

श्री राजनारायण अग्रवाल की निर्मम हत्या

आगरा, ग्वालियर और इन्दौर के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल के सुपुत्र श्री राजनारायण अग्रवाल की १९ जनवरी, १९५६ बृहस्पतिवार की शाम को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा हत्या कर दी गई। श्री राजनारायण अग्रवाल लगभग ३० वर्ष के सुशिक्षित नवयुवक थे।

प्रकाशन समाचार दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करता है। उनका दुःख हम सबका दुःख है।

प्रकाशन समाचार को स्वर्गीय श्री राजनारायण अग्रवाल का सहयोग सदैव प्राप्त था। आपके पत्र शीर्षक स्तम्भ में उन्हीं का अपना लिखा हुआ १० जनवरी का एक पत्र इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nautical	१३३
संगीत	१२१
मनोविज्ञान	११६
निबन्ध साहित्य	११८
कोश, सन्दर्भ ग्रन्थ	११६
Aeronautics	१०७
रेडियो, टेलिवीजन	९८
गणित	८७
नक्शे	८१
नक्षत्र विज्ञान	७८
Facetic	६६
क्लासिक्स; अनुवाद	६४
Urcheology	५८
वार्षिक प्रकाशन	५२
Occultism	४८
Anthropology	३८
भेंट योग्य सचित्र पुस्तकें	३२
स्टाम्प्स से सम्बन्धित	२३
एल्बम्स, कैलेन्डर्स	१५
पूर्वीय देशों से सम्बन्धित	१५
	१९९६२

साहित्य-अकादमी (नई दिल्ली) इस वर्ष अक्तूबर-नवम्बर में भारतीय भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का आयोजन कर रही है। प्रदर्शनी-आयोजन इस संस्था के कार्यक्रम का एक अंग है।

उपयोगी प्रकाशनों को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी ने निम्नलिखित अनुदानों की स्वीकृति दी है: (१) सुविख्यात विश्वकोषकार (Encyclopaedist) डॉ० एस० वी० केतकर की पुस्तक 'प्राचीन महाराष्ट्र' के शेष दो खण्डों के प्रकाशन के लिए १०,०००), (२) बच्चों के लोक-प्रिय नाटक 'मोदन्नरण थम्मा' का सचित्र और सस्ता संस्करण तैयार करने के लिए चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट (३) मैसूर को १०००), कन्नड़-लेखकों के जीवनी-कोष के प्रकाशन के लिए १०००), (४) अकादमी ने विश्व की अनेक भाषाओं से २५ सर्वोत्तम ग्रंथ चुने हैं, जिनका भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जायगा।

साहित्य-अकादमी के कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य-क्रम ये हैं: (१) १५ भारतीय भाषाओं में भारतीय साहित्य की ग्रन्थ-सूची तैयार कराना। यह कार्य लगभग पूरा हो गया है। (२) प्रमुख भारतीय भाषाओं में वर्ष-भर की प्रकाशित चुनी कविताओं का वार्षिक काव्य-संग्रह प्रस्तुत कराना। 'भारतीय कविता—१९५३' नामक शीर्षक से पहला खण्ड प्रेस में है और शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। (३) कालिदास की कृतियों का आलोचनात्मक संस्करण तैयार कराना, जिसका प्रथम खण्ड—'मेघदूत'—कलकत्ता के श्री एस० के० दे द्वारा लिखा जा चुका है और जो प्रेस में है। (४) विश्व-भारती विश्वविद्यालय के सहयोग से रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं की विस्तृत ग्रन्थ सूची तैयार कराना। (५) चार खण्डों में संस्कृत साहित्य की ग्रन्थ-सूची तैयार कराना। (६) 'आदि ग्रन्थ' के चुने हुए अंशों का अंगरेजी अनुवाद तैयार कराना, जो 'यूनेस्को' द्वारा प्रकाशित होगा। लगभग आधा अनुवाद 'यूनेस्को' के पास भेजा जा चुका है। (७) हिन्दी के आधुनिक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों का भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद। (८) भारतीय प्रमुख भाषाओं के काव्य-संग्रह और साहित्य के इतिहास तैयार कराना।

प्रत्येक भाषा से सम्बन्धित सुविख्यात लेखकों और विद्वानों की एक परामर्शदात्री समिति है, जिसके सहयोग से अकादमी उन भाषाओं से सम्बद्ध कार्य-क्रमों का निर्माण करती और उन्हें कार्यान्वित करती है।

◆ ◆ ◆

मास्को रेडियो के अनुसार रूस में भारतीय कृतियों की १० लाख प्रतियाँ बाजार में बिकने के लिए तैयार की जा रही हैं। इनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचन्द और कालिदास की कृतियों के अतिरिक्त पंजाबी की कविताएँ सम्मिलित हैं।

गत वर्ष श्री जवाहरलाल नेहरू की दो पुस्तकों—'हिन्दुस्तान की कहानी' और 'मेरी कहानी'—का अनुवाद सफलतापूर्वक प्रकाशन किया गया था।

पिछले वर्ष अन्य भारतीय कृतियों के साथ-साथ रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं के कुछ संग्रहों का रूस में बोली जाने वाली १३ भाषाओं में अनुवाद हुआ और इनकी बिक्री भी पर्याप्त हुई।

'क्लासिक' साहित्य में पिछले वर्ष 'रामायण' का अनुवाद भी किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

नई इमारत : श्री 'अंचल' द्वारा लिखित उपन्यास का ह नया संस्करण **किताब महल, इलाहाबाद** द्वारा प्रकाशित किया गया है। १९४२ की जन-क्रान्ति की पृष्ठभूमि में उन नों के भारत की राजनीति का स्पष्टता से रेखांकन हुआ है। ाऊन आकार के १६-पेजी पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का ूल्य ४॥) है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : तुलनात्मक भाषा-ज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान् डॉ० उदयनारायण तिवारी द्वारा लिखित इस पुस्तक से हिन्दी भाषा के प्रवर्तन और उसके वस्तृत विकास के सूक्ष्म अध्ययन का अभाव पूरा हुआ है। र्वपीठिका में हिन्दी के उद्गम स्रोत—यूरोपीय, वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि—से सम्बन्धित सामग्री दी गई तथा उस संक्रान्तिकाल का विवेचन किया गया है जिसमें आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का उदय हुआ। उत्तर ीठिका में हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक व्याक-रण दिया गया है। डिमाई आकार के ६११ पृष्ठों के इस जिल्द ग्रन्थ का मूल्य ११) है तथा प्रकाशन **भारती भण्डार,** इलाहाबाद से हुआ है।

◈ ◈ ◈

अन्धा कुआँ : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल का लिखा हुआ अभिनेय नाटक है जिसकी स्थापना ग्राम्य परिस्थितियों में की गई है। इसमें ईर्ष्या और प्रेम, घृणा और सहानुभूति, रिग्रहण और त्याग की कथा जीवन्त पात्रों के माध्यम से तीव करुणा से, मुहावरों से भरी प्रभावोत्पादक भाषा में कही ई है। क्राऊन आकार के १५८ पृष्ठों की इस सजिल्द स्तक का प्रकाशन **भारती भण्डार, इलाहाबाद** ने किया है; ूल्य २॥) है।

◈ ◈

बचपन की स्मृतियाँ : श्री राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित यह पुस्तक मात्र आत्म-संस्मरण नहीं है; इसमें बीसवीं शती के आरम्भ के काल का भारतीय ग्राम्य-जीवन प्रतिबिम्बित हुआ है। बचपन की स्मृतियों को अंकित करते हुए लेखक ने उन्हें अपने पाण्डित्य और गवेषणात्मक ज्ञान की पुट देकर किसी समाजशास्त्रीय अध्ययन की भाँति महत्त्वपूर्ण और रोचक बना दिया है। क्राऊन आकार के १४६ पृष्ठों की न्यूज़ प्रिंट पर छपी इस पुस्तक का मूल्य १॥) है और इसका प्रकाशन **किताब महल, इलाहाबाद** ने किया है।

◈ ◈ ◈

जिन खोजा तिन पाइयाँ : देखीं, सुनीं, पढ़ीं और समझीं, व्यावहारिक सूझ-बूझ से भरीं सूक्तियों और कहानियों का उपयोगी संग्रह जिसे श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ने तैयार किया है। पृष्ठ २१६, मूल्य २॥), प्रकाशक, **भारतीय ज्ञानपीठ,** बनारस।

◈ ◈ ◈

धूप के धान : 'तार सप्तक' के कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर की १९५४ तक लिखित ४५ प्रमुख कविताओं का यह संग्रह **भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस** से प्रकाशित हुआ है जिसमें "कवि ने नई धाराओं, शैलियों के स्वस्थ तत्त्वों का समन्वय करने की अथक चेष्टा की है।" कवि के अपने शब्दों में अन्यत्र यह भी दावा किया गया है कि इन कविताओं में "शिल्प-प्रयोगों के साथ सामाजिक वस्तु के सामंजस्य का यत्न मिलेगा।"

इस संग्रह की दस पृष्ठों की "निवेदनम्" शीर्षक भूमिका में श्री गिरिजाकुमार माथुर ने काव्य और साहित्य-सम्बन्धी कुछ स्थापनाएँ की हैं : (१) नई कविता पुरानी धारा की प्रतिक्रिया-स्वरूप काव्य-क्षितिज पर उदित हुई है, (२) श्रेष्ठ साहित्य विभिन्न पक्ष या प्रवृत्तियों का समन्वय करता चलता है, (३) राजनीति पक्षधर-मात्र ही होती है, (४) मध्ययुग में जैसे धर्म के नाम पर था, आज मानवता के नाम पर विग्रह, रक्तपात, शीतयुद्ध और महायुद्ध रचे जा रहे हैं, (५) एकांगी मान्यताओं और वैचारिक दिग्भ्रम के कारण आज कवि की अभिव्यंजना के उपकरणों—भाषा, प्रतीक, उपमान, छन्द—में अस्वाभाविकता, अधूरापन है एवं रूप तथा व्यक्तित्व का अभाव है, (६) मानव-संस्कृति बड़े विराट् और व्यापक परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वतनों में से होकर गुजर रही है, उसके मूल्य-मानों में आमूल उखाड़-पछाड़ हुई है, सामाजिक विघटन हुआ है लेकिन नवीन स्तर पर आकर उसमें सन्तुलन स्थापित होना शेष है, (७) नई कविता की तात्कालिक उपलब्धि से यह देखकर असन्तोष होता है कि उसमें जो-कुछ लिखा गया है उसका एक भाग उलजलूल और निरर्थक है, उसमें छन्दों की अराजकता और विशृंखलता है। ये स्थापनाएँ पूर्णरूप से शायद राजनीति या साहित्य की किसी भी प्रवृत्ति को स्वीकार्य नहीं होंगी, यद्यपि इन्हें व्यक्त करने वाले की सद्भावना के प्रति सन्देह की गुंजाइश नहीं।

इस प्रकार विभिन्न प्रवृत्तियों के समन्वय के लिए श्री गिरिजाकुमार माथुर ने जो विस्तृत प्रेरणा दी है, उसके परिणाम में रचे जाने वाले काव्य के उदाहरण भी इस संग्रह में मिलते हैं। "तैंतीसवीं वर्षगाँठ" नाम की कविता में कवि एक प्रवृत्ति के अनुसार कहता है :

वह नहीं इंसान की है सभ्यता
स्वार्थ, लालच, युद्ध जिसके देवता
मूलधन, हिंसा, गुलामी सूद है
आदमी बंदूक की बारूद है—

अथवा,

भूख, बीमारी, ग़रीबी, गन्दगी
कौड़ियों के मोल• बिकती जिंदगी

और इसी कविता में दूसरी प्रवृत्ति के तत्वों को सँजोते हुए कवि ने अपनी मनोकामना इन भावों में प्रकट की है :

बाँह गोरी मनुजता की ध्वज बने
छाप तेरे अधर की सूरज बने

"धूप का ऊन" शीर्ष की कविता में भी यह समन्वय देखिए :

और अलसाए हुए
कम्बल, लिहाफों, बिस्तरों पर
जो उठाए जा रहे हैं
रात की मीठी कथा के
पृष्ठ पलटे जा रहे हैं

◆ ◆ ◆

जल रहे हैं कोटि चूल्हे
किंतु है इंसान भूखा

"शाम की धूप" में

ये हवा धूप-मिली
लहर-सी आके लिपट जाती है
कभी हल्के-से उड़ा देती बाल
कभी छत पर बैठी ललनाओं के
सोंधे तन-गंध-भरे आँचल को
गोरे कंधे से उड़ा देती है

और उड़ जाते सूखते कपड़े
ऊँची सीमेंट की मुंडेरों से
छोटे कुरते, रुमाल, टेबिल-क्लाथ
छींट की फ्राक, रेशमी जम्पर
साड़ियाँ बुंदकियों लहरियों की
और ब्लाऊज़ महीन चटकीले
जिनमें थे पड़ गए पहिनने से
चिह्न रंगीन गठे अंगों के
सभी कोमल-कठोर उतार-चढ़ाव

साथ ही इसी कविता में :

आज पग-पग पै क्लेश कठिनाई
घर से खलिहान तक है अन्न नहीं
कारखानों से लेके बस्ती तक
है न कपड़ा कहीं पहिनने को
दूध घी का यहाँ पै चर्चा क्या
जब न चीनी, न गुड़, न दाल-नमक
हो गया स्वप्न किरासिन का तेल
जिंदगी पर यह शिकंजा दिन-दिन
हो रहा और कड़ा और कठिन

क्या इन कविताओं में सामाजिक यथार्थ के साथ-इन्द्रियार्थवाद की इन भावनाओं का समन्वय हो सका है? दो धाराएँ अलग-अलग स्पष्ट दीख पड़ती हैं; पाठक के मन पर समन्वय के स्थान पर सह-अस्तित्व का प्रभाव अधिक पड़ता है। लोकसुलभ भाषा में कहा जाय तो खिचड़ी के अपने विशिष्ट स्वाद के स्थान पर प्रत्येक कौर में चावल और दाल का अपना-अपना स्वाद ही मिलता जाता है। पृष्ठसंख्या १५, मूल्य ३)।

◆ ◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महुए का पेड़ : हिन्दी के प्रतिभासम्पन्न नवयुवक कहानी- र मार्कण्डेय की १० सफल कहानियों का संग्रह है। लेखक प्रथम कहानी-संग्रह 'पान फूल' की बहुप्रशंसित कहानियों बाद लिखी गई ये कहानियाँ निश्चित रूप से शिल्प और यावस्तु, दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रौढ़ हैं। 'महुए का ' का प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, प्रयाग** से और ल्य है २)।

◆ ◆ ◆

ज़िन्दगी बोलती है : श्री रामस्वरूप की १२ कहानियों संग्रह है, जिसमें 'यथार्थ व कल्पना का बहुत ही कलात्मक न्वय है।' चुस्त शैली में लिखी गई कहानियों के इस ह का मूल्य २॥) है, जिसे **मेघराज अग्रवाल, शतदल काशन, ४६।१, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता-७** ने प्रकाशित या है।

हाथ-चक्की, श्री एम० विनायक ने अनाज-पिसाई और थ-चक्की से सम्बद्ध तथ्यों का संकलन करके यह स्पष्ट करने चेष्टा की है कि 'यन्त्र-शक्ति के द्वारा प्रेरित मशीनों की शंसित कार्य-क्षमता केवल कल्पना-मात्र है।' **अखिल भारत र्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी** से प्रकाशित इस पुस्तक का ल्य ॥) है।

◆ ◆ ◆

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी तीन पुस्तकें परिचयार्थ प्राप्त हुई हैं, उनमें प्रथम है श्री विन्ददास का नाटक **सबै भूमि गोपाल की,** दूसरी है कृष्णदत्त भट्ट की **भूमि-क्रान्ति का तीर्थ : कोरापुट** और सरी है **भूमि-वितरण,** जिसमें भूमि-वितरण सम्बन्धी नियमों, र्मियों आदि का संकलन है। इनके मूल्य क्रमशः।), ।) र।-) हैं।

◆ ◆ ◆

यदि आप अब तक ग्राहक न बने हों तो

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक शुल्क २॥)

आज ही मनीआर्डर द्वारा भेजकर ग्राहक बनें।

कथा-साहित्य में धूम मचाने वाला

हमारा लोकप्रिय प्रकाशन

उपन्यास

द्वाभा	प्रभाकर माचवे	२)
बहता पानी	मन्मथनाथ गुप्त	३।)
मरु प्रदीप	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	३॥)
मुक्ति की राह	एस० पी० खत्री : अनु० :	६)
अनबुझी प्यास	दुर्गाशंकर मेहता	७॥)
चान्दनी के खंडहर	गिरधर गोपाल	२)
काठ का उल्लू और कबूतर	केशवचन्द्र वर्मा	४)
सूरज का सातवाँ घोड़ा	धर्मवीर भारती	१॥)
गुनाहों का देवता	धर्मवीर भारती	५)

कहानी

प्रायश्चित	सत्यजीवन वर्मा	२)
छायातप	रघुवंश डॉ०	२॥)
आँसू और पसीना	रामप्रताप बहादुर	२)
पूँजीपति	गोपेश	२)
मेरा देश	अ० नदीम कासिमी	२)
मन की मौज	राजेन्द्रसिंह गौड़	२॥)
आस्करवाइल्ड की कहानियाँ	धर्मवीर भारती : अनु० :	२)

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चकोटि का साहित्य

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नये प्रकाशन

कहानियाँ

जिन खोजा तिन पाइयाँ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥
खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द १)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन [१] : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २॥
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४
धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३
कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४
शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथकुमार एम० ए० २॥

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥
आकाश के तारे :
धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र ३
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० २
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६

विस्तृत जानकारी के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

त्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—आदिम युग, श्री उदयशंकर भट्ट, पु० मु०, ४)

—विज्ञान और सभ्यता, श्री रामचन्द्र तिवारी, ४)

—अजी सुनो, श्री गोपालप्रसाद व्यास, पु० मु०

—पद्मसिंह शर्मा के पत्र, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

—जर्मनी की लोक कथाएँ, श्री जगन्नाथ शर्मा, १)

—गांधी चरित्र, श्री गोपालप्रसाद व्यास, १)

—चित्रमय गांधी, श्री गोपालप्रसाद व्यास, १)

रिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—संन्यासी विवेचन, प्रो० बलदेव कृष्ण, आलोचना, २।)

—प्रबन्ध भास्कर, प्रो० मेनन, शर्मा तथा गोयल, निबन्ध ,५)

ल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस

—बिजली, 'बेढब' बनारसी, हास्य रस की कविताएँ ,२)

—साहित्य प्रवाह, श्री कृष्णदेव प्रसाद, आलोचनात्मक-निबन्ध, ५)

—सांझ सकारे, श्री सुधाकर पाण्डेय, उपन्यास, ५)

—सूनी की खोज, शरलॉक होम्स, अनु० श्री सहाय, उपन्यास

किताब महल, इलाहाबाद

—दाखुंदा, श्री राहुल सांकृत्यायन, पु० मु०, उपन्यास, ५)

—स्विट्जरलैण्ड का शासन, महेन्द्र प्रकाश अग्रवाल, ३)

—रत्नावली, अनु० श्री ठाकुरदत्त मिश्र, १।)

—कार्ल मार्क्स, श्री राहुल, जीवनी, ६)

—वेणी संहार, अनु० श्री ठाकुरदत्त मिश्र, १।)

—विस्मृत यात्री, राहुल सांकृत्यायन, संस्मरण, ६)

र्मा ब्रदर्स, इलाहाबाद

—विश्व के महान् शिक्षक, श्री विश्ववीर विद्यार्थी, शिक्षा, ५)

—प्रारम्भिक मनोविज्ञान, श्री विश्ववीर विद्यार्थी, ३॥)

—बाल मनोविज्ञान, श्री भगवानदास अवस्थी, ३)

—ताजमहल के आँसू, डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, नाटक संग्रह, २॥)

चन्द्र कार्यालय, भिवानी

—अनुभूत मुलम्मा, श्री चन्दूलाल वर्मा 'चन्द्र', इलैक्ट्रोप्लेटिंग, १॥)

दम्माणी एण्ड कम्पनी, बीकानेर

—हज़ार वर्ष बाद, श्री संजीव कुमार, प्रहसन

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—हम स्वस्थ कैसे रहें, श्री सत्य काम, ६)

—आधुनिक नारी सुबोधिनी, श्री सत्यकाम, ८)

—कारपेन्ट्री बुक, श्री रत्नप्रकाश 'शील' १०)

—रैफ्रीजरेशन, श्री नरेन्द्रनाथ, ६)

बिहार प्रकाशन मन्दिर, बनारस

—रोम की रमणी, अनु० श्री कामताप्रसाद श्रीवास्तव, उपन्यास, ३)

मंगला प्रकाशन, नागपुर

—सहोदरा, श्री अशोक, उपन्यास, १॥)

—धरती और आकाश, श्री अशोक, कहानी, २)

—रेशम के धागे, श्रीमती लक्ष्मीदेवी वर्मा 'चन्द्रिका', कहानी, १॥)

—नौलखा हार, श्री अशोक, बालोपयोगी, ।॥)

'मस्ती' प्रकाशन, खन्ना

—सोहाग रात, श्री नरेन्द्र धीर, २।)

—रति की पूजा, श्री नरेन्द्र धीर, २)

—उर्वशी के गीत, श्री नरेन्द्र धीर, २।)

—जवानी की आग, श्री नरेन्द्र धीर, पु० मु०, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि प्रकाशन, कानपुर

—वृन्दावनलाल वर्मा, उपन्यास और कला, श्री शिवकुमार मिश्र, ६)

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—विश्वसाहित्य की रूप-रेखा, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, १२)

—तुलसी और उनका काव्य, पु० मु०, श्री रामनरेश त्रिपाठी, ७)

—हाथियों की खोज में, श्री विराज, १॥)

—भक्ति दर्पण, म० राजपाल, १॥)

रामकुमार बुकडिपो, लखनऊ

—बहनों से दो बातें और बापू के उपदेश, श्री जगबीर कौर 'शिवा', १।)

—बाल लोमहर्षिणी, श्री के० एम० मुन्शी, अनु० श्री एल० पी० भारद्वाज, १।)

—बाल परशुराम, श्री के० एम० मुन्शी, अनु० श्री एल० पी० भारद्वाज, १।)

—स्वाधीनता की सुरक्षा, श्री कालिदास कपूर, ५)

विप्लव कार्यालय, लखनऊ

—अमिता, श्री यशपाल, उपन्यास,

सत साहित्य प्रकाशन, बनारस

—साहित्य की भूमिका, श्री त्रिलोचन शास्त्री, ३)

सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

—चिता, श्री ओमानन्द रू० सारस्वत, कहानी-संग्रह,

सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा

—सरस्वती व्याकरण, श्री सीताराम चतुर्वेदी, ।।।)

—गृहशिल्प एवं सम्बन्धित कला, भाग १, २, ३, श्री तारादेवी, २॥

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद

—चक्रव्यूह, श्री महेश, खण्ड-काव्य, १।)

साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद

—तुलसी दोहावली सार, श्री कृष्णमुरारीलाल, ।।।)

हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस

—हिन्दी साहित्य सर्वस्व, पंडित सीताराम चतुर्वेदी, ६

—शैली और कौशल, पंडित सीताराम चतुर्वेदी, ६)

हिन्दी की पुस्तकों के लिए

बृहत्तम भण्डार

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

हिमालय हाऊस, हार्नबी रोड, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी मास के प्रकाशन

आलोचना—साहित्य—संस्कृति—निबन्ध

दय नारायण तिवारी, डॉ०, हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, ६५०, डि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ११)
ौड़ तथा शास्त्री, हिन्दी प्रदर्शक, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ १।।)
द्रकान्त बली शास्त्री, हिन्दी गद्य : विकास और विमर्श, १२०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।।)
युगी नारायण त्रिपाठी, आधुनिक निबन्ध, २७६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)
मात शास्त्री, श्रीधर शास्त्री, कवि कर्मबोध, ७२, क्रा०, कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद ।।।=)
माकर माचवे, मराठी और उसका साहित्य, १३३, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २)
मनारायण टण्डन, गोदान : एक अध्ययन, पु० मु०, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ २)
मनारायण टण्डन, चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन, पु० मु०, २००, क्रा०, विद्यामन्दिर, लखनऊ २।।)
गेन्द्र नाथ शर्मा, तेजनारायण टण्डन, नहुष की टीका, ५६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ ।।।)
क्ष्मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, आचार्य शुक्ल और त्रिवेणी, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ २)
क्ष्मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, महादेवी वर्मा और नीरजा, २३६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ ३।।।)
क्ष्मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, यशोधरा : एक अध्ययन, पु०मु०, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।।)
थित हृदय, हमारे काव्यकार, २६०, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २।।)
थित हृदय, हमारे साहित्यकार, १३६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १)
मगोपाल शर्मा 'दिनेश' हिन्दी साहित्यकार, १६०, क्रा०, प्रेम बुकडिपो आगरा १।।)
मधारीसिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, ६७६, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १५)
त्येन्द्र, डॉ०, सूर की झाँकी, २५४, डि०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क० लि०, आगरा ६)
वस्वरूप गुप्त, कबीर साहित्य समीक्षा, २६६, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ ४)
ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०, सूर साहित्य, २२६, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नकार लि०, बम्बई २।।।)

इतिहास—दर्शन—मनोविज्ञान—राजनीति—शिक्षा

द्र अनु०, कौटिल्य अर्थशास्त्र, २५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णकुमार, नीतिशास्त्र, भाग १ व २, पु० मु०, ३००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
गोपालप्रसाद व्यास, हमारे राष्ट्रपिता, १३६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
जयप्रकाश' डॉ०, मनोविज्ञान प्रयोग परिचय, पु० मु०, २००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह, बाबू कुंवरसिंह (एक अध्ययन), ३००, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
प्रियरत्न आर्ष, क्रियात्मक मनोविज्ञान, १३६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
बालकृष्णदास बैजल, हमारी पृथ्वी, ४३०, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
यदुनन्दन कपूर, अशोक, २५६, डि०, कालेज बुक स्टोर्स, अलीगढ़
राजेश्वर अर्गल, डॉ०, आधुनिक संविधान, ३२०, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
रामस्वरूप वशिष्ठ, मानसिंह प्रवेशिका, १२८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
रामसूरतलाल और मिश्रा, साधारण मनोविज्ञान, पु० मु०, ७५०, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद

उपन्यास

गुरुदत्त, मानव, ३७२, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली
गुरुदत्त, प्रवञ्चना, पु० मु०, ३१८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
गुरुदत्त, लुढ़कते पत्थर, ३५५, क्रा०, ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली
गोविन्दवल्लभ पन्त, पर्णा, २५६, क्रा० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, दुष्यन्त और शकुन्तला, ६८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, प्रतिज्ञा, ७०, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, विक्रम और उर्वशी, ६०, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
नकाब पोश मेंहदी, मंचूरिया की राजकुमारी, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
नकाब पोश मेंहदी, हवेली का रहस्य, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
बंकिमचन्द्र, अनु० सुनीता अग्रवाल, कृष्णकान्त का वसीयत नामा, ७२, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
बेढ़ब बनारसी, लफ्टेनेन्ट पिगसन की डायरी, २५६, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
शरत्, अनु० सुनीता अग्रवाल, परिणीता, ७६, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
शरत्, अनु० रूपनारायण पाण्डेय, शेष का परिचय, शरत् साहित्य भाग ३४-३५, ३२६, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर लि०, बम्बई

कविता

इन्द्रिय दमन कौशिक, कलाकार का दर्पण, ८०, क्रा०, हिन्दी साहित्यकार संसद, दिल्ली
बेढ़ब बनारसी, हास परिहास, १६०, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस
सत्यकाम विद्यालंकार अनु०, मेघदूत, १५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

कहानी

कृष्णचन्द्र, सीमा, पु० मु०, १८८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
राजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद', रिमझिम, पु० मु०, ११२, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स बनारस
शिवदानसिंह चौहान, आधुनिक कहानियाँ, ३०६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
शिवदानसिंह चौहान, नव कहानी कुञ्ज, २५५, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोष

बिश्वंभरनाथ भट्ट, आधुनिक संस्कृत हिन्दी कोष, ५६१, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स ५)

नाटक-एकांकी

सन, अनु० सीताचरण दीक्षित, समाज के स्तम्भ, १६१, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
राज 'दिनेश' यशस्वी-भोज, ११२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
क्ष्मीनारायणलाल, अंधा कुआं, १३०, क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद २॥)
जय चौहान, आधुनिक एकांकी, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

सराज रहबर तथा पंछी, हमारी लोक कथाएँ, भाग १, ५६, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)

विविध

कृष्ण, सचित्र व्यंग विनोद, ४४८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६॥)
प्रकाश, हरप्रसाद खरे, कार्बनिक रसायन शास्त्र, भाग १, ४७२, डि०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ७)
० के० जसवानी, कला की परख, १५५, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४)
० प्रसाद, तिलहन की खेती, ६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ॥=)
० प्रसाद, सोयाबीन की खेती, १६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।)
गुलाबराय, अभिनव भारत के प्रकाश-स्तम्भ, १४१, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १।)
गुलाबराय, सत्य और स्वतन्त्रता के उपासक, १८०, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १॥।)
न्द्रभान राधे लोकोक्ति मुहावरे, २४४, क्रा०, सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १॥)
न्द्रनाथ, रेडियो विज्ञान, ६२०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ११)
प्रताप शंकर चौधरी, ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्त, पु० मु०, ८०, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद १)
रांगेय राघव, डॉ०, काल विजय, ६६, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १।)
ाम अवतार धीर, प्रेक्टिकल घड़ीसाज़ी, ११२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ३॥)
ामचन्द्र श्री वास्तव चन्द्र, गांधी विमर्श, ८८, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ।॥=)
शकुन्तला तथा अन्य, नवीन जगत से प्राप्त लालसाएँ, २००, क्रा०, रामकुमार बुकडिपो, लखनऊ २।)
सत्यकाम विद्यालंकार, जीवन साथी, पु० मु०, २५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३॥)
सय्यद जहूरुल हुसैन, कुरान और धार्मिक मतभेद, ८८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
हरिशंकर शर्मा, जीवन झांकी, १७६, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)
हरिशंकर शर्मा, मेवाड़ महिमा, पु० मु०, ११२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

में

विज्ञापन भेजते समय

विज्ञापन–मूल्य

अग्रिम भेजना आवश्यक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।

☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।

☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।

☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।

☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।

☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।

☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।

☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है: पूरा पृष्ठ: ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३¾" × ६" या २¾" × ८"। चौथाई पृष्ठ: २¾" × ३¾"। एक कालम इंच: १" × २¾"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग: ५½" × ६"।

☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं:

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ: ३०)। आधा पृष्ठ: १७॥)। चौथाई पृष्ठ: १०)। एक कालम इंच: ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में: ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में: ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में: ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बेसिक ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक	१०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड	६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग	४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज	३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज	१)
६. इं० सुपरवाइज़र परीक्षा पेपर्स	३)
७. सुपरवाइज़र वायरमैन प्रश्नोत्तर	३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग	६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड	१०)
१०. आयल इंजन गाइड	६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड	४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड	६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक)	६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर	२॥)
१५. मोटर कार वायरिंग	४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान	२॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर	३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईंडिंग	६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड	३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग	३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग	६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स	६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स	१०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन)	४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साज़ी	४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग	२॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग	२॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग	४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम	६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४॥)
३४. वीविंग गाइड	४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा	२॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड	३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी)	५)
३७. B " " " इंगलिश	५)
३८. A ज़न्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी)	१॥)
३८. B " " " इंगलिश	१॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर	१०)
४०. मोटर ड्राइविंग	४॥)
४१. मोटर साईकिल गाइड	४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर	६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड)	६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो	३॥)
४५. मोटर प्राइमर	१)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर	१)
४७. बिना बिजली का रेडियो	१)
४८. बच्चों का रेडियो	१)
४९. बच्चों का टेलीफोन	॥)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल	१)
५१. लोकल रेडियो सैट	१)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान	१)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर	१)
५४. बच्चों का वायरलैस	१)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे)	१०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन(गृहनिर्माणकला)	१०)
५७. सोप मेकर्ज गाइड	६)
५८. मेटल पालिश	२॥)
५९. फरनीचर बुक	१०)
६०. पम्पिंग गाइड	
६१. जनरल मैकैनिकल गाइड	
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार	
६३. स्टीम टरबाईन	
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस	

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी	२॥)
२. प्लास्टिक गाइड	२॥)
३. बूट पालिश	२॥)
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना	२॥)
५. कन्फेक्शनरी	२॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल)	२॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक)	२॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा	१)
९. पैन्ट्री का काम	४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी	४)
११. परफ्यूमरी मास्टर	२॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी)	२॥)
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार	२॥)
१४. हलवाई मास्टर	२॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान)	२॥)
१६. पान की दुकान	२॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग)	२॥)
१८. कुकरी बुक	४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें	२॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार	२॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार	२॥)
२२. फ़िनायलसाज़ी (कीड़े मार दवाइयाँ	२॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाज़ी)	२॥) (partly cut off)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना	२॥) (partly cut off)
२५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना	
२६. स्लेट और स्लेट लीड पैंसिल बनाना	
२७. रबड़ की मोहरें बनाना	
२८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाना	
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़	६)
३०. सिलाई कटाई गाइड	
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार	४॥)
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)	
३३. हरफ़न मौला	
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग	
३५. शर्बत विज्ञान	
३६. बुक बाईडिंग	३)
३७. दर्ज़ी मास्टर	
३८. व्यापार दस्तकारी	
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान	३)
४०. वीविंग कैल्कुलेशन	
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई	३॥)
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन	३॥)
४३ पोल्ट्री फार्मिंग	४)
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री	४)
४५ पोल्ट्री सर्जन	४)

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशांत लिखित १५ पुस्तकें

१. आलू की खेती
२. टमाटर की खेती
३. गोभी की खेती
४. जीरा, धनिया, अजवाइन
५. तरकारियों की खेती
६. अच्छे बीज
७. अच्छी खाद
८. कपास की खेती
९. गन्ने की खेती
१०. फूल-फुलवारी
११. धान की खेती
१२. संतरे की बागवानी
१३. आम की बागवानी
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान
१५. तम्बाकू की खेती
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड)
१७. फलों की खेती
१८. तरकारी साग भाजी की खेती
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ४००० पुस्तकों का २५० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगायें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

व्यापार चमत्कार
व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ । मूल्य ४) डाक खर्च ।॥=)

ज्योतिष विज्ञान
(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी)
ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक । मूल्य ६) डाक खर्च ।॥=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष
भूत भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें । मूल्य ६) डाक खर्च १)

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष
(ले०—भगवान दास मित्तल)
कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार पर नवीन ग्रन्थ । मूल्य ५) डाक खर्च ।॥=)

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ [illegible] नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी, १९५९ अङ्क ६

गुरुकुल

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

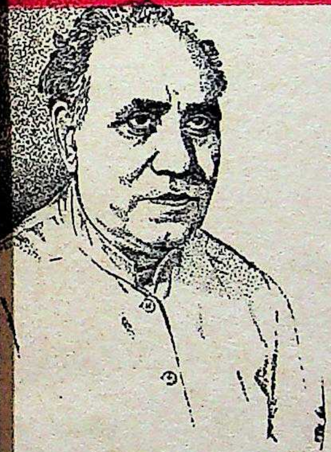

हिन्दी जगत् के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त जी की नवीन रचना

मा न व

मुन्दर रूपरेखा, आकर्षक तीन रंग का पॉलिश्ड जैकेट, सुदृढ़ जिल्द, पृष्ठ संख्या ३७२, मूल्य ५)

मनुष्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य में विघ्न-बाधाओं को पार कर सफलता की ओर अग्रसर होने की प्रबल इच्छा रहती है। मनुष्य जितना आगे बढ़ने का यत्न करता है, उतना ही वह मानव-प्रकृति को रखने वाला माना जाता है।

संसार के सब महात्मा यह गुण रखते हैं और विघ्न-बाधाएँ उनको और भी आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करती हैं।

इस पृष्ठ-भूमि पर 'मानव' नाम का यह उपन्यास अति रोचक बना है।

- गुरुदत्त जी उन लेखकों में से हैं जो एक निश्चित उद्देश्य को लेकर साहित्य-निर्माण की ओर अभिमुख होते हैं। —'आजकल' दिल्ली
- श्री गुरुदत्त के उपन्यासों का एक आधार यदि खोजा जाय तो वह है हिन्दू संस्कृति पर पूरा-पूरा गर्व और आधुनिक मतवादों के प्रति एक सशंक दृष्टिकोण। —'प्राची'
- लेखक की शैली मंजी और परिपक्व है। —'धर्मयुग'
- लेखक केवल कला के लिए कला के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। वे जो कुछ लिखते हैं, एक निश्चित विचारधारा और लक्ष्य सामने रखकर। —'वीर अर्जुन'

भा र ती सा हि त्य स द न

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री गुरुदत्त के उपन्यासों की पूरी सूची पृष्ठ संख्या ६६७ पर देखें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रंथ • • •

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। प्राचीन रचनाओं के उदाहरण भी। मूल्य पौने तीन रुपये, अजिल्द, पृष्ठ-संख्या १३२। आदिकालीन साहित्य का प्रामाणिक विश्लेषण।

२. **यूरोपीय दर्शन**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। आधुनिकतम दार्शनिक प्रगति भी। मूल्य सवा तीन रुपये, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ११५। लेखक का दुर्लभ चित्र और परिचय।

३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य सजिल्द साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और १८८ इकरंगे ऐतिहासिक चित्र। प्राचीन भारत के वैभव का काव्यात्मक वर्णन।

४. **विश्वधर्म-दर्शन**—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द, विश्व के प्रमुख धर्मों का इतिहास और परिचय। भारतीय संस्कृति का विशद विवेचन।

५. **सार्थवाह**—डा० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। १०० ऐतिहासिक चित्र तथा दो दुरंगे मानचित्र। सर्वत्र प्रशंसित। सजिल्द। अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—डा० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये। गवेषणापूर्ण और मननीय। अनुसंधायकों के अध्ययन-योग्य।

७. **सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन**—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। सजिल्द, मूल्य चौदह रुपये। सात तिरंगे और बारह एकरंगे चित्र। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ। शोधपूर्ण समीक्षात्मक।

८. **काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत 'संस्कृत-रत्नाकर'-सम्पादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये, प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट। सजिल्द। मूलयुक्त।

९. **श्री रामावतार शर्मा-निबन्धावली**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये। पाण्डित्यपूर्ण पठनीय निबन्ध। सजिल्द। लेखक का सचित्र परिचय।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—डा० देवसहाय त्रिवेद। मूल्य सवा सात रुपये। प्राचीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह एकरंगे ऐतिहासिक चित्र। सजिल्द। सुन्दर आवरण।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। सजिल्द। प्राचीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक। मुद्राशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ६२५। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सुविस्तृत भूमिका-सहित। सजिल्द।

१३. **राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त**—श्री गोरखनाथ सिंह (भूतपूर्व शिक्षा-निर्देशक, बिहार)। मूल्य डेढ़ रुपया। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२। राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

१४. **रबर**—श्री फूलदेव सहाय वर्मा, (कालेज-इन्स्पेक्टर, बिहार-विश्वविद्यालय), सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये, पृष्ठ २२६, चित्र ६१। ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक, आकर्षक आवरण।

१५. **ग्रह-नक्षत्र**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०। पृष्ठ ११८, रेखाचित्र ५०। मूल्य सवा चार रुपये। खगोल-जगत् का अद्भुत दृश्य-दर्शक रोचक वर्णन। सजिल्द।

१६. **नीहारिकाएँ**—डा० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ७२, चित्र २१। मूल्य सजिल्द सवा चार रुपये। वैज्ञानिक विषय का मनोहर साहित्यिक वर्णन। नेत्ररंजक आवरण।

१७. **हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०, पृष्ठ १३४, मूल्य सजिल्द तीन रुपये। भावात्मक चित्रमय आवरणयुक्त जिल्द।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :

: अंक ६ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

पहले अंक से इस पत्र को देखने-पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात का साक्षी होगा कि हमारा दृष्टिकोण लेखक-वर्ग के प्रति आदरपूर्ण रहा है। हमने कभी भी लेखकों की अवज्ञा में कोई बात नहीं कही है। अपने कर्तव्य से उन्मुख प्रकाशकों के विरुद्ध लेखकों की शिकायतों ने पत्रों और विशेष लेखों के रूप में **प्रकाशन समाचार** के कई-एक अंकों में स्थान पाया है। इस पत्र ने प्रकाशकों को अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत करने की तथा लेखकों से उदार और नैतिक सम्बन्ध स्थापित करने की ओर सदैव प्रेरित किया है।

हमें मालूम हुआ है कि गत अंक के अग्रलेख पर कुछ लेखकों ने तीव्र क्षोभ प्रकट किया है। कहा गया है कि प्रकाशकों द्वारा लेखकों के शोषण का आरोप सत्य है। हमारे लेख का गलत अभिप्राय समझते हुए यह भी कहा गया है कि यदि श्री नेहरू ने प्रकाशकों के समूचे वर्ग पर कोई आरोप लगाने की भूल की थी तो **प्रकाशन समाचार** को सभी लेखकों को व्यवहार का कपटी बतलाने की धृष्टता न करनी चाहिए थी। यह भी सुनने में आया है कि अपने वर्ग के प्रति कुछ उत्साही लेखक हमारे अग्रलेख के उत्तर में प्रकाशकों द्वारा किये गए दुष्कृत्यों की लम्बी तालिका प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

ईमानदारी से हम सबसे पहले इस बात का अपने विश्वास और ईमानदारी से खण्डन करना चाहेंगे कि अपनी टिप्पणी से हम किसी रूप में, किसी अंश में भी, लेखक-वर्ग के प्रति निरादर का भाव व्यक्त करने का प्रयास कर रहे थे। देश और काल की सीमाओं से हटकर साहित्यकार का मानव-समाज में जो शीर्ष स्थान है, हम उससे परिचित हैं। आज का लेखक यदि लेखन का व्यवसाय बनाकर बढ़ता है तो हम उसकी विवशताओं को भी जानते हैं, उसकी प्रतिभा के प्रति व्यावसायिकता की इस पुट के कारण ही हम अविश्वास और सन्देह की भावना नहीं लिये रहते हैं।

गत अंक में हमने लेखकों के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा, वह बहुत संकोच और खेद से कहा गया था। हमारे कहने का तात्पर्य यही था कि जिस प्रकार प्रकाशकों में कुछ लोग अपने दुर्व्यवहार से प्रकाशन-व्यवसाय के व्यापक लांछन का कारण बनते हैं, यदि इस तर्क में कोई औचित्य है (जिसे हम स्वीकार नहीं करते) तो लेखकों में भी उस प्रकार के आपत्तिजनक व्यवहार के अपराधी हैं और गिनाये जा सकते हैं। हमारा यह कहना है कि प्रकाशकों द्वारा लेखकों के सामान्यतया शोषण के आरोप की बात नये, अपने कर्तव्यों से परिचित, प्रकाशकों की भावनाओं को ठेस पहुँचाये बिना अब नहीं कही जा सकती। हमने अपने अग्रलेख में पुस्तकों की अत्यधिक सीमित बिक्री की समस्या की ओर भी संकेत किया था जो अन्ततः हिन्दी के लेखकों के प्रकाशकों के विरुद्ध सहज क्षोभ का कारण है।

लेखकों के क्षोभ का एक दूसरा, महत्त्वपूर्ण कारण प्रकाशन-व्यवसाय से उनका नितान्त अपरिचित होना है। पश्चिम के देशों में लेखक (क्योंकि आज लेखन को वह स्वयं भी व्यवसाय मानता है, एक विशेष प्रकार का) अपने करीब के (और प्रकाशक से कौन उसके अधिक करीब है?) व्यवसाय के अन्तरंग को जानने की कोशिश करता है, उसकी कठिनाइयों और सफलताओं को एक हद तक अपनी मानने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार रहता है। समाजवादी देशों का लेखक अपने कृतित्व की सफलता को सामाजिक उपयोगिता की कसौटी पर परखने में संकोच नहीं करता; वहाँ का समाज इस कारण उसका जितना सम्मान करता है वह अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं के देशों में दुर्लभ और असम्भव है। हमारे देश का लेखक इस व्यावसायिक पक्ष को अपने ऊपर आक्षेप समझता है, यद्यपि वास्तव में अपनी कृतियों को प्रकाशित देखने की और उनसे उचित पारिश्रमिक पाने की उसकी उत्कण्ठा अन्य देशों के लेखकों से किसी प्रकार कम नहीं है, जो ठीक भी है। न ही हमारे देश में आज के लेखकों का एक वर्ग समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग है; देश के महान् निर्माण-काल में स्वान्तःसुखाय लिखने की वैयक्तिक स्वतन्त्रता उसे अधिक अभीष्ट है। लेकिन इस प्रश्न का प्रस्तुत कठिनाई से विशेष सम्बन्ध नहीं है, और फिर लेखक किसी भी प्रकाशकीय पत्र द्वारा इस प्रकार के विचारों को व्यक्त करना उसकी अनधि... चेष्टा से अधिक क्यों मानेगा?

गत अंक में हमने जो कुछ लिखा, उसके विरोध में ... कुछ कहा गया है, लेकिन यह कहीं-नहीं कहा गया कि ... असत्य है। यदि वह लेखकों को बुरा या अटपटा लगा तो के... इस कारण कि उन्होंने वर्ग-भावना से प्रेरित होकर सोचा। ... भी असत्य नहीं है कि हमें भी प्रकाशक-वर्ग की हित-चि... से ही लिखना पड़ा था। शायद वर्ग-भेद की दृष्टि से ... प्रश्नों पर सोचना हितकर नहीं है। प्रकाशकों में ... कर्तव्यों को निबाहने में सभी अडिग नहीं रहते, यह ... कई बार इसी पत्र में कहा है। यदि लेखक भी इस सत्य... उसी रूप में स्वीकार कर लें कि उनमें भी सभी लोग ... हार के सच्चे नहीं हैं तो पारस्परिक उलझनों को सुलझा... आसान हो जायगा।

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य **प्रत्येक भाग ८)**

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा पक्ष

इस पत्र के गत अंक की सम्पादकीय टिप्पणी पर प्रयाग के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'लीडर' (२२ जनवरी, ५६ का साप्ताहिक संस्करण) के सम्पादकीय अग्रलेख का यह रूपान्तर दिलचस्पी से पढ़ा जायगा। हिन्दीकरण श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव ने प्रस्तुत किया है।

दिल्ली में ७ दिसम्बर, १९५५ को 'फेडरेशन ऑफ़ ...लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स असोसिएशन्स इन इण्डिया' के ...र्षिक अधिवेशन के अवसर पर श्री नेहरू ने भाषण देते ... प्रकाशन-व्यवसाय की कटु निन्दा की। उन्होंने यह स्पष्ट ...हा कि वह लेखक-प्रकाशक संघर्ष पर लेखक के दृष्टिकोण से ...चार कर रहे हैं। निःसंदेह ही इस आलोचना का आधार ...नके अपने स्वयं के अनुभव और उन लेखक-भाइयों ...अनुभव थे जिन्होंने अपनी दुःख भरी गाथा उनके ...नों तक पहुँचाई थी। इन तथ्यों से उन्होंने कुछ ...ष्कर्ष निकाले और उनके आधार पर देश के उन प्रकाशकों ...ी कटु निन्दा की जो निर्धन लेखकों की प्रतिभा और श्रम का ...ोषण करते हैं। प्रधान-मंत्री ने यह भी कहा कि साहित्य के ...त्पादन व वितरण के व्यवसाय में लेखकों का स्थान प्रकाशकों ...थवा पुस्तक-विक्रेताओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है।

प्रधान-मंत्री के भाषण की समीक्षा करते हुए इस पत्र ...लीडर) ने अपने दैनिक-संस्करण के सम्पादकीय-स्तम्भ में ...स दृष्टिकोण का समर्थन किया था कि लेखक उन समस्त ...हयोगियों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, जिनके संयुक्त ...यास के फलस्वरूप साहित्य पाठकों तक पहुँचता है। यह ...त्य है कि साहित्य की उपयोगिता उसके अन्ततः पाठकों तक ...हुँचने में है और लेखन के इस वास्तविक लक्ष्य की पूर्ति ...ें प्रकाशकों का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। समस्त सहयोगियों ...ें लेखक सबसे महत्त्वपूर्ण है—इस कथन का तात्पर्य यह नहीं ...ि प्रकाशक का कोई महत्व नहीं है। वास्तव में देखा जाय ...ो लेखक या प्रकाशक से भी अधिक महत्त्वपूर्ण तो पाठक है, ...जिसके सक्रिय सहयोग के अभाव में तो प्रकाशकों के लिए ...सिवाय इसके कोई रास्ता ही न रह जायगा कि वे पुस्तक-...व्यवसाय ठप करके साइकिल या बटनों का पेशा चालू करें।

लेखक भी—चाहे उसकी प्रेरणा कितनी ही दिव्य क्यों न हो—यदि केवल निजी मनोरंजन के उद्देश्य से लिखता है, तो उसका यह कार्य 'रोप ट्रिक' के समान ही है, जिसकी चर्चा तो बहुत होती है, किन्तु जो देखी कभी नहीं गई।

हिन्दी-लेखक यह बाजीगरी चाहे न दिखा सके, लेकिन और सभी कुछ कर सकने की आशा उससे की जा सकती है। प्रधान-मन्त्री की आलोचना से क्षुब्ध होकर हिन्दी प्रकाशन-जगत् के

श्री गुरुदत्त जी की रचनाएँ

१. स्वाधीनता के पथ पर	मूल्य	६)
२. पथिक	,,	६)
३. उन्मुक्त प्रेम	,,	६)
४. विकृत-छाया	,,	४॥)
५. भावुकता का मूल्य	,,	६)
६. स्वराज्य दान	,,	६)
७. बहती रेता	,,	५)
८. विश्वासघात	,,	५॥)
९. विडम्बना	,,	६)
१०. देश की हत्या	,,	५॥)
११. प्रवंचना	,,	५)
१२. मायाजाल	,,	५)
१३. वाम मार्ग	,,	७)
१४. विलोम गति	,,	५)
१५. उमड़ती घटाएँ	,,	६)
१६. गुण्ठन	,,	५)
१७. मानव	,,	५)
१८. लुढ़कते पत्थर	,,	५॥)
१९. अन्तिम यात्रा	,,	१)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख मासिक पत्र **'प्रकाशन समाचार'** ने अपने सम्पादकीय में जनता के समक्ष उस संघर्ष का दूसरा पहलू रखने का प्रयास किया है। बगैर किसी नाम का उल्लेख किये हिन्दी-लेखकों के अनेक उदाहरण दिये गए हैं, जिन्होंने शीघ्र ही विश्वास कर लेने वाले प्रकाशकों को दूसरी जगह से ली गई सामग्री को मौलिक सामग्री के रूप में देकर या अपनी पुरानी सामग्री को कतर-ब्योंत के बाद नया रूप देने का धोखा दिया है या उन्हें ऐसी सामग्री देकर मूड़ा है जो पहले से ही मुद्रित और प्रकाशित है और जिसका पारिश्रमिक उन्हें अन्यत्र से प्राप्त हो चुका है। अत्यन्त ही आक्रोशपूर्ण और चोट खाए-से स्वर में इस मासिक पत्र ने प्रकाशन-व्यवसाय की ओर से यह प्रश्न उठाया है कि क्या ऐसे लेखकों का ही लेखक के रूप में आदर करने के लिए कहा जाता है और क्या यही लेखक हैं, जिनकी शिकायतों की ओर प्रधान-मन्त्री ध्यान देने जा रहे हैं ? और भी अधिक क्रुद्ध स्वर में इस पत्र ने अपना दृढ़ मत व्यक्त किया है कि हिन्दी में विरला ही ऐसा लेखक होगा जिसकी कृतियों के सम्बन्ध में यह न कहा जा सके कि उनमें और एक ऐसे व्यक्ति के प्रलाप में समानता नहीं है, जिसकी नींद किसी दुःस्वप्न के कारण टूट गई हो, या उनके साहित्य का निर्माण उनकी आदिम और असामाजिक वृत्तियों के आधार पर नहीं होता है, अथवा उनकी रचनाओं में यह क्षमता है कि वे मानवीय आशा व विश्वास को जगा-कर सहानुभूति और मैत्री के क्षेत्र का विस्तार कर सकें। यह अत्यन्त कटु आलोचना है और वस्तुतः इतनी कटु है कि इससे लोगों में वाञ्छनीय प्रभाव उत्पन्न होने की आशा नहीं की जा सकती। हम यह स्वीकार करते हैं कि वर्ग के रूप में हिन्दी-लेखकों के विरुद्ध बहुत-कुछ कहा जा सकता है, किन्तु जो-कुछ और जिस प्रकार कहा गया है, या जिस सन्दर्भ में कहा गया है, उसकी उपयोगिता में हमें सन्देह है। छो[illegible] भी आक्रोश या दुर्भावना से कहा जाता है, वह क[illegible] स्वस्थ प्रभाव नहीं उत्पन्न कर पाता, चाहे वह नितान्त ही क्यों न हो और उसका आधार कितना ही दृढ़ [illegible] हो। जो कुछ प्रधान-मंत्री ने किया, वह यही था कि [illegible] एक स्थिति के एक विद्रूप पक्ष की ओर ध्यान आ[illegible] किया और **प्रकाशन-समाचार** उसके दूसरे पहलू की ध्यान आकर्षित करता है। भाषण और उसका प्रत्युतर एक-दूसरे का खंडन नहीं कर पाते, वरन् दोनों मिलकर अत्यन्त निराशाजनक स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

किन्तु इतना सब कुछ कहने के उपरान्त भी यह स[illegible] कि मस्तिष्क में यह प्रभाव तो बना ही रहता है कि हिन्[illegible] लेखक-वर्ग में कहीं भारी गड़बड़ी अवश्य है। यह [illegible] का उपक्रम करना व्यर्थ होगा कि **प्रकाशन-समाचार** में [illegible] गए उदाहरण चौंकाने वाले हैं या गलत हैं या अतिर[illegible] हैं। उन उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य विविध प्रकार [illegible] अनैतिक कार्य हैं जिनकी अब जन साधारण पर कोई [illegible] क्रिया नहीं होती। यह एक अत्यन्त निराशापूर्ण स[illegible] किन्तु कुछ भी हो, सत्य तो है ही। जिन्हें अपने चारों [illegible] की परिस्थितियों से सही-सही जानकारी है, उनसे यह छिपा नहीं है कि बेशुमार पैसा पैदा करने वाली कित[illegible] पाठ्यपुस्तकों में भ्रष्टाचारी प्राध्यापकों के बेनाम विद्यार्थियों [illegible] कूड़ा-कचरा एकत्र कर दिया जाता है। साहित्य की [illegible] तथाकथित उत्कृष्ट कृतियाँ शब्दाडम्बर-मात्र हैं। कित[illegible] स्वनामधन्य साहित्यिकों की प्रतिष्ठा का आधार केवल दृष्टि-भ्रम है, जो उनके किसी आलोचक-मित्र की जादुई [illegible] के प्रभाव से पैदा कर दिया जाता है.........! किन्तु [illegible] हरणों की इस शृंखला को लम्बी करते जाने से कोई [illegible] नहीं। यह सब तो सभी लोग अच्छी तरह से जानते ही [illegible] रोग के लक्षणों की सूची तैयार करने के बजाय उसका उप[illegible] करने की आवश्यकता है। प्रधान मन्त्री और **प्रकाशन-स[illegible] चार** दोनों की स्पष्टवादिता से उपचार का कार्य तत्काल प्रारम्भ किया जा सकता है बशर्ते कि लोगों का ध्यान समस्या से हटाकर प्रश्नों को उठाने वाले व्यक्तियों की [illegible] नहीं मोड़ दिया जाता।

भूल-सुधार

हमें खेद है कि 'प्रकाशन समाचार', जनवरी अंक, पृष्ठ ६८३ पर विज्ञापन में हास्य-रस प्रधान कहानी-संग्रह 'महिला-शासन' को भूल से कविता संग्रह लिखा गया है। पाठक-गण सुधार लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'रंगभूमि' द्वारा प्रस्तुत—

अंजो दीदी

लेखक अश्क

निर्देशक: राजजोशी

२२ जनवरी, १९५६ को इलाहाबाद में प्रसिद्ध नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का यह सामाजिक, समस्यामूलक नाटक अतीव सफलता से खेला गया। इलाहाबाद के एमेचर नाटकों के इतिहास में दर्शक न कभी इतना तल्लीन हुए, न इतना हँसे।

अंजो दीदी की तरह अश्क के अन्य नाटक भी उतने ही अभिनेय और सुपाठ्य हैं :

जय पराजय	३॥)
पैंतरे	३।)
कैद और उड़ान	२॥)
अलग-अलग रास्ते	२॥)
छठा बेटा	२।)
एकांकी :	
देवताओं की छाया में	२॥)
चरवाहे	३)
पक्का गाना	३)
पर्दा उठाओ, पर्दा गिराओ	३॥)
अंधी गली (प्रेस में)	४)

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद १

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में हिन्दी के सभी प्रकाशकों को शोषक बतलाया था। इस आरोप को चुपचाप सह लेना अपने उत्तरदायित्व के प्रति सचेत प्रकाशकों के लिए असम्मानजनक था। मेरी सम्मति में आपने जनवरी अंक के सम्पादकीय में इस प्रश्न को उठा के ठीक ही किया है।

दूसरी ओर यह कहना भी उतना ही गलत होगा कि 'सभी' लेखक अनीतिपूर्ण व्यवहार करते हैं। न सब प्रकाशक ही खरे हैं और न सब लेखक ही दूध के धोये। कर्तव्यच्युत व्यक्ति प्रकाशक और लेखक दोनों के समाज में पाए जाते हैं।

यह बात ठीक है कि लेखकों की बात सब जगह सुनी जाती है, प्रकाशकों को अक्सर चुप ही रहना पड़ता है।

वाचस्पति पाठक,
भारती भण्डार, इलाहाबाद।

❖ ❖ ❖

प्रिय सम्पादक जी,

जनवरी अंक ५ प्राप्त हुआ, सम्पादकीय पढ़ा। अपने जन-नायक प्रधान-मन्त्री नेहरू के वक्तव्य के प्रति आपने जो समीचीन व साहसपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया है, वह स्तुत्य है। मैं हैरान था कि इतने प्रकाशकों में से किसी को प्रत्युत्तर देने की सूझ न आई। यह सही है कि कभी किसी जमाने में कुछ कतिपय प्रकाशकों ने ऐसा-कुछ किया हो पर उस पर से प्रकाशक-वर्ग पर कीचड़ उछालना क्या उचित है? लेखकों के सम्मान के साथ क्या प्रकाशकों को सम्मान अपेक्षित नहीं है? अपने साहसपूर्ण प्रत्युत्तर पर हमारा साधुवाद स्वीकार करें।

राजनारायण अग्रवाल,
व्यवस्थापक, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल,
आगरा

❖ ❖ ❖

प्रिय सम्पादक जी,

'फेडरेशन ऑव पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स ए[illegible] सिएशन इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन के अ[illegible] पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने जो भाषण दिल्ली में [illegible] है, उसका प्रकाशित विवरण यदि सत्य है तो वह विचार[illegible] है। विशेषतया लेखक और प्रकाशक के सम्बन्ध को ले[illegible] जिस 'शोषण' की चर्चा की गई है वह कदापि उपेक्ष[illegible] नहीं है।

लेखक अपने युग और समाज की बौद्धिक एवं सां[illegible]तिक चेतना का प्रतीक ही नहीं होता अपितु वह समाज[illegible] निर्माता भी है। अतएव वह हमारे श्रद्धा एवं सम्मान[illegible] पात्र है। हम उसके सम्मान पर गर्व अनुभव करते हैं [illegible] उसके अपमान पर क्षोभ अथवा ग्लानि। इसी प्रकार प्रका[illegible] अथवा विक्रेता लेखक और पाठक के बीच की अनिवार्य [illegible] है। वह किसी भी प्रकार लेखक अथवा पाठक के हित[illegible] विरोधी नहीं अपितु दोनों के हित का साधक अथवा सह[illegible] है। उसका अनैतिक आचरण स्वयं उस व्यवसाय के लिए [illegible] घातक है, जिस पर वह आश्रित है। उस पर पर्दा डा[illegible] अथवा समर्थन करना कदापि अभीष्ट नहीं।

परन्तु श्री नेहरू ने जिस 'शोषण' की चर्चा की है [illegible] न केवल एकांगी है अपितु अशोभन भी। बेईमानी बेई[illegible] ही है चाहे जिसके द्वारा की गई हो। इसके बारे में दो [illegible] नहीं हो सकतीं। इस प्रवृत्ति की जितनी भी निन्दा अ[illegible] भर्त्सना की जाय वह थोड़ी है।

फिर भी आरोप लगाते समय श्री नेहरू जैसे व्यक्ति[illegible] के महापुरुष को चाहिए था कि पुलिस की तरह किसी [illegible] पक्ष को अपराधी मानकर प्रमाण न जुटावें अपितु केवल प्र[illegible] के आधार पर ही किसी को अपराधी घोषित करें। मैं [illegible] जानता कि ऐसा करते समय उनके मन में अथवा सामने [illegible] बात रही है? परन्तु यदि यह उनके अनुभव की बात है [illegible] उन्हें अपनी प्रकृति के अनुसार साहसपूर्वक सार्वजनिक रू[illegible] प्रकाशन-विशेष की ओर स्पष्ट संकेत करना चाहिए था अ[illegible] अपराधी को दण्ड दिलाने का मार्ग अनुसरण करना चाहि[illegible] था। इसके विपरीत यदि उनके वक्तव्य का आधार सुनी-सु[illegible] बातें हैं तो उसकी पूरी छानबीन के बाद ही पूरे व्यवसाय [illegible] लाञ्छित करने का गौरव उन्हें प्राप्त करना चाहिए था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दैनिक जीवन का हमें अनुभव है कि हमें प्रत्येक क्षेत्र में भले-बुरे से काम पड़ा करता है। परन्तु हम पूरे समाज को एक ही स्वर में भला अथवा बुरा नहीं कह दिया करते। आपने जनवरी के सम्पादकीय में इस ओर ध्यान देकर उचित ही किया है।

भवदीय,
नर्मदेश्वर चतुर्वेदी,
इलाहाबाद।

◆ ◆ ◆

प्रिय,

'प्रकाशन समाचार' के वर्ष ३, अंक ५ में आपने ६७३वें पृष्ठ पर फ़ेडरेशन ऑव पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स असोसिएशन्स इन इण्डिया' के वार्षिक अधिवेशन में दिये गए प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के भाषण की चर्चा की है और लिखा है, **'किसी सार्वजनिक संस्था** ने उनकी पुस्तकों के अनुवाद छापकर प्राप्य पारिश्रमिक या रॉयल्टी नहीं दी, इस तथ्य को भी श्री नेहरू ने अपने भाषण में घोषित किया।' उसी अंक में आपने नेहरूजी के उक्त भाषण को 'दैनिक' 'स्टेट्समैन' से लेकर उसका अनुवाद प्रकाशित किया है। उस भाषण में एक वाक्य है, 'इसी प्रकार की **कुछ संस्थाओं** ने मेरी कई पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशित किये हैं और उन्होंने मुझे सूचित किया है कि उनके यहाँ रॉयल्टी देने का नियम नहीं है।' 'स्टेट्समैन' में देखने से पता चला कि पण्डितजी ने **'इन्स्टीट्यूशन'** शब्द का प्रयोग किया है। आपने अपने नोट में उसका अनुवाद **सार्वजनिक संस्था** कर दिया है, जो सही नहीं है। उसे कृपया सुधार दें।

उक्त वक्तव्य की ओर हमने पण्डितजी का ध्यान आकर्षित किया था। इस सम्बन्ध में उनके कार्यालय से उनके निजी सचिव का १७ जनवरी, १६५६ का पत्र हमें प्राप्त हुआ है, जिसमें लिखा है, "मुझे आपको यह भी सूचित करने की आज्ञा मिली है कि प्रधानमन्त्री के वक्तव्य के बारे में 'स्टेट्समैन' में जो रिपोर्ट छपी है, वह सत्य है। किन्तु प्रधानमन्त्री का उक्त कथन उनकी पुस्तकों **के हिन्दी अनुवादों पर लागू** नहीं होता, वरन् अन्य पुस्तकों पर।"

आपने जिस ढंग से टिप्पणी की है, उससे पण्डितजी के हिन्दी-अनुवादों के सम्बन्ध में भ्रम उत्पन्न होने की सम्भावना है। अतः आशा है, आप इस आशय का स्पष्टीकरण 'प्रकाशन समाचार' में देने की कृपा करेंगे।

मार्तण्ड उपाध्याय,
मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली।

◆ ◆ ◆

महोदय,

जनवरी के 'प्रकाशन समाचार' में लेखक-प्रकाशक सम्बन्धों पर प्रधान मन्त्री के भाषण के प्रत्युत्तर में आपका सम्पादकीय पढ़ा।

वास्तव में जो-कुछ प्रधान मन्त्री ने अपने भाषण में कहा वह सही है। दुर्भाग्य से हिन्दी में प्रकाशक द्वारा लेखकों के शोषण की परम्परा रही है और किसी हद तक आज भी है। लेकिन इस बात को सामान्य रूप से पूरे प्रकाशक-वर्ग पर लागू कर देना न तो मेरे विचार से उचित होगा और न भविष्य में लेखक-प्रकाशक सम्बन्धों के लिए हितकर। अब तक इस क्षेत्र में काफ़ी सन्देह का वातावरण रह चुका है जिसके फलस्वरूप लेखक प्रकाशक को और प्रकाशक लेखक को धोखा देते रहे हैं और एक दूसरे को निश्चित हानि पहुँचाते

श्री उदयशंकर भट्ट द्वारा लिखित
नवीन उपन्यास
सागर, लहरें और मनुष्य
छपकर तैयार है।
सुन्दर छपाई : मूल्य ३॥)
प्रकाशक
मसिजीवी प्रकाशन
वितरक
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। इस प्रकार की दूषित नीति की गुञ्जाइश न तो सृजन के क्षेत्र में है और न प्रकाशन-व्यवसाय के।

पारस्परिक दोषारोपण के बजाय आवश्यकता भाव-परिवर्तन (change of heart) की है ताकि उचित और महान् सृजन भी हो सके और देश का एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय उन्नति कर सके और भविष्य में इसको सिद्ध करने के लिए शब्दों की नहीं, वास्तविक व्यवहार की आवश्यकता होगी। भूत में क्या निन्दनीय रहा है इसको उभारना किसी पक्ष के लिए भी हितकर न होगा।

भवदीय,
विष्णु शर्मा, इलाहाबाद।

❖ ❖ ❖

प्रिय सम्पादक जी,

आपके 'प्रकाशन समाचार' द्वारा मुझे नित नई प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है इसलिए मैं उसका उत्सुकता से इन्तजार करता हूँ और उसे दिलचस्पी से देखता हूँ। उसके सभी अंक मेरे पास सुरक्षित रखे हैं इसीसे इसकी महत्ता जानी जा सकती है। यूँ तो मैं उसकी सामग्री, सूचनाओं तथा कलेवर आदि से पूर्णरूपेण सन्तुष्ट हूँ किन्तु कुछ बातों को कहने का लोभ संवरण नहीं कर पाता।

सर्वप्रथम तो मेरा नम्र निवेदन यह है कि हिन्दी की सभी जानी-पहचानी प्रकाशन संस्थाओं के सञ्चालकों की परिचयमाला छापी जाय। इसे ५.३ के कुछ अंकों में चलाया भी गया था किन्तु इस परम्परा को आगे नहीं बढ़ाया जा सका जिसका फिर से चालू करना अति आवश्यक है।

हिन्दी के सभी जीवित साहित्यकारों के बारे में जानकारी-पूर्ण लेख दिये जावें जिनमें उनके साहित्य के सम्बन्ध में (आलोचना से मेरा मतलब है) अपेक्षाकृत कम सामग्री देते हुए, विशेष बल उनकी जीवन-घटनाओं पर दिया जाना चाहिए। समय-समय पर दूसरी भाषाओं के साहित्यकारों का भी परिचय देते रहना चाहिए।

विदेशी और प्रान्तीय भाषाओं के परिचयात्मक लेख अवश्य कभी-कभी पत्र में होने चाहिएँ।

'देश विदेश' के अन्तर्गत विदेशों के प्रकाशन जगत् के अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संकलन नियमित रूप से किया जाना चाहिए।

जिस प्रकार प्रकाशक बन्धु लेखकों का शोषण करते हैं उनकी आपबीती लेखकों से लिखाकर दी जावे और उन समस्याओं पर अधिक विस्तार से विचार होना चाहिए।

इस मास के तथा आगामी या पिछले मास के प्रकाशन की सूचनाएँ अधिकतर गलत होती हैं। हमारे प्रकाशक लोग नियमता का पाठ कभी सीख सकेंगे इसे तो भगवान् ही जाने। उदाहरणस्वरूप—

'गांधी श्रद्धाञ्जली' ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। 'सुबह शाम' के प्रकाशित किये जाने की सूचना इधर ३, ४ मास से बराबर आपके पत्र में छप रही है। कभी उसकी कीमत ५) लिखी जाती है तो कभी २॥), असली क्या है समझ में नहीं आता। अज्ञेय का **बावरा अहेरी** कई महीने हुए छप चुका है किन्तु उसके प्रकाशन को नवम्बर में गिना जा रहा है। इसी प्रकार **विविध** के अन्तर्गत (दिसम्बर मास में) की कई पुस्तकें नवम्बर से पहले छप चुकी हैं।

नवम्बर भारतभूषण अग्रवाल का कविता-संग्रह (भारतीय ज्ञानपीठ) अभी तक नहीं छपा है। **लहर प्रकाशन** की पुस्तकों का भी यही हाल है। जीवन संग्रह (नानकसिंह) अक्तूबर में तो क्या अभी तक नहीं छापा गया।

इसी प्रकार कितनी ही किताबों का नाम लिया जा सकता है। इस सम्बन्ध में आपने एक बार लिखा भी था, किन्तु उसका कुछ अच्छा असर होता नहीं प्रतीत होता।

एक बात समझ में नहीं आती कि एक ही पुस्तक के दो-दो तीन-तीन, कभी-कभी तो चार-चार भी अनुवाद प्रकाशित हो जाते हैं। उनमें शुद्ध कौनसा है कुछ पता नहीं, कीमतों के मामले में भी इतनी धाँधलीबाजी होती है कि कुछ हिसाब का भी पता नहीं चलता।

अन्त में मैं जनवरी अंक को आपके सम्पादकीय के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दूँगा। वास्तव में वह कमाल का लिखा गया है।

आपका,
प्रभातकुमार, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश के नवनिर्माण में

प्रकाशकों का योगदान

श्री रामचन्द्र टण्डन

यह लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) के २१ जनवरी, ५६ के अंक में छपा है और पत्र के सौजन्य से यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

यह बताने की आवश्यकता नहीं कि किसी भी देश की जागृति अथवा नवनिर्माण में उस देश में प्रकाशित साहित्य का एक विशिष्ट स्थान होता है। इतिहास के पन्नों को टटोलने से यह बात स्वयंसिद्ध-सी जान पड़ेगी। इसका श्रेय उस साहित्य के रचयिताओं को तो मिलना ही चाहिए। लेकिन किसी भी साहित्य के प्रकाशन में उसके प्रकाशक का भी हाथ होता है। ऐसे भी उदाहरण मिलेंगे जहाँ भूले-बिसरे, उपेक्षित साहित्य को प्रतिष्ठा प्रदान कराने में प्रकाशक ने योग दिया है। किन्तु इस धंधे में प्रकाशक स्वयं इस मुद्रण-युग में एक उपेक्षित साझीदार रहा है। यह कुछ अपने देश में ही स्थिति नहीं, सभी देशों में ऐसा हुआ है। अच्छी परिस्थितियों में सर्वत्र लेखकों और प्रकाशकों में एक भाईचारे का सम्बन्ध रहा है। प्रकाशकों ने सभी प्रकार की जोखिमें उठाई हैं और अपने लेखकों की प्रतिष्ठा में आत्म-तोष माना है। कहने का तात्पर्य यह कि साहित्य के उत्कर्ष और प्रचार में प्रकाशकों का एक मूल्यवान योग होता है और होना चाहिए।

प्रश्न यह है कि अपने देश की वर्तमान स्थिति में, नवजागरण के युग में, जबकि सर्वतोमुखी उन्नति हमारा ध्येय है, हमारे प्रकाशक हमारे आगे के पथ में कितना और कहाँ तक साथ दे सकते हैं? वस्तुतः कार्य-क्षेत्र अपरिमित है। हम ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में निर्माण और व्यवसाय के क्षेत्र में, समाज-संगठन के क्षेत्र में, आर्थिक सम्पन्नता की दिशा में, नए आदर्शों की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ने के लिए यत्नशील हैं और इन सभी प्रयासों में हमें विशिष्ट जानकारी की आवश्यकता है; जिसकी पूर्ति में पुस्तकों, अधिकाधिक पुस्तकों, की हमें अपेक्षा है। हमारे प्रकाशकों को, जैसा कि मैं कल्पना करता हूँ, न केवल अपने लेखकों का साथ देना है, बल्कि ऐसे लेखकों को उत्पन्न करना है, जो राष्ट्र के सर्वतोमुखी प्रयास में योग दे सकें और न केवल हमारे गौरव-साहित्य की वृद्धि कर सकें, बल्कि विज्ञान, शिल्प, उद्यम आदि विषयक साहित्य की कमी को पूरा कर सकें। भारत की राष्ट्रीय एकता को ध्यान में रखते हुए, एक भारतीय भाषा के साहित्य को दूसरी भारतीय भाषा के पाठकों के सामने पहुँचाना है, और यह एक ऐसी दिशा है जिसमें हमारे प्रकाशक अपनी सामर्थ्य का अच्छा अंश उपयोग में ला सकते हैं।

प्रकाशकों को आगे बढ़ने की आवश्यकता

किन्तु सामने का कार्य इससे कहीं अधिक विस्तृत और बड़ा है। संसार की सभी भाषाओं के गौरव-ग्रन्थों को और विशिष्ट वैज्ञानिक, शिल्प-विषयक तथा उपयोगी साहित्य को अपने यहाँ लाना है। यह एक ऐसी महान् चुनौती है, जिससे पुष्ट-से-पुष्ट प्रकाशक समुदाय सहम सकता है। उन्नत देशों के प्रकाशन-व्यवसाय को देखते हुए हमारे यहाँ तो यह कहा जा सकता है कि हम प्रारम्भिक सीढ़ियों पर हैं। हम नहीं कह सकते कि अपेक्षित कार्य की विशालता को देखते हुए हमारे प्रकाशक-वर्ग के बंधे पर्याप्त रूप में सबल भी हैं। 'लन्दन टाइम्स' के साहित्यक परिशिष्ट, इस एक साप्ताहिक पत्र को ले लीजिए। प्रति सप्ताह आलोचित श्रेष्ठ अंग्रेजी प्रकाशनों की सूची देखकर और उसके मुकाबले में अपने प्रकाशनों की संख्या तथा स्तर देखकर जी बैठ जाता है। मन में प्रश्न उठता है कि अंग्रेजी में जो साहित्य प्रति सप्ताह प्रकाशित हो रहा है, वैसा और उतना साहित्य क्या महीने, छः महीने, साल-भर में भी हमारे यहाँ प्रकाशित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है ? मैं कोई हीन भावना नहीं उत्पन्न करना चाहता, एक विचारणीय स्थिति सामने रख रहा हूँ। कहने का उद्देश्य यह है कि हमारे प्रकाशक-वर्ग को बहुत आगे बढ़ने की आवश्यकता है ।

व्यावसायिक कुशलता

यह बात नहीं कि प्रकाशक-वर्ग अपनी जगह पर स्थिर हो, वह आगे बढ़ न रहा हो, किन्तु समय को देखते हुए उसकी गति धीमी है । और जो बात किंचित् आशंका उत्पन्न करने वाली है वह यह कि वह परमुखापेक्षी बन रहा है—वह मुखापेक्षिता चाहे सरकार की हो चाहे औरों की । मैं मानता हूँ कि प्रकाशन एक व्यवसाय है—उसी भाँति जिस भाँति कि लेखन भी एक व्यवसाय है । प्रकाशक को जीना है, किन्तु उसे अपनी व्यवसाय-कुशलता का सहारा लेना है—अच्छे-से-अच्छे अर्थों में व्यवसाय-कुशलता का सहारा लेना है । उसे लेखक से अच्छे और न्याय्य सम्बन्ध स्थापित करने हैं; उसे मुद्रण, जिल्दसाजी, उत्पादन में उपयोग में आने वाले अन्य साधनों में उन्नत देशों में जो उन्नति हुई है उसे समझना है, पुस्तकों के निर्माण का कलात्मक आधुनिकतम ज्ञान प्राप्त करना है, उसे सुथरे ढंग से अपने माल का प्रचार करना भी सीखना है । इस व्यवसाय के लिए—क्योंकि इसका घनिष्ठ सम्बन्ध ज्ञान के प्रसार से भी है—संरक्षण की आवश्यकता न होनी चाहिए । प्रकाशक-वर्ग को समझना चाहिए कि संरक्षण उसके लिए घातक हो सकता है । राष्ट्र के नवजागरण में योग देने के प्रति प्रकाशक में उत्साह की आवश्यकता है । साथ ही उसे दूरदर्शिता दिखानी है, उसे अपनी आदर्शवादिता के ध्येय की नीचे नहीं गिराना है ।

मैंने प्रकाशन को एक व्यवसाय माना है, किन्तु मैं यह भी मानता हूँ कि इस व्यवसाय की अपनी आदर्शवादिता भी होनी चाहिए । इस दृष्टि से प्रकाशन एक सृजनात्मक कार्य भी है । एक प्रकाशन की एक सुन्दर आकर्षक पुस्तक प्रस्तुत करने में वैसे ही आनन्द का अनुभव होना चाहिए, जैसा कि एक कवि को एक सुन्दर छन्द रचने पर होता है । किसी भी सुन्दर कृति को एक उपयुक्त कलेवर देने के लिए न केवल उत्पादन-सम्बन्धी विशिष्ट और बहुमुखी ज्ञान की आवश्यकता है, बल्कि एक कल्पना की भी । राष्ट्र के नव-निर्माण में योग दे सकने के लिए हमें ऐसे ही प्रकाशकों की आवश्यकता है ।

साहसिक यात्री के समान

प्रकाशन एक व्यवसाय है और एक सृजनात्मक कार्य प्रकाशक को यह न भूलना चाहिए कि वह एक सा यात्री भी है । उसे बहुत ऊँच-नीच देखने के लिए तैयार चाहिए । उसे लोक-रुचि, पाठकों की रुचि की पूर्ति ही करनी है, उसे इस रुचि का निर्देशन भी करना है, उसे रुचि को ऊपर उठाना है । ऐसा करने के लिए उसे जो भी उठानी पड़ सकती है, किन्तु इसके लिए उसे तैयार है । कहा नहीं जा सकता कि कौनसी पुस्तक, जिस पर बड़ी आशाएँ बाँध रखी हैं, आर्थिक दृष्टि से गिर पड़े। ही यह भी नहीं कहा जा सकता कि किस साधारण, उपे पुस्तक को जन-रुचि उठा ले और वह बहुत सफल प्र सिद्ध हो । अच्छा प्रकाशक स्थिति समझता-बूझता है, न ही उसे विस्मय के लिए तैयार रहना चाहिए और इसी प्रकाशन-व्यवसाय का सादृश्य एक साहसिक यात्रा से गया है ।

आज हमारे प्रकाशकों के सामने साधनों की कमी देखा जाय तो इस व्यवसाय के महत्त्व को देखते हुए पूँजी आकर्षित नहीं हुई है । इससे वह राष्ट्र के नव-नि में वैसा योग-दान नहीं कर पा रहा है, जैसा वह कर स था । इसीलिए प्रकाशक-वर्ग को मिलकर अपने साधनों संचित उपयोग करना सीखना है । निश्चय ही बाद में इधर खिंचेगी । किन्तु इस समय यह देखना है कि जो सा उपलब्ध हैं, उनका दुरुपयोग न हो । आज के मुद्रणाल विशाल पेट से जो कुछ निकलता है, क्या वह सब उप है, उसमें स्थायित्व या अपेक्षाकृत स्थायित्व भी है ? दे नव-निर्माण में प्रकाशक-वर्ग को यदि ठीक-ठीक योग दे तो उन्हें काम का यथाशक्ति बंटवारा करा लेना होगा, साहित्य के प्रकाशन के लोभ का संवरण करना होगा, योजना करनी होगी कि काम को दुहराया न जाय, सुथरे को अपनाया जाय । कार्य-क्षेत्र इतना विशाल है कि में होड़ की आवश्यकता नहीं पड़ सकती, और होड़ भी तो होड़ की मर्यादाओं को समझकर ।

हमारे चेतन प्रकाशक, जहाँ तक मैं जान सका हूँ, महान आदर्शों तथा दायित्व के प्रति जागृत हो रहे हैं, एक शुभ लक्षण है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

...राजमल जैन, रिपोर्टर, विधान सभा, भूपाल के पास ...मीरी गरीबी' नाम के उनके दूसरे उपन्यास की पाण्डुलिपि ...र है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक लेखक से पत्र-व्यव... करें।

◈ ◈ ◈

...महादेव 'आजाद' '७६—१' कमलानगर दिल्ली ...त करते हैं कि उनके पास निम्नलिखित पांडुलिपियां ...र हैं:—(१) एमिल जोला के एक प्रसिद्ध उपन्यास का ...दी-रूपान्तर, जो कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ, (२) उर्दू ...प्रसिद्ध लेखक ताजवर सामरी के उपन्यास **'खेत में लहू'** ...हिन्दी रूपान्तर, (३) **'युग-पुरुष'** नाम से कार्ल मार्क्स, ...न, स्टालिन, माओत्से-तुंग, जूलियस फूचिक, होची-... , महान् पुरुषों के जीवन चरित्रों का संग्रह। इनकी ...न-समीक्षा और उनके विचार भी अलग से दिये गए ... इन्हें प्रकाशित करने के इच्छुक महादेव जी से सम्पर्क ...पित करें।

◈ ◈ ◈

...भगवानदास पुरोहित, हिन्दी प्रचार समिति, बोलपुर, ...मी बंगाल, लिखते हैं कि डॉ० भवतोषदत्त द्वारा लिखित ... विश्वभारती विश्वविद्या-माला में प्रकाशित 'धन-...न' नाम की पुस्तक के हिन्दी रूपान्तर के लिए प्रकाशक ...आवश्यकता है। पृष्ठसंख्या ६७ है तथा हिन्दी अनुवाद ...अनुमति प्राप्त कर ली गई है।

सबकी एक ही राय

संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

कुछ सम्मतियाँ

"संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ" लिखकर श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जी ने एक ऐसी दिशा में काम किया है, जिसकी ओर अभी हिन्दी विद्वानों का ध्यान नहीं गया था। —**श्री राहुल सांकृत्यायन**

'संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ" प्रकाशित करने की नई सूझ पर बधाई। आपने इस साहित्य को सुलभ बनाकर हित किया। —**डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल**

पुस्तक देख गया हूँ। अच्छी है। —**श्री अगरचन्द नाहटा**

ऐसी गवेषणापूर्ण पुस्तक से ही साहित्य की श्री-वृद्धि होती है। —**श्री शिवपूजन सहाय**

हिन्दी में अपने ढंग की संगीत-विषयक यह पहली पुस्तक है। प्रारम्भ में आपने संगीताचार्यों के सम्बन्ध की बहुत-सी ज्ञातव्य बातें प्रकाश में ला दी हैं जिनसे पुस्तक की उपादेयता बहुत बढ़ गई है। —**श्री रामनरेश त्रिपाठी**

श्री चतुर्वेदी जी ने इस संग्रह को प्रस्तुत करके आगामी अध्ययन परम्परा की पहली कड़ी प्रस्तुत कर दी है। सम्भवतः हिन्दी में अपनी तरह का यह प्रथम प्रयास है जिसके लिए हम श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी को साधुवाद देते हैं। —**अमृत पत्रिका, इलाहाबाद**

यह पुस्तक जहाँ हिन्दी के एक भारी अभाव की पूर्ति करती है, वहाँ साहित्य और संगीत के प्रेमी पाठकों के लिए भी अत्यन्त उपादेय है। —**आल इण्डिया रेडियो, दिल्ली**

'हमें प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से अत्यन्त उपयोगी और महत्त्व के विषय का यथाशक्य श्रेष्ठ और रुचिकर परिचय प्राप्त होता है। पुस्तक के विषय की नवीनता और उपयोगिता स्वतः स्पष्ट है।' —**अजन्ता, हैदराबाद**

साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना के १७वें अंक की विषय-सूची

- सम्पादकीय
- निबन्ध

रमाशंकर तिवारी	साधारण किरण का नवीन स्तर
लक्ष्मीकान्त वर्मा	प्रयोग, प्रगति और परम्परा
व्रजविलास श्रीवास्तव	हिन्दी उपन्यास में नये प्रयोग
स्वेतोजार पेत्रोविच	यूगोस्लावियन साहित्य की वर्तमान समस्या

- प्रस्तुत प्रश्न

शम्भूनाथ सिंह	लेखक का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण है
विजय देवनारायण साही	साहित्यिक 'अश्लीलता' का प्रश्न
डॉ० हरदेव बाहरी	व्रीडा जुगुप्सा मंगल व्यंजकत्वात्

- अनुशीलन

डॉ० बद्रीनारायण श्रीवास्तव	रामानन्द सम्प्रदाय में योग

- मूल्यांकन

बच्चनसिंह	नया साहित्य : नये प्रश्न
बालकृष्ण राव	अतिमा : आधुनिक और पुरातन का सन्तुलन
डॉ० रामरतन भटनागर	वर्तमान कविता में नए गीत स्वर
प्रयाग नारायण त्रिपाठी	रीति, गीति और नयी कविता
लक्ष्मीकान्त वर्मा	संत्रस्त पात्रों की घटनाहीन कथा
रामस्वरूप चतुर्वेदी	संस्कृति-संघर्ष और वैयक्तिक सम्बन्ध
रविप्रसाद सिंह	संवेदनात्मक तत्त्वों की एकसूत्रता
गिरिजाकुमार माथुर	निकष : नवीन दृष्टिकोण का प्रतीक
डॉ० कामिल बुल्के	मानस की 'रूसी' भूमिका
दत्तात्रेय पाण्डेय	भागवत सम्प्रदाय
मोहन राकेश	एण्टन पेखव : एक इंटव्यू
डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	नये समाज का उदय
कृष्ण खेमका	भारतीय संस्कृति में तुलसी का योग
रामपूजन तिवारी	हिन्दी साहित्य पर सूफ़ीमत का प्रभाव
डॉ० सत्येन्द्र	लोक साहित्य का अध्ययन

- टिप्पणियाँ

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश सरकार की

हिन्दी प्रकाशन योजना

उत्तर प्रदेश की सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा हिन्दी-प्रकाशनों की योजना को प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष है ।

...रत की राज्य-भाषा हिन्दी का वाङ्मय सब प्रकार से भरा-...ा हो, इसकी चिन्ता प्रत्येक हिन्दी भाषा-भाषी मनीषी को है ...र इस प्रकार की माँग चारों ओर से आ रही थी कि हिन्दी ...जिस प्रकार के साहित्य की कमी पिछले कुछ वर्षों से अनु-...व होने लगी थी उसे अविलम्ब दूर किया जाय । हिन्दी ...गत् की वर्तमान परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हैं कि जिनमें हिन्दी-...स्थाओं के पूर्ण रूप से सक्रिय होने पर भी प्रगति आशा-...कूल नहीं हो रही है । निदान, यह अनिवार्य-सा हो गया ...ि देश की वे सरकारें जो हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों से संबंध ...खती हैं, इस कार्य में सक्रिय सहयोग दें । हिन्दी परामर्श ...मिति के लिए यह गौरव की बात हुई कि जिस प्रकार उत्तर ...देश के वर्तमान मुख्य मंत्री, डा० सम्पूर्णानन्द ने सन् १६४७ ... जब वह शिक्षा-मंत्री थे, हिन्दी परामर्श समिति और ...न्दी लिटरेचर फंड को जन्म दिया उसी प्रकार मुख्य मंत्री ...ते ही उन्होंने हिन्दी-जगत् की इस अनिवार्य आवश्यकता ...र तत्संबंधी मौन पुकार को सुना और हिन्दी-प्रकाशन योजना ...लिए प्रेरणा दी ।

इस योजना के अन्तर्गत जिन विषयों पर पुस्तक प्रकाशन ...ा विचार हो रहा है उनसे न केवल वाङ्मय का संवर्द्धन ...गा वरन् हिन्दी भारत की ३६ करोड़ जनता के लिए अपने ...आकर्षण पैदा कर सकेगी और भारतीय संविधान द्वारा ...रिचत १५ वर्ष की अवधि समाप्त होते-होते वह विदेशी ...पाओं की तुलना में देखी जा सकेगी । किन्तु यह स्पष्ट रहे ...ि यह योजना इस प्रकार बनाई गई है कि इसके द्वारा अन्य ...रकारी अथवा गैर-सरकारी योजनाओं को न किसी प्रकार की ...ति पहुँचेगी और न उनकी पुनरावृत्ति होगी । इस योजना ...अन्तर्गत प्रायः वे सब विषय ले लिये गए हैं जिन पर संसार के किसी भी उन्नतिशील साहित्य में ग्रन्थ प्राप्त हैं और इस बात का प्रयत्न किया जा रहा है कि इनमें से प्राथमिकता उन विषयों अथवा उपविषयों को दी जाय जिनकी हिन्दी में नितान्त कमी है । इधर विश्वविद्यालयों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए प्रायः सभी विषयों पर हिन्दी में पुस्तकें लिखी जा रही हैं, किन्तु उनमें विषय का प्रतिपादन केवल विद्यार्थियों की आवश्यकता का ध्यान रखकर किया जा रहा है और उससे आगे नहीं । इससे हिन्दी की एक कमी तो अवश्य पूरी हो रही है किन्तु हिन्दी वाङ्मय में ऐसे ग्रन्थ नहीं लिखे जा रहे हैं जो इस विषय पर हिन्दी के लिए गौरव का कारण हों । इस योजना में इस पक्ष पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

हिन्दी में पाठकों की कमी होने के कारण ऐसे बहुत से विषयों पर लेख उपलब्ध होने पर भी प्रकाशक इन विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित करने का साहस नहीं कर रहे हैं और यदि यह दशा बनी रही तो हिन्दी के लिए अन्धकार का युग बहुत दिनों तक चलता रहेगा । अतः इस बात की भी आवश्यकता समझी गई कि जब इस योजना के अन्तर्गत इन पुस्तकों का प्रणयन हो तो उनमें भारतीय दृष्टिकोण को सामने रखकर विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ लिखे जायँ और उनका प्रकाशन किसी ऐसे अभिकरण से हो जिसे किसी प्रकार के आर्थिक मुनाफे का लोभ न हो ।

हिन्दी की यह प्रकाशन-योजना भी पंचवर्षीय योजना है और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के साथ-ही-साथ यह भी समाप्त होगी । किन्तु इसकी भूमिका के लिए यह आवश्यक था कि प्रारम्भ में इसके लिए कुछ रुपया उपलब्ध कराया जा सके और यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि उत्तर प्रदेश शासन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने १९५५-५६ में इसके लिए एक लाख रुपया प्रस्तुत किया। अगले ५ वर्ष के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना में लगभग २५ लाख रुपये व्यय करने का विचार है। इस योजना का कार्य १ अप्रैल, १९५५ से प्रारम्भ कर दिया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत ३०० पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था है, जिनमें १०० मौलिक ग्रन्थ, १०० अनुवाद ग्रन्थ और १०० ऐसे ग्रन्थ होंगे जिन्हें हम इस समय सुविधा के लिए सामान्य ग्रन्थ कहेंगे। किन्तु आशय यह है कि जिस प्रकार अंग्रेजी में होम युनिवर्सिटी लाइब्रेरी सिरीज इत्यादि ग्रन्थ-मालाओं में प्रायः सभी विषयों पर साधारण पाठकों के लिए ग्रन्थ तैयार होते हैं वैसे ही इस सामान्य ग्रन्थ-माला में तैयार कराये जायँगे। मौलिक और अनुवाद ग्रन्थ कम-से-कम ४०० पृष्ठ के होंगे और सामान्य ग्रन्थ कम-से-कम २०० पृष्ठ के होंगे। कुछ ऐसे भी ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं जिन्हें सन्दर्भ ग्रन्थ की संज्ञा दी जायगी और उनकी पृष्ठ-संख्या १,००० या उससे अधिक भी हो सकती है। इस प्रकार प्रत्येक वर्ष तीनों प्रकार की ६० पुस्तकें प्रकाशित होंगी और प्रकाशन-योजना के इस वृत्त में सभी विषय, चाहे वे वैज्ञानिक हों अथवा विज्ञानेतर, समाविष्ट कर लिये गए हैं जैसा कि परिशिष्ट २ में दी हुई तालिका से स्वयं स्पष्ट हो जायगा। इस तालिका को बनाते समय बिहार प्रदेशीय सरकार, केन्द्रीय तथा अन्य गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रकाशन-कार्यक्रम को भी दृष्टि में रख लिया गया है, जिससे कि एक ही विषय पर अनावश्यक पुनरावृत्ति न हो। हाँ, यह अवश्य है कि पाठ्य-पुस्तकों की उपेक्षा की गई है, क्योंकि जैसा ऊपर कहा जा चुका है शासन का उद्देश्य इस प्रकाशन-योजना के अन्तर्गत पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करना नहीं है वरन् उन विषयों पर प्रामाणिक मौलिक भारतीय दृष्टिकोण से पांडित्यपूर्ण ग्रन्थ प्रणयन करना है।

उपर्युक्त क्रम-विभाजन के मौलिक वर्ग की पुस्तकें प्रस्तावित विषयों के विशेषज्ञों और लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा लिखाई जायँगी और जैसा कि पहले कहा जा चुका है ऐसे विषयों को प्राथमिकता दी जायगी जिन पर पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। उदाहरण के लिए कतिपय विषयों की चर्चा यहाँ अप्रासंगिक न होगी। हम सबसे पहले भाषा-विज्ञान, भाषा-सर्वेक्षण (लिंग्विस्टिक सर्वे), गणितीय इतिहास, पा... आलोचना का इतिहास, भूगोल-शास्त्र, पूर्वी आलो... विकास, सामाजिक विज्ञान तथा देश के रासायनि... खनिज पदार्थों के सम्बन्ध में अधिक सचेष्ट हो रहे हैं। ... प्रकार दूसरे वर्ग में अर्थात् अनुवाद-ग्रन्थों में अरस्तू, ... रूसो, डार्विन, फ्रायड, एडलर, तथा जुंग आदि पा... दार्शनिकों तथा अन्य विद्वानों और वैज्ञानिकों की ... कृतियों के अनुवाद की व्यवस्था की जा रही है। ... सामान्य ग्रन्थ भी मौलिक ग्रन्थ होंगे किन्तु उनका प्रणय... ढंग से होगा कि वे थोड़े समय में पढ़े जा सकें और ... सर्वसाधारण की रुचि बढ़े। इसलिए इस वर्ग में ... तथा आधुनिक विषयों पर पुस्तकें लिखी जायँगी।

इस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली पुस्त... विषय-निर्धारण एवं लेखकों का चुनाव हिन्दी परामर्श ... करेगी। वर्तमान समिति के सदस्य निम्नलिखित ... (१) डॉ० रामप्रसाद त्रिपाठी अध्यक्ष, (२) डॉ० धीरे... सदस्य, (३) डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा सदस्य (४) श्री ... हरि सदस्य, (५) डॉ० नगेन्द्र सदस्य, (६) डॉ० निहाल... सेठी सदस्य और (७) श्री भगवतीशरण सिंह मंत्री।

इस योजना के अन्तर्गत मौलिक तथा सामान्य ... पुस्तकों के लेखकों को १० रु० प्रति पृष्ठ पारिश्रमि... छपे मूल्य पर १० प्रतिशत रायल्टी दी जायगी। ... ग्रन्थों पर ५ रु० प्रति पृष्ठ पारिश्रमिक तथा ५ ... रायल्टी दी जायगी। ये पुस्तकें डिमाई अठपेजी आ... प्रकाशित होंगी। इसी प्रकार संदर्भ-ग्रन्थों के प्रण... लिए, जो रायल चौपेजी (वेब्स्टर डिक्शनरी साइज) ... सम्पादक को २ रु० तथा लेखक को ६ रु० प्रति ... पारिश्रमिक दिया जायगा। समिति को यह पूरा विश्वास ... विद्वान् लेखकों का इसमें इस आधार पर समुचित ... प्राप्त होगा।

प्रकाशित पुस्तकों पर सर्वाधिकार उत्तर प्रदेशीय ... का होगा और यह समस्त योजना हिन्दी परामर्श स... तत्त्वावधान में कार्यान्वित की जायगी। समिति द्वारा ... सभी आवश्यक विषयों का आकलन पूर्ण रूप से न... सका है, यद्यपि जिन विषयों पर समिति ने पुस्तकें लि... नितान्त आवश्यक समझा उनसे सम्बद्ध विद्वानों से सम...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यक्ष ने पत्र-व्यवहार कर दिया है और यह प्रसन्नता की बात है कि उनमें से प्रायः १२ लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों ने हमारी इस योजना के अन्तर्गत पुस्तकें लिखना स्वीकार कर लिया है।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है मौलिक क्रम-विभाजन के अन्तर्गत संदर्भ-ग्रन्थों के प्रणयन की भी व्यवस्था है। इस प्रकार के ग्रन्थों में समिति ने 'हिन्दी साहित्य कोष' को प्राथमिकता प्रदान की है तथा संपादन-कार्य के सुचारु संचालन के लिए **डा० रामप्रसाद त्रिपाठी** की अध्यक्षता में सात सदस्यों के एक संपादक-मंडल का गठन किया है। संपादन-मंडल के अन्य सदस्य निम्नलिखित हैं :—(१) श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, (२) डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, (३) हजारीप्रसाद द्विवेदी (४) डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, (५) डॉ० माताप्रसाद गुप्त, (६) डॉ० नगेन्द्र और (७) डॉ० दीनदयाल गुप्त।

यह ग्रन्थ रायल चौपेजी आकार (वेब्सटर डिक्शनरी के आकार) में प्रायः दो हजार पृष्ठों में प्रकाशित होगा और बारहवीं सदी के आरम्भ से १९५५ पर्यन्त की कालावधि के हिन्दी साहित्य का प्रामाणिक कोष होगा। विषय के विस्तार तथा महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए इसके ६ विभाग किये गए हैं और प्रत्येक के सम्पादन का भार सम्पादक-मण्डल के एक-एक सदस्य को सौंपा गया है।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, हम प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तकों और उनके विद्वानों तथा सम्बद्ध विषयों की सूची समय-समय पर प्रकाशित करते रहेंगे किन्तु समिति को तथा शासन को इस बात का अधिकार होगा कि वह आवश्यकता होने पर उनमें परिवर्तन करते रहें। इस समय शासन की सुविधा के लिए और साथ-ही-साथ हिन्दी-प्रेमियों की सुविधा के लिए एक ऐसी सूची प्रकाशित की जा रही है जिसके देखने से इस योजना की गतिविधि का कुछ आभास मिल सकेगा। हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन की यह योजना इसी वर्ष प्रारम्भ होगी। इसकी भूमिका के रूप में इसी वर्ष कम-से-कम छः पुस्तकें प्रकाशित करने का संकल्प किया गया है। इस बात का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि इन छः पुस्तकों के अतिरिक्त लगभग १ दर्जन से अधिक पांडुलिपियाँ इसी वर्ष प्राप्त हो जायँ और इसके लिए समिति के अध्यक्ष ने जो व्यक्तिगत प्रयत्न किया है वह अत्यन्त सराहनीय है।

पुस्तक विक्रेताओं और प्रकाशकों के लिए........

हिन्दी अक्षर ज्ञान

(बच्चों को अति सरलतापूर्वक अक्षर ज्ञान करवाने के लिए) हर अक्षर के साथ चार रंग में छपा चित्र और उसका नाम, आकर्षक चार रंग की छपाई, मोटा कागज, मूल्य दो आना, कमीशन अलग। १००० इकट्ठा लेने पर आपका नाम बिना अलग खर्चे के छापकर, मुफ्त नमूने और बच्चों की अन्य पुस्तकों की सूची के लिए लिखें।

श्री एस० एल० प्रकाशन

१३, हाथीखाना, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका की अदालतों में कापीराइट सम्बन्धी

दो नये फैसले

'पब्लिशर्स वीकली' (फ़िलाडेल्फ़िया) की सूचनाओं पर आधारित इस लेख को श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव ने तैयार किया है।

यदि आप किसी को ऐसा विलक्षण विचार (idea)—जिसका न तो सर्वाधिकार सुरक्षित है और न यह अधिकार प्राप्त ही किया जा सकता है—सुझाएँ और वह उसका उपयोग अपने लाभ के लिए कर ले, तो क्या आपको उससे क्षति पाने का अधिकार है या नहीं? हालीवुड की चलचित्र कम्पनी के एक निर्माता-लेखक-निर्देशक की धारणा थी कि विचार सुझाने वाले को क्षति पाने का अधिकार नहीं है और जब विचार सुझाने वाले व्यक्ति ने उनके विरुद्ध मुकदमा दायर किया, तो उन्होंने अपने पक्ष में निर्णय पाने के लिए पैरवी की। किन्तु निर्णय उनके विरुद्ध दिया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन लोगों को संरक्षण के लिए, जिनकी विलक्षण सूझ-बूझ से दूसरे लाभ उठा लेते हैं, आवश्यकता पड़ने पर न्यायालय—विशेषतया केलीफोर्निया के न्यायालय—के कानून में खींचतान की जाती है।

वह विचार यह था कि फ्लॉयड कालिन्स की कथा के आधार पर एक चलचित्र तैयार किया जाय। लगभग २५ वर्ष पूर्व फ्लॉयड कालिन्स एक गुफा में पाया गया था; दो सप्ताह तक उसको जीवित रखने के लिए सभी प्रकार के प्रयास किये गए, किन्तु अन्त में वह बच नहीं सका। वादी (जिसका यह विचार था) ने उस निर्माता के सेक्रेटरी से ही यह विचार प्रकट किया, जिसने कालान्तर में फ्लॉयड कालिन्स की कथा पर आधारित चलचित्र का निर्माण किया। पहले, वादी ने सेक्रेटरी से इस विचार का उल्लेख किया और उसे विकसित करके ६० पृष्ठ की कथा भेजने के लिए कहा। इसके उपरान्त उसने सेक्रेटरी को टेलीफोन पर बोलकर शार्टहैन्ड में तीन या चार पृष्ठ की रूपरेखा भी लिखवाई।

वादी का कथन था कि उसने सेक्रेटरी को यह स्पष्ट कर दिया था कि यदि कथा का उपयोग किया गया, तो उसका पारिश्रमिक देना होगा और सेक्रेटरी ने यह मान भी ली थी। किन्तु उस कहानी का उपयोग तो किया गया लेकिन उसे कुछ दिया नहीं गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि फ्लॉयड कालिन्स से सम्बन्धित सामग्री 'न्यूयार्क टाइम्स', 'दि अमेरिकन मरकरी' आदि पत्रों के समाचार-विवरणों पर आधारित थी जिसका उपयोग सर्वसाधारण कर सकता था। इसी कारण एक निम्नस्तर के न्यायालय में निर्णय प्रतिवादी के पक्ष में दिया गया। वादी ने केलिफ़ोर्निया की कोर्ट में अपील की। इस न्यायालय ने स्वीकार किया कि केलीफ़ोर्निया विधान के अन्तर्गत कोई विचार (naked idea) 'वायु के समान युक्त' है। "इसके अतिरिक्त प्रतिवादी का यह तर्क है कि वादी के द्वारा प्रतिवादी को प्राप्त हुई रूपरेखा में न तो कोई ऐसी नवीनता है, न मौलिकता, जिसके आधार पर कापीराइट संरक्षण के विधान के अन्तर्गत क्षतिपूर्ति की जा सके।" इतना होने पर भी न्यायालय ने यह कहा कि "यदि कोई खरीदने के लिए तैयार है तो कोई विचार या उसकी ठोस अभिव्यक्ति दोनों (यद्यपि उसमें संरक्षणीय गुण का अभाव रहता है) अनुबन्ध के विषय हो सकते हैं।" न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि तथ्य उसी प्रकार हैं, जैसा कि प्रतिवादी का कथन है (न्यायालय ने निर्णय देने के लिए वैसा मान भी लिया), तो भी इस स्वीकृति से, कि सुझावों के उपयोग होने पर प्रतिदान के रूप में धन दिया जायगा, एक निहित अनुबन्ध (implied contract) की उत्पत्ति हो गई है। न्यायालय का कहना था कि प्रतिवादी को "इस तथ्य से परिचित होना चाहिए था कि यदि वादी के समान कोई व्यक्ति किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हस्तलिपि पुरस्कार पाने के लिए देता है और यद्यपि वह इस कार्य या सेवा के बदले में कुछ माँग नहीं करता तो भी लाभ उठाने वाला व्यक्ति देनदार है। यदि हस्तलिपि देने वाले ने यह सेवा रक़म पाने की आशा से की है।"

केलीफ़ोर्निया न्यायालय ने यह स्वीकार किया कि अन्य क्षेत्रों के (विशेषकर न्यूयार्क के न्यायालयों) की धारणा इससे भिन्न हो सकती है, किन्तु उसने अपने फ़ैसले की लम्बी रिपोर्ट में बराबर इसी बात पर बल दिया कि "उस सामग्री से, जो अन्यथा सार्वजनिक क्षेत्र की है, एक निहित अनुबन्ध की उत्पत्ति हो सकती है।"

न्यायालय ने अपनी राय व्यक्त करने के दौरान में इस निहित अनुबन्ध के सिद्धान्त से और आगे बढ़कर यह भी कहा कि वादी को फ़्रॉयड कालिन्स पर चलचित्र बनाने के सुझाव के लिए प्रतिदान के रूप में रक़म मिलनी चाहिए, क्योंकि उसने इस विचार का उद्घाटन इसी आशा से किया था कि उसका उपयोग होने पर उसे प्रतिदान मिलेगा। न्यायालय ने यह स्पष्टतया स्वीकार किया कि प्रतिवादी ने उपाधारभूत सुझावों के अतिरिक्त रूपरेखा की कुछ सामग्री का भी उपयोग किया होगा—"वादी की रूपरेखा की सामग्री सार्वजनिक क्षेत्र से सम्बद्ध थी और प्रतिवादी उसके किसी भी या सभी तथ्य या घटना का उपयोग करने के लिए स्वतन्त्र थे, तो भी प्रतिवादियों को अपने तथ्यों के लिए मौलिक स्रोत तक जाना पड़ा और यह जानकर वादी ने अपने कार्य के लिए पुरस्कार की आशा की है, उन्होंने उसके सुझावों का उपयोग करके अपने कार्य को सरल नहीं बनाया और इस प्रकार वे वादी के प्रति ऐसे उपयोग के लिए देनदार हैं।"

न्यायालय ने अपने सामने मौजूद सभी तथ्यों के आधार पर यही निष्कर्ष निकाला कि "क़ानूनन यह नहीं कहा जा सकता कि प्रतिवादियों ने वादी की रूपरेखा का तरीका भी उपयोग नहीं किया।" यह मुक़द्दमा पूरी जाँच के लिए परीक्षण न्यायालय (Trial Court) में भेज दिया गया जहाँ कि वादी अपने अधिकारों को सिद्ध करके क्षति-प्राप्ति का भागी हो सके।

यह अभियोग एक प्रश्न खड़ा कर देता है कि इस प्रकार की परिस्थिति में सुझाव देने वाला और सुझाव स्वीकार

हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध लेखक

सत्यप्रकाश संगर

का नया कहानी-संग्रह

लम्बे दिन जलती रातें २॥)

छपकर तैयार हो गया है।

संगर की अन्य पुस्तकें

१. कली मुसकराई (उपन्यास) (दूसरा संस्करण) ३)
२. घर की आन (उपन्यास) ३॥)
३. अफ्रीका का आदमी (कहानी संग्रह) (दूसरा संस्करण) २॥)
४. नया मार्ग (कहानी संग्रह) २।)
५. अवगुण्ठन (कहानी संग्रह) (दूसरा संस्करण) २)
६. कितना ऊँचा कितना नीचा (कहानी संग्रह) २॥)

प्राप्ति स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाला दोनों ही अपने हितों की रक्षा किस प्रकार कर सकते हैं। दोनों ही पक्षों की दलीलें न्यायोचित हैं। यदि आपके पास चलचित्र से सम्बन्धित कोई विचार (idea) है और आप उसके बदले में पुरस्कार पाने की आशा में उसे किसी चलचित्र कम्पनी के सामने प्रकट करते हैं और यदि उस कम्पनी के सामने पहले से वह विचार नहीं था और वह उसके आधार पर किसी चित्र का निर्माण करती है तो इसका यह अर्थ है कि आपने उसमें कुछ योग दिया है और कोई कारण नहीं कि आपको उसके प्रतिदान-स्वरूप कुछ नहीं मिले। किन्तु ऐसा भी होता है कि चलचित्र कम्पनियों, ब्राडकास्टिंग संस्थाओं और प्रकाशकों को ऐसे भी 'विचार' सुझाए जाते हैं, जिनमें से अधिकांश से वे पहले से परिचित रहते हैं और अन्य लोगों ने भी उसे सुझाया है। वे प्रत्येक स्थिति में इस प्रकार के विचारों अथवा सुझावों के उपयोग के लिए दोषी नहीं ठहराए जा सकते, चाहे चलचित्र, प्रसार-कार्य क्रम अथवा पुस्तकों में उनका उपयोग उनके प्रकाश में आ जाने के बाद ही क्यों न किया गया हो।

इन तथ्यों के पर्याप्त दृढ़ आधार पर ही अपील सुनने वाली अदालत ने फ्लॉयड कालिन्स के मुकदमे में वादी के पक्ष का समर्थन किया। परन्तु यह समस्या अभी बराबर बनी रहेगी। इस निर्णय से सम्भव है कि किसी समीचीन सिद्धान्त का उदय हो सके, किन्तु अभी तो ऐसा कुछ हो नहीं सका है।

अभी एक हाल का मुकदमा हमें एक ऐसी बात की याद दिलाता है, जिसे हममें से भी अधिकांश (वकील भी) प्रायः भूल जाते हैं और वह यह है: कॉपीराइट के उल्लंघन का आधार नकल करने में निहित है।

इस मुकदमे में ऐसे वादी और प्रतिवादी थे, जिन्होंने रेडियो और टेलीविजन की व्यावसायिक पत्रिकाएँ (trade magazines) प्रकाशित कीं। वादी ने यह अभियोग लगाया कि प्रतिवादी ने एक या अधिक सर्वाधिकार सुरक्षित विज्ञापन-सम्बन्धी डाइरेक्टरियों की नकल कर ली है। प्रतिवादी ने यह निर्देश किया कि वादी की डाइरेक्टरियों के कुछ नाम दूसरे प्रकाशकों की डाइरेक्टरियों में भी हैं और इस प्रकार यह तर्क उपस्थित किया कि वादी का उसके ऊपर कॉपीराइट उल्लंघन का अभियोग लगाने का आधार नहीं है। न्यायालय ने इसका इन शब्दों में विरोध किया

"प्रतिवादी का तर्क यह है कि चूँकि वादी डाइरेक्टरियों में लिखित कुछ नाम दूसरे प्रकाशकों द्वा वितरण की गई डाइरेक्टरियों में भी मिलते हैं, अतएव व की डाइरेक्टरी के कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं होता, तर्क बिल्कुल थोथा है। यदि प्रतिवादी ने वादी की डा क्टरी से सचमुच नामों की नकल की है, तो कॉपीरा उल्लंघन के अभियोग से बचने का यह कोई आधार है कि प्रतिवादी के नाम अन्य स्रोतों से भी प्राप्य थे।

यह मुकदमा मनोरंजक भी कम नहीं है, क्योंकि न्याया ने तथ्यों का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला वादी को वस्तुतः जिस बात के लिए शिकायत है, वह नहीं है कि प्रतिवादी ने उसकी डाइरेक्टरियों की नकल ली है, वरन् उसने उनका उपयोग किया है। न्यायालय संक्षेप में यह कहा कि ऐसी स्थिति में यदि वादी का बात के लिए दावा है, तो वह कॉपीराइट के उल्लंघन लिए नहीं है।

"यद्यपि मूल डाइरेक्टरी की सामग्री उसके रूप (for और विन्यास की हूबहू नकल कॉपीराइट संरक्षण के अन्त आती है, किन्तु केवल डाक की आवश्यकताओं के उद्दे को लेकर दूसरे की डाइरेक्टरियों से की गई नकल (जिस और कोई उपयोग न किया जाय) कॉपीराइट संरक्षण विधान के अन्तर्गत नहीं आती (यद्यपि वह अनुचित स के दावे के लिए पर्याप्त कारण हो सकती है)। निश्चय यदि कोई व्यक्ति नामों के संग्रह या डाइरेक्टरी को सर्वाधि सुरक्षित घोषित करता है, तो कॉपीराइट विधान के अन्त इसका यह अर्थ नहीं है कि जिन लोगों के नाम सूची दिये गए हैं, उनसे व्यावसायिक सम्बन्ध रखने का उसे ए धिकार मिल जाता है।"

शंका हो सकती है कि उपर्युक्त तर्कों के फलस्वरूप वा की शिकायतों का, जिसने वास्तव में क्षति उठाई थी, निराकरण नहीं हुआ। किन्तु वस्तुतः ऐसा नहीं हुआ मुकदमे का निर्णय वादी के ही पक्ष में हुआ, यद्यपि निर्णय के कारण दूसरे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों की कुछ कठिनाइयाँ

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन की साहित्य परिषद् में स्वागताध्यक्ष श्री रामलाल पुरी, संचालक आत्माराम एण्ड सन्स, का भाषण यहाँ उद्धृत है।

भारत की राजधानी दिल्ली में आपका स्वागत करते हुए मैं बहुत ही हर्ष और गर्व महसूस कर रहा हूँ। साहित्यकार और विचारक नवचेतना और जागृति के अग्रदूत होते हैं और विचार और संस्कृति के विकास में सदा जनता का पथ-प्रदर्शन करते हैं, इसलिए सभ्य और सुशिक्षित देश अपने साहित्यकारों का समुचित आदर और सम्मान करते हैं। आज हमारा देश स्वतन्त्र है और हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा है और हम यह बात बिना किसी अतिशयोक्ति के कह सकते हैं कि हिन्दी के लेखक राष्ट्रीयता के प्रचार में, स्वतन्त्रता-संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने, उत्सर्ग करने और यातनाएँ सहन करने में सदा आगे रहे हैं। इसलिए हम उन पर जितना गर्व करें थोड़ा है। आज भी, जबकि देश स्वतन्त्र है और हिन्दी राष्ट्र-भाषा है, हमारे साहित्यकार अपने कर्तव्य के प्रति भली भांति सजग हैं, और यह सजगता इस बात से सिद्ध हो जाती है कि आप लोग आज की साहित्य-परिषद् में 'साहित्यकार के उत्तरदायित्व' पर विचार करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। साहित्य परिषदें पहले भी होती रही हैं और उनमें भिन्न-भिन्न विषयों पर विचार होता रहा है, लेकिन आज विषय अपने आपमें अनूठा और निराला है और आपको यह निर्देश करने की आवश्यकता नहीं कि आज की ऐतिहासिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ है।

इस परिषद् की एक निराली और अनूठी बात यह भी है कि मैं एक प्रकाशक, स्वागताध्यक्ष के नाते आपका स्वागत कर रहा हूँ। स्पष्ट है कि साहित्यकार और प्रकाशक में चोली-दामन का सम्बन्ध है, आपकी समस्याएँ हम प्रकाशकों की भी समस्याएँ हैं। आप लोग जिस साहित्य का निर्माण करते हैं, हमें उसका प्रसार करना और उसे जनता तक पहुँचाना होता है। इस दिशा में हमें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है वे अंततोगत्वा आपकी कठिनाइयाँ बन जाती हैं। आपस में न मिल बैठने और एक-दूसरे की समस्याओं को न समझने से ही हममें और आपमें बहुत सी गलतफ़हमियाँ पैदा हो जाती हैं। हम जिस ऐतिहासिक युग में जी रहे हैं वह आपस में झगड़ने का नहीं, एक-दूसरे को समझ लेने का युग है।

मैं यह बात कहे बिना नहीं रह सकता कि देश के स्वतन्त्र होने और हिन्दी के राष्ट्र-भाषा बनने के बाद जहाँ आप साहित्यकारों का उत्तरदायित्व बढ़ा है, वहाँ हम प्रकाशकों का उत्तरदायित्व भी उतना ही बढ़ गया है। आज आपके और हमारे सामने समस्या यह है कि हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर उसी के सदृश समुन्नत और समृद्ध भाषा बनाया जाय और यह तभी सम्भव हो सकता है जब हिन्दी में हर प्रकार का साहित्य उपलब्ध हो सके। यह बड़ा ही गम्भीर और कठिन-साध्य कार्य है, जिसके लिए साहित्यकारों, प्रकाशकों, पाठकों और सरकार—चारों का सहयोग आवश्यक है।

इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी में ललित साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है और इसमें से कुछ ऐसा भी है जो विश्व-साहित्य में बेजोड़ है। किन्तु शिक्षा, मनोविज्ञान, वाणिज्य, भूगोल, इतिहास, यात्रा, क़ानून, कृषि, कला, उद्योग-सम्बन्धी और विज्ञान-सम्बन्धी साहित्य अभी भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इसके अतिरिक्त हमें विश्व-साहित्य की उत्कृष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ कला कृतियों से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाना है और प्रान्तीय भाषाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उल्लेखनीय साहित्य भी हिन्दी में उपलब्ध करना है। यह सब हमें सरल और रोचक भाषा में—जनता के लिए जनता की भाषा में—प्रकाश में लाना है। इससे समस्या की गम्भीरता और काम का अनुमान सहज ही स्पष्ट हो जाता है। यह काम पंचवर्षीय या दसवर्षीय योजना ही से पूरा हो सकता है। इसके लिए जहाँ साहित्यकारों को कठिन साधना और कड़ा परिश्रम करना पड़ेगा, वहाँ प्रकाशन-कार्य को सफल बनाने के लिए बड़ी पूँजी की भी आवश्यकता है। जहाँ हमें साहित्य के स्तर को ऊँचा करना है, वहाँ अपने इस वैज्ञानिक युग के साधनों एवं कला और सौन्दर्य के मापदण्ड को सम्मुख रखते हुए पुस्तकों के गेट-अप को भी सुन्दर बनाना है, और यह तभी हो सकता है जब पुस्तकों की माँग बढ़े और वे अधिक-से-अधिक संख्या में छपें, ताकि अधिक छपने से खर्च कम पड़े और जल्दी बिक जाने से नये प्रकाशकों के लिए रुपया शीघ्र लौट आये।

लेकिन इस समय की वस्तु-स्थिति यह है कि हिन्दी में पाठकों की कमी है। पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में बिकती नहीं हैं। कोई पुस्तक चाहे वह कितनी ही अच्छी हो, अगर कि परीक्षा में न लगी हो तो पाठकों का ध्यान अपनी ओ आकर्षित नहीं कर पाती, यहाँ तक कि दो हजार का संस्करण भी वर्षों पड़ा रहता है। प्रकाशक के पास नई पुस्तकों छापने के लिए रुपया नहीं आता और लेखक को यह शिकाय रहती है कि उसे उसका पारिश्रमिक क्यों नहीं मिला औ उसकी पांडुलिपि को क्यों नहीं प्रकाशित किया गया।

मेरे विचार में प्रकाशन का कारोबार अन्य सब कारोबा से कठिन तथा जोखिम का है। इसीलिए बड़े-बड़े पूँजीपति इसमें आना पसन्द नहीं करते। वे कहते हैं कि यह कैसा धन्धा है जिसमें दस लाख रुपये का माल होते हुए भी बैंक से दस हजार रुपया भी नहीं मिलता है। रुपया लगाने, फँसाने और खोने का क्षेत्र इसमें विशाल है। एक-एक पुस्तक के प्रकाशन में हजारों रुपये खर्च हो जाते हैं, परन्तु बैंकों के लिए यह सब एकदम रद्दी है। पुस्तकें बहुत धीरे-धीरे बिकती हैं और जब तक बिक न जायँ, तब तक दुकानों में चाहे लाखों का माल भरा पड़ा हो उसकी मार्केट वैल्यू धेला भी नहीं। कोई बैंक उस माल के बदले में अगाऊ देने की जोखिम नहीं लेता। कई बार ऐसा भी होता है कि सचमुच सारी पुस्तकें डेड स्टाक होकर रहती हैं। प्रकाशक का सारा रुपया डूब जाने पर भी लेखक की ओर से उसके पारिश्रमिक का तकाजा बना रहता है।

प्रकाशन-कार्य में कुछ कठिनाइयाँ मैंने संक्षेप में आपके सामने रख दी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी पुस्तकों के प्रकाशन को उचित स्तर पर लाने के लिए हमें सरकार की सहायता, आपका और पाठकों का सहयोग चाहिए। हम और आप भली भाँति जानते हैं कि हमारा देश महान् और विशाल है। जब जनता में साक्षरता बढ़ेगी तो प्रकाशन-कार्य स्वतः फूले-फलेगा और आपका तथा हम लोगों का सम्बन्ध दिनों-दिन घनिष्ठ होता जायगा।

किसी भी हिन्दी पुस्तक
की
आवश्यकता के लिए
राजकमल
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

प्रकाशन समाचार
का वार्षिक मूल्य २॥)
मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।
पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेत

[प्रथम वार्षिक साहित्य-संकलन]

प्रधान सम्पादक : उपेन्द्रनाथ अश्क

सम्पादक : कमलेश्वर मार्कण्डेय

- हिन्दी के सभी प्रतिनिधि कथाकार, कवि, नाटककार, निबन्ध-लेखक और आलोचकों के सहयोग ने इसे सर्वांग सम्पन्न, महत्त्वपूर्ण और प्रतिनिधि बना दिया है।
- समस्त हिन्दी प्रदेश के नये और पुराने गण्यमान साहित्यिकों की वर्ष-भर की उत्तमोत्तम और प्रतिनिधि अप्रकाशित कृतियाँ इसमें संगृहीत हैं।
- हिन्दी प्रेमी पाठकों और पुस्तकालयों के लिए आधुनिकतम हिन्दी-साहित्य का परिचय प्राप्त कर सकने का यह अपूर्व माध्यम है।

इसमें एक लघु उपन्यास, एक पूरा नाटक, बारह कहानियाँ, चार एकांकी, दो निबन्ध, पाँच स्कैच, पचास कविताएँ एक डायरी, तीन संस्मरण, एक रिपोर्ताज, एक उपन्यास का अंश, आठ आलोचनाएँ, उर्दू के एक कवि का परिचय, और चुनी कविताएँ तथा उर्दू के, अन्य प्रतिनिधि कवियों की कविताएँ प्रस्तुत हैं।

और इसे अजितकुमार, अनिलकुमार, अमृतलाल नागर, अमृतराय, ओमप्रकाश, ओम्प्रकाश श्रीवास्तव, ओंकार शरद, ओंकारनाथ श्रीवास्तव, कमल जोशी, कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, कल्पना, कीर्ति चौधरी, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध, गंगाप्रसाद पाण्डेय, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव, गिरिजाकुमार माथुर, गोपालकृष्ण कौल, गोविन्दवल्लभ पंत, जितेन्द्र, जगदीशचन्द्र माथुर, ठाकुरप्रसाद सिंह, तेजबहादुर चौधरी, त्रिलोचन शास्त्री, दिनकर, दुष्यन्त कुमार, देवराज, नागार्जुन, नरेन्द्र शर्मा, नरेश मेहता, नामवर सिंह, निराला, नलिन विलोचन शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, प्रभाकर माचवे, प्रयागनारायण त्रिपाठी, फणीश्वरनाथ रेणु, बच्चन, बालकृष्ण राव, बालकृष्ण शर्मा नवीन, बैकुंठनाथ मेहरोत्रा, भगवतशरण उपाध्याय, भवानीप्रसाद मिश्र, भारत भूषण अग्रवाल, भीष्म साहनी, भुवनेश्वर, भैरवप्रसाद गुप्त, महादेवी वर्मा, मामा वरेरकर, मोहन राकेश, यशपाल, रामानाथ अवस्थी, रामसिंह, राजेन्द्र किशोर, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण, रामकुमार, रामकुमार वर्मा, रामदरस मिश्र, रामविलास शर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, वंशीधर पण्डा, वृन्दावनलाल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र, विद्यासागर नौटियाल, विश्वनाथ, विष्णु प्रभाकर, शकुन्त माथुर, शरद जोशी, शमशेर बहादुर सिंह, शिवदानसिंह चौहान, शिवमंगल सिंह सुमन, शिवप्रसाद सिंह, शिवपूजन सहाय, श्रीकांत वर्मा, श्रीकृष्ण दास, श्रीपतराय, शान्ति एम० ए०, सज्जाद जहीर, सत्य, सत्येन्द्र शरत्, सिद्धनाथ कुमार, सुमित्रानन्दन पन्त, सुदर्शन, सुरेन्द्रकुमार दीक्षित, सुरेन्द्र तिवारी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हृषीकेश, हरिशंकर परसाई आदि आदि का सहयोग प्राप्त हुआ है।

डिमाई साइज़, ऐण्टिक कागज़, पृष्ठ ६००,

साथ में अनेक चित्र तथा कलाचित्र

मूल्य : १२)

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्र भारत की वाणी

स्वाधीनता और उसके बाद

१९४६ और १९४९ के बीच दिए गए पंडित जवाहर लाल नेहरू के कुछ महत्त्वपूर्ण भाषणों का संग्रह। ४०० पृष्ठों की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक की कीमत ५)

आठवां साल

अप्रैल १९४९ से मार्च १९५५ के दरम्यान के भारत सरकार, राज्य सरकार तथा सारे देश के अनेकविध कार्य तथा उनके संपादन के प्रामाणिक सर्वेक्षण का नवीनतम वार्षिक प्रकाशन। भारत के शासन तथा व्यवसाय संबंधी लगभग सारे क्षेत्र व्याप्त करने वाले आंकड़े इसमें संकलित करके प्रकाशन को एक अत्यंत उपयुक्त संदर्भ-ग्रंथ बनाया है। कीमत १॥) (छप रहा है)

भारत की एकता का निर्माण

अगस्त १९४७ से दिसंबर १९५० तक का काल, भारत के इतिहास का तेजस्वी काल है। इसी महत्त्वपूर्ण कालावधि में नव भारत की नींव डाली गई। इस काल में दिए गए सरदार वल्लभ भाई पटेल के २७ महत्त्वपूर्ण भाषण, जो स्वतंत्र भारत के निर्माण का यथार्थ प्रमाण हैं, कई दुर्लभ तस्वीरों समेत संग्रहीत किए गए हैं। ४०० पृष्ठों की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५)

भारत-१९५५

इस वार्षिक संदर्भ-ग्रंथ में भारतीय संघ के राजनैतिक आर्थिक और सामाजिक आदि सारे पहलुओं का यथार्थ विवरण है। मूल्य ७॥)

मिलने का पता:—

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

AC 55/107

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

१९५५ के वर्ष में इंग्लैण्ड में प्रकाशित हुई पुस्तकों की कुल संख्या १९९६२ थी। इतनी पुस्तकें अब तक इससे पहले कभी प्रकाशित नहीं हुईं। गत कुछ वर्षों में प्रकाशित पुस्तकों की संख्या इस प्रकार रही है : १९५० : १७०७२, १९५१ : १८०६६, १९५२ : १८७४१, १९५३ : १८२५७, १९५४ : १९१८८, १९५५ : १९९६२। इन १९९६२ पुस्तकों में से केवल ५७७० पुस्तकें पुनर्मुद्रित अथवा पुरानी पुस्तकों के नये संस्करण थे, शेष सब पुस्तकें नई थीं।

◈ ◈ ◈

उपन्यासों का प्रकाशन १९५५ में १९५४ की अपेक्षा काफ़ी कम हुआ जबकि शिक्षा-सम्बन्धी, व्यापार और उद्योग-सम्बन्धी, इंजीनियरिंग, कला और स्थापत्य सम्बन्धी, टेकनिकल तथा धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन अपेक्षातर अधिक हुआ।

◈ ◈ ◈

विषयानुसार पुस्तकों का प्रकाशन निम्नलिखित संख्याओं में हुआ :

उपन्यास	३७०२
शिक्षा सम्बन्धी	१८४४
बालोपयोगी	१७५६
धार्मिक	१०५८
टेकनिकल	८८१
मेडिकल	७८५
कविता, नाटक	६५८
राजनीति आदि	६५१
व्यापार, उद्यम	६२६
कला, स्थापत्य	५६१
जीवन-चरित्र, संस्मरण	४६६
कानून, वैधानिक	४३७
खेलें	४३३
इंजीनियरिंग	४१३
डायरेक्टरीज़	४११
समाज शास्त्र	४०५
लोक-साहित्य, भूगोल	३६६
पदार्थ विद्या, रसायन शास्त्र	३३५
फौजी शिक्षा से सम्बन्धित	३०५
साहित्यिक इतिहास	३०४
जीवविद्या, प्राणिशास्त्र	२९५
कृषिशास्त्र	२८५
इतिहास	२३५
गार्हस्थ्य शास्त्र	२२१
अर्थशास्त्र	२२०
पशु-चिकित्सा शास्त्र	२०४
भ्रमण	१९९
दर्शनशास्त्र	१८७
खनिज शास्त्र	१५७

श्री राजनारायण अग्रवाल की निर्मम हत्या

आगरा, ग्वालियर और इन्दौर के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल के सुपुत्र श्री राजनारायण अग्रवाल की १९ जनवरी, १९५६ बृहस्पतिवार की शाम को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा हत्या कर दी गई। श्री राजनारायण अग्रवाल लगभग ३० वर्ष के सुशिक्षित नवयुवक थे।

प्रकाशन समाचार दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करता है। उनका दुःख हम सबका दुःख है।

प्रकाशन समाचार को स्वर्गीय श्री राजनारायण अग्रवाल का सहयोग सदैव प्राप्त था। आपके पत्र शीर्षक स्तम्भ में उन्हीं का अपना लिखा हुआ १० जनवरी का एक पत्र इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nautical	१३३
संगीत	१२१
मनोविज्ञान	११६
निबन्ध साहित्य	११८
कोश, सन्दर्भ ग्रन्थ	११६
Aeronautics	१०७
रेडियो, टेलिवीज़न	६८
गणित	८७
नक़्शे	८१
नक्षत्र विज्ञान	७८
Facetic	६६
क्लासिक्स, अनुवाद	६४
Urcheology	५८
वार्षिक प्रकाशन	५२
Occultism	४८
Anthropology	३८
भेंट योग्य सचित्र पुस्तकें	३२
स्टाम्प्स से संबन्धित	२३
एल्बम्स, कैलेन्डर्स	१५
पूर्वीय देशों से सम्बन्धित	१५
	१६६६२

साहित्य-अकादमी (नई दिल्ली) इस वर्ष अक्तूबर-नवम्बर में भारतीय भाषाओं में लिखी गई पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का आयोजन कर रही है। प्रदर्शनी-आयोजन इस संस्था के कार्यक्रम का एक अंग है।

उपयोगी प्रकाशनों को प्रोत्साहित करने के लिए अकादमी ने निम्नलिखित अनुदानों की स्वीकृति दी है: (१) सुविख्यात विश्वकोषकार (Encyclopaedist) डॉ० एस० वी० केतकर की पुस्तक 'प्राचीन महाराष्ट्र' के शेष दो खण्डों के प्रकाशन के लिए १०,०००), (२) बच्चों के लोकप्रिय नाटक 'मोदन्नण थम्मा' का सचित्र और सस्ता संस्करण तैयार करने के लिए चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट (३) मैसूर को १०००), कन्नड़-लेखकों के जीवनी-कोष के प्रकाशन के लिए १०००), (४) अकादमी ने विश्व की अनेक भाषाओं से २५ सर्वोत्तम ग्रंथ चुने हैं, जिनका भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जायगा।

साहित्य-अकादमी के कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य-क्रम ये हैं: (१) १५ भारतीय भाषाओं में भारतीय साहित्य की ग्रन्थ-सूची तैयार कराना। यह कार्य लगभग पूरा हो है। (२) प्रमुख भारतीय भाषाओं में वर्ष-भर की प्रकाशि चुनी कविताओं का वार्षिक काव्य-संग्रह प्रस्तुत कराना। 'भा तीय कविता—१६५३' नामक शीर्षक से पहला खण्ड प्रेस है और शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है। (३) कालि की कृतियों का आलोचनात्मक संस्करण तैयार कराना, जिस प्रथम खण्ड—'मेघदूत'—कलकत्ता के श्री एस० के० दे द्वा लिखा जा चुका है और जो प्रेस में है। (४) विश्व-भार विश्वविद्यालय के सहयोग से रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचना की विस्तृत ग्रन्थ सूची तैयार कराना। (५) चार खण्डों संस्कृत साहित्य की ग्रन्थ-सूची तैयार कराना। (६) 'आदि ग्रन्थ' के चुने हुए अंशों का अंगरेज़ी अनुवाद तैयार कराना जो 'यूनेस्को' द्वारा प्रकाशित होगा। लगभग आधा अनुवा 'यूनेस्को' के पास भेजा जा चुका है। (७) हिन्दी के आधुनिक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों का भारत की अन्य भाषाओं अनुवाद। (८) भारतीय प्रमुख भाषाओं के काव्य-संग्रह और साहित्य के इतिहास तैयार कराना।

प्रत्येक भाषा से सम्बन्धित सुविख्यात लेखकों और विद्वानों की एक परामर्शदात्री समिति है, जिसके सहयोग अकादमी उन भाषाओं से सम्बद्ध कार्य-क्रमों का निर्माण करत और उन्हें कार्यान्वित करती है।

◆ ◆ ◆

मास्को रेडियो के अनुसार रूस में भारतीय कृतियों की १० लाख प्रतियाँ बाजार में बिकने के लिए तैयार की ज रही हैं। इनमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचन्द और कालिदा की कृतियों के अतिरिक्त पंजाबी की कविताएँ सम्मिलित हैं

गत वर्ष श्री जवाहरलाल नेहरू की दो पुस्तकों—'हिन्दुस्तान की कहानी' और 'मेरी कहानी'—का अत्यन्त सफलतापूर्वक प्रकाशन किया गया था।

पिछले वर्ष अन्य भारतीय कृतियों के साथ-साथ रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं के कुछ संग्रहों का रूस में बोली जाने वाली १३ भाषाओं में अनुवाद हुआ और इनकी बिक्री भी पर्याप्त हुई।

'क्लासिक' साहित्य में पिछले वर्ष 'रामायण' का अनुवाद भी किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

नई इमारत : श्री 'अंचल' द्वारा लिखित उपन्यास का नया संस्करण **किताब महल, इलाहाबाद** द्वारा प्रकाशित या गया है। १९४२ की जन-क्रान्ति की पृष्ठभूमि में उन नों के भारत की राजनीति का स्पष्टता से रेखांकन हुआ है। ऊन आकार के १६-पेजी पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का ल्य ४॥) है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास : तुलनात्मक भाषा-ज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान् डॉ॰ उदयनारायण तिवारी द्वारा लिखित इस पुस्तक से हिन्दी भाषा के प्रवर्तन और उसके विस्तृत विकास के सूक्ष्म अध्ययन का अभाव पूरा हुआ है। पीठिका में हिन्दी के उद्गम स्रोत—यूरोपीय, वैदिक संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि—से सम्बन्धित सामग्री दी गई तथा उस संक्रान्तिकाल का विवेचन किया गया है जिसमें आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का उदय हुआ। उत्तर पीठिका में हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक व्याकरण दिया गया है। डिमाई आकार के ६११ पृष्ठों के इस सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ११) है तथा प्रकाशन **भारती भण्डार,** इलाहाबाद से हुआ है।

◈ ◈ ◈

अन्धा कुआँ : डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल का लिखा हुआ अभिनेय नाटक है जिसकी स्थापना ग्राम्य परिस्थितियों में की गई है। इसमें ईर्ष्या और प्रेम, घृणा और सहानुभूति, परिग्रहण और त्याग की कथा जीवन्त पात्रों के माध्यम से अतीव करुणा से, मुहावरों से भरी प्रभावोत्पादक भाषा में कही गई है। काऊन आकार के १५८ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन **भारती भण्डार, इलाहाबाद** ने किया है; मूल्य २॥) है।

◈ ◈

बचपन की स्मृतियाँ : श्री राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित यह पुस्तक मात्र आत्म-संस्मरण नहीं है; इसमें बीसवीं शती के आरम्भ के काल का भारतीय ग्राम्य-जीवन प्रतिबिम्बित हुआ है। बचपन की स्मृतियों को अंकित करते हुए लेखक ने उन्हें अपने पाण्डित्य और गवेषणात्मक ज्ञान की पुट देकर किसी समाजशास्त्रीय अध्ययन की भाँति महत्त्वपूर्ण और रोचक बना दिया है। काऊन आकार के १४६ पृष्ठों की न्यूज़ प्रिंट पर छपी इस पुस्तक का मूल्य १॥) है और इसका प्रकाशन **किताब महल, इलाहाबाद** ने किया है।

◈ ◈ ◈

जिन खोजा तिन पाइयाँ : देखीं, सुनीं, पढ़ीं और समझीं, व्यावहारिक सूझ-बूझ से भरी सूक्तियों और कहानियों का उपयोगी संग्रह जिसे श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ने तैयार किया है। पृष्ठ २१६, मूल्य २॥), प्रकाशक, **भारतीय ज्ञानपीठ,** बनारस।

◈ ◈ ◈

धूप के धान : 'तार सप्तक' के कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर की १९५४ तक लिखित ४५ प्रमुख कविताओं का यह संग्रह **भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस** से प्रकाशित हुआ है जिसमें "कवि ने नई धाराओं, शैलियों के स्वस्थ तत्त्वों का समन्वय करने की अथक चेष्टा की है।" कवि के अपने शब्दों में अन्यत्र यह भी दावा किया गया है कि इन कविताओं में "शिल्प-प्रयोगों के साथ सामाजिक वस्तु के सामंजस्य का यत्न मिलेगा।"

इस संग्रह की दस पृष्ठों की "निवेदनम्" शीर्षक भूमिका में श्री गिरिजाकुमार माथुर ने काव्य और साहित्य-सम्बन्धी कुछ स्थापनाएँ की हैं : (१) नई कविता पुरानी धारा की प्रतिक्रिया-स्वरूप काव्य-क्षितिज पर उदित हुई है, (२) श्रेष्ठ साहित्य विभिन्न पक्ष या प्रवृत्तियों का समन्वय करता चलता है, (३) राजनीति पक्षधर-मात्र ही होती है, (४) मध्ययुग में जैसे धर्म के नाम पर था, आज मानवता के नाम पर विग्रह, रक्तपात, शीतयुद्ध और महायुद्ध रचे जा रहे हैं, (५) एकांगी मान्यताओं और वैचारिक दिग्भ्रम के कारण आज कवि की अभिव्यंजना के उपकरणों—भाषा, प्रतीक, उपमान, छन्द—में अस्वाभाविकता, अधूरापन है एवं रूप तथा व्यक्तित्व का अभाव है, (६) मानव-संस्कृति बड़े विराट् और व्यापक परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वतनों में से होकर गुजर रही है, उसके मूल्य-मानों में आमूल उखाड़-पछाड़ हुई है, सामाजिक विघटन हुआ है लेकिन नवीन स्तर पर आकर उसमें सन्तुलन स्थापित होना शेष है, (७) नई कविता की तात्कालिक उपलब्धि से यह देखकर असन्तोष होता है कि उसमें जो-कुछ लिखा गया है उसका एक भाग उलजलूल और निरर्थक है, उसमें छन्दों की अराजकता और विशृंखलता है। ये स्थापनाएँ पूर्णरूप से शायद राजनीति या साहित्य की किसी भी प्रवृत्ति को स्वीकार्य नहीं होंगी, यद्यपि इन्हें व्यक्त करने वाले की सद्भावना के प्रति सन्देह की गुंजाइश नहीं।

इस प्रकार विभिन्न प्रवृत्तियों के समन्वय के लिए श्री गिरिजाकुमार माथुर ने जो विस्तृत प्रेरणा दी है, उसके परिणाम में रचे जाने वाले काव्य के उदाहरण भी इस संग्रह में मिलते हैं। "तैंतीसवीं वर्षगाँठ" नाम की कविता में कवि एक प्रवृत्ति के अनुसार कहता है :

वह नहीं इंसान की है सभ्यता
स्वार्थ, लालच, युद्ध जिसके देवता
मूलधन, हिंसा, गुलामी सूद है
आदमी बंदूक की बारूद है—

अथवा,

भूख, बीमारी, ग़रीबी, गन्दगी
कौड़ियों के मोल बिकती जिंदगी

और इसी कविता में दूसरी प्रवृत्ति के तत्वों को सँजोते हुए कवि ने अपनी मनोकामना इन भावों में प्रकट की है :

बाँह गोरी मनुजता की ध्वज बने
छाप तेरे अधर की सूरज बने

"धूप का ऊन" शीर्ष की कविता में भी यह समन्वय देखिए :

और अलसाए हुए
कम्बल, लिहाफों, बिस्तरों पर
जो उठाए जा रहे हैं
रात की मीठी कथा के
पृष्ठ पलटे जा रहे हैं

◆ ◆ ◆

जल रहे हैं कोटि चूल्हे
किंतु है इंसान भूखा

"शाम की धूप" में

ये हवा धूप-मिली
लहर-सी आके लिपट जाती है
कभी हल्के-से उड़ा देती बाल
कभी छत पर बैठी ललनाओं के
सोंधे तन-गंध-भरे आँचल को
गोरे कंधे से उड़ा देती है

और उड़ जाते सूखते कपड़े
ऊँची सीमेंट की मुंडेरों से
छोटे कुरते, रुमाल, टेबिल-क्लाथ
छींट की फ्राक, रेशमी जम्पर
साड़ियाँ बुंदकियों लहरियों की
और ब्लाऊज़ महीन चटकीले
जिनमें थे पड़ गए पहिनने से
चिह्न रंगीन गठे अंगों के
सभी कोमल-कठोर उतार-चढ़ाव

साथ ही इसी कविता में :

आज पग-पग पै क्लेश कठिनाई
घर से खलिहान तक है अन्न नहीं
कारखानों से लेके बस्ती तक
है न कपड़ा कहीं पहिनने को
दूध घी का यहाँ पै चर्चा क्या
जब न चीनी, न गुड़, न दाल-नमक
हो गया स्वप्न किरासिन का तेल
जिंदगी पर यह शिकंजा दिन-दिन
हो रहा और कड़ा और कठिन

क्या इन कविताओं में सामाजिक यथार्थ के साथ इन्द्रियार्थवाद की इन भावनाओं का समन्वय हो सका है? धाराएँ अलग-अलग स्पष्ट दीख पड़ती हैं; पाठक के मन पर समन्वय के स्थान पर सह-अस्तित्व का प्रभाव अधिक है। लोकसुलभ भाषा में कहा जाय तो खिचड़ी के विशिष्ट स्वाद के स्थान पर प्रत्येक कौर में चावल और दाल का अपना-अपना स्वाद ही मिलता जाता है। पृष्ठसंख्या मूल्य ३)।

◆ ◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महुए का पेड़ : हिन्दी के प्रतिभासम्पन्न नवयुवक कहानी-ार मार्कण्डेय की १० सफल कहानियों का संग्रह है। लेखक े प्रथम कहानी-संग्रह 'पान फूल' की बहुप्रशंसित कहानियों े बाद लिखी गई ये कहानियाँ निश्चित रूप से शिल्प और थावस्तु, दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रौढ़ हैं। 'महुए का पेड़' का प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, प्रयाग** से और मूल्य है २)।

◈ ◈ ◈

ज़िन्दगी बोलती है : श्री रामस्वरूप की १२ कहानियों का संग्रह है, जिसमें 'यथार्थ व कल्पना का बहुत ही कलात्मक समन्वय है।' चुस्त शैली में लिखी गई कहानियों के इस ंग्रह का मूल्य २॥) है, जिसे **मेघराज अग्रवाल, शतदल प्रकाशन, ४६।१, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता-७** ने प्रकाशित किया है।

हाथ-चक्की, श्री एम० विनायक ने अनाज-पिसाई और हाथ-चक्की से सम्बद्ध तथ्यों का संकलन करके यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि 'यन्त्र-शक्ति के द्वारा प्रेरित मशीनों की प्रशंसित कार्य-क्षमता केवल कल्पना-मात्र है।' **अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी** से प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य ॥) है।

◈ ◈ ◈

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी से तीन पुस्तकें परिचयार्थ प्राप्त हुई हैं, उनमें प्रथम है श्री गोविन्ददास का नाटक **सबै भूमि गोपाल की,** दूसरी है श्रीकृष्णदत्त भट्ट की **भूमि-क्रान्ति का तीर्थ : कोरापुट** और तीसरी है **भूमि-वितरण,** जिसमें भूमि-वितरण सम्बन्धी नियमों, चर्चाओं आदि का संकलन है। इनके मूल्य क्रमशः ।), ।) और ।–) हैं।

◈ ◈ ◈

यदि आप अब तक ग्राहक न बने हों तो

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक शुल्क २॥)

आज ही मनीआर्डर द्वारा भेजकर ग्राहक बनें।

कथा-साहित्य में धूम मचाने वाला

हमारा लोकप्रिय प्रकाशन

उपन्यास

द्वाभा	प्रभाकर माचवे	२)
बहता पानी	मन्मथनाथ गुप्त	३।)
मरु प्रदीप	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	३।।)
मुक्ति की राह	एस० पी० खत्री : अनु० :	६)
अनबुझी प्यास	दुर्गाशंकर मेहता	७।।)
चान्दनी के खंडहर	गिरधर गोपाल	२)
काठ का उल्लू और कबूतर	केशवचन्द्र वर्मा	४)
सूरज का सातवाँ घोड़ा	धर्मवीर भारती	१।।)
गुनाहों का देवता	धर्मवीर भारती	५)

कहानी

प्रायश्चित	सत्यजीवन वर्मा	२)
छायातप	रघुवंश डॉ०	२।।)
आँसू और पसीना	रामप्रताप बहादुर	२)
पूँजीपति	गोपेश	२)
मेरा देश	अ० नदीम कासिमी	२)
मन की मौज	राजेन्द्रसिंह गौड़	२।।)
आस्करवाइल्ड की कहानियाँ	धर्मवीर भारती : अनु० :	२)

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चकोटि का साहित्य

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नये प्रकाशन

कहानियाँ

जिन खोजा तिन पाइयाँ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द १)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन [१] : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री २॥)
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथकुमार एम० ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे :
धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० २)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—आदिम युग, श्री उदयशंकर भट्ट, पु० मु०, ४)
—विज्ञान और सभ्यता, श्री रामचन्द्र तिवारी, ४)
—अजी सुनो, श्री गोपालप्रसाद व्यास, पु० मु०
—पद्मसिंह शर्मा के पत्र, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
—जर्मनी की लोक कथाएँ, श्री जगन्नाथ शर्मा, १)
—गांधी चरित्र, श्री गोपालप्रसाद व्यास, १)
—चित्रमय गांधी, श्री गोपालप्रसाद व्यास, १)

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
—संन्यासी विवेचन, प्रो० बलदेव कृष्ण, आलोचना, २।)
—प्रबन्ध भास्कर, प्रो० मेनन, शर्मा तथा गोयल, निबन्ध ,५)

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस
—बिजली, 'बेढब' बनारसी, हास्य रस की कविताएँ ,२)
—साहित्य प्रवाह, श्री कृष्णदेव प्रसाद, आलोचनात्मक-निबन्ध, ५)
—सांझ सकारे, श्री सुधाकर पाण्डेय, उपन्यास, ५)
—सूनी की खोज, शरलॉक होम्स, अनु० श्री सहाय, उपन्यास

किताब महल, इलाहाबाद
—दाखुंदा, श्री राहुल सांकृत्यायन, पु० मु०, उपन्यास, ५)
—स्विट्जरलैण्ड का शासन, महेन्द्र प्रकाश अग्रवाल, ३)
—रत्नावली, अनु० श्री ठाकुरदत्त मिश्र, १।)
—कार्ल मार्क्स, श्री राहुल, जीवनी, ६)
—वेणी संहार, अनु० श्री ठाकुरदत्त मिश्र, १।)
—विस्मृत यात्री, राहुल सांकृत्यायन, संस्मरण, ६)

...र्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
—विश्व के महान् शिक्षक, श्री विश्ववीर विद्यार्थी, शिक्षा, ५)
—प्रारम्भिक मनोविज्ञान, श्री विश्ववीर विद्यार्थी, ३॥)
—बाल मनोविज्ञान, श्री भगवानदास अवस्थी, ३)
—ताजमहल के आँसू, डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, नाटक संग्रह, २॥)

चन्द्र कार्यालय, भिवानी
—अनुभूत मुलम्मा, श्री चन्दूलाल वर्मा 'चन्द्र', इलैक्ट्रोप्लेटिंग, १॥)

दम्माणी एण्ड कम्पनी, बीकानेर
—हज़ार वर्ष बाद, श्री संजीव कुमार, प्रहसन

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—हम स्वस्थ कैसे रहें, श्री सत्य काम, ६)
—आधुनिक नारी सुबोधिनी, श्री सत्यकाम, ८)
—कारपेन्टरी बुक, श्री रत्नप्रकाश 'शील' १०)
—रैफ्रीजरेशन, श्री नरेन्द्रनाथ, ६)

विहार प्रकाशन मन्दिर, बनारस
—रोम की रमणी, अनु० श्री कामताप्रसाद श्रीवास्तव, उपन्यास, ३)

मंगला प्रकाशन, नागपुर
—सहोदरा, श्री अशोक, उपन्यास, १॥)
—धरती और आकाश, श्री अशोक, कहानी, २)
—रेशम के धागे, श्रीमती लक्ष्मीदेवी वर्मा 'चन्द्रिका', कहानी, १॥)
—नौलखा हार, श्री अशोक, बालोपयोगी, ॥।)

'मस्ती' प्रकाशन, खन्ना
—सोहाग रात, श्री नरेन्द्र धीर, २।)
—रति की पूजा, श्री नरेन्द्र धीर, २)
—उर्वशी के गीत, श्री नरेन्द्र धीर, २।)
—जवानी की आग, श्री नरेन्द्र धीर, पु० मु०, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि प्रकाशन, कानपुर
—वृन्दावनलाल वर्मा, उपन्यास और कला, श्री शिवकुमार मिश्र, ६)

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—विश्वसाहित्य की रूप-रेखा, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, १२)
—तुलसी और उनका काव्य, पु० मु०, श्री रामनरेश त्रिपाठी, ७)
—हाथियों की खोज में, श्री विराज, १॥)
—भक्ति दर्पण, म० राजपाल, १॥)

रामकुमार बुकडिपो, लखनऊ
—बहनों से दो बातें और बापू के उपदेश, श्री जगवीर कौर 'शिवा', १।)
—बाल लोमहर्षिणी, श्री के० एम० मुन्शी, अनु० श्री एल० पी० भारद्वाज, १।)
—बाल परशुराम, श्री के० एम० मुन्शी, अनु० श्री एल० पी० भारद्वाज, १।)
—स्वाधीनता की सुरक्षा, श्री कालिदास कपूर, ५)

विप्लव कार्यालय, लखनऊ
—अमिता, श्री यशपाल, उपन्यास,

सत साहित्य प्रकाशन, बनारस
—साहित्य की भूमिका, श्री त्रिलोचन शास्त्री, ३)

सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
—चिता, श्री ओमानन्द रू० सारस्वत, कहानी-संग्रह,

सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा
—सरस्वती व्याकरण, श्री सीताराम चतुर्वेदी, ।।।)
—गृहशिल्प एवं सम्बन्धित कला, भाग १, २, ३, श्री तारादेवी, २।।=)

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद
—चक्रव्यूह, श्री महेश, खण्ड-काव्य, १।)

साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद
—तुलसी दोहावली सार, श्री कृष्णमुरारीलाल, ।।।)

हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस
—हिन्दी साहित्य सर्वस्व, पंडित सीताराम चतुर्वेदी, ६)
—शैली और कौशल, पंडित सीताराम चतुर्वेदी, ६)

हिन्दी की पुस्तकों के लिए
बृहत्तम भण्डार

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद

हिमालय हाऊस, हार्नबी रोड,
बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी मास के प्रकाशन

आलोचना—साहित्य—संस्कृति—निबन्ध

य नारायण तिवारी, डॉ०, हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, ६५०, डि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ११)
इ तथा शास्त्री, हिन्दी प्रदर्शक, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ १॥)
कान्त बली शास्त्री, हिन्दी गद्य : विकास और विमर्श, १२०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
गी नारायण त्रिपाठी, आधुनिक निबन्ध, २७६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)
त शास्त्री, श्रीधर शास्त्री, कवि कर्मबोध, ७२, क्रा०, कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद ॥।=)
कर माचवे, मराठी और उसका साहित्य, १३३, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २)
नारायण टण्डन, गोदान : एक अध्ययन, पु० मु०, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ २)
नारायण टण्डन, चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन, पु० मु०, २००, क्रा०, विद्यामन्दिर, लखनऊ २॥)
न्द्र नाथ शर्मा, तेजनारायण टण्डन, नहुष की टीका, ५६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ ॥)
मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, आचार्य शुक्ल और त्रिवेणी, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ २)
मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, महादेवी वर्मा और नीरजा, २३६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ ३॥)
मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, यशोधरा : एक अध्ययन, पु०मु०, १५०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १॥)
यत हृदय, हमारे काव्यकार, २६०, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २॥)
यत हृदय, हमारे साहित्यकार, १३६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १।)
गोपाल शर्मा 'दिनेश' हिन्दी साहित्यकार, १६०, क्रा०, प्रेम बुकडिपो आगरा १॥)
धारीसिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, ६७६, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १५)
न्द्र, डॉ०, सूर की झाँकी, २५४, डि०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क० लि०, आगरा ६)
स्वरूप गुप्त, कबीर साहित्य समीक्षा, २९६, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ ४)
रीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०, सूर साहित्य, २२६, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नकार लि०, बम्बई २॥)

इतिहास—दर्शन—मनोविज्ञान—राजनीति—शिक्षा

र अनु०, कौटिल्य अर्थशास्त्र, २५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णकुमार, नीतिशास्त्र, भाग १ व २, पु० मु०, ३००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
गोपालप्रसाद व्यास, हमारे राष्ट्रपिता, १३६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
जयप्रकाश' डॉ०, मनोविज्ञान प्रयोग परिचय, पु० मु०, २००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह, बाबू कुंवरसिंह (एक अध्ययन), ३००, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
प्रियरत्न आर्ष, क्रियात्मक मनोविज्ञान, १३६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
बालकृष्णदास बैजल, हमारी पृथ्वी, ४३०, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
यदुनन्दन कपूर, अशोक, २५६, डि०, कालेज बुक स्टोर्स, अलीगढ़
राजेश्वर अर्गल, डॉ०, आधुनिक संविधान, ३२०, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
रामस्वरूप वशिष्ठ, मानसिंह प्रवेशिका, १२८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
रामसूरतलाल और मिश्रा, साधारण मनोविज्ञान, पु० मु०, ७५०, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद

उपन्यास

गुरुदत्त, मानव, ३७२, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली
गुरुदत्त, प्रवन्चना, पु० मु०, ३१८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
गुरुदत्त, लुढ़कते पत्थर, ३५५, क्रा०, ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली
गोविन्दवल्लभ पन्त, पर्णा, २५६, क्रा० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, दुष्यन्त और शकुन्तला, ६८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, प्रतिज्ञा, ७०, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
ठाकुरदत्त मिश्र, अनु०, विक्रम और उर्वशी, ६०, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद
नकाब पोश मेरी, मंचूरिया की राजकुमारी, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
नकाब पोश मेरी, हवेली का रहस्य, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
बंकिमचन्द्र, अनु० सुनीता अग्रवाल, कृष्णकान्त का वसीयत नामा, ७२, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
बेढ़ब बनारसी, लफ्टेनेन्ट पिगसन की डायरी, २५६, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
शरत्, अनु० सुनीता अग्रवाल, परिणीता, ७६, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
शरत्, अनु० रूपनारायण पाण्डेय, शेष का परिचय, शरत् साहित्य भाग ३४-३५, ३२६, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर लि०, बम्बई

कविता

इन्द्रिय दमन कौशिक, कलाकार का दर्पण, ८०, क्रा०, हिन्दी साहित्यकार संसद, दिल्ली
बेढ़ब बनारसी, हास परिहास, १६०, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस
सत्यकाम विद्यालंकार अनु०, मेघदूत, १५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

कहानी

कृष्णचन्द्र, सीमा, पु० मु०, १८८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद', रिमझिम, पु० मु०, ११२, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स बनारस
शिवदानसिंह चौहान, आधुनिक कहानियाँ, ३०६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
शिवदानसिंह चौहान, नव कहानी कुन्ज, २५५, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोष

...बिश्वनाथ भट्ट, आधुनिक संस्कृत हिन्दी कोष, ५६१, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स ५)

नाटक-एकांकी

...सन, अनु० सीताचरण दीक्षित, समाज के स्तम्भ, १६१, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
...राज 'दिनेश' यशस्वी-भोज, ११२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।।)
...क्ष्मीनारायणलाल, अंधा कुआं, १३०, क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद २।।)
...जय चौहान, आधुनिक एकांकी, १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

...राज रहबर तथा पंछी, हमारी लोक कथाएँ, भाग १, ५६, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)

विविध

...ण, सचित्र व्यंग विनोद, ४४८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६।।)
...प्रकाश, हरप्रसाद खरे, कार्बनिक रसायन शास्त्र, भाग १, ४७२, डि०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ७)
...० के० जसवानी, कला की परख, १५५, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४)
...० प्रसाद, तिलहन की खेती, ६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।।।=)
...० प्रसाद, सोयाबीन की खेती, १६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ।)
...लाचराय, अभिनव भारत के प्रकाश-स्तम्भ, १४१, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १।)
...लाचराय, सत्य और स्वतन्त्रता के उपासक, १८०, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १।।।)
...न्द्रभान राघे लोकोक्ति मुहावरे, २४४, क्रा०, सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १।।)
...न्द्रनाथ, रेडियो विज्ञान, ६२०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ११)
...ताप शंकर चौधरी, ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्त, पु० मु०, ८०, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद १)
...गेय राघव, डॉ०, काल विजय, ६६, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १।)
...म अवतार धीर, प्रेक्टिकल घड़ीसाज़ी, ११२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ३।।)
...मचन्द्र श्री वास्तव चन्द्र, गांधी विमर्श, ८८, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ।।।=)
...कुन्तला तथा अन्य, नवीन जगत से प्राप्त लालसाएँ, २००, क्रा०, रामकुमार बुकडिपो, लखनऊ २।)
...यकाम विद्यालंकार, जीवन साथी, पु० मु०, २५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३।।)
...य्यद जहूरुल हुसैन, कुरान और धार्मिक मतभेद, ८८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
...रिशंकर शर्मा, जीवन झांकी, १७६, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)
...रिशंकर शर्मा, मेवाड़ महिमा, पु० मु०, ११२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

में

विज्ञापन भेजते समय

विज्ञापन–मूल्य

अग्रिम भेजना आवश्यक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

में

विज्ञापन भेजते समय

विज्ञापन-मूल्य

अग्रिम भेजना आवश्यक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २।।) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ : ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$" × ६" या २$\frac{3}{4}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$" × ६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७।।)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D—59

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष
(ले०—भगवान दास मित्तल)
कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार नवीन ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष
सूक्ष्म भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें। मूल्य ६) डाक खर्च १।)

ज्योतिष विज्ञान
(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी)
ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य ६) डाक खर्च ॥=)

व्यापार चमत्कार
व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ। मूल्य ५) डाक खर्च ॥=)

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बेसिक ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज ३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १)
६. इं० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्स ३)
७. सुपरवाइज़र वायरमैन प्रश्नोत्तर ३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग ६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
१०. आयल इंजन गाइड ६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड ४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
१५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईडिंग ६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग ६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स ६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन) ४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साज़ी ४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ७॥)
३४. वीविंग गाइड ४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफी शिक्षा २॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी) ५)
३७. B " " " इंगलिश ५)
३८. A जन्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी) १॥)
३८. B " " " इंगलिश १॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर १०)
४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड) ६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो ३॥)
४५. मोटर प्राइमर १।)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४७. बिना बिजली का रेडियो १।)
४८. बच्चों का रेडियो १।)
४९. बच्चों का टेलीफोन ॥।)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल १।)
५१. लोकल रेडियो सैट १।)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान १।)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
५४. बच्चों का वायरलैस १।)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे) १०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन(गृहनिर्माणकला)१०)
५७. सोप मेकर्ज़ गाइड ६)
५८. मेटल पालिशिंग २॥)
५९. फरनीचर बुक १०)
६०. पम्पिंग गाइड
६१. जनरल मैकेनिकल गाइड
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
६३. स्टीम टरबाईन
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी २॥)
२. प्लास्टिक गाइड २॥)
३. बूट पालिश २॥)
४. अप्टूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना २॥)
५. कन्फेक्शनरी २॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) २॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा १।)
९. पैन्टी का काम ४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ४)
११. परफ्यूमरी मास्टर २॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी) २॥)
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार २॥)
१४. हलवाई मास्टर २॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
१६. पान की दुकान २॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग) २॥)
१८. कुकरी बुक ४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार २॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
२२. फिनायलसाज़ी (कीड़े मार दवाइयाँ २॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाज़ी) २॥)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना २॥)
२५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना २॥)
२६. स्लेट और स्लेट लीड पैंसिल बनाना २॥)
२७. रबड़ की मोहरें बनाना २॥)
२८. टूथ पैस्ट टूथ पाउडर बनाना २॥)
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़ ६)
३०. सिलाई कटाई गाइड १॥)
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार ४॥)
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा) २॥)
३३. हरफन मौला १॥)
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग २॥)
३५. शर्बत विज्ञान २॥)
३६. बुक बाईडिंग ३)
३७. दर्ज़ी मास्टर २॥)
३८. व्यापार दस्तकारी २॥)
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान ३)
४०. वीविंग कैल्कुलेशन २)
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई ३॥)
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन ३॥)
४३ पोल्ट्री फार्मिंग ४)
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री ४)
४५ पोल्ट्री सर्जन ४)

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशांत लिखित १५ पुस्तकें

१. आलू की खेती
२. टमाटर की खेती
३. गोभी की खेती
४. जीरा, धनिया, अजवाइन
५. तरकारियों की खेती
६. अच्छे बीज
७. अच्छी खाद
८. कपास की खेती
९. गन्ने की खेती
१०. फूल-फुलवारी
११. धान की खेती
१२. संतरे की बागबानी
१३. आम की बागबानी
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान
१५. तम्बाकू की खेती
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड)
१७. फलों की खेती
१८. तरकारी साग भाजी की खेती
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगायें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक २॥) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

महात्मा गान्धी ने पढ़ी 'उग्र'-लिखित—'चाकलेट'!

'यंग इण्डिया' में छपने को भेजी गयी ...लेट-आन्दोलन'-जनक की राय को रद्दी की ...ी के हवाले करते हुये लिखा :

"...मैंने पुस्तक आज खतम की। ...मन पर जो असर आप पर ...ा—नहीं हुआ है।
'मैं पुस्तक का हेतु शुद्ध मानता हूं। 'लेखक ने अमानुषी व्यवहार पर ...ा ही पैदा की है।"

—मो० क० गान्धी

• •

" 'उग्र' को पाकर हिन्दी साहित्य ने ...ा के श्री डी० एल० राय के जोड़ ...नाटककार पाया।"

—प्रेमचन्द

• •

"शंकर पुरी में तुक्कड़ों का मान ...ों को उग्रता अड़ीली भगवान 'दीन' ...की है।"

—महाकवि 'शंकर'

समाज के कलुओं को आईना दिखलाने वाली 'उग्र'-लिखित प्रसिद्ध-पुस्तकें

मनुष्यानन्द

अछूत-समस्या पर लिखे गये इस उपन्यास की भंगिन नायिका हिन्दी-साहित्य में अद्भुत है और अघोड़ी मनुष्यानन्द का चरित्र परम विस्मयकारी। दूसरा संस्करण। मूल्य ४) चार रुपये।

चाकलेट

अबोध बालकों के प्रति अमानुषी कामाचार के विरुद्ध कोलाहल-कारी कहानी-संग्रह जिसमें प्रसिद्ध श्री रामनाथ 'सुमन' का लिखा हुआ 'अप्राकृतिक-व्यभिचार का वैज्ञानिक विवेचन' भी दिया गया है। तीसरा संस्करण। मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपये।

शराबी

मद्य-निषेध पर लिखा गया अद्भुत उपन्यास। तीसरा संस्करण। मूल्य ३॥) साढ़े तीन रुपये।

कला का पुरस्कार

उपन्यासों के प्लाटों का मुँह मारने वाली कहानियाँ। अभी-अभी प्रकाशित। मूल्य २॥) ढाई रुपये।

उग्र-प्रकाशन, गऊघाट, मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)

तथा : आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६। राजकमल प्रकाशन १, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली। राजपाल एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक ध्यान दें

● विभिन्न राज्यों की सरकारों ने इधर पुस्तकों की सरकारी खरीद की सूचियाँ बनाते वक्त **प्रकाशन समाचार** के विभिन्न अंकों से पर्याप्त सहायता ली है, यह आपको, हमें विश्वस्त रूप से मालूम है। विश्व-विद्यालयों द्वारा खरीदी जाने वाली पुस्तकों की अधिकांश सूचियाँ भी इसी पत्र में प्रकाशित सूचनाओं के आधार पर बन रही हैं। ऐसे समाचार हमें पुस्तक-विक्रेताओं, विश्व-विद्यालयों के हिन्दी-प्राध्यापकों तथा पुस्तकालयों से मिलते रहते हैं।

● **प्रकाशन समाचार** में नव-प्रकाशित पुस्तकों की जो सूचियाँ छपती हैं, वे निःशुल्क, आप पर बिना किसी अनुग्रह के, छपती हैं। सब पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं तक पहुँचने वाले इस पत्र में आपकी सूचनाओं के प्रकाशित होने से आपके व्यवसाय को जो लाभ होगा, वह आपसे छिपा नहीं है।

● कृपया अपनी सूचनाएँ नियमित रूप से भेजते रहने का ध्यान अवश्य रखें। आपके निजी लाभ के अतिरिक्त इससे हिन्दी-संसार में नये प्रकाशनों की सम्पूर्ण सूची तैयार होने का महत्वपूर्ण कार्य भी हो रहा है।

● **प्रकाशन समाचार** का वार्षिक मूल्य केवल २॥) है तथा विज्ञापन की दरें इतने विस्तृत प्रचार तथा उपयोग के किसी भी पत्र की अपेक्षा कम हैं। ग्राहक बनिये इसमें नियमित रूप से विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइये तथा **प्रकाशन समाचार** जैसे महत्व के पत्र को सहयोग दीजिए।

व्यवस्थापक

'प्रकाशन समाचार'

१, फैज़ बाजार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक ७ :
: पूर्णाङ्क १९ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

लोक-सभा में पेश किये गए नये बजट से देश के प्रकाशन-व्यवसाय के लिए निस्सन्देह ही संकट-कालीन स्थिति पैदा दी गई है। कागज़, गत्ते और कपड़े पर दस प्रतिशत का जो उत्पादन-कर (Excise Duty) लगाया गया है, उससे पुस्तकों की लागत बढ़ जाना निश्चित है। पुस्तकों पर केन्द्र एवं राज्य की सरकारों की ओर से पहले ही क्या-क्या 'कर' नहीं लगे थे? पुस्तकों के पैकेटों पर डाक की दरें १ मई १९५३ से दुगुनी की जा चुकी हैं। कई-एक राज्यों में किताबों की बिक्री पर)। रुपया से)॥। रुपया तक 'बिक्री-कर' वसूल किया जाता है। नये रेलवे बजट में न्यूनतम भाड़े की दर को १) से बढ़ाकर १॥) और उस पर भी =) रुपया का सरचार्ज लगाने की घोषणा हुई है। डाक से बुक-पैकेट भेजने में बाधा पहले पड़ ही रही थी, अब रेल से किताबों के पार्सल भेजना भी नई दुश्वारी पैदा करेगा। इतने बोझों के नीचे पिसते हुए हमारे प्रकाशन-व्यवसाय को कागज़, गत्ते तथा जिल्दबंदी के लिए आवश्यक कपड़े पर १०% के नये 'कर' के कारण जिस मुसीबत का सामना करना पड़ेगा, उसका असर शीघ्र ही पुस्तकों की घटी हुई बिक्री में दीख पड़ेगा।

क्या हमारे देश की केन्द्र तथा राज्यों की सरकारें पुस्तकों के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन नहीं देना चाहतीं? केन्द्र तथा राज्यों की इस प्रकार की 'कर-नीति' से तो यही आभास होता है कि शायद हमारे आज के शासक लोक-शिक्षा की वृद्धि में दिलचस्पी नहीं रखते, शिक्षा के प्रचार को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं, अथवा 'कर' लगाने की घोषणाओं में और शिक्षा फैलाने की योजनाओं में कहीं समन्वय नहीं है। लोकतन्त्रीय समाज तथा राज्य-व्यवस्था के लिए जनता का शिक्षित होना परमावश्यक है, तथा अन्य सभ्य देशों की लोकतन्त्रीय सरकारें शिक्षा के चतुर्दिक् प्रचार के उद्देश्य से पुस्तक-व्यवसाय को सब प्रकार की सहूलियतें देती हैं। यह उन देशों की बात है जहाँ की जनता अधिकांश पढ़ी-लिखी है। हमारे देश में, जहाँ इसके विपरीत अधिकांश जनता अपढ़ है, किताबों के प्रचार की सम्भावनाओं को लगातार सीमित किया जा रहा है। ये नई-नई रुकावटें, ये टैक्स और ये ऐक्साइज़ ड्यूटियाँ किताबों पर नहीं, देश की शिक्षा पर चोट करती हैं। इस प्रकार के करों से राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना राष्ट्रीय जहालत में वृद्धि करने से कम नहीं है। हमारे आज के शासक शिक्षा के साधनों की राह में ऐसे रोड़े अटका के कुछ रकम चाहे इकट्ठी कर लें, एक दिन यह रकम बहुत दुखद और भारी साबित होगी।

केन्द्रीय सरकार के शिक्षा-विभाग का यह परम कर्तव्य है कि अन्य केन्द्रीय मन्त्रियों द्वारा अपनी-अपनी योजनाओं की पूर्ति में शिक्षा के प्रचार पर जो प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में आघात किए जा रहे हैं, उनसे शिक्षा के हेतु की सुरक्षा का प्रबन्ध करें। शिक्षा का माध्यम एकमात्र पुस्तकें ही हैं लेकिन पुस्तक-व्यवसाय आज बड़ी असहाय दशा में है। देश का प्रकाशन व पुस्तक-व्यवसाय बड़ी पूँजी के हाथों में नहीं है, घरेलू धन्धे के समान निहायत सीमित साधनों के सहारे चल रहा है। इस धन्धे को किसी प्रकार का भी सरकारी संरक्षण प्राप्त नहीं है; यूँ कहें कि शिक्षा के प्रचार के माध्यम के प्रति सरकार की दृष्टि नितान्त उपेक्षा की है। केन्द्र के शिक्षा-मन्त्री से हमारी प्रार्थना एवं अनुरोध है कि इस आड़े वक्त में प्रकाशन-व्यवसाय की सहायता के लिए वे हाथ बढ़ाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-कथा-माला

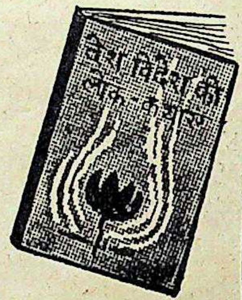

देश विदेश की लोक-कथाएं

इस पुस्तक में सरल भाषा में एक से एक बढ़िया १६ कहानियां और ४० से अधिक चित्र हैं।

रु.१

भारत की लोक-कथाएं

भारत के विभिन्न प्रान्तों की प्रसिद्ध २२ लोक-कथाओं के इस संग्रह में ५० चित्र भी हैं।

रु.१

मनोरंजक कहानियां (प्रेस में)

इस संग्रह में मजेदार हंसा-हंसा कर लोट-पोट करने वाली १६ कहानियां और ६० चित्र हैं।

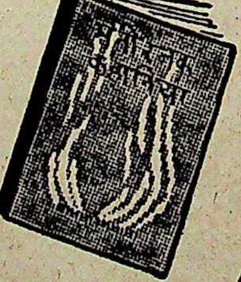

रु.१

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ'' के शिष्ट-मण्डल की

भारत-सरकार के मन्त्रियों से भेंट

खिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के निश्चय के अनुसार क शिष्ट-मण्डल प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से हस्पतिवार, २४ फरवरी, १६५५ को लोक-सभा के 'कमेटी-' में मिला। प्रधान मन्त्री से प्रकाशक संघ की मांगों पर, ाशन-व्यवसाय की विभिन्न समस्याओं पर तथा अन्य बन्धित प्रश्नों पर ४५ मिनट तक बातचीत हुई।

शिष्टमण्डल में लोक-सभा तथा राज्य-सभा के सदस्य श्री थिलीशरण गुप्त, श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, श्री ारसीदास चतुर्वेदी, श्री आर० के० मालवीय, श्री अमरनाथ द्यालंकार, श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री देवीदत्त पंत, श्री मलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स), श्री दीनानाथ राजपाल एण्ड सन्स), श्री प्रिमलानी (फेडरेशन आफ़ ब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इण्डिया के प्रति-धि), श्री जैनेन्द्र (पूर्वोदय प्रकाशन), श्री मार्तण्ड उपाध्याय स्ता साहित्य मण्डल), जनाब हामिद अली साहब (मक्तबा-ामिया लि०), श्री देवराज (राजकमल प्रकाशन), श्री बलवन्त-गल (प्रगति प्रकाशन), श्री कैलाशनाथ सन्त (ओरिएण्टल क डिपो) और श्री ओंप्रकाश (प्रकाशक-संघ के संयुक्त न्त्री) शामिल थे।

श्री जवाहरलाल नेहरू के सामने एक लिखित आवेदन स्तुत किया गया, जिसे इसी अङ्क में अन्यत्र उद्धृत किया जा ा है। आवेदन को पढ़ लेने के बाद उन समस्याओं पर चार आरम्भ हुआ जिनपर कि उसमें भारत-सरकार का ध्यान ाकृष्ट किया गया था। श्री नेहरू ने डाक की बढ़ी हुई दरों सवाल पर कहा कि वह शिष्टमण्डल के नज़रिये से सहमत इस बारे में वह श्री जगजीवनराम से मशविरा करेंगे। धान मन्त्री इस भेंट के लिए अपने साथ रेलवे मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा कांग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री श्रीमन्ना-रायण अग्रवाल को साथ ले आए थे। किताबों के पारसलों पर रेलगाड़ी के भाड़ों में कमी की मांग पर श्री नेहरू ने शास्त्री जी से कहा कि आप जवाब दीजिए। शास्त्री जी ने कहा कि इस प्रकार की मांग उनके सामने पहले नहीं पेश की गई।

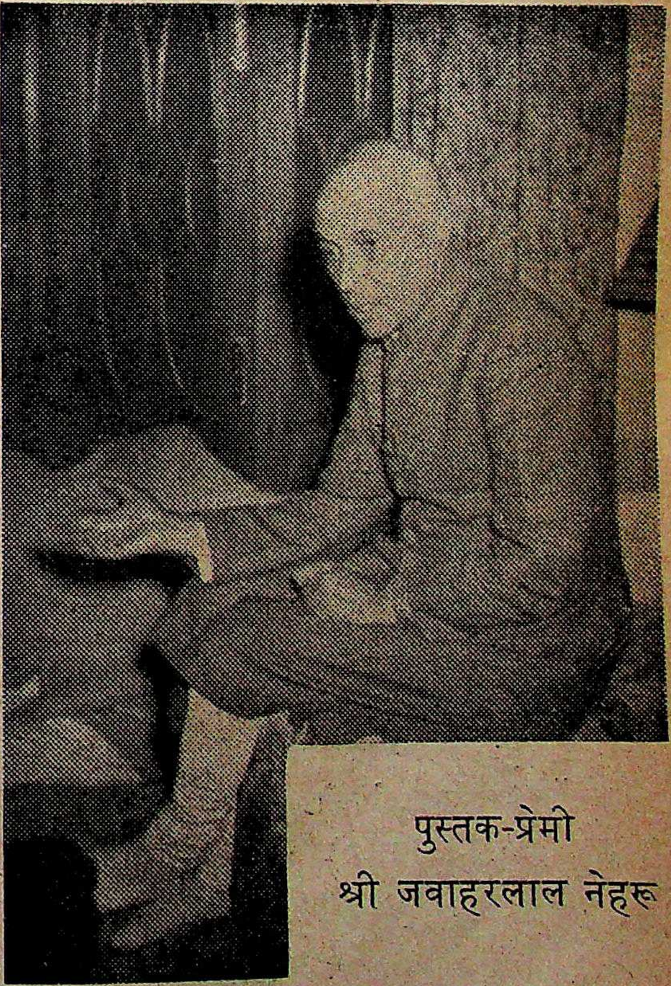

पुस्तक-प्रेमी
श्री जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेशनों पर बिकने वाली किताबों में अच्छी किताबों के अभाव के सवाल पर भी रेलवे मन्त्री का ध्यान खींचा गया। उन्हें बताया गया कि जिन लोगों को स्टेशनों पर बुक-स्टाल खोलने के ठेके मिले हैं, वे इतना अधिक कमीशन मांगते हैं और 'सेल और रिटर्न बेसिस' पर पुस्तकें चाहते हैं कि अच्छे प्रकाशक इनसे सम्बन्ध नहीं जोड़ सकते।

श्री नेहरू ने प्रकाशकों को सम्बोधन करते हुए कहा कि हिन्दी में अच्छी किताबें नहीं छप रही हैं। उन्हें बताया गया कि हिन्दी-प्रकाशन ने इधर बहुत प्रगति की है, आप नई किताबों को देख नहीं पाए हैं। उन्हें कहा गया कि प्रकाशक-संघ की ओर से हिन्दी के इधर के प्रकाशनों की नमूने की प्रतियाँ शीघ्र ही उनके देखने के लिए भेजी जायँगी।

हिन्दी-पुस्तकों की कम बिक्री के सवाल पर रौशनी डालते हुए श्री नेहरू ने कहा कि आप प्रकाशक लोग भाषा के सवाल पर गौर नहीं करते। जैसी भाषा का आप इस्तेमाल करते हैं, वह आपको या शायद आपके दोस्तों को ही समझ में आ सकती है। जाहिर है कि तब आपके दोस्त ही ऐसी किताबें खरीदेंगे। प्रयोग की जाने वाली भाषा ऐसी होनी चाहिए कि पढ़ने वालों की बड़ी संख्या आसानी से उसे समझ सके। श्री नेहरू को बताया गया हिन्दी पुस्तकों की कम बिक्री का कारण केवल भाषा की दुरूहता ही नहीं है, लोगों में पढ़ने की रुचि का अभाव भी है। एक और कारण नई पुस्तकों में प्रस्तुत किए जाने वाले विचारों से सम्बन्ध का है। 'कल्याण' और 'चन्दामामा' -से पत्र, जो पौराणिक गाथाओं को पेश करते हैं, भारी संख्या में बिकते हैं। यही बात 'रामायण' और 'गीता' की है। लेकिन जहाँ नये विचारों वाली किताबें आईं, उनकी बिक्री एकदम कम है। श्री नेहरू ने कहा कि मोटे हुरूफ़ में विज्ञान की सरल बातें छपनी चाहिएँ, जैसे 'बिजली की कहानी'। ऐसी किताबें जरूर बड़ी तादाद में बिक सकती हैं। उन्हें मालूम न था कि ऐसी कितनी ही किताबें देश में इस वक्त छप चुकी हैं। श्री नेहरू ने कहा कि यदि प्रकाशक अच्छी किताबें न प्रकाशित करेंगे तो सरकार स्वयं करेगी और जिन किताबों के दाम प्रकाशक ४) रखते हैं, उन्हें ।।) में बेचेगी। श्री नेहरू को बताया गया कि प्रकाशकों से सरकार की ऐसी होड़ बेमानी है। आज प्रकाशन के धन्धे में पूंजी नहीं लगी है; कहीं पर १ हज़ार, कहीं पर ५ अथवा १० हजार की लागत से प्रकाशन चल रहा है। लाख रुपये या अधिक पूंजी की तो बहुत कम संस्थाएँ हैं। इनसे होड़ में आने की बात सरकार के लिए अशोभन है।

श्री नेहरू से यह प्रार्थना की गई कि आप इस के आन्दोलन का श्रीगणेश कीजिए कि लोग किताबें पढ़ना 'फैशन' समझने लगें। उन्होंने जवाब दि 'फैशन' का, जैसे कपड़ों में, मतलब है कि एक प्र कपड़े न पहनकर दूसरे अन्दाज़ के कपड़े पहने जायँ। यहाँ तो सवाल नंगे न रहकर बदन को ही ढकने का है। किताबें पढ़ते ही नहीं हैं! सिनेमा और रेडियो का और प्रभाव बढ़ रहा है, और बढ़ेगा। फिर भी, उन्होंने कि मैं किताबों के पढ़ने के बारे में पहले भी बोलता आ आगे भी कहता रहूँगा।

श्री नेहरू ने शिकायत की कि प्रकाशक लेखकों का अ धिक शोषण करते हैं। उन्हें बताया गया कि यह कहानी हो चुकी है। जहाँ एक या दो हज़ार किताब छपती है, में दो या तीन सौ बिकती है, वहाँ कौन—किसका करेगा? यह ठीक है कि लेखक अधिक 'वोकल' हैं, कहा सुना जाता है। खुद श्री नेहरू की किताबें सस्ता मण्डल से छपी हैं, क्या उनका शोषण हुआ है? किसी भी सजग प्रकाशक से इस तरह की शिकायत नहीं है। आज प्रकाशक अपनी जिम्मेवारी समझते हैं।

इस शिष्टमण्डल ने यह मांग की थी कि वि आयात होने वाले कुरुचिपूर्ण साहित्य पर प्रतिबन्ध जाय। इस प्रकार के बुरे साहित्य के कुछ नमूने दिखाये गए जिन्हें देखकर उन्हें स्पष्ट अफ़सोस हुआ। जानना चाहा कि जिन अन्य देशों में ऐसे साहित्य के पर रोक लगाई गई है, उसका व्यौरा क्या है।

विभिन्न राज्यों पर किताबों की बिक्री पर जो कर है, उसके बारे में श्री नेहरू ने कहा कि बिक्री-कर का अधिकार नहीं है, फिर भी वे प्रादेशिक राज्य-मन्त्रि व्यक्तिगत रूप से लिखेंगे।

सोमवार, २८ फरवरी, १९५५ को अखिल भा हिन्दी-प्रकाशक संघ का एक शिष्टमंडल शिक्षा-मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबुल कलाम आजाद से उनके निवास-स्थान पर मिला। उनके सामने एक लिखित स्मारक-पत्र रखा गया जिस पर २५ मिनट तक बातचीत हुई। इस शिष्टमण्डल का नेतृत्व प्रकाशक-संघ के प्रधान श्री रामचन्द्र टण्डन कर रहे थे तथा निम्नलिखित अन्य लोग इसमें सम्मिलित थे : श्री मार्तण्ड उपाध्याय तथा श्री यशपाल जैन (सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली), श्री प्रिमलानी (फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इण्डिया के प्रतिनिधि), श्री वाचस्पति पाठक (भारती भण्डार, इलाहाबाद), श्री जयनाथ मिश्र (श्रीअजन्ता प्रेस लि०, पटना), श्री मदनमोहन पाण्डेय (ज्ञानपीठ लि०, पटना), श्री लछमनदास (रामनारायण लाल, प्रयाग), श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली), श्री दीनानाथ (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली), श्री कैलाशनाथ (ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली), श्री हामिद अली साहब (मक्तबा जामिया लि०, ओखला, दिल्ली), श्री त्रिपाठी (किताब महल, इलाहाबाद), श्री ओंप्रकाश तथा श्री देवराज (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली), श्री बलवन्त सहगल (प्रगति प्रकाशन, दिल्ली) तथा लोक-सभा के सदस्य श्री बनारसीदास चतुर्वेदी। मौलाना साहब से भेंट लोक-सभा में उनके कमरे में ३-३० बजे सायं होनी थी लेकिन अस्वस्थता के कारण इसे उनके घर पर ४ बजे के लिए मुल्तवी कर देना पड़ा और लोक-सभा के अन्य सदस्य, जो शिष्ट मण्डल में शामिल होना चाहते थे, न हो सके।

मौलाना आजाद ने आवेदन में कही गई माँगों को ध्यान पूर्वक सुना, तथा उनसे अपना समर्थन जाहिर किया। जो माँगें श्री नेहरू के सामने पेश की गई थीं, उनके अतिरिक्त दो नई माँगें शिक्षा मन्त्री-सामने रखी गई। एक थी देश के प्रकाशन-व्यवसाय की जाँच-पड़ताल करने के लिए एक सार्वजनिक कमीशन की मांग। मौलाना साहब को यह सुझाव पसन्द आया और इस पर गौर करने का उन्होंने आश्वासन दिया। दूसरी मांग में उनसे अनुरोध किया गया कि केन्द्र की तथा राज्यों की सरकारें पुस्तकों की खरीद 'टेंडर' मांगकर न किया करें। 'टेंडर' मांगने की अवस्था में अधिक-से अधिक कमीशन देने की जो होड़ लग जाती है, उससे अच्छी किताबें नहीं खरीदी जा सकतीं। अच्छी किताबों पर अधिक कमीशन नहीं दिया जा सकता। किताबों को एक ही 'इकाई' कहकर सामूहिक रूप से 'टेंडर' मांगना सिद्धान्ततः ठीक नहीं है क्योंकि हर किताब अपने में एक 'इकाई' होती है। प्रकाशक अथवा पुस्तक-विक्रेता जो उचित 'एजूकेशनल' कमीशन दें, उसे ही स्वीकार कर लेना चाहिए। किताबों पर दिया जा सकने वाला कमीशन लेखक, मुद्रण तथा प्रकाशन आदि के कई तत्वों पर आधारित होता है। 'टेंडर' के साधन द्वारा ज्यादातर घटिया किस्म की किताबों को ही सरकारी प्रश्रय मिलता है।

बातचीत के दौरान में मौलाना आजाद ने कहा कि लेखकों की ओर से उन्हें बराबर शिकायत पहुँचती रहती है कि प्रकाशक, विशेषतः हिन्दी के प्रकाशक, लेखकों का शोषण करते हैं तथा उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं देते। श्री रामचन्द्र टण्डन ने जवाब में शिक्षा-मन्त्री से कहा कि सम्भव है कभी प्रकाशकों के विरुद्ध लेखकों के शोषण की शिकायत में कुछ सचाई रही हो, और यह भी सम्भव है कि आज भी ऐसे कुछ दुर्व्यवहारी प्रकाशक हों, लेकिन प्रकाशक संघ के सदस्यों पर ऐसा आरोप नहीं लगाया जा सकता क्योंकि आज के ये प्रकाशक अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक हैं।

मंगलवार, १ मार्च, १९५५ को अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का एक शिष्टमण्डल संघ के प्रधान श्री रामचन्द्र टण्डन के नेतृत्व में रेलवे-मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री से उनके निवास-स्थान पर मिला।

प्रधान के अतिरिक्त इसमें श्री वाचस्पति पाठक, श्री मार्तण्ड उपाध्याय, श्री माधव (मोतीलाल बनारसीदास, बनारस) तथा श्री ओंप्रकाश सम्मिलित थे। रेलवे-मन्त्री के सम्मुख एक लिखित आवेदन रखा गया। श्री नेहरू से भेंट के समय श्री लाल बहादुर शास्त्री उपस्थित थे और शिष्टमण्डल की माँगों से परिचित थे। शास्त्रीजी ने इन माँगों से सहानुभूति प्रकट की। रेलवे-

[शेष पृष्ठ ४१० पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

हिन्दी-कथा-साहित्य श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की नवीनतम समीक्षा-कृति है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने प्रारम्भ से लेकर अब तक के हिन्दी-कथा-साहित्य की बड़ी ही मार्मिक आलोचना की है। इसमें जहाँ रवीन्द्र, बंकिम, शरत् आदि की कथा-कृतियों पर विचार किया गया है, वहाँ आप्टे, मामा वरेरकर आदि का उल्लेख करते हुए गोर्की, अनातोले फ्रांस, जेन ऑस्टिन, वर्जिनिया वुल्फ, फार्स्टर आदि विदेशी कथाकारों का विश्लेषण करते हुए हिन्दी कथा-साहित्य के प्राचीन-अर्वाचीन उल्लेखनीय कथाकारों की कृतियों पर अध्ययनपूर्ण समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। जहाँ प्रेमचन्द, प्रसाद और वृन्दावनलाल वर्मा की कृतियों पर प्रकाश डाला गया है, वहाँ जैनेन्द्र, यशपाल, 'उग्र', इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, 'अंचल' और देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' की कथा-कृतियों का भी विवेचन हुआ है। यह समीक्षा-ग्रन्थ अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी तथा छात्रों के लिए संग्राह्य है। क्राउन साइज की ३०६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लिमिटेड, बम्बई ४ से ४॥)** में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

कवि प्रसाद, आँसू तथा अन्य कृतियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध समीक्षक एवं अध्यापक श्री विनयमोहन शर्मा की विख्यात कृति है। उसका संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण हमारे सामने है। इसमें विवेकी समीक्षक द्वारा कवि प्रसाद और उनकी कविता पर तो साधारणतः विचार किया ही गया है, साथ ही 'प्रयोगवाद और प्रसाद', 'प्रसाद के सम-सामयिक कवि' ('भारतीय आत्मा', पन्त तथा 'निराला') शीर्षक दो सर्वथा नये अध्याय भी समाविष्ट कर दिये गए हैं। 'प्रसाद का नियतिवाद' तथा 'लहर' के सम्बन्ध में नई सामग्री जोड़ी गई है। परिशिष्ट में 'आँसू' पर विस्तृत टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। पुराने संस्करण की अपेक्षा इस बार पुस्तक बड़े आकार में अधिक पृष्ठ-संख्या के साथ प्रकाशि[त] की गई है। डिमाई साइज़ के २०० पृष्ठ[की] सुन्दर तथा सुमुद्रित यह पुस्तक **प्रतिभा प्रका[शन] लिमिटेड, वर्धा रोड, नागपुर से केवल चार[रुपये]** में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈ ◈

साहित्य विवेचन में हिन्दी के मर्मी आलोचक जगन्नाथप्रसाद मिश्र के १७ समीक्षात्मक लेखों का सं[ग्रह] प्रस्तुत किया गया है। 'साहित्य की वर्तमान धारा' के उनके समालोचनात्मक लेखों का यह दूसरा संग्रह है। साहित्य के विभिन्न पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला गया[है।] 'कला के सम्बन्ध में गांधीजी का दृष्टिकोण' शीर्षक लि[ख] इस पुस्तक में विशेष महत्त्व रखता है। पुस्तक में प्रका[शित] प्रायः सभी लेख यथासमय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रहे हैं। क्राउन साइज के १३४ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक **अजन्ता प्रेस लिमिटेड, पटना से २॥)** में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

साहित्यिक निबन्ध में श्री राजनाथ शर्मा के उच्चकोटि के साहित्यिक निबन्धों का आकलन है। पुस्त[क] लेखक ने हिन्दी साहित्य का इतिहास, हिन्दी भाषा[,] लिपि, हिन्दी साहित्य के विविध वाद, साहित्यालोचन विविध आदि ५ भागों में विभक्त करके हिन्दी-साहित्य[की] उसकी व्यापक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालने वाले निबन्ध हैं। प्रस्तुत पुस्तक एम० ए०, साहित्यरत्न, बी० विशारद, प्रभाकर आदि परीक्षाओं के परीक्षार्थियों के विशेष लाभप्रद है। डिमाई साइज के ४७६ पृष्ठ की पुस्तक **विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा से ७॥)** में सकती है।

◈ ◈ ◈

सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य-नाटक नामक में श्री सिद्धनाथ कुमार के 'सृष्टि की साँझ', 'लौह दे[वता'] 'संघर्ष', 'विकलांगों का देश' तथा 'बादलों का शाप' ५ काव्य-रूपकों का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इस[संग्रह] में समाविष्ट सभी नाटक रेडियो के लिए लिखे गए थे प्रायः सभी आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से समय-सम[य पर] प्रसारित होते रहे हैं। इनका एक नाटक 'वायस आफ[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिका' की हिन्दी सर्विस द्वारा आयोजित रेडियो रूपक प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ स्वीकृत हुआ था। 'कुमार' जी बिहार की नई प्रतिभा हैं और उनसे हिन्दी-साहित्य को बहुत आशाएँ हैं। डिमाई साइज के १७६ पृष्ठ की सुमुद्रित और अच्छी जिल्द वाली यह पुस्तक **पुस्तक मन्दिर, बक्सर (आरा)** से ४।।) में प्राप्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

संन्यासी और सुन्दरी श्री यादवेन्द्र नाथ शर्मा 'चन्द्र' का बौद्धकालीन वातावरण पर आधारित एवं मौलिक उपन्यास है। इसमें वासवदत्ता और भिक्षुक उपगुप्त के आकर्षण-विकर्षण, प्रेम और वैराग्य तथा यौवन से छलकते, भटकते भाव-सुमनों का अपूर्व गुलदस्ता सजाया गया है। इसमें जहाँ एक ओर प्रेम, यौवन, सौन्दर्य का भाव-समुद्र हिलोरें ले रहा है वहाँ गूढ़ दार्शनिक तत्त्व विवेचन, उच्चादर्श, संयम तथा जीवन के नैतिक पहलू का मंजुल वातावरण भी महक रहा है। लेखक की शैली में गद्य-काव्य का-सा मिठास, कल्पना तथा अनुभूति का सहज स्पर्श और गेय गीतों-जैसी सरसता है। क्राउन साइज के १६२ पृष्ठ की सुन्दर तथा आकर्षक मुख-पृष्ठ वाली यह सजिल्द पुस्तक **रामपुरिया प्रकाशन, कलकत्ता** से ३।।) में प्राप्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

बुज़दिल हिन्दी के विख्यात आलोचक श्री शिवदान सिंह चौहान तथा श्रीमती विजय चौहान द्वारा प्रस्तुत प्रसिद्ध जर्मन लेखक स्टीफैन ज़्विग के विश्व-विख्यात उपन्यास 'बिवेयर आफ़ पिटी' का हिन्दी अनुवाद है। अनुवादकों के मत में "यदि इतिहास की त्रिकालवर्ती विकास-धारा की सापेक्षता में देखा जाय तो 'बुज़दिल' के पात्र ही इस युग के सच्चे प्रतिनिधि हैं। 'बुज़दिल' में मूल्यों के विघटन का विज्ञापन नहीं, नये और उच्चतर मानवीय मूल्यों के निर्माण का कलात्मक प्रयास है।" अनुवाद की भाषा प्रांजल और शैली सरल तथा सुबोध है। क्राउन साइज के मोनो टाइप में मुद्रित ३७४ पृष्ठ का आकर्षक आवरण वाला यह उपन्यास **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** से ६) में मिलता है।

◈ ◈ ◈

चिता की लपटों से श्री शैलेश एम० ए० का नवीनतम सामाजिक उपन्यास है। इसमें लेखक ने समाज के विविध

'विज्ञापन'

कुछ आलोचकों का विश्वास है कि आधुनिक हिन्दी की काव्य-प्रतिभा वंध्य हो गई है! किन्तु जनकवि 'अलमस्त' विरचित

'उदयन'

का प्रकाशन उनकी इस धारणा के आगे एक प्रश्न चिह्न डाल देता है !!

प्रसिद्ध आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा का विचार है, "हमारी राय में यहाँ हर कविता स्वर्णपदक की हकदार है।"

और आचार्य श्री शिवपूजन सहाय कहते हैं, "मेरा विश्वास है कि जब प्रथम प्रयास में ही इतनी सफलता मिली है तो भविष्य में कवि द्वारा हिन्दी-साहित्य को और भी अनूठी कृतियाँ प्राप्त होंगी।"

कीमती आर्ट-पेपर पर नयनाभिराम मुखावरण ! चिकने कागज पर शुद्ध, सुन्दर, शानदार छपाई !!

तिस पर भी कीमत केवल एक रुपया !!!

प्रधान वितरक

प्रकाश पुस्तक भवन

प्रधान पथ, मोतिहारी

(चम्पारण, एन० ई० आर०)

शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं,

आर्डर अविलम्ब भेजें :

१. **कलाकार यशपाल :** ले० श्री शरद्चन्द्र जोशी
पृष्ठ लगभग १५० कीमत ३)

२. **मालवी के पाँच कवि :** ले० श्याम परमार, महेन्द्र त्रिवेदी
पृष्ठ १०० कीमत १)

३. **सासूजी रिसइग्या :** ले० श्रीनिवास जोशी
पृष्ठ १५० कीमत २)

४. Folk Art of Madhya Bharat :
By Shyam Parmar M. A. L. T.
& Mahendra Trivedi M. A.
Rs. 10/-

प्रकाशक

जन-साहित्य सदन,

२३-२४ जेल रोड, इन्दौर सिटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नों पर प्रकाश डाला है। इस उपन्यास में प्रेम और वासना का विश्लेषण अत्यन्त ही कलापूर्ण ढंग से किया गया है। क्राउन साइज के ३३६ पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास **नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ** से ४।।) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

मृत्युलोक भी श्री शैलेश एम० ए० का सामाजिक उपन्यास है। इसकी प्रत्येक घटना वास्तविकता की पृष्ठभूमि पर आधारित है। राजनीति का पुट भी आटे में नमक के समान इसमें दे दिया गया है। डॉ त्रिलोकीनारायण दीक्षित के शब्दों में इस उपन्यास के नायक "श्रीनाथ और सन्तोष दो भिन्न-भिन्न राजनीतिक विचार-धाराओं को लेकर प्रणय-क्षेत्र में अग्रसर होते हैं, परन्तु अन्ततोगत्वा मानववादी भावना से प्रेरित और अनुप्राणित होकर एक ही लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ते हैं।" इस उपन्यास में पाठकों को समाज की विविध समस्याओं के अनेक चित्र मिलेंगे। क्राउन साइज के न्यूजप्रिंट पेपर पर छपा १५६ पृष्ठ का यह उपन्यास **नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ** से २) में प्राप्त किया जा सकता है।

◈ ◈ ◈

'मझधार' श्री सच्चिदानन्द पाण्डेय का सामाजिक उपन्यास है। इससे पहले भी लेखक की 'अपना कौन', 'गुमराह,' 'बनते-बिगड़ते घर,' तथा 'दाँव पेच' आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। **मझधार** की भाव-भूमि और कथावस्तु सुन्दर और पठनीय है। क्राउन साइज के न्यूजप्रिंट पेपर पर मुद्रित [illegible] पृष्ठ का उपन्यास **नवयुग ग्रन्था[गार],** लखनऊ से २।।) में प्राप्त किया जा सकता है।

◈ ◈ ◈

'पतन की राहें' श्री ब्रह्मनारायण शर्मा 'विकल' [का] नवीनतम उपन्यास है। इसमें पाठक देखेंगे कि कई परि[वार] पतन की गोद में कैसे विलीन हो गए जबकि उन[की] नसों में पवित्रता का रक्त दौड़ रहा था। पुस्तक की भा[षा] और शैली सरल है। श्री रूपनारायण पाण्डेय के शब्दों [में] "आधुनिक युवक-वर्ग में इसका समादृत होना कोई आश्च[र्य] की बात न होगी।" क्राउन साइज के १४४ पृष्ठ की [यह] पुस्तक **नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ** से २) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

बंगला की आधुनिक प्रेम कहानियाँ में बंगला साहि[त्य] के आधुनिक १५ कहानीकारों की उत्कृष्ट प्रेम कहानियों [का] संकलन प्रस्तुत किया गया है। इसका सम्पादन श्रीमती मृदु[ला] देवी ने किया है। इसमें समाविष्ट कहानियों में स्त्री त[था]

[पृष्ठ ४०७ से आगे]

स्टेशनों के बुक स्टालों के बारे में उन्होंने कहा कि जब तक 'कण्ट्रैक्ट' की अवधि समाप्त नहीं हो जाती, वे अधिक दखल न दे सकेंगे लेकिन फिर भी जहाँ तक सम्भव है, वे प्रयत्नशील हैं कि स्टेशनों पर अच्छा साहित्य उपलब्ध हो सके। रेलभाड़े में किताबों के पार्सलों से अन्न, नमक और गुड़ के समान व्यवहार किया जाय, और भाड़ा न्यूनतम रखा जाय, इस मांग पर उन्होंने सहानुभूतिपूर्ण विचार करने का वायदा किया। इनके सम्मुख रखा गया आवदेन भी इस अंक में अन्यत्र उद्धृत किया जा रहा है।

यदि आप उत्तर भारत में अपने प्रका[-]शनों, पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की अधिक खपत चाहते हैं, अथवा अपनी कोई महत्वपूर्ण अथवा रोचक रचना प्रकाशित करना चाहते हैं तो

शक्ति प्रकाशन
मॉडल टाउन, लुधियाना
की सेवाओं से लाभ उठाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वेष की मृदुल प्रणय-लीला का जो वर्णन किया गया है, वह हिन्दी के पाठकों के लिए मनोरंजक तथा हृदयस्पर्शी सिद्ध होगा। सब कहानियों के अन्त में श्रीनारायण झा ने सभी लेखकों का परिचय भी दे दिया है। इस प्रकार के प्रयत्न हिन्दी के पाठकों में आधुनिक बंगला साहित्य के प्रति रुचि जगाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त करेंगे, हमें ऐसी आशा है। डिमाई साइज के एंटिक पेपर पर मुद्रित २१६ पृष्ठ की यह पुस्तक **अखण्ड भारत प्रकाशन, कलकत्ता** से ४।।) में खरीदी जा सकती है।

◆ ◆ ◆

हँसते हैं रोते हैं में श्री हरिशंकर परसाई की १५ हास्यरस प्रधान कहानियों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। प्रायः सभी कहानियाँ हमारे सामाजिक जीवन पर करारा व्यंग्य करती-सी लगती हैं। लेखक के शब्दों में "कहानियाँ सब अच्छी हैं, बहुत अच्छी हैं। शैली के मामले में मैं किसी की नकल करने से साफ बच गया हूँ। पद-चिह्न अगर कहीं किसी के दीख गए हैं तो उनको बचाकर निकला हूँ कि कहीं मेरे पैर उन पर न पड़ जायँ।" हम भी इससे सहमत हैं। पाठक को इसमें पढ़ने, हँसने और मनन करने की पर्याप्त सामग्री मिल सकती है। क्राउन साइज के न्यूज प्रिंट पेपर पर छपी १०१ पृष्ठ की यह पुस्तक **सुभाष प्रकाशन मन्दिर, जबलपुर** से १।।) में खरीदी जा सकती है।

◆ ◆ ◆

हिन्दी साहित्य रत्नाकर में डॉक्टर विमलकुमार जैन ने हिन्दी साहित्य के चन्द बरदाई, विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, मीरा, तुलसी, केशव, बिहारी, भूषण और देव आदि ११ प्राचीन कवियों के काव्य पर विशद प्रकाश डाला है। डॉक्टर जैन का हिन्दी के प्राचीन काव्य का अध्ययन अत्यन्त गम्भीर और व्यापक है, अतः उनकी इस कृति में उनके ज्ञान का उचित परिशीलन मिलता है। यह पुस्तक छात्रों तथा अध्यापकों के लिए संग्राह्य एवं पठनीय है। डिमाई साइज के २०२ पृष्ठ की सुमुद्रित और सजिल्द यह पुस्तक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** से पाँच रुपये में प्राप्य है।

आलोचना

शीघ्र प्रकाशित हो रहे
१५वें अंक
की विषय-सूची

★ निबन्ध

मानवतावाद : साहित्य का स्थायी मूल्य : डॉ० रांगेय राघव

हिन्दी का अपना समीक्षा-शास्त्र : संभावनाएँ : डॉ० नगेन्द्र

„ **आवश्यकता :** डॉ० भागीरथ मिश्र

हिन्दी के सामाजिक कथा-नायकों का विकास : राजेन्द्र यादव

★ प्रस्तुत प्रश्न

हिन्दी का भावी रूप : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० सुनीतिकुमार चैटर्जी, श्री सुमित्रानन्दन पन्त

★ अनुशीलन

दृश्य काव्य के हास्य तत्व : डॉ० रामकुमार वर्मा

कान्हड़ के प्रबन्ध का पाठ : डॉ० माताप्रसाद गुप्त

★ मूल्यांकन

नयी कविता : सी० बी० राव। **तीन नये काव्य संग्रह :** डॉ० जगदीश गुप्त। **वर्षान्त के बादल :** गंगाप्रसाद मिश्र। **हिन्दी कहानियाँ :** देवराज उपाध्याय। **छोटी-बड़ी कहानियाँ :** वीरेन्द्रकृष्ण माथुर। **दो कहानी संग्रह :** मोहन 'राकेश'। **टूटे काँटे :** उदयशंकर भट्ट। **चाँदनी के खण्डहर :** डॉ० शैलकुमारी। **कठपुतली :** जनार्दन मुक्तिदूत। **बाजत आवे ढोल :** रांगेय राघव। **तीन उपन्यास :** गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश। **ओ मेरे सपने :** विजयेन्द्र स्नातक। **सृष्टि की साँझ :** डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल। **परिव्राजक की प्रजा :** विश्वम्भर मानव। **तेलुगु साहित्य का इतिहास :** बालशौरि रेड्डि। **छायावाद की काव्य साधना :** अ० प० दीक्षित। **काव्य में प्रकृति चित्रण :** उदयशंकर भट्ट। **द्विवेदी पत्रावली :** डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।

वार्षिक मूल्य १२)। प्रत्येक अंक का ३)

राजकमल प्रकाशन,
१, फैज बाजार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

साहित्य साधना की पृष्ठभूमि

लेखक : श्री बुद्धिनाथ झा 'कैरव'

आलोचना साहित्य में अनुपम देन : मूल्य ६) मात्र

"पुस्तक में छः अध्याय हैं—साहित्य-तत्त्व-विमर्श, काव्य-तत्त्व-विमर्श, अलंकार-तत्त्व-विमर्श, रस-तत्त्व-विमर्श, दृश्य-काव्य-तत्त्व-विमर्श, कथा-साहित्य-विमर्श। इस गम्भीर ग्रन्थ-प्रणयन के लिए 'कैरव' जी धन्यवाद के पात्र हैं। यह पुस्तक निस्संदेह विश्व-विद्यालय में अध्ययन के लिए रखी जा सकती है, क्योंकि इसमें मूल-ग्राही सिद्धान्त-विवेचन है।"

—*कल्पना*, हैदराबाद।

आधुनिक-काव्य

स्वर्णोदय : श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' १।)
अशोक : श्री रामदयाल पाण्डेय १॥)
कबीर : श्री यमुनाप्रसाद चौधरी 'नीरज' १।)
ईंट और पत्थर : प्रो० कपिल १)

नाटक

पुनरावृत्ति : श्री हंसकुमार तिवारी १।॥)
कसाई : श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी' २)
पंचामृत : श्री अनूप १।)
जीवन-कण : श्री रामदीन पाण्डेय १)

समालोचना

बारह बातें : प्रो० कपिल १)
कविता कानन : श्री रामखेलावन पाण्डेय १॥)

ग्रामोपयोगी साहित्य

साग सब्जी की खेती : पं० वासुदेव पाण्डेय २)
पशुओं का अनुभूत इलाज : श्रीरंग तिवारी १॥)
पेड़ पौधों का संसार : रामनन्दन सिंह २।)
मनुष्य और भूमि : ॥=)

उपन्यास

अनोखा आदमी : पं० छविनाथ पाण्डेय ३)
अस्पताल में : ,, ,, ३)
अन्धकार : ,, ,, ३)
बदलती दुनिया : श्री सुरेश्वर पाठक २॥)
मीर कासिम : श्री मदनलाल खेमका २।)

कहानियाँ

मृत्यु के मुँह में : श्री छविनाथ पाण्डेय १।=)
बोलती तस्वीरें : श्री शिवचन्द्र प्रतापनारायण १)

राजनीति

हम और हमारा समाज : श्री सुरेश्वर पाठक २)
भूला हुआ भारत : पं० जवाहरलाल नेहरू १)

गांधी-साहित्य

राष्ट्रपिता : श्री छविनाथ पाण्डेय ॥≡)
गांधी की गूँजती आवाज : अखिल ।≡)
बापू की सीख : श्री सुरेश्वर पाठक ।≡)
बापू की बातें : ,, ,, ॥=)
बापू को जानो : ,, ,, ॥≡)

कथा-कहानी

मराठी गाथाएँ : क्षीर सागर ॥)
मलयालम कहानियाँ : कृष्ण गोपालन ॥)
विदेशी गाथाएँ : सदानन्द झा ॥।)
सुनहले पंख : ,, ॥)
हमारे युग-पुरुष : श्री सुरेश्वर पाठक १)
आदि मानव : ,, ॥।)

सामान्य ज्ञानवर्द्धक

समुद्र आत्मकथा : श्री नरेन्द्र बी० ए० ॥)
गुलिस्ताँ : अखिल ॥)
तुलसी दल : श्री सुरेश्वर पाठक ।=)
हमारी गंगा : ,, ,, ।=)

ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक किस प्रकार रुपया गँवाते हैं ?

यह लेख 'बुक बाइन्डिग एण्ड बुक प्रोडक्शन' (अमेरिका) शीर्षक मासिक पत्र के नवम्बर १९५४ के अंक से साभार उद्धृत किया जा रहा है।

अक्तूबर १९५४ में अमेरिका में पुस्तक-प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं के प्रतिनिधियों की एक बैठक फिलिप जे० कोबर (एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका) के सभापतित्व में हुई। इस सभा में प्रकाशकों द्वारा रुपया गँवाने के निम्नलिखित कई कारण बताये गए :

(१) पुस्तक समाप्त होने से पूर्व ही लेखक को बहुत ज्यादा पेशगी रुपया दे देना।

(२) रायल्टी की नीति असाधारण रूप से उदार बनाना।

(३) पेशगी रायल्टी दे देना।

(४) प्रति पुस्तक कम कीमत रखने के लिए १०,००० प्रतियाँ प्रकाशित करना जब कि बाजार में अधिक-से-अधिक ३००० प्रतियों की खपत हो सकती है।

(५) अव्यवस्थित पाण्डुलिपि से छपाई शुरू करना।

(६) पुस्तक का मूल्य ३ रुपया तय करना और फिर बिक्री का खयाल रखते हुए चार रंग का जैकेट छपवाना।

डिज़ाइनर के दृष्टिकोण से निम्नलिखित कुछ अन्य कारण उपर्युक्त सूची में जोड़े गए :

(१) प्रकाशक का अधिक-से-अधिक समय बरबाद करने के लिए बहस-मुबाहसा और जो भी बन पड़े करना।

(२) पुस्तक को बिलकुल नये तरीके से निकालने के लिए काग़ज़, छपाई और कला की दृष्टि से समस्त सम्भावनाओं पर विचार करना।

(३) आसानी से न उपलब्ध होने वाली और यदि उपलब्ध तो महंगी सामग्री काम में लाने का वचन दे देना।

(४) ऐसा टाइप पसन्द करना जो स्थानीय बाजार या देश में मुश्किल से मिल पाता हो।

(५) प्रकाशक से छपाई और जिल्द बँधाई के असाधारण तरीके काम में लाने के लिए अनुरोध करना।

(६) पुस्तक प्रकाशन के कला-सम्बन्धी पहलू के बारे में स्पष्ट मत निर्धारित न कर सकना।

कम्पोजीटरों की ओर से एक ऐसे ग्राहक की कहानी बताई गई कि जिसके कारण प्रकाशकों को रुपया गँवाना पड़ता है। ऐसा ग्राहक हर आकार प्रकार के कागज़ पर दोनों ओर कॉपी लिखता है, हाशिया नहीं छोड़ता, पैराग्राफ नदारद होते हैं, रद्दोबदल पहले पेंसिल से और फिर लाल स्याही से की गई होती है और कहीं भी प्रेस के लिए किसी तरह की हिदायत नहीं होती। और फिर वह चाहता है कि जल्दी से गेली प्रूफ देखने को मिल जायँ। प्रेस जब जल्दी से प्रूफ तैयार करता है, तब ग्राहक महोदय अपनी जगह पर नहीं होते, किसी खेल-तमाशे में गए होते हैं। जब लौटते हैं तो सिर्फ एक सरसरी निगाह डालने के अलावा अच्छी तरह प्रूफ पढ़ने का उनके पास समय नहीं होता। और फिर तब तक प्रूफ पर खास गौर नहीं दिया जाता जब तक कि प्रेस आखरी 'ओ० के०' की मांग नहीं करता। अब ग्राहक महोदय सचमुच ध्यान देते हैं और इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि शीर्षक १।४ पौइंट पीछे हटना चाहिए, बीच में रखे गए उप-शीर्षक बाईं तरफ होने चाहिएँ, दोबारा कम्पोज हुआ "मैटर" एक एम के बजाय दो एम होना चाहिए। ग्राहक द्वारा सुझाये गए परिवर्तनों के अनुसार दोबारा पेज सेट किये जाते हैं।

और अब जाकर ग्राहक महोदय तय करते हैं कि छपाई 'ऑफसेट' की होनी चाहिए। अन्त में, सब-कुछ हो जाने के बाद, जब उन्हें अतिरिक्त सेवाओं के लिए बिल पेश किया जाता है, तो अक्सर वह कहते सुने जाते हैं, "यह बिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस बात का है ? इसका क्या मतलब है ?"

मुद्रक का दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए कहा गया कि प्रकाशक द्वारा रुपया न गँवाने का एक तरीका यह है कि सबसे पहले जिल्दसाज के साथ बैठकर उन समस्याओं पर विचार करना चाहिए जिनका उसे सामना करना है। कहा गया कि अक्सर प्रकाशक बिक्री में, न कि पुस्तक के उत्पादन के खर्च में, रुपया गँवाते हैं।

अन्त में कहा गया कि स्वतःचालित मशीनों पर तैयार न की जा सकने वाली पुस्तकों की योजना बनाकर हाथ के महंगे काम या ऐसी ही मशीन पर काम करवाना प्रकाशकों द्वारा रुपया गँवाने का एक अन्य कारण है। उदाहरण के लिए फोल्डिंग मशीनें हर साइज की किताबों के लिए नहीं होतीं। यदि प्रकाशक एक सुन्दर और आम तौर पर काम में आने वाला साइज अपना ले तो वह मशीन सम्बन्धी व ऐसी अन्य समस्याएँ दूर कर सकता है।

भारी कागज की सिलाई में भी कई समस्याएँ आ खड़ी होती हैं। बीच-बीच में सूई टूट जाती है। सूई बदलने में समय और पैसा दोनों खर्च होते हैं।

पुस्तक के कवर का कपड़ा चुनने पर भी काफी जोर दिया गया। जिल्दसाज की दृष्टि से प्रकाशकों द्वारा रुपया गँवाने का सबसे बड़ा कारण पैकिंग में है। गत्ते के अलग अलग बक्सों में रखी हुई किताबों पर अलग से कागज चढ़ाना अनावश्यक है।

प्रकाशन समाचार
के
दो विशेषांक

—सत्साहित्य सूची विशेषांक—

जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक तथा बाल-प्रौढ़ोपयोगी साहित्य के अतिरिक्त अन्य विषयों की पुस्तकों की सूची प्रकाशित की गई है :

पृष्ठ संख्या १६२ मूल्य १)

उपन्यास—नाटक—कहानी—सूची—विशेषांक

जिसमें इन्हीं विषयों की सूची प्रकाशित हुई है

पृष्ठ संख्या १३२ मूल्य १)

: पुस्तक-विक्रेताओं के लिए अतीव उपयोगी :

प्रकाशन समाचार, १, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

हमारी प्रकाशित पुस्तकों पर

पुस्तकालयों को विशेष सुविधा

[केवल तीन माह के लिए]

उपन्यास

१. विराट की पद्मिनी :	वृन्दावनलाल वर्मा
२. नौजवान :	गो० व० पंत
३. प्रतिमा :	गो० व० पंत
४. नाभाग :	उमाशंकर बहादुर
५. मृत्युलोक :	अनन्तमिश्र प्रबुद्ध
६. अमर बापू :	कमलापति प्रधान

काव्य

१. चिरस्पर्श :	केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'
२. उषा (सचित्र) :	स्व० शिवदास गुप्त
३. जीवन रेखायें :	नरेन्द्र
४. हृदय का भार :	दीनानाथ व्यास

ग्रामोपयोगी

१. खेती की करामातें :	श्री व्यथित हृदय
२. हमारे गाँव और किसान :	श्री देहाती एम० ए०
३. गाँव की बातें :	,, ,,
४. शरीर और स्वास्थ्य :	डॉ० नवलकिशोर

आलोचनात्मक

१. बिहारी दर्शन :	लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी
२. दिग्भ्रमित राष्ट्रकवि :	प्रो० कामेश्वर शर्मा

[दिनकर के समस्त काव्य ग्रन्थों की बृहत् आलोचना]

३. छायावाद : रहस्यवाद का रहस्य :	डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
४. हुंकार : एक समीक्षा :	श्री शिवचन्द्र शर्मा

बालोपयोगी

१. यही मेरी कहानी है :	सं० श्यामवदन पाठक
२. मौलाना :	ज्योतिलाल भार्गव
३. रामानुज :	नलिनीमोहन सान्याल
४. सवारियों की कहानियाँ :	श्यामवदन पाठक
५. बच्चों के बापू :	ज्योतिलाल भार्गव
६. साहस और जीवट की कहानियाँ :	प्रो० हरदेवी मलकानी
७. सेवाग्राम :	ललितप्रसाद श्रीवास्तव

: कमीशन की दर २०% :

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल

[हिन्दी संसार की समस्त कृतियों का प्राप्ति-स्थान]

मछुआ टोली, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ फरवरी, १६५५

प्रधान मन्त्री को दिया गया आवेदन

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के तत्त्वावधान में यह सम्मिलित माँग भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से की जा रही है। इस माँग को पेश करने में साहित्यिकगण, लोक सभा के सदस्य, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के प्रकाशक और फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसियेशन (इण्डिया), बम्बई, शरीक हैं।

सम्मिलित माँग नीचे लिखे अनुसार है :

(१) १ मई, १६५३ से पुस्तकों के पैकेटों पर भारतीय डाक-दर इतनी अत्यधिक है कि वह वास्तव में ज्ञान पर एक कर के रूप में है।

उक्त तारीख से भी पहले पुस्तक-पैकेटों की डाक-दर इंग्लैंड, अमेरिका और कैनेडा जैसे अन्य सभ्य देशों की तुलना में बहुत अधिक थी। साक्षरता और शिक्षा दोनों में पिछड़े होने के कारण भारत में पुस्तकों के आने-जाने पर सुविधाजनक डाक-दर होनी चाहिए थी। वर्तमान अनुसूची के निर्धारण में इस बात की उपेक्षा की गई है और सरकारी कार्यवाहियों के कारण देश में शिक्षा के प्रचार में गम्भीर बाधा उपस्थित हुई है। यद्यपि सरकार ने देश में डाक-सुविधाओं का विस्तार किया है, पर जहाँ तक पुस्तकों के सस्ते वितरण का प्रश्न है, ये सुविधाएँ कारगर साबित नहीं हुई।

भारत में पुस्तक-प्रकाशन को एक नव-जात उद्योग समझा जाना चाहिए और इस कारण उसे सरकार से प्रोत्साहन मिलना चाहिए। लेकिन मौजूदा डाक-दर तो इस उद्योग की जड़ों पर ही आघात कर रही है और इससे छपाई के सम्बन्धित उद्योग पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिसकी उन्नति में सरकार ने, प्रसन्नता की बात है, कि उचित कदम उठाया है।

मौजूदा दर और साथ ही अनिवार्य रजिस्ट्रेशन और मनीऑर्डर कमीशन के कारण १२ आने की किताब की कीमत पाठक के पास पहुँचते-पहुँचते प्रायः दोगुनी हो जाती है और इस तरह ऐसी खरीद पाठक के लिए प्रायः निषिद्ध ही हो जाती है। यह भी एक विचित्र बात है कि इंग्लैंड से भारत आई हुई पुस्तक पर जो डाक-दर लगती है, वह भारत में एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाने वाली पुस्तक की डाक-दर से कम है।

इस विषय में :

(क) पहला कदम यह होना चाहिए कि पुस्तकों की डाक-दर, कम-से-कम १ मई, १६५३ के स्तर पर लाई जानी चाहिए।

(ख) पुस्तक के पैकेटों के लिए रजिस्ट्रेशन अनिवार्य नहीं होना चाहिए।

(ग) रजिस्ट्री बिना वी० पी० पी० की प्रथा पुनः चालू की जानी चाहिए।

(२) हमारे देश के कई राज्यों में पुस्तकों पर बिक्री-कर लगाया जाता है, जो कि पुस्तकों के व्यापक वितरण में बाधा उपस्थित करता है। गत महायुद्ध के अति आपत्तिकाल में भी, जब कि ब्रिटिश सरकार कर-संग्रह के हर साधन पर विचार कर रही थी, इंग्लैंड में पुस्तकें क्रय-कर के दायरे से बाहर रखी गई थीं।

आज एक नये, साक्षर भारत के निर्माण-काल में यह आवश्यक है कि जनता के हाथों में अधिकाधिक पुस्तकें पहुँचें। यद्यपि बिक्री-कर केन्द्रीय विषय नहीं है, पर प्रधान-

[शेष पृष्ठ ४२४ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

उपन्यास, कहानियाँ

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)
दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ३)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
अतीत के कंपन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंचप्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)

ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ६)
केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि : ४)
करलक्खण [सामुद्रिक शास्त्र] : ।।।)

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक

भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए०
अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन साहित्याचार्य
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी
जैन शासन : पं० सुमेरचन्द्र दिवाकर

उर्दू-शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

विविध

हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन
द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद
ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
रजतरश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार वर्मा
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-मन्त्री को दिया गया आवेदन

) अखिल-भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का यह प्रति
धि-मण्डल केन्द्रीय शिक्षामन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद
ध्यान भारत में प्रकाशन-उद्योग और पुस्तक-व्यवसाय द्वारा
नुभव की जा रही कठिनाइयों की ओर आकर्षित करता है।
धिकांश कठिनाइयों को केवल सरकारी कार्यवाही द्वारा ही
र किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में शिक्षामन्त्री ही एक-
त्र उपयुक्त अधिकारी हैं जो अन्य केन्द्रीय मन्त्रालयों और
ज्य-सरकारों पर दबाव डाल सकते हैं कि वे पुस्तक-व्यवसाय
वास्तविक कठिनाइयों को दूर करें। पुस्तक-व्यवसाय भारत
शिक्षा और ज्ञान के प्रसार का प्रमुख साधन है।

(२) १ मई १९५३ से लागू की गई पुस्तकों पर बढ़ी
डाक-दरों ने पुस्तक-व्यवसाय और सामान्य पाठकों को
कसान पहुँचाया है। वास्तव में वे इतनी असाधारण रूप
ऊँची है कि सचमुच में ज्ञानोपार्जन पर कर हैं। १ मई
९५३ से पहले भी दो पौण्ड वजन के पुस्तक-पैकेटों पर
क-दरें अन्य देशों, उदाहरणार्थ ब्रिटेन, अमेरिका और केनाडा
तुलना में भी बहुत ऊँची थीं। भारत में आज रजिस्ट्री के
ना पुस्तक-पैकेट पर एक रुपये की कीमत के डाक-टिकट
गाने पड़ते हैं जब कि भारत से अपेक्षाकृत धनाढ्य देशों में
शुल्क कम है। इतने ही वजन के पुस्तक-पैकेट पर
क-दर ब्रिटेन में आठ आने, अमरीका में ९ आने १ ३/२ पाई
र केनाडा में १२ आने ११ पाई है। "कौल फेजल" पुस्तक
, जो कि स्वयं मौलाना साहब द्वारा लिखी गई है, और
सका मूल्य १॥) है, वी० पी० पी० द्वारा भेजने पर १२ आने
गते हैं: ३ आने डाक टिकट, ६ आने अनिवार्य रजिट्रेशन,
आना वी० पी० पी० शुल्क, और २ आने मनीआर्डर
ल्क। शिक्षा और साक्षरता की दृष्टि से भारत पिछड़ा हुआ
होने के कारण पुस्तकों के विनिमय पर रियायती डाक-दरों की
आवश्यकता स्पष्ट है। पुस्तक-पैकेटों पर वर्तमान डाक-दरों को
निर्धारित करते समय इस बात को नजर-अन्दाज किया गया
है। डाक-विभाग की इस उपेक्षा ने देश में शिक्षा-प्रसार को
भारी क्षति पहुँचायी है। देश में डाक के सुभीतों के विस्तार
पर अब सरकार ध्यान दे रही है, लेकिन जहाँ तक पुस्तकों के
सस्ते वितरण का सम्बन्ध है, पुस्तक-व्यवसाय को सुभीता मिलने
के स्थान पर अधिकाधिक कठिनाई ही पेश हो रही है।

भारत में पुस्तक-व्यवसाय को नवजात उद्योग के संरक्षण
प्राप्त होने चाहिएँ, और इसे सरकार की ओर से प्रोत्साहन
भी मिलना चाहिए। लेकिन प्रचलित डाक-दरें उसकी जड़ों
पर ही आघात करती हैं। ऐसी उपेक्षा के कारण पुस्तक-उद्योग
से सम्बन्धित अन्य उद्योगों पर, जिसमें मुद्रण-व्यवसाय भी
सम्मिलित है, प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है जब कि सरकार
इसे उन्नत करने की दिशा में कदम भी उठा रही है।

(३) अनेक राज्य सरकारें पुस्तकों पर बिक्री-कर भी लेती
है जो कि उनके विस्तृत वितरण में रुकावट पैदा करता है।
पुस्तकों को अति आवश्यक वस्तु न समझने के कारण यह
कर उन लोगों के लिए बाधक हो जाता है जो पुस्तकों पर
थोड़ा-बहुत धन व्यय करते हैं। गत महायुद्ध के अति आपत्ति-
काल के दिनों में भी, जब कि ब्रिटिश सरकार कर-संग्रह के हर
साधन पर विचार कर रही थी, इंग्लैण्ड में पुस्तकों पर
क्रय-कर नहीं लगाया गया था। यद्यपि बिक्री-कर केन्द्र का
विषय नहीं है, शिक्षा-मन्त्री इस कर को समाप्त करने के लिए,
जो कि उनके राजस्व में थोड़ी-सी ही बढ़ोतरी करता है, राज्य-
सरकारों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं।

(४) पुस्तक-व्यवसाय और जन-शिक्षा-आंदोलन को सस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारी प्रोत्साहन देने के लिए पुस्तकों पर रेलवे द्वारा वसूल किया जाने वाला भाड़ा भी कम-से-कम कर देना चाहिए। पुस्तकों पर रेल-किराया कम करने की दलील में काफी वजन है। लेकिन यह चिन्ता का विषय है कि जब तक शिक्षा मन्त्रालय हस्तक्षेप नहीं करता, नए वित्तीय वर्ष से पुस्तकों पर लिया जाने वाला रेल-भाड़ा बढ़ाये जाने की घोषणा हुई है। हाल ही लोकसभा में रेलवे बजट प्रस्तुत करते हुए रेलवे मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने २० मन से कमके वजन के भेजे हुए माल पर (और पुस्तकों के बण्डल इससे अधिक वजन के कभी नहीं होते) १) से१।।) और ऊपर से १२$\frac{१}{२}$ प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क कर दिया है। खाद्यान्न, नमक, और गुड़ इसके अपवाद हैं। इन आवश्यक वस्तुओं के साथ से पुस्तकों को भी इस प्रस्तावित वृद्धि छूट मिलनी चाहिए।

(५) आज भारी तादाद में ऐसी पुस्तकें हमारे देश में निर्बाध रूप से आयात की जा रही हैं जो हमारे नैतिक और सामाजिक आचरण के लिए हानिप्रद हैं। ऐसी पुस्तकें अधिकांशतः अमेरिका से ही आती हैं। अनेक सरकारों ने, जैसे बर्मा और न्यूजीलैण्ड ने, ऐसे अश्लील साहित्य के आयात पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। भारत सरकार को भी इसी भाँति ऐसी पुस्तकों, पत्रिकाओं और परिहास-पत्रों के आयात पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए। ऐसा कदम उठाने से जो धन अश्लील साहित्य पर व्यय होता है, वह स्वदेश की उपयोगी पुस्तकों के खरीदने में व्यय होगा।

(६) सारे देश में पुस्तकालयों का जाल बिछा देने की अपनी योजनाओं के अन्तर्गत केन्द्रीय और राज्य सरकारें प्रतिवर्ष अधिकाधिक पुस्तकें खरीद रही हैं। राज्य की ओर से ऐसा सहयोग उत्साहवर्धक है। लेकिन हमारा निवेदन है कि पुस्तकों के खरीदने का जो रास्ता अपनाया जा रहा है, उससे पुस्तकालयों को सर्वोत्कृष्ट पुस्तकें नहीं मिल पाती हैं। पुस्तकों की खरीद अधिकांशतः कमीशन की एक दर के आधार पर टेंडरों द्वारा होती है।

ख्याति-प्राप्त लेखकों की प्रामाणिक और ढंग से प्रकाशित पुस्तकों से पुस्तक-विक्रेताओं को कम मुनाफा मिलता है। टेन्डरों द्वारा पुस्तकें खरीदने की व्यवस्था सस्ती किस्म की पुस्तकें खरीदने में सहायक सिद्ध होती है। अतः पुस्तकें खरीदने वाली सरकारों को अनेक प्रकाशकों द्वारा दी जाने वाली अधिकाधिक छूट से सन्तुष्ट होना उचित है। हमारे विचार में एक अधिकृत संस्था, जैसे साहित्य अकादमी, साव[...] देखभाल करने के बाद पुस्तकों की विभिन्न सूचियाँ प्रकाशि[...] जिसे सरकारें अपने विभिन्न विभागों और पुस्तकाल[...] पुस्तकें खरीदते समय ध्यान में रखें तो यह लाभकर सिद्ध है[...] एक सुझाव यह भी है कि पुस्तकों के अच्छे चुनाव के [...] वित्तीय वर्ष के अन्तिम दिनों में पुस्तकें खरीदने में जल्द[...] करने की अपेक्षा सारा साल पुस्तकें खरीदते रहना उचित [...]

(७) यह सर्वमान्य है कि देश में प्रकाशन उद्योग अपरिपक्व अवस्था में है, अतः सरकार का ध्यान इस[...] अपेक्षित है। देशकी बौद्धिक और नैतिक प्रगति के लिए [...] महत्व इतना है कि भविष्य के लिए इसके विभिन्न पहलुओं [...] ध्यानपूर्वक विचार और आयोजन किया जाना चाहिए। [...] है कि ऐसा करने का सब से अच्छा तरीका यह है कि [...] आयोग की भांति इस सम्बन्ध में भी एक लोक-आयोग [...] नियुक्ति करना होगा जो सावधानी से सब जानकारी [...] करे और उद्योग के लाभार्थ एवं भारतीय साहित्य के [...] विकास के लिए विशेष सिफारिशें प्रस्तुत करे।

सुझावों का सार

(१) जहाँ तक डाक-दरों का सम्बन्ध है :

(क) पुस्तक-पैकेटों पर डाक-दरें कम की जायँ। १[...] १९५२ के पहले जो डाक-दरें थीं, कम-से-कम उस स्त[...] इन्हें ले आया जाय।

(ख) रजिस्ट्री बिना वी० पी० पी० की व्यवस्था [...] लागू किया जाय और रजिस्ट्रेशन को अनिवार्य नहीं रखा [...]

(ग) वी० पी० पी० सरचार्ज को समाप्त किया जा[...]

(घ) जैसा कि दूसरे देशों में होता है, थैलों में [...] डाक भेजने की व्यवस्था उन पुस्तकों के लिए लागू की जा[...] देश के अन्दर ही भेजी जाती हैं। यह व्यवस्था ब्रिटेन [...] व्यवस्था से मिलती-जुलती हो।

(२) सारे देश में पुस्तकों पर लिया जाने वाला [...] कर समाप्त कर दिया जाय।

(३) पुस्तकों को एक विशेष वस्तु समझा जाय, उनके भेजने पर रियायती रेलवे भाड़ा लिया जाय।

(४) अनिष्टकारी विदेशी साहित्य पर प्रतिबन्ध हो।

[शेष पृष्ठ ४२४ पर देखि[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूर्ण शरत्-साहित्य

(तेतीस भाग निकल चुके हैं)

भारत के सर्वश्रेष्ठ कथाशिल्पी स्व० शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय के प्रामाणिक और विशुद्ध अनुवाद सुलभ मूल्य में प्रकाशित करने की योजना अब सम्पूर्ण हो रही है। इसमें १३ बड़े उपन्यास, ५ छोटे उपन्यास, २६ कहानियाँ, २ नाटक, २४ निबन्ध, ३० पत्र और ५ अधूरे उपन्यास तथा कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इन तेतीस भागों का मूल्य ४६।।) और सब मिलाकर पृष्ठ-संख्या ५००८ है। इतना सुन्दर और सस्ता साहित्य अन्यत्र दुर्लभ है।

बत्तीस-तेतीसवाँ भाग हाल ही प्रकाशित हुआ है। इसमें **देना-पावना** और **नया विधान** नामक दो उपन्यास हैं। पृष्ठ-संख्या ३१२। मूल्य ३)।

हिन्दी-कथा-साहित्य

हिन्दी के ख्यातिनामा निबन्ध-लेखक श्री पदुमलालजी बख्शी ने इसमें प्रारम्भ से लेकर अब तक के हिन्दी-उपन्यासों और कहानियों के साथ-साथ बंगला, मराठी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि की रचनाओं की भी मीमांसा की है जो पूरे विकास-कार्य को सामने रख देती है। अपना निष्पक्ष निर्णय दिया है और अन्य समीक्षकों का दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया है। "साहित्य-सन्देश" के शब्दों में "हिन्दी-कथा-साहित्य का इतना गूढ़ विवेचन अभी तक देखने में नहीं आया है। हिन्दी के प्रत्येक अध्यापक तथा आलोचक के लिए पुस्तक उपयोगी है।" मूल्य ४।।)

अन्य लेखकों के महत्वपूर्ण ग्रन्थ

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—हिन्दी साहित्य की भूमिका ३।।) बाणभट्ट की आत्मकथा ४।।) कबीर ४)
प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद २)
सर जदुनाथ सरकार—औरंगजेब ७।।) शिवाजी २।।)
डॉ० विष्णुभीका जी कोलते—मराठी सन्तों का सामाजिक कार्य १।।)
पं० लक्ष्मणशास्त्री तर्कतीर्थ—हिन्दू धर्म की समीक्षा १।) जड़वाद और अनीश्वरवाद १)
कर्नल इंगरसोल—स्वतन्त्र चिंतन १।।) धर्म के नाम पर १।।)
रवीन्द्रनाथ टैगोर—आँख की किरकिरी ३) नष्ट नीड़ १।) रवीन्द्र कथा-कुंज १।।।)

हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों का सूचीपत्र मंगाइए

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लिमिटेड, हीराबाग, बम्बई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातायात-मन्त्री को दिया गया आवेदन

हर्ष की बात है कि "प्रकाशक-संघ" के अनुरोध के उपरान्त श्री लाल बहादुर शास्त्री ने रेल-भाड़ों में प्रस्तावित वृद्धि को रद्द कर देने की घोषणा लोक-सभा में कर दी है।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की ओर से एक प्रतिनिधि-मण्डल की रेलवे मन्त्री से मुलाकात के बारे में उनके प्राइवेट सेक्रेटरी से हमने १८ मार्च १९५५ को अनुरोध किया था। हमारे पत्र में कहा गया था कि यह प्रतिनिधि-मण्डल "पुस्तकों पर माल-गाड़ी और सवारी-गाड़ी द्वारा वसूल किए जाने वाले भाड़े को घटाकर कम-से-कम करने की दरख्वास्त पेश करने के लिए" मन्त्री महोदय से मिलना चाहता है।

यह भी लिखा गया था कि "यह प्रतिनिधि-मण्डल रेलवे स्टेशनों पर बुक-स्टॉलों के एकाधिकार का विरोध भी करेगा जो कि अच्छे साहित्य के प्रचार हित के विरुद्ध है।"

प्रधान मन्त्री और शिक्षा मन्त्री के सम्मुख इसी तरह की दरख्वास्त पेश करने के लिए हमारा प्रतिनिधि-मण्डल श्री जवाहरलाल नेहरू से २४ फरवरी को और मौलाना अबुल कलाम आजाद से २८ फरवरी को मिला था। गत बृहस्पतिवार को प्रधान मन्त्री से, हमारी मुलाकात के समय श्री लाल बहादुर शास्त्री की उपस्थिति से हमें अत्यन्त हर्ष हुआ, कि वह प्रकाशन-उद्योग की ओर से हमारी मांगों के विस्तृत कारण और उनके प्रति प्रधान मन्त्री की सहानुभूति से परिचित हो सके।

आज भारत में प्रकाशन-उद्योग और उससे सम्बन्धित पुस्तक-व्यापार कई बड़ी मुश्किलों के बीच काम कर रहा है। डाक की ऊँची दरें, कई राज्यों में बिक्री-कर, पुस्तकें न पढ़ने की लोगों की आदत, निम्न क्रय-शक्ति, किसी हद तक इस उद्योग के प्रति सरकार की उदासीनता और इसी प्रकार के अन्य कई कारण हमारी प्रकाशन-गतिविधि में लगातार बाधा उपस्थित करते रहते हैं। हमारी बहुत-सी मुश्किलें सरकारी कार्यवाही द्वारा दूर हो सकती हैं और रेलवे मन्त्रालय की ओर से ऐसी कार्यवाही के लिए ही यह प्रतिनिधि-मण्डल श्री लाल बहादुर शास्त्री से मिल रहा है।

प्रकाशन केन्द्रों से भारत के विभिन्न स्थानों को रेल बहुत काफी तादाद में पुस्तकें भेजी जाती हैं। रेलवे द्वा पुस्तकों पर लिया जाने वाला भाड़ा घटा कर कम किया जाना चाहिए जिससे पुस्तक-व्यापार और लोक के प्रसार को सरकारी प्रोत्साहन मिल सके। वास्तव में, पु पर रेल किराया घटाने के पक्ष में बहुत-कुछ कहा जा है। लेकिन, नए वित्तीय वर्ष से पुस्तकों पर रेल-किराया की सम्भावना तब तक चिन्ता का विषय बनी रहेगी कि रेलवे मन्त्री अपने प्रस्ताव पर पुनर्विचार नहीं करते लाल बहादुर शास्त्री ने अभी हाल ही लोक सभा में रेलवे पेश करते हुए १) के निम्नतम किराए को बढ़ा कर १।) और २० मन से कम वज़न के माल (और पुस्तकों के किसी का वज़न इससे ज्यादा कभी नहीं होता) पर १२½ प्र सरचार्ज वसूल करने का प्रस्ताव रखा है। यह नियम खा नमक और गुड़ पर लागू न होगा। शरीर के इस भोजन ही पुस्तकों पर भी प्रस्तावित वृद्धि लागू नहीं होनी क्योंकि वे मस्तिष्क के लिए आवश्यक भोजन प्रदान कर पुस्तकों पर माल-गाड़ी का किराया भी कम किया चाहिए ताकि पुस्तकों के अधिक व्यापक प्रसार को प्रो मिल सके।

क्रमशः बढ़ते हुए प्रकाशन-व्यापार को किसी प्र सुरक्षा न मिलने के कारण उपस्थित हुई स्वाभाविक कठि और सरकारी प्रश्रय न मिलने की स्थिति में रेल-किरा प्रस्तावित वृद्धि से और भी अधिक क्षति पहुंचेगी।

रेलवे स्टेशनों पर बुकस्टॉल चलाने के बाबत कई कम

[शेष पृष्ठ ४२६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला

टॉमस ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत यह अन्तिम लेख प्रकाशित हो रहा है। लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

मतों में कमी

ा देखा गया है कि प्रकाशक अपनी पुस्तकों को बिकता खकर या कुछ को बिलकुल न बिकने वाली समझकर ी मुद्रित कीमतों में कमी कर देते हैं और घटी हुई कीमत किताबें बेच लेते हैं। इस प्रकार की कमी से आम तौर पुस्तक-विक्रेताओं को नुकसान नहीं होता, क्योंकि जिनके वे पुस्तकें अनबिकी बाकी हैं उन्हें तो उस कमी के हिसाब सा दे दिया जाता है। वे विक्रेता जिनके पास वे ें नहीं हैं और यदि वे अच्छी और महत्व की हैं तो कम की हुई कीमत पर खरीद सकते हैं। अक्सर हमारे पुरानी किताबें बेचने वाले इन किताबों को खरीदते हैं, न दूसरे भी यदि ऐसे मौकों से लाभ उठायें तो अच्छा है। शक कमी का एलान किसी समाचार पत्र में अथवा पत्र कर कर देता है और साथ ही यह भी लिख देता है कि व्यक्तियों ने कमी के दिन से एक नियत समय पूर्व पुस्तकें दी हों (उदाहरणतया ६ महीने पहले तक) तो वे कमी से लेने के हकदार हैं। इससे प्रकाशक को भले ही कुछ न हो, पुस्तक-विक्रेता को कोई नुक्सान नहीं होता बल्कि पुस्तकें पहली कीमत पर बेचने से रुक जाता है और दारों को भी अधिक कीमत नहीं देनी पड़ती।

यह सब होते हुए भी यह प्रणाली अच्छी नहीं। प्रकाशन समय ही यदि किताबों की बिक्री की संभावनाएँ देख ली ं और उसी के अनुसार यदि उनका मूल्य रखा जाय तो 'कमी' का मौका न आये। गन्दी छपाई, जरूरत से दा संख्या में पुस्तक छपाना, कवर का आकर्षक न होना दि वे बातें हैं जो उनकी बिक्री में बाधक होती हैं। इसलिए बातों के प्रति सतर्कता व सावधानी से काम लिया जाना चाहिए।

स्टॉक टेकिंग

इसका प्रयोग सभी विक्रेता करते हैं और इसे एक विशुद्ध विज्ञान समझते हैं। स्टॉक का लेखा लेने के लिए कोई भी एक पद्धति यदि लगातार अपनाई जाय और अच्छी हो तो वही लाभप्रद सिद्ध होती है। लेकिन स्टॉक टेकिंग भी पुस्तक-बिक्री की कला का ही एक अंश है और यदि उसे विशुद्ध विज्ञान मानकर ही चला गया तो शायद छोटे पुस्तक-विक्रेताओं के लिए वह अधिक अच्छी साबित न हो।

स्टॉक टेकिंग का मुख्य महत्व है अपनी आमदनी व खर्च का लेखा-जोखा करने के लिए स्टॉक का सही मूल्य आंकने में। याद रखिये कि मूल्य कुल कीमत से भिन्न वस्तु है क्योंकि यदि आपने खरीदते समय कुछ गलती की है या बाद में कुछ ऐसे परिवर्तन किये हैं जिनका प्रभाव मूल्य पर पड़ा है तो आपके स्टाक की कुल लागत अलग ही चीज होगी।

मेरी समझ में औसत विक्रेता के लिए उत्तम विधि यह है कि हर शेल्फ या अलमारी पर वह जाय और उन किताबों को निकाल कर अलग रख दे जो उसके विचार में एक नियत समय में पूरी कीमत पर नहीं बेची जा सकतीं और शेल्फ का शेष स्टॉक बिक्री की कीमत के हिसाब से जोड़ लिया जाय और उसमें से कमीशन व खराबी आदि का मूल्य काटकर उन्हें लागत पर ही जोड़ दें। बड़े स्टॉक वाले विक्रेताओं को जो विशेष विषयों पर : विज्ञान, कानून, सन्दर्भ-सम्बन्धी आदि पुस्तकें रखते हैं, अपने स्टॉक का मूल्यांकन लागत पर ही करना चाहिए क्योंकि वे विभिन्न कमीशन-दरों पर खरीदी गई होंगी। जिन पुस्तकों को बिकाऊ न समझकर आप शेल्फ से

[शेष पृष्ठ ४२६ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रमुख साँस्कृतिक संस्था का परिचय

बंगीय साहित्य परिषद्

शंकरदेव विद्यालंकार

बंगभूमि को अपनी जिन सरस्वती-साधक संस्थाओं पर विशेष अभिमान है, उनमें "बंगीय साहित्य परिषद्" अन्यतम है। सन् १६५४ के जुलाई मास में इस संस्था की स्थापना को ६० वर्ष पूरे हो चुके हैं। इन ६० वर्षों में बंगाल के अनेक कृतविद्य मनीषियों और साहित्यसाधकों के साथ इस संस्था का निकट सम्बन्ध रहा है। महाराजा विनयकृष्ण देव बहादुर, रमेशचन्द्र दत्त, द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर, सत्येन्द्रनाथ ठाकुर, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामेन्द्रसुन्दर त्रिवेदी, महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री, रजनीकान्त गुप्त, विज्ञानाचार्य जगदीशचन्द्र वसु, सुरेशचन्द्र समाजपति, व्योमेश मुस्तफी आदि अनेक लब्धप्रतिष्ठ बंगीय विद्वान् अनेक रूपों में परिषद् के उत्कर्ष में अपना प्रेमपूर्ण योग देते रहे हैं।

परिषद् की सुन्दर पुस्तकशाला, संग्रहालय और व्याख्यान-भवन के निर्माण में भी अनेक धनीमानी उदार चेता पुरुषों के सिवाय सामान्य जनता ने भी प्रेम से सहायता दी है। इन सहायकों में कासिम बाजार के स्वर्गीय राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

परिषद् की ग्रन्थशाला और कला-संग्रह को समृद्ध बनाने में अनेक उदार मनीषियों का हाथ है। श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का सम्पूर्ण ग्रन्थ-संग्रह परिषद् को प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार रमेशचन्द्र दत्त, सत्येन्द्रनाथ दत्त, ऋतेन्द्रनाथ ठाकुर और विनयकृष्ण देव बहादुर ने अपने-अपने निजी पुस्तकालय परिषद् को दान में दिए हैं। अन्य बंग-साहित्य-प्रेमी सज्जनों के छोटे-छोटे पुस्तक संग्रह भी परिषद् को प्राप्त हुए हैं। इस समय परिषद् के पास कोई छः हजार हस्त-लिखित ग्रन्थ विद्यमान हैं। मुद्रित ग्रन्थों की संख्या तो कई हजार से पहुँचती है। मुद्रित ग्रन्थों में कई पुस्तकें तो बड़ी महत्वपूर्ण और अप्राप्य हैं। यथा :

(१) हॉलहेड साहब का बंगभाषा का व्याकरण (सन् १७७८)।

(२) फोर्स्टर महोदय का शब्द-संग्रह (सन् १७६६)

(३) करे साहब का बंगभाषा कोश (सन् १८१८)

बंगभाषा और बंग साहित्य का इतिहास लिखने [...] व्यक्ति को यहां पर सब प्रकार की अति दुर्लभ और अ[...] साधन सामग्री मिल सकती है।

संग्रहालय के अमूल्य संग्रहों में बंगाल के अनेक दि[...] महापुरुषों के हाथ से लिखे हुए लेखों की प्रतियाँ तथा [...] विद्यमान हैं, यथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बंकिम[...] चट्टोपाध्याय, राजेन्द्रलाल मित्र, द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर, [...] नाथ ठाकुर, भगिनी निवेदिता, दीनबन्धु मित्र, आदि [...]

जिन दिनों महात्मा गांधी बंगाल में थे और बंगला [...] सीखने का अभ्यास किया करते थे, उस समय के उनके [...] भ्यास वाले पत्र भी संग्रहालय में सुरक्षित हैं। राजा राम[...] राय और बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जैसे पुण्यपुरुषों [...] प्रयोग में लाई गई अनेक वस्तुएँ भी परिषद् के पास [...] हुई हैं।

परिषद् का महत्व केवल उसके अमूल्य संग्रहों [...] पुस्तकों के लिए ही नहीं है। परिषद् बंगाल की एक [...] जागृत और प्रगतिशील-साहित्य संस्था है। समय-सम[...] परिषद् अनेक विद्वानों के साहित्यिक, ऐतिहासिक और [...] निक विषयों पर गम्भीर और ज्ञानप्रद व्याख्यान कराती [...] है। परिषद् द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक पत्रिका में ऊपर [...] विषयों पर उच्चकोटि के अन्वेषण पूर्ण लेख छपते रहते [...]

परिषद् के दो भवन कलकत्ता के अपर सर्क्यूलर [...] (घर नं० २४३) पर अवस्थित हैं। ये मकान पर्याप्त [...] हैं और कई स्थानों पर उनकी दीवारों में तरेड़ें भी प[...] हैं। ग्रन्थालय की सुरक्षा और सुव्यवस्था के लिए मका[...] मरम्मत अति आवश्यक हो गई है। इसी प्रकार परि[...] बहुत-सा फर्नीचर भी अति पुराना और बेकाम हो चुका [...]

[शेष पृष्ठ ४२[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों और व्यापारियों के लिए
हिन्दी में बढ़िया पुस्तकें

★

१. गृहदाह	ले० शरत्‌चन्द्र चट्टोपाध्याय	४)
२. पथ के दावेदार	,, ,,	४)
३. चरित्रहीन	,, ,,	६)
४. श्रीकान्त	,, ,,	६)
५. शेष प्रश्न	,, ,,	४)
६. शुभदा	,, ,,	३)
७. बड़ी दादी	,, ,,	१)
८. छुटकारा	,, ,,	१)
९. परिणीता	,, ,,	१)
१०. देवदास	,, ,,	१॥)
११. विराज बहू	,, ,,	२)
१२. राजर्षि	ले० रवीन्द्रनाथ टैगोर	२॥)
१३. लोफ़र	ले० सागर बालूपुरी	१॥)
१४. जुआड़ी	,, ,,	१॥

इनके अलावा बहुत मेल के जासूसी, सामाजिक, उपन्यास मिलते हैं। पुस्तकालयों को विशेष कमीशन दिया जायगा।

सूची-पत्र मुफ्त मंगाएँ।

★

...न्द्र कुमार थोक पुस्तकालय
१००७ कटरा, इलाहाबाद

आजकल

हिन्दी की इस सर्वप्रिय सचित्र मासिका में विचारपूर्ण लेख तथा विख्यात कथाकारों और कवियों की कृतियाँ पढ़िए। "आजकल" से संयुक्त "विश्वदर्शन" में अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर निष्पक्ष लेख प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ६); एक प्रति ॥)

बाल भारती

नन्हें मुन्नों की सचित्र मासिका जिसमें सरल भाषा में प्रेरणा-दायक कहानियाँ, मीठी-मीठी कविताएं, उपयोगी लेख और रेखा-चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ४); एक प्रति ॥)

प्रसारिका
सचित्र त्रैमासिक

"प्रसारिका" (रेडियो संग्रह) आकाशवाणी के हिन्दी केन्द्रों से प्रसारित उच्च कोटि की चुनी हुई वार्ताओं, कविताओं तथा कहानियों आदि का त्रैमासिक संग्रह है। सुन्दर गेट अप की इस सचित्र पत्रिका का मूल्य ८ आना है। वार्षिक मूल्य २)

मिलने का पता :
पब्लिकेशन्स डिवीज़न,
ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली—८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द। पृ०
२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५ सजिल्द।
३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग
इकरंगे आर्टपेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।
४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी।
५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथ के
मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२। सजि
७. **संत कवि दरियाः एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया आर्ट
पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।
८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ
गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ संख्या ३६२। सजिल्द।
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०। सजि
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के
ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और
के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज़। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

[पृष्ठ ४१८ से आगे]

(५) सरकारों द्वारा खरीदी जाने वाली पुस्तकें टेन्डर व्यवस्था द्वारा न खरीदी जायँ, खरीदी पूरे वर्ष हो, और इन खरीदों का आधार साहित्य अकादमी द्वारा तैयार की गई विशेष सूचियाँ होनी चाहिएँ।

(६) प्रकाशन उद्योग की वर्तमान दशा पर विचार करने के लिए एक लोक-आयोग नियुक्त हो जो इसके विकास के लिए उपयुक्त सिफारिशें पेश करे।

[पृष्ठ ४२२ से आगे]

इस प्रकार परिषद् की साधन सामग्री की सुरक्षा और नवीन व्यवस्था के लिए कोई साठ सहस्र रुपये का आनुमानिक व्यय कूता गया है। अध्यापक निर्मलकुमार वसु ने बंगाल की इस अनूठी संस्था की सहायता के लिए एक अपील भी प्रकाशित की है।

[पृष्ठ ४१५ से आगे]

मन्त्री राज्यों पर अपना प्रभाव डालकर यह कर सकते हैं, जिससे राजस्व में तो थोड़ी ही वृद्धि होती है ज्ञान के प्रसार में बहुत बड़ी बाधा पहुँचती है।

(३) इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए यह भी किया जाता है कि रेलवे द्वारा पुस्तकों के लाने-ले खर्च घटाकर न्यूनतम कर दिया जाय।

(४) आज भारी तादाद में ऐसी पुस्तकें हमारे निर्बाध रूप से आयात की जा रही हैं जो देश के नैति सामाजिक स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद हैं। ऐसी अधिकांशतः अमेरिका से ही आती हैं। बर्मा और लैण्ड जैसी कुछेक सरकारों ने ऐसे अश्लील साहित्य के पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। भारत सरकार को भाँति ऐसी पुस्तकों, पत्रिकाओं और परिहास-पत्रों पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए। इससे बहुत काफी डॉ भी बचत होगी। फलस्वरूप, भारतीय पाठक भारत शित पुस्तकों पर अधिक रुपया खर्च कर सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

—ब्रज का इतिहास, ले० श्री कृष्णदत्त वाजपेयी। प्राचीन-तम काल से लेकर अब तक का ब्रज का विस्तृत इतिहास, कई मानचित्रों सहित। डिमाई आकार के लगभग ३०० पृष्ठ। ५)

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—मालवा की लोककथाएँ, ले० श्याम परमार।

—गढ़वाल की लोककथाएँ, श्री गोविन्द चातक।

—सौराष्ट्र की लोककथाएँ, ले०श्री प्रवासीलाल मालवीय।

—रेडियो नाटक, ले० श्री हरिश्चन्द्र खन्ना।

—तुलसी-साहित्य और सिद्धान्त, ले० श्री यज्ञदत्त शर्मा।

इन्दिरा प्रकाशन गृह, जयपुर

—खड़ी बोली के प्रतिनिधि कवि, ले० श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'। खड़ी बोली के प्रतिनिधि कवियों का व्यक्तित्व एवं काव्य-विवेचन। लगभग ३०० पृष्ठ। ३)

उपन्यास प्रकाशन कार्यालय, मथुरा

—खौफ़नाक टार्ज़न, उपन्यास। १)

—जंगल सम्राट् टार्ज़न, ले० काशीनाथ अग्रवाल। उपन्यास। १)

—वीरवर टार्ज़न, उपन्यास। १)

चन्द्र कार्यालय, भिवानी

—इलेक्ट्रोप्लेटिंग, ले० डॉ० चन्दूलाल वर्मा। बिजली द्वारा धातुओं की कलई करना। १॥)

—उपनेत्र (ऐनक) विज्ञान, ले० डॉ० चन्दूलाल वर्मा। 'आई टेस्टिंग' और चश्मों के व्यापार का पूर्ण ज्ञान। १॥)

चिंगारी प्रकाशन, बनारस

—रक्तार्चन, ले० ज्वालाप्रसाद 'केशर'। उपन्यास। ३॥)

—कालगढ़ी, ले० त्रिलोक कुशवाहा। जासूसी उपन्यास। २)

—प्यार और जीवन, ले० श्यामसुन्दर 'अशान्त'। उपन्यास। ॥)

—उड़ते-उड़ते, ले० कुशवाहा कान्त। व्यंग्यात्मक निबन्ध। २॥)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

—बड़ी बड़ी आँखें, ले० श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क'। आधुनिक समस्या को छूता हुआ रोमानी उपन्यास। ३॥)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—धरती माता, पर्ल बक, अनु० ओंप्रकाश शर्मा। नोबेल पुरस्कार विजेता उपन्यास। ३)

—द्वन्द युद्ध, ऐन्टन चेखव, अनु० राजनाथ। उपन्यास। ३)

—मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ, अनु० सूरजनारायण अग्रवाल। कहानियाँ। ३)

—टाल्स्टाय की श्रेष्ठ कहानियाँ, अनु० राजनाथ। ३)

—उपवन, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का एक उपन्यास। २)

भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद

—चोर इन्स्पेक्टर, ले० नकाबपोश भेदी। जासूसी उपन्यास। ॥)

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस

—रेडियो नाटक, ले० श्री सिद्धनाथ कुमार। रेडियो नाटक के सम्बन्ध में। ३)

—शरद् के नारी पात्र, ले० श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी। शरद् साहित्य में जो नारी-समाज का वर्णन है, उसका विवेचन। ३)

—कालिदास का भारत, खण्ड २, ले० डॉ० भगवत् शरण उपाध्याय। ऐतिहासिक अन्वेषण। ४)

मूलनारायण एण्ड सन्स, इलाहाबाद

—तिलस्मी गढ़ी का रहस्य, ले० बद्रीप्रसाद। ॥)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता-७

—रवीन्द्र साहित्य, भाग १, पुनर्मुद्रण। रवीन्द्रनाथ ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के 'दो बहनें' नाम के उपन्यास का अनुवाद । २।)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई

—हिन्दू सभ्यता, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी की 'हिन्दू सिविलिज़ेशन' का अनुवाद । भारत का प्राचीन इतिहास । ७॥)

—वाह रे मैं वाह !, ले० श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी का नवीनतम नाटक । साथ में दो पुराने सम्पूर्ण नाटक भी दिये गए हैं ।

—हिन्दी निबन्ध, ले० श्री प्रभाकर माचवे । हिन्दी निबन्ध और निबन्धकारों की समीक्षात्मक विवेचना ।

लोकसेवक प्रकाशन, बनारस

—मध्यकालीन शृङ्गारिक प्रवृत्तियाँ तथा नव-निबन्ध, ले० श्री परशुराम चतुर्वेदी । शृङ्गारिक प्रवृत्तियों पर आलोचनात्मक निबन्ध । ३)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—क्रमिक पुस्तकमाला, खण्ड ३, ले० श्री भातखण्डे । भारतीय संगीत पर अनुपम प्रकाशन । पृष्ठ संख्या लगभग ८०० । ८) ।

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—तावीज़, टेलिसमैन का अनुवाद । उपन्यास । २)

मंटो की कहानियाँ, उर्दू के प्रसिद्ध लेखक मंटो की कहानियों के ५ संग्रह । प्रत्येक का मूल्य ३)

—फूल और पतझर, ले० श्री नरोत्तम नागर । उपन्यास ।

प्रकाशन समाचार

द्वारा

हिन्दी-प्रकाशनों को सूचीबद्ध करने का उपयोगी और आवश्यक कार्य हो रहा है । आप यदि अब तक पत्र के ग्राहक नहीं बने हैं तो आज ही २॥) का वार्षिक मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजिए । वी० पी० पी० से ३) लगते हैं ।

—प्रकाशन समाचार
१ फ़ैज़ बाजार,
दिल्ली ।

[पृष्ठ ४२० का शेष]

के साथ रेलवे ने दीर्घकालीन करार किए हैं । हॉलांकि शकों और बुकस्टॉलों के एकाधिकारियों की आपसी व्याप शर्तों में दखल देना रेलवे मन्त्री का काम नहीं है, प जाँच करना रेलवे मन्त्री के वाजिब अधिकार में है कि बुकस्टॉलों के एकाधिकारियों द्वारा रखी गई शर्तों के अच्छा साहित्य रेलवे स्टेशनों पर पहुँच पाता है या अक्सर रेलवे स्टेशनों पर बहुत ही घटिया और अश्लील बिकती नज़र आती हैं । इसका कारण यही है कि बुक के एकाधिकारी केवल वही पुस्तकें रखते हैं जिन पर ऊँ का कमीशन मिलता है और जिन्हें बिक्री न होने पर ल की सुविधा होती है । हमारी प्रार्थना है कि अच्छे सा का पक्ष लेकर रेलवे मन्त्री हस्तक्षेप करें ताकि मुसाफ़ि रेल के सफर में सिर्फ भद्दी किताबें खरीदने के लिए बा होना पड़े । भारत में हमारी रेलों पर सफर करने वाले शियों को यह देख कर अक्सर क्षोभ भी होता है कि देश म रेलवे स्टेशनों पर हर बुकस्टॉल में सस्ती और भद्दी किता बिकती हैं ।

हमें आशा है कि हमारे इस विनम्र निवेदन पर मन्त्री सहानुभूतिपूर्वक शीघ्र ही विचार करेंगे ।

[पृष्ठ ४२१ से आगे]

हटाते हैं, जरूरी नहीं कि उनकी कीमतें एकदम घटा दें, यदि आप चाहें तो कुछ समय और उन्हें पूरे दामों बेच लिए रख सकते हैं । इस प्रकार स्टॉक टेकिंग भारी या भ बात न होकर हल्का और दिलचस्प बन जाता है ।

वैसे तो यह स्टॉक की मात्रा पर ही निर्भर करता है यदि अन्य सरल तरीके अपनाये जायँ तो सुभीता ह मसलन बहुत लम्बे-चौड़े स्टॉक में आपको काफी दिक्क आयगी, इसलिए यदि कीमतों के अनुसार किताबों को अ अलग छाँट लिया जाय तो वह दिक्कत कम हो जायगी

कुछ आवश्यक संकेत

स्टॉक टेकिंग करने के पहले यह अवश्य देखिये कि सब शेल्फ व आल्मारियों वगैह पर नम्बर पड़े हुए हर साल इसकी निगरानी आवश्यक है क्योंकि साल दौरान में नम्बर मिट जाने की संभावना रहती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

भागवतप्रसाद, लेखा निरीक्षण, क्रा०, ४१८, राजेश्वरी बुक डिपो, गया ६)

शंकरसहाय सक्सेना, आरम्भिक अर्थ-शास्त्र, पु० मु०, डि०, ७३२, श्रीराम मेहरा एण्ड क०, आगरा ६।|=)

सिंह तथा सिंह, हमारी आर्थिक तथा वाणिज्य सम्बन्धी समस्याएँ, पु० मु०, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ५।।।≥)

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

कृष्णकुमार सिन्हा, प्रसाद जी का चन्द्रगुप्त, पु० मु०, क्रा०, ३५४, राजेश्वरी बुक डिपो, गया ३)

कृष्णदेव उपाध्याय, निबन्ध चन्द्रिका, पु० मु०, डि०, १७५, शारदा मन्दिर, काशी १।।)

गोविन्द त्रिगुणायत डॉ०, कबीर और जायसी, साहित्य सदन, देहरादून ५)

गोविन्द त्रिगुणायत डॉ०, हिन्दी दशरूपक, २४७, डि०, साहित्य निकेतन, कानपुर ६।)

देवनारायण व्यास, हरीश जोशी, सुकरातः व्यक्ति और विचार, डि०, ८०, प्रेरणा प्रकाशन, जोधपुर ३।।)

परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य की परख, ३११, डि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ५)

बलदेव उपाध्याय, वैदिक साहित्य और संस्कृति, डि०, ६००, शारदा मन्दिर, बनारस ५।।)

बी० एन० लूनिया, भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, पु० मु०, ५८०, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ७।।)

भरतसिंह उपाध्याय, बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन, दो भाग, ११९६, डि०, बंगला हिन्दी मण्डल, कलकत्ता (वितरक) भारती भण्डार, इलाहाबाद १६)

राजकिशोर पाण्डे, अकबरुद्दीन सिद्दीकी, सैफुल मुलूक व बदीउल जमाल, २२०, डि०, दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद ५)

विमला वाघ्रे, नसीरुद्दीन हाशमी, सं०, कुतुबु मुश्तरी, २३४, डि०, दक्खिनी प्रकाशन समिति, हैदराबाद ५)

विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठ-भूमि, डि०, ४००, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ६)

शचीरानी गुर्टू, हिन्दी आलोचक, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८)

शिवकुमार मिश्र, आँसू और उसका कवि, २०४, क्रा०, मालवीय पुस्तक भवन, लखनऊ २।।)

शिवदानसिंह चौहान, साहित्यानुशीलन, २९०, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६)

हरिदत्त वेदालंकार, हिन्दू परिवार मीमांसा, ७३८, डि०, बंगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता (वितरक) भारती भण्डार, इलाहाबाद १०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

अनूपलाल मण्डल, ज्वाला, पु० मु०, क्रा०, १५०, पुस्तकानय, मुंघेर
अनूपलाल मण्डल, लाल पत्थर, ड० क्रा०, १६४, पुस्तकायन, मुंघेर
कमल शुक्ल, पथ से दूर, १२४, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
गोपालदास नागर, अधूरे अरमान, १००, क्रा०, चिंगारी प्रकाशन, बनारस
गोविन्दसिंह, विषकन्या १६२, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
गोविन्दसिंह, आतापी, १००, क्रा०, चिंगारी प्रकाशन, बनारस
जान ओ हिन्द, अर्हत का शाप, डि०, १६६, दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली
जैनेन्द्रकुमार, सुनीता, पु० मु०, क्रा०, १८८, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई-४
टाल्स्टाय, अनु० सूरजनारायण अग्रवाल, युद्ध और शान्ति, ५१२, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
तुर्गनेव, अनु० राजनाथ, पिता-पुत्र, ३०४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
नकाबपोश भेदी, नर कंकाल, १२०, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
निस्सो, अनूदित, रजिया की बेटी, ४००, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
पथिक, तथागत, १६२, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
पथिक, पापी, १६२, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
प्रताप, प्यार और पैसा, ३०४, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनूदित, नष्टनीड़, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
रामदेव, लहरें, ३१५, क्रा०, विद्या मन्दिर, होशियारपुर
लल्लन, मौन मूर्तियाँ, १००, क्रा०, चिंगारी प्रकाशन, बनारस
लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी, श्रीमती विश्वास, २२५, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
वीरेन्द्र पाण्डेय, तूफानों के बीच, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
शीला शर्मा, एक था, १४२, क्रा०, २) (वितरक) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
स्टीफेन ज़्विग, राजनेता, ३५०, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
सच्चिदानन्द पाण्डेय, गुमराह, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
हरिकृष्ण वाजपेयी, प्रश्न और शून्य, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
हिकमतुल्ला खाँ, मिलन, २०४, क्रा०, नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

कविता

कृष्णकुमार सिन्हा, सम्पादक, नरोत्तमदास कृत सुदामा-चरित्र, नॉवेल्टी एण्ड क०, पटना ४
गिरिजाकुमार माथुर, धूप के धान, क्रा०, १६०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस
भगवतप्रसाद मिश्र, कारा, दि स्टुडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर
शागिंद इलाहाबादी, मुस्कान, दि स्टुडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर

कहानियाँ

आनन्दप्रकाश जैन, अतीत के कम्पन, २३६, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...शु द्विवेदी, टूटे सपने, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ २)
...लील जिब्रान, अनु० डॉ० नरेन्द्र चौधरी, उसने कहा था, ज्ञान प्रकाश मन्दिर, मेरठ
...लील जिब्रान, अनु० डॉ० नरेन्द्र चौधरी, मिट्टी और कोहरा, ज्ञान प्रकाश मन्दिर, मेरठ
...खव, अनु० राजनाथ, चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ, २४० क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ३)
...वतीप्रसाद वाजपेयी, मधुपर्क, पु० मु०, क्रा०, २१६, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३||)
...वतीप्रसाद वाजपेयी, हिलोर, पु० मु०, क्रा० भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)
...द्रीनारायण शुक्ल, शास्त्री साहब, पु० मु०, क्रा०, १८६, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)
...वीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० धन्यकुमार जैन, काबुलीवाला, रवीन्द्र साहित्य ६, पु० मु०, १२८, क्रा०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता ७ २)
...रिकृष्ण प्रेमी, शतरंज के खिलाड़ी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १||)

नाटक

...० एल० राय, अनु० रामचन्द्र वर्मा, मेवाड़ पतन, पु० मु०, क्रा० १२२, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई १=)
...बीब तनवीर, गधे, ८२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

...कामताप्रसाद सिन्हा, बाल मनोहर पोथी, पु० मु०, क्रा०, ३२, राजेश्वरी बुक डिपो, गया ।=)
...क ...णाचार्य, दशकुमार चरित, २ भाग, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली प्रत्येक का ।=)
...चिरंजीत, एक था राजा एक थी रानी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
...चिरंजीत, नटखट के गीत, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १)
...तुलसी मानस मोती, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...दादू की वाणी, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...दुलारी श्रीमती, दिमागी डण्ड बैठक, ३१, क्रा०, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद ||)
...जयचन्द्र विद्यालंकार, हमारा भारत, क्रा०, २०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ।=)
...प्रशान्त एम० ए०, बच्चों के बापू, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली |||)
...प्रशान्त एम० ए०, मीठी कहानियाँ, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली |||)
...प्रशान्त एम० ए०, रोचक कहानियाँ, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली |||)
...बलदेव मिश्र, छात्र जीवन, क्रा०, ८६, हिन्दी भवन, इलाहाबाद १।)
...मन्मथनाथ गुप्त, आदमी का जन्म, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
...रमेश भाई, नटखट पूसी, पु० मु०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली |||=)
...रहीम के दोहे, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...राकेश, नीति की कहानियाँ, तीसरा भाग, क्रा०, ३६, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ||)
...विष्णुदत्त 'विकल', बालनीति कथा, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १)
...विष्णु प्रभाकर, सं०, मेघदूत, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णु प्रभाकर सं०, विक्रमोर्वशी, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
शान्ता सन्त, मधुर गान, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
शान्ता सन्त, सरल गान, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
शिवनाथसिंह शांडिल्य, नजीर की नज़्में, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
सन्त गोकुलचन्द्र, परदे के खेल, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
सन्त गोकुलचन्द्र, बच्चों का मंच, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

राजनीति

रामचन्द्र संघी, अनु०, हिन्दुओं के राजनीतिक सिद्धान्त, दि स्टुडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर

विविध

प्रेमनारायण अग्रवाल, सं०, सचित्र कौन क्या है, सन् ५५, क्रा०, नारायण पब्लिशिंग हाउस, इटावा
बलदेव मिश्र, गपशप विवेक, क्रा०, ११२, हिन्दी भवन, इलाहाबाद
भूरत्नसिंह, जगदीशप्रसाद टण्डन, अकार्बनिक रसायन शास्त्र, डि० ६२२, श्रीराम मेहरा एण्ड क०, आगरा
महेशनारायण सक्सेना, स०, भैरव थाट अंक, रा०, १७६, संगीत कार्यालय, हाथरस
मु० ला० गुप्ता, वैज्ञानिक नव-निर्माण, क्रा०, १४४, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
यशपाल, सिंहावलोकन भाग ३, १६५, डि०, विप्लव कार्यालय, लखनऊ
रामस्वरूप जैन, ग्रामवासी और नागरिक जीवन, क्रा० ८०, विनय पुस्तक भण्डार, इन्दौर
वसन्त, संगीत विशारद, रा०, २३८, संगीत कार्यालय, हाथरस
वि० ना० भातखण्डे, क्रमिक पुस्तक मालिका, ३२ भाग, डि०, ८००, संगीत कार्यालय, हाथरस
स्वामीनाथ श्रीवास्तव 'स्वतन्त्र', कुछ कहावतें—एक आधुनिक दृष्टिकोण, क्रा०, ४८, वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद
सुरेन्द्रसिंह, आधुनिक कृषि, पु० मु०, क्रा०, ३४६, देश सेवा मण्डल, इलाहाबाद
सम्पादित, पाँच एकांकी, पु० मु०, ११२, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पादित, एकांकी, पु० मु०, ३६, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पादित, नया गुलदस्ता, भाग १, पु० मु० क्रा०, ४४, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पादित, राष्ट्रभाषा बोध, भाग १, २ तथा ३, पु० मु०, ६०, ६०, १२०, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पादित, नया कहानी संग्रह, भाग १, पु० मु०, ६४, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
सम्पादित, उड़ते जुगनू, पु० मु०, ५२, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २।।) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ : ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{३}{४}$" × ६" या २$\frac{३}{४}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{३}{४}$" × ३$\frac{३}{४}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{३}{४}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : $\frac{१}{२}$" × ६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७।।)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd No. D-5
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन

• १ अप्रैल, १९५५ से बिक्री के नये नियम

(इससे पहले के बिक्री सम्बन्धी सब नियम रद्द किए जाते हैं)

- हमारे सब प्रकाशनों की ६ प्रतियों के स्थायी आर्डर पर ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन, फ़्री पैकिंग तथा सवारी गाड़ी से आधा रेल-भाड़ा (मालगाड़ी से पूरा भाड़ा) बाद दिया जायगा। पुस्तक-विक्रेताओं को स्थायी आर्डर देने के उपरान्त यही सुविधाएँ हमारे प्रकाशनों की सब खरीदों पर दी जाया करेंगी।
- १२ प्रतियों के स्थायी आर्डर पर ६½ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन, फ़्री पैकिंग तथा सवारी गाड़ी से पूरा रेल-भाड़ा बाद दिया जायगा। स्थायी आर्डर के बाद हमारे प्रकाशनों पर ये पुस्तक-विक्रेता इन सुविधाओं के अधिकारी रहेंगे।
- एक वर्ष में अंकित मूल्य पर १०००) से अधिक हमारी पुस्तकें खरीदने वाले पुस्तक-विक्रेताओं को २½ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन तथा २०००) से अधिक की पुस्तकें खरीदने वाले पुस्तक-विक्रेताओं को ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन (इतनी बिक्री के उपरान्त ही) दिया जायगा। यह नियम स्थायी आर्डर देने वाले पुस्तक-विक्रेताओं पर लागू नहीं होगा।
- अंकित मूल्य पर १००) के हमारे प्रकाशनों के आर्डर पर फ़्री पैकिंग दिया जायगा। बाहर की पुस्तकों पर कमीशन के बाद मूल्य पर १ प्रतिशत पैकिंग लिया जायगा।
- अंकित मूल्य पर ५००) के एकमुश्त आर्डर पर फ़्री पैकिंग तथा फ़्री डिलिवरी (अथवा ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन) दिया जायगा।
- जिन साहित्यिक प्रकाशनों पर अब तक ५ प्रतिशत कम कमीशन दिया जाता था, अब उनमें से अधिकांश पर ५ प्रतिशत कमीशन बढ़ा दिया गया है। बहुत कम पुस्तकों पर ५ प्रतिशत कम कमीशन दिया जायगा।
- ये नियम हमारे पाठ्यक्रमों के प्रकाशन पर लागू नहीं होते।
- हमारे किसी भी प्रकाशन की ६ प्रतियों की खरीद पर अब तक जो ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन दिया जाता था, वह रद्द कर दिया गया है।
- केवल पुस्तक-विक्रेता ही व्यापाराना कमीशन पाने के अधिकारी होंगे।
- विशेष जानकारी के लिए पुस्तक-विक्रेता पत्र-व्यवहार करें।

राजकमल प्रकाशन, ८ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक २॥) एक प्रति ।)

प्रकाशन समाचार

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

साहित्यकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

वाह रे मैं वाह !

का कौतुकपूर्ण, राजनीतिक परिहास से ओत-प्रोत नाटक, जिसमें उनके दो अन्य नाटक

• काका की शशी •

तथा

• जो है सो ठीक •

भी छप रहे हैं।

वाह रे मैं वाह !

अप्रैल के अन्त तक प्रकाशित हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक ध्यान दें

● विभिन्न राज्यों की सरकारों ने इधर पुस्तकों की सरकारी खरीद की सूचियाँ बनाते वक्त **प्रकाशन समाचार** के विभिन्न अंकों से पर्याप्त सहायता ली है, यह आपको, हमें विश्वस्त रूप से मालूम है। विश्व-विद्यालयों द्वारा खरीदी जाने वाली पुस्तकों की अधिकांश सूचियाँ भी इसी पत्र में प्रकाशित सूचनाओं के आधार पर बन रही हैं। ऐसे समाचार हमें पुस्तक-विक्रेताओं, विश्व-विद्यालयों के हिन्दी-प्राध्यापकों तथा पुस्तकालयों से मिलते रहते हैं।

● **प्रकाशन समाचार** में नव-प्रकाशित पुस्तकों की जो सूचियाँ छपती हैं, वे निःशुल्क, आप पर बिना किसी अनुग्रह के, छपती हैं। सब पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं तक पहुँचने वाले इस पत्र में आपकी सूचनाओं के प्रकाशित होने से आपके व्यवसाय को जो लाभ होगा, वह आपसे छिपा नहीं है।

● कृपया अपनी सूचनाएँ नियमित रूप से भेजते रहने का ध्यान अवश्य रखें। आपके निजी लाभ के अतिरिक्त इससे हिन्दी-संसार में नये प्रकाशनों की सम्पूर्ण सूची तैयार होने का महत्वपूर्ण कार्य भी हो रहा है।

● **प्रकाशन समाचार** का वार्षिक मूल्य केवल २।।) है तथा विज्ञापन की दरें इतने विस्तृत प्रचार तथा उपयोग के किसी भी पत्र की अपेक्षा कम हैं। ग्राहक बनिये, इसमें नियमित रूप से विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइये तथा **प्रकाशन समाचार** जैसे महत्व के पत्र को सहयोग दीजिए।

व्यवस्थापक
'प्रकाशन समाचार'
१, फैज बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक ८ :
: पूर्णाङ्क २० :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

ल मास के अन्त में **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** ीवन का प्रथम वर्ष समाप्त हो रहा है। यह पहला वर्ष ना संघर्षपूर्ण रहा है, यह सर्वविदित है और प्रकाशकीय त् की सक्रिय प्राणवत्ता का प्रमाण है। संघर्ष न रहने से ा बनाने और आगे बढ़ने के लिए उत्साह कम हो जाता और गतिहीनता का भय उत्पन्न हो जाता है। अखिल तीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के सदस्यों और पदाधिकारियों ात वर्ष के संघर्षपूर्ण वातावरण में जिस तत्परता से अपना रदायित्व निभाया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

संघ द्वारा प्रकाशन-जगत् की उन्नति के जिस आन्दो- का सूत्रपात १ और २ मई १९५४ को दिल्ली में हुआ ; उसे देश के चारों कोनों में प्रकाशकीय विचार-मन्थन र क्रियात्मक हलचल में आज प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। ाशकों और लेखकों में, प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं प्रकाशकों में ही परस्पर किस प्रकार के सम्बन्ध क्योंकर ित हैं, एक-दूसरे के प्रति इनका क्या और किस हद तक ित्व है, इन प्रश्नों को लेकर सर्वत्र बहस छिड़ी हुई है र सही उत्तर और आदर्श हल की तलाश है। ये चिह्न न के हैं, और प्रकाशकीय जगत् के इस जीवन-स्फुल्लिंग चमकाने का श्रेय निश्चय ही अखिल भारतीय हिन्दी- ाशक संघ को है।

संघ ने अपने प्रथम वर्ष में ही प्रकाशकों के सामूहिक तों के संरक्षण में बहुत-से कदम उठाए हैं और कई सफलताएँ स की हैं। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात तो देश के धान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू, शिक्षा मन्त्री मौलाना बुल कलाम आज़ाद, रेल मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री था डाक व तार-विभाग के मन्त्री श्री जगजीवन राम का ान प्रकाशन-व्यवसाय की समस्याओं की ओर सफलता और आग्रहपूर्वक आकृष्ट करना था। इन मान्य मन्त्रियों के सम्मुख विस्तृत आवेदन रखे गए, और आवेदनों पर सन्तोषप्रद, विवेचनात्मक वार्ता हुई। जिस सहानुभूति और उत्सुकता से प्रकाशकीय माँगों को इन अधिकारियों ने सुना, उससे तो विश्वास होता है कि इस वर्ष ही भारत-सरकार कुछ ऐसे कदम अवश्य उठायेगी जिनके फलस्वरूप प्रकाशन-क्षेत्र में अधिकाधिक सुविधाएँ प्राप्त होने लगेंगी। रेलमन्त्री ने रेल-भाड़ों की न्यूनतम दरों में १) से १।।) तक की वृद्धि और उस पर साढ़े बारह प्रतिशत के सरचार्ज का प्रस्ताव लोक-सभा में रखा था। इसका अर्थ होता कि पुस्तकों के छोटे-से-छोटे रेल-पार्सल पर १) के स्थान पर १ अप्रैल ५५ से १।।≈) का व्यय हुआ करता। संघ के जोरदार प्रतिरोध पर ही इस प्रस्तावित वृद्धि को रद्द कर देने की घोषणा की गई, यद्यपि सरचार्ज साढ़े बारह प्रतिशत के स्थान पर सवा छ प्रतिशत कर दिया गया है। डाक-विभाग के मान्य मन्त्री श्री जगजीवन राम ने पुस्तकों के पैकेटों के लिए डाक की दरें कम करने का जो निश्चित आश्वासन संघ के शिष्टमण्डल को २१ मार्च ५५ को दिया था, उसे लोक-सभा में ३० मार्च ५५ को दुहराया। अपने में ये दो सफलताएँ ही सभी प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं को समान रूप से लाभप्रद सिद्ध होंगी। कोई भी संस्था इन पर गर्व और गौरव कर सकती है।

देश के विभिन्न राज्यों में पुस्तकों की बिक्री पर 'सेल्ज़ टैक्स' वसूल किया जाता है जिससे स्पष्ट ही पुस्तकों के प्रचार में अवरोध उपस्थित होता है। 'सेल्ज़ टैक्स' का विषय केन्द्र की सरकार के अधीन नहीं है, फिर भी श्री जवाहरलाल नेहरू ने इसे हटाने के पक्ष में व्यक्तिगत रूप से राज्यों के मन्त्रियों को लिखने का आश्वासन दिया है। रेल मन्त्री तथा तार व डाक विभाग के मन्त्रियों से भी जो सुविधाएँ प्राप्त हुईं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, उनमें भी महान् लेखक और पुस्तक-प्रेमी हमारे प्रधान मन्त्री का हाथ स्पष्ट है।

शिक्षामन्त्री से माँग की गई है कि देश-भर के प्रकाशन-जगत् की—केवल हिन्दी के प्रकाशन-जगत् की ही नहीं—वर्तमान स्थिति की जाँच-पड़ताल करने के लिए एक सार्वजनिक आयोग की नियुक्ति की जाय। इस प्रकार के आयोग पहले अखबारों तथा फिल्मों के लिए नियुक्त भी हो चुके हैं। प्रकाशन-व्यवसाय का महत्त्व समाचार-पत्रों और फिल्मों के व्यवसायों से कम नहीं है, यद्यपि प्रकाशन-व्यवसाय तुलना में इन दोनों व्यवसायों से कहीं पिछड़ा हुआ है। देश को शिक्षित करने की और ज्ञान-प्रसार की हर कोशिश इसी व्यवसाय के माध्यम से होती है। आवश्यकता है कि एक आयोग इस की गहरी छानबीन करे ताकि इसकी सफलताएँ, कमियाँ और अभाव सामने आ जाय और वांछित प्रगति का मार्ग निर्दिष्ट हो। यह माँग शिक्षा मन्त्रालय के विचाराधीन है। शिक्षा मन्त्री का ध्यान टेण्डर द्वारा पुस्तकें खरीदने की त्रुटियों की ओर भी खींचा गया। सब पुस्तकों का एक ही टेण्डर माँगना गलत है। प्रत्येक पुस्तक अपने में एक इकाई होती है। टेण्डर माँगना हो तो नाम देकर हरेक पुस्तक का अलग से माँगना चाहिए। सब प्रकार के लेखकों की और सब प्रकार की पुस्तकों को एक ही खूँटी से बाँधना, और सब प्रकार की भली बुरी, अच्छे-घटिया कागज पर मुद्रित पुस्तकों को एक संज्ञा दे देना मूल रूप से अनुचित है। शिक्षा मन्त्री ने इस तर्क को समझा और इस पर कार्यवाही के लिए विचार करने का आश्वासन दिया।

फ़रवरी ५५ में भारत-सरकार का शिक्षा-विभाग हिन्दी-पुस्तकों में से चुनकर कुछ ही पुस्तकों की एक सीमित प्रदर्शिनी करने का इरादा कर रहा था। संघ की कार्य समिति ने भी एक प्रस्ताव द्वारा दिल्ली में हिन्दी-प्रकाशनों की प्रदर्शिनी के आयोजन का निश्चय किया था; शिक्षा-विभाग को इस पर लिखा गया कि वे प्रकाशक संघ का सहयोग लेकर एक बड़ी प्रदर्शिनी की योजना बनाएँ जिसमें देश-भर के विभिन्न प्रकाशक यदि चाहें तो अपने स्टाल भी लगा सकें। यह सुझाव मान लिया गया और आशा है कि लोक-सभा की वर्तमान बैठक के समाप्त होने से पहले ही १६ अप्रैल से ६ मई, ५५ तक के किन्हीं दिनों में एक प्रदर्शिनी आयोजित होगी। देश के सब हिन्दी प्रकाशकों को इसमें भाग लेने का नि[...] दिया गया है।

प्रकाशक संघ के शिष्ट-मण्डल की इस माँग प[...] विदेशों से, विशेषकर अमेरिका से, आने वाले कुरु[...] और अश्लील साहित्य के आयात पर प्रतिबन्ध लगे, [...] मन्त्रालय विचार कर रहा है।

लोक-सभा के वर्तमान सेशन में कापीराईट सम्बन्धी [...] कानून प्रस्तुत होने की आशा है। इस कानून की धारा[...] धाराओं को बनाते वक्त प्रकाशकीय मन्तव्य को शिक्षा-म[...] लय अथवा कानून-मन्त्रालय ने अपने सामने रखा हो, [...] में सन्देह है। प्रकाशकों से इस सम्बन्ध में मन्त्रणा न[...] गई। स्वीकृति के लिए इस कानून पर लोक-सभा [...] राज्य सभा में बहस होगी जहाँ के सब सदस्य निज को ले[...] मानते हैं, या हैं। इन दोनों मन्त्रालयों को संघ की [...] से लिखा गया है कि कापीराईट-सम्बन्धी किसी भी प्रस्[...] कानून पर प्रकाशकीय विचार-धारा की उपेक्षा नहीं की [...] चाहिए। पत्र-व्यवहार हो रहा है और आशा है कि[...] ही इस सम्बन्ध में उचित निर्णय किया जायगा।

जुलाई १६५४ में प्रकाशक संघ की कार्य-समि[...] लेखकों और प्रकाशकों के मध्य एक आदर्श अनुबन्ध [...] विदे को तैयार करके प्रकाशित किया। इस अनुबन्ध की [...] को इंग्लैण्ड के लेखक-संघ और प्रकाशक-संघ के बीच [...] अनुबन्ध; 'युनेस्को' के प्रस्तावों तथा अन्य उन्नत दे[...] प्रचलित अनुबन्धों के अनुरूप बनाया गया था। इस अ[...] को लेकर पत्र-पत्रिकाओं में और लेखकों-प्रकाशकों में [...] चर्चा हुई है। संघ की ओर से यह आदेश नहीं [...] सब प्रकाशक इसी अनुबन्ध का प्रयोग करें—परिस्थि[...] के अनुसार लेखक और प्रकाशक इसमें परिवर्तन [...] सकते हैं—लेकिन यह दावा अवश्य है कि इस अनुबन्[...] रूपरेखा पश्चिम के पचासों वर्षों के अनुभव से प्रस्तुत [...] लेखकों से मान्य अनुबन्धों के समान निर्धारित की गई है[...]

संघ की कार्य-समिति ने पुस्तक-विक्रेताओं और [...] संस्थाओं को दिये जाने वाले कमीशन पर कोई निर्णय [...] से पहले देश के प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं का [...] जान लेना उचित समझा और तदनुसार नवम्बर १६५[...] एक विस्तृत प्रश्नावली प्रचारित की गई। लगभग [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशकों और पुस्तक-विक्रेताओं ने इस प्रश्नावली के विस्तृत र संघ के कार्यालय को भेजे। इन उत्तरों के समीचीन श्लेषण के बाद ही कार्य-समिति अखिल भारतीय हिन्दी काशक संघ के सदस्यों से सिफारिश करेगी कि अपने र्षिक अधिवेशन में कमीशन-सम्बन्धी ऐसे निर्णयों पर पहुँचे -प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की अधिकतम संख्या मान्य हों और उनके व्यापार में किसी प्रकार की बाधा न पस्थित करें।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रथम वर्ष समाप्ति के साथ-साथ हमें बनारस में एक नये अखिल रतीय प्रकाशक सम्मेलन के आयोजन की सूचना मिली है। हिन्दी के प्रकाशकीय अथवा लेखकीय संसार का ही र्भाग्य नहीं है कि किंचित्मात्र भी सफल होता हुआ सच्चा यास उसके दायरे से बाहर खड़े लोगों को नहीं सुहाता, मारे देश का इतिहास ही इसकी साक्षी है। जहाँ भी कोई स्था जड़ पकड़ने लगती है, उसे सींचकर अपना समर्थन ी की जगह, उसे अपना सहयोग देकर अधिक उपयोगी ाने के स्थान पर, यदि उसमें कमियाँ हैं तो उन्हें दूर करने प्रयास न करके उसकी प्रतिद्वन्द्विता में नई संस्था खड़ी रने के लिए, उसे उखाड़ फेंकने की हरचन्द कोशिश में म जुटते आए हैं। देश के सामर्थ्य और शक्ति का इस कार महान् और शोचनीय अपव्यय होता है।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ किन्हीं भी ार्थ-विशेषों की रक्षा के लिए नहीं बना। यह संघ पूँजी-ति-प्रकाशकों के हित-साधन के लिए बना है, इस गलत और मूल बात को बार-बार दुहरा कर सच्चाई में नहीं बदला सकता। संघ के कार्य-कलाप का ब्यौरा सबके सामने है, समें क्या बात इस आरोप के समर्थन में कही जा सकती है कि संघ को समूचे प्रकाशन-जगत् की हित-चिन्ता नहीं है? संघ के उद्देश्य सामूहिक रूप से हिन्दी-प्रकाशकों की रक्षा में निर्दिष्ट हैं। इसका विधान छोटे-बड़े प्रतिनिधि-प्रकाशकों ने मिलकर तैयार किया है। संघ का द्वार सदा से, सब के लिए खुला है। इसके विधान में भी हमेशा बहुमत से संशोधन करना सम्भव है। संघ के पदाधिकारियों ने प्रकाशन-जगत् की निःस्वार्थ सेवा लगन और ईमानदारी से की है। संघ का जो एक दिशा से विशेष विरोध हुआ है, उसकी कुल कटुता संघ के पदाधिकारियों को व्यक्तिगत रूप से सहनी पड़ी है, लेकिन इसकी भी शिकायत कहीं किसी ने नहीं की। संघ के विधान, प्रस्तावों व कार्यवाहियों में थोड़े-बहुत हेर-फेर सदा सम्भावित हैं। फिर क्या बात है कि एक ऐसे नये सम्मेलन की आवश्यकता पड़ी? यदि अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की स्थापना से, या स्थापना के समय या बाद की किसी कार्यवाही से किसी व्यक्ति के सम्मान एवं अहम्भाव को जाने-अनजाने में चोट पहुँची हो तो उसका प्रतिकार भी सम्भव है, यद्यपि उसे सार्वजनिक प्रश्नों पर विचार करते वक्त अधिक महत्व देना अनुचित है। हिन्दी के प्रकाशन-जगत् के सामूहिक हितों की रक्षा का प्रश्न इतना व्यापक और महत्व-पूर्ण है कि इसके लिए सब छोटी-बड़ी बाधाओं को बलात् हटाया जाना चाहिए और हटाया जा सकता है।

सब प्रकाशक-बन्धुओं से हमारी सानुरोध प्रार्थना है कि कोई ऐसा रास्ता अवश्य ढूँढ निकालें जिससे हिन्दी-प्रकाशन जगत् एक ही बना रहे, एक साथ ही बढ़े और एक आवाज से ही अपने हितों की सुरक्षा के लिए बोले। हमें निश्चय है कि हमारी प्रार्थना विफल न जायगी, क्योंकि यह प्रार्थना हिन्दी-प्रकाशन का हार्दिक हित चाहने वाले सभी व्यक्तियों और संस्थाओं की है।

●

भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय की ओर से हिन्दी-प्रकाशनों की एक प्रदर्शिनी का आयोजन १९ अप्रैल से ९ मई ५५ तक के किन्हीं दिनों में होगा (तारीखें अभी तक निश्चित नहीं हुई हैं)। जो प्रकाशक इस प्रदर्शिनी में स्टॉल बुक करवाना चाहें, वे मन्त्री, अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ, ? फैज बज़ार, दिल्ली, को शीघ्र ही लिखें। किराया न्यूनतम रखा जा रहा है, लेकिन इसका निश्चय अभी नहीं हुआ। प्रदर्शिनी वहीं होगी जहाँ डाक-विभाग का शताब्दी-उत्सव हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों के पैकेटों के लिए

डाक की दरें घटेंगी !

बुधवार, ३० मार्च ५५, को लोक-सभा में डाक व तार-विभाग के मन्त्री श्री जगजीवन राम ने घोषणा कर दी कि पुस्तकों के पैकेटों डाक की दरों को घटाने के प्रश्न पर विचार करने के लिए शीघ्र ही समिति बनाई जायगी। इस समिति में प्रकाशकों के प्रतिनिधि भी र

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के नेतृत्व में हिन्दी, अंग्रेजी तथा उर्दू के प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं का एक शिष्ट-मण्डल सोमवार, २१ मार्च, ५५ को शाम के चार बजे डाक एवं तार विभाग के मन्त्री श्री जगजीवन राम से पार्लियामेण्ट हाउस में मिला। मान्य मन्त्री के अतिरिक्त शिष्ट-मण्डल से बातचीत करने के लिए डाक व तार विभाग के डायरेक्टर-जनरल श्री एम० एम० फिलिप तथा सीनियर डिप्टी डायरेक्टर-जनरल श्री सी० वी० राजन उपस्थित थे। शिष्ट-मण्डल में भारती भण्डार, इलाहाबाद, के जनरल मैनेजर श्री बी० एम० ठाकुर, ज्ञानमण्डल लि० बनारस के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सत्येन्द्रकुमार गुप्त, 'आज' के मैनेजर श्री विश्वनाथ, उर्दू-प्रकाशक संघ के श्री मुहम्मद यूनस, सस्ता साहित्य-मण्डल के श्री मार्तण्ड उपाध्याय तथा श्री यशपाल जैन, आत्माराम एण्ड संस के श्री रामलाल पुरी, ऑक्सफोर्ड बुक एण्ड स्टेशनरी कम्पनी के श्री प्रिमलानी तथा राजकमल प्रकाशन के श्री ओम्प्रकाश सम्मिलित थे। पुस्तक-पैकेटों पर १ मई १९५३ से बढ़ी हुई डाक की दरों तथा आवश्यक रजिस्टरी आदि के विरुद्ध मन्त्री महोदय के सम्मुख एक आवेदन-पत्र रखा गया जिसमें यह मांग भी की गई थी कि इंग्लैण्ड की तरह इस देश में पुस्तकों को डाक द्वारा 'बल्क पोस्ट' से भेजने की व्यवस्था पर विचार किया जाय। 'बल्क पोस्ट' का विवरण मन्त्री-महोदय के सामने रखा गया यह आवेदन इस अंक में अन्यत्र उद्धृत किया जा रहा है।

श्री जगजीवन राम ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा क कि पुस्तकों पर डाक की दरें घटा दी जायँगी। लेकिन पहले डाक-विभाग इस प्रश्न पर अवश्य विचार करना च है कि किताबों के लिए दरें कम करने की जो यह सुवि जायगी, वह अन्य व्यवसायियों द्वारा न बरती जाय। कि की जगह, उदाहरण के लिए, कपड़े को डाक की सस्त पर न भेजा जा सके। देश के वर्तमान नैतिक स्तर को में रखते हुए व्यवस्था-सम्बन्धी इन बातों का निश्चय हो डाक की दरें कम करने की औपचारिक रूप से घोषणा क जायगी। इस व्यवस्था को नियमित रूप देने के लिए 'पु की कानूनी व्याख्या भी करनी होगी। फिर ऐसे नियम ब होंगे जिनके अनुसार डाक-विभाग आसानी से यह जाँच-पड़ कर सके कि किसी पैकेट में किताबें ही भेजी जा रही हैं, वस्तुएँ नहीं। इस प्रकार की सम्बन्धित समस्याओं पर वि करने के लिए तुरन्त ही एक समिति बनाई जा रही है जि सरकारी अधिकारियों के अतिरिक्त अखिल भारतीय हि प्रकाशक संघ के प्रतिनिधि लिये जायँगे।

श्री जगजीवन राम से शिष्ट-मण्डल की १ घण्टे बातचीत हुई। डाक से सम्बन्धित बहुत-सी दूसरी कठिना की ओर भी मान्य मन्त्री का ध्यान खींचा गया। उत्साह-वर्धक सहानुभूति से शिष्ट-मण्डल की बातों को तथा उन पर विचार किया गया, शिष्ट-मण्डल के सब स उससे प्रभावित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज-शिक्षा के लिए अनुपम साहित्य

[उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, मध्यप्रदेश, भोपाल, मध्यभारत तथा अन्य राज्यों
द्वारा स्वीकृत एवं प्रसारित]

निम्नलिखित पुस्तकें प्रौढ़-शिक्षा तथा समाज-शिक्षा के लिए विशेषतया लिखी गई हैं। सभी पुस्तकें सचित्र हैं मोटे टाइप में छपी हैं। भाषा सरल है, परन्तु विषय का चुनाव और शैली प्रौढ़ों की आवश्यकता और मानसिक स्तर अनुरूप है।

उत्तरोत्तर क्रमिक विकास के आधार पर सारा साहित्य चार विभागों में बँटा (Graded) है।

पहली सीढ़ी (Grade I)

हमारे बापू	पन्द्रह आना
हमारे नेताजी	,,
महाभारत	,,
दशहरे की कहानी	,,

दूसरी सीढ़ी (Grade II)

देश के दुलारे	चौदह आना
वीर देवियाँ	,,
तीन महापुरुष	,,
हमारे नेता	,,

तीसरी सीढ़ी (Grade III)

अपने देश की सैर	बारह आना
झण्डे की कहानी	,,
बगुला भगत	,,
हवाई लुटेरा	,,
अच्छा नागरिक	,,

चौथी सीढ़ी (Grade IV)

बापू से सीखो	आठ आना
प्राण हममें भी हैं	,,
पञ्च-परमेश्वर	,,
नया रास्ता	,,
भरत	,,
सब की माता	,,
राम-राज्य की नींव	,,

२१ हमारे गाँवों की समस्याएँ	आठ आना
२२ वन महोत्सव	,,
२३ सर्वोदय	,,
२४ भयानक भूत (मलेरिया)	,,
२५ महाजन का पंजा	,,
२६ स्वर्ग से नरक (नशाबंदी)	,,
२७ डाक्टर के आने से पहले	,,
२८ सच्चे सेवक	,,
२९ सच्चे गुरु	,,
३० लाख रुपए की एक बात (भूमि-दान)	,,
३१ संतवाणी	,,
३२ श्रमदान	,,
३३ नागरिकता	,,
३४ हम क्या खाएँ	,,
३५ मुर्गी-पालन	,,
३६ दूध का धन्धा	,,
३७ शहद का धन्धा	,,
३८ नए कदम	,,
३९ आल्हा-ऊदल की कहानी	बारह आना
४० अशोक-चक्र	,,
४१ स्वस्थ रहो	,,
४२ सरकार कैसे चलती है ?	,,
४३ मेरा सपना	,,

४३ पुस्तकों के सैट का मूल्य २७)। पूरा सैट मंगाने पर १५% कमीशन

समाज-शिक्षा-प्रकाशन, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ मार्च १९५५

डाक-विभाग के मन्त्री को दिया गया आवेदन

प्रधान मन्त्री, शिक्षा मन्त्री तथा रेलवे मन्त्री के सामने प्र
कीय समस्याओं से सम्बन्धित अपने आवेदन रखने के बाद "
का शिष्ट-मण्डल डाक-विभाग के मान्य मन्त्री से मि

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के नेतृत्व में यह शिष्ट-मण्डल, जिसमें हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी के प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता सम्मिलित हैं, भारत-सरकार के डाक व तार-विभाग के मन्त्री श्री जगजीवन राम का ध्यान भारतीय प्रकाशन-व्यवसाय को सहायता देने की दृष्टि से निम्नलिखित आवश्यक सुविधाओं की ओर आकृष्ट करता है :

१ मई, १९५३ से पुस्तकों के पैकेटों पर डाक की दरों में वृद्धि कर दी गई थी; परिणामस्वरूप डाक की ये दरें लगभग दोगुनी हो गई। इस वृद्धि के अतिरिक्त वी० पी० पैकेटों की रजिस्टरी को आवश्यक घोषित कर दिया गया था। बढ़ी हुई इन दरों तथा आवश्यक रजिस्टरी के बोझ के अतिरिक्त पुस्तकों पर वी० पी० पी० सरचार्ज तथा मनी-ऑर्डर कमीशन का व्यय भी पड़ता है। फलतः जब तक कोई पुस्तक डाक द्वारा पाठक के हाथों में पहुँचती है, इसका दाम इसके मूल्य के अनुपात में अत्यधिक बढ़ चुका होता है।

यद्यपि रेलों के मार्ग के स्थानों पर पुस्तकें सवारी अथवा मालगाड़ी द्वारा जा सकती हैं, फिर भी एक से दूसरे स्थान पर भेजे जाने के लिए पुस्तकों की एक बड़ी संख्या को भारतीय डाक-विभाग द्वारा प्रस्तुत सेवाओं पर निर्भर रहना पड़ता है। देश के कितने ही बड़े-बड़े प्रदेशों से और बहुसंख्यक कस्बों और गाँवों से डाक-विभाग के माध्यम द्वारा ही सम्पर्क सम्भव है। जब से डाक-दरों में बढ़ोतरी हुई है तथा अन्य व्ययों का बोझ उन पर डाला गया है, प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा ग्राहकों को भेजी जाने वाली पुस्तकों की मात्रा में बहुत कमी आ गई है; फलतः पुस्तकों के, जो शिक्षा और ज्ञान के प्रचार का अन्यतम साधन हैं, देशव्यापी वितरण में बाधा उपस्थित हुई है। इन बढ़ोतरियों और व्ययों के परिणाम उन सभी के लिए गम्भीर चिन्ता का कारण बने हैं जो शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में संलग्न हैं। भारतीय व्यवसाय को भी इनसे क्षति पहुँची है। मई १९५३ के सभी प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं का अनु वक्तव्य की सचाई का प्रमाण है।

आपका ध्यान इस ओर आकृष्ट करना अप्रासंगिक कि पश्चिम की तुलना में कहीं अधिक धनी देशों में पु पैकेटों के लिए डाक की दरें भारतीय दरों से अपेक्षा कम हैं। इसका कारण केवल यही है कि अपने देशों द्वारा पुस्तकों के अधिकाधिक उपयोग को प्रेरणा देने पश्चिम के ये देश सब प्रकार की सुविधाएँ देने को स रहते हैं।

डाक की दरों को कम करने की तथा प्रकाशन-सम्बन्धी अपनी अन्य माँगों की ओर उनका ध्यान लिए **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** के शिष्ट ने श्री जवाहरलाल नेहरू से २४ फरवरी, ५५ को, अबुल कलाम आज़ाद से २८ फरवरी, ५५ को तथा बहादुर शास्त्री से १ मार्च, ५५ को भेंट की। जो हुई तथा मन्त्रियों के सामने जो आवेदन रखे गए, पुस्तिका के रूप में छपवा दिया गया था जिसकी इस आवेदन के साथ टाँकी जा रही है।[1] प्रधान मन्त्री शिक्षा-मन्त्री से अपने दृष्टिकोण के प्रति सहानुभूति, तथा प्रोत्साहन पाना हमारे लिए अतीव उत्साह-वर्द्धक

१. जो प्रकाशक अथवा पुस्तक-विक्रेता इस पुस्ति प्रति चाहें, वे मन्त्री, अखिल भारतीय हिन्दी-प्र संघ, १ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली, को लिखकर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ारी ही माँग पर रेलवे-मन्त्री ने लोक-सभा में एक घोषणा ा निकट-पूर्व में प्रस्तावित सवारी गाड़ी के न्यूनतम भाड़ों में द्धि को रद्द कर दिया।

अपनी माँग के समर्थन में कुछ आँकड़े आदि साथ में ी पुस्तिका में प्रकाशित किये गए हैं।

पुस्तकों के पैकेटों पर डाक की दरें १ मई, १९५३ से की दरों तक कम करने तथा आवश्यक रजिस्ट्री को हटाने अतिरिक्त हमारी आप से प्रार्थना है कि इंग्लैण्ड की तरह ारे देश में भी पुस्तकों को 'बल्क-पोस्ट' द्वारा एक स्थान से रे स्थान तक भेजने की पद्धति चालू करने पर विचार करें। पद्धति में डाकखानों से पुस्तक-विक्रेताओं को थैले दिए ते हैं जिनमें पुस्तकों के बण्डल भरे जाते हैं और एक के लिए ४½ पेंस, अर्थात् ४० तोला के लिए ३ आने पाई, का चार्ज लिया जाता है। डाक की सुविधा के इस क प्रयोग के कारण ही वहाँ डाक की दरें कम रखी गई हैं। इसी प्रकार की पद्धति अपने देश में भी आरम्भ कर जाय तो डाकखानों की बढ़ती हुई संख्या की सहायता से कों के व्यापक प्रचार को भारी प्रेरणा मिलेगी।

संक्षिप्त में, हमारी माँगें निम्नलिखित हैं :

(१) पुस्तक-पैकेटों पर डाक की दरें कम की जायँ, और हें कम-से-कम १ मई १९५३ के पहले की डाक-दरों के र तक ले आया जाय।

(२) रजिस्ट्री बिना वी० पी० पी० की व्यवस्था को पुनः ू किया जाय, और रजिस्ट्रेशन को अनिवार्य नहीं रखा य।

(३) वी० पी० पी० सरचार्ज को समाप्त किया जाय।

(४) जैसा कि इंग्लैण्ड में होता है, देश में पुस्तकों के डलों को थैलों में भरकर एक-से-दूसरे स्थान तक भेजने की स्था चालू की जाय।

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं बने तो एक वर्ष का चन्दा २॥) आज ही भेज दीजिए।

हिन्दी के हमारे अनमोल ग्रन्थरत्न

(१) **निबन्ध भारती**—लेखक सिंहासनराय सिद्धेश, मूल्य ३), सजिल्द ३॥), पृष्ठ ४०८। निबन्ध की सर्वोत्तम पुस्तक।

(२) **कन्या का तपोवन**—(नाटक) ले० पं० रामनरेश त्रिपाठी, मूल्य २॥), सजिल्द।

(३) **आधुनिक कहानियाँ**—(कहानी) ले० जयशंकर त्रिपाठी, मूल्य १।), सजिल्द।

(४) **महात्माओं की कथाएँ**—(जीवनी) ले० पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ११६, मूल्य १), सजिल्द।

(५) **उपदेश की कथाएँ**—ले० पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ८४, मूल्य ।॥), सजिल्द।

(६) **सदाचार की कहानियाँ**—पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ १०८, मूल्य १।)।

(७) **देशभक्त और साहित्यकार**—ले० श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ८०, मूल्य ।॥=)।

(८) **जागरण के गान**—संग्रहकर्ता श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ४०, मूल्य ।=)।

(९) **हमारी शिक्षा-व्यवस्था**—ले० श्री अनाथ नाथ बसु एम० ए०, पृष्ठ १०६, मूल्य १)।

(१०) **गुलिवर की यात्रा**—ले० 'सिद्धेश', पृष्ठ ६५, मूल्य १)।

(११) **वीर बालक**—(जीवनी) प्रोफेसर 'कमलेश', पृ० ९६, मूल्य ।॥=)।

(१२) **नागरिकता तथा भारतीय शासन**—ले० शिवनाथ शर्मा एम० ए०, पृष्ठ ३३०, मूल्य २॥)।

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

उपन्यास, कहानियाँ

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)

खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)

पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ३)

गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)

आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)

अतीत के कंपन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)

मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)

पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)

धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)

ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ६)

केवलज्ञान प्रश्नचूड़ामणि : ४)

करलक्खण [सामुद्रिक शास्त्र] : ॥)

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)

चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)

खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)

खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक

भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए०

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन साहित्याचार्य

वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी

जैन शासन : पं० सुमेरचन्द्र दिवाकर

उर्दू-शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुख़न [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

विविध

हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द

ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद

ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

रजत रश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार वर्मा

ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-प्रकाशन की कुछ समस्याएँ

"प्रकाशक संघ" के प्रधान श्री रामचन्द्र टण्डन की यह रेडियो-वार्ता ५ मार्च ५५ को नई दिल्ली से प्रसारित हुई थी। "ऑल इण्डिया रेडियो" की अनुमति से इसे साभार प्रकाशित किया जा रहा है।

कुछ ही दिन हुए जयपुर में मुझे पुस्तकों के एक प्रदर्शन को देखने का अवसर मिला। यह प्रदर्शन बहुत थोड़ी पूर्व-सूचना से आयोजित था। फिर भी हिन्दी के लगभग सौ छोटे-बड़े प्रकाशकों ने इसमें भाग लिया था। यह प्रदर्शन हिन्दी-प्रकाशन की नवीनतम प्रवत्तियों का प्रतिनिधित्व करता था। इसके द्वारा हमारे साहित्य-निर्माण के विविध स्वरों का ही परिचय नहीं मिलता था, बल्कि पुस्तक-प्रकाशन के बाह्य उपकरणों के विषय में इधर कैसी कुछ उन्नति हुई है, उसका भी पता चलता था। यों तो हिन्दी प्रकाशनों की गतिविधि से परिचित रहना मेरा काम है, फिर भी यह स्वीकार करने में मुझे संकोच नहीं कि जो कुछ मैंने देखा, उससे मैंने एक विशेष प्रभाव ग्रहण किया और वह यह कि आज का हिन्दी-प्रकाशन, सभी बातों को देखते हुए, उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है। उसमें त्रुटियाँ हैं, किन्तु उन्नति की दिशा स्पष्ट है। यह मैं न कहूँगा कि हमारे यहाँ प्रकाशन-व्यवसाय उस दर्जे पर पहुँच गया है जब कि वह पश्चिम के उन्नत देशों के प्रकाशनों से कन्धे-से-कन्धा लगाकर चलता हुआ दिखे; फिर भी वह बहुत आगे आया है और यह बड़े सन्तोष की बात है। अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता का प्रभाव हिन्दी-प्रकाशनों पर पड़ना ही था और वह निश्चित रूप से पड़ रहा है। ठीक यह अवसर है जब कि इस व्यवसाय के सामने की कठिनाइयों का समुचित अध्ययन हो और उन्हें दूर करने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाय, क्योंकि इसका हमारी जनता की बौद्धिक, बल्कि सर्वतोमुखी, उन्नति से गहरा लगाव है।

प्रकाशन-व्यवसाय की कुछ त्रुटियों तथा आवश्यकताओं का पहले वर्णन करना कदाचित् अनुचित न होगा। यह सही है कि आर्थिक लाभ के उद्देश्य को सामने रखकर आदमी व्यवसाय करता है। इस बात को आदर्शों को गिराने के पक्ष में तर्क न समझना चाहिए। जहाँ एक ओर अनेक प्रकाशक अपने इस उत्तरदायित्व का अनुभव करते हैं और बराबर इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते हैं कि हमारे साहित्य का स्तर ऊँचा उठे, वहाँ कुछ ऐसे भी प्रकाशक हैं जिनका ध्यान इस ऊँचे लक्ष्य की ओर उतना नहीं रहता, बल्कि उनकी दृष्टि केवल आर्थिक लाभ की ओर होती है, अथवा अधिकतर इस ओर रहती है। एक अच्छा प्रकाशक अपने लेखकों को पर्याप्त पारिश्रमिक देना चाहेगा, अच्छा सामान लगाना चाहेगा, अच्छी छपाई कराना चाहेगा, साथ ही अपने प्रकाशनों का मूल्य ऐसा रखना चाहेगा जो पाठकों को अखरे नहीं। इस तरह उसके अपने लाभ का अंश बहुत सीमित हो जाता है। वह ऐसे प्रकाशकों से होड़ नहीं कर सकता जो इन बातों पर उतना ध्यान नहीं देते और परिणामस्वरूप पुस्तक-विक्रेताओं को अधिक कमीशन दे सकते हैं; और पुस्तक-विक्रेता पुस्तक के वितरण की एक बड़ी आवश्यक कड़ी हैं। फलतः अच्छे साहित्य के प्रकाशन के मार्ग में बाधा आती है। कदाचित् ऐसा संघर्ष सभी देशों में बराबर रहा है, और है। हमारे यहाँ, जहाँ लोग पुस्तकों की खरीदारी के ही विशेष अभ्यस्त नहीं, यह स्थिति एक समस्या बन गई है, जिसे सुलझाना है।

मैं यह भी समझता हूँ कि पुस्तक-व्यवसाय को उन्नत करने के लिए जितनी पूँजी अपेक्षित है, उतनी वह आकर्षित नहीं कर सका है। कुछ बड़े प्रकाशक अवश्य हैं, लेकिन देश के विस्तार और उसकी आवश्यकताओं को देखते हुए उनकी संख्या इनी-गिनी कहलाएगी। छोटे प्रकाशकों की संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम नहीं, ऐसे प्रकाशकों की जो अपने को श्रमजीवी कहते हैं—जैसे दूसरों को श्रम करना ही नहीं होता—लेकिन इन छोटे-बड़े प्रकाशकों की सम्मिलित पूँजी इतनी नहीं जो प्रकाशन के आधुनिकतम साधनों को, जो अन्य उन्नत देशों में सुलभ हैं, जुटा सके। यों यह विचार फैला हुआ है कि प्रकाशक बड़ा लाभ उठाते हैं। यदि यह बात सच होती तो अर्थशास्त्र के नियम अवश्य काम करने लगते और पूँजी बरबस इधर खिंचकर आती।

बात आकर टूटती है पाठकों पर। एक तो साक्षरता की दृष्टि से पिछड़ा हुआ देश है। गरीबी भी है। तीसरे पाठकों को, जो पुस्तकें खरीद भी सकते हैं, पुस्तकें खरीदने का अभ्यास कम है। मैं समझता हूँ कि पाठकों का दायरा विस्तृत करने की आवश्यकता है और यह कार्य संगठित प्रयत्न चाहता है। जब तक पाठकों की संख्या नहीं बढ़ती, तब तक इस व्यवसाय में पूँजी खिंचकर आने की सम्भावना कम है। पूँजी खिंचकर नहीं आती तो हमारे प्रकाशन को वह साधन उपलब्ध न हो पायेंगे जो प्रकाशन के स्तर को ऊँचा उठाएँ। इस प्रकार प्रकाशन-व्यवसाय एक कुचक्र में पड़ गया है। इस तरह के प्रस्ताव हुए हैं कि हिन्दी-प्रकाशनों की खपत क्यों पर्याप्त नहीं, इसके सम्बन्ध में शोध होना चाहिए। इस प्रकार का शोध निश्चय ही लाभकर होगा, लेकिन प्रकाशन-व्यवसाय की कठिनाइयों के मूल में जो बात है, वह पाठकों के क्षेत्र का सीमित होना है।

प्रकाशन-व्यवसाय कदाचित् ऐसी स्थिति में है जब कि शासन के सहारे की उसे विशेष आवश्यकता है। इस बात के लिए आवाज उठाई जा रही है कि सरकार उसकी मदद करे। यह भी कहा जा रहा है कि इस व्यवसाय की ठीक-ठीक स्थिति समझने के लिए एक आयोग नियुक्त करने की आवश्यकता है, उसी प्रकार जिस प्रकार कि समाचार-पत्रों आदि के सम्बन्ध में हुआ था। यदि ऐसा हो सके तो एक ऐसे व्यवसाय का, जो कि ज्ञान-प्रसार के लिए लाना आवश्यक है, उचित मार्ग-प्रदर्शन हो सकेगा और ठीक-ठीक आँकड़ों के आधार पर साहित्य-सृजन तथा उत्पादन की दिशा में एक व्यवस्थित प्रयत्न सम्भव होगा। आजकल सभी उद्योगों की सफलता सरकार का निरीक्षण और निर्देशन चाहती है और इस व्यवसाय को भी यह आशा है कि उसे यह निर्देशन प्राप्त होगा। रेल, डाक आदि की विशेष सुविधाओं द्वारा भी व्यवसाय को पुस्तकें जनता के लिए सुलभ करने का अ दिया जा सकता है।

यह प्रकट है कि प्रकाशकों का बड़ा लगाव लेखकों साथ है। एक समय था जब कि मुद्रण और प्रकाशन सुविधाएँ अपेक्षाकृत थोड़ी थीं और लेखन-कार्य स्व व्यवसाय नहीं बना था। लेखक अधिकतर स्वान्तः लिखता था और इस बात को ही बड़ी गनीमत समझ कि उसकी कृति किसी तरह छपकर प्रकाशित हो गई। स्थिति में अनेक प्रकाशकों ने अनुचित लाभ भी उठाया स्थिति अब बदली हुई है। लेखक अपने काम को एक के रूप में समझने लगा है। वह अपने अधिकारों के जागरूक है। आज का प्रतिष्ठित लेखक इस स्थिति में कि अपनी शर्तें प्रकाशक से मनवा सके। फिर भी कुछ पु कड़ुआहटें लेखक-प्रकाशक के सम्बन्ध में बनी हुई हैं। ले अपने को शोषित-पक्ष के रूप में प्रदर्शित करना चाहता निश्चय ही लेखक को उसका उचित पारिश्रमिक मि चाहिए। यह लेखक-प्रकाशक संघर्ष पाश्चात्य में भी है, लेकिन वहाँ पर दोनों के आपस के व्यवहार में कटुता हो गई है। दोनों एक-दूसरे के धन्धे और विचारों का अ करने लगे हैं। लेखकों के अधिकारों के समर्थन के लिए प्रकार संघ बने हुए हैं जैसे कि प्रकाशकों के हैं। लेखकों पारिश्रमिक मिलने के कई रूप हैं, किन्तु जो रूप सबसे समझा गया है, वह लेखकों को रायल्टी दिये जाने का दोनों के बीच अनिवार्यतः एक नियमित अनुबन्ध होता इन अनुबन्धों की शर्तें प्रायः उभयपक्षों के संघों अनुमोदित होती हैं। यह उचित ही है कि यदि प्रकाशन से विशेष लाभ हो तो दोनों पक्ष उस लाभ के हों। पुस्तक की बिक्री न होने से प्रकाशक ही अधि आर्थिक टोटे में रहता है। इन बातों को ठीक सम दोनों पक्षों के बीच न्याय्य अनुबन्ध होने आवश्यक प्रकाशन-व्यवसाय की उन्नति इस बात पर निर्भर करती कि लेखक को उसके श्रम का उचित लाभ मिले और प्रकाशक निश्चय ही इस मोटी-सी बात को ठीक समझते जो कुछ कड़ुताएँ इस विषय में शेष हों, उन्हें दूर करने

[शेष पृष्ठ ४४२ पर देखि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

साहित्य साधना की पृष्ठभूमि

लेखक : श्री बुद्धिनाथ झा 'कैरव'

आलोचना साहित्य में अनुपम देन : मूल्य ६) मात्र

"पुस्तक में छः अध्याय हैं—साहित्य-तत्त्व-विमर्श, काव्य-तत्त्व-विमर्श, अलंकार तत्त्व विमर्श, रस-तत्त्व-विमर्श, दृश्य-काव्य-तत्त्व-विमर्श, कथा-साहित्य-विमर्श। इस गम्भीर ग्रन्थ-प्रणयन के लिए 'कैरव' जी धन्यवाद के पात्र हैं। यह पुस्तक निस्संदेह विश्व-विद्यालय में अध्ययन के लिए रखी जा सकती है, क्योंकि इसमें मूल-ग्राही सिद्धान्त-विवेचन है।"

—*कल्पना*, हैदराबाद।

आधुनिक-काव्य

स्वर्णोदय : श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात'	१।)
अशोक : श्री रामदयाल पाण्डेय	१॥)
कबीर : श्री यमुनाप्रसाद चौधरी 'नीरज'	१।)
ईंट और पत्थर : प्रो० कपिल	१)

नाटक

पुनरावृत्ति : श्री हंसकुमार तिवारी	१।॥)
कसाई : श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी'	२)
पंचामृत : श्री अनूप	१।)
जीवन-कण : श्री रामदीन पाण्डेय	१)

समालोचना

बारह बातें : प्रो० कपिल	१)
कविता कानन : श्री रामखेलावन पाण्डेय	१॥)

ग्रामोपयोगी साहित्य

साग-सब्जी की खेती : पं० वासुदेव पाण्डेय	२)
पशुओं का अनुभूत इलाज : श्रीरंग तिवारी	१॥)
पेड़-पौधों का संसार : रामनन्दन सिंह	२।)
मनुष्य और भूमि :	॥≡)

उपन्यास

अनोखा आदमी : पं० छविनाथ पाण्डेय	३)
अस्पताल में : ,, ,,	३)
अन्धकार : ,, ,,	३)
बदलती दुनिया : श्री सुरेश्वर पाठक	२॥)
मीर कासिम : श्री मदनलाल खेमका	२।)

कहानियाँ

मृत्यु के मुँह में : श्री छविनाथ पाण्डेय	१।=)
बोलती तस्वीरें : श्री शिवचन्द्र प्रतापनारायण	१।)

राजनीति

हम और हमारा समाज : श्री सुरेश्वर पाठक	२।)
भूला हुआ भारत : पं० जवाहरलाल नेहरू	१)

गांधी-साहित्य

राष्ट्रपिता : श्री छविनाथ पाण्डेय	॥≡)
गांधी की गूँजती आवाज : अखिल	।≡)
बापू की सीख : श्री सुरेश्वर पाठक	।≡)
बापू की बातें : ,, ,,	॥=)
बापू को जानो : ,, ,,	॥≡)

कथा-कहानी

मराठी गाथाएँ : क्षीर सागर	॥)
मलयालम कहानियाँ : कृष्ण गोपालन	॥)
विदेशी गाथाएँ : सदानन्द झा	॥)
सुनहले पंख : ,,	
हमारे युग-पुरुष : श्री सुरेश्वर पाठक	१)
आदि मानव : ,,	॥।)

सामान्य ज्ञानवर्द्धक

समुद्र आत्मकथा : श्री नरेन्द्र बी० ए०	॥)
गुलिस्ताँ : अखिल	॥)
तुलसी दल : श्री सुरेश्वर पाठक	॥=)
हमारी गंगा ,, ,,	॥=)

ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४४० से आगे]

प्रयत्न आवश्यक है।

जिस प्रकार प्रकाशन की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि प्रकाशकों और लेखकों के बीच के सम्बन्ध स्थिर हों, उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता एक-दूसरे के हितों का ध्यान रखें। यही नहीं; जिस प्रकार यह आवश्यक है कि प्रकाशक अपने सामने सत्साहित्य के प्रचार का आदर्श रखें, उसी प्रकार यह आवश्यक है कि पुस्तक-विक्रेता भी कुछ अंशों में आदर्शवादी हों। ऐसे विक्रेताओं को यह जान लेना चाहिए कि उच्च कोटि के साहित्य के प्रकाशक उन्हें वह कमीशन नहीं दे सकते जो कि घटिया साहित्य के प्रकाशक उन्हें दे सकते हैं। इस बात की जिम्मेवारी-पुस्तक-विक्रेताओं पर भी है कि वे पठन-पाठन के स्तर को ऊँचा उठावें। इसमें सन्देह नहीं कि कुछ पुस्तक-विक्रेता अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग हैं। किन्तु आवश्यकता है कि उनके और बन्धु उनके उदाहरण का अनुकरण करें। जब तक ऐसा नहीं होता, अच्छे साहित्य का उस रूप में प्रचार नहीं हो सकता जैसा कि अपेक्षित है। पुस्तक-विक्रेता प्रकाशक और पाठक के बीच की एक आवश्यक कड़ी है और यह कड़ी कमजोर हुई तो सारे प्रकाशन-व्यवसाय को धक्का पहुँचता है, और साथ ही उच्चकोटि के साहित्य के प्रचार को। पुस्तक-विक्रेता यदि सत्साहित्य के प्रचार में अधिक रुचि लें और केवल अधिक लाभ के लोभ का संवरण कर सकें तो वे निश्चय ही पुस्तकों के प्रकाशन के स्तर को ऊँचा करने के महत्कार्य में योग देंगे, और इसी में अन्ततोगत्वा अपना आर्थिक हित भी मानेंगे। इस समय जो अभी बताये गए दो प्रकार के प्रकाशकों के बीच में संघर्ष है, वह दूर होना चाहिए। वस्तुतः प्रकाशन के क्षेत्र में आगे बढ़ने की इतनी गुंजाइश है कि यह कल्पना करके खेद होता है कि ऐसे दो वर्गों का अस्तित्व हो।

मैंने प्रकाशक और लेखक तथा पुस्तक-विक्रेता के बीच के सम्बन्ध की चर्चा की। कलाकार, ब्लाक आदि बनाने वाले, कागज व्यवसायी और जिल्द-साज भी इस व्यवसाय की अन्य कड़ियों के रूप में कहे जा सकते हैं किन्तु एक कड़ी, जिसको भुलाया नहीं जा सकता, वह मुद्रकों की है। मुद्रण-व्यवसाय स्वतः एक बड़ा व्यवसाय है और उसका पुस्तकों के उत्पादन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस प्रकार प्रकाशन के समान दुर्भाग्य से इस व्यवसाय में भी पूँजी की कमी है। आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न मुद्रक हमारे देश में बहुत ... हैं। इसलिए हमारे प्रकाशनों को छपाई की दृष्टि से पिछ... कहा जायगा। इन सभी विविध कड़ियों की पुष्टि नि... पाठकों के क्षेत्र के विस्तार पर। अतएव प्रकाशन की ... सबसे बड़ी समस्या यह है कि इस क्षेत्र का कैसे विस्तार ...

भूल सुधार

प्रकाशन समाचार के फरवरी मास के अंक में ... ३६४ पर श्री एस० आर० त्रिवेदी (पुखरायाँ, कानपुर) ... एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। भूल से इसमें त्रिवे... स्थान पर 'द्विवेदी' छप गया है। इस भूल पर खेद ... करते हुए हम पाठकों से इसे सुधार लेने की प्रार्थना करते ...

◈ ◈ ◈

प्रकाशन समाचार के जनवरी मास के अंक में ... २६७ पर श्रीमती पद्मावती **'शबनम'** लिखित चन्द्रसखी ... **उनका काव्य** की पृष्ठसंख्या भूल से ८० दी गई है ... इसकी पृष्ठसंख्या खण्ड १ की ५६ और काव्य-संग्रह की ... कुल मिला के १३६ है।

◈ ◈ ◈

जनवरी मास के अंक में पृष्ठ २५८ पर सा... **संगम** (क्लॉक टॉवर, लुधियाना) का एक विज्ञापन प्रका... हुआ है, जिसमें कुछ पुस्तकों के मूल्य में इस प्रकार ... कर लिया जाय : हाजी बाबा इस्पहानी १।।), तलवार... चीन की कहानियाँ १)।

◈ ◈ ◈

गत अंकों में देश के महत्वपूर्ण पुस्तकालयों की ... क्रमशः छपती रही है। इस सूची में **श्री विट्ठल पुस्तकाल...** केकड़ी (अजमेर) का नाम लिख लिया जाय।

◈ ◈ ◈

पत्र-पत्रिकाओं की क्रमशः छप रही सूची में प्र... (मासिक, भट्टाचार्य रोड, पटना-१) तथा **जनसेवक** (साप्ता...) लखीमपुर खीरी, उ० प्र०) का नाम जोड़ लिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

इंग्लैण्ड में पिछले वर्ष १९५३ की तुलना में ९१३ स्तकें अधिक छपीं। कुल १९१८८ पुस्तकें छपीं, जिनमें ८४६ पुस्तकें पिछले प्रकाशनों का पुनर्मुद्रण अथवा उनके ये संस्करण थीं। पुस्तकों का अधिकाधिक प्रकाशन म्न तालिका से मालूम होगा :

र्ष	कुल प्रकाशन	पुनर्मुद्रण व नये संस्करण
९४२	७२४१	१४९९
९४७	१३०४६	२४४१
९५२	१८७४१	५४२८
९५३	१८२५७	५५२३
९५४	१९१८८	५८४६

पिछले दो वर्षों में प्रकाशित पुस्तकों का विषयानुसार लनात्मक वर्गीकरण इस प्रकार है :

	१९५४	१९५३
न्यास	४२०४	४३०१
ल-साहित्य	१९६६	१५९०
क्षा-सम्बन्धी	१६८०	१३६५
र्मिक	९६१	८९८
निकल	७७४	८१८
डकल	७३७	६९७
ता,नाटक	६२२	५७८
नीतिक	६१०	५७६
वन-चरित्र	५०७	५०७
ा, स्थापत्य	४८१	४३०
ाज-शास्त्र	४११	३३५
नूनी, वैधानिक	४०३	४०६
पार, उद्योग	४०३	३९१
ें, मनोरंजन	३८३	३८३
ोल	३६०	३९०
कृतिक विज्ञान	३१८	३००
इंजिनीयरिंग	३००	२९९
वनस्पतिशास्त्र, कृषि	२०७	२३९
यात्रा, साहस	१९३	१४६

१९५३ की अपेक्षा अमरीका में पिछले वर्ष १४९ पुस्तकें कम प्रकाशित हुईं। प्रकाशनों की कुल संख्या ११९०१ थी जिनमें से २२११ पुस्तकें पुनर्मुद्रण अथवा पुनर्संस्करण थीं।

विषयानुसार पुस्तकों का वर्गीकरण निम्न प्रकार था :

	१९५४	१९५३
उपन्यास	२०९८	२२१५
बाल-साहित्य	१३४२	१३९४
धार्मिक	८७५	८१४
जीवन-चरित्र	७४३	७७६
विज्ञान	७०७	६९५
इतिहास	६०५	५९०
साहित्य, समीक्षा	५५८	५५७
समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र	५१७	५३७
मेडिकल	४९२	४८५
काव्य, नाटक	४६८	४७५
टेकनिकल, मिलिटरी	४४४	४११
विविध	४२२	४४९
दर्शनशास्त्र, नीतिशास्त्र	३१५	३३२
कला	३१४	२९४
भूगोल, यात्रा	३११	३५१
कानून	२९२	२६२
व्यापार	२६०	३०२
शिक्षा	२६०	२३०
घरेलू शिक्षा	२३९	२४१
खेलें	२३१	२२२
भाषा शास्त्र	१८१	१८३
कृषिशास्त्र, उद्यानकारी	१४८	१६२
संगीत	७९	७३

जापान में प्रकाशकों की "एशिया कल्चरल एक्सचेंज पब्लिशिंग एसोसिएशन" (नं० १, ३ कोम कान्डा निशि-किन्चो, चियोडा-क्यु, टोकियो) नाम की एक संस्था है जिसके एक शिष्टमण्डल ने मार्च मास में भारत का दौरा किया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्टमण्डल में श्री गोजाबुरो तनवा (अध्यक्ष), श्री मसाश्रो मुगाता तथा श्री हिरोशी ओनो सम्मिलित थे। इस "एसोसिएशन" की स्थापना अक्तूबर १६५३ में ७० प्रकाशन-संस्थाओं द्वारा हुई थी और ध्येय एशिया के देशों से प्रकाशकों के परस्पर सम्पर्क द्वारा घनिष्ठतर सांस्कृतिक गठबन्धन करना है। "एशिया पब्लिशर्स यूनियन" का निर्माण भी इस संस्था का एक उद्देश्य है।

◆ ◆ ◆

१५ अगस्त, १६४७ से ३१ दिसम्बर १६५४ के बीच प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट रचनाओं पर भारत सरकार ने देश की विभिन्न भाषाओं की १२ पुस्तकों के लेखकों को साहित्य एकादमी की सिफारिशों पर ५-५ हजार रुपये के पुरस्कार देने की घोषणा की है। हिन्दी में श्री माखनलाल चतुर्वेदी कृत (भारती भण्डार, प्रयाग) द्वारा प्रकाशित हिम तरंगिनी को पुरस्कृत किया गया है। प्रति तीसरे वर्ष इन पुरस्कारों की घोषणा हुआ करेगी।

◆ ◆ ◆

विदेशों में भारतीय राजदूतों के कार्यालयों से सम्बन्धित पुस्तकालयों को १६५४ में विभिन्न भाषाओं की, मुख्यतः अँग्रेजी और हिन्दी की, १४,६५८ पुस्तकें भारत से भेजी गईं।

◆ ◆ ◆

"प्रिय डायरेक्टर साहेब, कृपया प्रथम श्रेणी के लिए फ्रन्टियर पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित पुस्तक (नम्बर ३१, हिन्दी) का ध्यान रखें।"—मथुरादास। १८ मार्च, १६५५ के दैनिक हिन्दुस्तान में छपी एक खबर के अनुसार यह पत्र राजस्थान विधान-सभा में राज्य-सरकार के मुख्य सचेतक श्री मथुरादास माथुर ने १० जनवरी, १६५३ को राज्य के डायरेक्टर आफ़ एजुकेशन को लिखा था। श्री माथुर ने इससे इन्कार नहीं किया लेकिन बताया कि इस पत्र का प्रयोग नहीं हुआ था; जिस किताब की सिफारिश इस पत्र द्वारा की जा रही थी, वह पहले ही पाठ्यक्रम में स्वीकृत हो चुकी थी।

◆ ◆ ◆

पंजाब के शिक्षा-मन्त्री को इधर अपना पद छोड़ना पड़ा है। विरोधी-दल ने उन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। इन आरोपों की जाँच-पड़ताल हो रही है।

आलोचना

अभी प्रकाशित
१४वें अंक
की विषय-सूची

★निबन्ध

मानवतावाद : साहित्य का स्थायी मूल्य :
डॉक्टर रांगेय

हिन्दी का अपना समीक्षा-शास्त्र : संभावनाएँ :
डॉ०

,, आवश्यकता : डॉ० भगीरथ

हिन्दी के सामाजिक कथा-नायकों का विकास :
राजेन्द्र

★प्रस्तुत प्रश्न

हिन्दी का भावी रूप : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा,
डॉ० सुनीतिकुमार चैटर्जी, श्री सुमित्रानन्दन

★अनुशीलन

दृश्य-काव्य के हास्य-तत्त्व : डॉ० रामकुमार
कान्हड़ के प्रबन्ध का पाठ : डॉ० माताप्रसाद

★मूल्यांकन

नयी कविता : सी० बी० राव। तीन नये काव्य सं
डॉ० जगदीश गुप्त। वर्षान्त के बादल : गंगा
मिश्र। हिन्दी कहानियाँ : देवराज उपाध्याय। छोटी
कहानियाँ : वीरेन्द्रकृष्ण माथुर। दो कहानी सं
मोहन 'राकेश'। टूटे काँटे : उदयशंकर भट्ट। चाँद
खण्डहर : डॉ० शैलकुमारी। कठपुतली :
मुक्तिदूत। ओ मेरे सपने : विजयेन्द्र स्नातक। परि
की प्रजा : विश्वम्भर मानव। तेलुगु साहित्य का इति
बालशौरि रेड्डि। द्विवेदी पत्रावली : डॉ० लक्ष्मी
वार्ष्णेय।

वार्षिक मूल्य १२)। प्रत्येक अंक का ३)

राजकमल प्रकाशन,
१, फैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

"राजकमल प्रकाशन" का वक्तव्य

कुछ पुस्तक-विक्रेताओं एवं प्रकाशकों ने हमारी संस्था से जानना चाहा है कि हमने राजस्थान में पुस्तकों की [खरी]द पर 'एजुकेशनल' कमीशन न भरकर व्यापारिक कमीशन भर दिया। प्रश्न असंगत नहीं है और इस का विस्तार [से] उत्तर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं।

अखबारों में घोषणा हुई थी कि राजस्थान की सरकार का [शिक्ष]ा-विभाग ४ लाख रुपयों की पुस्तकें खरीदना चाहता [है।] प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता टेण्डर भरें। पुस्तकों के लिए रकम काफ़ी बड़ी है, विशेषकर सामान्य पुस्तकों के लिए। [पिछ]ले वर्ष राजस्थान में लगभग ४० हजार की पुस्तकें खरीदी [गई] थीं, जिनमें से 'राजकमल' की खरीदी गई पुस्तकों का [मूल्]य केवल १३४३-६-० था। हमारा विश्वास है कि हमारी [पुस्त]कें इससे कहीं अधिक मात्रा में खरीदी जा सकती थीं।

गत वर्ष राजस्थान में २६¼ प्रतिशत का टेण्डर मंजूर [हु]आ था। स्थानीय पुस्तक-विक्रेता अपनी हानिकर होड़ [में य]ह नहीं देख पाते कि इतना कमीशन देने के बाद उन्हें [उस]में क्या बच पाएगा। अच्छी पुस्तकों पर तो इतना कमीशन नहीं मिलता जो टेण्डरों में भर दिया जाता है। इतना [अधि]क कमीशन भरकर पुस्तक-विक्रेता प्रकाशकों से इस बात [की] अपेक्षा करते हैं कि वे उन्हें अतिरिक्त सुविधाएँ देंगे। हम [अप]ने निश्चित कमीशनों से अधिक नहीं दे पाते; परिणाम [यह] होता है कि इन सरकारी खरीदों में हमारी पुस्तकें तुलना [में ब]हुत कम बिक पाती हैं, जब कि सुधी पाठकों द्वारा वर्ष-भर खरीदी तथा पसन्द की जाती हैं।

इस वर्ष भी टेण्डर की सूचना प्रकाशित होने पर राजस्थान [के] दो-एक पुस्तक-विक्रेता हमारे पास पधारे और उन्होंने [कहा] कि यदि हम ४०% अथवा ३५% कमीशन देने के [लि]ए तैयार हों तो वे कोशिश करेंगे कि हमारे प्रकाशनों का नाम भी उस सूची में आ जाय जो पुस्तकें खरीदने के लिए सरकार बना रही है। स्पष्ट ही हम इसके लिए तैयार न थे, और हमने स्वयं ही जयपुर जाना उचित समझा।

वहाँ जाकर कोशिश की कि सब प्रकाशक मिलकर टेण्डर में एक कमीशन ही भर दें। बहुत लम्बे विचार-विमर्श के बाद भी यह सम्भव न दिखाई पड़ा। इसके विरोध में कई सबल तर्क थे: (१) सुन पड़ा कि पिछली बार सब पुस्तकों की सप्लाई पर २६¼% कमीशन भरा गया था, इस बार २७½% या ३०% भरा जा रहा है, जिसका परिणाम यह होगा कि जो प्रकाशक फ्री डिलिवरी के साथ कमीशन की इससे काफी अधिक सुविधा पुस्तक-विक्रेताओं को न दे सकेंगे, वे अपने प्रकाशन न बेच पाएँगे, (२) हमारा और अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के वहाँ उपस्थित अन्य सदस्यों का कहना था कि संघ की ओर से कमीशन सम्बन्धी नियम अभी तक नहीं बन पाए हैं। यद्यपि यह सुझाव अनौपचारिक रूप से सदस्यों के सामने है कि जो पुस्तक-विक्रेता अथवा प्रकाशक निश्चित 'एजुकेशनल' कमीशन से अधिक पुस्तकालयों को अथवा सरकारी खरीदों पर दें, उन्हें संघ के सदस्य अपने प्रकाशन बेचने से इन्कार कर दें, लेकिन अभी तक यह सुझाव प्रस्ताव के रूप में न प्रस्तुत और न स्वीकृत हुआ है। इस प्रस्ताव के स्वीकृत तथा सफलतापूर्वक कार्यान्वित होने के लिए यह आवश्यक है कि इसे प्रायः सर्वसम्मति से ही स्वीकृत किया जाय। जब तक ऐसा सर्वसम्मत अनुबन्ध मान्य नहीं होता, कम कमीशन देने वाले प्रकाशक घाटे में रहेंगे क्योंकि पुस्तक-विक्रेताओं का सहयोग उन्हें स्पष्ट ही नहीं मिल पाएगा। (३) इन परिस्थितियों में हमें यह निरर्थक और हास्यास्पद जान पड़ा कि हम टेण्डर में १०% अथवा १२½% का 'एजुकेशनल' कमीशन भरें; इस 'जेश्चर' का किसी पर कोई असर न पड़ता। सब सरकारें अरसे से २० और २५ प्रतिशत कमीशन प्रकाशकों से चाहती हैं और पाती रही हैं। इस प्रथा को संघ के सम्मिलित निश्चय से ही तोड़ा जा सकता है। इतना कमीशन 'ऑफ़र' करना भी निरभिप्राय था क्योंकि पिछले वर्ष २६¼% तो इस बार २७½% या ३०% कमीशन की 'ऑफ़र' की बातें सुन पड़ रही थीं। अब, जब तक हम अधिकतम 'ऑफ़र' किये गए कमीशन से अधिक कमीशन टेण्डर भरने वाले को न दें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें नुक्सान होगा; परिणामस्वरूप हमारे प्रकाशनों का प्रचार करने का वे प्रयत्न न करेंगे, वरन् विरोध करेंगे, और दिखावे के लिए ही थोड़ी-बहुत पुस्तकें लेकर हमारे प्रकाशनों की खरीद की खानापूरी हो जायगी।

अब क्या करें? पुस्तक-विक्रेता हमारे अधिकतम कमीशनों को ध्यान में रखकर जब अपना 'मार्जिन' सुरक्षित रखने के लिए कम कमीशन नहीं भरते हैं, और उनके मुनाफे के लिए जब हम अधिक कमीशन देने में अपने को असमर्थ पाते हैं, तो हमें क्या करना उचित है? क्या शान्ति से यही देखकर लौट जायँ कि केवल अधिक कमीशन देने के बल पर ही किस प्रकार पुस्तक-विक्रेताओं का कुछ प्रकाशकों को सहयोग प्राप्त होता है?

कई अन्य प्रकाशक-बन्धु वहाँ पर उपस्थित थे जो इसी प्रकार सोच-विचार कर रहे थे। हम सबने यही निश्चय किया कि इस दशा में केवल एक ही उपाय है। यहाँ तो पुस्तक-विक्रेता प्रकाशकों का कमीशन ही सरकार को देने की होड़ में हैं। हम लोग अपना व्यापारिक कमीशन ही सरकार को क्यों न 'ऑफ़र' कर दें? अन्ततः यही हम सबने किया। दूसरा चारा न था।

हम और हम-से कई अन्य प्रकाशक-बन्धु पुस्तकालयों को कभी व्यापारिक कमीशन नहीं देते, क्योंकि पुस्तक-व्यवसाय में पुस्तक-विक्रेताओं के महत्व को हम पहचानते हैं। हमने कुछ वर्ष हुए बिहार-सरकार के शिक्षा-विभाग को कई हजार की खरीद पर २०% देने से इन्कार कर दिया था और आर्डर हमारे सुझाव पर स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं में से उस संस्था को दे दिया गया था जिससे हम निरन्तर सहयोग पाते रहते हैं। मध्यभारत की सरकार के शिक्षा-विभाग को हमारी पुस्तकों की सप्लाई स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा ही होती है; वे हमसे व्यापारिक कमीशन लेकर, अपना मार्जिन बचाकर, 'एजुकेशनल' कमीशन ही विभाग को देते हैं। यही हालत भोपाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, विन्ध्य प्रदेश और अन्य राज्यों की है।

राजस्थान में हमने पहली बार अपना अधिकतम व्यापारिक कमीशन किसी सरकार को 'ऑफ़र' किया। टेण्डर इतने ऊँचे भरे जा रहे थे कि हमारे अधिकतम व्यापारिक कमीशन से भी किसी पुस्तक-विक्रेता को कोई लाभ पहुँचना असम्भव था।

इस अनुभव के बाद भी यदि हम सब प्रकाशक पुस्तकालयों और सरकारों को दिये जाने वाले कमीशनों के स[म्बन्ध] में नियम नहीं बाँधते हैं तो हमारा दुर्भाग्य है। आशा है अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ शीघ्र ही सर्व[मान्य] नियम बनाने के लिए कदम उठाएगा।"

—व्यवस[्थापक]
बिक्री वि[भाग]
राजकमल प्रका[शन]

१ फ़ैज़ बाज़ार,
दिल्ली।

◈ ◈ ◈

"कागज़ पर एक्साइज़ ड्यू[टी]"

"एक ओर देश में शिक्षा को सस्ता बनाने की माँ[ग की] जाती है और दूसरी ओर सरकार ऐसे नये-नये उपाय [निका]लती है जिससे कि शिक्षा और भी मँहगी हो जाय। हाल ही में जो नया बजट उपस्थित हुआ है, उसमें कागज़ पर १० प्रतिशत ड्यूटी बढ़ा दी गई है। विलास की वस्तुओं [पर] ड्यूटी लगाना किसी को नहीं अखरता किन्तु कागज़ [जैसी] आवश्यक वस्तु पर ड्यूटी लगाना शिक्षा-प्रचार में [बाधक] होता है।

शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकों और कापियों का उत्पादन सस्ते से सस्ता हो। [परन्तु] उनको सस्ता बनाना तो दरकिनार रहा, सरकार ने उन्हें महँगा बनाने की ओर कदम बढ़ाया है। इस कर से सरकार के खजाने में करोड़ दो करोड़ रुपये की भले ही [आय] हो जाय परन्तु इससे देश की शिक्षा को अपार हानि पहुँ[चेगी]।

इस कर से जो पुस्तक अभी बाजार में ।) आ[ने में] मिलती है वह ।)॥ में मिलने लगेगी। यही हाल लिख[ने की] कापियों का हो जायगा—जो कापी अब तक दो आ[ने में] मिलती है, वह फिर =)। सवा दो आने में मिला क[रेगी]। इसका फल यह होगा कि शिक्षा और महँगी पड़ेगी। [इसका] असर यह होगा कि विद्यार्थियों को बिना किताबों और [कापियों] के स्कूल जाना होगा, अतः शिक्षा का जो असली मह[त्व है] वह असफल हो जायगा।

यदि यह कर-वृद्धि नहीं हटाई जायगी तो शिक्षा-सं[स्थाओं] और एज्यूकेशनल बोर्ड के सामने यह नई समस्या भी [पैदा हो] जायगी कि उनको स्वीकृत-पाठ्य-पुस्तकों की कीमतों पर [प्रका]शकों के लिए दस फीसदी वृद्धि करने की आज्ञा प्रदान [करनी] पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा भारत की लोकप्रिय सरकार से यह निवेदन है वह प्रकाशक और विद्यार्थियों के हित का ध्यान रखते हुए कर-वृद्धि पर पुनः विचार करे और उसको रद्द कर दे। कार की पंचवर्षीय योजना भी तभी सफल हो सकती है कि शिक्षा का प्रचार अधिक होगा। पुस्तकों की बढ़ी दरें और कागज़ की ड्यूटी शिक्षा-प्रसार में बाधक गी और शिक्षा के प्रचार में अवरोध होना देश के लिए ा हानिकर है। आशा है कि वित्त-मन्त्री कागज़ के बढ़े करों के दुष्परिणामों पर विचार कर शीघ्र ही कोई नया देश जारी करने की कृपा करेंगे।"

८-३-५५ जगदीशप्रसाद अग्रवाल

अध्यक्ष

आगरा प्रकाशक संघ, आगरा।

◈ ◈ ◈

"आज से कोई तीस वर्ष पूर्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी कहानी-खक जुले वर्न लिखित एक लोकप्रिय उपन्यास का हिन्दी षान्तर 'सागर-साम्राज्य' नाम से प्रकट हुआ था। अनुवादक स्वर्गीय श्री जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी। वह हिन्दी भाषा-र कहाँ से प्राप्त हो सकेगा? कोई महानुभाव सूचित करेंगे अनुग्रह होगा।

शंकरदेव विद्यालंकार

गुरुकुल काँगड़ी

(हरिद्वार)

विश्व के महान् लेखक खलील जिब्रान की

नई पुस्तकें

अनुवादक : डॉक्टर नरेन्द्र चौधरी डी० लिट्० (लन्दन)

(१) उसने कहा—जगत्-प्रसिद्ध पुस्तक Garden of the Prophet का हिन्दी अनुवाद, मूल्य केवल १)।

(२) बालू और बबूला—Sand and Foam का हिन्दी अनुवाद, मूल्य १)।

(३) पागल १), शैतान १), तूफ़ान १।)

हमारी अन्य पुस्तकें

महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य ३॥)

ज्ञान प्रकाश मन्दिर, पो० माछरा, जिला मेरठ

भारत, बर्मा और श्री लंका

के

पुस्तक-प्रकाशक, विक्रेता, न्यूज पेपर एजेण्ट दैनिक, साप्ताहिक व मासिक पत्र, एडवर्टाइजिंग एजेण्ट, पुस्तकालयों व शिक्षा-संस्थाओं के नाम, पतों तथा अन्य जानकारी के लिए:

दी टाइम्स

प्रैस डाइरैक्ट्री

खरीदिये।

एक प्रति पन्द्रह रुपया, डाक-व्यय सहित।

टाइम्स डाइरैक्ट्रीज़

१०४ ए, महात्मा गाँधी रोड,

सिविल लाइन्स, आगरा

लन्दन — न्यूयार्क

१७१ फ्लीट स्ट्रीट — टाइम्स स्क्वायर

हमारी डाइरैक्ट्रियों और शब्दकोषों के लिए भारत, बर्मा और श्री लंका में एजेण्टों की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

प्रकाशन समाचार ने सितम्बर १९५४ और फरवरी १९५५ के महीनों में हिन्दी में प्राप्य विभिन्न विषयों की पुस्तकों की समग्र सूची प्रकाशित करने का प्रयास किया था। यह सूची सर्वतः सम्पूर्ण है, हम ऐसा दावा नहीं कर सकते। प्रकाशकों से पूर्णांश में जो सहयोग मिलना चाहिए, वह मुख्यतः उनके आलस्य और उपेक्षा के कारण नहीं मिल पाता। लेकिन हमारा अनुभव है कि ऐसी सूची के महत्व से इधर अधिकाधिक प्रकाशक परिचित होते जा रहे हैं।

इन विशेषांकों में सूचीबद्ध करने के लिए जो प्रकाशक निजी सूचनाएँ नहीं भेज सके थे, उनसे प्रार्थना है कि मई मास के अन्त तक अपनी प्रकाशन सूचियाँ सम्पूर्ण वृत्तान्त के साथ (पुस्तक का नाम, लेखक, संस्करण, आकार, पृष्ठसंख्या मूल्य, अनूदित है तो मूल लेखक और अनुवादक के नाम सहित) अवश्य भेज दें। शीघ्र ही हम पिछले दोनों विशेषांकों का एक **पूरक-अंक** प्रकाशित करना चाहते हैं ताकि तदुपरान्त प्रतिवर्ष जनवरी मास में गत वर्ष के नये प्रकाशनों की सूची छापी जा सके।

१९५५ में ही बाल, किशोर और प्रौढ़ साहित्य के प्रकाशनों की सूची का एक विशेषांक अभी छपेगा। इस विशेषांक की घोषणा अगले अंक में प्रकाशित की जायगी।

◆ ◆ ◆

मन्त्रिणी, महिला सहायक संघ, उत्तर प्रदेश, पुखरायाँ कानपुर, लिखती हैं कि उन्हें हिन्दी की पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ खरीदनी हैं। प्रकाशक अपने सूचीपत्र एवं पत्र-पत्रिकाओं की नमूने की प्रति उन्हें भेजें।

◆ ◆ ◆

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कदम कुआँ, पटना का त्रैमासिक पत्र साहित्य फरवरी ५५ से मासिक कर दिया गया है। वार्षिक मूल्य ७) ही रखा गया है।

◆ ◆

भारत सरकार ने प्रौढ़ों के लिए ... शित साहित्य की दूसरी पुरस्कार-प्रति... की घोषणा की है। शिक्षा-मन्त्रालय १-१ हजार ... पुरस्कार तथा ५-५ सौ के ३० पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ प्रकाश... देगा। प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त पांडुलिपियों ... विचार किया जा सकेगा। भारत-सरकार पुरस्कृत पुस्... अतिरिक्त अच्छे प्रकाशनों की १-१ हजार प्रतियाँ भी खरी...

प्रतियोगिता के लिए मौलिक कृतियों पर ही विचा... सकेगा। दिवंगत लेखकों की रचनाओं पर विचार न ... भारत की सभी भाषाओं की पुस्तकें प्रतियोगिता में भा... सकेंगी। जो पुस्तकें पहली प्रतियोगिता में भेजी गई थीं, ... न भेजा जाय। पृष्ठसंख्या सामान्यतया ३२ हो लेकिन ... से अधिक न हो। आकार क्राऊन साइज का १६वां ... डिमाई का ८वां होना चाहिए। पुस्तकें १६ पा० से छोटे ... में न छपी होनी चाहिएँ, तथा सचित्र हों।

प्रत्येक पुस्तक की ४ प्रतियाँ, अथवा पाण्डुलिपि ... प्रतियाँ ३० अप्रैल, १९५५ से पहले सेक्रेटरी, फ़ॉर लि... कमेटी, मिनिस्ट्री ऑफ़ एजुकेशन, नई दिल्ली को भेजी ... चाहिएँ। प्रत्येक पुस्तक के साथ ५) का (यदि लेखक पां... भेज रहा हो तो ३) का) ट्रजरी चालान XXVI Ed... tion Miscellaneous-Literature for ... India के खाते में जमा करवा के भेजा जाना आवश्यक ...

◆ ◆ ◆

मध्यप्रदेश के कृषि-विभाग की पत्रिका : कृ... **समाचार** (नागपुर) के सम्पादक श्री मालवीय लिखते ... प्रकाशक कृषि सम्बन्धी अपने प्रकाशनों की सूचना ... शीघ्रातिशीघ्र भेज दिया करें। यदि इनकी २-२ प्रति... भेज दी जाया करें तो पत्रिका में आलोचना छपने के ... साथ इन्हें विभागीय प्रदर्शिनियों में भी रखने की व्यवस्... जाया करेगी। प्रकाशक यदि कृषि-सम्बन्धी अपने प्रका... के प्रचार-पत्र (पब्लिसिटी हैण्ड-बिल्स) भी भेजें तो ... प्रदर्शिनियों में ये वितरित किए जा सकते हैं।

◆ ◆

[शेष पृष्ठ ४५...

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ प्रकाशन

आधुनिक काव्य

आर्यावर्त : मोहनलाल महतो 'वियोगी'	२)
सावित्री : गौरीशङ्कर मिश्र 'द्विजेंद्र'	१॥)
चट्टान : रामइकबालसिंह 'राकेश'	२॥)
रिमझिम : हंसकुमार तिवारी	१)
राह के दीपक : रांगेय राघव	२)

नाटक

जिन्दगी का नशा : वीरेन्द्र नारायण	।॥)
गुरुदक्षिणा : जनार्दन मिश्र	॥)
खिलौनाघर : इब्सेन	।॥)

उपन्यास और कहानी

देहाती दुनिया : शिवपूजनसहाय	२)
संस्मरण : सर्वदानन्द वर्मा	१॥)
चिनगारी : इरिक मेरिया रिमार्के	३॥)
धरती माता : पर्लबक	३)
नवजीवन : राधिकारमण प्रसाद-सिंह	।॥)
विभूति : शिवपूजनसहाय	३)
रजकण : मोहनलाल महतो 'वियोगी'	१)
अपर्णा : जानकीवल्लभ शास्त्री	१)
विलासिनी : भगवतशरण उपाध्याय	१।)

निबन्ध और शब्द-चित्र

हमारा सांस्कृतिक साहित्य : जगन्नाथराय शर्मा	३।॥)
खट्टा-मीठा : देवेन्द्र शर्मा	।॥)
मनुष्य की मर्यादा : जगन्नाथप्रसाद मिश्र	२।॥)
हमारी साहित्यिक समस्याएँ : हजारीप्रसाद द्विवेदी	३)
हँसता जीवन : भुवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव'	२)
सभ्यता और संस्कृति : हजारीप्रसाद द्विवेदी	१॥)

समालोचना

साहित्य की वर्तमान धारा : जगन्नाथप्रसाद मिश्र	२॥)
छायावाद और प्रगतिवाद : देवेन्द्रनाथ शर्मा	३)
सन्त-साहित्य : भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'	२)
कहानी—एक कला : गिरिधारीलाल शर्मा 'गर्ग'	१।)
काव्यालोचन के सिद्धान्त : शिवनन्दन प्रसाद	२॥)

रस, छन्द, अलंकार आदि

काव्य-दर्पण : रामदहिन मिश्र	१०)
काव्य-विमर्श : ,, ,,	७)
काव्यालोक-२रा : ,, ,,	७)
काव्य में अप्रस्तुत योजना : ,, ,,	५)

विविध

हिन्दी मुहावरे : रामदहिन मिश्र	३।)
राजेन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ	२५)
सार्वजनिक अर्थशास्त्र और आर्थिक पुनर्निर्माण	८)
गुफा से महल : विश्वमोहन सिनहा	३)
जनता के तीन सिद्धान्त : डॉ० सनयात सेन	६)
विहार-दर्पण : गदाधर प्रसाद अम्बष्ठ	७)
भारतीय प्रशासन और नागरिक जीवन : उदय प्रकाश	५।॥)
प्रजातन्त्र : वा० रा० मोडक	२)
मेगास्थनीज का भारत-विवरण	२)
विजयनगर साम्राज्य का इतिहास : वासुदेव उपाध्याय	४)
प्राचीन भारत का इतिहास : भगवतशरण उपाध्याय	१०)
टोटका विज्ञान : स्वामी कृत्यानन्द	२॥)

युवकोपयोगी

भूस्वर्ग काश्मीर : हंसकुमार तिवारी	१॥)
तिरिचमीर : (हिमालय-शिखर पर आरोहण)	१॥)
एवरेस्ट : (,, ,,)	१॥)
अमर भारत : हरनन्दन प्रसाद	१॥)
उपनिषद्-कथा	१॥)
स्वर्ण अभियान (उपन्यास) : अयोध्याप्रसाद झा	१॥)
श्रम ही जीवन है : यमुनाधर मिश्र	१॥)
चिड़ियाखाना : सुरेश सिंह	१।॥)
वे तीनों (उपन्यास) : अयोध्याप्रसाद झा	१।=)
प्रकाश की ओर : जगपति चतुर्वेदी	१॥)
जीवन-संग्राम : जयनारायण पाण्डेय	१॥)
आकाश-लोक (नक्षत्र) : जगपति चतुर्वेदी	१॥)
प्राचीन भारत के निर्माता : भगवतशरण उपाध्याय	१॥)

विशेष विवरण के लिए सूचीपत्र मँगाएँ

किशोरोपयोगी मासिक 'किशोर' पिछले १६ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक मूल्य ४)

ग्रंथमाला-कार्यालय, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड सन्स

हमारा नया प्रकाशन

इतिहास और राजनीति

चम्पारन में महात्मा गान्धी (सचित्र)
: डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ५)
नेपाल की कहानी (सचित्र) : काशीप्रसाद श्रीवास्तव ८)
भारतीय राजनीति और शासन : के० आर० बम्वाल ८।।)
सचित्र संविधान : प्रो० इन्द्र एम० ए० २)

मनोरंजन-विनोद

सचित्र गृह-विनोद : अरुण एम० ए० ८)
रेडियो-नाटक (सचित्र) : हरिश्चन्द्र खन्ना ६)

भ्रमण-साहित्य

पृथ्वी-परिक्रमा (१८५ चित्र) : गोविन्ददास १२)

आलोचनात्मक साहित्य

हिन्दी के आलोचक : शचीरानी गुर्टू ८)
साहित्यानुशीलन : शिवदानसिंह चौहान ६)
साहित्य-विवेचन के सिद्धान्त : सुमन तथा मल्लिक ३)
जायसी-साहित्य और सिद्धान्त : यज्ञदत्त शर्मा २।।)
सूर-साहित्य और सिद्धान्त : यज्ञदत्त शर्मा २।।)
प्रसाद जी का जीवन, कला और कृतित्व
: महावीर अधिकारी ८)
हिन्दी-साहित्य और सूफ़ीमत : डॉ० विमलकुमार जैन ६)
साहित्य-शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोष
: राजेन्द्र द्विवेदी ८)

काव्य

गीत-गोविन्द (सचित्र) : विनयमोहन शर्मा ५)
संकलिता (सचित्र) : राजेश्वरप्रसाद नारायणसिंह २।।)
कदम कदम बढ़ाए जा : गोपालप्रसाद व्यास १।)

उपन्यास और कहानियाँ

जल-समाधि : गोविन्दवल्लभ पंत
डूबते मस्तूल : नरेश मेहता
समाधान : रामावतार त्यागी
कला का पुरस्कार (कहानी-संग्रह)
: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

जीवन-चरित्र

संसार के महान् युग-प्रवर्तक : प्रो० इन्द्र एम० ए०

भौतिक विज्ञान

गणित भाग भौतिक विज्ञान : प्रो० ए० एन० पुरी

नाटक

रेल के डिब्बे : अरुण एम० ए०
शतरंज के खिलाड़ी : हरिकृष्ण 'प्रेमी'
गधे (बालोपयोगी प्रहसन) : हबीब तनवीर

बालोपयोगी साहित्य

एक था राजा, एक थी रानी (सचित्र कविताएँ)
: चिरंजीत
नटखट के गीत (सचित्र कविताएँ) : चिरंजीत
सूम का घड़ा (सचित्र) : सन्तोष गार्गी
चरित्र-निर्माण की कहानियाँ (सचित्र)
: राजबहादुर सिंह
आदमी का जन्म (सचित्र) : मन्मथनाथ गुप्त
बाल-नीति-कथा (सचित्र) : विष्णुदत्त 'विकल'
नटखट पूसी (चित्रमय) : रमेश भाई
महाराणा प्रताप (चित्रों में)

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड सन्स

सचित्र लोक-कथा-साहित्य

लवा की लोक-कथाएँ : श्याम परमार १।।)
ढ़वाल की लोक-कथाएँ : गोविन्द चातक १।।)
जस्थान की लोक-कथाएँ : पुरुषोत्तम मेनारिया १।)
सौराष्ट्र की लोक-कथाएँ : प्रवासीलाल वर्मा १।।)
रूस की लोक-कथाएँ : हंसराज 'रहबर' १।)
चीन की लोक-कथाएँ : हंसराज 'रहबर' १।)

हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाले प्रकाशन

आलोचनात्मक साहित्य

लोचना के सिद्धान्त : व्योहार राजेन्द्रसिंह
न्दी-वक्रोक्तिजीवितम् : आचार्य विश्वेश्वर
द्धान्त और अध्ययन (संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण) : गुलाबराय

उपन्यास

गा माता : पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
क्ते दीप : दयाशंकर मिश्र
जी जी : पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
शिकान्त : विष्णु प्रभाकर

नाटक

गवान् मनु और पाँच अन्य एकांकी : लक्ष्मी नारायण मिश्र
ल-एकांकी : सन्तोष गार्गी

काव्य

यम-सुमन : सत्यवती वर्मा
धा-कृष्ण : राजेश्वर प्रसाद नारायणसिंह

इतिहास

भारत में ब्रिटिश राज्य का उदय और अस्त : प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति

भूगोल

मानचित्र-प्रवेशिका : रामस्वरूप वशिष्ठ

आत्म-चरित्र

हमारे राष्ट्र-पिता : गोपालप्रसाद व्यास

सचित्र लोक-कथा-साहित्य

निमाड़ी की लोक-कथाएँ : कृष्णलाल हंस
हिमाचल की लोक-कथाएँ : सन्तराम वत्स्य
उत्तर भारत की लोक-कथाएँ (१): सावित्री देवी वर्मा
उत्तर भारत की लोक-कथाएँ (२): सावित्री देवी वर्मा
छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएँ : चन्द्रकुँवर
हरियाना की लोक-कथाएँ : राजाराम शास्त्री
काश्मीर की लोक-कथाएँ (२): नन्दलाल चत्ता
नेपाल की लोक-कथाएँ : गोविन्द चातक
जर्मनी की लोक कथाएँ : जगन्नाथ शर्मा
अरब की लोक-कथाएँ : जगन्नाथ शर्मा

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रकवि परिषद् : एक परिचय

गौरीशंकर गुप्त

काशी की एक सांस्कृतिक संस्था का इसके प्रधान मन्त्री द्वारा भेजा गया परिचय।

किसी जाति की संस्कृति और सभ्यता का निदर्शक उसकी भाषा का साहित्य ही होता है। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी यद्यपि इस देश में बहुत प्राचीन काल से प्रचलित है और १३वीं सदी का उसका साहित्य भी उपलब्ध होता है, तथापि जब कि अब वह राष्ट्रभाषा के साथ ही सरकारी भाषा भी हो गई है, उसका कार्यक्षेत्र बहुत बढ़ गया है और उसके व्यावहारिक बनाने में विशेष चेष्टा करने का प्रयोजन प्रतीत होता है।

काशी भारतीय संस्कृति और साहित्य की प्रतीक बनी रही और अब भी है। यहीं से हिन्दी के प्रचार का आयोजन हुआ और यहीं से हिन्दी-साहित्य का व्यापक प्रचार और प्रसार होना चाहिए। इसी ठोस कार्य के करने के अभिप्राय से सं० २००७ में वसन्त पंचमी के शुभ मुहूर्त पर स्थानीय गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के अवकाशप्राप्त प्रिन्सिपल महामहोपाध्याय पं० नारायण शास्त्री खिस्ते के कर-कमलों से 'राष्ट्रकवि परिषद्' का उद्घाटन हुआ था। उल्लेखय है कि 'आज' के सम्पादक सम्पादकाचार्य स्वर्गीय पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर ने परिषद् का नामकरण किया था और वे परिषद् के संस्थापकों में से थे। इस अवसर पर परिषद् को पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महामहोपाध्याय डा० गोपीनाथ कविराज, सम्पादकाचार्य पं० गोविन्द शास्त्री दुगवेकर, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे तथा आचार्य सीताराम चतुर्वेदी आदि विद्वानों के आशीर्वाद प्राप्त हुए थे। तदनन्तर परिषद् के अन्तर्गत 'राष्ट्रभाषा साहित्य-संग्रहालय तथा वाचनालय' एवं नवोदित साहित्यकारों के प्रशिक्षण तथा प्रोत्साहनार्थ शास्त्रानुमोदित रीति से निःशुल्क शिक्षा देने के अभिप्राय से 'नागरी विद्यापीठ' की स्थापना भी हुई।

परिषद् के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

(१) हिन्दी भाषा तथा साहित्य की सर्वांगीण उ[न्नति] एवं प्रसार के लिए सतत प्रयत्न करना।

(२) राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा नागरी लिपि के प्रचार [...] सक्रिय प्रयत्न करना।

(३) सदस्यों के पारस्परिक सहयोग एवं भाषण, [...] विवाद, निबन्ध तथा कविता-पाठ आदि के द्वारा साहि[...] रुचि तथा साहित्यिकता को उत्पन्न करना।

(४) विशिष्ट साहित्यिक अंगों तथा विषयों पर वि[...] के भाषण; कहानी, कवितापाठ आदि का आयोजन करना।

(५) नवोदित साहित्यकारों को पारिश्रमिक तथा प्र[...] पत्र देकर प्रोत्साहित करना।

(६) सम्मानित वयोवृद्ध साहित्यकारों का अभि[नन्दन] आदि से सम्मान करना।

(७) आर्थिक सुविधानुसार राष्ट्रभाषा की उन्नति के [...] सर्वोपयोगी त्रैमासिक या मासिक मुखपत्र निकालना तथा [साहि]त्यिक कृतियों को प्रकाशित करना।

(८) एक संग्रहालय खोलना जिसमें प्राचीन ग्रन्थों, [...] गत तथा जीवित साहित्यकारों के चित्र, हस्ताक्षर, [...] जीवनी तथा स्मारकरूप प्रिय वस्तुओं का संग्रह हो।

(९) एक वाचनालय खोलना जिसमें पुस्तकों, पत्रों [...] का संग्रह हो तथा जो जनसाधारण के उपयोग में आ सके।

(१०) स्मृति-दिवसों का आयोजन कर प्राचीन साहि[त्य]कारों की स्मृति अक्षुण्ण बनाए रखना।

(११) परिषद् का जब तक अपना भवन न हो तब [...] किसी स्थान की व्यवस्था कर बाहर से आने वाले कवि [...] लेखक-बन्धुओं के ठहरने की व्यवस्था करना।

प्रकाशन सम[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त सभी उद्देश्य हिन्दी तथा संस्कृत दोनों के लिए होंगे।

इन उद्देश्यों के अनुसार अब तक परिषद् विभिन्न साहित्य हारथियों की जयन्तियाँ तथा पुण्यतिथियाँ प्रतिवर्ष यथासमय मनाती रही है।

अब तक परिषद् स्वर्गीय पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर, राष्ट्रपति श्री डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त, आचार्य नरेन्द्रदेव, सन्त विनोबा भावे, श्री पृथ्वीराज कपूर था मद्रास के राजकवि श्री श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री का अभिनन्दन कर चुकी है।

अगस्त सन् ५२ से विभिन्न विषयों पर निःशुल्क मासिक तियोगिता चली जिसमें स्थानीय प्रतियोगियों के अतिरिक्त हरी प्रतियोगी भी सम्मिलित हुए और अधिकारी विद्वानों ी निर्णायक समिति द्वारा घोषित विजेताओं को पुरस्कार दान किये गए।

यथासमय विशेष अधिवेशन तथा गोष्ठियाँ होती रहीं नमें स्थानीय तथा बाहरी साहित्यकारों का पूरा सहयोग मला और आशा है कि भविष्य में भी उनका इसी भांति हयोग प्राप्त होता रहेगा।

परिषद् का द्वितीय वार्षिक अधिवेशन हिन्दी के सुप्रसिद्ध ोशकार एवं भाषाविद् श्री रामचन्द्र वर्मा के सभापतित्व में नाया गया था।

स्वर्गीय पं० बाबूराव विष्णु पराड़कर परिषद् के संस्थापक ी थे ही, उन्होंने परिषद् के जन्मकाल से अपने जीवन के न्तिम क्षणों तक अध्यक्ष-पद का भार भी सँभाल रखा था। र्गीय पंडित रामनारायण मिश्र के भी परिषद् पर अनेक पकार हैं। वे परिषद् की प्रबन्ध-समिति के सदस्य थे। परिषद् के वर्तमान अध्यक्ष सम्पादकाचार्य पंडित लक्ष्मण नारायण र्दे, उपाध्यक्ष हास्यरसावतार श्री कान्तानाथ पाण्डेय 'हंस' चोंच) तथा श्री वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्रधान मन्त्री ी गौरीशंकर गुप्त, सहायक मन्त्री श्री मुन्नालाल मालवीय, र्थमन्त्री श्री कृष्णशंकर व्यास, प्रचार-मन्त्री श्री यमुनादत्त ास्त्री, साहित्य-मन्त्री श्री लक्ष्मीशंकर व्यास तथा संरक्षक ी माधवराम सप्रे हैं।

प्रबन्ध-समिति में पदाधिकारियों के अतिरिक्त महामहोपाध्याय पं० नारायण शास्त्री खिस्ते, पं० सभापति उपाध्याय म० एल० सी०, श्री बृजरत्नदास, श्री रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल 'अटल', श्री रामचन्द्र नरहर बापट, श्री नवलकिशोर राय, श्री पारसनाथ सिंह, श्री गंगाधर मिश्र, श्री तरुण भाई तथा श्री शिवमूर्ति मिश्र 'शिव' (कौतुक बनारसी) हैं।

परिषद् के 'सम्मानित' सदस्यों में उच्चकोटि के साहित्यिक, विद्वान् तथा देश के गण्यमान्य नेता आदि हैं। वे महानुभाव ये हैं :

(१) प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू (२) राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी (३) राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश (४) सूचना-सिंचाई मन्त्री श्री कमलापति त्रिपाठी (५) राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त (६) महापंडित राहुल सांकृत्यायन (७) आचार्य नरेन्द्रदेव (८) सम्पादकाचार्य पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी (९) पं० माखनलाल चतुर्वेदी (१०) पं० गोविन्द शास्त्री दुगवेकर (११) श्री डॉ० रामकुमार वर्मा (१२) आचार्य शिवपूजन सहाय (१३) श्री सियारामशरण गुप्त (१४) कलाविद् श्री रायकृष्णदास (१५) श्री पद्मकान्त मालवीय (१६) श्री सुमित्रानन्दन पन्त (१७) श्री डॉ० अमरनाथ झा (१८) श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' (१९) श्री रामवृक्ष बेनीपुरी तथा श्री आरसीप्रसाद सिंह, आदि।

अब तक परिषद् के संग्रहालय के लिए माननीय राष्ट्रपति श्री डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, राज्यपाल श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, सूचना-सिंचाई मन्त्री श्री कमलापति त्रिपाठी तथा बिहार के सुप्रसिद्ध कवि श्री आरसीप्रसाद सिंह के हस्ताक्षरित चित्र और वाचनालय के लिए पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ यथासमय प्राप्त हुई हैं और होती रहेंगी, ऐसी आशा है।

गत ५ मार्च ५५ को परिषद् का तृतीय-चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन परिषद् के स्थायी अध्यक्ष सम्पादकाचार्य पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे के सभापतित्व में सानन्द सम्पन्न हुआ। आशा है, इस पुनीत कार्य में साहित्य-प्रेमियों और विद्वानों का सहयोग परिषद् को सदा प्राप्त होता रहेगा।

[पृष्ठ ४४८ से आगे]

पंजाब में पाठ्यक्रम की पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के विरुद्ध मेसर्ज़ अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स के राय साहब रामखवाया कपूर तथा अन्य ने पंजाब की सरकार के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट में प्रार्थना प्रस्तुत की हुई है जिसकी सुनवाई २९ मार्च ५५ से आरम्भ हो चुकी है। सुप्रीम कोर्ट के पाँच न्यायाधीश इस पर विचार कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी रुचि की नवीन और पुरस्कृत पुस्तकें

कविता

१. वीर सतसई : श्री वियोगी हरि	१)
२. वर्षात के बादल : श्री अंचल	३)
३. ठण्डा लोहा : डॉ० भारती	३)
४. शबनम : श्रीमती दिनेशनन्दिनी	१।।)

उपन्यास

१. मरुप्रदीप : श्री अंचल	३।।)
२. चाँदनी के खण्डहर : श्री गिरिधर गोपाल	२)
३. बहता पानी : श्री मन्मथनाथ गुप्त	३।।)

आलोचना

१. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल	१०)
२. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : डॉ० वार्ष्णेय	२।।)
३. महाकवि भूषण : श्री भगीरथ दीक्षित	२।।)
४. प्रकृति और काव्य (हिन्दी) : डॉ० रघुवंश	६।।)
५. तुलसी रसायन : डॉ० भगीरथ मिश्र	२।।)

कला और संस्कृति

१. संस्कृति संगम : आचार्य सेन	२।।)
२. प्राचीन लोकोत्सव : श्री मन्मथराय	२।।)
३. सौन्दर्य-शास्त्र : डॉ हरद्वारीलाल शर्मा	३)

बाल-साहित्य

१. दिमागी डंड बैठक : श्रीमती दुलारी	।।-)

आगामी आकर्षण

१. कीर्तिलता और अवहट्ट
२. काठ का उल्लू और कबूतर
३. द्वाभा, आदि

साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद

इस मास की प्रकाशित नई पुस्तकें

१. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
ले०—डॉ० रामविलास शर्मा

२. काव्य कला और शास्त्र (आलोचना)
ले०—डॉ० रांगेय राघव

३. काव्य यथार्थ और प्रगति (आलोचना)
ले०—डॉ० रांगेय राघव

४. धूलि और नर्तन (उपन्यास)
ले०—श्री वनकाम सुनील

५. मुद्राराक्षस नाटक (भूमिका सहित)
ले०—श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

६. पुरस्कार (कहानी संग्रह)
ले०—डॉ० किरनकुमारी गुप्ता

★ **प्रत्येक माह हम ३-४ नई पुस्तकें प्रकाशित कर रहे हैं।**

★ **हमारी प्रकाशित व प्रचारित पुस्तकों का सूचीपत्र प्रथक् मँगाइए।**

विनोद पुस्तक मन्दिर
हास्पिटल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

रामनारायण अग्रवाल (काछी वाली गली, गोकुल-आगरा) के पास एक मौलिक कहानी-संग्रह तथा ...क के उपन्यास 'ओल्ड गोरियट' का 'पिता गोरियट' के ...से हिन्दी-अनुवाद तैयार है। जिन प्रकाशकों की दिल-...ी हो, पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

गोवर्द्धन शर्मा (१७८, सरदार पुरा, जोधपुर) लिखते हैं उनके पास निम्न पांडुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार पड़ी हैं : ...आधुनिक कहानीकार, (२) **हिन्दी के विभिन्न वाद** ...कला और साहित्य, (४) **विश्व के उपन्यासकार**; तथा ...ी, वैज्ञानिक लेखों, राजस्थानी लोक-साहित्य, बालो-...ी कहानियों, गद्य-खण्डों एवं एकांकियों के संग्रह।

◈ ◈ ◈

श्री रामजी लाल शुक्ल (म्यु० कमेटी के पास, शक्तिपारा, ...पारा, मध्य प्रदेश) लिखते हैं कि उन्होंने तथा उनके मित्र ...सरोजकुमार केशरवानी ने **अलंकार आलोक** नामक पुस्तक ...ी है जिसमें इंटरमीडियेट तथा अन्य उच्च कक्षाओं में ...रित अलंकारों की सुगम, सोदाहरण व्याख्या की गई है।

◈ ◈ ◈

श्री जीवन (श्याम निवास, अलमोड़ा) लिखते हैं कि ...पास निम्नलिखित हिन्दी रूपान्तर तैयार हैं; जो प्रका-...अभिरुचि रखते हों, अपने प्रस्ताव से उन्हें सूचित करें : ...गोर्की के तीन नाटक, 'द लोअर डेफ्थ्स', 'एनिमीज़', ...र बुलीचोव'। (२) शेक्सपीयर के **जूलियस सीज़र** का ...निक अभिनेय रूपान्तर। (३) चेखव के लघु उपन्यास **अनोनिमस लेटर** का अनुवाद। (४) **सोवियत कथाएँ**, ...ी, एहरेनबुर्ग आदि की। (५) जैक लन्दन का अमर ...यास द आइस हील, (६) रोमाँ रोलाँ का अमर उपन्यास ...क्रिस्तफ का संक्षिप्त रूपान्तर।

◈ ◈ ◈

ब्यावर (राजस्थान) से श्री जी० एम० कोठारी लिखते हैं कि उनके पास **आपका नाम क्या होना चाहिए** शीर्षक पांडुलिपि तैयार पड़ी है। जो प्रकाशक चाहें, पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

"मेरे द्वारा लिखित एक कविता-संग्रह, जिसमें प्रगति-वाद, प्रणय, भौतिकवाद, समाज, श्रमिक, पूँजीपति तथा शोषित वर्ग आदि विभिन्न विषयों की कविताएँ हैं, तैयार है। प्रकाशन के इच्छुक पत्र-व्यवहार करें।" श्री चन्द्रभूषण, कटरा चौक, बाँदा। उत्तर प्रदेश।

◈ ◈ ◈

श्री राधेश्याम बरनवाल 'लहर' (मार्फ़त शंकरलाल दुर्गाप्रसाद पसरहट्टा, मिरजापुर, उ० प्र०) के पास निम्नां-कित पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं, प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें : (१) **क्वारी के आँसू**, उपन्यास, पृष्ठ १३०, (२) **अधूरी प्यास**, उपन्यास, पृष्ठ १३२, (३) **सफ़ेद दामन**, जासूसी उपन्यास, पृष्ठ १२८, (४) **आनन्द घन**, कथा-संग्रह, पृष्ठ ११२। लेखक अपनी पुस्तकों की सौ-सौ, दो-दो सौ प्रतियाँ भी बिकवा देंगे।

◈ ◈ ◈

श्री रामजी लाल वर्मा (दशरथ भवन, लोहानीपुर पूर्व, पटना—३) के पास निम्नलिखित पांडुलिपियाँ हैं : यदि किसी प्रकाशक-बन्धु को इनमें दिलचस्पी हो तो वे लिखें : (१) **चंचला**, पत्रात्मक, सामाजिक उपन्यास, ६-१० फ़ॉर्म, (२) **प्रलय के बाद**, कहानी-संग्रह, ७-८ फ़ॉर्म, (३) **शाम की घटना**, रंगमंच के लिए उपयुक्त, इब्सन की परिपाटी पर ४ फ़ॉर्म का नाटक, (४) **स्वप्नों का देश**, बच्चों के लिए ३ फ़ॉर्म का उपन्यास (५) **फुलवारी**, बच्चों के लिए ३ फ़ॉर्म का कहानी-संग्रह, (६) **विदा वेला**, १ फ़ॉर्म का एकांकी गीत-नाट्य, कच-देवयानी के आधार पर, और (७) एक कविता-संग्रह।

◈ ◈ ◈

श्री रंजन परमार (३११ रविवार पेठ, पूना शहर) के पास निम्नलिखित पांडुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार पड़ी हैं : (१) **रत्न मंजूषा**, जैन पार्श्वभूमि पर आधारित एक अनार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार के जीवन परिवर्तन की अमर आख्यायिका, लगभग ४॥ फॉर्म, (२) जय प्रकाश, समाजवादी नेता का बालोपयोगी जीवन-चरित, ६ फॉर्म, (३) बिखरे मोती, लघु लेखों का हिन्दी-अनुवाद, लगभग १० फॉर्म, (४) नीति कथाएँ, गुजराती में श्रीजयभिक्खु द्वारा लिखित भारतीय संस्कृति की गौरव-प्रतीक कथाओं का सुपठनीय अनुवाद, दो भाग, प्रत्येक भाग लगभग ६ फॉर्म, (५) वीर वाणी, तस्कर रोहिणेय के महावीर के वाक्यों से जीवन-परिवर्तन की गाथा पर आधारित नाटिका, लगभग ४ फॉर्म, (६) मीनाक्षी, श्री गोशीया द्वारा फ्रेंच में लिखित एक उपन्यास के अंग्रेजी अनुवाद के गुजराती में हुए स्वतन्त्र रूपान्तर का हूबहू हिन्दीकरण, लगभग ६ फॉर्म।

◆ ◆ ◆

श्री चिरंजीलाल माथुर (५५६, चाँद भवन, ८वीं सड़क, सरदारपुरा, जोधपुर) के पास जीवन के पथ पर शीर्षक पांडुलिपि तैयार है जिसमें रात दिन घटने वाली घटनाओं पर लघु-कथाएँ एवं कहानियाँ हैं। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

कुमार साहित्य परिषद, बीकानेर के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री जगदीशचन्द्र माथुर **राजस्थानी साहित्य में महिलाओं का योग** शीर्षक एक निबन्ध तैयार कर रहे हैं। राजस्थान के साहित्यकारों से सहयोग की प्रार्थना है। सामग्री परिषद के मन्त्री को भेजी जाय।

◆ ◆ ◆

उत्तर प्रदेश के शिक्षा-विभाग ने १९५४-५५ के वर्ष में निम्नलिखित लेखकों को उनकी निम्नांकित कृतियों के लिए पुरस्कृत किया है। पुरस्कारों की घोषणा २५ मार्च ५५ को हुई :

डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार	: आचार्य चाणक्य	
	: राजनीति शास्त्र	८००)
श्री बलदेव उपाध्याय	: भागवत् सम्प्रदाय	७००)
श्री आरसीप्रसाद सिंह	: नन्ददास	३००)
श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	: समाचार-पत्रों का इतिहास	८००)
श्री सत्यव्रत	: एकादशोपनिषद्	८००)

उत्तर-प्रदेश सरकार से अभी-अभी पुरस्कृत

आत्माराम एण्ड सन्स के प्रकाशन

भूगोल के भौतिक आधार : श्री रामस्वरूप वसिष्ठ

आपका मुन्ना (तीन भाग) :

श्रीमती सावित्री देवी वर्मा

काव्यालंकार सूत्रवृत्ति : आचार्य विश्वेश्वर

सचित्र गृह विनोद : श्री 'अरुण'

डूबते मस्तूल : श्री नरेश मेहता

शिवालक की घाटियों में : श्रीनिधि सिद्धान्तालंकार

मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ :

डॉ० सावित्री सिन्हा

२५ मार्च ५५ को उत्तर प्रदेश के शिक्षा-मन्त्रालय ने ९२ लेखकों को उनकी १०० कृतियों पर ४६९५०) के कुल पुरस्कार दिए हैं।

ये सभी कृतियाँ आपके पुस्तकालय में होनी आवश्यक हैं; ये सब हम से प्राप्य हैं।

अपना आर्डर आज ही भेजिए :

आत्माराम एण्ड सन्स,

काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री जगमोहनलाल चतुर्वेदी : एकनाथ व तुलसीदास २५०)
श्री रामचन्द्र तिवारी : रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति ४००)
श्री रामस्वरूप वसिष्ठ : भूगोल के भौतिक आधार ६००)
श्री मधुकर : पाश्चात्य दर्शन का इतिहास : नवीन मनोविज्ञान : नीति-शास्त्र का आलोचनात्मक परिचय ५००)
श्री रामगोपाल : भारतीय राजनीति ८००)
श्रीमती सरला शुक्ल : हिन्दी साहित्य में भ्रमर-गीत की परम्परा ५००)
श्री केशवचन्द्र मिश्र : चन्देल और उनका राजत्वकाल १०००)
श्री मुनिकान्त सागर : खोज की पगडण्डियाँ
: खण्डहरों का वैभव ८००)
श्री बैजनाथसिंह विनोद : द्विवेदी पत्रावली ४००)
श्री विष्णु प्रभाकर : संघर्ष के बाद ५००)

श्री परिपूर्णानन्द वर्मा : प्राण-दण्ड ६००)
श्री जगपति चतुर्वेदी : जलचर पंछी
: वन-वाटिका के पंछी
: उथले जल के पंछी
: वन-उपवन के पंछी ५००)
श्री मण्डन मिश्र : मीमांसा-दर्शन ५००)
श्री मोतीलाल सेठ : कृषि हानिकारक कीट-पतंग ३००)
श्री अंचल : वर्षान्त के बादल ४००)
डॉ० भगीरथ मिश्र : तुलसी रसायन ४००)
श्री शम्भूनाथसिंह : दिवालोक ५००)
श्री गिरधर गोपाल : चांदनी के खण्डहर ४००)
श्री सुशीलचन्द्र सिंह : राजनीति ६००)
श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा : आपका मुन्ना ४००)
श्री रामलाल सिंह : समीक्षा दर्शन ६००)
श्री जैनेन्द्रकुमार : साहित्य का श्रेय और प्रेय ८००)
डॉ० राजेश्वरप्रसाद : रीतिकालीन कविता एवं शृंगार-रस का विवेचन ४००)

ज्ञानमण्डल लि० द्वारा प्रकाशित

अतीव सफल "बृहद् शब्द" के बाद

एक नये लोक-प्रिय कोश का प्रकाशन

ज्ञान शब्द कोश

सम्पादक श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

७" × १०½" आकार के ६८२ पृष्ठ, पक्की जिल्द

शब्द संख्या ७१००४

मूल्य १२) मात्र

★

प्रकाशित होते ही देश के सब कोनों से
इसकी मांग निरन्तर चली आ रही है

★

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री देवदत्त शास्त्री : कौटिल्य अर्थशास्त्र की भूमिका ४००)
डॉ० देवराज : बाहर-भीतर ४००)
श्री रा० र० खाडिलकर : आधुनिक पत्रकार कला ४००)
श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा : बोलों के देवता ५००)
श्री भास्कर गोविन्द घनेकर : मूत्र के रोग ५००)
श्री विमलचन्द्र पांडे : विश्व की सभ्यताएँ ५००)
श्री शिवानन्द शर्मा : समाज मनोविज्ञान ५००)
श्री शैलेन्द्र शर्मा : भारतीय चित्रकला ३००)
श्री राजनारायण गुप्ता, श्री राधानाथ चतुर्वेदी : पाश्चात्य राजदर्शन का इतिहास ८००)
श्री हरगोविन्द गुप्ता : गाँव का मेरुदण्ड किसान २५०)
श्री कृष्णचन्द्र शर्मा : भँवर-जाल ३००)
श्री दयानाथ झा : कर्म-पथ २५०)
श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी : मनुष्य और देवता ६००)
श्री प्यारेलाल रावत : भारत का आर्थिक विकास ६००)
श्री चन्द्रदेवप्रसाद श्रीवास्तव : राजस्व एवं भारतीय वित्त-व्यवस्था ६००)
श्री मोती बाबू : हिन्दू विवाह-विधि ६००)
डॉ० सावित्री सिन्हा : मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ ६००)
श्री कन्हैयालाल वर्मा : भारतीय राजनीति और शासन विकास ६००)
श्री लीलाधर पार्वतीय : संयुक्त राष्ट्रसंघ ५००)
डॉ० सत्यप्रकाश : वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा ६००)
श्री रामचन्द्र वर्मा : कोश-कला ४००)
श्री कमल कुलश्रेष्ठ : हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य ५००)
श्री गिरिजाकुमार माथुर : नाश और निर्माण ७००)
श्री भगवतशरण उपाध्याय : कालिदास का भारत ८००)
श्री रावी : पहला कहानीकार ३००)
डॉ० चन्द्रधर शर्मा : पाश्चात्य दर्शन ५००)

डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी
श्री चन्द्रबली पांडे : कालिदास
आचार्य विश्वेश्वर : काव्यालंकार सूत्र-वृत्ति
श्री अरुण : सचित्र गृह-विनोद
डॉ० माताप्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास
डॉ० कपिलदेव उपाध्याय : अर्थशास्त्र
श्री हरिहर निवास द्विवेदी : मानसिंह और मान कुतूहल : त्रिपुरी
श्री नरेश मेहता : डूबते मस्तूल
श्री टीकमसिंह तोमर : हिन्दी वीर-काव्य
श्री नागार्जुन : बाबा बटेसरनाथ
श्री सुरेशसिंह : हमारे जानवर
श्रीमती पद्मावती 'शबनम' : चन्द्रसखी और उनका काव्य
श्री प्रेमनारायण शुक्ल : हिन्दी-साहित्य में विविधवाद
डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा : हिन्दी-काव्य पर आंग्ल-प्रभाव
स्वर्गीय श्री विद्याधर महाजन : श्री गांधी-चरित मानस
श्री राजवल्लभ ओझा : बदलते दृश्य
श्री शिवचन्द्र नागर : महादेवी
श्री रामप्रसाद भटनागर : शिक्षा में आँकड़ों का प्रयोग
श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी : दिगम्बर
श्री लालकृष्ण अग्रवाल : मानव और मशीन
श्री गोविन्दवल्लभ पन्त : नौजवान
श्री प्रो० क्षेम : छायावाद की काव्य-साधना
श्री पोद्दार रामावतार अरुण : विदेह
श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ : उपहार
डॉ० श्रीगोपाल तिवारी : भारतीय अर्थशास्त्र
श्री भोलानाथ तिवारी : शब्दों का जीवन

[शेष पृष्ठ ४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम क्रमशः हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार की किसी भी सूची में अशुद्धियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आशा है पाठकगण अशुद्धियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करके सूची को पूर्णतया शुद्ध करने में हमें सहयोग देंगे।

[दिसम्बर, १९५४ अंक के पृष्ठ २४९ से आगे]

बनारस

साप्ताहिक

(४) गान्धी ,,
(५) जननाद ,,
(६) किसान ,,
(७) लहरी ,,
(८) मेलमिलाप ,,
(९) नया हिन्दुस्तान ,,
(१०) नया जमाना ,,
(११) जनमत ,,
(१२) प्रभात ,,
(१३) समाचार ,,
(१४) समाज ,,
(१५) सन्देश ,,
(१६) सन्मार्ग ,,
(१७) संसार ,,
(१८) सिद्धान्त ,,
(१९) सूर्य ,,
(२०) श्रमिक ,,
(२१) तरंग ,,
(२२) युगवाणी ,,

पाक्षिक

(१) अजगर बनारस
(२) पाखण्ड खण्डिनी पताका ,,
(३) म्युनिसिपल गजट ,,
(४) यादवेश ,,

मासिक

(१) अग्रवाल सन्देश ,,
(२) अप्सरा ,,
(३) आर्य महिला ,,
(४) आँधी ,,
(५) अयोध्यावासी पंच ,,
(६) बाल सखा ,,
(७) भारतेन्दु ,,
(८) छात्र ,,
(९) चित्ररेखा ,,
(१०) दया ,,
(११) धर्मदूत ,,
(१२) धर्म ज्योति ,,
(१३) धर्म सन्देश ,,
(१४) धरती ,,
(१५) गांधी ,,
(१६) हिन्दी ,,
(१७) होमियोपैथिक अग्रदूत ,,
(१८) हिन्दी प्रचारक ,,
(१९) क्षत्रिय मित्र ,,
(२०) कुशवाहा क्षत्रिय मित्र ,,
(२१) कुशवाहा क्षत्रिय बन्धु ,,
(२२) कुर्मी क्षत्रिय प्रभाकर ,,
(२३) महाशक्ति ,,
(२४) मंजूषा ,,
(२५) नागरी प्रचारिणी पत्रिका ,,
(२६) नारी ,,
(२७) निशात बन्धु ,,
(२८) नया साहित्य ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२९) प्रकाश ,,
(३०) राष्ट्रवाणी ,,
(३१) राष्ट्रीय चिकित्सक ,,
(३२) साहुमित्र ,,
(३३) सन्मार्ग ,,
(३४) सरस्वती ,,
(३५) सात्विक जीवन ,,
(३६) सहकारी ,,
(३७) सरिता ,,
(३८) सुखी बालक ,,
(३९) सरकारी हिन्दी ,,
(४०) सुशिक्षक ,,
(४१) विजय ,,
(४२) वेदवाणी ,,
(४३) यादवेश ,,
(४४) युगधारा ,,
(४५) ग्राम संसार ,, (सप्ताह में दो बार)
(४६) मधुकरण ,, (पाक्षमासिक)

बरेली

साप्ताहिक
(१) बरेली व्यापार समाचार बरेली
(२) हलचल ,,
(३) किरण ,,
(४) रोहेलखण्ड समाचार ,,
(५) स्वराज ,,

मासिक
(१) हमारा आदर्श ,,
(२) श्री नरसिंह प्रिय ,,

बलिया

साप्ताहिक
(१) देश मित्र बलिया
(२) लाल बुभक्कड़ ,,
(३) युगान्तर ,,

बहराइच

(१) बालार्क (साप्ताहिक) बहराइच

छात्रहितकारी पुस्तकमाला द्वारा प्रकाशित

सदाचार, चरित्र-निर्माण एवं स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी पुस्तकें

१. ब्रह्मचर्य ही जीवन है १॥)
२. सफलता की कुंजी ।॥)
३. ईश्वरीय बोध १॥)
४. मनुष्य जीवन की उपयोगिता १।)
५. भाग्य निर्माण १॥)
६. वेदान्त धर्म २)
७. मन की अपारशक्ति ॥=)
८. विचारों का प्रभाव ॥)
९. मनुष्य ही अपने भाग्य का निर्माता है ॥=)
१०. गौरवशाली जीवन ।॥)
११. नरसे नारायण १।)
१२. भाग्य पर विजय ॥)
१३. हमारे मानसिक शिशु ॥)
१४. जेम्स एलेन की डायरी या दैनिक ध्यान २)
१५. विजय के आठ स्तम्भ १।)
१६. मौन की वाटिका में ॥)
१७. आनन्द प्रकाश ।॥)
१८. हमारे हरिजन ॥)
१९. आदर्श सेवा ॥)
२०. मानसिक दक्षता ३)
२१. तपोवन १॥)
२२. ईश्वर के सम्पर्क में २)
२३. नीति की राह ॥)
२४. हम सौ वर्ष कैसे जीवें ? २)
२५. मनुष्य शरीर की श्रेष्ठता ॥)
२६. स्वास्थ्य और व्यायाम २)
२७. स्वास्थ्य और जल चिकित्सा २)
२८. प्राकृतिक चिकित्सा ४)
२९. दूध ही अमृत है २॥)
३०. आदर्श भोजन १।)
३१. फल उनके गुण तथा उपयोग २)
३२ शरीर विज्ञान और तात्कालिक चिकित्सा १)
३३. किशमिश चिकित्सा ॥=)
३४. धातुरोग और उसका इलाज १॥)
३५ रोगी सुश्रूषा २॥)

छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस्ती

साप्ताहिक

(१) निशापक्ष — बस्ती

बाराबंकी

साप्ताहिक

(१) मातृभूमि — बाराबंकी
(२) पंचायत वीकली — ,,

साप्ताहिक

(१) प्रकाश — बिजनौर
(२) पाल पत्रिका — ,,

मासिक

(१) आग — ,,

साप्ताहिक

(१) परिवर्तन — बदायूँ

साप्ताहिक

(१) जन सेवक — बुलन्दशहर

मासिक

(१) अध्यापक — ,,
(२) ब्राह्मण सेवक — ,,
(३) कानून सन्देश — ,,
(४) लोकमत — ,,
(५) पंचायत राज — ,,
(६) सनातन जैन — ,,

दैनिक

(१) सावधान — मथुरा

साप्ताहिक

(१) हितकारी — ,,
(२) जनार्दन — ,,
(३) कान्ति — ,,
(४) नया मजदूर — ,,

पाक्षिक

(१) पोल मथुरा — ,,

मासिक

(१) अखण्ड ज्योति — ,,
(२) आरोग्य — ,,
(३) ब्रज भारती — ,,

(४) चतुर श्रेणी — ,,
(५) नाम महात्म्य — ,,
(६) प्रेम — ,,
(७) प्रेम सन्देश — ,,
(८) स्वास्थ्य — ,,

साप्ताहिक

(१) अंगार — मिरजापुर
(२) ग्रामवासी — ,,
(३) मतवाला — ,,

मासिक

(१) चिंगारी — ,,
(२) कादम्बरी — ,,

मुरादाबाद

साप्ताहिक

(१) अरुण — मुरादाबाद
(२) जननाद — ,,

मासिक

(१) अरुण — मुरादाबाद
(२) शिक्षा सुधार — ,,
(३) वैद्य — ,,
(४) नवजीवन — ,,
(५) जय हिन्दी — ,,

मुजफ्फरनगर

साप्ताहिक

(१) देशभक्त — मुजफ्फरनगर
(२) हमारा देश — ,,
(३) सेवक — ,,
(४) युवक — ,,

पाक्षिक

(१) विश्व कल्याण — ,,

मासिक

(१) स्वदेश निर्माण — ,,

मेरठ

साप्ताहिक

(१) बेचारा मजदूर — मेरठ
(२) देहाती — ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य

(१) आदेश मेरठ मासिक
(२) पंचायती राज्य ,, ,,
(३) राजहंस ,, ,,
(४) सुदर्शन ,, ,,
(५) वैश्य हितकारी ,, ,,
(६) वीर गुजर ,, ,,
(७) त्यागी ,, त्रैमासिक

मैनपुरी

साप्ताहिक

(१) ग्राम सुधार मैनपुरी
(२) जनतन्त्र ,,
(३) मैनपुरी डिस्ट्रिक्ट गजट, ,,

राय बरेली

साप्ताहिक

(१) पथिक राय बरेली
(२) पंचायत राज ,,

मासिक

(१) सर्व हितकारी ,,

शाहजहाँपुर

साप्ताहिक

(१) जनमत शाहजहाँपुर

सहारनपुर

साप्ताहिक

(१) चिंगारी सहारनपुर
(२) हिन्दू ,,
(३) सन्देश ,,
(४) विकास ,,
(५) वीर केसरी ,,

मासिक

(१) अनेकान्त ,,
(२) ब्राह्मण समाचार ,,
(३) किसान की चिट्ठी ,,
(४) वैद्य वाणी ,,
(५) नया जीवन ,,

क्रमश :

[पृष्ठ ४५८ से आगे]

श्री गोविन्दराम जैन : कुशल काव्य
श्री रघुवीरशरण मित्र : आग और पानी
श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय : जीवन-चक्र
श्री चतुरसेन शास्त्री : सोमनाथ
श्री देवीदयाल चतुर्वेदी : हवा का रुख
श्री निधि सिद्धान्तालंकार : शिवालक की घाटियों में
श्री नीलकण्ठ तिवारी : भावना के फूल
डॉ० दशरथ ओझा : हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास
श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र : चक्रव्यूह
श्री अली अब्बास हुसैनी : कोमल नगरी
श्री भगवतीप्रसाद पान्थरी : हर्षवर्धन शिलादित्य
श्री राजपति दीक्षित : सन्त तुलसीदास और उनके सन्देश

सुमित्राकुमारी सिनहा
का
नवीनतम कविता-संग्रह
• बोलों के देवता •
उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत

"प्रस्तुत गीत-संग्रह का विषय व्यक्ति की जीवन के प्रति...
आस्था, जीवन-साधना की रचनात्मक भावभूमि और भौतिक
कर्म की सुनिश्चित प्रेरणा है।"

आचार्य नन्ददुलारे वा...

प्रसारिणी (प्रसार-गीत)
अचल सुहाग (कहानी-संग्रह)
वर्ष गाँठ ,, ,,

प्रकाशक :
युग-मन्दिर,
उन्नाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अखिल भारत सर्व सेवा संघ, वर्धा

—पावन-प्रसंग, ले० कु० मृदुला मूंदड़ा। विनोबा की पैदल यात्रा के पावन संस्मरण। ।)

—विनोबा पदयात्रा डायरी, ले० कु० निर्मला देशपाण्डे एम० ए०। पदयात्रा विवेचन। १)

—कार्यकर्त्ताओं के बीच विनोबा, श्री दामोदरदास मूंदड़ा। १)

—कताई गणित भाग ४, ले० श्री कृष्णदास गान्धी। सूत का गणित। ।।।)

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—समाधान, ले० श्री रामावतार त्यागी। सामाजिक उपन्यास। २)

—नेपाल की कहानी, ले० श्री काशीप्रसाद श्रीवास्तव। ८)

—गढ़वाल की लोक-कथाएँ, ले०श्री गोविन्द चातक। १।।)

—रूस की लोक-कथाएँ, ले० श्री हंसराज 'रहबर'। १।)

—चीनी लोक-कथाएँ, ले० श्री हंसराज 'रहबर'। १।)

आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस

—थियॉसॉफी का व्यवहार-दर्शन, ले० श्री सु० जिनराजदास, अनु० बी० केशवचन्द्र। गृहजीवन, शिक्षण, व्यापार-व्यवसाय, कला, विज्ञान और राजनीति में थियॉसॉफी का स्थान। १)

—ध्यान माला, ले० डॉ० एनी बिसेण्ट, अनु० श्री रामचन्द्र शुक्ल। दैनिक ध्यान के लिए १२ विषयों पर चुने हुए वाक्य। १।)

—तीन उद्देश्य, ले०श्री रोहित मेहता। थियॉसॉफ़िकल सोसायटी के तीन उद्देश्यों पर सांसारिक समस्याओं का हल।

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—शिशुगान, ले० श्री धर्मपाल शास्त्री। बाल कविता। ।।।)

—नटखट पिन्कू, ले० श्री प्रशान्त एम०ए०। बाल-कविता। ।।)

—बाल-अभिनय, ले० श्री प्रशान्त एम० ए०। बच्चों के नाटक। ।।।)

—बलिदान की कहानियाँ, ले० श्री प्रशान्त एम० ए० बच्चों के लिए कहानियाँ। ।।।)

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस

—हास परिहास, सं० श्री सुधाकर पाण्डे। हास्यरस की कविताओं का संग्रह। २।।)

—रूहे सुखन, ले० श्री कलीमुल्ला फारूखी। उर्दू की शायरी का संग्रह। २।।)

—पद्य प्रमोद, ले० श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'। कविता। ३।।)

—सौदागर, ले० श्री प्यारेलाल 'आवारा'। सामाजिक उपन्यास। २।।)

गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद

—शिक्षण कला, ले० पं० आत्मानन्द मिश्र। दो भागों में। प्रति भाग के ३)

—भारती शिक्षा-सिद्धान्त, ले०डॉ० सुबोध अदावाल। ८)

—अध्ययन-सूत्र, ले० पं० आत्मानन्द मिश्र।

—भारतीय न्याय प्रवेशिका, ले० डॉ० जयप्रकाश। भारतीय तर्क-प्रणाली। १।।)

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

—भला और बुरा, ले० श्री छविनाथ राय। बोलोपयोगी माला की ३६ पुस्तकों में से द्वितीय सेट की चतुर्थ पुस्तक।

—ईश्वर का पुत्र, ले० श्री बालकृष्ण लाहोटी। पाँचवीं पुस्तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—विचित्र सिंहासन, ले० श्री बालकृष्ण लाहोटी। छठी पुस्तक।

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—ट्रेन लाइटिंग, ले० श्री नरेन्द्रनाथ। रेलवे की रोशनी व्यवस्था से सम्बन्धित। १०)

—स्टीम टरबाइन, ले० श्री नरेन्द्रनाथ। बायलर। १५)

—पोल्ट्री फार्मिंग, ले० श्री कालीचरन। मुर्गियाँ। १०)

—प्रेक्टिकल इलेक्ट्रिक लाइटिंग, ले० श्री नरेन्द्रनाथ। ६)

नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

—चीन की कहानियाँ, ले० श्री जगन्नाथ प्रभाकर। लोक-कथाएँ। १)

—रूस की कहानियाँ, ले० श्री जगन्नाथ प्रभाकर। लोक-कथाएँ। १)

—जापान की कहानियाँ, ले० श्री जगन्नाथ प्रभाकर। लोक-कथाएँ। ।॥)

नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस

—हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का त्रैवार्षिक विवरण (१९२६-३४)। सभा में सम्पादित। प्राचीन अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों के संक्षिप्त विवरण। तीन खण्ड। २१), १५), ११)

—नहुष, ले० स्वर्गीय श्री गिरधरदास। पौराणिक कथानक। १॥)

—रामानन्द ग्रन्थावली, सं० श्री डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। रामानन्द की हिन्दी-कविताओं का संग्रह। २)

—दास ग्रन्थावली (रस सारांश), सं० श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र। कवि भिखारीदास का काव्य-संग्रह। १॥)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

—लकीरें, ले० श्री ओंप्रकाश श्रीवास्तव। उत्तर प्रदेश के निम्न मध्यम वर्ग के घरेलू जीवन की कुण्ठा का चित्र। २॥)

नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

—एक था शहर, ले० श्री ताजवर सामरी। उपन्यास। ४)

चौखम्बा विद्या भवन, बनारस

—महावीर चरित, हिन्दी टीका सहित। प्रो० रामचन्द्र मिश्र। नाटक। ४)

—परिभाषा प्रबन्ध, ले० श्री वैद्य जगन्नाथप्रसाद शुक्ल। आयुर्वेद। ३)

—शिशुपाल वध, हिन्दी टीका सहित। श्री ह[illegible] शास्त्री। काव्य। ६)

—संस्कृत स्वयं शिक्षक प्रथम, ले० श्री गौरीशंकर [illegible] संस्कृत से हिन्दी एवं हिन्दी से संस्कृत अनुवाद।

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—देहाती समाज, शरत्चन्द्र। उपन्यास। २)

—धरती माता, पर्ल बक। अनु० ओमप्रकाश शर्मा एम० ए०। ३)

—द्वन्द्व युद्ध, चेखव। अनु० राजनाथ एम० ए०। उपन्यास व दो कहानियाँ। ३)

—गोरा, रवीन्द्रनाथ। उपन्यास। ५)

पुस्तक मन्दिर, मथुरा

—सामुद्रिक शास्त्री, ले० श्री भृगुराज शर्मा। ज्यो[illegible] हस्तरेखा। ४)

—पशु-चिकित्सा, ले० पं० सत्यदेव वैद्य। चिकित्सा

—खूँखार टोली, पॉल स्टीवर्ड, अनु० दाऊदयाल जासूसी उपन्यास। २॥)

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

—नीहारिकाएँ, ले० डॉ० गोरखप्रसाद। लगभग १[illegible] रायल आकार, १६ चित्रों के प्लेट। ४)

—हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ, ले० श्री [illegible] प्रसाद सिंह। लगभग १०० पृष्ठ, रायल आकार

—शैवमत, ले० डॉ० यदुवंशी। पृष्ठ संख्या २७५। ७)

मानसरोवर पब्लिशिंग एकाडमी, इलाहाबाद

—ढाई लाख, ले० श्री गौरीशंकर लाल 'अख्तर'। रोमाण्टिक उपन्यास। ॥=)

मालव लोक-साहित्य प्रकाशन, उज्जैन

—मालव भूमि की लोकोक्तियाँ, ले० श्री व[illegible] बम्ब। १॥)

—मालवी दोहे, ले० श्री चिन्तामणि उपाध्याय। [illegible]

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई

—परिस्तान, जर्मनी की प्रसिद्ध बाल-कहानियाँ [illegible] फेयरी टेल्स" का श्री रघुपतिसहाय 'फ़िराक' द्वा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—... १७ पाँचरंगे और अनेक एकरंगे चित्र । मूल्य लग-वाद । ... भग ५)

—अमृत के घड़े, ले० श्री पृथ्वीकुमार अग्रवाल । डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल के ११ वर्षीय सुपुत्र द्वारा लिखित जातक-कहानियाँ । बाल-सुलभ भाषा । बीस दुरंगे चित्र । १)

—सोने का नीबू, ले० श्रीमती किरण । बालकों के लिए लिखी गई पौराणिक कथाएँ । अनेक दुरंगे चित्र । १)

—पृथ्वीराज रासो की कथानक रूढ़ियाँ, ले० श्री व्रजविलास श्रीवास्तव । 'रासो' में प्राप्य कथानकों से सम्बन्धित शोध-पूर्ण ग्रन्थ । भूमिका डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ।

—नया समाज, श्री उदयशंकर भट्ट का नया सामाजिक नाटक ।

—विज्ञान परिचय माला, प्रौढ़-शिक्षा के लिए विशेष रूप से लिखवाई गई "विज्ञान परिचय माला" की पहली चार पुस्तकें : "पेड़-पौधे", "कीड़े-मकौड़े व मक्खी मच्छर", "फूल और सब्जियाँ", "पक्षियों का जीवन" । सभी पुस्तकें अनेक चित्रों से विभूषित । प्रत्येक का मूल्य ।।)

—मालाकार, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रेम-गीतों का श्री सत्य-काम विद्यालंकार द्वारा भावपूर्ण हिन्दी-अनुवाद । ख्याति-प्राप्त चित्रकार श्री मनीषी दे द्वारा चित्रित । दो रंगों में छपी उपहार-पुस्तक ।

...जपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—आदर्श कहानियाँ, ले० श्री आनन्दकुमार । शिक्षाप्रद आदर्श कहानियाँ ।

—शेक्सपीयर की कहानियाँ : दो भाग, ले० श्री० धर्मपाल शास्त्री । शेक्सपीयर के नाटकों का संक्षिप्त कथानक ।

—भारतीय संस्कृति की कहानी, ले० डॉ० भगवतशरण उपाध्याय । भारत की सांस्कृतिक कहानी, एक दृष्टि में ।

...जप्रकाशन, पटना

—छायावाद रहस्यवाद का रहस्य, ले० डॉ० डी० बी० शास्त्री और प्रो० कामेश्वर शर्मा । आलोचनात्मक । ३।।)

...ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ

—सिन्दूर का जख्म, ले० श्री हिमांशु । उपन्यास । ३)

—सर्वोदय सिद्धान्त, ले० श्री चन्द्रोदय दीक्षित । १)

—बवण्डर, ले० श्री हरिकृष्ण वाजपेयी । उपन्यास । २।।)

—दुर्गादास, डी० एल० राय । नाटक । १।।)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—आलोचक रामचन्द्र शुक्ल, ले० डॉ० रामविलास शर्मा । ३)

—चन्द्रगुप्त : अध्ययन, ले० डॉ० शम्भूनाथ पाण्डेय । २)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६, भातखण्डे । संगीत । ८)

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद

—आरम्भिक आपरीक्षण, ले० श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव । प्रेक्टिकल ज्यॉग्रफ़ी की एकमात्र पुस्तक । २।।)

—भू सैद्धान्तिकी, ले० श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव । भूगर्भ शास्त्र विषय पर एकमात्र पुस्तक । २)

—विश्वशान्ति कैसे, ले० श्री आर० सी० दास 'आत्मा' । विश्व-शान्ति सम्बन्धी कुछ सुझाव । १।)

सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

—हिन्दी कविता और रहस्यवाद, ले० श्री गुलाबराय एम० ए० । प्राचीन-अर्वाचीन हिन्दी-कविता का रहस्यवाद की दृष्टि से विवेचन । २।।)

—पन्तजी की काव्यकला और उत्तरा, ले० प्रो० पाण्डेय ।

—हिन्दी-गद्यकार और उनकी शैलियाँ, ले० डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' । २)

जिनकी आप अरसे से प्रतीक्षा कर रहे थे

सोवियत संघ की

कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास

[तीसरा हिन्दी संस्करण]

मूल्य : केवल तीन रुपये

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा-पत्र

ले० मार्क्स एंगल्स

[चौथा हिन्दी संस्करण]

मूल्य : केवल बारह आने

(दोनों पुस्तकों का डाक खर्च अलग)

आज ही निम्न पते पर आर्डर दीजिए

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लि०

आसफ अली रोड

दिल्ली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र-समाजशास्त्र

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ०, सामाजिक शिक्षा और समाज सेवा, ३७५, डि०, मगध राजधानी प्रकाशन, पटना
ब्रजकिशोर सिंह, अमेरिका का आर्थिक विकास, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस
लालजीराम शुक्ल, समाज विकास, पु० मु०, क्रा०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस
सीताराम चतुर्वेदी, मानस शास्त्र और समाज, ३०४, क्रा०, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

उदयभानु हंस तथा अन्य, निबन्ध रत्नाकर, क्रा०, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
कैलाशचन्द वार्ष्णेय, विद्यापति : एक अध्ययन, ११२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
गुलाबराय, हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, पु० मु०, १२८, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
गोपीनाथ 'व्यथित', जयशंकर : एक अध्ययन, १४२, क्रा०, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
जगमोहन शंकर, हिन्दी भाषा का इतिहास (प्रश्नोत्तर रूप में), १३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
जितेन्द्रनाथ पाठक, प्रेमचन्द और गबन, २५०, क्रा०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, बनारस
जीवनाथ शास्त्री, धर्मपाल शास्त्री, सुगम हिन्दी व्याकरण, २२७, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
त्रिलोचन पाण्डेय, गुप्तजी की काव्य-कला और साकेत, ३००, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
देवराज डॉ०, अनु०, आधुनिक समीक्षा, १५४, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ०, कामेश्वर शर्मा, छायावाद-रहस्यवाद का रहस्य, २१०, क्रा०, राज प्रकाशन, पटना
नारायण सारस्वत, सरल निबन्ध माला, क्रा०, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
प्रतापनारायण टण्डन, अतीत के चलचित्र (एक अध्ययन), ८२, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
रांगेय राघव डॉ०, काव्य, यथार्थ और प्रगति, १६०, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
रामखेलावन चौधरी, चित्रलेखा एक अध्ययन, ७२, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
शचीरानी गुर्टू, प्रेमचन्द और गोर्की, ५८५, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
हरिश्चन्द्र खन्ना, रेडियो नाटक, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

इतिहास

भगवतशरण उपाध्याय डॉ०, भारत की कहानी, ६१, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
त्रिलोचन पन्त, इंग्लैण्ड का सांविधानिक इतिहास : १ डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस
रामवृक्षसिंह डॉ०, हीरालालसिंह डॉ०, आधुनिक योरुप का इतिहास, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

ऑस्कर वाइल्ड, अनु० रामकुमार, अपनी छाया, ३०४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ५)

इन्द्र विद्यावाचस्पति, अपराधी कौन, पु० मु०, २८६, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ५)

गुरुबख्शसिंह, अविवाहिता माँ, २००, साहित्य संगम, लुधियाना २।)

गुणवन्त आचार्य, अनु० चिमनलाल व्यास, जय कच्छ, २५६, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस ४)

गोविन्दवल्लभ पन्त, नूरजहाँ, पु० मु०, २७२, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ४।)

चतुरसेन शास्त्री, हृदय की परख, पु० मु०, २१०, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)

चाकलेट, अभी तो मैं जवान हूँ, १६०, क्रा०, मूलनारायण एण्ड सन्स, इलाहाबाद २)

ज्वालाप्रसाद 'केशर', रक्तार्चन, २६२, क्रा०, चिंगारी प्रकाशन, बनारस ३॥)

तुर्गनेव, अनु० राजनाथ एम० ए०, पिता पुत्र, ३००, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ४)

त्रिलोक कुशवाहा, कालगढ़ी, १६७, क्रा०, चिंगारी प्रकाशन, बनारस २)

नकाबपोश भेदी, भयंकर हत्यारा, १४४, क्रा०, भयंकर जासूसी कार्यालय, इलाहाबाद ।॥)

प्रतापचन्द्र अग्रवाल, काला जादू, २५०, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद १)

प्रतापनारायण श्रीवास्तव, आशीर्वाद, पु० मु०, २००, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)

भगवतशरण उपाध्याय, अनु०, कादम्बरी, १६०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)

रवीन्द्रनाथ, अनु० गिरीशचन्द्र, तीन साथी, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ३)

वनकाम सुनील, धूलि और नर्तन, २२०, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ४)

विजयकुमार मिश्र, मल्लिका, पु० मु०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ३)

सत्यप्रकाश संगर, कली मुसकराई, १६७, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३)

साने गुरुजी, अनु० श्री विठ्ठल शर्मा चतुर्वेदी, आस्तिक, २००, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ३॥)

सीतेश, परिवर्तन, पु० मु०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ४)

हरिकृष्ण वाजपेयी, युग की पग-ध्वनि, पु० मु०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ३॥)

कविता

इन्द्र विद्यावाचस्पति, अनु०, अर्जुन का तप, १०८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २॥)

इन्द्र विद्यावाचस्पति, अनु०, रघुवंश, १०६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)

जगदीश दीक्षित आनन्द, अनु०, कालिदास के काव्य, ८७, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)

रोशनलाल सिंहल, रामचरितमानस सार, १०४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)

विराज एम० ए०, अनु०, कुमार सम्भव, १८६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)

कहानियाँ

जयशंकर त्रिपाठी, आधुनिक कहानियाँ, १०४, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता १।)

दर्शनानन्द सरस्वती, स्वा०, कथा पच्चीसी, १३६, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा ।॥)

मण्टो, मण्टो की कहानियाँ भाग १, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली २॥)

राधेश्याम पुरोहित, अनु०, रवीन्द्र द्वादशी, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

जगदीश दीक्षित आनन्द, अनु०, कालिदास के नाटक, ७६, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
डी० एल० राय, अनु० रूपनारायण पाण्डेय, चन्द्रगुप्त, १६०, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ
डी० एल० राय, अनु० रूपनारायण पाण्डेय, मेवाड़ पतन, १५०, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ
भगवतशरण उपाध्याय, डॉ०, भास के नाटक, १२४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मुद्राराक्षस नाटक, १५४, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
भोलाशंकर व्यास, डॉ०, हिन्दी दशरूपक, ३४२, डि०, चौखम्बा विद्या भवन, बनारस
रामनरेश त्रिपाठी, कन्या का तपोवन, ११६, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता
विराज एम० ए०, अनु०, अभिज्ञान शाकुन्तल, १७७, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

इन्द्र एम० ए०, संसार के महान युग-प्रवर्तक, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
गांधीजी, शराब बन्दी करें, ४८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
गांधीजी, स्वराज में अछूत कोई नहीं, ४८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
चिरंजीत, बच्चो गाओ गीत, २८, फु० स्कै०, विद्या मन्दिर लि०, नई दिल्ली
चिरंजीलाल उपाध्याय, नरसीजी का भात, ६४, क्रा०, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा
चेखव, अनु० राजनाथ एम० ए०, चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ, २२४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
ज्योतिलाल भार्गव, बाल विनोद, ४८, क्रा०, राज प्रकाशन, पटना
जवाहरलाल नेहरू, नया भारत, ४८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
देवदत्त मिश्र, महात्माओं की कथाएँ, ११६, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता
धर्मपाल शास्त्री, श्रमदान, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
पुरुषोत्तम मिनारिया, राजस्थान की लोक कथाएँ, ४४, फु० स्कै०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
बालकृष्ण लाहोटी, सच्चा प्रेम, २८, क्रा०, दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
भवभूति, अनु० विष्णु प्रभाकर, मालती माधव, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
भास्करराव जोशी, मुर्गी पालन,, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भास्करराव जोशी, दूध का धन्धा, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भास्करराव जोशी, नए कदम, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भास्करराव जोशी, नागरिकता, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भास्करराव जोशी, शहद का धन्धा, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भास्करराव जोशी, हम क्या खायें, ३२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
विनोबा, प्रेम के पथ पर, १२, क्रा०, अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ, वर्धा
विनोबा, भूदान और कांग्रेस, ८०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा
विनोबा, सर्वोदय दर्शन, ४४, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा
वि० सन्तोषवार, तकुवा, ८४, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा
श्याम परमार, मालवा की लोक कथाएँ, फुल० स्कै०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
शिवनाथसिंह शार्दूल, नज़ीर की नज़्में, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शावाजी न० भावे, श्रमदान, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
श्री कृष्णदास जाजू, व्यवहार शुद्धि, ६६, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।=)
सचित्र महाराणा प्रताप, ड० क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १)

राजनीति

कन्हैयालाल वर्मा, भारतीय राजनीति, ५००, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस ७॥)
गोरखनाथ सिंह, राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त, रायल, बिहार राष्ट्र-भाषा-परिषद्, पटना १॥)

विविध

'चोंच', छेड़छाड़, १४४, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस २।)
त्रिवेणीप्रसाद सिंह, ग्रह नक्षत्र, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा, परिषद्, पटना ४।)
वैद्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्य गुण विज्ञान, ३५२, चौखम्बा विद्या भवन, बनारस ५॥)
दीक्षित डॉ०, कम्पाउण्डरी शिक्षा, पु० मु०, २५६, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा २॥)
पृथ्वीनाथ भार्गव डॉ०, आधुनिक कार्बनिक रसायन, क्रा०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, बनारस ४॥)
फूलदेव सहाय वर्मा, रबर, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद, पटना ७॥)
मौलूद सइदी, ६४, क्रा०, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा १)
मौलूद सादी, ६४, क्रा०, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा १)
रामस्नेही दीक्षित, अनु०, पीपल के गुण, ४४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ॥।)
रामस्नेही दीक्षित, अनु०, सन्तरे के गुण, २४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ॥)
रामस्नेही दीक्षित, अनु०, सिरस के गुण, ४८, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १=)
लाल बहादुरलाल, प्रारम्भिक सहायता, २२५, क्रा०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, बनारस ४॥)
वी० एन० भातखंडे, 'वसन्त', क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ३, १६२, डि०, संगीत कार्यालय, हाथरस ८)
वैद्य लक्ष्मीपति शास्त्री, योगरत्नाकर हिन्दी टीका सहित, ६५६, चौखम्बा विद्याभवन, बनारस १८)
श्रुतिकान्त एम० ए०, आधुनिक संस्कृत निबन्ध, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना २)
स्वा० दर्शनानन्द सरस्वती, उपनिषद प्रकाश, ५०४, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा ३॥)

शिक्षा

जयप्रकाश डॉ०, मनोवैज्ञानिक प्रयोग परिचय, ११२, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद २॥)
रामखेलावन चौधरी, प्रगतिवादी शिक्षा में इन्द्रिय शिक्षण, ८०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)
रामखेलावन चौधरी, प्राचीन शिक्षण विधियाँ और हरबर्ट की पंचपदी शिक्षण-विधि, ६०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)
रामखेलावन चौधरी, शिक्षण में मनोवैज्ञानिक क्रान्ति, ७६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)
रामखेलावन चौधरी, शिक्षा में गांधीवादी योजना, ६६, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)
रामखेलावन चौधरी, शिक्षा में नवीन प्रयोग, ६४, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी जगत के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त का नवीन उपन्यास

गुराठन

छप रहा है। प्रतीक्षा करें।

श्री गुरुदत्त जी की अन्य रचनायें:—

१ विकृत छाया	४।।) (अप्राप्य)	६ देश की हत्या	५।।)	११ प्रवंचना	५)
२ भावुकता का मूल्य	६)	७ वाम मार्ग	७)	१२ स्वा० के पथ पर	६)
३ बहती रेता	५)	८ विलोम गति	५)	१३ पथिक	६)
४ विडम्बना	६)	९ उमड़ती घटायें	६)	१४ स्वराज्यदान	६)
५ विश्वासघात	५।।)	१० मायाजाल	५)	१५ उन्मुक्त प्रेम	६)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सर्कस, नई दिल्ली—१

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द। पृ०

२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५, सजिल्द।

३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग इकरंगे आर्टपेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।

४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री सांवलिया विहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी।

५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथ के मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२। स

७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया आर्ट पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।

८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ-संख्या ३६२। सजिल्द।

९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०। स

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज़। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

प्रकाशन सम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

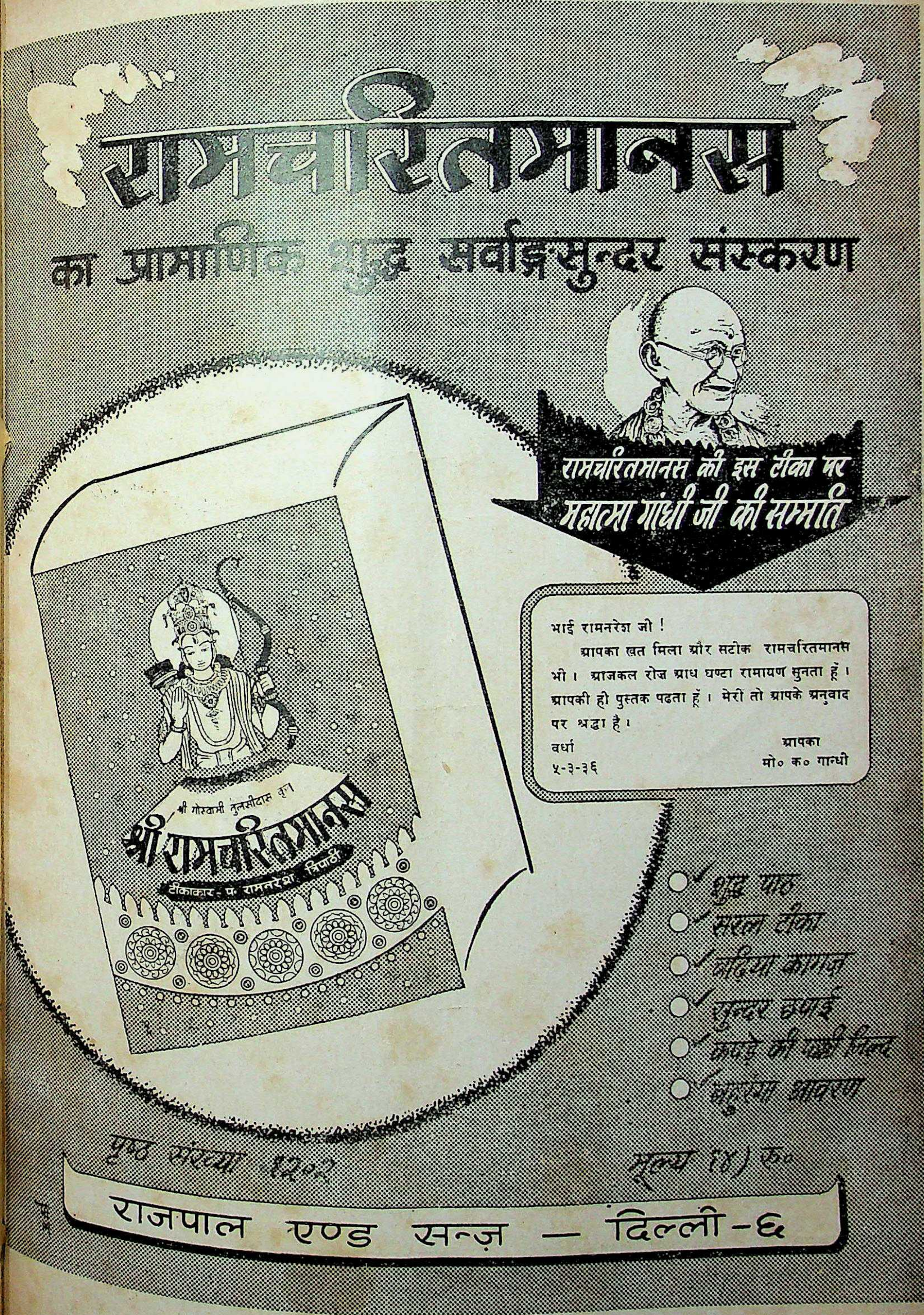

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन

द्वारा
प्रकाशित
हिन्दी में

ग्रिम्ज़ की
कहानियाँ

परिस्तान

लेखक
रघुपति सहाय
'फिराक'

२०० से ऊपर पृष्ठ

१७ पचरंगे
चित्र,
अनेकों
अन्य चित्र ।

बच्चों के लिए
पहली
उपहार-पुस्तक ।

अप्रैल के अन्त
में प्रकाशित हो रही है।

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष २ मई, १९५५ अङ्क ९

प्रकाशन समाचार

वार्षिक २॥) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

गुरुकुल पत्रिका

इलाहाबाद में

राजकमल प्रकाशन

का नया कार्यालय

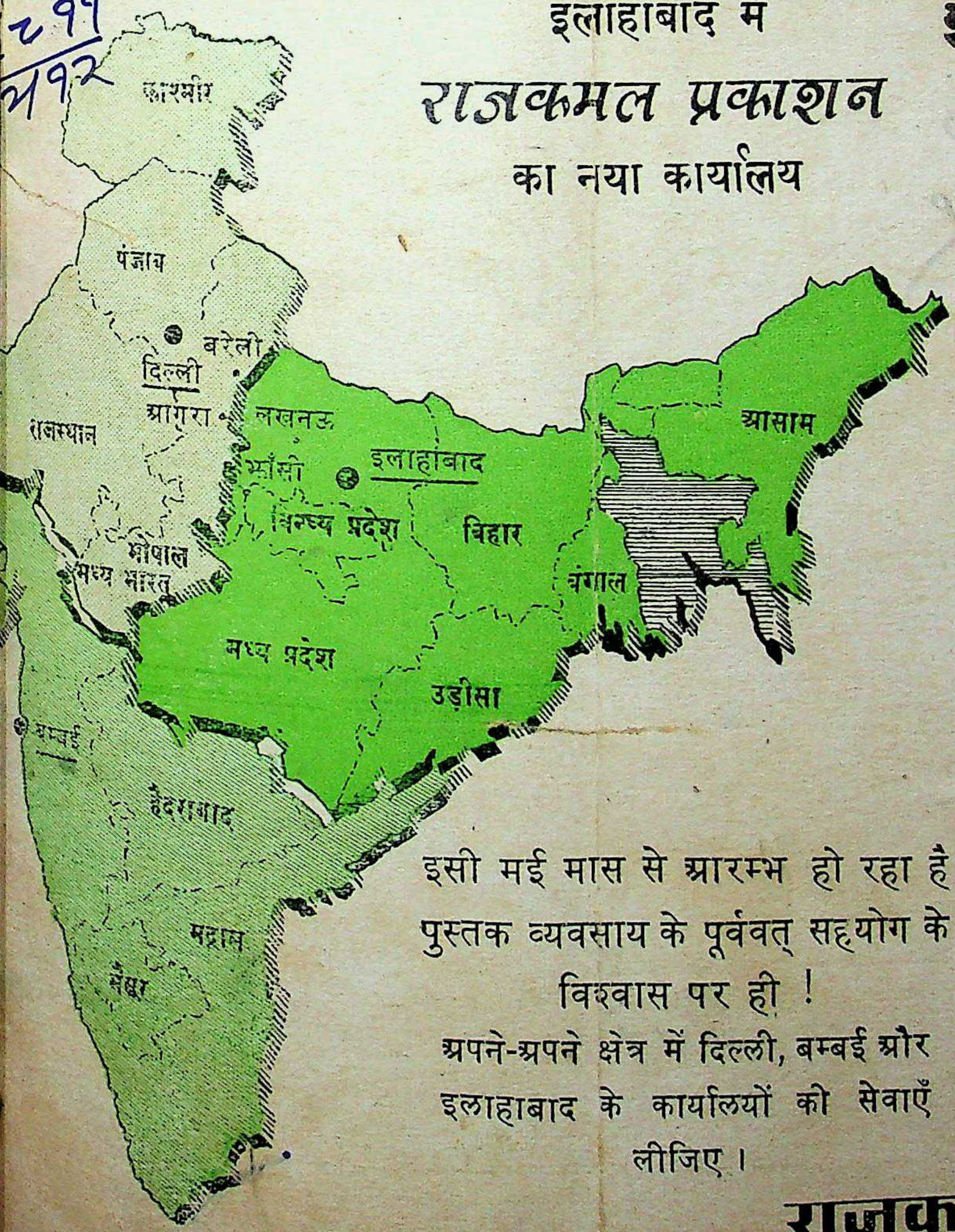

इसी मई मास से आरम्भ हो रहा है
पुस्तक व्यवसाय के पूर्ववत् सहयोग के
विश्वास पर ही !

अपने-अपने क्षेत्र में दिल्ली, बम्बई और
इलाहाबाद के कार्यालयों की सेवाएँ
लीजिए ।

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा अनुपम और अपूर्व बालोपयोगी चित्रमय साहित्य

सचित्र लोक-कथा-माला

काश्मीर (१)	नन्दलाल चत्ता	१)
काश्मीर (२)	नन्दलाल चत्ता	१।)
विन्ध्य-भूमि	श्रीचन्द जैन श्रीवास्तव	१)
ब्रज	आदर्शकुमारी यशपाल	१।)
पंजाब	पंछी तथा वेदी	१।)
बंगाल	मन्मथनाथ गुप्त	१॥)
मालवा	श्याम परमार	१॥)
गढ़वाल	गोबिन्द चातक	१॥)
राजस्थान	पुरुषोत्तम मेनारिया	१।)
सौराष्ट्र	प्रवासीलाल वर्मा	१॥)
निमाड़ी	कृष्णलाल 'हंस'	१॥)
उत्तर भारत (१)	सावित्री देवी वर्मा	१।)
उत्तर भारत (२)	सावित्री देवी वर्मा	१।)
उत्तर भारत (३)	सावित्री देवी वर्मा	१।)
हरियाना	राजाराम शास्त्री (प्रेस में)	
छत्तीसगढ़	चन्द्रकुमार	१॥)
हिमाचल	सन्तराम वत्स्य	१।)
नेपाल	गोबिन्द चातक	१॥)
आंध्र	के० राजशेषगिरिराव	१॥)
फ्रांस	मन्मथनाथ गुप्त	१॥)
चीन	हंसराज 'रहबर'	१।)
रूस	हंसराज 'रहबर'	१।)
जर्मनी	जगन्नाथ शर्मा	१॥)
अरब	जगन्नाथ शर्मा (प्रेस में)	

सचित्र बालोपयोगी साहित्य

सचित्र अक्षर-ज्ञान (रंगीन)	रामलाल पुरी	१॥)
देखो-पढ़ो-लिखो	रमेश भाई	॥=)
सरल कहानियाँ	सन्तराम विचित्र	१)
नटखट पूसी	रमेश भाई	॥=)

सूम का घड़ा	सन्तोष गार्गी
आदमी का जन्म	मन्मथनाथ गुप्त
बुद्धि-विनोद	आनन्दकुमार
नीति-प्रमोद	आनन्दकुमार
महाभारत की कहानियाँ	राजबहादुरसिंह
सुन्दर कहानियाँ	राजबहादुरसिंह
चरित्र निर्माण की कहानियाँ	राजबहादुरसिंह
कथा भारती	सावित्री देवी वर्मा
जंगल-ज्योति	सावित्री देवी वर्मा
बाल-कथा (तीन भाग)	सुषमारानी शास्त्री
गुरु-दक्षिणा	सन्तराम वत्स्य
बाल-मेला (कविता)	शम्भूनाथ 'शेष'
एक था राजा, एक थी रानी (कविता)	चिरंजीत
नटखट के गीत (कविता)	चिरंजीत
कथा-मंजरी	नागार्जुन
बाल-नीति कथा (१)	विष्णुदत्त 'विकल'
बाल-नीति कथा (२)	विष्णुदत्त 'विकल'
बालकों के चलन	सन्तराम विचित्र
चन्दा मामा का देश	सन्तोषनारायण नौटियाल
चिड़ियाघर की सैर	पृथ्वीनाथ शर्मा
ऐतिहासिक दृश्य (नाटक)	श्यामलाल
बूढ़े बच्चे (नाटक)	रामचन्द तिवारी
गधे (नाटक)	हबीब तनवीर
गार्गी के बाल-नाटक	पारितोष गार्गी
रामायण (चित्रों में)	।।।) रंगीन १।।)
झाँसी की रानी (चित्रों में)	
महाभारत (चित्रों में)	
शकुन्तला (चित्रों में)	
कृष्ण-चरित्र (चित्रों में)	
महाराणा प्रताप (चित्रों में)	
वीर बालक (चित्रों में)	

आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक ९ :
: पूर्णाङ्क २१ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

शी के दैनिक समाचार पत्र 'बनारस' ने ९ अप्रैल १९५५ अंक के अपने अग्रलेख में निम्न वाक्य को लिखने का साहस किया है : "अभी हाल में ही दिल्ली में भी एक काशक-सम्मेलन हुआ था जिसने शुद्ध रूप से अपने व्यापाक स्वार्थ पर ही ध्यान दिया और छोटे प्रकाशकों का गला कर अपना घर भरने की योजना बनाई।" बिना किसी कार की जानकारी के इस अनुत्तरदायित्व-पूर्ण और नितान्त सत्य आरोप के पत्र की सम्पादकीय टिप्पणी में समावेश न केवल 'बनारस' की इज्जत में बट्टा लगा है, वरन् काशी आदर्श और गौरवपूर्ण हिन्दी-पत्रकारिता की मर्यादा को ति पहुँची है। **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** सभी उद्देश्य और स्वीकृत प्रस्ताव निरन्तर प्रकाशित होते हैं;—हिन्दी प्रकाशन जगत् के हित में किये गए इसके फल प्रयासों के समाचारों ने देश के सभी पत्रों में समयमय पर स्थान पाया है। इनमें कौन-सा प्रयास एवं निर्णय सा था जिसके बारे में कहा जा सके कि इससे "शुद्ध रूप से पने व्यापारिक स्वार्थ" की ही झलक मिलती है ? संघ के कस प्रस्ताव अथवा किस कार्यवाही में "छोटे प्रकाशकों का ला रेतकर अपना घर भरने की योजना" देखी गई है? संघ के सदस्यों में देश की प्रायः सभी अग्रणी प्रकाशन-संस्थाओं के नाम हैं। इन सुप्रतिष्ठित संस्थाओं ने पारस्परिक सहयोग से अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की नींव डाली और से बल दिया है। क्या इन में से किसी पर दूसरों का गला तकर अपना घर भरने का आरोप लगाया जा सकता है ? ल के भाड़ों और डाक की दरों में कमी करवा के, देश-भर में पुस्तकों से बिक्री-कर हटाने के पक्ष में संघर्ष खड़ा करके, विदेशों से अश्लील साहित्य के आयात पर प्रतिबन्ध की मांग पेश करके, पुस्तक-विक्रेताओं के हित में पुस्तकालयों आदि को अधिकाधिक कमीशन देने की घातक होड़ को संयत करने का प्रचार करके किस व्यक्तिगत व्यापारिक स्वार्थ की रक्षा की गई और किस हित-विशेष का गला रेता गया ? संघ के किसी सदस्य का व्यक्तिगत अपमान ऐसे शब्दों से किया जाता तो हम शायद इसका प्रतिकार उस संस्था पर छोड़ते। उद्धृत वाक्य से प्रकाशकों के सामूहिक हित में एकनिष्ठ, एक अखिल भारतीय संस्था का अपमान हुआ है। इस व्यवहार की जितनी भी भर्त्सना की जाय, थोड़ी है। प्रकाशकों के पास इस प्रकार के दूषित प्रचार के प्रतिकार का तरीका संघ के सदस्य बनने में है। हर्ष का विषय है कि इस बनारसी टिप्पणी के प्रकाशन के बाद दिल्ली, बनारस और पटना की १५ और प्रकाशन-संस्थाएँ **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** की सदस्य बनीं।

◈ ◈ ◈

खेद है कि 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रकाशक-सम्मेलन' ने एक ऐसा प्रस्ताव स्वीकार किया जो यदि कार्यान्वित किया गया तो पुस्तक-व्यवसाय की नींव को ही खोखलाकर देगा। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि सभी सरकारी विभाग "सत्साहित्य को ठीक और पूरा प्रोत्साहन देने तथा सब प्रकाशकों को पूरा पूरा अवसर, सुभीता और सहायता देने के लिए सीधे प्रकाशकों या उनके द्वारा नियुक्त संस्थाओं से ही उनकी पुस्तकें खरीदा करें।" इस प्रस्ताव से पुस्तक-विक्रेताओं के वर्ग के हितों पर कुठाराघात किया गया है। यदि सभी सरकारी विभाग सीधे प्रकाशकों से पुस्तकें खरीदेंगे तो पुस्तक-विक्रेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करेंगे ? पुस्तकों की बिक्री का अधिकांश आज सरकारी अनुदान अथवा सरकारी खरीद पर निर्भर है; व्यक्तिगत उपयोग के लिए बहुत ही कम अनुपात में पुस्तकें खरीदी जाती हैं। पुस्तक-विक्रेताओं के हाथ से इस क्षेत्र के व्यवसाय को छीनने की कोशिश करना प्रकाशकों के अपने व्यावसायिक हित के भी सर्वतः विरुद्ध है। पुस्तक-विक्रेता पुस्तक-व्यवसाय की रीढ़ की हड्डी हैं; प्रकाशक और विक्रेताओं के बीच की इस अतीव आवश्यक कड़ी को कमजोर करने वाले इस प्रस्ताव में हितबोध और दूरदर्शिता का दीवालियापन स्पष्ट दिखाई देता है। सरकारों द्वारा खरीद वर्ष में एक होती है; यह खरीद सदा चल भी नहीं सकती; द्वारा प्रस्तुत पुस्तकों को देश-भर में फैलाने का माध्यम पुस्तक-विक्रेता हैं, और रहेंगे। ऐसे प्रस्ताव भी विचारशील प्रकाशक सहमत न हो सकेगा। विक्रेताओं का अनहित यदि इस प्रकार के प्रकाशक स्वयं करेंगे तो निश्चय है कि इस के दुष्परिणाम अन्ततः उन्हें स्वयं भुगतने पड़ेंगे।

प्रकाशन समाचार का कार्यालय

इलाहाबाद में

इस अंक से **प्रकाशन समाचार** का सम्पादकीय कार्यालय राजकमल प्रकाशन के नये कार्यालय के साथ इलाहाबाद जा रहा है। सब सूचनाएँ और पुस्तक-परिचय के लिए पुस्तकें आदि दिल्ली न भेजकर अब इलाहाबाद के पते पर भेजी जाया करें। जिन पत्र-पत्रिकाओं का विनिमय **प्रकाशन समाचार** से होता है, वे भी इस नये पते को नोट करलें।

प्रकाशन समाचार

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द। पृ०
२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५, सजिल्द।
३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग इकरंगे आर्टपेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।
४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया विहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी।
५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथ के मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२। स
७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया आर्ट पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।
८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ-संख्या ३६२। सजिल्द।
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०। स
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज़। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" की

कार्य समिति के निर्णय

"अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" की कार्य-समिति की बैठक पटना में १२ अप्रैल, १९५५ को हुई। स्वीकृत प्रस्ताव प्रकाशकों की सूचना के लिए प्रचारित किये जा रहे हैं।

घ के प्रधान श्री रामचन्द्र टण्डन ने कार्य-समिति की र्यवाही प्रारम्भ करने से पहले कार्य-समिति की सदस्यता तीन रिक्त स्थानों की पूर्ति को और घोषित किया कि १२ प्रैल, ५५ से निम्नलिखित व्यक्ति कार्य-समिति के सदस्य मे जायँगे :

श्री उदयराज सिंह (अशोक प्रेस, पटना)
श्रीमती कौशल्या अश्क (नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग)
श्री यज्ञदत्त शर्मा (साहित्य प्रकाशन, दिल्ली)

(१) पिछली कार्यवाही पढ़ी गई और सम्पुष्ट हुई।

(२) पिछली कार्यवाही के पढ़े जाने के बाद मालूम हुआ कि कुछ प्रस्तावों को कार्यान्वित नहीं किया जा सका है। इन्हें शीघ्र ही कार्यान्वित करने का कार्य-समिति ने आदेश दिया। इन प्रस्तावों का सम्बन्ध अनुबन्ध के प्रकाशन (प्रस्तावांक ५) एवं संघ की मुहर की तैयारी (प्रस्तावांक ७) से है। श्री ओंप्रकाश, उपमन्त्री, ने बताया कि किन दशाओं में पिछले प्रस्ताव २ के अनुसार केन्द्रीय मन्त्रियों से मिलने के लिए जिन साहित्य-सेवियों और प्रकाशकों को शिष्ट-मण्डल में सम्मिलित करने की बात थी, उन्हें सूचना नहीं दी जा सकी। प्रधान-मन्त्री ने अपनी भेंट के लिए जो बुलावा भेजा, उसमें दिल्ली से बाहर के लोगों को सूचना देने के लिए समय का नितान्त अभाव था। प्रस्तावांक ६ के अनुसार संघ की सदस्य प्रकाशन-संस्थाओं के प्रकाशनों की सम्मिलित सूची प्रकाशित करने की बात थी। आशा थी कि संघ के जो सदस्य अपने प्रकाशनों के अतिरिक्त बाहरी पुस्तकें भी रखते हैं, वे सब इस सूची की काफी प्रतियाँ खरीदना चाहेंगे और इस प्रकार संघ पर इस सूची के प्रकाशन का कोई व्यय न पड़ेगा। कार्य-समिति इस योजना पर अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँची, तदनुसार प्रस्ताव का कार्यान्वित होना अगले निर्णय तक स्थगित रहेगा। सूचना दी गई कि प्रस्तावांक ८ के अनुसार हिन्दी में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ तिमाही साहित्य की घोषणा करने के लिए जिस उप-समिति का निर्माण किया गया था, वह पर्याप्त संख्या में पुस्तकें न पाने के कारण कार्य नहीं कर सकी। इस प्रस्ताव का कार्यान्वित होना स्थगित समझा गया। प्रस्ताव १० के अनुसार एक उप-समिति का निर्माण तथा कमीशन-सम्बन्धी व्यवस्था पर प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के विस्तार पूर्वक विचार जानने के लिए एक प्रश्नावली प्रचारित की गई थी जिसका विश्लेषण इस बैठक में प्रस्तुत होना था। कार्य-समिति ने आदेश दिया कि यह उप-समिति शीघ्र ही इस विश्लेषण को तैयार करके सदस्यों में इसे प्रचारित कर दे। संघ के सदस्य-प्रकाशकों से इस प्रश्नावली के उत्तर देने की प्रार्थना भी की जाय।

(३) कार्य-समिति ने आदेश दिया कि केन्द्र के जिन मन्त्रियों से गत मासों में संघ के शिष्टमण्डल प्रकाशकीय समस्याओं के सम्बन्ध में मिले हैं, उनसे पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क बनाए रखा जाय और उन द्वारा दिये गए आश्वासनों के सम्बन्ध में उन्हें स्मरण दिलाया जाय।

(४) निश्चय हुआ कि अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का द्वितीय अधिवेशन सितम्बर मास में दिल्ली में हो। नये प्रधान के चुनाव के लिए विधान की धारा ६ के अनुसार ("कार्य-समिति आगामी अधिवेशन से तीन मास पूर्व अपने सदस्यों से सभापति के लिए नाम प्रस्तावित करने को कहेगी और एक निश्चित समय में प्राप्त नामों में से बहुमत-प्राप्त तीन नामों को चुनकर उन्हें संघ के सदस्यों तथा सम्बन्धित प्रादेशिक संगठनों को भेजेगी। सदस्य प्राथमिकता के हिसाब से क्रमांक देकर १५ दिनों के भीतर प्रधान कार्यालय को भेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देंगे। बहुमत-प्राप्त सदस्य का नाम सभापति के रूप में घोषित कर दिया जायगा।") अविलम्ब प्रधान के नाम के प्रस्ताव मंगवाए जायँ ताकि नये वर्ष के लिए प्रधान के नाम की नियमानुसार घोषणा की जा सके।

संघ के द्वितीय अधिवेशन के सम्बन्ध में सब व्यवस्था अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के दिल्ली-स्थित सदस्यों की एक उप-समिति करेगी जिसके श्री रामलाल पुरी प्रधान तथा श्री ओंप्रकाश संयोजक होंगे।

(५) निश्चय किया गया कि कार्य-समिति के ११ जुलाई १९५४ की बैठक के प्रस्तावांक १८ के तथा १२ दिसम्बर १९५४ के प्रस्तावांक ६ के अनुसार संस्थापक सदस्यों की जो सूची बननी आवश्यक थी, उसे हटाते हुए उन सभी प्रकाशन-संस्थाओं को संघ का संस्थापक सदस्य माना जाय जो ३० अप्रैल, १९५५ तक संघ की सदस्य बन जायँ।

(६) निश्चय हुआ कि पुस्तकों के पैकेटों के लिए डाक की दरों को कम करने के सम्बन्ध में संघ की एक उप-समिति निर्वाचित की जाती है जो कि केन्द्रीय डाक-विभाग को कार्य-समिति के एतद्विषयक सुझाव पेश करेगी तथा डाक-विभाग द्वारा नियोजित समिति में सम्मिलित होगी। इस उप-समिति के सदस्यों के नाम इस प्रकार होंगे :

श्री रामचन्द्र टण्डन (प्रधान)
श्री विश्वनाथ (ज्ञानमण्डल लि०, बनारस)
श्री रामलाल पुरी
श्री ओंप्रकाश

कार्य-समिति ने आदेश दिया कि यह मेमोरैण्डम निम्न-लिखित मौलिक मांगों के तथा व्याख्याओं के आधार पर तैयार किया जाय :

Books : A BOOK is a collection of printed and numbered sheets of paper, bound, stitched or collated together. Besides, it includes maps & educational charts.

Catalogues : Catalogues, other than book-catalogues, will not be able to make use of the concessional rates as most, practically 95%, of them, do not weigh more than the minimum weight. Hence, there is no need of preparing special rules to deprive them of any concessions. Any such rules are likely to create more di ties for bonafide book-dealers during insp etc.

Periodicals : There is no need to s in the definition of books that they sho be published in the form of a series perio Periodicals, at an interval of a month, a receive 'registered numbers' whereby they very low rates for posting. If any special sion is made in the definition of a book ding periodicals, it will deprive bi-mo quarterly or annual publications of those c sions. Actually, some of the best literar published periodically.

Advertisements : If the definition o BOOK contains the proviso that they sh not contain advertisements other than of b such valuable publications, as Directorie Year-Books will be left out. They inev contain advertisements.

As an alternative, the definition of a ' may specifically state that there should adverisements, except for advertiseme books, exception being made in the case of Books and Directories.

Checks against Misuse of Concessions tents of each book-packet may compulsor declared. All book-packets may be open a two sides.

V. P. P. sur-charge on book-packets s be removed Compulsory registration of packets may be reduced from annas 6 per to annas 3.

Guaranteed Delivery : Like 'Express very' of letters, a system may be evolved by book-packets may be delivered to addr on some additional fixing of postal st This additional charge may be annas two Records of delivery should be maintaine Post Offices.

Bulk Post System : As in the U. K., Post System may be introduced within the

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...y. Under this system, Post Offices may provide bags for intending users who will dump their book-packets in them. These bags should not weigh less than 25 lbs and not more than ...lbs. Rates for these should be two-thirds of ...ual rates.

(७) निश्चय किया जाता है कि संघ की ओर से सदस्यों ...पाठ्यक्रम निर्धारित कराने के लिए पुस्तकें भेजने की ...चियों की सूचना, पुरस्कार के लिए पुस्तकें भेजने की सूचना ...र विभिन्न राज्यों द्वारा पुस्तकें मांगे जाने की सूचनाएँ परि... द्वारा प्रचारित करने की व्यवस्था हो। इन सूचनाओं ... नियमित रूप से प्राप्त करने के लिए निम्न सज्जनों की ... समिति नियुक्त की जाती है जो सब आवश्यक, सम्बन्धित ...नाएँ कार्यालय में भेजते रहें। इनसे तथा स्वतन्त्र रूप से ...त सूचनाओं को कार्यालय समय-समय पर प्रचारित करता ...।

श्री जयनाथ मिश्र (श्रीअजन्ता प्रेस लि०, पटना)
श्री श्रीनिवास अग्रवाल (किताब महल, इलाहाबाद)
श्री दीनानाथ (राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली)
श्री धर्मचन्द्र नारंग (हिन्दी-भवन, जालन्धर)
श्री गोकुलदास धूत (नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर)
श्री सत्यप्रकाश (राजकमल प्रकाशन, बम्बई)

संघ के अन्य सभी सदस्यों से अनुरोध किया जाता है कि ... सब सूचनाएँ यदि कार्यालय को देते रहेंगे तो उन्हें संघ ...अन्य सदस्यों के हित के लिए प्रचारित करने में सुविधा ...गी।

इस प्रस्ताव को श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने प्रस्तुत किया ... श्री जयनाथ मिश्र ने अनुमोदित किया। प्रस्ताव सर्व...मति से स्वीकृत हुआ।

(८) यह कार्य-समिति कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, ...मदाबाद तथा जयपुर में हिन्दी पुस्तकों की थोक-बिक्री ...सुचित व्यवस्था प्रतिष्ठित करने के लिए एक निश्चित ... उठाने की आवश्यकता अनुभव करती है। इसके लिए ...लिखित सज्जनों की उप-समिति निर्धारित करती है जो ... रिपोर्ट कार्य-समिति को दे :

श्री बी० पी० ठाकुर (भारती भण्डार, प्रयाग)
श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन (साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद)
श्री सत्येन्द्रकुमार गुप्त (ज्ञानमण्डल लि०, बनारस)
श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली)
श्री जयनाथ मिश्र (श्रीअजन्ता प्रेस लि०, पटना)
श्री श्रीनिवास अग्रवाल (किताब महल, प्रयाग)
श्री ओंप्रकाश (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली) संयोजक

इस प्रस्ताव को श्री वाचस्पति पाठक ने प्रस्तुत किया तथा श्रीमती कौशल्या अश्क ने अनुमोदित किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(९) निश्चय हुआ कि भारत-सरकार के शिक्षा-मन्त्रणालय के द्वारा हिन्दी-पुस्तकों की जो प्रदर्शिनी आयोजित हो रही है, संघ का पूर्ण सहयोग उसे दिया जाय। सम्बन्धित अधिकारियों से प्रार्थना की जाय कि जो प्रकाशक अभी तक अपनी पुस्तकें किसी कारण शिक्षा-मन्त्रणालय को नहीं भेज सके, उन्हें भेजने की अनुमति प्रदान करें ताकि हिन्दी की सभी पुस्तकों में से चुनाव हो सके।

(१०) कार्य-समिति संघ के सदस्यों से अनुरोध करती है कि कार्य-समिति के एक पूर्व-निर्णय के अनुसार (१२ दिसम्बर ५४ की बैठक में प्रस्तावांक १ अपने प्रकाशनों की एक प्रति से अधिक किसी पत्रिका को समीक्षार्थ न भेजें। पत्रिकाओं से पत्र-व्यवहार करके एक प्रति स्वीकार करने के लिए उन्हें तैयार करने का दायित्व श्री श्रीनिवास अग्रवाल को सौंपा जाता है।

संघ के सदस्यों से अनुरोध है कि संघ की प्रतिष्ठा के लिए कार्य-समिति के इस सर्वसम्मत आदेश का पालन करें।

(११) अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ वर्ष की रिपोर्ट को तैयार करने के लिए प्रधान मन्त्री तथा तीनों उपमन्त्रियों की एक उपसमिति मनोनीत की जाती है जो इसे तैयार करके प्रकाशित करे।

(१२) ११-७-५४ की कार्य-समिति की बैठक में प्रस्तावांक ७ के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं के व्यवस्थापकों से पुस्तकों के विज्ञापनों की दरों में कमी करने के लिए अनुरोध किया गया था। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कार्य-समिति का आदेश है कि प्रधान मन्त्री अधिक ध्यान दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

भारत-सरकार की ओर से हिन्दी-पुस्तकों की जो प्रदर्शनी अप्रैल-मई, ५५ में होने जा रही थी, वह अब अगस्त मास में होगी। निश्चित तारीखों की घोषणा शीघ्र ही होगी। जिन प्रकाशकों ने अभी तक अपने स्टॉल सुरक्षित नहीं कर-वाए हैं, वे शीघ्र ही मन्त्री, अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ, १ फैज़ बाजार, दिल्ली को लिखें। शिक्षा-मन्त्रणालय के तत्वावधान में हिन्दी-प्रकाशनों की यह पहली प्रदर्शनी हो रही है।

◈ ◈ ◈

३० अप्रैल ५५ से अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के उप-मंत्री के पद से श्री ओंप्रकाश ने व्यक्तिगत व्याव-सायिक कारणों से त्यागपत्र दे दिया है। संघ के प्रधान श्री रामचन्द्र टण्डन ने १ मई ५५ से पदाधिकारियों के नए चुनावों तक श्री देवराज (राजकमल प्रकाशन) को दिल्ली-स्थित उप-मंत्री के पद पर नियुक्त किया है। उप-मन्त्री का पता पूर्ववत् (१ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली) ही रहेगा।

◈ ◈ ◈

पिछले मास बनारस में श्री कृष्णचन्द्र बेरी (व्यवस्थापक, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय) के एक वर्ष के अनथक श्रम और प्रचार के परिणामस्वरूप हिन्दी-प्रकाशकों के एक नये संगठन को बनाने के लिए एक सम्मेलन हुआ जिसका नाम "अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रकाशक सम्मेलन" रखा गया है।[1]

१. इस "सम्मेलन" की अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के विरोध में ही नींव रखी गई है और संघ द्वारा गतवर्ष समस्त प्रकाशन-जगत् के हित में जो कुछ प्रयास किये गए और सफलताएँ प्राप्त हुईं, उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया। यदि उनके महत्त्व को समझा जाता तो ऐसे किसी नये "सम्मेलन" की आवश्यकता नहीं थी।

—सम्पादक

◈ ◈

काशी से प्रकाशित होने वाले ... रस नाम के दैनिक पत्र में "अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रकाशक सम्मेलन" ... वाही का ब्यौरा छपा है, जो इस प्रकार है: "(सम्मेलन ...) कार्यारम्भ करते हुए डॉ० राजबली पाण्डेय ने 'समाज ... दृष्टि' से वर्ग-विशेष के लोगों के संघटन के औचित्य ... शंका प्रकट की। संयोगवश स्वागत-मन्त्री (श्री कृ... बेरी) के भाषण में इस विचार का प्रतिकार हो गया ... अध्यक्ष (श्री इंद्रचन्द्र नारंग) के भाषण ने पुनः विचार ... समस्या प्रस्तुत करदी। इन्होंने मशीनीकरण की ... से मजदूरों की आर्थिक क्षतिकी आशंका प्रकट की। ... संयोग ही कहा जायगा कि सिद्धान्त की दृष्टि से ... विचार उद्घाटनकर्ता के विचारों से उलटे थे। ... किशोरीदास वाजपेयी का भाषण बिजली के करेण्ट ... ·······फलस्वरूप प्रकाशक चौंके···।·······स्वागत-मन्त्री ... अपनी परेशानी यह कह कर जाहिर की कि समझ में ... आता कि ज्ञान और शिक्षा का प्रचार और प्रसार ... वाला प्रकाशक हेय क्यों समझा जाता है। ···लेखक-... श्री सीताराम चतुर्वेदी ने·· प्रकाशकों पर व्यंग्य ... कसा। आपका भाषण स्वागत-मन्त्री के कथन का ... ही था···। डॉ० जगन्नाथ शर्मा ने प्रकाशकों की ... ···अश्लील साहित्य के प्रणेताओं की भी खबर ली ...

"विषय-निर्धारिणी समिति··· (में दिल्ली के ... **भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ से**) 'समझौता वार्ता' ... चर्चा छिड़ी। इसके कारण 'ज़िच' उत्पन्न हुई और ... गया कि 'समझौता वार्ता हो रही है, इसलिए विधान ... में जल्दी न की जाय।' पहले तो यह बात रंग ... प्रतीत हुई लेकिन जब यह कूटनीतिक तर्क सामने रखा ... गया कि 'अपनी कार्रवाई रोक देने से समझौते के सम... दुर्बल पड़ जायगा।' तब फिर रुख पलट गया।

"···प्रस्तावों को स्वीकार करने का काम शुरू ... किसी प्रस्ताव पर विशेष बहस नहीं हुई।"

◈ ◈ ◈

९ अप्रैल ५५ को श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली) इस "सम्मेलन" के कार्याध्यक्ष ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। उन्होंने १२ अप्रैल ५५ को "सम्मेलन" से त्यागपत्र देते हुए जो पत्र श्री कृष्णचन्द्र बेरी को लिखा, उसकी एक प्रति हमें प्रकाशनार्थ भेजी है :

प्रिय बेरी जी,

"बनारस में मेरे कन्धों पर जो भार डाला गया है, उसे विचार करने पर मैं वहन करने में अपने को असमर्थ पाता हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा अवश्य है कि हिन्दी-जगत् में एक ही प्रकाशक-संघ हो। एक से अधिक संघ का होना हमारे बल को घटायेगा। जो संघ हमारा बन चुका है, उसी को समर्थन देकर इस ध्येय की पूर्ति हो सकती है। उसके उद्देश्यों में कोई ऐसी बात नहीं है जो समस्त हिन्दी-प्रकाशकों को मान्य न हो। उस संघ की ओर से प्रकाशकों को सम्मिलित होने के लिए खुला निमन्त्रण दिया जा चुका है। मेरा सुझाव है कि हिन्दी-प्रकाशक अधिक-से-अधिक संख्या में इस संघ में सम्मिलित हों और उसके आगामी वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर अपने मत का पूरा प्रभाव डालते हुए उसकी गतिविधि का संचालन करें।

"इस पत्र को कृपया मेरा उस पद से त्यागपत्र समझें जो मुझे बनारस में प्रदान किया गया है।

"यह पत्र मैं समाचार-पत्रों में दे रहा हूँ।

आपका

रामलाल पुरी।"

पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, के श्री आनन्द मिश्र का नाम भी "सम्मेलन" की स्थायी समिति के सदस्य के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस सदस्यता के विषय में श्री आनन्द मिश्र से २५ अप्रैल ५५ का निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ है :

प्रिय बन्धु,

"....विगत ८, ९ अप्रैल को, जबकि काशी में "अखिल भा० प्र० सम्मेलन" की बैठक हुई, मैं कानपुर में था। अतः वहाँ की कार्यवाही के सम्बन्ध में मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है।....मैं नहीं जानता कि वस्तुस्थिति क्या है। मेरे पास "सम्मेलन" का कोई पत्र इत्यादि भी नहीं है।

भवदीय

आनन्द मिश्र।"

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली के श्री यज्ञदत्त शर्मा का नाम भी "सम्मेलन" की स्थायी और कार्य-समिति में प्रकाशित किया गया। इस सम्बन्ध में श्री यज्ञदत्त शर्मा से हमें निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ है :

"आपका १९ अप्रैल ५५ का पत्र प्राप्त हुआ, जाना। इसका उत्तर देने से पूर्व उत्तर देने की ज़िम्मेदारी मुझ पर क्यों आई, वह थोड़ी स्पष्ट कर दूँ।

"आपकी तथा वाचस्पति पाठकजी की प्रेरणा पाकर मैं बनारस इसलिए गया कि जिससे भारत के प्रकाशकीय जगत् के भूखण्ड आपस में न टकरा जायें! बेरीजी ने भी मुझे अपने सम्मेलन में, जैसे कि किसी भी प्रकाशक के पास छपा हुआ कार्ड भेजा जाता है, बुलाया। मैं चला गया।

"वहाँ बेरीजी का आयोजित सम्मेलन देखा। यह सम्मेलन कम व्यापाराना और अधिक जोशीला था। छोटे-से-छोटे प्रकाशक से लेकर बड़े-से-बड़ा प्रकाशक वहाँ पहुँचा था। किस लिए, यह जैसा मैं जानता हूँ, वैसा आप भी जानते हैं।

"बनारस के सम्मेलन ने पारस्परिक मेल के खिलाफ़ द्वार बन्द रखे। आपका और वाचस्पति पाठकजी का शुभ, सक्रिय और व्यवहार-क्षेत्र में पूरी-पूरी ईमानदारी से मेल करने का प्रस्ताव रद्द हो गया।

"इसके पश्चात् मैं आपके तथा श्री रामलाल पुरी के साथ अखिल-भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ की एक्ज़िक्यूटिव की मीटिंग में पटना गया। मीटिंग अटैण्ड की, और उसमें बहुत-सी प्रकाशकोपयोगी चीज़ों पर स्वस्थ विचार विनिमय हुआ और सुन्दर डिसीज़न भी लिए गये। वहाँ के Education Minister साहब से भी पुस्तकों पर सेल-टैक्स के विषय में बातचीत की।

"पटना से लौटकर मैं फिर कृष्णचन्द्र बेरीजी से मिला और जो बात उनकी मेरे दिमाग में गलत खटक रही थीं, वह मैंने स्पष्ट रूप से उनके सामने कहीं, और बेरीजी ने एक साहसी तथा ईमानदार आदमी के नाते उन्हें माना और खेद प्रकट किया। मैंने उनसे कहा कि आपने घर आया अवसर खोया है। अपने घर पर आये हुए अपने भाइयों का अपमान किया है। अब तुम ही अपने भाइयों को मनाओ। उन्होंने मुझे वचन दिया कि वह पत्र लिखेंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनका पत्र आया है। पत्र की बातों से सहमत होना या न होना पृथक् बात है। यह आप लोग जानें।

"अन्त में निवेदन है कि मुझे आपने बनारस चलने के लिए जिस रूप में प्रेरणा दी थी, मैं वहीं पर अपने को सीमित रखना चाहता हूँ। कोई सभा मुझे अपने बीच स्थान देने को तैयार होगी तो मुझे इन्कार न होगा। स्पष्ट बात ही मैं कहूँगा। किसी पद या एक्ज़िक्यूटिव का मुझे मेरा प्रलोभन नहीं।

"पारस्परिक प्रेम और सद्भावना से हम सब किताबों का काम करने वाले आगे बढ़ें, इस कार्य के लिए जो भी मुझसे योग मांगेगा मैं दूँगा। इतनी स्वतन्त्रता अपनी छोड़कर किसी बंधन में बँधना मेरे लिए असम्भव है।

"इधर उधर अखबारों में छपने वाली चीज़ों की देख-भाल करूँगा और समझूँगा कि उनकी जड़ में क्या है।

आपका अपना ही

यज्ञदत्त शर्मा।"

◆ ◆ ◆

भारत सरकार ने प्रौढ़-शिक्षा के लिए उपयोगी पुस्तकों की प्रतियोगिता के लिए भेजी जानी वाली पुस्तकों की अन्तिम तारीख ३० अप्रैल ५५ से बढ़ाकर ३१ मई १९५५ तक कर दी है।

◆ ◆ ◆

प्रकाशन-प्रसारन (प्रकाशक तथा विक्रेता, १-४७१ स्वतन्त्र मार्ग, कपासन, राजस्थान) के नाम से राजस्थान में हिन्दी की अधिकाधिक पुस्तकों की खपत के लिए एक नई संस्था खुली है। प्रकाशक इन्हें अपने प्रकाशनों एवं प्रचारित पुस्तकों की सूचियाँ और अधिकतम कमीशन नियम भेजकर सम्पर्क स्थापित करें।

◆ ◆ ◆

व्यवस्थापक, नवयुग पुस्तक भण्डार, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ, लिखते हैं कि उन्होंने हिन्दी की पुस्तकों का एक विस्तृत भण्डार खोला है। पुस्तकों के आदान-प्रदान द्वारा प्रकाशकों को पूर्ण सहयोग देने का निश्चय किया गया है, अतः प्रकाशकों और विक्रेताओं से निवेदन है कि वह उनसे तुरन्त सम्पर्क स्थापित करें।

◆ ◆ ◆

बिहार राज्य पंचायत परिषद् की ओर से पंचायत ... नामक मासिक पत्रका प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है। इसमें ... तथा पंचायत सम्बन्धी रचनाएँ ही प्रकाशित होंगी। प्रधान सम्पादक पं० विनोदानन्द झा (भूतपूर्व मन्त्री, ... सरकार) तथा सम्पादक श्री परमानन्द दोषी एम० ... हैं। वार्षिक शुल्क ४।।) तथा एक अंक का ।=) है। पंचायत सन्देश, नेशनल हॉल, कदम कुँआ, पटना ...

सुन्दर छपाई के लिए

नवीन प्रेस

६ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

"संगर की कहानी और उपन्यास ... गत परिपाटियों की बैसाखी लेकर ... के मार्ग पर नहीं चलता। उसकी ... स्वतन्त्र शैली में इतना बल है कि ... ढंग से अपने कदमों चलकर भी ... के हृदय में पैठने के लक्ष्य तक पहुँच ...

हिन्दी के उदीयमान लेखक

सत्यप्रकाश संगर

की मौलिक तथा रोचक पुस्तकें हम से मँगवाइये :

१. कली मुसकराई (उपन्यास)
२. घर की आन "
३. अवगुण्ठन (कहानी संग्रह)
४. नया मार्ग "
५. अफ्रीका का आदमी "
६. कितना ऊँचा कितना नीचा "

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
लुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेर-ओ-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी-पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद २॥)
रजतरश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ५)

[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कंपन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो-सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो-सुख़न [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो-सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द १)
ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [२] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० २)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइये

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" के शिष्ट-मण्डल की

आचार्य बद्रीनाथ वर्मा से भेंट

"अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" का एक शिष्ट-म[ण्डल] मंगलवार १२ अप्रैल, ५५ को पटना में बिहार सर[कार] के शिक्षा-मन्त्री आचार्य बद्रीनाथ वर्मा जी से मिल[ा]

शिष्ट मण्डल में निम्नलिखित व्यक्ति मौजूद थे : श्री उपेन्द्रनाथ अश्क, श्रीमती कौशल्या अश्क (नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग) श्री कैलाशनाथ भार्गव (नन्दकिशोर ब्रदर्स, बनारस) श्री यज्ञदत्त शर्मा (साहित्य प्रकाशन, दिल्ली) श्री ओंप्रकाश (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली) श्री जयनाथ मिश्र .(श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना), श्री मदनमोहन पाण्डेय (ज्ञानपीठ लि०, पटना) तथा श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली)।

शिष्ट मण्डल ने आचार्य बद्रीनाथ वर्मा से बिहार राज्य में पुस्तकों की बिक्री पर लगने वाले 'बिक्री-कर' के विषय में **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** का विरोध प्रदर्शित किया। मान्य शिक्षा मंत्री का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट किया गया कि पुस्तकों के प्रचार प्रसार में इस प्रकार की प्रत्येक बाधा ज्ञान और शिक्षा पर बाधा के समान है, तथा किसी भी सभ्य और उन्नत देश में पुस्तकों पर 'खरीद कर' अथवा 'बिक्री कर' नहीं वसूला जाता। इस 'कर' से किसी भी राज्य को जो आमदनी होती है, वह उस हानि की तुलना से कहीं नगण्य है जो ज्ञान-प्रसार पर 'कर' लगाने से होती है। फरवरी ५५ में **हिन्दी-प्रकाशक संघ** का एक शिष्ट मण्डल प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मिला था जिन्होंने देश के विभिन्न राज्यों में पुस्तकों की बिक्री पर वसूले जाने वाले 'बिक्री-कर' पर असन्तोष प्रकट करते हुए कहा था कि यद्यपि 'बिक्री कर' का प्रश्न केन्द्राधीन नहीं है, फिर भी वे राज्यों के मुख्य-मन्त्रियों को इसके सम्बन्ध में लिखेंगे। देश के कई राज्यों में पुस्तकों पर 'बिक्री-कर' नहीं लगता, जैसे—उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि में। आवश्यकता है कि अन्य राज्यों में भी इसे हटा दिया जाय।

शिक्षा-मन्त्री आचार्य बद्रीनाथ वर्मा ने इस मां[ग का] सम्पूर्ण समर्थन किया तथा बताया कि वे दो बार इसे [हटाने] का प्रश्न मन्त्रिमण्डल में रख चुके हैं। वित्त विभा[ग के] अनुरोध पर ही अभी तक बिहार से इस 'बिक्री-कर' [को] हटाया नहीं जा सका, लेकिन शिक्षा-मन्त्रणालय की [ओर से] इसके प्रयत्न जारी हैं।

मान्य शिक्षा-मन्त्री का ध्यान टेण्डर द्वारा पुस्त[कों की] खरीद के कुपरिणामों की ओर भी खींचा गया। टे[ण्डर] व्यवस्था में पुस्तक-विक्रेताओं में अधिकाधिक छूट दे[ने की] परस्पर होड़ के फलस्वरूप अच्छी, कम कमीशन की [पुस्तकें] नहीं खरीदी जा सकतीं। उत्कृष्ट, मौलिक साहित्य का [प्रका]शन करने वाली सभी संस्थाएँ एक बँधा हुआ कमी[शन] पुस्तक-विक्रेताओं को दे सकती हैं; बिक्री के प्रलोभन [पर] कमीशन को बढ़ाने में असमर्थ होती हैं। मान्य शि[क्षा-मन्त्री] पुस्तक व्यवसाय में इस प्रश्न से सम्बन्धित कुरीतियों [से] प्रकार परिचित थे। बिहार में शिक्षा-विभाग बड़े प[ैमाने] में पुस्तकों का क्रय करता है। मान्य मन्त्री ने शिष्ट-[मण्डल] से कहा कि वे अपनी ओर से इस सरकारी खरीद के [सम्बन्ध] में नियमादि के सुझाव लिख भेजें। शिष्ट मण्डल ने [अखिल] **भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** की ओर से शीघ्र ही [अपने] सुझाव एक मेमोरैंडम के रूप में भेजने का वायदा [किया]। उन्हें बताया गया कि जिन कुरीतियों का उन्होंने वर्णन [किया] है, उनका स्वस्थ पुस्तक-व्यवसाय से कोई ताल्लुक न[हीं], वे 'क्रिमिनल' कार्यवाहियाँ हैं जिनका प्रतिकार का[नूनी] संरक्षकों द्वारा होना ही सम्भव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

'झूठा प्रचार'

कलकत्ता के कुछ प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं की ओर से कुछ समय से यह नितान्त झूठा और अनर्गल प्रचार किया जा रहा है कि राजकमल प्रकाशन कलकत्ता के पुस्तकालयों को, विशेषतया नैशनल लाइब्रेरी तथा कुमार सभा पुस्तकालय को, प्रकाशकीय कमीशन पर पुस्तकें बेचता है तथा इस प्रकार स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं को हानि पहुँचाता है। पुस्तक-विक्रेताओं के हितों का ध्यान रखते हुए प्रकाशक कभी भी व्यापाराना कमीशन पर पुस्तकालयों को पुस्तकें न बेचें, इसके पक्ष में **राजकमल प्रकाशन** ने सदा ही आवाज उठाई है। हम इस प्रकार के असत्य का प्रतिवाद करके इसे महत्व देना उचित नहीं समझते थे, इसीलिए चुप रहे लेकिन इधर कलकत्ता के एक स्थानीय पुस्तक-विक्रेता संघ ने हमारी संस्था को क्षति पहुँचाने वालों और विरुद्ध झूठी बातों को फैलाने में कटिबद्ध लोगों के कहने पर इस निराधार आरोप की जाँच-पड़ताल किए बिना एक अनुत्तरदायित्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किया है। हमें मालूम हुआ है कि जिस बैठक में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, उसके अध्यक्ष श्री धन्यकुमार जैन के अनुरोध पर ही हमारे नाम का उल्लेख उस प्रस्ताव में से काट दिया गया था, यद्यपि बैठक में हमारा नाम देकर ही प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। हमने इस संस्था से सम्बन्धित तीन महानुभावों को ३० मार्च ५५ को लिखा कि हम पुस्तक-विक्रेताओं के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं को कभी प्रकाशकीय कमीशन नहीं देते; फिर भी यदि कलकत्ता की किसी फर्म का कहना है कि हमने प्रकाशकीय कमीशन दिया हो तो आप हमें पूर्ण वृत्तान्त से सूचित करें क्योंकि "आपकी सहायता से सचाई तक पहुँचने के लिए" हम उत्सुक हैं। उस प्रस्ताव को स्वीकार करने वाली संस्था के एक अधिकारी श्री जोखनमिश्र से हमने प्रार्थना की थी इस अभियोग के पक्ष में जो सबूत वे पा सकें, हमें भेजें। अब तक श्री जोखन मिश्र ने हमें आवश्यक सूचनाएँ देते हुए कोई पत्र नहीं लिखा। जिन महानुभावों को पत्र लिखे गए थे, उनमें से केवल एक से ही उत्तर प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था, "मुझे ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिससे इस अफ़वाह की (कि हमने पुस्तकालयों को व्यापाराना कमीशन दिया है) सच्चाई प्रमाणित हो सके। इस समय किसी का कुछ ठीक नहीं है। जिसके जो मन में आता है, बकता है।" हमें निश्चय है कि यदि अन्य किसी को भी इस आरोप की पुष्टि में कोई प्रमाण मिला होता तो वे अवश्य हमें लिखते।

"भारत-सरकार की नैश्नल लाइब्रेरी की ओर से हमें ६ दिसम्बर १९५४ को पत्रांक ११२७४ मिला था जिसमें अन्य बातों के साथ यह पूछा गया था कि हम उन्हें क्या कमीशन दे सकेंगे? अपने १७ दिसम्बर १९५४ के पत्रांक एस-९ द्वारा हमने उन्हें उत्तर दिया: "हमारे अपने प्रकाशन कलकत्ता में हैरिसन रोड पर स्थित किसी भी अच्छे पुस्तक-विक्रेता से मिल सकते हैं। यदि कभी आप हमसे पुस्तकें मंगाना चाहें तो सामान्य पुस्तकों पर १० प्रतिशत तथा पाठ्यक्रम की और अन्य साहित्यिक पुस्तकों पर सवा छः प्रतिशत कमीशन ही दे सकते हैं। भेजने आदि का खर्च आपको देना होगा।" यह पत्र लाइब्रेरी की फाईल में होगा और उप-पुस्तकाध्यक्ष के पास देखा जा सकता है।

"सब समझदार प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेताओं को झूठा प्रचार करने वालों के ऐसे हथकण्डों के प्रति सजग हो जाना चाहिए जो आज सत्साहित्य के प्रकाशकों के विरुद्ध इस्तेमाल किए जा रहे हैं।"

व्यवस्थापक
बिक्री-विभाग,
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली।

'शिक्षा पर टैक्स'

"कासगंज (उत्तर प्रदेश) की नगर-पालिका ने पुस्तकों, कागज आदि पर चुंगी १ आना प्रति मन से बढ़ाकर १)

[शेष पृष्ठ ४८३ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका-से समृद्ध देश के

पुस्तक-बिक्री के व्यवसाय पर एक दृष्टि

बोस्टन (अमेरिका) में १७ और १८ फरवरी, १९५५ को "अमेरि... बुकसेलर्स एसोसिएशन" का सम्मेलन हुआ था। वहाँ दिये गए भा... और पठित निबन्धों के आधार पर यह लेख प्रस्तुत किया गया

अमेरिका के पुस्तक-विक्रेताओं की संस्था (ए० बी० ए०) के कार्यवाहक मन्त्री श्री जोसेफ़ ए० डफी के अनुसार पुस्तकों की बिक्री भी एक कला है और इस कला को लाभप्रद बनाने के प्रयास होने चाहिएँ। पुस्तक-विक्रय का व्यवसाय मरणासन्न नहीं है, वरन् परिवर्तन की ओर उन्मुख और इसका अपेक्षी है। आज इससे लाभ पाने के लिए इसमें पूँजी लगाने के नये तरीके, बेहतर शिक्षा-दीक्षा, साथ किये जा सकने वाले गौण व्यवसायों को अपनाना आवश्यक हो गया है। पुस्तकों की बिक्री का मनोहारी अनुभव जीवित रह सकता है, लेकिन नई परिस्थितियों में ही।

पुराने ढर्रे पर काम करने वाले पुस्तक-विक्रेता नुक्सान में चल रहे हैं। प्रकाशकों के पर्यटक-प्रतिनिधि पुरानी किस्म की दुकानों पर वर्ष में एक बार भी जाना पसन्द नहीं करते क्योंकि उनसे आर्डर मिलने की आशा कम ही रहती है। अमेरिका के लगभग ११०० पुस्तक-विक्रेताओं में से, जो ए० बी० ए० के सदस्य हैं, ३५०–४०० के पास ही प्रकाशकों के प्रतिनिधि पहुँचना उचित समझते हैं।

बिक्री को बढ़ाने के लिए अमेरिका के पुस्तक-विक्रेताओं की संस्था कई प्रकार के प्रकाशन और आयोजन करती रहती है। इसकी ओर से 'बुक बायर्स हैण्डबुक' और 'बेसिक बुकलिस्ट' नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। सब प्रकार की सम्बन्धित सूचनाएँ इसके कार्यालय से प्राप्त हो सकती हैं; पुस्तकों की अधिकाधिक खपत के लिए प्रचार, विज्ञापन आदि यही संस्था करती है। प्रदर्शिनियाँ जुटाती है, प्रतियोगिताओं का प्रबन्ध करती है। कानूनी सलाह और मदद भी देती है।

ए० बी० ए० की सदस्यता में बड़ी संख्या छोटे दुकानदारों की है, और प्रायः उन्हीं की समस्याएँ और हि... का प्रश्न संस्था के सामने प्रमुख रहता है।

व्यापाराना कमीशन का प्रश्न पुस्तक-विक्रेताओं ... प्रकाशकों की संस्था मिलजुल कर सुलझाती हैं। १९... पुस्तक-विक्रेताओं के ज़ोर देने पर प्रकाशकों ने ४०%... शन देना स्वीकार कर लिया था। १९३० में पुस्तक... ताओं ने मांग की कि अनबिकी पुस्तकों को प्रकाशक... लौटा लेने की कोई व्यवस्था होनी चाहिए, जिसे ... ढंग पर प्रकाशकों ने चालू कर दिया।

प्रकाशकों को पुस्तक-विक्रेताओं की बड़ी संख्या से ... रखना पड़ता है। 'हॉटन' नाम के प्रकाशक का ... पुस्तक-विक्रेताओं से हिसाब है लेकिन 'हॉटन' के ... इनमें से केवल ८०० को ही व्यक्तिगत रूप से मि... प्रतिनिधि स्वयं भी अपने प्रकाशकों की सब पुस्तकों ... चित नहीं हो पाते।

१९५३ में अमेरिका के प्रकाशकों की समिति के ... नाओं के अनुसार सामान्य पुस्तकों के प्रकाशकों ने ... बिकी हुई पुस्तक पर ६ सेंट (लगभग ५ आने) ... उठाया, लेकिन दूसरे प्रकाशनों पर तथा अन्य ... से लाभ उठाकर इस हानि को पूरा किया।

पुस्तकों के प्रकाशन से पूर्व जो सुविधाएँ दी ... उनसे प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं—दोनों ... रहा। छपने से पूर्व जिस कम मूल्य में पुस्तकें बेची ... लेखक उसी के हिसाब से रायल्टी स्वीकार करके ... की इस प्रेरणा में सहयोग देते हैं। विक्रेताओं और ... शकों में बिकी बढ़ाने के लिए अत्यधिक सहयोग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो प्रकाशक प्रकाशित होने से पहले मिले आर्डरों पर ...सी प्रकाशन की दस प्रतियों के साथ एक प्रति बिना मूल्य ...ए देते हैं, उससे अधिकतर बड़े पुस्तक-विक्रेता ही लाभ ...ठाते हैं। अनबिकी पुस्तकों को लौटा लेने की प्रथा के ...नुसार प्रतिष्ठित पुस्तक-विक्रेताओं से बिकी हुई पुस्तकों का ...लगभग ५% अंश ही वापिस मिलता है।

१९५३ में लगभग एक करोड़ रुपयों की पुस्तकें बेचने ...ले प्रकाशकों को ४% का मुनाफा हुआ।

बोस्टन में, जहाँ पुस्तकों की दुकानों की संख्या ४८ है, ...ल बेचनेवालों की ४३६ है। ४३६ फूल बेचने वालों में ...६३ थोक व्यापारी हैं। पुस्तकों के थोक व्यापारियों का ...भाव बिक्री में बाधा डाले हुए है। देश भर में स्थान-स्थान ...थोक पुस्तक-विक्रेताओं की आवश्यकता का एहसास बढ़ ...हा है। पुस्तक-विक्रेताओं के विचार में ५०० वर्गमील ...प्रत्येक क्षेत्र में थोक विक्रेताओं का होना आवश्यक है।

प्रकाशन के क्षेत्र में वितरण की सुव्यवस्था को अधिका-...क महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

प्रायः किसी भी प्रकाशक के यहाँ निजी छपाई, जिल्द-...न्दी नहीं होती; न अपने गोदाम ही हैं। बाजार में अन्य ...व्यवसायियों से इन सुविधाओं का प्रबन्ध किया जाता है। ...जो थोक-विक्रेता हैं, उनके विषय में कहा जाता है कि ...) थोक बिक्री की व्यवस्था के लिए उन्हें जो अतिरिक्त ...मीशन व सुविधाएँ मिलती हैं, वे 'न' के बराबर हैं। (२) ...नकी प्रतियोगिता अन्य थोक विक्रेताओं से नहीं होती बल्कि ...न प्रकाशकों से जिनकी पुस्तकें वे बेचते हैं। (३) उनके ...लिए बिक्री के कोई क्षेत्र सुरक्षित नहीं रहते जिन्हें वह अपना ...न कह सकें। (४) बड़े-बड़े पुस्तक-विक्रेता विशेष आवश्य-...ता पड़ने पर ही उनसे सहायता लेते हैं जबकि छोटे पुस्तक-...विक्रेता अपनी कुल समस्याएँ उन्हीं पर टाल देते हैं। (५) ...स कोशिश में कि वे सब प्रकाशकों की सब पुस्तकें अपने ...यहाँ रखें, वे किसी भी प्रकाशक की सब पुस्तकें नहीं रख ...ते।

अब सोचा जा रहा है कि प्रकाशकों द्वारा सहकारी ...सिद्धान्त पर थोक वितरण के केन्द्रों की स्थापना की जाय—...कहीं-कहीं आज के थोक-विक्रेताओं की मदद भी ली जा ...सकती है—और विभिन्न देशों में बिक्री की व्यवस्था यही केन्द्र करें। ये केन्द्र कुछ निश्चित प्रकाशकों की पुस्तकें ही रखें, अन्य की नहीं। दूसरे प्रकाशकों के लिए अन्य केन्द्र बनें।

कम दाम की कागज की जिल्द वाली पुस्तकों के वितरण की व्यवस्था इसी ढंग पर हुई है, और वितरण के कारण ही इन पुस्तकों को सफलता मिली है। थोक बिक्री करने वाले इन केन्द्रों से प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं को इस प्रकार लाभ पहुँचेगा : पुस्तक-विक्रेता को : अपनी आवश्य-कता की हर किसी पुस्तक को वह समीपस्थ स्थान से मँगवा सकेगा। सभी प्रकाशकों की पुस्तकें किसी नजदीकी थोक-वितरक से कम खर्च करके मिल जाया करेंगी। जिन पुस्तकों को मँगवाने में अभी हफ्तों लगते हैं, वे दिनों में मिल जाया करेंगी। आज जो प्रकाशकों की बड़ी संख्या से लम्बा-चौड़ा हिसाब-किताब रखना पड़ता है, वह बहुत कम हो जायगा। प्रकाशकों को : गोदाम आदि का और विभिन्न दुकानदारों को भेजने के लिए पार्सल आदि बाँधने का समय व खर्च बचेगा। जिल्दसाज से उनकी पुस्तकें वितरण के थोक-केन्द्रों को चली जाया करेंगी। बड़ी संख्या में विभिन्न पुस्तक-विक्रेताओं से सम्बन्ध बनाए रखने में हिसाब-किताब के जो खर्च होते हैं, उनमें भारी कमी होगी। इन केन्द्रों के क्षेत्रों में व्यक्तिगत प्रतिनिधि भेजने के खर्च भी बचेंगे।

ऐसी व्यवस्था की शुरूआत के लिए दस बड़े प्रकाशकों के मिलने की जरूरत है। परिणाम में या तो अन्य प्रकाशक ऐसी व्यवस्था में सहयोग देने पर मजबूर हो जायँगे, अथवा इन्हीं दस प्रकाशकों का सहकारी प्रयास देश के सामान्य पुस्तकों के व्यवसाय को अपने हाथों में खींच लेगा।

•

[पृष्ठ ४८१ का शेष]

मन कर दी है। अधिकांश नगरों में पुस्तकों पर कोई चुंगी नहीं ली जाती। नगरपालिका के लिए उचित है कि इस चुंगी को तुरन्त ही वापिस लें। नगर के प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता इसे कम कराने में प्रयत्नशील हैं।"

मैनेजर,
इण्डियन पब्लिशिंग हाउस,
कासगंज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री विद्यापति 'विद्यार्थी', लाल कोठी, दानापुर कैंट (पटना) लिखते हैं उनके पास आधुनिक लेखन कला नामक पुस्तक प्रकाशनार्थ तैयार है। पुस्तक में चार प्रकरण हैं: प्रथम में कला की महत्ता, दूसरे में निबन्ध, काव्य, कहानी, नाटक, एकांकी, विज्ञापन, समालोचना आदि की लेखन-कलाएँ, तीसरे में नवोदित लेखकों की कठिनाइयों के हल तथा चौथे प्रकरण में हिन्दी-व्याकरण पर विहंगम दृष्टिपात किया गया है। जो प्रकाशक इसे प्रकाशित करना चाहें, वे लेखक से सम्पर्क स्थापित करें।

✧ ✧ ✧

श्री गौरीशंकर गुप्त (प्रधान मन्त्री, राष्ट्र कवि परिषद्, गायघाट, बनारस) के पास निम्नलिखित पांडुलिपियाँ प्रकाशनार्थ प्रस्तुत हैं: (१) बापू की दिनचर्या, (२) हिन्दी पत्र-की बृहत्त्रयी, जिसमें पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, स्वर्गीय पं० बाबूराव पराड़कर तथा पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे के संस्मरण तथा जीवन-वृत्त हैं, ३) काक और भड्डुरी, ४) नींबू, ५) भारतीय ऋतुचर्या, ६) प्राणी और निद्रा, तथा ७) प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी निबन्धों का संग्रह है। जो प्रकाशक शीघ्र तथा सुन्दर ढंग से प्रकाशित कर सकें, वे पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

✧ ✧ ✧

नूर नबी अब्बासी, शरीफ़ मंजिल, बल्लीमारान, दिल्ली ६ के पास मोपासाँ के विश्वविख्यात उपन्यास उनवी का हिन्दी-अनुवाद दुखियारी के नाम से तैयार है। पृष्ठसंख्या लगभग २५०। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

✧ ✧ ✧

श्री भवानीलाल भारतीय (मार्फ़त आर्यसमाज, सरदार पुरा, जोधपुर) सूचित करते हैं कि उनके पास नूतन दृष्टिकोण से लिखित तथा ऐतिहासिक विवेचन से पूर्ण कृष्णचरित्र नामक जीवनी प्रकाशनार्थ तैयार है।

✧ ✧ ✧

श्री प्रद्युम्न जैन 'वैरागी', सोथियाना (उ० प्र०) के पास निम्नलिखित पांडु... प्रकाशनार्थ तैयार हैं; प्रकाशक पत्र व्यवहार... १) पद्मनी, प्रबन्ध काव्य, २) मीना बाज़ार, खण्ड... ३) कान्तिदेव, महाकाव्य, ४) प्रतिध्वनि, गीत सं... प्रत्यावर्तन, सामाजिक उपन्यास, ६) निर्धूम अग्नि, ... संग्रह, तथा ७) बुरी बातें, संस्मरण।

✧ ✧ ✧

बिन्दकी (फ़तेहपुर) से श्री बद्रीप्रसाद गुप्त 'आर्य'... करते हैं कि उनके पास मधूलिका नामक पुस्तक की ... तैयार है। इसमें ५० गीत संकलित हैं जिनमें से अ... प्रमुख-पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं।

✧ ✧ ✧

डॉ० के० पी० वर्मा, होमियोपैथ, अस्सी, ब... लिखते हैं: "अनेक वर्षों से मैं क्षय रोग का अध्य... रहा था, जिसके फलस्वरूप मृत्यु से जीवन नामक ... पृष्ठों का एक निबन्ध प्रस्तुत हुआ है। इसमें क्षय... विषद विवेचन-युक्त वर्णन है।....मैंने अपने वर्षों के ... और अध्ययन तथा अन्य-अन्य चिकित्सा पद्धतियों से ... होमियो चिकित्सा-पद्धति का विधान किया है।....इस... के लिए मैं एक सुयोग्य प्रकाशक चाहता हूँ। कृ... सूचना को प्रकाशित करें।"

✧ ✧ ✧

श्री अविनाश पुजारी, दुर्ग्याना, अमृतसर, लिख... उनके पास १) इष्टदेव, रोमांसपूर्ण उपन्यास २), ... रोमांसपूर्ण उपन्यास और ३) मैं जीवित रहना चाह... बारह अप्रकाशित कहानियों के संग्रह की पांडुलिपियाँ ... नार्थ तैयार हैं। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें लेकिन इ... आवश्यक है कि वे रचनाओं का पर्याप्त पारिश्रमिक दे...

✧ ✧ ✧

श्री रामजी यज्ञसेनी वैश्य (मुसाहेबगंज, लखनऊ) के पास दो पांडुलिपियाँ—हिन्दी काव्य-... जिसमें हिन्दी के ३० कवियों का आलोचनात्मक परि... तथा प्यार और प्यास, उपन्यास, तैयार हैं। प्रकाश... व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

साहित्य साधना की पृष्ठभूमि

लेखक : श्री बुद्धिनाथ झा 'कैरव'

आलोचना साहित्य में अनुपम देन : मूल्य ६) मात्र

"पुस्तक में छः अध्याय हैं—साहित्य तत्त्व-विमर्श, काव्य-तत्त्व-विमर्श, अलंकार तत्त्व विमर्श, रस-तत्त्व-...र्श, दृश्य-काव्य-तत्त्व-विमर्श, कथा-साहित्य-विमर्श। इस गम्भीर ग्रन्थ-प्रणयन के लिए 'कैरव' जी धन्यवाद के पात्र ... यह पुस्तक निस्संदेह विश्व-विद्यालय में अध्ययन के लिए रखी जा सकती है, क्योंकि इसमें मूल-ग्राही सिद्धान्त-...नन है।"

—कल्पना, हैदराबाद।

आधुनिक-काव्य

...दय : श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' १।)
...क : श्री रामदयाल पाण्डेय १॥)
... : श्री यमुनाप्रसाद चौधरी 'नीरज' १।)
...और पत्थर : प्रो० कपिल १)

नाटक

...वृत्ति : श्री हंसकुमार तिवारी १॥।)
... : श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी' २)
...त : श्री अनूप १।)
...करण : श्री रामदीन पाण्डेय १)

समालोचना

...बातें : प्रो० कपिल १)
...ा कानन : श्री रामखेलावन पाण्डेय १॥)

ग्रामोपयोगी साहित्य

...सब्जी की खेती : पं० वासुदेव पाण्डेय २)
...ों का अनुभूत इलाज : श्रीरंग तिवारी १॥)
...पौधों का संसार : रामनन्दन सिंह २।)
... और भूमि : ॥≡)

उपन्यास

...वा आदमी : पं० छविनाथ पाण्डेय ३)
...ताल में : ,, ,, ३)
...कार : ,, ,, ३)
...ती दुनिया : श्री सुरेश्वर पाठक २॥।)
...कासिम : श्री मदनलाल खेमका २।)

कहानियाँ

मृत्यु के मुँह में : श्री छविनाथ पाण्डेय १।=)
बोलती तस्वीरें : श्री शिवचन्द्र प्रतापनारायण १।)

राजनीति

हम और हमारा समाज : श्री सुरेश्वर पाठक २।)
भूला हुआ भारत : पं० जवाहरलाल नेहरू १)

गांधी-साहित्य

राष्ट्रपिता : श्री छविनाथ पाण्डेय ॥≡)
गांधी की गूँजती आवाज : अखिल।≡)
बापू की सीख : श्री सुरेश्वर पाठक।≡)
बापू की बातें : ,, ,, ॥=)
बापू को जानो : ,, ,, ॥≡)

कथा-कहानी

मराठी गाथाएँ : क्षीर सागर ॥)
मलयालम कहानियाँ : कृष्ण गोपालन ॥)
विदेशी गाथाएँ : सदानन्द झा ॥)
सुनहले पंख : ,,
हमारे युग-पुरुष : श्री सुरेश्वर पाठक १)
आदि मानव : ,, ॥।)

सामान्य ज्ञानवर्द्धक

समुद्र आत्मकथा : श्री नरेन्द्र बी० ए० ॥)
गुलिस्ताँ : अखिल ॥)
तुलसी दल : श्री सुरेश्वर पाठक ॥=)
हमारी गंगा ,, ,, ॥=)

ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऑफ़सेट-लिथो की छपाई

"यूनेस्को" द्वारा प्रचारित एक लेख के आधार पर ऑफ़सेट की छपाई के मौलिक सिद्धान्तों की चर्चा इस लेख में श्री गोपीनाथ सेठ ने की है।

अच्छी किस्म की छपाई के लिए लिथोग्राफी का तरीका सुप्रचलित है। बड़े पैमाने पर ऊँचे दर्जे के काम के लिए व्यवसायी-मुद्रक इसका व्यापक प्रयोग करते हैं।

लिथोग्राफी इस सुप्रसिद्ध सिद्धान्त पर आधारित है कि ग्रीज (चिकनाहट) और पानी का मिश्रण नहीं होता। इसलिए एक ऐसा आधार (master) काम में लाया जाता है जिसपर पानी और अन्य रसायन टिक सकें। इस पर ऐसी चिकनी लिखावट की जाती है जो छपाई के समय चिकनी स्याही को जज़्ब कर सके। आरम्भ में एक खास तरह का छेदों वाला पत्थर आधार के रूप में काम में लाया जाता था। इस तरीके से बहुत अच्छे नतीजे हासिल होते थे लेकिन देर बहुत लगती थी।

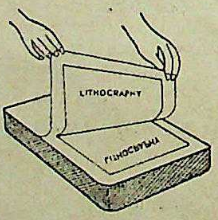

पत्थर की सहायता से लिथोग्राफिक छपाई।

आजकल आमतौर पर दो तरह से लिथो की छपाई होती है—एक वह तरीका जिसमें आधार से ही नकल उतार ली जाती है, और दूसरा वह तरीका जिसमें आधार पर से एक ऐसे रोलर (roller) पर लिखावट उतारी जाती है जो कि सख्त रबर का बना होता है। इस रोलर से प्रतियाँ निकाली जाती हैं, और इसलिए इसे 'ऑफसेट' कहा जाता

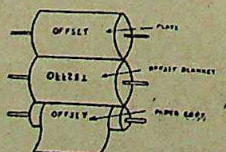

ऑफ़सेट छपाई का सिद्धान्त।

है क्योंकि आधार पर की लिखावट पहले रोलर पर उतरती (offset होती) है और फिर सीधी प्रति... आती है।

सीधी नकल वाली लिथो की छपाई की अपेक्षा ... के तरीके में कई लाभ हैं। इसका खास फायदा ... लिखावट आधार पर सीधी लिखी जा सकती है। ... के तरीके में काफी सस्ता कागज भी काम में लाया ... है। लिथोग्राफी के साधारण तरीके में, जिसमें ... तरीका भी शामिल है, एक बड़ी असुविधा ... लिखावट उल्टी लिखी जानी चाहिए ताकि ... हो सके। खासतौर पर अगर टाइपराइटर काम में ... तो यह बहुत बड़ी असुविधा है।

कई वर्षों से जस्ते या एलुमिनियम के पत्तर पर काम में लाए जा रहे हैं। हाल में कागज़ और ... के पत्तर भी मिलने लगे हैं और इनकी अलग-अ... हैं, जिनमें सस्ता वाला पत्तर बहुत थोड़े समय ... लिए होता है। अच्छी किस्म के कागज के प... हज़ार प्रतियाँ छापी जा सकती हैं। इसलिए कागज़ के सही पत्तर के इस्तेमाल से यह तरीका सब तरह ... के लिए उपयुक्त है। धातु के पत्तरों पर खास त... चढ़ाकर ज़रूरत पड़ने पर हज़ारों प्रतियाँ नि... सकती हैं।

धातु और गैर-धातु के पत्तरों को दुबारा का... के लिए सुरक्षित रखा जा सकता है। कागज़ के ... की ज़िन्दगी बहुत-कुछ इस्तेमाल के तरीके पर नि... है। बहुत ज्यादा नमी जज्ब करने वाली मशीन ... कमज़ोर पड़ सकता है और ज़िन्दगी बहुत-काफी ... सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीनें

ऑफसेट के तरीके में काम में लाई जाने वाली सभी मशीनें रोटरी की होती हैं और बिजली से चलती हैं। हाथ से चलने वाली भी कई मशीनें होती हैं लेकिन ज्यादातर तेज रफ्तार से चलने वाली बिजली की ही मशीनें काम में लाई जाती हैं।

छोटी मशीनों पर आमतौर से ज्यादा-से-ज्यादा १४" × २०" के आकार की छपाई हो सकती है, हालाँकि कई देशों में बड़े आकार के लिए भी मशीनें इस्तेमाल हो रही हैं। अधिकांश देशों में पुरानी तरह की ही ऑफसेट मशीनें मिलती हैं। ये बड़ी मशीनें होती हैं जो कि बेलन की तरह लिपटे हुए बड़े कागज पर या कटे हुए कागज पर छपाई कर सकती हैं, और अक्सर दो या ज्यादा रंगों में। ऐसी मशीनें दरअसल एक ही मशीन में कई मशीनें होती हैं और छपाई क्रम से की जाती है—कागज पर एक रंग के बाद दूसरा रंग छपता है।

लिखावट के तरीके

ऑफसेट की लिखावट तैयार करने के कई तरीके हैं—टाइप किया जा सकता है या एक चिकनी पेंसिल या कलम की मदद से लिखा जा सकता है।

धातु के पत्तर पर एक खास तरह का चिकना फीता काम में लाकर टाइपराइटर से टाइप किया जा सकता है। चिकनी स्याही को मिटा कर लिपि में शुद्धियाँ की जा सकती हैं। कागज के पत्तर पर कार्बन पेपर वाले फीते (ribbon) की मदद से टाइप किया जा सकता है और एक विशेष तरल पदार्थ से, जरूरत पड़ने पर, लिपि को मिटाया जा सकता है। पत्तर पर लिखने के लिए एक खास तरह की चिकनी पेंसिल या कलम काम में लाई जाती है, और लिपि मिटाने के लिए ऊपर बताया गया तरीका ही काम में आता है।

पत्तर पर एक खास तरह के तरल पदार्थ की तह चढ़ाई जा सकती है जिसके सूखने पर पत्तर पर लिखावट उतर आती है। इस तरह की तह चढ़ाते समय पत्तर लगातार घूमता रहता है जिसके कारण उसपर तरल पदार्थ की तह एक समान बिछ जाती है जो कि पत्तर के घूमने के दौरान में गर्म हवा से सूखती है। यह काम एक आम कमरे की साधारण रोशनी में किया जा सकता है क्योंकि तरल पदार्थ पर रोशनी

हिन्दी के हमारे अनमोल ग्रन्थरत्न

(१) निबन्ध भारती—लेखक सिंहासनराय सिद्धेश, मूल्य ३), सजिल्द ३॥), पृष्ठ ४०८। निबन्ध की सर्वोत्तम पुस्तक।

(२) कन्या का तपोवन—(नाटक) ले० पं० रामनरेश त्रिपाठी, मूल्य २॥), सजिल्द।

(३) आधुनिक कहानियाँ—(कहानी) ले० जयशंकर त्रिपाठी, मूल्य १।), सजिल्द।

(४) महात्माओं की कथाएँ—(जीवनी) ले० प० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ११६, मूल्य १), सजिल्द।

(५) उपदेश की कथाएँ—ले० पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ८४, मूल्य ।।।), सजिल्द।

(६) सदाचार की कहानियाँ—पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ १०८, मूल्य १।)।

(७) देशभक्त और साहित्यकार—ले० श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ८०, मूल्य ।।।=)।

(८) जागरण के गान—संग्रहकर्ता श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ४०, मूल्य ।=)।

(९) हमारी शिक्षा-व्यवस्था—ले० श्री अनाथ नाथ बसु एम० ए०, पृष्ठ १०६, मूल्य १)।

(१०) गुलिवर की यात्रा—ले० 'सिद्धेश', पृष्ठ ६५, मूल्य १)।

(११) वीर बालक—(जीवनी) प्रोफेसर 'कमलेश', पृ० ६६, मूल्य ।।।=)।

(१२) नागरिकता तथा भारतीय शासन—ले० शिवनाथ शर्मा एम० ए०, पृष्ठ ३३०, मूल्य २॥)।

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बहुत ज्यादा असर नहीं पड़ता। पत्तर और आधार (master) एक सांचे में दबे रहते हैं और उन पर बहुत तेज रोशनी डाली जाती है। इसके बाद पत्तर पर चिकनी स्याही लगाई जाती है, और फिर उसे पानी से हल्के-हल्के धो लिया जाता है।

अगर तरल पदार्थ पर पूरी रोशनी पड़ती है तो वह सूख कर सख्त हो जाता है, लेकिन अगर रोशनी नहीं पड़ती तो वह मुलायम बना रहता है, और सख्त लिखावट तथा चिकनाहट जज़्ब करने वाली चिपकी हुई स्याही को छोड़कर बाकी सब तरल पदार्थ मिटा दिया जाता है। इसे जब मशीन पर चढ़ाया जाता है तो वह चिकनी स्याही को खींच लेता है और वह नकल उतर आती है जो कि बाद में प्रतिलिपि बनती है।

कागज के ऐसे पत्तर भी मिलते हैं जो रोशनी डालकर पहले से ही तैयार किए जा चुके होते हैं। फोटोग्राफिक पत्तर

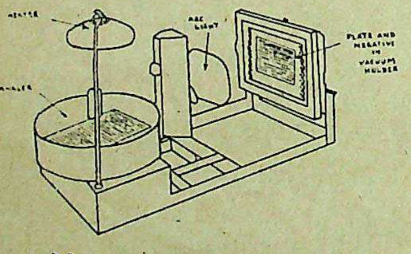

फोटोग्राफिक पत्तर बनाने का तरीका।

का कभी कभी-कभी इस्तेमाल किए जाने वाले काम में इस तरह के पत्तर उपयोगी सिद्ध होते हैं। फोटोग्राफिक तरीका ऑफसेट मशीनों के काम का दायरा बढ़ा देता है।

फोटोग्राफिक तरीके से तैयार किए हुए धातु के पत्तरों को साफ करने के लिए उन्हें रसायनिक जल में डाल दिया जाता है, और फिर दुबारा काम में लाया जा सकता है। यह तरीका पत्तरों के अभाव के समय उपयोगी होता है और उससे बहुत काफी बचत भी होती है।

यदि स्याही की छपाई वाली मशीनों पर फोटोग्राफ छापने हों तो हाफ-टोन स्क्रीन (balf-tone screen) काम में लाना जरूरी है। फोटोग्राफिक तरीकेसे निगेटिव (negative) से छापी हुई फोटोग्राफ 'टोन' की छपाई कहलाती है, जब कि स्क्रीन की मदद से छापी हुई फोटोग्राफ़ी हाफ-टोन की छपाई कहलाती है। स्क्रीन पर विभिन्न आकार के बिन्दुओं से तसवीर उतारी जाती है। ऑफसेट तरीके में आमतौर १२० या १३३ कहलाने वाले स्क्रीन काम में लाए जाते हैं।

संक्षिप्त सार

ऑफसेट तरीका आम तौर पर अधिक उत्पादन वाली ऑफसेट मशीनों तक ही सीमित है।

इसमें धातु, प्लास्टिक या कागज के आधार काम में लाए जाते हैं। आधार भी किस्म के अनुसार इस तरीके से, के साथ, ज्यादा या कम वक्त तक काम लाया जा सकता है। जरूरत पड़ने पर पत्तर पर एक खास तरह की तह चढ़ा बहुत लम्बे समय तक इससे काम लिया जा सकता है।

ऑफसेट पर अच्छी छपाई होती है, टिकाऊ होती और कई रंगों में हो सकती है।

यह विधि सारे संसार में व्यापक रूप से प्रचलित है।

•

हिन्दी के ये गौरवमय ग्रंथ

जिन्हें आप अवश्य पढ़िये

जब राजपूत अपनी बेटियों को मार दिया करते थे

सामंती-काल की एक सच्ची कहानी

दीया जला ! दीया बुझा !!

ले० भारतेन्दुनाथ शर्मा 'चन्द्र', मूल्य ३॥)

प्यार और वासना की चिरन्तन समस्या

संन्यासी और सुन्दरी

ले० यादवेन्द्रनाथ शर्मा 'चन्द्र', मूल्य ३॥)

दाम्पत्य जीवन के महकते सुमन

अँखियाँ निहार के ! पगधूरि झार के !!

ले० बरुआ, मूल्य ४)

•

हिन्दी में सर्वप्रथम अपने ढँग की प्रथम कृति

एण्टन चेखव : एक इण्टरव्यू

ले० राजेन्द्र यादव, मूल्य १॥)

रामपुरिया प्रकाशन

३, उडबर्न रोड, कलकत्ता-२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों के भविष्य पर दृष्टिपात

व्यावसायिक प्रकाशन और साहित्य सृजन

जेम्स टी० फैरेल

'न्यू डाइरेक्शन्स' के नवें अंक में प्रकाशित निबन्ध का यह संक्षिप्त रूप श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

'टाइड' पत्रिका के १५ अगस्त, १९४५ के अंक में 'पुस्तक-प्रकाशन' पर एक लेख छपा है, जिसमें कहा गया है: "पुस्तक-प्रकाशकों को निकट भविष्य में अधिकाधिक कागज मिलने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए बड़े प्रकाशक अपने-आपको अपने इतिहास के सबसे बड़े व्यवसाय-विस्तार और कदाचित् सबसे तीव्र प्रतिद्वन्द्विता के लिए तैयार कर रहे हैं।" यह लेख उन चार पुनमुंद्रण संस्थाओं (reprint companies) के सम्बन्धों का विवरण देता है जो अब पुस्तक व्यवसाय में प्रधान संगटन बन रहे हैं, और इसके अतिरिक्त उनकी युद्धोत्तरकालीन योजनाओं का भी कुछ उल्लेख करता है जो अभी पूर्णतः कार्यान्वित नहीं की जा सकी हैं। लेख के अनुसार प्रधान प्रकाशक "इस बात पर सहमत हैं कि यह परिवर्तनशील उद्योग एक नवीन रूप धारण करेगा।" बहुतों ने जनता के बीच और निजी वार्तालाप, दोनों में ही यही बात कही है कि प्रकाशक, लेखक, सम्पादक, पत्रकार तथा अन्य सभी यह जानने को उत्सुक हैं कि पुस्तक-व्यवसाय में अब क्या होगा। विरोधी धारणाएँ व्यक्त की जा रही हैं, कुछ निराशावादी और कुछ आशावादी। कुल मिला-जुलाकर साहित्यिक एवं प्रकाशक वर्गों में इन पिछले घटना-क्रमों को लेकर बहुत अधिक उत्सुकता, आशंका एवं अनिश्चितता है।

बहुत से गम्भीर विचारकों ने बार-बार अमेरिकन संस्कृति में साहित्य और व्यवसाय के पारस्परिक अन्तर की चर्चा की है। बहुत से लेखकों के लिए प्रश्न सफलता एवं आन्तरिक संघटन (integrity) के विरोध के रूप में आता है। अब पुस्तक व्यवसाय के परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए निराशावादी भविष्यद्रष्टाओं तथा क्षुब्ध लेखकों ने यह कहा है कि भविष्य में अपने आन्तरिक संघटन को बनाए रखना लेखकों के लिए बहुत ही मुश्किल होगा और अमेरिकन साहित्य-सृजन व्यावसायिक लेखन का एक सफल लेखा-जोखा होकर रह जायगा। उनके अनुसार वह, हॉलिवुड का जैसा कोरा व्यावसायिक रूप धारण कर लेगा।

: २ :

जैसा कि सर्वविदित है, प्रायः सभी पुस्तक-प्रकाशकों को युद्ध के दौरान में असाधारण रूप से लाभ हुआ। कागज की मात्रा सीमित होने तथा मनुष्य-शक्ति एवं अन्य उपादानों की कमी के कारण वे बाजार की बढ़ी हुई माँग को पूरा करने में असमर्थ थे। इस स्थिति को देखते हुए एक प्रकाशक ने कहा था कि कोई भी पुस्तक ऐसे समय में बिक सकती है, यदि उसमें शब्द या चित्र हैं; यदि उसमें इन दोनों में से कोई भी नहीं है तो उसके बेचने में कठिनाई अवश्य हो सकती है। साथ ही उसने यह भी कहा कि यदि पुस्तक बहुत अच्छी है तो भी उसके बिकने में कुछ कठिनाई हो सकती है। इस चढ़ती के बाजार में पुनमुंद्रण संस्थाओं की स्थिति बहुत अच्छी हो गई जिससे कि आज पुस्तकों के संसार में उनका अत्यधिक प्रभाव है। उनके विस्तार की कुछ जानकारी हमें 'टाइड' के उस कथन से होती है, जिसके अनुसार १९४४ ई० में कागज की जिल्द बँधे हुए पॉकेट बुक के ३०,०००,००० पुनमुंद्रित संस्करण बिके। यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि 'टाइड' द्वारा वर्णित चार बड़ी संस्थाओं में से सभी पुनमुंद्रण संस्थाएँ हैं।

सदैव से ही अत्यधिक तीव्र प्रतिस्पर्धा की भावना से प्रेरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने वाला प्रकाशन-व्यवसाय अब एकदम तीखी प्रतिद्वन्द्विता से अभिभूत होने जा रहा है। पुनर्मुद्रण संस्थाएँ अधिकाधिक वितरण, लेखकों तथा पुनर्मुद्रण अधिकारों, फिल्म-व्यवसायियों से समझौता तथा उत्पादन की सुविधाओं के क्षेत्र में एक दूसरे से होड़ लगाकर बढ़ रही हैं। आज के पुस्तक-व्यवसाय की अर्थ-व्यवस्था में यह प्रतिद्वन्द्विता की भावना ही प्रमुख तथ्य है।

'टाइड' में प्रकाशित लेख का अन्तिम अंश है, "इस अधिकाधिक बढ़ती के बावजूद, ऐसा नहीं जान पड़ता कि वॉल स्ट्रीट के पूँजीपति इस उद्योग में कुछ रुचि रखते हैं, परन्तु यदि पुनर्मुद्रण का व्यवसाय आशानुरूप बढ़ता गया तो उन लोगों के लिए भी यह अच्छा क्षेत्र होगा।"

इस स्थिति में अब हम इसके कुछ परिणाम देखेंगे।

: ३ :

यह नई स्थिति युद्धीय अर्थ-नीति के द्वारा उत्पन्न नहीं हुई है; इसने तो केवल प्रकाशन की मात्रा को बढ़ा दिया है, जिसके फलस्वरूप कुछ नई पूँजी इस क्षेत्र में आ गई है। युद्धीय बढ़ती ने यह दिखा दिया है कि बड़े पैमाने पर पुस्तकों का प्रकाशन एवं वितरण दोनों ही उचित एवं लाभप्रद हैं। यह विकास अब प्रतिगामी नहीं हो सकता। इसका परिणाम संयोजीकरण एवं केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति में दिखाई देता है। निश्चय ही पुस्तक-व्यवसाय का प्रत्येक पहलू पहले की अपेक्षा लोगों का ध्यान अब अधिक आकर्षित करेगा। इसके फलस्वरूप छोटे और स्वतन्त्र प्रकाशकों को काम करने में अधिक कठिनाई होगी और कदाचित् अब इस क्षेत्र में आने वाले नये व्यक्तियों को इस व्यवसाय में प्रारम्भिक पूँजी भी अधिक लगानी पड़ेगी। दूसरे शब्दों में, प्रकाशन अब अधिक बड़े पैमाने पर होगा और पहले की अपेक्षा अब रुपए की भी अधिक चर्चा रहेगी। यह बात तो सभी जानते हैं कि जिन पुस्तकों पर विज्ञापन के लिए बहुत व्यय किया जाता है, उनकी समीक्षाएँ शीघ्र और विस्तृत रूप में प्रकाशित होती हैं और इसके अतिरिक्त जो पुस्तकें 'बुक क्लब' द्वारा चुनी जाती हैं उन्हें बहुत से समीक्षक महत्वपूर्ण भी मानते हैं। बहुत से लेखकों का स्थायी यश न सही तो कम-से-कम तात्कालिक यश तो बहुत-कुछ इन्हीं तत्त्वों पर निर्भर रहता है।

प्रकाशन में उन्नति की कुछ शर्तें हैं : व्यवसाय में लगाने के लिए पर्याप्त धन, वितरण बढ़ाने एवं विज्ञापन के नई-नई योजनाएँ, एक आकर्षक एवं अच्छे विक्रेता की ...यता तथा व्यवसाय के प्रधान क्षेत्र में चमकने की आ... पुस्तक-प्रकाशन को यदि कोई प्रगतिशील सांस्कृतिक ... करना है, तो उसे नित्य नये आँकड़ों की आवश्यकता पड़े... इस दृष्टिकोण से उसे ऐसे व्यक्ति चाहिए जो तटस्थ हों, लेखन में नई-नई धाराओं के प्रति सहानुभूति रखते हों, स्वतन्त्र विचारों के पोषक हों और जिनके मन में पुस्त... लिए प्रेम हो। परन्तु ऐसे व्यक्ति आजकल प्रकाशक होने... बजाय नौकरी अधिक करते हैं और इस प्रकार वे भवि... अवनतोन्मुख सम्पादकीय प्रभाव डाल सकते हैं। आज... परिस्थितियों को देखकर जान पड़ता है कि प्रकाशन में ... मग्नता के साथ-साथ यह प्रवृत्ति अधिकाधिक विकसित हो... जायगी। शताब्दियों पहले यश और वैभव की बात ... हुए ऐकिनस ने कहा था, "ज्ञानार्जन की प्रवृत्ति यशलि... कहीं अच्छी है।" प्रकाशन के क्षेत्र में यह कथन द्रुत... रूप से उलटा जा रहा है।

प्रकाशकों में प्रतिस्पर्धा की भावना सदैव से बहुत... रही है। पिछले दिनों इसके द्वारा पुस्तकों में ताजगी, ... वैभिन्न्य एवं मौलिकता की खोज के लिए एक आर्थिक आ... मिल जाया करता था। पुनर्मुद्रण के क्षेत्र में प्रतिस्प... फलस्वरूप प्रकाशन का एक स्तर निश्चित होगा। फि... व्यवसायियों से सम्बन्ध जोड़ने की बढ़ती हुई प्रतिद्वन्द्विता ... प्रवृत्ति का एक अच्छा उदाहरण है। एक पुनर्मुद्रण सं... ने अब तक कम-से-कम बयालीस पुस्तकें प्रकाशित कर दी हैं, जो फिल्म-व्यवसायियों को भी बेची गई हैं और जि... फिल्म बन चुके हैं। एक और पुनर्मुद्रण संस्था ने इस ... में प्रवेश किया है। कोई पुस्तक, वह चाहे जितनी साधा... क्यों न हो, यदि वह फिल्म बनाने के लिए खरीदी गई है... वह बड़े-बड़े संस्करणों में अवश्य छापी जायगी। इस प्र... का निम्नतम उदाहरण है उन सफल चित्रों के उपन्यास... कम दाम वाले बड़े संस्करणों में प्रकाशित करना, जो मूल... उपन्यासों पर आधारित नहीं थीं। ये पुस्तकें प्रायः एक... रकम के लिए झूठे नामों में लिखी जाती हैं। इन उपन्... रूपों के बिकने की सबसे बड़ी शर्त यह है कि वे जल्दी... जल्दी छापे जायँ अन्यथा फिल्म से सम्बन्ध का लाभ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायगा। और ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये चित्र-नाट्य 'हेज़ ऑफिस' के उत्पादन-सम्बन्धी नियमों को ध्यान में रखते हुए लिखे गए थे। क्या हमें यह अनुमान करने की आवश्यकता है कि इन उपन्यास-रूपों का स्तर कैसा है?

पुनर्मुद्रण बाज़ार में शेयर खरीदने की अनिवार्य प्रतिस्पर्धा, पुनर्मुद्रण प्रकाशकों द्वारा लगाई गई पूँजी का आकार, प्रत्येक पुस्तक पर अपेक्षाकृत कम लाभ—इन सबने मिलकर प्रकाशकों को इस बात के लिए विवश कर दिया है कि वे अपनी सूची में बराबर कुछ नये शीर्षक जोड़ते रहें। नई पुस्तकों की एक निश्चित बिक्री उनके लिए आवश्यक है; नये लेखकों का सहयोग भी उन्हें अपेक्षित है और इन नये लेखकों के लोक-प्रचलित होने की गारंटी लेना भी उनके लिए अनिवार्य है। यदि ऐसे लेखक नहीं मिल पाते तो फिर उन्हें बनाना पड़ेगा। छापने की बड़ी मशीनें, बिना दिवालिया होने की जोखिम उठाए, बन्द नहीं की जा सकतीं, क्योंकि उनके नित्य के खर्चे बढ़ते जायँगे जिनका चुकाया जाना आवश्यक है। इस प्रकार उचित समय में इन बातों के फलस्वरूप पुनर्मुद्रण संस्थाओं को नई पुस्तकों और नये लेखकों को स्वयं ही लोक-प्रचलित करने का जिम्मा लेना पड़ेगा। अब तक चार बड़ी पुनर्मुद्रण संस्थाओं में से तीन का व्यापारिक संस्थाओं (trade houses) से सम्बन्ध होना इस सम्भावना की पुष्टि करता है। 'वर्ल्ड पब्लिशिंग कम्पनी' के उपाध्यक्ष श्री बी० डी० जेविन ने 'टाइड' के समाचार के अनुसार कहा है कि उनके लिए उन व्यापारिक संस्थाओं से पुनर्मुद्रण अधिकार प्राप्त करना कठिन होगा, जो उनके प्रतिद्वन्द्वियों से सम्बद्ध हैं। यह एक और तथ्य है जो उपर्युक्त सम्भावना की पुष्टि करता है। आजकल वह आर्थिक दृष्टिकोण है जो पुनर्मुद्रण के लिए नये लेखकों को पोषण करने वाली प्रवृत्ति को सहारा देता है।

अमेरिकन प्रकाशन के इतिहास में लेखकों की कमी इतनी आवश्यकता नहीं रही, जितनी आज है। अब प्रकाशक अपने दफ्तरों में बैठकर डाकियों अथवा साहित्यिक प्रतिनिधियों (literary agents) का इंतज़ार नहीं करते कि उनसे पांडुलिपियाँ मिल जायँगी। वे सारे अमेरिका-भर में लेखकों की खोज करते हैं। हौलिवुड प्रकाशकों के प्रतिनिधियों का एक निश्चित विश्रामस्थल बन गया है, जब वे लेखकों को ढूँढ़ निकालने में लगे रहते हैं। 'लिटरेरी स्कॉउट' नाम का एक नया पेशा ही बना दिया गया है। ये स्काउट अमेरिका के साहित्यिक मण्डलों का दौरा करते रहते हैं और कॅन्ट्रेक्ट के कागज, चैक और फाउन्टेनपैन हाथ में लिए वे नये प्रतिभाशाली लेखकों की फिराक में ठीक उसी तरह रहते हैं, जैसे कि वे 'मेजर लीग बेसबाल टीम' के स्काउट हों।

'राइटर्स कॉन्फ्रेन्स' नामक उन संस्थाओं के जन्म का मूल कारण लेखकों की आवश्यकता ही है जिनका परिचालन देश की अधिकाधिक संख्या में बढ़ते हुए विश्वविद्यालय करते

[शेष पृष्ठ ४६२ पर देखिए]

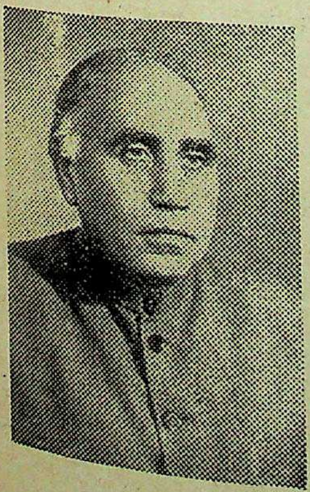

हिन्दी-जगत के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त का नवीन उपन्यास

गुण्ठन

छप रहा है। प्रतीक्षा करें।

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४६१ से आगे]
हैं। (कई उदाहरण ऐसे भी मिले हैं जिनके अनुसार बहुत-से अध्यापक-गण इन कॉन्फ्रेंसों में नौसिखिया लेखकों को व्यापारिक लेखन के प्रारम्भिक सिद्धान्त समझते हैं)। यही कारण है कि प्रकाशक-गणों ने बहुत-से साहित्यिक पुरस्कार एवं मान्य सदस्यताएँ (fellowships) स्थापित की हैं। प्रतिस्पर्धा की भावना अत्यधिक तीव्र होने के फलस्वरूप ही नये लेखकों की यह बेतहाशा खोज प्रारम्भ हुई है। इन परिस्थितियों में धनी प्रकाशक अधिक सशक्त हैं क्योंकि वे पेशगी में बड़ी रकम दे सकते हैं और बड़े पुरस्कार तथा मान्य सदस्यताएँ स्थापित कर सकते हैं।

अमेरिकन प्रकाशन में साहित्यिक प्रतिनिधि का स्थान अब अधिकाधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। उसका एक कार्य यह भी है कि वह किसी पुस्तक की योजना बनाकर उसे अपने किसी ग्राहक से लिखवा लेता है और इस प्रकार अपना कमीशन प्राप्त करता है। यह उन रास्तों में से एक है जिनमें बहुत से व्यक्तियों द्वारा रुपया कमाए जाने की भावना से प्रेरित होकर पुस्तकें लिखी जाती हैं।

: ४ :

मैं यह पहले ही कह चुका हूँ कि हमारे प्रकाशक आज जिस दिशा में जा रहे हैं, उससे साहित्य का हॉलिवुडी रूप बन जायगा। एक सम्पादक और कवि का कहना है कि चलचित्र और छपे हुए शब्द में आज जीवन-मरण संग्राम चल रहा है और सम्भावना यह है कि चलचित्र छपे हुए शब्द को नष्ट कर देगा। जैसा कि कुछ ही वर्षों पहले बहुत से कवि और साहित्यकार माननीय साहित्य को विज्ञान द्वारा नष्ट किया हुआ समझकर उसके शव को गाड़ने के लिए तैयार थे, ठीक उसी प्रकार आज बहुत से लेखक, कवि और यहाँ तक कि सम्पादक-गण भी चलचित्र कैमरा द्वारा मारी गई उपन्यास-रूपी संभ्रात और सुन्दर महिला को मृत समझकर उसके शव पर मरण-गान गा रहे हैं। जब तक कि शोक प्रकट करने वालों की संख्या और बढ़ती है, हम इस प्रश्न पर कुछ अधिक गम्भीरतापूर्वक विचार कर लें! पुनर्मुद्रण-बाजार का हाल ही में हुआ विस्तृत रूप इस सम्बन्ध में हमें कुछ रोचक तथ्य देता है।

अभी तक पुनर्मुद्रण-प्रकाशकों ने आर्थिक प्रतिबन्धों का उपयोग नहीं किया है, जैसा कि चलचित्र और रेडियो करते हैं। पुनर्मुद्रित पुस्तकों के शीर्षकों से ही प्रक... व्यवसायियों की रुचि का पता लग जाता है। पुन... संस्थाओं ने प्रायः उन सभी पुस्तकों को खरीद लिया है कि एक बड़े पैमाने पर जनता में बिक सकती हैं। ए... गम्भीर यथार्थवादी उपन्यास का भी उदाहरण है जो ... संस्करण में बहुत कम बिका था, परन्तु दुबारा छापे जाने... हाथों-हाथ बिक गया। गम्भीर उपन्यासों में मिलने... अनैतिकता से सम्बद्ध थोक खरीदारों की कुछ शिकायते... हैं, जिन्हें प्रकाशकों ने एकदम नहीं सुना।

कला-सम्बन्धी आवश्यकताओं के कारण नहीं, ... व्यावसायिक दृष्टिकोण एवं स्वतःनिर्मित "संयम" के फल... चलचित्र बराबर उपन्यास की कथावस्तु को कम कर रहे हैं, विकृत कर रहे हैं और बदल रहे हैं। हॉलिवुड की ... यह है कि वहाँ भूत को उद्भावना वर्तमान की आवश्यकता... नुसार की जाती है। इस बात का एक अच्छा उदाहरण 'दि एडवैन्चरस ऑफ मार्क ट्वेन' नाम का चलचित्र ... एक अभिनेता को मार्क ट्वेन से मिलती-जुलती शक्ल... दिखाया गया है। इस चलचित्र में कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जो मार्क ट्वेन के जीवन में हुई थीं। इन दोनों का ... बस यहीं समाप्त हो जाता है।

संक्षेप में, चलचित्रों और उपन्यासों के इस पारस्... सम्बन्ध को लेकर बहुत-कुछ अनावश्यक वादविवाद खड़ा हुआ है। इस प्रश्न को और भी अधिक गहरा... समझने की कोशिश होनी चाहिए क्योंकि अमेरिकन ... में हॉलिवुड का एक विचित्र स्थान है।

(अगले अंक में समा...

प्रकाशन समाचार

... में प्रकाशित सूचनाओं को पढ़कर देश के सभी ... के पुस्तकालय तथा पुस्तक-विक्रेता पुस्तकों का आर्डर ... हैं। इसमें प्रकाशन-सम्बन्धी अपनी सूचनाएँ तथा विज्ञ... निरन्तर देने से अन्य प्रकाशकों के समान आपको निश्चय ... लाभ होगा।

—प्रकाशन समा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तक-परिचय

कला-निधि : सुप्रसिद्ध कला-पारखी श्री रायकृष्णदास जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित होनेवाले भारत-कला-भवन, काशी, के इस मुखपत्र के पहले चार अंक अब एक साथ प्राप्य हैं। आठपेजी क्राउन आकार के बढ़िया ड्राइंग पेपर पर छपी यह कला-विवेची पत्रिका आग्रहपूर्वक संग्रहणीय है। चारों अंकों में १६ दुर्लभ रंगीन तथा आर्ट-पेपर पर छपे अनेकों सादे चित्र एवं रेखांकन हैं। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल (भारतीय कला का अनुशीलन, अंक १), डॉ० मोतीचन्द (दक्खिनी कलम : बीजापुर, अंक १; मुगल-युग के बेगड़ी और उनकी कला, अंक ३, और ४), डॉ० हरमन गोऍट्ज़ (राजस्थानी चित्र-कला में नागौर-शैली, अंक २), श्री कृष्णदत्त वाजपेयी (मथुरा-कला में कृष्ण-बलराम की मूर्तियाँ, अंक २), श्री ललितकिशोर सिंह (भारत के ग्राम और मूर्छना, अंक ३), श्री असितकुमार हाल्दार (बंगाल का पटचित्र, अंक ४), मुद्राओं के सम्बन्ध में लेख तथा अन्य गम्भीर खोजपूर्ण निबन्ध पठनीय हैं। सुमुद्रित और सुप्रकाशित इन चारों अंकों का मूल्य २०) है। ये अंक प्रकाशक तथा **राजकमल** प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई व इलाहाबाद से प्राप्य हैं।

◆ ◆ ◆

हिन्दू परिवार मीमांसा : प्रागैतिहासिक काल से हिन्दू-परिवार के परम्परागत संगठन के समाजशास्त्रीय अध्ययन का यह पहला, विस्तृत प्रयास है। डिमाई आकार के ७३८ पृष्ठों के इस प्रबन्ध पर लेखक श्री हरिदत्त वेदालंकार को बंगाल हिन्दी-मण्डल की ओर से १२००) का पुरस्कार १९४६ में दिया गया था। पूर्वार्द्ध के पहले अध्याय में हिन्दू परिवार के उद्गम और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे अध्याय में वैदिक काल से आज तक के हिन्दू-परिवार के विकास का प्रतिपादन है। अगले सात अध्यायों में हिन्दू परिवार में क्रमशः पति, पत्नी, पिता, माता, पुत्र, पुत्री,

आलोचना

शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले १५वें अंक की विषय-सूची

★ **निबन्ध**

अनुकृति, अन्विति और काव्यगत आनन्द : ग्रीक सौन्दर्य-शास्त्र पर एक दृष्टि : रमाशंकर तिवारी

संत साहित्य और जैन हिन्दी कवि : परशुराम चतुर्वेदी

जापानी साहित्य : १९२५-१९५५ : के दोई

★ **प्रस्तुत प्रश्न**

साहित्यकार का वैयक्तिक स्वातन्त्र्य और सामाजिक दायित्व :

लेख—

हर्षनारायण, प्रभाकर माचवे, डॉ० रामअवध द्विवेदी, बालकृष्ण राव, उदयशंकर भट्ट, जैनेन्द्रकुमार, भगवतीचरण वर्मा

सम्मतियाँ—

मन्मथनाथ गुप्त, यशपाल, विजयशंकर मल्ल, डॉ० नगेन्द्र, नलिन विलोचन शर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, विनयमोहन शर्मा, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा

★ **मूल्यांकन**

कविताएँ : १९५४ : प्रभाकर माचवे

हिन्दी कथा-साहित्य : अनन्तकुमार पाषाण

प्रेमचन्द—समीक्षकों की दृष्टि में : डॉ० प्रेमशंकर

बाजत आवे ढोल : डॉ० रांगेय राघव

अमर बेल : ब्रजविलास

निर्गुण की कहानियाँ : ओंकारनाथ श्रीवास्तव

सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य-नाटक : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

छायावाद की काव्य-साधना : आनन्दप्रकाश दीक्षित

कविता में प्रकृति-चित्रण : उदयशंकर भट्ट

वार्षिक मूल्य १२)। प्रत्येक अंक का ३)

राजकमल प्रकाशन,

१, फैज़ बाज़ार, दिल्ली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

,भाई बहिन तथा अन्य सम्बन्धियों की स्थिति का विवेचन है। दसवें अध्याय में गृहस्थ के कर्तव्यों का प्रामाणिक उल्लेख है। उत्तरार्द्ध के पहले (ग्यारहवें) अध्याय में संयुक्त परिवार के कानूनी स्वरूप तथा उत्तराधिकार के सिद्धान्तों—मिताक्षरा और दायभाग—का वर्णन है। बारहवें अध्याय में सम्पति के विभाग, तेरहवें में पिता के साम्पत्तिक अधिकार, चौदहवें में पुत्र के अधिकार, पन्द्रहवें में कन्या के साम्पत्तिक अधिकार, सोलहवें में स्त्री-धन तथा अन्तिम अध्याय में हिन्दू-परिवार के भविष्य पर विचार किया गया है।

ग्रन्थ की पाडित्यपूर्ण भूमिका में डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं: "यह अध्ययन भारतीय जीवन के मेरुदण्ड हिन्दू परिवार की स्थिति, विकास और समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है, इस कारण अतीव स्वागत के योग्य है।" बंगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए इस प्रकाशन का मूल्य १०) है। इसका वितरण भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद द्वारा हो रहा है।

◈ ◈ ◈

बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन : भारतीय दर्शन का ऐतिहासिक शोधपूर्ण, पक्षपातरहित तथा तुलनात्मक विवेचन डिमाई आकार के ११६६ पृष्ठों की सुमुद्रित दो जिल्दों में श्री भरतसिंह उपाध्याय द्वारा किया गया है। बंगाल हिन्दी मण्डल ने १५००) देकर इसकी पांडुलिपि का सम्मान किया था। पहले तीन प्रकरणों में भारतीय दर्शन की सामान्य प्रवृत्तियों, भारतीय दर्शन परम्परा तथा भारतीय दर्शन के द्विविध विभाग का पर्यवेक्षण किया गया है। चौथे प्रकरण में बौद्ध दर्शन की तथा इसके बाद की प्रवृत्तियों की सांगोपांग मीमांसा प्रस्तुत हुई है। पांचवे प्रकरण में बौद्ध दर्शन की वैदिक प्रज्ञान, गीता, चार्वाक मत, जैन दर्शन, न्याय-वैशेषिक, सांख्य योग, पूर्व मीमांसा, वेदान्त, मध्ययुगीन भक्ति-साधना, तन्त्र सिद्धान्त तथा आधुनिक भारतीय विचार-धारा से तुलनात्मक समीक्षा की गई है। अन्तिम प्रकरण में भारतीय दर्शन-साधना में बौद्ध दर्शन के स्थान और महत्व का अनुमापन है। यह पुस्तक लेखक द्वारा बौद्ध दर्शन के श्रमसाध्य अध्ययन और मनन का फल है और प्रत्येक पुस्तकालय एवं भारतीय दर्शन के विद्यार्थी द्वारा संग्राह्य है। दोनों जिल्दों का मूल्य १६) है और प्राप्ति स्थान भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद है।

◈ ◈ ◈

वर्षान्त के बादल : सुप्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की नवीन कविताओं का संग्रह। इसमें उनके अनुभूति-प्रधान व्यक्तित्व एवं साधना-क्रम का आभास यत्र-तत्र स्पष्ट झलकता है। संग्रह के प्रायः गीत कवि अंचल की अभिव्यक्तिमयी वाणी का शृंगार से लगते हैं। इसमें ५४ गीत हैं और डिमाई साइज ६२ पृष्ठ। सुन्दर जिल्द और आकर्षक मुद्रण से युक्त संग्रह साहित्य भवन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित हुआ है, ३) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

वाह रे मैं वाह ! में प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी के 'काका की शशी', 'है सो ठीक' तथा 'वाह रे मैं वाह !' नामक तीन गुजराती नाटकों का रूपान्तर प्रस्तुत किया गया है। अनुवादक डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'। अनुवाद की भाषा सुबोध और प्रांजल है, जिसमें फूल-जैसा आनन्द आता है। इन नाटकों में समाज और राजनीति की विकृति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये गए हैं। यों तो इस पुस्तक के तीनों नाटक कला की दृष्टि से उत्कृष्ट ठहरते हैं, किन्तु प्रेरणा और मनोरंजन का तत्त्व 'वाह रे मैं वाह !' में अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है। क्राउन साइज के २६४ पृष्ठ, और आकर्षक कवर से युक्त यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई है और ४) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

ठक्कर बापाः में प्रसिद्ध समाज-सेवी और सुधारक श्री ठक्कर बापा का प्रामाणिक एवं परमार्थरत जीवन प्रस्तुत किया गया है। इसके लेखक श्री कान्तिलाल उनके सहकर्मी और निकटवर्ती रह चुके हैं, अतः लेखनी द्वारा लिखित यह ग्रन्थ निःसन्देह उपयोगी होगा। राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने इस ग्रन्थ की भूमिका में यह सच ही लिखा है। कि "मरते दिन तक ठक्कर बापा जन-सेवा-कार्य में ही लगे रहे।" ऐसे जन-सेवी महापुरुष के जीवन और कार्यों का द्योतक यह ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हना चाहिए। डिमाई साइज के ४७२ पृष्ठ का यह जिल्द ग्रन्थ ठक्कर बापा स्मारक समिति दिल्ली द्वारा काशित हुआ है और सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली था नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद से ५) में मिल कता है।

◆ ◆ ◆

भारतीय तत्त्व चिन्तन में डॉ० जगदीशचन्द्र ने प्रागै-तिहासिक काल से आधुनिक काल तक के भारतीय दर्शन की हानी प्रस्तुत की है। आदिम काल से लेकर आज तक के त्त्वचिन्तन की धाराओं का सुपुष्ट प्रतिपादन करने वाली पुस्तकें हिन्दी में अभी तक बहुत कम हैं। डॉ० जैन की यह स्तक इस दिशा में नवीन और सराहनीय प्रयत्न है। रायल साइज के २४० पृष्ठ की सजिल्द और सुमुद्रित यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन दिल्ली से ६) में प्राप्य है।

◆ ◆ ◆

पृथ्वी परिक्रमा में सेठ गोविन्ददास ने अपनी मिस्र, ग्रीस, इटली, स्विटजरलैण्ड, फ्रांस, इंग्लैण्ड, कैनेडा, अफ्रीका, जापान, हाँगकांग, चीन, स्याम और बर्मा की यात्रा का रोचक विवरण प्रस्तुत किया है। पुस्तक सरल एवं रोचक शैली में लिखी गई है, और इसके भूमिका-लेखक श्री गणेश वासुदेव मावलंकर के शब्दों में "एक बार पढ़ना आरम्भ करने पर अबाध रूप से पूरी पुस्तक पढ़ डालने की इच्छा बलवती हो उठती है।" इस पुस्तक से पाठकों को विश्व के विभिन्न देशों की अतीत एवं वर्तमान की समस्याओं, जातियों, धर्मों, राजनीतिक विचार-धाराओं तथा विभिन्न संघर्षों एवं अन्य प्रश्नों को समझने में पूरी सहायता मिलेगी। डिमाई साइज के लगभग ३५० पृष्ठों और अनेकानेक चित्रों से सुसज्जित यह पुस्तक प्रकाशक आत्माराम एण्ड सन्स से १२) में प्राप्त की जा सकती है।

◆ ◆ ◆

नेपाल की कहानी में नेपाल की सलाहकार सभा के सदस्य श्री काशीप्रसाद श्रीवास्तव ने नेपाल राज्य और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्राकृतिक तथा राष्ट्रीय रूप-रेखा और राजनीतिक परिस्थिति पर विशद प्रकाश डाला है। पुस्तक के लेखक श्री श्रीवास्तव वहाँ के कर्मठ कार्यकर्ता और जन-सेवी हैं, अतः उनकी यह कृति वास्तव में नेपाल को समझने के लिए एक सन्दर्भ ग्रन्थ का काम देगी। भूमिका-लेखक श्री राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में हम भी यही कहना चाहते हैं—"यह पुस्तक बड़ी सामयिक और उपयोगी है। उन्होंने हमारी जानकारी बहुत बढ़ाई है और नेपाल को समझने का मौका दिया है।" डिमाई साइज़ के ३०० पृष्ठ की यह सचित्र पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स से प्रकाशित हुई है और मूल्य ८) है।

◆ ◆ ◆

पथ से दूर : श्री कमल शुक्ल का कदाचित् चौथा उपन्यास है। इसका गठन छात्रों के मानस और उनके आरोह-अवरोहों का विशेष चित्रण करने के लिए किया गया है। लेखक ने इसमें पथ से दूर चक्कर काटने वाले छात्रों की अकर्मण्यता का वर्णन स्वाभाविकता और सफलता के साथ किया है। आशा है कि इससे छात्र समुदाय लाभान्वित होगा। क्राउन साइज के १२४ पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली से २।) में मिलता है।

◆ ◆ ◆

करमू और जगनी : श्री हर्षनाथ का नवीनतम उपन्यास है। इसकी पृष्ठभूमि लेखक ने गाँव की भोली-भाली जनता और वहाँ के वातावरण को बनाया है। पुस्तक को पढ़ने पर हम यह निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि लेखक ने ग्रामीण जनता और उनके जीवन को दूर से ही नहीं देखा, प्रत्युत वे उसमें घुल-मिलकर रहे हैं। २५० पृष्ठ का यह उपन्यास साहित्य प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है और ४।।) में मिलता है।

◆ ◆ ◆

सचित्र गृह विनोद : डिमाई आकार के ४११ पृष्ठों की इस पुस्तक में घर में आए अतिथियों के शिष्ट मनोरंजन तथा विभिन्न खेलों, हँसी-मजाक आदि के विभिन्न तरीके दिए गए हैं। आश्चर्य में डालने वाले छोटे-मोटे जादू के करिश्मों, अंकों के जादू, गोरख-धन्धे आदि का वर्णन भी इस में है। विशेष उत्सवों पर तथा पिकनिक और सैर के वातावरण को उल्लसित बनाए रखने के लिए तरह-तरह के सुझावों से यह पुस्तक भरी पड़ी है। एक अध्याय बच्चों के खेलों के लिए सुरक्षित है। मूल्य ८)। प्रकाशक आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली।

◆ ◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद

—अयोध्याकाण्ड की भूमिका, श्री कृष्णचन्द्र वर्मा एम० ए०। साहित्य सम्मेलन, विशारद परीक्षा व इलाहाबाद विश्वविद्यालय की बी० ए० की परीक्षा के लिए। १)

—जीवन सरिता, श्री सच्चिदानन्द श्रीवास्तव। फुटकर कविता संग्रह। १)

—दिल्ली से मॉस्को, श्री महेशप्रसाद श्रीवास्तव। यात्रा विवरण सहित। २)

—शिक्षण कला के मौलिक सिद्धान्त, श्री रमाकान्त श्रीवास्तव। रिसर्च ट्रेनिंग के लिए। १।।।)

अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

—वह कौन थी ?, ले० अलेक्जेण्डर ड्यूमाज, अनु० श्री ऋषभचरण जैन। उपन्यास।

—शिक्षा शास्त्र, श्री० डी० जीवनायकम, अनु० श्रीमती सुमित्रा भार्गव।

—मनोविज्ञान और शिक्षा, श्री डी० जीवनायकम, अनु० श्रीमती सुमित्रा भार्गव।

—शिकारी कुत्ता (शर्लक होम्स), ऑर्थर कॉनन डॉयल, अनु० श्री आनन्दप्रकाश जैन। उपन्यास।

—चिड़िया की तिग्गी, वैलेंटाइन विलियम्स, अनु० श्री आनन्दप्रकाश जैन। उपन्यास।

—मोहब्बत मनोविज्ञान और मूँछ दाढ़ी, श्री केशवचन्द्र वर्मा।

—ज़नाना आंगन, यशपाल। उपन्यास।

—ठंडी आग, विनोद रस्तोगी। उपन्यास। ३)

—वैशाली की नगर वधू (दो भाग), द्वितीय संस्करण, आचार्य चतुरसेन शास्त्री। १२)

—सरस भोजन कैसे बनाएँ, श्रीमती वृन्देश्वरी भा... पुनर्मुद्रण। ३।।।)

—दीवाने, मनोज वसु, अनु० रूपनारायण पाण्डेय। ...न्यास। २।।)

—स्वास्थ्य के लिए क्या खाएँ, श्रीमती सुमित्रा भार्गव।

—भक्तियोग, स्वामी विवेकानन्द। दर्शन शास्त्र। २)

—कर्मयोग, स्वामी विवेकानन्द। दर्शन शास्त्र। २)

—भक्ति और वेदान्त, स्वामी विवेकानन्द। दर्शन शा... २)

—सामाजिक मनोविज्ञान, मॉरिस गिन्सबर्ग, अनु० ... सुमित्रा भार्गव। ५)

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—प्रसाद : जीवन कला और कृतित्व, श्री महावीर ... कारी। ८)

—साहित्य शास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोष, श्री ... द्विवेदी।

—वक्रोक्तिजीवितम्, टीका आचार्य विश्वेश्वर। १५)

—बुझते दीप, श्री दयाशंकर।

—सिद्धान्त और अध्ययन, गुलाबराय। पुनर्मुद्रण।

—हमारे राष्ट्रपिता, गोपालप्रसाद व्यास। पुनर्मुद्रण।

—गार्गी के बाल-नाटक, पारितोष गार्गी।

—उत्तर भारत की लोक कथाएँ (तीसरा भाग), ... देवी वर्मा।

—निमाड़ी की लोक कथाएँ, कृष्णलाल हंस।

—चन्दा मामा का देश, सन्तोषनारायण नौटि... पुनर्मुद्रण।

—जर्मनी की लोक कथाएँ, जगन्नाथ शर्मा प्रभा... पुनर्मुद्रण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—साहित्य विवेचन, क्षेमचन्द्र सुमन तथा योगेन्द्रकुमार मलिक। पुनर्मुद्रण।
—निशिकान्त, विष्णु प्रभाकर। उपन्यास।
—भगवान मनु और अन्य एकांकी, लक्ष्मीनारायण मिश्र।
—आदिम युग, उदयशंकर भट्ट। पुनर्मुद्रण।
—जीजी जी, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'। पुनर्मुद्रण।

आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
—कीर्ति मन्दिर, श्री चन्द्रकान्त काकोडकर व श्री आर० आर० सर्वते। सामाजिक उपन्यास। ३)
—रेशम की गाँठें, श्रीदत्त रघुनाथ कवटेकर। सामाजिक उपन्यास। ३)
—मुक्त नारी, श्रीचन्द्रकान्त काकोडकर व श्री आर० आर० सर्वते का सामाजिक उपन्यास। २॥)

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
—सब का मित्र, श्री छविनाथ राय। बालोपयोगी पुस्तक-माला के द्वितीय सेट की नौवीं पुस्तक। ।)
—चर्खे का जादू, श्री छविनाथ राय। बालोपयोगी पुस्तक-माला के द्वितीय सेट की दसवीं पुस्तक। ।)

नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
—मानव समाज, श्री ब्रह्मनारायण शर्मा विकल। सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक उपन्यास। ३॥)
—सावन की घटाएँ, श्री रघुवंश दयाल सावन्त। सामाजिक उपन्यास। ५)
—नींद और सपने, श्री रघुवंशदयाल सावन्त। सामाजिक उपन्यास। ३॥)
—स्त्रियों के कर्तव्य, श्रीमती चन्द्रकला देवी पाण्डेय, स्त्रियोपयोगी शिक्षा। ४।)

नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
—पथ के दावेदार, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० श्री जी० एस० वर्मा। ४॥)
—अरक्षणीया, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० श्री जी० एस० वर्मा। १॥)
—परिणीता, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० श्री जी० एस० वर्मा। पुनर्मुद्रण। १।)

नारायण पब्लिशिंग हाऊस, अजीतमल (इटावा)
—संघर्ष और विकास, श्री प्रेमनारायण अग्रवाल। जीवनी सम्बन्धी। २)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद
—अंजो दीदी, उपेन्द्रनाथ अश्क। अभिजात वर्ग की खोखली सनक और अपनी संतति द्वारा अपनी कुण्ठाओं की पूर्ति की आकांक्षा का मार्मिक तथा हास्य-व्यंगमय चित्र। नाटक। २॥)

नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
—अमीरी गरीबी, गोपालकृष्ण कौल। पूँजीवाद का प्रौढ़ोपयोगी विश्लेषण। ॥)
—आदमी के विकास की कहानी, गोपालकृष्ण कौल। विकासवाद। ॥)
—नये तीर्थ, नई यात्रा, लक्ष्मीनारायण। पंचवर्षीय योजना का सरल परिचय। ॥)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा
—मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ, अनु० श्री सूरजनारायण अग्रवाल। ३)
—द्वन्द्व युद्ध, एन्टन चेखव, अनु० श्री राजनाथ। एक दीर्घ कथा तथा अन्य कहानियाँ। ३)
—उपवन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० विपिनबिहारी। २)
—सरल कृषि शास्त्र, सीताराम अग्रवाल। ३)

मानसरोवर पब्लिशिंग एकेडेमी, इलाहाबाद
—खूनी लकीर, श्री गौरीशंकरलाल 'अख्तर'। जासूसी उपन्यास। ॥=)
—जलती राख, 'दीपक' बी० ए०। रोमांटिक उपन्यास। १॥)
—मैं भी इन्सान थी, 'दीपक' बी० ए०। एक जीवनी (तीन भाग)। २) रु० प्रति भाग।
—खूनी रक्कासा, श्री गौरीशंकर लाल 'अख्तर'। जासूसी रोमांटिक उपन्यास। ॥=)

रवि प्रकाशन, कानपुर
—भारत दुर्दशा, सं० श्री शिवकुमार मिश्र। भारतेन्दु कृत भारत दुर्दशा नाटक की आलोचना, टिप्पणी आदि। १॥)
—वृन्दावनलाल वर्मा-जीवन, कला और कृतित्व, श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवकुमार मिश्र। वर्मा जी के उपन्यास, नाटक, कहानी की विस्तृत समीक्षा। ४)

—पन्त और उत्तरा, शिवकुमार मिश्र। सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य की आलोचना, विशेष रूप से उत्तरा का अध्ययन। ३)

राजकमल कला प्रकाशन, बनारस

—मीरा बावरी, रामजीदास गुप्त 'चंचल'। मीराबाई की जीवनी व उनके पद। १॥)

—कृषि और सरल विज्ञान, भाग २। कृषि व जनरल साइंस। ।=)

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०, लखनऊ

—भौतिक भूगोल, श्री रामेश्वरप्रसाद यादव। ५)

रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद

—स्वप्नजाल, प्यारेलाल "आवारा"। सामाजिक उपन्यास। २॥)

—मण्टो की कहानियाँ-भाग १, सआदत हसन मण्टो। १॥)

विनय पुस्तक भण्डार, इन्दौर

—रतलाम जिले का भूगोल, रामस्वरूप जैन। ।=)

—नागरिक शस्त्र, भाग ४, रामस्वरूप जैन। पुनर्मुद्रण। ।॥)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—सन्त तुकाराम, श्री श्रीपाद जोशी। तुकाराम की जीवनी व उनके अभंग। ।=)

—हज़रत उमर, विष्णु प्रभाकर। ।-)

—बाजी प्रभु देशपाण्डे, विष्णु प्रभाकर। ।=)

—तिरुवल्लुवर, सोमसुन्दरम्। दक्षिण के सन्त तिरु... की जीवनी। ।=)

—कहावतों की कहानियाँ, महावीरप्रसाद पोद्दार।

—जय अमरनाथ, यशपाल जैन। अमरनाथ की या... वर्णन। २)

—आज़ादी के आठ साल, जवाहरलाल नेहरू। ।)

—महावीर भीमसेन, नानाभाई भट्ट। ॥)

साहित्य संगम, लुधियाना

—नीम हकीम, सत्यपाल आनन्द। नाटक। १)

—हमारा नेहरू, गुरुचरणसिंह सोखी। बालोपयोगी ... चरित्र। ॥=)

—हमारा पटेल, गुरुचरणसिंह सोखी। बालोपयोगी ... चरित्र। ॥=)

—शाकपात उत्पादन, गुरुदित्तसिंह। कृषि सम्बन्धी।

साहित्य सदन, देहरादून

—बच्चों की फुलवारी, श्री रामचन्द श्रीवास्तव। ।

—आधुनिक हिन्दी निबन्ध, प्रो० श्रीकान्त शास्त्री।

हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ

—राष्ट्रभाषा रत्न गाइड (भाग तीन), श्री बालबन्धु ... काशीराम। राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा (वर्धा) के लिए ...यक ग्रन्थ का तीसरा भाग। २॥)

[पृष्ठ ५०२ से आगे]

धर्मपाल शास्त्री, हिमालय पर विजय, १४२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

भगवतशरण उपाध्याय डॉ०, कलकत्ता से पीकिंग, १७३, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

भोलानाथ मिश्र, मुजरिमों की लड़ाई, २४, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा

रामेश्वर मिश्र, प्राथमिक संस्कृत व्याकरण कौमुदी, १६२, क्रा०, अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद

विराज एम० ए०, जंगल की बातें, ११६, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

विराज एम० ए०, जंगल के रहस्य, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

संतोष सचदेव, रजकण, ७१, क्रा०, अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद

सत्यवती मल्लिक, अमिट रेखाएं, पु० मु०, २६०, क्रा०, सस्ता साहित्य मन्डल, नई दिल्ली

सतीशचन्द्र काला, मोहेंजोदड़ो, पु० मु०, २२५, क्रा०, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र-समाजशास्त्र

रिस्वरूप, चाणक्य नीति, १००, क्रा०, तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ ||=)

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

गोविन्द त्रिगुणायत डॉ०, कबीर और जायसी का रहस्यवाद व तुलनात्मक विवेचन, २९६, क्रा० साहित्य सदन देहरादून ४)

तरुणेन्दु शेखर शुक्ल, भूमिका ले० नन्ददुलारे वाजपेयी, कामायनी दिग्दर्शन, ९४, डि०, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, लश्कर २)

देवमित्र एम० ए०, कहानी के रूप और तत्त्व, नोवेल्टी एण्ड क०, पटना १||)

नन्ददुलारे वाजपेयी, नया साहित्य : नये प्रश्न, ३०६, डि०, विद्यामन्दिर, बनारस ६)

विश्वम्भरनाथ, हिन्दी साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक, पु० मु०, १९२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २|)

रामविलास शर्मा डॉ०, निराला, पु० मु०, २००, क्रा०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क० लि०, आगरा ३)

विमलकुमार जैन डॉ०; सूफ़ी मत और हिन्दी साहित्य, २७१, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ७)

शचीरानी गुर्टू, हिन्दी आलोचक, ४१४, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ८)

शिवकुमार मिश्र, कामायनी और प्रसाद की कविता-गंगा, ४६८, रवि प्रकाशन, कानपुर ६|)

शिवस्वरूप गुप्त, यशोधरा परिशीलन, पु० मु०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ २)

साहित्य का पूर्वमध्ययुग, ७२, क्रा०, दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद, ||=)

उपन्यास

अश्क, बड़ी-बड़ी आँखें, २४०, क्रा०, नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद ३|||)

ओमप्रकाश, अंधेरे के दीप, २३८, क्रा०, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली ३||)

ओमप्रकाश, लकीरें, १५२, क्रा०, नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद २|||)

काशीनाथ अग्रवाल, अनु०, ख़ौफनाक टार्जन, उपन्यास प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १)

काशीनाथ अग्रवाल, अनु० जंगल सम्राट टार्ज़न, उपन्यास प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १)

काशीनाथ अग्रवाल, अनु०, टार्जन की वीरता, उपन्यास प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशीनाथ अग्रवाल, अनु०, टार्जन के मित्र, उपन्यास प्रकाशन कार्यालय, मथुरा
चन्द्रसेन, उन्मुक्ति, शारदा प्रकाशन, भागलपुर २
दयाशंकर मिश्र, छोटी चाची, १६२, क्रा०, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली
नकाबपोश भेदी, लाशों की चोरी, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', खुमार, पु० मु०, १७२, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', बरखा, पु० मु०, १२८, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', रेत के महल, पु० मु, १७६, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
पर्ल बक, अनु० ओमप्रकाश, धरती माता, २५६, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
महेशचन्द्र सरल, नदी और पत्थर, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली
आर० आर० सर्वते, जमींदार की बेटी, १७६, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
रवीन्द्रनाथ, अनु० गिरीशकुमार, तीन साथी, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
शम्भूदयाल सक्सेना, मगर मच्छ, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० जी० एस० वर्मा, देवदास, पु० मु०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय, देहाती समाज, १४०, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा

कविता

आदर्श, विरह-गीत, डि०, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद
आदर्श, समर गीत, डि०, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद
डंडियाँ के ख्वाब, राजस्थानी लोकनृत्य, किताबघर, जोधपुर
पुष्पेन्द्र जाला रेवली, नेहरूजी ने नूतो या फागरो बाग, किताबघर, जोधपुर
मेवराज मुकुल, उमंग, दत्त ब्रदर्स, अजमेर
राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, संकलिता, १८२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
रेवतदान चारण, धरती का गीत, (वितरक) किताबघर, जोधपुर
शिवदानसिंह तथा गोपालकृष्ण स०, काव्य-धारा, २१२, रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
शिवमंगल सिंह सुमन, विश्वास बढ़ता ही गया, १०४, डि०, सरस्वती प्रेस, बनारस
श्रीनाथ मोदी, घोरजमल बच्छावत, शुन्न गीत, (१ से २७ भाग), २४४, साहित्य सदन, सादडी, (वितरक), किताबघर, जोधपुर

कहानी

के० सन्तानम्, अनु० महावीरप्रसाद अग्रवाल, आठ सेर चावल, १३६, क्रा०, रामनारायण लाल, इलाहाबाद
एन्टन चेखव, अनु० राजनाथ, चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ, २४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
कहानी संग्रह भाग १, ६७, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा,
प्रेमचन्द, मानसरोवर, भाग ३, पु० मु०, क्रा०, सरस्वती प्रेस, बनारस
प्रेमचन्द, मानसरोवर, भाग ४, पु० मु०, क्रा०, सरस्वती प्रेस, बनारस
रोमी अनु० शि० वा० शांडिल्य, ईंट की दीवार, पु० मु०, १००, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

, ७३, क्रा०, मसिजीवी प्रकाशन, (वितरक) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १॥)
यशंकर भट्ट, नया समाज, ७३, क्रा०, मसिजीवी प्रकाशन, (वितरक) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
न्हैया लाल माणिकलाल मुन्शी, अनु० पद्मसिंह शर्मा कमलेश, वाह रे मैं वाह, २६८, क्रा० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ४)
म्भूदयाल सक्सेना, पंचवटी, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १॥)
म्भूदयाल सक्सेना, वल्कल, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर १॥)

धार्मिक

ानन्द स्वामी, महामन्त्र, १८२, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)
ान्दोग्योपनिषद् सटीक, शांकर भाष्य सहित, पु० मु०, ६६८, डि०, गीता प्रेस, गोरखपुर ३॥)
यदयाल गोयनका, गीता का तात्विक विवेचन, ६४, ३½″ × ४½″, गीता प्रेस, गोरखपुर
रकीब नमाज़, ३२, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा ।)
ल्लोरदास, अनु०, सुखसागर, १०००, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा १०)
व्यास जी, अनु० स्वा० अखण्डानन्द सरस्वती, एकादश स्कन्ध सटीक, ४४८, गीता प्रेस, गोरखपुर १)
रदास जी, अनु० सुदर्शन जी, सूर विनयपत्रिका, ३२८, गीता प्रेस, गोरखपुर ॥|=) सजिल्द १)
नुमानप्रसाद पोद्दार, आनन्द की लहरें, पु० मु०, क्रा०, गीता प्रेस, गोरखपुर -)
नुमान चालीसा, गीता प्रेस, गोरखपुर -)

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

ली सफदर, पक्षियों का जीवन, ३२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ॥)
ोंकार 'बावरा', चमकते सितारे, ८०, क्रा०, राज्यश्री प्रकाशन, कलकत्ता १॥)
ृष्णदास जाजू, व्यवहार शुद्धि, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ।-)
ृष्णदास जाजू, सम्पत्तिदान यज्ञ, ६४, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ।)
० राजशेष, गिरिराज, आंध्र की लोक कथाएँ, ६६, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
न्द्रकुमार, छत्तीसगढ़ की लोक कथाएँ, ६०, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
विनाथ राय, विचित्र सिंहासन, २४, क्रा०, दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद ।)
ल्सटाय, बालकों का विवेक, ३५६, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १।)
ण भाई सं०, धरती के गीत, फुल स्कैप, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा =)
ीरेन्द्र मजूमदार, भूदान यज्ञ : युग की महान् चुनौती, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ≡)
ारायण देसाई, भूदान आरोहण, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ॥)
ीरेन्द्र भाई मजूमदार, शासन निरपेक्ष समाज, ६४, फुल स्कैप, अ० भारतीय सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ।)
िर्मला देशपाण्डे सं०, विनोबा के साथ, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा १।)
ाशीलाल वर्मा मालवीय, सौराष्ट्र की लोक कथाएँ, ६२, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
दुला मुंदड़ा सं०, पावन प्रसंग, ४८, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा ।)
ाधव मुकुल, एक झाड़ी में सौ सांप, पु० मु०, ४८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
ारजॅरी साइक्स, अनु० कमल जोशी, रवीन्द्रनाथ (एक जीवन कहानी), १४८, क्रा०, ओरिएण्ट लॉगमैन्स, कलकत्ता १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीश सक्सेना, कीड़े-मकोड़े व मक्खी-मच्छर, ३५, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
मुनीश सक्सेना, पेड़-पौधे, ३१, क्रा० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रघुपतिसहाय फिराक, परिस्तान, २६४, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रघुबीरशरण 'मित्र' हरिजन, ५६, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ,
विनोबा, त्रिवेणी, क्रा०, अ० भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वर्धा
शिवनाथ सिंह शांडिल्य, चिड़िया की नसीहत,पु० मु०, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
विष्णुदत्त विकल, बालनीति कथा, ४२, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
सत्यप्रकाश गुप्ता, हमारी फसलें, ३२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
सूर्यकुमार जोशी, फल और सब्ज़ियाँ, ३२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
सम्पादित, कारखानों के कानून, पु० मु०, १६, डि०, मकतबा जामिया लि०, नई दिल्ली
सम्पादित, गोपी तांगेवाला, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, चुनाव के भेद, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, नागरिक अधिकार, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, फूलचन्द मूलचन्द पंसारी, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, भारत का शासन विधान, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, रहीम के दोहे, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, रुपये की कहानी, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, सरकारी करों के भेद, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, सूरदास के पद, ,, ,, ,, ,,
सम्पादित, हातिमताई भाग १, २, ३, ,, ,, ,, ,,
राष्ट्र भाषा बोध भाग १, पु० मु०, ६४, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
राष्ट्र भाषा बोध भाग २, पु० मु०, ,, ,, ,,
राष्ट्र भाषा बोध भाग ३, पु० मु०, ११६ ,, ,, ,,
व्यथित हृदय, भारतीय सपूतों की कहानियाँ, १५०, क्रा०, विजय प्रकाशन, दिल्ली
सन्तराम वत्स्य, हिमाचल की लोक कथाएँ, ३८, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
सावित्रीदेवी वर्मा, उत्तर भारत की लोक कथाएँ, भाग १, ४०, फुल स्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
सीताराम अग्रवाल, फलों-फूलों की खेती व व्यवसाय, १२८, क्रा० प्रभात प्रकाशन, मथुरा
हनुमानप्रसाद पोद्दार, सच्चे और ईमानदार बालक, गीता प्रेस, गोरखपुर

विविध

आदर्श, सम्प्रदान, ७५, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद
कंचनलता सब्बरवाल डॉ०, गृह विज्ञान, ४०४, क्रा० हिन्दी भवन, इलाहाबाद
गांधी महात्मा, हमारी मांग, पु० मु०, १६०, क्रा०, सस्ता साहित्य मन्डल, नई दिल्ली,
श्री कृष्णलाल डॉ०, करुणापति त्रिपाठी सं, हीरक जयती-ग्रन्थ, १०००, क्रा०, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
जेम्स एस० रौस, अनु० मदनलाल जैन, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, ३८०, क्रा०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क० लि०, आग

[शेष पृष्ठ ४६८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रति ।)

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है: पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$"×६" या २$\frac{3}{4}$"×८"। चौथाई पृष्ठ: २$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच: १"×२$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग: ५$\frac{1}{2}$"×६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं:

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ: ३०)। आधा पृष्ठ: १७॥)। चौथाई पृष्ठ: १०)। एक कालम इंच: ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में: ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में: ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में: ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीश सक्सेना, क
मुनीश सक्सेना,
रघुपतिसहाय
रघुवीरशरण
विनो

Regd. No. D

[Im]portant announcement

from

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

★

Second, Revised Edition of

ASOKA

by

Dr. Radha Kumud Mookerji,
M. A., Ph. D., D. Litt., F. A. S. B.,

This historical treatise on the life and times of ASOKA will be published by the end of May 55 at Rs. 15/- per copy. Booksellers are requested to book their orders early. No library or student of Asokan period of India's past can afford to be without this important publication.

Please also write for CHANDRAGUPTA MAURYA AND HIS TIMES by the same author. Price Rs. 15/-.

★

AUTHORISED HINDI RENDERINGS OF

★ INDIAN ECONOMICS ★
Two Volumes
by G. B. Jathar and S. G. Beri

★ THE SUBSTANCE OF POLITICS ★
by A. Appadorai

★ MODERN CONSTITUTIONS ★
by K. C. Wheare

These books are expected to be released shortly, in time for the new educational session. Detailed pre-publication prospectuses, giving gist of contents and other relevant information about these very important additions to educational literature in Hindi, will be made available, separately for each book, before the end of May 55. On hearing from you at any of our offices at Delhi, Allahabad, Bombay and New Delhi, copies of prospectuses will be despatched to your address as soon as they are ready.

LIBRARIANS MAY PLEASE REMEMBER TO BOOK THEIR REQUIREMENTS SOON WITH THEIR RESPECTIVE BOOKSELLERS.

Wholesale trade enquiries may be addressed to :

RAJKAMAL PUBLICATIONS LTD

1, Faiz Bazar, Delhi — *15-A Mahatma Gandhi Marg, Allahabad* — *Himalaya House, Hornby Road, Bombay-1* — *N 38 Connaught Circus, New Delhi*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून, १९५५ अङ्क १०

प्रकाशन समाचार

(वार्षिक २॥) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

गुरुकुल पत्रिका

चिर-प्रतीक्षित

हिन्दू सभ्यता

लेखक :

डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी

पी-एच० डी०, डी० लिट्०, एफ० ए० एस० बी०, एम० पी०

अनुवादक :

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल

इसी मास में तैयार हो जायगी। यदि अब तक आपने आर्डर न भेजा हो तो आज ही भेजें।

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल से प्राप्य नई पुस्तकें

उपन्यास

- कली मुसकराई, सत्यप्रकाश संगर ३)
- एक था, शीला शर्मा २)
- लहरें, रामदेव ६)
- अर्हत का शाप, जान-ओ-हिन्द ३|||)
- बड़ी-बड़ी आँखें, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ३|||)
- लकीरें, ओमप्रकाश २||)
- शेखर, भाग १, अज्ञेय ५)
- पच्चीसवाँ घण्टा, अनु० भदन्त आनन्द कौशल्यायन ६)
- समाधान, रामावतार त्यागी २)
- अपराधी कौन, इन्द्र विद्यावाचस्पति ५)
- पवित्र पापी, नानकसिंह |||≡)||
- सेठ बांकेमल, अमृतलाल नागर १||)
- रज़िया की बेटी, अनु० नरोत्तम नागर ७)
- तावीज, अनु० मगनलाल जैन १||)

कहानी

- परिस्तान, रूपान्तरकार, फ़िराक़ गोरखपुरी ३||)
- पान फूल, मार्कण्डेय २||)
- कला का अनुवाद, माखनलाल चतुर्वेदी २|)

नाटक

- वाह रे मैं वाह, के० एम० मुन्शी ४)
- नया समाज, उदयशंकर भट्ट १||)
- अंजो दीदी, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' २|||)
- दिमागी दण्ड बैठक, श्रीमती दुलारी ||)

काव्य

- उमंगें, मुकुल ३|||)
- त्रिपथगा, भगवतीचरण वर्मा २)
- धूप के धान, गिरिजाकुमार माथुर ३)
- और विश्वास बढ़ता गया, शिवमंगल सिंह 'सुमन' ३)
- काव्य-धारा, सम्पादक-शिवदानसिंह चौहान ६)

आलोचना, साहित्य और संस्कृति

- हिन्दी निबन्ध, प्रभाकर माचवे
- प्रेमचन्द और गोर्की, सं० शचीरानी गुर्टू
- हिन्दी आलोचक, सं० शचीरानी गुर्टू
- हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
- कबीर साहित्य की परख, परशुराम चतुर्वेदी
- कथाकार जयशंकर प्रसाद, हरस्वरूप माथुर
- आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नामवरसिंह
- साहित्यानुशीलन, शिवदानसिंह चौहान
- छायावाद की काव्य-साधना, प्रो० क्षेम एम० ए०
- शरत के नारी पात्र, रामस्वरूप चतुर्वेदी
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० रामविलास शर्मा
- काव्य यथार्थ और प्रगति, डॉ० रांगेय राघव
- समीक्षा और आदर्श, डॉ० रांगेय राघव
- काव्य के मूल विवेच्य, डॉ० रांगेय राघव
- महाकाव्य विवेचन, डॉ० रांगेय राघव
- रेडियो नाट्य-शिल्प, सिद्धनाथ कुमार
- मध्यकालीन शृङ्गारिक प्रवृत्तियाँ, परशुराम चतुर्वेदी
- मनु का राजधर्म, डॉ० श्यामलाल पाण्डेय
- कालिदास का भारत, भाग, २, भगवतशरण उपाध्याय
- मेरे निबन्ध जीवन और जगत, गुलाबराय एम० ए०
- मैं धरती पंजाब की, नरेन्द्र धीर

मनोविज्ञान तथा विविध

- मनोविज्ञान और शिक्षा, डॉ० पद्मा अग्रवाल
- व्यक्तित्व, डॉ० पद्मा अग्रवाल
- नीहारकाएँ, डॉ० गोरखप्रसाद चौबे
- राजकीय व्यय प्रबन्ध के सिद्धान्त, गोरखनाथसिंह
- कलकत्ता से पीकिंग, भगवतशरण उपाध्याय
- गृह-विज्ञान, कंचनलता सब्बरवाल

यदि आपके पास अब तक ये पुस्तकें न पहुँची हों तो आज ही आर्डर दीजिए।

राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज बाज़ार, दिल्ली | हिमालय हाऊस, हार्नबी रोड, बम्बई | १५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक १० :
: पूर्णाङ्क २२ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

रत की केन्द्रीय सरकार के तत्त्वावधान में 'साहित्य कादमी' ने तथा कुछ हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारों ने र हिन्दी-ग्रन्थों के प्रकाशन की योजनाएँ प्रचारित की हैं। न्दी-प्रकाशनों को सरकारी स्तर पर निकालने के पीछे इस द्धान्त की प्रेरणा तो नहीं ही है कि समाजवादी शासन-त्र में उत्पादन के साधन सरकारी स्वामित्व में होने चाहिएँ। मान्य (जनरल) पुस्तकों के प्रकाशन का धन्धा न उद्योग न उन्नत व्यवसाय ही। यह व्यवसाय पूँजी को आकर्षित ने में असफल हुआ है। यद्यपि पाठ्यक्रम की पुस्तकों के शन में खूब लाभ है, और इस क्षेत्र के प्रकाशक सम्पन्न लेकिन यह व्यवसाय श्रम और योग्यता से अधिक अन्य क्तों के आधार पर फलता-फूलता है। इसी कारण शिक्षा-र के इस अनन्य साधन के क्षेत्र में सरकारों ने राष्ट्रीयकरण नीति अपनाई है।

तो क्या सरकारों द्वारा हिन्दी-ग्रन्थों का प्रकाशन हिन्दी राष्ट्रभाषा के पदानुरूप सम्पन्न करने के लिए आयोजित रहा है? क्या हिन्दी-साहित्य की कमियों और अभावों को कारी प्रयास से पूरित किया जायगा? हिन्दी में वैज्ञानिक हित्य एकदम नहीं है। एनॉटमी, मेडिसन, हायर फ़िजिक्स, गणित, जीव-शास्त्र, प्राणि-शास्त्र, रसायन-शास्त्र दि-आदि अनेक विषय अभी अछूते पड़े हैं। प्रकाशक विषयों की पुस्तकें बिक्री की असम्भावना में प्रकाशित ने का साहस नहीं कर पाते। हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य पुस्तकें प्रकाशित करना इस दृष्टि से सरकार का आवश्यक व्य हो जाता है। यदि केन्द्रीय और अन्य सरकारों ने यही किया होता तो निश्चय ही यह हर्ष का विषय होता।

लेकिन हम देखते क्या हैं? 'साहित्य अकादमी' द्वारा भारतीय प्रकाशनों की एक सूची, कालिदास की कृतियों के अनुवाद, संस्कृत-साहित्य की श्रेष्ठ रचनाओं के संग्रह, भारतीय कविता का प्रतिनिधि-संकलन, १९५३ की सर्वश्रेष्ठ कविताओं का संग्रह, विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्यों के इतिहास, लेखकों का परिचय-कोष, आदि-ग्रन्थ का आंशिक अंग्रेजी अनुवाद इत्यादि प्रकाशनों की योजना बनाई गई है। उत्तरप्रदेश की सरकार ने भी इसी प्रकार के साहित्यिक प्रकाशनों की योजना प्रचारित की है। बुद्ध की जीवनी छापी जा रही है। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा और विभूतियों पर प्रशस्ति-ग्रन्थ निकाले जायँगे। क्या ऐसी पुस्तकों के लिए प्रकाशन-संस्थाओं की कमी थी? इन विषयों की पुस्तकों का हिन्दी में या अन्य भाषाओं में अभाव भी नहीं है। कविताओं के संग्रह और कालिदास की कृतियों के अनुवाद प्रस्तुत करना सांस्कृतिक प्रयास का भाग हो सकता है, लेकिन हिन्दी का कोई अभाव इससे दूर नहीं होगा। देश के बहुमुखी निर्माण के इस संक्रान्ति-युग में ऐसे साहित्य से क्या लाभ पहुँचेगा? कितने ही प्रकाशक इन्हीं विषयों की पुस्तकें अरसे से निकाल रहे हैं; उन्हें अवश्य हानि हो सकती है। प्रकाशक जब किसी पुस्तक को छापता है तो उसे छापकर, बेचकर उसमें से लाभ पाने का ध्येय उसके सामने होता है। महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित करना हो तो यदि लाभ न हो तो नुकसान भी न होना चाहिए। उसे किसी भी अन्य व्यवसाय की भाँति प्रत्येक प्रकाशन के कुल आर्थिक संगठन की जाँच करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती है। सरकारें जब पुस्तकें प्रकाशित करती हैं तो आय-व्यय का कोई लेखा उनके सामने नहीं रहता। वे स्वयं ही प्रकाशक और स्वयं ही ग्राहक होती हैं, क्योंकि सरकारी पुस्तकें मुख्यतया शासकीय सहायता से पोषित पुस्तकालयों में ही बँटती हैं। लागत से कहीं कम दाम रखा जाता है।

कविता, नाटक, और साहित्य के इतिहास, और ऋग्वेद का मलयालय में अनुवाद, साहित्यिकों की सूचियाँ और फोटो, और बुद्ध-चरित्र छापकर हम प्रथम या द्वितीय पंचवर्षीय योजना के किस ध्येय की पूर्ति कर रहे हैं? प्रकाशन के क्षेत्र में इस प्रकार के आभूषणात्मक प्रकाशनों पर रुपया लगाना देश के कष्ट-संचित धन का महान् अपव्यय है। वैज्ञानिक साहित्य के प्रकाशन की उपेक्षा आज गम्भीर अपराध से कम नहीं है। निर्माणात्मक साहित्य के प्रकाशन के स्थान पर ललित-साहित्य का प्रकाशन सामन्ती युग की आवश्यकताओं के प्रति महती उपेक्षा से किसी नहीं है। इन योजनाओं को कार्यान्वित करने उत्तरदायी कुछ साहित्यिकों का आत्म-तोष इसमें सकता है, लेकिन देश का और हिन्दी का लाभ बराबर रहेगा। सरकारी स्तर पर ललित साहित्य का कोई औचित्य हमें दीख नहीं पड़ता—कम-से-अगली पंचवर्षीय योजनाओं को घटित कर लेने तक आवश्यकता है कि हिन्दी में और देश की अन्य आज के विज्ञान-युग के अनुरूप वैज्ञानिक साहित्य अधिक प्रकाशन हो कि उससे देश में विज्ञान के प्रचार और अन्वेषण को प्रेरणा और बल मिले। तभी फूलेगी; देश आगे बढ़ेगा।

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द। पृ०

२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५, सजिल्द।

३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग इकरंगे आर्टपेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।

४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया विहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी

५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२।

७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।

८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ-संख्या ३६२। सजिल्द।

९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज़। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

न्दी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग, और दक्षिण भारत हिन्दी चार सभा, मद्रास ने अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक घ की सदस्यता स्वीकार कर ली है। संघ के प्रथम सम्मे-न ने जिन सार्वजनिक संस्थाओं को संस्था का सदस्य बनने निमन्त्रण दिया था, उनमें से निम्नलिखित संस्थाओं की वीकृति अब तक प्राप्त हो चुकी है : 'हिन्दी-साहित्य सम्मे-न' (प्रयाग), 'नागरी प्रचारिणी सभा' (काशी), क्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' (मद्रास), 'हिन्दुस्तानी केडेमी' (प्रयाग), 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' (वर्धा)। रकारी संस्था होने के नाते 'बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्' टना) अभी तक अपनी स्वीकृति नहीं दे सकी, लेकिन परि-द् इस प्रश्न पर विचार कर रही है। आशा है कि प्रयाग 'साहित्यकार संसद्' और पटना की 'बिहार राष्ट्रभाषा रिषद्' संघ की सदस्यता शीघ्र ही स्वीकार कर लेंगी।

◈ ◈ ◈

खिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रधान श्री चन्द्र टण्डन को 'इण्टर्नेशनल पब्लिशर्स असोसिएशन' अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ) के स्विट्ज़रलैण्ड तथा लण्डन स्त कार्यालयों से प्रधान तथा उप-प्रधान ने इस संस्था का दस्य बनने का न्यौता दिया है। विश्व के पूर्वी हिस्से में ही पहली संस्था है जिसे **अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशक संघ** का दस्य बनाया जा रहा है। अगले वर्ष यूरोप में होने वाले प्रकाशक संघ के १४वें अधिवेशन में भारत भाग लेगा। अन्तरराष्ट्रीय संस्था का निर्माण १९वीं सदी के अन्तिम ों में हुआ था। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशकों की सम-ओं पर विचार और समाधान यह संस्था किया करती है।

◈ ◈ ◈

खिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रकाशक सम्मेलन' (बनारस) की स्थायी समिति की सदस्य-सूची में श्री ओंका शरद (लहर प्रकाशन, इलाहाबाद) का नाम प्रकाशित किया गया था। उनका नाम बिना उनकी अनुमति के इस समिति में लिख दिया गया था। इसके विरुद्ध जो पत्र उन्होंने 'सम्मेलन' के प्रधानमन्त्री को लिखा, उसकी प्रतिलिपि हमें प्रकाशनार्थ भेजी है :

"प्रिय महोदय जी,

'हिन्दी प्रचारक' के अप्रैल अंक में प्रकाशित उपरोक्त सम्मेलन की स्थायी समिति में अपना नाम देखकर महान् आश्चर्य हुआ। कृपया मेरा नाम आप इस सूची से अलग कर दें। मैं समझता हूँ कि आप भी इस नियम को अवश्य मानते होंगे कि किसी भी समिति में किसी व्यक्ति को रखने के पूर्व उससे पूछ लेना चाहिए।

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना का अभूतपूर्व ग्रन्थ

प्रेमचन्द और गोर्की

सम्पादिका : शचीरानी गुर्टू

प्रेमचन्द और गोर्की के समग्र साहित्य के विषय में विविध समीक्षकों के विचारों का महत्त्वपूर्ण संकलन

पृष्ठ संख्या : डिमाई ६२५; मूल्य ९)

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुरसेन

(चतुरसेन-साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका)

आचार्य चतुरसेन, जिनकी एक ही कलम पचास वर्ष से अनवरत चल रही है और जिन्होंने इसी मास एक सौ छब्बीसवें ग्रन्थ की पाण्डुलिपि पर हस्ताक्षर किये हैं—हिन्दी-साहित्य में लोह-लेखनी के धनी विख्यात हैं। आज के तरुणों के पिताओं ने उन्हें पढ़ा है, आज के तरुण उन्हें पढ़ रहे हैं और अगली पीढ़ियाँ उन्हें शताब्दियों तक पढ़ेंगी। अपने अगाध पाण्डित्य, लेखन-सामर्थ्य और भाषा-चमत्कार से वे चोटी के साहित्य-स्रष्टा माने जाते हैं। अब हमने उनकी गहन अध्ययन, गवेषणापूर्ण तथा अभिव्यञ्जनाओं से ओत-प्रोत साहित्य-सम्पदा को, जिनके जादू-भरे प्रभाव से सहस्र-सहस्र जन भावाविष्ट हो आनन्दाश्रु बहाते हैं, त्रैमासिक पत्रिका के रूप में निकालना आरम्भ किया है। अपने ढंग की यह निराली साहित्यिक पत्रिका है। हमें आज्ञा दीजिए कि पत्रिका आपके नाम जारी की जाय। वार्षिक शुल्क बारह रुपए। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है। सब अंक सुरक्षित पहुँचने की दृष्टि से रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं जिसका डेढ़ रुपया अधिक। कुल साढ़े तेरह रुपए मनीआर्डर से भेजिए।

साइज=१८×२२ अठपेजी, पृष्ठसंख्या १२०, बढ़िया एण्टिक पेपर, उत्कृष्ट छपाई, आवरण=आर्ट पेपर पर पंचरंगी छपाई, आचार्य जी का सबसे नया तिरंगा फोटो। शिक्षा-संस्थाओं और एजेन्सियों को २५%कमीशन।

प्रकाशक

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, दिल्ली (शाहदरा)

आपके सम्मेलन का तो मुझे निमन्त्रण भी मिला था, लेकिन मैं केवल इसलिए ही बिना बुलाए गया था कि पिछले वर्ष बन चुके प्रकाशक-संघ से भी सहयोग हो जाए, लेकिन जब उसकी सम्भा रही, तब मैं आपके सम्मेलन के बीच ही वापस आया था। मैं समझता हूँ कि इस समय प्रकाशन पर जितनी परेशानियाँ आ गई हैं उनका सामना हम सहयोग द्वारा ही कर सकते हैं और हममें सहयो कितनी कमी है इसका उदाहरण केवल यह है कि दो-दो संघ बन गए हैं। कामकाज की बात तो दूर, आपसी तू-तू मैं-मैं अभी से विस्तार पा रहा है। वातावरण में मैं चाहूँगा कि मुझे आप अपने सम्मेल इस भार से मुक्त ही रखें।

मेरी राय तो यही है कि केवल एक ही प्र संगठन हो। और इसी प्रेरणा से प्रेरित होकर यह रहा हूँ। विशेष कृपा।

भवदीय
ओंकार श

◈ ◈ ◈

सहयोगी प्रकाशन मन्दिर लि०, दतिया, लिखते जो प्रकाशक पारस्परिक सहयोग एवं प्रचार के निमि वर्तन की नीति स्वीकार करें, वे पचास-साठ रुपये मूल्य की अपनी पुस्तकों की दो-दो-चार-चार प्रतियाँ रेलवे से भेज दें। बदले में वे उतने ही मूल्य की अपनी निम्न पुस्तकें भेज देंगे; (क) हिन्दी की योग्यता कैसे बढ़ाएँ वर्मा विद्यार्थी शब्दकोष, (ग) भारत भक्ति, गद्य का वीरांगना लक्ष्मीबाई, (ङ) वाणिज्य नीति।

◈ ◈ ◈

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, शाहदरा (दिल्ली) ने मई से 'चतुरसेन' नाम की त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया है। सम्पादिका हैं आचार्य चतुरसेन शास्त्री की पत्नी श्रीमती कमलकिशोरी देवी। पत्रिका में चतुरसेन ही लेख अथवा मात्र उनसे सम्बन्धित लिखे गए अन्य के लेख प्रकाशित होंगे। वार्षिक मूल्य १२) तथा ए का ३) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दराबाद राज्य में

प्राथमिक शिक्षा की प्रगति

हैदराबाद राज्य के शिक्षा-मन्त्री श्री गोपाल राव एकबोटे द्वारा ऑल इण्डिया रेडियो से प्रसारित यह वार्ता साभार यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

भी शिक्षा प्रणाली सफल नहीं हो सकती, यदि वह की, काल के अनुसार बदलती हुई जरूरतों को पूरा के लिए अपने-आपको उनके अनुरूप न ढाल सके। सवीं शताब्दी के उत्तर भाग में हिन्दुस्तान में जो शिक्षा-ली जारी की गई, उसका उद्देश्य सरकारी दफ्तरों की पूरी करना था। अव्यवहारी तथा जीवन की वास्तविक-ों से दूर होने के कारण वह देश के लिए सर्वथा अयोग्य शिक्षित वर्ग में जैसे बेकारी बढ़ती गई वैसे शिक्षा-स्था की पुनर्रचना के लिए नई-नई योजनाएँ सोची जाने । उन सबका यही उद्देश्य रहा कि देश की सांप्रत श्यकताएँ उनसे पूरी हो जायँ। इन योजनाओं के प्रमुख ये हैं कि निरक्षरता को शीघ्र नामशेष करने के लिए भी उपाय स्वीकार किये जायँ तथा शिक्षा को व्यावहारिक दिया जाय।

जिस देश में केवल दस प्रतिशत जनसंख्या साक्षर हो सार्वत्रिक शिक्षा के अतिरिक्त और कोई शैक्षणिक समस्या रा ध्यान अधिक आकर्षित करने के योग्य नहीं हो सकती। नायें प्राथमिक शिक्षा के प्रस्ताव की आवश्यकता को भी इन्कार नहीं कर सकता। परन्तु प्रश्न यह है कि के लिए जरूरी धन की प्रचण्ड राशि कैसे पाई जाय? अंश में इसी कठिनाई के कारण वर्धा योजना के प्रणे-ा ने यह सिफारिश की कि प्राथमिक पाठशाला के छात्र ने-पढ़ने के साथ इतना धनोत्पादन भी करें जिससे कि वह शाला स्वावलम्बी बन जाय। किन्तु अब यह साधारणतः गया है कि इससे उनकी शिक्षा में कोई बाधा न हो। भारत के लगभग पैंतीस करोड़ जनसंख्या के केवल ह प्रतिशत बालक पाठशालाओं में शिक्षा पाते हैं। प्राथमिक पाठशाला में दाखिल होने वाले बच्चों में से केवल बीस प्रतिशत पाँचवीं श्रेणी तक पढ़ते हैं। पाँच वर्ष की शिक्षा पर भी पाई हुई साक्षरता स्थायी नहीं होती। इसके सबब शिक्षा पर किया हुआ व्यय निष्फल और प्रयत्न अपरिणाम-कारक होते हैं। सख्ती के बिना न तो खर्च में किफायत हो सकती है और न कार्य में सफलता। आठ वर्ष की सख्ती की उपस्थिति से शैक्षणिक क्षय कम होकर साक्षरता स्थायी बन जाने का विश्वास हो सकता है। सख्ती की शिक्षा सफल होने के लिए वह मुफ्त होना आवश्यक है। शिक्षा एक मानवी तथा नागरिक अधिकार है, अतः पर्याप्त धन की प्राप्ति आवश्यक हो जाती है।

हमारी प्राथमिक शिक्षा अपूर्ण तथा अरोचक रही है। उसका दृष्टिकोण विद्यालयीन पाठ्यक्रम के विषयों से संकीर्ण हो चुका है। वह न तो बालकों के मनोविज्ञान पर आधारित है और न राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकताओं से निगडित है। उसकी पुनर्रचना किन क्षेत्रों में की जाय? अपने पुस्तकी वातावरण के कारण पाठशालाएँ सामाजिक तथा उत्पादक जीवन की वास्तविक माँगों के लिए बच्चों को तैयार करने में असमर्थ होती हैं। देहाती बालकों को अपनी उपजीविका खेतीबाड़ी से चलानी पड़ती है और उसी काम में दिल लगाना पड़ता है। परन्तु उन्हें लिखने, पढ़ने और हिसाब करने की पाठशाला में जो तालीम मिलती है वह उनकी परिस्थिति के ज्वलन्त प्रश्नों से मेल नहीं खाती। अतः वे इस तरह की शिक्षा से उच्चतर नागरिक या कृषिकार नहीं बन पाते। आवश्यकता इसकी है कि जीवन और उसकी जरूरतों, माँगों और समस्याओं की जाँच पड़ताल की जाय तथा बच्चों और उनकी प्रवृत्तियों, भावनाओं और रुचियों का परीक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाय। फिर ऐसी शिक्षा-प्रणाली का अनुसन्धान किया जाय जो इन दोनों पर निर्भर करती हो।

राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली का यह लक्ष्य होता है कि सब बालकों को ऐसी शिक्षा दी जाय जिससे वे अपनी रोजी कमा सकें तथा नागरिकता के कर्तव्यों का पालन कर सकें। अतः वह सार्वत्रिक आवश्यक निःशुल्क तथा दीर्घ होनी होगी। यह छः से चौदह साल तक की बुनियादी तालीम स्वयं पूर्ण होगी। किन्तु हैदराबाद राज्य में आवश्यक प्राथमिक शिक्षा शीघ्र-से-शीघ्र विस्तृत परिमाण में और कम-से-कम व्यय से प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक तालीम ग्यारह साल तक प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया है।

गांधीजी ने लिखा है 'मेरी समझ में शिक्षा का अर्थ यह है कि बालक की शरीर, मन और आत्मा से सम्बन्धित जो सुप्त क्षमताएँ होती हैं उन्हें जाग्रत तथा उत्तेजित किया जाय। निरी साक्षरता शिक्षा नहीं कहलाती। अतः मैं किसी बालक की शिक्षा का आरम्भ उसे कोई उपयोगी हस्त-कौशल सिखाकर ही करूँगा जिससे कि वह शुरू से ही कुछ उत्पादन कर सके।' गांधी जी प्रणीत इस 'नई तालीम' की पाँच विशेषताएँ हैं: क्रिया निर्भरता, परस्पर सम्बन्ध, उत्पादक भाव, शारीरिक श्रम का आदर तथा, नागरिकता का ध्येय। बुनियादी तालीम में शिक्षा उत्पादक अथवा विधायक कार्यों द्वारा दी जाती है। यह क्रिया कलाकौशल के रूप में होती है और बालक के प्राकृतिक तथा सामाजिक परिस्थिति के अनुरूप ढाली जाती है।

'नई तालीम' में बालक कर्म द्वारा सीखते हैं, अतः वे पाठ्यक्रम के विविध विषयों के अभ्यास की जरूरत को समझने लगते हैं। 'नई तालीम' का उद्देश्य तब तक हासिल नहीं होगा जब तक पाठ्य-विषयों का अध्यापन किसी कर्म के द्वारा अन्योन्य सम्बन्धित न किया गया हो। इस प्रणाली को यशस्वी बनाने के लिए विषयों का परस्पर सम्बन्ध बहुत जरूरी है। इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, भाषा, चित्र-कला तथा संगीत किसी हस्त-व्यवसाय द्वारा पढ़ाए जायँ।

कर्म बालक के लिए आशयपूर्ण होना चाहिए। उद्देश्य रखकर किया हुआ कर्म सदा उत्पादक हो सकता है। निस्सन्देह, बुनियादी पाठशाला की कृतियों का सोच-समझकर किया हुआ आयोजन, विद्यालय के खर्च को कुछ अंशों में पूरा कर सकता है। बुनियादी तालीम में बच्चों को हस्त-[...] करने पड़ते हैं, जिससे वे श्रमिकों का आदर करना सीख[...] प्रजासत्ताक भारत की शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य स्वा[...] तथा उपयोगी नागरिक तैयार करना है। इसी ध्येय [...] यादी शिक्षा में महत्त्व दिया गया है। बुनियादी पा[...] समाज का सूक्ष्म रूप होती है। पाठशाला तथा स[...] बीच गहरा सम्बन्ध होता है।

यह पहले ही बताया गया है कि नई तालीम में [...] का माध्यम विधायक कर्म होता है। इसका मतलब [...] कि पाठशालाओं में साधारणतः जो विषय पढ़ाए [...] उन्हें नई तालीम में जगह नहीं। अतः बुनियादी पाठ[...] में इन कला-कौशलों की तालीम होती है— कताई तथा [...] बाग लगाना तथा कृषि, कागज, लकड़ी तथा धातु [...] चमड़े का काम, मिट्टी का काम, मुर्गियाँ पालना, गृह[...] इत्यादि। इन व्यवसायों के अतिरिक्त भाषाएँ, जैसे मा[...] राष्ट्रभाषा (चौथी श्रेणी से) और अंग्रेजी (छटी श्रे[...] सामाजिक विषय, गणित, विज्ञान, चित्रकला व संगीत, [...]रिक व्यायाम व खेल का भी समावेश होता है।

दो साल हुए इस राज्य में 'अनिवार्य प्राथमिक [...] का कानून पास हुआ। उसके अनुसार अब प्रत्ये[...] बीस ग्रामों का एक गुट तथा हैदराबाद और सि[...] शहरों में एक-एक गुट, इस तरह कुल चार सौ बाई[...] में यह कानून लागू किया गया है। दूसरी पंचवर्षी[...] में प्रत्येक जिले में एक सौ ग्रामों का एक गुट, इस त[...] दो हजार ग्रामों में प्राथमिक शिक्षा आवश्यक [...] व्यवस्था की गई है। भारतीय घटना के अनुसार उद्दि[...] रखा गया है कि छः से चौदह साल तक के बा[...] निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा दी जाय, किन्तु उसकी पू[...] के रूप में इन बच्चों के लिए आर्थिक आवश्यक सुवि[...] का निश्चय हुआ है।

भारत की दूसरी पंचवर्षीय योजना में यह उद्दि[...] गया है कि छः से चौदह साल के साठ प्रतिशत बाल[...] शाला में लाए जायँ। यह इस प्रकार होगा कि छः [...] साल के बच्चों की अब की शालेय संख्या के डेढ़ गुने [...] और ग्यारह से चौदह साल के दुगने बालक पाठशा[...]

[शेष पृष्ठ ५१० पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

साहित्य साधना की पृष्ठभूमि

लेखक : श्री बुद्धिनाथ झा 'कैरव'

आलोचना-साहित्य में अनुपम देन : मूल्य ६) मात्र

"पुस्तक में छः अध्याय हैं—साहित्य-तत्त्व-विमर्श, काव्य-तत्त्व-विमर्श, अलंकार तत्त्व विमर्श, रस-तत्त्व-विमर्श, दृश्य-काव्य-तत्त्व-विमर्श, कथा-साहित्य-विमर्श। इस गम्भीर ग्रन्थ-प्रणयन के लिए 'कैरव' जी धन्यवाद के पात्र हैं। यह पुस्तक निस्संदेह विश्व-विद्यालय में अध्ययन के लिए रखी जा सकती है, क्योंकि इसमें मूल-ग्राही सिद्धान्त-विवेचन है।"

—कल्पना, हैदराबाद।

आधुनिक-काव्य

- ोदय : श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' १।)
- ोक : श्री रामदयाल पाण्डेय १॥)
- र : श्री यमुनाप्रसाद चौधरी 'नीरज' १।)
- और पत्थर : प्रो० कपिल १)

नाटक

- राष्ट्रपति : श्री हंसकुमार तिवारी १।॥)
- ाई : श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी' २)
- ूत : श्री अनूप १।)
- न-करण : श्री रामदीन पाण्डेय १)

समालोचना

- ह बातें : प्रो० कपिल १)
- ना कानन : श्री रामखेलावन पाण्डेय १॥)

ग्रामोपयोगी साहित्य

- -सब्जी की खेती : पं० वासुदेव पाण्डेय २)
- ओं का अनुभूत इलाज : श्रीरंग तिवारी १॥)
- ौधों का संसार : रामनन्दन सिंह २।)
- य और भूमि : ॥≡)

उपन्यास

- िया आदमी : पं० छविनाथ पाण्डेय ३)
- पनाल में : ,, ,, ३)
- ार : ,, ,, ३)
- नी दुनिया : श्री सुरेश्वर पाठक २॥।)
- ् आसिम : श्री मदनलाल खेमका २।)

कहानियाँ

- मृत्यु के मुँह में : श्री छविनाथ पाण्डेय १।=)
- बोलती तस्वीरें : श्री शिवचन्द्र प्रतापनारायण १।)

राजनीति

- हम और हमारा समाज : श्री सुरेश्वर पाठक २।)
- भूला हुआ भारत : पं० जवाहरलाल नेहरू १)

गांधी-साहित्य

- राष्ट्रपिता : श्री छविनाथ पाण्डेय ॥≡)
- गांधी की गूँजती आवाज : अखिल ।≡)
- बापू की सीख : श्री सुरेश्वर पाठक ।≡)
- बापू की बातें : ,, ,, ॥=)
- बापू को जानो : ,, ,, ॥≡)

कथा-कहानी

- मराठी गाथाएँ : क्षीर सागर ॥)
- मलयालम कहानियां : कृष्ण गोपालन ॥)
- विदेशी गाथाएँ : सदानन्द झा ॥)
- सुनहले पंख : ,, ॥)
- हमारे युग-पुरुष : श्री सुरेश्वर पाठक १)
- आदि मानव : ,, ॥।)

सामान्य ज्ञानवर्द्धक

- समुद्र आत्मकथा : श्री नरेन्द्र बी० ए० ॥)
- गुलिस्तां : अखिल ॥)
- तुलसी दल : श्री सुरेश्वर पाठक ॥=)
- हमारी गंगा ,, ,, ॥=)

ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ५०८ से आगे]
समाविष्ट किये जायँ। यह लक्ष्य साध्य करने के हित पाँच हजार नई पाठशालाएँ स्थापित करनी होंगी, जिनमें से आधी यानी दो हजार पाँच सौ बुनियादी प्रकार की होंगी। इसके अतिरिक्त सांप्रत की तेरह हजार पाठशालाओं का तीसरा भाग अर्थात् लगभग चार हजार पाठशालाओं का बुनियादी शालाओं में रूपान्तर किया जाय।

इन छः हजार पाँच सौ पाठशालाओं के हित लगभग पन्द्रह हजार बुनियादी तालीम में विनीत (Trained) शिक्षकों की आवश्यकता होती। इस समय शिक्षकों के विनयन के लिए ग्यारह ट्रेनिंग स्कूल हैं जिनमें इस साल पाँच की वृद्धि होगी, यानी प्रत्येक विनयन शाला में दो सौ शिक्षकों के विनयन की व्यवस्था करनी होगी। सांप्रत शिक्षकों के विनयन की अवधि एक वर्ष है। 'नई तालीम' के अनुसार अध्यापकों को कला-कौशल तथा सामूहिक जीवन के कार्यों में भी बच्चों को तालीम देना होगा, जिसके लिए एक वर्ष की अवधि अपर्याप्त ठहरेगी। अतः विनयन की अवधि अब से दो वर्ष तक बढ़ाई गई है। इसके अतिरिक्त अध्यापकों का बौद्धिक स्तर उच्चतर बनाने के लिए इस नूतन वर्ष से मिडल ट्रेनिंग का अभ्यास-क्रम बन्द किया गया है और विनयन पाने के लिए शिक्षकों को कम-से-कम मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण होना जरूरी बना दिया गया है।

हमारी H. S. C. परीक्षा में इस समय लगभग छः हजार छात्र उत्तीर्ण होते हैं जो संख्या आने वाले पाँच वर्षों में नौ हजार तक पहुँचेगी। इनमें से तीन हजार को शिक्षक के व्यवसाय की ओर हमें आकर्षित करना होगा जिन्हें शिक्षक बनने से पूर्व बुनियादी विनयन देना होगा।

प्राथमिक पाठशालाओं में सहशिक्षा होती है और शिक्षा की इस अवस्था में लड़कियों के लिए अलग पाठशालाओं की व्यवस्था नहीं होती। अतः हमें प्रयत्न करने होंगे कि प्राथमिक पाठशालाओं के लिए लगने वाले नये शिक्षकों में से कम-से-कम एक तिहाई अर्थात् प्रति वर्ष एक हजार शिक्षक महिलाएँ हों। ग्यारह से चौदह वर्ष तक के बच्चों की संख्या हमारे राज्य में तेरह लाख है जिनमें से इस साल दस प्रतिशत माध्यमिक पाठशालाओं में ज्ञान ग्रहण करते होंगे। हमारी दूसरी पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य इस आयुगुट के पच्चीस प्रतिशत बच्चों को शिक्षा देना है। हैदराबाद राज्य में इस समय चार सौ ऐसी पाठशालाएँ हैं जिनमें पाँचवीं कक्षा तक पढ़ाई होती है। आने वाले पाँच वर्षों में माध्यमिक पाठशालाओं की संख्या एक हजार तक बढ़ानी होगी, जिनमें से कम-से-कम एक सौ बुनियादी पद्धति की होंगी। ऐसी पाठशालाएँ हर तालुके के मुख्यवास में तथा पाँच हजार जनसंख्या वाले प्रत्येक नगर में रहेंगी। भारत सरकार की योजना के अनुसार हैदराबाद राज्य में तीन सौ माध्यमिक पाठशालाओं में कला-कौशल की तालीम की व्यवस्था की जायगी।

हमारी आने वाली पंचवर्षीय योजना में यह प्रस्ताव रखा गया है कि सरकारी सहायता से चलने वाली (Voluntory) सब पाठशालाएँ एक या अधिक शिक्षक वाली पाठशालाओं में परिवर्तित हों। ऐसी एक शिक्षक वाली पाठशालाएँ पाँच सौ या उससे कम जनसंख्या वाले ग्रामों में रहेंगी। पाँच सौ से एक हजार जनसंख्या वाले देहातों में शिक्षक वाली पाठशालाएँ खोली जायँगी। इससे अधिक जनसंख्या के गाँवों में सब कक्षा वाली पाठशालाएँ, शक्य तो बुनियादी प्रकार की, स्थापित होंगी। आशा है कि वर्ष पश्चात् बुनियादी पाठशालाओं की संख्या आज की अपेक्षा चौगुनी होगी।

प्राथमिक, बुनियादी और माध्यमिक पाठशालाओं व ट्रेनिंग स्कूलों के बारे में अभी बताये हुए लक्ष्य के अनुसार दूसरी पंचवर्षीय योजना में प्रत्येक जिले में शिक्षा के प्रा... उद्दिष्ट रखे गए है। यह जनसंख्या के प्रमाणानुसार होंगे।

प्लानिंग कमीशन ने यह निर्देश दिया है कि नई पाठशालाएँ खोलते तथा प्रस्तुत पाठशालाओं का स्तर ऊँचा ... समय उन जगहों को अधिमान दिया जाय जहाँ इमारत ... आवश्यक सामग्री के लिए जरूरी चन्दा जमा किया गया ...

अब तक के वर्णन से स्पष्ट होगा कि आने वाले छः ... में प्राथमिक शिक्षा में, गुण और परिमाण दोनों विषयों में, ... कुछ प्रगति होने वाली है। फिर वह सही अर्थों में रा... जरूरतों को पूरा करेगी। अतः आवश्यक है कि केन्द्र और ... सरकारें, शिक्षा-संस्थाएँ सरकारी और खानगी, अध्यापक ... और छात्र, सामान्य जन और उनके नेता सब इस महत्व... कार्य में एक-दूसरे से सम्पूर्णतया सहकारी हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

...य सम्पादक जी,

... डायरेक्टर शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार, बीकानेर ...प्रेषित एक पत्र की नकल आपको प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ ...समें पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति पर प्रकाश डाला ...है :—

...वर महाशय,

कुछ समय से सरकारी नीति पाठ्य पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण ...ओर है और यदि इससे देश व खासकर विद्यार्थी-समाज ...कोई विशेष हित हो तो यह नीति अवश्य ही कार्य-रूप ...रिणत होनी चाहिए और हम स्वयं इसे अपना कर्तव्य ...मते हैं कि हम सरकार की इस नीति तो काम में लाने में ...रूप से सहयोग दें।

अपनी सरकार ने इस नीति को कार्यरूप में परिणत ...ने के उद्देश्य से कुछ पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण किया था और ...वर्ष जोधपुर डिवीजन में कक्षा १ से ८ तक की पुस्तकों ...से ११ पुस्तकों को शिक्षा-विभाग ने स्वयं प्रकाशित कर ...ने वितरकों द्वारा पुस्तक-विक्रेताओं में बँटवाने का प्रबन्ध ...। संगीत एवं ड्राइंग की पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकों ...व्यवस्था इतनी खराब रही कि—

(१) रजिस्ट्री से ऑर्डर देने पर भी प्रथम पाँच माह तक पुस्तकें सप्लाई नहीं की गईं।

(२) १००० की माँग करने पर २०० पुस्तकें दी गईं।

(३) बिना मँगाए उक्त पुस्तकों के नोट (Key) भेज दिये गए।

(४) पुस्तकों की छपाई खराब व अशुद्धिएँ रहीं।

(५) पुस्तकें समय पर तैयार नहीं हो पाईं।

(६) जनता की माँग का ध्यान न होने से प्रथम संस्करण जल्दी समाप्त हो गया।

(७) हर सप्ताह इन्स्पेक्टर ऑव स्कूल्स को लिखित सूचना देने पर भी व्यवस्था नहीं हो पाई; न वितरकों की खुली जाँच की गई।

(८) ये पुस्तकें चोर बाजार में कम कमीशन पर भी बिकीं।

(९) कक्षा छः की उर्दू की पुस्तक पूरा वर्ष निकल जाने पर भी न छपी।

फलस्वरूप परीक्षा के दिनों तक २० प्रतिशत छात्रों के पास राजकीय प्रकाशन की पुस्तकें नहीं थीं और आज भी जयपुर के श्री .... कक्षा ६ की अंग्रेजी और जोधपुर के श्री............... कक्षा ६ व ७ की 'सरल विज्ञान' नहीं दे रहे हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि अपनी सरकार द्वारा किये गए राष्ट्रीयकरण से विद्यार्थी-वर्ग एवं पुस्तक-विक्रेताओं को हानि ही हुई और हमारा यह अनुमान है कि सरकार एवं उसके अकर्मण्य वितरक भी अधिक लाभ नहीं उठा सके होंगे। ऐसी सूरत में केवल जिद करके इस हानिकारक नीति को अपनाये रखना उचित नहीं होगा।

अतः इस प्रश्न पर अच्छी तरह विचार करने के पश्चात् जोधपुर के "प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता संघ" ने अपनी दिनांक २२-५-५५ की साधारण बैठक में निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत किया है। आशा है आप इस पर विचार कर अपनी नीति में परिवर्तन करने की कृपा करेंगे।

प्रस्ताव इस प्रकार है:—

'प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता संघ की यह साधारण सभा राजस्थान सरकार की पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति का विरोध करती है और उसे तुरन्त बदलने की सलाह देती है।'

दिनांक—
२५-५-५५

विनीत—
कुँ० सरदारमल थानवी
मन्त्री
प्रकाशक एवं पुस्तक-विक्रेता संघ,
जोधपुर (राजस्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों का अनुचित व्यवहार

प्रिय सम्पादक जी,

आपके प्रतिष्ठित पत्र द्वारा मैं आपका ध्यान उन प्रकाशकों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो उदीयमान लेखकों और नवीन कवियों की गरदनों पर छुरी फेरते हैं। ऐसे प्रकाशक केवल अपनी हानि ही नहीं करते वरन् सत्-साहित्य की वृद्धि करने वाले लेखकों की रचनाओं को अपने अज्ञान की कब्र के नीचे भी गाड़ देते हैं।

मैं एक ऐसे बीस वर्षीय युवक को जानता हूँ जिसने एक पुस्तक लिखकर उसका प्रकाशन कराया। वह बीस पेजी पुस्तक हाथों-हाथ निकल गई। जिन दिनों वह युवक-लेखक प्रकाशकों के दफ्तरों के चक्कर काट रहा था, उसका परिचय लखनऊ के एक प्रसिद्ध प्रकाशक से हो गया। उसी समय प्रकाशक महोदय ने लेखक को एक पुस्तक लिखने का निमन्त्रण दिया।

डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम के पश्चात् लेखक ने ग्रन्थ को पूर्ण किया और प्रकाशक महाशय के सम्मुख प्रस्तुत किया। उस समय लखनऊ के एक विद्वान् ब्रह्मनारायण शर्मा, प्रिंसिपल, भारतीय विद्यापीठ, भी उपस्थित थे। उन्होंने प्रकाशक ने ग्रन्थ को श्रेष्ठ बताया। इसके बाद प्रकाशन-श्र ने टाल-मटोल ग्रन्थ-प्रकाशन के बारे में की। लेखक को पत्र सहित दूसरे प्रकाशक के पास भेजा। पत्र इस प्रकार था

'प्रिय बन्धुवर,

नमस्कार।

हम आपकी सेवा में अपने मित्र.........को भेज रहे हैं। आपकी हस्तलिखित पुस्तक के अन्तर्गत सूर, तुल पद्माकर, निराला आदि लगभग ३५ कवियों पर सुन्दर ढंग से आलोचना की गई है। आप पुस्तक देख मैंने स्वयं लिखाई थी, किन्तु इधर हम छापने में असम हैं। आप छाप लीजिए। बेचने की हम जिम्मेदारी लेते हैं पुस्तक हाथों-हाथ निकल जायगी।

भवदीय

.............'

उपरोक्त पत्र और पुस्तक लेकर वह लेखक अपने प्रकाशक महाशय के यहाँ गया। शिष्टता से वार्तालाप कि लेकिन उन महाशय ने केवल सूखा जवाब ही नहीं दिया ऐसे वचन कहे जो असभ्यता के परिचायक हैं। सारांश कि वह लेखक इधर-से-उधर और उधर-से-इधर दौड़ता

यह उदाहरण तो केवल जानकारी के लिए दिया हैं, लेकिन मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है हमारे साहित्य के कितने ही 'प्रेमचन्द' और 'टैगोर' होने से पहले ही मार दिये गए। मेरे एक अग्रज का तो तक कथन है कि यदि मामा प्रकाशक है तो भाँजा, प्रकाशक है तो भतीजा तथा पिता प्रकाशक है तो पुत्र बन जाता है। रचनाओं में चाहे खाक उड़ रही हो।

लेखक यों ही परेशान होते रहें और प्रकाशकों की प्रवृत्ति जारी रहे, क्या इसीसे साहित्य का उद्धार हो प्रकाशकों से प्रार्थना है कि वे सचेत होकर उचित दि चलें। नवीन लेखकों और कवियों को सलाह है कि वे शक्तिशाली संगठन बनाएँ और न्याय की आवा बुलन्द करें।

—श्री रामजी वक्ष सेवि
मुसाहब गंज, लखनऊ

दयालु प्रकाशकों, विक्रेताओं तथा धनिकों से !

एक उच्चादर्श किन्तु निर्धन एवं निराश्रित नये पुस्तकालय के लिए अच्छे लेखकों के मौलिक तथा अनूदित उपन्यास, कहानियाँ, आलोचना, साहित्य, शास्त्रीय, महाविद्यालयीन, शिक्षा आदि की पुस्तकें सिर्फ़ तिहाई या आधे मूल्य में चाहिएँ। जो दयालु प्रकाशक, विक्रेता तथा सहृदय धनी सज्जन जो-जो पुस्तकें रियायती मूल्य में बेचने की या भेंट करने की उदारता दिखा सकें वे पुस्तकों की सूचियाँ शीघ्र निम्न पते पर भेजें:—

यूनिवर्सल बुक सर्विस,
चिटनीसपुरा, नागपुर—२ (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान में शिक्षा-प्रसार

राजस्थान के डायरेक्टर आफ़ एजुकेशन कुंवर गजराजसिंह ने पत्रकारों से बात करते हुए राजस्थान की शिक्षा-प्रसार की योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस भेंट का वृत्तान्त 'सेनानी' से साभार प्रकाशित किया जा रहा है।

कुँवर गजराज सिंह, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, राजस्थान ने गत २५ अप्रैल को पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया कि प्रस्तावित २५ बहुउद्देशीय स्कूलों की योजना को आगामी जुलाई से कार्यान्वित किया जायगा। राज्य के इन २५ स्कूलों में दो स्कूल लड़कियों के हैं। इस योजना पर राज्य का लगभग १८ लाख रुपया खर्च होगा। अध्यक्ष महोदय ने आगे बताया कि तामीरात विभाग इन स्कूलों में निर्माण-सम्बन्धी आवश्यक परिवर्तन कर रहा है। आपने यह भी बताया कि इन स्कूलों के कार्यक्रम तथा पाठ्यक्रम के निर्धारण के लिए राजपूताना विश्वविद्यालय के उप-कुलपति की अध्यक्षता में एक कमेटी का निर्माण किया गया है जो अपनी रिपोर्ट एक मास के भीतर दे देगी। इन स्कूलों के संभावित पाठ्यक्रम की चर्चा करते हुए आपने बताया कि कृषि, हस्त-कला, गृह-विज्ञान तथा वाणिज्य को प्रमुखता दी जायगी।

शिक्षा के क्षेत्र में अन्य प्रस्तावित योजनाओं की चर्चा करते हुए आपने कहा कि इस वर्ष राजस्थान सरकार ने लगभग ४ करोड़ रुपया राज्य में शिक्षा के लिए निर्धारित किया है जो सम्भवतः भारत के समस्त 'ख' राज्यों के बजट से अधिक है। पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार भी राजस्थान में शिक्षा-प्रचार के लिए काफी धन दिया है। सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन द्वारा प्रस्तावित योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने के लिए ४६,८२,५०० रुपये की धन-राशि स्वीकृत की गई है जिसमें ३०,६०,००० रुपया केन्द्रीय सरकार खर्च करेगी और बाकी राजस्थान सरकार खर्च करेगी।

प्राइमरी शिक्षा

राज्य में साक्षरता के प्रचार के लिए आगामी वर्ष तक ...०० नये प्राइमरी स्कूल और खोल दिये जायँगे। ये ...पूर्व चलित ६०० से पृथक् होंगे और इस तरह प्रथम पंचवर्षीय योजना की समाप्ति के समय तक समस्त राज्य में ८००० प्राइमरी स्कूल खोले जा चुके होंगे। आपने कहा कि भारत के अन्य राज्यों में जनता की ओर से शिक्षा को उन्नत करने में काफी सहयोग मिलता है, किन्तु राजस्थान में उतना नहीं। इस सम्बन्ध में आपने आंकड़े देते हुए बताया कि अन्य राज्यों में नगरपालिका तथा जिला बोर्ड प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध करता है, किन्तु राजस्थान में ऐसा नहीं। हाई स्कूलों के बारे में आपने बताया कि राज्य के लगभग २२५ हाई स्कूलों में से १६० स्कूल सरकार के अपने हैं

जीवन के सभी आयामों को स्पर्श करने वाले सर्वगामी जीवन का संकलन

शृङ्गार-नायिका

हिन्दी और मराठी भाषा में प्रकाशित अभूत-पूर्व प्रकाशन ! १० रंगीन चित्र ! ६० से अधिक रेखाचित्र ! दोरंगी छपाई ! पुस्तकालय के लिए उत्तम संग्राह्य पुस्तक ! विशेष अवसरों पर भेंट देने योग्य एकमेव सुझाव ! सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्य।

मूल्य १२॥); डाक खर्च १)

प्रकाशक
दलाल आर्ट स्टूडियो
४०-४२, कैनेडी ब्रिज बम्बई-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसी प्रकार राज्य में समस्त डिग्री तथा पोस्ट डिग्री कॉलेज भी सरकारी हैं। इसके साथ आपने यह भी बताया कि राजस्थान ही एक ऐसा राज्य है जहाँ स्त्री-शिक्षा ऊँचे स्तर तक मुफ्त दी जाती है। लड़कों से भी उतनी फीस नहीं ली जाती जितनी अन्य राज्यों में ली जाती है। इस सम्बन्ध में आंकड़े देते हुए आपने बताया कि सरकार को केवल ३ प्रतिशत आमदनी छात्रों की फीस से होती है और बाकी सारा व्यय सरकार को ही सहन करना पड़ता है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना के सम्बन्ध में आपने चर्चा करते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा को उक्त योजना में अधिक-से-अधिक स्थान मिलेगा और ये शिक्षा-शालाएँ धीरे-धीरे बुनियादी शिक्षा केन्द्रों का रूप लेती जायँगी। इसी प्रकार राज्य के समस्त टीचर्स ट्रेनिंग संस्थाएँ बुनियादी शिक्षालयों में परिवर्तित कर दी जायँगी।

ग्रामीणों को सुविधाएँ

शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीणों को काफी सुविधाएँ देने की व्यवस्था की गई है। इस सम्बन्ध में प्रस्तावित योजना की चर्चा करते हुए कुँवर साहब ने कहा कि राज्य भर में समाज-शिक्षा केन्द्र खोले जायँगे जहाँ न केवल बच्चों को शिक्षित किया जायगा अपितु वृद्धों को भी समाज-शिक्षा का पूर्ण ज्ञान कराया जायगा। इस सम्बन्ध में वाचनालयों तथा पुस्तकालयों का जाल बिछाया जा रहा है। साथ ही चलते-फिरते पुस्तकालयों की पद्धति को अपनाया जायगा। इस प्रकार राज्य में २५ जिला पुस्तकालय, ५ मंडलीय पुस्तकालय तथा एक केन्द्रीय पुस्तकालय खोलने की व्यवस्था की जा रही है। केन्द्रीय-पुस्तकालय के लिए बीकानेर ही उपयुक्त स्थान है, आपने क[हा।] इस सम्बन्ध में सरकार १,८७,५०० रुपया खर्च करेगी। [इस] खर्चे से करीब ५० हाई स्कूलों में भी पुस्तकालय खोले जायँ[गे।]

महिला शिक्षालयों को सुविधा

शिक्षा-अध्यक्ष ने कहा कि राज्य सरकार जितना ल[ड़कों] की शिक्षा को उन्नत करने में प्रयत्नशील है उतना ही महि[लाओं की] शिक्षा को भी। इस सम्बन्ध में सरकार पहला कदम महिला हाई स्कूलों को बहुउद्देशीय हाई स्कूल बनाने [का] उठा रही है। इस प्रकार राज्य के तीन महिला इन्टर कॉ[लेजों] को, जिनमें बीकानेर, जोधपुर तथा कोटा के कॉलेज सम्मिलि[त] हैं, में विज्ञान की व्यवस्था कर रही है और साथ ही [इन] शिक्षालयों में लड़कियों को सैनिक शिक्षा देने के लिए एन[०] सी० सी० के सीनियर डिवीजन खोल रही है।

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

"हमने पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति [को] सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया है," उपरोक्त शब्दों [में] कुँवर साहब ने बल देते हुए कहा कि हमें यह नीति [इस] लिए नहीं अपनानी पड़ी कि राज्य को इस प्रकार पाठ्य-पुस्[तकों] के राष्ट्रीयकरण से आर्थिक लाभ होगा अपितु हमारा ध्ये[य है] कि विद्यार्थियों को सस्ती तथा अच्छी पुस्तकें सुविधा[से] मिलें। आपने कहा कि इसमें सन्देह नहीं कि कुछ प्रका[शक] उच्च स्तर की पाठ्य-पुस्तकें तैयार करते हैं, किन्तु अधि[कांश] प्रकाशकों के आगे केवल मात्र पैसा कमाना ही ध्येय है [और] उन्हें विद्यार्थियों की सुविधा का कुछ ध्यान नहीं। गत [वर्ष] इस सम्बन्ध में उठाये गए कदम की चर्चा करते हुए [आपने कहा] कि शिक्षा विभाग ने केवल १४ पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण [किया] था और बाकी पुस्तकें प्रकाशकों से ली थीं, किन्तु प्रका[शकों] द्वारा प्रस्तुत की गई पुस्तकें अधिकांश निम्न कोटि की [थीं] इसलिए विभाग को अनेक प्रकाशकों पर जुर्माना करना प[ड़ा।]

प्रशासनिक हेर-फेर

अन्त में प्रशासनिक हेर-फेर के सिलसिले में कुँवर [साहब] राजसिंह ने चर्चा करते हुए बताया कि राज्य को २६ [क्षेत्रों] में बाँट दिया गया है और प्रत्येक क्षेत्र एक अलग इन्स्[पेक्टर] ऑफ स्कूल के अधीन होगा। पहले केवल सात ही क्षेत्र [थे।] इस हेर-फेर को आगामी मई मास से कार्य रूप में परि[णत] किया जायगा।

आवश्यक सूचना

पिछले मास से प्रकाशन समाचार का सम्पादकीय विभाग राजकमल प्रकाशन के नये कार्यालय १५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, चला गया है। प्रकाशनार्थ सामग्री और परिचयार्थ भेजी जाने वाली पुस्तकें अब इसी पते पर भेजें।

प्रकाशन समाचार

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलपुर (बीरभूम) की हिन्दी-सेवी संस्था

हिन्दी प्रचार समिति

श्री भगवानदास पुरोहित

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए आज से करीब बीस साल पूर्व विक्रम सम्वत् १९९४, आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को स्थानीय विद्वानों के उत्साह से **हिन्दी प्रचार समिति** की स्थापना हुई। राजस्थान के प्रसिद्ध नेता व साहित्यिक माननीय हरिभाऊ उपाध्याय के करकमलों से तथा आचार्य क्षितिमोहन सेन के सभापतित्व में समिति की स्थापना हुई। तब से आज तक नाना संघर्षों के बीच यह संस्था अपना काम करती आ रही है।

समिति का एक पुस्तकालय है जिसके केन्द्र के अहिन्दी भाषा-भाषियों को हिन्दी सिखाना, हिन्दी-विरोधी भावना दूर करना तथा हिन्दी-साहित्य की उन्नति के लिए प्रयत्न करना, मुख्य अंग रहे हैं। समिति के उत्साही सदस्य हिन्दी के साथ-साथ प्रान्तीय भाषा का भी अध्ययन करते आ रहे हैं। हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने पर इसके कार्यक्षेत्र में और भी प्रसार होना आवश्यक जान पड़ता है।

समिति के इतिहास में यह एक उल्लेखनीय घटना है कि हमारे देश के गणमान्य नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस, श्री जवाहरलाल जी नेहरू, खान अब्दुल गफार खाँ, काका कालेलकर, श्री क्षितिमोहन सेन आदि ने पधारकर समिति को गौरवान्वित किया। आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी जब तक शान्तिनिकेतन में रहे, तब तक इसके कार्यों में भाग लेते रहे तथा कई वर्षों तक सभापति पद का कार्य करते रहे।

आज समिति की कई महत्त्वपूर्ण योजनाएँ अर्थाभाव के कारण बढ़ नहीं पा रही हैं। देश की राष्ट्रीय संस्थाओं से, धनीमानी सज्जनों से, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेताओं से, पत्र-पत्रिकाओं के संचालकों से समिति अपील करती है कि वे समिति को सभी प्रकार की सहायता दें। समिति के पुस्तकालय में किताबें तथा पत्र-पत्रिकाएँ विशेष धन्यवाद के साथ ग्रहण की जायँगी। सभी प्रकार की सहायता—मन्त्री, हिन्दी प्रचार समिति, बोलपुर (प० बंगाल) के पते पर भेजी जा सकती हैं।

हिन्दी तथा उर्दू के
सुप्रसिद्ध लेखक

सत्य प्रकाश संगर

की दो नई पुस्तकें

१. कली मुस्कराई	(उपन्यास)	३)
२. कितना ऊँचा कितना नीचा	(कहानी-संग्रह)	२)

छपकर तैयार हो गई हैं।

संगर की अन्य पुस्तकें

३. घर की आन	(उपन्यास)	३।।)
४. अवगुण्ठन	(कहानी-संग्रह)	२।।)
५. नया मार्ग	,,	२।)
६. अफ्रीका का आदमी	,,	२।।)

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसादगो यलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी-पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद २॥)
रजतरश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)

[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव
अतीत के कंपन : श्री आनन्दप्रकाश

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो-सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए०
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द
ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह
धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर
कालिदास का भारत [२] : श्री भगवतशरण उपाध्याय

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए०
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए०
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए०
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइये

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल ... क

पुस्तकों के भविष्य पर दृष्टिपात

व्यावसायिक प्रकाशन और साहित्य-सृजन

जेम्स टी० फैरेल

श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा 'न्यू डाइरेक्शन्स' के नवें अंक में प्रकाशित निबन्ध के संक्षिप्त रूपान्तर का यह दूसरा खण्ड यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

(५)

रेडियो कला का अधिकांश वस्तु उत्पादनकर्त्ताओं द्वारा परिचालित किया जाता है। एक बड़ा उदाहरण है साबुन ओपेरा जो कि केवल विज्ञापन के लिए प्रसारित होता है। मात्र बिक्री बढ़ाने के लिए प्रयुक्त कला का यह रूप बहुत अधिक प्रतिबन्धों को स्वीकार करता है। 'सोप ओपेरा' के लिए किराए पर रखे गए लेखक को ऐसे माध्यमों को खोजना और बनाना पड़ता है, जिनके द्वारा वह अधिकाधिक जनता की रुचियों की प्रशंसा कर सके। उसकी नाटकीय समस्याएँ कृत्रिम रूप से इस आवश्यकता के द्वारा गढ़ी जाती हैं। उसे किसी भी ऐसे चरित्र को बुरा अंकित नहीं करना चाहिए जिसके साथ उसके श्रोताओं के एक बड़े भाग द्वारा तादात्म्य स्थापित किये जाने की सम्भावना हो, क्योंकि इससे उन लोगों के अप्रसन्न हो जाने की आशंका है। ऐसी स्थिति में वे उस साबुन को नहीं खरीदेंगे जिसकी बनाने वाली कम्पनी यह प्रचार कर रही है। किसी भी वस्तु को एकदम बेचने की आवश्यकता लोकप्रिय कला के निर्माण में सीधे बाधा पहुँचाती है, और इसके कुछ बुरे परिणाम भी हो सकते हैं। इसके लिए आवश्यकता इस बात की थी कि कला को एकदम खुशामद का रूप दे दिया जाय। यह मेरे द्वारा कहे गए 'वस्तु-बनाम कला' की लड़ाई का अच्छा उदाहरण है।

(६)

वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का दबाव और कला-सम्बन्धी आवश्यकताओं में होने वाला संघर्ष अभी पुस्तकों के संसार में बहुत गम्भीर रूप में नहीं आया है, यद्यपि इसके उदाहरण पत्र-पत्रिकाओं में बराबर मिल जाते हैं। पत्रिकाओं में हम-वस्तुओं और कहानी के बहुत से सम्बन्ध देख सकते हैं। प्रायः बहुत सी चालाक पत्रिकाओं की कुछ कहानियों में एक निश्चित तारतम्य रहता है, जिसके पात्रों के चित्र अंकित रहते हैं और जिससे सम्बन्धित विज्ञापन भी उसी पत्रिका में छपे रहते हैं। 'दि न्यू यॉर्कर' एक अत्यधिक चातुर्यपूर्ण (ultra sophisticated) पत्रिका है। न्यू यॉर्कर के बारे में बहुत सी चातुर्यपूर्ण कहानियाँ छपती हैं और इसके विज्ञापन प्रायः चतुर व्यक्तियों को चतुर गृहों में दिखाते हैं, जो कि उन वस्तुओं को खरीदते हैं जिसमें नागरिक चातुर्य अपनी सीमा पर पहुँच गया है। कुछ उदाहरणों को छोड़कर पुस्तक-प्रकाशन में अभी ऐसी स्थिति नहीं है।

जो भी हो, सामयिक प्रकाशन के सम्बन्ध में कुछ ऐसे परिणामों की आशा की जाती है, जिनका यहाँ उल्लेख अत्यन्त आवश्यक है। अब तक प्रकाशकों का एक बड़ा वर्ग स्वतन्त्र व्यापारियों के रूप में था। हम देख चुके हैं कि कुछ निश्चित प्रकार के दबावों से वे मुक्त हो चुके हैं। परन्तु अब प्रकाशन बड़े पैमाने पर होता है और कुछ संस्थाओं में तो दस लाख डालर से अधिक की पूँजी लगी है, जिससे व्यापार का क्षेत्र बहुत बढ़ गया है। यदि प्रकाशन में बढ़ती के साथ-साथ प्रमुख प्रकाशकों की आर्थिक दिलचस्पी बिखर जाती है, जिससे कि प्रकाशन उनके बहुत से कार्यों में से एक हो जाता है, तो प्रकाशन का व्यवसाय भी अन्य बड़े उद्योगों के समान हो जायगा। अन्ततोगत्वा यह जान पड़ता है कि अमेरिकन आर्थिक व्यवस्था के ढाँचे में विभिन्न क्षेत्रों को अपनाने वाले प्रकाशकों को कभी-न-कभी अपनी प्रकाशन-संस्थाओं पर आर्थिक प्रतिबन्ध अवश्य लगाने पड़ेंगे। यह बात भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई कविता

के

अभी ही प्रकाशित द्वितीय अंक में

डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० देवराज, डॉ० रघुवंश, लक्ष्मीकान्त वर्मा, रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डॉ० जगदीश गुप्त

के निबन्ध :

नयी कविता के आलोचकों से
प्रयोगवादी कवि : एक चेतावनी
नयी कविता का सामाजिक परिवेश
नयी कविता : मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
कविता तथा गद्य-कविता
नयी कविता : नया सन्तुलन

एवं

'अज्ञेय' लिखित सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का *परिचय*, डॉ० धर्मवीर भारती का दृश्य-काव्य *अन्धायुग*, पैंतीस कवियों की कृतियों का संचयन, जापानी और कोरियाई कविता का प्रो० के० दोई द्वारा अनुवाद तथा किंचित् कविता शीर्षक स्तम्भ के अन्तर्गत सात रचनाएँ।

डिमाई आकार का बढ़िया एंटीक कागज : १०६ पृष्ठ; मूल्य २) मात्र

वितरक :

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

खतरनाक सिद्ध हो सकती है, इसका हमें ध्यान रखना चाहि
यदि वाल स्ट्रीट के व्यवसायी पुस्तक-प्रकाशन में अपनी गह
अभिरुचि दिखाने लगें।

(७)

यह सच है कि अन्ततोगत्वा बाजार की ही चलती
और यह पुस्तकों के व्यवसाय के बारे में भी सच है। प
पुस्तकों का बाजार कोई कटा-छँटा हुआ निश्चित टुकड़ा
है। इसका निर्माण जीवित मनुष्यों से हुआ है, जिनकी
सी आवश्यकताएँ, इच्छाएँ, दिलचस्पियाँ और झुकाव
पुस्तकों में होने वाली रुचियों में वैभिन्य सौन्दर्य-प्रसाधन
समितियों में होने वाली रुचियों से अधिक होता है। पुस्त
का बाजार वस्तुतः लोगों की रुचि का निर्माण करता
विभिन्न प्रकार के जूतों से भी अधिक माँग विभिन्न प्रका
पुस्तकों की होती है। बाजार को दबाव, विक्रय-आन्दोल
तथा प्रचार आदि से प्रभावित किया जा सकता है; प
इसका नियन्त्रण इन तरीकों से भी नहीं होता। पुस्तकों
बाजार स्वयं ही घटता-बढ़ता रहता है। इसके उतार-च
आर्थिक होने के साथ-ही-साथ मनोवैज्ञानिक भी होते
वर्तमानकालीन कोई भी परिस्थिति ऐसी नहीं है, जिससे अ
मान लगाया जा सके कि पुस्तकों के बाजार का नियन्
कड़ाई के साथ हो सकता है। पूर्णतः राजनीतिक- क्रूरता
छोड़कर और कोई रास्ता ऐसा नहीं है जिससे पुस्तकों
बाजार के साथ एकदम सख्ती बरती जा सके। और यह
राजनीतिक विषय है जिससे मेरे प्रस्तुत निबन्ध से कोई सम्ब
नहीं; इतना ही कहना अलम् है कि संसार में स्वतन्त्रता
सम्भावना पर कुछ लिखना अभी बहुत जल्दी की
होगी।

इस प्रकार संक्षेप में मुद्रण के क्षेत्र में एकछत्र अधि
की स्थिति बना लेना बहुत आसान नहीं है।
प्रकाशन-संस्थाएँ मुद्रण एवं वितरण की प्रमुख सुविधाएँ प्र
कर सकती हैं, यहाँ तक कि वे व्यवसाय में केन्द्रीकरण
प्राप्त कर सकती हैं। परन्तु इससे पुस्तकों के छपने की सम्
वना को नहीं मिटाया जा सकता। सबसे बड़ी सम्भावना
है कि भविष्य में कुछ दिनों तक पुस्तकों के व्यवसाय में केन्द्
करण की स्थिति आ जाय, और इसके साथ-ही-साथ पुस्त
का स्तर और उनकी संख्या की दिशा भी अलग-अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाय। परन्तु अच्छा स्तर धीरे-धीरे संख्या की शक्ति को नष्ट करता जायगा।

(८)

बहुत पहले लेखक की स्वतन्त्रता की चर्चा करते हुए कार्ल मार्क्स ने कहा था, "क्या वह प्रेस स्वतन्त्र है जो अपने आपको व्यवसाय के नीचे स्तर पर पहुँचा देता है। एक लेखक को धन का अर्जन अवश्य करना चाहिए, जिससे वह अपनी स्थिति बनाए रखकर लिख सके, परन्तु उसे केवल इसीलिए जीवित रहना और लिखना नहीं चाहिए कि वह रुपया कमा सके···प्रेस की स्वतन्त्रता की पहली स्थिति है व्यवसाय से मुक्ति। वह लेखक जो प्रेस को मात्र जीविका का साधन बनाकर रख छोड़ता है, अपनी इस अन्दरूनी गुलामी के लिए उस बाहरी गुलामी के योग्य है जिसे 'सेन्सरशिप' कहा जाता है, अवश्य ही यदि उसका अस्तित्व स्वयं उसके लिए दण्ड स्वरूप न हो गया हो।" इतना उद्धृत करने के पश्चात् मार्क्स का जीवनी-लेखक मेहरिंग कहता है—"अपने सारे जीवन में मार्क्स इन्हीं सिद्धान्तों को अपनाए रहा, और उसी स्तर पर, जिस स्तर को उसने दूसरों से माँगा था : एक व्यक्ति का साहित्य सृजन स्वयं ही उसके लिए साध्य होना चाहिए। अपने या किसी अन्य के साध्य होने की अपेक्षा, आवश्यकता पड़ने पर, उसे स्वयं अपने अस्तित्व की अपने साहित्य-सृजन के लिए बलि दे देनी चाहिए।"

मार्क्स एक बड़ा क्रान्तिकारी था। परन्तु रचनात्मक लेखकों ने इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर साहित्य का सृजन किया है। टॉलस्टॉय ने ऐसा किया, जॉयस ने ऐसा किया। और हम ऐसे व्यक्तियों की स्मृति के प्रति श्रद्धा प्रकट करते हैं, केवल उनकी साहित्यिक महत्ता के ही कारण नहीं, परन्तु उनकी कलात्मक ईमानदारी और सम्मान के लिए भी। निश्चित रूप से अब लेखकों के बोलने का समय आ गया है; अपना मत प्रकट करने और पुस्तकों के भविष्य के सम्बन्ध में अपनी मान्यता स्थिर करने का भी समय अब उनके लिए निकट है। अपने कंठ में घृणा भरकर यह कहने के लिए भी समय आ गया है कि वे अब नौकर-लेखक (backs) नहीं बनेंगे! भविष्य का क्षेत्र उनका है। बार-बार सबसे अधिक बिकने वाली किताबें आईं और चली गईं; परन्तु वास्तविक पुस्तकें इस प्रकार नहीं चली जाएँगी, वे स्थायी रहेंगी, क्योंकि हम जानते हैं कि पुस्तकों का भविष्य संस्कृति के भविष्य में छिपा हुआ है। और संस्कृति का भविष्य मानवता के भविष्य का कुछ कम महत्त्व-पूर्ण अंग नहीं है। अभी हमने इतिहास का अन्तिम लोक-रुचि-परिवर्तन नहीं देखा है; अभी हमने इतिहास का भी अन्तिम पहलू नहीं देखा है। और अभी हमने इतिहास की अन्तिम क्रान्ति नहीं देखी है। अब पहले से कम लेखक को जनता की भोंडी रुचि और व्यवसाय के आगे झुकना चाहिए। लेखकों और नई पीढ़ी को उस शब्द-वैचित्र्य तथा चमक-दमक की अपेक्षा, जिसे आज बहुत से संस्कृति कहकर पुकारते हैं, भविष्य को अधिक महत्त्व देना चाहिए। एक अर्द्ध-अधि-कृत संस्कृति केवल थके-थकाए और बेढंगे सूत्रों को जन्म दे सकती है। एक व्यक्ति मानवता को हर एक चीज से सम्बद्ध कर सकता है, यहाँ तक कि इस छिछली भावुकता से भी। परन्तु इस छिछली और भीगी हुई भावुकता से अलग स्पष्ट और ईमानदार सृजन दिखाई देगा। वर्षों पहले जोला ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा था—"सत्य अपने मार्ग पर चल रहा है।" यही लेखक का दायित्व है—उस सत्य को निरन्तर मार्ग पर चलते देते रहना।

हिन्दी संसार का एक नया अध्याय

चार महान् प्रकाशन

श्री ज्योतिप्रकाश की सरस लेखनी से उत्पन्न !

१. दिल की गहराई से—(दो भाग) मूल्य प्रत्येक का १॥)। दोनों भाग भावात्मक रेखाओं एवं विचारों के सागर हैं—जैसा हिन्दी संसार में अभी तक नहीं आया।

२. धूप और छाया—अद्भुत शैली में श्री ज्योति-प्रकाश की बेजोड़ कहानियाँ। मूल्य १॥=)

३. सीधा रास्ता—किशोर-साहित्य का अमर उप-न्यास। मूल्य १।=)। मोनो की छपाई, सजिल्द, अत्यन्त आकर्षक मेकअप-गेटअप।

सभी क्षेत्रों के विक्रेता टर्म्स के लिए पत्र-व्यवहार करें।

सत्साहित्य के प्रकाशक :

कान्तिप्रभा प्रकाशन

डालटनगंज (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री रामगोपाल जे० पुरोहित (पोस्ट बाक्स नं० ४८, जयपुर) लिखते हैं कि अपने ४३ वर्षों के अनुभव के उपरान्त उन्होंने बही खाता रखने की पद्धतियों पर एक विस्तृत ग्रन्थ का प्रणयन किया है जिसमें प्राचीन भारतीय एवं अर्वाचीन पाश्चात्य पद्धतियों पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। बहीखाता-शास्त्र के विद्यार्थियों तथा हिसाब-परीक्षकों को समान रूप से इससे लाभ होगा। हिन्दी-साहित्य में यह पुस्तक इस प्रकार की पहली भेंट है। सुयोग्य प्रकाशक की आवश्यकता है।

◈ ◈ ◈

श्री हरिप्रसाद 'सुमन', सुमन कुटीर, चम्बा, हिमाचल प्रदेश सूचित करते हैं कि उनके पास एक कविता-संग्रह तथा एक एकांकी 'कल के गाँव' तैयार है। प्रकाशकगण प्रकाशनार्थ पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

'वर्ल्ड फ़ेस्टिवल ऑफ़ यूथ एण्ड स्टूडेंट्स फ़ार पीस एण्ड फ्रेंडशिप' का पाँचवाँ विश्व-उत्सव पोलैण्ड की राजधानी वॉरसॉ में ३१ जुलाई से १४ अगस्त '५५ तक होगा। इस उत्सव से सम्बन्धित 'भारतीय उत्सव तैयारी कमेटी' (कैन्सन हाऊस, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली) की ओर से एक कहानी व कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। नियम इस प्रकार हैं: १) कहानियाँ व कविताएँ हिन्दी व उर्दू में भेजी जायँ; २) लेखकों की आयु ३० वर्ष से अधिक न हो; ३) रचना भेजने की अन्तिम तिथि ३० जून '५५ है; ४) रचना ६ पृष्ठों से अधिक की न हो; ५) विख्यात कथाकारों और कवियों की निर्णायक समिति १००), ६०) तथा ४०) का प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार देगी। इसके अतिरिक्त उत्सव में जाने की सुविधा दी जायगी।

◈ ◈ ◈

एक-एक हजार के दो पुरस्कार

बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् की ओर से प्रति[illegible] एक हजार रुपये के दो पुरस्कार हिन्दी साहित्य-सेवियों को उनकी श्रेष्ठ पुस्तक पर दिये [illegible] इस वर्ष के पुरस्कार रसायनशास्त्र और कविता [illegible] पुस्तकों पर दिये जायँगे। अतः विद्वान् लेखकों, कवियों, [illegible]शकों और साहित्यिक संस्थाओं से अनुरोध है कि वे [illegible] विषयों की प्रत्येक पुस्तक की सात-सात प्रतियाँ ३१ [illegible] १९५५ ई० तक परिषद्-कार्यालय में (पटना-जंकशन [illegible] अथवा पोस्ट-बाक्स नं० ७ पटना ३ के पते से) भेजने की कृपा करें। पुरस्कारार्थ प्राप्त पुस्तकें लौटाई नहीं जातीं।

शिवपूजनसहाय
मन्त्री,
बिहार-राष्ट्रभाषा-परि[षद्]
पटना

भूल सुधार

गत अंक के लेखकीय मंच के अन्तर्गत श्री गौ[illegible] गुप्त द्वारा प्रेषित सूचना में हिन्दी पत्रिकारिता की [illegible] के स्थान पर 'हिन्दी-पत्र की बृहत्त्रयी' तथा घाघ औ[र] [illegible] के स्थान पर भूल से 'काक और भड्डरी' छप गया है [illegible] भूल लिए हमें खेद है।

◈ ◈ ◈

गत अंक में पत्र पत्रिकाओं की सूची में छपा [illegible] चिनगारी का प्रकाशन मिर्ज़ापुर से होता है। चिनगारी [illegible] रस से छपती है। इसी कार्यालय से नागिन और [illegible] नाम की दो अन्य मासिक पत्रिकाएँ भी प्रकाशित [illegible] जिनका नामोल्लेख सूची में नहीं हुआ है।

◈ ◈ ◈

पत्र-पत्रिकाओं की सूची में पाठक धार (मध्य [illegible] से प्रकाशित होने वाली मासिक 'उषा' का नाम भी लि[illegible]

◈ ◈ ◈

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिन्दी-कविता की प्रतिनिधि पुस्तक-पत्रिका [छमाही प्रकाशन]

काव्यधारा

प्रथम संख्या

सम्पादकः शिवदानसिंह चौहान : गोपालकृष्ण कौल

मूल्य : रायल साईज़ : सजिल्द ६)

रूपरेखा

कवि और आलोचक

सर्वश्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन, सुमित्रानन्दन पन्त, रामधारीसिंह दिनकर, डा० रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा, डा० नगेन्द्र, डा० सत्येन्द्र, आचार्य विनयमोहन शर्मा, शान्तिप्रिय द्विवेदी, विश्वम्भर मानव, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', अंचल, गिरिजाकुमार माथुर, हंसकुमार तिवारी, जानकीवल्लभ शास्त्री, भारत भूषण अग्रवाल, नागार्जुन, प्रभाकर माचवे, नेमिचन्द्र जैन, भवानीप्रसाद मिश्र, गजानन माधव मुक्तिबोध, शम्भूनाथ सिंह, नीरज, वीरेन्द्र मिश्र, सुमित्राकुमारी सिनहा, शमशेर बहादुर सिंह, शम्भूनाथ शेष, देवराज दिनेश, रमानाथ अवस्थी, वीरेन्द्रकुमार जैन और चिरंजीत आदि।

आधुनिक उर्दू कविता

जगन्नाथ आज़ाद का महत्त्वपूर्ण लेख और साथ जोश मलीहाबादी, जिगर मुरादाबादी, फिराक़ गोरखपुरी, फैज अहमद फैज़, मजाज़, साहिर लुधियानवी आदि की कविताएँ।

हास्य-व्यंग्य

गोपालप्रसाद व्यास, केशवचन्द्र वर्मा आदि की चुटीली कविताएँ।

जनवाणी

रमई काका, गजानन वर्मा, कल्पित, और करतारसिंह दुग्गल आदि की अवधी, राजस्थानी और पंजाबी अमर की कविताएँ।

इनके अतिरिक्त

हिन्दी कविता के मूल्यांकन-सम्बन्धी कई लेख और वक्तव्य; आधुनिक अंग्रेजी कविता

कविता में 'प्रगति और प्रयोग' की समस्या पर महत्त्वपूर्ण विवेचन और विचार।

साइज़ २० × २६ = ८, पृष्ठ संख्या २२६, सजिल्द मूल्य ६)

सम्मतियाँ

'काव्यधारा' के लिए मेरी शुभ कामनाएँ स्वीकार करें

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

नवीन प्रारम्भ के लिए बधाई एवं सफलता की शुभकामना लीजिए।

—श्री सुमित्रानन्दन पन्त

सुप्रसिद्ध आलोचक श्री शिवदानसिंह चौहान और श्री गोपालकृष्ण कौल की सम्पादकता में काव्यधारा के प्रकाशन का जो आयोजन हुआ है, उसका मैं स्वागत करता हूँ।

—श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

'काव्यधारा का प्रयत्न सराहनीय है।

—श्री उदयशंकर भट्ट

मेरी तो हार्दिक कामना है कि 'काव्यधारा' हिन्दी काव्य की गंगा-जमुना बने और सब-कहीं इसका आदर हो।

—श्री नरेन्द्र शर्मा

'काव्यधारा' का उद्देश्य बड़ा सुन्दर है।

—आचार्य नन्ददुलारे वाजपेई

प्रकाशक :

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

नया समाज : प्रख्यात नाटककार और कवि उदयशंकर भट्ट का नवीनतम मौलिक नाटक है। इस नाटक की मूल पृष्ठभूमि जमींदारी उन्मूलन है और पात्र भी उसी सामन्ती परम्परा के संवाहक गाँव के जमींदार लोग हैं। कुछ पात्र नाटक में ऐसे भी हैं, जो आज की नागरिक सभ्यता के प्रतीक हैं। यह नाटक कथानक और टेकनीक दोनों दृष्टियों से अपने उद्देश्य में सफल हुआ है। रंगमंच की दृष्टि से लिखे गए नाटकों में नया समाज अपना विशेष स्थान बनाएगा। इसमें केवल एक जमींदार के विगत वैभव का ही प्रदर्शन नहीं है, प्रत्युत उसके परिवार की समस्या तथा गतिविधि का चित्र भी अंकित है। क्राउन साइज के ८४ पृष्ठों का यह सजिल्द नाटक राजकमल प्रकाशन से १।।) में मिल सकता है।

❖ ❖ ❖

रेडियो नाटक : रेडियो नाटक के सिद्धान्त, इतिहास तथा विभिन्न रूपों की रचना का परिचायक ग्रन्थ है। इसके लेखक श्री हरिश्चन्द्र खन्ना क्योंकि स्वयं एक कुशल अभिनेता, और निर्देशक हैं, और पिछले ८-१० वर्ष से वे रेडियो से सम्बद्ध हैं, उनकी अधिकारी लेखनी से लिखा गया यह ग्रन्थ वास्तव में उपादेय सिद्ध होगा, ऐसी आशा है। पुस्तक में प्रस्ताविक, सिद्धान्त, शिल्प तथा प्रयोगात्मक रूप नामक चार खण्ड हैं, जिनमें ब्रॉडकास्टिंग, रेडियो-नाटक का उद्गम और विकास, रेडियो नाटक की प्रगति, श्रव्यकला और उनके मूल-भूत आधार, श्रव्य-कला की विशेषताएँ और परिसीमाएँ, रेडियो नाटक का रूप-विधान, रेडियो नाटक का निर्माण, चरित्र-चित्रण, संवाद, ध्वनि-प्रवाह और संगीत संयोजन, रेडियो रूपान्तर, रूपक, डॉक्यूमेण्टरी अर्थात् आलेख रूपक और टेलिवीज़न आदि अध्यायों में रेडियो-नाटक की कला तथा उपयोगिता पर विचार किया गया है। डिमाई साइज़ के २८२ पृष्ठ की यह पुस्तक इसके प्रकाशक [illegible] राम एण्ड सन्स से ६) में प्राप्य है।

❖ ❖ ❖

कबीर और जायसी का रहस्यवाद : तुलना[illegible] विवेचन में डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत ने कबीर और [illegible] के रहस्यवाद पर पृथक्-पृथक् विवेचन करके बाद में [illegible] तुलनात्मक विचार प्रकट किये हैं। पुस्तक की उपादेयता [illegible] से स्पष्ट है कि लेखक कबीर साहित्य के मर्मी विद्वान् [illegible] अधिकारी आलोचक हैं। क्राउन साइज़ के ३१० पृ[illegible] यह सजिल्द पुस्तक साहित्य सदन देहरादून से प्रका[illegible] है; मूल्य ४) है।

❖ ❖ ❖

अन्धेरे के दीप : श्री ओंप्रकाश शर्मा का नवीनतम [illegible]न्यास है। इसमें लेखक ने धनी और निर्धन लोगों [illegible] सामाजिक जीवन का चरित्र सफलतापूर्वक अंकित [illegible] है। इस उपन्यास से पाठकों को यह भली प्रकार वि[illegible] जायगा कि धनी लोग साधारण जनता को ही धोखा [illegible] देते, प्रत्युत वे अपने वर्ग के व्यक्तियों की आँखों में [illegible] झोंकने से नहीं चूकते। इसके विपरीत दूसरी प्रकार [illegible] व्यक्ति इसमें मिलेंगे जिनको समाज में निर्धन [illegible] जाता है और जिनके हृदय में प्रेम की निर्मल धारा [illegible] है। इसके नायक छदम्मीलाल धनी वर्ग के प्रतीक हैं [illegible] प्रेम, नवाब और मैना निर्धन समाज के। उपन्यास में [illegible] और व्यंग्य की छटा के साथ-साथ प्रेम और भावुकता [illegible] समन्वय दृष्टिगोचर होता है। क्राउन साइज के २[illegible] का सुमुद्रित आकर्षक कवर वाला वह उपन्यास रा[illegible] प्रकाशन दिल्ली से ३।।) में मिल सकता है।

❖ ❖ ❖

राजनेता : प्रसिद्ध जर्मन लेखक स्टीफन ज़्विग के [illegible] जप्पूसे' नामक विख्यात उपन्यास की हिन्दी अनुवाद [illegible] अनुवादक हैं श्री चन्द्रदत्त पाण्डेय और प्रकाशक हैं रा[illegible] प्रकाशन दिल्ली। उपन्यास की भाषा सरल और [illegible] है। इसमें जर्मन क्रान्ति का विवरण उपन्यास के मा[illegible] पाठकों को पढ़ने को मिलेगा। ३२० पृष्ठ का सुन्दर [illegible] और आकर्षक मुद्रण वाला यह उपन्यास प्रकाशक से [illegible] प्राप्त किया जा सकता है।

❖ ❖ ❖

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...द्वीप : यह श्री हितवल्लभ गौतम का बंगीय उपन्यास-...तियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त मौलिक उपन्यास है। ...पन्यास के भूमिका लेखक श्री नरोत्तम नागर के शब्दों से ...हमति प्रकट करते हुए हम यह कहना चाहते हैं कि उप-...यास का प्रत्येक पन्ना मानो खुद अपनी कहानी कहता है। ...समें व्रजभूमि को पृष्ठभूमि बनाकर वहाँ के रीति-रिवाजों, ...ले-ठेलों और व्याह-शादियों का वर्णन अत्यन्त मार्मिक ...ली में किया गया है। लोक-संस्कृति की ध्वनि इसकी पंक्ति-...क्ति से मुखरित होती लगती है। **साहित्य प्रकाशन दिल्ली** ...रा प्रकाशित क्राउन साईज के २७२ पृष्ठ का यह सजिल्द ...पन्यास ५) में प्राप्य है।

◇ ◇ ◇

...ली मुसकराई : श्रीसत्यप्रकाश संगर का दूसरा उपन्यास ...। इसकी कथा काश्मीर से आरम्भ होकर आधुनिक भारत ...जीवन का परिचय कराती हुई एक गाँव में जाकर समाप्त ...होती है। पुस्तक की भाषा सरल, रोचक और प्रवाहपूर्ण ...है। १९८ पृष्ठ का यह उपन्यास **राजकमल प्रकाशन** से ...) में प्राप्त है।

◇ ◇ ◇

...परिस्तान में प्रसिद्ध उर्दू कवि श्री रघुपति सहाय फिराक ...ने विश्व-विख्यात ग्रिम्स फेयरी टेल्स की कुछ कहानियों ...का हिन्दी-रूपान्तर प्रस्तुत किया है। पुस्तक का मुद्रण अत्यन्त ...ही आकर्षक और सुन्दर ढंग से हुआ है। इसमें सैम मिलर ...द्वारा चित्रित अनेक बहुरंगे इकरंगे चित्र सुनियोजित हैं, ...जिससे पुस्तक का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। लोक-कथाओं ...में रुचि रखने वाले सभी बाल और प्रौढ़ों को यह पुस्तक ...पढ़नी चाहिए। क्राउन साइज के २२८ पृष्ठ की आकर्षक ...आवरण कपड़े की जिल्द और सुन्दर मुद्रण से युक्त यह पुस्तक ...राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई है, मूल्य ३।।) है।

◇ ◇ ◇

...राजकमल विज्ञान परिचय माला : नाम से **राजकमल** ...प्रकाशन ने एक सचित्र पुस्तकमाला प्रकाशित करनी आरम्भ ...की है। अभी तक इस पुस्तकमाला के अन्तर्गत (१) पेड़ पौधे, ...(२) फल और सब्जियाँ, (३) पक्षियों का जीवन, (४) ...कीड़े मकोड़े, और (५) हमारी फसलें नामक पुस्तकें प्रकाशित ...हो चुकी हैं। इस पुस्तकमाला से बच्चे और प्रौढ़ सभी इन ...विषयों की उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। प्रत्येक पुस्तक

नवीन बाल और प्रौढ़ साहित्य

परिस्तान, रूपान्तरकार : फिराक गोरखपुरी	३।।)
पक्षियों का जीवन : अली सफ़दर	।।)
कीड़े-मकोड़े व मक्खी-मच्छर : मुनीश सक्सेना	।।)
पेड़-पौधे ,,	।।)
हमारी फसलें : सत्यप्रकाश गुप्ता	।।)
फल और सब्जियाँ, सूर्य कुमार जोशी	।।)
छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएँ, चन्द्रकुमार	१।।)
सौराष्ट्र की लोक-कथाएँ, प्रवासीलाल वर्मा	१।।)
रवीन्द्रनाथ, मेजरी साइक्स	१।।)
भारतीय सपूतों की कहानियाँ, व्यथित हृदय	२)
हिमाचल की लोक-कथाएँ, सन्तराम वत्स्य	१।)
उत्तरभारत की लोक-कथाएँ, भाग १, सावित्री देवी वर्मा	१।)
गाओ-बच्चो, धर्मपाल शास्त्री	।।।)
बाल-अभिनय, प्रशान्त एम० ए०	।।)
पर्दे के बिल, सन्त गोकुलचन्द्र शास्त्री	।।।)
बच्चों का मंच, सन्त गोकुलचन्द्र शास्त्री	।।।)
मधुर गान, शान्ता सन्त, एम० ए०	।।।)
सच्चे मित्र	।=)
चालाक खरगोश	।=)
एक था जंगल	।=)
खरगोश और बिल्ली	।=)
अक्षर-ज्ञान सचित्र रंगीन	।=)
हिन्दी वर्णमाला	१)
अंक-लेखन	।।)
उत्तम हिन्दी सुलेख	≡)
बलिदान की कहानियाँ, प्रशान्त एम० ए०	।।।)

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ आने में प्रकाशक से मिल सकती है।

◆ ◆ ◆

एस-एल० प्रकाशन हाथीखाना दिल्ली से एक था जंगल और कुकड़ूँ कूं नामक दो रंगीन बाल-पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं। बच्चों को तिरंगे चित्रों के माध्यम से कहानी पढ़ने की आदत डालने के लिए ये दोनों पुस्तकें उपयोगी सिद्ध होंगी। मुद्रण आकर्षक है। प्रत्येक पुस्तक प्रकाशक से ।=) में मिल सकती है।

◆ ◆ ◆

पुस्तकालय-संदेश का विशेषांक हमारे सामने है। इसमें पुस्तकालय, पुस्तकालय-विज्ञान, विश्व में पुस्तकालय आन्दोलन, विश्व के प्रमुख पुस्तकालय, पुस्तकालय तथा वयस्क शिक्षा, पुस्तकालय-योजना तथा पुस्तकालय अधिनियम नामक आठ खण्डों में पुस्तकालय विज्ञान सम्बन्धी अनेक विज्ञान-अधिकारी लेखकों के प्रामाणिक लेख संकलित किये गए हैं। विशेषांक सर्वथा उपयोगी तथा संग्रहणीय हैं। इस विशेषांक का मूल्य १॥) है और यह पुस्तकालय-संदेश कार्यालय पटना-५ से प्राप्त किया जा सकता है। इतने सुन्दर विशेषांक के प्रकाशन पर हम इसके सम्पादक श्रीकृष्ण खण्डेलवाल को [illegible] देते हैं।

◆ ◆ ◆

दिल की गहराई से (२ भाग) : श्री ज्योति[illegible] के विचार-गद्यों का संकलन है। पहले भाग में उनके [illegible] विचार-गद्य संकलित हैं और दूसरे में १५। निबन्धों [illegible] पढ़कर पाठकों में हार्दिक भाव जागेंगे और इसीलिए [illegible] नाम दिल की गहराई से रखा गया है। क्राउन साइज़ ८० (प्रथम भाग) और ७५ (द्वितीय भाग) पृष्ठ [illegible] यह दोनों पुस्तकें प्रकाशक कान्तिप्रभा प्रकाशन, डालटन[illegible] (मुंगेर) से क्रमशः १॥) १॥) में मिल सकती हैं।

◆ ◆ ◆

साहित्य विवेचन के सिद्धान्त में श्री क्षेमचन्द्र 'सु[illegible] और श्री योगेन्द्रकुमार मलिक ने कला, साहित्य, [illegible] उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, गद्यगीत, जीवनी : आ[illegible] कथा : संस्मरण, रेखाचित्र, स्केच, रिपोर्ताज और आलो[illegible] शीर्षक से हिन्दी-साहित्य की १२ प्रवृत्तियों का सैद्धा[illegible] एवं ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया है। उच्च कक्षा[illegible]

समकालीन प्रबुद्ध लेखकों की
सशक्त कृतियों का
अर्द्ध वार्षिक संकलन

निकष

मूल्य प्रति अंक ३॥)

सम्पादक :
धर्मवीर भारती,
लक्ष्मीकान्त वर्मा

• यथार्थ के नये स्तर • मानवीय मूल्यों की नयी चेतना •
• शिल्प के नये प्रयोग •

लघु उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, निबन्ध, व्यंग्य-कृतियाँ, लघु-कथाएँ महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित उपन्यासों के अंश, रेखा-चित्र, डायरी तथा कविताएँ

प्रथम संकलन के लेखक

सर्वश्री सुमित्रानन्दन पंत, भगवतशरण उपाध्याय, बालकृष्ण राव, अज्ञेय, डॉ० रघुवं[illegible] रांगेय राघव, फणीश्वर-नाथ 'रेणु', प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, कमल जोशी, रघुवं[illegible] सहाय, डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, विजयदेवनारायण सा[illegible] कीर्ति चौधरी, जगदीश गुप्त, रवीन्द्र भ्रमर, वीरेन्द्रकुमार जैन, कुट्टि चातन, केशवचन्द्र वर्मा, अनन्तकुमार पाषाण, श्रीराम वर्मा, मलयज, विपिन अग्रवाल, वैकुण्ठ मेहरोत्रा, शांति मेहरोत्रा, गंगाप्रसाद पांडेय और लक्ष्मीकान्त वर्मा।

जुलाई के प्रथम सप्ताह में साहित्य सहयोग के तत्त्वावधान में
साहित्य भवन लिमिटेड द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र्थियों तथा साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक उपादेय सिद्ध होगी। क्राउन साइज के ३४६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक प्रकाशक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** (...३) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी साहित्य की नवीन धाराएँ : भारत सरकार के पब्लिकेशन्स डिवीज़न द्वारा प्रकाशित एक ऐसी पुस्तिका है, जिसमें आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से प्रसारित श्री विष्णु प्रभाकर, डॉ० नगेन्द्र, श्री उदयशंकर भट्ट और श्री रामचन्द्र तिवारी की कहानी, कविता, नाटक और उपन्यास पर प्रकाश डालनेवाली चार वार्ताओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है। डिमाई साइज़ के ३२ पृष्ठ की यह पुस्तिका ।=) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

एंटन चेखव : एक इण्टरव्यू में श्री राजेन्द्र यादव ने विख्यात रूसी साहित्यकार श्री चेखव के सम्बन्ध में एक काल्पनिक इण्टरव्यू प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक की पृष्ठभूमि में उनके जीवन और साहित्य की जो प्रेरणा काम कर रही है, उसका दर्शन हमें इसके पढ़ने से होता है। उदीयमान लेखकों और सचेत पाठकों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। क्राउन साइज के ८४ पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक **रामपुरिया प्रकाशन, कलकत्ता** से १।।।) में मिलती है।

◈ ◈ ◈

कमला : श्री देवेन्द्र शर्मा का सामाजिक उपन्यास है। इसमें हमारे समाज के कलंक अस्पृश्यता, बाल-विवाह, बाल-विधवा, जातीयता आदि अनेक रूढ़ियों पर चोट की गई है। इसके विषय में श्री एन० वी० गाडगिल ने यह सच ही लिखा है कि "यदि उपन्यास समाज के प्रति सहानुभूति रखकर कुशलता और कोमलता से लिखा जाय तो हृदय-परिवर्तन जल्दी ही हो सकता है। जिस विनय के साथ कान्ता (इस उपन्यास की नायिका) अपने कान्त को उपदेश करती है, उसी तरह की सामाजिक उपन्यासकार की भूमिका होनी चाहिए।" कमला एक सफल उपन्यास है। १०२ पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास **साहित्य प्रकाशन दिल्ली** से २) में मिलता है।

◈ ◈ ◈

पत्थर-पानी : श्री यादवचन्द्र जैन का पहला मनोविश्लेषणात्मक मौलिक सामाजिक उपन्यास है। इसमें जहाँ पाठकों को समाज के उच्चमध्य वर्ग के लोगों की झाँकी देखने को मिलेगी वहाँ निम्न मध्य वर्ग की दशा से भी वे अवगत हो सकेंगे। भाषा, विचार, वर्णन और चित्रण—सभी दृष्टियों से उपन्यास सफल बन पड़ा है। ५८० पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास **नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली** से ८) में मिल सकता है।

◈ ◈ ◈

सीधा रास्ता : श्री ज्योतिप्रकाश का किशोरोपयोगी एक लघु उपन्यास है। इसका नायक सुरेश एक सम्पन्न घराने का लाडला लड़का है जो संगति-दोष से बिगड़ जाता है। उसके विपरीत एक निर्धन परिवार में पले-बढ़े हीरालाल का चरित्र उत्कृष्टता की चरम सीमा पर है। इसीका वर्णन इस उपन्यास में पाठक पढ़ेंगे। क्राउन साईज़ के ६५ पृष्ठ का का यह उपन्यास **कान्तिप्रभा प्रकाशन** से १।=) में मिल सकता है।

प्रौढ़-साहित्य में नवीन
आकर्षक सुचित्रित प्रकाशन

राजकमल विज्ञान परिचय माला

इस माला में निम्न पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं :

१. पेड़-पौधे
२. पक्षियों का जीवन
३. हमारी फसलें
४. फल और सब्ज़ियाँ
५. कीड़े-मकोड़े व मक्खी-मच्छर

अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी गई प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल आठ आने।

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम क्रमशः हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार की किसी भी सूची में अशुद्धियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आशा है पाठकगण अशुद्धियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करके, सूची को पूर्णतया शुद्ध करने में हमें सहयोग देंगे।

[अप्रैल, १९५५ अंक के पृष्ठ ४६२ से आगे]

उत्तर प्रदेश

सुलतानपुर

साप्ताहिक

(१) देश बन्धु — सुलतानपुर
(२) प्रकाश — ,,
(३) सुलतानपुर गजट — ,,
(४) विश्वबन्धु — ,,

लखनऊ

दैनिक

(१) अधिकार — लखनऊ
(२) नवजीवन — ,,
(३) स्वतन्त्र भारत — ,,

साप्ताहिक

(१) आर्य मित्र — ,,
(२) हमारी बात — ,,
(३) यू० पी० सिख गजट, — ,,
(४) जनयुग — ,,
(५) पांचजन्य — ,,
(६) युग भारती — ,,

अन्य

(१) इण्डस्ट्रियल कालेज विजय लखनऊ (षाण्मासिक)
(२) पंच परमेश्वर (पाक्षिक) — ,,

मासिक

(१) बाल विनोद — ,,
(२) चतुर्वेदी — ,,
(३) माधुरी — ,,
(४) मातृभूमि — ,,
(५) नया देहाती — लखनऊ
(६) युग चेतना — ,,

हरिद्वार

(१) गुरुकुल पत्रिका — हरिद्वार
(२) आयुर्वेद — ,,
(३) चरित्र निर्माण — ऋषिकेष

हमीरपुर

साप्ताहिक

(१) पुकार — हमीरपुर
(२) सहकारी — ,,

हरदोई

(१) प्रकाश — हरदोई

दिल्ली

दैनिक

(१) वीर अर्जुन — दिल्ली
(२) हिन्दुस्तान — ,,
(३) नवभारत टाइम्ज — ,,
(४) न्यूज एण्ड व्यूज फ्रॉम सोवियत यूनियन, — दिल्ली
(५) सन्मार्ग — दिल्ली
(६) अमर भारत — ,,

साप्ताहिक

(१) अमर — ,,
(२) अमरीकन रिपोर्टर — ,,
(३) बिरला मिल प्रत्रिका — ,,
(४) चित्रकार — ,,
(५) कांग्रेस सन्देश — ,,
(६) डी० एम० सी० गजट — ,,
(७) दिल्ली व्यापार समाचार — ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

(८) गोपालन ,,
(९) हमारा गाँव ,,
(१०) हरिजन हितैषी ,,
(११) हिन्दुस्तान ,,
(१२) जैन गजट ,,
(१३) किराना ,,
(१४) मानव संदेश ,,
(१५) प्रेम प्रभाकर ,,
(१६) राजधानी ,,
(१७) सम्राट् ,,
(१८) सुगन ,,
(१९) सुरवीर ,,

पाक्षिक

(१) बुलाकी किराना रिपोर्ट ,,
(२) मानव पथ ,,
(३) सारंग ,,
(४) शिशु सखा ,,
(५) सोवियत भूमि ,,
(६) विचार माला ,,
(७) सेवाश्रम ,,

मासिक

(१) आचार्य धन्वन्तरि
(२) आजकल ,,
(३) अग्रवाल ,,
(४) अमरज्योति ,,
(५) अमर कहानी ,,
(६) अंचल ,,
(७) आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका ,,
(८) बहादुर ,,
(९) बाल भारती ,,
(१०) बाल गोपाल ,,
(११) भविष्य ,,
(१२) भारत ज्योति ,,
(१३) चित्रलेखा ,,
(१४) कांग्रेस टाइम्ज ,,
(१५) दल समाचार ,,

हमारे अनमोल ग्रन्थरत्न

हमारे सुरुचिपूर्ण प्रकाशन आपको अवश्य पसन्द आएँगे।

(१) **निबन्ध भारती**—लेखक सिंहासनराय सिद्धेश, मूल्य ३), सजिल्द ३।।), पृष्ठ ४०८। निबन्ध की सर्वोत्तम पुस्तक।

(२) **कन्या का तपोवन**—(नाटक) ले० पं० रामनरेश त्रिपाठी, मूल्य २।।), सजिल्द।

(३) **आधुनिक कहानियाँ**—(कहानी) ले० जयशंकर त्रिपाठी, मूल्य १।) सजिल्द।

(४) **महात्माओं की कथाएँ**—(जीवनी) ले० पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ११६, मूल्य १), सजिल्द।

(५) **उपदेश की कथाएँ**—ले० पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ ८४, मूल्य ।।।), सजिल्द।

(६) **सदाचार की कहानियाँ**—पं० देवदत्त मिश्र, पृष्ठ १०८, मूल्य १।)।

(७) **देशभक्त और साहित्यकार**—ले० श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ८०, मूल्य ।।।=)।

(८) **जागरण के गान**—संग्रहकर्ता श्री 'सिद्धेश', पृष्ठ ४०, मूल्य ।=)।

(९) **हमारी शिक्षा-व्यवस्था**—ले० श्री अनाथ नाथ वसु एम० ए०, पृष्ठ १०६, मूल्य १)।

(१०) **गुलिवर की यात्रा**—ले० 'सिद्धेश', पृष्ठ ९५, मूल्य १)।

(११) **वीर बालक**—(जीवनी) प्रोफेसर 'कमलेश', पृष्ठ ९६, मूल्य ।।।=)।

(१२) **नागरिकता तथा भारतीय शासन**—ले० शिवनाथ शर्मा एम० ए०, पृष्ठ ३३०, मूल्य ४।।)।

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

१५वें अंक की विषय-सूची

★निबन्ध

अनुकृति, अन्विति और काव्यगत आनन्द : ग्रीक सौन्दर्य-शास्त्र पर एक दृष्टि : रमाशंकर तिवारी

सन्त साहित्य और जैन हिन्दी कवि : परशुराम चतुर्वेदी

जापानी साहित्य : १६२५-१६५५ : के दोई

★प्रस्तुत प्रश्न

साहित्यकार का वैयक्तिक स्वातन्त्र्य और सामाजिक दायित्व :

लेख—

हर्षनारायण, प्रभाकर माचवे, डॉ० रामअवधद्विवेदी, बालकृष्ण राव, उदयशंकर भट्ट, जैनेन्द्रकुमार, भगवतीचरण वर्मा

सम्मतियाँ—

मन्मथनाथ गुप्त, यशपाल, विजयशंकर मल्ल, डॉ० नगेन्द्र, नलिन विलोचन शर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त, विनयमोहन शर्मा, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा

★मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के नये यात्री ; तीन लघु उपन्यास ; कविताएँ : १६५४ ; हिन्दी कथा-साहित्य ; प्रेमचन्द—समीक्षकों की दृष्टि में ; बाजत आवे ढोल ; अमर बेल ; निर्गुण की कहानियाँ ; सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य-नाटक ; छायावाद की काव्य-साधना ; कविता में प्रकृति-चित्रण ; मैला आंचल ; कबीर साहित्य की परख ; नवीना ; काव्यधारा ; लोमड़ी का माँस

★पुस्तक परिचय

वार्षिक मूल्य १२) । प्रत्येक अंक का ३)

राजकमल प्रकाशन,

१, फैज बाजार, दिल्ली ।

(१६) धीमान ब्राह्मण — दिल्ली
(१७) हरिश्चन्द्र — ,,
(१८) हंसादेश — ,,
(१९) होमियोपैथिक सन्देश — ,,
(२०) इतिहास — ,,
(२१) जासूस — ,,
(२२) जीवन साहित्य — ,,
(२३) कमल, — ,,
(२४) क्रान्ति — ,,
(२५) लोकचित्र — ,,
(२६) मानव धर्म — ,,
(२७) मस्ताना जोगी — ,,
(२८) मज़दूर संसार — ,,
(२९) मोहनी — ,,
(३०) नवचित्र पट — ,,
(३१) न्याय — ,,
(३२) देवनागर — ,,
(३३) परिवार — ,,
(३४) राजस्थान — ,,
(३५) रंगभूमि — ,,
(३६) रंगमहल — ,,
(३७) साधना — ,,
(३८) सम्पदा — ,,
(३९) समाज — ,,
(४०) सरिता — ,,
(४१) सार्वदेशिक — ,,
(४२) श्रद्धानन्द — ,,
(४३) श्री ब्रह्मभट्ट हितैषी — ,,
(४४) तालीमो तरक्की — ,,
(४५) तारा — ,,
(४६) विश्व हितैषी — ,,
(४७) व्यापार गज़ट — ,,
(४८) युगछाया — ,,
(४९) प्रकाशन समाचार — ,,

त्रैमासिक

(१) आलोचना — ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	दिल्ली
(२) ब्रह्मचारी	,,
(३) हरिजन सेवा	,,
(४) श्री स्वाध्याय	,,
(५) चतुरसेन	,,

पंजाब

दैनिक

(१) हिन्दी मिलाप	जालन्धर
(२) श्री रंगनाथ	भिवानी

साप्ताहिक

(१) अपना देश	,,
(२) आर्य	अम्बाला कैंट
(३) आर्य जगत	जालन्धर
(४) भारत ज्योति	हिसार
(५) कांग्रेस बुलेटिन	रिवाड़ी
(६) दीपक	अबोहर
(७) ज्ञानोदय	हिसार
(८) हरियाना सन्देश	,,
(९) कृष्ण सन्देश	रिवाड़ी
(१०) लोक तन्त्र	शिमला
(११) सेवक	सतरोद

पाक्षिक

(१) टी० आई० टी० पत्रिका	भिवानी

मासिक

(१) अमर ज्योति	हिसार
(२) बच्चों का खेल-खिलौना,	खरार (अम्बाला)
(३) घूँघट	रोहतक
(४) हिन्दी सन्देश	अम्बाला
(५) ईश्वर प्राप्ति	अमृतसर
(६) जीवन पथ	मोगा
(७) नवराष्ट्र	जालन्धर
(८) नया साहित्य	लुधियाना
(९) प्रकाश	जालन्धर
(१०) रंगीला मुसाफ़िर	,,
(११) सैनी समाचार	खरार (अम्बाला)
(१२) विश्वव्यापी सनातन धर्म	,,

[क्रमशः]

जूनियर हाई स्कूल एवं हाई स्कूल कक्षाओं के लिए
स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार

हमारे प्रकाशन

कक्षा ६

Children's Translation Composition & Grammar P.I by Laxman Prasad Sharma. ॥=)

पुस्तक कला भा० १

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ।=)

नवीन चित्रकला भा० १

(पुस्तक-कला एवं काष्ठ-कला से सम्बन्धित कला के लिए)

ले० श्री राम गोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥।–)

कक्षा ७

Children's Translation Composition & Grammar P.II by Laxman Prasad Sharma. ॥।)

पुस्तक कला भाग २

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥)

नवीन चित्रकला भा० २

(पुस्तक कला एवं काष्ठ कला से सम्बन्धित कला के लिए) ॥।=)

कक्षा ८

Children's Translation Composition & Grammar P.III by Laxman Prasad Sharma. ॥।=)

पुस्तक कला भा० ३

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥)

नवीन चित्रकला भा० ३

(पुस्तक कला एवं काष्ठ कला से सम्बन्धित कला के लिए)

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥।≡)

कक्षा ९

नवीन हाई स्कूल अंकगणित, ले० श्री वासुदेव सहाय शर्मा १॥)

हाई स्कूल बीजगणित प्रवेशिका ले० ,, १)

आधुनिक रचनात्मक ज्यामिति (प्रेक्टिकल कार्य के लिए उपयोगी) ,, १॥)

नागरिक शास्त्र एवं भारतीय संविधान, ले० श्री फूलसिंह शर्मा १)

अपने-अपने क्षेत्र के लिए पुस्तक-विक्रेता पत्र-व्यवहार करें

सुदर्शन प्रकाशन

जौहरी बाजार, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—मानचित्र प्रवेशिका, श्री रामस्वरूप वाशिष्ठ ।

—मनोरंजक लोक कथाएँ, श्री नन्दलाल चत्ता ।

—काश्मीर की लोक कथाएँ, भाग दूसरा, श्री नन्दलाल चत्ता ।

—अवध की लोक कथाएँ, श्री शिवमूर्तिसिंह वत्स्य ।

ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर गेट, मुंगेर

—मज़दूर, श्री ओंप्रकाश । ३)

—श्रीकान्त, श्री रामप्रसाद । ४॥)

—शेष प्रश्न, श्री रामप्रसाद । ३॥)

गीता प्रेस, गोरखपुर

—बाल चित्र श्री कृष्णलीला, भाग १, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ।

—बाल चित्र श्रीकृष्णलीला, भाग २, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार ।

—रामचरित मानस का पाठ तथा मानस व्याकरण, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ।

—गीताद्वार, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ।

जननी कार्यालय, इलाहाबाद

—उपनिषद् साहित्य, श्री देवदत्त शास्त्री ।

—अतीत के हस्ताक्षर, श्री देवदत्त शास्त्री ।

—बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र, श्री देवदत्त शास्त्री ।

—चाणक्य सूत्र, श्री देवदत्त शास्त्री ।

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—इलैक्ट्रिक लाइटिंग, श्री नरेन्द्रनाथ । ६)

—लोकोशैड फिटर गाइड, श्री नरेन्द्रनाथ । १०)

—ट्रेन लाइटिंग, श्री नरेन्द्रनाथ । १०)

—स्टीम टरबाइन, श्री नरेन्द्रनाथ । १०)

नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

—बहूरानी, शम्भूदयाल सक्सेना । ३)

—चित्रपट, शम्भूदयाल सक्सेना । ३)

—पंचवटी, शम्भूदयाल सक्सेना । १॥)

—गोबर कंडे पुराण, ओंकार सक्सेना । १॥।)

नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

—पत्थर और दूब, उपन्यास, हर्षनाथ । ३)

—दुखियारी, उपन्यास, मोपासाँ ।४)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

—रेखाएँ और चित्र, श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ।

—बहानेबाज़ी, श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन ।

नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

—विचार और विश्लेषण, साहित्य निबन्ध, डॉ० नगेन्द्र ।

—चाँदी के तार, कहानियाँ, कृष्णचन्द्र एम० ए० । ३)

—रेत का महल, उपन्यास, कृष्णचन्द्र एम० ए० । ४)

—एक था शहर, उपन्यास, ताजवर सामरी ।५)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—गोरा, रवीन्द्रनाथ । ५)

प्रीमियर बुक कम्पनी, दिल्ली

—प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र, ए० एन० पुरी । ४)

—प्रारम्भिक रसायन शास्त्र, ए० एल० अग्रवाल । ३॥)

—अकार्बनिक रसायन, पी० एल० सोनी, ८)

पुस्तक मन्दिर, मथुरा

—पशु चिकित्सा, पं० सत्यदेव वैद्य व आचार्य जगन्[...] जी । ४)

—सामुद्रिक शास्त्र, पं० भृगुराज शर्मा ज्योतिषाचार्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—आधुनिक पाक विज्ञान, ३)

भारती भण्डार, इलाहाबाद

—अतिमा, श्री सुमित्रानन्दन पन्त । ४)

—वासवदत्ता का चित्रालेख, श्री भगवतीचरण वर्मा । ३)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता

—रवीन्द्र साहित्य, भाग ३, पु० मु०, रवीन्द्रनाथ टाकुर, अनु० श्री धन्यकुमार जैन । २।)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—अमृत के घड़े, पृथ्वी कुमार ।

—सोने का नीबू, 'किरण' ।

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—कीर्ति-स्तम्भ, हरिकृष्ण प्रेमी । ३)

रामलाल एण्ड सन्स, आगरा

—हमारी सुलेख पुस्तक, भाग १, आचार्य लक्ष्मण प्रसाद शर्मा । ≋)

—हमारी सुलेख पुस्तक, भाग २, आचार्य लक्ष्मण प्रसाद शर्मा । ≋)

—हमारी सुलेख पुस्तक, भाग ३, आचार्य लक्ष्मण प्रसाद शर्मा ।≋)

—हमारी सुलेख पुस्तक, भाग ४, आचार्य लक्ष्मणप्रसाद शर्मा ।≋)

विजय पुस्तक भण्डार, इन्दौर

—सामान्य विज्ञान, भग १, २, ३, रामस्वरूप जैन । ।-), ।-), ।।=) ।

—विज्ञान और जीवन, अम्बिका प्रसाद सक्सेना । १)

—इतिहास प्रवेश, भाग १, जैन व 'निर्मोही' । ।=)

—हिन्दी वर्णमाला चार्ट । ।।=)

विप्लव कार्यालय, लखनऊ

—उत्तमी की माँ, श्री यशपाल । २)

—जनाना ड्योढ़ी, श्री पर्ल बक, अनु० यशपाल । ६)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—मन की बात, श्री जयवतराय । १।।)

—काबेरी, श्री सोमसुन्दरम् ।

—सिंचाई और बिजली, श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार । ।)

—साहसी मोहन, श्री दयाशंकर मिश्र दद्दा । ।=)

—बहादुर शेखर, श्री दयाशंकर मिश्र दद्दा । ।=)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—प्रबन्ध भास्कर, श्री यज्ञदत्त शर्मा । १०)

—सुबह शाम, गेटे, अनु० श्री हरि कपूर । ५)

साहित्य संगम, लुधियाना

—हमारे नेता, श्री सत्यपाल आनन्द । १।।)

—पंच परमेश्वर, श्री सत्यपाल आनन्द । ।।=)

—महापुरुषों की बाल लीला, श्री हरिदित सिंह । १।।)

—पाली, श्री जसवन्तसिंह कंवल । ५)

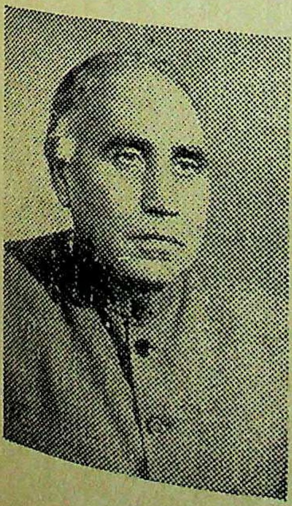

हिन्दी-जगत् के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त का नवीन उपन्यास

गुण्ठन

२५ जून तक तैयार हो रहा है ।

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

केसरी नारायण शुक्ल, मानस की रूसी भूमिका, २२८, क्रा०, विद्यामन्दिर, लखनऊ
प्रभाकर माचवे, हिन्दी निबन्ध, १०४, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
महावीर अधिकारी, प्रसाद : जीवन, कला और कृतित्व, ३६८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
श्री कृष्णलाल डॉ०, करुणापति त्रिपाठी, हीरक जयन्ती ग्रन्थ, ८२५, रायल, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस
सतीशचन्द्र काला, सिन्धु सभ्यता, ११२, रायल, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

कविता

विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, सं०, केशव ग्रन्थावली, खण्ड १, २३२, रायल, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
अलग्जेंडर पुश्किन, अनु०, वीरेन्द्र राजऋषि, जिप्सी, १०८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
शागिर्द अल्लहाबादी, मुस्कान, १७६, क्रा०, दि स्टुडैण्टस स्टोर्स, जबलपुर
सरनदास भनोत, काव्यामृत, १८२, क्रा०, प्रीमियर बुक कम्पनी, दिल्ली

कहानियाँ

कुशवाहा कान्त, पराजिता, पु० मु०, १२८, क्रा० चिनगारी प्रकाशन, बनारस
दर्शनानन्द सरस्वती, कथा पच्चीसी, पु० मु०, ११२, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
देवदत्त शास्त्री, अवंति सुन्दरी, १३६, क्रा०, जननी कार्यालय, इलाहाबाद
मोपासां, अनु० सूरज नारायण, मोपासां की श्रेष्ठ कहानियाँ, २२४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा

उपन्यास

ओमप्रकाश चोपड़ा, बेग़म का खज़ाना, १४४, क्रा०, रंगमहल कार्यालय, दिल्ली
ओमप्रकाश चोपड़ा, रहस्य, १४४, क्रा०, रंगमहल कार्यालय, दिल्ली
एटन चेखव, अनु० हंसराज 'रहबर', गुमनाम, १२४, क्रा०, सुबोध प्रकाशन, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिजादत्त शुक्ल, नादिरा, ३१२, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ५)
गुरुदत्त, गुण्ठन, ३६४, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ५)
गुरुदत्त, विकृत छाया, पु० मु०, ३०८, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ४॥)
चतुरसेन आचार्य, वयं रक्षामः, २ खण्ड, शारदा प्रकाशन, भागलपुर १२)
जैनेन्द्रकुमार, सुखदा, पु० मु०, २०२, क्रा०, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली ४)
टालस्टाय, पुनर्जीवन, पु० मु०, ज्ञान मण्डल लि०, बनारस ६॥)
टैगोर, अनु० कुमार, नौका डूबी, २६७, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस ३)
दयाशंकर मिश्र, बुझते दीप, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
नकाबपोश भेदी, मौत का खेल, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ।॥)
नरोत्तम नागर, फूल और पतझर, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ५)
पथ पर, १२८, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली २॥)
प्रतापचन्द्र अग्रवाल, समुद्री डाकू, १२०, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद ॥–)
बैजनाथ राय, बलिदान, ३५०, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता ३॥)
यज्ञदत्त शर्मा, परिवार, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ५)
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० विपिन बिहारी, उपवन, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० धन्यकुमार जैन, दो बहनें, रवीन्द्र साहित्य, भाग १, पु० मु०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता २।)
राखालदास वन्द्योपाध्याय, अनु० शम्भुनाथ वाजपेयी, असीम, ४७५, क्रा०, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस ४)
वाल्टर स्कॉट, अनु० मगनलाल जैन, केनिल वर्थ, १००, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली २)
विला कैथर, अग्रगामी, १५०, क्रा०, आधुनिक साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली १।)
शंभूदयाल सकसेना, मगरमच्छ, ५२५, क्रा०, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर ६)
'अश्क', अंजो दीदी, १४१, क्रा०, नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद २॥)
दिङ्नाग, अनु० प्रो० चारुदेव शास्त्री व प्रो० कृष्णकुमार धवन, कुन्दमाला, भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर ३॥)
देवदत्त शास्त्री, अनु० उत्तर रामचरित नाटक, १०४, क्रा०, जननी कार्यालय, इलाहाबाद १)
रमाशंकर त्रिपाठी, कर्मदेवी, १५०, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता २)

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

के० राजशेष गिरिराव, आन्ध्र की लोक कथाएँ, ६०, फुलस्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
गोपालकृष्ण कौल, बापू का रामराज्य, २४, क्रा०, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।=)
चन्द्रकुमार, छत्तीसगढ़ की लोक-कथाएँ, ६०, फुलस्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
परितोष गार्गी, गार्गी के बाल नाटक, ६४, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय मूर्तिकला की कहानी, ८५, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय संस्कृति के विस्तार की कहानी, ५२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।॥)
भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय संस्कृति की कहानी, ८८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
लक्ष्मीनारायण बी० ए०, बी० टी०, नए तीर्थः नई यात्रा, ५६, क्रा०, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली ।॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विराज एम० ए०, गाय और बाघ, ४८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
विराज एम० ए०, समुद्र की लीला, ४८, क्रा०, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
विश्वम्भरनाथ कौशिक, सहस्त्र रस दर्पण, २००, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
श्रीकृष्ण, आँगन के फूल, ३६, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ
सन्तोष नारायण नौटियाल, चन्दा मामा का देश, पु० मु०, १०६, डबल क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
सावित्री देवी वर्मा, उत्तर भारत की लोक-कथाएँ तीन भाग, ५०, फुलस्कैप, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-प्रत्येक
हनुमानप्रसाद पोद्दार, गजेन्द्र मोक्ष, ४८, गुटका, गीता प्रेस, गोरखपुर
हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, हमारे गाँव, ४८, क्रा०, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर

विविध

अकबर बीरबल विनोद, पु० मु०, २००, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
ओमप्रकाश एम० ए०, हमारी माँगें, पु०, मु०, १६६, डि०, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर
एस० एन० चोपड़ा, कपड़े की बनावट और उसके डिजाइन, ९६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
एस० एन० चोपड़ा, सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ों की रंगाई, धुलाई, छपाई, १०६, क्रा० देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
कौशल्या देवी, नारी ज्ञान प्रकाश, १५०, डि०, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर
दर्शनानन्द सरस्वती, उपनिषद प्रकाश, ५००, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
यशपाल जैन, जय अमरनाथ, १३६, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
राधेश्याम वशिष्ठ, रामायण, पु० मु०, ४१६, रायल, श्याम काशी प्रेस, मथुरा
रामनाथ 'मिलिन्द', दीवार, २५०, डि०, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर
रा० र. खाडिलकर, हालैण्ड में पच्चीस दिन, १५६, ड० क्रा०, ज्ञान मण्डल लि०, बनारस
राहुल सांकृत्यायन, सरदार पृथ्वीसिंह, पु० मु०, ड० क्रा०, ज्ञान मण्डल लि०, बनारस
विश्वनाथ व चौधरी, ज्योतिष शास्त्र के मूल सिद्धान्त, ६४, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
विष्णु प्रभाकर, बाजी प्रभु देशपाण्डे, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
साधुराम शास्त्री, काव्यप्रकाश प्रश्नोत्तरी, भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर
सोमसुन्दरम्, तिरुवल्लुवर, ४०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

शिक्षा

आत्मानन्द 'मिश्र', शिक्षण कला, २००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
राम खेलावन चौधरी, शिक्षा में आधुनिक प्रयोग, १२८, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ
राम खेलावन चौधरी, शिक्षण विधियों की रूपरेखा, ५१२, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ
विश्ववीर विद्यार्थी, विश्व के महान शिक्षक व उनकी प्रणालियाँ, ४००, क्रा०, गर्ग ब्रदर्स, इलाहाबाद
सिंह डॉ०, सिक्खों के दस गुरु, १६०, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

the publishers regret

that an unforeseen labour strike in the printery has slightly delayed the publication of

the second revised edition of

ASOKA

by

Dr. Radha Kumud Mookerji

M. A., Ph. D., D. Litt., F. A. S. B., M. P.

A historical treatise on the life and times of ASOKA
Price Rs. 15/- only

The Book will now be ready shortly.

If you have not yet placed your order with us please do it immediately, so as not to miss the first despatch.

★

Another Important Book by the same Author

Chandra Gupta Maurya and His Times

A detailed study of the Golden Age in India's history.
Price Rs. 15/- only

★

By the same author

Men and Movements in Ancient India

A complete view of ancient Indian culture and civilization, as seen in some of their best representatives. Particularly written for students of high-school standard.

AWAIT PUBLICATION

Enquiries to :—

RAJKAMAL PUBLICATIONS LTD.,

1, Faiz Bazar, Delhi

Himalaya House, Hornby Road, Bombay-1

15-A, Mahatma Gandhi Marg, Allahabad

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D—594

देहाती पुस्तक भण्डार के प्रमुख प्रकाशन

टैक्निकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक	१०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड	६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग	४)
४. इलैक्ट्रिक बैटरीज़	३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज	१)
६. इलैक्ट्रिकल सुपरवाइज़र परीक्षा पेपरज	३)
७. सुपरवाइज़र तथा वायरमैन परीक्षा प्रश्नोत्तर	३॥)
८. इलैक्ट्रिकल परीक्षा पेपर्ज सम्पूर्ण दोनों भाग	६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड	१०)
१०. आयल इंजन गाइड	६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड	४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड	६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक)	६)
१४. घरेलू बिजली तथा रेडियो मास्टर	२॥)
१५. मोटर कार वायरिंग	४॥)
१६. टाँका लगाने का ज्ञान	२॥)
१७. छोटे डायनुमो तथा इलैक्ट्रिक मोटर बनाना	३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईन्डिंग	६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड	३)
२०. वर्कशाप गाइड अथवा फिटर ट्रेनिंग	३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग	६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स	६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स	१०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन)	४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साज़ी	४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग (साईकिल मरम्मत)	२॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग	२॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग	४॥)
३२. फाउण्डी प्रैक्टिस (ढलाई का काम)	६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४॥)
३४. वीविंग गाइड	४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा	२॥)
३६. ट्यूब वैल गाइड	३॥)
३७. लो कॉस्ट हाउसिंग टैक्निक (इंग्लिश)	५)
३८. जन्त्री पैमाइश चौब (लकड़ी के माप की जन्त्री)	३॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर	१०)
४०. मोटर ड्राईविंग	४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड	४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर	६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड)	६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो	३॥)

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी	२॥)
२. प्लास्टिक गाइड	२॥)
३. बूट पालिश	२॥)
४. अप्टूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना)	२॥)
५. कन्फैक्शनर	२॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल)	२॥)
७. बेकरी बहार (बिस्कुट, डबल रोटी, कैक)	२॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा	[illegible]
९. पैन्टी का काम	[illegible]
१०. चित्रकारी अथवा मुसब्बरी	[illegible]
११. परफ्यूमरी मास्टर	[illegible]
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी)	[illegible]
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार	[illegible]
१४. हलवाई मास्टर	[illegible]
१५. तम्बाकू का कारोबार (तम्बाकू की दूकान)	[illegible]
१६. पान की दूकान	[illegible]
१७. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें	[illegible]
१८. मोमबत्ती का व्यापार	[illegible]
१९. डेरी फार्म का व्यापार	[illegible]
२०. मुँह देखने के शीशे बनाना (आईना साज़ी)	[illegible]
२१. फ़ेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना	[illegible]
२२. वीविंग केल्कुलेशन	[illegible]
२३. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई और धुलाई	[illegible]
२४. कपड़े की बनावट और उसके डिज़ाइन	[illegible]
२५. सत्य व्यापार लक्ष्मी भन्डार	[illegible]
२६ लाँड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)	[illegible]
२७. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग	[illegible]
२८. शर्बत विज्ञान	[illegible]
२९. [illegible] वाइंडिंग	[illegible]
३०. दर्ज़ी मास्टर	[illegible]

पुस्तकालयों तथा पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की सुविधा दी जाती है। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता:—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
[illegible] प्रेस द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

जुलाई, १९५५ गुरुकुल पत्रिका अङ्क ११

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

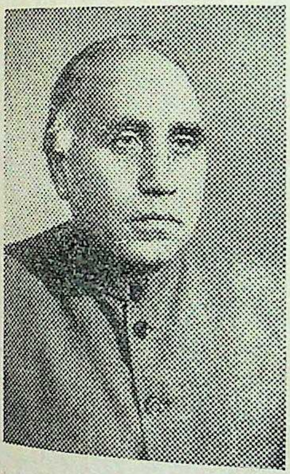

हिन्दी-जगत् के प्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त की नवीन रचना

गु ण्ठ न

पृष्ठ संख्या ३७६; मूल्य ५)

यह एक मध्यम वर्ग के हिन्दू-परिवार की कथा है। परिवार एक घेरा है जिसका बाहर और भीतर है। इसी कारण इस कथा का नाम गुण्ठन रखा गया है।

- श्री गुरुदत्त के उपन्यास हिन्दी में अपने ढंग के हैं। विषय का चुनाव, उनका विवेचन, उनके कथन का ढंग आदि उनको अच्छे उपन्यासकारों की श्रेणी में बिठाने के लिए उपयुक्त है। —'हिन्दुस्तान'
- श्री गुरुदत्त एक नवीन और सबल प्रेरणा लेकर हिन्दी साहित्य में आये हैं—'नवभारत'
- आपके उपन्यासों की भाषा सजीव, ओजस्वी और प्रवाहमयी है —श्री अवनीन्द्र
- लेखक ने उपन्यास सोद्देश्य लिखे हैं —श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-१

(श्री गुरुदत्त की रचनाओं की सूची के लिए पृष्ठ ५४१ का विज्ञापन देखें।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती पुस्तक भण्डार के प्रमुख प्रकाशन

टैक्निकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक	१०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड	६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग	४)
४. इलैक्ट्रिक बैटरीज़	३।।)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज	१)
६. इलैक्ट्रिकल सुपरवाइज़र परीक्षा पेपर्स	३)
७. सुपरवाइजर तथा वायरमैन परीक्षा प्रश्नोत्तर	३।।)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज सम्पूर्ण दोनों भाग	६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड	१०)
१०. आयल इंजन गाइड	६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड	४।।)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड	६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक)	६)
१४. घरेलू बिजली तथा रेडियो मास्टर	२।।)
१५. मोटर कार वायरिंग	४।।)
१६. टाँका लगाने का ज्ञान	२।।)
१७. छोटे डायनुमो तथा इलैक्ट्रिक मोटर बनाना	३।।)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईंडिंग	६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड	३)
२०. वर्कशाप गाइड अथवा फिटर ट्रेनिंग	३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग	६)
२३. स्टीम वायलर्स और इन्जन्स	६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स	१०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन)	४।।)
२६. प्रैक्टिकल घड़ीसाज़ी	४।।)
२७. साईकिल रिपेयरिंग (साईकिल मरम्मत)	२।।)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग	८।।)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२।।)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२।।)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग	४।।)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई का काम)	६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४।।)
३४. वीविंग गाइड	४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा	२।।)
३६. ट्यूब वैल गाइड	३।।)
३७. लो कॉस्ट हाउसिंग टैक्निक (इंग्लिश)	५)

३८. जन्त्री पैमाइश चौब (लकड़ी के माप की जन्त्री)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर
४०. मोटर ड्राइविंग
४१. मोटर साइकिल गाइड
४२. मोटर मैकेनिक टीचर
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी
२. प्लास्टिक गाइड
३. बूट पालिश
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना)
५. कन्फैक्शनर
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल)
७. बेकरी बहार (बिस्कुट, डबल रोटी, कैक)
८. अचार चटनी मुरब्बा
९. पैन्ट्री का काम
१०. चित्रकारी अथवा मुसब्बरी
११. परफ्यूमरी मास्टर
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी)
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार
१४. हलवाई मास्टर
१५. तम्बाकू का कारोबार (तम्बाकू की दूकान)
१६. पान की दूकान
१७. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें
१८. मोमबत्ती का व्यापार
१९. डेरी फार्म का व्यापार
२०. मुँह देखने के शीशे बनाना (आईना साज़ी)
२१. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना
२२. वीविंग केल्कुलेशन
२३. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई और धुलाई
२४. कपड़े की बनावट और उसके डिज़ाइन
२५. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार
२६. लॉंड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)
२७. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग
२८. शर्बत विज्ञान
२९. बुक बाइंडिंग
३०. दर्जी मास्टर

पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को कमीशन की सुविधा दी जाती है। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता :—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक ११ :
: पूर्णाङ्क २३ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

समय हुआ अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के निधि-मण्डल भारत में पुस्तकों की बिक्री पर लगने वाले ी-कर' के विरुद्ध भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल , शिक्षा मन्त्री मौलाना अबुलकलाम आज़ाद तथा ार के शिक्षा-मन्त्री आचार्य बद्रीनाथ जी वर्मा से मिले श्री नेहरू ने अपना व्यक्तिगत समर्थन इस माँग के पक्ष दिया था कि पुस्तकों पर 'बिक्री-कर' कदापि न होना हिए, लेकिन 'बिक्री-कर' का प्रश्न राज्यों की सरकारों के ों में होने के कारण उन्होंने केन्द्र से इस ओर कोई पग ाने में असमर्थता भी जताई थी। ऐसा ही उत्तर भारत शिक्षा-मन्त्री ने दिया था। बिहार के मान्य शिक्षा-मन्त्री अपने राज्य के वित्त-मन्त्री द्वारा इस 'कर' को बरकरार े पर खेद भी प्रकट किया था। पुस्तकों की बिक्री पर ने वाला यह 'कर' शिक्षा और ज्ञान पर प्रत्यक्ष 'कर' है आज के सभ्य जगत् के किसी देश में सहन नहीं किया ा। कुछ समय के लिए कनाडा में भी ऐसा 'कर' ाया गया था, लेकिन जनमत ने तुरन्त ही इसे वापिस े के लिए अपनी सरकार को मजबूर किया। राष्ट्रसंघ की ंस्कृतिक और शैक्षणिक संस्था—युनेस्को—ने एक प्रस्ताव ा संसार की सब सरकारों से अनुरोध किया था कि शिक्षा, ंस्कृति और विज्ञान से सम्बन्धित साहित्य पर किसी प्रकार ातिबन्ध 'करों' के रूप में नहीं लगने चाहिएँ तथा उनके ाधिक प्रचार के उद्देश्य से सब प्रकार की सुविधाएँ ारों की ओर से मिलनी चाहिएँ। 'अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक ' के ज्यूरिच में हुए १३वें सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था जिसमें कहा गया था कि "पुस्तकों पर लगने वाले सब प्रकार के टैक्स, चाहे उनका कोई भी रूप हो,... पुस्तकों पर एक भारी और वास्तविक बोझ हैं।.... विभिन्न देशों में पुस्तकों से सरकारों का वित्तीय सम्बन्ध उन सरकारों द्वारा घोषित सांस्कृतिक उद्देश्यों के विपरीत है। ....यह सम्मेलन, देश-विदेशों में प्रकाशकों की राष्ट्रीय संस्थाएँ, इस प्रकार के सब टैक्सों को हटाने की हर सम्भव कोशिश करें।" प्रकाशकों की इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की ओर से इस के उपप्रधान सर स्टैनले अन्विन कुछ राज्यों के मुख्य मन्त्रियों से तथा केन्द्र के अधिकारियों से मिले थे, लेकिन सफल नहीं हुए। सुनते हैं कि एक राज्य के मुख्य मन्त्री ने उनसे यह भी कहा कि जो पुस्तकें आजकल प्राप्य हैं, उनमें से अधिकांश को वह शिक्षा और ज्ञान का माध्यम ही नहीं समझते! और फिर कितने भारतीय पुस्तकों को खरीद सकते हैं? जिनमें पुस्तकों पर पैसा खर्च करने की सामर्थ्य है, वह निश्चय ही 'बिक्री-कर' भी दे सकते हैं।

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग के सम्मुख जो प्रकाशक-संघ की ओर से माँग-पत्र रखा गया था, उसमें उठाये गए 'बिक्री-कर' के प्रश्न पर हाल ही में शिक्षा-मन्त्रालय की ओर से उत्तर दिया गया है। उत्तर में कहा गया है कि "यद्यपि एसेंशल गुड्स (डिक्लेरेशन एण्ड रेगुलेशन ऑफ़ टैक्स ऑन सेल और पर्चेज़) ऐक्ट, १९५२ (१९५२ के ऐक्ट नं० ५२) के अनुसार पुस्तकों को 'समाज के जीवन के लिए आवश्यक वस्तु' घोषित किया जा चुका है और अब नये सिरे से केन्द्रीय सरकार की अनुमति प्राप्त किये बिना उन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'बिक्री-कर' नहीं लगाया जा सकता, कुछ राज्यों की सरकारें एसेंशल गुड्स ऐक्ट के (९ अगस्त १९५२) लागू होने से पहले बने अपने कानूनों के अनुसार उन पर 'बिक्री-कर' लगाती चल रही हैं। केन्द्रीय सरकार इन राज्य-सरकारों को पुराने कानूनों के अनुसार यह 'कर' लगाने से रोक नहीं सकती, क्योंकि इस कानून का अनुदर्शी प्रभाव नहीं है।''

इस पत्र से स्थिति स्पष्ट है। लोक-सभा ने पुस्तकों पर 'बिक्री-कर' न लगाने के सम्बन्ध में जो कानून बनाया है, उसकी भावना के विरुद्ध ही कुछ राज्यों की सरकारें पुस्तकों पर 'बिक्री-कर' का प्रतिबन्ध लगाये हुए हैं। कानून के शब्दों की सुविधानुसार ओट में उसकी भावना का खण्डन करना अशोभन और अनैतिक है। भारत की सभी भाषाओं के प्रकाशन और पुस्तक व्यवसाय के क्षेत्रों, समस्त शिक्षा-संस्थाओं, पुस्तकाध्यक्ष, लेखकों एवं साहित्यिकों द्वारा शिक्षा और ज्ञान पर लगे हुए इस गैर-कानूनी 'कर' का संघटित विरोध होना चाहिए।

प्रकाशन समाचार

का

अपना चन्दा मनी-आर्डर से ही भेजें। पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

—प्रबन्ध विभाग

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द।

२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५, सजिल्द।

३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।

४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी।

५. **सार्थवाह**—ले०डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथ के मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२।

७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।

८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ-संख्या ३६२। सजिल्द।

९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज़। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

...जुगलकिशोर जरगर 'विशारद' (प्रचार मन्त्री, कला-...मण्डल, १४१ सराफ़ा, जबलपुर) लिखते हैं कि ...के पास बच्चों के लिए एक कविता-संग्रह राजा मुन्ना ...के से तैयार है जिसमें करीब २० कविताओं का समावेश ...प्रकाशित होने पर लेखक पुस्तक की २०० प्रतियाँ जबल-...में बिक्री करा देंगे। दूसरी पुस्तक २० पाठों की तैयार है ...में मनोविज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली बच्चों की कविताएँ ...था 'मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्' द्वारा प्राइमरी ...लों में चलने वाली पुस्तकों के अनुकूल विषय का बाहुल्य ...प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

...अयोध्याप्रसाद 'अचल' (सच्चिदानन्द सिन्हा कॉलेज, ...रंगाबाद, गया) लिखते हैं कि उनके पास ३ पुस्तकों ...पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं जिनके लिए योग्य प्रकाशक की ...आवश्यकता है : (१) **डॉ॰ फ्रायड और मनोविश्लेषणात्मक** ...विज्ञान छपकर लगभग १२८ पृष्ठ होंगे; (२) **विजय** ...म, अशोककालीन ऐतिहासिक उपन्यास; पृष्ठसंख्या छपने ...लगभग ११२; (३) **खेत का मूल्य**, कहानी-संग्रह।

◆ ◆ ◆

...परशुराम 'कंचन' (साप्ताहिक 'संयुक्त मोर्चा', झाँसी) ...पास एक आत्मकथा नाम के उपन्यास की पाण्डुलिपि ...र है। उपन्यास की पाण्डुलिपि को देखकर श्री वृन्दावन-...वर्मा का कथन है कि "इस उपन्यास को पढ़कर मुझको ...में आगे आने वाले जिस प्रगतिशील साहित्य की झलक ...दिखाई पड़ी, उससे मुझे उत्साह मिला है।" प्रकाशन के ...इच्छुक प्रकाशक लेखक से सम्पर्क स्थापित करें।

◆ ◆ ◆

श्री सत्यव्रत उपाध्याय (सूरजकुण्ड मठ, पान दरीबा, बनारस) के पास तीन उपन्यासों की पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं जिनके नाम **स्वयंप्रभा, स्वर्णकिरण** तथा **एकला चलो** हैं। तीनों प्रायः ११२ फुलस्कैपी आकार के पृष्ठों में हैं।

◆ ◆ ◆

श्री यशवन्तनारायण मोघे (पो॰ बिरला नगर, ग्वालियर) लिखते हैं : " 'मुख्य मन्त्री के लिए गड्ढा', 'हाय पानी', 'साल-गिरह की सौगात', 'जब फाँसी का फन्दा भी मुझे मार न सका', आदि मराठी से हिन्दी में रूपान्तरित श्रेष्ठ हास्य-विनोद कथाओं की तथा **महाकवि कालिदास : विभूति और वाङ्मय** मौलिक ग्रन्थ की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं।" प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

डॉ॰ मधुकर गंगाधर, ग्राम झलारी, पो॰ रुपौली, जि॰ पूर्णिया (बिहार) के पास निम्न पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं—(१) तीन नाटक; (२) दो हास्य-कथा-संग्रह; (३) दो कहानी-संग्रह; (४) एक उपन्यास; (५) और तीन काव्य। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

आजमगढ़ से श्री बृजपालदास (५२, दलसिंगार) सूचित करते हैं कि उनके पास ४५ फुलस्केप पृष्ठों का एक कहानी-संग्रह **'पहला कदम'** नाम से प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशक इसके लिए पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

श्री छविनाथ राय, पत्रकार, मार्फत दक्षिण भारतीय प्रकाशन समिति, अफ़जलगंज, हैदराबाद सूचित करते हैं कि उनके पास निम्न पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं : (१) **पैंतीस करोड़ मुर्दों की आत्म-कहानी**; भारतीय समाज, साहित्य, धर्म, न्याय, वाणिज्य, कला-कौशल आदि प्रवृत्तियों पर आलोचना; पृ॰ सं॰ २५०; (२) **दरिद्र नारायण**; भिखारी जीवन के पीछे छिपी आलस्य, विलासिता और कामचोरी की कहानियाँ; पृष्ठ २००। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय और पुतस्कें

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी

बिहार राज्य पुस्तकालय संघ के मुखपत्र 'पुस्तकालय' से इस महत्त्व-
लेख को हम साभार उद्धृत कर रहे हैं। इसमें एक अत्यन्त साम-
प्रकाशकीय समस्या की ओर पुस्तकालयों का ध्यान आकृष्ट किया गया

"हमारे पुस्तकालय में इतनी हजार पुस्तकें हैं, इतनी दर्जन पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं"—प्रायः ही पुस्तकालय संचालक को ऐसी बातें छाती फुलाकर कहते सुनता हूँ।

हाँ, वह पुस्तकालय कैसा जिसकी पुस्तकों की संख्या हजार में नहीं कही जाय?

किन्तु, ऐसे पुस्तकालयों में भी जाकर मुझे निराशा ही मिली है। पाया है, पुस्तकों की संख्या तो निस्सन्देह बहुत बड़ी है, किन्तु जब देखना शुरू किया, तो लगा, अधिकांश पुस्तकें जैसे संख्या बढ़ाने के लिए ही खरीदी या एकत्र की गई हैं।

और, आजकल बाजार में ऐसी ही पुस्तकों की भरमार भी है। जैसी माँग, वैसा माल। आप पुस्तकों की संख्या बढ़ाना चाहते हैं, तो लीजिए टके की तीन सेर भाजी!

बहुत से प्रकाशकों का यही पेशा हो गया है। वे सस्ती, भद्दी पुस्तकें छपवाकर, पचास सैकड़ा कमीशन तक पर, हमारे पुस्तकालयों को कूड़ा-कचरा से भर रहे हैं।

और, हम उस कूड़ा-कचरे को पुस्तकें समझकर बड़ी संख्या बताते हुए नहीं अघाते!

संख्या का मोह

यह बड़ी संख्या का मोह हमारे पुस्तकालयों को बरबाद कर रहा है। बिहार में पुस्तकालय आन्दोलन जोरों पर है। गाँव-गाँव में पुस्तकालय कायम हो रहे हैं। किन्तु, यदि यही रवैया रहा, तो यह आन्दोलन और ये पुस्तकालय गाँव को रसातल में ले जायँगे।

अच्छा पुस्तकालय वह नहीं है, जिसमें अधिक से-अधिक पुस्तकें हों। अच्छा पुस्तकालय वह है जिसमें अच्छी-से-अच्छी पुस्तकें हों, यह हमें प्रारम्भ में ही समझ लेना चाहिए।

कपूत बेटे से निस्सन्तान रहना अच्छा, शास्त्रों ने जो कहा है, वह बहुत सोच समझकर। उसी तरह हमें समझ लेना चाहिए, बुरी पुस्तकों से भरा पुस्तकालय रखने की अपेक्षा पुस्तकालय नहीं रखना अच्छा।

बुरी सन्तान स्वयं अपने को या अपने परिवार को बर्बाद करती है; बुरी पुस्तकें तो सारे गाँव को बरबाद कर देती हैं।

अतः जब हम पुस्तकालय स्थापित करें या स्थापित पुस्तकालय की वृद्धि और विकास करने की बात सोचें, हम सदा यह स्मरण रखें कि अपने पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकें ही रखेंगे।

चुने-चुनाए थोड़े-से सैनिक भी विजय दिला दे सकते हैं, थोड़ी सी अच्छी पुस्तकें भी गाँव की कायापलट कर सकती हैं।

सबसे पहले हम संख्या के इस मोह को छोड़ें। घमण्ड इस बात का नहीं हो कि हमारे पुस्तकालय में इतनी पुस्तकें हैं, हम गौरव इस बात पर अनुभव करें कि हमारे पुस्तकालय में इतने विषयों की, इतने अच्छे लेखकों द्वारा लिखित, इतनी अच्छी पुस्तकें हैं।

अच्छी पुस्तकें कौनसी हैं?

लोग पूछेंगे, आप अच्छी पुस्तकें किन्हें मानते हैं? आपकी नजरों में अच्छी पुस्तकें कौनसी हैं।

अच्छी पुस्तकें वे हैं, जो उस विषय के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं, जिनकी छपाई-सफाई सुन्दर और शुद्ध है, जिनमें कागज भी अच्छा लगाया गया है और जिनकी जिल्द भी मजबूत है। हाँ, पुस्तकालयों में रखने के लिए यह भी आवश्यक है कि पुस्तकों का कागज अच्छा हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल न्यूजप्रिंट के सस्ते कागज पर पुस्तकें छपवा ली जाती हैं और सस्ते दामों पर पुस्तकालयों में खपा दी जाती हैं। बस, ऊपर जरा तड़क-भड़क वाला आवरण लगा दिया और फिर बाजार अपना।

पुस्तकालयों के संचालक भूल जाते हैं कि ऐसी पुस्तकें पुस्तकालयों के लिए सर्वथा ही अनुपयुक्त हैं। न्यूजप्रिन्ट का यह सस्ता कागज दस-पाँच वर्ष भी टिक सकता। जहाँ पाँच-सात बार हाथ लगाइये, यह कागज टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। और यदि पुस्तकालय में बिना छुए रखे रहिये तो भी थोड़े ही दिनों में ही यह सड़-गल जायगा। उसको बरबाद करने के लिए दीमकों की भी जरूरत नहीं।

पुस्तकालयों में तो ऐसी ही पुस्तकें चाहिएँ, जो टिकाऊ हों। जो सौ-दो-सौ वर्ष नहीं भी टिकें, तो पचीस-पचास साल तो चलें ही।

ज्यों-ज्यों पुस्तकें पुरानी होती हैं, उनकी कीमत बढ़ती जाती है। सौ दो-सौ साल पहले की छपी छोटी-छोटी पुस्तकें हजारों रुपयों में बिकती हैं। एक-डेढ़ रुपये की पुस्तकें चार-पाँच सौ वर्षों के बाद लाखों में बिकी हैं।

हमारे पुस्तकालय में जितनी ही पुरानी पुस्तकें होंगी, उतनी ही हमारे पुस्तकालय की कीमत बढ़ती जायगी—यदि इतना ध्यान रखा जाय, तो फिर आज की न्यूजप्रिन्ट पर छपी पुस्तकें कोई पुस्तकालय खरीदने का नाम भी न ले।

अच्छा कागज हो, साथ ही अच्छी छपाई हो। जिनके अक्षर ही टूटे हों, ऐसी पुस्तकें पुस्तकालय में रहने से क्या लाभ? जिनके अक्षर आज ही ठीक से नहीं पढ़े जाते, वे वर्षों के बाद कैसे पढ़े जा सकेंगे?

और पुस्तकालयों के लिए यथासम्भव सजिल्द पुस्तकें खरीदनी चाहिएँ। देहातों में जिल्दसाज़ कहाँ मिलेंगे? थोड़े ही दिनों में जिन पुस्तकों की धज्जियाँ उड़ जायँ, उन पर पैसा खर्च करना क्या बुद्धिमानी है?

अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखित

यह तो बहिरंग हुआ। असल बात तो यह है कि अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें ही पुस्तकालयों में रखी जानी चाहिएँ।

जब से पुस्तकालय-आन्दोलन चला है, तब से ऐसे लेखकों की भरमार हो चली है, जो कम-से-कम पारिश्रमिक पर पुस्तकें लिख दें और जिन्हें जैसे-तैसे छपवाकर, जरा ऊपरी तड़क-भड़क के साथ प्रकाशक सस्ते दामों में पुस्तकालयों में ठूँस दें।

यह सस्ता सौदा बड़े धड़ल्ले से चल रहा है।

किसी पुस्तकालय में जाकर पूछिए, तुलसी और सूर, प्रेमचन्द और प्रसाद, अज्ञेय और जैनेन्द्र, पन्त और बच्चन, राजा राधिकारमण और शिवपूजन सहाय, दिनकर और जानकीवल्लभ आदि की कितनी पुस्तकें आपके पुस्तकालय में हैं, तो उनके उत्तर से आपको सर्वथा निराश होना पड़ेगा। ये पुस्तकालय हैं या चों-चों का मुरब्बा!

कोई भी नहीं चाहता कि उसके गाँव की पाठशाला में ऐसे गुरुजी रखे जायँ जो ठीक से पढ़ा नहीं सकें या जिनका चरित्र बुरा हो। कोई भी आसपास के अस्पताल में ऐसे डॉक्टर की भरती पसन्द नहीं करेगा, जो बीमारी दूर करने के बदले बढ़ावे ही। किन्तु, जब पुस्तकों के चुनाव का समय आता है, तो लोग इस बात को भूल जाते हैं।

हिन्दी में अधिकारी लेखकों की कमी नहीं—उपन्यास,

आँसू और उसका कवि

('आँसू' की विस्तृत टीका तथा समीक्षा)

लेखक

शिवकुमार मिश्र, एम० ए०

इस पुस्तक के प्रथम भाग में छायावाद, प्रसाद की जीवनी, प्रतिभा एवं कला, 'आँसू' : प्रसाद की वेदना का मूर्तरूप, 'आँसू' का आलम्बन, 'आँसू' का हृदय-पक्ष, कला-पक्ष, लोक-पक्ष, 'आँसू' में नियतिवाद, रहस्यवाद आदि विषयों का विशद विवेचन किया गया है। द्वितीय भाग में 'आँसू' की पंक्तियों की टीका और व्याख्या है।

पृष्ठ १२६ + ७६ मूल्य २॥)

मालवीय पुस्तक भवन

अमीनाबाद, लखनऊ

तथा हिन्दी भवन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके बिना आपकी दुकान सूनी है

• **पद्म प्रमोद**—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध की कविता पुस्तक, डिमाई साइज, २२ फर्मे, ग्लेज ऐंटिक कागज, सुन्दर गेटअप, सजिल्द ५), कमीशन २५%

• **रूहे सुख़न**—उर्दू के प्रसिद्ध शायरों के परिचय सहित चुनी हुई शायरी का संकलन। क्राउन, ११ फर्मे, सफेद ऐंटिक कागज, सुन्दर गेटअप, सजिल्द ३), कमीशन ४०%

• **सेवा और त्याग**—गुलाब-रत्न वाजपेयी का समस्या उपन्यास। लगभग १४ फर्मे, मूल्य ३॥), सफेद कागज, क्राउन आकार, कमीशन २५%

• **रोते नैना**—प्यारेलाल 'आवारा' के रोचक उपन्यास का दूसरा संस्करण, मूल्य २॥), कमीशन ४०%

• **पाँच सदस्य**—टैगोर के आध्यात्मिक तथा रहस्यवादी उपन्यास का दूसरा संस्करण, ऐंटिक कागज, सजिल्द २॥), कमीशन ४०%

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स

ज्ञानवापी, बनारस।

कहानी, शब्दचित्र, नाटक, कविता, काव्य, आलोचना, के हर अंग पर हमारे पास ऐसे लेखक हैं जिनकी कृ के संकलन से कोई भी पुस्तकालय अपने को धन्य म सकता है। राजनीति, विज्ञान, साहित्य, समाज-शास्त्र गम्भीर विषयों के अधिकारी लेखकों की कमी नहीं। और स्त्रियों के साहित्य के योग्य निर्माता भी हमारे पास

किन्तु हम उनकी कृतियों के संकलन की ओर ध्यान देकर उनकी पुस्तकें खरीदते हैं जिन्हें न विषय का ज्ञान न जिनका भाषा पर अधिकार है; जो मौसमी लेखक हैं, सरस्वती की आराधना न करके साहित्य में चोरबाजारी रहे हैं।

भानुमती की पिटारी

बुरी पुस्तकों के संकलन के लिए सिर्फ पुस्तकालय संचालक ही दोषी नहीं हैं। स्पष्ट कहने के लिए क्षमा जाय, उसके लिए बिहार सरकार के पुस्तकालय-विभाग भी कम उत्तरदायित्व नहीं है।

उसने पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत पोथियों की बनाई है, वह भानुमती की पिटारी ही है।

"इससे बड़ी पुस्तक-सूची कभी नहीं बनी"—वह ठीक भी हो, किन्तु क्या सदा परिमाण गुण पर तरजीह रहा है? उसके बदले यदि यह दावा किया जाता कि 'अच्छी पुस्तक-सूची कभी नहीं बनी' तो पुस्तकालयों के अधिक कल्याण की बात हुई रहती।

उसमें ऐसे-ऐसे लेखकों और प्रकाशकों की पुस्तक सूचियाँ हैं, जो पहली बार इसी सूची में पाये गए हैं।

'बड़ी सूची' बनाने के फेर में ऐसी पुस्तकों के नाम ढेर लगा दिया गया है, जिन्हें अपने पुस्तकालय में संकलनकर्ता भी रखना पसन्द नहीं करेंगे।

फिर सरकारी सहायता का जो रूप रहा है, वह पुस्तकों को खरीदने के लिए पुस्तकालयों को बाध्य रहा है।

इसी सूची से खरीदिए; यही नहीं, हम जिस दुकान कहते हैं, वहीं से खरीदिए!

जहाँ मोनोपली (एकाधिकार) हुई वहीं चीज सिफत गिरने लगी, अर्थशास्त्र के इस साधारण ज्ञान को भुला दिया गया है।

[आगे पृष्ठ ५६० पर देखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-साहित्य की रूप-सज्जा

अमेरिका के प्रमुख नगरों के प्रकाशन-व्यवसाय के विभिन्न अंगों के एक हाल के प्रतिनिधि-सम्मेलन में बाल-साहित्य की रूपसज्जा पर महत्त्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ, जिसका सारांश 'बुक प्रोडक्शन' नामक पत्र से प्रकाशित किया जा रहा है।

सन् १९५५ में एक अच्छी बाल-पुस्तक की कसौटी क्या है? मजबूत जिल्द, सामान्यतः सुन्दर साइज़, काफ़ी मोटा और भारी कागज़, आसानी से समझ में आ सकने वाले चित्र, और टाइप—न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा।

लेकिन, सामान्यतः सुन्दर साइज़ जैसे अन्य विषयों पर भी मतभेद प्रकट किया गया। पुस्तक-विक्रेताओं का मत था कि बड़े साइज़ की किताबें बच्चों को अधिक प्रिय हैं, पर पुस्तकालयों के प्रतिनिधियों के लिए असाधारण साइज़ की किताबें एक बहुत बड़ी समस्या बन जाती हैं क्योंकि उन्हें आलमारियों में रखने का विशेष प्रबन्ध करना पड़ता है। अतः जो प्रकाशक बड़े साइज़ की लोकप्रियता और पुस्तकालयों की सुविधा का खयाल रखते हुए प्रकाशन करेगा, सफल रहेगा। लेकिन, बाल साहित्य के एक समालोचक का मत था कि इस प्रकार की असाधारण साइज़ वाली किताबों के प्रति पाठकगण शीघ्र ही रुचि खो बैठेंगे। उसने बाल-प्रदर्शनी में प्रस्तुत कुछ पुस्तकों की मिसाल भी पेश की।

कागज़ बहुत पतला नहीं होना चाहिए, न बहुत चमकदार और न नन्हे हाथों में फिसलने वाला होना चाहिए। टाइप का रंग कोई खास महत्त्व नहीं रखता। रंग के प्रयोग से भी लाभ-प्राप्ति हो सकती है, बशर्ते कि उसमें बहुत ज्यादा दिखावटीपन, तड़कीलेपन पर ज़ोर न दिया गया हो।

पुस्तक-विक्रेताओं की ओर से कहा गया कि ये बातें बिक्री पर असर नहीं करतीं। सबसे ज़रूरी बात यह है कि जिल्द कैसी है? जैकेट कैसा है? कई किताबें अन्दर से खोलकर देखे बिना ही खरीदी जाती हैं। किताबों में नक्शों का होना भी एक आकर्षण है। बहुत बड़े टाइप में छपी किताबों में खरीदारों को बचपन झलकता है, जब कि ज्यादा छोटा टाइप पाठकों की आँखों के लिए बुरा है।

चित्रों के बारे में बाल-प्रदर्शनी-प्रतियोगिता के एक निर्णायक का मत था कि आधुनिक चित्रकला-कृतियाँ पसन्द नहीं की जातीं। बाल पाठक को कला के पुराने, परम्परागत रूप ही रुचिकर हैं। बच्चे के बड़े होने पर ही व्यक्तिगत रुचि पैदा होती है।

जहाँ तक यथार्थवादी बाल-चित्रकला का सम्बन्ध था, निर्णायक महोदय ने एक किस्सा सुनाया कि एक दिन एक

श्री गुरुदत्त की रचनाएं

१.	गुण्ठन	मूल्य	५)
२.	वाम मार्ग	,,	७)
३.	उमड़ती घटाएँ	,,	६)
४.	विडम्बना	,,	६)
५.	भावुकता का मूल्य	,,	६)
६.	स्वाधीनता के पथ पर	,,	६)
७.	पथिक	,,	६)
८.	उन्मुक्त प्रेम	,,	६)
९.	स्वराज्यदान	,,	६)
१०.	देश की हत्या	,,	५॥)
११.	विश्वासघात	,,	५॥)
१२.	बहती रेता	,,	५)
१३.	प्रवंचना	,,	५)
१४.	विलोम गति	,,	५)
१५.	मायाजाल	,,	५)
१६.	विकृत छाया	संस्करण समाप्त	
१७.	अन्तिम यात्रा	मूल्य	१)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चा एक किताब लेकर उनके पास आया और उन चित्रों को दिखाकर जो कि दरअसल आरम्भिक कला के नमूने थे, शिकायत करते हुए बोला : "यह देखिए, आपकी किताब में किसी लड़के ने यह तस्वीरें बना दी हैं।"

एक सम्पादक ने कहा कि जहाँ तक चित्रों का सम्बन्ध है, निश्चय ही कला के पुराने रूप के चित्रों की पुस्तकें बेचना आसान है, तो भी हमें चित्रों में नये-नये प्रयोग करते रहना चाहिए।

पाठ्य-पुस्तकों में बहुत ज़्यादा रंग काम में लाना उचित नहीं है। काला, सफेद रंग और तुरन्त समझ में आ जाने वाले चित्र ही काफ़ी हैं। पाठ्य-पुस्तकों से ही मुख्यतः बच्चे अच्छे डिज़ाइन और अच्छी रुचि की सराहना करना सीखते हैं।

अच्छे डिज़ाइन और अच्छे चित्रों से भी अधिक आवश्यक विचारों को व्यक्त करने वाले शब्द हैं, अतः डिज़ाइनरों को अच्छा चित्र-सम्पादक भी होना चाहिए। अक्सर शब्दों की जगह चित्र दिये जाते हैं और ऐसा करना हमेशा ही अच्छा नहीं होता। बहुत ज्यादा चित्रों का दिया जाना ठीक नहीं है। बच्चों की किताबों में सादगी का बहुत महत्त्व है।

रंगों के चुनाव पर बहुत काफी बहस हुई। कई प्रमुख प्रकाशकों के रंग-सलाहकारों ने चित्रों और पोस्टरों से साबित कर दिखाया कि कोई भी रंग अगर भिन्न परिस्थितियों में [illegible] काम तो पहले जैसा नहीं दिखाई देता। [illegible]शन-व्यवसाय में कई लोगों की जिन्दगी रंगों का चुनाव [illegible] ही बीती है, पर वे अपनी मनःस्थिति और स्वभाव के [illegible]सार ही चुनाव करते हैं—और कोई गारंटी नहीं कि [illegible] चुनाव सदा ठीक ही हो।

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना

का अभूतपूर्व ग्रन्थ

प्रेमचन्द और गोर्की

सम्पादिका : शचीरानी गुर्टू

प्रेमचन्द और गोर्की के समग्र साहित्य के विषय में विविध समीक्षकों के विचारों का महत्त्वपूर्ण संकलन

पृष्ठ संख्या : डिमाई ६२५; मूल्य ९)

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

रंग को सही तौर पर देखना और समझना [illegible] नहीं है। अमेरिकन ऑपटिकल कम्पनी ने इस सम[illegible] ७५० लोगों की परीक्षा ली थी जिनमें से १८ प्रतिश[illegible] थे जिनमें सही तौर पर रंगों को देखने और समझ[illegible] सामर्थ्य नहीं थी।

स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकों से सम्बन्धित एक व्यक्ति[illegible] उदाहरण प्रस्तुत किया गया। वह पाठ्य-पुस्तकों [illegible] बिरंगे कवरों की जाँच कर रहा था। उससे पूछा ग[illegible] उसके अनुसार अच्छा कवर कैसा होना चाहिए। [illegible] लापरवाही से उत्तर दिया कि अपनी नई मोटरकार की [illegible] की गद्दियों के लिए जिस तरह वह एक कवर पसन्द [illegible] है उसी तरह वह किताबों के कवर की उपयोगिता [illegible] है; हालाँकि यह चुनाव भी किताब के भीतरी रूप-[illegible] अनुरूप ही होना चाहिए। इस उदाहरण से स्पष्ट [illegible] बहुत कम लोग रंगों को सही तौर पर देखने और [illegible] की सामर्थ्य रखते हैं।

रंग महँगे भी पड़ते हैं। प्रकाशकों में सूझ-बूझ [illegible] सृजन-शक्ति होती है, पर वे अक्सर अच्छे व्यापारी [illegible] होते। सम्मेलन में भाग लेने वाले एक प्रतिनिधि ने [illegible] पाठ्य-पुस्तक की लागत-सम्बन्धी जीवन-कथा बताई। १[illegible] में जब वह पुस्तक प्रकाशित हुई, उस पर ३७०० डाल[illegible] खर्च हुआ था। १९४४ में दुबारा प्रकाशित करने पर ल[illegible] १७,५०० डालर हो गई; और अब १९५६ में पुनः [illegible] शित करने पर उस पुस्तक पर ३७,५०० डालर खर्च [illegible]

"पुस्तक की कीमत जब ७० सैंट थी तो हमें [illegible] पैसा वापस पाने के लिए ६०,००० प्रतियाँ बेचनी [illegible] अब जब कि पुस्तक का मूल्य १·२० डालर है अपनी [illegible] निकालने के लिए हमें ८००,००० प्रतियाँ बेचनी होंगी [illegible]

१९३५ में इस क्षेत्र में केवल ५ प्रतिद्वन्द्वी थे, [illegible] हैं। सबको मिलकर ६०,००,००० पुस्तकें बेचनी होंगी, [illegible] उनकी लागत निकल आ सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों को सचित्र बनाने की कला

'युनेस्को' द्वारा प्रचारित एक लेख के आधार पर पुस्तकों के लिए चित्र तैयार करने तथा उनके मुद्रण के सम्बन्ध में यह लेख साभार प्रस्तुत किया जा रहा है।

...द्रित चित्र (illustrations) सामान्यतः लाइन या हाफ़-...न में वर्गीकृत किये जाते हैं। लाइन के काम के अन्तर्गत ...न ड्राइंग या इसी प्रकार की अन्य सामग्री आती है, ...समें रंगों की विभिन्न झलकें (tone) नहीं होतीं। इससे ...त्र बनाना अत्यन्त सरल है, साथ ही आधुनिक शिल्प की ...हायता लेकर इसके द्वारा अत्यन्त सन्तोषपूर्ण फल प्राप्त किए ...ा सकते हैं।

हाफ़टोन (half-tone) को दुबारा तैयार करने के ...ए फ़ोटोग्राफ़ या ऐसे चित्रों की आवश्यकता होती है, ...जनमें तेज प्रकाश से लेकर हलकी छाया तक वाले टोन की ...विध श्रेणियाँ हों। इस प्रकार की सामग्री का हाफ़टोन ...क्रीन के द्वारा फ़ोटोग्राफ़ लिया जाना चाहिए।

लाइन ड्राइंग (line drawings)—अनेक आधार ...aster) स्टाइलो (stylo), क़लम या चिकनी पेन्सिल ...अन्य किसी साधन द्वारा सीधे रूप में ड्राइंग बनाने के लिए ...युक्त होते हैं। पुस्तकों से चित्रों का प्रयोग किया जा ...ता है और उसके बाद औसत दर्जे के आधार का प्रयोग ...के उन्हें फ़ोटोग्राफ़िक या इलेक्ट्रोनिक विधि से छापा जा ...ता है।

रिलीफ़ प्रेसेज़ (relief presses) के अतिरिक्त अन्य ...चित्रांश पुनरुत्पादन की विधियों के लिए आधार तैयार ...ने के उद्देश्य से फ़ोटोकापीइंग (photocopying) विधि, ...फ़ोटोस्टेट (photostat), रिफ़्लेक्स प्रोसेसेज़ (reflex ...ocesses) या विशेष रूप से डाइरेक्ट पॉज़िटिव (direct ...sitive) काग़ज़ का प्रयोग अत्यन्त उपयुक्त सिद्ध होता ...। जब टाइप सेट (type set) मशीन का प्रयोग किया ...ता है, तो ब्लाक या ठोस चित्र (stereo) की आवश्यकता ...ती है। इसकी तैयारी में पर्याप्त कुशलता अपेक्षित होती है और इस प्रकार का कार्य सामान्य रूप से या तो मशीन बनाने वाले करते हैं या फिर व्यावसायिक मुद्रण संस्थाएँ करती हैं।

हाफ़टोन

सामान्यतः एक फ़ोटोग्राफ़ में ३० 'टोन' होते हैं, जो विशेष आबदार से लेकर गहरे काले और औसत-दर्जे के होते हैं। अतएव इसे क्रमबद्ध या फ़ुल-टोन (full tone) प्रिन्ट कहते हैं। चूँकि स्याही के शेड को हलका या गाढ़ा करके इस प्रकार के टोन तैयार करना सम्भव नहीं है, इसलिए टोन का आभास लाने के लिए प्रिन्टर के वाञ्छित चित्र को हजारों छोटे-छोटे बिन्दुओं में विभक्त कर देते हैं यह क्रिया या तो फ़िल्म को निकट रखकर या फिर कई मिलीमीटर दूर रखकर हाफ़टोन स्क्रीन के द्वारा की जाती है।

साधारण हाफ़टोन-स्क्रीन एक बड़े कैमरे के भीतर रहती है, जिसका प्रयोग फ़ोटोग्राफ़ की प्रतिलिपि लेने के लिए किया जाता है। सामान्यतः इसे प्रोसेस कैमरा (process camera) कहते हैं। अनेक श्रेणियों की स्क्रीन उपलब्ध हैं, जिनके अन्तर्गत मोटे काम के ५५ लाइन स्क्रीन से लेकर उच्चकोटि की छपाई के लिए प्रयुक्त होने वाली ४०० लाइन स्क्रीन तक की विविध श्रेणियाँ हैं। जिनका आफ़सेट (offset) के लिए आमतौर से प्रयोग होता है, उनमें प्रतिवर्ग इंच १२० या १३३ रेखाएँ होती हैं, अन्तिम प्रतिलिपि पर बने बिन्दु आकार में ही घटते-बढ़ते हैं, संख्या में नहीं। जब ये बिन्दु बड़े होते हैं तो ठोस काले रंग का आभास देते हैं और जहाँ छोटे होते हैं वहाँ टोन का भ्रम पैदा होता है, और इस प्रकार के पुनरुत्पादन (reproduction) को हाफ़टोन कहते हैं। हाफ़टोन बनाने की एक नवीनतम विधि में घटने-बढ़ने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्टैक्ट स्क्रीन (contact screen) का प्रयोग किया जाता है। यह कोडक लिमिटेड (kodak Ltd.) से प्राप्त की जा सकती है और इसे मैगेन्टा स्क्रीन (magenta screen) कहते हैं। इसके पक्ष में यह कहा जाता है कि इसके द्वारा विकसित और साफ़ फल और टोन के साथ बहुत ही सही प्रतिलिपि प्राप्त होती है। इसके साथ-ही-साथ यह टोन के वैषम्य पर भी नियन्त्रण रखती है। इसके प्रयोग और कैमरे में लगाने की विधि के विवरण प्रस्तुत करने वाली छोटी-छोटी पुस्तकें बनाने वालों के यहाँ से मिल सकते हैं।

स्क्रीन के प्रयोग को बचाने के लिए कोडक लिमिटेड ने अभी हाल में एक नई फ़िल्म निकाली है, जिसकी सतह से एक स्क्रीन जुड़ी रहती है। इसे कोडालिथ आटोस्क्रीन ऑर्थो (Kodalith Autoscreen Ortho) फ़िल्म कहते हैं। यह फ़िल्म क्रमबद्ध टोन के बिम्ब को ग्रहण कर लेती है और जब 'डेवलॅप' की जाती है तो स्वतः बिन्दु उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कैमरे में हाफ़टोन स्क्रीन का प्रयोग हुआ हो। ईस्टमैन कोडक लिमिटेड से लघु पुस्तिकाएँ प्राप्त की जा सकती हैं, जिनमें इस नई फ़िल्म के पूरे विवरण के साथ साथ सभी आदेश व रासायनिक सूत्र भी दिये गए हैं। इसके द्वारा यह सम्भव है कि साधारण कोटि के कैमरे में स्क्रीन लगाने के लिए किसी विशेष फिटिंग की आवश्यकता नहीं होती। यह टोन और लाइन दोनों की एक ही नेगेटिव पर प्रतिलिपि तैयार करने के लिए भी अत्यन्त उत्तम है और रेशमी स्क्रीन के काम के लिए उपयुक्त पॉज़िटिव तैयार करने के लिए इसे 'इन्लार्ज' भी किया जा सकता है।

उच्चकोटि के कार्य के लिए और विशेष रूप से उन फ़ोटोग्राफ़ों में, जिनमें छोटी-छोटी बातें भी आ जाती हैं, प्रिन्ट-रीटचिंग (print-retouching) का प्रयोग वांछित है। प्रिन्ट-रीटचिंग का विशिष्ट लक्ष्य यह होता है कि इसके द्वारा हाफ़टोन नेगेटिव और प्रिन्ट तैयार करते समय टोन के जो प्रभाव फीके पड़ गए हैं, उन्हें दुबारा पैदा कर दिया जाय।

रीटचिंग फ़ोटोग्राफ़ को कार्ड पर चढ़ा कर की जाती है और उसके उपरान्त नाज़ुक टोनस् को एयरोग्राफ़ (aerograph) यन्त्र की सहायता से स्प्रे करके पृथक् कर दिया जाता है। वांछित टोन का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए प्रोसेस सफ़ेद (process white) और प्रोसेस काले (proce[ss] black) रोगन को मिलाकर फ़ोटोग्राफ़ पर छिड़क देते हैं। जहाँ पर विवरण बहुत सूक्ष्म होते हैं, वहाँ समीपवर्ती ... की रक्षा करने के लिए विशेष रूप से तैयार किये गए ... की सहायता लेनी पड़ती है। यह काग़ज हाथ की गर्म[ी से] प्रिन्ट पर चिपक जाता है और जिन भागों पर छिड़कना ... है, वे तेज़ चाकू से काट लिए जाते हैं। पूरा हो जाने [पर] काग़ज को खुरच लिया जाता है, जिससे फ़ोटोग्राफ़ सुर[क्षित] बच जाता है।

हाफ़टोन प्रभाव टिन्ट (tint) का प्रयोग करके या शे... के माध्यम से पैदा किया जा सकता है। ये पारदर्शक ... पर होते हैं, जिसमें भिन्न-भिन्न आकार के बिन्दु या ... साँचे होते हैं। जो विविध प्रकार के टोन का प्रतिनि[धित्व] करते हैं। ये शेडिंग टिन्ट (shading tint) रेखाचित्रों [में] ले आए जाते हैं और जब उनका दुबारा फ़ोटोग्राफ़ ... जाता है या वे मुद्रित होते हैं, तो पुनः हाफ़टोन का प्र[भाव] उत्पन्न करते हैं। इस विधि के द्वारा अनेक परिवर्तन ला[ए जा] सकते हैं जिनका परिणाम यह होता है कि सादे ... टाइप में सुधार हो जाता है। इन साधनों का प्रयोग अ[धिक]तर भड़कीले विज्ञापनों, विशेषकर दैनिक समाचार पत्रों ... सस्ती पत्रिकाओं में किया जाता है।

यदि हाफ़टोन प्रतिलिपि की और प्रतियाँ तैयार करने [की] आवश्यकता हो तो बग़ैर स्क्रीन का प्रयोग किए उसका ... फ़ोटोग्राफ़ लिया जा सकता है। यों तो वे लाइन ब्ला[क] बनने वाले चित्र (line subjects) ही माने जाते हैं, ... वे हाफ़टोन का पुनरुत्पादन करेंगे, क्योंकि उन पर स्क्रीन [का] प्रयोग पहले हो चुका होता है। दूसरी विधि यह है कि ... स्क्रीन के साथ फ़ोटोग्राफ़ का इन्लार्जमेन्ट किया जाता ... जितने बिन्दु आवश्यक होंगे, वे इसमें आ जायँगे और ... 'लाइन सब्जेक्टस्' के रूप में इनकी प्रतिलिपि ली जा[एगी] तो उससे टोन का प्रभाव उत्पन्न होगा। ऑरेंज स्[क्रीन] (orange screen) नामक एक विशेष स्क्रीन कोडक लि[मि]टेड से प्राप्त की जा सकती है, जो इन्लार्जर में—जैसा ... उल्लेख किया गया है—प्रयुक्त होने के लिए बनाई ... है। ऑरेंज और मैजेन्टा दोनों स्क्रीनों के सम्बन्ध में छो[टी-] छोटी पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें उनकी प्रयोग-विधि ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

...दी साहित्य का पारिभाषिक शब्दकोष :
राजेन्द्र द्विवेदी — ८)

...ल की कहानी (सचित्र) :
काशीप्रसाद श्रीवास्तव — ८)

...वाड़ा (सचित्र) : देवेशदास — ५)

...त्र गृह विनोद : अरुण एम० ए० — ८)

...र्श पत्र लेखन : यज्ञदत्त शर्मा एम० ए० — ७॥)

...र्श भाषण कला : यज्ञदत्त शर्मा एम० ए० — ७॥)

...ी परिक्रमा : सेठ गोविन्ददास — १२)

...ालक की घाटियों में (सचित्र) :
श्री निधि सिद्धान्तालंकार — ५)

...यो नाटक (सचित्र) : हरिश्चन्द्र खन्ना — ६)

...खों देखा रूस : सत्येन्द्रनाथ मजूमदार — २)

...षा : देवेशदास — ३)

...हित्य शिक्षा और संस्कृति : डॉ० राजेन्द्रप्रसाद — ५)

...रतीय शिक्षा : डॉ० राजेन्द्रप्रसाद — ३)

...पारण में महात्मा गांधी (सचित्र) :
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद — ५)

...ी क्रान्ति के अग्रदूत (सचित्र) :
राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह — ४)

...व का सांस्कृतिक इतिहास (सचित्र)
हरिदत्त वेदालंकार — ६)

भारत का चित्रमय इतिहास :
महावीर अधिकारी — ६)

भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास :
गुरमुख निहाल सिंह — १०)

भारतीय राजनीति और शासन :
प्रो० के० आर० बम्वाल — ८॥)

प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास :
डॉ० रांगेय राघव — १२)

सभा शास्त्र : न. वि. गाडगिल — ६)

सचित्र संविधान : इन्द्र एम० ए० — १॥)

अगले पाँच साल (राजनीतिक)
जी० एस० पथिक — ५)

मैं इनसे मिला (दो भाग) :
पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' — ६)

वक्रोक्तिजीवितम् : आचार्य विश्वेश्वर — १५)

गीत गोविन्द (सचित्र) : विनयमोहन शर्मा — ५)

जिप्सी : अलेक्सान्दर सेर्गोविच पुश्किन — २)

युग पुरुष राम : अक्षय कुमार जैन — ५)

मैंने कहा : गोपालप्रसाद व्यास — ३)

कदम कदम बढ़ाए जा : गोपाल प्रसाद व्यास — १।)

भूगोल के भौतिक आधार (सचित्र) :
रामस्वरूप वशिष्ठ — ६)

विस्तृत सूची के लिए लिखें ।

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध में सभी आवश्यक सूचनाएँ दी गई हैं।

जहाँ चित्र (illustration) तैयार करने के लिए आर्टिस्ट सुलभ न हों, तो दोनों ही विषयों—लाइन और टोन—की रचना अत्यन्त सरल विधि से की जा सकती है, जिसमें स्केच या ड्राइंग बनाने की योग्यता की कोई आवश्यकता नहीं होती। एक और विधि, जिसका प्रयोग प्रायः होता है, फ़ोटोग्राफ़िक प्रिन्ट की सहायता से सम्पन्न होती है। प्रिन्ट में यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि लेखक क्या चित्रित करना चाहता है। इसे टोन में भी हलका या कमजोर होना चाहिए। तब देशी स्याही और इसी कार्य के लिए विशेष रूप से बनाये गए 'मैपिंग' क़लम के द्वारा फ़ोटोग्राफ़ की रूप-रेखा बना ली जाती है। जब प्रिन्ट सूख जाता है, तो उसे ब्लीचिंग घोल में डुबो देते हैं, जिससे फ़ोटोग्राफ़िक बिम्ब (linage) मिल जाता है और सफ़ेद काग़ज पर रूपरेखा स्पष्ट हो जाती है। इसका लाइन ड्राइंग के रूप में फ़ोटोग्राफ़ ले लेते हैं।

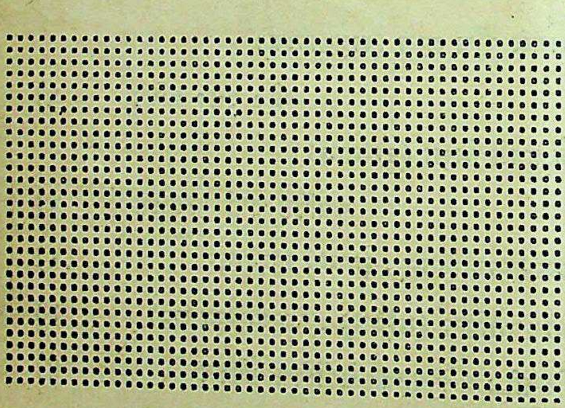

हाफ़टोन स्क्रीन

एक और दूसरी विधि है, जिसमें फ़ोटोग्राफ़िक नेगेटिव और इन्लार्जर (enlarger) या प्रोजेक्टर (projector) की सहायता लेकर थोड़े कौशल से सुन्दर ड्राइंग की रचना की जा सकती है। जिस नेगेटिव को चित्रित करना होता है, उसका अपेक्षित आकार के सफ़ेद काग़ज पर प्रक्षेपण किया जाता है। मुलायम और सख्त पेन्सिलों के द्वारा प्रक्षेपित बिम्ब के हलके भागों को भर लिया जाता है और जब हम उन्हें नेगेटिव प्रोजेक्शन की स्थिति से काग़ज पर देखते हैं, तो वह बिलकुल काले बिम्ब के रूप में दिखाई पड़ता है। प्रोजेक्टर की रोशनी बुझाकर कमरे की रोशनी जलाने से मूल प्रति की पॉज़िटिव प्रतिलिपि तैयार हो जाती है। ... यह कल्पना कर लें कि एक लाइन ड्राइंग का फ़ोटो... नेगेटिव को प्रक्षेपित किया गया है, तो यह विधि... भाँति समझ में आ जायगा।

कुछ देशों में ईपीडियस्कोप (Epidiascope) यन्त्र (Projectors) उपलब्ध हैं, जो फ़ोटोग्राफ़... को अल्पपारदर्शक स्क्रीन पर प्रक्षेपित करके चिह्न... हैं। इन चिह्नों का प्रयोग चिकनी पेन्सिल, स्टाइल... साधन द्वारा रूपरेखा को काग़ज की पत्तर, स्प्रिट... के आधार पर प्रत्यक्ष रीति से उभारने के लिए किया...

किसी भी प्रकार के चित्र (illustration) बनाने के लिए सस्ते पैन्टोग्राफ़ (Pantograph) ... किया जा सकता है। इस विधि से यह लाभ होता है ... के आकार को घटाया-बढ़ाया जा सकता है। फ़ोटोग्राफ़ ... ड्राइंग में परिवर्तित करने की एक नई फ़ोटोग्राफ़िक ... कोडक लिमिटेड ने चालू की है। इसका फल क़लम ... से बनी ड्राइंग के समान ही होता है। इस विधि ... फ़ोटोग्राफ़िक जानकारी की आवश्यकता होती है, ... नेगेटिव और पॉज़िटिव फ़िल्म का प्रयोग अपेक्षित ... किन्तु इसके फल बहुत ही सन्तोषजनक होते हैं ... आर्टिस्ट सुलभ नहीं होते, वहाँ इससे सम्बद्ध कठि... नहीं खलती। यह कहा जाता है कि सामान्... अपेक्षाकृत इस तरीके से लाइन-ड्राइंग बनाना ... पड़ता है। कोडक लिमिटेड से 'Line effec... Photographs by the Tone line Proc... एक छोटी पुस्तक मुफ्त मिलती है। इसमें इस वि... उससे सम्बन्धित सभी हिदायतों का विवरण दिया ...

जब अधिक संख्या में और विशेषकर आफ़सेट ... क्रिया द्वारा प्रतिलिपि तैयार करनी हो तो बड़े कैमरे ... अपेक्षित है। इस कार्य के लिए बनाये गए कैमरा ... camera) मँहगे होते हैं, किन्तु पुराने वर्गाक... की तरह के कैमरे, जो व्यावसायिक रूप में इस्ते... होते, अत्यन्त सस्ते मूल्य में प्राप्त किए जा सकते ... उनसे सभी जरूरतें पूरी की जा सकती हैं। ... (Autoscreen) पत्तर के प्रयोग के द्वारा सभी ... ताओं की पूर्ति हो जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...त्र चित्र को आकर्षक या प्रभावपूर्ण बनाने की आव-
...हो, तो एक बड़ा सादा तरीक़ा इस्तेमाल में लाया
...ता है। वह यह है कि जब छपी हुई प्रतिलिपि गीली
...भी उस पर काँसे या चाँदी के बुरादे को छिड़क दें।
...रादे में बहुत ही सुन्दर धातु के कण होते हैं, जो सस्ते
...में खरीदे जा सकते हैं। यह बुरादा बड़े हलके तौर से
...पियों पर छिड़क दिया जाता है, जो छपे हुए भाग
...रह जाता है और शेष प्रतिलिपि से अलग कर दिया
...है।

...हाँ बड़े चित्र मिल सकते हैं, काँसे और चाँदी दोनों
...के बुरादे असाधारण कलात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के
...उपयोग में लाए जा सकते हैं। जब विशेष प्रभाव पैदा
...अपेक्षित होता है, तो प्रतिलिपि को सुखाकर बुरादा
...जाने वाले अक्षरों को स्प्रिट या वार्निश से रंग लिया
...ता है। यह बुरादा इस माध्यम के सहारे टिका
...।

...का प्रयोग

...द्रण या प्रतिलिपि करने में (duplicating) में रंगों
...योग चित्र (illustration) के प्रभाव की वृद्धि करता
...तु साथ-ही-साथ पुनरुत्पादन की लागत बढ़ जाती है।
...नेक रंगों का प्रयोग करना है, तब एक समय में केवल
...की छपाई हो सकती है, अतएव प्रत्येक अगले रंग के
...द्रण-यन्त्र में एक काग़ज़ लगाने की आवश्यकता पड़ती
...वल हैक्ट्रोग्राफ़िक (hectrographic) विधि ही इस
...अपवाद है। अतिरिक्त छपाई की संख्या (runs)
...ही प्रत्येक रंग के लिए कुछ आधार तैयार करने की
...कता पड़ती है।

...तः पीले, लाल और नीले रंगों से ही रंग तैयार
...ते हैं। प्रभाव को गहरा और पैना बनाने के लिए
...तिरिक्त काला प्रिन्टर भी जोड़ दिया जाता है। अत-
...में रंगों की प्रतिलिपि तैयार करने के लिए कम-
...चार आधार, चार पत्तर और चार बार मुद्रण-यन्त्र
...की आवश्यकता होती है। इन वस्तुओं से इस विधि
...त में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है।
...धिक काम में एक या दो अतिरिक्त रंगों को मिला
...अपेक्षित प्रभाव स्पष्ट करने के लिए यथेष्ट है। यदि

सावधानी से योजना बनाई जाय, तो व्यय सदैव कम किया जा सकता है और रंगों का प्रयोग-मात्र अलंकरण के लिए तो कभी नहीं करना चाहिए। इस पाठ को स्पष्ट करना या उस पर बल देना या सामग्री (material) में प्रवाह लाना या सम्बद्ध भागों को शीघ्र पहचाने जाने योग्य बनाना ही इसका लक्ष्य होना चाहिए।

इसका उदाहरण एक कार की बनावट से दिया जा सकता है, जिसमें टैंक से कारब्यूरेटर (carburettor) और सिलिन्डर तक पेट्रोल आने के रास्ते को प्रदर्शित करने के लिए, जो अन्त में वाल्व में जाकर समाप्त हो जाता है, किसी रंग का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार दूसरे रंग के द्वारा विद्युत्-धारा का मार्ग प्रकट होता है और इस प्रकार कार के इंजन के अनेक कार्यों को आसानी से पहचाना जा सकता है।

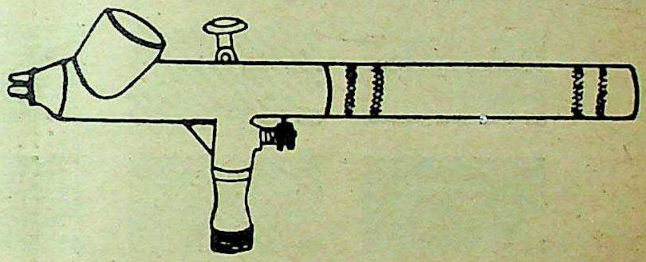

एयरोग्राफ

उन प्रकाशनों की अपेक्षाकृत, जो प्रायोगिक स्थिति में हैं, स्थायी प्रकाशन ही रंगों की लागत बरदाश्त कर सकेंगे, क्योंकि प्रायोगिक स्थिति से गुज़रने वाले प्रकाशन शीघ्र ही पुराने पड़ सकते हैं और इसीलिए उन्हें पुनर्मुद्रित करने की आवश्यकता होगी।

पोस्टर आदि में प्रयुक्त रंगों का उद्देश्य बिलकुल भिन्न होता है। उनका प्रयोग पोस्टरों की ओर और इसीलिए उनके अभिप्राय की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया जाता है। रंग का औचित्य पोस्टर के महत्त्व और उसके अभिप्राय पर निर्भर करता है।

चाहे जिस उद्देश्य से रंग अपेक्षित हों, उनके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता, किन्तु उसे उसके बनाने में बढ़ी हुई लागत से सम्बद्ध होना चाहिए।

प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में रंगीन फ़ोटोग्राफ़ी और रंगीन छपाई में किये गए सुधारों का उपयोग अधिक बढ़ गया है, किन्तु लागत के कारण शिक्षा-सम्बन्धी या अन्य इसी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

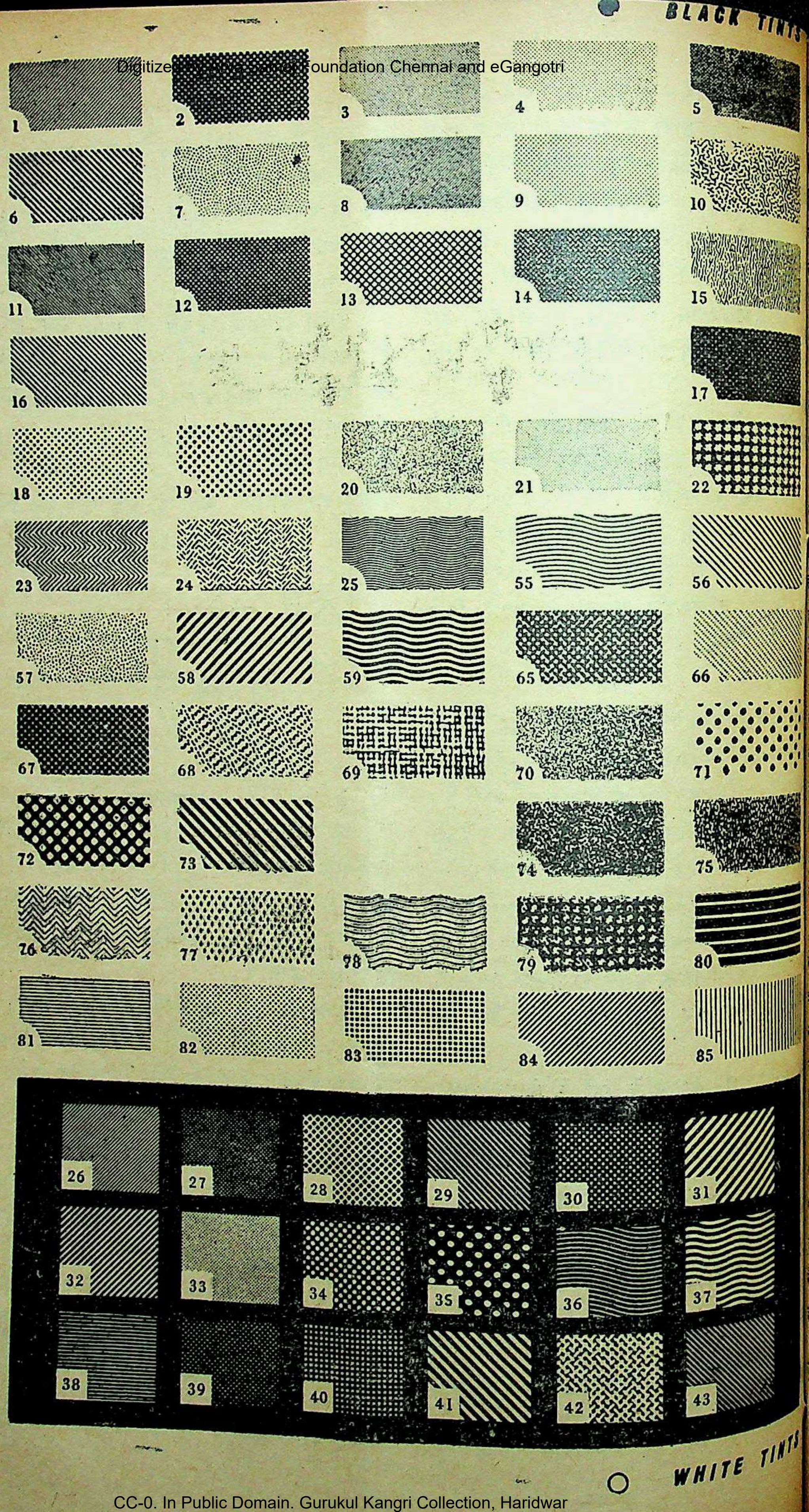

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी पुस्तकों में इसका सीमित उपयोग ही सम्भव हो सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में कोडक द्वारा इक्टालिथ प्रोसेस (Ektalith process) के प्रयोग से ५,००० प्रति तक विशिष्ट रूप से उच्च श्रेणी के रंगों का सस्ता उपयोग किया जा सकता है। जब यह आसानी से उपलब्ध होने लगेगा तो इसके द्वारा एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति होगी और ऐसी छोटी पुस्तकों के प्रकाशन, जो रंगीन छपाई की लागत बरदाश्त नहीं कर सकते, सम्भव हो सकेंगे।

यह हमें स्मरण रखना होगा कि केवल एक रंग की छपाई की अपेक्षा अनेक रंगों की छपाई में अधिक लागत पड़ती है और अधिक कुशलता की भी अपेक्षा होती है।

जहाँ रंग की आवश्यकता होती है, वहाँ रंगीन खरिया या स्याही से मोटे तौर पर रँगी गई प्रति आर्टिस्ट या ब्लॉक के लिए आवश्यक आधार तैयार करने के लिए पर्याप्त होगी। भूलों से बचाने के लिए सभी सूचनाओं का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए और अन्तिम छपाई के लिए मशीन में जाने के पूर्व प्रूफ की सावधानी से जाँच कर लेनी चाहिए।

टोन की अपेक्षा सादे लाइन के विषयों के लिए आधार की तैयारी में कम कठिनाई होती है। बिना रंगीन फ़िल्टर का प्रयोग किये मूल प्रति का फ़ोटोग्राफ़ लिया जा सकता है और नेगेटिव से अतिरिक्त नेगेटिव या पॉज़िटिव भी तैयार किए जा सकते हैं। जरूरी लाइनों के अतिरिक्त अन्य को अपारदर्शक रोगन लगाकर मिटा दिया जाता है। प्रत्येक रंग के लिए पृथक् नेगेटिव की आवश्यकता होती है।

आधार तैयार करने की इस विधि को इस प्रकार आसानी से समझाया जा सकता है। मान लिया कि एक मूल प्रति है और उसके अ, ब और स अक्षरों की क्रमशः लाल, हरे और नीले रंगों में छपाई करनी है। इन तीन अक्षरों को दिखाने वाले नेगेटिव का प्रयोग दो अन्य नेगेटिव तैयार करने के लिए किया जायगा। इन नेगेटिव्स को इस प्रकार रंग दिया जायगा कि अ पहले नेगेटिव पर, ब दूसरे पर और स तीसरे पर रहेगा। इन सब की प्रिन्टिंग पत्तर तैयार कर लेने के पश्चात् उन्हें मशीन पर चढ़ा दिया जायगा और प्रति तैयार हो जायगी—अ लाल, ब हरे और अन्त में स नीले रंग से रंगा होगा। इस प्रकार अन्तिम प्रिन्ट अपने पूरे रंगों में होगी। प्रत्येक रंग परिवर्तित करने के लिए मशीन को साफ़ कर लेना नितान्त आवश्यक है, या तो फिर कई ऐसी मशीनें प्राप्य हों जो पहले से ही अपेक्षित रंगीन स्याही का इस्तेमाल करती हों।

इसी विधि से ड्राइंग भी तैयार की जा सकती है और फिर इसे पत्तरों पर छापा जा सकता है। टोन को दुबारा तैयार करने के लिए बड़े कैमरे का प्रयोग आवश्यक होता है और साथ-ही-साथ थोड़ी कुशलता भी जरूरी होती है। रंगों का प्रभाव शीघ्र ग्रहण करने वाली सामग्री का प्रयोग करके चार नेगेटिव तैयार कर लिए जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक का पृथक्-पृथक् रंगों के फ़िल्टर के साथ फ़ोटोग्राफ़ ले लिया जाता है। ये फ़िल्टर नीले, हरे और लाल होते हैं और प्रत्येक अन्य दो मूल रंगों (primary colours) को जज़्ब कर

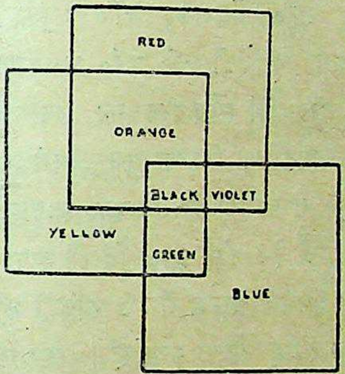

लेता है, या अपने भीतर से अपने ही रंग या उसी के समान रंग को गुज़रने देता है। छपाई के लिए पीले फ़िल्टर्ड नेगेटिव (filtered negative) का प्रयोग नीली पत्तर, हरे का लाल और नीले का पीली पत्तरों के तैयार करने के लिए किया जाता है।

उपर्युक्त सरल व्याख्या से रंगीन छपाई का सिद्धान्त समझ में आ गया होगा। शुद्धता लाने के लिए कदाचित् यह बता देना आवश्यक है कि मूल स्पेक्ट्रल (primary-spectral) रंग नारंगी, हरा और बैंगनी हैं और मूल पिगमेन्टरी (primary pigmentary) रंग लाल, पीले व नीले हैं। प्रत्येक मूल पिगमेन्टरी रंग की छपाई की पत्तर शेष दो रंगों की फ़िल्टर का प्रयोग करके तैयार की जाती है, जिससे नारंगी रंग का फ़िल्टर—जो लाल और पीले का मिश्रण है—नीला प्रिन्टिंग पत्तर बनाता है; इसी प्रकार हरा फ़िल्टर—पीले और नीले का मिश्रण—लाल प्रिन्टिंग पत्तर और बैंगनी फ़िल्टर—लाल और नीले का मिश्रण—पीली प्रिन्टिंग पत्तर तैयार करते हैं। स्पेक्ट्रम में लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला और बैंगनी रंग होते हैं। जब मूल रंग नारंगी, हरा और बैंगनी पूरक रंगों—लाल, पीला और नीला—से संयुक्त होते हैं, तो स्पेक्ट्रम के पूरे रंग बन जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

नयी कविता : कविता प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एवं डॉ० जगदीश गुप्त और श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित इस षाण्मासिक पत्रिका का दूसरा अंक प्रकाशित हो गया है। डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० देवराज, डॉ० रघुवंश, लक्ष्मीकान्त वर्मा, रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं डॉ० जगदीश गुप्त के विशेष लेख, अज्ञेय द्वारा श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का परिचय, डॉ० धर्मवीर भारती का 'अन्धा युग' नाम का सम्पूर्ण दृश्य-काव्य, ३५ विभिन्न कवियों का संचयन, जापानी और कोरियाई कविता का प्रो० के० दोई द्वारा हिन्दी रूपान्तर तथा 'किंचित् कविता' शीर्षक स्तम्भ में ७ कवियों की हलकी फुलकी कविताओं का संग्रह दिया गया है। डिमाई आकार के १०६ पृष्ठ, मूल्य २) मात्र, वितरक—**राजकमल प्रकाशन।**

◈ ◈ ◈

काव्यधारा : शिवदानसिंह चौहान और गोपालकृष्ण कौल के सम्पादकत्व के इस अर्द्ध वार्षिक पुस्तक-पत्रिका का प्रकाशन दिल्ली के प्रसिद्ध प्रकाशक **आत्माराम एण्ड सन्स** द्वारा आरम्भ हुआ है। पहले अंक में शिवदानसिंह चौहान के लेख के साथ, डॉ० सत्येन्द्र, डॉ० नगेन्द्र, रामधारीसिंह, 'दिनकर', विश्वम्भर मानव, विनयमोहन शर्मा, शान्तिप्रिय द्विवेदी, डॉ० रामकुमार वर्मा, गोपालकृष्ण कौल, जगन्नाथ आजाद और विजय चौहान के विशेष लेख, ५४ कवियों की कविताएँ, 'हास्य-व्यंग्य' शीर्षक के अन्तर्गत ६ कविताएँ, अवधी, राजस्थानी तथा पंजाबी कविताओं के हिन्दी रूपान्तर और उर्दू के सात कवियों की कविताओं का संग्रह। अन्त में 'कविता में प्रगति' और 'प्रयोग की समस्या' पर सम्पादकीय दिया गया है। रायल आकार में प्रकाशित २१२ पृष्ठों के इस संग्रह का मूल्य ६) है।

◈

आखिरी चट्टान तक : दक्षिण भारत में घुम... के उद्देश्य से निकले श्री मोहन राकेश के ... रोचक या त्रासंस्करण जिनमें स्थानों और व्य... के मोहक चित्रण अमिट रेखाओं से हैं। पृष्ठ-संख्या ... प्रकाशक **प्रगति प्रकाशन,** दिल्ली, मूल्य ३)

◈ ◈

आधुनिक समीक्षा : डॉ० देवराज के पिछले तीन-चा... में लिखे गए सैद्धान्तिक निबन्ध इस पुस्तक में संग्रही... लेखक की दार्शनिक पृष्ठभूमि ने इन निबन्धों को ... धरातल से उठाकर गम्भीर विश्लेषण युक्त और मह... बना दिया है। हिन्दी समीक्षा, प्राचीन साहित्य-... प्रगतिवादी समीक्षा, प्रयोगवादी कविता तथा हिन्दी-उप... जैसे विषयों पर इनमें मनन हुआ है। डिमाई आकार ... पृष्ठों में छपी इस पुस्तक का मूल्य ४॥) है; प्रका... **राजपाल एण्ड सन्स,** दिल्ली।

◈ ◈ ◈

अंजो दीदी : नाटककार उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लि... दो अंकों का मनोविश्लेषणात्मक सामाजिक नाटक है... एक परिवार की दो पीढ़ियों की कहानी कही गई है। ... अंजली दीदी—संक्षेप में अंजो दीदी—की मनोगत ... उन्हें कठोर नियन्त्रण और रेखांकित अनुशासन की सी... उल्लंघन करने का साहस नहीं देतीं। नियमों में, ... इस प्रकार बँधकर अंजो दीदी के प्रति इन्द्रनाराय... पुत्र नीरज के जीवन घुट के मरणोन्मुख हो रहे हैं। ... भाई श्रीपत इस घुटन को महसूस करते हैं और विकृति-... नियम-परायणता के इस बन्धन पर चोट करते हैं। ... पीढ़ी में नीरज को और उनके पुत्र नीलम को अपनी ... ओमी द्वारा अनुशासित नियमों का बन्धन इसी प्रकार ... पड़ता है। अंजो दीदी ने इस बीच अहं से पोषित ... प्रेम पर अपना बलिदान दे दिया है। अन्ततः ... विचार-स्वातन्त्र्य और व्यवहार-स्वातन्त्र्य की चुनौती... परिवार पर काली छाया की तरह फैले अंजो दी... सम्मोहन को तोड़-फोड़ देती है। **नीलाभ प्रकाशन,** इ... बाद, द्वारा प्रकाशित १४१ पृष्ठों के इस नाटक का मूल्य ... है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

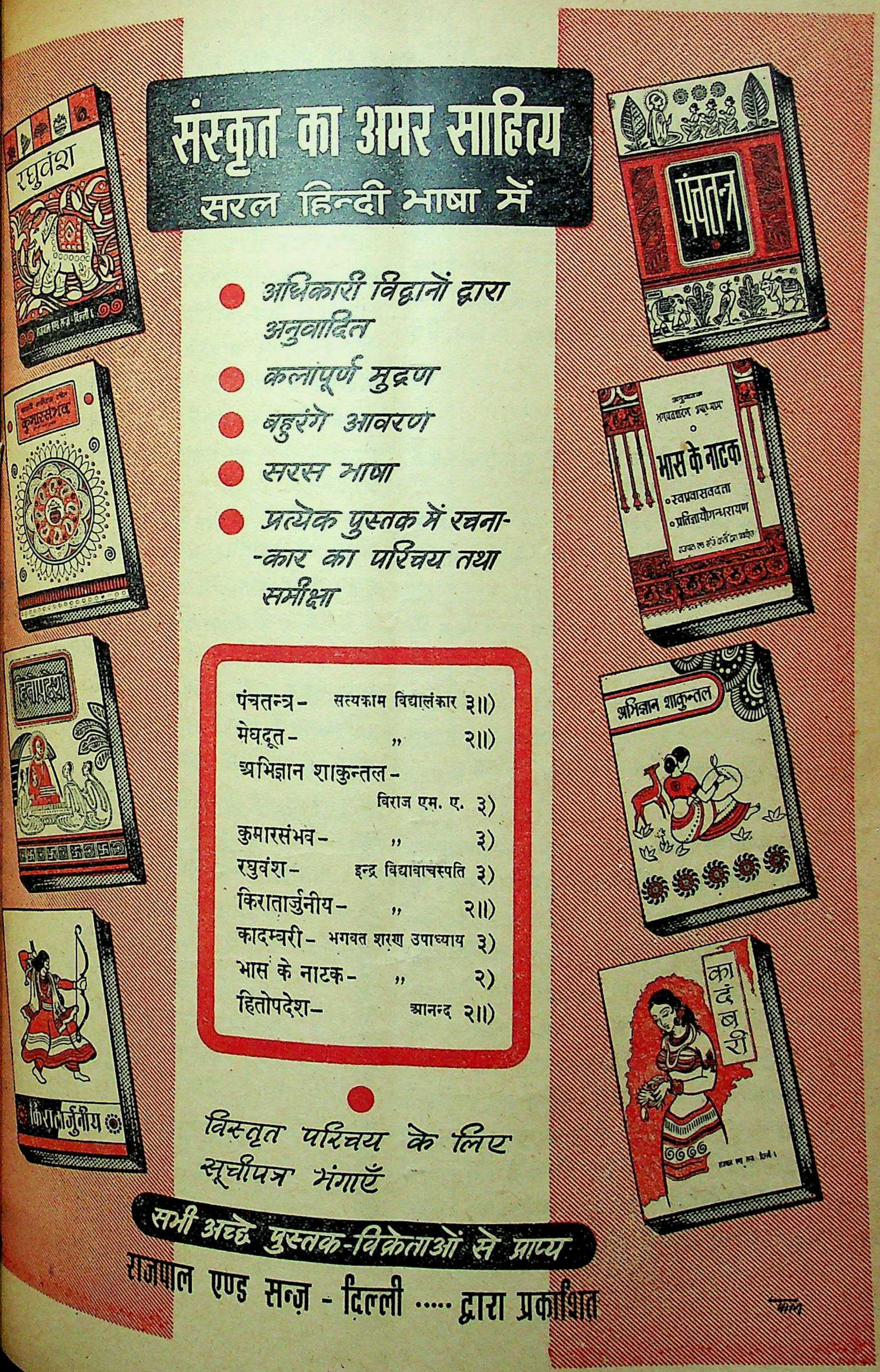

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म-कला : फिल्म-कला और उद्योग से सम्बन्धित इस संग्रह का सम्पादन श्री सागरमल गुप्त ने किया है। प्रथम खण्ड में बलराज साहनी, नरगिस, शम्मी कपूर, मुबारक, फ़रदून ईरानी जैसे कलाकारों और शिल्पियों के कथनों तथा चित्र-निर्माण और निर्देशन, चित्रकला या व्यवसाय, शीर्षक दो लेखों का संग्रह है। द्वितीय खण्ड में फिल्म-कला, अभिनय-कला आदि पर देशी-विदेशी मान्य लेखकों के निबन्ध उद्धृत हैं। अन्त में फिल्मों के कुछ ख्यातिप्राप्त निर्देशकों, अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के संक्षिप्त जीवन-चरित्र दिये गए हैं। २१६ पृष्ठों की आकर्षक कवर वाली इस पुस्तक का प्रकाशन राज श्री प्रकाशन, कलकत्ता ने किया है। मूल्य ३॥) है।

◈ ◈ ◈

मनुष्यानन्द : ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'; प्रकाशक—उग्र प्रकाशन, गऊघाट, मिर्जापुर, मूल्य ४)

आज से २५ वर्ष पूर्व 'बुधवा की बेटी' के नाम से प्रकाशित 'उग्र' जी का उपन्यास 'मनुष्यानन्द' के नाम से अब द्वितीय संस्करण में प्रकाशित हुआ है। 'बुधवा की बेटी' ने अपने प्रथम संस्करण में काफी नाम कमाया था। एक तो उग्र जी की चुहचुहाती लेखन शैली; दूसरे, समाज के पिछड़े वर्ग की सहानुभूतिपूर्ण चित्रण—इन दोनों ने मिलकर समाज के विद्रोही स्तर को छू लिया था। आज भी इस उपन्यास का दर्द लोगों तक पहुँचेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

◈ ◈ ◈

मेरे निबन्ध—जीवन और जगत् : ले० श्री गुलाबराय, प्रकाशक—गयाप्रसाद एण्ड सन्स प्रकाशन, आगरा, मूल्य ५)

हिन्दी के वयोवृद्ध विद्वान् बाबू गुलाबराय जी के वैयक्तिक, व्यापार सम्बन्धी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक तथा सांस्कृतिक निबन्धों का यह ग्रन्थ-संग्रह है। बाबू गुलाबराय जी के निबन्धों की अपनी एक शैली है। इन निबन्धों में अपने जीवन के दीर्घकालीन अनुभव, चिन्तन, विस्तृत अध्ययन और उसके उपयोग की अद्भुत क्षमता तो उन्होंने प्रगट ही की है, साथ ही हास्य का सुन्दर सामंजस्य उपस्थित कर देना उनका एक विशेष कौशल है। हिन्दी के पाठकों के सामने विविध पत्रों के द्वारा समय-समय पर इस पुस्तक के सभी निबन्ध आ चुके होंगे, फिर भी पुस्तकाकार रूप में एक जगह प्राप्त करने का अब अवसर आया है। विश्वास है इस संग्रह का स्वागत होगा और इससे ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी प्राप्त करेंगे। पुस्तक सुथरी डिमाई साइज में छपी है।

◈ ◈ ◈

कालिदास का भारत : डॉ० भगवतशरण उपाध्याय लिखित कालिदासकालीन भारत के सांस्कृतिक परि... द्वितीय खण्ड है। कालिदास के युग की कविता, नाटक, ... नृत्य, चित्रकला, भास्कर्य और तक्षण-कला, स्थापत्य-क... विवरण के साथ आर्थिक जीवन, शिक्षा और साहित्य, और दर्शन, पर अधिकृत पांडित्यपूर्ण प्रकाश डाला गया... परिशिष्ट में कालिदास के काल के निश्चय में सहायक सामग्री प्रस्तुत की गई है। १६ पेजी क्राउन आकार की... संख्या २४०; प्रकाशक, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस, ... ४)।

◈ ◈ ◈

भारत की कहानी : इस पुस्तक के लिए भारत-सर... मान्य लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय को पुरस्कृत... है। छोटे बच्चों और अशिक्षित प्रौढ़ों के पठन के लिए... रूप से लिखी गई इस सुन्दर, सचित्र पुस्तक का प्रकाशन... पाल एण्ड सन्स, दिल्ली, ने किया है। पुस्तक ६१ ... मोटे टाइप में छपी है और मूल्य १।) रंगीन संस्करण तथा १।) साधारण संस्करण का है।

* आवश्यक सूचना *

राजकमल प्रकाशन

का दिल्ली कार्यालय
स्थानाभाव के कारण वर्तमान
१, फैज़ बाज़ार से बदल कर इसी सप्ताह
नई बड़ी दूकान ८, फैज़ बाज़ार में ले
जाया जा रहा है।

राजकमल प्रकाशन

८ फैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तराल : नई पीढ़ी के सफल कवि महेन्द्र भटनागर की ५० कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं का कवि की अनुभूति से अटूट सम्बन्ध है और इसीलिए उनमें कवि के अपने हर्ष-विषाद पूरी ईमानदारी से व्यक्त हुए हैं। कवि का व्यक्तित्व मात्र अन्तर्मुखी ही नहीं है, इसीलिए यदि कुछ कविताओं में उसकी निजी प्रणयजन्य प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति है, तो अधिकांश कविताएँ प्रखर सामाजिक चेतना से अनुप्राणित हैं। भाषा-शैली सरल और आकर्षक है। ८० पृष्ठ का संग्रह युवक-साहित्यकार-संघ, धार (म० भा०) से प्रकाशित हुआ है और इसका मूल्य १।) है।

◈ ◈ ◈

अभियान : यह भी महेन्द्र भटनागर की ३६ कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं का रचना-काल १९४२-४३ से लेकर '४६ तक है, इसीलिए कवि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक जागरूक है। इन कविताओं में कवि का विद्रोही स्वर अधिक मुखर होकर व्यक्त हुआ है। ८७ पृष्ठ के इस कविता-संग्रह का मूल्य १।।) है और इसे **आदर्श विद्या-मन्दिर प्रकाशन, ३१, गौर कुण्ड (इन्दौर)** से प्राप्त किया जा सकता है।

◈ ◈ ◈

कलकत्ता से पीकिंग में श्री भगवतशरण उपाध्याय के यात्रा-सम्बन्धी संस्मरण हैं, जो २४ पत्रों के रूप में लिखे गए हैं। इन संस्मरणों के द्वारा आज के चीन की पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होती है। लेखक के प्रगाढ़ ऐतिहासिक अध्ययन व उदार मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ ही उसकी सूक्ष्म पर्यवेक्षण-शक्ति व चित्रमय प्रांजल भाषा-शैली ने पुस्तक को अमूल्य बना दिया है। १७३ पृष्ठ की सुन्दर जिल्दयुक्त यह पुस्तक **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से प्रकाशित हुई है और इसका मूल्य ३।।) है।

◈ ◈ ◈

साहित्यकार (कहानी-संकलन) : प्रकाशक—**साहित्यकार संस्थान, ३३, केनिंग लेन, नई दिल्ली,** मूल्य १)। यह पुस्तक-पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने वाली पुस्तक साहित्यकार संस्थान का दूसरा प्रयास है। सम्पादक-मण्डल ने १० सुरुचिपूर्ण कहानियों का संग्रह किया है। कुछ उर्दू लेखकों को भी लिया गया है। यह सत्य है कि आदर्शहीन,

स्टिफन ज्वाइग

स्पन्दन ३।।)

अनुवादक : कुमुद

जर्मनी के अमर कलाकार, प्रतिभा-सम्पन्न, मानवप्रेमी, शांतिदूत की बेजोड़ मनोवैज्ञानिक कृति का राष्ट्रभाषा में सरल व सार्थक अनुवाद। पर-पुरुष पर आसक्त एक जननी की द्वन्द्वात्मक एवं दाम्पत्य प्रेम की सुखान्त कहानी। हिन्दी में 'पत्थर की आँख' के बाद अभिनव पद्धति द्वारा प्रस्तुत स्निग्ध आवरण पृष्ठ की दूसरी पुस्तक। आवरण तैल चित्र-सा, हाथ फेरिए तो उभरा-उभरा-सा।

● ●

कमल जोशी

पत्थर की आँख ३)

..."इतने सुन्दर रूप में प्रकाशित हुई है कि दूर से निगाह पड़ते ही इस पुस्तक को हाथ में लेकर देखने को जी चाहता है। छपाई, सफाई और विशेषतः जिल्द की दृष्टि से इसे नमूने के रूप में पेश किया जा सकता है। आवरण बहुत ही सुन्दर और आकर्षक है।"—आजकल

● ●

मैक्सिम गोर्की

नवजातक २)

अनुवादक : कमल जोशी

विश्व-विख्यात कलाकार की कृति का सरल अनुवाद। आर्ट पेपर पर मूल लेखक का पूरे पृष्ठ पर आकर्षक चित्र।

● ●

एमिल ज़ोला

अन्तर्ज्वाला ४)

अनुवाद साहित्य में क्रांति मचा देने वाली राष्ट्र-भाषा में सर्वप्रथम पुस्तक। 'नाना' के वास्तववादी क्रांतिकारी फ्रेंच लेखक की अनुपम कृति का सर्वथा सार्थक, अनुपम एवं प्रांजल व मनोरम अनुवाद। पेरिस के व्यभिचारपूर्ण समाज का निपुण चित्रण।

● ●

हमारी प्रत्येक पुस्तक मुद्रण टेकनीक के विचार से अभिनव है। ३२ पौण्ड का सफेद एण्टिक कागज, मोनो की छपाई एवं पुट्ठे की मजबूत सीज़ण्ड जिल्द।

रश्मि प्रकाशन

११८ बी, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं से

इस वर्ष हमने "वायदा बाजार भविष्य १९५५" नामक एक पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित की है, जिसकी कीमत सिर्फ ५) रु० है। कुछ वर्षों से यह पुस्तक हम अंग्रेजी में "speculator's guide" नाम से प्रतिवर्ष प्रकाशित करते आ रहे हैं। व्यापारी वर्ग में इसका यथेष्ठ स्वागत हुआ लेकिन उनकी प्रबल इच्छा इसको हिन्दी में प्रतिवर्ष प्रकाशित करने की रही। उनकी प्रेरणा से हमने इसे इस वर्ष हिन्दी में प्रकाशित किया है।

इसमें रुई, चाँदी, शेयर, गुड़ मटरा, गुवार, तेलवाना, जूट आदि मुख्य बारह जिन्सों का पूरे वर्ष का विस्तृत व्यापार भविष्य, तेजी मन्दी के स्पेशल, दैनिक, साप्ताहिक व मासिक अचूक चान्स आदि व्यापार मार्ग-प्रदर्शन अत्यन्त स्पष्ट रूप से दिया गया है, जिससे प्रत्येक व्यापारी व्यापार में फायदा उठा सकता है।

इस पुस्तक के लेखक हैं—भारत के प्रमुख ज्योतिषी अन्तरराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त व्यापारिक ज्योतिष के विशेषज्ञ प्रोफेसर बी० सी० महता, एम० आर० ए० एस० म्युनिसिपल कमिश्नर तथा भारत के सर्वश्रेष्ठ ज्योतिष अखबार, दी अस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन, बैंगलोर के तेजी-मन्दी व व्यापारिक ज्योतिष सम्बन्धी लेखों व भविष्यवाणियों के विशेष भविष्यवेत्ता, तथा व्यापारिक ज्योतिष पर अति उत्तम ग्रन्थ "the secret course of commercial astrology" के मूल लेखक इत्यादि।

आजकल तेजी-मन्दी के नाम से लाखों व्यापारी बोगस ज्योतिषियों द्वारा बहुत ठगे जाते हैं जिसके फलस्वरूप ज्योतिष के प्रति लोगों की अश्रद्धा बढ़ती जा रही है। हमारी इस पुस्तक का केवल एक उद्देश्य है कि उन लाखों व्यापारी वर्ग को, जो केवल ज्योतिष पर श्रद्धा के आधार पर ही अपना लाखों रुपयों का व्यापार करते हैं, बोगस ज्योतिषियों से बचाया जावे तथा उनको व्यापार में सच्चा मार्ग-दर्शन मिले।

"सन् १९५५ के वायदा बाजार भविष्य" पुस्तक का मेटर हमारे पास तैयार है। जो भी प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता इसमें दिलचस्पी रखते हो वे अपने-अपने टर्मस नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें—

मैनेजर—जैन ज्योतिष ब्यूरो, ब्यावर (राज)

फोन नं० १०

तत्त्वहीन रचनाएँ भी उतनी ही अखरती हैं जितनी आदर्श-युक्त पर कलाहीन रचनाएँ। सम्पादक मण्डल ने मर्म को छूने वाली कहानियाँ चुनी हैं और वे तत्त्वहीन भी नहीं हैं।

◆ ◆ ◆

अपराधी कौन : श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के पुराने उपन्यास का नया संस्करण है। प्रस्तुत उपन्यास जब प्रथम बार प्रकाशित हुआ था तब ही इसकी ख्याति सम्पूर्ण साहित्य-जगत् में फैल गई थी। उपन्यास में निर्धन मजदूर-वर्ग का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण है, वैसे रोचकता की भी इसमें कमी नहीं है। उपन्यास का नया संस्करण **राजपाल एण्ड सन्स**, दिल्ली ने निकाला है। मूल्य ५)

◆ ◆ ◆

गुमनाम : रूस के अमर कहानीकार श्री एन्टन चेखव की सुविख्यात कृति 'एन एनॉनिमस लेटर' का हिन्दी अनुवाद है। इसमें एक ऐसी नारी का चित्रण किया गया है जो परम्परागत विवाह-बन्धनों को स्वीकार नहीं करती, किन्तु प्रेम के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार है। पुस्तक का अनुवाद श्री हंसराज 'रहबर' ने किया है। मूल्य ढाई रुपया। प्रकाशक हैं, **सुबोध प्रकाशन**, दिल्ली। मूल्य २॥)

◆ ◆ ◆

पत्थर की आँख : श्री कमल जोशी का नया कहानी-संग्रह है। कहानियाँ सुन्दर हैं। कुछ कहानियाँ तो बेजोड़ हैं। कमल जोशी में सफल कलाकार बनने की असामान्य सम्भावनाएँ हैं। जोशी जी ने जिस आत्मीयता और संयत भाव के साथ कहानियों की विषय-वस्तु को प्रस्तुत किया है वह सराहनीय है। उनकी भाषा और शैली में चुस्ती है। पुस्तक की छपाई और आवरण बहुत ही सुन्दर हैं, बल्कि यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य प्रकाशन में यह प्रथम प्रयास है कि इसकी जिल्द 'सिल्क स्क्रीन' पर छापी गई है। प्रकाशक, **रश्मि प्रकाशन**, कलकत्ता। मूल्य ३)।

●

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं हैं तो आज ही २॥) वार्षिक चन्दा भेजकर ग्राहक बनें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम क्रमशः हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार की किसी भी सूची में अशुद्धियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आशा है पाठकगण अशुद्धियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करके, सूची को पूर्णतया शुद्ध करने में हमें सहयोग देंगे।

[जून, १९५५ अंक के पृष्ठ ५२९ से आगे]

पश्चिमी बंगाल

दैनिक

(१) हिन्दुस्तान	कलकत्ता
(२) जागृति	हावड़ा
(३) लोकमान्य	कलकत्ता
(४) सन्मार्ग	,,
(५) विश्वबन्धु	,,
(६) विश्वमित्र	,,

साप्ताहिक

(१) अभिनय	
(२) आदर्श	,,
(३) वाणिज्य	,,
(४) कलकत्ता इण्डस्ट्रियल गज़ट	,,
(५) चाबुक	,,
(६) हिन्दुस्तान	,,
(७) इण्डस्ट्रियल गज़ट	,,
(८) इण्डियन न्यूज़ लैटर	,,
(९) जागृति	,,
(१०) जनता	हावड़ा
(११) लोकमान्य	कलकत्ता
(१२) लोकसेवक	,,
(१३) मानव	,,
(१४) नई लहर	२४ परगना
(१५) प्रभात	कलकत्ता
(१६) प्रकाश	,,
(१७) विश्वबन्धु	,,
(१८) विश्वमित्र	,,

पाक्षिक

(१) हमारा पथ	,,

मासिक

(१) अलमस्त	कलकत्ता	
(२) बालमित्र	,,	
(३) भारती	,,	
(४) चित्रा	,,	
(५) होनहार	,,	
(६) इण्डस्ट्रियल गज़ट	,,	(वार्षिक)
(७) जगत ज्योति	,,	
(८) जय भारती	,,	

पेप्सू

मासिक

चरक, सरहिन्द	मासिक
राजेन्द्र, भटिण्डा	पाक्षिक
ज्योति, संगरूर	,,
बृजेन्द्र, फरीदकोट	त्रैमासिक
महेन्द्र, पटियाला	वार्षिक

भूल-सुधार !

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची में उत्तर प्रदेश (गोरखपुर) से प्रकाशित 'कल्याण' मासिक, जो सम्भवतः हिन्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय पत्र है, का नाम भूल से छपना रह गया है। पाठकगण कृपया नोट कर लें। इस भूल के लिए हमें खेद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणधीर, कपूरथला, षरामासिक

ज्योति, फगवाड़ा ,,

(९) मारवाड़ी एसोसिएशन, बुलेटिन, कलकत्ता

(१०) नई रोशनी ,,

(११) नया समाज ,,

(१२) नया संसार ,,

(१३) ओसवाल नवयुवक ,,

(१४) पूर्वोदय हिमालय ईसाई पत्रिका कलिम्पोंग, त्रैमासिक

(१५) सचित्र आयुर्वेद कलकत्ता,

(१६) सात्विक जीवन ,,

(१७) श्री रंगनाथ पत्र ,,

(१८) सूर्य ,,

(१९) स्वाधीनता ,,

(२०) ट्रेन मज़दूर ,,

(२१) उलझन ,,

(२२) विद्रोही ,,

(२३) विशाल भारत ,,

(२४) विश्वबन्धु ,, वार्षिक

(२५) विश्वमित्र ,, ,,

(२६) व्यापार ,,

(२७) ज्ञानोदय ,,

बम्बई

दैनिक

(१) दैनिक समाचार पूना,

(२) नवभारत टाइम्ज़ बम्बई

(३) विश्वमित्र ,,

साप्ताहिक

(१) धर्मयुग बम्बई

(२) हरिजन सेवक अहमदाबाद

(३) जैन मित्र सूरत

(४) सन्मार्गी पूना

(५) श्री वेंकटेश्वर समाचार बम्बई

पाक्षिक

(१) धनवान बम्बई

(२) राजस्थानी वीर पूना

(३) रतन बम्बई

(४) (अखबार) रघबर ,,

(५) विचार-शक्ति ,,

मासिक

(१) नवनीत बम्बई

मद्रास

मासिक

(१) चन्दा मामा मद्रास

(२) दक्षिण भारत ,,

(३) ललकार ओलवोकाट

मध्यप्रदेश

दैनिक

(१) जयहिन्द जबलपुर

(२) कर्त्तव्य दमोह

(३) लोकमत नागपुर

(४) नव भारत ,,

(५) नव भारत जबलपुर

(६) प्रदीप ,,

(७) समाज ,,

(८) युगधर्म नागपुर

साप्ताहिक

(१) आगामी कल खण्डवा

(२) अग्रदूत रायपुर

(३) आलोक नागपुर

(४) अंकुश खण्डवा

(५) एटम जबलपुर

(६) भारती कटनी

(७) भारती नागपुर

(८) छत्तीसगढ़ केसरी रायपुर

(९) चित्र संसार छिन्दवाड़ा

(१०) कांग्रेस सन्देश ,,

(११) देहाती दुनिया सागर

(१२) धरती जबलपुर

(१३) गोंडवाना ,,

(१४) हमारा हिन्द नागपुर

(१५) हंटर सागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१६) जय भारत	छिन्दवाड़ा	(३४) नया कानून	नागपुर
(१७) जनता	गोंडिया	(३५) निष्पक्ष	,,
(१८) जनमत	सागर, नागपुर	(३६) प्रक्रम	बिलासपुर
(१९) जनक्रान्ति	बिलासपुर	(३७) प्रकाश	जबलपुर
(२०) जन सन्देश	दमोह	(३८) रायपुर समाचार	रायपुर
(२१) जनसंग्रह	इटारसी	(३९) राजस्थानी	नागपुर
(२२) जनतन्त्र	राजनांद गांव	(४०) राजहंस	जबलपुर
(२३) कर्मवीर	खण्डवा	(४१) राजकुल	,,
(२४) कर्त्तव्य	दमोह	(४२) राष्ट्रीय बन्धु	रायपुर
(२५) खुराफ़ात	सागर	(४३) राष्ट्रीय दीप	जबलपुर
(२६) कृषक	नागपुर	(४४) सही बात	,,
(२७) कृषक बन्धु	खण्डवा	(४५) साथी	सागर
(२८) लोकमत	नागपुर	(४६) शुभचिन्तक	जबलपुर
(२९) लोकसेवा	जबलपुर	(४७) सिपाही	सागर
(३०) मदारी	सागर	(४८) सण्डे स्कूल के पाठ की पत्रिका	जबलपुर
(३१) महाकौशल	रायपुर	(४९) स्वराज्य	खण्डवा
(३२) नारद	नागपुर	(५०) तूफान	बिलासपुर
(३३) नवभारत	,,	(५१) उदय	नरसिंहपुर

पुस्तक-विक्रेताओं के लिए नया आकर्षण

नये वर्ष की नई घोषणा

कमीशन दर में भारी परिवर्तन

२५% जनरल पुस्तक

१५% पाठ्य पुस्तक

२००) की पुस्तकें एक साथ लेने पर २½% अतिरिक्त कमीशन और F.O.R.

५००) की पुस्तकें एक साथ लेने पर २½% पाठ्य-पुस्तक और ५% जनरल पर अतिरिक्त कमीशन और F.O.R.

विशेष जानकारी के लिए पत्र व्यवहार कीजिए।

साहित्य भवन लिमिटेड

इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५२) उजाला	वर्धा
(५३) विन्ध्य केसरी	सागर
(५४) युग सन्देश	नागपुर
(५५) जिन्दगी	दुर्ग
(५६) सारथी	नागपुर

पाक्षिक

(१) आर्य सेवक	नागपुर
(२) तरुण सन्देश	दमोह
(३) मध्य प्रदेश, पत्रिका	नागपुर
(४) चुनाव चक्र	जबलपुर
(५) किसान संसार पत्रिका	सागर
(६) मतदाता	जबलपुर
(७) नवप्रभात	नागपुर
(८) नवराष्ट्र	रायपुर
(९) राष्ट्रबन्धु	,,
(१०) सारथी	जबलपुर

मासिक

(१) आयुर्वेद	नागपुर
(२) आयुर्वेदिक चिकित्सक	जबलपुर
(३) बापू	रायगढ़
(४) बिहार बन्धु	दमोह
(५) भविष्यवाणी	वर्धा
(६) बेलिहाज	सागर
(७) चन्दा	जबलपुर
(८) चौरसिया सन्देश	सागर
(९) छात्र निधि	,,
(१०) चित्रगुप्त समाचार	जबलपुर
(११) गृहणि	नागपुर
(१२) ग्राम उद्योग पत्रिका	वर्धा
(१३) गुरुजी का चिट्ठा	,,
(१४) जैन जगत	,,
(१५) लोकमित्र	छिन्दवाड़ा
(१६) महिला	जबलपुर
(१७) मानवता	अकोला
(१८) ज्योति किरण	जबलपुर
(१९) कला	कटनी
(२०) कल्पना	छिन्दवाड़ा
(२१) कार-प्रकाश	सागर
(२२) किस्मत	नागपुर
(२३) मंगला	,,
(२४) मंगल प्रभात	वर्धा
(२५) मसीह आवाज	रायपुर
(२६) मसीह महिला	जबलपुर
(२७) मुकुल	,,
(२८) नया बोध	नागपुर
(२९) पपीहा	,,
(३०) परिवार बन्धु	अमरावती
(३१) पुलिस पत्रिका	नागपुर
(३२) पोस्टमैन	होशंगाबाद
(३३) प्रगति	नागपुर
(३४) प्रारब्ध	,,
(३५) प्रवाह	,,
(३६) राजेन्द्र	,,
(३७) राष्ट्रभारती	वर्धा
(३८) राष्ट्रभाषा	,,
(३९) सन्देश तुरही	,,
(४०) संगम	,,
(४१) सर्वोदय	,,
(४२) साकी	सागर
(४३) सत्संग	,,
(४४) सावन-भादों	नागपुर
(४५) श्री	महाकोशल
(४६) सेवक	महासमुद
(४७) सेण्ट जोसफ कान्वेन्ट हिन्दी पत्रिका	नागपुर
(४८) उद्यम	,,
(४९) वंशप्रताप मणिमाला	रायपुर
(५०) व्यापार	नागपुर
(५१) आदिम जाति सेवक	जबलपुर त्रैमासिक
(५२) शिवहर युवक	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

लिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
लुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
रहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
-सुखन [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

मान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
लनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

षों के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

वेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद २॥)
रश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार २॥)
क साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
रतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
चित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)

[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कंपन : श्री आनन्द प्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो सुखन [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)
शेरो सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ३)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द १)
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [२] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० २)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइये

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यभारत

दैनिक

(१) नव-प्रभात	लश्कर
(२) नव-प्रभात	इन्दौर
(३) नव-प्रभात	उज्जैन
(४) इन्दौर समाचार	इन्दौर
(५) नई दुनिया	,,
(६) जागरण	,,
(७) दैनिक व्यापारिक रिपोर्ट	उज्जैन
(८) हमारी आवाज	लश्कर
(९) मध्यभारत प्रकाश	,,
(१०) तूफान	इन्दौर

साप्ताहिक

(१) मध्यभारत-सन्देश	लश्कर
(२) ग्राम-सुधार	इन्दौर
(३) राष्ट्र-ज्योति	मऊ
(४) भविष्य	इन्दौर
(५) मजदूर-सन्देश	,,
(६) यातायात	,,
(७) अशोक	,,
(८) आर्यावर्त	,,

क्रमशः

[पृष्ठ ५४० से आगे]

और सरकारी सहायता का उपयोग इस तारीख के अन्दर ही कर लीजिए !

बेचारा पुस्तकालय-संचालक इस पोथे को दबाए शहर में पहुँचता है, तो पाता है, उसकी रुचि की पुस्तकें ही उस दुकान में नहीं हैं। फिर क्या करे—जल्दी-जल्दी जो पाता है, खरीदकर ले जाता है।

आज सरकार द्वारा निर्धारित पुस्तकों की दुकानें सड़ी-गली पुस्तकों की 'क्लियरेंस-हाउस' बन गई हैं—साल-भर तक खोज-खोजकर सड़ी-गली किताबें इकट्ठी करो और तीन महीने में ही पैसे बटोर लो।

क्या सरकार का ध्यान इस ओर गया है कि ज्योंही लाइब्रेरी सीजन शुरू होता है, काशी-प्रयाग के विक्रेताओं का यह विज्ञापन छपना शुरू हो जाता है कि जिन्हें ६० प्रतिशत कमीशन पर पुस्तकें लेनी हों, वे नकद रुपये हमारे यहाँ पहुँचें।

पुस्तकालय-संचालकों से

दोष लेखकों का हो, प्रकाशकों का हो, सरकार का किन्तु पुस्तकालयों के लिए सबसे बड़ी जिम्मेवारी पुस्तकालय संचालकों की है। उन्हें सदा याद रखना चाहिए वे फूस की झोंपड़ी नहीं बना रहे हैं, एक पक्की इमारत की नींव डाल रहे हैं।

पुस्तकालय को तो गाँव के सांस्कृतिक जीवन का केन्द्र होना है। यदि उसकी बुनियाद ही कच्ची हुई तो अच्छे और पक्के भवन की आशा कैसे की जा सकती है?

पुस्तकालय आप झोंपड़ी में भी बना लें, किन्तु भीतर जो चीजें रखें, वे अच्छी-से-अच्छी रहें, तभी आपका पुस्तकालय स्थायी हो सकेगा, वह झोंपड़ी कभी महल में परिणत हो सकेगी।

पुस्तकालयों के लिए जब भी पुस्तकें खरीदें, आप बार बार सोच लें, आपको ऐसी ही पुस्तकें खरीदनी चाहिए जो लोक-रुचि को विकसित करें, लोगों के जीवन में स्थायी आनन्द की रस-धारा बहाएँ, जो आपके पुस्तकालय के गौरव की वृद्धि करें। पुस्तकों का अन्तरंग तो उत्तम हो ही, बहिरंग भी सुन्दर और टिकाऊ हो।

कम पुस्तकें रखकर भी आपका पुस्तकालय नामी-गिरामी बन जा सकता है, यदि आपने पुस्तकों के चुनाव में सावधानी से काम लिया।

बड़ी संख्या का मोह छोड़िए! मच्छरों, खटमलों, कीड़े-मकोड़ों की संख्या तो सबसे बड़ी होती है। आप उन्हें घर में क्यों नहीं पालते? बुरी पुस्तकें इनसे भी बुरी हैं, उन्हें पुस्तकालय में न घुसने दीजिए।

आप सदा याद रखें, पुस्तकालय की स्थापना करके आप अपने गाँव में एक नई संस्कृति की नींव डाल रहे हैं। उसके उपयुक्त ही तो आपको पुस्तकों का चुनाव करना है।

यदि आपने इन सुझावों पर ध्यान दिया, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, आपका पुस्तकालय निस्सन्देह आपके गाँव के लिए, आपके जवार के लिए, ज्ञान के एक प्रकाश-स्तम्भ का काम करेगा। उसकी ज्योति से सर्वत्र जगमगा उठेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

...रत के प्रमुख दैनिक पत्र **आज** के सहायक व्यवस्था-... सूचित करते हैं कि उनके पत्र ने हिन्दी-पुस्तक-प्रकाशकों ... प्रोत्साहन देने के लिए पुस्तकों के विज्ञापन छापने के ... में विशेष रियायती दरें तय की हैं। ४॥) रुपये प्रति ... इंच की जगह पुस्तकों का विज्ञापन ३) रुपये प्रति ... इंच में ही छापा जायगा। इस सम्बन्ध में विशेष ...कारी विज्ञापन-व्यवस्थापक, आज, बनारस, से प्राप्त की सकती है।

◈ ◈ ◈

...गरा के प्रसिद्ध प्रकाशक श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल ...व्यवस्थापक प्रकाशक-बन्धुओं का ध्यान प्रकाशन के क्षेत्र में ...रों की पुस्तकों को स्वयं छाप लेने की कुप्रवृत्ति की ओर ...ते हुए एक पत्र में लिखते हैं कि स्कूल और कॉलेजों के ...ने के आजकल के दिनों में अपराधी प्रकाशकों की हरकतें ...जाती हैं। यदि इस प्रकार की चोरियों को पकड़ने की ...र चोर-प्रकाशकों को दण्ड दिलवाने की सामूहिक कोशिश ...ई तो प्रकाशन-व्यवसाय को भारी खतरा पहुँचने का ...है। ऐसी कुचेष्टाओं की रोक-थाम के लिए जो प्रकाशक ...पुस्तक-विक्रेता सुझाव भेजना चाहें, वे उनसे पत्र-व्यव-...ार करें।

◈ ◈ ◈

...लिवरी ऑफ़ बुक्स एक्ट (मई १९५४) के अनु-...र प्रत्येक प्रकाशक के लिए पुस्तकाध्यक्ष, नेशनल लाइब्रेरी, ...वेडियर, कलकत्ता को अपने सब नये प्रकाशनों की एक-...क प्रति भेजना अनिवार्य है। इसी कानून द्वारा कुछ अन्य ...ीय पुस्तकालयों के नाम भी घोषित किये जायँगे जिन्हें ...के प्रकाशन की एक-एक प्रति भेजनी होगी। फ़िलहाल ...कत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय को ही पुस्तकें भेजना आव-...श्यक है।

जूनियर हाई स्कूल एवं हाई स्कूल कक्षाओं के लिए

स्वीकृत पाठ्यक्रमानुसार

हमारे प्रकाशन

कक्षा ६ के लिए

Children's Translation Composition & Grammar P. I by Laxman Prasad Sharma. ॥=)

पुस्तक कला भा० १

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ।=)

नवीन चित्रकला भा० १

(पुस्तक-कला एवं काष्ठ-कला से सम्बन्धित कला के लिए)

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥।-)

कक्षा ७ के लिए

Children's Translation Composition & Grammar P. II by Laxman Prasad Sharma. ।॥)

पुस्तक कला भा० २

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥)

नवीन चित्रकला भा० ३

(पुस्तक-कला एवं काष्ठ-कला से सम्बन्धित कला के लिए)

कक्षा ८ के लिए

Children's Translation Composition & Grammar P. III by Laxman Prasad Sharma ॥।=)

पुस्तक कला भा० ३ (प्रेस में)

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥)

नवीन चित्रकला भा० ३

(पुस्तक-कला एवं काष्ठ-कला से सम्बन्धित कला के लिए)

ले० श्री रामगोपाल शर्मा एवं रामनारायण वर्मा ॥।≡)

कक्षा ९-१० के लिए

आधुनिक हाई स्कूल अंकगणित, ले० श्री वासुदेव सहाय शर्मा २)

आधुनिक हाई स्कूल बीजगणित ले० " १।)

आधुनिक रचनात्मक ज्यामिति (प्रैक्टिकल कार्य के लिए उपयोगी) ले० श्री वासुदेव सहाय शर्मा १।)

नागरिक शास्त्र एवं भारतीय संविधान (प्रेस में)

अपने-अपने क्षेत्र के लिए पुस्तक-विक्रेता पत्र-व्यवहार करें

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अखिल भारत सर्वसेवा संघ प्रकाशन, काशी

—मानवीय क्रान्ति, दादा धर्माधिकारी । ।)

—साम्ययोग का रेखाचित्र, कु० विमला बहन । ।=)

—भगवान के दरबार में निवेदन, विनोबा । =)

—भूदान दीपिका, विमला बहन । =)

—बापू का ग्राम राज, धीरेन भाई मजमूदार । ।)

—जीवन दान, जयप्रकाश नारायण । ।)

—क्रान्ति का अगला कदम, दादा धर्माधिकारी । ।)

विख्यात पाठ्य-पुस्तकों के
हिन्दी रूपान्तर

★ भारतीय अर्थ-शास्त्र :
जी० बी० जाथर और एस० जी० बेरी

★ राजनीति-सार :
ए० अप्पादोराई

★ आधुनिक संविधान :
के० सी० ह्वियर

इसी मास में तैयार हो रहे हैं

राजकमल प्रकाशन

अन्तराष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना

—पिता के पत्र पुत्र के नाम, श्री अनूप लाल मण्डल ।

—ग्राम सुधार, श्री नरेन्द्रसिंह । १)

—मेघदूत, एक अनुचिन्तना, श्री रंजन सूरिदेव । २)

ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली

—भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका, डॉ० नगेन्द्र ।

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस

—रूहे सुख़न, सम्पादक, श्री कलीमुल्ला फारुखी । ३)

—सेवा और त्याग, श्री गुलाबरत्न वाजपेयी । ४)

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—व्यवसाय-प्रणाली, प्रो० के० एन० गर्ग व एस० मीतल । २।)

—इण्टर स्टेटिक्स, आनन्दस्वरूप सिन्हा । ६)

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

—देश की आन पर, छविनाथ राय । ।)

—कर्त्तव्य पालन, छविनाथ राय । ।)

—आल्हा ऊदल, छविनाथ राय । ।)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

—रेखाएँ और चित्र, भाग १, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' । ४

—बहाने बाज़ी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन । ३।)

—तीसरी भूख, अनन्त गोपाल शेवड़े । ३)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—अपराध और दण्ड, दास्तोवस्की । ५)

बम्बई बुकडिपो, कलकत्ता

—पाँच सदस्य, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर । २।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—अवतार कथा, कालीकान्त झा । १)

भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ

—पहली हार, रघुवीर शरण 'मित्र' । ५)

—बलिदान, रघुवीर शरण 'मित्र', पु० मु० । ५)

—गाँव की दुलहन, रघुवीर शरण 'मित्र', पु० मु० । ६)

—आदर्श बालक, बाल सेवक । ||)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—चमचम चमके चन्दा मामा, बाबूराम पालीवाल । |||)

मंगल बुकडिपो, दिल्ली

—साकेत सौरभ, श्री नगीनचन्द्र । ८)

सरसी प्रेस व प्रकाशन, इलाहाबाद

—बदली की धूप, प्यारेलाल आवारा । ४)

—दरारें, प्यारेलाल आवारा । २||)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—समीक्षा और आदर्श, डॉ० रांगेय राघव । ३)

—लोक जीवन और साहित्य, डॉ० रामविलास शर्मा ।

—जयशंकरप्रसाद, डॉ० रामविलास शर्मा ।

—भोर के सपने, घनश्याम अस्थाना ।

संगीत कार्यालय, हाथरस

—आवाज़ सुरीली कैसे करें, लक्ष्मीनारायण गर्ग । २)

—फिल्म संगीत, लक्ष्मीनारायण गर्ग । ४)

सेंट्रल बुकडिपो, इलाहाबाद

—प्रणय पत्रिका, डॉ० हरिवंशराय बच्चन । २||)

हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस

—पुष्प विज्ञान, स्व० पं० हनुमानप्रसाद वैद्य । १|)

—कामकला, ठाकुर विजय बहादुरसिंह । ४||)

—पारिजात, स्व० महाकवि 'हरिऔध' । ५)

ज्ञान प्रकाशन, दिल्ली

—तपोभूमि, उपन्यास, जैनेन्द्रकुमार व ऋषभचरण जैन । ५)

—महापाप, उपन्यास, टाल्स्टाय । २)

—देवदूत, उपन्यास, टाल्स्टाय । १||)

हमारे नवीनतम प्रकाशन

१. **तपोभूमि**

मौलिक उपन्यास

लेखकगण

श्री० जैनेन्द्र कुमार तथा ऋषभचरण जैन

सजिल्द मू० ४)

२. **महापाप**

(उपन्यास)

महर्षि टाल्स्टाय की एक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना का अविकल अनुवाद

मूल्य २)

३. **देवदूत**

(उपन्यास)

महर्षि टाल्स्टाय की एक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना का अविकल अनुवाद

मू० १||)

हमारे अन्य प्रकाशन

४. गदर २||) ५. रहस्यमयी २)

६. सत्याग्रह १||) ७. षड्यन्त्रकारी ३)

८. राजकुमार भोज १)

इनके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य सभी प्रकार की पुस्तकों के लिए हमें लिखिए ।

ज्ञान प्रकाशन

८१, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

कविराज मोहनसिंह, पृथ्वीराज रासो, प्रथम खण्ड, साहित्य संस्थान, उदयपुर
गुलाबराय, मेरे निबन्ध (जीवन और जगत्), २४५, डि०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
गोपीनाथ व्यथित, जयशंकर प्रसाद एक अध्ययन, १२०, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
गौरीशंकर ओझा डॉ०, ओझा निबन्ध (४ भाग) ३००, रायल, साहित्य संस्थान, उदयपुर प्रत्येक भाग
जोधसिंह मेहता, आदि निवासी भील, साहित्य संस्थान, उदयपुर
देवीशरण रस्तोगी, हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली
प्रतापनारायण टण्डन, सं०, झाँसी की रानी : एक अध्ययन, १००, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
प्रेम नारायण टण्डन, हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, २००, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ
बाबू ब्रजरत्नदास, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पु० मु०, २५०, क्रा०, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस
भारत भूषण सरोज, भाषा विज्ञान, पु० मु०, १८७, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
भारतभूषण सरोज व अन्य, विचार और निबन्ध, १४८, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
मोहम्मद ईसाक सिद्दीरी, नया चमन की टीका, पु० मु०, १००, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
राजस्थान में भीलों की कहावतें, साहित्य संस्थान, उदयपुर
राजस्थान में भील लोकगीत, साहित्य संस्थान, उदयपुर
राजेन्द्र शर्मा, साहित्यालोचन, १४२, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
राजेन्द्र शर्मा, हिन्दी साहित्य का इतिहास, १५८, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', खड़ी बोली के प्रतिनिधि कवि, ३४२, क्रा०, इन्दिरा प्रकाशन-गृह, जयपुर
रामगोपाल सिंह चौहान, हिन्दी के गद्यकार और शैलियाँ, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा
रामदरश मिश्र, ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, १६०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
लक्ष्मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, आधुनिक कवि महादेवी की टीका, २००, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीनारायण टण्डन, रामखेलावन चौधरी, पन्त और उनका गुञ्जन, १६०, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ २)
श्यामलाकान्त वर्मा, आधुनिक समीक्षा, १२८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना १॥)
शम्भूनाथ पाण्डेय, कवि प्रसाद, पु० मु०, १८० क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २॥)
सीताराम चतुर्वेदी, भाषा की शिक्षा, पु० मु०, ४५०, क्रा०, हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस ४)
हमारे उत्सव, ७०, डि०, राष्ट्र धर्म प्रकाशन लि०, लखनऊ १)
हरिहरनाथ टण्डन, चिन्तामणि दर्शन, पु० मु०, २१६, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)

उपन्यास

अजितकुमार 'सरल' जिन्दगी के मोड़, २१५, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३॥)
कमल शुक्ल, माँझी, पतवार, किनारा, १०८, क्रा०, भारती भाषा भवन, दिल्ली ३)
चतुरसेन शास्त्री, खवास का ब्याह, पु० मु०, १८४, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)
दास्तावस्की, अपराध और दण्ड, पु० मु०, ६००, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ७)
प्यारेलाल आवारा, रोते नैना, पु० मु०, १८२, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस २॥)
प्रतापचन्द्र अग्रवाल, समुद्री डाकू, १२८, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद ॥)
बनवारी लाल साहू, रहस्यमयी पुस्तक, १४०, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद ॥)
रवीन्द्रनाथ टैगोर, पाँच सदस्य, पु० मु०, १४८, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस २॥)
लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी, श्रीमती विश्वास, २५०, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४)
वृन्दावनलाल वर्मा, कोतवाल की करामात, पु० मु०, १६०, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ३)
शरतचन्द्र, विराज बहू, पु० मु० १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)
शरतचन्द्र, वैरागी, पु० मु०, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)

कविता

अयोध्यासिंह हरिऔध, पद्य प्रमोद, १७८, डि०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस २॥)
रामनारायण टण्डन, नवीन काव्य-संग्रह, १२८, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १॥)
रामनारायण टण्डन, प्राचीन काव्य-संग्रह, १२०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ १॥)

कहानियाँ

एन्टन चेखव, अनु० राजनाथ, द्वन्द्व युद्ध, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ३)
कुल भूषण, पगडण्डी और परछाइयाँ, १६०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २॥)
यशपाल, उत्तमी की माँ, १२०, डि०, विप्लव कार्यालय, लखनऊ २)
सुदर्शन, सुदर्शन सुमन, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)

नाटक

हरिकृष्ण प्रेमी, कीर्ति स्तम्भ, २२५, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

आनन्द, सब की माता, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
कमलदेव नारायण, घर कैसे चले, १२८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
छविनाथ राय, चर्खे का जादू, २४, क्रा०, दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
छविनाथ राय, सब का मित्र, २४, क्रा०, दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
छविनाथ राय, हरिजन राजा, २४, क्रा०, दक्षिण भारत साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
पृथ्वीकुमार अग्रवाल, अमृत के घड़े, ३६, कापी साइज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय चित्रों की कहानी, ८०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
भगवतशरण उपाध्याय, भरतीय नदियों की कहानी, ४८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
माईदयाल जैन, अशोक चक्र, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

विविध

आनन्दस्वरूप सिन्हा, नवीन हाईस्कूल ज्यामिति, २८०, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
जाकिर हुसेन डॉ०, अनु० शिवशंकर शर्मा, शिक्षा, १५५, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
वि० ना० भातखण्डे, अनु० वामन नत्थोपन्त, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग १, पु० मु०, ५६, डि०, संगीत कार्यालय, हाथरस
वि० ना० भातखण्डे, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६, ५४६, डि०, संगीत कार्यालय, हाथरस
श्री प्रकाश, हरप्रसाद खरे, बी० एल० ठाकुर डॉ०, कार्बनिक रसायन शास्त्र, ४७२, डि०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
सत्यकाम विद्यालंकार, मानसिक शक्ति के चमत्कार, पु० मु०, १२२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ : ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$" × ६" या २$\frac{3}{4}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$" × ६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D-

तृतीय वर्षारम्भ के उपलक्ष्य में

प्रकाशन समाचार

का

सितम्बर १९५५ का अंक

विशेषांक

होगा, जिसमें विविध विषयों की हिन्दी की

१००० उत्कृष्टतम पुस्तकों की सूची छपेगी।

प्रत्येक पुस्तक का थोड़े से शब्दों में परिचय भी रहेगा।

प्रत्येक साहित्य-प्रेमी व पुस्तकालय इस सूची से लाभान्वित होगा।

इस सूची का चुनाव एक समिति द्वारा होगा जिसमें सम्पादक के अतिरिक्त एक आलोचक, एक पुस्तक-विक्रेता और एक प्रकाशक रहेंगे।

इस पत्र के पाठकों, साहित्यिकों, प्रकाशकों, और पुस्तक-विक्रेताओं से प्रार्थना है कि इस सूची में समावेश के लिए १ अगस्त तक पुस्तकों के नामों का सुझाव भेजकर हमें अनुग्रहीत करें। प्रत्येक सुझाव पर समिति का ध्यान आकर्षित किया जायगा। प्रयत्न किया जायगा कि कोई भी महत्त्वपूर्ण पुस्तक सूची में आने से रह न जाय।

समिति की नामावली अगले अंक में प्रकाशित की जायगी।

प्रकाशन समाचार

१५—ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगस्त, १९५५
अङ्क १२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

...र्षिक २॥)
एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

८३६२
१०/५/९२
२६-८-५५
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

विख्यात पुस्तक Indian Economics का अनुवाद
(अद्यतन सूचनाओं व आँकड़ों सहित)

भारतीय अर्थशास्त्र

लेखक
जी० बी० जथार एम० ए०
और
एस० जी० बेरी एम० ए०

पहला भाग छपकर तैयार हो गया है।

मूल्य दोनों भाग १४)

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय वर्षारम्भ के उपलक्ष्य में

प्रकाशन समाचार

का

सितम्बर, १९५५ का अङ्क

विशेषांक

होगा, जिसमें विविध विषयों की हिन्दी की

१००० उत्कृष्टतम पुस्तकों की सूची छपेगी।

प्रत्येक पुस्तक का थोड़े से शब्दों में परिचय भी रहेगा।

प्रत्येक साहित्य-प्रेमी व पुस्तकालय इस सूची से लाभान्वित होगा।

इस पत्र के पाठकों, साहित्यकारों, प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं से प्रार्थना है कि इस सूची में समावेश के लिए १० अगस्त तक पुस्तकों के नामों का सुझाव (प्रकाशक कृपाकर अपने नवीनतम सूची-पत्रों की ५-५ प्रतियाँ शीघ्र भेजें) नीचे लिखे पते पर भेजकर हमें अनुगृहीत करें। प्रत्येक सुझाव पर समिति का ध्यान आकर्षित किया जायगा। प्रयत्न किया जायगा कि कोई भी महत्त्वपूर्ण पुस्तक सूची में आने से रह न जाय।

सम्पादन समिति

श्री इलाचन्द्र जोशी
डा० हरदेव बाहरी
श्री कृष्णाचार्य (हिन्दी विभाग, नैशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता)
श्री श्रीनिवास अग्रवाल (किताब महल, इलाहाबाद)
श्री भीमसेन (एस० चन्द एण्ड कं०, दिल्ली)
श्री ओंप्रकाश

प्रकाशन समाचार

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक १२ :
: पूर्णाङ्क २४ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

…के हिन्दी-क्षेत्र की अधिकाधिक सरकारें इधर प्रकाशन की …नाएँ बना रही हैं। पाठ्यक्रम के प्रकाशन में तो उनका …कुछ अवधि से बढ़ ही रहा था; अब सामान्य पुस्तकों …प्रकाशन-क्षेत्र में भी पाँव पसारे जा रहे हैं।

पाठ्यक्रमों की पुस्तकों के प्रकाशकों के विरुद्ध सरकारों को …यत थी और कुछ हद तक वह शिकायत जायज़ थी। …भी पुस्तक के पाठ्यक्रम में स्वीकृत हो जाने से श्रम और …के अनुपात में कहीं अधिक लाभ होने की सम्भावना …है, इसलिए पाठ्यक्रमों का निश्चय करने वाली समि-…से साठ-गाँठ करने और उचित-अनुचित तरीकों को …ने का लोभ प्रकाशकों को रहता था। यह कुप्रवृत्ति …-क्षेत्र में एक सर्व-विदित भेद के समान थी। धीरे-धीरे …रियों के लिए किसी पुस्तक के अच्छे-बुरे होने का प्रश्न …हो गया; मुख्य प्रश्न हो गया प्रकाशक की पहुँच और …और उसकी थैली का भारीपन।

…यह स्थिति निश्चय ही निन्दनीय थी। पाठ्यक्रमों की …कों के लिए प्रत्येक प्रदेश में कुछ प्रकाशकों का एकाधि-…प्रतिष्ठित-सा हो गया और नये प्रकाशनों के लिए इस …में प्रवेश पाना असम्भव-सा हो गया। ये प्रकाशक …धिक लेखकों से पुस्तकों का सम्पादन करवाते थे; फिर …रकम या रायल्टी देकर उन प्रभावशाली लेखकों या …दों का नाम उन पर दे देते थे जिनकी पाठ्यक्रम-…-समिति के चुनींदा सदस्यों तक साख होती थी। …क्रमों को स्वीकृत करने वाली समितियों के बहुत कम …और पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशकों में से बहुत कम प्रकाशक भ्रष्टाचार के छींटों से अपना दामन बेदाग रख सके।

शिक्षा-क्षेत्र की इन अनर्थकारी कुप्रवृत्तियों का सरकारों ने जो प्रतिकार खोज निकाला, उससे कुछ प्रकाशकों को हानि अवश्य हुई, लेकिन पुस्तकों के स्तर के उच्चतर होने का अभीष्ट लाभ सरकारों को नहीं हुआ। सरकारी शासन-यन्त्र का जो अवैयक्तिक जड़ दृष्टिकोण, पहुँच और सम्बन्ध रहता है, उससे उत्कृष्ट स्तर के लेखक प्रशिक्षा-ग्रन्थों के लेखन में सरकारों को सहायता देने की ओर अग्रसर नहीं हुए। कुनबा-परस्ती प्रकाशकों के हाथ से निकलकर शिक्षा-विभागीय अधिकारियों के हाथ में चली गई। यदि ज्ञात बुराइयों को हटाने के लिए कदम उठाये गए होते और पाठ्यक्रमों का निश्चय करने वाली समितियों से अर्थ-लोलुप कुचक्रियों को खदेड़ दिया जाता और पुस्तकों के परखने की कसौटी उनके प्रकाशकों को न बनाकर स्वयं पुस्तकों को बना दिया जाता तो समस्या का आदर्श हल निकल आता। अब तो दर्द से अधिक दवा परेशान कर रही है। पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण से भ्रष्टाचार तनिक न घटेगा; पहले जो लाभाधिकार मुँहलगे प्रकाशकों को प्रकाशन में मिलता था, अब मुद्रण में मिलता चलेगा। लेकिन पुस्तकें पहले की तरह ही निष्प्राण छपेंगी। आवश्यकता तो प्रकाशकीय प्रतियोगिता को स्वस्थ-भर करने की थी। भ्रष्टाचार का कुल दोष प्रकाशकों के मत्थे मढ़कर शिक्षा-विभाग अपनी कर्तव्यच्युतता से ही ध्यान हटा सका है और कुछ नहीं कर सका।

पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशन का धन्धा सामान्य पुस्तकों के प्रकाशन से एकदम भिन्न है। सामान्य पुस्तकों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक ही साहित्य का समर्थक और पोषक है। बिक्री की सीमाओं को जानते-बूझते हुए भी ऐसा प्रकाशन जो 'रिस्क' उठाता है, उसी से साहित्य के अभावों की पूर्ति होती है। हिन्दी में सामान्य पुस्तकों को खरीदने वाले 'न' के बराबर हैं; ऐसी पुस्तकें अधिकांश में पुस्तकालयों द्वारा ही खरीदी जाती हैं। पुस्तकालयों का एक बहुत बड़ा भाग सरकारी अर्थ-सहायता पर निर्भर है। नई पुस्तकों की खरीद के लिए देश के पुस्तकालयों के पास बहुत सीमित धन है। अब सरकारों द्वारा स्वयं ही सामान्य पुस्तकों के प्रकाशन से सामान्य पुस्तकों के प्रकाशकों के हितों पर गहरी चोट पहुँचने की आशंका है। सरकारें सार्वजनिक पुस्तकालयों को रुपया पैसा न देकर सहायता में अपने प्रकाशन ही दे देंगी, जैसा कुछेक राज्यों में हो भी रहा है। इस प्रकार सरकार स्वयं प्रकाशन भी करेगी, और स्वयं अपने प्रकाशनों की खरीदार भी होगी। पुस्तक की लागत से सम्बन्धित सरकारी विभाग को किञ्चित्मात्र भी दिलचस्पी नहीं; न उसके सम्मुख वितरण की ही कोई कठिनाई है। कोई भी प्रकाशकीय समस्या इस नये 'प्रकाशक' के सामने नहीं होगी जिनका सामना प्रत्येक प्रकाशक को आये दिन करना पड़ता है। सामान्य पुस्तकों के प्रकाशकों ने लगभग आधी शती से प्रकाश[न] की परम्परा देश में स्थापित की है; नई प्रतिभाओं [को] पहचाना और उभारा है। देश का सर्वोच्च साहित्य आरम्[भ] के साहसी प्रकाशकों द्वारा निरन्तर प्रकाश में लाया ग[या] है। आज कविता-संग्रह, संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद, देश [की] विभूतियों के जीवन-चरित्र और ऐसे ही सामान्य प्रकाश[न] आरम्भ करके सरकारें हिन्दी के किसी भी अभाव को न[हीं] पूरेंगी, वरन् उन अभावों की पूर्ति में जुटे हुए प्रकाशकों [के] हितों पर कुठाराघात अवश्य करेंगी। जैसा कि हमने प[हले] एक टिप्पणी में कहा था, सरकारों को किन्हीं ऐसी पुस्तकों [का] प्रकाशन हाथों में लेना चाहिए था जो अर्थ अथवा सा[धन] के अभाव में सामान्य प्रकाशक अभी नहीं लेता और जि[नके] प्रकाशन से हिन्दी को देश की राष्ट्र-भाषा और राज्य-भा[षा] बनने में सुगमता होती। जान पड़ता है कि बिना किसी [प्र]कार की सुविचारित योजनाओं के हिन्दी-क्षेत्र की विभि[न्न] सरकारें प्रकाशन की ओर बढ़ रही हैं; अब राह के चाहे कि[सी के] हितों को ठोकर लगे या कोई नवांकुरित पौधा उखड़े, [उन्हें] इससे कोई सरोकार नहीं।

हिन्दी-साहित्य के सोलह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,	अजिल्द
२. **यूरोपीय दर्शन**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा,	सजिल्द
३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल,	"
४. **विश्वधर्म-दर्शन**—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा,	"
५. **सार्थवाह**—डॉ० मोतीचन्द्र,	"
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—डॉ० सत्यप्रकाश,	"
७. **सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन**—डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री,	"
८. **काव्यमीमांसा (राजशेखर कृत)**—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	"
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा,	"
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—डॉ० देवसहाय त्रिवेद,	"
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर,	"
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—डॉ० उदयनारायण तिवारी,	"
१३. **राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त**—श्री गोरखनाथ सिंह,	"
१४. **रबर**—श्री फूलदेवसहाय वर्मा,	"
१५. **ग्रह-नक्षत्र**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०,	"
१६. **नीहारिकाएँ**—डॉ० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय),	"

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और कलाकारों का संरक्षक

कॉपीराइट का कानून

श्री बी० एन० लोकुर

मान्य लेखक द्वारा दी गई एक रेडियो-वार्ता 'ऑल इण्डिया रेडियो' के सौजन्य से साभार यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

जैसे ही हम कोई पुस्तक खोलते हैं, 'कॉपीराइट सुरक्षित', 'विश्वव्यापी कॉपीराइट', 'सर्वाधिकार सुरक्षित', आदि वाक्यांश हमारी दृष्टि से आ टकराते हैं। इन शब्दों के द्वारा लेखक इस आशय की चेतावनी देना चाहता है कि कोई भी व्यक्ति उसकी पुस्तक का इस प्रकार उपयोग न करे, जो उसे हानिकर सिद्ध हो। यह स्वाभाविक ही है कि कोई भी लेखक यह नहीं पसन्द करता कि कोई अन्य व्यक्ति उसकी कृति की नकल करे या उसे दुबारा प्रकाशित करे, क्योंकि इससे लेखक के संस्करण की बिक्री मारी जाती है और फलतः उसे आर्थिक रूप में घाटा सहना पड़ता है। यह स्थिति उस समय तो और भी खराब हो जाती है, जब कोई स्वयं ही किसी दूसरे लेखक की पुस्तक अपने नाम से निकलवा देता है। तब तो लेखक को न केवल पुस्तक के मूल्य की हानि सहनी पड़ती है, वरन् उससे उस पुस्तक के लेखक होने का गौरव भी छिन जाता है। लेखक को ऐसी ही हानि उस स्थिति में भी सहनी पड़ती है, जब कोई उसकी पुस्तक की प्रमुख विशेषताओं का चालाकी से उपयोग करके उससे बिलकुल मिलती-जुलती दूसरी पुस्तक तैयार कर देता है। कॉपीराइट का कानून ही लेखक की इस प्रकार की हानियों से रक्षा करता है और उसे इस बात का आश्वासन देता है कि केवल वही अपने बौद्धिक श्रम के विविध पुरस्कारों का उपयोग कर सकेगा। कानून लेखक को प्रत्येक साहित्यिक कृति का कॉपीराइट प्रदान करता है, चाहे वह वृहत् ग्रन्थ के रूप में हो या कोई छोटा लेख हो।

कॉपीराइट अनेक विशिष्ट अधिकारों का संग्रह है। किसी कृति के कॉपीराइट के स्वामी की हैसियत से आप उसे किसी भी रूप में निकालने या दुबारा प्रस्तुत करने अथवा उसका अनुवाद प्रकाशित करने के एकमात्र अधिकारी हैं। यदि वह कृति व्याख्यान के रूप में है, तो उसे जनता के बीच भाषण देने का भी आपको ही अधिकार है और यदि वह कोई नाट्य-कृति है तो उसका अभिनय करने के भी आप ही एकमात्र अधिकारी हैं। आपकी कृति से ग्रामोफोन रिकार्ड या सिनेमाटोग्राफ़-फ़िल्म तैयार करने का भी सम्पूर्ण अधिकार आपके ही हाथ में है। यदि कोई व्यक्ति बगैर आप की स्वीकृति के इन अधिकारों का उल्लंघन करता है, तो वह आपकी क्षति-पूर्ति के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। आप उस पर कॉपीराइट भंग करने का अभियोग लगाकर फौजदारी अदालत में मुक़दमा भी दायर कर सकते हैं। किन्तु यदि कोई व्यक्ति बग़ैर आपकी कृति की सहायता लिये हुए स्वतन्त्र रूप से काम करता है और संयोगवश समान निष्कर्षों पर ही पहुँचता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि उसने आपके कॉपीराइट का उल्लंघन किया है। यह निश्चित करना कि कॉपीराइट भंग हुआ है या नहीं, इस बात पर निर्भर करता है कि क्या आपकी कृति से कुछ चुराया गया है।

एक लब्ध-प्रतिष्ठ न्यायाधीश के अनुसार कॉपीराइट इस कथन पर आधारित है कि 'हमें चोरी नहीं करनी चाहिए।' इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आप अपनी जिस कृति का कॉपीराइट प्राप्त करना चाहते हैं वह दूसरे लेखकों की कृतियों से चुराई हुई नहीं होनी चाहिएँ। उसे मौलिक होना नितान्त आवश्यक है, किन्तु 'मौलिक' से यह तात्पर्य नहीं है कि वह विचारों और तथ्यों में भी मौलिक हो। इसका केवल इतना अर्थ है कि उस कृति के स्वरूप, उसकी अभिव्यक्ति और उसे प्रस्तुत करने की प्रणाली में मौलिकता हो। क्योंकि कॉपीराइट द्वारा विचारों की अभिव्यंजना-प्रणाली को संर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षण प्रदान किया जाता है, न कि स्वयं विचारों को, अतएव आप किसी भी कृति से नया विचार उधार लेकर उसे पुनः अपनी शैली में व्यक्त कर सकते हैं। वैसे तो लेखक विचारों की चोरी की निन्दा करते हैं, किन्तु कॉपीराइट का नियम इस पर ध्यान नहीं देता। विचारों का संरक्षण विशिष्ट विधान के अन्तर्गत आता है।

साहित्यिक और कलात्मक कृतियों का संरक्षण

जिस समय आप कोई कृति प्रस्तुत अथवा प्रकाशित करते हैं, उसी समय आपको उसका कॉपीराइट प्राप्त हो जाता है। संयुक्त-राज्य अमरीका जैसे कुछ देशों में कॉपीराइट प्राप्त करने के पूर्व कुछ औपचारिकता का पालन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए कॉपीराइट कार्यालय में कृति की कुछ निश्चित प्रतियाँ जमा करनी पड़ती हैं और उसके उपरान्त उसे दर्ज कराने, फ़ीस अदा करने और कॉपीराइट का नोटिस निकलवाने की भी आवश्यकता पड़ती है। किन्तु भारतीय कानून में ऐसी कोई भी औपचारिकता निर्धारित नहीं है। कॉपीराइट के सन्दर्भ में साहित्यिक कृति का अत्यन्त व्यापक अर्थ लिया जाता है और उसके अन्तर्गत ऐसी चीजें भी आ जाती हैं जिनका वस्तुतः साहित्यिक महत्त्व भी नहीं है। यहाँ तक कि नक़्शे, चार्ट्स, तालिकाएँ, टेलीफ़ोन निर्देशिका, रेलवे टाइम टेबुल, रेडियो का कार्यक्रम, व्यापारियों की सूचियाँ, प्रेस के तार और परीक्षा के प्रश्न-पत्र भी कॉपीराइट के अन्तर्गत आ जाते हैं, किन्तु विज्ञापन के नारे, घुड़दौड़ के कार्ड, और सामान्य स्रोत से प्राप्त इसी प्रकार की वस्तुओं को कॉपीराइट का संरक्षण नहीं प्राप्त होता। कॉपीराइट की मोटी पहचान यह है कि क्या कृति को प्रस्तुत करने में लेखक को ऐसा परिश्रम करना पड़ा है, जिसमें उसने अपनी कुशलता और निर्णयात्मक प्रतिभा का उपयोग किया है। कृति को लिखित रूप में होना तो अनिवार्य ही है। मौखिक कृतियाँ कॉपीराइट की माँग नहीं कर सकतीं। अतएव तात्कालिक व्याख्यान, भाषण और उपदेशों को कॉपीराइट का संरक्षण नहीं प्राप्त होता, चाहे उनका जितना अधिक साहित्यिक मूल्य हो।

यद्यपि सबसे पहले साहित्यिक कृतियों को ही कॉपीराइट का संरक्षण प्रदान किया गया था, किन्तु धीरे-धीरे कॉपीराइट के क्षेत्र के अन्तर्गत अन्य प्रकार की कृतियाँ भी आती गईं और आज की स्थिति तो यह है कि उसके द्वारा अनेक प्रकार के विषयों को संरक्षण दिया जाता है, जिनमें कलात्मक, संगीतात्मक और नाटकीय कृतियाँ भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार कॉपीराइट का क्षेत्र भी विस्तृत हो गया है। कॉपीराइट कृतियों को अधिक संख्या में तैयार करने पर रोक ही नहीं लगाता, वरन् उनका सार्वजनिक प्रदर्शन करने पर भी प्रतिबन्ध स्थापित करता है। जहाँ तक नाटकीय और संगीतात्मक कृतियों का सम्बन्ध है उनके प्रस्तुत या अभिनय करने का अधिकार ही व्यावहारिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, और वस्तुतः आवश्यकता भी यही होती है कि नाटकीय क्रियाओं और संगीतात्मक रागों को संरक्षण प्रदान किया जाय।

यद्यपि नृत्य और मूक-अभिनय को साहित्यिक कृतियों की संज्ञा नहीं दी जा सकती, किन्तु वे भी कॉपीराइट के अन्तर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त चित्रकारी, मूर्तिकला, नक्काशी फ़ोटोग्राफ़ी और स्थापत्य कलाओं की कृतियों को भी संरक्षण प्रदान किया जाता है। इनकी प्रतिलिपि तैयार करने के लिए रचयिता से स्वीकृति लेनी आवश्यक होती है, यहाँ तक कि बग़ैर स्वीकृति के इन्हें विभिन्न माध्यमों में प्रस्तुत करना भी इन कृतियों के कॉपीराइट का उल्लंघन करना होगा। उदाहरण के लिए स्थापत्य कृतियों को या नक्काशी के काम को चित्रकारी या फ़ोटोग्राफ़ी में प्रस्तुत करने की आज्ञा नहीं है। इसी प्रकार फ़ोटोग्राफ़ी या चित्रकारी को स्थापत्य या नक्काशी की कृतियों के रूप में भी नहीं पेश किया जा सकता। यद्यपि कॉपीराइट के कानून का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है, किन्तु आधुनिक टेक्निकल प्रगति और विशेष रूप से ब्राडकास्टिंग, टेलीविज़न, माइक्रो-फ़िल्म प्रोसेसेज़ और फ़ोटो-लिथोग्राफ़ी ने नई स्थितियाँ पैदा कर दी हैं। खेलों को एक ही समय में सफलतापूर्वक टेलीविज़न से प्रदर्शित करने या रेडियो से उनकी चलतू समीक्षा प्रसारित करने की सम्भावनाओं ने भी नई समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं।

सीमाएँ

यद्यपि कॉपीराइट का उद्देश्य यह होता है कि लेखक को अपनी साहित्यिक, नाटकीय, संगीतात्मक और कलात्मक कृतियों का सम्पूर्ण फल प्राप्त होने का आश्वासन दिया जा सके, किन्तु इसके साथ ही कॉपीराइट का कानून यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार करता है कि यदि लेखक को कॉपीराइट के बहाने अनुसन्धान व पाण्डित्य के समस्त क्षेत्रों व मानव-ज्ञान की परिधि को सीमित करने का अधिकार प्राप्त हो जाता है, तो इससे सामाजिक आदान-प्रदान अवरुद्ध हो जायगा। यही नहीं, पूरे समाज की बौद्धिक प्रगति और भौतिक सम्पन्नता में भी बाधा पड़ेगी। अतएव सार्वजनिक हित को ध्यान में रखते हुए लेखक पर कुछ आवश्यक सीमाएँ लगाना अनिवार्य हो गया। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण सीमा यह है कि निजी अध्ययन खोज-कार्य व आलोचना के लिए किसी कृति का सम्यक् उपयोग करना अथवा दैनिक समाचार-पत्रों की समीक्षा करना कॉपीराइट के नियमों का उल्लंघन करना नहीं कहा जायगा।

अतएव सन्दर्भ, प्रामाणिक व्याख्या या मूल्यांकन के लिए किसी भी कृति से किसी भी सीमा तक अंश उतारे या उद्धृत किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त जब कोई मूर्ति अथवा स्थापत्य अथवा अन्य कलाकृति सार्वजनिक स्थान पर स्थायी रूप से स्थित होती है, तो उसे दुबारा तैयार करने, चित्र बनाने अथवा नक्काशी करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होती। किसी भी स्थापत्य कलाकृति का चित्र बनाने, नक्काशी करने या फ़ोटो लेने की भी पूरी स्वतन्त्रता है। किसी पुस्तक से समुचित अंश सार्वजनिक रूप से पढ़े या गाए जा सकते हैं। विभिन्न लेखकों की कृतियों से उपयुक्त अंश संकलित करके—इस सम्बन्ध में कुछ सीमाएँ निर्धारित हैं—स्कूलों के उपयोग के लिए उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जा सकता है। यदि कोई समाचार-पत्र किसी राजनीति विषयक सार्वजनिक भाषण की रिपोर्ट प्रकाशित करता है, तो इसका यह अर्थ नहीं कि वह कॉपीराइट का उल्लंघन कर रहा है। समाचार पत्रों को किसी भी सार्वजनिक भाषण की रिपोर्ट प्रकाशित करने का अधिकार है, पर शर्त यह है कि भाषण देते समय लिखी या छपी हुई सूचना के द्वारा उसके प्रकाशन पर विशेष रूप से रोक न लगा दी जाय। किसी भी पुस्तक का सारांश या रूप-रेखा भी प्रकाशित की जा सकती है, किन्तु शर्त यह है कि ऐसा करने में उसके उद्धरण-मात्र ही नकल कर दिये जायँ।

किसी कृति को निजी या घरेलू स्थानों पर दुबारा प्रस्तुत करने की मनाही नहीं है, यहाँ तक कि आप उसे देखने के लिए अपने कुछ मित्रों को भी आमन्त्रित कर सकते हैं। यदि आपने किसी कृति को अधिकांश रूप में उद्धृत नहीं किया है तो उस स्थिति में आप कानून का उल्लंघन नहीं करते। इसमें सन्देह नहीं कि यह 'अधिकांश' निर्णय पर आधारित है और प्रत्येक स्थिति में पृथक्-पृथक् होता है। यदि कृति का महत्त्वपूर्ण अंश केवल थोड़े-से प्रयुक्त उद्धरणों में ही सन्निहित है, तो सम्भव है कि उनका प्रयोग-मात्र भी अनुचित और अवैध करार दिया जाय। यदि कॉपीराइट का उल्लंघन भूल से हो जाय, तो वह कानून की दृष्टि में क्षम्य है।

कॉपीराइट का स्वामित्व

कॉपीराइट के स्वामित्व का प्रश्न कभी-कभी कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देता है। सामान्य नियम तो यही है कि किसी कृति का लेखक ही उसके कॉपीराइट का अधिकारी होता है, फिर भी कुछ परिस्थितियों में वह लेखक को नहीं प्राप्त होता। उदाहरण के लिए यदि कोई फ़ोटोग्राफ़र या चित्रकार आपका फ़ोटो या चित्र तैयार करे, तो उनका कॉपीराइट आपका है न कि फ़ोटोग्राफ़र या चित्रकार का; हाँ, शर्त यह है कि आपने उसके लिए उचित कीमत अदा की हो। यदि

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन !

अवधी-कोष

संपादक : श्री रामाज्ञा द्विवेदी

- जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम चरण है।
- इसमें मूल शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनसे बनने वाले संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि तथा विभिन्न ज़िलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिये गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।
- व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोक-गीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और बढ़ गई है।
- कोष नितांत संग्रहणीय है।

रायल अठपेजी आकार :: २९६ पृष्ठ :: ऐंटिक कागज

सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी इच्छा के विरुद्ध या आपकी स्वीकृति के बगैर वे आपका फोटो या चित्र का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन करते हैं, तो आपको उनके खिलाफ कार्यवाही करने का अधिकार है। यह नियम सभी कलात्मक कृतियों के सम्बन्ध में लागू होता है।

यदि आप किसी के यहाँ नौकरी कर रहे हैं और उसी दरम्यान में कोई कृति प्रस्तुत करते हैं, तो उस कृति का कॉपीराइट आपका न होकर आपके मालिक का होगा। दैनिक समाचार-पत्रों या साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्रिकाओं जैसी संग्रहात्मक कृतियों—जिनकी सामग्री विशिष्ट कृतियों से संकलित की जाती है—का दोहरा कॉपीराइट होता है। एक कॉपीराइट सम्पूर्ण कृति का एक संग्रह के रूप में होता है और जो उसके सम्पादक को प्राप्त रहता है; दूसरा कृति में संग्रहीत प्रत्येक रचना से लेखक का अपना व्यक्तिगत होता है। हाँ, यदि कोई लेखक उन समाचार-पत्रों या पत्रिकाओं के मालिक या प्रकाशक से कन्ट्रैक्ट (Contract) कर लेता है, तो उसकी रचना का कॉपीराइट लेखक का न रहकर मालिक या प्रकाशक का हो जाता है। ऐसी

कहानी विशेषांक

जनवरी १९५६

जनवरी १९५५ के विशेषांक की तुलना में

सभी दृष्टियों से बढ़-चढ़कर

प्रकाशन तिथि : १५ अक्तूबर १९५५

मूल्य दो रुपए : पृष्ठ-संख्या ३५०

वार्षिक ग्राहकों को साधारण मूल्य में।

५॥) वार्षिक चन्दा मनीआर्डर से भेजकर

आज ही ग्राहक बनिए।

वी० पी० नहीं भेजी जाती।

सरस्वती प्रेस

५, सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद-१

स्थिति में लेखक को यदि कोई अधिकार रहता है, तो केवल इतना कि वह अपनी रचना को उस पत्र-विशेष के अतिरिक्त अन्य पत्रों में छपने पर प्रतिबन्ध लगाए। जो कृतियाँ सरकार स्वयं तैयार कराती है या अपने निर्देशन व नियन्त्रण में प्रकाशित कराती है, उनका कॉपीराइट सरकार को ही प्राप्त होता है। वहाँ यह प्रश्न उठाना बिलकुल व्यर्थ है कि लेखक कन्ट्रैक्ट के अन्तर्गत सरकारी नौकरी में था।

कॉपीराइट की अवधि क्या होनी चाहिए, किसी समय यह एक विवाद का विषय था। कुछ लोगों की राय थी कि कॉपीराइट भी सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकार के समान ही स्थायी होना चाहिए, जबकि दूसरे लोग उसे केवल अल्पकाल के लिए रखने के समर्थक थे। अब यद्यपि यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया गया है कि कॉपीराइट का अधिकारी काफी लम्बे अरसे तक संरक्षण का उपभोग करेगा, किन्तु फिर भी उसकी अवधि के सम्बन्ध में दो विभिन्न रीतियाँ प्रचलित हैं। अमरीकी पद्धति के अनुसार कॉपीराइट का अस्तित्व एक निश्चित समय के लिए रहता है, जबकि यूरोपीय प्रणाली के अन्तर्गत वह लेखक के जीवन-काल और उसकी मृत्यु के ५० वर्ष उपरान्त तक बना रहता है। हमारे यहाँ भी यही पद्धति प्रचलित है। उक्त यूरोपीय पद्धति इस सिद्धान्त पर स्पष्ट रूप से आधारित है कि लेखक मृत्यु-पर्यंत कॉपीराइट का उपभोग करे, किन्तु यदि दैवयोग से कृति प्रकाशित होते ही उसकी मृत्यु हो जाय, तो उस स्थिति में कॉपीराइट कुछ और समय तक बना रहना चाहिए। हाँ, कुछ विशेष परिस्थितियों में उसके लिए अल्पकालीन अवधि भी निर्धारित की गई है। उदाहरण के लिए सरकारी प्रकाशन, यान्त्रिक विधियों (Mechanical Contrivances) और फोटोग्राफ्स को केवल ५० वर्ष के लिए संरक्षण प्रदान किया जाता है।

कॉपीराइट के उल्लंघन को ज्ञात करने की कठिनाइयाँ

कॉपीराइट का उल्लंघन हुआ है, यह पता लगाना प्रायः कठिन होता है; किन्तु कभी-कभी अपराधी पर जुर्म साबित करना तो और भी कठिन होता है। उदाहरण के लिए नाटकीय या संगीतात्मक कृतियाँ ऐसी ही कठिनाइयाँ उत्पन्न करती हैं। यदि उन्हें देश के एक कोने में प्रस्तुत किया जाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तो दूसरे कोने में रहने वाले कॉपीराइट के मालिक को उसकी खबर भी नहीं लगती और यदि खबर मिल भी जाय, तो उसके लिए अपना अधिकार सिद्ध करना आसान काम नहीं होता। सामूहिक संस्थाओं के द्वारा यह समस्या कुछ हद तक हल की जा रही है, जिनका एकमात्र कर्तव्य यह है कि वे अपने सदस्यों और संरक्षकों के अधिकारों को चालू रखें और जब उनकी कृतियों का सार्वजनिक प्रदर्शन किया जाय, तो उनका शुल्क और रायल्टी जमा करें। फिर भी इस बात की आवश्यकता है कि कोई ऐसी विधि निकाली जाय, जिससे कॉपीराइट का उल्लंघन करने वाले के विरुद्ध अविलम्ब रूप से संक्षिप्त कार्यवाही की जा सके।

यदि कॉपीराइट का संरक्षण देश की सीमाओं तक ही सीमित है, तो उससे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती, क्योंकि सम्भव है कि विदेश में आपकी कृति से कोई कुछ चुरा ले, तो आपको उन सुविधाओं से वंचित होना पड़ेगा, जो हमारे देश के कानून द्वारा उपलब्ध होती हैं। अतएव विभिन्न देशों में पारस्परिक सन्धि और समझौतों के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट सम्बन्ध स्थापित किये जाते हैं, जिसके फलस्वरूप एक राष्ट्र दूसरे सदस्य राष्ट्रों के कॉपीराइट को सम्मान की दृष्टि से देखता है। सबसे प्राचीन बहुमुखी समझौता बर्न कन्वेंशन (Berne Convention) था, जिस पर लगभग ६० वर्ष पूर्व हस्ताक्षर किये गए थे। इसे लगभग ४० देशों ने स्वीकार कर लिया है। हाँ, अमरीका के अनेक राज्य इस कन्वेंशन से बाहर ही रहे, क्योंकि उनकी कॉपीराइट पद्धति अनेक बातों में दूसरे देशों से भिन्न है। किन्तु उन्होंने दूसरी पद्धति अपना ली है। जब तक दोनों प्रणालियों में समन्वय नहीं हो जाता, अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट की स्थिति सन्तोषजनक नहीं होगी। यह अत्यन्त सन्तोष का विषय है कि हाल में एक अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट समझौता हुआ है, जो दोनों वर्गों के बीच की खाई को कम करने में प्रयत्नशील है।

किसी अन्य प्रकार की सम्पत्ति के समान ही कॉपीराइट भी परिवर्तनशील और पैतृक है। वह विभाजित भी हो सकता है और उसका स्वामी उसे सम्पूर्ण या आंशिक रूप में किसी दूसरे को सौंप सकता है। कॉपीराइट के स्वामी की मृत्यु हो जाने के उपरान्त उसका वास्तविक उत्तराधिकारी उक्त अधिकार प्राप्त करता है। कॉपीराइट के कानून की यह एक बड़ी कमजोरी है और इसीलिए कभी-कभी यह कहा जाता है कि इससे एकाधिकार का उदय होता है और सहज रूप से ज्ञान-प्रसार होने में भी बाधा पड़ती है। किन्तु यह धारणा गलत है कि कॉपीराइट से ज्ञान का एकाधिकार स्थापित होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है कि वह किसी कृति में सन्निहित सूचनाओं का अधिकतम उपयोग करे। कॉपीराइट हमारे बौद्धिक व्यक्तित्व को संरक्षण प्रदान करता है। यदि हाथ या यन्त्रों से तैयार की गई भौतिक वस्तुएँ संरक्षणीय हैं, तो क्या यह न्यायसंगत है कि आपके बौद्धिक श्रम के प्रतिफल—'किसी महती आत्मा का अमूल्य जीवन-तत्त्व'—को वैसा ही संरक्षण प्रदान न किया जाय? यदि कॉपीराइट हटा लिया जाय, तो कृतियों की नकलबाजी और चोरी का बोलबाला हो जायगा और मौलिक लेखकों का प्रेरणा-स्रोत सूख जाने की आशंका उत्पन्न हो जायगी। इसका फल यह होगा कि कला और साहित्य की समृद्धि असम्भव हो जायगी, क्योंकि ऐसे विरले ही निस्वार्थी हैं, 'जो प्रशंसा अथवा धन के मोह को छोड़कर किसी महान् कार्य को सम्पादित करने में तत्पर रहते हैं।'

सुन्दर भाषा, शिष्ट हास्य और राजनीतिक-सामाजिक कुरीतियों पर तीखे व्यंग्य-प्रहार

हिन्दी हास्य-जगत् का प्रथम कोटि का सर्वप्रथम हास्य-संग्रह

महिला-शासन

लेखक :

चिरंजीलाल पाराशर

भूमिका लेखक :

महावीर अधिकारी

२१ कहानियाँ, मूल्य २) मात्र

मुख्य वितरक—

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

इलाहाबाद के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक साधना-केन्द्र 'अरुण शलभ' के साहित्य-मंत्री श्री ज्ञानरंजन सूचित करते हैं कि उनकी संस्था के पास निम्नलिखित पुस्तकों की पांडुलिपियाँ तैयार हैं। ऐसे प्रकाशकों से, जो तरुण साहित्यकारों को प्रोत्साहन देना चाहें, प्रार्थना है कि संस्था के कार्यालय ७७, लूकरगंज, इलाहाबाद, के पते से सम्पर्क स्थापित करें : (१) **साधना**, श्री अवधकिशोर सिंह की कविताओं का संग्रह, भूमिका लेखक श्री रामनाथ 'सुमन', पृष्ठ लगभग ४०; (२) **हमारी कथा**, श्री अवध बिहारी लाल श्रीवास्तव और श्री राजेन्द्र शर्मा की कहानियों का संग्रह, पृष्ठ लगभग १२५; (३) **निबन्धिनी**, श्री हरिशंकर उपाध्याय और श्री ज्ञानरंजन के समालोचनात्मक और सांस्कृतिक निबन्धों का संग्रह, पृष्ठ लगभग १००; (४) **हिन्दी लोकगीत**, श्री मदनमोहन सिन्हा मनुज द्वारा सम्पादित, भूमिका-लेखक डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, पृष्ठ लगभग ५६।

◈ ◈ ◈

श्री शिवनन्दन झा 'अश्क', मन्त्री छात्र हितकारी पुस्तकालय, बुधाया, पो० रवाड़ा—बुधाया, जि० सहर्षा (बिहार) के पास निम्नलिखित पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें : (१) **धर्मावतार**, महात्मा विदुर के जीवन पर लिखा गया खण्ड-काव्य, पृष्ठ लगभग ६४; (२) **सारंग**, कटु-मधुर कविताओं का संग्रह, पृष्ठ ६०; (३) **मशाल**, युगान्तकारी कविताओं का संग्रह, पृष्ठ ६०; (४) **चन्दन की चिता**, यथार्थवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा गया कहानी-संग्रह, पृष्ठ ८०; (५) **अष्टदल**, निबन्ध संग्रह, पृष्ठ ६०; (६) **जीवन-वीणा**, शब्द चित्र, पृष्ठ ५२; (७) सहर्षा की लोक-कथाएँ; (८) कोशी अंचल की लोक-कथाएँ।

◈ ◈ ◈

श्री सन्तोषकुमार 'निर्मम' (हरिजन निवास, किंग्सवे, दिल्ली ९) के पास अर्चना, शीर्षक से एक काव्य-सं[illegible] तैयार है। इसमें लगभग ३० कविताएँ हैं। [illegible] प्रकाशक छापना चाहें तो पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

महादेव आजाद, श्याम भवन, ८४-एफ कमला नगर दिल्ली, सूचित करते हैं कि उनके पास चीन के कथा[illegible] फेंगफेह-फेंग की कथाओं का संग्रह तैयार है। अनुवाद [illegible] नूर नबी अब्बासी ने किया है। संग्रह में ५४ कथाएँ हैं [illegible] अभी तक प्रकाशित नहीं हुईं। कथाएँ नीतिपूर्ण, उत्सा[illegible] बढ़ाने वाली और शिक्षापूर्ण हैं। पृष्ठ-संख्या छपकर लगभ[illegible] १०० के होगी। अनुवाद कराने का श्रम नाममात्र है। [illegible] प्रकाशक इसे प्रकाशित करना चाहें ऊपर के पते से प[illegible] व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री मिश्रीतमल जैन तरंगित, एम० ए०, एल०-एल० बी०, ७४३, सरदारपुरा, बखत सागर तट, जोधपुर लि[illegible] हैं कि इस समय उनके पास शिष्ट हास्य-व्यंग्यपूर्ण [illegible] पाण्डुलिपियाँ (२ निबन्ध संग्रह, १ एकांकी, १ प्रश्नो[illegible] १ चुटकुले) पृष्ठसंख्या १०० से १४० तक, तथा एक स्कूलो[illegible] योगी पुस्तक 'शुद्ध हिन्दी' प्रकाशनार्थ तैयार हैं। प्रका[illegible] के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री कृष्णगोपाल वर्मा 'विकल', साधना मन्दिर, [illegible] १।४२-४३, लाजपत नगर, नई दिल्ली-१४ सूचित क[illegible] हैं कि उनके पास इस समय 'विभावरी' (कविता-संग्र[illegible] कुंकुम' (गीत संकलन), 'हिन्दी सीखने के मूलमन्त्र' ([illegible] शिक्षा) और एक परीक्षोपयोगी निबन्धमाला की पाण्डुलि[illegible] प्रकाशनार्थ तैयार हैं। प्रकाशक इनके लिए पत्र-व्यव[illegible] करें।

◈ ◈ ◈

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २॥)

मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिनियम १९५४, क्रमांक २७ (१९५४)

पुस्तकों का प्रदान (सार्वजनिक पुस्तकालय)

देश के राष्ट्रीय पुस्तकालयों को प्रत्येक प्रकाशित पुस्तक की एक-एक प्रति आवश्यक रूप से पहुँचाना इस कानून द्वारा अनिवार्य है।

...राष्ट्रीय पुस्तकालय और अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों में ...पुस्तकें भेजने के लिए एक अधिनियम की व्यवस्था की गई ...है, जो भारतीय गणतन्त्र के पाँचवें वर्ष में लागू किया जायगा। ...वह इस प्रकार है—

...—लघु शीर्षक और विस्तार—

(क) इस अधिनियम को डिलीविरी ऑफ़ बुक्स (पब्लिक लाइब्रेरीज़) एक्ट (१९५४) कहा जायगा।

(ख) यह जम्मू और काश्मीर के अतिरिक्त समस्त भारत में लागू होगा।

...—परिभाषाएँ—यदि अन्य कोई सन्दर्भ नहीं आ जाता, तो इस एक्ट में—

(क) 'पुस्तक' के अन्तर्गत सभी भाषाओं के ग्रन्थ या पैम्फलेटस् की प्रत्येक जिल्द, भाग या अंश और संगीत, भू-चित्र, तालिका या योजना का छपा या लिथोग्राफ़ किया हुआ प्रत्येक पृष्ठ आ जाता है, किन्तु इसके अन्तर्गत १८६७ के प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट (१८६७ की २५वीं क्रमसंख्या) की धारा ५ के अनुसार प्रकाशित समाचार-पत्र नहीं लिये जायँगे।

(ख) 'सार्वजनिक' पुस्तकालयों का अर्थ है, कलकत्ता का राष्ट्रीय पुस्तकालय और अन्य तीन पुस्तकालय, जिन का निर्देश केन्द्र-सरकार सरकारी गजट की सूचना द्वारा करेगी।

...—सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों का विवरण—

(१) इसमें उन सभी नियमों का पालन करना पड़ेगा, जो इस एक्ट के अन्तर्गत बनाए जायँगे, किन्तु १८६७ के प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ़ बुक्स एक्ट (१८६७ की २५वीं क्रमसंख्या) की किसी भी धारा का विरोध नहीं किया जायगा। एक्ट के लागू हो जाने पर उन सभी राज्यों के प्रकाशकों को—जो एक्ट के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं—पुस्तक प्रकाशित होने की तारीख से ३० दिन के भीतर उसकी एक प्रति अपने व्यय से राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता को भेजनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त उसकी एक-एक प्रति अन्य तीन सार्वजनिक पुस्तकालयों को भी भेजनी पड़ेगी।

(२) जो प्रति राष्ट्रीय-पुस्तकालय में भेजी जायगी, वह सम्पूर्ण होगी और उसमें सभी नक़्शे व चित्र होंगे। उस प्रति की रंगाई पुस्तक की सर्वोत्कृष्ट प्रति के समान ही होगी। इसके अतिरिक्त वह ठीक प्रकार से सिली हुई और सजिल्द होगी। उसका कागज भी उस पुस्तक की किसी भी प्रति के सबसे अच्छे कागज के समान होगा।

(३) जो प्रति सार्वजनिक पुस्तकालय को भेजी जायगी, वह उसी कागज पर होगी, जिस पर उस पुस्तक की अधिकांश प्रतियाँ बिक्री के लिए छपाई गई हैं, और सब प्रकार से भी वह उन्हीं बिक्री के लिए छपाई गई पुस्तकों के समान ही होगी।

(४) उपधारा (१) में जो व्यवस्था रखी गई है, वह किसी पुस्तक के दूसरे या उससे बाद के संस्करण पर नहीं लागू होगी। पर शर्त यह है कि संस्करण के लेटर-प्रेस, नक़्शों, बुक-प्रिन्ट्स् या पुस्तक से सम्बन्धित अन्य किसी प्रकार की नक्काशी में न कुछ जोड़ा गया हो और न कोई परिवर्तन किया गया हो और इस पुस्तक का पहला या बाद का कोई संस्करण एक्ट के अन्तर्गत भेजा जा चुका हो।

४—भेजी गई पुस्तकों की प्राप्ति-स्वीकार—

सार्वजनिक पुस्तकालय का अध्यक्ष (उसका पद चाहे

[आगे पृष्ठ ५७६ पर देखें]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

बोर्ड ऑफ़ सेकण्डरी एजुकेशन, मध्य प्रदेश, नागपुर, के विचारार्थ पुस्तकें भेजने की अन्तिम तारीख ३१ अगस्त, १९५५ कर दी गई है। पुस्तकें वही प्रकाशक भेज सकते हैं जो ५०) की फ़ीस भर के बोर्ड के सेक्रेटरी के पास अपना नाम इस तारीख से पहले रजिस्टर करा चुके हों। नाम रजिस्टर हो जाने के बाद बोर्ड प्रकाशकों के पास विभिन्न विषयों की पाठ्यक्रम निर्धारिणी समितियों की नामावली भेज देगा। प्रत्येक सदस्य को विचारार्थ प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तक की एक-एक प्रति तथा बोर्ड के सेक्रेटरी को अलग से एक प्रति भेजनी आवश्यक है।

◆ ◆ ◆

पंजाब यूनिवर्सिटी को इंटर तथा बी० ए० की परीक्षाओं के लिए पुस्तकें भेजने की अन्तिम तारीख १५ सितम्बर है। रत्न, भूषण तथा प्रभाकर की परीक्षाओं के लिए पुस्तकें १५ अक्तूबर तक भेजी जा सकती हैं। वही प्रकाशक पुस्तकें भेज सकते हैं जो २५) की वार्षिक फ़ीस देकर अपना नाम रजिस्ट्रार, पंजाब यूनिवर्सिटी, सोलन, जि० शिमला, के पास रजिस्टर करवा चुके हों।

◆ ◆ ◆

नव-साहित्य प्रकाशन (२०३ ए, महर्षि देवेन्द्र रोड, कलकत्ता—६) के व्यवस्थापक लिखते हैं कि उन्हें हिन्दी के मौलिक उपन्यासों और काव्य-ग्रन्थों की आवश्यकता है। अच्छी रायल्टी पर पुस्तकें ली जायँगी, परन्तु सोद्देश्य एवं प्रगतिशील हों। अपनी शर्तों का उल्लेख करते हुए लेखक पत्र-व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

मदन-कुटीर, सुभाष मार्ग, लखनऊ से सिद्धान्त नाम के पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ है जिसमें साहित्य, कला और संस्कृति पर प्राचीन-नवीन विद्वानों के समन्वयपूर्ण गवेषणात्मक निबन्ध निकलते हैं। पत्र का वार्षिक मूल्य ४) मात्र है।

●

[पृष्ठ ५७५ से आगे]

लाइब्रेरियन का हो या अन्य कोई हो) या उसकी ओर से नियुक्त अन्य कोई कर्मचारी धारा ३ के अन्तर्गत प्रकाशकों द्वारा भेजी गई पुस्तकों की लिखित र[illegible] देगा।

४—**अर्थ-दण्ड**—यदि कोई प्रकाशक इस एक्ट या उ[illegible] अन्तर्गत अन्य नियम की किसी धारा का उल्लंघन क[illegible] है, तो उससे पुस्तक की क़ीमत और ५० रुपये त[illegible] रक़म अर्थ-दण्ड के रूप में वसूल की जायगी और [illegible] न्यायालय उस अपराध का निर्णय करेगा, व जुर्माने [illegible] पूरी या आंशिक रकम मुआवजे के तौर पर उस [illegible] जनिक पुस्तकालय को दे सकता है, जिसे पुस्तक [illegible] जानी चाहिए थी।

६—**अपराध-निर्णय**—

(१) कोई भी न्यायालय इस एक्ट के अन्तर्गत किसी [illegible] राध पर केवल उस स्थिति में विचार करेगा, जब [illegible] सरकार की किसी सामान्य या विशिष्ट आज्ञा [illegible] नियुक्त अधिकारी उस अपराध की शिकायत करता [illegible]

(२) प्रेसीडेन्सी या प्रथम श्रेणी से निम्न स्तर का [illegible] भी न्यायाधीश इस एक्ट के अन्तर्गत दण्डनीय [illegible] अपराध पर विचार नहीं कर सकता।

७—**सरकारी प्रकाशनों पर एक्ट लागू होने की दशा**—यह एक्ट उन पुस्तकों पर भी लागू होगा, जो या तो [illegible] कार स्वयं प्रकाशित करती है या अपने निरीक्ष[illegible] प्रकाशित करवाती है। किन्तु इसके अन्तर्गत वे [illegible] नहीं आएँगी, जो केवल सरकारी कार्य के लिए [illegible] शित की जाती हैं।

८—**नियम बनाने का अधिकार**—

सरकार इस एक्ट के उद्देश्य को पूरा करने के [illegible] सरकारी ग़ज़ट में विज्ञप्ति निकालकर नियम बना [illegible] है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री ज्योतिप्रकाश-साहित्य

१--दिल की गहराई से; दो भाग—मानव-जीवन पर महान् कथा-साहित्य, जो भावात्मक विचारों का गहरा सागर है। हिन्दी में पहले-पहल अपने ढंग की अनूठी चीज। मूल्य प्रत्येक का १॥)

२—धूप और छाया—निराली शैली में श्री ज्योतिप्रकाश की बेजोड़ कहानियाँ। मूल्य १।।=)

३—सीधा रास्ता—किशोर साहित्य का अमर उपन्यास। मूल्य १।=)

इन पर हिन्दुस्तान के माने हुए विद्वानों की सम्मतियों के कुछ अंश

● 'धूप और छाया' और 'दिल की गहराई से' मैं बड़ी रुचि से पढ़ गया। पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। आपकी लेखन-शैली से मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ हूँ। आपकी पुस्तकों में बहुत-कुछ सामाजिक और नैतिक प्रश्नों पर आकर्षक रूप से प्रकाश डालता है। —डॉ० अमरनाथ झा

● 'दिल की गहराई से' में गहराई है, 'धूप और छाया' में सुखद शीत और आतप मिलता है, सीधा रास्ता रोचक और सरल है। आपकी लेखनी प्रौढ़ और कोमल है। —महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

● आपकी कहानियाँ मुझे अच्छी लगी हैं। मेरी हार्दिक शुभ-कामना। —डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी डी० लिट्०

● 'दिल की गहराई से' से निकली हुई चीज दिल की गहराई तक पहुँच जाती है। आपकी गहरी अनुभूति से हिन्दी को अनूठी चीजें मिल रही हैं। देखता हूँ कि आपकी पकड़ में लोकहित का सूत्र आ गया है; आपको अघट भण्डार ही हाथ लग गया। —श्री शिवपूजन सहाय

● आपकी कृतियाँ पढ़कर मुझे रस की अनुभूति हुई। श्री ज्योतिप्रकाश लेखनी के धनी हैं, उनकी भाषा में माधुर्य है और उनकी अनुभूति गम्भीर है। —मंगलाप्रसाद पारितोषिक विजेता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, डी० लिट्०

● कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में आपकी प्रगति नवीन और मौलिक है। आपकी प्रतिभा-प्रकाश से हिन्दी का कथा-साहित्य ज्योतिर्मय होगा। —सभापति, बिहार साहित्य सम्मेलन

● कहानियों में प्रसंगों, भावों, रंगों और समस्याओं की विविधता है। भाषा चुटीली और प्रवाहमयी है। मेरी बधाई। —महान् उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा

● लेखक का एक-एक चरित्र केवल हमारे घर का ही मनुष्य नहीं, मन का भी मनुष्य है। श्री ज्योतिप्रकाश द्वारा सृष्ट चरित्र संवेदनाओं की फल्गुधारा में बहता है। कृति का साहित्यिक संसार में निःसन्देह समादर होगा। —महान् आलोचक प्रोफेसर श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र

● आपकी कृतियों में नई जमीन फोड़ने की प्रवृत्ति है और यही कहानी में सब कुछ है। इस दृष्टि से वे सभी महत्वपूर्ण हैं। —प्रौढ़ विचारक श्री मन्मथनाथ गुप्त

● आपने बिलकुल नई दिशा में कदम उठाया है। आपकी शैली सुन्दर, ढंग रोचक, भाषा मँजी हुई और कथानक सुगठित है। आप हमारी बधाई स्वीकार करें। —प्रिंसिपल मनोरंजन

● एक-एक कहानी का चित्रण ऐसे ढंग से किया गया है कि पाठक उसके बीच खो-सा जाता है। एक बार पुस्तक उठाने पर फिर बिना समाप्त किये जी नहीं मानता। —आर्यावर्त

● साहित्य के आँगन में यह अनमोल योगदान है। —नव शक्ति

इनके अलावा दर्जनों विद्वानों की सम्मतियाँ आई हुई हैं जो स्थानाभाव के कारण नहीं दी जा रहीं। मोनो की छपाई, अत्यन्त आकर्षक गेट-अप। पहला संस्करण समाप्तप्राय है।

प्रकाशक—कान्तिप्रभा प्रकाशन, डालटनगंज, बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'नैशनल लाइब्रेरी', बेलवडियर, कलकत्ता का परिचय

हमारा राष्ट्रीय पुस्तकालय

श्री कृष्णाचार्य एम० ए०, डी० एल० एस-सी०

मान्य लेखक 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' के हिन्दी-विभाग के प्रमुख कार्यकर्ता हैं, और कुछ काल पहले हिन्दी संग्रहालय (हिन्दी साहित्य सम्मेलन) के पुस्तकाध्यक्ष थे।

हमारी 'नैशनल लाइब्रेरी' कलकत्ता के एक ऐतिहासिक सार्वजनिक पुस्तकालय का विकसित रूप है। 'इंगलिश मैन' के सम्पादक श्री जे० एच० स्टाकेलर ने १८३५ में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की आवश्यकता के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की। तदनुसार १८३५ सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जॉन पेटर ग्राण्ट की अध्यक्षता में एक सभा टाउन हाल में बुलाई गई। सभा ने पुस्तकालय-निर्माण के सम्बन्ध में चौबीस सदस्यों की समिति बनाई। स्वभावतः इस समिति के मन्त्री श्री स्टाकेलर चुने गए और उक्त समिति में हिन्दू कालिज के मन्त्री श्री रसमय दत्त और रसिककृष्ण मित्र ये दो भारतीय सदस्य भी रख लिये गए। अब रुपया सम्बन्धी व्यवस्था का प्रश्न सामने आया। मार्च १८३६ तक केवल १६३६ पुस्तकें और तीन हजार रुपया इकट्ठा हो सका। सामान्य सदस्यों के अतिरिक्त 'प्रोप्राइटर' बनाने के लिए ३००) रु० का आकर्षण रखा गया। प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर ने ५००) रु० दिये तथा अन्य प्रोप्राइटरों में श्री ग्रांट और डॉ० स्ट्रांग प्रमुख थे।

८ मार्च, १८३६ ई० के दिन उपर्युक्त सीमित साधनों को लेकर 'कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी' की स्थापना हुई। पुस्तकों की सीमित संख्या से असन्तोष बना ही रहा कि कुछ दूरदर्शी सदस्यों को फोर्ट विलियम कालिज की बन्द पड़ी हुई पुस्तकें इस नये पुस्तकालय में लाने की सूझी। तत्काल एक डेपूटेशन बना, गवर्नर जनरल तक पहुँच हुई और ४६७५ पुस्तकें प्राप्त हो गईं। उस समय भले ही संख्या बढ़ाने या अन्य किसी प्रेरणा से इन पुस्तकों को प्राप्त किया गया, किन्तु इस संग्रह में ऐसी अनेक पुस्तकें थीं जो आज अन्यत्र दुर्लभ हैं। पुस्तकालय को इसी प्रारम्भिक अवस्था में प्यारा चाँद मित्र जैसे व्यक्ति मिल गए जिन्हें आजीवन अपनी सेवाएँ किसी-न-किसी रूप में पुस्तकालय को देनी पड़ीं। श्री मित्र महाशय (१८१४—१८८३) बंगला उपन्यास के जनक थे। पहले वह १८३६ में उप-पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त हुए और १८४८ में पुस्तकाध्यक्ष बनाये गए। १८ में त्यागपत्र देने पर भी अवैतनिक पुस्तकाध्यक्ष तथा म बनाये गए। पुस्तकालय में क्यूरेटरशिप का सम्माननीय सर्वोच्च समझा जाता था—इस सम्मान से भी इन्हें विभू किया गया। १८७३ में पुस्तकालय के लिए बनी नई कौं के सदस्य भी आप अन्त तक बने रहे। मित्र महोदय हि कालिज के स्नातक थे। इनके सम्मान में निर्मित तैल आज भी नैशनल लाइब्रेरी में हैं।

म्युनिसिपल बोर्ड का संरक्षण

पुस्तकालय का महत्त्व, उसकी उपयोगिता, किसी-न-कि रूप में बढ़ती ही गई। किन्तु आर्थिक संकट, और उचित के अभाव ने इसका साथ १८६० तक न छोड़ा। कई व्यवस्थाएँ बदलीं, नियमों में उलट-फेर हुआ, किन्तु का कोई मार्ग न दीख पड़ा। नगरपालिका के कर्णधार पुस्तकालय को उपयोगी समझकर १५ जनवरी, १८ सम्पूर्ण आर्थिक जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। व्यवस्था लिए आधे सदस्य नगरपालिका के और आधे पुराने में से लेकर एक समिति बना दी गई। इस नई व्यवस्था शासक-वर्ग के हाथ में पुस्तकालय का प्रभुत्व नहीं रह किन्तु पुस्तकालय की आवश्यकता तो पड़ती ही थी। १८६१ में शासन-विभाग के कई पुस्तकालयों की एकत्रित कर 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' की स्थापना हुई। ईस्ट इण्डिया कालिज, ईस्ट इण्डिया बोर्ड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...कर्स, माल-विभाग और कृषि-विभाग के पुस्तकालयों को मिलाकर ही इम्पीरियल लाइब्रेरी का निर्माण हुआ था। यह कौन जानता था कि इन सरकारी विभागों की पुस्तकों का यह संयोग भारत में एक अद्वितीय पुस्तकालय की स्थापना की भूमिका-मात्र थी। सन् १८६७ के प्रेस एक्ट के अनुसार भी पुस्तकें इकट्ठी हो गई थीं। उन्नीसवीं शती के ही इस अन्तिम दशक में पुस्तकालय के इतिहास में एक और महत्त्वपूर्ण मोड़ आया; वह मोड़ था सन् १८६६ में लार्ड कर्जन का कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी में पदार्पण। उसने इम्पीरियल लाइब्रेरी को भी देखा। वाइसरायों की परम्परा में शिक्षा, पुरातत्त्व और भारत की सांस्कृतिक संस्थाओं को पुनरुज्जीवित करने की दृष्टि से कर्जन का स्थान बहुत ऊँचा है। कर्जन ने दोनों पुस्तकालयों को इम्पीरियल लाइब्रेरी में मिला देने का प्रस्ताव रखा। फिर क्या था, १६०२ में इम्पीरियल लाइब्रेरी एक्ट स्वीकृत हुआ और ३० जनवरी १६०३ के दिन यह पुस्तकालय बड़े धूम-धाम से शासन के प्रधान पुस्तकालय के रूप में खोल दिया गया। कर्जन की कल्पना थी कि इस पुस्तकालय को 'निर्देशन-पुस्तकालय' (Reference Library), आगे के विद्यार्थियों और इतिहासकारों के लिए आवश्यक सामग्री का ऐसा भण्डार बनाया जाय जिसमें भारत के सम्बन्ध में किसी भी समय लिखा गया साहित्य उपलब्ध हो सके।

इम्पीरियल लाइब्रेरी

नई व्यवस्था के उत्साह में ब्रिटिश म्यूजियम के सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री जॉन मैकफरलेन (Macfarlane) को इम्पीरियल लाइब्रेरी का पुस्तकाध्यक्ष बनाया गया। मैकफरलेन ने अपनी योग्यता से पुस्तकालय को नया जीवन दिया। नये सिरे से पुस्तकों की व्यवस्था के लिए सूची बनाने के नियम,

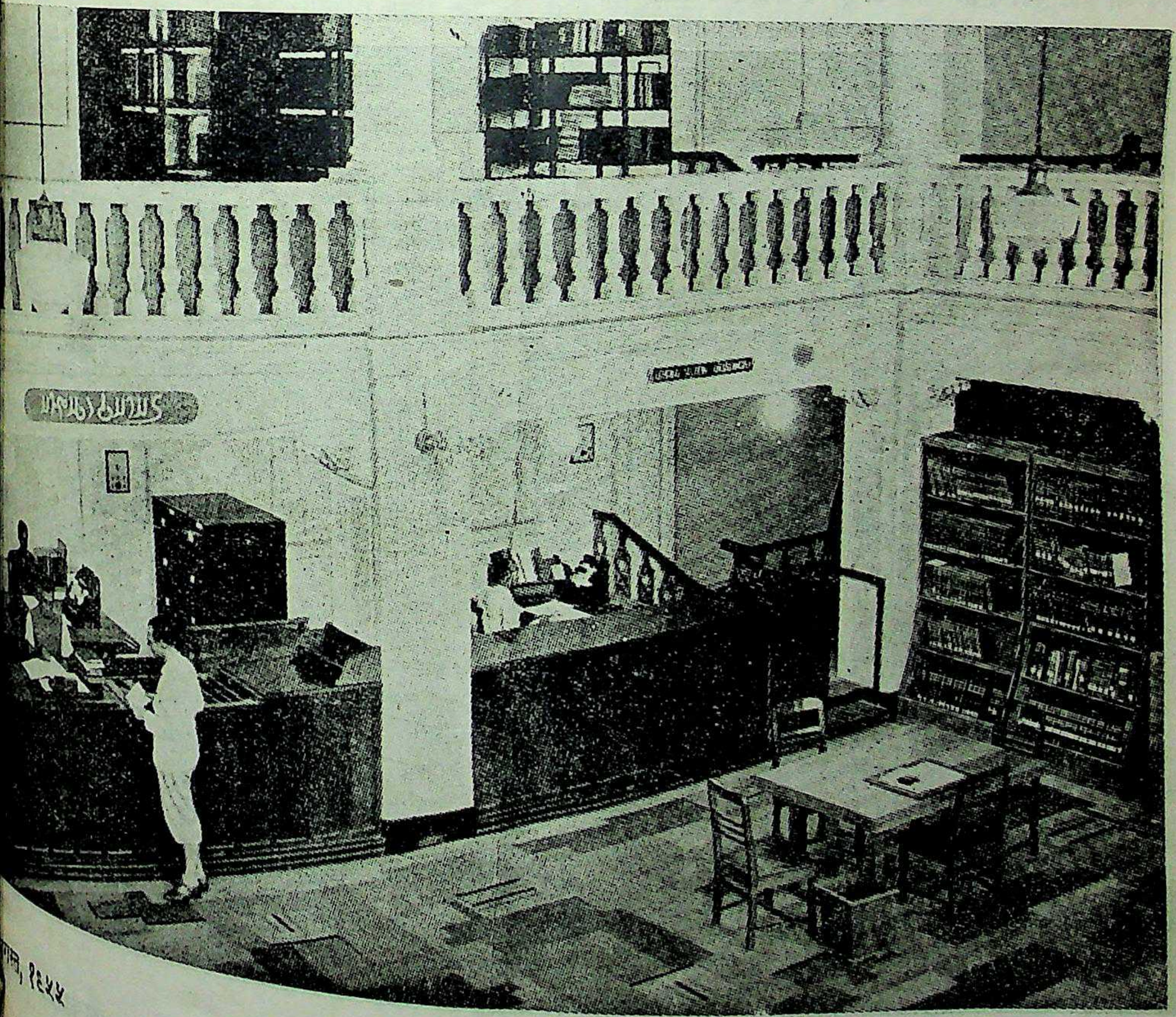

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्गीकरण पद्धति आदि का निर्माण किया। नैशनल लाइब्रेरी के निर्माण से प्रथम वही टेक्नीकल व्यवस्था चली आती थी और उनकी व्यवस्था की छाप आज के एकदम परिवर्तित रूप में भी देखी जा सकती है। प्रामाणिक रूप से सूची बनाने, पुस्तकालयों में आपस के आदान-प्रदान, विदेशों से प्रामाणिक ग्रन्थ क्रय करना आदि का काम श्री मैकफरलेन ने बड़ी तत्परता से किया। सन् १६०४ में दरभंगा जिले के विद्या-प्रेमी सैयद सदरुद्दीन अहमद ने अपने संग्रह की १५०० मुद्रित तथा ८५० हस्तलिखित अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की पुस्तकें इम्पीरियल लाइब्रेरी को दे दीं। इसी समय के लगभग डॉ० थिबोल्ट के हस्तलिखित ग्रन्थ भी पुस्तकालय ने खरीद लिये।

पुस्तकालय भवनों के परिवर्तन

कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी के रूप में सर्वप्रथम पुस्तकालय श्री ग्रांट पुनः एफ० बी० टान्ड्रा के मकान में रखा गया। सन् १८४१ में फोर्ट विलियम कालिज के एक हिस्से में पुस्तकालय को यात्रा करनी पड़ी। सन् १८४० में पुस्तकालय के लिए जमीन मिली। यहाँ श्री ग्रांट का स्मरण करना आवश्यक है। आपने बिना किसी शर्त के ५०००) भवन-निर्माण-कार्य में दे दिया। बाद में ४०००) रु० तो ग्रांट साहब को दे दिया गया, शेष रुपया उन्होंने पुस्तकालय को दिया। ग्रांट साहब ने ही पुस्तकालय भवन 'मैटकाफ भवन' का शिलान्यास किया। श्री मैटकाफ महोदय की कथा यह है कि इन महाशय ने ही प्रसिद्ध बदनाम प्रेस एक्ट को रद्द किया जिससे जनता ने तो उनके नाम से भवन बनाया और कम्पनी सरकार ने उन्हें गवर्नर जनरल, जैसी की उम्मीद थी, नहीं बनाया। धीरे-धीरे यह मैटकाफ हाउस भी पुस्तकालय के प्रतिदिन के बढ़ते हुए कलेवर ने अपर्याप्त कर दिया। १६२३ में पुस्तकालय एस्प्लेनेड लाया गया। सन् १६... की रिपोर्ट कमेटी के निश्चयों से ज्ञात होता है कि पुस्तकालय

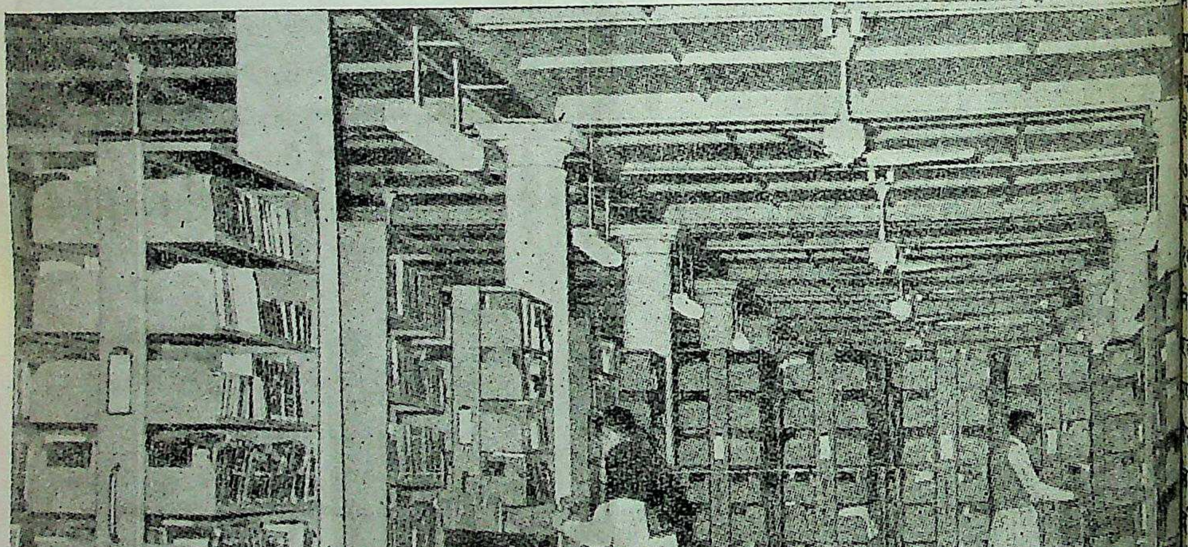

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…ो कलकत्ता से बाहर ले जाने की चेष्टा की गई थी। किन्तु …नेक सुझावों के साथ कमेटी ने पुस्तकालय को कलकत्ता में …ी रखने की सिफारिश की। युद्ध के समय सन् १९४१-४२ …में सुरक्षा की दृष्टि से पुस्तकालय को 'जवाकुसुम हाउस' में …ाया गया, तथा सन् १९४८ में पुस्तकालय को पुनः एस्प्ले-…नेड लाते-लाते भवन-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण और अन्तिम …ऐतिहासिक निर्णय हुआ।

बेल्वेडियर भवन

अलीपुर क्षेत्र में स्थित बेल्वेडियर भवन का भव्य और …विशाल भवन, उसके चारों ओर कई एकड़ तृण-गुल्माच्छा-…दित रमणीय वातावरण से परिपूर्ण जगह लगभग दो सौ …वर्ष का पुराना ऐतिहासिक स्थान है। मुर्शिदाबाद के नवाब …मीर जफर अली खाँ के नाम से इस स्थान का कुछ नाता …बताया जाता है और लार्ड क्लाइव ने भी शाह आलम की …जागीरी सनद को लेकर कुछ इधर की व्यवस्था कराई थी। …महाशय हण्टर ने भी कुछ संदिग्ध रूप से इस मनोरम और …शान्त उद्यानमय भवन का सम्बन्ध वारेन हेस्टिंग्स से जोड़ा …था। २५ फरवरी, १८०२ के कलकत्ता गजट से पता लगा …है कि कर्नल टाली की विधवा पत्नी ने इस स्थान का लगभग …७२ बीघा जमीन और भवन को नीलाम किया था। इस स्थान …को डिप्टी थामस स्काट के लिए निकोलस नूजेंट ने खरीदा। …१८२५ में भारत के जंगी लाट सर एडवर्ड पैगट ने इसे अपना …निवास-स्थान बनाया। पुनः १८४६ के लगभग बंगाल के …डिप्टी गवर्नर जनरल श्री प्रिंसेप इसमें रहते थे तथा इन्होंने …सम्मत कराई थी। १८५४ ई० में ई० कम्पनी ने बंगाल के …लेफ्टिनेण्ट गवर्नर-जनरल सर जेम्स हेलीडे के लिए खरीद …लिया। लार्ड वेलिंगडन तक इस भवन की टीपटाप होती ही …रही। नैशनल लाइब्रेरी के लिए इस भवन और जमीन को …दिलाने का श्रेय तत्कालीन चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, …मौलाना आजाद और वर्तमान पुस्तकाध्यक्ष केशवन को है। …इस ऐतिहासिक भवन को भव्य-से-भव्य बनाने का क्रम आज …जारी है। इस स्थान को विद्यार्थियों का स्वर्ग' बनाने की …कल्पना १९०३ में लार्ड कर्जन के समक्ष जे० बोडीलियन ने …की थी। यह स्वप्न आज सत्य है।

…पुस्तकालय की आन्तरिक और टेक्निकल व्यवस्था

पुस्तकालय की आन्तरिक व्यवस्था का श्रीगणेश, हम बता चुके हैं, श्री मैकफरलेन ने किया था। सन् १९२६ में रिचे कमेटी ने इसे कॉपीराइट पुस्तकालय का रूप देने की बात कही थी। रीडिंग रूम का व्यय भी बंगाल सरकार उस सिफारिश के अनुसार २०,००० रु०, पुनः १६,००० रु० देती है।

श्री के० एम० असाउद्दौला (पुस्तकाध्यक्ष १९३०-४७) ने १९३५ से इम्पीरियल लाइब्रेरी में पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा देने का कार्य आरम्भ किया। यह कार्य आज और भी अधिक व्यवस्थित ढंग से होता है। बंगाल पुस्तकालय संघ के तत्वावधान में सर्टीफिकेट कोर्स और यूनिवर्सिटी १० मास की ट्रेनिंग के बाद डिप्लोमा देती है। अध्यापन-कार्य पुस्तकालय में ही होता है। यूरोपीय पुस्तकों की पुस्तक-क्रम सूची का कार्य भी श्री असाउद्दौला ने १९३० से प्रारम्भ कराया। १९४१-४२ से जिल्दसाजी का कार्य गवर्नमेंट प्रेस से न होकर ठेके पर प्रारम्भ किया गया।

१९४६-४७ में शासन ने विभिन्न प्रकार के कैटलाग प्रस्तुत करने की स्वीकृति दी।

नेशनल लाइब्रेरी के रूप में

सन् १९४८ में पुस्तकालय को राष्ट्रीय स्तर का स्वरूप देने की घोषणा हुई। पुस्तकालय के इतिहास में यह दूसरा महत्त्वपूर्ण मोड़ था। इसी समय (१९४९) पुस्तकालय को भारत प्रसिद्ध 'सर आशुतोष संग्रह' (विभिन्न विषयों और भाषाओं की ८०,००० पुस्तकें) प्राप्त हुआ तथा १९५० में 'श्री रामदास सेन संग्रह' भी मिला। पुस्तकालय अपने इतिहास के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों के समय आकर्षक और व्यक्तित्व-पूर्ण पुस्तकाध्यक्षों के रूप में भाग्यवान् रहा है। नैशनल लाइब्रेरी स्तर प्राप्त करते ही श्री बी० एस० केशवन के रूप में यह व्यक्तित्व सामने आया।

सम्पूर्ण पुस्तकालय कार्य की दृष्टि से एशिया और यूरोपीय भागों में व्यवस्थित है। इसके अतिरिक्त रीडिंग रूम (पत्रिका और पुस्तक दोनों के लिए), विभिन्न संग्रह विभाग (रामदास, आशुतोष, चीनी ग्रन्थ विभाग आदि) संग्रहालय के मुख्य विभाग हैं। मई १९५४ में 'डिलीवरी ऑफ बुक्स' कानून बन जाने से १९२६ में बनी रिचे कमेटी के समय के

[शेष पृष्ठ ५९० पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों द्वारा

पुस्तकों का चुनाव

द्वारकाप्रसाद शास्त्री

लेखक हिन्दी संग्रहालय (सम्मेलन) प्रयाग के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। उनके सुझाव पुस्तकाध्यक्षों द्वारा दिलचस्पी से पढ़े जायँगे।

संसार के प्रत्येक पुस्तकालय में प्रतिवर्ष पुस्तकें क्रय की जाती हैं परन्तु अधिकांश पुस्तकालयों के अध्यक्ष यह नहीं जानते कि पुस्तकों का चुनाव भी एक कला है। प्रायः इस अज्ञान के कारण पुस्तकालयों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता और पाठकों की ज्ञान-पिपासा शान्त नहीं हो पाती। फलतः वे पुस्तकालय से विमुख हो जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि पुस्तकालय का सर्वाधिक उपयोग पुस्तकों के उत्तम संकलन पर निर्भर है। इसीलिए प्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान् मेलविल ड्यु ई का कथन है—

"पुस्तक-चयन व्यक्तियों के अत्युत्तम पठन, अधिकाधिक उपयोग तथा न्यूनतम व्यय पर आधारित होना चाहिए।"

इस बात की आवश्यकता का अनुभव करते हुए माध्यमिक शिक्षा-आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 'पुस्तकालय की सफलता पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के सम्यक् चयन पर निर्भर है।'

इसके अतिरिक्त यदि हम वर्तमान स्थिति पर विचार करें तो भी पुस्तकों के चुनाव की आवश्यकता हमें प्रतीत होती है। मुद्रण-कला के इस युग में प्रतिदिन इतनी पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ छप रही हैं कि उन सब का खरीदना किसी भी समृद्ध पुस्तकालय के भी सामर्थ्य से परे है। अपने सीमित बजट के भीतर उत्तम एवं आवश्यक पुस्तकों का संग्रह ही पुस्तकालय को उपयोगी बना सकता है और उसके भविष्य को उज्ज्वल कर सकता है। इस प्रकार जब पुस्तकों के चुनाव की आवश्यकता स्वीकार कर ली जाती है तो प्रश्न उठता है कि किसी पुस्तकालय के लिए पुस्तकों का चुनाव कैसे किया जाय।

पुस्तकों के चुनाव में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(१) स्थानीय साहित्य की प्राथमिकता

पुस्तकालय जिस क्षेत्र में स्थित हो, उसके आसपास के स्थानों के सम्बन्ध में, वहाँ के महापुरुषों एवं वहाँ की घटनाओं के सम्बन्ध में जो मानचित्र, पुस्तकें तथा अन्य सामग्री प्राप्य हो, उसे पहले खरीदना चाहिए। ऐसी सामग्री से पुस्तकालय की उपयोगिता बढ़ती है; और सर्वसाधारण का झुकाव पुस्तकालय की ओर होता है। जैसे प्रयाग के पुस्तकालयों में प्रयाग के इतिहास, यहाँ के चित्र, प्रयाग माहात्म्य, भरद्वाज आश्रम, यहाँ के महापुरुषों की जीवनियाँ, अक्षयवट आदि से सम्बन्धित खोज-विषयक पुस्तकों को खरीदने का बजट में प्रथम स्थान होना चाहिए।

(२) क्षेत्रीय पाठकों की सामग्री

पुस्तकालय जिस क्षेत्र में स्थित हो, वहाँ और उसके आसपास जिस प्रवृत्ति के पाठक रहते हों, उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए उस विषय की पुस्तकों को क्रय करना चाहिए। मान लीजिए कि एक पुस्तकालय गाँवों के मध्य में स्थित है तो वहाँ पर अवश्य देहाती जीवन के उपयोगी हल्का साहित्य, लोक-साहित्य एवं ऐसी ही पुस्तकों का चयन होना चाहिए। यदि वहाँ गहन ज्ञान के उत्कृष्ट ग्रन्थ खरीदे जायँगे और उनका संग्रह होगा तो निश्चय है कि उससे पुस्तकालय की उपयोगिता कदापि न बढ़ सकेगी। क्षेत्रीय आवश्यकता का ज्ञान पाठकों द्वारा उपयोग में लाई गई पुस्तकों के विषयानुसार वर्गीकरण से भी हो सकता है।

(३) विषयों का सन्तुलन

प्रत्येक पुस्तकालय में प्रायः सभी विषयों की कुछ न कुछ पुस्तकें खरीदी जाती हैं किन्तु इस विषय में यह ध्यान रखना चाहिए कि एक विषय की पुस्तकें खरीदने में ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय की पुस्तकों को हानि न पहुँच सके। इसका सबसे सरल उपाय यह है कि पुस्तकालय के अध्यक्ष को अपने पुस्तकालय की पुस्तक-सूची को देखकर यह निर्णय कर लेना चाहिए कि पुस्तकालय में किस विषय का संग्रह अच्छा है और किस विषय का संग्रह दुर्बल है। तदनुसार बजट धन का यथोचित विभाजन कर लेना चाहिए और वर्ष के अन्त तक अपने आवश्यक विषय की पुस्तकों की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करते रहना चाहिए। ऐसा करने से निश्चय ही उस दुर्बल संग्रह को सबल किया जा सकता है।

(४) स्तरीय ग्रन्थों का संग्रह

कुछ पुस्तकें ऐसी होती हैं जिनका संग्रह प्रत्येक पुस्तकालय में होना चाहिए। पाठक जब पुस्तकालय में जाता है तो यदि ऐसे स्तरीय ग्रन्थ (Standard Books) उसे नहीं मिलते तो पुस्तकालय के प्रति उसके मन में अनास्था हो जाती है। उदाहरणार्थ किसी भी पुस्तकालय के हिन्दी विभाग में यदि प्रेमचन्द के उपन्यास, रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास, तुलसीदास, बिहारी, सूर और मीरा आदि के ग्रन्थ न हों तो पाठक उस पुस्तकालय को कदापि मान्यता नहीं प्रदान कर सकता। अतः पुस्तकालय अध्यक्ष का कर्त्तव्य है कि पुस्तकों के चुनाव में स्तरीय ग्रन्थों के संचयन का विशेष ध्यान रखे और क्रमशः उनका संग्रह बढ़ाता रहे।

(५) सम्पर्क और सुझाव

पुस्तकों के चुनाव में व्यक्तिगत अनुभव के साथ सम्पर्क और सुझाव का होना अत्यन्त आवश्यक है। सम्पर्क से मेरा तात्पर्य है प्रत्येक विषय के पुस्तक-प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं से सम्पर्क स्थापित करना, सामयिक समाचार-पत्रों एवं मासिक पत्रिकाओं को देखना जिससे इस बात की जानकारी सरलता से हो सके कि पुस्तकालय के लिए वांछित विषय पर कैसी अच्छी पुस्तकें कहाँ से प्राप्त हो सकती हैं। सुझाव से मेरा आशय है, पाठकों और विषय के विशेषज्ञों से पुस्तकों के चुनाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना। प्रायः ऐसा होता है कि किसी विषय का विशेषज्ञ ऐसी पुस्तक का सुझाव दे देता है जिसके क्रय कर लेने से उस विषय की अनेक अप्रकाशित पुस्तकों के खरीदने से पिण्ड छूट जाता है। पाठकों का सुझाव भी इस विषय में कुछ कम लाभकारी नहीं होता। प्रायः पाठक कहीं-न-कहीं से प्रामाणिक एवं स्टैण्डर्ड पुस्तक की टोह लगा लेते हैं। कुछ पाठकों को तो पुस्तक प्रकाशित होते ही उसका पता लग जाता है। अतः अधिक अच्छा हो कि पुस्तकालय में किसी निश्चित स्थान पर छपे सुझाव-पत्र रख दिये जायँ और पाठकों से निवेदन किया जाय कि जो पुस्तकें उनकी दृष्टि में पुस्तकालय के लिए आवश्यक हों उनका नाम तथा पूर्ण विवरण वे उस सुझाव-पत्र में लिखकर डाल दें। ऐसा करने से धन और समय दोनों की पर्याप्त बचत हो सकती है।

(६) सामयिक साहित्य एवं अनिवार्य सामग्री

समय-समय पर किसी विशेष घटना आदि से सम्बन्धित कुछ उपयोगी पुस्तकें छपती रहती हैं। यद्यपि ऐसे साहित्य स्थायी नहीं होते, किन्तु पाठक प्रत्येक पुस्तकालय में इसकी आशा करते हैं। पंचाङ्ग, रेलवे टाइम टेबुल एवं स्थानीय पत्र-पत्रिकाएँ अनिवार्य सामग्री के अन्तर्गत आती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त व्यक्तियों से सम्बन्धित पुस्तकें पुस्तकालय के लिए अनिवार्य सामग्री हैं। इनके बिना पुस्तकालय में पर्याप्त कमी का अनुभव होता है। अतः ऐसी सामग्री चुनाव के अन्तर्गत अवश्य होनी चाहिए।

पुस्तकों के चुनाव में एक बात विशेष ध्यान देने की यह है कि वर्ष के अन्त तक बजट में से कुछ-न-कुछ धन बचाए रखना चाहिए। कभी-कभी सहसा अच्छी पुस्तकें सस्ते मूल्य पर मिल जाती हैं। कुछ पुस्तकें छपते ही बिक जाती हैं और अगले बजट तक उनका मिलना कठिन हो जाता है। ऐसे अवसर पर वह सुरक्षित बजट काम देता है और एक बड़े अभाव की पूर्ति हो जाती है।

प्रायः देखा गया है कि हमारे देश के पुस्तकालयों में पुस्तकों का संग्रह अप-टु-डेट नहीं रहता है। एक बड़ा दोष हमारे पुस्तकालय-संचालकों में यह है कि वे इतने मोहग्रस्त हैं कि एक बार जो रद्दी पुस्तक भी पुस्तकालय में आ जाय उसे छाँट देना वे उचित नहीं समझते। फल यह होता है कि हमारे पुस्तकालयों में प्राचीन ढर्रे की अनुपयोगी पुस्तकों की भरमार है और वे व्यर्थ ही आलमारियों में स्थान घेरे हुए हैं। विदेशी पुस्तकालयों में कुछ नियम बना लिये गए हैं जिनके अनुसार प्रतिवर्ष जाँच के समय आउट ऑफ डेट और सामयिक आवश्यकता की पूर्ति करने में असमर्थ पुस्तकों को

[शेष पृष्ठ ५६० पर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

भारत की लोक-कथाएँ : इस बालोपयोगी पुस्तक में देश के विभिन्न २२ प्रदेशों की एक-एक लोक-कथा संग्रहीत है। सरकारी प्रयास के नाते इसके प्रकाशन-मुद्रण का स्तर उचित नहीं कहा जा सकता। चित्र भी कल्पनाहीन और नीरस हैं। आर्ट-पेपर पर छपे हुए ६४ पृष्ठों के संग्रह का मूल्य १) है और प्रकाशक **पब्लिकेशन्स डिवीज़न, भारत सरकार, दिल्ली—८।**

◈ ◈ ◈

बेसिक शिक्षा क्या है ? प्रसिद्ध शिक्षा-वैज्ञानिक श्री हंसराज भाटिया द्वारा यह पुस्तिका **बेसिक शिक्षा माला** के अन्तर्गत प्रकाशित की गई है। देश की प्राथमिक शिक्षा बेसिक शिक्षा पद्धति की ओर निर्दिष्ट है। यह पुस्तक मुख्यतः बेसिक स्कूलों में काम करने वाले अध्यापकों के लिए ही लिखी गई है। श्री भाटिया ने बेसिक शिक्षा की व्याख्या करने के बाद बताया है कि इस पद्धति में मूल स्थान बालक का है; इसका एकमात्र विषय बालक ही है। ज्ञान को विभिन्न विषयों में नहीं बाँटा जा सकता, वरन् वह बेसिक दृष्टि-कोण के अनुसार एक इकाई है। बालक के पठन-पाठन में पाठ्य-पुस्तकों का महत्त्व नहीं है वरन् शिक्षार्थी कार्य-कौशल द्वारा संजोये गए ज्ञान का अर्जन करता है और साथ-ही-साथ उत्पादन भी करता है। इस शिक्षा-पद्धति से बालक में आत्म-सम्मान बढ़ता है, श्रम के प्रति उसका दृष्टि-कोण स्वस्थ रहता है और उत्पादन में भाग लेते हुए अपने समाज का अंग मानते हुए अपने उत्तरदायित्व को समझने लगता है। अन्त में देश के कुछ भागों में बेसिक-शिक्षा के हो रहे परीक्षणों का मूल्यांकन किया गया है।

शिक्षकों और बालकों की सुशिक्षा में हित रखने वाले अभिभावकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ६९ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **ओरियन्ट लौंगमन्स, चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता-१३** ने किया है। मूल्य १) है।

◈ ◈ ◈

शिक्षा : शिक्षा-शास्त्री डॉ० जाकिर हुसेन के शिक्षा-सम्बन्धी ११ भाषणों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। अनुवादक प्रो० शिवशंकर शर्मा, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, के हिन्दी-संस्कृत विभाग के प्राध्यापक हैं। डॉ० जाकिर हुसैन के ये भाषण शिक्षकों के लिए महत्त्व के और पठनीय हैं। राष्ट्रीय शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, बच्चों का विकास, अच्छा अध्यापक, शील का विकास आदि महत्त्वपूर्ण शीर्षक कुछ अध्यायों के हैं। १५५ पृष्ठ की एंटिक कागज पर छपी हुई इस पुस्तक का मूल्य ३) है और प्रकाशक **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद।**

◈ ◈ ◈

कहानी के रूप और तत्त्व : इस पुस्तक में प्रो० देवमि एम० ए० ने 'कहानी के सैद्धान्तिक पक्षों का सम्यक् त वैज्ञानिक विवेचन' प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेख स्वयं इस विवेचन के मौलिक होने का आग्रह नहीं करता इसीलिए बगैर मौलिकता की माँग किये हुए यदि इस आकलन किया जाय, तो निःसन्देह ही कथा-साहित्य—वि रूप से हिन्दी-कहानियों का—सर्वाङ्गीण परिचयात्म अध्ययन उपलब्ध हो सकेगा। लगभग १२० पृष्ठों के कले में कथा-साहित्य के उद्गम और विकास, उसके अनेकाने भेद साहित्य की अन्य विधाओं से उसका पारस्परिक सम्ब कथा-साहित्य की भारतीय और पाश्चात्य परम्पराएँ आ लगभग कथा-सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य बातों पर प्रकाश डा गया है। पुस्तक **नोवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना-४** प्रकाशित हुई है और मूल्य १।) है।

◈ ◈ ◈

लोकेश्वर-शनि में सुश्री विपुलादेवी के ६ एकांकी संग्रह हैं। यों तो इनकी विषय-वस्तु मानव-जगत् का अतिक्र कर अतिमानव-लोक में आ पहुँची है, पर सभी की पीठि अन्ततः मानवतावादी ही है। १४० पृष्ठ की यह पु **त्रिवेदी प्रकाशन, कानपुर,** से प्रकाशित हुई है और मू १।) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बीसवीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी गद्य का विकास : अनुसन्धान तथा अन्य साधनों के अभाव में खड़ी बोली के पूर्व जो गद्य-साहित्य था, उसका पूर्ण रूप किसी भी इतिहासकार द्वारा विवेचित नहीं किया गया है। अपभ्रंश-काल के बाद अवहट्ठ, राजस्थानी तथा ब्रजभाषा में गद्य लिखा जाता रहा। ब्रज तथा राजस्थानी में तो गद्य का बहुत ही विस्तृत और बहुमुखी रूप प्राप्त है, जिनकी सूचनाएँ आये दिन पत्र-पत्रिकाओं में प्राप्त होती रहती हैं। राजस्थानी में वात, ख्यात, वचनिकाओं आदि के अतिरिक्त पट्टे, परवाने आदि में गद्य का प्राचीन और विस्तृत रूप सुरक्षित है। उसी तरह ब्रज-भाषा में भी मौलिक गद्य-साहित्य के अतिरिक्त अनुवाद और टीका-ग्रन्थों की संख्या बहुतायत से पाई जाती है। श्री प्रेमनारायण टंडन ने, जो कुछ भी उन्हें प्राप्त हो सका, उसे प्रकाश में लाकर जहाँ एक ओर साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण अभाव की ओर इंगित करते हुए अनुसन्धान की सामग्री प्रस्तुत की है वहीं दूसरी ओर उन्होंने विद्यार्थियों को लाभान्वित भी किया है। ग्रन्थ के पाँच अध्यायों में उन्होंने प्राचीन गद्य के अभाव के कारण बतलाते हुए प्राप्य ब्रज तथा राजस्थानी गद्य-साहित्य की सूचना देते हुए भारतेन्दु-युग तक के गद्य की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या की है। सात पृष्ठ के परिशिष्ट में उन्होंने गद्य-साहित्य का काल-विभाजन करते हुए उसके विकास, आविर्भाव तथा उत्थान (प्रथम, द्वितीय और तृतीय) का मौलिक ढंग से विवेचन किया है। लेखक की यह अपूर्व कृति साहित्य-प्रेमियों तथा छात्रों के लिए संग्राह्य है। डबल क्राउन साइज़ में २११ पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक, विद्या मन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ से २।।) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

साहित्य परिचय : श्री प्रेमनारायण टंडन के यत्र-तत्र प्रकाशित निबन्धों का संग्रह है। सोलह निबन्धों में लेखक ने वह अधिकांश सामग्री देने का प्रयत्न किया है जिससे परीक्षार्थी तो लाभ उठा ही सकते हैं साथ-ही-साथ साहित्य-प्रेमियों को भी आनन्द आ सकता है। 'सूरसागर', 'भ्रमर गीत', 'साहित्य लहरी', 'रहस्यवाद की रूपरेखा', 'पृथ्वीराज रासो' आदि निबन्ध-लेखक की पैठ, अध्ययनशीलता और मनन के द्योतक हैं; प्रेमचन्द और आधुनिक स्त्री समाज, प्रसादजी का 'चन्द्रगुप्त' नाटक, 'स्कन्दगुप्त' नाटक की दो बाजियाँ, 'अजातशत्रु' नाटक के प्रमुख पात्र, 'कर्मभूमि'—कथा और समस्या, 'निर्मला' : समीक्षा आदि निबन्ध परीक्षार्थियों के लिए उपयोगी हैं। प्राचीन हिन्दी गद्य का अभाव : उसके कारण; ब्रजभाषा का गद्य-साहित्य तथा हिन्दी गद्य का काल-विभाजन टंडन जी की दूसरी कृति 'बीसवीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी गद्य का विकास' के ही अंश हैं जो विद्यार्थियों की सुविधा के लिए जोड़ दिये गए हैं। डबल क्राउन साइज़ में २७६ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक को ३) में **विद्या मन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ** से खरीदा जा सकता है।

◈ ◈ ◈

दादा : ओंकार शरद का नवीनतम राजनीतिक एवं सामाजिक उपन्यास है। इसमें एक ऐसे देशभक्त का चित्रण है जो जीवन के प्रारम्भ में केवल एक परोपकारी देश-सेवक है लेकिन बाद में पद का मद उसे उसके उच्चादर्शों से नीचे गिरा देता है। इस राजनीतिक ढाँचे के भीतर एक दिलचस्प सामाजिक कहानी का बड़ी खूबी से समावेश किया गया है। जीवन-भर संयम का बाँध बाँधने वाले यदुवंश के जीवन में जब थोड़ी-सी कमज़ोरी आ जाती है तो सारा बाँध एकाएक किस प्रकार ढह जाता है इसका बहुत ही सजीव वर्णन है। नायक का आन्तरिक द्वन्द्व भी अपने-आपमें अनूठा ही है। सजिल्द पुस्तक, साफ छपाई और मूल्य २।।) तथा प्रकाशक हैं **अशोक प्रेस, पटना—६।**

◈ ◈ ◈

रात और शहनाई : नवयुवक गीतकार रमानाथ अवस्थी के गीतों का नवीनतम संग्रह। रमानाथ अवस्थी के गीत बहुत सरस और लुभावने होते हैं। प्रस्तुत संग्रह में अनेक नये चुने हुए गीत संग्रहीत हैं। सजिल्द, भावात्मक आवरण, मूल्य २)। प्रकाशक : **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद—२।**

आज ही

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २।।) मनीआर्डर से भेजकर ग्राहक बनें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हमने क्रमशः हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार की किसी भी सूची में अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है। आशा है पाठकगण अशुद्धियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करके, सूची को पूर्णतया शुद्ध करने में हमें सहयोग देंगे।

[जुलाई १९५५ अंक के पृष्ठ ५६० से आगे]

मध्य भारत

(९) आजाद हिन्द	उज्जैन
(१०) नया जमाना	इन्दौर
(११) प्रभात	,,
(१) हित चिन्तक	,,
(१३) भारत भूमि	लश्कर
(१४) ग्राम सन्देश	राजगढ़
(१५) कर्मचारी	इन्दौर
(१६) आवाज	राजगढ़
(१७) लोकमत	इन्दौर
(१८) विश्व दीपक	,,

पाक्षिक

(१) चिंगारी	भेलसा
(२) हिन्दी शब्द प्रतियोगिता	ग्वालियर
(३) मालव मार्केट रिपोर्ट	मन्दसौर
(४) निनाद	निनाद
(५) जय दर्शन	मुरेना

मासिक

(१) विक्रम	उज्जैन
(२) कल्प वृक्ष	,,
(३) मारुति संजीवन	दोहद
(४) सामयज्ञ दर्शन	सैलाना
(५) प्रकृति	लश्कर
(६) टांक प्रभात	इन्दौर
(७) वीणा	,,
(८) रजतपट	मऊ
(९) भविष्य दीपक	इन्दौर
(१०) बिरला नगर पत्रिका	,,
(११) हिन्दी शिक्षण पत्रिका	,,
(१२) जीवन	,,
(१३) राजेन्द्र	मन्दसौर
(१४) वालन्टियर	लश्कर
(१५) भारती	ग्वालियर

पाक्षिक

(१) कस्तूरबा दर्शन	इन्दौर

राजस्थान

दैनिक

(१) अधिकार	कोटा
(२१) निर्भीक	,,
(३) नया मोर्चा	,,
(४) राष्ट्रदूत	जयपुर
(५) लोकवाणी	,,
(६) जागृति	,,
(७) जयभूमि	,,
(८) राजस्थान समाचार	,,
(९) जन्म भूमि	,,

साप्ताहिक

(१) मातृ भूमि	भरतपुर
(२) नवयुग सन्देश	,,
(३) कर्मभूमि	,,
(४) वीर सैनिक	,,

पुस्तकालयों की सूची में पाठक कृपया निम्न पुस्तकालयों का नाम नोट कर लें :—

[१] किसानी समाचार, मासिक — नागपुर
[२] नया भारत, साप्ताहिक — लखनऊ
[३] जन सेवक, साप्ताहिक, लखीमपुर खीरी (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) अरुण	,,
(६) जय हिन्दी	कोटा
(७) राजस्थान	,,
(८) किसान सन्देश	,,
(९) १५ अगस्त	उदयपुर
(१०) ग्वाला	,,
(११) नवजीवन	,,
(१२) अरावली	,,
(१३) क्रान्ति	,,
(१४) जनसहयोग	,,
(१५) ललकार	बीकानेर
(१६) लोकमत	,,
(१७) सेनानी	,,
(१८) वर्तमान	,,
(१९) लोक जीवन	,,
(२०) स्वतन्त्र भारत	अलवर
(२१) अलवर पत्रिका	,,
(२२) तेज प्रताप	,,
(२३) किसान साथी	,,
(२४) नव जीवन	,,
(२५) आगे बढ़ो	,,
(२६) अपना देश	,,
(२७) प्रजा बन्धु	सीकर
(२८) हिन्दू सन्देश	जोधपुर
(२९) प्रजा सेवक	,,
(३०) लोक जीवन	,,
(३१) ज्वाला	,,
(३२) ललकार	,,
(३३) लोकराज	,,
(३४) बलिदान	,,
(३५) कर्मयोग	,,
(३६) वीर	,,
(३७) कलम	,,
(३८) दधिमती	,,
(३९) लोकपथ	भीलवाड़ा
(४०) ग्रामवाणी	हिण्डौन

(४१) जनता	श्री गंगानगर
(४२) सीमा सन्देश	,,
(४३) अजीत	,,
(४४) अमर ज्योति	जयपुर
(४५) नया संसार	,,

पाक्षिक

(१) कर्मठ	झालावाड़
(२) जैन पथ-प्रदर्शक	जोधपुर
(३) सिरोही पत्रिका	सिरोही
(४) वीर वाणी	जयपुर
(५) नागरिक	,,

अन्य

(१) नई चेतना, बीकानेर	त्रैमासिक
(२) वैष्णव सन्देश, जोधपुर	,,
(३) नव निर्माण, रामगंज मण्डी	मासिक
(४) इन्कलाब, बीकानेर	,,
(५) नया शिक्षक ,,	,,
(६) एकलव्य, अलवर	,,
(७) मीना कृषि संसार ,,	,,
(८) सैनी मित्र ,,	,,
(९) रामराज्य ,,	,,
(१०) खण्डेलवाल जगत,,	,,
(११) महिला जागृति ,,	,,
(१२) जनवाणी, जोधपुर	,,
(१३) मतवाला ,,	,,

हिमाचल प्रदेश

साप्ताहिक

(१) भावना	चम्बा

हैदराबाद दक्षिण

दैनिक

(१) मिलाप	हैदराबाद

साप्ताहिक

(१) आर्य भानु	हैदराबाद
(२) नागरिक	,,

मासिक

(१) अजन्ता	हैदराबाद
(२) कल्पना	,,

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुखन [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि (एकांकी) : डॉ० रामकुमार २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव
अतीत के कंपन : श्री आनन्द प्रकाश

उर्दू शायरी

शेरो सुख़न [भाग २] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो सुख़न [भाग ३] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो सुख़न [भाग ४] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
शेरो सुख़न [भाग ५] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए०
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह
धूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर
कालिदास का भारत [२] : श्री भगवतशरण उपाध्याय

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए०
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए०
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए०
जैन जागरण के अग्रदूत : श्रीअयोध्याप्रसाद गोयलीय
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायणप्रसाद जैन

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइये

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई

—अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त, जथार व बेरी, अनु० सुरेश शर्मा।

आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस

—बुद्ध और क्राइस्ट, श्री सी० जिन राजदास, ।।।)

—साम्यवाद क्यों नहीं ?, श्री रोहित मेहता, ।।)

ओरिएण्ट लाँगमैन्स लि०, नई दिल्ली

—बेसिक शिक्षा क्या है, श्री एच० आर० भाटिया, १)

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

—सोमनाथ, डॉ० श्रीनाथसिंह

—विधाता का विधान, श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव

—वहरों का जमघट, डॉ० गिरीशनाथ दीक्षित

—जादू का झूला, अशोक बी० ए०, १)

... नर्सं, इलाहाबाद

—नीतिशास्त्र का प्रारम्भिक अध्ययन, श्री संगमलाल पाण्डेय, १।।)

—सेनाज्ञा, श्री संगमलाल पाण्डेय, १)

—प्रारम्भिक शिक्षा मनोविज्ञान, विश्ववीर विद्यार्थी, २।।।)

—विश्व के महान् शिक्षक, डॉ० सुबोध अदावाल व श्री विश्ववीर विद्यार्थी, ६)

... बुकडिपो, दिल्ली

—चन्द्रलोक की यात्रा, श्री इज़हार असर, ।)।।

—सितारों की दुनिया, श्री सुरेन्द्र बी० ए०, ।)।।

—मशीन का जादू, श्री इज़हार असर, ।)।।

—गोबर में सोना, श्री इज़हार असर, ।)।।

... मण्डल लि०, बनारस

—कर्तव्याभाव, श्री देवनारायण द्विवेदी, पु० मु०, ४)

... भारती साहित्य प्रकाशन समिति

... भारत, १९५५

—सोने की लंका, श्री छविनाथ राय, ।)

—घमण्डी राजा, श्री छविनाथ राय, ।)

—पड़ौसी का प्रेम, श्री छविनाथ राय, ।)

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

— लोको फ़िटर, श्री हरीचन्द्र रत्ता, १०)

—जनरल वर्कशॉप प्रैक्टिस, श्री रामअवतार १०)

—भवन निर्माण कला, श्री रामअवतार, १०)

—आटोमोबाइल इंजन गाईड, श्री कृष्णानन्द शर्मा, १०)

नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

—जुल्मों की कहानियाँ, स्व० श्री सम्पतिराय भटनागर, २)

नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ

—परिवर्तन, सीतेश, ४)

—मल्लिका, विजयकुमार मिश्र

—चिर-मिलन, विजयकुमार मिश्र, २)

—प्रेमांकुर, विजयकुमार मिश्र, १।)

बिहार प्रकाशन गृह, पटना

—बूचड़ खाना, अनु० देवेन्द्र, १)

—सृष्टि का अन्त, देवेन्द्र, ।।)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता

—रवीन्द्र साहित्य भाग २६, अनु० धन्यकुमार जैन, २।)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—पृथ्वीराज रासो की कथानक-रूढ़ियाँ, श्री ब्रजविलास श्रीवास्तव,

राज प्रकाशन, पटना

—मेघ-संदेश, 'नागार्जुन', ३।)

—शिखण्डी, कामेश्वर शर्मा, ३)

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—आत्म-विकास, पु० मु०, आनन्दकुमार, ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[शेष पृष्ठ ५८१ का]

स्वप्न आज पूरे हो रहे हैं। इम्पीरियल लाइब्रेरी के समय भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की कोई व्यवस्था न थी। बंगाल में होने के कारण, बंगाल सरकार की कृपा से केवल बंगाल की पुस्तकों का अच्छा संग्रह बन पाया था। उस समय की सरकारी नीति के कारण इस ओर भी आवश्यक प्रगति नहीं हुई। आज विधान में स्वीकृत १४ भारतीय भाषाओं के साहित्य का संग्रह अधिकाधिक तत्परता से हो रहा है।

बुक डिलीवरी एक्ट बन जाने से पुस्तकालय को भारत में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक की एक प्रति मिल रही है। अतः अब राष्ट्रीय पुस्तक-सूची (National bibliography) के कार्य और कर्मचारियों के लिए शासन ने अलग से स्वीकृति दे दी है। अगले वर्ष से इस सूची के प्रकाशित रूप की आशा की जाती है।

इस प्रकार विश्व के अनेक गौरवपूर्ण राष्ट्रीय पुस्तकालयों की तरह हमारे पुस्तकालय को भी उच्च आसन मिल चुका है। कोई कारण नहीं कि शीघ्र ही इस पुस्तकालय की गणना भी महान् पुस्तकालयों में न हो।

नया साहित्य ! नया प्रकाशन !! नया आकर्षण !!!

हिन्दी-साहित्य की नयी पीढ़ी की सजीव कृतियाँ, जो मौलिकता, कलात्मकता, एवं रोचकता सभी में अनूठी हैं।

उपन्यास

[वर्त्तमान के सामाजिक तानों-बानों पर आधारित]

धूप और धुआँ : शेखर राय एम. ए., पृ० २००, मू० ३।।)

फूल और शबनम : कलाकार 'सूरज', पृ० २४० मू० ४)

काव्य

[कामायनी एवं कुरुक्षेत्र की परम्परा को आगे बढ़ाने वाला सर्वथा मौलिक लघु काव्य]

पांचाली [सचित्र] : कलाकार 'सूरज', पृ० ११२, मू० २।।)

कहानी

[जीवन के सुख-दुःख और भविष्य की आशा के प्रतीक का मर्मस्पर्शी चित्रण]

मिट्टी की गंध : हर्षनाथ, पृ० २००, मू० ३)

विवरण के लिए

नव साहित्य प्रकाशन

२०३ ए, महर्षि देवेन्द्र रोड, कलकत्ता—६

—हमारे राष्ट्र-निर्माता, पु० मु०, सत्यकाम विद्यालंकार,

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

—हमारा भूमण्डल, मेहता तथा बनर्जी, ४।।)

—हमारा देश, माथुर तथा मेहता, ३)

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद

—निकम्मा, श्री जितेन्द्र, २।।)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—फिल्म संगीत, भाग २५वाँ, सम्पादक श्री लक्ष्मीनारा... गर्ग, ४)

साहित्य निकेतन, कानपुर

—गुणानन्द जुयाल, डा०, विद्यापति का अमर काव्य, मु०, २)

साहित्य संगम, लुधियाना

—स्कूल प्रबन्ध, सुश्री स० कोछड़, ३।।।)

—आशा की यात्रा, सत्यपाल आनन्द, १)

—चौथा राजकुमार, सत्यपाल आनन्द, १)

—फूल, बच्चा और ज़िन्दगी, देवेन्द्र इस्सर, ३)

साहित्य सदन, देहरादून

—विभूतियाँ, कृष्णकुमार 'कौशिक', १)

हिन्दी साहित्य भवन, लखनऊ

—मँझधार, सच्चिदानन्द पाण्डेय,

—मृत्युलोक, शैलेश, २)

—प्रकृति और प्रारब्ध, कृष्ण बिहारी दूबे, २)

—गुमराह, सच्चिदानन्द पाण्डेय

[शेष पृष्ठ ५८...

छाँट (Discard) दिया जाता है और उनके स्थान पर ... टू-डेट और उत्तमोत्तम उपयोगी पुस्तकों का संग्रह ... पुस्तकालयों को आकर्षक बना लिया जाता है। अतः पु... ध्यक्ष को जहाँ एक ओर उत्तम पुस्तकों का चुनाव ... चाहिए वहाँ दूसरी ओर रद्दी और समय की माँ... पूर्ण करने में असमर्थ पुस्तकों को छाँट देना चाहिए। ... स्मरण रखना चाहिए कि पुस्तकालय रूपी ज्ञान के ज... की सफाई इस प्रकार की जाय कि उसमें गन्दा जल ... सके। सदा स्वच्छ एवं स्वादिष्ट जल विद्यमान रहे ... ज्ञान-पिपासु पाठकों की पिपासा की तृप्ति होती रहे ... पुस्तकालय के प्रति उनकी आस्था एवं स्नेह बना ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र, राजनीति, न्यायशास्त्र

म० आर० पालन्दे, अनु० वसन्त देव, भारतीय संविधान का परिचय, ३३८, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई ५)

म० एल० गुप्ता, वैज्ञानिक नव निर्माण, १४४, क्रा०, लक्ष्मीनारायणलाल, आगरा १)

धार, बेरी, भारतीय अर्थशास्त्र, खण्ड १, ५२०, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद ७)

हता तथा यादवेन्दु, आधुनिक राजनीतिक चिन्तन, ५६६, डि०, लक्ष्मीनारायणलाल, आगरा १२)

मस्वरूप नौलखा, पाश्चात्य न्याय-शास्त्र निगमन विधि, पु० मु०, ४५०, क्रा०, सिटी बुक हाउस, कानपुर ५)

मस्वरूप नौलखा, पाश्चात्य न्याय-शास्त्र आगमन विधि, ३००, क्रा०, सिटी बुक हाउस, कानपुर ४)

सकेतु विद्यालंकार डॉ०, राजनीति शास्त्र; भाग २, ३३६, डि०, सरस्वती सदन, मसूरी ५)

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

मनारायण टण्डन, सं०, गद्य कुसुमांजलि, २००, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ २)

वत शरण उपाध्याय, डॉ०, महाकवि कालिदास, ८०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)

द्धान्त त्रिपाठी, हिन्दी गद्य मीमांसा, पु० मु०, ५००, क्रा०, सिटी बुक हाउस, कानपुर ६)

ाकुमुद मुकर्जी, डॉ०, अनु० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ०, हिन्दू सभ्यता, ३५०, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ६॥)

क्ष्मीनारायण टण्डन, वत्सराज : एक अध्ययन, पु० मु०, ६४, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ ॥)

शान्त, आदर्श हिन्दी निबन्ध, ३७५, क्रा०, साहित्य सदन, देहरादून ४)

उपन्यास

न चेखव, अनु० राजेन्द्र यादव, अन्धेरे के पार, २००, क्रा०, ललित प्रकाशन, कलकत्ता १॥।=)

सा सिंह, अनब्याही मां, ७५, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना १)

राय, अनु० शीतला सहाय, पुनर्जीवन, पु० मु०, ५०२, ज्ञान मण्डल लि०, बनारस ६॥)

 पोश भेदी, गुप्त कमेटी, १५०, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ॥)

 पोश भेदी, हथकण्डे, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेन्द्र धीर, जवानी की आग, १०४, क्रा०, कान्ति प्रकाशन, खन्ना
रघुबंस दयाल, नींद और सपने, ३००, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
रवीन्द्रनाथ, अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य भाग ३, पु० मु०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता
विजय कुमार मिश्र, छोटी माँ, पु० मु०, १००, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
वीरभानुसिंह प्रताप, अन्तर्द्वन्द्व, २५०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
हर्षनाथ, टूटते बन्धन, २००, क्रा०, ललित प्रकाशन, कलकत्ता

कहानी

कृपालु द्विवेदी, टूटे सपने, १८०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', सनकी अमीर, पु० मु०, क्रा०, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ
शिवप्रसाद सिंह, आरपार की माला, १७५, क्रा०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, बनारस

काव्य

महेन्द्र भटनागर, अन्तराल, ८०, क्रा०, युवक साहित्यकार संघ, धार
महेन्द्र भटनागर, अभियान, ८७, क्रा०, आदर्श विद्या-मन्दिर, इन्दौर

नाटक

क० मा० मुन्शी, अनु० अमृतलाल नागर, दो फक्कड़, २६८, क्रा०, राजाराम कुमार बुकडिपो, लखनऊ
कुँअर आदेश वर्मा, दृश्य मन्दिर एकांकी, ६०, क्रा० नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

क० मा० मुन्शी, रूपान्तरकार एल० पी० भारद्वाज, बाल पृथ्वीवल्लभ, १५४, क्रा०, राजाराम कुमार बुकडिपो, लखनऊ
क० मा० मुन्शी, रूपान्तरकार एल० पी० भारद्वाज, बाल सोमनाथ, १३६, क्रा०, राजाराम कुमार बुकडिपो, लखनऊ
कन्हैयालाल दीक्षित, चाँदपरी, पु० मु०, ४०, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ
ज्योतिलाल भार्गव, कुत्तों की हड़ताल, पु० मु०, ४०, क्रा०, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ
जगत नारायण टण्डन, बाल पोथी, पु० मु०, ३२, क्रा०, सिटी बुक हाउस, कानपुर
परशुराम मेहरोत्रा, बापू के जीवन की एक झलक, ४८, डि०, राजाराम कुमार बुकडिपो, लखनऊ
बाल बन्धु, साहसी यात्री, पु० मु०, ४०, क्रा०, विद्या मन्दिर, लखनऊ
राम अवतार 'वीर', फल संरक्षण, १३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामचन्द्र श्रीवास्तव, बच्चों की फुलवारी, ३२, क्रा०, साहित्य सदन, देहरादून
रामेश्वर 'अशान्त', कपास की खेती, ८०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त', गन्ने की खेती, ८०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त', तरकारियों की खेती, ११२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त', धान की खेती, ६६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीधर वाजपेयी, गार्हस्थ्य शास्त्र, पु० मु०, १८०, क्रा०, तरुण भारत ग्रन्थावली, इलाहाबाद २)
सत्यपाल आनन्द, पंचपरमेश्वर, ५५, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना ।।=)
सत्यपाल आनन्द, हमारे नेता, १६६, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना २)
स्नेहलता भार्गव, राजकुमारी चाँद और सात बौने, पु० मु०, ४४, क्रा०, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ ।।)
सेवकराम 'बाल सेवक' भगवान कृष्ण का सन्देश, ३२, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ ।।)
सेवकराम 'बाल सेवक', महात्मा गान्धी का सन्देश, ३२, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ ।।)
सेवकराम 'बाल सेवक', महात्मा बुद्ध का सन्देश, ३२, क्रा०, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ ।।)

विविध

अखण्डानन्द सरस्वती, भीष्म पितामह, १६०, डि०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।≡)
आर० आर० दिवाकर, अनु० राजबहादुर, महायोगी, ३७४, क्रा०, राजाराम कुमार बुक डिपो, लखनऊ २।)
आर० एन० सिंह, डॉ०, व पी० डी० भारद्वाज, माध्यमिक कृषीय भौतिक विज्ञान तथा जलवायु अध्ययन, ४०६, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ६।।।)
आल्हा खण्ड, १६००, जवाहर बुक डिपो, मेरठ १२)
उर्मिला नागरकर, उन्नति के पथ पर, ६१, क्रा०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २।।।)
एनी बेसेण्ट, अनु० रामचन्द्र शुक्ल, ध्यानमाला, १२५, आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस १।।)
क० मा० मुन्शी, अनु० गयाप्रसाद दीक्षित, निहाई की चिनगारियाँ, २३०, क्रा०, राजाराम कुमार बुकडिपो, लखनऊ २।)
चक्रधर जी महाराज, श्री कृष्णरेखा चित्रावली, खण्ड २, गीता प्रेस, गोरखपुर ५=)
छीतस्वामी, छीत स्वामी, १००, डि०, विद्या विभाग, कांकरोली २)
जी० आर० जैन, प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र, ४६७, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ३।।)
दोहावली; संग्रह, पु० मु०, ८४, आधा रायल, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा १।=)
बालकृष्ण शास्त्री, केनोपनिषत्, ६६, डि०, विद्या विभाग, कांकरोली २।।)
मोतीलाल सेठ, मानव शरीर रचना, २००, क्रा०, देश सेवा मण्डल, इलाहाबाद १।।=)
रंगीलाल, ब्रजविहार, पु० मु०, ३२०, रायल, श्याम काशी प्रेस, मथुरा ४)
रतनकुमार जैन, भारतीय प्रमण्डल अधिनियम, २२५, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस ४)
रतनकुमार जैन, भारतीय वाणिज्य विधान, १०००, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस १२।।)
रामगोपाल शर्मा व रामनारायण वर्मा, नवीन चित्रकला, पु० मु०, ४४, क्रा०, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा ।।।)
रामगोपाल शर्मा व रामनारायण वर्मा, नवीन पुस्तक माला भाग १, ३६, क्रा०, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा ।=)
रामगोपाल शर्मा व रामनारायण वर्मा, नवीन पुस्तक कला भाग २, ७२, क्रा०, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा ।।)
राव साहब जी० एस० आप्टे, वी० आर० मुरंगे, भौतिक और रसायन शास्त्र, २१२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २।।।)
राहुल सांकृत्यायन, सरदार पृथ्वीसिंह, पु० मु०, २७८, क्रा०, ज्ञानमण्डल लि०, बनारस ३।।)
लाला बहादुरलाल, तात्कालिक चिकित्सा, पु० मु०, १५२, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ १।।।)
वा० वि० भागवत, प्रारम्भिक रसायन शास्त्र, ४६४, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ३)
विजयानन्द त्रिपाठी, अनु०, रामचरित मानस, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस ३०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद व्यास, गीता विष्णु सहस्त्रनाम, गीता प्रेस, गोरखपुर

सम्पूर्णानन्द, व्रात्यकाण्ड (अथर्ववेद), मोतीलाल बनारसीदास, बनारस

सी० जिनराजदास, अनु० बी० केशवचन्द्र, थिऑसफी का व्यवहार दर्शन, ७२, आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस

सुदर्शन सिंह, श्री कृष्ण चरित्र, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस

त्रिया चरित्र, पु० मु०, रायल, श्यामकाशी प्रेस, मथुरा

हिन्दी की उत्कृष्टतम पुस्तकों के लिए

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद

को लिखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला कदम !

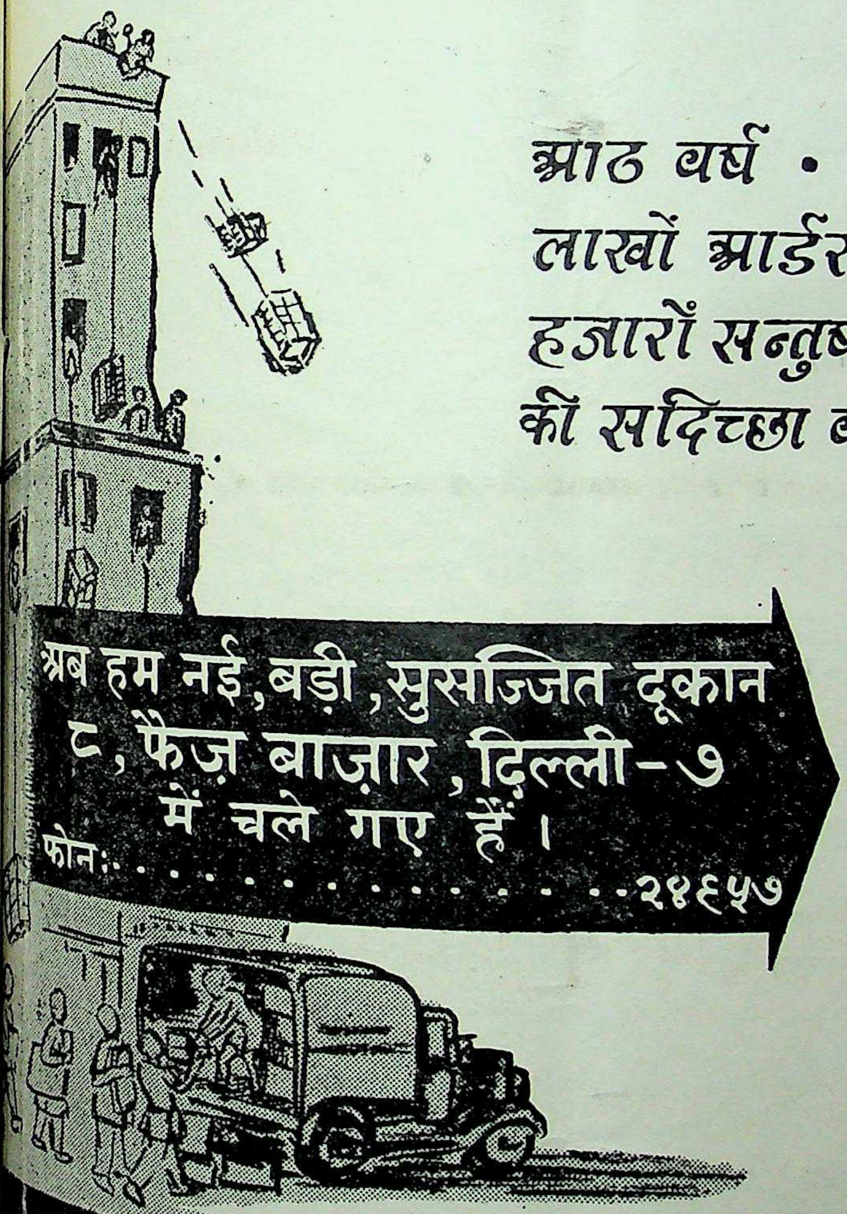

आठ वर्ष . . .
लाखों आर्डर . . .
हजारों सन्तुष्ट ग्राहकों
की सदिच्छा व शुभकामना ने

हमारे पिछले कार्यालय की चारदीवारी को हमारे विस्तृत कार्य-क्षेत्र के लिए बहुत छोटा बना दिया।

अब हम नई, बड़ी, सुसज्जित दूकान
८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-७
में चले गए हैं।
फोन:............ ..२४६५७

हिन्दी पुस्तकों की आवश्यकता-पूर्ति के लिए बृहत्तम भाण्डार

राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-७ | १५-ए, महात्मा गांधी रोड, इलाहाबाद-१ | हिमालय हाउस, हार्नबी रोड, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहाती पुस्तक भण्डार के प्रमुख प्रकाशन

टैक्निकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक	१०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड	६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग	४)
४. इलैक्ट्रिक बैटरीज	३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज	१)
६. इलैक्ट्रिकल सुपरवाइज़र परीक्षा पेपर्स	३)
७. सुपरवाइजर तथा वायरमैन परीक्षा प्रश्नोत्तर	३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज सम्पूर्ण दोनों भाग	६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड	१०)
१०. आयल इंजन गाइड	६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड	४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड	६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक)	६)
१४. घरेलू बिजली तथा रेडियो मास्टर	२॥)
१५. मोटर कार वायरिंग	४॥)
१६. टाँका लगाने का ज्ञान	२॥)
१७. छोटे डायनुमो तथा इलैक्ट्रिक मोटर बनाना	३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईडिंग	६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड	३)
२०. वर्कशाप गाइड अथवा फिटर ट्रेनिंग	३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग	६)
२३. स्टीम बायलर्स और इन्जन्स	६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स	१०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन)	४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ीसाज़ी	४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग (साईकिल मरम्मत)	२॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग	२॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग	४॥)
३२. फाउण्डी प्रैक्टिस (ढलाई का काम)	६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४॥)
३४. वीविंग गाइड	४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा	२॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड	३॥)

३७. लो कॉस्ट हाउसिंग टैक्निक (इंग्लिश)
३८. जन्त्री पैमाइश चौब (लकड़ी के माप की जन्त्री)
३९. मोटर कार इन्स्ट्रक्टर
४०. मोटर ड्राइविंग
४१. मोटर साइकिल गाइड
४२. मोटर मैकेनिक टीचर
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ़ रेडियो

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी
२. प्लास्टिक गाइड
३. बूट पालिश
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना)
५. कन्फैक्शनर
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल)
७. बेकरी बहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक)
८. अचार चटनी मुरब्बा
९. पैन्ट्री का काम
१०. चित्रकारी अथवा मुसब्बरी
११. परफ्यूमरी मास्टर
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी)
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार
१४. हलवाई मास्टर
१५. तम्बाकू का कारोबार (तम्बाकू की दूकान)
१६. पान की दूकान
१७. मोमबत्ती का व्यापार
१८. मुँह देखने के शीशे बनाना (आईना साज़ी)
१९. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना
२०. वीविंग केल्कुलेशन
२१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई, छपाई और धुलाई
२२. कपड़े की बनावट और उसके डिज़ाइन
२३. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार
२४. लॉंड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)
२५. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग
२६. शर्बत विज्ञान
२७. बुक बाइंडिंग
२८. दर्जी मास्टर

पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

गुरुकुल कांग

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

हिन्दी की
१००० उत्कृष्टतम पुस्तकों का

सूची-विशेषांक

२० अक्तूबर, १९५५ को प्रकाशित होगा

●

सम्पादन-समिति

श्री इलाचन्द्र जोशी
श्री कृष्णाचार्य (नैशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता)
श्री श्रीनिवास अग्रवाल (किताब महल, प्रयाग)
श्री भीमसेन (एस० चन्द एण्ड कं०, दिल्ली)

डॉ० हरदेव बाहरी
श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
श्री रामचन्द्र टंडन
श्री ओंप्रकाश

●

विज्ञापकों को अब भी समय है कि अपने विज्ञापन भेजकर इस महत्त्वपूर्ण अंक में स्थान सुरक्षित करा लें।

प्रकाशन समाचार
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना के १९वें अंक की विषय-सूची

- **सम्पादकीय**
- **निबन्ध :**

हर्षनारायण	संस्कृतियों का विकास और साहित्य
डॉ० रामरतन भटनागर	मनोविश्लेषण और आधुनिक काव्य की सम्भावनाएँ
रवीन्द्र भ्रमर	पद्मावत की कथा का लोक रूप

- **प्रस्तुत प्रश्न :**

साहित्यकार का वैयक्तिक स्वातन्त्र्य और सामाजिक दायित्व

डॉ० रांगेय राघव	व्यक्ति स्वातन्त्र्य और जनहित
अमृतलाल नागर	सामाजिक विकास के नये चरण
विद्यानिवास मिश्र	व्यक्ति और समष्टि की सन्धि
सम्मतियाँ	डॉ० हरिवंशराय बच्चन, शिवचन्द्र वर्मा, बच्चनसिंह

- **अनुशीलन :**

डॉ० माताप्रसाद गुप्त	'छितहि वार्ता' : रचयिता और रचनाकाल

- **मूल्यांकन :**

बच्चनसिंह	हिन्दी नाटक, उद्भव और विकास
ओंकारनाथ	निर्गुण की कहानियाँ
अजितकुमार	धूप के धान
देवेन्द्र सत्यार्थी	छितवन की छांह
आनन्दप्रकाश दीक्षित	छायावाद की काव्य-साधना
अमृतलाल नागर	लोमड़ी का मांस
अनन्तकुमार पाषाण	हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव
केशवचन्द्र सिन्हा	बंगला और उसका साहित्य
भगवतशरण उपाध्याय	प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास

- **पुस्तक परिचय**
- **सामयिकी**

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :
: अंक १ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

गत अंक के साथ प्रकाशन समाचार ने अपने जीवन के दो वर्ष समाप्त कर लिए हैं। पत्र ने हिन्दी-संसार की जो सेवा की है और विभिन्न दिशाओं में जो प्रेरणाएँ दी हैं, वे सर्वज्ञात हैं। समय-समय पर साहित्य-सेवियों, प्रकाशकों, पुस्तकाध्यक्षों और पुस्तक-विक्रेताओं ने पत्र लिखकर हमारी नीति और उपयोगिता को सराहा है और हमें इसके सतत प्रकाशन और सामग्री को अधिकाधिक उच्चतर स्तर का करने के लिए प्रोत्साहित किया है। जो सहयोग इसे सब ओर से मिला है, उसका हम अनुग्रह मानते हैं और निश्चयबद्ध हैं कि यह पत्र हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय की सेवा में यथापूर्व लगा रहे।

गत वर्ष प्रकाशन समाचार के दो विशेषांक प्रकाशित हुए; एक सितम्बर १९५४ में तथा दूसरा फरवरी १९५५ में। हिन्दी में प्रकाशित उपन्यास, कहानी, नाटक तथा बाल-साहित्य को छोड़कर अन्य ८६ विषयों की ३३२५ पुस्तकों का सविवरण सूचीकरण सितम्बर ५४ के अंक में हुआ। फरवरी अंक में उपन्यास, कहानी तथा नाटकों की २९५४ पुस्तकों की वर्गीकृत सूची प्रकाशित हुई थी। इस प्रकार इन दो अंकों में ६२७९ पुस्तकों की सूची छपी। बाल, किशोर और प्रौढ़ोपयोगी साहित्य की सूची गत वर्ष हम नहीं प्रकाशित कर सके, लेकिन उसे भी शीघ्र ही प्रकाशित करने की इच्छा है।

इन दो विशेषांकों में सम्बन्धित सभी उपलब्ध साहित्य सूचीबद्ध हो गया हो, यह तो नहीं है। सूची प्रकाशित होने के बाद कई लेखकों के पत्र हमारे पास आए जिनकी पुस्तकें सूची में आने से रह गई थीं। प्रकाशकों का एक उपालम्भ भी सुनने में नहीं आया, क्योंकि यदि उन्होंने अपनी सूचियाँ भेजकर इस पत्र से सहयोग किया होता तो लेखकों का उलहना भी हमें सुनने को नहीं मिलता।

इन विशेषांकों की सहायता कई राज्यों के शिक्षा विभागों ने पुस्तकों की सरकारी खरीद करते वक्त ली। दिल्ली के एक बड़े सार्वजनिक पुस्तकालय ने तो लगभग २०,००० रु० की पुस्तकें फरवरी ५५ के विशेषांक की सूचियों को उद्धृत करके ही की। अपने प्रयास को इस प्रकार काम में आते देख हमारा हर्षित होना स्वाभाविक ही है, किन्तु हम यह भी भी जानते हैं कि यदि सभी प्रकाशकों का पूर्ण सहयोग हमें मिलता चले तो इस पत्र की सार्थकता पूर्णता तक पहुँच सके।

गत वर्ष के शेष १० साधारण अंकों में कुल ८३८ नये प्रकाशनों की सूची प्रकाशित हुई जो विषयानुसार इस प्रकार थी :

अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र	२६
आलोचनात्मक, सांस्कृतिक, व्याकरण	१३४
इतिहास	११
उपन्यास	१७५
कविता	५१
कहानी	४५
धर्म, चरित्र, जीवनी	२८
नाटक	२६
बाल, किशोर, प्रौढ़ोपयोगी	१८४
मनोविज्ञान	१
विज्ञान, आयुर्वेद, भूगोल, शिक्षाशास्त्र	२१
विविध	१३३
	८३८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य के अनुसार इन पुस्तकों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार है :

१) रुपये से कम की पुस्तकें	२३६
१) रुपये से २) रुपये तक की पुस्तकें	२१६
२) रुपये से ३) रुपये तक की पुस्तकें	१५३
३) रुपये से ४) रुपये तक की पुस्तकें	७८
४) रुपये से ५) रुपये तक की पुस्तकें	६४
५) रुपये से अधिक मूल्य की पुस्तकें	८८
	८३८

प्रकाशन समाचार के तृतीय वर्ष के प्रवेश के साथ-साथ यह शुभ संवाद सुनने को मिला है कि अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ और हाल ही में बनारस में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रकाशक सम्मेलन (बनारस) के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने मन्त्रणा की है कि दोनों संस्थाओं का एकीकरण हो ताकि प्रकाशन-व्यवसाय के हित में सब लोग मिलकर पहले से अधिक बल और सतर्कता से कार्य कर सकें। हमारा आरम्भ से ही यह मन्तव्य रहा है कि जिस उद्देश्य को हमें पूरा करना है, उसमें न सिर्फ एक से अधिक संस्था के लिए स्थान नहीं है, वरन् दो संस्थाओं का होना कार्य के सुचारु रूप में परिचालित होने में बाधक सिद्ध होता है। स्वाभाविक है कि इस विचार-धारा के सर्वमान्य होने पर हमें प्रसन्नता हो; दोनों संस्थाओं के कार्यकर्ता, जिनके प्रयास इस ओर निर्दिष्ट हैं, प्रकाशन समाचार की ओर से बधाई के पात्र हैं।

एकीकरण की बातचीत की जो मुख्य बातें तय हो रही हैं, वे इस प्रकार हैं : सम्मिलित संस्था का नाम वही रहे जो अब है, अर्थात् अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ। सदस्यता का प्रवेश और वार्षिक शुल्क भी यथापूर्व रहे। एक नई 'उपसदस्यता' के लिए संस्था में स्थान बनाया जाय जिनसे ११) का वार्षिक शुल्क लिया जाय, लेकिन जिन्हें मताधिकार न मिले; दोनों संस्थाओं के वर्तमान सदस्य संघ के सदस्य समझे जायँ। दोनों संस्थाओं के एक सम्मिलित अधिवेशन में वर्तमान विधानों का संशोधित रूप स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया जाय तथा तदुपरान्त जो आगामी वर्ष के लिए शुल्क भरें, वे चुनाव में भाग लें। विधान में संशोधन के लिए दोनों संस्थाओं की ओर से अधिकृत एक उपसमिति १८ सितम्बर ५५ को बनारस में मिली भी है तथा सम्मिलित अधिवेशन में इसी उपसमिति के सुझावों को मान्यता दी जायगी।

यदि यह सब कार्यवाही बिना किसी बाधा के होती तो प्रयाग में नवम्बर ५५ के प्रथम सप्ताह में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के नये, बलशाली रूप का जन्म होगा।

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २॥)

मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन !

अवधी-कोष

संपादक : श्री रामाज्ञा द्विवेदी

- जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम चरण है।
- इसमें मूल शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनसे बनने वाले संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि तथा विभिन्न स्थानों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिये गए हैं। इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।
- व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोक-गीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरणों से कोष की उपयोगिता और बढ़ गई है।
- कोष नितांत संग्रहणीय है।

रायल अठपेजी आकार :: २५६ पृष्ठ :: ऐंटिक कागज सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

प्रकाशन-पुरस्कार

भारत सरकार ने पुस्तकों एवं अन्य प्रकाशनों के डिज़ा-
न व छपाई में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कारों और पारि-
षिकों का इस वर्ष से एक नया आयोजन किया है
सका पूर्ण विवरण, सरकारी विज्ञप्ति के शब्दों में, नीचे
या जा रहा है। आशा है प्रकाशक एवं मुद्रक इस राज-
य प्रोत्साहन से लाभ उठाएँगे।

गत कुछ वर्षों में इस देश के मुद्रण उद्योग द्वारा की गई
गति और उत्पादन के एक उच्च स्तर की प्राप्ति को देखते
र अनुभव किया गया है कि इस क्षेत्र में भावी प्रगति को
त्साहन देने के लिए प्रति वर्ष सर्वोत्तम कृतियों को वार्षिक
स्कारों के रूप में राज्य द्वारा मान्यता देना उचित है।

मुद्रण और डिज़ाइनों की उत्कृष्टता के लिए प्रकाशन-
रस्कारों की स्थापना की योजना सूचना और रेडियो मन्त्रालय
रा बनाई गई है और इसी वर्ष से इस योजना को
र्यान्वित किया जायगा। १९५५ के पुरस्कारों के लिए भारत
रकार के सूचना और रेडियो मन्त्रालय द्वारा आयोजित
तियोगिता में प्रकाशनों की निम्नलिखित श्रेणियों को चुना
ना प्रस्तावित है :

१. बालकों की सर्वोत्कृष्ट पुस्तक
२. चित्रों वाली सर्वोत्कृष्ट पुस्तक
३. चित्ररहित सर्वोत्कृष्ट पुस्तक
४. भारतीय भाषा में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट पुस्तक
५. भारत में बने हुए कागज पर छपी सर्वोत्कृष्ट पुस्तक

श्रेणी (१), (२) और (३) के अन्तर्गत प्राप्त पुस्तकों में
र्वोत्कृष्ट पुस्तकों पर, चाहे वे किसी भी भाषा में हों, पुरस्कार
दिये जायँगे। भारतीय भाषा में प्रकाशित सर्वोत्कृष्ट पुस्तक,
र्थात् श्रेणी (४) के अन्तर्गत पुरस्कार पाने वाली पुस्तक को
हिन्दी की सभी पुस्तकों अथवा प्रादेशिक भारतीय भाषाओं
की पुस्तकों में से चुना जायगा।

चूँकि भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रकाशनों की यह प्रथम प्रतियोगिता है, अतः स्वतन्त्रता के बाद प्रकाशित सभी पुस्तकों पर १९५५ के पुरस्कारों के लिए विचार किया जायगा। प्रत्येक श्रेणी में दो पुरस्कार होंगे : (१) प्रकाशक अथवा डिज़ाइनर को और (२) दूसरा मुद्रक को।

दर्शनीय प्रचार सामग्री के मुद्रण व डिज़ाइनों में किये गए अच्छे काम को देखते हुए, निम्नलिखित श्रेणियों में सर्वोत्कृष्ट प्रकाशित सामग्री पर भी पुरस्कार दिये जायँगे :

१. पब्लिसिटी फोल्डर्स
   (अ) लैटर प्रेस
   (ब) ऑफसेट
२. पब्लिसिटी पोस्टर्स
   (अ) लैटर प्रेस
   (ब) ऑफसेट
३. एक और अनेक तहों के कैलेण्डर
४. उपयोग और भेंट के लिए डायरियाँ
५. पत्र-पत्रिकाएँ
६. अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्र
७. कास्टिंग के लिए उपयुक्त सर्वोत्कृष्ट देवनागरी टाइप

छपाई और डिज़ाइन के आधार पर उपर्युक्त श्रेणियों के अन्तर्गत प्राप्त कृतियों पर निर्णय किया जायगा। सोने और चाँदी के पदकों के रूप में तथा प्रशंसा-पत्रों के रूप में अतिरिक्त पुरस्कार प्रदान करना सोचा गया है।

मुद्रकों प्रकाशकों, विज्ञापनदाताओं, विज्ञापन-एजेंसियों और कमर्शियल आर्ट स्टूडियोज से उनकी कृतियाँ आमन्त्रित हैं। पुरस्कारों और पारितोषिकों का निर्णय करने के लिए योग्य निर्णायकों, सरकार और व्यापार के प्रतिनिधियों का एक बोर्ड बनाया जायगा।

नई दिल्ली में अक्टूबर १९५५ के अन्तिम सप्ताह में जब कि यूनेस्को द्वारा आयोजित पुस्तकालय परिषद् हो रहा होगा, इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्राप्त कृतियों की एक प्रदर्शनी की जायगी।

३ अक्तूबर १९५५ अथवा उससे पूर्व ही इस मन्त्रालय को प्रतियोगिता के लिए अपनी कृतियाँ भेज देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिएँ। कृतियाँ निम्नलिखित पते पर भेजी जानी चाहिएँ : श्री वी० पद्मनाभन, डिप्टी एडवर्टाइज़िंग कन्सलटैंट, एडवर्टाइज़िंग ब्रांच, मिनिस्ट्री ऑफ इन्फर्मेशन एण्ड ब्रॉडकॉस्टिंग, ब्लॉक नं० २, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली।

◆ ◆ ◆

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के एक शिष्ट मण्डल ने यातायात मन्त्री श्री जगजीवनराम से फरवरी ५५ के अन्त में भेंट की थी और मांग की थी कि पुस्तकों के पैकेटों के लिए डाक की दरें कम की जायँ। भारतीय प्रकाशन और पुस्तक-व्यवसाय के लिए यह हर्ष का विषय है कि भारत-सरकार ने २८ अगस्त ५५ को समिति के निर्माण की घोषणा की है जो पुस्तकों के सम्बन्ध में डाक की दरों को घटाने के प्रश्न पर विचार करेगी तथा 'पुस्तकों' की डाक विभाग के लिए कानूनी व्याख्या भी करेगी। इस समिति के छः सदस्य हैं : लोक-सभा के सदस्य श्री एन० राचिया और श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, श्री सदानन्द भत्कल, मन्त्री फ़ेडरेशन ऑफ़ इण्डियन पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स ऐसोसिएशन, बम्बई, तथा रामचन्द्र टण्डन, प्रधान, अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ। विभागीय अधिकारी श्री सी० वी० कन्निंघम। सीनियर डिप्टी डायरेक्टर जनरल ऑफ पोस्ट्स एण्ड टेलिग्राफ्स) इस समिति के अध्यक्ष होंगे। समिति शीघ्र ही अपना कार्य आरम्भ करेगी।

◆ ◆ ◆

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के अन्य शिष्ट-मण्डल ने रेलवे मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री से १ मार्च ५५ को भेंट करके माँग की थी कि पुस्तकों के लिए रेल के भाड़े में कमी की जाय। रेलवे बोर्ड ने संघ को अपने २५ अगस्त ५५ के पत्र द्वारा सूचना दी है कि १ सितम्बर ५५ से मालगाड़ी द्वारा भेजी जाने वाली पुस्तकों के बंडलों के लिए भाड़े में १२वीं क्लास आर० आर० से घटाकर ६वीं क्लास आर० आर० तक कमी कर दी गई है। २० मन से कम वज़न के माल पर ६३/४ प्रतिशत का सरचार्ज लिया जाता रहेगा। रेलवे बोर्ड ने सूचना दी है कि सवारी गाड़ी से भेजी जाने वाली पुस्तकों के लिए भाड़ा कम करना सम्भव नहीं है।

◆ ◆ ◆

साहित्यकार संसद, प्रयाग, के तत्वावधान में नई साहित्यकार नाम की मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ है, जिसका सम्पादन कवयित्री श्रीमती महादेवी तथा उपन्यासकार श्री इलाचन्द्र जोशी कर रहे हैं। के इन दो मूर्धन्य लेखकों के सम्पादन में पत्रिका को ख्याति-प्राप्त लेखकों का सहयोग प्राप्त है। तीन अंक शित हो चुके हैं, और पत्रिका वितरण की दृष्टि से उन्नति कर रही है। वार्षिक मूल्य १०) है और अंक का १)।

◆ ◆ ◆

मधुबनी (दरभंगा) में पुस्तक-सदन के नाम से हिन्दी पुस्तकों की एक नई दूकान खुली है। प्रकाशक अपनी सूची आदि भेजकर इनसे सम्पर्क स्थापित करें।

◆ ◆ ◆

मालवीय पुस्तक केन्द्र के नाम से लखनऊ (नई दिल्ली अमीनाबाद) में भी हिन्दी-पुस्तकों की एक नई खुली है जहाँ हिन्दी का श्रेष्ठ साहित्य रखने का किया जाता है। प्रकाशक उन्हें भी अपनी प्रकाशन-सूची भेजा करें।

◆ ◆ ◆

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ जिस 'अन्त प्रकाशक संघ' का सदस्य बना है, उसका मूल उद्दे प्रकार है :

"भाषण और मुद्रण के क्षेत्र में विचार-स्वातन्त्र्य के आत्मिक जीवन और उसकी बौद्धिक प्रक्रिया का केन्द्र है। उस स्वतन्त्रता के अभाव में मनुष्य का और बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाता है, जिसका परिणाम सम्पूर्ण साहित्य—मानसिक-प्रक्रिया के रूप—पर भी पड़ता है। अतएव ऐसे समस्त लोग विचार, भाषण और मुद्रण की स्वतन्त्रता के महत्त्व को झते हैं, (प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता भी) उन्हें कि वे संगठित होकर उस स्वतन्त्रता की उपलब्धि के प्रयास करें और यदि उस पर कोई प्रतिबन्ध लगाया तो उसका सम्मिलित रूप में विरोध करें।

"अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक-संघ का आधारभूत उद्दे है कि उसके द्वारा देश-विदेश में स्वतन्त्र चिन्तन करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…कारों और विचारकों की कृतियों को प्रकाशित और …शित करने के अधिकार का समर्थन और संरक्षण किया …। इसके अतिरिक्त उसका यह कर्तव्य है कि जहाँ कहीं … स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगाया जाय या लगाए जाने … आशंका हो, वे उसका डटकर विरोध करे।"

◈ ◈ ◈

मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद् की ओर से सन् …५५-५६ में निम्नलिखित विषयों की हिन्दी और मराठी …कों पर उनके सामने दी गई राशि पुरस्कार के रूप में …न की जायगी—

अखिल भारतीय पुरस्कार

१. समीक्षाशास्त्र—समीक्षाशास्त्र-सम्बन्धी पुस्तकों में …तीय और पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्तों का गम्भीर विवे… होना चाहिए। पुस्तक २६ जनवरी १९५० के बाद …खी या प्रकाशित की गई हो—१,५०० रुपये।

प्रादेशिक पुरस्कार

१. प्राचीन अप्रकाशित पाण्डुलिपि का सम्पादन— …डुलिपि साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण …। आवश्यकतानुसार पाठान्तर और टिप्पणी के अतिरिक्त …चनात्मक भूमिका का रहना भी आवश्यक है—१,००० …ये।

२. किशोरों के लिए पद्य-संग्रह—पद्य-संग्रह में कवि …स्फुट रचनाओं का समावेश हो। प्रबन्ध-रचना, जिसमें …ड-काव्य भी सम्मिलित है, स्वीकार नहीं की जायगी। …ह सन् १९४७ के बाद लिखी या प्रकाशित की गई हो— …० रुपये।

३. निबन्ध-संग्रह—संग्रह स्वतन्त्र एवं विभिन्न विषयों … लिखे गए आत्मपरक निबन्धों का ही हो। लेखक के …चारों और शैली की मौलिकता को विशेष महत्त्व दिया …गा। साहित्य-समीक्षात्मक निबन्ध-संग्रह स्वीकृत नहीं …। निबन्ध-संग्रह सन् १९४७ के बाद लिखा या प्रका…शित किया गया हो—५०० रुपए।

४. रेखाचित्र संग्रह—रेखाचित्र में किसी व्यक्ति, घटना …परिस्थिति का मार्मिक तथा मनोरंजक चित्रण हो। संग्रह … १९४७ के बाद लिखा या प्रकाशित किया गया हो— … रुपये।

५. सामान्य विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक—अंग्रेजी में

स्वतन्त्रता की वर्ष-गांठ पर
इस वर्ष का अनोखा उपन्यास
वर्णसंकर के पत्र
श्री सारंगपाणि
प्रणीत
उपन्यास संसार में नवीन विचारों का
प्रकाशन।
आकर्षक रूपरेखा, स्वच्छ कागज की सजिल्द
पुस्तक का मूल्य २।)
प्रकाशक :
पुस्तकलोक
नई सड़क, दिल्ली
मुख्य वितरक :
भारतीय प्रकाशन मण्डल
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिक विज्ञान, शिल्प-शास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन आदि अनेक विषयों पर सरल और सुबोध पुस्तकें उपलब्ध हैं। हिन्दी और मराठी में इसी प्रकार की पुस्तकों की रचना को प्रोत्साहन देने के लिए यह पुरस्कार रखा गया है। पुस्तक की भाषा सरल हो और शैली मनोरंजक। यथावश्यक चित्र और चार्ट द्वारा विषय को सुगम बनाने का प्रयत्न किया गया हो। पुस्तक सन् १९५४ के बाद लिखी या प्रकाशित की गई हो — १,००० रुपये।

६. **प्रबन्ध-काव्य**—प्रबन्ध-काव्य के अन्तर्गत खण्ड-काव्य भी सम्मिलित है। पुस्तक सन् १९४७ के बाद लिखी या प्रकाशित की गई हो—१,००० रुपये।

७. **आर्थिक समस्या पर विवेचनात्मक पुस्तक**—इस पुस्तक में भारत की वर्तमान आर्थिक समस्याओं में से किसी एक अथवा अधिक समस्याओं का ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी विवेचन किया गया हो। पुस्तक सन् १९५४ के बाद लिखी या प्रकाशित की गई हो—१,००० रुपये।

८. **मध्यप्रदेश की आर्य-भाषा बोली। बोलियों का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन**- मध्यप्रदेश में आर्य-भाषा परिवार की बोलियाँ पाई जाती हैं, जैसे बुन्देली, हलबी, निमाड़ी, छत्तीसगढ़ी आदि। इन बोलियों में से किसी एक अथवा अधिक बोलियों पर भाषा शास्त्र की दृष्टि से अध्ययनात्मक सामग्री हो। पुस्तक २६ जनवरी १९५० के बाद लिखी या प्रकाशित की गई हो—१,००० रुपये।

नियमावली

१. प्रादेशिक पुरस्कार केवल मध्यप्रदेश के निवासी लेखकों को ही दिये जायँगे। 'निवासी' शब्द की व्याख्या वही होगी, जो अन्य सरकारी मामलों में 'बोनाफाईड रेसीडेंट' की होती है। इस आशय का एक प्रमाणपत्र भेजना आवश्यक है।

२. प्रत्येक पुरस्कार, हिन्दी और मराठी की पुस्तकों पर अलग-अलग दिया जायगा।

३. किसी भी विषय पर आवश्यकतानुसार उतनी ही राशि के एक से अधिक पुरस्कार दिये जा सकते हैं।

४. पुरस्कार के लिए पुस्तकों की मुद्रित प्रतियाँ या पाण्डुलिपियाँ भेजी जा सकती हैं। पाण्डुलिपियाँ स्वच्छ और सुवाच्य हों। प्रत्येक मुद्रित पुस्तक की चार प्रतियाँ और पाण्डुलिपि की तीन प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

५. ग्रन्थों का स्तर पर्याप्त ऊँचा होना चाहिए। पुरस्कार के लिए घोषित विषयों पर लिखे गए ग्रन्थों का ... परिषद् की अपेक्षा के अनुसार न हुआ, तो इस ... विषय पर पुरस्कार नहीं दिया जायगा।

६. पुस्तकों के आकार के सम्बन्ध में कोई सीमा नि... रित नहीं की गई है।

७. कार्यालय में आई हुई पुस्तकें यदि विषयों के अ... र्गत हुईं, तो स्वीकृत की जायँगी, अन्यथा उनका कोई ... दायित्व परिषद् पर नहीं रहेगा। यदि विषयों के अ... आने वाली पुस्तकें वापस मँगवाना हो, तो पत्र के ... पर्याप्त मुद्रांक भेजे जाने चाहिएँ। स्वीकृत पुस्तकों के स... में अन्य किसी भी प्रकार का पत्र-व्यवहार तब तक नहीं ... जायगा, जब तक कि पुरस्कार के निर्णय की घोषणा नहीं ... दी जाती।

८. पुस्तक के रास्ते में गुम जाने, खराब हो जा... देर से कार्यालय में पहुँचने आदि के सम्बन्ध में कि... प्रकार का उत्तरदायित्व परिषद् अपने ऊपर नहीं लेगी।

९. पुस्तकों के साथ निम्नलिखित फार्म में एक ... भेजा जाना चाहिए—

(१) प्रेषक का पूरा नाम (सुवाच्य अक्षरों में)—
(२) पूरा पता—
(३) भेजी गई प्रतियों की संख्या—
(४) विषय, जिसके अन्तर्गत पुस्तक भेजी गई है—
(५) प्रकाशित है अथवा नहीं—
(६) पूर्व-पुरस्कृत है अथवा नहीं—

....

प्रेषक के ह...

१०. पुरस्कार के लिए पुस्तकें दिनांक ३१ अ... १९५५ को शाम के ४ बजे के पहले परिषद् के कार्या... पहुँच जानी चाहिएँ। इस सम्बन्ध में सारा पत्र-व्य... निम्नलिखित पते पर किया जाय:—

सचिव,
मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्,
संचालनालय, भाषा विभाग,
रामदासपेठ, ना...

[शेष पृष्ठ ६१६ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के मन्त्री

आचार्य श्री शिवपूजनसहाय

गौरीशंकर गुप्त

...भूषण आचार्य श्री शिवपूजनसहाय जी साहित्य-...र के ऐसे अनोखे साधक हैं, जो आजीवन माँ भारती ...साधना में संलग्न रहे हैं। उनकी यह सतत साधना ...त्य की सेवा ही है। वे साहित्यिक तपस्वी रहे हैं और ...तथा मौन सेवा ही उनका धर्म रहा है। बिहार के हिन्दी-...ों की पिछली पीढ़ी के स्रष्टा और द्रष्टा कहलाने का श्रेय ...को ही प्राप्त है। उनका आदर्श जीवन ऋषियों के जीवन ...परम्परा का अन्तिम प्रतीक रहा है और वे हिन्दी-साहित्य ...खड़ी बोली के जीते-जागते इतिहास हैं। आधुनिक ...दी-साहित्य को अति निकट से परखने, अपने परिश्रम से ...समुन्नत करने, निखारने और उसी लगन से उसे प्रसारित ...ने में वे स्वयम् ही अपने उदाहरण रहे हैं।

हिन्दी-साहित्य के उद्यान में उसके कुशल माली के रूप ...स्व० आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी जी का ...र्भाव हुआ था और उन्होंने विविध पौधे लगाए थे; ...उनको निःस्वार्थ भाव से पनपाने का श्रेय आचार्य श्री ...पूजनसहाय जी को ही है। आचार्य द्विवेदी जी की भाँति

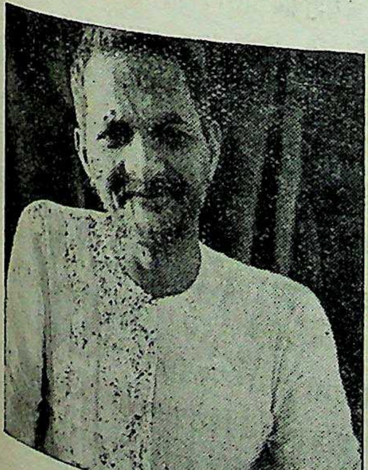

ही श्री सहायजी ने भी हिन्दी-जगत् को ऐसे अनेक शिष्य-रत्न भेंट किये हैं जिन पर हमें गर्व है। उन शिष्यों को स्वयम् श्री सहायजी कभी शिष्य के नाम से सम्बोधित नहीं करते और न वे इसका प्रचार ही चाहते हैं; किन्तु सत्य स्वयम् प्रकट होकर रहता है। यही नहीं, उनकी अनेक कृतियाँ आज दूसरों के नाम से चल रही हैं और वे गुमनाम रहकर ही हिन्दी-सेवा करते रहे हैं। अपनी आभा से दूसरों को प्रकाशित करने वाला ऐसा तपस्वी दूसरा नहीं मिलेगा। अनेक प्रकाशकों ने भी उनके इस भोलेपन का नाजायज लाभ उठाया; किन्तु वह इसकी चर्चा से भी घृणा करते हैं। क्या संसार के साहित्यिक इतिहास में इसकी कहीं तुलना है?

इतना ही नहीं, वे आभार-प्रदर्शन और आत्म-प्रचार के भी विरोधी रहे हैं और यही कारण है कि उनके आचार्यत्व की धाक हिन्दी-जगत् और उसके महारथियों में अपने-आप जमी हुई है। हिन्दी-जगत् ऐसे अजातशत्रु को पाकर गौरवान्वित हुआ है। उनके सम्पर्क में आने वाले इन सभी गुणों और विशेषताओं से परिचित हैं। उनके इन्हीं आदर्श गुणों के प्रभाव से एक बार भी संसर्ग में आने वाले व्यक्ति उनके हो जाते हैं। उनके नाम की ज्योति सर्वत्र प्रकाशित होती रही है। उनमें सचमुच एक दैवी शक्ति है। वे हिन्दी-साहित्य के मूर्तिमान शिव हैं, जिन्होंने हिन्दी के समुद्र-मन्थन से निकले विष का तो स्वयम् पान किया और अमृत दूसरों को बाँट दिया। नाम का प्रभाव कहाँ जा सकता है?

आचार्य श्री शिवपूजनसहाय जी का जन्म ग्राम उनवास, जिला शाहाबाद (बिहार) में आज से ६२ वर्ष पूर्व श्रावण कृष्ण त्रयोदशी सं० १९५० को हुआ था। उनके पिता श्री वागीश्वरीदयाल जी तथा पितामह श्री देवीदयालदास जी थे। सहायजी श्रीवास्तव कायस्थ हैं। उनके पिताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण के प्रेमी और मर्मज्ञ थे। श्री सहायजी ने उनसे रामायण का और अपने बहनोई श्री कालिकाप्रसाद जी से 'रसकुसुमाकर', 'रामचन्द्रिका' और 'महाभारत' का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप वे हिन्दी की ओर विशेष उन्मुख हुए। सहायजी का दाम्पत्य-जीवन विशेष सुखमय नहीं रहा। तीन विवाह हुए; किन्तु तीनों पत्नियाँ चल बसीं।

गाँव के ही गुरुद्वारे में प्रारम्भिक अध्ययन करने के अनन्तर एक मौलवी साहब के मदरसे में उन्होंने उर्दू-फारसी की शिक्षा प्राप्त की। सन् १९०३ में आरास्थित कायस्थ जुबिली एकेडेमी की सातवीं कक्षा में प्रविष्ट होकर वे वहीं से मैट्रिक हुए। मैट्रिक पास करने के पश्चात् सन् १९१३ में वे केवल एक वर्ष तक काशी में अदालती नकलनवीसी कर प्रयाग में आरानिवासी कुमार श्री देवेन्द्रप्रसाद जैन के साथ पुस्तक-लेखन का कार्य करने लगे। वहीं उन्होंने अरण्डेल साहब के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वे टु सर्विस' का 'सेवा धर्म' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया और 'प्रेम पुष्पांजलि', 'त्रिवेणी' तथा 'प्रेम-कली' आदि पुस्तकें तैयार कीं। प्रयाग में भी वे अधिक समय तक नहीं रहे और वहाँ से स्व० पण्डित रामदहिन मिश्र के पास पटना चले गए। वहाँ उन्होंने 'हिन्दी-ट्रांसलेशन' तथा 'विहार का विहार' नामक पुस्तकें लिखीं।

आठवीं कक्षा में अध्ययन करते हुए ही श्री सहायजी आरा की नागरी प्रचारिणी सभा में जाया करते थे। परिणाम-स्वरूप वे स्व० पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्मा सरीखे विद्वानों के सम्पर्क में आए और लेखन-कार्य की ओर विशेष प्रवृत्त हुए। स्व० पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्मा को सहायजी अपना साहित्य-गुरु मानते हैं और उन्हीं से उन्हें सम्पादन-कला का विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ। श्री सहायजी की प्रारम्भिक रचनाएँ तत्कालीन 'लक्ष्मी', 'मनोरंजन' तथा 'पाटलिपुत्र' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं।

सन् '१६ में वे आरा कायस्थ जुबिली एकेडेमी में हिन्दी-अध्यापक नियुक्त हुए और दो वर्ष बाद सन् '१८ में वहीं के टाऊन स्कूल में चले गए। यहाँ से उनके साहित्यिक जीवन का विकास आरम्भ होता है। वे आरा नागरी प्रचारिणी सभा की सेवा में संलग्न हो गए और उसके सहायक-मन्त्री तथा संयुक्त मन्त्री भी चुने गए। 'सभा' के माध्यम से उनकी साहित्यिक प्रवृत्ति और प्रतिभा का बड़ा ही सुन्दर विकास हुआ और वे एक प्रमुख साहित्यकार के रूप में [illegible] जगत् में उपस्थित हुए।

उन्होंने सन् '२० के ऐतिहासिक असहयोग-आ[illegible] में भी भाग लिया और राष्ट्रीय विद्यालय में हिन्दी के अ[illegible] नियुक्त हुए। बाद में उन्होंने 'मारवाड़ी-सुधार' नाम[illegible] मासिक-पत्र निकाला और उसके लिए उनको विशे[illegible] करनी पड़ी। सन् '२१ में उन्होंने अपने ग्राम उन[illegible] मकान में अपने स्व० पितृदेव की पुण्यस्मृति में 'श्रीवा[illegible] पुस्तकालय' की स्थापना की, जहाँ ग्रन्थों और समाचा[illegible] का विशाल संग्रह है। दो साल बाद सन् '२३ में 'मा[illegible] सुधार' पत्र 'मारवाड़ी-अग्रवाल सभा' के मुखपत्र 'मा[illegible] अग्रवाल' में मिल जाने पर वे 'मतवाला' में चले ग[illegible] उसके लिए उन्होंने अटूट परिश्रम किया। 'मतवा[illegible] अतिरिक्त कुछ समय तक उन्होंने 'मौजी', 'गोल[illegible]' 'आदर्श', 'उपन्यास-तरंग' तथा 'समन्वय' इत्यादि [illegible] सम्पादन भी किया।

सन् '२५ के करीब श्री सहायजी को 'माधुरी' के [illegible] कीय विभाग में लखनऊ जाना पड़ा, परन्तु अल्प[illegible] पश्चात् वे पुनः 'मतवाला'-मण्डल में आ गए। [illegible] में लहरिया सराय के 'पुस्तक भण्डार' के साहित्[illegible] के सम्पादनार्थ वे काशी भी आए थे। सन् '३० में [illegible] सुल्तानगंज से प्रकाशित 'गंगा' का सम्पादन भी [illegible] किन्तु कुछ कारणों से वे वहाँ एक वर्ष से अधिक न [illegible] और पुनः काशी चले आए। यहाँ आकर श्री [illegible] 'हंस' और 'जागरण' का सम्पादन करने लगे। य[illegible] स्व० श्री जयशंकर प्रसाद जी और उपन्यास-सम्राट् [illegible] जी सरीखी विभूतियों का सम्पर्क हुआ। उल्लेख[illegible] 'प्रसाद' जी ने अपनी 'कामायनी' की पाण्डुलिपि [illegible] के पूर्व श्री सहायजी को संशोधनार्थ दी थी। स्व० [illegible] जी के सर्वप्रथम उपन्यास 'रंगभूमि' का संशोधन भी [illegible] ने किया था। हमारे राष्ट्रपति माननीय श्री डॉ० राजे[illegible] जी की 'आत्मकथा' को भी सजाने-सँवारने का श्रेय [illegible] को ही है। काशी में रहते हुए उन्होंने स्थानीय [illegible] प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'द्विवेदी-अभिनन्दन-[illegible] सम्पादनादि कार्यों में विशेष सहयोग दिया था। वे [illegible] अभिनन्दन ग्रन्थ' आदि का भी सफल सम्पादन कर [illegible] अलौकिक प्रतिभा का परिचय दे चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

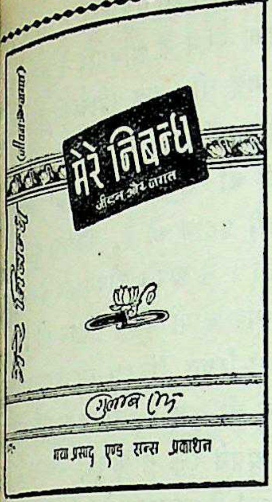

हिन्दी जगत् के प्रसिद्ध निबन्धकार

बा० गुलाब राय, एम० ए० का

नवीन निबन्ध-संग्रह

"मेरे निबन्ध"

(जीवन और जगत्)

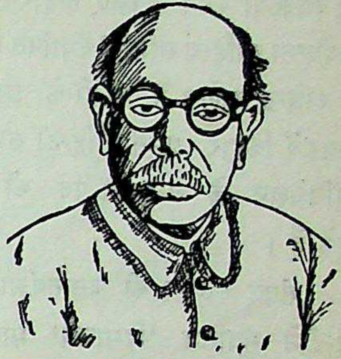

पृष्ठ २४४ आकार $\frac{१८ \times २२}{८}$ मूल्य ५)

इन निबन्धों में जीवन और जगत् से प्राप्त अनुभूतियाँ हैं और उन पर लेखक की शैली और उसमें व्यक्त होने वाले व्यक्तित्व की छाप है। यही पुस्तक के शीर्षक की सार्थकता है। इन निबन्धों के विषय जीवन के सभी क्षेत्रों से लिये गए हैं। किन्तु उन सब में एक साहित्यिक एवम् सरस शैली का चमत्कार है। शैली के प्रसाद से असाहित्यिक विषय भी साहित्यिक बन गए हैं।

'हिन्दी के व्योवृद्ध विद्वान् बाबू गुलाबराय जी के वैयक्तिक, व्यापार सम्बन्धी, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक तथा सांस्कृतिक निबन्धों का यह ग्रन्थ संग्रह है। इन निबन्धों में अपने जीवन के दीर्घकालीन अनुभव, चिन्तन, विस्तृत अध्ययन और उसके उपयोग की अद्भुत क्षमता तो उन्होंने प्रकट की है साथ ही हास्य का सुन्दर सामंजस्य उपस्थित कर देना उनका एक विशेष कौशल है।...........हमारा विश्वास है इस संग्रह का स्वागत होगा और इससे लोग ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी प्राप्त करेंगे।'

—'प्रकाशन समाचार'

'श्रीमान् द्वारा भेजा हुआ निबन्ध संग्रह 'मेरे निबन्ध' मिल गया है। आपकी सरस सजीव लेखनी इस वृद्ध अवस्था में और भी अधिक सरस हो गई।...........

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

अध्यक्ष हिन्दी विभाग–हिन्दू विश्वविद्यालय––बनारस

'मेरे निबन्ध' शीर्षक आपका निबन्ध संग्रह प्रयाग से घूमकर यहाँ मिला। इनके पढ़ने में बचपन की उन आम की टोकरियों का आनन्द आया जिनमें खट्टे, मीठे, गद्दर, पतले रस के व गूदे वाले गरिष्ठ आम बारी-बारी से खाने को मिला करते थे। आपको हार्दिक बधाई व धन्यवाद।

—धीरेन्द्र वर्मा

'मेरे निबन्ध' आपने भेजकर बड़ी कृपा की। मैं अस्वस्थ रहा हूँ, और इस पुस्तक के पढ़ने से मैं अपने रोग को कुछ समय तक भुला सका। "शिवतेरक्षति" इससे हुई। हिन्दी निबन्धों के लिखने वालों के तो आप आचार्य हैं ही! Charles Lamb और Robert Lynd के Essays में जो मज़ा आता है उससे अधिक मजा आपके निबन्धों में है।

—अमरनाथ झा

प्रकाशक—

गया प्रसाद एण्ड सन्स

आगरा — कानपुर — ग्वालियर — जयपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् '३४ में सहायजी ग्रन्थों के सम्पादन तथा 'बालक' पत्र की व्यवस्था करने के लिए लहरियासराय गए। वहाँ उन्होंने 'ज्योत्स्ना साहित्य समिति' स्थापित की। सन् '३६ में वे छपरा के राजेन्द्र कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त किये गए। सत्रहवें बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पटना-अधिवेशन के सभापति-पद को भी वे सुशोभित कर चुके हैं।

संवत् २००२ की वसन्तपंचमी से लगभग १ वर्ष तक उन्होंने सुप्रसिद्ध 'हिमालय' मासिक का सम्पादन किया। 'बालक' के सम्पादन से 'हिमालय'-सरीखी श्रेष्ठ तथा अनूठी साहित्यिक पत्रिका को हिन्दी-जगत् के सम्मुख उपस्थित करने का श्रेय उनको ही है। सहायजी ने 'हिमालय' का जैसा सम्पादन किया वैसा हिन्दी में पहले नहीं हुआ था। उस पत्र में उन्होंने अपनी सर्वथा नवीन और अनोखी सूझ-बूझ का परिचय दिया था। वस्तुतः उनकी वह साहित्यिक देन अभिनव थी और चिरस्मरणीय रहेगी। 'हिमालय' में जैसी उच्चकोटि की सामग्री रहती थी वैसी अब दुर्लभ ही है। पत्रकारिता में उपस्थित किये गए उनके मौलिक आदर्श आज भी अक्षुण्ण हैं और सदा रहेंगे। सहायजी के 'हिमा-लय' से हटते ही उसकी सारी श्री एक तरह से समाप्त हो और उसका स्थान ग्रहण करने के अभिप्राय से अनेक पत्रों में होड़ सी लग गई थी। पत्र-पत्रिकाओं तथा ग्रन्थों के अतिरिक्त भी उन्होंने कई ग्रन्थ-रत्न हिन्दी-जग भेंट किये हैं। हिन्दी को उन्होंने एक ऐसी शक्ति स्फूर्तिमयी विशिष्ट शैली प्रदान की है, जिसका दूसरा हरण नहीं मिल सकता। वे अपने जीवन भर लेखन, सम्पादन तथा साहित्यिक कार्यों में ही संलग्न रहे हैं।

आजकल वे पटना-स्थित 'बिहार-राष्ट्रभाषा-परि मन्त्री हैं, और परिषद् जो-कुछ है, उसका सम्पूर्ण श्रेय ही है। उन्होंने उसे अपने रक्त से सींचकर बढ़ाया है। षद् के मुखपत्र 'साहित्य' के सम्पादन के अतिरिक्त भी जी पर अनेक भार रहते हैं। अत्यधिक कार्य-भार के पिछले वर्षों उनकी अस्वस्थता चरम सीमा पर पहुँ थी; किन्तु ईश्वरानुकंप से उन्हें स्वास्थ्य-लाभ हो गया जुलाई '५५ को वे अपने गौरवमय जीवन के ६२ वर्ष ६३वें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। भगवान् विश्व प्रार्थना है कि सहायजी पूर्णरूपेण स्वस्थ-सानन्द र चिरकाल तक हिन्दी का गौरव बढ़ाते रहें।

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)
भाग ३ (ग्राम-गीत)
भाग ४ (उर्दू)

मूल्य प्रत्येक भाग ८)

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड
३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों के महान् पुस्तकालय

द्वारकाप्रसाद शास्त्री

लेखक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय के पुस्तकाध्यक्ष हैं। आशा है श्रेष्ठ पुस्तकालयों का परिचय देने वाला यह लेख दिलचस्पी से पढ़ा जायगा।

...य अपनी साधना और चिन्तन के द्वारा जो-कुछ ज्ञाना-...रता है, उसे ग्रन्थों के रूप में व्यक्त करता है। इस ...र के अनेक ग्रन्थों के संग्रह से विशाल पुस्तकालयों का ...ण होता है। प्रकृति और समाज में विद्यमान अनेक ...स्थाएँ मनुष्य के हृदय में सदा कुछ-न-कुछ विस्मय और ...हल पैदा करके उसे जिज्ञासु बना देती हैं और इस प्रकार ...ज्ञानार्जन की ओर प्रवृत्त होता है। ज्ञान की इस जिज्ञासा ...पूर्ति पुस्तकालयों द्वारा सरलता से हो सकती है, क्योंकि ...कालय मानव-जीवन की वेदी पर स्थापित वीणावादिनि ...स्वती की ज्ञान-प्रतिमा हैं। इनमें अनन्त प्रकाश की असीम ...ति सतत प्रज्वलित रहती है। पुस्तकालय जिज्ञासु विज्ञ-...ों के लिए तीर्थ स्थान के रूप में हैं। इनमें निर्माण और ...न्ति के बीज सदा सुरक्षित रहते हैं। विदेशों में पुस्तकालयों ...सम्बन्ध में इस तथ्य का अनुभव किया गया और उनकी ...चना और विकास के भगीरथ प्रयास किये गए। इस समय ...मेरिका, ब्रिटेन और रूस सत्ता-सम्पन्न राष्ट्र माने जाते ...। अतः इन तीनों देशों में जो महान् पुस्तकालय हैं, उनके ...म्बन्ध की चर्चा इस लेख में की जायगी।

अमेरिका का कांग्रेस पुस्तकालय, रूस का लेनिन पुस्तका-...य और ब्रिटेन का ब्रिटिश म्युजियम पुस्तकालय अपने-अपने ...श के महान् पुस्तकालय हैं। इनमें कौनसा पुस्तकालय श्रेष्ठ-...है, इसका निर्णय करना सरल नहीं है। प्रत्येक की ...नी अपनी विशेषताएँ हैं। अब हम संक्षेप में इसकी चर्चा ...गे।

...मेरिका का कांग्रेस पुस्तकालय

यह पुस्तकालय वाशिंगटन में स्थित है। इसके दो ...ालीशान भवन हैं। ये दो भवन ५.३ एकड़ से अधिक भूमि घेरे हुए हैं। इनके भीतरी धरातल का क्षेत्रफल लगभग ४० एकड़ है। अनुमानतः इन भवनों के निर्माण में १ करोड़ ६० लाख डालर खर्च किया गया है। इनमें ४ करोड़ से भी अधिक विविध ज्ञानप्रद वस्तुओं का संग्रह किया गया है। इस पुस्तकालय में प्रतिवर्ष ६० ७० लाख नई पुस्तकें आती हैं। पृथ्वी के प्रत्येक भाग से इस पुस्तकालय का सम्बन्ध सम्वाद-दाताओं, टेलीफोन तथा रेडियोग्राम आदि की सहायता से स्थापित किया गया है। इस पुस्तकालय में संसार के प्रत्येक भाग से पुस्तकें, पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, संगीत के रेकार्ड और हस्तलिखित ग्रन्थों एवं फोटो प्रतिलिपियाँ निरन्तर प्राप्त होती रहती हैं। पुस्तकालय के कर्मठ प्रतिनिधि प्रत्येक देश में हैं जो उत्साहपूर्वक इस पुस्तकालय के भण्डार की अभिवृद्धि करते रहते हैं। इस पुस्तकालय में प्रत्येक भाषा, प्रत्येक देश और प्रत्येक विषय की सामग्री का संग्रह उपलब्ध है।

व्यवस्था एवं सुविधाएँ—इस पुस्तकालय का द्वार बिना किसी भेद-भाव या रोक-टोक के सभी देश के लोगों के लिए खुला रहता है। यहाँ किसी परिचय-पत्र की आवश्यकता नहीं पड़ती। यहाँ २३ वाचनालय हैं जिनमें १६ वर्ष से अधिक अवस्था का कोई भी व्यक्ति बैठकर अपनी इच्छानुसार पुस्तकालय का उपयोग कर सकता है। यहाँ पर २२५ विशेष अध्ययन कक्ष और ४०० अध्ययन-पीठिकाएँ हैं। इस पुस्तकालय में एक विशिष्ट अनुसन्धान विभाग है। उसमें १०० से अधिक विद्वान् अनुशीलन करते रहते हैं। इस पुस्तकालय में किसी भी मनुष्य का नाम और उसके निवास-स्थान का पता बताने से ही उसके सम्बन्ध में आश्चर्यजनक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इस पुस्तकालय में लगभग १४०० समाचार पत्र और २६,००० पत्रिकाएँ आती हैं। प्रातः ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे से रात्रि १० बजे तक प्रतिदिन १० कर्मचारी दर्शकों के प्रश्नों का उत्तर देते रहते हैं।

इतने बड़े विशाल पुस्तकालय में पुस्तकों को एक भवन से दूसरे भवन तक ले जाने और ले आने का काम न्युमेटिक ट्यूब पद्धति से होता है। पुस्तकालय के दोनों भवनों में ७४८ फीट का अन्तर है, किन्तु इस मशीन की सुविधा के कारण इतनी दूर पुस्तकें ले जाने में केवल ३० सेकेण्ड लगते हैं।

इस पुस्तकालय से पुस्तकें घर ले जाकर पढ़ने का नियम नहीं है। लेकिन यहाँ से लगभग १५०० पुस्तकालयों को दुष्प्राप्य पुस्तकें थोड़े समय के लिए उधार दे दी जाती हैं। इस पुस्तकालय का हस्तलिखित ग्रन्थों का विभाग दर्शनीय है। इस विभाग में इस समय १ करोड़ ३३ लाख हस्त-लिखित पोथियाँ हैं। इसी विभाग में बाइबिल की एक दुष्प्राप्य प्रति है जो कि तीन लाख डालर में खरीदी गई थी। इस विभाग की सुरक्षा और संरक्षण का विशेष रूप से प्रबन्ध है।

इस पुस्तकालय में हिटलर और आर० निकोलस के निजी पुस्तकालय भी हैं। इस पुस्तकालय में अध्यात्म-विद्या, जादू-टोना, भूत-प्रेत, तन्त्र-मन्त्र आदि से सम्बन्धित लगभग ५ हजार पुस्तकें हैं। यहाँ १७वीं और १८वीं शताब्दी में प्रकाशित समाचार-पत्रों का भी एक बड़ा संग्रह है। संसार की सब से प्राचीन ६७५ ई० की छपी हुई चीनी भाषा की एक पुस्तक यहाँ संग्रहीत है। १६०७ ई० में एक साइबेरिया के व्यापारी से उसका निजी पुस्तकालय खरीद लिया गया था जिससे यहाँ रूसी भाषा के ग्रन्थों का भी एक विशाल संग्रह है। इन सामग्रियों के अतिरिक्त इस पुस्तकालय में गोयरिंग से सम्बन्धित ८१ एल्बम एवं पेरिस शान्ति सम्मेलन के प्रतिनिधियों के चित्र एवं हजारों कार्टून एवं २० लाख के लगभग रिकार्ड संग्रहीत हैं।

इस विशाल पुस्तकालय का अध्यक्ष होना एक गौरव की वस्तु है। इस पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष को १५,००० डालर वार्षिक वेतन मिलता है। इस पुस्तकालय में लगभग २५०० वैतनिक कर्मचारी काम करते हैं।

ब्रिटेन का ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय

यह पुस्तकालय लन्दन में स्थित है। इसकी स्थापना सन् १६५३ ई० में हुई थी। सर हैन्स स्लोयन नामक ... का एक निजी पुस्तकालय था। राजा ने २०,००० ... उस पुस्तकालय को खरीद लिया। राजा को आर्थर ... का पुस्तकालय, कौहिनियन पुस्तकालय एवं हारलि... लिखित ग्रन्थों का संग्रह प्राप्त हो गया। सन् १७... आर्थर एडवर्ड ने अपना निजी संग्रह भी राजा को दे ... अब पुस्तकालय के लिए विशाल भवन की आवश्यकता ... लाटरी द्वारा धन एकत्र करके 'मान्टेग्यू भवन' खरी... गया और उसमें पुस्तकालय व्यवस्थित किया गया। ... बाद अनेक विद्वान् और राजाओं के निजी पुस्तकाल... पुस्तकालय को भेंट स्वरूप मिलते गए। पुस्तकों की ... उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण स्थान कम पड़ता गया। ... १८५२ ई० में 'स्मर्क भवन' बनवाया गया। फिर भी ... दूर न हुई तो १६०५ ई० में समाचार-पत्रों के संग्रहार्थ ... स्थान बनाया गया और १६४६ में संगीत-संग्रह और ... राइट पुस्तकों की प्राप्ति के लिए अलग स्थान की व्यवस्था ... जिससे कुछ सुविधा हो गई। लेकिन यह महान् पुस्त... सुरसा की भाँति अपने मुख का विस्तार करता ही जा ... अतः निकट भविष्य में ही इसे और विशाल ... आवश्यकता पड़ेगी।

छपी पुस्तकें — इस समय इस पुस्तकालय में ... ५० लाख पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में लगभग ८००० ... और ३००० विदेशी समाचार-पत्र आते हैं। पुस्तकों की ... का सबसे बड़ा साधन कापीराइट ऐक्ट है। सन् १६... में जो कापीराइट ऐक्ट बना था उसके अनुसार ... प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति ब्रिटिश म्यूजियम में नि... भेजना अनिवार्य हो गया।

इस पुस्तकालय में हस्तलिखित ग्रन्थों के ३ ... हैं—(१) कौहम, (२) हारलियम, (३) स्लोयन ... विभागों में अनेक दुष्प्राप्य और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ संग्रहीत ... ये संग्रह भी उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं। इनमें भी अनेक ... द्वारा निरन्तर दुष्प्राप्य संग्रह भेंट स्वरूप प्राप्त होते ... हैं। इस समय इन विभागों में ६०,००० पाण्डुलिपि...

ब्रिटिश म्युजियम में प्राच्य साहित्य की मुद्रित और ... लिखित पुस्तकों का भी अच्छा संग्रह है। यहाँ हिन्दू, ... चीनी, संस्कृत और पाली के बहुमूल्य ग्रन्थ संग्रहीत ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्य भाषाओं की मुद्रित पुस्तकों की संख्या २५०,००० और ...हस्तलिपियों की संख्या ५०,००० है। प्रायः ४००० पुस्तकें ...तिवर्ष प्राच्य विभाग में बढ़ती हैं।

ब्रिटिश म्यूजियम में पढ़ने की व्यवस्था बहुत अच्छी है। ...नी सीट का नम्बर और पुस्तक का नाम लिख देने मात्र ...पुस्तक तुरन्त प्राप्त हो जाती है। विश्व के प्रायः सभी ...हान् राजनीतिज्ञ और विद्वान् इस पुस्तकालय के विद्यार्थी ...हे हैं। कार्ल मार्क्स ने तो इस पुस्तकालय में बैठकर ही ...'कैपिटल' पुस्तक की रचना की थी। पाठकों की सुविधा के ...लिए ब्रिटिश म्यूजियम की ओर से मुद्रित एवं हस्तलिखित ...न्थों की सूचियाँ छाप दी गई हैं।

इस पुस्तकालय में लगभग २५० कर्मचारी काम करते ...। यहाँ के किसी विभाग का अध्यक्ष होना भी बड़े गौरव ...की बात है। इस पुस्तकालय का प्रबन्ध एक ट्रस्ट द्वारा होता ... जिसमें विद्वान् एवं संभ्रान्त परिवार के लोग अधिकारी हैं।

...लेनिन पुस्तकालय

यह पुस्तकालय मास्को में स्थित है। इसका भवन बहुत ...शानदार और बड़ा है। संगमरमर के ऊँचे-ऊँचे खम्भे हैं ...और दीवारों एवं छतों पर पैनल (लकड़ी के तख्ते) गड़े हुए ...हैं। यहाँ का वातावरण बहुत शान्त रहता है। पाठक बड़ी ...तन्मयता से अध्ययन में जुटे रहते हैं। इस पुस्तकालय में ...प्रतिदिन लगभग ५००० पाठक आते हैं।

इस पुस्तकालय में १ करोड़ ७० लाख पुस्तकें और पत्रि...काएँ हैं। नियमानुसार सोवियत संघ में प्रकाशित प्रत्येक पुस्तक ...की तीन प्रतियाँ इस लाइब्रेरी को मुफ्त मिलती हैं। पाठकों की ...सुविधा के लिए पुस्तकालय अनेक प्रकार की उपयोगी सूचियाँ ...छापता है। इस पुस्तकालय से पुस्तकें घर पर ले जाने ...की सुविधा नहीं दी जाती। कुछ सरकारी सदस्य एवं प्रोफे...सरों को विशेष परिस्थिति में पुस्तकें घर पर पढ़ने के लिए ...दी जाती हैं। यह पुस्तकालय प्रतिदिन ९ बजे सवेरे से ११॥ ...बजे रात तक खुला रहता है। यहाँ १८०० कर्मचारी कार्य ...करते हैं। पाठकों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं ...लिया जाता। यहाँ के कर्मचारियों का न्यूनतम वेतन ६०० ...रूबल है। इस पुस्तकालय में हस्तलिखित ग्रन्थों का भी संग्रह ...है जिसमें अधिकांश रूसी भाषा के ग्रन्थ हैं।

इस पुस्तकालय में भारतीय भाषाओं की पुस्तकें भी हैं। संस्कृत और हिन्दी के ग्रन्थों का भी अप-टू-डेट संग्रह है। टैगोर, प्रेमचन्द और कालिदास आदि के सेट संग्रहीत हैं। इस पुस्तकालय में १६० भाषाओं की पुस्तकें हैं। इस पुस्तकालय की ऊपरी मंजिल में एक प्रदर्शिनी विभाग है जिसको देखने से रूसी पुस्तकों का पूरा इतिहास एक मिनट में समझ में आ जाता है। इसी में जर्मन कवि गेटे की प्राचीन प्रतियाँ हैं। इस पुस्तकालय के तहखाने में हस्तलिखित एवं दुष्प्राप्य ग्रन्थों का संग्रह है। गीता, महाभारत और नल दमयन्ती के रूसी अनुवाद हैं। एक पुस्तक तो केवल १ इंच की है। बिजली के 'कैन्वैयर' के द्वारा पुस्तकें एक स्थान से दूसरे स्थान को जाती हैं। इस पुस्तकालय में पुस्तकालय-विज्ञान की ट्रेनिंग भी दी जाती है। इस पुस्तकालय में खड़ा हुआ व्यक्ति ऐसा लगता है मानो वह पुस्तकों के हिमालय के सामने खड़ा हुआ हो।

श्री द्वारकाप्रसाद लिखित

(१) हिन्दी का सर्वाधिक विवाद-ग्रस्त उपन्यास
"घेरे के बाहर" मू० ७)

(२) मनोवैज्ञानिक उपन्यास
"सुनील-एक असफल आदमी" मू० ५)

(३) यौन एवं गृह-मनोविज्ञान की सर्वोत्तम पुस्तक
"पति-पत्नी में भी प्रेम सम्भव है" मू० २॥)

(४) नागपुर, सागर तथा आगरा विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत
"मानव मनोविज्ञान" मू० ६)

(५) अनुपम हास्य-उपन्यास
"गुनाह बेलज़्ज़त" मू० २॥)

(६) बच्चों की यौन-शिक्षा-सम्बन्धी माता-पिताओं की पथ-प्रदर्शिका
"अपने बच्चे से कैसे कहूँ ?" मू० १॥)

(नोट—नम्बर ४, ५, ६, के मुख्य वितरक नीलाभ प्रकाशन प्रयाग हैं।)

प्राप्ति स्थान
राजकमल प्रकाशन
दिल्ली, प्रयाग, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

ग्राभा : परम संवेदनशीला, पति द्वारा परित्यक्ता लेकिन साहस से पूर्ण 'ग्राभा' की यथार्थ मनोविश्लेषणात्मक कहानी को लेकर श्री प्रभाकर माचवे के इस नवीनतम लघु उपन्यास का ताना-बाना बुना गया है। चरित्र खूब उभरे हैं। उपन्यास कई अर्थों में नवीनता लिये है; शैली, कथा-वस्तु, आज के युग के प्रति प्रतिक्रियाएँ सभी अर्वाचीन हैं। लेखक के विभिन्न साहित्यों से परिचय की साक्षी से यह रोचक उपन्यास भरा हुआ है। प्रकाशक साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद हैं। पृष्ठ-संख्या क्राउन साइज में ११०, सजिल्द, मूल्य २)।

◈ ◈ ◈

काठ का उल्लू और कबूतर : केशवचन्द्र वर्मा का पुराने किस्से-कहानी के ढंग में लिखा गया व्यंग्यपूर्ण औपन्यासिक प्रयोग। काठ के उल्लू और कबूतर के संवाद में प्रेम, राजनीति, संस्कृति आदि आज के नये जमाने की कोई 'समस्या' अछूती नहीं रही है। लकड़ी-जाति के पीढ़ा, खटिया, ईंधन, टेबुल, मसहरी के बाँसों, डण्डों और छड़ियों के षड्यन्त्र को वर्ग-संघर्ष का प्रतीक बनाने का प्रयास हल्की चुटकियों से भरे हुए इस उपन्यास से अपने में ही हास्यास्पद होकर रह गया है। भाषा मुहावरेदार, सजीव और उर्दू की चुस्ती लिये हुए है। साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित डिमाई साइज के १६५ पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४) है।

◈ ◈ ◈

निकष : डॉ० धर्मवीर भारती तथा श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा के सम्पादकत्व में निकष नाम से 'समकालीन प्रबुद्ध लेखकों की उत्कृष्ट नई कृतियों का अर्द्धवार्षिक संकलन' प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ है। प्रथम संकलन में एक लघु-उपन्यास, १० कहानियाँ, दो अप्रकाशित उपन्यासों के अंश, एक नाटक, तीन हास्य-व्यंग्यपूर्ण लेख, १५ कवियों की नवीन कृतियाँ तथा चार विभिन्न लेख हैं। हिन्दी के सा[illegible] नवीन विचार-धारा के रचनात्मक साहि[illegible] नियमित संकलन का यह सत्प्रयास अभिनन्द[illegible] एक ही संग्रह में कविता, कहानी, नाटक, उ[illegible] और निबन्ध के क्षेत्र में नये लेखकों की प्रतिनिधि-र[illegible] देखने को मिल जाती हैं। ऐसे संकलन का क्षेत्र यदि औ[illegible] विस्तृत किया जा सकता तो बेहतर होता, लेकिन उस [illegible] दकीय नीति को शायद यह अपेक्षित नहीं है जो [illegible] विचारधारा के लेखकों पर यह आरोप लगाती है कि वे [illegible] को "यन्त्र या पशु बनाना चाहते हैं।" इस सुमुद्रित [illegible] का प्रकाशन, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद ने किय[illegible] डिमाई आकार में २२४ पृष्ठ हैं। मूल्य ३) मात्र है। [illegible] के दो संकलनों का एक साथ ग्राहक बनने वालों के [illegible] वार्षिक मूल्य ५) है।

◈ ◈ ◈

हिन्दू सभ्यता : डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी की अंग्रेज़ी [illegible] प्रसिद्ध पुस्तक Hindu Civilization का यह प्रा[illegible] और अधिकृत अनुवाद राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इ[illegible]बाद, बम्बई, से प्रकाशित हुआ है। भारतीय संस्[illegible] प्रकाण्ड अध्येता डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने अप[illegible] डॉ० मुकर्जी की इस पुस्तक का अनुवाद करके प्रस्तुत हि[illegible] संस्करण को मूल के समान महत्त्वपूर्ण बना दिया है। [illegible] कितने ही अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी में नये सुबोध पर्याय [illegible] स्थिर किये हैं। अंग्रेजी पुस्तक में जो संस्कृत अथवा [illegible] के अवतरणों का अनुवाद था, उन्हें मूल रूप में दे दिया [illegible] है। कहीं कहीं नई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक खोजें [illegible] अनुवादक ने पिछले ज्ञात तथ्यों के स्थान पर देकर पुस्[illegible] अद्यतन कर दिया है और प्राचीन भारतीय इतिहास [illegible] संस्कृति के विद्यार्थियों के लिए इसकी उपयोगिता और [illegible] णिकता में वृद्धि कर दी है। पुस्तक में आर्ट पेपर पर छ[illegible] १० चित्र, तथा विभिन्न कालों के ऐतिहासिक भूगो[illegible] परिचय देने वाले ३ मानचित्र हैं। अन्त में दी गई [illegible] क्रमणिका इसके अध्ययन में सहायक होगी। डिमाई अ[illegible] के ३५० पृष्ठों के इस सुरुचि-मुद्रणपूर्ण ग्रन्थ का मूल्य [illegible] मात्र है।

◈ ◈ ◈

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय अर्थशास्त्र : लगभग पिछले ३० वर्षों से ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित प्रोफ़ेसर जी० बी० जथार तथा एस० जी० बेरी कृत Indian Economics के दो खण्डों को विद्यार्थियों द्वारा भारतीय अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक माना गया है। भारत के सभी विश्वविद्यालयों के अध्यापकों ने इस विषय को पढ़ते हुए इसी पुस्तक को विस्तार से पढ़ा है। राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ने इस विख्यात कृति का हिन्दी-अनुवाद प्रस्तुत करके भारतीय अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक भारी अभाव को पूरा किया है। नवीनतम तथ्य एवं आंकड़े देकर हिन्दी संस्करण के प्रस्तुतकर्ता श्री डी० एस० कुशवाहा ने पुस्तक की सामयिक उपयोगिता को अक्षुण्ण कर दिया है। अनुवाद अत्यधिक सुलभ और प्रामाणिक है। गया कॉलेज, गया में इसी विषय के प्राध्यापक श्री एन० सी० अग्रवाल के शब्दों में "ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता उसकी आधुनिकता है। इसकी रचना-शैली सरल, शुद्ध, सुरुचिपूर्ण और आकर्षक है। इस विषय की दूसरी पुस्तक में इतनी आधुनिकता देखने में नहीं आई है।" डिमाई आकार के ५१४ पृष्ठ; पक्की जिल्द, प्रथम खण्ड का मूल्य ७) मात्र है।

⋄ ⋄ ⋄

अर्हत का शाप : प्रस्तुत कृति जान ओ' हिन्द का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। जिसकी कथावस्तु हर्षकालीन उत्तरी भारत और विशेष रूप से कान्यकुब्ज से सम्बद्ध है। सम्राट् हर्ष सारे भारत में एकछत्र राज्य स्थापित करना चाहते हैं। किन्तु गौड़ नरेश शशांक उनके मार्ग में व्यवधान उपस्थित करता है। दोनों प्रतिद्वन्द्वियों के बीच अनेक घात-प्रतिघात व षड्यन्त्रों की अभि-नियोजना होती है, जिसकी अनेक घटनाएँ नालन्दा विश्वविद्यालय की पृष्ठभूमि में घटित होती हैं। इस ऐतिहासिक रोमान्स का कथानक अत्यन्त सुगठित, चरित्रांकन सजीव और भाषा प्रवाहपूर्ण है। १६४ पृष्ठ के इस उपन्यास का मूल्य ३॥) है और इसे दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

The Book Traders Monthly

14, Jadu Mittra Lane, Calcutta-4 (India).

BTM IS A MONTHLY PUBLICATION DEVOTED TO BOOK TRADE, PRINTING & BINDING

Every issue usually contains :

Editorial : features & articles.

Publications of the month : A list of books published in English & Bengali in West Bengal and other States of India during the previous month.

Want List : rare books for sale and purchase.

Window on the Book World :

Pick 'O' Press :

Foreign & Home news of the trade :

Recent Arrivals : (list of important books imported)

Book Reviews : (English & Bengali)

Do You Know : (General Knowledge)

Suggestion of books and periodicals for libraries and general readers.

Names and address : of all public libraries, schools, colleges booksellers, publishers, etc. are the regular features of the journal.

Letters to the Editor : etc., etc.,

Subscription

INLAND	**FOREIGN**
Rs. 2/8/-	*Sh. 7/6d or $ 1.00*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं धरती पंजाब की : इस पुस्तक में श्री नरेन्द्र धीर के ११ फुटकर लेखों का संग्रह है, जिनमें लेखक ने 'संक्षेप में सम्पूर्ण पंजाब के इतिहास को देते हुए उसके उपलब्ध साहित्य की सभी वस्तुओं को मनोयोग से टटोला है।' पंजाबी-भाषा और उसकी उप-भाषाओं की उन्नति व विकास पर गवषेणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है और विशेष रूप से पंजाबी लोक-साहित्य के सभी अंगों व पहलुओं पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला गया है। १६६ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य ३॥) है, जिसे **क्रान्ति प्रकाशन,** खन्ना (पंजाब) ने प्रकाशित किया है।

शरत् के नारी पात्र में श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ने शरत् के नारी-पात्रों का उनकी रचनाओं की समयानुक्रमणिका के आधार पर आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस दिशा में यह प्रथम विस्तृत एवं वैज्ञानिक अध्ययन है। शरत् का नारी के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण था, जिसके आधार पर उन्होंने अपने उपन्यास व कहानियों में करुणा-ममता से भरपूर अमर नारी-पात्रों का निर्माण किया था। लेखक ने शरत् बाबू के उक्त दृष्टिकोण की व्याख्या के साथ उनके नारी-चरित्रों के उलझे सूत्रों को सुलझाने और बोधगम्य बनाने का स्तुत्य प्रयास किया है। ३०५ पृ० की इस पुस्तक का मूल्य ४॥) है और यह **भारतीय ज्ञानपीठ,** काशी के द्वारा प्रकाशित की गई है।

आधुनिक समीक्षा—कुछ समस्याएँ : इसमें डॉ० देवराज के पिछले तीन-चार वर्षों में लिखे गए १७ आलोचनात्मक निबन्ध संग्रहीत हैं। ये निबन्ध प्रमुखतया सैद्धान्तिक हैं और इनके द्वारा लेखक ने 'साहित्य और आलोचना-सम्बन्धी कतिपय प्राचीन मान्यताओं को आँकते हुए अपने मन्तव्यों का प्रतिपादन' किया है। 'प्राचीन साहित्य-शास्त्र की उपयोगिता', 'होनहार लेखकों से', 'प्रयोगवादी काव्य-विश्लेषण और सुझाव', 'हिन्दी-साहित्य की वर्तमान स्थिति : एक निवेदन', 'हिन्दी उपन्यास की कुछ समस्याएँ' आदि निबन्धों की उपयोगिता आज के हिन्दी-साहित्य के लिए अपरिमेय है और उनमें प्रतिपादित मौलिक दृष्टिकोण एवं विनम्र सुझावों द्वारा तत्सम्बन्धी साहित्यांगों को सम्यक् शिक्षा-निर्देशन मिलेगा, ऐसा विश्वास है। इस संग्रह को **राजपाल एण्ड संस,** दि... ने प्रकाशित किया है और इसका मूल्य ४॥) है।

रेडियो-नाट्य शिल्प : में श्री सिद्धनाथ कुमार ने रेडि... नाटक की स्वरूपगत एवं कलागत विशेषताओं का उद्... किया है। इस विवेचन के पीछे लेखक के अपने ८ व... रेडियो-नाटक लेखन के अनुभवों और अँगरेज़ी में तत्सम्... प्राप्त सामग्री का आधार है, जिसके कारण रेडियो-नाटक टेकनीक का जितना सुन्दर सैद्धान्तिक विश्लेषण किया गया... उतना ही व्यावहारिक भी। पुस्तक में रेडियो-नाटक... सीमाओं, संभावनाओं व उसके भेद-प्रभेदों पर विचार किया ही गया है, उसी के साथ-साथ उसका रंगमंच, नाट... टेलीविज़न नाटकों से पारस्परिक पार्थक्य भी दिग्दर्शित कि... गया है। १७७ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य २॥) है औ... इसे **भारतीय ज्ञानपीठ, काशी** ने प्रकाशित किया है।

साहित्य-चिन्तन : प्रस्तुत पुस्तक श्री इलाचन्द्र जोशी के... फुटकर आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। विषय की दृ... इन निबन्धों की परिधि काफ़ी व्यापक है, जिसके अन्तर्... केवल हिन्दी-साहित्य पर ही विचार किया गया है, वरन्... भारतीय भाषाओं के साहित्य—बंगला—के साथ-साथ यू... साहित्य पर भी (गेटे, सार्त्र व रोमां रोला पर लिखे... आलोचनात्मक निबन्ध इसी प्रकार के हैं) दृष्टिपात कि... गया है। इन आलोचनात्मक निबन्धों पर जोशी जी के वि... अध्ययन और मौलिक चिन्तन की पूरी छाप है। भाषा-... पर्याप्त सशक्त व प्रौढ़ है। यह संग्रह **अजन्ता प्रेस लिमि... पटना** से प्रकाशित किया गया है और इसका ... २॥।) है।

हास्य के सिद्धान्त और मानस में हास्य : इसमें हास्... की सर्वाङ्गीण विवेचना की गई है। श्री जगदीश पाण्डे... पुस्तक के ८ अध्यायों में से ६ अध्यायों में हास्य-रस... सैद्धान्तिक पहलू का अत्यन्त मार्मिक विश्लेषण किया... जिसकी विशेषता यह है कि भारतीय और पाश्चात्य दृ... दृष्टियों से विचार किया गया है। सातवें अध्याय के अन्त... 'अन्धेर नगरी' में हास्य के विषय पर विचार किया गया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : ,, ,, ३)
रेखाचित्र : ,, ,, ४)
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-१९५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५, : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द ३)
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवत शरण उपाध्याय ४)
शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथ कुमार एम० ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० १)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस--५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८वें अध्याय में 'मानस' के विभिन्न हास्य के प्रसंगों की व्याख्या की गई है। 'हिन्दी में यह अपने ढंग की अकेली पुस्तक है।' यह **मोतीलाल बनारसीदास, पटना** द्वारा प्रकाशित हुई है और ३॥) में प्राप्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

गधे : यह श्री हबीब तनवीर का लिखा हुआ एक बालोपयोगी प्रहसन है, जिसके द्वारा इस तथ्य की व्यंजना की गई है कि चारित्रिक और मानसिक गठन के सम्बन्ध में बालकों को पर्याप्त स्वतन्त्रता होनी चाहिए। प्रहसन अभिनेय है और उसकी भाषा बच्चों के उपयुक्त अत्यन्त सरल है। नाटक के अन्त में इस 'खेल की कहानी' और उसके अभिनय के लिए प्रयुक्त सामग्री की सूची देकर उसे और भी उपयोगी बना दिया गया है। ८२ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य १।) है और इसके प्रकाशक **आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली** हैं।

◈ ◈ ◈

सचित्र लोक-कथा माला में देश-विदेश के २४ विभिन्न स्थानों की लोक-कथाओं के बालोपयोगी संग्रह छप चुके हैं। इसी माला के अन्तर्गत श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा द्वारा लिखित **उत्तर भारत की लोक-कथाएँ** : शीर्षक तीन भागों में प्रकाशित हुई हैं। प्रत्येक भाग में सरल और मुहावरेदार भाषा में लिखी हुई सात सात कहानियाँ हैं। चित्र भी यथा-स्थान दिये गए हैं। प्रत्येक भाग का मूल्य १।) है। प्रकाशक **आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली**।

◈ ◈ ◈

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली : द्वारा प्रकाशित सचित्र बालोपयोगी साहित्य में चिरंजीत के लिखे दो कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। **नटखट के गीत** और **एक था राजा एक थी रानी**। इनमें सहज भाव से शिक्षा और मनोरंजन का सामान जुटाया गया है। मूल्य क्रमशः १) तथा १।) हैं। सन्तोष गार्गी द्वारा लिखित ८ सचित्र कहानियाँ **सूम का बड़ा नाम** से प्रकाशित हुई हैं। मूल्य १)। पुराणों तथा महाभारत से उपदेशप्रद कथाओं को लेकर श्री राजबहादुरसिंह ने १६ कहानियों का संग्रह **चरित्र-निर्माण की कहानियाँ** नाम से तैयार किया है। मूल्य १।)।

◈ ◈

बड़ी-बड़ी आँखें : श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा लिखित नवीनतम अतीव रोचक उपन्यास है। श्री सुमित्रानन्दन [पन्त] की राय में यह उपन्यास "क्या कला-शिल्प तथा वि[न्यास-]संयम की दृष्टि से, क्या रचना-सौष्ठव, चरित्र-चित्रण, [अनु]भूति तथा भाषा के निखार की दृष्टि से ....अश्क जी के [उप]न्यासों में निस्सन्देह अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। मानव-स्वभाव के अनुशीलन में तथा यथार्थ के उद्घाटन में ... अश्क जी को सूक्ष्म दृष्टि का वरदान मिला है, वहाँ प्रकृ[ति-]निरीक्षण तथा उसके रूप-वैचित्र्य के अंकन में भी अ[पनी] क्षमता का परिचय दिया है।...निस्सन्देह बड़ी-बड़ी आँ[खें] समझने के लिए पाठकों के पास मन की बड़ी-बड़ी आँ[खें] होनी चाहिएँ। इस अत्यन्त मनोरम कृति के लिए—[जिसे] मैं गीति-उपन्यास कहूँगा—मैं अश्क जी को भूरि-भूरि ब[धाई] देता हूँ।"

◈ ◈ ◈

अन्तःप्रान्तीय नाटकांक : 'साहित्य सन्देश' (मा[सिक] पत्रिका : ४ महात्मा गांधी मार्ग, आगरा) ने जुलाई-अ[गस्त] तथा सितम्बर ५५ में दो विशेषांक प्रकाशित किये हैं [जिनमें] नाटक तथा एकांकियों की सैद्धान्तिक विवेचना के साथ सं[स्कृत,] तमिल, मराठी, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, अंग्रेजी, ... गुजराती, राजस्थानी, उड़िया, असमिया तथा बंगा[ली] नाटकों एवं रंगमंच पर परिचयात्मक निबन्ध हैं। ये नि[बन्ध] विभिन्न भाषाओं के सुधी समीक्षकों द्वारा लिखे गए हैं, ... प्रामाणिक हैं। सितम्बर मास के नाटक परिशिष्टांक [में] हिन्दी नाटक तथा एकांकियों से सम्बन्धित पठनीय सा[मग्री] एकत्रित की गई है। "भारत के पाँच श्रेष्ठ नाटक[कार]" शीर्षक लेख श्री प्रभाकर माचवे की अध्ययनशीलता [का] परिचायक है। 'हिन्दी के नाटककार और उनके ना[टक]' शीर्षक लेख में हिन्दी के दस ख्यातिप्राप्त नाटककारों [के] रोचक संस्मरण दिए हैं। डॉ॰ राजकुमार वर्मा का सं[स्मरण] उल्लेखनीय है। इस संग्रहणीय विशेषांक का मूल्य १॥) तथा परिशिष्टांक का ।=)।

◈ ◈ ◈

नया साहित्य—नये प्रश्न : आचार्य नन्ददुलारे वाज[पेयी] के समीक्षात्मक निबन्धों का नवीनतम संग्रह है, जिसमें ... २५ विचार-प्रेरक निबन्ध लिये गए हैं। 'विवेचन ... निरूपण' खण्ड के अन्तर्गत १० तथा 'वार्ताएँ और वक्त[व्य]'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…१२ निबन्ध हैं। दो दार्शनिक निबन्ध, परिशिष्ट में 'उपन्यास-…र जैनेन्द्र' की समीक्षा तथा 'निकष' नाम से मान्य लेखक …अपना गम्भीर वक्तव्य प्रस्तुत किया है। इस महत्त्वपूर्ण …तक का प्रकाशन विद्या-मंदिर, बनारस से हुआ है तथा …डिमाई साइज़ के २६६ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ६) है।

◈ ◈ ◈

…चारमच्छ : ले० श्री शम्भूदयाल सक्सेना, प्रकाशक, नव-…ग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर मू० ६)। सक्सेना जी हिन्दी …प्रसिद्ध कथा-लेखक और उपन्यासकार हैं उनका यह बृहद् …पन्यास वस्तुतः एक नवयुवक की उसके जीवन के आधे रास्ते …की जीवन-गाथा है। संयोग और क्रम से इस उपन्यास …नायक के साथ सम्बन्धित जो पचासों युवक और अनेक …तियाँ आती हैं उनके रेखाचित्र भी लेखक ने बड़ी कुशलता …अंकित किये हैं। इस विविध तरह के पात्रों के बीच इस …पन्यास का नायक ग्रह-नक्षत्र-परिचालित व्यक्ति की तरह …योगवश अपने जीवन में आगे बढ़ता जाता है। उसकी सफ-…ता और असफलता हमारे सामाजिक जीवन की वे कड़ियाँ …हैं जो हमें जकड़े हुए हैं। लेखक ने अत्यन्त निर्लिप्त भाव से सारी …था में इस जकड़ को प्रस्तुत कर सराहनीय काम किया है।

◈ ◈ ◈

वर्णसंकर के पत्र : श्री सारंग पाणि का यह उपन्यास एक राजनीतिक नेता के व्यक्तित्व तथा राजनीतिक अनैतिकतापूर्ण जीवन को प्रस्तुत करता है। आर्थिक पराभवता की प्रतिमा 'रमोला', नेता 'बाबू जी' की जुगुप्सा को सामने रखती है। 'शर्मा' राजनीतिक छुटभइयों के हथकण्डों तथा चरित्रहीनता को हमारे सामने प्रस्तुत करने में सफल होता है। उपन्यास का नायक 'किशन' इस सारे सामाजिक कुचक्र की धुरी बनकर टूटकर रह जाता है, जब उसे अपने वर्ण-संकरत्व का पता चलता है। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पर ही, इस रहस्योद्घाटन के बाद नैतिक प्रहार हो जाता है। किशन जिस क्षितिज से खड़ा होकर समाज को देखने के लिए बाध्य कर दिया जाता है, वहाँ से उसे लगता है कि अनैतिक राजनीति ने मानव-जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों को कितना कुरूप कर दिया है। यह कृति अपनी साधारणता में भी समाज के इस कुरूप पक्ष पर किसी भी विचारशील को सोचने के लिए बाध्य करती है। पृष्ठ-संख्या १२८; मूल्य २।); प्रकाशक भारतीय प्रकाशन मण्डल, दिल्ली।

[शेष पृष्ठ ६१८ पर]

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल**—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,	अजिल्द	२॥।)
२. **यूरोपीय दर्शन**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा,	सजिल्द	३।)
३. हर्षचरित : **एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल,	,,	६॥)
४. विश्वधर्म-दर्शन—श्री साँवलिया विहारीलाल वर्मा,	,,	१३॥)
५. सार्थवाह—डॉ० मोतीचन्द्र,	,,	११)
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—डॉ० सत्यप्रकाश,	,,	८)
७. **सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन**—डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री,	,,	१४)
८. **काव्यमीमांसा (राजशेखर कृत)**—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत,	,,	६॥)
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा,	,,	८॥।)
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—डॉ० देवसहाय त्रिवेद,	,,	७।)
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर,	,,	६।।)
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—डॉ० उदयनारायण तिवारी,	,,	१३॥)
१३. **राजकीय व्यय प्रबन्ध के सिद्धान्त**—श्री गोरखनाथ सिंह,	,,	३॥)
१४. रबर—श्री फूलदेवसहाय वर्मा,	,,	७॥)
१५. ग्रह-नक्षत्र—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०,	,,	४।)
१६. नीहारिकाएँ—डॉ० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय),	,,	४।)
१७. **हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ**—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह,	,,	३)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ी-बूटियों की खोज में

श्री रमेश बेदी

शंकरदेव विद्यालंकार

श्री रमेश बेदी न केवल भारतीय औषधि-परम्परा की ज[ड़ी-] बूटियों की खोज में रहते हैं, व उनके सम्बन्ध में अन्वेषणात्मक ... लिखते हैं, वरन् उनसे सम्बन्धित साहित्य का प्रकाशन भी करते ...

पुराने जमाने की बात है। तक्षशिला गुरुकुल में वैद्य-विद्या पढ़ने वाले जीवक नामक छात्र की शिक्षा-समाप्ति पर उसके आचार्य ने परीक्षा लेने के हेतु उससे कहा—"जाओ इस विद्यापीठ की चारों दिशाओं में चार योजन तक की भूमि में उगी हुई समस्त वनस्पतियों की जाँच-पड़ताल करके बताओ कि उनमें कौन ऐसी वनस्पति है जिसका कोई उपयोग नहीं।" जीवक ने कुछ मास तक परिभ्रमण करके अपने गुरु से कहा—"भगवन्, आप द्वारा सूचित प्रदेश में एक भी ऐसी वनस्पति नहीं है जो सर्वथा निरुपयोगी हो। प्रत्येक वनस्पति का किसी-न किसी रोग में प्रयोग किया जा सकता है।" यही जीवक आगे जाकर आयुर्वेद शास्त्र का महान् आचार्य बना। यह है हमारे प्राचीन पुरखों की अध्ययन, अनुशीलन और अन्वेषण-वृत्ति का उज्ज्वल नमूना!

हमारी मातृभूमि को प्राकृतिक विभूतियों का वरदान प्राप्त है। वन-सम्पदा की दृष्टि से, विशेषतः वनस्पतियों, औषधियों और जड़ी बूटियों की दृष्टि से, तो अकेला हिमालय ही सहस्रों वनस्पतियों का लीलाधाम है। कवि कुल-गुरु कालिदास ने अपने 'कुमारसम्भव' काव्य में हिमालय को औषधियों का आकर बतलाया है। इसके अतिरिक्त विन्ध्याचल, पूर्वीघाट, पश्चिमीघाट तथा अन्य पर्वत-मालाएँ और अरण्य भी इस दृष्टि से कम समृद्ध नहीं हैं।

बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि हमारी इस अपार वन-सम्पदा की सहस्रों प्रकार की वनस्पतियों को कच्चे माल के रूप में विदेशी कम्पनियाँ जहाजों पर लाद-लादकर ले जाती हैं और वहाँ पर इस कच्चे माल का औषधि-निर्माण, रंग-निर्माण और प्रसाधन वस्तु-निर्माण के सिवाय न जाने अन्य कितने ही कामों में उपयोग किया जाता है। इतना ही नहीं, इन वनस्पतियों पर विदेशी वैज्ञानिक नवीन खो[ज] करते रहते हैं।

इधर आयुर्वेद शास्त्र को अपनी बपौती समझने [वाला] भारतीय वैद्य-समाज कूप-मण्डूक सा बना बैठा है। क[ई] तो वनस्पतियों के ठीक-ठीक स्वरूप से इतने अभिज्ञ ... अमुक संदिग्ध वनस्पतियों के विषय में पंसारी ही उनका ... मात्र आधार है। अमुक नाम से पंसारी जो भी जुली-... और विलुप्त गुण-धर्म वाली पत्तियाँ पकड़ा दे हमारे ... उसी को प्रामाणिक मानकर औषधि बना देते हैं। पाठ[क] बताएँ ऐसे संदिग्ध और लष्टम-पष्टम आधार पर ... औषधि मरीज़ को क्या लाभ पहुँचा सकती है। अनेक ... को वनस्पतियों के आकार-प्रकार तक की पहचान नहीं ... उन्होंने उन्मुक्त प्रकृति में परिभ्रमण करके वनस्पति[यों का] जीवन-संस्पर्श नहीं पाया होगा। हमारे आयुर्वेद शा[स्त्र के] पतन का यही कारण है कि उस पर नवीन अनुशीलन, ... खोज और नई पड़ताल नहीं की गई।

इधर अनेक विदेशी वनस्पति-शास्त्रियों ने भारत ... आकर इन जड़ी-बूटियों के औषध-सम्बन्धी गुण-धर्म ... के लिए तथा वैज्ञानिकों ने अन्य व्यवसायों में इनका ... प्राप्त करने के लिए भारत की पर्वत-घाटियाँ और अरण्य ... डाले हैं। कई विद्वानों ने अपने इन अविश्रान्त अन्वेषण[ों को] लिपिबद्ध करके जिज्ञासुओं के लिए सुप्राप्य भी कर दिया है।

आयुर्वेदीय वनस्पतियों को लेकर तो गवेषणा का ... अतिशय महत्त्वपूर्ण कार्य आज से बहुत पहले ही आयु[र्वेद] महा सम्मेलन द्वारा अथवा सरकार द्वारा प्रारम्भ हो [जाना] चाहिए था। भारत की प्रान्तीय भाषाओं में आयुर्वेद के ... अंग को लेकर कई महाराष्ट्रीय, बंगाली और गुजराती विद्वा[नों] ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसनीय कार्य किया है।

हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आयुर्वेद शास्त्र के वनस्पति गुण-धर्म शास्त्र वाले अंग को लेकर, हिमाचल की तराई हरिद्वार को अपना कर्म-क्षेत्र बनाकर वनस्पति शास्त्र, आयुर्वेद और आधुनिक पश्चिमी चिकित्सा-शास्त्र के ज्ञाता श्री रामेश वेदी ने एक-एक वनस्पति को लेकर एक-एक प्रामाणिक मोनोग्राफ लिखना प्रारम्भ किया हुआ है। श्री वेदी जी ने गत १५ वर्षों से भारतीय वनस्पतियों के अध्ययन, अनुशीलन, पर्यालोचन और अन्वेषण को ही अपना जीवन-व्रत बना लिया है। वे 'भारतीय द्रव्य-गुण ग्रन्थमाला' की विशाल योजना को अकेले हाथों पूरा करने में लगे हुए हैं। अब तक इस सिलसिले में वेदी जी त्रिफला, तुलसी, शहद, सोंठ, मिर्च, अंजीर, पेठा आदि ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित कर चुके हैं। आपकी इस ग्रन्थमाला के प्रकाशनों की विद्वत् समाज ने बड़ी सराहना की है। हिन्दी भाषा में यह अपने जैसा अनूठा आयोजन है। इस विशाल योजना में आप कोई ५०० ग्रन्थों को प्रकाशित करना चाहते हैं। आयुर्वेद शास्त्र के विशाल अध्ययन के अतिरिक्त हिमालय के वनों में घूम-घूमकर वनस्पतियों के जीवित संस्पर्श में रहकर उनका सर्व प्रकार का प्रत्यक्ष और प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने में आप सदा जागरूक रहते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति गुरुकुल काँगड़ी के आयुर्वेद कॉलेज में पढ़ने के दिनों से प्रारम्भ हो चुकी थी। आप जड़ी-बूटियों और वनस्पतियों का अध्ययन वनस्पति शास्त्रीय दृष्टि से भी करते हैं। इस प्रकार आपकी अध्ययन-पद्धति मूलगामी और सर्वांगीण है। विविध वनस्पतियों के इतिहास, प्रसार, गुण-धर्म, औषध रूप में उनके प्रयोग, उनका व्यापारिक महत्त्व तथा उनकी खेती आदि तक की बातों पर आप प्रकाश डालते हैं; और देश-विदेश में उनके विषय में अब तक जो भी खोजें और अध्ययन हुआ उन सबका सम्यक् आकलन आपके सभी मोनोग्राफों में रहता है। विशेषज्ञ विद्वानों और वनस्पति शास्त्रज्ञों से विचार-विमर्श करके आप अपने विषय को अधिक-से-अधिक अद्यतन (अपटूडेट) बनाने का प्रयत्न करते हैं। आपकी लिखी हुई 'लहसुन-प्याज' नामक पुस्तक का तीसरा परिवर्धित संस्करण देखिए। २२० पृष्ठों की इस पोथी में आपने देश-विदेश में लहसुन का इतिहास, उसके गुण-धर्म, चिकित्सा में उसके उपयोग, प्राचीन आचार्यों के प्रयोग, लहसुन कल्प की विविध विधियाँ, विभिन्न रोगों पर उसका प्रयोग, पशुओं के लिए लहसुन का उपयोग आदि विषयों पर विशद विवेचन किया है। विषय का प्रतिपादन ऐसे सरल, मनोरंजक और ज्ञानप्रद तरीके से किया गया है कि विशेषज्ञ और सर्व-सामान्य समान रूप से उसका आनन्द उठा सकते हैं। इसको पढ़कर कोई भी व्यक्ति लाभ उठा सकता है। आपकी 'भारतीय द्रव्य-गुण ग्रन्थ माला' के सभी ग्रन्थों की लेखन शैली इसी प्रकार की है। सबसे पहले उस वनस्पति का प्राचीन इतिहास दिया जाता है। उसके बाद प्राचीन भारतीय आचार्यों के तद्विषयक प्रयोग और विचार दिये जाते हैं। उसके बाद विभिन्न रोगों में उसके प्रयोग की विधियाँ समझाई जाती हैं। प्रत्येक प्रयोग के लिए शास्त्रीय प्रमाण और उद्धरण पेश किये जाते हैं। सभी ग्रन्थों में उस विषय की नवीनतम खोजों को समाविष्ट किया जाता है। एक-एक वनस्पति को लेकर वेदी जी ज्ञान-कोशीय पद्धति से उसका सर्वदेशीय विवरण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उनका यह प्रयत्न अनूठा और अभिनन्दनीय है। सबसे अधिक गौरव की बात तो यह है कि बिना किसी संस्था की सहायता के अकेले हाथों वे इस कार्य को पूरी निष्ठा से और श्रद्धा के साथ कर रहे हैं। देश के अनेक विद्वानों और पत्रों ने आपके इस प्रयत्न की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उत्तर-प्रदेशीय सरकार ने भी आपके परिश्रम और अन्वेषण-बुद्धि का पुरस्कार प्रदान करके समादर किया है। देहाती और शहरी लोग समान रूप से आपकी कृतियों से खूब लाभ उठा सकते हैं। हिन्दी के शास्त्रीय वाङ्मय को वेदी जी ने अपनी सुन्दर कृतियों द्वारा वास्तव में समृद्ध किया है। अतः वे हिन्दी जगत् की ओर से अभिनन्दन के पात्र हैं। हम चाहते हैं कि वेदी जी अपने संकल्प को पूर्ण करने में सफल हों और जनता का उनको पूरा-पूरा सहयोग मिले।

●

यदि आप अब तक ग्राहक न बने हों तो

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक शुल्क २॥)

आज ही मनीआर्डर द्वारा भेजकर ग्राहक बनें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

मुकुन्दगढ़, राजस्थान से श्री कृष्णदत्त शर्मा (मार्फ़त शारदा सदन इन्टर कॉलेज) लिखते हैं कि उनकी लिखित दो पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं। परिचय इस प्रकार हैं (१) भारतीय बालचर प्रदीपिका भारत स्काउट्स व गाइड्स के सदस्यों के बालचर-विभाग के लिए कोमलपद, ध्रुवपद और गुरुपद परीक्षाओं पर पूर्ण निर्देशनात्मक बातों का संग्रह; १८ विभिन्न दक्षता के पदकों का वर्णन, गीत आदि। छपकर लगभग १७५ पृष्ठ होंगे। (२) दक्षता के पदक, स्काउटों के विभिन्न विशेष पदकों को प्राप्त करने के लिए हिदायतें। हिन्दी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक।

◈ ◈ ◈

श्री दीनदयाल ओझा (आचार्यों का चौक, बीकानेर) के पास प्राचीन जैसलमेर नगर के भूगोल के सम्बन्ध में पाण्डुलिपि तैयार है जो चार वर्ष के श्रम के बाद तैयार हुई है। जो प्रकाशक इसे छापना चाहें, लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री द्वारकाप्रसाद (अमावाँ पैलेस, मसूरी) लिखते हैं : "मेरे पास निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं : घेरे के बाहर, उपन्यास, का दूसरा संस्करण, संशोधित। मानव मन, यू० पी० और बिहार के इन्टरमीडिएट के सामान्य मनोविज्ञान के सिलेबस के अनुसार लिखित। पृष्ठसंख्या लगभग २७५। इतनी सी बात, मनोवैज्ञानिक उपन्यास। जो प्रकाशक इन्हें प्रकाशित करना चाहें, लेखक से सम्पर्क स्थापित करें।"

◈ ◆ ◈

श्री राजनारायण (राजा गली, मुरादाबाद) ने हाल में दो नये अनुवाद किए हैं (१) मायनी, फ्रैंच लेखिका जार्ज सैण्ड के उपन्यास "ला पेतीन फ्रादेत्त" का अनुवाद। फ्रांस के ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि में एक करुण और आदर्श प्रेम-कहानी। (२) बेपरछाईं का आदमी, जर्मन-लेखक शामिसो की एक पुस्तक का अनुवाद। ... कथा जो बालकों और वयस्कों दोनों के ... मनोरंजक सिद्ध होगी। दोनों उपन्यास ... पुस्तकों से हिन्दी में अनूदित हैं।

◈ ◈ ◈

श्री कृष्णदत्त त्रिवेदी, ग्राम पो० ब्रह्मावली, जिला सी... सूचित करते हैं कि उनके पास 'कृष्णचरित मानस' ... महाकाव्य प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशन के इच्छुक प्रका... पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री महेन्द्र बाकलीवाल, सम्पादक 'मेरी आशा' मा... रंगशाला प्रकाशन, कानपुर, सूचित करते हैं कि उनके ... लगभग १५० पृष्ठ का 'एक पैसा-दो गुलाब' नामक क... संग्रह प्रकाशन के लिए तैयार है। जो प्रकाशक प्रका... करना चाहें पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री राजमल जैन, रिपोर्टर, विधान सभा, भोपाल ... करते हैं कि उनके पास 'नववधु' नामक एक सामाजिक उप... तैयार है। पृष्ठ संख्या : लगभग २००। इसके लिए प्रका... उनसे पत्र-व्यवहार करें।

[पृष्ठ ६०० का शेष]

११. घोषित विषयों पर लिखी हुई पुस्तकें पाठ्य-... नहीं होनी चाहिएँ।

१२. यदि प्रेषित पुस्तक केन्द्रीय शासन, राज्य ... अथवा किसी साहित्य-संस्था द्वारा पूर्व-पुरस्कृत होगी, उसे स्वीकृत नहीं किया जायगा। पुस्तक पूर्व-पुरस्कृत ... है, इस आशय का एक प्रमाणपत्र भेजना आवश्यक है।

१३. अखिल भारतीय पुरस्कार के लिए भेजे जाने ... ग्रन्थों पर, नियम १ को छोड़कर, शेष सभी नियम ... होंगे।

राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

हिन्दू सभ्यता

(ले० डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी)

की माँग विद्वानों, विद्यार्थियों व पुस्तकालयों की ओर से सतत बढ़ रही है। अपना आर्डर शीघ्र भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ

कार्यसमिति की बैठक

'अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ' की कार्य-समिति की बैठक १३ दिसम्बर, ५५ को प्रयाग में हुई। उसके निर्णय प्रकाशित किये जा रहे हैं।

...गामी अधिवेशन के स्थान एवं तिथियों के गत निर्णय ...पुनर्विचार करते हुए कार्य समिति की यह बैठक निश्चय ...ती है कि संघ का आगामी अधिवेशन प्रयाग में रविवार ...सोमवार नवम्बर '५५ दिनांक ६ और ७ को हो।

◈ ◈ ◈

कार्यसमिति की यह बैठक हाल ही में भारत-सरकार के ...-विभाग की ओर से आयोजित हिन्दी-प्रकाशनों की प्रद-...नी के विषय में क्षोभ प्रगट करती है क्योंकि न तो इस प्रद-...नी ने हिन्दी की प्रगति का प्रदर्शन किया और न आज के ...श्रेष्ठ प्रकाशनों को ही प्रदर्शन के लिए जुटा सकी। कार्य-...समिति ऐसी प्रदर्शिनी को एक तमाशे के समान ही मानती है। ...भारत-सरकार से अनुरोध किया जाता है कि भारत-सरकार का ...-विभाग हिन्दी-प्रकाशनों की एक सुनियोजित प्रदर्शिनी ...से करे तथा पुस्तकों के चुनाव और उन्हें एकत्रित करने में ...हित्य अकादमी का सक्रिय सहयोग प्राप्त करे।

◈ ◈ ◈

कार्य-समिति की यह बैठक कमीशन सम्बन्धी प्राप्त सम्म-...तियों के विश्लेषण के लिए ५०) (पचास) रुपये का व्यय ...स्वीकार करती है और श्री ओम्प्रकाश को हिदायत देती है ...प्राथमिक रिपोर्ट तैयार कराके वे श्री मार्तण्ड उपाध्याय और ...सम्बन्धी विश्लेषण-समिति के अन्य सदस्यों को सितम्बर ...से ही भेज दें। यह समिति आगामी अधिवेशन पर इस ...रिपोर्ट के आधार पर सिफ़ारिश सम्बन्धी अपने सुझाव प्रस्तुत ...।

◈ ◈ ◈

संघ के सदस्यों की सम्मिलित प्रकाशनावली को तैयार ...ने के लिए जो प्रस्ताव कार्य-समिति के सदस्यों के पास भेजा गया था, कार्य-समिति की यह बैठक उस विषय में यह निश्चय करती है कि इस सूची में आने वाले अपने प्रत्येक प्रकाशन के लिए प्रकाशक-सदस्य ।|) प्रति पुस्तक के स्थान पर ।) चार आने प्रति पुस्तक दें। अन्य निर्णय उसी प्रस्ताव के अनुसार रहेंगे। कार्य समिति का यह निर्णय भी है कि जो पुस्तक-विक्रेता इस सूची की १००० प्रतियाँ लेना चाहेंगे उनका नाम सूची के कवर पर प्रकाशित किया जायगा; मूल्य में उनसे कवर पर अलग से किया गया ब्लाक आदि का खर्च-छपाई तथा कागज़ के पैसे लिये जायँगे।

◈ ◈ ◈

पुस्तकों की सरकारी खरीद की टैंडर सिस्टम द्वारा जो अनुचित प्रथा चल रही है, संघ की ओर से उसका विरोध भारत-सरकार के वित्त-मन्त्री तक पहुँचाने के लिए कार्य-समिति की यह बैठक निम्नलिखित सदस्यों के शिष्टमण्डल का निर्माण करती है :

श्री रामचन्द्र टण्डन, श्री मार्तण्ड उपाध्याय, श्री वाचस्पति पाठक, श्री जयनाथ मिश्र, श्री रामलाल पुरी, श्री देवराज, श्री दीनानाथ, श्री ओंप्रकाश, श्री देवनारायण द्विवेदी।

लोकसभा के निम्नलिखित सदस्यों से प्रार्थना की जाय कि वे इस शिष्टमण्डल में अपनी उपस्थिति द्वारा सहयोग देकर पुस्तकों की खरीद के इस ग़लत सरकारी ढंग को हटाने में सहायक हों।

श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' श्री दीवानचन्द्र शर्मा।

प्रयाग के राय अमरनाथ से भी इस शिष्टमण्डल में सम्मिलित होने की प्रार्थना की जाय।

◈ ◈ ◈

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य-समिति की यह बैठक निश्चय करती है कि मार्च मास के लगभग प्रयाग में पुस्तकों के जैकेट्स् (कवर्स) की प्रदर्शिनी की जाय। इस प्रदर्शिनी में सहयोग देने के लिएसभी विदेशों के राजदूतों की सहायता ली जाय जो अपने-अपने देशों से पुस्तकों के सुन्दर जैकेट मँगवाकर दें तथा देश के प्रकाशकों से भी उत्कृष्ट जैकेट भेजने के लिए कहा जाय। इलाहाबाद में होने के बाद देश के विभिन्न प्रमुख प्रकाशन-केन्द्रों में इस प्रदर्शिनी को घुमाया जाय।

◈ ◈ ◈

प्रधान मन्त्री ने कार्यसमिति को अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ की सदस्यता के लिए हुए पत्र-व्यवहार को पढ़कर सुनाया। कार्य-समिति का निश्चय है कि सदस्यता का जो शुल्क अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ की कार्य-समिति भारत के लिए नियुक्त करे, उसे स्वीकार कर लिया जाय तथा संघ उस संस्था का सदस्य बन जाय।

◈ ◈ ◈

प्रधान मन्त्री ने कार्यसमिति को सूचना दी कि भारत-सरकार के डाक व तार-विभाग के मन्त्रालय ने पुस्तकों के पैकटों के लिए डाक की दरें कम करने के लिए पाँच व्यक्तियों की एक समिति की नियुक्ति की है जिसमें संघ के प्रधान श्रीरामचन्द्र टण्डन को भी मनोनीत किया गया है। रेलवे-विभाग ने भी संघ के कार्यालय को सूचना दी है कि मालगाड़ी से पुस्तकों के बंडलों में भाड़े की दर-१२वीं क्लास R.R. से कम करके ६वीं क्लास R.R. कर दी गई है, परन्तु ६$\frac{1}{4}$ प्रतिशत का सरचार्ज २० मन से कम वजन के बंडलों पर लिया जाता रहेगा। रेलवे विभाग ने सवारी गाड़ी द्वारा भेजी जाने वाली पुस्तकों के भाड़े में कमी करने में अपनी असमर्थता जताई है।

[पृष्ठ ६१३ का शेष]

धूप के धान : नई कविता के विशिष्ट प्रतिनिधि श्री गि[रिजा] कुमार माथुर का यह तीसरा कविता संग्रह जिसमें १९[..] से लेकर १९५४ तक की उनकी प्रमुख रचनाएँ संग्रहीत [...] वस्तु और शिल्प को नया रूप देने वाले इस संवेदनशील [...] की ४५ कविताएँ इस संग्रह में हैं। प्रयोगवादी कवि[...] पाई जाने वाली ऐंद्रिय अनुभूति भी स्पष्ट है। [...] के अभावों एवं कठोर संघर्ष की अभिव्यक्ति इसी भाव[...] पर होकर यथार्थ से किंचित् भटक जाती है, लेकिन [...] कविताओं में अभीप्सित रस की कमी नहीं होती। भार[तीय] ज्ञानपीठ, बनारस, द्वारा प्रकाशित १५२ पृष्ठों की पुस्त[क का] मूल्य ३) है।

◈ ◈ ◈

सुन्दर तथा आकर्षक

छपाई

के

लिए

नवीन प्रेस

फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

...ला प्रेस, इलाहाबाद

—...म क्या खावें, गंगा प्रसाद उपाध्याय, पु० मु०, १॥)

...किताब घर, ग्वालियर

—...व सरिता मन्थन, श्री रामस्वरूप पथिक, १॥)

...तरुण भारत ग्रन्थावली, इलाहाबाद

—...दीर्घ जीवन का रहस्य, प्रो० विनयमोहन शर्मा, १॥)

...नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ

—अचला, श्रीमती कुसुम प्यारी देवी, ३॥)

—...फूल और कलियाँ, सम्पादक श्री दुर्गाशंकर मिश्र, ३॥)

—...रसखान और उनकी कविता, श्री दुर्गाशंकर मिश्र, ४)

—...सम्राट् के आँसू, श्री वीरभानुसिंह प्रताप, ४)

...नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

—आखरी ठोकर, श्री सत्यदेव शर्मा, ३)

—...जापान की कहानियाँ, श्री जगन्नाथ प्रभाकर, १)

—...दुखियारी, मोपासां, अनु० श्री नूरनबी अब्बासी, ४)

...बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता

—...सेवा और त्याग, श्री गुलाबरत्न वाजपेयी

...भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद

—...चन्द्रलोक का कैदी, श्री नकाबपोश भेदी, १)

...रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता

—...रवीन्द्र साहित्य भाग २७, अनु०श्री धन्यकुमार जैन

—...रवीन्द्र साहित्य भाग ७, अनु० श्री धन्यकुमार जैन

—'रासमणि का लड़का' आदि ७ कहानियाँ तथा तपोवन-निबन्ध, पु० मु०, श्री धन्यकुमार जैन

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद

—भूकम्प, श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव

—अवनि, श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव

—भू सैद्धान्तिक, श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव, २)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—कहावतों की कहानियाँ, श्री महावीरप्रसाद पोद्दार, २)

—गांधी अभिनन्दन ग्रन्थ, पु० मु०, सम्पादक सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ३)

—तेल की कहानी, श्री कुलभूषण, ।=)

—बुद्ध चरित, अश्वघोष, रूपान्तरकार डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ।=)

—तट के बन्धन, श्री विष्णु प्रभाकर, २)

—तीर्थराज प्रयाग, श्री लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज, ।=)

—हम सुखी कैसे रहें, श्री सन्तराम विचित्र, ।=)

—गो सेवा क्यों, श्री रमावल्लभ चतुर्वेदी, ।=)

—कैलाश मानसरोवर, श्री शांडिल्य

हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम

—कामायनी की टीका, श्री एन० ई० मुत्तुस्वामी, २)

—'गुंजन' आस्वादन, श्री एन० ई० मुत्तुस्वामी, १॥।)

—'कृष्णायन' मथुराकाण्ड अध्ययन, श्री विद्वान् आर० सी० देव

—स्कन्दगुप्त अध्ययन, श्री एन० ई० मुत्तुस्वामी, १॥)

जथार व बेरी कृत

भारतीय अर्थशास्त्र

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र, राजनीति, न्याय-शास्त्र, गणित

गुप्ता और द्विवेदी, समाजवादी ढंग के आर्थिक संगठन की ओर, ८०, क्रा० लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
जथार व बेरी, अनु० सुरेश शर्मा, अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त, ३७२, डि०, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई
राजेन्द्रनारायण भार्गव, हाईस्कूल अंकगणित, अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति, कोष

आर० सी० देव, जयद्रथ वध समीक्षा, ४८, क्रा०, हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम
आर० नारायण नायर, मध्यम व्यायोग, ३२, क्रा०, हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम
एच० बाल सुब्रह्मणि प्रवीण, सप्तदशी समीक्षा, ७२, क्रा०, हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम
एन० ई० मुलुस्वामी, कुमार सम्भव काव्य सर्ग ५, ६, ६४, क्रा०, हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम
एन० ई० मुलुस्वामी, सरल एकांकी, ७२, क्रा०, हिन्दी पुस्तक भण्डार, त्रिवेन्द्रम
दुर्गाशंकर मिश्र, हिन्दी कवियों की काव्य साधना, पु० मु०, ३१०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
डॉ० नगेन्द्र, सुमित्रानन्दन पन्त, पु० मु०, १६४, डि०, साहित्यरत्न भण्डार, आगरा
पदुमलाल बख्शी, स्व० हेमचन्द्र मोदी, साहित्य शिक्षा, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
भोलाशंकर व्यास, डॉ०, संस्कृत कवि दर्शन, चौखम्बा विद्याभवन, बनारस
मन्मथनाथ गुप्त, साहित्य कला समीक्षा, २७६, डि०, साहनी प्रकाशन, दिल्ली
रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', खड़ी बोली के प्रतिनिधि कवि, ३२०, क्रा०, इन्दिरा प्रकाशन गृह, जयपुर
रामगोपालसिंह चौहान, हिन्दी के गद्यकार और उनकी शैलियाँ, डि०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा
रामचन्द्र मिश्र, टीकाकार, प्रबोध चन्द्रोदय, चौखम्बा विद्या भवन, बनारस
रामाज्ञा द्विवेदी, सम्पादक, अवधी कोष, २५२, रायल, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
लालधर त्रिपाठी प्रवासी, दिनकर की काव्य-कला, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, बनारस
वि० द० घाटे, अनु० विजया देसाई, देश देश के लोग, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
विनय मोहन शर्मा, साहित्य परिचय, पु० मु०, १६५, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...त बिहारी वर्मा, पं० किशोरीदास वाजपेयी और उनकी साहित्य सेवाएँ, २०, क्रा०, हिमालय एजेन्सी, कनखल)
...वेश्वर आचार्य, हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम्, ८२५, डि०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली १६)
...तचन्द्र चट्टोपाध्याय, नारी का मूल्य, ११२, क्रा० चौधरी एण्ड संस, बनारस १॥)
...त, अनु० रामचन्द्र वर्मा, नारी का मूल्य, पु० मु०, ८५, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई ॥=)
...वप्रसादसिंह, कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद ५)
...रीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०, सूर-साहित्य, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई ३)
...न्तसिंह देवड़ा, डिंगल-साहित्य में नारी, १२८, क्रा०, गुप्ता बुक एजेन्सी, दिल्ली २)

उपन्यास

...क्जेण्डर ड्यूमा, अनु० जयनारायण वकील, तीन तिलंगे, पु० मु०, ६६०, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ७)
...० एस० चौगुले, आर० आर० सर्वटे, जमीदार की बेटी, १७६, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस ३)
...चन्द्र वर्मा, काठ का उल्लू और कबूतर, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद ४)
...विन्दसिंह, जय मेवाड़, २४०, क्रा०, चौधरी एण्ड संस, बनारस ४)
...द्रकान्त काकोडकर, आर० आर० सर्वटे, कीर्त्ति मन्दिर, २००, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस ३)
...द्रकान्त काकोडकर, आर० आर० सर्वटे, मुक्त नारी, १००, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २।)
...नलाल व्यास, जय कच्छ, २५६, क्रा०, चौधरी एण्ड संस, बनारस ४)
...शंकर मिश्र, बुझते दीप, १७०, क्रा०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली ३)
...कर माचवे, द्वाभा, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद २)
...डेय बेचन शर्मा उग्र, जी जी जी, १३८, क्रा०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली २॥)
...चन्द, रंगभूमि : दो भाग, पु० मु०, १०००, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली १२)
...न्द्रनाथ ठाकुर, अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य भाग १२, पु० मु०, १४०, क्रा०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता २।)
...तचन्द्र, अनु० प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव, चन्द्रनाथ, १४४, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)
...नाथ, पत्थर और दूब, २००, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ३)
...कृष्ण वाजपेयी, प्रश्न और शून्य, पु० मु०, १४८, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ २)
...कृष्ण, युग की पगध्वनि, पु० मु०, २५८, क्रा०, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ३॥)

कविता

...हिम्मतसिंह, मधुहाला, ६२, क्रा०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ॥)
...धर त्रिपाठी 'प्रवासी', छत्रसाल : महाकाव्य, ३४०, डि०, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, बनारस ६)
...षि सत्यदेव, रजकण, ६०, क्रा०, अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद २)

कहानियाँ

...कुमार जैन, अनु०, शरत साहित्य : भाग २, ३, ११, ५, १२, पु० मु०, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई प्रत्येक १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धानंद श्रीवास्तव, जमाने की हार, १६२, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
लियो टालस्टाय, अनु०, राजनाथ, टालस्टाय की श्रेष्ठ कहानियाँ, २५६, क्रा०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा

नाटक

डी० एल० राय, अनु० सूर्यनारायण दीक्षित, चन्द्रगुप्त, पु० मु०, १२५, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
डी० एल० राय, अनु० रामचन्द्र वर्मा, मेवाड़ पतन, पु० मु०, १२०, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी', हैमलेट, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, बनारस

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

जगन्नाथ प्रभाकर, चीन की कहानियाँ, ३६, कापी साइज़, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली
जगन्नाथ प्रभाकर, रूस की कहानियाँ, ३६, कापी साइज़, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली
जानकीदेवी, घर गृहस्थी, पु० मु०, ३३६, क्रा०, चौधरी एण्ड संस, बनारस
ज्योतिर्मयी ठाकुर, आदर्श पाक शिक्षा, पु० मु०, ४००, क्रा०, चौधरी एण्ड संस, बनारस
ब० सी० रावत, शहद की खेती, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त', आम की बागबानी, २२०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त', सन्तरे की बागबानी, १६४, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
विराज, गाय और बाघ, ४८, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
श्यामसुन्दर उपाध्याय, लोकतंत्र और ग्राम पंचायतें, १८७, क्रा०, अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद
श्यामसुन्दर उपाध्याय, लोकतंत्र में सहकारिता, १३३, क्रा०, अग्रसेन पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, बचपन की कहानियाँ, क्रा०, चौधरी एण्ड संस, बनारस

विविध

गोपाल प्रसाद व्यास, हमारे राष्ट्रपिता, १४०, क्रा०, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
घनश्याम दास बिड़ला, गान्धीजी की छत्रछाया में, ४२५, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, सम्पादक, संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद
प्रभुलाल गर्ग, म्यूजिक मास्टर, पु० मु०, २००, संगीत कार्यालय, हाथरस
लक्ष्मीनारायण गर्ग, स०, फिल्म संगीत, भाग २५, २५०, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस
विष्णु प्रभाकर, कस्तूरबा गांधी, ४०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
विष्णुप्रसाद व्यास, आत्मनिर्माण, पु० मु०, १३६, क्रा०, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर
रमेश वर्मा, खेती और घरेलू धन्धे, ८२, क्रा०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा
शिवध्यान सिंह चौहान डॉ०, आधुनिक परिवहन, ४३६, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
सूरजमल मेहता, भागवत कथा, ४८०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ : ६" × ८"। आधा पृष्ठ : ३$\frac{3}{4}$" × ६" या २$\frac{3}{4}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$" × ६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच . ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D—

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, वैमि[illegible] ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज ३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १)
६. इं० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्स ३)
७. सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग ६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
१०. आयल इंजन गाइड ६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड ४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
१५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईडिंग ६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग ६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स ६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन) ४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साजी ४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ७॥)
३४. वीविंग गाइड ४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफी शिक्षा २॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी) ५)
३७. B " " " इंगलिश ५)
३८. A जन्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी) १॥)
३८. B " " " इंगलिश १॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर १०)
४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड) ६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो ३॥)
४५. मोटर प्राइमर १।)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४७. बिना बिजली का रेडियो १।)
४८. बच्चों का रेडियो १।)
४९. बच्चों का टेलीफोन ॥।)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल १।)
५१. लोकल रेडियो सैट १।)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान १।)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
५४. बच्चों का वायरलैस १।)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे) १०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन (गृहनिर्माणकला) १०)
५७. सोप मेकर्ज गाइड ६)
५८. मेटल पालिश २॥)
५९. फरनीचर बुक १०)
६०. पम्पिंग गाइड
६१. जनरल मैकैनिकल गाइड
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
६३. स्टीम टरबाईन
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साजी २॥)
२. प्लास्टिक गाइड २॥)
३. बूट पालिश २॥)
४. अप्टूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना) २॥)
५. कन्फैक्शनरी २॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) २॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा १।)
९. पैन्ट्री का काम ४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ४)
११. परफ्यूमरी मास्टर २॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साजी) २॥)
१३. आतिशबाजी का व्यापार २॥)
१४. हलवाई मास्टर २॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
१६. पान की दुकान २॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग) २॥)
१८. कुकरी बुक ४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार २॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
२२. फिनायलसाजी (कीड़े मार दवाइयाँ) २॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाज़ी)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना
२५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना
२६. स्लेट और स्लेट लीड पैंसिल बनाना
२७. रबड़ की मोहरें बनाना
२८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाना
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़
३०. सिलाई कटाई गाइड
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)
३३. हरफन मौला
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग
३५. शर्बत विज्ञान
३६. बुक बाईंडिंग
३७. दर्जी मास्टर
३८. व्यापार दस्तकारी
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान
४०. वीविंग कैल्कुलेशन
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन
४३ पोल्ट्री फार्मिंग
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री
४५ पोल्ट्री सर्जन

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशांत लिखित १५ पुस्तकें

१. आलू की खेती
२. टमाटर की खेती
३. गोभी की खेती
४. जीरा, धनिया, अजवाइन
५. तरकारियों की खेती
६. अच्छे बीज
७. अच्छी खाद
८. कपास की खेती
९. गन्ने की खेती
१०. फूल-फुलवारी
११. धान की खेती
१२. संतरे की बागबानी
१३. आम की बागबानी
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान
१५. तम्बाकू की खेती
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड)
१७. फलों की खेती
१८. तरकारी साग भाजी की खेती
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगायें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

व्यापार चमत्कार

व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ।।।=)

ज्योतिष विज्ञान

(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी) ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य ६) डाक खर्च ।।।=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष

भूत भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें। मूल्य ६) डाक खर्च १।)

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष

(ले०—भगवान दास मित्तल) कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार पर नवीन ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ।।।=)

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेट द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

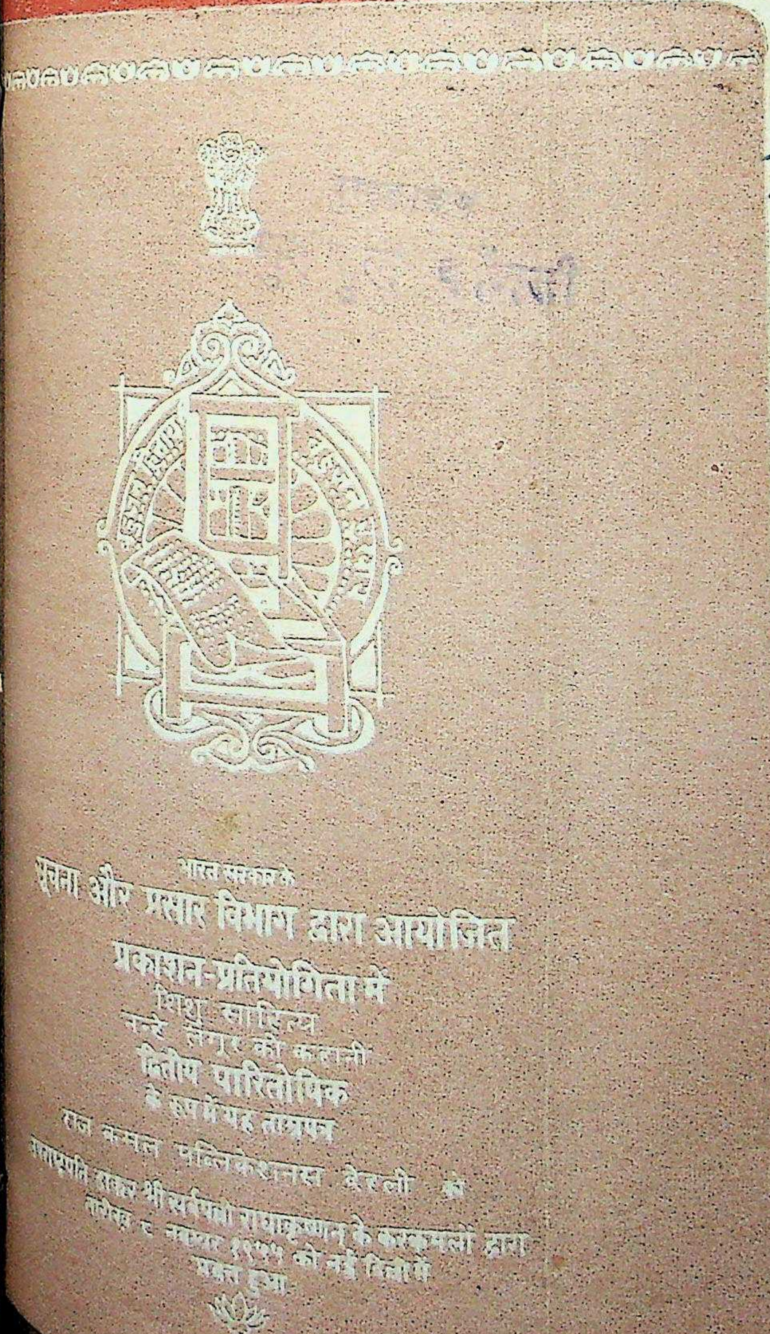

भारत सरकार
ने
आपकी ही संस्था
राजकमल प्रकाशन
को
अखिल भारतीय
प्रकाशन-प्रतियोगिता
में
पुरस्कृत करके
आपके चुनाव को
मान्यता दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बोर्ड ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज ३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १)
६. इं० सुपरवाइज़र परीक्षा पेपर्स ३)
७. सुपरवाइज़र वायरमैन प्रश्नोत्तर ३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग ६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
१०. आयल इंजन गाइड ६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड ४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
१५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईंडिंग ६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग ६)
२३. स्टीम व्यायलर्स और इन्जन्स ६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
२५. आईस प्लांट (वर्फ मशीन) ४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साज़ी ४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ५॥)
३४. वीविंग गाइड ४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफी शिक्षा २॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी) ५)
३७. B " " " इंगलिश ५)
३८. A जन्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी) १॥)
३८. B " " " इंगलिश १॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर १०)
४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड) ६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज़ आफ रेडियो ३॥)
४५. मोटर प्राइमर १।)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४७. विना बिजली का रेडियो १।)
४८. बच्चों का रेडियो १।)
४९. बच्चों का टैलीफोन ॥।)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल १।)
५१. लोकल रेडियो सैट १।)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान १।)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
५४. बच्चों का वायरलैस १।)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे) १०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन (गृहनिर्माणकला) १०)
५७. सोप मेकर्ज़ गाइड ६)
५८. मेटल पालिश २॥)
५९. फरनीचर बुक १०)
६०. पम्पिंग गाइड
६१. जनरल मैकेनिकल गाइड
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
६३. स्टीम टरबाईन
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साज़ी २॥)
२. प्लास्टिक गाइड २॥)
३. बूट पालिश २॥)
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना) २॥)
५. कन्फैक्शनरी २॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) २॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा १।)
९. पैन्टी का काम ४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ४)
११. परफ्यूमरी मास्टर २॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी) २॥)
१३. आतिशबाज़ी का व्यापार २॥)
१४. हलवाई मास्टर २॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
१६. पान की दुकान २॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग) २॥)
१८. कुकरी बुक ४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार २॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
२२. फ़िनायलसाज़ी (कीड़े मार दवाइयाँ) २॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाज़ी)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना
२५. फ़ेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना
२६. स्लेट और स्लेट लीड पेंसिल बनाना
२७. रबड़ की मोहरें बनाना
२८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाना
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़
३०. सिलाई कटाई गाइड
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)
३३. हरफ़न मौला
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग
३५. शर्बत विज्ञान
३६. बुक बाईंडिंग
३७. दर्ज़ी मास्टर
३८. व्यापार दस्तकारी
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान
४०. वीविंग कैल्कुलेशन
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन
४३ पोल्ट्री फार्मिंग
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री
४५ पोल्ट्री सर्जन

किसान विकास माला सीरीज़

रामेश्वर अशांत लिखित १९ पुस्तकें

१. आलू की खेती
२. टमाटर की खेती
३. गोभी की खेती
४. जीरा, धनिया, अजवाइन
५. तरकारियों की खेती
६. अच्छे बीज
७. अच्छी खाद
८. कपास की खेती
९. गन्ने की खेती
१०. फूल-फुलवारी
११. धान की खेती
१२. संतरे की बागवानी
१३. आम की बागवानी
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान
१५. तम्बाकू की खेती
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड)
१७. फलों की खेती
१८. तरकारी साग भाजी की खेती
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगायें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

व्यापार चमत्कार
व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=)

ज्योतिष विज्ञान
(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी)
ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक। मूल्य ६) डाक खर्च ॥।=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष
भूत भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें। मूल्य ६) डाक खर्च १।)

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष
(ले०—भगवान दास मित्तल)
कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार पर नवीन ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :
: अंक १ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

हम इसी अंक के एक लेख में कापीराइट-सम्बन्धी उस कानून का विवरण प्रकाशित कर रहे हैं जिसे लोक सभा में १ अक्तूबर, १९५५ को प्रस्तुत किया गया है और जो १९११ और १९१४ के कापीराइट के कानूनों को रद्द करेगा। इस नये कानून को पेश करने के उद्देश्यों और कारणों में कहा गया है कि लेखकों के अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति बढ़ती हुई सार्वजनिक चेतना को देखते हुए कानून में परिवर्तन आवश्यक जान पड़ा है। यह भी कहा गया है कि कानून के प्रस्तावित मसविदे को तैयार करते वक्त भारत सरकार के विभिन्न मन्त्रिमण्डलों, राज्य-सरकारों, और इस कानून में दिलचस्पी रखने वाले उद्योगों और संस्थाओं की आलोचना-टिप्पणियों को ध्यान में रखा गया है। कापीराइट का कानून प्रकाशकों के उद्योग से भी कुछ सबन्ध रखता है और जहाँ तक हमें मालूम है, किसी भी प्रकाशक को, अथवा प्रकाशकीय संस्था को, इस मसविदे पर विचार प्रकट करने का निमन्त्रण नहीं दिया गया। इस प्रसंग में यह उल्लेख दिलचस्प होगा कि २३ मार्च, १९५५ ई० को **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के कार्यालय ने शिक्षा-मन्त्रालय एवं** विधि-मन्त्रालय से प्रस्तावित कापीराइट की धारा-उपधाराओं की जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार किया था। उत्तर में मिनिस्ट्री आफ़ लॉ के जॉयन्ट सेक्रेटरी ने २५ मार्च को उत्तर दिया कि संघ का पत्र उत्तर के लिए शिक्षा-मन्त्रालय को भेजा जा रहा है जिस पर कि इस विषय का शासकीय उत्तरदायित्व है। शिक्षा-मन्त्रालय के अण्डर-सेक्रेटरी ने ९ अप्रैल, १९५५ के अपने उत्तर में लिखा कि कापीराइट कानून का मसविदा अभी तैयार नहीं हुआ है। तब से अब तक इस सबन्ध में कोई जानकारी नहीं दी गई और लोक-सभा में पेश किये जाने के बाद ही कापीराइट का मसविदा प्रकाशकों को देखने को मिला।

स्पष्ट है कि इस कानून को बनाते वक्त लेखकीय दृष्टिकोण को ही सर्वोपरि रखा गया है। जो लोक-सभा इस कानून को स्वीकृत करेगी, उसमें अपने को लेखक मानने वालों का ही बहुमत है; प्रकाशकों का प्रतिनिधित्व कतई नहीं है। यह भी सच है कि भारत के अधिकांश लेखक प्रकाशकीय सीमाओं से अपरिचित हैं; पुस्तकों की बिक्री की कठिनाइयों से वाकिफ नहीं हैं। पश्चिम में लेखक और प्रकाशकों के सम्बन्धों में जो सन्तुलन आ चुका है; वह अभी निकट भविष्य में अपने देश में सम्भव नहीं जान पड़ता। अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के शिष्टमण्डलों ने जब गत फरवरी और मार्च के महीनों में केन्द्रीय मन्त्रियों श्री जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और श्री जगजीवनराम से भेंट की थी तो इन्होंने प्रकाशकों को लेखकों का शोषक कहते हुए ही बातचीत आरम्भ की थी। जब प्रकाशकों के वर्ग के ही विरुद्ध ऐसी धारणा हमारे अग्रणियों की बन चुकी है तो न्याय और औचित्य की रक्षा के लिए परम आवश्यक था कि कापीराइट-सम्बन्धी किसी भी नये कानून की रूपरेखा तैयार करते वक्त प्रकाशकीय मन्तव्य को विशेष रूप से जानने का प्रयत्न किया जाता।

किसी भी कापीराइट कानून का उद्देश्य जहाँ किसी कृति के स्रष्टा के हितों की रक्षा करना है, वहाँ इस बात का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ध्यान रखना है कि कृति की सार्वजनीन उपयोगिता की सम्भावनाएँ सीमित न हो जायँ। यह न भूलना चाहिए कि कृति का मुख्य महत्त्व समाज की अपेक्षा से ही है। कृतियों को प्रकाशित करने की व्यवस्था करने वाले, कागज, छपाई और पुस्तक निर्माण की अन्य प्रक्रियाओं में पैसा लगाने वाले, कृति के प्रकाशित हो जाने पर न बिकने की स्थिति में पैसा गँवाने का खतरा उठाने वाले प्रकाशकों के हितों के संरक्षण का प्रश्न भी उपेक्षणीय नहीं है। जो पाठक अन्ततः पुस्तकों को खरीदेगा, कानून की किसी धारा से उसके हितों को क्षति नहीं पहुँच रही है, इसका ध्यान रखना भी आवश्यक है। नये कापीराइट के कानून के मसविदे को एक बार सरसरी तौर पर देख जाने से यह नहीं जान पड़ता कि इन सब हितों को दृष्टिगत रखकर इसे तैयार किया गया है।

हम आशा करेंगे कि शीघ्र ही प्रकाशकीय संस्थाएँ इस मसविदे पर विस्तार से विचार करेंगी और अपना मन्तव्य लोक-सभा के सदस्यों तक पहुँचाएँगी, जिसके आगामी अधिवेशन में इस क़ानून को स्वीकृति दी जाने वाली है।

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २॥)

मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य **प्रत्येक भाग ८)**

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कापीराइट का नया कानून

लोक-सभा के गत अधिवेशन में कापीराइट का नया कानून पेश किया गया है जो महत्त्व-पूर्ण अंशों में वर्तमान कानून से भिन्न है। सरकार द्वारा प्रस्तुत उद्देश्यों तथा कानून के मसविदे के आधार पर श्री ज्ञानचन्द्र जैन ने इस अध्ययन को प्रस्तुत किया है।

...त सरकार ने जो नया कापीराइट बिल तैयार किया है वह ...खकों और प्रकाशकों दोनों के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। बिल के उद्देश्यों और कारणों से सम्बन्धित वक्तव्य में ...ाया गया है कि देश में इस समय सन् १९१४ का निर्मित ...रतीय कापीराइट कानून लागू है जो ब्रिटेन के सन् १९११ ... कापीराइट कानून पर आधारित है। यह कानून काफी ...राना पड़ गया है और स्वतन्त्र भारत की बदली हुई परि-स्थितियों में फिट नहीं बैठता। लेखकों के अधिकारों को ...क्षित करने की जनता की बढ़ती हुई माँग तथा पुराने कापी-राइट कानून को कार्यान्वित करने के चालीस साल के अनुभवों के आधार पर नया स्वतन्त्र कापीराइट कानून तैयार करना ...वश्यक हो गया था। इसके अलावा रेडियो, लिथोफोटो-...ी आदि अभिव्यक्ति के नये साधन प्रचलित हो गए हैं। ...स कारण भी कापीराइट कानून में पूर्णरूपेण संशोधन अनि-...र्य हो गया था।

नया बिल हालांकि मौजूदा कानून पर आधारित है और ...ी के मुख्य सिद्धान्तों को इसमें नये ढंग से पेश किया गया ..., फिर भी इसमें अनेक नई बातों का समावेश है, जो संक्षेप ...निम्न प्रकार है—

(१) बिल में कापीराइट के रजिस्ट्रार के अधीन एक कापी-...ट दफ्तर की व्यवस्था है। कापीराइट दफ्तर का मुख्य ... कापीराइटों का एक रजिस्टर रखना होगा। इसमें ...तियों के नाम, उनके रचयिताओं के नाम और पते, कापी-...ट का स्वामित्व जिनमें निहित है उनके नाम और पते ... अन्य सम्बन्धित तथ्य दर्ज रहेंगे। इस रजिस्टर को हर ... देख सकेगा। सभी कृतियों का नाम कापीराइट प्रसंगों ...वश्य दर्ज कराया जाय। इसके लिए व्यवस्था की गई है कि कापीराइट के उल्लंघन से सम्बन्धित कोई कानूनी कार्य-वाही तभी हो सकेगी जब उस कृति का नाम कापीराइट रजिस्टर में दर्ज होगा। कापीराइट के रजिस्ट्रार केन्द्रीय सर-कार के अधीक्षण और निर्देशन में कार्य करेंगे। कापीराइट दफ्तर का नियंत्रण करने के अलावा वे प्रकाशनाधिकार प्रदान करने के प्रार्थना-पत्रों और कापीराइट का उल्लंघन करने वाली रचना के भारत में आयात किये जाने की शिकायतों का निपटारा करेंगे। कापीराइट के रजिस्ट्रार के आदेशों के विरुद्ध कापीराइट बोर्ड से अपील की जा सकेगी।

(२) बिल में एक कापीराइट बोर्ड की स्थापना की व्यवस्था है। बोर्ड तय करेगा कि कृतियों के प्रदर्शन का अधि-कार प्रदान करने वाली संस्थाओं को क्या उचित फीस या रायल्टी मिलनी चाहिए। बोर्ड इस प्रकार के प्रदर्शनों के लिए लायसेंस प्रदान करने के प्रार्थना-पत्रों का भी निपटारा करेगा और कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में बिल के अधीन दिये जाने वाले हरजाने की रकम तय करेगा। कापीराइट बोर्ड के निर्णय के विरुद्ध हाईकोर्ट में अपील की जा सकेगी।

(३) बिल में कापीराइट की परिभाषा काफी विस्तृत कर दी गई है और कापीराइट के अन्तर्गत रेडियो से प्रसारण का अनन्य अधिकार भी सम्मिलित कर लिया गया है।

(४) सिनेमा फिल्मों की कहानी, संगीत इत्यादि पर तो कापीराइट होगा ही, समूची फिल्म का अलग से कापीराइट भी होगा।

(५) लेखक को अधिकार दिया गया है कि यदि वह अपनी किसी कृति का कापीराइट प्रदान कर देता है तो वह सात साल के बाद तथा दस साल से पहले कापीराइट पुनः प्राप्त कर सकता है। इसके लिए उसे कापीराइट प्रदान करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय जितना रुपया मिला था वह ब्याज के साथ लौटाना पड़ेगा।

(६) किसी कृति पर कापीराइट सामान्यतया उसके लेखक के जीवन-काल तथा उसकी मृत्यु के २५ वर्ष उपरान्त तक रहेगा। वर्तमान कानून के अन्तर्गत कापीराइट लेखक के जीवन-काल तथा उसकी मृत्यु के ५० वर्ष उपरान्त तक रहता है।

(७) वर्त्तमान कानून के अन्तर्गत भारत में प्रकाशित किसी कृति के अनुवाद का एकमात्र अधिकार दस साल के उपरान्त समाप्त हो जाता है, यदि इस बीच उसका अनुवाद प्रकाशित नहीं हो जाता। बिल में अनुवाद का अधिकार भी कापीराइट के अधीन प्राप्त अन्य अधिकारों से संयुक्त कर दिया गया है।

(८) बिल में व्यवस्था की गई है कि किसी कृति के रेडियो से प्रसारण अथवा किसी कृति का रेकार्ड बनाने के लिए एक सामान्य या विशेष लायसेंस दिया जा सकता है।

(९) सामान्य ज्ञान प्रसार के लिए बिल में व्यवस्था की गई है कि यदि किसी पुस्तक का कापीराइट विद्यमान है और वह पुस्तक विक्रयार्थ सुलभ नहीं है तो कोई पुस्तकालय अपने उपयोग के लिए उसकी एक प्रतिलिपि करा सकता है।

(१०) बिल में प्रदर्शन का अधिकार प्रदान करने वाली संस्थाओं को क्या कार्यविधि बरतनी होगी, यह निर्धारित कर दिया गया है। उनको मिलने वाली फीस अथवा रायल्टी भी निर्धारित कर दी गई है।

(११) बिल में रेडियो प्राधिकारियों को उनके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों पर कापीराइट से मिलते-जुलते कुछ अधिकार प्रदान किये गए हैं।

(१२) अन्तर्राष्ट्रीय संधियों पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट अधिकारों का नियमन केन्द्रीय सरकार के आदेशों से होगा।

बिल को तैयार करते समय सन् १९५२ की ब्रिटिश कापीराइट रिपोर्ट, भारत सरकार और राज्य सरकारों के विविध मन्त्रालयों के सुझावों, भारतीय विश्वविद्यालयों, प्रकाशन-संस्थाओं और अन्य संस्थाओं की टीका-टिप्पणियों पर उचित रीति से विचार किया गया है।

बिल में १५ अध्याय और ८२ धाराएँ हैं। पहले अध्याय में मुख्यतया परिभाषाएँ हैं। दूसरा अध्याय का[पी]राइट दफ्तर और कापीराइट बोर्ड के संगठन से सम्ब[न्धित] है। इसमें बताया गया है कि कापीराइट दफ्तर कापीरा[इट] के रजिस्ट्रार की अधीनता में कार्य करेगा। कापीराइट द[फ्तर] की अपनी अलग मोहर होगी। कापीराइट बोर्ड में निम्[न]लिखित सदस्य होंगे—(१) अध्यक्ष, (२) तीन अन्य स[दस्य] जिनमें दो को साहित्य या कला का विशेष ज्ञान होना चा[हिए] अथवा सिनेमा उद्योग या रेकार्ड आदि बनाने का अ[नुभव] होना चाहिए तथा (३) कापीराइट के रजिस्ट्रार (पदे[न])। कापीराइट बोर्ड के अध्यक्ष तथा सदस्यों की नियुक्ति के[न्द्रीय] सरकार करेगी। कापीराइट बोर्ड के अध्यक्ष पद पर कि[सी] ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जायगा जो या तो किसी हा[ई] कोर्ट का जज रह चुका हो या उस पद पर नियुक्त होने [की] योग्यताएँ रखता हो। बोर्ड में मतभेद होने पर निर्णय ब[हु]मत से होगा। किसी पक्ष में बहुमत न होने पर अध्यक्ष [का] मत मान्य होगा।

तीसरे अध्याय की धारा १२ में कापीराइट की परि[भाषा] दी गई है जो इस प्रकार है—

किसी कृति के सम्बन्ध में कापीराइट का अर्थ इस [अधिनियम] की धाराओं के अधीन उस कृति को या उसके किसी मु[ख्यांश] को किसी भी रूप में प्रस्तुत या पुनः प्रस्तुत करने, उसे प्र[दर्शित] करने अथवा कृति के व्याख्यान होने की दशा में उसे देने [तथा] कृति के अप्रकाशित होने की दशा में उसे सम्पूर्ण रूप में [या] उसके किसी मुख्यांश को प्रकाशित करने का अनन्य अधि[कार] है। इस अधिकार में निम्नलिखित अनन्य अधिकार [तथा] इन्हें किसी को प्रदान करने का अधिकार सम्मिलित है—

(क) किसी साहित्यिक, नाटकीय या संगीतात्मक कृ[ति के] विषय में—

(१) कृति का अथवा उसके किसी मुख्यांश का अ[नुवाद] प्रस्तुत या पुनः प्रस्तुत करने, प्रदर्शित करने [तथा] प्रकाशित करने का अनन्य अधिकार तथा इसे [प्रदान] करने का अनन्य अधिकार;

(२) उस कृति अथवा उसके किसी मुख्यांश के आ[धार] पर कोई फिल्म या रेकार्ड आदि बनाने का अ[नन्य] अधिकार तथा इसे प्रदान करने का अधिकार;

(३) उस कृति अथवा उसके किसी मुख्यांश को ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रसारित करने का अनन्य अधिकार तथा उसे प्रदान करने का अधिकार;

(ख) किसी नाटकीय कृति के विषय में उसे उपन्यास अथवा अन्य किसी अनाटकीय रूप में परिवर्तित करने का अनन्य अधिकार तथा उसे प्राप्त करने का अधिकार;

(ग) उपन्यास अथवा अन्य किसी अनाटकीय कृति अथवा कलात्मक कृति के विषय में उसे जनता के सामने प्रदर्शित करके अथवा अन्य किसी प्रकार से नाटकीय कृति में परिवर्तित करने का अनन्य अधिकार तथा इसे प्रदान करने का अधिकार;

(घ) रेकार्ड आदि के विषय में उसे रेडियो से प्रसारित करने का अनन्य अधिकार तथा इसे प्रदान करने का अधिकार।

बिल की धारा १३ में बताया गया है कि इस अधिनियम की धाराओं के अन्तर्गत निम्नलिखित कृतियों पर सारे भारत में कापीराइट प्राप्त होगा—

(क) मौलिक साहित्यिक, नाटकीय, संगीतात्मक अथवा कलात्मक कृति;

(ख) सिनेमा की फिल्में; तथा

(ग) रेकार्ड इत्यादि।

अध्याय ४ में बताया गया है कि कापीराइट का स्वामित्व किसमें निहित रहता है और उसके स्वामी के क्या अधिकार होते हैं।

धारा १६ में कहा गया है कि किसी कृति का रचयिता उसके कापीराइट का प्रथम स्वामी होगा;

बशर्ते

(क) यदि वह कृति किसी दूसरे व्यक्ति के कहने पर उससे अर्घ्य प्राप्त करके रची गई है तो कोई विपरीत समझौता न होने की दशा में वह व्यक्ति उस कृति के कापीराइट का प्रथम स्वामी होगा;

(ख) यदि वह कृति उसके रचयिता के किसी कन्ट्रैक्ट के आधार पर अथवा अन्य किसी आधार पर नौकरी करने की दशा में रची गई है तो कोई विपरीत समझौता न होने की दशा में नौकर रखने वाला व्यक्ति उस कृति के कापीराइट का प्रथम स्वामी होगा;

(ग) किसी गुमनाम अथवा छद्मनाम से प्रकाशित कृति के विषय में उस कृति का प्रकाशक उसके कापीराइट का प्रथम स्वामी तब तक होगा जब तक उसके रचयिता का नाम (अथवा एक से अधिक रचयिता होने पर सब रचयिताओं या उनमें किसी एक रचयिता का नाम) रचयिता (अथवा रचयिताओं) तथा प्रकाशक के द्वारा सार्वजनिक रूप से प्रकट नहीं कर दिया जाता;

(घ) सरकारी कृति होने की दशा में, उसके रचयिता से सरकार का जो भी समझौता हो उसके अनुसार सरकार उसी कृति पर कापीराइट के प्रथम स्वामित्व का उपभोग करेगी;

(ङ) केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्देशित किसी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के निर्देश से रची गई अथवा प्रथम बार प्रकाशित की गई कृति पर उक्त अन्तर्राष्ट्रीय संगठन उसके कापीराइट का प्रथम स्वामी होगा।

धारा १७ में बताया गया है कि किसी कृति के कापीराइट का स्वामी अपना अनन्य अधिकार पूर्णरूप या आंशिक रूप से प्रतिबन्धों के साथ या प्रतिबन्धों के बिना, कापीराइट की अवधि के पूरे काल के लिए या आंशिक काल के लिए, किसी दूसरे को प्रदान कर सकता है। उक्त दशा में दूसरा व्यक्ति कापीराइट के जितने अधिकार प्राप्त करता है उतने अधिकारों के लिए तथा अधिकार देनेवाला व्यक्ति जितने अधिकार प्रदान नहीं करता उतने अधिकारों के लिए कापीराइट का स्वामी रहता है।

धारा १८—(१) में बताया गया है कि यदि किसी साहित्यिक, नाटकीय, संगीतात्मक अथवा कलात्मक कृति के रचयिता ने कापीराइट दे दिया है तो वह सात वर्ष के बाद और दस वर्ष से पहले कापीराइट पुनः प्राप्त कर सकता है, बशर्ते कापीराइट बेचते समय जो धन मिला था उसे वह निर्धारित ब्याज के साथ लौटा दे।

धारा १८—(२) में स्पष्ट कर दिया गया है कि यह धारा इस ऐक्ट के प्रारम्भ होने से पहले बेच दिये गए कापीराइट के अधिकारों पर लागू नहीं होगी।

धारा १९ में स्पष्ट किया गया है कि किसी कृति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कापीराइट देने या नये सिरे से देने को तभी वैधता प्राप्त होगी जब अधिकार-पत्र लिखित रूप में होगा और उस पर कापीराइट देनेवाले व्यक्ति के अथवा प्रामाणिक एजेण्ट के हस्ताक्षर होंगे।

अध्याय ५ में बताया गया है कि किसी साहित्यिक, नाटकीय, संगीतात्मक अथवा कलात्मक कृति का कापीराइट उसके रचयिता के जीवनकाल तथा उसकी मृत्यु के अगले नये वर्ष से २५ वर्ष पर्यन्त विद्यमान रहता है। रचयिता की मृत्यु पर अप्रकाशित रह जाने वाली कृतियों पर जिस वर्ष उस कृति का प्रकाशन होता है उसके अगले नये वर्ष से २५ वर्ष पर्यन्त कापीराइट विद्यमान रहता है।

(नोट—कापीराइट कानून के अन्तर्गत नये वर्ष का प्रारम्भ १ जनवरी से माना जायगा।

अध्याय ६ में बताया गया है कि किसी कृति के कापीराइट का स्वामी लिखकर तथा स्वयं हस्ताक्षर करके अथवा अपने प्रामाणिक एजेन्ट की मार्फत हस्ताक्षर करवाकर कापीराइट का कोई भी अधिकार प्रदान कर सकता है। यदि किसी कृति के कापीराइट का स्वामी, रचयिता के जीवनकाल में अथवा उसकी मृत्यु के उपरान्त, उस कृति को पुनः प्रकाशित करने से अथवा उसको पुनः प्रकाशित करने की अनुमति देने से इन्कार कर देता है तो शिकायत करने पर कापीराइट का रजिस्ट्रार लोकहित में निर्धारित शुल्क तथा शर्तों पर उस कृति के पुनः प्रकाशन का अधिकार दे सकता है। इस प्रकार पुनः प्रकाशन का अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रार्थना-पत्र के साथ १०००) जमा करना होगा। यदि पुनः प्रकाशन का अधिकार प्राप्त हो जाता है तो वह रुपया कापीराइट के स्वामी को दे दिया जायगा और रायल्टी के हिसाब से काट लिया जायगा। यदि पुनः प्रकाशन का अधिकार प्राप्त नहीं होता तो वह रुपया लौटा दिया जायगा।

वर्तमान कानून के अन्तर्गत किसी कृति का अनुवाद प्रकाशित करने का कापीराइट १० वर्ष बाद समाप्त हो जाता है, बशर्ते इस अवधि में उसका अनुवाद प्रकाशित नहीं हो जाता। नये बिल के अन्तर्गत अनुवाद प्रस्तुत करने का अधिकार भी तब तक विद्यमान रहेगा जब तक कापीराइट का अधिकार विद्यमान रहेगा। परन्तु यदि किसी कृति का अनुवाद उसके प्रकाशन के सात साल के भीतर नहीं हो जाता तो कापीराइट के रजिस्ट्रार को प्रार्थना-पत्र देकर उसके अनुवाद का अधिकार प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए अनूदित कृति की जो कीमत रखी जाने वाली हो उसका १० प्रतिशत रुपया अथवा १०००), दोनों में जो भी रकम ज्यादा हो वह दरखास्त के साथ जमा करनी होगी।

यदि एक ही कृति के पुनः प्रकाशन अथवा अनुवाद के लिए दो या दो से अधिक व्यक्ति दरखास्त देते हैं तो कापीराइट के रजिस्ट्रार को अधिकार होगा कि वह जिस व्यक्ति को अधिक उपयुक्त समझे उसकी दरखास्त स्वीकार कर ले।

अध्याय ७ प्रदर्शन का अधिकार प्रदान करने वाली संस्थाओं से सम्बन्धित है। ऐसी सब संस्थाओं को उन कृतियों की सूचना कापीराइट के रजिस्ट्रार के पास भेजनी होगी जिनके प्रदर्शन की अनुमति देने पर उन्हें फीस या रायल्टी प्राप्त करने का अधिकार है। वे कापीराइट बोर्ड द्वारा अनुमोदित फीस या रायल्टी ही वसूल कर सकेंगी।

अध्याय ८ में बताया गया है कि रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों के पुनः प्रकाशन पर सरकार को २५ वर्ष तक अलग अधिकार प्राप्त होगा। यह अधिकार रेडियो से प्रसारित किसी साहित्यिक, नाटकीय या संगीतात्मक कृति अथवा रेकार्ड से सम्बन्धित कापीराइट के अधिकारों पर कोई प्रभाव नहीं डालेगी।

अध्याय ९ में बताया गया है कि केन्द्रीय सरकार पारस्परिक आदान-प्रदान के आधार पर दूसरे देशों में प्रकाशित कृतियों पर कापीराइट कानून लागू कर सकती है।

अध्याय १० कापीराइट की रजिस्ट्री से सम्बन्धित है। वर्तमान कानून के अन्तर्गत कापीराइट की रजिस्ट्री की कोई व्यवस्था नहीं है। नये बिल में इसकी व्यवस्था की गई है। कापीराइट दफ्तर में एक रजिस्टर रखा जायगा जो कापीराइट रजिस्टर कहलायेगा। इस रजिस्टर में कृतियों के नाम, उनके रचयिताओं और प्रकाशकों के नाम और पते, कापीराइट का स्वामित्व जिनमें निहित है उनके नाम और पते तथा अन्य सम्बन्धित तथ्य दर्ज रहेंगे। किसी कृति का रचयिता अथवा प्रकाशक अथवा कापीराइट का स्वामी अथवा अन्य कोई दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति कृति का नाम कापीराइट रजिस्टर में दर्ज करने के लिए कापीराइट के रजिस्ट्रार को निर्धारित फीस के साथ दरखास्त दे सकेगा। कापीराइट दफ्तर में कापी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नए प्रकाशन

साहित्यिक—

- समीक्षा-शास्त्र :
  डॉ० दशरथ ओझा एम. ए. पी-एच. डी. ६)
- हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास :
  डा० दशरथ ओझा एम. ए. पी-एच. डी. ६)
- आधुनिक समीक्षा : डा० देवराज ४।।)

स्वदेश-परिचय-माला—

भारत की कहानी	: भगवतशरण उपाध्याय	१)
भारतीय संस्कृति की कहानी	,,	१)
भारतीय चित्रकला की कहानी	,,	१)
भारतीय मूर्तिकला की कहानी	,,	१)
भारतीय नदियों की कहानी	,,	१)
भारतीय नगरों की कहानी	,,	१)
भारतीय साहित्य की कहानी	,,	१)

संस्कृत के अमर ग्रन्थों के हिन्दी भावानुवाद

पंचतन्त्र	: सत्यकाम विद्यालंकार	३।।)
हितोपदेश	: अनु० श्री 'आनन्द'	२।।)
मेघदूत	: सत्यकाम विद्यालंकार	३)
अभिज्ञान शाकुन्तल	: विराज एम. ए.	३)
कुमारसम्भव	: ,,	३)
रघुवंश	: प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति	३)
किरातार्जुनीय	: ,,	२।।)
कादम्बरी	: भगवतशरण उपाध्याय	३)
भास के नाटक	: भगवतशरण उपाध्याय	२)

रामचरितमानस

[सुबोध, शुद्ध व प्रामाणिक टीका]
टीकाकार—पण्डित रामनरेश त्रिपाठी
कपड़े की पक्की जिल्द : मोटा टाइप : आकर्षक बहुरंगा कवर
मूल्य—चौदह रुपया

उपन्यास—

अपराधी कौन ?	: इन्द्र विद्यावाचस्पति	५)
अपनी छाया	: आस्कर वाल्ड के 'पिक्चर आफ डोरियन ग्रे' का अनुवाद	५)
उलटा वृक्ष	: कृष्णचन्द्र एम. ए.	३)

नाटक—

कीर्ति-स्तम्भ	: हरिकृष्ण प्रेमी	३।।)
सम्राट् समुद्रगुप्त	: दशरथ ओझा	२)
जीवन और संघर्ष	: उदयशंकर भट्ट	३)
सराय के बाहर	: कृष्णचन्द्र एम. ए.	३)
नारी	: वैकुण्ठनाथ दुग्गल	१।।)

कहानी—

काला सूरज	: कृष्णचन्द्र एम. ए.	२।।)
स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	: कृष्णचन्द्र एम. ए.	३)
पगडण्डी और परछाइयाँ	: कुलभूषण	३)

यात्रा : साहसिक वृत्तान्त—

कलकत्ता से पीकिंग	: भगवतशरण उपाध्याय	३।।)
हिमालय पर विजय	: धर्मपाल शास्त्री	२।।)
जंगल की बातें	: विराज एम. ए.	१)
जंगल के रहस्य	: विराज एम. ए.	१)
प्राणों की बाजी	: ,,	२।।)

सुगम अमर-साहित्य—

कालिदास के नाटक	: जगदीश दीक्षित आनन्द	१)
कालिदास के काव्य	: ,,	१)
शेक्सपीयर की कहानियाँ—१	: धर्मपाल शास्त्री	१)
शेक्सपीयर की कहानियाँ—२	: ,,	१)
पद्मावत की कथा	: रोशनलाल सिंहल	१)
कामायनी-सार	: ,,	१)
बाल रामचरितमानस	: ,,	१)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राइट रजिस्टर के साथ एक संदर्भ-सूची भी रखी जायगी। इस रजिस्टर और संदर्भ-सूची को कोई भी व्यक्ति देख सकेगा और फीस देकर नकल ले सकेगा। किसी कृति के कापीराइट के सम्बन्ध में कापीराइट रजिस्टर में दर्ज किये गए तथ्यों को प्रमाण स्वरूप माना जायगा। कापीराइट के रजिस्ट्रार को कापीराइट रजिस्टर में निर्धारित प्रतिबन्धों के साथ संशोधन और परिवर्तन करने का अधिकार होगा। हाईकोर्ट को भी कापीराइट रजिस्टर में (क) कोई छूटी हुई बात दर्ज करने (ख) कोई गलत दर्ज की गई बात को निकालने तथा (ग) किसी गलती को सुधारने का आदेश देने का अधिकार होगा। सभी लेखक और प्रकाशक स्वेच्छा से कापीराइट की रजिस्ट्री कराएँ। इसके लिए व्यवस्था की गई है कि कापीराइट के उल्लंघन की कोई कानूनी कार्यवाही तभी की जा सकेगी जब उसकी रजिस्ट्री कापीराइट दफ्तर में होगी।

अध्याय ११ कापीराइट के उल्लंघन से सम्बन्धित है। धारा ५३ में बताया गया है कि निम्नलिखित दशाओं में किसी कृति के कापीराइट का उल्लंघन होना माना जायगा:—

(क) जब कोई व्यक्ति कापीराइट के स्वामी की अनुमति के बिना अथवा उक्त स्वामी अथवा इस कानून के अधीन कापीराइट के रजिस्ट्रार से लायसेंस प्राप्त किये बिना—

(१) कोई ऐसा कार्य करता है जिसका अनन्य अधिकार इस कानून के अधीन कापीराइट के स्वामी को प्रदान किया गया है;

(२) लाभ लेकर किसी स्थान का उपयोग उस कृति के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए अनुमति देता है। हाँ, यदि उसे पता नहीं है अथवा ऐसा विश्वास करने का कारण है कि इस प्रकार के प्रदर्शन से कापीराइट का उल्लंघन नहीं होगा तो बात दूसरी है।

(ख) जब कोई व्यक्ति कापीराइट का उल्लंघन करने वाली कृति को इस ज्ञान के साथ कि वह कापीराइट का उल्लंघन कर रहा है —

(१) बिक्री अथवा किराये के लिए सुलभ करता है अथवा स्वयं उसे बेचता है अथवा किराये पर देता है अथवा व्यापार के रूप में उसे बिक्री या किराये के लिए प्रदर्शित या प्रस्तुत करता है;

(२) व्यापार के रूप में अथवा इस रीति से वित[...] करता है कि उससे कापीराइट के स्वामी को हा[...] पहुँचती है;

(३) व्यापार के रूप में सार्वजनिक रूप से प्रदर्शि[...] करता है;

(४) भारत में आयात करता है। यदि आयातकर्ता [...] वैयक्तिक उपभोग के लिए आयात करता है तो [...] दूसरी है।

धारा ५४ में स्पष्ट किया गया है कि निम्नलिखित का[...] को कापीराइट का उल्लंघन नहीं माना जायगा :—

वैयक्तिक अध्ययन, शोध, आलोचना अथवा समीक्षा[...] लिए अथवा रेडियो द्वारा सारांश देने के लिए अथवा अ[...] लती अथवा अर्द्ध-अदालती ढंग की कार्यवाही के लिए कि[...] कृति का उचित रीति से उपयोग।

उक्त धारा में स्पष्ट कर दिया गया है कि यदि कि[...] कार्य को कापीराइट का उल्लंघन नहीं होने देना है तो मू[...] कृति का नाम अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए।

अध्याय १२ में बताया गया है कि कापीराइट [...] उल्लंघन होने पर कापीराइट के स्वामी को अधिकार हो[...] कि कानून के अन्तर्गत किसी अधिकार का उल्लंघन होने [...] निषेधाज्ञा (हुक्म इम्तनाई), हरजाना आदि के रूप में [...] भी उपचार किये जा सकते हैं वह कर सकता है। यदि प्र[...] वादी यह साबित कर देता है कि उसे पता नहीं था अथ[...] उसके ऐसा विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि [...] में कापीराइट विद्यमान है अथवा वादी कापीराइट का स्वा[...] है तो वादी को सिर्फ निषेधाज्ञा प्राप्त करने का अधि[...] होगा। यदि किसी रचयिता ने अपनी कृति का कापीरा[...] पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से बेच दिया है तो भी [...] अधिकार होगा कि वह अपनी कृति को तोड़े-मरोड़े जाने, [...] किये जाने अथवा इस प्रकार से परिवर्तन किये जाने से रो[...] के लिए, जिससे उसकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचती हो, कानू[...] कार्यवाही कर सकता है। यदि किसी रचयिता ने किसी सम[...] चार-पत्र या पत्रिका को लेख आदि के रूप में अपनी कृ[...] दी है तो कोई विपरीत समझौता न होने की दशा में [...] अधिकार होगा कि वह अपनी कृति का समाचार-पत्र [...] पत्रिका के अलावा अन्य किसी रूप से उपयोग किया जा[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है अथवा उसके लिए हरजाने की माँग कर सकता है।

किसी कृति के कापीराइट का उल्लंघन करने वाली सभी प्रतियाँ तथा इस प्रकार की प्रतियों को तैयार करने के लिए प्रयोग में लाई गई या लाई जाने वाली सभी प्लेटें कापीराइट के स्वामी की सम्पत्ति मानी जायँगी और वह उनको अपने अधिकार में करने के लिए कानूनी कार्यवाही कर सकता है। हाँ, यदि प्रतिवादी यह साबित कर देता है कि उसे पता नहीं था अथवा यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि जिस कृति की प्रतियों को कापीराइट का उल्लंघन करने वाला कहा गया है उसमें कापीराइट विद्यमान था अथवा उसे यह विश्वास करने का कारण था कि उक्त प्रतियाँ कापीराइट का उल्लंघन नहीं करती हैं तो कापीराइट के स्वामी को उक्त प्रतियाँ हस्तगत करने के लिए कोई उपचार नहीं प्राप्त होगा।

कापीराइट के उल्लंघन के सम्बन्ध में कोई नालिश दायर करने की मियाद कापीराइट के उल्लंघन की तारीख से ६ साल होगी। पहले यह मियाद ३ साल थी।

लायसेंस के द्वारा कापीराइट का अनन्य अधिकार प्राप्त करने वाला कोई व्यक्ति जब कापीराइट के उल्लंघन की कोई नालिश दायर करेगा तो उसे कापीराइट के स्वामी को भी प्रतिवादी के रूप में सम्मिलित करना होगा।

कापीराइट के उल्लंघन के सम्बन्ध में कोई भी नालिश जिला अदालत में दायर हो सकेगी। नालिश तब तक दायर नहीं हो सकेगी जब तक कापीराइट की रजिस्ट्री कापीराइट के रजिस्ट्रार के यहाँ न होगी।

अध्याय १३ की धारा ६६ में बताया गया है कि जान-बूझकर जो व्यक्ति—

(क) किसी कृति के कापीराइट का; अथवा

(ख) इस कानून के द्वारा प्रदान किये गए किसी अन्य अधिकार का

उल्लंघन करेगा या उल्लंघन के लिए उकसाएगा उसे ६ महीने की कैद अथवा जुरमाना या दोनों सजाएँ दी जा सकेंगी।

धारा ६७ में कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति किसी कृति के कापीराइट का उल्लंघन करने के उद्देश्य से कोई प्लेट तैयार करता है या रखता है तो उसे ६ महीने की कैद अथवा जुरमाना या दोनों सजाएँ दी जा सकेंगी।

धारा ६८ में कहा गया है कि कापीराइट का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को चाहे सजा मिले या न मिले, अदालत को अधिकार होगा कि वह कापीराइट का उल्लंघन करने वाली उन सभी प्रतियों या प्लेटों को जो अभियुक्त के पास हों, या नष्ट करवा दे या कापीराइट के स्वामी को दिलवा दे या उनके सम्बन्ध में अन्य कोई उपयुक्त आदेश दे दे। अदालत की इस प्रकार की आज्ञा के विरुद्ध ३० दिन के भीतर अपील की जा सकती है।

धारा ६९ में कहा गया है कि कोई व्यक्ति जो

(क) कापीराइट रजिस्टर में गलत इंदराज कराता है या करवाता है, अथवा

(ख) उक्त रजिस्टर में इंदराज की गलत नकल कराता है या करवाता है, अथवा

(ग) इस प्रकार के गलत इंदराज को यह जानते हुए कि वह गलत है, गवाही में पेश करता है या करवाता है,

तो वह ६ महिने की कैद अथवा जुरमाना अथवा दोनों सजाओं

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन !

अवधी-कोष

संपादक : श्री रामाज्ञा द्विवेदी

- जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम चरण है।
- इसमें मूल शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनसे बनने वाले संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि तथा विभिन्न जिलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिये गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।
- व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोक-गीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और बढ़ गई है।
- कोष नितांत संग्रहणीय है।

रायल अठपेजी आकार : : २९६ पृष्ठ : : ऐंटिक कागज

सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भागीदार होगा।

धारा ७० में कहा गया है कि कोई व्यक्ति जो

(क) कापीराइट के रजिस्ट्रार को अथवा इस कानून की धाराओं के अन्तर्गत कार्य करने वाले अन्य किसी अधिकारी को धोखा देने के उद्देश्य से, अथवा

(ख) इस कानून के अन्तर्गत कोई बात करवाने या करवाने से छोड़ने के उद्देश्य से

कोई गलत वक्तव्य यह जानते हुए देता है कि वह गलत है तो उसे ६ महीने की कैद, अथवा जुरमाना अथवा दोनों सजाएँ दी जा सकेंगी।

धारा ७१ में बताया गया है कि

(१) इस कानून के अन्तर्गत यदि कोई अपराध किसी कंपनी से होता है तो अपराध के समय कंपनी का प्रत्येक व्यक्ति, जो अधिकारी था अथवा कंपनी के कार्य-संचालन के लिए जिम्मेदार था, वह तथा कंपनी दोनों को अपराध का भागीदार माना जायगा और उनके विरुद्ध तदनुसार कार्यवाही की जा सकेगी तथा उन्हें दण्ड दिया जा सकेगा।

बशर्ते इस उपधारा के अन्तर्गत कोई व्यक्ति उस दशा में दण्ड का भागीदार नहीं होगा जब वह साबित कर देगा कि अपराध उसकी ग़ैर-जानकारी में हुआ अथवा उसने अपराध को रोकने के लिए सभी प्रकार की उचित सावधानी बरती।

(२) उपरोक्त उपधारा (१) में कही गई बातों के बावजूद यदि इस कानून के अन्तर्गत किसी कंपनी द्वारा कोई अपराध होता है और यह साबित कर दिया जाता है कि उक्त अपराध कंपनी के किसी डायरेक्टर मैनेजर, सेक्रेटरी अथवा अन्य किसी अधिकारी की अनुमति से या उसके सहयोग से या उसके असावधानी बरतने के कारण हुआ था तो उक्त डायरेक्टर, मैनेजर, सेक्रेटरी, अथवा अन्य अधिकारी को भी अपराध का अपराधी माना जायगा और उसके विरुद्ध कार्यवाही की जा सकेगी तथा उसे दण्ड दिया जा सकेगा।

नोट—इस धारा के लिए कंपनी का आशय किसी भी फर्म, मण्डल या संस्था से होगा तथा फर्म के डायरेक्टर से उसके भागीदार का भी आशय लिया जायगा।

धारा ७२ में कहा गया है कि इस कानून के अन्[तर्गत] किसी मुकदमे की सुनवाई प्रेसीडेंसी मैजिस्ट्रेट अथवा प्र[थम] श्रेणी के मैजिस्ट्रेट की अदालत से नीची किसी अदाल[त में] नहीं होगी।

अध्याय १४ की धारा ७८ में कहा गया है कि

(१) कापीराइट के रजिस्ट्रार के किसी निर्णय या आ[देश] की अपील ३ महीने के भीतर कापीराइट बो[र्ड में] की जा सकती है।

इस उपधारा के अन्तर्गत जब कापीराइट बोर्ड अ[पील] सुनेगा तो कापीराइट के रजिस्ट्रार उसके सदस्य की है[सियत] से नहीं बैठेगा।

(२) कापीराइट बोर्ड के किसी निर्णय या आदे[श के] विरुद्ध (बशर्ते यह निर्णय या आदेश उपधा[रा] के अन्तर्गत सुनी गई अपील पर नहीं है) [कोई] व्यक्ति तीन महीने के भीतर हाईकोर्ट में अ[पील] कर सकता है।

(३) तीन महीने की अवधि की गणना में आदे[श या] निर्णय की नकल लेने में जो वक्त लगेगा [उसकी] गणना नहीं की जायगी।

अध्याय १५ में प्रकीर्णक है। धारा ७५ में कहा [गया] है कि निम्नलिखित विषयों में कापीराइट के रजिस्ट्रार [तथा] कापीराइट बोर्ड को दीवानी अदालत के अधिकार प्राप्त है[ं]

(क) किसी व्यक्ति को समन भेजकर बुलाने और [उसकी] उपस्थिति अनिवार्य करने तथा शपथ दि[लाकर] उसका बयान लेने के विषय में;

(ख) किसी दस्तावेज को प्रस्तुत करने के विषय में;

(ग) गवाही लेने के विषय में;

(घ) गवाहों के बयान लेने तथा दस्तावेजों की [जाँच] के लिए कमीशन नियुक्त करने के विषय में;

(ङ) किसी अदालत या दफ्तर से कोई कार्[यवाही या] उसकी नकल मँगाने के विषय में;

(च) अन्य किसी निर्धारित विषय में।

धारा ७६ में कहा गया है कि इस कानून के अ[न्तर्गत] धन देने का कापीराइट के रजिस्ट्रार, कापीराइट बोर्ड [या] हाईकोर्ट द्वारा प्रकाशित कोई आदेश किसी दीवानी अ[दालत] की डिगरी की भाँति कार्यान्वित किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का सबसे बड़ा पुस्तकालय

श्री जितेन्द्रसिंह एम० ए०

इस लेख में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के बृहद् और महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय का परिचय दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समृद्धिशीलता के प्रति जिनको तनिक भी सन्देह हो, उन्हें काशी नागरी प्रचारिणी सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय का अवश्य निरीक्षण करना चाहिए। यह हिन्दी-जगत् का सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे बड़ा पुस्तकालय है, इसका भण्डार ४०,००० ग्रन्थरत्नों से अलंकृत है। इस संसार की पुरातन संस्थाओं में इसका सर्वोच्च स्थान है। अपनी उत्कृष्टता के कारण हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति के अध्येताओं के लिए यह एक पवित्र तीर्थ-स्थल है। अन्य अहिन्दीभाषी क्षेत्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए भी इसके पास पर्याप्त उपकरण हैं। अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के साहित्य के उत्तमोत्तम एवं उपादेय पुस्तकों के संग्रह से पुस्तकालय की महत्ता और बढ़ने की आशा है।

यह कहना उचित होगा कि सन् १८९३ में स्थापित नागरी प्रचारिणी सभा का इतिहास समुन्नतिशील आधुनिक हिन्दी का इतिहास है। सभा ने नागरी लिपि तथा हिन्दी-साहित्य का प्रचार और प्रसार भारत की सीमा में ही नहीं परन्तु सुदूर देशों तक अबाध गति से किया। इसने सर्वप्रथम हिन्दी-साहित्य का एक आधिकारिक विशाल कोष तथा हिन्दी साहित्य का प्रामाणिक इतिहास प्रकाशित कर अपनी कार्यशीलता का अनुपम परिचय दिया। सभा ने केवल नवीन शास्त्रीय एवं शोध विषयक ग्रन्थों का ही नहीं बल्कि कुछ अपूर्व तथा असामान्य ज्ञात एवं अज्ञात हस्तलिखित ग्रन्थों का भी संग्रह किया है, जो हिन्दी के उस काल की संचित निधि हैं जब हिन्दी अपनी सांस्कृतिक परम्परा का निर्माण करने में संघर्षरत थी। प्रयाग के 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना कर सभा ने राष्ट्रभाषा प्रचार के एक अन्य सुयोग्य और लाभप्रद संस्था को जन्म दिया। सन् १८९३ सभा का जन्मकाल था, जब कि 'नागरी भण्डार' की नींव डाली गई थी। स्व० श्री गदाधरसिंह जी ने जब अपने 'आर्यभाषा पुस्तकालय' का दान सभा को कर दिया तो सभा का 'नागरी भण्डार' 'आर्यभाषा पुस्तकालय' के नाम से विभूषित हुआ। आज यह पुस्तकालय हिन्दी के प्रतिनिधि ग्रन्थों का अति विशाल तथा सर्वोत्कृष्ट संग्रहालय है। हिन्दी के यशस्वी लेखक तथा भारतीय संस्कृति के उन्नायक कविवर जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा प्रदत्त ६१२०, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की ४३१२, डॉ० हीरानन्द शास्त्री की ११६७, श्री मयाशंकर याज्ञिक की ११७९ एवं श्री श्रीशचन्द्र शर्मा द्वारा प्रदत्त १०२३ पुस्तकों, हस्तलिपियों तथा इनके प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रन्थों का समावेश भी समय-समय पर इस पुस्तकालय में हुआ है। नागरी प्रचारिणी सभा के प्रधानमन्त्री डॉ० राजबली पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत ६२वें विवरण के अनुसार आर्यभाषा पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों की संख्या २७५२ है। अन्य भाषा की पुस्तकों की संख्या भाषाक्रम से इस प्रकार है—संस्कृत ८७०, बंगाली २२२, मराठी १३०, गुजराती ३०६, उर्दू १५४, तेलगु-तमिल १४, गुरुमुखी ३७, पालि १९, नेपाली ३८, अंग्रेजी ११६४ और रूसी ४६।

यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकें पर्याप्त नहीं हैं, फिर भी उपर्युक्त भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की अपेक्षा उनकी संख्या अधिक है। बहुत-सी देशी तथा विदेशी भाषाओं की पुस्तकें, जो अभी संग्रहीत नहीं हैं, उनकी प्राप्ति वांछनीय है, क्योंकि उनका संग्रह हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए आवश्यक है।

भावी योजनाएँ

सभा 'आर्यभाषा पुस्तकालय' को अधिक समृद्ध और उपयोगी बनाना चाहती है। पुस्तक-संग्रह को अद्यतन रूप देने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए एक लाख रुपयों की एक तात्कालिक योजना तैयार की गई है। हिन्दी की अधिकांश पुस्तकें जो इधर १०-१५ वर्षों में प्रकाशित हुई हैं, अर्थाभाव के कारण क्रय नहीं की जा सकी हैं। सभा की उस योजना में २५,०००) विभिन्न विषयों की मौलिक रचनाओं के लिए, २५,०००) आदि और मध्य-काल के हस्तलिखित ग्रन्थों के हेतु, २५,०००) दर्शनशास्त्र, व्याकरण और कोष-विषयक ग्रन्थों के लिए तथा २५,०००) सन्दर्भ ग्रन्थों के लिए आयोजन हैं। इस सम्बन्ध में २,०००) का प्रबन्ध किया जा चुका है और सभा ने अपनी अल्प बचत से ८,०००) देने का निश्चय किया है। शेष ६०,-०००) राज्य की सहायता तथा जनता के दान से ही प्राप्त हो सकते हैं।

आर्यभाषा पुस्तकालय को सर्वांगीण रूप से सुसज्जित एवं समृद्ध करने के लिए अनुमानतः २५०,०००) की एक बड़ी योजना भी तैयार की गई है। इसके अन्तर्गत भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले शोध-छात्रों की प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या की उपादेयता के लिए एक पृथक् 'शोधकक्ष' के निर्माण का भी समावेश है। इस समय जो शोधछात्र आर्यभाषा पुस्तकालय से लाभान्वित हो रहे हैं, उनमें दो महाराष्ट्र के, एक पंजाब तथा एक हिमाचल प्रदेश के हैं। गतवर्ष राजस्थान, सागर, इलाहाबाद, लखनऊ, आगरा, अलीगढ़, पंजाब विश्वविद्यालय के अतिरिक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और शिक्षा-मन्त्रालय से अनेक शोधछात्र अनुशीलन कार्य के लिए पधारे थे। उनकी संख्या ३१ थी और उनमें ७ महिलाएँ भी थीं।

आज भी पुस्तकालय का शोध-कक्ष थोड़ा-बहुत सुसज्जित है। आर्यभाषा पुस्तकालय के तरुण संयोजक श्री गोविन्द-प्रसाद जी केजरीवाल इस कक्ष को और समृद्ध बनाने के लिए

हिन्दी पुस्तकों के लिए एक अनुभवी सेल्ज़मैन की आवश्यकता है।

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

उत्सुक हैं। कुछ शोध-छात्रों ने, जिनको अपने अनु कार्य के सम्बन्ध में अन्य पुस्तकालयों को देखने का अ मिला है, यह अनुभव किया है कि विभिन्न विश्वविद्या की अपेक्षा उन्हें यहाँ पर अधिक सुव्यवस्था तथा सु मिलती है। नवनिर्मित अतिथि-भवन पुस्तकालय के एक बड़े अभाव की पूर्ति करेगा। किन्तु शोध एवं अध्ययन के में आधुनिक युग के उन्नतिशील स्तर को ध्यान में रख पुस्तकालय के शोधकक्ष का विकास पृथक् रूप से हो चाहिए।

आजकल सभा-भवन में जब कभी कोई विशेष आ होता है तो पुस्तकालय का वाचनालय एक 'सभा मण्ड परिणत हो जाता है, जिससे वाचनालय तथा पुस्तकाल कार्य कुछ घण्टों के लिए स्थगित कर देना पड़ता है। खेदजनक स्थिति है जिसका निराकरण तभी सम्भव है सभा का एक अलग सभामण्डप निर्मित कराया जाय, जि सभा के गौरवानुकूल बड़ी-बड़ी सभाएँ तथा साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन सम्पन्न हो सकें।

इस समय पुस्तकालय-भवन पुस्तकों की आलमारि ठसाठस भरा है। इस भवन का कुछ भाग सभा के विभागों द्वारा प्रयुक्त होता है। मुद्रणालय, आ पुस्तकालय की अनवरत वृद्धि तथा इसके सदस्यों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर अपरिहार्य रूप से यह आ श्यक हो जाता है कि पुस्तकालय के लिए आधुनिक का नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित एक भवन बने। नये भवन में अमूल्य तथा दुष्प्राप्य हस्तलिखित ग्रन् सुरक्षा के लिए एक वैज्ञानिक ढंग की प्रयोगशाला स्टूडियो की व्यवस्था भी हो तो क्या कहना, जिसमें 'मा फिल्म' की भी सुविधा हो। यदि वाचनालय एवं पुस्त की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले प्र भवन का निर्माण अतिशीघ्र सम्भव न हो तो पुस्त के लिए वर्तमान भवन में ही अधिक स्थान की व्यवस् जाय। सायंकाल पाठकों की भीड़ स्थानाभाव के कारण कालय का पूरा लाभ नहीं उठा पाती। पाठकों का के लिए प्रयत्नशील होना तथा पत्र-पत्रिकाओं के छीना-झपटी करना एक दृश्य-सा उपस्थित कर देता

(शेष पृष्ठ ६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

...त्र का पंछी : काफ़ी अरसे के बाद श्री इलाचन्द्र ...शी का एक नया उपन्यास प्रकाशित हुआ है। इसका ...क आत्मपरक चिन्ता से ग्रस्त, मनोविकृतियों से आक्रान्त ...ीं है, वरन् सांसारिक संघर्ष में अट्टहास करता हुआ आगे ...ने वाला सक्रिय, आशावादी पुरुष है। महान् सामाजिक ...र आर्थिक कठिनाइयों में उलझकर भी वह आत्म-...तुलन नहीं खो बैठता ; 'अण्डर डॉग' से सहानुभूति पाते ...र उसे अपनी परम आत्मीय, सच्ची सहानुभूति देते हुए, ...िंचित् मात्र कटुता को उकसाए बिना, वह कष्ट झेलता है ...और प्रत्येक परिस्थिति को चुनौती देता है। क्राउन साइज़ के ...२ पृष्ठों का यह उपन्यास **राजकमल प्रकाशन**, दिल्ली, ...लाहाबाद, बम्बई से प्रकाशित हुआ है और इसका मूल्य ...) है।

◆ ◆ ◆

...ाहित्यिकों से : ९४ पृष्ठों में आचार्य विनोबा भावे ...साहित्य सम्बन्धी अभिभाषणों का संग्रह है। श्री विनोबा ...ाहित्यिकों से भूदान-यज्ञ पर लिखने को नहीं कहते, क्योंकि ...ऐसा कहना धृष्टता भी होगी और मूर्खता भी।···साहि-...क अपना धन्धा जानते हैं।···कोई भी साहित्यिक दूसरे ...कहने से नहीं लिखता।" (पृष्ठ ३७) "हम आपको आज्ञा ...ीं दे सकते कि आप भूदान के गीत गायें" (पृष्ठ १६)। ...न वे "वागीश्वरों से वाग्दान', चाहते हैं। प्रायः सभी ...णों में उनकी यह अपील भरी हुई है—"आप मुझे ...दान दीजिए। लोगों को जगाने की शक्ति वाणी में, ...हित्य में, सारस्वत में है। उस शक्ति का उपयोग मैं आपसे ...श्रम के लिए चाहता हूँ" (पृष्ठ ४)। "मैं वाग्वीरों से ...दान की माँग करता हूँ" (पृष्ठ ५)। "आज हमारे सामने ...समस्याएँ हैं, वे छोटी नहीं हैं, और हमारे देश को जो ...ा मिला है, वह भी छोटा नहीं है।...उसका खयाल रखकर अगर यहाँ के साहित्यिक चिन्तन करेंगे, तो वे बहुत बड़ी सेवा कर सकेंगे" (पृष्ठ १०)। ("भूदान-यज्ञ से) आपमें किसी को अगर सहज स्फूर्ति हुई तो आप इस विषय को छोड़िए (पृष्ठ १६)।" "सहज स्फूर्ति हो जाय तो यह एक लिखने लायक विषय है, इतना ही हम कहना चाहते हैं" (पृष्ठ १७); और "मेरे लिए तो इसमें काव्य-ही काव्य भरा हुआ है। उससे मुझे सहज ही स्फूर्ति होती है" (पृष्ठ २६)। "मैं साहित्यिकों का आशीर्वाद चाहता हूँ क्योंकि साहित्य की शक्ति पर मेरा बहुत विश्वास है" (पृष्ठ ३६)। "आप साहित्यिक लोग जानते हैं कि जनता में विचार का कौन सा प्रवाह चलना चाहिए। उससे आपको सहज प्रेरणा मिलेगी। उसी में आपका भला है, मेरा भला है और हिन्दुस्तान का भला है" (पृष्ठ ४०)। "उत्तर-प्रदेश, बिहार और बंगाल (के) साहित्यिकों का आशीर्वाद, सहानुभूति और सहयोग भी हमें मिला है" (पृष्ठ ४१)। "हमें वाग्दान चाहिए...वाग्दान दीजिए। वाणी की उक्ति बहुत बड़ी होती है" (पृष्ठ ५५)। "जब हम साहित्यिकों से कुछ अपेक्षा रखते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि वे अपनी विशेषताओं को छोड़कर हमारा काम करें" (पृष्ठ ६०)। "अभी बेनीपुरी जी ने बताया है कि हम भूदान-यज्ञ में मदद करना चाहते हैं। कोई साहित्यिक वास्तव में मदद करेगा तो मालूम ही नहीं होगा। अगर फलाने उपन्यास में विनोबा की मदद की गई है, ऐसा मालूम हो गया तो फेल्युअर है, असफल है। जिसमें पता ही न लगे, वही उत्तम मदद है" (पृष्ठ ६७)। "प्रश्न—भूदान-यज्ञ के बारे में आप साहित्यकारों से क्या अपेक्षा करते हैं ? उत्तर—भूदान-यज्ञ की वैचारिक भूमिका का प्रचार करने के काम में साहित्यकार बहुत हाथ बटा सकते हैं" (पृष्ठ ८८)।

भूदान समाज-व्यवस्था के सर्वोदयी-दर्शन का एक पहलू है और उसके प्रवर्तक श्री विनोबा भावे साहित्यिकों से सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। साहित्य की शक्ति को पहचानते हुए इस साधन का वह उपयोग करना चाहते हैं, इस संग्रह को पढ़ने से यह स्पष्ट है।

लेखकों एवं साहित्यिकों को उनके सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति सचेत करने की बहुत-सी प्रेरणात्मक सामग्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन अभिभाषणों में है। आचार्य विनोबा की इन साहित्यिक मताभिव्यक्तियों से सर्वोदयी समाज-व्यवस्था का कोई समर्थक मतभेद प्रकट नहीं करेगा, लेकिन यदि किसी साहित्यिक की आस्था किसी अन्य समाज-व्यवस्था में हो, तो ? आज की सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के उद्देश्य से कोई साहित्यिकों से वाग्दान चाहे, तो ?

अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, राजघाट, बनारस, से यह पुस्तिका ।।) में प्राप्य है।

⟡ ⟡ ⟡

अतिमा : कविवर श्री सुमित्रानन्दन पन्त की अप्रैल ५४ से लेकर फरवरी ५५ तक की लिखी ५५ कविताओं का नवीनतम संग्रह "जिनकी प्रेरणा युग जीवन के अनेक स्तरों को स्पर्श करती हुई सृजन चेतना के नवीन रूपकों तथा प्रतीकों में मूर्त हुई है।" कवि का प्रकृति-प्रेम और भविष्य के प्रति प्रेमोल्लासपूर्ण विश्वास रचना के पद-पद में झलक रहा है। **भारती भण्डार**, इलाहाबाद से प्रकाशित डिमाई आकार के १४४ पृष्ठों के इस सजिल्द संग्रह का मूल्य ४) है।

⟡ ⟡ ⟡

पच्चीसवाँ घण्टा : रूमानिया के एक लेखक श्री सी० वर्जिल जारजो के एक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर। यह उपन्यास राजनीतिक कारणों से लेखक की अपनी भाषा में प्रकाशित न हो सका था, लेकिन इसके अनुवाद यूरोप की कई भाषाओं में प्रकाशित हुए। उपन्यास न केवल युद्ध की विभीषिका के विरुद्ध एक सशक्त तर्क उपस्थित करता है वरन् आज की सभ्यता की अमानवीय यांत्रिकता के विरुद्ध आग्रह-पूर्वक ध्यान भी खींचता है। अंग्रेजी संस्करण से धारा-प्रवाह सहज भाषा में सफल अनुवाद श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने किया है। पृष्ठ संख्या ५२७ ; क्राउन १६–पेजी आकार, मूल्य ६), प्रकाशक : **भारती भण्डार इलाहाबाद**।

⟡ ⟡ ⟡

काले फूल का पौदा : डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल का नया उपन्यास जिसमें परम्परागत संस्कारों में पली एक भारतीय ललना के मन पर पश्चिमी सामाजिक सभ्यता के प्रभाव का चित्र खींचा गया है। नई संस्कृति के थोथेपन का खाका इस रोचक उपन्यास के विभिन्न चरित्रों के मनोवैज्ञानिक रेखांकन के साथ उभरा है। क्राउन आकार के २६४ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन **भारती भण्डार**, इलाहाबाद, ने किया है। मूल्य ३) है।

⟡ ⟡ ⟡

नाव के पाँव : श्री जगदीश गुप्त की ५७ कविताओं का संग्रह। 'नाव के पाँव' शीर्षक खण्ड में ३३ कविताएँ हैं और 'टूटती लहरें' खण्ड में २४ पुरानी कविताएँ, जिन्हें पूर्वाभास देने की दृष्टि से और कुछ शायद ... के कारण (लेखक द्वारा) संग्रह में स्थान दे दिया गया है।

लेखक ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा है कि ... मन जितना शब्द और अर्थ में रमता है, उससे अधिक ... रूप और आकार भाते हैं। आज की नयी कविता के अच्छे-खासे अंश के लिए यह बात सत्य हो सकती है, ... प्रस्तुत संग्रह की कविताओं के रूप और आकार के ... अर्थ भी मन को स्पर्श करता है। प्रत्येक कविता की भाव... के अनुकूल प्रयोगवादी रेखा-चित्र भी लेखक द्वारा ... दिये गए हैं। डिमाई आकार के ७८ पृष्ठ, प्रकाशक ... विद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, मूल्य २॥)।

⟡ ⟡ ⟡

मध्यकालीन शृंगारिक प्रवृत्तियाँ तथा नव-निबन्ध ... श्री परशुराम चतुर्वेदी की कृति **नव-निबन्ध** में 'मध्यकालीन शृंगारिक प्रवृत्तियाँ' नाम के लेख को जोड़कर इस पुस्तक को **लोक सेवक प्रकाशन**, बनारस, ने प्रकाशित किया है। नये लेख के अतिरिक्त नौ निबन्ध हैं जिनमें '... वातावरण और व्यक्तित्व' तथा 'भारतेन्दु काल की ... कविता में जातीयता" संग्रह की मुख्य विचारधारा के ... कूल नहीं हैं। परिशिष्ट में 'चंड कौशिक और सत्य ...श्चन्द्र' पर टिप्पणी भी असम्बद्ध जान पड़ती है।

लेखक अपने विषय के सूक्ष्म अध्येता हैं ; उनके ... निबन्ध में मध्यकालीन काव्य पर नया प्रकाश डाला गया ... ६७ + १६८ = २६५ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ३) है।

⟡ ⟡ ⟡

कुरान शरीफ : इस धार्मिक ग्रन्थ का तर्जुमा श्री ... मद बशीर ने किया है और प्रकाशन श्री प्रभाकर ... लोक, लखनऊ ने। क्राउन आकार के ६०८ पृष्ठों की ... पुस्तक का मूल्य ८) है।

⟡ ⟡ ⟡

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ उत्कृष्ट प्रकाशन

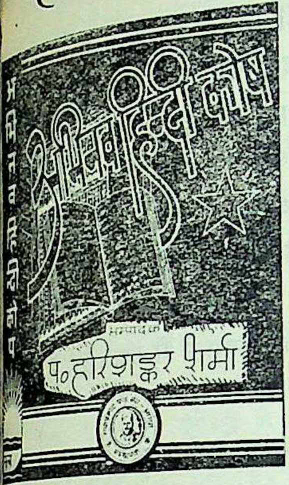

पृष्ठ ६००, मू० ८) इस पुस्तक में हिन्दी-साहित्य में प्रचलित हजारों शब्दों का संकलन है। साथ में संविधान शब्दावली भी है। पुस्तक साहित्य प्रेमियों व पुस्तकालयों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

संग्रहकर्ता—नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए० पृष्ठ १२५, मू० २) भक्त शिरोमणि मीराबाई के प्रमुख-प्रमुख गेय पदों का टिप्पणी व भावार्थ सहित संग्रह। 'मीरा' पर आज तक इससे अच्छी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई।

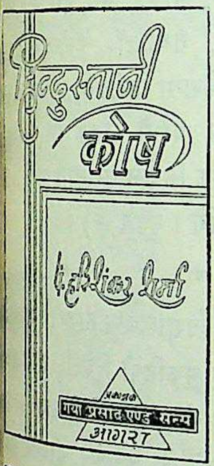

पृष्ठ ६३१, मू० ६) उर्दू न जानने वालों के लिए नागरी लिपि में उर्दू साहित्य का अनुशीलन करने का सुलभ साधन।

पृष्ठ ८७, मू० ३) प्रस्तुत पुस्तक लेखक की रचनाओं का तीसरा संग्रह है। लेखक के ही शब्दों में—'स्वप्न मेरी उत्कृष्ट आकांक्षाओं का व सत्य युग की विभीषिका का प्रतीक है।' विद्वानों ने पुस्तक की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

पृष्ठ ८५०, मू० ७) वैसे तो बहुत-से अँग्रेजी हिन्दी कोष हैं, पर जब कि इस समय शिक्षा का माध्यम हिन्दी है यह पुस्तक अँग्रेजी शब्दों का हिन्दी अर्थ बताने में आपकी सहायता करेगी।

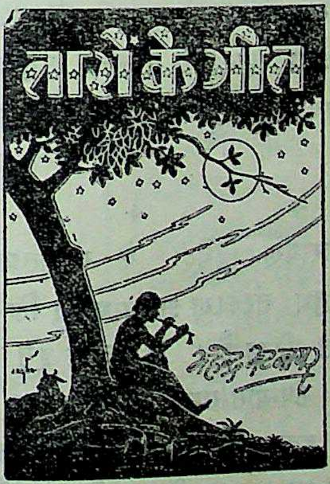

पृष्ठ ४६, मू० ।।।) सघन अन्धकार से घिरी निशा में घण्टों तक झिलमिलाते तारों का अवलोकन करने से उदित भिन्न-भिन्न भावों और विचारों को लेखक ने इन गीतों में व्यक्त किया है।

प्रकाशक— **गयाप्रसाद एण्ड सन्स**

बाँकेविलास, आगरा—चौड़ा रास्ता, जयपुर—४०/७८ परेड, कानपुर—पाटनसर बाजार, ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की एकता का निर्माण : १९४८ और १९५० के बीच सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा देश के विभिन्न नगरों में दिये गए २७ भाषणों का यह संग्रह **पब्लिकेशन्स डिवीज़न,** भारत सरकार, दिल्ली, ने प्रकाशित किया है। सरदार पटेल का नाम स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद देश के सफल राजनीतिक एकीकरण के कारण सदैव याद रहेगा। स्वतंत्र भारत की प्रारम्भिक शासकीय नीति को समझने के लिए इस संग्रह का ऐतिहासिक महत्त्व है। डिमाई आकार के ३५२ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५) है।

◊ ◊ ◊

पार्वती : एक अपरिचित कवि श्री रामानन्द तिवारी शास्त्री 'भारती नन्दन' द्वारा लिखित २७ सर्गों का रायल आकार के ५६७ पृष्ठों का महाकाव्य। इसके अतिरिक्त ५ पन्नों में कवि ने अपना परिचय २५ छन्दों में दिया है। प्रकाशक : श्रीमती शकुन्तला रानी, मंगल भवन, प्रोफेसर कालोनी, नयायुग, कोटा।

◊ ◊ ◊

प्रसाद का काव्य : डॉ० प्रेमशंकर द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि के लिए लिखा गया गवेषणात्मक प्रबन्ध। प्रसाद की समस्त काव्य-कृतियों का मूल्यांकन, तथा कवि प्रसाद का भारतीय और पाश्चात्य काव्य की पृष्ठभूमि में अध्ययन लेखक ने किया है। कुल पुस्तक पाँच भागों में बँटी है—पृष्ठ-भूमि, काव्य-विकास, कामायनी मूल्यांकन तथा परिशिष्ट।

डिमाई आकार की ५८६ पृष्ठों की सजिल्द, सुमुद्रित पुस्तक का मूल्य १०) है तथा प्रकाशक हैं **भारती भण्डार,** इलाहाबाद।

◊ ◊ ◊

कर्तव्याघात : श्री देवनारायण द्विवेदी के ख्यातिप्राप्त सामाजिक उपन्यास का चतुर्थ संस्करण **ज्ञानमण्डल लि०,** बनारस ने अभी प्रकाशित किया है। १९२६ में इस पर अपनी सम्मति देते हुए उपन्यास-सम्राट श्री प्रेमचन्द ने लिखा था कि "हिन्दी में इतना अच्छा उपन्यास अब तक हमारी नजरों से नहीं गुजरा था। कहानी इतनी सुन्दर है, लेखक की शैली इतनी प्यारी है, चरित्रों का प्रदर्शन इतना मनोहर है कि पाठक मनोभावों के उद्यान में विचर रहा है।" क्राउन १६पेजी आकार के २९२ पृष्ठों के इस सजिल्द उपन्यास का मूल्य केवल ४) है।

◊ ◊ ◊

हिन्दी साहित्य की नवीन धाराएँ : सर्वश्री विष्णु [illegible]कर, डॉ०नगेन्द्र, उदयशंकर भट्ट तथा रामचन्द्र तिवारी क्रमशः हिन्दी कहानी, कविता, नाटक तथा उपन्यास [illegible] दिये गए रेडियो-भाषणों के परिमार्जित रूप पब्लिकेशन्स डिवीज़न, भारत सरकार, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित [illegible] इस पुस्तक में संग्रहीत हैं। लेखकों ने अपने-अपने विषय [illegible] संक्षेप में अधिकार से लिखा है; विषय का परिचय दे [illegible] आगे जानने का कुतूहल जगाने में सफल हुए हैं।

◊ ◊ ◊

सूरदास, एक विश्लेषण : भक्त कवि सूरदास के सम्बन्ध में प्रभुदयाल मीतल, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० बी० [illegible] भट्ट, श्री विजयेन्द्र स्नातक, तथा डॉ० सत्येन्द्र के रेडियो भाषणों का यह संग्रह पब्लिकेशन्स डिवीजन, भारत सरकार, दिल्ली की ओर से छपा है। पाँचों लेखक सूर-साहित्य के मर्मज्ञ हैं। उनके ये प्रामाणिक निबन्ध सूर-साहित्य के [illegible]र्थियों द्वारा रुचि से पढ़े जायँगे। मूल्य ।=)।

◊ ◊ ◊

नालन्दा करेंट डिक्शनरी : विशालकाय नालन्दा शब्द[illegible] के प्रकाशक **न्यू इम्पीरियल बुकडिपो** दिल्ली, द्वारा प्रका[illegible]शित अंग्रेज़ी-हिन्दी का नया कोश। ८ पेजी क्राउन-[illegible] के १३३५ पृष्ठ और प्रकाशकों के अनुसार, दो लाख श[illegible] और उनके अर्थ। सम्पादकों में चार नाम हैं। जो शब्द दिये गए हैं उनमें कुछ अनुत्तरदायित्वपूर्ण ढील स्पष्ट [illegible] आती है। मूल्य १५)।

◊ ◊ ◊

वैदिक साहित्य और संस्कृति : श्री बलदेव उपा[illegible] द्वारा लिखित यह नवीन ग्रन्थ वैदिक साहित्य और [illegible] संस्कृति का परिचायक प्रामाणिक ग्रन्थ है। वेद का मह[illegible] ब्राह्मण-दर्शनों का परिचय, वैदिक अनुशीलन का इति[illegible] वेद की व्याख्या-पद्धति तथा वेदों का काल-निरूपण [illegible] खण्ड में हुआ है। इतिहास-खण्ड में संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं वेदाङ्ग-साहित्य का इतिवृत्तात्मक विवरण [illegible] अन्तिम संस्कृति-खण्ड में वैदिक भूगोल, आर्यों का निवास स्थान, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...देवों का परिचय है। परिशिष्ट में वैदिक व्याकरण ...की सूचनाएँ हैं। क्राउन आकार के ५७६ पृष्ठों की इस ...का प्रकाशन शारदा प्रकाशन, बनारस, ने किया है (मूल्य ५॥) है।

◈

...का नीबू : श्रीमती किरण द्वारा लिखित दस रोचक ...कथाएँ, जो चित्ताकर्षक ढंग से २४ रंगीन चित्रों ...की छापी साइज के ६० पृष्ठों में छापी गई हैं। बढ़िया ..., तीन रंग का आवरण, मूल्य १), प्रकाशक राज-...प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई।

◈

...: श्री इलाचन्द्र जोशी के १८ आलोचना-...निबन्धों का संग्रह है। इस संग्रह के कुछ निबन्ध सैद्धान्तिक समीक्षा से सम्बद्ध हैं और कुछ व्यावहारिक अथवा प्रायोगिक समीक्षा से। दोनों ही प्रकार के निबन्धों में आलोचक के अध्ययन की व्यापकता और चिन्तन की मौलिकता के दर्शन होते हैं। प्रसाद, प्रेमचन्द महादेवी आदि पर लिखे गए निबन्ध विशेष रूप से उपयोगी हैं, जिनमें उक्त कलाकारों के जीवन-दर्शन और कला के विकास-क्रम का स्पष्ट निरूपण है। इसका मूल्य ३) है और इसे शारदा प्रेस, भागलपुर ने प्रकाशित किया है।

◈ ◈ ◈

चक्रव्यूह : पण्डित लक्ष्मीनारायण मिश्र का संस्कृति-प्रधान पौराणिक नाटक है, जिसका कथानक महाभारत युद्ध की चक्रव्यूह-घटना पर आधारित है। नाटककार ने इस पौराणिक आख्यान को अधिक-से-अधिक मानवीय और

श्री गुरुदत्त के अनुपम उपन्यास

विकृत-छाया

का द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

मूल्य : चार रुपया आठ आना

● ● ●

श्री गुरुदत्त की रचनायें

१. वाम मार्ग	७)	७. पथिक	६)	१३. गुण्ठन	५)
२. विडम्बना	६)	८. स्वराज्य दान	६)	१४. विलोमगति	५)
३. भावुकता का मूल्य	६)	९. विश्वासघात	५॥)	१५. बहती रेता	५)
४. उन्मुक्त प्रेम	६)	१०. देश की हत्या	५॥)	१६. विकृत छाया	४॥)
५. उमड़ती घटाएँ	६)	११. प्रवंचना	५)	१७. अन्तिम यात्रा	१)
६. स्वाधीनता के पथ पर	६)	१२. मायाजाल	५)	18. Cultural State in Bharatvarsha.	Rs. 4/-

पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को उचित छूट दी जाती है।

—व्यवस्थापक

भारती साहित्य सदन,

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली–१

बढ़िया उपन्यास प्रकाशनार्थ चाहियें। लेखक कृपया पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि-संगत रूप देने का प्रयत्न किया है, जिसमें पात्रों व घटना-व्यापार के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूलभूत तत्त्वों का उद्घाटन भी सम्भव हो सका है। १३८ पृष्ठ के इस नाटक का मूल्य २।) है जिसे **कौशाम्बी प्रकाशन, प्रयाग** ने प्रकाशित किया है।

◈ ◈ ◈

जननी कार्यालय, इलाहाबाद ने देवदत्त शास्त्री की दो पुस्तकें **'उत्तररामचरित नाटक'** और **'अवन्ति सुन्दरी'** प्रकाशित की हैं। प्रथम पुस्तक भवभूति के सर्वश्रेष्ठ नाटक 'उत्तर-रामचरित' का हिन्दी रूपान्तर है। अनुवाद अत्यन्त सतर्कता से किया गया है, जिसमें मूल की आत्मा को सुरक्षित रखने का सफल प्रयास दिखाई देता है। दूसरी पुस्तक में अवन्ति की तीन राजकुमारियों की कथाएँ हैं। प्रत्येक कथा के प्रारम्भ में उसका ऐतिहासिक और सामाजिक परिचय भी दे दिया गया है। इन पुस्तकों का मूल्य क्रमशः १।।) और २) है।

◈ ◈ ◈

अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, काशी से 'पुस्तक-परिचय' के लिए जो ४ पुस्तकें प्राप्त हुई हैं, उनमें सर्वप्रथम विनोबा जी की त्रिवेणी है, जिसमें उनके वचनों का संकलन है और जिसका सम्पादन और संकलन निर्मला देशपांडे ने किया है। दूसरी पुस्तक **विनोबा के साथ** भी निर्मला [...] की है। भावुक लेखिका ने विनोबा जी की पद-यात्रा [...] जो स्मृतियाँ सँजोई थीं उन्हें ही इस पुस्तक में [...] रूप में व्यक्त किया है। तीसरी पुस्तक नारायण [...] भूदान आरोहण है, जिसमें भूदान-यज्ञ की प्रामाणि[...] कारी दी गई है। अन्तिम पुस्तक मृदुला [...] पावन-प्रसंग है, जिसमें भूदान-यज्ञ सम्बन्धी [...] गए हैं। इन पुस्तकों का मूल्य क्रमशः ।।), १), [...] ।=) हैं।

◈ ◈ ◈

निकम्मा : प्रस्तुत कृति श्री जितेन्द्र का सामाजि[...] न्यास है। इसका वातावरण और कथानक बहुत-कुछ [...] जीवन से सम्बद्ध है, जिसमें अनेक स्थलों पर अस्वा[...] है और यही कारण है कि उपन्यास की सप्राणता [...] पहुँची है। यों तो लेखक की शैली काफ़ी मँजी हुई है [...] कहीं-कहीं भाषा के ग़लत प्रयोग खलते हैं। १७६ [...] इस उपन्यास का मूल्य २।।) है, जिसे लहर प्रकाशन [...] हाबाद ने प्रकाशित किया है।

◈ ◈ ◈

(शेष पृष्ठ ...

भारत-सरकार द्वारा आयोजित

प्रकाशन-पुरस्कार

के विजेता

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

न केवल प्रकाशन-क्षेत्र में बल्कि थोक पुस्तक-विक्रय-क्षेत्र में भी आपकी सेवा में उसी तन्मयता व दक्षता से रत हैं। अपनी आवश्यकताओं के लिए निःसंकोच पूछताछ करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

...लिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)

...तुल्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)

...डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)

...की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

...रो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

...रो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

...मान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)

...लनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

...षों के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)

...जा कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

...वेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)

...नरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)

...दिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)

...रतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

...मारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)

...संस्मरण : " ३)

...रेखाचित्र : " " ४)

[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-१९५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)

अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५, : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)

हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द ३)

ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)

ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)

धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)

कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवत शरण उपाध्याय ४)

शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)

रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथ कुमार एम० ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)

गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)

आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)

मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)

पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)

भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० १)

जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)

ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ६४० का शेष)

आनन्द प्रकाशन लिमिटेड, बनारस ने धर्म और नीति आदि से सम्बद्ध जो नई पुस्तकें प्रकाशित की हैं, उनमें से पहली पुस्तक श्रीमती एनी बिसेण्ट की 'भारतीय आदर्श' है, जिसमें शिक्षा, धर्म और तत्त्वदर्शन तथा कला से सम्बन्धित तीन व्याख्याओं के हिन्दी रूपान्तर संग्रहीत हैं। सी० जिनराजदास की दो पुस्तकें **'नैवेद्य'** और **'थियॉसाफ़ी का व्यवहार दर्शन'** हैं। दोनों ही पुस्तकें मूल अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित हैं। कलाराकॉड की पुस्तक **'ध्यान, अभ्यास और परिणाम'** भी मूल अंग्रेजी से हिन्दी में रूपान्तरित है। अन्तिम पुस्तक रायबहादुर श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी की **'सनातन धर्म और युग धर्म'** है। इन पुस्तकों के मूल्य क्रमशः १), ।।), ।।।), ।।) और ।=) हैं।

◈ ◈ ◈

अहिंसक समाजवाद की ओर : में गाँधी जी के इस विषय से सम्बद्ध भाषणों, लेखों और वार्तालापों का संकलन है, जिसका सम्पादन भारतन् कुमारप्पा ने किया है। २०४ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य २) है, जिसका प्रकाशन **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद** से हुआ है।

◈ ◈ ◈

कामता प्रकाशन, पटना से प्रकाशित कामताप्रसाद सिंह 'काम' की ये चार पुस्तकें—**नाविक के तीर, मैं छोटा नागपुर में हूँ, पठान का बच्चा और आस पास की दुनिया**—परिचयार्थ प्राप्त हुई हैं। 'नाविक के तीर, लेखक की पुरानी छोटी कहानियों का एक संग्रह है। दूसरी पुस्तक में लेखक ने छोटा नागपुर की अन्तरात्मा का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। 'पठान का बच्चा' नामक कहानी-संग्रह लेखक की प्रथम साहित्यिक कृति है। **'आसपास की दुनिया'** में लेखक के दैनिक जीवन में आने वाले व्यक्तियों और उपयोग में आने वाली वस्तुओं का अध्ययन है। पुस्तकों का प्रकाशन सुरुचिपूर्ण है।

◈ ◈ ◈

श्री माँ सारदा देवी : परमहंस श्री रामकृष्ण की जीवन-सहचरी श्री माँ सारदा देवी की यह जीवन-कथा स्वामी गम्भीरानन्द द्वारा लिखी गई है तथा श्री माँ ... वर्ष-जयन्ती पर प्रकाशित की गई है। यह जीवन-... लौकिक साधारण व्यक्ति के कार्य कलाप की परिध... एक परम भक्त द्वारा एक दैवी शक्ति की ... रहस्योद्‌घाटन है। **अद्वैत आश्रम, अलमोड़ा** ... आकार के ६०० पृष्ठों में प्रकाशित इस सजिल्द ... मूल्य ६।।) मात्र है।

◈ ◈ ◈

बलिदान : आचार्य बैजनाथ राय द्वारा लिखित ... के शब्दों में 'सरस एवं ओजपूर्ण शैली में ... राष्ट्रीय उपन्यास।' क्राउन आकार के २७८ पृ... जिल्द, मूल्य ४)। प्रकाशक ज्ञान-मन्दिर, ५८ ... रोड, कलकत्ता।

◈ ◈ ◈

आवाज़ सुरीली कैसे करें : गायन के प्रेमियों ... महत्त्वपूर्ण पुस्तक जिसमें अभ्यास व प्रयास से स्वर ... तथा शक्ति लाने के उपाय विस्तार से बताये गए हैं ... कार्यालय, हाथरस, द्वारा प्रकाशित तथा श्री ल... द्वारा लिखित १४० पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक ... २) है।

◈ ◈ ◈

निबन्ध भारती : श्री सिंहासन राय ... लिखित इस पुस्तक में विभिन्न विषयों पर उनके ... संग्रहीत हैं। प्रत्येक निबन्ध के आरम्भ होने से ... विश्लेषण व उनकी रूपरेखा ऊपर अंकित कर ... भूमिका में निबन्ध-रचना, निबन्ध की सामग्री, शैली ... के भेद आदि पर एक लेख है। ६ पृष्ठों में डॉ० ... प्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० रामकुमार वर्मा, ... वृक्ष बेनीपुरी तथा कई अन्य प्राध्यापकों की पुस्तक ... प्रशंसात्मक सम्मतियाँ छापी गई हैं जिनसे पुस्तक की ... प्रमाणित की गई है। श्री मैथिलीशरण गुप्त ने ... लिखा है कि निबन्धों के "भाषा और भाव दोनों ... रहे हैं। पुस्तक पठनीय और उपयोगी है।" ... पुस्तक ३।।) में **आदर्श पुस्तक भण्डार,** कलकत्ता, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

...ल भारत सर्व-सेवा-संघ, बनारस

...द और पेड़-पौधों का पोषण, श्री मथुरादास पुरुषोत्तम ...त, १)

...करण विचार, विनोबा, १।।)

...त विनोबा की आनन्द यात्रा, श्री सुरेश, १।।)

...थ-चक्की, श्री एम० विनायक, ।।।)

...एण्टल बुक डिपो, दिल्ली

...ख के बादल, श्री कमल शुक्ल, ४)

...व घर, कानपुर

...शिया का भूगोल, कामता प्रसाद कुलश्रेष्ठ, १५)

...न्दराम हासानन्द, दिल्ली

...सु दर्शन, श्री म० आनन्द स्वामी, २)

...ल एण्ड कं०, दिल्ली

...श्री पञ्चदशी, पीताम्बरी भाष्य, ८)

...नल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

...बल परीक्षा, श्री वीरेन्द्रसिंह यदुवंशी, ३।।)

...प्रकृति के दरबार में, श्री जगन्नाथ शर्मा, १।)

...किशोरों की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, श्री द्वारिका ...साद, ।।)

...र्सराज, दास्ताएवस्की, अनु०, श्री शिवदानसिंह चौहान

...र राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

...ल और चीनी, श्री फूलदेव सहाय वर्मा, १३।।)

...ध्य देश : एक सांस्कृतिक सिंहावलोकन, डॉ० धीरेन्द्र ...र्मा, ७)

...न मत, डॉ० यदुवंशी, ८)

...हस्तलिखित पोथियों का विवरण, २।।)

...कर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद

...प्रधान मन्त्री, श्री नकाब पोश भेदी, ।।)

भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद

—**मौत की गन्ध**, श्री प्रतापचन्द्र अग्रवाल, ।।)

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस

—**और खाई बढ़ती गई**, श्री भारत भूषण अग्रवाल,

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

—**मानव भूगोल**, श्री रामनारायण मिश्र, ५)

रवि प्रकाशन, कानपुर

—**वृन्दावनलाल वर्मा, उपन्यास और कला**, श्री शिवकुमार मिश्र, ४।।)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—**पृथ्वीराज रासो में कथानक-रूढ़ियाँ**, ब्रजविलास श्रीवास्तव, ३)

रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद

—**लहरें तीन फूल एक**, श्री प्यारेलाल आवारा, २।।)

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद

—**इतिहास चक्र**, डॉ० राममनोहर लोहिया, १।।)

—**महुए का पेड़**, मार्कण्डेय, २।।)

सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

—**कबीर**, श्री कैलाशचन्द्र वार्ष्णेय, २)

—**तुलसी पर गवेषणात्मक अध्ययन**, श्री राजकुमार, ३।।)

—**भारतेन्दु की कविता**, डॉ० रांगेय राघव, ३)

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद

—**धरती की गोद**, श्री भारत भूषण अग्रवाल, १)

—**सेतबन्धु**, श्री भारत भूषण अग्रवाल, १)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—**इंसाफ**, श्री यज्ञदत्त शर्मा, पु० मु०, ३)

—**फुनिया की शादी**, श्री यज्ञदत्त शर्मा, पु० मु०, ३)

—**बाप बेटी**, श्री यज्ञदत्त शर्मा, ५।।)

—**शान्ति लोक**, कविता संकलन, ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर अक्तूबर मास के प्रकाशन

आलोचना—साहित्य—व्याकरण—संस्कृति

इलाचन्द्र जोशी, **साहित्य-चिन्तन**, १८६, क्रा०, श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना

गुलाबराय, **हिन्दी काव्य विमर्श**, पु० मु०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

चन्द्रभान जी, **मानस में लोक-वार्त्ता**, १६२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

जगन्नाथ शर्मा, डॉ०, **कहानी का रचना-विधान**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस

त्रिभुवनसिंह, **हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस

त्रिलोचन पाण्डे, **साकेत एक अध्ययन**, २१२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

तुलनात्मक विवेचन, १६०, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', **अभिषेक**, ११०, डि०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', सम्पा०, **साहित्य सञ्चय**, २२६, डि०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद

नगेन्द्र, डॉ०, **भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा**, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

नामवरसिंह, **छायावाद**, १४६, डि०, सरस्वती प्रेस, बनारस

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', डॉ०, **हिन्दी के प्रमुख गद्यकार और उनकी शैलियाँ**, १६२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

परमेश्वरीलाल गुप्त, **प्रसाद के नाटक**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस

परशुराम चतुर्वेदी, **भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ**, २३४, क्रा०, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद

भगवत शरण उपाध्याय, **कालिदास, जीवन और साहित्य**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

भगवत शरण उपाध्याय, **भारतीय चित्रकला की कहानी**, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

भगवत शरण उपाध्याय, **भारतीय मूर्तिकला की कहानी**, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

भगवत शरण उपाध्याय, **भारतीय संस्कृति की कहानी**, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

भगवत शरण उपाध्याय, **सांस्कृतिक भारत**, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...भटनागर, आधुनिक साहित्य और कला, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस २॥)
...शर्मा, तुलसी-साहित्य और सिद्धान्त, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २॥)
...सिंह गौड़, सन्त कबीर दर्शन, १२२, क्रा०, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद २)
...गुप्त, महादेवी वर्मा साहित्य : कला, जीवन-दर्शन, २८८, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ३॥)
...महेन्द्र, हिन्दी नाटक के सिद्धान्त और नाटककार, ३००, डि०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ४॥)
...कुमार डॉ०, हिन्दी साहित्य रत्नाकर (२ भाग), नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ५)
...नाथ, हिन्दी साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक, पु० मु०, ३०४, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ३॥)
...राजेन्द्रसिंह, आलोचना के सिद्धान्त, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४)
...पाण्डेय, डॉ०, प्रसादजी की नाट्यकला और अजातशत्रु, १९२, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा १॥।)
...प्रिय द्विवेदी, साकल्य, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ४)
...स्वरूप गुप्त, उद्धव शतक परिशीलन, १४४, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ २)
...स्वरूप गुप्त, कबीर साहित्य और समीक्षा, २५६, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ ४)
...स्वरूप गुप्त, यशोधरा परिशीलन, पु० मु०, १७०, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ २)
...स्वरूप गुप्त, विनय पत्रिका दर्शन, ९६, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ १॥)
...शर्मा, प्रथम सुमन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १)
...न्द्र डॉ०, साहित्य के रूप, २५०, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ३)
...पाण्डेय, प्रसाद की कविताएँ, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ५)
...चन्द्र गुप्त, हिन्दी कवियों की काव्य-भावना, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ३)
...औध, रस साहित्य और समीक्षाएँ, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ५)
...श्रीवास्तव, डॉ०, भारतीय प्रेमाख्यान काव्य, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस १०)
...लाल चोपड़ा, डॉ० इकबाल और उनकी शायरी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ५)

उपन्यास

...चन्द्र जोशी, जहाज का पंछी, ५५२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ७)
..., प्रतीक्षा, ६४, क्रा०, सरस्वती प्रेस, बनारस १)
...शरद, आंचल का आसरा, पु० मु०, १३६, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद १॥।)
...प्रकाश, मज़दूर, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर ३)
..., अनु० हरि कपूर, सुबह शाम, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली २॥)
...अग्निहोत्री, कंकाल का रहस्य, १२८, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद ॥)
..., निकम्मा, १७६, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद २॥)
...पोश भेदी, अपराधी, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ॥-)
...नागर, फूल और पतझर, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ५॥)
...सिंह, जीवन संग्राम, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारेलाल आवारा, **खरोंच**, पु० मु०, १६०, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल आवारा, **गंदला पानी**, १६०, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल आवारा, **बदली की धूप**, २५२, क्रा०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद
मायादेवी मधु, **जीवन के दो चित्र**, १४०, क्रा०, नवजीवन पुस्तकमाला, इलाहाबाद
यज्ञदत्त शर्मा, **परिवार**, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', **नया इन्सान**, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली
रामचरण दास, **कर्मेन्द्र**, १२०, क्रा०, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद
रामनाथ 'मिलिन्द', **दीवार**, २४०, क्रा०, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर
व्रजेन्द्र खन्ना, **बालू के टीले**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस
विल्हेल्म लेम्सजस, अनु० देवेन्द्र विसुनपुरी, **बूचड़खाना**, ६४, क्रा०, सरस्वती प्रेस, बनारस
शरण, **अनीता**, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली
शरत्, अनु० जी० एस० वर्मा, **अनुराधा**, पु० मु०, ८०, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
शरत्, अनु० जी० एस० वर्मा, **परिणीता**, पु० मु०, ८८, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
शरत्, अनु० जी० एस० वर्मा, **विराज बहू**, पु० मु०, १४४, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
सरयू पण्डा गौड़, **अंधकार**, २२४, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
सरयू पण्डा गौड़, **अश्रुगंगा**, १७६, क्रा०, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस

कविता

प्रेमचन्द्र, **विरह गीत**, १०८, डि०, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद
रांगेय राघव, **पांचाली**, ६६, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
विनोदानन्द ठाकुर, **धारा**, ६६, क्रा०, श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना
शागिर्द अल्लहबादी, **मुस्कान**, पु० मु०, १७५, क्रा०, स्टुडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर

कहानियाँ

अयोध्याप्रसाद गोयलीय, **जिन खोजा तिन पाइया**, ११६, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस
कामताप्रसाद सिंह 'काम', **आसपास की दुनिया**, कामता प्रकाशन, पटना
कामताप्रसाद सिंह 'काम', **नाविक के तीर**, कामता प्रकाशन, पटना
कामताप्रसाद सिंह 'काम', **पठान का बच्चा**, कामता प्रकाशन, पटना
तृषित, **मकड़ी के जाले**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस
प्रेमचन्द, **प्रेम पीयूष**, पु० मु०, १७४, क्रा०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद

नाटक

लक्ष्मीनारायण मिश्र, **कावेरी में कमल**, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

...ना पटवर्धन, गाँव का गोकुल, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, बनारस ।)
...नन्द कुमार, नीति-कथाएँ, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
...नन्द कुमार, लोक कथाएँ, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
...रण, सोने का नीबू, ६०, कापी साइज़, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १)
...तुरसेन शास्त्री, बच्चों का सुधार, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली १।।)
...देवसिंह देव, कृषि विकास माला ७ भाग, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ, प्रत्येक भाग ।।)
...प्रकाश नारायण, जीवनदान, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, बनारस ।)
...न्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ०, समाज कल्याण माला ४ भाग, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ, प्रत्येक भाग ।।)
...रेन्द्र भाई मजूमदार, ग्रामराज, ७२, क्रा०, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, बनारस ।-)
...रेन्द्र भाई मजूमदार, नई तालीम, ११२, क्रा०, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, बनारस ।।)
...रमेश्वरीदीन वर्मा, सम्पा०, शकुन्तला नाटक, १२८, क्रा०, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ १।।)
...मचन्द, स्वामी विवेकानन्द, ३०, डि०, सरस्वती प्रेस, बनारस ।।।)
...गवत शरण चतुर्वेदी, राजाओं की कहानियाँ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ १।)
...गवत शरण चतुर्वेदी, वीरों की कहानियाँ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ १।)
...रलीधर श्रीवास्तव, अद्भुत सभा, २३, फु० स्केप, श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना ।≡)।।
...मनारायण मिश्र, सरल कहानियाँ, ११०, क्रा०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद ।।)
...मेश वेदी, तुलसी, पु० मु०, १५५, क्रा०, हिमालय हर्बल इंस्टीट्यूट, हरिद्वार २)
...विनोदानन्द ठाकुर, बाँसुरी वाला, १८, क्रा०, श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना ।=)
...विनोबा, गाँव-गाँव में स्वराज्य, ३२, क्रा०, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ, बनारस ।=)
...सुधाकर पाण्डेय, विज्ञान की कहानियाँ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ १।)
...सुधाकर पाण्डेय, हमारे देश-निर्माता, ३२, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ।=)
...सुधाकर पाण्डेय, हमारे राष्ट्र नायक, ३२, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ।=)
...सुधाकर पाण्डेय, हमारे राष्ट्र-पिता, ३२, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ।=)
...हंसकुमार तिवारी, ग्राम-कथाएँ, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ १।।)
...हबीब तनवीर, चांदी का चमचा, मकतबा जामिया लि०, दिल्ली ।)

विविध

अमरनाथ शुक्ल, विवाहित जीवन, विद्या प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली २।।)
ओम्प्रकाश, हमारी माँगें, पु० मु०, २००, क्रा०, ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर ३)
...कामताप्रसाद जैन, अहिंसा का विश्वव्यापी प्रभाव, १४०, क्रा०, अखिल विश्व जैन मिशन, अलीगंज १)
...कामता प्रसाद सिंह 'काम', मैं छोटा नागपुर में हूँ, प्रथम भाग, कामता प्रकाशन, पटना २।।)
गीता दैनन्दिनी, ४१६, २।।×२।, गीता प्रेस, गोरखपुर ।।=)
गोपाल नारायण टण्डन, देशी बहीखाता, १७२, क्रा०, सरस्वती प्रेस, बनारस १।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालमुकुन्द त्रिपाठी, **भुवन मार्तण्ड पंचांग**, पु० मु०, ४६, क्रा०, स्टूडेण्ट्स स्टोर्स, जबलपुर
म० प्रभु आजीत, **गायत्री रहस्य**, पु० मु०, ४७०, क्रा०, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
रामनारायण मिश्र, **इटली दर्शन**, पु० मु०, ६६, क्रा०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, **कृषि भूगोल**, ४५४, क्रा०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामस्वरूप वशिष्ठ, **मानचित्र प्रवेशिका**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
रामनारायण मिश्र, **गोआ**, ४०, क्रा०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, **पुर्तगाल**, ३६, क्रा०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
सदासुखदास स्व०, वीरेन्द्र प्रसाद जैन, **मृत्युमहोत्सव**, ४२, क्रा०, अखिल विश्व जैन मिशन, अलीगंज
सावित्री देवी वर्मा, **नारी का रूप-शृङ्गार**, २५६, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
सिद्ध गोपाल, **बहनों की बातें**, पु० मु०, ८४, क्रा०, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
हनुमानप्रसाद पोद्दार, **भगवान् श्रीकृष्ण, भाग १**, पु० मु०, ६८, डि०, गीता प्रेस, गोरखपुर

(पृष्ठ ६३४ का शेष)

वाचनालय की समुचित व्यवस्था के लिए अधिक स्थान नितान्त अपेक्षित है ।

देश के इस सबसे बड़े हिन्दी पुस्तकालय को प्रान्तीय सरकार केवल, १,०००) की वार्षिक सहायता प्रदान करती है । काशी की नगरपालिका प्रतिवर्ष केवल ५००) की सहायता देती है । आर्यभाषा पुस्तकालय की श्रीवृद्धि तथा इसकी नवीनतम योजना को कार्यान्वित करने के लिए यह सहायता नगण्य है ।

भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक तथा हिन्दी-साहित्य के उन्नायक सन्त कबीर, तुलसीदास एवं सूरदास तथा आधुनिक काल के युग-निर्माता भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, श्री श्यामसुन्दरदास और रामचन्द्र शुक्ल के प्रेरणादायक, आकर्षक और कलात्मक की सुखद छाया में अध्ययन करते समय हम एक अपूर्व का अनुभव करते हैं और हिन्दी के उत्तराधिकारी होने के नाते आर्यभाषा पुस्तकालय की परम्परा से प्रेरणा प्राप्त हैं । क्या हम हिन्दी के सबसे बड़े पुस्तकालय के प्रति कर्तव्य का वस्तुतः पालन करते हैं ? यह एक प्रश्न है जिसका उत्तर राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों तथा देश की जनता को देना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार हैं : पूरा पृष्ठ : ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३ ३/४"×६" या २ ३/४"×८"। चौथाई पृष्ठ : २ ३/४"×३ ३/४"। एक कालम इंच : १"×२ ३/४"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५ १/२"×६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रन्थ

१. हिन्दी-साहित्य का आदिकाल—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। प्राचीन रचनाओं के उदाहरण भी। मूल्य पौने तीन रुपये, अजिल्द, पृष्ठ-संख्या १३२। आदिकालीन साहित्य का प्रामाणिक विश्लेषण।

२. यूरोपीय दर्शन—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। आधुनिकतम दार्शनिक प्रगति भी। मूल्य सवा तीन रुपये, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ११५। लेखक का दुर्लभ चित्र और परिचय।

३. हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य सजिल्द साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और १८८ इकरंगे ऐतिहासिक चित्र। प्राचीन भारत के वैभव का काव्यात्मक वर्णन।

४. विश्वधर्म-दर्शन—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द, विश्व के प्रमुख धर्मों का इतिहास और परिचय। भारतीय संस्कृति का विशद विवेचन।

५. सार्थवाह—डा० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। १०० ऐतिहासिक चित्र तथा दो दुरंगे मानचित्र। सर्वत्र प्रशंसित। सजिल्द। अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक।

६. वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—डा० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये। गवेषणापूर्ण और मननीय। अनुसंधायकों के अध्ययन-योग्य।

७. सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। सजिल्द, मूल्य चौदह रुपये। सात तिरंगे और बारह एकरंगे चित्र। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ। शोधपूर्ण समीक्षात्मक।

८. काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत)—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत 'संस्कृत-रत्नाकर'-सम्पादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये, प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट। सजिल्द। मूलयुक्त।

९. श्री रामावतार शर्मा-निबन्धावली—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये। पाण्डित्यपूर्ण पठनीय निबन्ध। सजिल्द। लेखक का सचित्र परिचय।

१०. प्राङ्मौर्य बिहार—डा० देवसहाय त्रिवेद। मूल्य सवा सात रुपये। प्राचीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह एकरंगे ऐतिहासिक चित्र। सजिल्द। सुन्दर आवरण।

११. गुप्तकालीन मुद्राएँ—डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। सजिल्द। प्राचीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक। मुद्राशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक।

१२. भोजपुरी भाषा और साहित्य—डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ६२५। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सुविस्तृत भूमिका-सहित। सजिल्द।

१३. राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त—श्री गोरखनाथ सिंह (भूतपूर्व शिक्षा-निर्देशक, बिहार)। मूल्य डेढ़ रुपया। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२। राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

१४. रबर—श्री फूलदेव सहाय वर्मा, (कालेज-इन्स्पेक्टर, बिहार-विश्वविद्यालय), सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये, पृष्ठ २२६, चित्र ६१। ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक, आकर्षक आवरण।

१५. ग्रह-नक्षत्र—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०। पृष्ठ ११८, रेखाचित्र ५०। मूल्य सवा चार रुपये। खगोल-जगत् का अद्भुत दृश्य-दर्शक रोचक वर्णन। सजिल्द।

१६. नीहारिकाएँ—डा० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ७२, चित्र २१। मूल्य सजिल्द सवा चार रुपये। वैज्ञानिक विषय का मनोहर साहित्यिक वर्णन। नेत्ररंजक आवरण।

१७. हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०, पृष्ठ १३४, मूल्य सजिल्द तीन रुपये। भावात्मक चित्रमय आवरणयुक्त जिल्द।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना-३

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

२॥)

एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

१२-१२-५५
गुरुकुल पत्रिका
पुस्तकालय
गुरुकुल

श्री इलाचन्द्र जोशी

उपन्यास-सम्राट् श्री इलाचन्द्र जोशी

का

नवीनतम उपन्यास

जहाज का पंछी

छपकर तैयार है ।

पृष्ठ संख्या ५५२ : मूल्य ७) मात्र

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य के सत्रह अनमोल ग्रन्थ

१. हिन्दी-साहित्य का आदिकाल—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी। प्राचीन रचनाओं के उदाहरण भी। मूल्य पौने तीन रुपये, अजिल्द, पृष्ठ-संख्या १३२। आदिकालीन साहित्य का प्रामाणिक विश्लेषण।

२. यूरोपीय दर्शन—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। आधुनिकतम दार्शनिक प्रगति भी। मूल्य सवा [illegible] रुपये, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ११५। लेखक का दुर्लभ चित्र और परिचय।

३. हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य सजिल्द साढ़े नौ रुपये। [illegible] तिरंगे और १८८ इकरंगे ऐतिहासिक चित्र। प्राचीन भारत के वैभव का काव्यात्मक वर्णन।

४. विश्वधर्म-दर्शन—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द, विश्व के प्रमुख [illegible] का इतिहास और परिचय। भारतीय संस्कृति का विशद विवेचन।

५. सार्थवाह—डा० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। १०० ऐतिहासिक चित्र तथा दो दुरंगे मानचित्र। [illegible] प्रशंसित। सजिल्द। अत्यन्त रोचक और ज्ञानवर्द्धक।

६. वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—डा० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये। गवेषणापूर्ण और मननीय। अनुसंधायकों के अध्ययन-योग्य।

७. सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। सजिल्द, मूल्य चौदह रुपये। [illegible] तिरंगे और बारह एकरंगे चित्र। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ। शोधपूर्ण समीक्षात्मक।

८. काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत)—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत 'संस्कृत-रत्नाकर'-सम्पादक मूल्य साढ़े नौ रुपये, प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट। सजिल्द। मूलयुक्त।

९. श्री रामावतार शर्मा-निबन्धावली—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये। पाण्डित्यपूर्ण पठनीय निबन्ध। सजिल्द। लेखक का सचित्र परिचय।

१०. प्राङ्मौर्य बिहार—डा० देवसहाय त्रिवेद। मूल्य सवा सात रुपये। प्राचीन बिहार के मानचित्र के साथ [illegible] एकरंगे ऐतिहासिक चित्र। सजिल्द। सुन्दर आवरण।

११. गुप्तकालीन मुद्राएँ—डा० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। सजिल्द। प्राचीन मुद्राओं [illegible] लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक। मुद्राशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक।

१२. भोजपुरी भाषा और साहित्य—डा० उदयनारायण तिवारी (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ६२५। [illegible] साढ़े तेरह रुपये। सुविस्तृत भूमिका-सहित। सजिल्द।

१३. राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त—श्री गोरखनाथ सिंह (भूतपूर्व शिक्षा-निर्देशक, बिहार)। मूल्य [illegible] रुपया। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२। राष्ट्रीय अर्थशास्त्र।

१४. रबर—श्री फूलदेव सहाय वर्मा, (कालेज-इन्स्पेक्टर, बिहार-विश्वविद्यालय), सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये पृष्ठ २२६, चित्र ६१। ज्ञानवर्द्धक और मनोरंजक, आकर्षक आवरण।

१५. ग्रह-नक्षत्र—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०। पृष्ठ ११८, रेखाचित्र ५०। मूल्य सवा चार रुपये खगोल-जगत् का अद्भुत दृश्य-दर्शक रोचक वर्णन। सजिल्द।

१६. नीहारिकाएँ—डा० गोरखप्रसाद (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। पृष्ठ ७२, चित्र २१। मूल्य सजिल्द सवा [illegible] रुपये। वैज्ञानिक विषय का मनोहर साहित्यिक वर्णन। नेत्ररंजक आवरण।

१७. हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आई० सी० एस०, पृष्ठ १३४, [illegible] सजिल्द तीन रुपये। भावात्मक चित्रमय आवरणयुक्त जिल्द।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ३ :
: अंक ४ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

...र मास में प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने ...में अपने एक भाषण में कहा था कि भारत सरकार ...त्तम पुस्तकों को सस्ते-से-सस्ते मूल्य में प्रकाशित करने ...प्रबन्ध शीघ्र ही करेगी। इसी मास में शिक्षा-मन्त्री ...लाना अबुल कलाम आज़ाद ने एक नेशनल बुक ट्रस्ट ...स्थापना की घोषणा भी की है। देश की जनता को सस्ते ...में श्रेष्ठ साहित्य मिले, इस उद्देश्य के बारे में दो रायें ...हो सकतीं, लेकिन इस उद्देश्य को पूरा करने के जिन ...ओं और तरीकों को भारत-सरकार अपनाने जा रही है, ...के सम्बन्ध में मौलिक मतभेद की गुंजाइश है। यदि ...र ही देश का सबसे बड़ा या एकमात्र प्रकाशक बनने ...रही है—एकमात्र इसलिए कि सरकारी योजना के कार्या-...न्वित होने के बाद सामान्य पुस्तकों के प्रकाशनों का अस्तित्व ...स्वयं ही मिट जायगा—तो देश-भर में उसी लेखक की ...कें छपेंगी जिसकी विचारधारा सरकार द्वारा पसन्द की ...गी। विचार-स्वातन्त्र्य के लिए यह इतना बड़ा खतरा ...हो रहा है कि इसकी तुलना नहीं है। छुटपुट, कम पूँजी ...प्रकाशक सरकार द्वारा नापसन्द लेखकों की पुस्तकें छापेंगे ...ने कहाँ पाएँगे, क्योंकि उनके प्रकाशन किसी प्रकार 'सब-...सिडाइज़्ड' नहीं होंगे, फलतः उनका मूल्य सरकारी प्रकाशनों ...अपेक्षया अधिक होगा और प्रकाशन-स्तर घटिया। आज ...प्रकाशक सामान्य पुस्तकों का मूल्य कम नहीं रख सकते ...इसका एकमात्र कारण बिक्री का अत्यधिक सीमित होना है, ...जहाँ अधिक बिक्री होती है, जैसे पाठ्य-क्रम की पुस्तकों ...वहाँ मूल्य बहुत कम रखा ही जाता है। ऐसा नहीं है ...सरकारी प्रकाशनों के निकलने पर पाठकों की संख्या में एकाएक वृद्धि हो जायगी अथवा भारत-सरकार सस्ती छपाई, सस्ता कागज़ अथवा कम पारिश्रमिक पर पाण्डुलिपियाँ पा जाने के कारण पुस्तकों का दाम कम रख सकेगी। सरकारों के यन्त्रवत् साधन इस बात में अवश्य सफल हो सकेंगे कि अर्थ-हानि की नितान्त उपेक्षा करके पुस्तकों का दाम कम-से-कम रखा जाय और अधिकाधिक बिक्री के नाम पर देश के वर्तमान पुस्तकालयों को, अथवा नये-नये पुस्तकालय खोल-कर उन्हें, इन सरकारी प्रकाशनों से पाट दिया जाय। सामान्य पुस्तकों का स्वतन्त्र प्रकाशक ऐसा नहीं कर सकता; वह केवल उन्हीं पुस्तकों को छापेगा जिनके बिकने की सम्भावना रहेगी और वही दाम रखेगा जिनसे उस पुस्तक में लगी पूँजी के अतिरिक्त उसे कुछ लाभ भी प्राप्त हो। वर्तमान स्वतन्त्र प्रकाशन-व्यवस्था के ढाँचे में रहते हुए भी सरकार के लिए अच्छी पुस्तकों को कम दामों पर बिकवाना सम्भव है, लेकिन स्पष्ट है कि केन्द्रीय शिक्षा-विभाग ने इस ओर कतई ध्यान नहीं दिया है।

हिन्दी के पुराने सेवक, लेखक और पत्रकार श्री बनारसी दास चतुर्वेदी (सदस्य, लोकसभा) ने इस प्रश्न की ओर **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** का ध्यान अपने एक पत्र द्वारा आकृष्ट किया है। उन्होंने प्रकाशकों से निम्न दो प्रश्नों पर उनके विचार जानने चाहे हैं : (१) क्या सरकार को प्रकाशन-कार्य अपने जिम्मे लेना चाहिए ? (२) क्या प्रकाशन-मण्डल को ऋण देकर उसके द्वारा प्रकाशन-कार्य करना उचित होगा ? उन्होंने लिखा है :

"मैं कोई प्रकाशक नहीं और न मेरा इन प्रश्नों को उठाने में कोई निजी स्वार्थ ही है। सिद्धान्ततः मैं इस बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विरोधी हूँ कि सरकार कोई प्रकाशन-कार्य अपने जिम्मे ले। प्रचार-सम्बन्धी ग्रन्थों की बात दूसरी है और वे भी स्वतन्त्र प्रकाशकों द्वारा आधे मूल्य पर भी छपाए जा सकते हैं।

"अगर कभी सरकार ने प्रकाशन-कार्य अपने अधीन किया तो स्वाधीन प्रकाशकों का कारोबार चौपट हो ही जायगा, एक नवीन प्रकार के अनाचार का जन्म भी होगा।"

दुर्भाग्य यह है कि सरकारी कानों तक कोई आवाज़ पहुँचाने के लिए जिस धमाचौकड़ी और शोर-शराबे की आवश्यकता रहती है, वह बल और जागरूकता अभी प्रकाशकों में नहीं है, न लेखकों में ही है जो इस 'नवीन प्रकार के अनाचार का जन्म' देखते हुए प्रतिकार में कुछ भी न कर सकेंगे। एक-एक करके अधिकांश लेखक अपनी 'सेंसर्ड' पांडुलिपियाँ सरकारी सम्पादकों को सौंपते जायँगे, यद्यपि सेंसर सरकार के किसी निरीक्षक द्वारा न होकर लेखक द्वारा स्वयं किया जायगा। प्रत्येक शब्द को पंक्ति में जोड़ते वक्त उसका मन लेखनी पर अंकुश बैठा रखेगा और हर वक्त तथ्य को न भूलने के लिए सचेत करता रहेगा कि यह लिपि सरकार द्वारा प्रकाशित की जायगी।

कई विषय ऐसे अवश्य हैं जिनके प्रकाशन में सरकारी सहायता अपेक्षित है, लेकिन निश्चय ही क्लासिक्स के अनुवाद, कविता-संग्रह अथवा सृजनात्मक के विषय नहीं हैं। एन्साइक्लोपीडिया, कोश, साहित्य, डाक्टरी और अर्वाचीनतम विज्ञान से साहित्य, क्यों नहीं हमारी जनतन्त्री सरकार प्र... मामले में अपने को ऐसे विषयों तक सीमित रख... एक कारण समझ में आता है—सरकारी दफ्तरों में साहित्यिक घुस बैठे हैं, यदि सृजनात्मक साहित्य के ... की वे योजनाएँ न बनाएँ तो उनका क्या होगा! ... और वैज्ञानिक साहित्य के बारे में अपनी सीमाओं के ... तो वे कुछ करने से रहे।

कविता कौमुदी

भाग १ (प्राचीन कवि)

भाग ३ (ग्राम-गीत)

भाग ४ (उर्दू)

मूल्य प्रत्येक भाग ८)

विक्रेताओं को आकर्षक कमीशन

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड

३४१ तारदेव, बम्बई ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

...सरकार ने मुद्रण और डिजाइनिंग की अखिल भारतीय ...योगिता में पुरस्कार पाने वालों के नाम गत नवम्बर मास ... तारीख को घोषित कर दिए। जिन संस्थाओं अथवा ...क्तियों को ये पुरस्कार मिले, उनके नाम इस प्रकार हैं :

... वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए

—प्रथम पुरस्कार श्री समर दे को, उनके प्रकाशन ...ार छवि' (बंगाली) पर जो सरस्वती प्रेस लि०, ...कत्ता में छपी है।

—प्रथम पुरस्कार आर्टिस्ट श्री सी० एच० जी० मूर ...'न्हे लंगूर की कहानी' नाम की पुस्तक के चित्रों पर ... द्वितीय पुरस्कार इस पुस्तक के प्रकाशक राजकमल ...काशन को।

... वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए

—प्रथम पुरस्कार सत्यजित राय तथा सुकुमार राय को ...की पुस्तक 'खाई खाई' (बंगाली) पर जो सरस्वती प्रेस ...०, कलकत्ता में छपी है।

—द्वितीय पुरस्कार श्री सूर्यराय को उनकी पुस्तक ...ीर दिने मेयेर गल्प' पर जो सरस्वती प्रेस लि०, कलकत्ता ...पी है।

—सर्टिफ़िकेट ऑफ मेरिट, पश्चिमी बंगाल के शिक्षा-...ग को उनकी पुस्तक 'चित्रे भारतेर इतिहास' पर जो ...ेट प्रिंटिंग प्रेस, कलकत्ता में छपी है।

...चित्र पुस्तकें

—प्रथम पुरस्कार पापुलर बुक डिपो, बम्बई को उनकी ...क 'ए जर्नी थ्रू टॉयलैण्ड' पर जो कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, ...ई में छपी है।

—द्वितीय पुरस्कार श्री अचरेकर को उनकी पुस्तक ...ई स्के पर एण्ड फ़लाइंग गन्धर्वाज' पर जो कमर्शियल ...ग प्रेस, बम्बई में छपी है।

—सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट थियोसोफ़िकल पब्लिशिंग हाउस, मद्रास को उनकी पुस्तक 'किंगडम ऑफ द गॉड्स' पर।

कला सम्बन्धी पुस्तकें

—प्रथम पुरस्कार ललितकला अकादमी, दिल्ली को उनके प्रकाशन 'मुगल मिनियेचर्स' पर जो टाइम्स आफ़ इण्डिया प्रेस, बम्बई ने छापी है।

—सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट भारत-सरकार के पब्लिकेशन डिवीज़न को उनकी पुस्तक 'कांगड़ा वैली पेंटिंग्स' पर जो टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, बम्बई ने छापी है।

पुस्तकें (अंग्रेजी की)

—प्रथम पुरस्कार रिज़र्व बैंक आफ़ इण्डिया को उनकी पुस्तक 'बैंकिंग एण्ड मौनिटरी स्टैटिस्टिक्स आफ़ इण्डिया' पर जो टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, बम्बई में छपी है।

—प्रथम पुरस्कार श्री आर० एस० धर्मकुमार सिंह जी, भावनगर को उनकी पुस्तक 'वर्ड्स आफ़ सौराष्ट्र' पर जो टाइम्स आफ़ इण्डिया प्रेस, बम्बई में छपी है।

—सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट श्री के०डी० चैटर्जी, कलकत्ता को 'ह्यूमैन पैरासाइट एण्ड पैरासिटिक डिज़ीसिज़' पर जो सरस्वती प्रेस लि०, कलकत्ता में छपी है।

पुस्तकें (देशी भाषाओं की)

—प्रथम पुरस्कार सिग्नेट प्रेस, कलकत्ता को उनकी पुस्तक 'अनन्या' पर जो श्री गौरांग प्रेस, कलकत्ता में छपी है।

—द्वितीय पुरस्कार विश्वभारती के प्रकाशन-विभाग को उनकी पुस्तक 'गल्पशल्प' पर जो श्री नभना प्रिंटिंग वर्क्स, कलकत्ता में छपी है।

—सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट बंगलोर प्रेस, बंगलोर को उनकी पुस्तक 'यशोधरा' पर।

हाथ के बने कागज पर छपी पुस्तकें

—सिग्नेट प्रेस, कलकत्ता को उनकी पुस्तक 'भारत सश्चाने नेहरू' पर जो सरस्वती प्रेस लि०, कलकत्ता में छपी है, आक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई को उनकी पुस्तक 'अवर इंडिया' पर जो टाइम्स ऑफ़ इंडिया प्रेस, बम्बई में छपी है तथा इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद को उनकी पुस्तक 'ऋतु संहार' पर सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट दिये गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक समाचार पत्र

—अंग्रेजी के पत्रों में प्रथम पुरस्कार 'स्टेट्समैन' को दिया गया है।

—भारतीय भाषाओं के पत्रों में प्रथम पुरस्कार 'नवभारत टाइम्स' (हिन्दी) को तथा 'प्रजावाणी' (कन्नड़) और 'आनन्द-बाजार पत्रिका' (बंगाली) को सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट दिये गए हैं।

कला-सम्बन्धी पत्रिकाएँ

— प्रथम पुरस्कार कमर्शियल प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई में छपने वाले 'मार्ग' बम्बई को दिया गया है।

—कैक्स्टन प्रेस, दिल्ली में छपने वाले 'रूपलेखा' (दिल्ली) को तथा नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली में छपने वाले 'शंकर्स एन्युअल' दिल्ली को सर्टिफ़िकेट आफ़ मेरिट दिये गए हैं।

◈ ◈ ◈

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की ७०वीं वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर संवत् २०१३ में उन्हें एक अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित करने की योजना बड़ा बाजार लाइब्रेरी, कलकत्ता ने बनाई है। अभिनन्दन ग्रन्थ की तैयारी के लिए श्री वासुदेव-शरण अग्रवाल के प्रधान सम्पादकत्व में एक समिति नियोजित हुई है जिसमें श्री रायकृष्णदास, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', श्री कामिल बुल्के, श्री सत्येन्द्र, श्री मोतीचन्द्र, श्री नगेन्द्र, श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा श्री भगवतीचरण वर्मा हैं। प्रबन्ध सम्पादक श्री ऋ. जे. कौशिक 'बरुआ' हैं तथा योजना-सम्पादक श्री चम्पालाल गुप्त, प्रधान, बड़ा बाजार लाइब्रेरी, कलकत्ता।

◈ ◈ ◈

जनवरी '५६ से प्रतिभा प्रकाशन, झरिया, रेणुका नाम की एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ कर रहे हैं। सम्पादक श्री बनखण्डी मिश्र होंगे। कविता, निबन्ध, कहानी तथा समालोचनाएँ रहेंगी। पृष्ठ संख्या १०० रहेगी; मूल्य एक प्रति का ।।), वार्षिक ६)।

◈ ◈ ◈

अन्तरप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् की बीकानेर शाखा एक कहानी-प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। लेखकों से निवेदन है कि कागज के एक ओर, पर्याप्त हाशिया छोड़कर, सुलेख लिपि में लिखकर, ३१ दिसम्बर ५५ परिषद् के कार्यालय कृष्णा भवन, रानी बाजार, बीका के पते से भेज दें। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुर क्रमशः २५), १५), तथा १०) के होंगे।

प्रतियोगिता का प्रवेश-शुल्क प्रति कहानी।) टिकट के रूप में रचना के साथ भेजना आवश्यक है।

◈ ◈ ◈

दिल्ली से हिन्दी पञ्च नाम का नया, पाक्षिक पत्र वि दशमी के दिवस से प्रारम्भ हुआ है। प्रकाशक हैं पा बेचन शर्मा 'उग्र' और प्रधान सम्पादक श्री नरोत्तम ना पत्र में हास्य-विनोद, साहित्य-समीक्षा रहेगी। पता है हिन्दी पञ्च, डिप्टी गंज, दिल्ली।

◈ ◈ ◈

नवयुग पुस्तक भण्डार, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ अध्यक्ष महोदय सूचित करते हैं कि उन्होंने हिन्दी-ग्र का विस्तृत भण्डार खोला है और अभी प्रकाशकों का रखने का उत्तम प्रयास किया है। जिन प्रकाशकों अब तक सम्बन्ध न स्थापित हुआ हो, वे सम्बन्ध स्था करने के उद्देश्य से अपनी सूचियाँ भेजें।

◈ ◈ ◈

अध्यक्ष श्रीकृष्ण पुस्तकालय, १० खटीकान स्ट्रीट, मुज नगर, को पुस्तकालय के अनुशीलन विभाग के लिए लिखित आकर ग्रन्थों की आवश्यकता है। जिनके विक्रयार्थ हों, पत्र-व्यवहार करें। (१) हस्तलिखित ग्र के खोज का विवरण, १९००-१९०५ तक के समस्त वि विवरण। १९०६-१९०८, १९०९-१९११ तक का विवरण। ये सब पुस्तकें काशी नागरी प्रचारिणी सभा प्रकाशित हैं। (२) शिवसिंह सेंगर का शिवसिंह स (३) प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ। (४) ओझा अभिनन्दन ग्र (५) पंजाब के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज। (६) के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज (७) गो स्वामी रा कृत नवभक्त माल (८) श्री नाथू राम प्रेमी कृत हिन्दी साहित्य का इतिहास।

◈ ◈ ◈

साहित्य भण्डार दतिया (सेंट्रल रेलवे), हिन्दी-पुस्त प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। प्र अपनी सूचियाँ भेजकर सम्पर्क स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में प्रौढ़-शिक्षा और उसमें

जामिया मिलिया का योगदान

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह

दिल्ली स्थित जामिया मिलिया द्वारा प्रकाशित प्रौढ़-शिक्षा-सम्बन्धी साहित्य का एक परिचय।

...जैसे देश के लिए जहाँ की अधिकांश जन-संख्या ...र एवं अशिक्षित है, प्रौढ़-शिक्षा का अपना एक बहुत ... स्थान है। गाँवों के अनपढ़ किसान और पिछड़ी हुई ...यों के लोग, आदिवासी, मिल और फैक्टरियों में काम ...ने वाले मजदूर आदि, जो राष्ट्र के मेरुदण्ड के समान हैं ...सुशिक्षित एवं प्रशिक्षित करने के लिए एक सुनिश्चित ...ना की आवश्यकता है। सबसे पहले उन्हें साक्षर बनाने का ... रहता है, जिसके बिना किसी प्रकार के शिक्षण या प्रशि-...का संचालन अत्यन्त कठिन है। जीविकोपार्जन के कार्य में ...-भर व्यस्त रहने के कारण उन्हें नियमित रूप से अवकाश ... मिल पाता, इसीलिए उनके लिए रात्रि-पाठशालाओं ...व्यवस्था की गई है जो बहुत-कुछ अंशों में सफल सिद्ध ...रही है। लेकिन फिर सवाल यह उठता है कि पाठ्यक्रम ...में उनके लिए किन पुस्तकों का उपयोग किया जाय। ...म्भिक कक्षाओं के लिए उपयोग में आने वाली पुस्तकों ...काम चल नहीं सकता, क्योंकि जिन लोगों को शिक्षित ...जाना है उनका मस्तिष्क बहुत-कुछ अंशों में छोटे बच्चों ...प्रकार का है। वे बिना साक्षर हुए ही ऐसी बहुत ...बातें जानते हैं जो छोटे बच्चे ऊँची कक्षाओं में पहुँच-...सीखते हैं। उनका व्यावहारिक ज्ञान बहुत विस्तृत होता ...और उनका प्रौढ़ तथा विकसित मस्तिष्क चीजों को ...शीघ्र ग्रहण कर लेता है। यही कारण है कि उन्हें ...-भर तक एक ही पुस्तक नहीं पढ़ाई जा सकती। दूसरी ...अगर ऊँची कक्षाओं में पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों द्वारा ...निकालने का प्रयास किया जाय तो वह भी सम्भव नहीं, क्योंकि अक्षर-ज्ञान के मामले में वे आरम्भिक अवस्था में ही हैं। वैसे भी बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो उनके अर्द्ध-विकसित मस्तिष्क के लिए कठिन-ग्राह्य हैं। ज्ञान-विज्ञान की बारीकियों और उलझी हुई अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में उनकी गति नहीं। पारिभाषिक शब्दावली और आलंकारिक तथा दुरूह भाषा से भी उनका कोई परिचय नहीं। कोरे उपदेशात्मक या शास्त्रीय ढंग से लिखी हुई नीरस पुस्तकों में उनका मन नहीं रम सकता। एक ओर उनमें बच्चों-जैसा भोलापन और सिधाई है तो दूसरी ओर प्रौढ़-व्यावहारिक ज्ञान। अतः एक विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें ही उनके लिए पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं। इन पुस्तकों को प्रस्तुत करने में दो बातों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है (१) भाषा-शैली—इन पुस्तकों की भाषा ऐसी हो जो गाँव के अपढ़ लोग आसानी से समझ सकें। गवई शब्दों के व्यवहार से भाषा को उनके और निकट लाया जा सकता है। दुरूह, अप्रचलित और पारिभाषिक शब्दावली का व्यवहार इन पुस्तकों में नहीं होना चाहिए। शैली सरस, सुबोध एवं विश्लेषणात्मक हो। गम्भीर-से-गम्भीर बात भी मनोरंजक ढंग से किस्से-कहानियों या चुटकुलों के रूप में कही गई हो। (२) विषय वस्तु—इन पुस्तकों के विषय-वस्तु के बारे में बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। जिन लोगों के लिए इन पुस्तकों को प्रस्तुत करना हो उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं समस्याओं और उनके ज्ञान तथा रुचि आदि का सूक्ष्म अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। ये पुस्तकें विषय-वस्तु के विचार से दो प्रकार की हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती हैं—(अ) उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं समस्याओं से सम्बन्धित (ब) उनकी ज्ञान-वृद्धि के लिए विभिन्न विषयों से सम्बन्धित।

प्रौढ़-शिक्षा के लिए उपर्युक्त ढंग से उपयुक्त पुस्तकें प्रस्तुत करने का काम वास्तव में कठिन तो है, किन्तु अत्यन्त आवश्यक भी है। प्रौढ़-शिक्षा के लिए हमारे यहाँ की प्रान्तीय तथा केन्द्रीय दोनों सरकारें प्रयत्नरत हैं। लाखों की संख्या में इस कार्य के लिए उपयोगी पुस्तकें सरकार द्वारा खरीदी जा रही हैं। यद्यपि हमारे यहाँ विशेष रूप से प्रौढ़-शिक्षा के लिए लिखी गई पुस्तकों का अभाव है, फिर भी जो भी पुस्तकें थोड़े-बहुत अंश में उपयोगी हैं उन्हीं से काम चलाया जा रहा है। उपयुक्त पुस्तकों के प्रस्तुत कराने का काम बड़ी जिम्मेदारी और परिश्रम का है। इस काम में बहुत बड़ी धन-राशि की भी आवश्यकता है। कोई बड़ी और सुसंगठित संस्था ही इस काम को अपने हाथ में ले सकती है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है, अतः प्रौढ़-शिक्षा का बहुत बड़ा दायित्व एकमात्र उसी पर है। लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' तथा नागरी प्रचारिणी सभा-जैसी प्रतिष्ठित एवं साधन-सम्पन्न संस्थाओं ने इस ओर से आँखें मूँदकर रेत में अपना सिर छिपा रखा है। शायद वे सोच रही हों कि सरकार को गरज पड़ेगी तो अपने-आप हमारे यहाँ इस काम को करवाने के लिए नोटों की गड्डी फेंक जायगी; हम अपनी ओर से क्यों प्रयास करें। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा हो गई, बस हमारे कर्तव्य की इतिश्री हो गई।

एक ओर जहाँ ये महान् हिन्दी-सेवक संस्थाएँ इस ओर से अपने नेत्र बन्द कर समाधिस्थ हैं, वहीं जामिया मिलिया, दिल्ली ने एक अत्यन्त साहसपूर्ण कदम उठाया है। काफी दिनों तक कम पढ़े-लिखे लोगों के बीच काम करने और उनकी परिस्थितियों का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद उन्हें सुशिक्षित बनाने के लिए पाठ्य-क्रम तैयार कराने की योजना बनाई जिससे उनमें पुस्तकें, अखबार और पत्रिकाएँ आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े और जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातों के बारे में बुनियादी जानकारी तथा शब्द-भण्डार बढ़े। इस योजना के अनुसार उनकी रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक को ध्यान में रखकर छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रस्तुत करवाने का काम आ[रम्भ] किया गया है। हिन्दी में ऐसी लगभग ३०० पुस्त[कों की] रूपरेखा तैयार की गई है जिनमें से अधिकांश प्रका[शित हो] चुकी हैं।

१९५० ई० में इस काम के लिए भारत सर[कार की] ओर से इस संस्था को प्रचुर धन-राशि प्राप्त हुई औ[र] पुस्तिकाओं की दस-दस हज़ार प्रतियाँ प्रकाशित [होने पर] सरकार ने खरीद लीं। इन्हीं पुस्तिकाओं का पुन[रीक्षण] किया गया है जो सर्वसाधारण को सुलभ है। इस प्र[कार इन] पुस्तिकाओं को प्रस्तुत करवाकर जामिया मिलि[या ने] वास्तव में एक बहुत बड़ा काम किया है। इनकी भाष[ा] बोल-चाल की है जिसमें बीच-बीच में ग्रामीण शब्[दों का] प्रयोग भी किया गया है। हाँ, कहीं-कहीं अनावश्[यक रूप] से लखनऊ की 'ज़ुबान' के छींटे खटकते हैं। उदाहर[ण के] लिए, प्रत्येक पुस्तिका के आरम्भ में जो विज्ञप्ति दी [गई है] उसका पहला वाक्य है—"इस पुस्तकमाला का उद्[देश्य है] कि कम पढ़े-लिखे 'सियानों' में…" यहाँ 'सियानों' [पर] ध्यान देने की आवश्यकता है। कहाँ 'उद्देश्य' कहाँ 'सि[यानों'] और कहाँ वे कम पढ़े-लिखे लोग! वैसे इस बात का [ध्यान] रखा गया है कि भाषा दुरूह और अस्पष्ट न होने [पाए]। शैली व्याख्यात्मक और सरस है। बहुत-सी पुस्तिका[ओं की] विषय-वस्तु को कहानी या लघु नाटक के रूप में [प्रस्तुत] करने का प्रयास किया गया है। इन पुस्तिकाओं द्वा[रा कम] पढ़े-लिखे प्रौढ़ लोगों के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावि[त करने] की चेष्टा की गई है। उनके जीवन की आवश्यकताओं [और] समस्याओं को ध्यान में रखकर ये पुस्तिकाएँ एक सु[विचारित] योजना के अनुसार तैयार कराई गई हैं। इनसे उन[के जीवन] के आर्थिक, समाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैति[क और] पारिवारिक सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है। [आर्थिक] समस्याओं से सम्बन्धित पुस्तिकाओं में कृषि-सुधार, [पौधों] के रोगों का निदान, पशु-पालन, पशुओं के रोगों का [निदान] विभिन्न प्रकार के कुटीर-उद्योग आदि का सरल तथा [सुबोध] शैली में रोचक वर्णन मिलता है। उनकी सामाजिक कु[रीतियों] को दूर करने के लिए छोटे-छोटे नाटकों के रूप में पु[स्तिकाएँ] प्रस्तुत करवाई गई हैं। विभिन्न वैज्ञानिक आविष्का[रों,] कहानियों और भौगोलिक परिस्थितियों से सम्बन्[धित]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तिकाएँ अपने विषय की विस्तृत जानकारी प्रदान है। संसार के महापुरुषों आदि की जीवनियाँ रोचक ...ों के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। गाँव के लोग, उनके ...तथा पेशे आदि का विवरण उपस्थित करने ...पुस्तिकाएँ भी पर्याप्त मात्रा में प्रकाशित हुई हैं। ...और उसके अंग, रोग तथा उनके निदान, स्वास्थ्य, ...तथा हल्के-फुल्के खेलों के विषय में प्रस्तुत की गई ...एँ अत्यन्त उपयोगी हैं। गाँव के लोगों के जीवन को ...बनाने के लिए कोऑपरेटिव स्टोर, कोआपरेटिव ..., गोचर भूमि की समस्या का हल, जमीन का बटवारा ...व्यवस्था आदि से सम्बन्धित पुस्तिकाएँ भी हैं। ...प्रान्त और देश आदि के शासन तथा स्थानीय शासन ...संस्थाओं के विषय में भी इन पुस्तिकाओं द्वारा जानकारी प्रदान करने की चेष्टा की गई है। इसी ...के अन्य विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत की गई पुस्तिकाओं ...रिक्त कुछ पुस्तिकाएँ ऐसी भी हैं जिनमें गाँवों में ...पहेलियों, मुकरियों, कहावतों, चुटकुलों, कथाओं ...हलियों आदि का संकलन भी किया गया है।

...निक अध्ययन और सूक्ष्म निरीक्षण के बाद अत्यन्त ...पूर्वक अनुसन्धान करके ही इन पुस्तिकाओं की रूप-...तैयार की गई है, यही कारण है कि भाषा-शैली तथा ...वस्तु दोनों ही दृष्टियों से ये प्रौढ़-शिक्षा के लिए ...उपयोगी है। वास्तव में जामिया मिलिया, दिल्ली ...-शिक्षा माला के अन्तर्गत प्रकाशित इन पुस्तिकाओं ...भाषा हिन्दी के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र की बहुत बड़ी ...ई है।

...हाँ, एक बात इनके मूल्य के विषय में अवश्य विचारणीय ...प्रकाशकीय वक्तव्य में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि ...सरकार की आर्थिक सहायता से ही इस माला का ...सम्भव हो सका और प्रथम मुद्रण की दस-दस हजार ...को भारत सरकार ने खरीद लिया और उसी सहायता ...पुस्तिकाओं का पुनर्मुद्रण हो रहा है। इस पर भी, ...तिकाओं का इतना अधिक मूल्य कैसे है, यह बात ...समझ में नहीं आती। पूर्णरूप से व्यावसायिक दृष्टिकोण ...प्रकाशक ने भी यदि इन पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया ...तो भी वह इतना अधिक मूल्य रखने का साहस न करता। ये पुस्तिकाएँ प्रायः कवर को छोड़कर १६ पृष्ठ की हैं, लेकिन प्रत्येक पुस्तिका का मूल्य पाँच से छः आने तक है। कुछ ऐसी भी हैं जिन पर चार आने दाम छपा है लेकिन वह भी मुहर लगाकर पाँच आने कर दिया गया है। सरकारी सहायता से इतने बड़े पैमाने पर होने वाले प्रकाशन का इतना अधिक मूल्य किसी भी दशा में न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता। चार आने से अधिक मूल्य तो इनका किसी प्रकार भी नहीं होना चाहिए।

इन पुस्तकों का कागज, सफाई छपाई तथा मुखपृष्ठ आदि सभी कुछ उत्तम हैं। इस पुस्तक-माला द्वारा जामिया मिलिया ने निःसन्देह हिन्दी सेवा और राष्ट्र-सेवा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन !

अवधी-कोष

संपादक : श्री रामाज्ञा द्विवेदी

- जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में यह प्रथम चरण है।
- इसमें मूल शब्द लगभग १५,००० हैं, पर इनसे बनने वाले संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि तथा विभिन्न जिलों में प्रयुक्त उच्चारण-भेद से बने रूप भी दिये गए हैं और इन सबकी सम्मिलित संख्या ५०,००० से ऊपर है।
- व्याकरण, अर्थ एवं व्युत्पत्ति के अतिरिक्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा जायसी, तुलसी आदि कवियों और लोक-गीतों तथा बोलचाल के प्रयोगों से उद्धरण देने से कोष की उपयोगिता और बढ़ गई है।
- कोष नितांत संग्रहणीय है।

रायल अठपेजी आकार :: २५६ पृष्ठ :: ऐंटिक कागज

सजिल्द, मूल्य साढ़े सात रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उ० प्र०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

प्रकाशन समाचार के उत्कृष्ट पुस्तकों के सूची-विशेषांक को तैयार करते वक्त देखा गया कि हिन्दी के नये लेखकों की जन्म-तिथियों का ब्यौरा इधर के प्रकाशित हिन्दी-साहित्य के नये इतिहासों में सम्मिलित नहीं किया जा रहा। इस विशेषांक की सम्पादन-समिति ने निश्चय किया था कि हिन्दी की साहित्यिक पुस्तकों के लेखकों की जन्म-तिथि का उल्लेख प्रत्येक पुस्तक के नाम के आगे अवश्य किया जाय।

जिन पुस्तकों में बीसवीं शती के हिन्दी-लेखकों की जन्म-तिथियाँ मिलीं भी, वे भी अप्रामाणिक। विभिन्न पुस्तकों में अलग-अलग जन्म-तिथियाँ प्रकाशित की गई थीं। शायद ही किसी लेखक की जन्म-तिथि दो पुस्तकों में एक ही छपी हो।

प्रामाणिक जन्म-तिथि का पता लगाने के लिए लगभग ढाई सौ लेखकों को पत्र लिखे गए और अधिकांश से उनके अपने हाथों से लिखी गई जन्म-तिथियाँ प्राप्त की गईं। इस विशेषांक के प्रकाशन से हिन्दी-साहित्य का इतिहास लिखने वालों को अब एक ही स्थान से लेखकों की जन्म-तिथियाँ मिल जाया करेंगी!

◈ ◈ ◈

एक ख्यातिप्राप्त लेखक ने, जिनका नाम हम नहीं बताएँगे, जन्म-तिथि बताने से इन्कार करते हुए हमारे पत्र के उत्तर में लिखा "मुझे अपनी जन्म-तिथि मालूम नहीं है। आय और आयु से अनभिज्ञ रहकर ही जी रहा हूँ। कोरा साहित्यिक हूँ, गणितज्ञ नहीं। जन्म-तिथि के स्थान पर आप मेरा यही उद्गार छाप दीजिए।" इसका अर्थ यह हुआ कि जिन साहित्य-सेवियों को अपनी जन्म-तिथियाँ याद हैं; वे गणितज्ञ हैं। आयु और आय में अनुप्रासात्मक ध्वनि के अतिरिक्त और तो कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु हमें यह नहीं पता चल सका कि आपकी अनभिज्ञता क्योंकर जताई गई।

◈ ◈ ◈

इस उद्देश्य से कि हम जहाँ तक सम्भव हो दिये जाने वाले किसी विवरण को अधूरा न छोड़ें, हमने लोगों से उनकी आयु को जानने का प्रयत्न किया, लेकिन अनुमान ५५ से ७५ वर्ष की आयु के हमें बताये गए, इतनी भिन्नता थी कि अन्ततः हमें उनकी आयु का छोड़ना ही पड़ा।

◈ ◈ ◈

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग के संरक्षण में के मार्च मास में हिन्दी में प्रकाशित वैज्ञानिक और कल लिटरेचर की एक प्रदर्शनी आयोजित की इस प्रदर्शनी में फ़िजिकल साइन्सिज़ (प्यूर और एप टेक्नॉलोजी, सोशल साइन्सिज़ और फाइन आर्ट्स से न्धित हिन्दी में प्रकाशित श्रेष्ठ साहित्य के अतिरिक्त भाषाओं के प्रामाणिक अनुवादों तथा कोश एवं सन्द को स्थान दिया जायगा।

◈ ◈ ◈

१९५२, १९५३ और १९५४ में डालर-मुद्रा (अ आदि) के देशों से भारत में पुस्तकों और पत्रिकाओं आयात क्रमशः ५१ लाख ९१ हज़ार, ३१ लाख ६४ और ४० लाख ५८ हज़ार रुपयों का हुआ। इन्हीं दे भारत से इन्हीं वर्षों में ६३ हज़ार, ९३ हज़ार तथा ३९ हज़ार की पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ निर्यात की गईं।

स्टर्लिंग-मुद्रा के देशों से आयात क्रमशः ४८ ३८ लाख तथा ३९ लाख ४८ हज़ार रुपयों का आय निर्यात १ करोड़ से कुछ अधिक, ६८ लाख ३६ हज़ ६२ लाख ३८ हज़ार का हुआ। १९५४ में चीन से ६४ हज़ार की पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ आईं।

◈ ◈ ◈

भारत सरकार ने एक **नेशनल बुक ट्रस्ट** की स्थापना घोषणा की है जिसका उद्देश्य क्लासिक्स, विभिन्न में महत्त्वपूर्ण पुस्तकों के तथा विभिन्न भाषाओं के भाषाओं में अनुवादों के प्रकाशन को संवृद्धि देना पुस्तकें सस्ते-से-सस्ते मूल्य पर बिक सकें, इस उद्दे यह ट्रस्ट युनिवर्सिटियों, अकादमी तथा अन्य मान्य को सहायता भी पहुँचाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◈ ◈ ◈

…त सरकार ने एक विज्ञप्ति में बताया है कि रेलवे-…टों के पुस्तक-भण्डारों से गांधी-साहित्य की बिक्री को …धिक प्रोत्साहन दिया जायगा। रेलवे से सम्बन्धित …के पुस्तकालयों में गांधी-साहित्य की खरीद के आदेश भी …ी कर दिये गए हैं।

◈ ◈ ◈

…नवम्बर १९५५ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) …ने एक लेख में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने एक मह-…पूर्ण प्रश्न शीर्षक से लिखा है :

…या सरकार द्वारा साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्य सफ-…लतापूर्वक किये जा सकते हैं? यदि किये जा सकते हैं तो …सीमा तक?

इस सवाल की ओर हमारे साहित्यिक नेताओं ने और …शकों ने बहुत कम ध्यान दिया है। इतना तो हम भी …ते हैं कि परिमित क्षेत्रों में कुछ अंशों में सरकारी नियन्त्रण …वश्य हो सकता है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक ग्रन्थ तथा विश्वकोष-…सी किताबें, जिनके प्रकाशन में लाखों रुपये व्यय होते हैं, …ना सरकारी सहायता के छप ही नहीं सकते। उन्हें यदि …कार स्वयं छपा भी ले तो विशेष बुराई नहीं। पर साधारण …तौर पर सरकार द्वारा प्रकाशन खतरे से खाली नहीं। हम …नते हैं कि हमारे देश के कितने ही प्रकाशक लेखकों का …शोषण करते हैं और उनके व्यापारिक रंग-ढंग भी आपत्ति-…जनक हैं, पर सभी प्रकाशकों को एक लाठी से नहीं हाँका जा …सकता। सरकार यदि प्रकाशन-कार्य अपने हाथ में ले लेगी …तो उससे एक नवीन प्रकार के अनाचार का जन्म हो …जायगा।

प्रकाशक-संघ

इससे बेहतर यह होगा कि सरकार प्रकाशकों के द्वारा …संघ का निर्माण कराए और उसे अपनी ओर से ऋण …दे। विश्वकोष-जैसे ग्रन्थों का प्रकाशन-कार्य कराए और उनके …बिक्री के काम में भी मदद करे। फिर कोई कारण नहीं कि …यहाँ रूसी किताबों की तरह सस्ती किताबें न निकल …सकें।

…जब हमारे साथी लोग रूसी किताबों के सस्तेपन के …उदाहरण पेश करते हैं तब वे दो बातों को भूल जाते हैं— एक तो यह कि उस सस्तेपन की भूल में सरकारी सहायता काम कर रही है और दूसरी यह कि रूस में लेखकों को विचारों की वह स्वाधीनता प्राप्त नहीं है, जो हमारे देश में प्राप्त है। हम यहाँ रूसी पद्धति की आलोचना करने नहीं बैठे। सम्भवतः उनकी शासन-पद्धति उनके स्वभाव के अनुकूल है, पर हम उनकी नकल नहीं करना चाहते।

●

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य २॥)

मनीआर्डर से भेजकर आज ही ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

हाल ही में प्रकाशित

अपने ढंग का अनूठा कहानी-संग्रह

जिन्दगी बोलती है

ले०—श्री रामस्वरूप

जीवन के सच्चे चित्र : सुख-दुख की बातें

सुन्दर छपाई : आकर्षक कवर

मूल्य : पौने तीन रुपये

अपना आर्डर शीघ्र भेजें।

प्रकाशक

शतदल प्रकाशन

४६/१, स्ट्रान्ड रोड, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान पर कर

द्वितीय महायुद्ध जैसे संकटकाल में इंग्लैण्ड में पुस्तकों पर बिक्री-कर लगाने निश्चय किया गया, किन्तु जनमत के विरोध से सरकार को यह निश्चय रद्द कर पड़ा। भारत की परिस्थितियों से तत्कालीन इंग्लैण्ड की परिस्थितियों का साम्य स्पष्ट

गत महायुद्ध में सब प्रकार के उपभोक्ता माल के उत्पादन पर नियंत्रण लगाया गया और १९४० में ब्रिटेन ने, जबकि हिटलर के हमले जोर पकड़ते जा रहे थे, पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में भी यही नीति अपनानी चाही।

ब्रिटेन के वित्त-मन्त्री सर किंगसले वुड ने पुस्तकों और जूतों में कोई अन्तर न समझा और पुस्तकों पर भी बीक्री-कर लगाना तय किया। अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ के अध्यक्ष सर स्टेनली अनविन ने सुविख्यात पत्र 'टाइम्स' में निम्नलिखित पत्र प्रकाशित करवाकर तुरन्त ही उक्त निर्णय के विरुद्ध एक सक्रिय आन्दोलन आरम्भ किया। उन्होंने लिखा :

"यह उचित ही है कि शरीर के लिए आवश्यक खाद्य पर बिक्री-कर नहीं लगाना तय किया गया है, लेकिन आश्चर्य है कि मस्तिष्क के लिए आवश्यक खाद्य का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया। मुझे आशा है कि कोई भी यह कहने का दुस्साहस न करेगा कि मस्तिष्क के भोजन की आवश्यकता नहीं, या यह भोजन केवल विलास है। पुस्तक-व्यवसाय कई प्रहारों से लड़खड़ा रहा है। युद्ध-संकट-बीमा और कागज की बेहद कमी, उदाहरणार्थ, ऐसे दो प्रहार हैं। ऐसी स्थिति में पुस्तकों पर बिक्री-कर लगाना, जो कि वस्तुतः ज्ञान पर कर होगा, पुस्तक-व्यवसाय का गला घोंट देना होगा, और अगर दरअसल ऐसा हुआ तो बहुत बुरा मजाक होगा।

"अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ सदा से पुस्तकों के सर्वत्र स्वतन्त्र विनिमय का समर्थक रहा है, और उसके प्रयासों को प्रायः सदा ही सफलता मिली है। विचार-स्वातन्त्र्य के लिए लड़े जाने वाले युद्ध में मनुष्य के उच्चतम विचारों को व्यक्त करने के माध्यम पर कर लगाना निस्सन्देह, अपमानजनक है।"

उपर्युक्त पत्र के प्रकाशन के बाद ही कई प्रका मिलकर सरकार से कहा कि वे अपने निर्णय पर पुनः करें। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कर से न केवल शैक्षणिक और बौद्धिक जीवन पर और साथ ही पुस्तक व्यवसाय पर घातक प्रहार होगा, बल्कि पुस्त निर्यात-व्यापार भी बुरी तरह पीड़ित होगा, जो कि व्यापार के लिए अत्यन्त आवश्यक है, और जिस पर घरेलू व्यापार निर्भर करता है।

वित्त-मन्त्री पर इन आवेदनों का कोई असर न उन्होंने कहा कि उन्हें रुपया चाहिए और वह कि वस्तु को अपवाद के रूप में स्वीकार करने को तैयार न उनका खयाल था कि देश में पहले ही काफी पुस्तकें अगर कुछ समय तक पुस्तकें प्रकाशित न होंगी तो को सान न होगा।

और फिर उन प्रकाशकों ने, जो कि आरम्भ में निजी स्वार्थ की रक्षा में मिलकर खड़े हुए थे, अपने सभ्यता के द्वार पर रक्षकों के रूप में खड़ा पाया और अपनी इस स्थिति से स्वयं आश्चर्य था। वित्त मन्त्री निजी तौर पर मिलकर अपनी बात समझाने के लिए, बिशप ऑफ़ कैन्टरबरी की अध्यक्षता में एक स्वतन्त्र मण्डल आयोजित किया गया, जिसमें धर्म, विज्ञान, शास्त्रीय विद्या और विशुद्ध साहित्य के प्रतिनिधि थे। वित्त मन्त्री आसानी से डिगने वाले न थे।

प्रकाशक संघ भी हार मानने वाला न उन्होंने सरकारी निर्णय के विरुद्ध एक सार्वजनिक आयोजित की और शिष्ट-मण्डल के प्रतिनिधियों ने को एक पत्र भेजा। 'टाइम्स' इस विषय में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शित कर चुका था जिसमें युद्धकालीन संकट के मध्य भी कों पर कर लगाने का विरोध किया गया था। इसी ठेन का हवाला देते हुए शिष्ट मण्डल के प्रतिनिधियों ने पत्र में कहा था कि इस संकट के समय में "मानसिक र आध्यात्मिक सुख-शान्ति के एकमात्र साधन को कमज़ोर ना" राष्ट्र बरदाश्त नहीं कर सकता। सार्वजनिक सभा में के प्रमुख लेखकों, प्रकाशकों और कई संसद सदस्यों ने लिया था। सभापति सर ह्यू ग वालपोल ने जोरदार दों में घोषणा की कि बिक्री-कर लगाने से समस्त सम-न अँग्रेजी साहित्य निश्चल और अदृश्य हो जायगा। इस प्रकार बिक्री-कर के विरोधियों ने संसद में होने वाली के लिए अपने-आपको पूरी तरह तैयार कर रखा था।

बहस शुरू हुई, लेकिन अचानक वित्त मन्त्री ने अप्रत्याशित घोषणा की कि पुस्तकों पर क्रय-कर नहीं लगाया जायगा।

यह एक बहुत बड़ी जीत थी। संसद-सदस्य कैनेथ किंडसे, जिसने इस जीत में बहुत बड़ी मदद की, अपने सम्मान में आयोजित एक भोज में कहा, "यह एक निःशब्द विजय थी, ऐसी विजय मेरे संसदीय अनुभव में पहले कभी न हुई।"

प्रकाशक संघ को आगे चलकर और भी मुश्किल लड़ाइयाँ लड़नी थीं, लेकिन वह वक्त खुशी का था—न केवल बिक्री-कर से राहत पाने की खुशी थी बल्कि उस एकता की भावना पर भी खुशी थी जिसने एक नूतन शक्ति का प्रदर्शन किया था।

भरपूर कमीशन

गोर्की साहित्य

तथा

अन्य प्रकाशनों

पर

मनमाना कमीशन

लीजिये।

आज ही लिखें—

ज न सा हि त्य

प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

३७, शिवचरन लाल रोड, इलाहाबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री शिवलाल शर्मा 'प्रवासी' कोदारी कलाँ (उन्नाव) लिखते हैं कि उनके पास १६ बालोपयोगी पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार पड़ी हैं, जिनकी पृष्ठ-संख्या छपने पर १६ से ६४ पृष्ठों तक जायगी। जिन प्रकाशकों को दिलचस्पी हो, वह लेखक से सम्पर्क स्थापित करें।

◈ ◈ ◈ ◈

कटाई कला पर एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक, जो पाठशालाओं, घरों और ट्रेनिंग सेंटर्ज के लिए उपयोगी हो सकती है, लिखी गई है। प्रकाशन के इच्छुक इसके लेखक श्री विशनदास, टेलरिंग इंस्ट्रक्टर आदर्श सनातन धर्म बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टिच्यूट, नारनौल (पेप्सू) से पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈ ◈

भारती साहित्य सदन, ३०/६० कनाट सरकस, नई दिल्ली सूचित करते हैं कि उन्हें हिन्दी के कुछ अच्छे उपन्यास प्रकाशनार्थ चाहिएँ। लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाएँ अवलोकनार्थ भेजें। सर्वोत्तम दो-तीन रचनाएँ फिलहाल स्वीकृत की जाएँगी और लेखकों को रायल्टी में से कुछ अग्रिम भी दिया जा सकेगा। उपन्यास लगभग तीन सौ पृष्ठों का होना चाहिए।

रचनाएँ प्रकाशक के कार्यालय में दी जा सकती हैं अथवा रजिस्टरी द्वारा भेजी जा सकती हैं। मार्ग में गुम हो जाने का उत्तरदायित्व प्रकाशक पर नहीं होगा।

◈ ◈ ◈ ◈

श्री उमाशंकर शर्मा (जे० के० कालेज, पुरुलिया, बिहार) लिखते हैं कि उन्होंने नेहरू जी की रूस-यात्रा पर संस्कृत में ३ सर्गों का एक काव्य शान्ति विजय नाम से लिखा है। हिन्दी-अनुवाद के साथ पुस्तक प्रायः १०० पृष्ठों की होगी। यदि कोई प्रकाशक इसे प्रकाशित करना चाहें तो लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

अच्छी छपाई
नवीन प्रेस
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ : जैसा कि आचार्य श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी ने श्री व्रजविलास श्रीवास्तव द्वारा लिखित इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है 'कथानक-रूढ़ियों या कथानकगत अभिप्रायों के अध्ययन का हिन्दी में सम्भवतः यह प्रथम प्रयास है।...श्री व्रजविलासजी ने अपने अध्ययन के लिए हिन्दी के प्राचीन काव्य पृथ्वीराज रासो को चुना है। उन्होंने बड़े परिश्रम से रासो की कथानक-रूढ़ियों का विश्लेषण किया है, लोक साहित्य और अभिजात साहित्य की उनकी समानान्तर रूढ़ियों को मिलाने का प्रयत्न किया है और निष्कर्ष निकाले हैं जो महत्त्वपूर्ण हैं।...इस निबन्ध को बहुत महत्त्वपूर्ण समझता हूँ...इससे साहित्य की एक नई दिशा का इंगित मिलता है।'

डिमाई आकार के १४५ पृष्ठों की इस सुमुद्रित पुस्तक का प्रकाशन 'राजकमल मूल्यांकन माला' के अन्तर्गत राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, ने किया है और मूल्य ३) है।

◆ ◆ ◆

संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ : इस पुस्तक में १३वीं से १६वीं शताब्दी के प्रसिद्ध संगीतज्ञ अमीर खुसरो, गोपाल नायक, हरिदास, बैजू बावरा और तानसेन की कविताओं के संग्रह के साथ हिन्दुस्तानी संगीत के विकास पर भी लेखक और सम्पादक श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने दृष्टि डाली है। पाँचों कवियों का प्रमाणगत जीवन-परिचय भी दिया गया है। क्राऊन आकार के एण्टीक कागज पर छपी १६६ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) है और इसका प्रकाशन साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद ने किया है।

◆ ◆ ◆

कदम की फूली डाल : अपने पहले निबन्ध-संग्रह 'छितवन की छाँह' के प्रकाशन से श्री विद्यानिवास मिश्र निबन्धकार के रूप में ख्याति पा चुके हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके २२ रोचक और सुपाठ्य निबन्धों का संग्रह है जो 'यात्रा-खण्ड', "चिन्तन-खण्ड' और 'स्वप्न-खण्ड' नाम से विभाजित है। कुछ चित्र भी दिये गए हैं। क्राऊन आकार के १८७ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद ने किया है तथा मूल्य ३) है।

◆ ◆ ◆

शब्द-साधना : सूक्ष्म शब्दार्थ-विवेचन का हिन्दी में यह पहला प्रयास है। कोशकार श्री रामचन्द्र वर्मा ने उनके पर्यायों की तुलना में हिन्दी के लगभग २३०० शब्दों के अर्थभेद का निरूपण इस पुस्तक में किया है। उदाहरण के लिए भाषण, अभिभाषण, प्रवचन, वक्तृता, व्याख्यान, सम्भाषण आदि शब्दों का आज लगभग एक ही अर्थ में प्रयोग होता है, लेकिन भाषा की पुष्टता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता के लिए भिन्न-भिन्न अभिधाओं को समझने की परम

हिन्दी साहित्य का एक विस्मृतप्राय अध्याय

संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ

सम्पादक

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

मूल्य २।।)

आचार्य श्री शिवपूजनसहाय लिखते हैं—**संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ** हिन्दी में अपने विषय की और अपने ढंग की बिलकुल नई पुस्तक है। इस नई दिशा में अनुसंधानशील विद्वान् लेखक का सर्वथा नवीन प्रयास अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय है। पुस्तक बड़े मनोयोग से लिखी गई है। लेखक की श्रमशीलता और सहृदयता के साथ उनके स्वाध्याय की गम्भीरता भी इससे प्रकट होती है। ऐसी गवेषणापूर्ण पुस्तक से ही साहित्य की श्रीवृद्धि होती है।

साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है। यह सत्प्रयास अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है।

क्राऊन आकार के ३७६ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक में अलग से ४१ पृष्ठों की अनुक्रमणिका भी है। प्रकाशक हैं साहित्य रत्नमाला कार्यालय, बनारस; मूल्य ५)।

◈ ◈ ◈

भारत की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ : इतिहास को नया करवट देने वाले, ईसा से ३२६ वर्ष पूर्व से लेकर १८५७ ई० तक के भारत के २८ प्रसिद्ध युद्धों का वर्णन श्री केशवकुमार ठाकुर ने इस पुस्तक में किया है। डॉ० ईश्वरीप्रसाद ने इस पुस्तक के सम्बन्ध में लिखा है कि 'इस पुस्तक को इतिहास के साधारण पाठक उपयोगी पाएंगे।" क्राऊन आकार के ५१२ पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक आदर्श हिन्दी पुस्तकालय इलाहाबाद ने प्रकाशित की है; मूल्य ६) है।

◈ ◈ ◈

विरूढक : बौद्धकालीन पृष्ठभूमि में डॉ० रांगेय राघव द्वारा लिखे गए तीन अंकों के नाटक का सुलभ संस्करण जिसका प्रकाशन साहित्य कार्यालय, अभारा, ने किया है। संख्या १५५; मूल्य २)

◈ ◈ ◈

सत्य और स्वतन्त्रता के उपासक : भारत और विदेश... १५ मानव-विभूतियों की बाबू गुलाबराय द्वारा लिखित ... नियाँ। लेखक ने अपनी भूमिका में स्पष्ट कर दिया है ... विद्यार्थियों के लिए लिखी गई हैं, लेकिन बाबू गुलाबराय ... साहित्यिकता और सरसता से, जिसकी झलक इनमें ... अन्य पाठक भी अछूते न रहेंगे। आगरा के नारायण ... शन द्वारा प्रकाशित इस १७६ पृष्ठों की पुस्तक का ... १।।)

◈ ◈ ◈

पब्लिकेशन्स डिवीज़न, भारत सरकार, दिल्ली ने ... ४ पुस्तिकाएँ प्रकाशित की है : (१) दक्षिणभारत प्रदर्शि... मद्रास और आन्ध्र, (२) यह बनारस है, (३) अस्पृश्... निवारण, और (४) मानव विज्ञान। पहली पुस्तक '... देखिए' की माला के अन्तर्गत छपी है और यात्रियों के ...

बाल भारती

नन्हें मुन्नों की सचित्र मासिका जिसमें सरल भाषा में प्रेरणादायक कहानियां, मीठी मीठी कविताएं, उपयोगी लेख और रेखा-चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ४); एक प्रति ।=)

आजकल

हिन्दी की इस सर्वप्रिय सचित्र मासिका में विचारपूर्ण लेख तथा विख्यात कथाकारों और कवियों की कृतियां पढ़िए। 'आजकल' से संयुक्त 'विश्वदर्शन' में अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर निष्पक्ष लेख प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ६); एक प्रति ।।)

प्रसारिका

(सचित्र त्रैमासिक)

'प्रसारिका' (रेडियो संग्रह) आकाशवाणी के हिन्दी केंद्रों से प्रसारित उच्च कोटि की चुनी हुई वार्ताओं, कविताओं तथा कहानियों आदि का त्रैमासिक संग्रह है। सुन्दर गेट-अप की इस सचित्र पत्रिका का मूल्य ८ आना है। वार्षिक मूल्य २)

ac 55/105

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उच्चकोटि के प्रकाशन

उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

कालिदास का भारत [भाग १] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)
चौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)

कहानियाँ

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
रजतरश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : " " ३)
रेखाचित्र : " " ४)
[विन्ध्य प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५४-१९५५ के नवीन प्रकाशन

कहानियाँ

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश ३)

उर्दू शायरी

शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५, : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)

विविध

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द ३)
ज़िन्दगी मुस्कराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)
धूप के धान [कविता] : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)
कालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवत शरण उपाध्याय ४)
शरत् के नारीपात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथ कुमार एम० ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० १)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] : श्री नारायण प्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतीव उपादेय है; मूल्य १) है। दूसरी पुस्तक में बनारस के विषय में दिल्ली के रेडियो से प्रसारित श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ श्री मोहनलाल गुप्त तथा श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' की वार्ताएँ हैं। मूल्य ।) है।

अस्पृष्यता निवारण में श्री श्रीमन्नारायण, श्री वियोगी हरि, श्री जगजीवन राम तथा श्री विश्वम्भरनाथ पाण्डे की रेडियो-वार्ताओं का संकलन है; भूमिका में प्रकट किये गए विश्वास के अनुसार 'आशा है इनके प्रकाशन से अस्पृष्यता की रही-सही शक्ति भी जाती रहेगी, और इस प्रकार भारत में लोकतन्त्र सार्थक होगा।' यह सरकारी प्रकाशन है और सरकारी दावे को हम कैसे झुटलाने की कोशिश करें कि ।=) की इस ३२ पृष्ठों की पुस्तिका से कार्य वह सिद्ध हो जायगा जिसके लिए लोक-पुरुष महात्मा गांधी जीवन-पर्यन्त साधना करते रहे।

मानव-विज्ञान : में डॉ० पी०सी० विश्वासकी 'मानव-शास्त्र' के विषय पर प्रसारित तीन रेडियो वार्ताओं का संग्रह है। मूल्य ।) है।

◈ ◈ ◈

उद्भ्रान्त : श्री जैनकुमार का सामाजिक उपन्यास है, जिसमें लेखक ने यह पुष्ट करने का प्रयास किया है कि यदि 'अवचेतन में निम्न वृत्तियों का अस्तित्त्व है, तो सद्वृत्तियाँ भी वहाँ अवश्य होंगी।' इसका कथानक चुस्त, चरित्र-चित्रण सुघड़ और भाषा शैली काफ़ी प्रौढ़ है। आनन्द प्रेस, भागलपुर से प्रकाशित इस उपन्यास का मूल्य ३) है।

◈ ◈ ◈

सुबह-शाम : श्री रामेश्वरनाथ तिवारी की १६ कहानियों का संग्रह है, जिसमें से अधिकांश कहानियों का स्वर सामाजिक है। १२४ पृष्ठ के इस कहानी संग्रह का मूल्य २) है, जो भारती प्रकाशन, मुंगेर से प्रकाशित हुआ है।

◈ ◈ ◈

नारी का रूप शृंगार : 'प्रस्तुत पुस्तक में नारी का केवल बाह्य रूप सँवारने पर ही जोर नहीं दिया गया, अपितु उसके व्यक्तित्व, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा आचरण के सौन्दर्य को भी सँवारने और प्रभावशाली बनाने का महत्त्व समझाया गया है। इसकी विशेषता यह भी है कि लेखिका ने जो सुझाव दिए हैं, वे भारतीय संस्कृति और आदर्शों के अनुरूप हैं। साफ़-सुथरे चित्रों से सुसज्जित, डिमाई ... की, २५६ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य ६) है, जिसे ... कमल प्रकाशन, दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

◈ ◈ ◈

महिला शासन में श्री चिरंजीलाल पाराशर की २१ ... नियाँ संगृहीत हैं, जिनकी विषय-वस्तु हास्य-व्यंग्य से ... है। भाषा सरल, मुहावरेदार और प्रवाहमय है। ... पब्लिकेशन, गाज़ियाबाद से प्रकाशित इस संग्रह का ... २) है तथा वितरण राजकमल प्रकाशन द्वारा हो रहा है।

◈ ◈ ◈

सोने का नीबू : बाल-साहित्य सम्बन्धी-एक सुन्दर पुस्तक ... जिसमें रंगीन चित्रों से सुसज्जित दस शिक्षाप्रद रोचक ... कथाएँ दी गई हैं। इनका संकलन किया है श्रीमती ... और प्रकाशन हुआ है राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ... मूल्य १) रु०।

◈ ◈ ◈

बलिदान की कहानियाँ : बाल सदन, नई दिल्ली का प्र... शन है जिसमें किशोर वय के बच्चों में देश-प्रेम एवं आ... बलिदान और शौर्य की भावना भरने वाली दो सचित्र ... पूती कहानियाँ दी गई हैं। इसके लेखक हैं श्री प्रशान्त ... मूल्य है ।||) आने।

◈ ◈ ◈

मेरा सपना : पुस्तक कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए लि... गई है जिसमें बिना संयुक्ताक्षरों का प्रयोग किये एक ... रोचक स्वप्न की कहानी वर्णित की गई है। इसके लेखक ... श्री आनन्द और प्रकाशन आनन्द-प्रकाशन दिल्ली की ... से हुआ है। मूल्य |||) आने।

◈ ◈ ◈

गप-शप खलिहान : का प्रकाशन ज्ञानपीठ लि०, पटना ... किया है। इसमें प्रत्येक मास तथा ऋतु में उत्पन्न होने ... फलों, तरकारियों, फसलों एवं फूलों आदि के विषय में विस्तृत ... जानकारी प्रस्तुत की गई है। इसके लेखक हैं श्री रामा... प्रसाद सिंह और मूल्य है |||=) आना।

◈ ◈ ◈

पुष्पांजलि : श्री प्रेमनन्दनराय की सरस एवं नवीन दृष्टिकोण ... से लिखी गई कविताओं का संग्रह है, जो ज्ञानमंजरी प्रका...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न, मुजफ्फरपुर की ओर से प्रकाशित हुआ है। मूल्य ॥) रु० ।

◈ ◈ ◈

...रसी : स्वरूप-नगर, कानपुर से प्रकाशित होने वाली ...रिवारिक पत्रिका है जिसका सम्पादन सुश्री लीला प्रकाश ...र रही हैं। अक्तूबर (१९५५) में इसका गृह-शास्त्र विशे...ांक प्रकाशित हुआ है जिसमें अनेक सुन्दर कहानियों, ...कांकी, नाटकों एवं सरल कविताओं के अतिरिक्त गृह-शास्त्र ...म्बन्धी अनेक छोटे-छोटे सचित्र लेख भी दिये गए हैं। ...ार्षिक मूल्य ४) और इस अंक का ।।।) आना ।

◈ ◈ ◈

...ीवन-कण : ज्ञानपीठ लि०, पटना द्वारा प्रकाशित श्री राम...ीन पाण्डेय के छः छोटे-छोटे एकांकी नाटकों का संग्रह है, ...जिनमें से दो पौराणिक हैं और शेष सामाजिक तथा समस्या-...मूलक। मूल्य १) रु० ।

गो सेवा : में गांधीजी द्वारा गो-रक्षा एवं गो सेवा की समस्या पर समय समय पर अपने भाषणों या लेखों आदि में प्रगट किये गए विचारों का संकलन किया गया है। पुस्तकाकार रूप में इसका प्रकाशन, **नवजीवन-प्रकाशन-मन्दिर, अहमदाबाद** से हुआ है। मूल्य १॥) रु० ।

◈ ◈ ◈

ज्ञानपीठ लि०, पटना की सांस्कृतिक-प्रतीक माला के अन्तर्गत तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पहली है **हमारी गंगा**, दूसरी है **तुलसी-दल** और तीसरी पुस्तक है **पहला राजा पहला किसान**। इन तीनों पुस्तकों के लेखक हैं श्री सदानन्द झा। पहली पुस्तक का मूल्य है ॥-) आने और शेष दोनों में से प्रत्येक का ॥) आने ।

◈ ◈ ◈

विद्यार्थियों
और
पुस्तकालयों के लिए
हमारे उपयोगी और महत्त्व के प्रकाशन

यशोधरा : एक समीक्षा	—ले० प्रो० वासुदेव	३॥)
पथिक : एक समीक्षा	— ,,	१)
राज्यश्री : एक समीक्षा	— ,,	१।)
आधुनिक निबन्धावली	—ले० श्री अखिलेश्वर प्रसाद	३)
कॉलेज निबन्धावली	— ,, ,,	२।)

पुस्तकों का आर्डर आज ही भेजिए।

भा र ती भ व न,

बाँकीपुर, पटना--४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-पुस्तकों का बृहत्तम भण्डार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई

हिन्दी-पुस्तकों का बृहत्तम भण्डार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई । हिन्दी-पुस्तकों का बृहत्तम

राजकमल

हिन्दी-पुस्तकों का बृहत्तम भण्डार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हिंसा और उसका विश्वव्यापी प्रभाव : इसमें लेखक ने ...हिंसा के आधार, उसके वास्तविक रूप और प्रचार का ...तिहासिक विवेचन किया है। १३२ पृष्ठ की यह पुस्तक ... विश्व जैन मिशन, अलीगंज (एटा) से प्रकाशित हुई ...।

◈ ◈ ◈

...खिल भारत सर्व-सेवा संघ-प्रकाशन, काशी से प्रकाशित ...स्तकों में (जो परिचयार्थ प्राप्त हुई हैं) पहली धीरेन्द्र मजूम-...दार की नई तालीम है, दूसरी पुस्तक ग्राम राज की इसी ...लेखक की है। गाँव-गाँव में स्वराज्य पुस्तक विनोबा जी की ...। अन्तिम दो पुस्तकें हैं—श्री जयप्रकाश नारायण की ...जीवन-दान और अप्पा साहब पटवर्धन की गाँव का गोकुल। ...इनके मूल्य क्रमशः ॥), ।), =), ।), ।) हैं।

◈ ◈ ◈

...योग का व्यंग : श्री मेदिनीप्रसाद आर्य का सामाजिक उपन्यास है। २४८ पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य ४) है, जो जेनरल स्टोर, बेगूसराय, मुँगेर से प्रकाशित हुई है।

◈ ◈ ◈

महाभारत की कहानियाँ : महाभारत में मूल कथा के अतिरिक्त भी पशु-पक्षी-जीवन पर आधारित ऐसी अनेक कहानियाँ हैं, जो नीति, दर्शन और जीवन के तत्त्वों से समन्वित हैं। उसी प्रकार की १४ कहानियाँ इस पुस्तक में संगृहीत हैं। रामावतार झुनझुनवाला के इस संग्रह का मूल्य ।।।) है, जिसे **आनन्द प्रेस, भागलपुर** ने प्रकाशित किया है।

◈ ◈ ◈

गीत-संगम : श्री रंजनसूरिदेव के सन् १९४९ ई० से १९५५ ई० तक के १२० गीतों का संग्रह है। **लता-प्रकाशन, पटना-३** से प्रकाशित इस संग्रह का मूल्य २॥) है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना
का अभूतपूर्व ग्रन्थ

प्रेमचन्द और गोर्की

सम्पादिका : शचीरानी गुर्टू

प्रेमचन्द और गोर्की के समग्र साहित्य के विषय में विविध समीक्षकों के विचारों का महत्त्वपूर्ण संकलन

पृष्ठ संख्या : डिमाई ६२५; मूल्य ९)

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली इलाहाबाद बम्बई

यदि आप अभी तक

प्रकाशन समाचार

के

ग्राहक न बने हों तो
आज ही वार्षिक मूल्य २॥) का मनीआर्डर
भेजकर ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की जिल्दसाज़ी

श्री सूर्यकुमार जोशी

जिल्दसाजी का काम प्रेस में छपाई के बाद शुरू होता है। जिल्दसाजी के अन्तर्गत कागज का काटना, मोड़ना, एक साथ इकट्ठा करना, इकट्ठे कागजों को समतल बनाना, सिलाई करना, चिपकाना आदि क्रियाएँ शामिल हैं।

जिल्दसाजी से पूर्व की सब क्रियाओं की अपेक्षा अक्सर जिल्दसाजी पर ज्यादा खर्च आता है और इसलिए, कम खर्चे के साथ ज्यादा कारगर काम करवाने के खयाल से जरूरी है कि मुद्रण का आयोजन करने से पूर्व यह जानकारी प्राप्त कर ली जाय कि जिल्दसाजी की हर क्रिया पर कितना खर्च आएगा।

जिल्दसाजी की दृष्टि से सबसे आसान और सस्ता काम पोस्टर या एक-दो पेजी पत्रिका है जो कि छपाई के तुरन्त बाद ही हो जाता है। दूसरी आसान क्रिया कागज मोड़ना है, जो कि प्रेस में लगी फोल्डिंग मशीन पर ही हो जाना चाहिए। चार, छः या आठ पेजी पत्रिकाओं का काम भी इसी मशीन पर हो सकता है, और बाद में उन्हें परिष्कृत रूप देने के लिए अधिक खर्च उठाना आवश्यक नहीं।

लेकिन, आठ-पेजी या अधिक बड़ी पुस्तक-पुस्तिकाओं की तह बनाने के बाद उनकी सिलाई और सफाई करना जरूरी है। सफाई का मतलब पेजों को इस तरह काटना है कि वे पूरी तरह खोले जा सकें और ऊँचे-नीचे सब पृष्ठ समतल हो जायँ। कई फोल्डिंग मशीनें, जैसी कि समाचार-पत्रों और उनके विशेषांकों की तह बनाने के काम में लाई जाती हैं, पन्नों को समतल भी बनाती हैं। लेकिन उन पन्नों के किनारे कटे हुए, खुरदरे होते हैं। इस प्रकार की मशीन के प्रयोग से भी सफाई-सुथराई पर खर्च बचाया जा सकता है।

याद रखिए कि किसी भी कागज को मोड़ने पर निम्नलिखित इकाइयाँ प्राप्त होंगी: एक तह—४ पेज; दो तह—६ या ८ पेज; तीन तह—१२ या १६ पेज; चार तह—२४ या ३२ पेज।

पुस्तक-पुस्तिकाएँ इन्हीं इकाइयों के अनुरूप आयोजित की जानी चाहिएँ अन्यथा जिल्दसाजी की कई अन्य क्रियाओं में पड़ना होगा।

स्वावरण पुस्तिका वह है जिसका आवरण या ... अन्य पृष्ठों की भाँति एक ही कागज का हो और एक ... ही छपा हो। ऐसी पुस्तिका भिन्न कागज के कवर से ... होगी और वैसे भी काफी सन्तोषजनक होगी। अलग क... एक रंग में छपी हुई पुस्तिका की निस्बत दो रंग में ... कवर की पुस्तिका अधिक सुन्दर होगी। लेकिन पृष्ठों ... संख्या अधिक बढ़ जाने पर मजबूत कवर जरूरी हो जा...

टेलीफोन डायरेक्टरी की जिल्दसाजी में आम तौ... काम में लाया जाने वाला तरीका सबसे अच्छा है। सि... की अपेक्षा चिपकाना कम खर्चीला है और पुस्तकों की अ... संख्या होने पर यह तरीका विशेषतः लाभदायक है। चि... काने वाले द्रव्यों में आजकल, खास तौर पर प्लास्टि... प्रयोग से बहुत प्रगति हो चुकी है।

आजकल मशीनों से बनी प्लास्टिक और धातु की जि... भी प्रचलित हैं। वे सुन्दर और रंगबिरंगी होती हैं; ... पृष्ठ सीधे, समतल खुलते हैं; और पृष्ठों का क्रम भी ... चाहा बदला जा सकता है। लेकिन उनमें कई असुवि... भी हैं। उनमें मामूली जिल्दों से ज्यादा खर्च आता है; ... ज्यादा भारी होती हैं, उनमें स्थायित्व का अभाव है; ... उनके पृष्ठ आसानी से अलग हो जाते हैं।

लेकिन पुस्तकों की जिल्दसाजी में सभी क्रियाएँ काम... लानी होती हैं—पृष्ठों का काटना, मोड़ना, एक साथ इ... करना, इकट्ठे कागजों को समतल बनाना, सिलाई करना ... चिपकाना आदि। आज भी, चाहे हर क्रिया के लिए म... मौजूद है, यही तरीका सबसे अधिक प्रचलित है। ... समस्त क्रियाओं की जानकारी सभी पुस्तक-निर्माताओं के लि... वांछनीय है।

पुस्तक-प्रकाशक पुस्तक-मुद्रक नहीं होता। शायद ... कोई प्रकाशक अपना स्वतन्त्र मुद्रण विभाग रख सकता है ... लेकिन वे मुद्रक, जो कि विशेषतः पुस्तक-निर्माण का ... करते हैं, मुद्रण से सम्बन्धित पुस्तक-निर्माण के अन्य पहलु... की जानकारी से अच्छी और सस्ती किताबें निकाल सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

[अखि]ल विश्व जैन मिशन, अलीगंज (एटा)
—दिव्य दर्शन, श्री कामता प्रसाद जैन
[आ]नन्द पुस्तक भवन, बनारस
—आशीर्वाद, साधुराम शुक्ल, २।)
—रस अलंकार और पिंगल, १)
[...]ता प्रकाशन, लखनऊ
—अदृश्य रेखाएँ, श्री प्रद्युम्न पण्डित, ३)
[ओ]रिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
—यथार्थ से आगे, श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी, ५॥)
—रहीम, सेठ गोविन्द दास, २)
—भारतेन्दु, सेठ गोविन्द दास, २)
—हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास, सन्त, २।)
—आलोक स्तम्भ, श्री सन्त गोकुलचन्द्र, २॥)
[क]ल्याणदास ब्रदर्स, बनारस
—हास-परिहास, श्री सुधाकर पाण्डे, २॥)
—हँसे सुखन, श्री कली मुल्ला फारुकी, ३)
—ओस और आंसू, श्री प्यारेलाल आवारा, १॥।=)
[न]वयुग प्रकाशन, दिल्ली
—गेलार्ड, श्री गुलशन नन्दा, ५)
—हाथ में हाथ, श्री हंसराज 'रहबर', ४)
—हम लोग, श्री हंसराज 'रहबर', ३)
—पथ का अन्त, श्री सत्यदेव शर्मा, २।)
[प्रका]श गृह, बनारस,
—पथ शेष, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, अनु० श्री कमलाराय २)
—समस्तोपोल, टालस्टाय, श्री वीरेन्द्र नाथ मण्डल, ४)
—भूनि, पर्ल, एस० बक, श्री गोविन्द सिंह
—कुछ मेरी सुनो, श्री वीरेन्द्र नाथ मण्डल, ५)
[प्र]तिभा निकेतन प्रकाशन, उज्जैन
—वाणी बोल उठी, श्री ऋतुराज, १॥)

—बाघ की गुफाओं का कलात्मक स्वरूप, श्री ऋतुराज
भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़
—आचार्य क्षेमेन्द्र, डॉ० मनोहर लाल गौड़, ३)
—भगवत दर्शन, डॉ० हरवंश लाल शर्मा, ६)
मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली
—सागर लहरें और मनुष्य, श्री उदयशंकर भट्ट, ४)
मालव साहित्य प्रकाशन, उज्जैन
—भारतीय लोक नाट्य, श्री वसन्ती लाल बंत्र, ४)
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
—धरती और आकाश, श्री छोटू भाई, १॥)
—गांधी श्रद्धांजली ग्रन्थ, सं० सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन
—लद्दाख यात्रा की डायरी, श्री सज्जन सिंह, २)
—ख्वाज़ा मईनुद्दीन चिस्ती, चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, ।=)
विजय प्रकाशन, भोपाल
—लम्बे दिन जलती रातें, श्री सत्यप्रकाश संगर, २)
साहित्य ग्रन्थागार, उज्जैन
—खण्डहरों की छाया में, श्री शेख मुईनुद्दीन
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
—जैन साहित्य का इतिहास, पं नाथूराम प्रेमी, पु० मु०
—किशोर जीवन की कहानियाँ, २ भाग, श्री 'उर्मिल', १।)
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली,
—शान्ति लोक, सं० श्री गोपालकृष्ण कौल, ५)
—डाक घर, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, २)
—सुबह-शाम, गेटे, २॥)
—मन के बंधन, सोमरसेट मॉम, ५)
हिमालय एजेन्सी, कनखल,
—हिन्दी शब्द निर्णय, श्री किशोरीदास वाजपेयी, ।=)
—आचार्य किशोरी दास वाजपेयी, राहुल सांकृत्यायन, ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

ब्रजविलास श्रीवास्तव, पृथ्वीराज रासो की कथानक-रूढ़ियाँ, १४५, डि०, राजकमल प्रकाशन, बम्बई
त्रिपाठी, वाजपेयी और सक्सेना, लेखक और कवि, २४६, क्रा०, मालवीय पुस्तक केन्द्र, लखनऊ
दशरथ ओझा, डॉ०, समीक्षा शास्त्र, २१६, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
रामचन्द्र वर्मा, शब्द-साधना, साहित्य रत्न माला कार्यालय, बनारस
शिवदत्त शास्त्री, अनिवार्य संस्कृतम्, ५४, क्रा०, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
श्रीनिवास शास्त्री, आत्मचन्द गौड़, संस्कृत हिन्दी साहित्य परिचय, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ०, कबीर, पु० मु०, ३८०, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
हरि मोहन लाल श्रीवास्तव, प्रेमचन्द और अश्क, क्रा०, किताब घर, ग्वालियर

इतिहास, राजनीति, शिक्षा, मनोविज्ञान

डब्ल्यू० एम० राय बर्न, अनु० रामेश्वरी श्रीवास्तव, शिक्षालय संगठन, अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ
नित्यानन्द पटेल, मनोविज्ञान की रूपरेखा, ४००, क्रा०, लाहोर बुक शॉप, लुधियाना

उपन्यास

कमल शुक्ल, कूल और कगार, २००, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली
कमल शुक्ल, धूल के बादल, ३५५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
गोर्की, अनु० नूरनबी अब्बासी, मालिक, १३०, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली
चन्द्र शेखर, आर० आर० एर्वटे, कीर्ति मन्दिर, २००, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस
तुर्गनेव, अनु० वीरेन्द्र नाथ मण्डल, रूडीन, २४०, क्रा०, प्रकाश गृह, बनारस
दयाशंकर मिश्र, छोटी बहू, २२०, क्रा०, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्द्र पाल सिंह, शक्ति, ३००, क्रा०, लाहौर बुक शॉप, लुधियाना ४॥)
...नन्द, मनोरमा, 'कायाकल्प' का संक्षिप्त संस्करण, क्रा०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ४)
...वर्मा, चंचला, १५०, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २।)
...चन्द्र चटर्जी, अनु० जयकृष्ण शुक्ल, छोटा भाई, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद १)
...चन्द्र चटर्जी, अनु० जय कृष्ण शुक्ल, छोटी माँ, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद १)
...रश्मि, एक ही रास्ता, १४०, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली २।)

कविता

...बावरा अहेरी, पु० मु०, ६४, डि०, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ३)
...द्र सिंह, बादली, पु० मु०, ११२, क्रा०, चाँद जलेरी प्रकाशन, जयपुर २)
...द्र सिंह, लू, पु० मु०, ११२, क्रा०, चाँद जलेरी प्रकाशन, जयपुर २)
...माई, पृथ्वीवन्दन, १२४, क्रा०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद १।)
...श्वर चतुर्वेदी, संगीतज्ञ कवियों की हिन्दी रचनाएँ, १६६, क्रा०, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद २॥)
...वतार चेतन, श्वासों के स्वर, ८०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद २)
...नारायण प्रसाद, झाँसी की रानी, ३२०, क्रा०, प्रकाश गृह, बनारस ४)
...प्रसाद सैनी, निर्झर, क्रा०, सलिल प्रकाशन, अजमेर १)

कहानी

...जिब्रान, अनु० जगन्नाथ प्रभाकर, विद्रोही आत्माएँ, १३०, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली २)
...श्वरी लाल गुप्त, कर्णीका, ११०, क्रा०, प्रकाश गृह, बनारस १॥)
...न्द्र कुमार मौर्य, धूर्त पटी, ३२, क्रा० भारती पुस्तक भवन, बनारस ।=)
...न्द्र नाथ मण्डल, शेक्सपियर की कहानियाँ, २०८, क्रा०, प्रकाश गृह, बनारस ३)
...पाल आनन्द, आजादी की पुकार, भाग १, १८५, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना २)

नाटक

...शंकर भट्ट, आदिम युग, पु० मु०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४॥)
...० एल० राय, अनु० रामचन्द्र वर्मा, सिंहल विजय, पु० मु०, १६५, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई २।)
...न्द्र विशुन पुरी, सृष्टि का अन्त, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद ।=)
...री, ६१, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १॥)
...नोद रस्तोगी, कसम कुरान की, क्रा०, अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ ३)

बाल साहित्य, प्रौढ़ साहित्य

...लाल हंस, नेमाड़ी की लोक कथाएँ, दो भाग, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली प्रति भाग १)
...लाल चत्ता, मनोरंजक लोक कथाएँ, दो भाग, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ,, १)
...० डी० टण्डन, नवभारत निर्माता, १३२, इलाहाबाद लॉ जर्नल क० लि०, इलाहाबाद २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तराम कपूर, किशोर जीवन की कहानी १, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
मस्तराम कपूर, किशोर जीवन की कहानी २, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०, बम्बई
लक्ष्मीधर वाजपेयी, स्व०, गार्हस्थ्य शास्त्र, पु० मु०, १८०, क्रा०, तरुण भारत ग्रन्थावली, इलाहाबाद
शम्भुनाथ सक्सेना, देवी देवयानी, नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर
हंसराज रहबर, हमारी लोक कथाएँ, पहला भाग, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

विविध

आनन्द स्वरूप पाठक, कार्तिक माहात्म्य भा० टी०, १६२, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
कामता प्रसाद जैन, गिरनार गौरव, १५० क्रा०, अ० विश्व जैन मिशन, अलीगंज
कामता प्रसाद जैन, पर्व की कथाएँ, पु० मु०, १२०, क्रा०, अ० विश्व जैन मिशन, अलीगंज
केशव कुमार ठाकुर, भारत की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद
जगन्नाथ दाउरमल व्यास, व्यापार विज्ञान जंगी, ८०, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
जयचन्द विद्यालंकार, भारतीय कृषि का क ख, ३७२, क्रा०, हिन्दी भवन, इलाहाबाद
नारायण दुलीचन्द व्यास, डॉ०, कृषि ज्ञान कोष, ३८८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
पीताम्बरी भाष्य, श्री पंचदशी, पु० मु०, ८००, क्रा०, गोयल एण्ड कं०, दिल्ली
ब्रह्मानन्द,प्रकाश की बातें, ४४, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
बालकृष्ण मिश्र, डॉ०, चिकित्सा सिद्धान्त, २६४, क्रा०, श्रीकृष्ण होमियोपैथिक औषधालय, बनारस
बालकृष्ण मिश्र डॉ०, होमियोपैथिक चिकित्सा, ४६१, क्रा०, श्रीकृष्ण होमियोपैथिक औषधालय, बनारस
भर्तृहरि, अनु० केशवदेव शास्त्री, भर्तृहरि शतक, पु० मु०, १३८, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
भातखण्डे, अनु० लक्ष्मीनारायण गर्ग, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ४, पु० मु०, ८७०, डि०, संगीत कार्यालय, हाथरस
महावीर प्रसाद पोद्दार, कहावतों की कहानियाँ, १६०, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
विराज, प्राणों की बाज़ी, १५०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
विष्णु प्रभाकर, महावीर चरित, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
शिवसहाय चतुर्वेदी, सं०, हमारी लोक-कथाएँ, १२४, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
शीघ्र बोध भाषा टीका, १६०, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
सत्यकाम विद्यालंकार, जीवन रश्मि, १५६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
सत्यदेव वैद्य, बृहद् पशु-चिकित्सा, पु० मु०, ३१०, क्रा०, पुस्तक मन्दिर, मथुरा
हीरालाल चौबे, नेहरू जी रूस में, ११५, क्रा०, प्रकाश गृह, बनारस
हेमांग मेहता, विनय वाचनमाला भाग १, २६०, क्रा०, जनरल बुकडिपो, नडियाद
हेमांग मेहता, विनय वाचनमाला भाग २, २७२, क्रा०, जनरल बुक डिपो, नडियाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास की सात तारीख को प्रकाशित होता है।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घटती-बढ़ती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की २० तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ : ६"×८"। आधा पृष्ठ : ३¾"×६" या २¾"×८"। चौथाई पृष्ठ : २¾"×३¾"। एक कालम इंच : १"×२¾"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५½"×६"।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ : ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

८, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष
(ले०—भगवान दास मित्तल)
कुण्डलियों द्वारा भृगुसंहिता के आधार पर नवीन ग्रन्थ। मूल्य ४) डाक खर्च ॥=)

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष
भूत भविष्य वर्तमान के बारे में हाथ की रेखाओं द्वारा अपने जीवन की समस्त बातें मालूम करें। मूल्य ६) डाक खर्च १।)

ज्योतिष विज्ञान
(ले०—पं० विशुद्धानन्द जी)
ज्योतिष विषय की सर्वोत्तम पुस्तक ६। मूल्य ६) डाक खर्च ।॥=)

व्यापार चमत्कार
व्यापारियों को मार्गप्रदर्शन तथा तेजी-मंदी का सही-सही हिसाब बताने वाला सच्चा ग्रन्थ। मूल्य ५) डाक खर्च ॥=)

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बेसिक ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

१. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
२. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
४. इलैक्ट्रिक बैट्रीज ३॥)
५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्ज १)
६. इं० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्स ३)
७. सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर ३॥)
८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्ज दोनों भाग ६)
९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
१०. आयल इंजन गाइड ६)
११. क्रूड आयल इंजन गाइड ४॥)
१२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
१३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
१४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
१५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
१६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
१७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
१८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाईंडिंग ६)
१९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
२०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
२१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
२२. इलैक्ट्रिक लाइटिंग ६)
२३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स ६)
२४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
२५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन) ४॥)
२६. प्रैक्टिकल घड़ी साजी ४॥)
२७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
२८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
२९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ७॥)
३४. वीविंग गाइड ४)
३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफरी शिक्षा २॥)
३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
३७. A लॉ कास्ट हाउसिंग टैक्निक (हिंदी) ५)
३७. B " " " इंगलिश ५)
३८. A जन्त्री पैमाइश चौब (हिन्दी) १॥)
३८. B " " " इंगलिश १॥)
३९. मोटर कार इन्सट्रक्टर १०)
४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
४३. ट्रैक्टर और खेती (ट्रैक्टर गाइड) ६)
४४. सरकिट डायग्राम्ज आफ रेडियो ३॥)
४५. मोटर प्राइमर १।)
४६. ट्रैक्टर प्राइमर १।)
४७. बिना बिजली का रेडियो १।)
४८. बच्चों का रेडियो १।)
४९. बच्चों का टेलीफोन ॥।)
५०. बच्चों के वैज्ञानिक खेल १।)
५१. लोकल रेडियो सैट १।)
५२. रेडियो का साधारण ज्ञान १।)
५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
५४. बच्चों का वायरलैस १।)
५५. लोकोफिटर गाइड (रेलवे) १०)
५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन (गृहनिर्माणकला) १०)
५७. सोप मेकर्ज गाइड ६)
५८. मेटल पालिश २॥)
५९. फरनीचर बुक १०)
६०. पम्पिंग गाइड
६१. जनरल मैकेनिकल गाइड
६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
६३. स्टीम टरबाईन
६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

१. रंग साजी २॥)
२. प्लास्टिक गाइड २॥)
३. बूट पालिश २॥)
४. अपटूडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना) २॥)
५. कन्फैक्शनरी २॥)
६. हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥)
७. बेकरीबहार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) ३॥)
८. अचार चटनी मुरब्बा १।)
९. पैन्ट्री का काम ४)
१०. चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ८)
११. परफ्यूमरी मास्टर २॥)
१२. वार्निश मास्टर (वार्निश साजी) २॥)
१३. आतिशबाजी का व्यापार २॥)
१४. हलवाई मास्टर २॥)
१५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
१६. पान की दुकान २॥)
१७. छपाई पारचाजात (कैलीकोप्रिंटिंग) २॥)
१८. कुकरी बुक ४)
१९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥)
२०. मोमबत्ती का व्यापार २॥)
२१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
२२. फिनायलसाजी (कीड़े मार दवाइयाँ) २॥)
२३. शीशे बनाना (आईनासाजी)
२४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना
२५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना
२६. स्लेट और स्लेट लीड पैंसिल बनाना
२७. रबड़ की मोहरें बनाना
२८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाना
२९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज़
३०. सिलाई कटाई गाइड
३१. सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार
३२. लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा)
३३. हरफन मौला
३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग
३५. शर्बत विज्ञान
३६. बुक बाईंडिंग
३७. दर्जी मास्टर
३८. व्यापार दस्तकारी
३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान
४०. वीविंग कैल्कुलेशन
४१. सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई
४२. कपड़े की बनावट और डिज़ाईन
४३ पोल्ट्री फार्मिंग
४४ कॉमर्शियल पोल्ट्री
४५ पोल्ट्री सर्जन

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशांत लिखित १५ पुस्तकें

१. आलू की खेती
२. टमाटर की खेती
३. गोभी की खेती
४. जीरा, धनिया, अजवाइन
५. तरकारियों की खेती
६. अच्छे बीज
७. अच्छी खाद
८. कपास की खेती
९. गन्ने की खेती
१०. फूल-फुलवारी
११. धान की खेती
१२. संतरे की बागबानी
१३. आम की बागबानी
१४. आधुनिक कृषि विज्ञान
१५. तम्बाकू की खेती
१६. खेती बाड़ी (किसान गाइड)
१७. फलों की खेती
१८. तरकारी साग भाजी की खेती
१९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगायें।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष १ जनवरी, १९५४ अंक ५
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

...नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक...
...ओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

महाकवि ग़ालिब

का दीवान
शब्दार्थ सहित
हिन्दी में छप गया है ।
...ही जिल्द में : मूल्य केवल २॥)

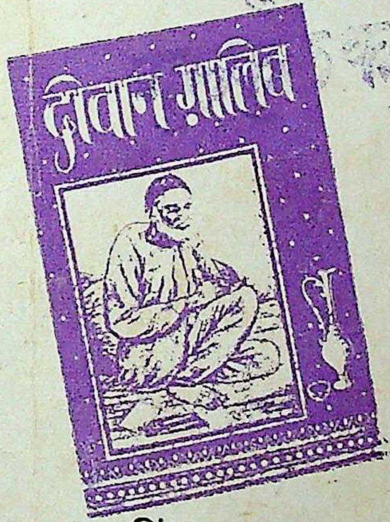

बलवन्त सिंह
की पंजाबी जीवन पर लिखी गईं

सात कहानियाँ
और
तीन छोटे उपन्यास

पक्की जिल्द : आकर्षक कवर
मूल्य ३) मात्र

अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें

लहर प्रकाशन
२ मिण्टो रोड : इलाहाबाद—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के गौरव-ग्रन्थ

राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के उपन्यास

★ **राम रहीम**
तीन पीढ़ियों से बहुप्रसिद्ध, अनोखा उपन्यास
चौथा संस्करण, पक्की जिल्द
लगभग १००० पृष्ठ मूल्य १०)

★ **पुरुष और नारी**
अनूठा उपन्यास, अनूठी शैली।
तीसरा संस्करण। मूल्य ४)

★ **सावनी समां**
★ **गांधी टोपी**
राजासाहब की श्रेष्ठतम कहानियों के
सुन्दर संग्रह मूल्य २) ३)

★ **सूरदास**
संस्मरणात्मक उपन्यास मूल्य २।।।)

★ **टूटा तारा**
संस्मरणात्मक शब्दचित्र मूल्य ४)

★ **सरकार**
बंगाल के अकाल की पृष्ठभूमि पर लिखा
गया उपन्यास मूल्य

★ **जानी सुनी देखी**
(चार भागों में) अतीत के चित्र और संस्मरण
एक--नारी क्या एक पहेली मूल्य
दो--पूरब और पश्चिम ,, ३।।
तीन--हवेली और झोपड़ी ,, २।
चार--देव और दानव ,,

★ **अपना पराया**
★ **धर्म की धुरी**
क्रान्तिकारी, सामाजिक नाटक
मूल्य प्रत्येक का

अन्य प्रकाशन

अधूरी नारी—उपन्यास उदयराज सिंह मूल्य २।।।)
रोहिणी— ,, ,, ,, १।)
नवतारा— कहानियाँ ,, ,, १।)
शरत् चन्द्र : व्यक्ति और कलाकार—इलाचन्द्र जी ,, ३)
सूदखोर की पत्नी—डास्टायव्सकी का लघु-उपन्यास—अनुवादक:इलाचन्द्र जोशी ,, २।।)
दादा (सामाजिक उपन्यास) ओंकार शरद ,, ३)

विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें—

अशोक प्रेस——पटना-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :
: अंक ५ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

के 'आपका पत्र' शीर्षक स्तम्भ में बिहार, पंजाब व के तीन मान्य लेखकों के पत्र प्रकाशित किये गए हैं न्होंने अपने प्रकाशकों के विरुद्ध लिखित आरोप है: एक प्रकाशक ने एक लेखक की एक पुस्तक प्रका-की, लेकिन न तो कभी रायल्टी का हिसाब ही दिया, न ना ही। एक दूसरे प्रकाशक ने वायदा करके अनुबन्ध-की शर्त के अनुसार लेखक को अग्रिम पारिश्रमिक देने से कर दिया। तीसरे प्रकाशक ने लेखक से पाण्डुलिपि उस सम्बन्ध में अपना निर्णय लेखक के बारम्बार लिखने पर पाँच महीने की अवधि में भी न दिया, न पाण्डु-ही लौटाई। लेखकों के प्रति हम प्रकाशकों के एक जो अन्यायपूर्ण और कुछ उपेक्षापूर्ण व्यवहार बरता है, उसके ये तीन प्रतिनिधि उदाहरण हैं।

प्रकाशकों के प्रति लेखकों में सामान्य रूप से जो क्षोभ ता है, उसका एक कारण प्रकाशकों की इस तरह की वहारिक नीति भी है। यह ठीक है कि दस-बीस बरस की और आज की स्थिति में इस ओर सुधार हुआ है; सभी प्रकाशकों ने तर्कपूर्ण और न्यायसंगत व्यवहार लिया है, यह कहना उतना ही गलत होगा जितना कहना कि सभी लेखक भी प्रकाशकों के प्रति अपने दायित्व को ठीक से समझने लगे हैं। आवश्यक जहाँ दोष देखा जाय उसकी ओर अँगुली उठाई और उसकी भर्त्सना की जाय। यह बात प्रकाशकों के अपने हित में है कि किसी भी प्रकाशक की ओर भी लेखक के प्रति होने वाली किसी भी ज्यादती को न सहा जाय, इस प्रकार के दुर्व्यवहार की निन्दा की जाय और प्रकाशक-वर्ग की अपनी हित-साधना के लिए ही सही, लेखकों के अधिकारों व माँगों के सही होने पर उन्हें पूर्ण सन्तोष दिलाने का प्रयत्न किया जाय। हम समझते हैं कि प्रस्तावित प्रकाशक-संघ का एक कार्य लेखकों के इस प्रकार के आरोपों की जाँच करना भी होगा ताकि प्रकाशक-वर्ग पर सामूहिक रूप से किसी प्रकार का लाञ्छन न लगाया जा सके।

इस प्रसंग में उन लेखकों की ओर भी संकेत करना अनुचित न होगा जो प्रकाशक-वर्ग के विरुद्ध अपनी गलत-सही शिकायतों के सामान्यीकरण करने में अभ्यस्त हैं। हाल ही में एक प्रश्न को लेकर दिल्ली की एक प्रतिष्ठित प्रकाशन-संस्था राजपाल एण्ड सन्स से हिन्दी के एक लब्ध-प्रतिष्ठ कवि का मतभेद हो गया। कविवर ने अपने एक पत्र में इस संस्था के व्यवस्थापक को लिखा कि क्या दिल्ली ही भारत के सब चोर प्रकाशकों का अड्डा बन गया है? इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग न केवल सभी अधीत लेखकों द्वारा हेय समझा जायगा वरन् लेखक-विशेष की मनोवृत्ति का भी परिचायक है। मतभेद होने पर सभ्य व्यवहार के नाते एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करना चाहिए, न कि यह कि शालीनता को ही तिलाञ्जलि दे दी जाय। प्रकाशक और लेखक दोनों को ही इस ओर अधिक सतर्कता बरतनी उचित है। शायद प्रकाशकों को अधिक सचेतता की आवश्यकता है, क्योंकि जो संवेदनपूर्ण, कोमल सम्बन्ध लेखक का अपनी कृति के साथ होता है वैसा प्रकाशक का अपने प्रकाशन के साथ नहीं हो सकता।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

के

तृतीय वर्ष का प्रथमांक : पूर्णाङ्क ९

आलोचना – विशेषांक

★विषय सूची★

मूल्यगत संक्रमण और समीक्षा का मानदण्ड : सम्पादकीय। आलोचना और अनुसन्धान : परशुराम चतुर्वेदी। सौन्दर्य-तत्व और आलोचना के मानदण्डों का विकास : डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा। आलोचना में सहिष्णुता की मर्यादा : बौद्ध-संकेत : शान्ति भिक्षु। प्राचीन यूनानी साहित्य-शास्त्र : डॉ० एस० पी० खत्री। प्राचीन साहित्य-शास्त्र की उपयोगिता : डॉ० देवराज। भरत प्रणीत रस-सिद्धान्त : एक स्पष्टीकरण : दि० के० बेडेकर। रस की व्याख्याओं के दार्शनिक आधार : आनन्द प्रकाश दीक्षित। वामन के काव्य-सिद्धान्त : डॉ० नगेन्द्र। रस-तत्व और मार्क्सीय कसौटी : डॉ० रांगेय राघव। हिन्दी में रस-मीमांसा : विश्वनाथप्रसाद मिश्र। हिन्दी रीति-शास्त्र : डॉ० भगीरथ मिश्र। गौड़ीय वैष्णव रस-सिद्धान्त : डॉ० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी। आधुनिक आलोचना का उदय और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : शिवनाथ। शुक्लोत्तर समीक्षा : डॉ० जगदीश गुप्त। श्री गुलाबराय की समीक्षा-पद्धति : एक मूल्यांकन : विजयेन्द्र स्नातक। वाजपेयी जी की समीक्षा-पद्धति : डॉ० स्वरूप मिश्र। आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी की की मानवतावादी भूमि : शम्भूनाथसिंह। वर्तमान आलोचना : उपलब्धि और अभाव : नलिन शर्मा। समालोचना और नैतिक मान : स० ही० व पाश्चात्य समीक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियाँ : डॉ० मिश्र। हीगेल का कला-सिद्धान्त : डॉ० रवीन्द्रसह मार्क्सवादी समीक्षा और उसकी कम्युनिस्ट विजयदेवनारायण साही। इतिहास की मार्क्सीय और साहित्य-दर्शन : हर्षनारायण। प्रतीकवा स्थापना : राजनारायण बिसारिया। अतियथा रामस्वरूप चतुर्वेदी। बेलिन्स्की की मान्यताओं का सुरेशचन्द्र सेन गुप्त। आई० ए० रिचर्ड्स के सिद्धान्त : डॉ० रामअवध द्विवेदी। टी० एस० इ काव्य-सिद्धान्त : केशव आनन्द। श्री अरविन्द का दर्शन : डॉ० इन्द्रसेन।

भारतीय तथा इतर-भारतीय साहित्य-सिद्धान्तों और सौन्दर्य-दृष्टियों के राष्ट्रीय तथा विश्वजनीन, युग-सापेक्ष तथा चिरन्तन तत्त्वों का अनुपम विवेचन।

इस विशेषांक का मूल्य ५)। वार्षिक मूल्य भेजकर स्थायी ग्राहक बनने वालों से ३)

वार्षिक मूल्य १२)। सब अंक रजिस्टरी से पाने के लिए १३॥)

रा ज क म ल प्र का श न

१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों के पैकेटों के लिए

डाक की दरें कम कीजिए

श्री व्रजरंगलाल चांदगोठिया

पुस्तकों के लिए डाक की दरों की जिस वृद्धि ने पुस्तक-व्यापार और ज्ञान-प्रसार को गहरा धक्का पहुँचाया है, उसके विरुद्ध इस लेख में ज़ोरदार आवाज़ उठाई गई है।

पुस्तकों के पैकेटों पर 'पोस्टल गाईड' के ५५वें पैराग्राफ़ के अनुसार डाक की टिकटें लगाई जाती हैं। इसके साथ ही यदि पैकेट की रजिस्टरी करवानी हो तो रजिस्टरी की फीस अलग से देनी पड़ती है।

इसके साथ ही यदि नमूनों के पैकेट भेजने हों, जिनके विषय में 'पोस्टल गाईड' के ६४वें पैराग्राफ़ में उल्लेख है, तो उन पर भी डाक की उपरोक्त दरों के अनुसार टिकटें लगाई जाती हैं, हालाँकि पुस्तकों के पैकेट और अन्य चीज़ों के नमूनों के पैकेट बिलकुल विभिन्न चीज़ें हैं और इन दोनों से सम्बन्धित शेष नियम भी अलग-अलग हैं।

डाक द्वारा किताबें भेजने की प्रथा इधर कई कारणों से बढ़ गई है और यदि इसकी राह में बाधाएँ न उपस्थित की जातीं तो यह प्रथा और भी उन्नति कर जाती। इन कारणों में मुख्य ये हैं—(१) देश का बड़ा डील-डौल, (२) देश के सब स्थानों पर सब प्रकार की पुस्तकें रखने वाले दुकानदारों का अभाव, (३) देश में पुस्तकों के लिए बढ़ता हुआ शौक और प्रेम, इत्यादि। पोस्ट और टेलीग्राफ़-विभाग द्वारा पहली मई १९५३ से डाक की दरें बढ़ा दिए जाने के कारण इसे भारी धक्का पहुँचा है। ३० अप्रैल '५३ तक की दरों से आज की दरें दुगुनी हैं। ऊपर के कोष्ठक में डाक की दरों में इस वृद्धि का खाका खींचा गया है।

इस कोष्ठक से स्पष्ट है कि डाक की दरें पहले की तुलना में ठीक दूनी कर दी गई हैं, केवल ३ पाई की कमी रखी गई है।

इस बात का विस्तार से इसलिए उल्लेख किया गया है

वज़न	३०-४-५३ तक डाक की दरें	१-५-५३ से डाक की दरें
५ तोले = (१ छटाँक)	०-०-६	०-१-०
१० ,, (२ छटाँक)	०-१-३	०-२-०
२० ,, (¼ सेर)	०-२-३	०-४-०
४० ,, (½ सेर)	०-४-३	०-८-०
८० ,, (१ सेर)	०-८-३	१-०-०
१२० ,, (१½ सेर)	०-१२-३	१-८-०
१६० ,, (२ सेर)	१-०-३	२-०-०
४०० ,, (५ सेर)	२-८-३	५-०-०
८०० ,, (१० सेर)	५-०-३	१०-०-०

कि पोस्ट एण्ड टेलिग्राफ़-विभाग के अधिकारियों में जो यह भ्रम फैला हुआ है और जिसकी झलक लोक-सभा में डिप्टी मिनिस्टर द्वारा १४-९-५३ को दिये गए उत्तर से स्पष्ट है, कि डाक की दरों में वृद्धि ६ पाई से केवल १ आना ही की गई है, वह दूर हो। डाक की दरों में (शेष ३ पाई को छोड़कर) १०० फ़ी-सदी वृद्धि हुई है, केवल एक-तिहाई प्रतिशत नहीं।

पुस्तकों के पैकेट में उपरोक्त वृद्धि के अतिरिक्त रजिस्टरी का खर्च भी १ अप्रैल १९५३ से ०-४-६ की जगह ०-६-० पैकेट के हिसाब से बढ़ा दिया गया है। पुस्तकों के पैकेट पर डाक की दरों में सौ फ़ी सदी वृद्धि और रजिस्टरी के खर्च में एक-तिहाई वृद्धि ने पुस्तकों के डाक द्वारा भेजे जाने में महान् बाधा प्रस्तुत कर दी है। जिस अनुपात में डाक द्वारा पुस्तकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भेजा जाना कम हुआ है, उसका नुकसान कम संख्या में भेजी गई पुस्तकों पर अधिक महसूल लेकर भी पूरा नहीं हो सकता। दरें इतनी बढ़ा दी गई हैं कि डाक द्वारा पुस्तकें भेजने में विराम-सा लग रहा है।

उदाहरण के लिए हम केवल गीता प्रेस द्वारा भेजी गई पुस्तकों का व्यौरा ही लें। नीचे की तालिका से बढ़ी हुई दरों का डाक-विभाग की आय पर जो प्रभाव पड़ा है, वह स्पष्ट होगा।

१९५२		१९५३	
मास	खर्च	मास	खर्च
मई	२६७०- ५-०	मई	१९५३-१५-३
जून	२५३४-१५-९	जून	२१३४-१५-९
जुलाई	३१६४- ४-६	जुलाई	२३२४- ७-६
अगस्त	२७६२-१०-०	अगस्त	२०८४-१४-९
सितम्बर	३८४५-१३-०	सितम्बर	२७८६-१२-३
अक्तूबर	३००९-१४-९	अक्तूबर	२९५२- १-६
नवम्बर	२७४९- ६-६	नवम्बर	१७७२-१४-३
५२ के ७ मास का		५३ के ७ मास का	
योग	२०,४३७-५-६	योग	१६,०१०-१-३

आधुनिक कवि पंत

लेखक

कृष्णकुमार सिन्हा एम० ए०

प्रस्तुत पुस्तक में पन्त पर तेईस आलोचनात्मक निबन्ध है जो पन्त-साहित्य के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त ही उपयोगी हैं। इसके अतिरिक्त इसमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रकाशित **आधुनिक कवि, भाग २** की कविताओं की विस्तृत व्याख्या की गई है।

मूल्य { सिर्फ आलोचना खण्ड—४)
आलोचना और टीका—४॥)

प्रकाशक

नोवेल्टी एण्ड कम्पनी

चौहट्टा : : पटना—४.

★

इस तालिका से प्रत्यक्ष है कि डाक-विभा[ग को] १९५२ की अपेक्षा १९५३ के ७ महीनों में ४,४... नुकसान सहना पड़ा, जो २२% बैठता है। वर्ष के ... का हिसाब लगाया जाय तो केवल गीता प्रेस की अकेली ... से ही यह ७,५००) का बैठता है।

इस तालिका को जाँचते वक्त यह ध्यान में रखना ... है कि गीता प्रेस ने इस वर्ष (अन्य प्रकाशकों की भाँति) ... प्रेस की मशीनरी आदि बढ़ाई है, कागज उन्हें पहले की ... अधिक सुगमता से मिल रहा है, पुस्तकों का प्रकाशन ...न्यतः बढ़ रहा है; वास्तव में पुस्तकों का उत्पादन पिछ... की अपेक्षा अब कई गुना अधिक हो गया है। ग्राह... संख्या बढ़ी है और उनके लिए यथोचित पुस्तकें भी छा... हैं। वैधानिक परिवर्तन और दूसरे कारणों के फ... अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी की पुस्तकों की माँग कहीं अधि... गई है। कई राज्यों ने अपने क्षेत्रों में पुस्तकालयों और ... शिक्षण संस्थाओं को आदेश दिया है कि जन चरित्र के ... के लिए (अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की भाँति) गीता प्रे... पुस्तकें अधिक संख्या में खरीदें। यदि पुस्तकों के इस ... में बाधा न डाली जाती और यदि डाक की दरों में इस ... अप्रत्याशित वृद्धि न की जाती तो डाक-विभाग की आय ...भग २५% तो निश्चित रूप से बढ़ती। इससे ... कि इस २५% अधिक आय के स्थान पर डाक ... को २२% हानि हुई है; इस प्रकार कुल हानि ... प्रतिशत की है। इस परिस्थिति पर डाक-विभाग के ...कारी क्या सन्तोष अनुभव कर सकते हैं?

इतनी हानि तो अकेले गोरखपुर स्थित गीता प्रेस ... हुई। भारत के सब पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों ... वाली हानि का यदि हिसाब लगाया जाय तो बहुत बड़ी ... नजर आयगी। इस प्रकार डाक-विभाग के इस कदम को ... घाती चाल ही कहा जा सकता है जो कि शासन के अपने ... में भी नहीं है।

ऊपर की तालिका को एक बार फिर ध्यान से देखें ... पता चलेगा कि यद्यपि डाक की दरें दुगुनी हो गई हैं, ... की टिकटें केवल १६,००० रु० की ही खर्च की गई। ... पुस्तकों के पहले जितने ही पैकेट पुरानी दरों के अनुसार ... जाते तो कुल ९०००) का डाक खर्च होता, और जहाँ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...पैकेटों की संख्या का सम्बन्ध है, कमी २०,०००) के ...खर्च से ६०००) के डाक-खर्च तक हुई है; अर्थात् भेजे ...पार्सलों की संख्या ५५ प्रतिशत गिर गई। घटे हुए ...इसी से अनुमान लगाया जा सकता है, जबकि, जैसा ...कहा गया है, व्यापार में २५ प्रतिशत वृद्धि होनी चाहिए ...इस प्रकार व्यापार को ८० प्रतिशत हानि पहुँची है। ...यह अनुपात भयावह स्थिति का सूचक है और इसी ...भारत के समाचार-पत्रों ने इस प्रश्न पर क्षोभ प्रदर्शित ...है। बिक्री में यह कमी उत्पादन पर कुछ ही समय में ...डालेगी और परिणामस्वरूप उत्पादन के वर्तमान स्तर ...करना ही पड़ेगा जिससे बेकारी बढ़ेगी। डाक-विभाग ...कदम इस प्रकार एक तो प्रकाशन-उद्योग के विकास ...बन रहा है और दूसरी ओर बेकारी बढ़ा रहा है। ...निश्चय ही राष्ट्र के हित में नहीं है।

...डाक की दरों में यह वृद्धि विद्या और ज्ञान के प्रचार की ...काँटा भी बन रही है। भारत की ग्राम जनता ग्रामों ...रहती है जो देश के कोने-कोने में बिखरे हुए हैं। जनता ...शक्ति पहले ही बहुत कम है, और करोड़ों लोगों के ...पुस्तकें पहुँचाने का एकमात्र माध्यम देश का डाक-...ही है। डाक की दरों में वृद्धि ने उनके इस माध्यम को ...बन्द कर दिया है। यह वृद्धि इस प्रकार विद्या और ज्ञान ...प्रचार-प्रसार पर कर के समान है और इसने बहुत हद ...विद्या के फैलाव को रोका है। इस कारण भी डाक-विभाग ...के हक में कुछ नहीं कहा जा सकता; यह निश्चय ही ...हितों के लिए घातक है। उदाहरण के लिए गीता-...की निम्न प्रकाशनों के मूल्य और उनके डाक-खर्च का ...देखिए :

नाम	मूल्य	डाक व्यय
...गीता : बड़े टाइप वाली	१- ४-०	१- ४-०
...गीता : बीच का साइज़	१- ०-०	१- ०-०
...गीता : बीच के टाइप वाली	०-१४-०	०-१३-०
...गीता : छोटा साइज़ ६ प्रतियों का सेट	०-१५-०	१- ३-०
... : छोटा साइज़	०-१२-०	०-१२-०
...शंका समाधान	०- ८-०	०-१०-०
...शती	०-१२-०	०-१२-०

कहना न होगा कि डाक-व्यय यहाँ पुस्तकों के मूल्य के ही बराबर है और इनकी बिक्री में बाधा बन जाता है। लाखों लोग पुस्तकों को खरीदने से वंचित रह जाते हैं।

डाक-व्यय की वृद्धि की इन बुराइयों की वजह से ही देश भर में इस का तीक्ष्ण विरोध हुआ है। कई स्थानों पर डाक-व्यय का विरोध करने के लिए सभाएँ संगठित की गईं। हड़तालें हुईं, समाचार-पत्रों ने विरोध में टिप्पणियाँ लिखीं। इस राष्ट्र-हित-विरोधी कार्यवाही के विरुद्ध आवाज़ उठाने और आन्दोलन करने के लिए सम्मेलन बुलाये गए। डाक-विभाग के डायरेक्टर जनरल ने अपने पत्रांक आर १-८-५३ दिनांक ३-११-५३ में माना है कि सरकार के पास जनता, पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों की ओर से इस प्रश्न पर कई-एक विरोध-पत्र पहुँचे हैं। कई सम्मान-प्राप्त प्रतिनिधियों ने इसी सम्बन्ध में भारत सरकार के डाक-मन्त्री से भेंट की है। प्रश्नों द्वारा इस ओर लोक-सभा में कई-बार सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया है। लोक सभा के कई एक प्रमुख सदस्यों ने और पार्टी के नेताओं ने मन्त्रियों से व्यक्तिगत रूप में इस सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया है। इन सब बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि डाक की दरों में वृद्धि जनता में बहुत ही अलोकप्रिय सिद्ध हुई है, और जनता का शायद कोई भी ऐसा भाग नहीं है जिसने इस कदम की भर्त्सना न की हो। स्पष्ट है कि लोक-मत का मान रखने का और जन-इच्छा के आगे झुकने का सरकार के सामने इस समय अवसर और कर्त्तव्य प्रस्तुत है।

ऊपर जो-कुछ लिखा गया है वह उन पैकेटों से सम्बन्ध रखता है जिनमें किताबें भेजी जाती हैं। १४-६-५३ को लोक-सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए डाक-विभाग के डिप्टी-मिनिस्टर ने कहा कि बुक-पैकेट और सैम्पल-पैकेटों की दरों की गणना में, जिन पैकेटों पर डाक-खर्च वसूल किया गया उनमें से ६५ प्रतिशत सैम्पल-पैकेट थे और केवल ५ प्रतिशत ही बुक-पैकेट थे। उनके उत्तर से स्पष्ट था कि वे पैकेट जिन्हें स्पष्ट ही गाईड के ६४वें पैराग्राफ़ के अनुसार नमूने के अथवा सैम्पल-पैकेट कहना चाहिए, बुक पैकेट कहे जा रहे हैं। किताबों के पैकेट नमूने की चीज़ों के पैकेटों से भिन्न होते हैं, लेकिन इन दोनों के भेद को भलीभाँति न समझने से ही आज देश की हानि हो रही है। इस लेख का उद्देश्य उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहे की दीवार के दोनों ओर

सोवियत रूस के सम्बन्ध में अनेक विचित्र रोमांचकारी, भयानक और दूसरी विस्मय-जनक आकर्षक और प्रशंसात्मक बातें प्रसिद्ध हैं। पर उस दूर देश को देख और समझ आने का अवसर कितने लोगों को है ?

हिन्दी के प्रसिद्ध यथार्थवादी उपन्यासकार और प्रमुख कहानी लेखक यशपाल उस देश को पिछले वर्ष अपनी आँखों देख आए हैं और उन्होंने सोवियत समाज और यूरोप के अन्य पूँजीवादी देशों का तुलनात्मक वर्णन लिखा है। प्रामाणिक ज्ञान के अतिरिक्त पुस्तक को एक बार उठाकर समाप्त किये बिना रख देना कठिन है।

कोई भी आधुनिक उपन्यास इसकी
तुलना नहीं कर सकता।

अनेक चित्रों से सज्जित बड़े आकार की पुस्तक
का मूल्य ७)

श्री यशपाल का नवीनतम कहानी-संग्रह
(प्रेस में)

तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ

मूल्य २)

प्रकाशन-सूची के लिए लिखें

विप्लव कार्यालय

शिवाजी मार्ग, लखनऊ।

पैकेटों की डाक दरें कम करने की माँग करना है जिनमें भेजी जा रही हों। डाक की दरें मई १९५३ के पू... दरों के स्तर पर ले आनी चाहिएँ। क्योंकि किताबों के ... का कुल पैकेटों से अनुपात (डिप्टी मिनिस्टर के कथन... केवल ५ प्रतिशत का ही है, डाक-विभाग के लिए उन... माँग को स्वीकार करना बहुत ही सुगम हो जाता है। ... कि कुल आय का बहुत-थोड़ा अंश ही बुक पैकेटों से होता है। विशेषतः इसलिए भी कि डाक को दरों को म... से पहले की दरों के समान कम कर देने से सरकारी ... में अधिक आय ही जमा होगी।

इस सब से स्पष्ट है कि—

(१) बुक-पैकेटों की डाक की दरों में वृद्धि ने डाक-... की आय को हानि पहुँचाई है और पुस्तकों का डाक द्वारा ... जाना कम हो गया है। अधिक पुस्तकों के डाक द्वारा भेजे ... से जो लाभ होता, वह अब नहीं रहा।

(२) प्रकाशन के धन्धे को इस कदम से बहुत चोट ... है और परिणामस्वरूप बेकारी बढ़ रही है।

(३) यह वृद्धि शिक्षा और विद्या के प्रचार पर ... समान है और इनके मार्ग में बाधा बन रही है।

(४) इस वृद्धि से सब ओर अशान्ति फैली है और ... भर में इसका विरोध हुआ है। डाक-विभाग में, इस ... के मन्त्री के पास और लोकसभा में इसके विरुद्ध प्रति... हुए हैं।

(५) डाक-विभाग को बुक-पैकेटों और सैम्पल पैकेटों ... मिलाकर जो आय होती है, उसका बहुत थोड़ा अंश (... शत) ही पुस्तकों के पैकेटों से होता है और यदि पुस्तकों ... लिए डाक-व्यय को मई ५३ से पहले की दरों तक घटा ... जाय, तो कुछ आय बढ़ने की ही सम्भावना है।

भारत की सरकार से हमारा निवेदन है कि वह इन ... स्थितियों में उन पैकेटों के लिए, जिनमें पुस्तकें भेजी जाती ... डाक-व्यय की दरें तुरन्त ही घटाकर वही कर दे जो ... १९५३ से पहले प्रचलित थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

शरद्, २ मिन्टो रोड, इलाहाबाद, ने १ जन- १९५४ से **प्रकाशन-समाचार** के प्रतिनिधित्व का उत्तर- सम्भाल लिया है। **प्रकाशन-समाचार** की ओर से वे तथा उत्तरप्रदेश के अन्य प्रकाशकों से सम्पर्क रखेंगे प्रकाशन-समाचार के लिए विज्ञापन भी स्वीकार कर । प्रकाशकों से प्रार्थना है कि श्री शरद् जी को हर सहयोग देकर इस पत्र के प्रकाशकीय विभाग को करें।

◈ ◈ ◈

विद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, सूचित करते हैं कि लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा सम्पादित **भारत-दुर्दशा** का घटाकर १॥) से १), श्री सद्गुरुशरण अवस्थी द्वारा मुद्रिका का मूल्य १॥) से १) और श्री रामचन्द्र द्वारा लिखित **रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेना-** का मूल्य २) से १॥) कर दिया गया है।

◈ ◈ ◈

पुस्तक भवन, (३०।३१ कलाकार स्ट्रीट, कल-) को उन पुस्तकों की सूची चाहिए जिन पर केन्द्रीय प्रान्तीय सरकारों द्वारा पुरस्कार दिया गया है। प्रकाशक पुरस्कृत पुस्तकों की सूचियाँ भेजें, क्योंकि उनके पास इन की माँग रहती है।

◈ ◈ ◈

प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली, लिखते हैं : "हिन्दी शील विचारों के उपन्यास-लेखक अपनी कृतियों प्रकाशन के सम्बन्ध में हमसे पत्र-व्यवहार करें। छापने पाण्डुलिपि को देखकर ही हो सकेगा। उपन्यास- के आलोचक भी अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में, नई लिख रहे हों उस सम्बन्ध में, हमें लिखें। पत्र-व्यवहार साहित्य प्रकाशन के व्यवस्थापक श्री यज्ञदत्त शर्मा से किया जाय।"

◈ ◈ ◈

भारती भण्डार, प्रयाग, के अध्यक्ष श्री वाचस्पति पाठकजी ने १३ दिसम्बर १९५३ को कानपुर में (५९।४६ कला-भवन, बिरहाना रोड) **सीता प्रकाशन** नाम की एक नई पुस्तक-विक्रेता व प्रकाशन-संस्था का उद्घाटन किया। श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल' इस संस्था के संचालक हैं। उद्घाटन के अवसर पर सर्वश्री इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, गंगाप्रसाद पाण्डेय, अमृतलाल नागर, भगवती प्रसाद बाजपेयी, डॉ० धर्मवीर भारती आदि हिन्दी के गण्य-मान्य लेखक उपस्थित थे। यहाँ हिन्दी के प्रमुख प्रकाशकों की पुस्तकें रखने की व्यवस्था की जा रही है। प्रकाशक अपने सूचीपत्र भेजें।

◈ ◈ ◈

सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, ने हिन्दी में उच्चकोटि की कहानियों के **कहानी** नाम के मासिक-पत्र का प्रकाशन जनवरी

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण को यह सूचित किया जाता है कि वंशीलाल मलहोत्रा, जो कि किताब महल, प्रकाशक, इलाहाबाद, की पुस्तकों के प्रचारार्थ कार्य करता था, बिना किसी सूचना के कहीं गायब हो गया है। अतएव किसी भी व्यक्ति को उसके साथ हमारी फ़र्म से सम्बन्धित व्यापारिक कार्य नहीं करना चाहिए। यदि कोई करेगा तो इसके लिए हम ज़िम्मेदार नहीं होंगे। साथ ही, उसने हमारी फ़र्म के साथ जालसाज़ी की है, अतः जो भी व्यक्ति हमें उसका पता देगा, उचित रूप से पुरस्कृत किया जायेगा।

—किताब महल
५६ ए, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५४ से आरम्भ किया है। वार्षिक मूल्य ३) तथा एक प्रति का ।) मात्र होगा। इस पत्र में निरन्तर प्रगति करते हुए हिन्दी कथा-साहित्य के साथ-ही-साथ भारत की अन्य भाषाओं की चुनी श्रेष्ठतम कहानियों के अनुवाद भी रहेंगे।

⟡ ⟡ ⟡

आगामी वसन्त पंचमी पर **साहित्य** नाम की नई त्रैमासिक पत्रिका का प्रथम अंक **निराला-अंक** के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका के लिए नये एजेंटों की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लेखादि विशेष रूप से स्थान पा सकेंगे। प्रकाशक "धूप-छाँव", देहरादून, हैं और सम्पादक श्री रोशनलाल अलग तथा सत्येन्द्र शर्मा।

⟡ ⟡ ⟡

डॉ० जगदीश गुप्त व श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में **नयी कविता** नाम के अर्द्धवार्षिक पत्र की योजना अब पूरी होने को है। नयी कविता की आधुनिकतम प्रवृत्तियों को प्रकाशित करने वाली यह पहली पत्रिका होगी। डिमाई साइज के एन्टीक कागज पर यह पत्रिका ६४ पृष्ठों में छपा करेगी; मूल्य १॥); व्यवस्थापन व वितरण **राजकमल प्रकाशन** द्वारा होगा। प्रथम अंक में श्री सुमित्रानन्दन पन्त, डॉ० देवराज तथा डॉ० रघुवंश के ... त्मक निबन्धों के अतिरिक्त सर्व श्री माखनलाल ... अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, रघुवीर ... भवानी प्रसाद मिश्र, शम्भूनाथसिंह, नीरज, शान्ति ... ए०, गिरिधर गोपाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अजित ... राजनारायण बिसारिया, सुरतदार श्रीवास्तव, विजयदेव ... यण साही, श्याम मोहन, राजेन्द्र माथुर, रामबहादुर ... शमशेर बहादुर सिंह, सत्येन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हरिमोहन, ... विलास, केदारनाथसिंह, प्रमोद गुप्त, कुंवर नारायण, ... वती 'कोकिल', लक्ष्मीकान्त वर्मा तथा मार्कण्डेय आदि की कविताएँ रहेंगी। नयी अन्तर्प्रान्तीय कविताओं के अन्तर्गत बुद्धदेव वसु तथा मर्ढेकर की कविताओं को श्री नेमिचन्द्र ... एवं प्रभाकर माचवे प्रस्तुत करेंगे। नयी विदेशी कविताओं के अन्तर्गत पाब्लो नैरूदा तथा ई० ई० कमिंग्ज़ की कविताएँ प्रकाशित की जायँगी।

इसके अतिरिक्त नयी कविता से सम्बद्ध अन्य मौलिक विवेचनात्मक सामग्री भी रहेगी। प्रत्येक नगर में नयी कविता का प्रचार व बिक्री करने वाले एजेन्टों की आवश्यकता है।

एक महान्
क्रान्तिकारी उपन्यास

बलिदान

एक महान्
क्रान्तिकारी उपन्यास

लेखक—**विक्टर ह्यूगो** (VICTOR HUGO) अनुवादक—**श्री जयकृष्ण शुक्ल**

यह उपन्यास फ्रान्स के प्रसिद्ध उपन्यासकार "विक्टर ह्यूगो" के प्रसिद्ध उपन्यास "नाइन्टी थ्री" (Ninety Three) का हिन्दी अनुवाद है, जिसकी लाखों प्रतियाँ संसार की अनेक भाषाओं में छपकर अब तक बिक चुकी हैं। प्रसिद्ध विद्वान् ने यह उपन्यास फ्रान्स की सन् १७९३ की प्रसिद्ध राज्य-क्रान्ति पर लिखा है। अन्यायी और अत्याचारी शासन से घबराकर राज-सत्ता को उलटने के लिए फ्रांस के दीवाने देशभक्त वीर क्रान्तिकारियों ने उस क्रान्ति में जो अपने बलिदान किये हैं, उनका अत्यन्त रोमांचकारी वर्णन आपको इस उपन्यास में पढ़ने को मिलेगा। मोटा कागज, सुन्दर, सजिल्द, ३०४ पृष्ठ का मूल्य ४) रु०।

प्रथम भारतीय क्रान्ति के शहीद

सन् सत्तावन की महान् क्रान्ति में बलिदान होने वाले भारतीय वीरों के जीवन-चरित्र
मोटा कागज, सुन्दर छपाई तथा पृष्ठ संख्या प्रत्येक की एक सौ

नाना साहब पेशवा १), तात्या टोपे १) केशरी कुँवरसिंह १), लक्ष्मीबाई १)

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, ४१९ अहियापुर, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक-परिचय

...से यह नया स्तम्भ शुरू हो रहा है। परिचय के ...प्रकाशन समाचार को नये प्रकाशनों की एक-एक ...देना पर्याप्त है।

...जीवन के **अनुभव और संस्मरण**—...के विख्यात् भाषाविद् एवं वैयाकरण श्री किशोरीदास ...के साहित्यिक जीवन में प्रवेश करने से लेकर आज तक ...अनुभवों और संस्मरणों की रोचक कहानी प्रस्तुत करती ...प्रथम उन्मेष (१९१९ से १९३०), द्वितीय उन्मेष (...से १९४०), तृतीय उन्मेष (१९४१ से १९५०) तथा ...उन्मेष (१९५१ से आज तक) शीर्षक चार विभागों में ...है। यह इतनी रोचक शैली और चुस्त भाषा में लिखी ...कि पाठक इसे एक ही बैठक में समाप्त किये बिना नहीं ...। संक्षेप में हम इसे हिन्दी जगत् के विगत ४० वर्षों ...हलचलों का सजीव विवरण कह कहते हैं। इसमें ...हिन्दी के वर्तमान तथा दिवंगत अनेक साहित्यकारों ...कलापों की जानकारी मिलती है, वहाँ हिन्दी की ...संस्थाओं तथा प्रमुख संस्थाओं की गति-विधि का भी ...परिचय प्राप्त हो जाता है। पृष्ठ १४४ की एण्टिक ...मोनो टाइप में मुद्रित यह पुस्तक **हिमालय एजेन्सी**, ...(सहारनपुर), से केवल दो रुपये में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈

...की पगडण्डियाँ—इस पुस्तकमें प्रसिद्ध जैन-मुनि श्री ...ने अपनी पैदल-यात्रा के समय देश के जिन ...स्थानों, मन्दिरों, देव-मूर्तियों और कला-शिल्पों का ...में अध्ययन किया है, उन सबका रोचक वर्णन प्रस्तुत ...। जैन-मुनि होने के कारण उन्हें विशेषतः जैन-तीर्थों ...यात्रा का विशेष अवसर मिला है, अतः इसमें उन्होंने ...पुरातत्त्व के जैन-पहलू को अपनी लेखनी का प्रमुख ...बनाया है। इतिहास और पुरातत्त्व-जैसे गम्भीर विषय ...और ललित भाषा में व्यंग और विनोद के आवरण ...रखना चतुर कला-शिल्पी का ही काम है। पुस्तक ...री, १९५४ 'ललित कला', 'लिपि' तथा 'भौगोलिक यात्रा' शीर्षक तीन भागों में विभक्त है। 'ललित कला' शीर्षक भाग के अन्तर्गत जैनाश्रित चित्रकला, बौद्ध-धर्माश्रित चित्रकला, महाकोशल के जैन भित्ति चित्र, भारतीय शिल्प एवं चित्रकला में काष्ठ का उपयोग, राजस्थान में संगीत आदि के विषय में खोजपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की गई है। दूसरे 'लिपि' शीर्षक भाग में महाराज हस्ती का नवोपलब्ध ताम्र-शासन, कल-चुरि पृथ्वीराज द्वितीय का ताम्र-शासन तथा गुप्त लिपि पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्त में नालन्दा, विन्ध्याचल, मैहर और पटना की यात्राओं का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। २९२ पृष्ठ। सजिल्द। मूल्य चार रुपये। प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, बनारस।

◈ ◈ ◈

संघर्ष के बाद—हिन्दी के तरुण कहानी-लेखक श्री विष्णु प्रभाकर की २१ कहानियों का संग्रह है। पुस्तक के प्रारम्भ में लेखक ने 'मेरी कैफ़ियत' शीर्षक से अपनी कहानी-कला पर विचार करते हुए यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि वे कहानी के क्षेत्र में कैसे आये और उन्होंने कहानी लिखना कब प्रारम्भ किया और उनके मार्ग में क्या-क्या रुकावटें आईं। संग्रह की प्रायः सभी कहानियाँ रोचक शैली और उपादेय पृष्ठभूमि के कारण पठनीय हैं। पृष्ठ २६४ की यह सुमुद्रित और सजिल्द पुस्तक **भारतीय ज्ञानपीठ**, बनारस, से ३) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

समाज-दर्शन—लखनऊ विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के प्रोफेसर श्री कैलाशनाथ जैतली की समाज-विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक है। इसमें लेखक ने समाज, सामाजिक संस्थाएँ, परिवार, राज्य, धर्म, दण्डनीति, सद्गुण, प्रजातन्त्र और सामाजिक प्रगति आदि नौ अध्यायों में समाज-विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। अन्त में परिशिष्ट १ और २ में सभ्यता तथा संस्कृति और अहिंसा पर भी जानकारी प्रस्तुत की है। पुस्तक की शैली मनोरम और विषय-प्रतिपादन नवीनता लिये हुए हैं। 'अनुक्रमणिका' शीर्षक से पुस्तक के आखिर में पुस्तक में आये हुए राजनीतिज्ञों, दार्शनिकों, समाज-शास्त्रियों तथा अन्य दैनन्दिन व्यवहार में आने वाले शब्दों की विस्तृत तालिका भी दे दी गई है जिससे पुस्तक की उपादेयता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट० (पेरिस) की लिखी कुछ नई पुस्तें

भारत का प्राचीन इतिहास

(प्रारम्भ से १२०० ईस्वी तक) पृष्ठ संख्या ६७६ १०)

भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास

पृष्ठ संख्या ७)

एशिया का आधुनिक इतिहास

(पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी एशिया) पृष्ठ संख्या ६०८ ६॥)

यूरोप का आधुनिक इतिहास

भाग एक (१७८९-१९१४) पृष्ठ संख्या ७५२ १०।)

यूरोप का आधुनिक इतिहास

भाग दो (१९१४-१९४९) पृष्ठ संख्या ६४८ ६)

राजनीति शास्त्र

(राज्य और राज्यशासन) पृष्ठ संख्या ६०८ ६॥)

ये सब अपने विषय की अत्यन्त प्रामाणिक पुस्तकें हैं। समाचारपत्रों और विद्वान् आलोचकों ने इनकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। पहली दो पुस्तकें गत चार मास के अन्दर प्रकाशित हुई हैं। अन्य चारों पुस्तकों के महत्त्व को दृष्टि में रखकर उत्तर प्रदेश की सरकार ने उनके लिए लेखक को पुरस्कृत किया है।

पुस्तकें सुन्दर मोनो टाइप में छपी हैं।

अनेक कालिजों व यूनिवर्सिटियों में बी० ए० के लिए इन पुस्तकों का उपयोग किया जा रहा है। पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष सुविधा।

साधारण ग्राहकों से भेजने का खर्च नहीं लिया जाता।

संकरा द्वार

मूल लेखक—आन्द्र जीद

अनुवादिका—सुशीला देवी शास्त्रिणी

फ्रान्स के प्रसिद्ध साहित्यिक आन्द्र जीद के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास La Porte Etroite का यह अनुवाद है। आन्द्र जीद की गणना आधुनिक युग के सर्वोत्कृष्ट साहित्यिकों में की जाती है। १९४७ का साहित्य-सम्बन्धी नोबल पुरस्कार प्रदान कर विश्व के साहित्य-प्रेमियों ने उनको सम्मानित किया था। उनकी पुस्तकों का अनुवाद संसार की प्रायः सभी उन्नत भाषाओं में हो चुका है। अभी तक हिन्दी में उनकी किसी पुस्तक का अनुवाद नहीं हुआ। यह पहला अ... जब हिन्दी पाठक 'संकरा द्वार' द्वारा आन्द्र जीद के ... उपन्यास-कला से परिचय प्राप्त कर सकते हैं। हमें ... है, कि वे पाठक जो उथले और हलके उपन्यासों ... सुरुचिपूर्ण व कलात्मक उपन्यासों को पढ़ने की रुचि ... इस पुस्तक द्वारा सन्तोष व आनन्द प्राप्त करेंगे।

मूल्य ...

होटल मॉडर्न

लेखक—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार

ऐतिहासज्ञ के रूप में डा० सत्यकेतु बहुत ... चुके हैं। उपन्यास के क्षेत्र में यह उनका पहला ... पर यह एक पुस्तक ही इस क्षेत्र में उनके यश और ... को बढ़ाने के लिए पर्याप्त है।

इस उपन्यास में एक ऐसे होटल मालिक की ... लिखी गई है, जो अपने मेहमानों की गतिविधि ... पूर्वक देखता है, उनके मनोभावों का अनुशीलन ... और उनका चरित्र-चित्रण करने की क्षमता रखता ... बड़े होटल में ठहरकर ऐसा अनुभव होता है ... किसी चिड़ियागर में पहुँच आये हों। बड़े-बड़े ... नवाब, पूँजीपति और व्यापारी, शक्ति के ... सरकारी अफसर, मानव समाज के कल्याण में ... नीतिक नेता, और अपने पति के पद, धन तथा ... कारण गर्वोन्मत्त नारियाँ—इन सबको समीप से ... अवसर बड़े होटल में ठहरकर प्राप्त होता है। ... आप इन्सानों के इस चिड़ियाघर के संचालक हों ... कहना ही क्या? यदि आपकी आँखें खुली हुई हैं ... चर्मचक्षु नहीं, अपितु ज्ञान-नेत्र—तो आप वर्तमान ... ध्यान से देखने और उस पर विचार करने का ... अवसर होटल में प्राप्त करते हैं, वह अन्यत्र दुर्लभ ... पुस्तक द्वारा हमारे वर्तमान समाज की अनेक समस्याएँ ... के सम्मुख उपस्थित होंगी, और उनके सम्बन्ध ... प्रकार के विचार उनके मन में उद्बुद्ध होंगे। यही ... का प्रयोजन है।

पृष्ठ-संख्या — ३४४। मूल्य ३॥) मात्र।

स र स्व ती स द न, म सू री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गई है। सुन्दर मुद्रण और जिल्द की १५० पृष्ठ की इस ... का मूल्य २।।) है। इसके प्रकाशक **सुलभ प्रकाशन**, ... चौपटियाँ, लखनऊ, हैं।

◈ ◈ ◈

...' की परख में हिन्दी के जाने-माने उपन्यासकार ... जैनेन्द्रकुमार के उपन्यास 'परख' के सम्बन्ध में लिखे गए ... भिन्न व्यक्तियों के ६ लेखों का संग्रह है। विद्यार्थियों के ... की दृष्टि से यह प्रकाशन हुआ है। पुस्तिका के सम्पादक ... नन्दूलाल दुबे, राजाराम कालिज, कोल्हापुर में हिन्दी के ... ध्यापक हैं। ३२ पेज की इस पुस्तिका का मूल्य छः आने ... और यह साहित्य **सेवा सदन**, बोरगाँव (बेलगाँव) से प्राप्त ... सकती है।

◈ ◈ ◈

नई दिल्ली की **मसिजीवी प्रकाशन** नाम की संस्था से सफल कवि, उपन्यासकार व नाटककार श्री **उदयशंकर भट्ट** की अधिकांश रचनाएँ इधर प्रकाशित हो रही हैं। अभी हाल ही में उनके आठ एकांकियों (नई बात, बाबू जी, यह स्वतन्त्रता का युग ! मायोपिया, ...-अपनी खाट पर, वार्गेन, ग्रहदशा, पर्दे के पीछे) का ... पर्दे के पीछे नाम से प्रकाशित हुआ है। ये एकांकी ... अभिनेय हैं। आलोचक श्री शिवदानसिंह चौहान की एक ... समीक्षात्मक टिप्पणी इस पुस्तक के अन्तिम कवर पर ... है जिसके अनुसार इनकी "भाषा सहज और सरल है, ...पण संक्षिप्त,....घटनाओं और कार्यों की संयोजना....सुसं-..., सुसम्बद्ध और चरम सीमा की ओर सहज प्रवहमान ... दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष डॉ० ...न्द्र ने पर्दे के पीछे की तीन पृष्ठ की भूमिका लिखी है ...में संग्रह के एकांकियों का और भट्टजी की कला का संक्षेप ... अवमूल्यन किया गया है। १२+१७८ पृष्ठों की इस ... का मूल्य २।।) मात्र है। कागज बढ़िया, छपाई सुन्दर, ... पक्की और आवरण दुरंगा व आकर्षक है। वितरण राजकमल प्रकाशन द्वारा हो रहा है।

आगरा की **श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी** ने श्री नरोत्तमदास स्वामी द्वारा सम्पादित राठौर पृथ्वीराज की कही **किसन-रुकमणी-री वेलि** का उत्तम संस्करण इधर प्रकाशित किया है। प्रस्तुत संस्करण में राजस्थानी भाषा, राजस्थानी साहित्य, रुक्मिणी-सम्बन्धी साहित्य, वेलि-साहित्य, राठौड़ पृथ्वीराज का परिचय, वेलि का परिचय, वेलि का कथा-सार काव्य की कथा का आधार, वस्तु, चरित्र, वर्णन, भाव-व्यंजना, रस-विरोध, कला, भाषा, अलंकार, छन्द, कवि की बहुज्ञता, आत्मश्लाघा, रचना-काल, वेलि की टीकाएँ और भाषान्तरों का परिचय और वेलि की भाषा का व्याकरण पहले ६४ पृष्ठों में दिया गया है। अगले २३८ पृष्ठों में गोपाल लाहोरी द्वारा लिखित वेलि के ब्रजभाषा में पद्यानुवाद, मूलपाठ का अलंकार-निर्देश सहित शब्दार्थ, पाठान्तर आदि दिये गए हैं। अन्त में हिन्दी गद्य में वेलि का भाषान्तर, टिप्पणियाँ व परिशिष्ट में युद्ध-वर्षा-रूपक प्रकरण का हिन्दी पद्यानुवाद दिया गया है। पुस्तक के संयोजन में सम्पादक के परिश्रम का परिचय बखूबी मिलता है। इस संस्करण की प्रामाणिकता और उपादेयता निर्विवाद है। डिमाई आकार के ६४+२३८ (कुल ३३२) पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ५) है।

◈ ◈ ◈

गीता प्रेस, गोरखपुर, द्वारा प्रकाशित मासिक **कल्याण** के २८ वें वर्ष का प्रथम अंक **संक्षिप्त नारद-विष्णु पुराण** अंक के नाम से प्रकाशित हुआ है। ८०० पृष्ठों का ७½"×९½" आकार का यह विशेषांक पत्र के स्थायी ग्राहकों को वार्षिक मूल्य में ही मिलता है : कल्याण का वार्षिक मूल्य ७।।) है और इस अंक का अलग से मूल्य भी यही है। प्रस्तुत अंक को २० रंगीन और २११ सादे चित्रों से सजाया गया है। श्री नारद महापुराण के पूर्व व उत्तर भागों के समस्त पादों के बाद विष्णुपुराण के ६ अंशों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। सनातन साहित्य के अध्येताओं को इतनी भारी-भरकम, ठोस सामग्री इतने सस्ते दामों में केवल गीता प्रेस ही दे सकता है।

◈ ◈ ◈

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महेन्द्र जी

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

देश के प्रमुख और पुराने प्रकाशकों में साहित्य रत्न भण्डार, आगरा, के श्री महेन्द्र का स्थान भी अग्रणियों में है। प्रकाशकों के परिचय की इस कड़ी में यह चतुर्थ श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत है।

आगरे के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में श्री महेन्द्र जी का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपनी सूझ-बूझ, संगठन-शक्ति और कार्यक्षमता के कारण उन्होंने बहुत थोड़े समय में आश्चर्यजनक उन्नति की है। हिन्दी प्रकाशकों में शायद ही किसी व्यक्ति ने एक साथ साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में उतनी सफलता प्राप्त की हो, जितनी कि श्री महेन्द्र जी ने की है।

उनका जन्म सन् १९०० में आगरा ज़िले के एक छोटे से गाँव जारोली में हुआ। जब २॥ वर्ष के थे तभी पिताजी का देहान्त हो गया। ८ वर्ष की उम्र होते-होते माताजी भी चल बसीं। पालन-पोषण नानाजी ने किया। इसी कारण

शिक्षा भी देर से आरम्भ हुई। शिक्षा की दृष्टि से सन् १९... में उन्होंने मैट्रिक-परीक्षा पास की।

यह वह समय था जब महात्माजी के असहयोग आन्दोलन की चर्चा आरम्भ हो गई थी और वे लोगों को ... छोड़कर राष्ट्र-सेवा करने की प्रेरणा दे रहे थे। श्री महेन्द्र के घर वालों ने भी उनसे कालिज में दाखिल होने के ... कहा, लेकिन उन पर गांधीजी का प्रभाव था, अतः ... नहीं पढ़े। समस्या यह उत्पन्न हुई कि जब पढ़ना नहीं ... किया क्या जाय? इस असमंजस में ही थे कि सन् १९... अन्त में उनको अध्यापक रामरत्न का सहयोग मिल ... अध्यापक जी 'रत्नाश्रम' नाम से पुस्तकों की दुकान ... और नगर के साहित्यिक जीवन के प्राण थे। उन्होंने '... रत्न भण्डार' के नाम से एक अलग दुकान खोलने का ... रखा, जिसे महेन्द्रजी ने स्वीकार कर लिया और वे अध्यापक जी के साझे में काम करने लगे।

सन् १९२० में जब अध्यापक जी असहयोग आन्दोलन में जेल चले गए तब महेन्द्र जी को उनके रत्नाश्रम का ... भी देखना पड़ा। कुछ राष्ट्रीय प्रवृत्ति के होने से उस ओर ... समय देना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि साहित्य रत्न भण्डार ठीक से न चल पाया। जीविका का प्रश्न था, इसलिए ... १९२२-२३ में उन्होंने महावीर प्रेस में अलग से काम ... शुरू किया। २-३ साल तक वहाँ काम करते रहे। ... रत्न भण्डार का काम भी लस्टम-पस्टम चलता रहा।

सन् १९२७ में अध्यापक जी और वे अलग हो ... यदि यह कहें कि वे साहित्य रत्न भण्डार के ही स्वामी ... गए तो अत्युक्ति न होगी, क्योंकि अध्यापक जी के पास ... कुछ साहित्य रत्न भण्डार का बचा वह रत्नाश्रम में ही ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...। लेकिन साहित्य रत्न भण्डार पुस्तक-प्रकाशकों तथा ...रेतों की मुख्य सड़क हॉस्पीटल रोड, आगरा से उठकर ...र प्रेस के एक कमरे में आ गया। कठिनाई और भी ...ई। तब उन्होंने 'सैनिक' साप्ताहिक में दो रुपये पेज पर ...कर अपना काम चलाना शुरू किया। श्री श्रीकृष्णदत्त ...वाल की गुण-ग्राहता के कारण वह सन् १६२६ में ...निक' के सहायक सम्पादक बन गए। पाँच-छः महीने बाद ...निक' की प्रबन्ध-व्यवस्था भी देखनी पड़ी। उस समय वे ...प्रातः ५ बजे से लेकर रात के दस-दस बजे तक काम ...ते थे। ऐसी दशा में साहित्य रत्न भण्डार की देखभाल ...किसी प्रकार सम्भव न था पर उसका नाम चल रहा था।

सन् १६३२ में उनकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो गया ...डाक्टरों ने राय दी कि यदि उसे जीवित रखना है तो कहीं ...में जाकर रहो। उस समय वे मानपाड़े मुहल्ले-जैसी घनी ...में अपने नाना के मकान में रहते थे और दुकान शहर ...के कमरे में थी, जिसका किराया १२) महीने था और ...के ऊपर का हिस्सा भी किसी को किराये पर दिया हुआ ...। पत्नी की जीवन-रक्षा का प्रश्न सामने आया तो उन्होंने ...सड़क, जिसे अब गांधी मार्ग कहते हैं, पर वह कोठी ...जिसमें आज साहित्य रत्न भण्डार की दुकान है। कोठी ...लिक ने मकान इस शर्त पर देने को कहा कि जब नीचे ...दुकान भी ली जाय और ५०) किराया तय हुआ। यदि ...शर्त न होती तो बहुत सम्भव था कि साहित्य रत्न ...र शहर के उसी कमरे में पड़ा रहता और महेन्द्र जी ...की पत्नी के स्वास्थ्य के ठीक होने तक सामर्थ्य से अधिक ...न देकर वापस लौट जाते। लेकिन होना कुछ और ही ...कोठी के मालिक की शर्त उन्होंने मान ली और वे दुकान ...परिवार लेकर ठण्डी सड़क पर आ रहे।

...बिना किसी भावी आय की आशा के श्री महेन्द्रजी का ...५०) के मकान में चले आना उनकी दुस्साहसिक ...ही सूचक कहा जायगा, पर उनका भाग्य भी उनके ...था। इसलिए जैसे ही वे आये वैसे ही 'नेश-...नल', 'नवयुग' और 'प्रताप' दैनिक रूप से निकले और ...उनकी एजेंसियाँ मिल गईं। उनसे किराये का काम ...चल गया। अब उन्होंने भण्डार का काम भी गम्भीरता-...पूर्वक करना आरम्भ किया। कुछ प्रकाशन का कार्य भी शुरू किया। उस समय प्रकाशन का कार्य मुख्य रूप से तत्कालीन सरकारी 'हिन्दी विशेष योग्यता परीक्षा' की सहायक पुस्तकों का था।

सन् १६३४ में बाबू गुलाबराय छतरपुर से पेंशन लेकर आगरा आए। उनको किसी प्रकाशक की आवश्यकता थी और महेन्द्रजी को किसी लेखक की। दोनों मिल गए। श्री महेन्द्र जी ने बाबूजी की कई पुस्तकें छापीं और सन् १६३७ में उनके सम्पादकत्व में 'साहित्य सन्देश' नामक साहित्यिक आलोचनात्मक मासिक निकाला। यह पत्र अपने ढंग का अनोखा पत्र था और जब निकला तब हिन्दी जगत् ने उसे बड़े प्यार से अपनाया। आज भी वह विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय पत्र माना जाता है। उसके विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है।

उच्चकोटि के प्रकाशनों के अतिरिक्त साहित्य रत्न भण्डार की स्थापना का उद्देश्य समस्त भारतवर्ष में प्रकाशित उच्च-कोटि की हिन्दी पुस्तकों के संग्रह का भी था। इसीलिए उसका नाम भी वैसा ही रखा गया था। यह सही है कि अपेक्षातर

संस्कृत भाषा की दो अमूल्य पुस्तकें

प्रारम्भिक-रचनानुवाद-कौमुदी

मूल्य—एक रुपया

रचनानुवाद-कौमुदी

मूल्य—तीन रुपया

लेखक—डा० कपिलदेव द्विवेदी, व्याकरणाचार्य

"कोई भी विद्यार्थी इन व्याकरण और अनुवाद की पुस्तकों से संस्कृत का सुबोध विद्वान् बन सकता है। अन्त में दिये हुए उदाहरणों से विद्यार्थी पत्र, निबन्ध आदि व्यावहारिक वस्तुओं को लिखने का भी अच्छा अभ्यास कर सकता है।"

पद्मनारायण आचार्य, काशी

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके द्वारा प्रकाशन का कार्य कम हुआ। यद्यपि बिना अधिक संख्या में प्रकाशन के इतनी बड़ी दुकान चलाना खतरे की बात है तथापि श्री महेन्द्रजी अपने खब्त से परेशान हैं। वे चाहते तो कोई ग्रन्थमाला भी निकाल सकते थे, पर उन्होंने वैसा नहीं किया और संग्रह की दृष्टि से ही भण्डार को विशालता दी। इसमें उन्हें सफलता भी मिली। उनके भण्डार की हिन्दी पुस्तकों के संग्रह की विशालता की प्रशंसा देश के बड़े-बड़े लेखकों तथा शिक्षा-शास्त्रियों ने की है। उनमें सर्वश्री सुनीतिकुमार चटर्जी, राजर्षि टण्डन, डाक्टर अमरनाथ झा जैसे गण्यमान लेखक, राष्ट्रकर्मी और शिक्षा-विशारद हैं।

साहित्य रत्न भण्डार हिन्दी-साहित्यिकों का मिलन-स्थल भी रहा है। सर्वश्री बाबू गुलाबराय, रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र', डाक्टर नगेन्द्र और डाक्टर सत्येन्द्र जैसे उद्भट विद्वान् और समालोचक उसके निकटस्थ व्यक्तियों में रहे हैं। अन्य स्थानीय तथा बाहर के कितने ही लेखक तथा कवि भी उसके द्वारा प्रकाश में आए हैं। राजर्षि टण्डन का यह कहना ठीक ही है—"श्री महेन्द्र जी का साहित्य रत्न भण्डार केवल हिन्दी के अच्छे ग्रन्थों के ही मिलने का स्थान नहीं है, हिन्दी साहित्यिकों का आगरा में केन्द्र है।"

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया बृहत् प्रकाशन

तुलसी-शब्दसागर

सम्पादक-मण्डल

डा० धीरेन्द्र वर्मा, डी० लिट्० (पेरिस)

डा० बलदेवप्रसाद मिश्र, डी० लिट्० (नागपुर)

डा० माताप्रसाद गुप्त, डी० लिट्० (इलाहाबाद)

संकलन कर्ता

स्वर्गीय पण्डित हरगोविन्द तिवारी

सम्पादक

श्री भोलानाथ तिवारी एम० ए०

तुलसीदास की रचनाओं में प्रयुक्त लगभग २२००० शब्द इस बृहत्-कोष में समाविष्ट हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति के अतिरिक्त यथास्थान महाकवि की रचनाओं से उद्धरण भी दिए गए हैं। तुलसी-अध्ययन के लिए अपरिहार्य ग्रन्थ।

जनवरी के अन्त तक प्रकाशित होगा।

सजिल्द : : आकार 10"×7½" : : पृष्ठसंख्या लगभग ५००

मूल्य बारह रुपये

हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद

लेकिन श्री महेन्द्रजी की पूरी दिलचस्पी अपने व्य में नहीं है। वे साहित्यिक और शैक्षणिक संस्थाओं तथा राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यों में अधिक रस लेते हैं। २३ से वे नागरी प्रचारिणी सभा आगरा से सम्बद्ध हैं। भी पहले सन् १५-१६ में जैन कुमार लायब्रेरी की स्थ उन्होंने की थी। सन् ३४ में आरती नमाज का भगड़ा सन् ३६ के बर्दा-पीड़ितों की सहायता, सन् ४१ के व्य सत्याग्रह और ४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की जेल-या आगरा म्युनिसिपल बोर्ड के शिक्षाध्यक्ष तथा महावीर दि जैन इन्टर कालिज के प्रबन्धक के रूप में कार्य उनका समय ले चुके हैं। यदि वे इन चक्करों में न पड़े होते अपने प्रकाशन-कार्य को अपने मन के अनुकूल बना सकते थे, यह निर्विवाद है।

आजकल वे हिन्दी पुस्तकों की खपत न होने से चिन्तित हैं। उनका कहना है कि जब उन्होंने भण्डार था, तब पुस्तकों की अधिक बिक्री होती थी। विद्या खरीदते थे और जनरल आर्डर भी आते थे, पर अब लायब्रेरियों में ही कुछ पुस्तकें जाती हैं। विद्यार्थियों यह हाल है कि वे कोर्स की पुस्तकें भी नहीं खरीदते स्थिति के सुधार के लिए वे दो बातें आवश्यक बताते हैं तो सरकारी सहयोग (State Protection) और जनता में पुस्तकें खरीदने का आन्दोलन चलाना। उन में सरकार ने वी० पी० पोस्टेज पर दाम बढ़ाकर प्रकाश थ जो अन्याय किया है उससे बिक्री में ३३ प्रतिशत है और पहले जो १) रुपये की पुस्तक १≶) में पड़ती अब १।।≶) में पड़ती है। अमेरिका और ब्रिटेन-जैसे देशों में भी इतना पोस्टेज नहीं लगता। पोस्टेज बढ़ पाठक पुस्तकें मँगाना भी चाहे तो पोस्टेज के डर से मँगाता और वी० पी० देखते ही चौंक जाता है। पाठ की रुचि बढ़ाने का आन्दोलन हो तो भी कुछ सकती है। उनका विचार है कि जब लोग सिनेमा पैसे खर्च करते हैं तो फिर पुस्तकें क्यों नहीं खरीद आन्दोलन हो तो कुछ-न-कुछ सफलता सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशन-जगत् की बढ़ी हुई सक्रियता में

रचनात्मक, उत्प्रेरक साहित्य का अभाव

हंसकुमार तिवारी

इधर हिन्दी में प्रकाशनों की संख्यागत व्यावसायिक होड़ में विषय-वस्तु का पलड़ा बहुत हल्का हो गया है। विज्ञ लेखक ने प्रकाशकों और लेखकों का ध्यान इस गम्भीर समस्या की ओर आकृष्ट किया है।

…कहते हैं, पुस्तक-प्रकाशन की दिशा में हिन्दी की …प्रगति आशातीत है। अगर उनका मतलब महज़ …से हो, तब तो आपत्ति की खास कोई गुँजाइश …दीखती, मगर जहाँ तक उनके मान का सवाल है, आशा-…होने का अवकाश नहीं के बराबर ही है। आज नैतिकता …रीढ़ इस बुरी तरह टूट गई है कि मानवता लगभग घोंस …है; सामाजिकता चलने के बजाय मुश्किल से रेंग पाती …। दुर्दिन के इस दुर्भेद्य अँधेरे में जब उम्मीद की कोई दिशा …सूझती, इस मौलिक मसले के हल के लिए हमें एक …नैतिक जवाब मिल जाता है—यह संक्रान्ति-काल है और …न्ति-काल में ऐसा ही होता है। कोई अचरज नहीं कि …की इस बेहिसाब बाढ़ की बाबत भी यही कहा जाय। …होता ही है, ऐसी अकाट्य ऐतिहासिक दुहाई के पीछे …निरर्थक निष्क्रियता की बू आती है। यानी अनुकूल …आने तक इसकी कोई दवा करते नहीं बनती। समय …सता के पैरों यह तो जैसे कृतित्व का माथा टेक देना …। कम-से-कम साहित्य के लिए न तो इसे शोभन कहा जा …है, न शुभ।

साहित्य के लिए अनुकूल समय का इंतजार नहीं, अनुकूल …लाने की शक्ति अपेक्षित है, जो कि आज नहीं है, यह ग्लानि हम-आपको कबूल करनी पड़ेगी। आज जो हमारा साहित्य है, उसमें युग-प्रतिष्ठा की वह चमत्कारी चिनगी नहीं नज़र आती; साधना और तप के ताप में तपाकर रचना के जिस खरे सोने की ओर आँखें लगी हैं, उसका बड़ा अकाल है और खाद मिले खोटे सिक्के बाजार में बेशुमार चल निकले हैं। लिहाजा पुस्तकों के इस ढेर में से मुश्किल से ही ऐसी चीजें निकाली जा सकती हैं, जिन्हें सही में रचना की आख्या दी जा सके; जिनको हम सृष्टि कह सकें। विविधता भी एक वैभव है, वैचित्र्य की सम्पन्नता भी साहित्य को चाहिए। किन्तु उसकी मूल पूँजी रचना है, यह मानना पड़ेगा। प्रेरणा की संस्कारमयी मूल धारा ही सूख जाय तो किनारों की हरियाली का श्री-संपद् किस बल-बूते पर टिक सकेगा? पुस्तक-प्रकाशन की चौमुखी जागरूकता आज जरूर नजर आती है, बेहिसाब किताबें भी निकलती चली जा रही हैं, किन्तु इस महल के कंगूरे की ऊँचाई, रूपमय विस्तार पर भरोसा नहीं होता, क्योंकि उसकी भित्ति में अनुरूप मजबूत ईंटों की जोड़ाई नहीं। इसलिए प्रकाशन-जगत् के सामने आज यह एक जबरदस्त मसला है, बहुत बड़ा खतरा भी।

एक मनस्वी ने कभी एक भविष्यवाणी की थी कि विज्ञान का विकास कविता के ह्रास का कारण होगा। दूर तक हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते रहे कि विज्ञान की अपनी जय-यात्रा मंजिल की ओर चलती रही और शिल्प-साहित्य के आकाश में भी प्रतिभा के अमर-अनमोल सितारे उगते रहे। किन्तु आज जब आलोचना हमारे आगे आई है, तो देखते हैं कि रचना दम तोड़ रही है। आलोचना-ही-आलोचना है—रचना ढूँढ़े नहीं मिलती। आखिर रचना नहीं रहेगी तो आलोचना की यह जंजीर किन कड़ियों से जुड़कर आगे बढ़ेगी, यह एक सवाल है; और आलोचनाओं का स्तर, वह दूसरा सवाल है, इसके बाद का।

यह सब-कुछ जो ऐसा हो रहा है, वह अकारण है, यह कैसे कहा जाय? इसका कारण व्यावसायिक होड़ है और यह होड़ यन्त्र-युग की एक देन है। चिकित्सा रोगग्रस्त मनुष्यता की आवश्यकता है। किन्तु डाक्टर जब फीस की प्रतियोगिता पर खरीदे जाते हैं, तो मूल उद्देश्य का शोषण होता है और उसका व्यावसायिक महत्त्व ही मुख्य और मूल्यवान हो उठता है। किसी साल हैजा न हो तो डाक्टर को खुशी नहीं होती, सीजन नहीं चलने का दुःख होता है। इस दुःख के पीछे उसके व्यावसायिक घाटे की भावना के सिवाय और क्या हो सकता है? हर क्षेत्र में आज यही भावना प्रधान और हो उठती है—जिस चीज़ के निराकरण की उसकी जि... है, उसी की अभिवृद्धि में उसकी जीविका और ऐश्व... का स्वार्थ है। मशीन-युग का सबसे बड़ा जो अभि... वह है बेहिसाब उत्पादन। उत्पादन की अधिकता इसे मजबूर करती है कि जैसे भी हो, माल की खपत का ... बड़ा बाज़ार तैयार हो। नतीजा यह होता है कि इसके ... एड़ी-चोटी का पसीना बहाया जाता है कि लोगों में अ... चीज़ों की माँग पैदा की जाय और उनको उन ची... खरीदने में प्रोत्साहित किया जाय, जिसकी उन्हें ... नहीं है।

इसी व्यावसायिक होड़ का यह दुष्परिणाम हमें ... की दुनिया में दिखाई दे रहा है। साहित्य की ... सांस्कृतिक ज़िम्मेदारी है, जीवन के लिए उसकी नो ... टाली जाने वाली जरूरत है और जीवन-निर्माण का ... जो एक महान् उत्तरदायित्व है, यह प्रकाशन की बाढ़ ... के उस उद्गम से नहीं उमड़ी है, यह दावे के साथ ...

हमारे नये प्रकाशन

★आधुनिक पत्रकार कला★

ले० रा. र. खाडिलकर

पत्रकारी के अंग का परिचय कराने वाली हिन्दी में पहली पुस्तक मू० ३।।)

★विज्ञान के चमत्कार★

(तीसरा संस्करण)

ले० प्रोफेसर भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव

इस पुस्तक में विज्ञान-सम्बन्धी ३० चित्र भी हैं। मू० २।।)

★खाद का उपयोग★

(तीसरा संस्करण)

लेखक दुर्गाप्रसादसिंह

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

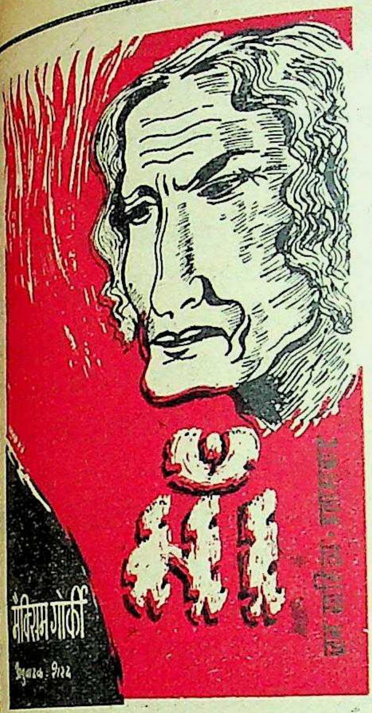

नये वर्ष की एक अनुपम भेंट

विश्व का श्रेष्ठतम जनवादी उपन्यास

माँ

जिसकी माँग दिनोंदिन बढ़ रही है

पृष्ठ-संख्या तीन सौ बारह	● इतना सस्ता मूल्य
और	इतना बढ़िया प्रकाशन
मूल्य केवल डेढ़ रुपया	पाठकों व विक्रेताओं को
आकर्षक दोरंगा कवर	● एक सुनहरा अवसर

अन्य गोर्की साहित्य

एक	दो	तीन
मेरा बचपन	यह दुनिया	जीवन की पांठशालायें

प्रत्येक का मूल्य २॥) डाक व्यय अलग

पं० गंगाप्रसाद पाण्डेय की

हिन्दी-साहित्य को एक अनुपम देन

कलाकुसुम

आलोचना, निबन्ध, कविता आदि विषयों पर अपने ढंग की
निराली तथा उपयोगी पुस्तक

मूल्य २) डाक व्यय अलग।

व्यापारिक नियमों के लिए लिखिए

जनसाहित्य, ३७, शिवचरणलाल रोड, इलाहाबाद—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। इसकी बुनियाद उस धरातल पर है, जहाँ मशीन-युग की निरर्थक निष्क्रियता ने अवकाश नाम की एक अजीब किस्म की चीज को पैदा किया है और जो निरी थोथी, सस्ती एवं तात्कालिक मनोरंजन की जरूरत पर आकर महदूद हो गई है। पैनी व्यावसायिक वृत्ति ने अदृश्य दुर्बलता की नस बखूबी पहचान ली है और वह अपने स्वार्थ की रक्षा के लिए उसका यथेच्छ लाभ उठाने लगी है। मानसिक धरातल को उससे ऊपर उठाने का श्रमसाध्य कार्य न तो उसके लिए सुकर ही है, न कर्त्तव्य, क्योंकि उसमें उसके स्वार्थ की जड़ कटने की सम्भावना है। उसके लिए तो कल्याणकर यही है कि वह उसके उस सस्तेपन को विज्ञापन आदि की तड़क-भड़क से उभाड़े और उसी खुराक के अनुरूप अपने उत्पादन की प्रकृति और परिमाण को निरूपित करे। आज के प्रकाशन से यह बात स्पष्टतया नजर आ रही है। कविता पनप नहीं रही है, कथा-साहित्य में सस्ती, घटिया और अर्थहीन चीजें ही ज्यादा आने लगी हैं; आलोचनाओं में उनको अब अधिकता से प्रश्रय दिया जाने लगा है जो पुस्तकें कि पाठ्य पुस्तकों पर पास कराने योग्य प्रकाश डालती हों। भूसे के ढेर में बीनने पर दानों की तरह कुछेक काम की चीजें जो नहीं मिल आयेंगी, ऐसा हम नहीं कहते। हम सिर्फ इतना ही संकेत देना चाहते हैं कि हमारी मूल प्रवृत्ति हवा के रुख पर ही पीठ देने की है—माँग के सस्तेपन की वेदी पर ही घुटने टेक देना है। राष्ट्रभाषा के अंगों को पुष्ट और समृद्ध करने के नाते विविध विषयों के आवश्यक पहलू पर जो प्रयास हो रहे हैं, वे स्तुत्य जरूर हैं, किन्तु इस शाखाबहुल मूल को सींचने का क्या हो, जिस पर सांस्कृतिक जीवन का दारोमदार है, जो देश के प्राण और आत्मा के संस्कार का साधन है। उसको अगर मनोरंजन की माँग की हम भेंट चढ़ा दें, तो अधोगति की चरम सीमा को ही समीपतर करना होगा।

आज कर्त्तव्य की यह पुकार हमारी जागरूक सचेष्टता के दरवाजे आकर ठिठक गई है, जिसके आगे मौन में जातीय जीवन की एक मर्मान्तक निरर्थकता, निष्प्राणता की भावी कारुणिक तस्वीर काँप रही है। तस्वीर का पहलू केवल मानसिक जीवन के खोखलेपन का नहीं, निर्जीवता और सांस्कृतिक अधःपतन की भी सूचना है। यह एक जलती हुई समस्या है और यदि इसका हल न निकल आता तो समझिये हमारे आगे अँधेरा-ही-अँधेरा है।

यह समस्या केवल प्रकाशकों के किये हल हो जाई, हमारा अभिप्राय यह नहीं। साहित्य की समृद्धि और सा... के दो छोर हैं, बीज यानी स्रष्टा या सृष्टि और दे... विदग्ध पाठक समुदाय। मेरे एक निकटतम और उन्हीं... प्रकाशक-बन्धु ने बताया, ऐसा एक अकाल आने का... इसका एक आभास-सा उन्हें मिल रहा है। किन्तु चाहने पर भी उन्हें जैसी चाहिएँ, रचनाएँ नहीं मिल रही हैं। ... सीधा-सा अर्थ यह हुआ कि सक्रिय रचनात्मक प्रतिभा ... पनपती नहीं नजर आती। पाठक-समुदाय तो सुभान... ही हैं, यह माँग और खपत के लेखा-जोखा से साफ है... है। ऐसे में इन दोनों की एक ही योजक-रेखा दिखाई... है, वह प्रकाशक हैं। वे अगर बहाव में बहते जाने की ... का मोह न कर पाँव रोपने की चेष्टा करें, तो वैसी ... भी प्रकाश में आएँ और पाठकों में भी सहृदयता... विदग्धता आये। यह अवश्य ही समय-सापेक्ष और ... काम है। किन्तु यदि हम आज चाहते हैं कि म... साहित्य की सरसता सूख न जाय और सांस्कृतिक ... सितारा उगने से पहले ही डूब न जाय, तो संगठि... से उस शिक्षा और संस्कार के कगारों को शक्ति और ... का सहारा देना पड़ेगा, जिनमें बँधकर भाव की भागी... प्राणमय प्रवाह बहता रहे। हमारा विश्वास है, इ... की लीक पर कदम तो बढ़ाये ही जा सकते हैं।

यदि आप अब तक २॥) भेजकर

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं बने हैं तो इस अंक के बाद का अंक आपको नहीं भेजा जा सकेगा, और इसका हमें खेद रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

...बई
अहमदनगर कालेज लाइब्रेरी (ड्यूई लाइब्रेरी), अहमदनगर।
आर० ए० पोद्दार कालेज आफ कामर्स एण्ड इकोनामिक्स लाइब्रेरी, माटुंगा, बम्बई–१६।
आर० एल० लॉ कालेज लाइब्रेरी, थालकवाड़ी (बेलगाम)।
आर० डी० एण्ड एम० एच० नेशनल कालेज एण्ड एस० डब्ल्यू० ए० साइन्स कालेज लाइब्रेरी, बाँदरा, बम्बई–२०।
आर० पी० डी० कालेज लाइब्रेरी, थालकवाडी (बेलगाम)
आर० पी० गोगटे कालेज लाइब्रेरी, रत्नगिरी।
इंटरमीडिएट कालेज लाइब्रेरी, बड़ोदा।
इंजीनियरिंग कालेज लाइब्रेरी, पूना–५।
इंजीनियरिंग कालेज लाइब्रेरी, बड़ोदा।
इंस्टीट्यूट आफ साइन्स लाइब्रेरी, मेयोरोड, बम्बई।
इस्माईल यूसुफ कालेज लाइब्रेरी, जोगेश्वरी, बम्बई।
एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, धारवाड़।
एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, पूना–५।
एच० एल० कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी (सी० सी० ...सीवाला लाइब्रेरी), अहमदाबाद।
...केशन एण्ड साइकालोजी फैकल्टी लाइब्रेरी, बड़ोदा ...निवर्सिटी, बड़ोदा।
एम० जे० कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, भावनगर।
एम० एम० आर्ट्स कालेज एण्ड एन० एम० इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स लाइब्रेरी, अन्धेरी, बम्बई।
एम० सी० महिला पाठशाला लाइब्रेरी, महारानी हाई स्कूल फार गर्ल्स, बड़ोदा।
एम० डी० आर्ट्स कालेज एण्ड एम० जी० साइन्स इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद–६।
—एलफिन्स्टन कालेज लाइब्रेरी, १५६, महात्मा गांधी रोड, फोर्ट, बम्बई।
—एल० एम० कालेज आफ फार्मेसी लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
—एस० एन० डी० टी० कालेज फार विमन लाइब्रेरी, १, कार्नेगी रोड, क्वीन्स रोड, फोर्ट, बम्बई–१।
—एस० एन० डी० टी० कालेज फार विमन लाइब्रेरी, कार्वे रोड, पूना–४।
—एस० बी० गार्डा कालेज एण्ड बी० पी० बारिया साइन्स इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, नवसारी।
—एस० एल० यू० गुजरात महिला पाठशाला लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
—ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, बड़ोदा।
—ऋषि दयाराम एण्ड सेठ हासाराम नेशनल कालेज लाइब्रेरी, बाँदरा, बम्बई।
—कन्नड कालेज लाइब्रेरी, कुमटा।
—कन्नड रीसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, धारवाड़।
—करनाटक कालेज लाइब्रेरी, धारवाड़।
—कलाभवन टैक्नीकल इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, बड़ोदा।
—कामर्स फैकल्टी लाइब्रेरी, बड़ोदा यूनिवर्सिटी, बड़ोदा।
—के० ई० बोर्ड्स आर्ट्स एण्ड साइन्स कालेज लाइब्रेरी, धारवाड़।
—खालसा कालेज लाइब्रेरी, किंग्स सर्कल, माटुंगा, बम्बई–१६।
—गवर्नमेण्ट लॉ कालेज लाइब्रेरी, बम्बई।
—ग्रांट मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, बाइकुला, बम्बई–८।
—गुजरात कालेज लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
—गोखले इन्स्टीट्यूट आफ पालिटिक्स एण्ड इकोनामिक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइब्रेरी, पूना।

—गोपालकृष्ण गोखले कालेज लाइब्रेरी, कागल (कोल्हापुर)

—छत्रपति शिवाजी कालेज लाइब्रेरी, सतारा।

—जगद्गुरु गंगाधर कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, हुबली (धारवाड़)।

—जयहिन्द कालेज एण्ड बसन्तसिंह इंस्टीट्यूट आफ साइंस लाइब्रेरी, २४, पेड्डर रोड, बम्बई–२६।

—जे० एण्ड जे० कालेज आफ साइन्स एण्ड सी० बी० पटेल आर्ट्स इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, नदियाद।

—टोपीवाला नेशनल मैडीकल कालेज लाइब्रेरी, डा० नायर रोड, जेठा स्ट्रीट, बम्बई–८।

—डिपार्टमैंट आफ कैमिकल टैक्नॉलोजी लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी आफ बांबे, बम्बई।

—डिपार्टमैंट आफ स्टैटिस्टिक्स लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी आफ बांबे, बम्बई।

—डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, पूना।

—तिलक कालेज आफ एजूकेशन लाइब्रेरी, पूना।

—दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज लाइब्रेरी, शोलापुर।

—नारायण राम्रो टोपीवाला कालेज लाइब्रेरी, मुलुण्ड (थाना)।

—नौरोजी वाडिया कालेज लाइब्रेरी, १६ बन्द गार्डन रोड, पूना–१।

—न्यू इंजीनियरिंग कालेज लाइब्रेरी, विश्रामबाग, सांगली।

—प्रताप कालेज लाइब्रेरी, अमलनेर।

—पेटलड कालेज लाइब्रेरी, पेटलड।

—फर्ग्युसन कालेज लाइब्रेरी, पूना।

—फाईन आर्ट्स कालेज लाइब्रेरी, बड़ोदा।

—फैकल्टी आफ आर्ट्स लाइब्रेरी, बड़ोदा।

—फैकल्टी आफ कामर्स लाइब्रेरी, बड़ोदा।

—फैकल्टी आफ टैक्नॉलोजी, बड़ोदा यूनिवर्सिटी, बड़ोदा।

—फैकल्टी आफ मैडिसिन लाइब्रेरी, बड़ोदा।

—फैकल्टी आफ होम साइन्स लाइब्रेरी, बड़ोदा यूनि०, बड़ोदा।

—बृहत् महाराष्ट्र कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, पूना–४।

—बड़ोदा कालेज लाइब्रेरी, फैकल्टी आफ आर्ट्स, बड़ोदा।

हमारे स्टाकिस्ट तथा एजेण्ट

(१) लक्ष्मी पुस्तक भण्डार, १३ काली कृष्णा टैगोर स्ट्रीट

(२) राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, मछुआ टोली, पटना

(३) कल्याणदास ब्रदर्स, ज्ञानवापी, बनारस

(४) राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली

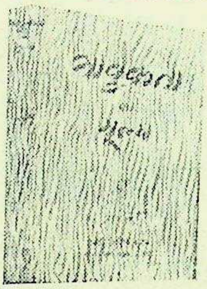

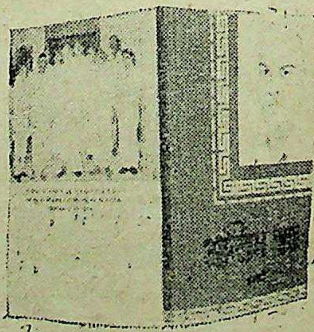

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली
...ा टैगोर ... ...काशन, दरियागंज, दिल्ली
पटना ... पब्लिशिंग हाऊस, नई सड़क, दिल्ली
...काशन मण्डल, लाजपतराय मार्केट, दिल्ली
...स्थानों पर आवश्यकता है, पत्र-व्यवहार करें।

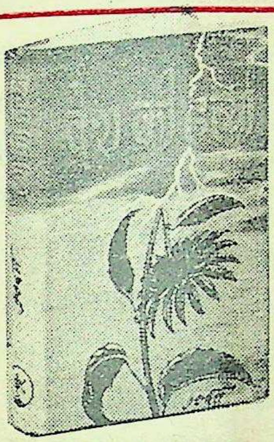

...वुकता ... ...ता की हत्या ५॥)
...कृत छाय... बहती रेता ५)
...लका (... विश्वासघात ५॥)
...० मुखर्जी विडम्बना ६)

...शन

...भा... सदन
... दिल्ली।

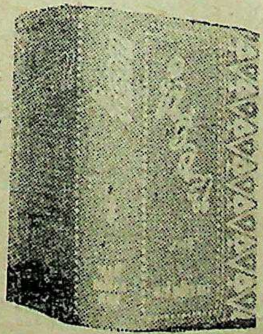

—बड़ौदा संस्कृत महाविद्यालय लाइब्रेरी, बड़ौदा।

—बसवेश्वर कालेज लाइब्रेरी, बागलकोट।

—बांबे वैटरिनरी कालेज लाइब्रेरी, परेल, बम्बई—१२।

—बिरला विश्वकर्मा महाविद्यालय लाइब्रेरी, वल्लभ विद्या-नगर, आनन्द।

—बी० ए० एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, इन्स्टीट्यूट आफ एग्रीकल्चर, आनन्द।

—बी० जे० मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, अहमदाबाद।

—बी० जे० मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, पूना।

—बी० जे० वाणिज्य महाविद्यालय लाइब्रेरी, वल्लभ विद्या-नगर, आनन्द।

—बी० वी० भूमरड्डी कालेज आफ इञ्जीनियरिंग एण्ड टैक-नालोजी लाइब्रेरी, हुबली (धारवाड़)।

—मंगलदास ठाकुरदास बालमुकुन्ददास कालेज लाइब्रेरी, सूरत।

—महाराजा एजूकेशन सोसायटी कालेज आफ आर्ट्स एण्ड साइन्स लाइब्रेरी, पूना।

—माणेकलाल नानचन्द कालेज लाइब्रेरी, विसनगर, (नार्थ गुजरात)

—मूलजी जेठा आर्ट्स एण्ड साइन्स कालेज लाइब्रेरी, जल-गाँव।

—मेघजी मथुरादास आर्ट्स कालेज एण्ड नारानदास मनो-रदास इंस्टीट्यूट आफ साइन्स, नवगुजरात, अँधेरी, बम्बई।

—मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, बड़ौदा।

—म्यूज़िक कालेज लाइब्रेरी, बड़ौदा।

—राजाराम कालेज लाइब्रेरी, कोल्हापुर।

—रामनारायण रूइया कालेज लाइब्रेरी, माटुंगा, बम्बई।

—लॉ कालेज लाइब्रेरी, पूना।

—लालभाई दलपतभाई कालेज आफ इञ्जीनियरिंग लाइब्रेरी, नवरंगपुरा, अहमदाबाद।

—लिंगराज कालेज लाइब्रेरी, बेलगाम।

—विक्टोरिया जुबिली टैक्नीकल इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, माटुंगा, बम्बई—१६।

—विजय कालेज लाइब्रेरी, बीजापुर।

—विट्ठल भाई पटेल महाविद्यालय लाइब्रेरी, वल्लभ विद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थी साहित्य

चाँद सूरज के बीरन

देवेन्द्र सत्यार्थी की आत्मकथा, जो हिन्दी गद्य-साहित्य में नया कदम है। चाँद घूमता है, सूरज घूमता है और उनका बीरन सत्यार्थी भी अपनी यात्राओं के लिए प्रसिद्ध है। प्रस्तुत पुस्तक के शेष तीन भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। पृष्ठ संख्या ३७६; ३२ पौएड एंटिक कागज; पक्की जिल्द; पाँच रंग का कलापूर्ण डस्ट कवर। मूल्य पाँच रुपये मात्र।

बाजत आवे ढोल

" 'बाजत आवे ढोल' का सबसे ज़्यादा महत्त्व इसी में है कि वह जनता की अपार शक्ति में हमारा विश्वास दृढ़ करती है।"—डॉक्टर रामविलास शर्मा (आल इण्डिया रेडियो दिल्ली से प्रसारित समीक्षा में)

"लोकगीतों के श्रमसाध्य संग्रह, विस्तृत अध्ययन सुसम्पादन और आकर्षक प्रकाशन द्वारा लोक-साहित्य के उद्धार तथा उसकी ओर हमारी रुचि उत्पन्न करने में सत्यार्थी जी ने महत्त्वपूर्ण योग दिया है।" 'कल्पना' (अगस्त १९३९)

'धरती गाती है' जैसा आकार-प्रकार; अनेक चित्रों से सुसज्जित। मूल्य सात रुपये।

रथ के पहिये

देवेन्द्र सत्यार्थी का गोंड संस्कृति पर आधारित प्रथम उपन्यास।

"भाषा में प्रवाह है और शैली में एक प्राण-भरी प्रेरणा।"—'नया समाज' (जून १९५३)

"हर गाँव, नदी, नाले का इस प्रकार वर्णन हुआ है मानो उसको नकशे में अपने सामने देख रहे हो।"—'दक्षिण भारत' (जुलाई १९५३)

' "रथ के पहिये' सम्भवतः हिन्दी का पहला उपन्यास है जो किसी खास सभ्यता या जाति के जीवन को लेकर लिखा गया है।'''उपन्यास के क्षेत्र में श्री सत्यार्थी का प्रवेश नई आशाएँ बँधाता है।"—'कल्पना' (दिसम्बर १९५३)

पृष्ठ संख्या ४००; ३२ पौएड एंटिक काग़ज; मूल्य साढ़े पाँच रुपये।

एशिया प्रकाशन,
१०० बेयर्ड रोड, नई दिल्ली।

नगर, आनन्द।
—विल्सन कालेज लाइब्रेरी, बम्बई–७।
—वैलिंगडन कालेज लाइब्रेरी, सांगली (बम्बई)।
—शाहजी लॉ कालेज लाइब्रेरी, कोल्हापुर।
—श्री महारानी ताराबाई टीचर्स कालेज लाइब्रेरी, कोल्हापुर।
—स्कूल ऑफ इकोनामिक्स एण्ड सोशियालोजी लाइब्रेरी, यूनिवर्सिटी आफ बाम्बे, बम्बई।
—स्कूल आफ सोशल वर्क लाइब्रेरी, बड़ोदा।
—सर कीकाभाई प्रेमचन्द कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, अठवा लाईन्स, सूरत।
—सर जे० जे० स्कूल आफ आर्ट लाइब्रेरी, फोर्ट, बम्बई-१।
—सर परशुराम भाऊ कालेज लाइब्रेरी, पूना।
—सर लालूभाई शाह लॉ कालेज लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
—सामलदास कालेज लाइब्रेरी, भावनगर।
—सार्वजनिक लॉ कालेज लाइब्रेरी, अठवा लाईन्स, सूरत।
—सिडन्हम कालेज आफ कामर्स एण्ड इकोनामिक्स लाइब्रेरी, हार्नबी रोड, फोर्ट, बम्बई–१।
—सिद्धार्थ कालेज लाइब्रेरी, हार्नबी रोड, बम्बई-१।
—सेठ जी० एस० मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, परेल, बम्बई।
—सैकण्डरी टीचर्स कालेज लाइब्रेरी, बेलगाम।
—सैकण्डरी ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, ३ क्रुकशैंक रोड, बम्बई—१।
—सैंट जेवियर्स कालेज लाइब्रेरी, क्रुकशैंक रोड, बम्बई-१।
—सोफिया कालिज फार विमन लाइब्रेरी, भूलाभाई देसाई रोड, बम्बई।
—हंसराज प्रागजी थैकरसे कालेज लाइब्रेरी, नासिक।

प्रकाशक निम्न पुस्तकालयों के नाम भी अपनी सूचियों में लिख लें।

—अभिमन्यु पुस्तकालय, दशाश्वमेध, बनारस।
—शहीद राजनारायण स्मारक पुस्तकालय, लखीमपुर
—श्री महावीर पुस्तकालय, साहेबगंज, पो० [illegible] (मुजफ्फरनगर)।
—जनता हितैषी पुस्तकालय, गोसाईं मठ, पो० [illegible] बेलछी (पटना)।
—युवक संघ पुस्तकालय, पीलीभीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेखकीय मञ्च

…ी अक्षयकुमार जैन, नवभारत टाइम्स, दिल्ली, के पास …र्ज बर्नार्ड शॉ के दो नाटकों (कैंडिडा तथा हाऊ ही …ईड टु हर हसबैन्ड) का हिन्दी रूपान्तर तैयार है। दोनों …लाकर लगभग १५०-२०० पृष्ठों में सम्पूर्ण हुए हैं। …काशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

…ी नरेन्द्रनारायण लाल, लेखक और पत्रकार, मछुआ …ोली, पटना-४, के पास निम्न पुस्तकें अप्रकाशित पड़ी हैं, …न प्रकाशकों की रुचि हो, पत्र-व्यवहार करें।

…रोटी (सामाजिक कहानी संग्रह) १२ फ़ार्म, **अर्द्धांगिनी** (सामाजिक नाटक) १० फ़ार्म, **पहली अप्रैल** (हास्य-कथाओं …का संग्रह) ६ फ़ार्म, **कारागार** (लघुकथाओं और शब्दचित्रों …का संग्रह) ६ फ़ार्म, **स्वप्न** (सामाजिक उपन्यास) १० फ़ार्म, …हिन्दी के महारथी (बालोपयोगी जीवनी) ३ फ़ार्म, **राजा हो …तो ऐसा** (बालोपयोगी उपन्यास) ३ फ़ार्म।

◈ ◈ ◈

श्री हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ', प्रधान मंत्री, सहर्षा …जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, लिखते हैं: "मेरी एक …अप्रकाशित पुस्तक है: **आनन्द** (बौद्धकालीन खण्डकाव्य), जिस …के भूमिका-लेखक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ० प्रभात …विद्यावाचस्पति हैं। वह पुस्तक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, सिवनी …(मध्यप्रदेश), की मध्यमा परीक्षा के लिए मान्य होगी, अध्यक्ष …महोदय ने विश्वास दिलाया है। इसकी पृष्ठ-संख्या लगभग …०-९० होगी।…जो प्रकाशक महोदय इसे प्रकाशित …करना चाहें, मुझसे (कलाकुटीर, पो० मधेपुरा, सहर्षा, बिहार) …पत्र-व्यवहार करें।"

◈ ◈ ◈

…ी विनोद रस्तोगी, ७/१४० स्वरूपनगर, कानपुर, के पास तीन काव्य-संग्रह (रात-दिन, कभी-कभी, धरती के गीत) तथा दो एकांकी-संग्रह (बहती गंगा, प्यास और पैसा) तैयार हैं। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

धार (नयापुरा, आउट एजेंसी, म० भा०) से श्री महेन्द्र भटनागर लिखते हैं कि उनके पास एक स्केच संग्रह, एक आलोचनात्मक लेखों का संग्रह तथा चार कविता-संग्रह प्रकाशनार्थ तैयार हैं। यदि कोई प्रकाशक उपरोक्त पुस्तकें लेना चाहें तो पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री अनिल कुमार लिखते हैं कि उनके पास निम्न पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं। जिन प्रकाशकों की रुचि हो, वह उनसे (इतवारी, नागपुर २) पत्र-व्यवहार करें:

मधुयुग: रोमानी एवं सौन्दर्य-विषयक कविताओं का संग्रह: पृष्ठ संख्या १०० तक।

कुहरे के नील-कमल: गीतिरूपकों का संग्रह। पृष्ठ-संख्या १०० के आसपास।

रेडियो रूपक: ध्वनि एकांकियों के स्वरूप विवेचन, टेक्नीक, प्रकार आदि पर विस्तृत, सैद्धान्तिक, अध्ययनपूर्ण भूमिका के साथ ऐतिहासिक, सामाजिक एवं प्रतिष्ठित उपन्यासों पर आधारित रूपान्तरों सहित लेखक के नौ रेडियो-रूपकों का संग्रह। पृष्ठसंख्या २०० के लगभग।

संगम: हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, पंजाबी, तमिल, तैलुगु और कन्नड़ भाषा के नवोदित एवं कुशल लेखकों के मंच तथा ध्वनि-रूपकों का अनुपम संकलन।

हिलोर: मराठी के नवोदित प्रतिष्ठित तरुण कथा-शिल्पियों की कहानियों का हिन्दी अनुवाद।

◈ ◈ ◈

श्री सिद्धनाथ कुमार (ऑल इंडिया रेडियो, पटना) के पास दो पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं: **(१) रेडियो नाटक: सिद्धान्त और प्रयोग।** रेडियो नाटक कैसे लिखें, इस विषय का सोदाहरण एवं सुबोध विवेचन। **(२) सृष्टि की सांझ:** आज के युग की समस्याओं पर आधारित पाँच रेडियो-काव्य-नाटकों का संग्रह। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल का नया सचित्र बाल साहित्य

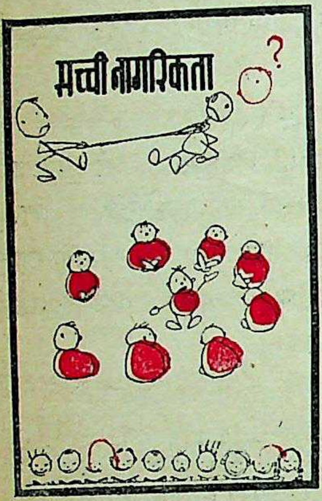

सच्ची नागरिकता

दो रंगों में

रायल साइज़

पृष्ठ संख्या ८८

मूल्य १॥।) मात्र

सुन्दर चित्रों से चित्रित
पंचतन्त्र की कहानियाँ
दो रंगों में
तीन भाग प्रकाशित। प्रत्येक

राजकमल बाल साहित्य

चम चम चमके चन्दा मामा, मू
बचपन की कहानियाँ, मूल्य
धुएँ की फाँसी, मूल्य

हमारे
बाल-सहित्य के कुछ
आगामी प्रकाशन

—एक कदम आगे
रायल साइज़ के आगे के ८० पृष्ठ
की दो रंगों की
पुस्तक।

—परिस्तान
ग्रिम्स की कहानियों का अनुवाद
अनेक चित्रों से सुसज्जित

—गुलिवर की कहानियाँ
विख्यात पाश्चात्य कथा का
पहला सरल अनुवाद
रंगीन चित्र

दो रंगों में
रूसी कहानियाँ (१)
बरफीले देश में
रायल साइज़
मूल्य १)

रूसी कहानियाँ (२)
पहला शिकार
दो रंगों में
रायल साइज़
मूल्य १)

चीनी कहानियाँ (१)
पीली बत्तक
दो रंगों में
रायल साइज़
मूल्य १)

चीनी कहानियाँ (२)
तीरन्दाज़ 'ई'
दो रंगों में
रायल साइज़
मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली बम्बई, नई दिल्ली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला

टॉमस ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत इस वर्ष १२ लेख प्रकाशित होंगे। लेखक हैं इंग्लैण्ड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-विक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

...क-बिक्री-सम्बन्धी एक पाठ्य-पुस्तक की जरूरत ...की गई है—खास तौर पर इस व्यवसाय में आने ...ले उन नये लोगों द्वारा जिनकी संख्या गत वर्षों में बहुत ...ी बढ़ चुकी है। पुस्तक-बिक्री के तरीके और उसकी अर्थ-...ति की सहज व्याख्या न केवल पुस्तक-विक्रेताओं और ...के कर्मचारियों वरन् प्रकाशकों और सार्वजनिक पुस्तकालयों ...े प्रबन्धकर्ताओं के लिए भी बहुमूल्य सिद्ध होनी चाहिए।

बहुधा यह कहा जाता है और बही-खातों से प्रमाणित ...ी होता है कि गत युद्ध तक एक पुस्तक-विक्रेता के लिए ...वल नई पुस्तकों का रखना और मुनाफे के साथ अपना ...पार चलाना प्रायः असम्भव ही था। समय बदल चुका है ...न्तु यह व्यवहार नहीं बदला है। आज पुस्तक-बिक्री ...ठिन काम है, क्योंकि आज बिक्री अधिक गतिमान तथा ...धिक बढ़ी हुई है, पर खर्च भी अधिक बढ़ता जा रहा है और इस बढ़ी हुई बिक्री के लाभ में वेतन, किराया और ...लेखन-सामग्री आदि पर किए जाने वाले बढ़े हुए खर्च ने ...धा उपस्थित कर दी है। सवाल यह है कि यदि इस व्यापार ...में मन्दी आई तो कितने नए व्यापारी अपने व्यापार को ...चलाकर इसका मुकाबला कर पाएँगे? मुझे आशा है कि ...न लेखों से कुछ बहुमूल्य सीख मिल सकेगी, क्योंकि पहले भी ...म बुरा वक्त देख चुके हैं और हममें से कुछ ने, आखिर, ...ऐसी समस्याओं का मुकाबिला किया ही है।

एक अच्छे पुस्तक-विक्रेता के लिए, जैसा कि हम सब ...ानते हैं, अपनी दुकान में स्टेण्डर्ड किताबों का रखना जरूरी है जैसे कि शब्दकोष, व्याकरण की पुस्तकें, प्रतिष्ठा-प्राप्त साहित्य-कृतियाँ और सामान्य साहित्य, इतिहास, यात्रा, जीवन-चरित्र, मनोविज्ञान, धर्म, और कविता, उपन्यास व आलोचना आदि के व्यापक क्षेत्र की सर्वोत्तम पुस्तकें तथा बाल-साहित्य इत्यादि। इसके अतिरिक्त उसके पास उन नूतनतम पुस्तकों का स्टाक भी होना चाहिए जिसके विज्ञापन और जिनकी समीक्षा प्रकाशित होती रही है। सब चीजें रखना प्रत्यक्षतः उसके लिए असम्भव हैं, किन्तु यदि ग्राहक बार बार किन्हीं पुस्तकों की माँग करते हैं और उन्हें नहीं पाते तो वे निश्चय ही दूसरी दुकानों पर जाने लगेंगे। स्टाक की इस समस्या को अच्छी तरह समझने के लिए हमें सिर्फ पुस्तक-प्रकाशन के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए अंकों पर दृष्टिपात करना है। नई और पुनर्मुद्रित पुस्तकों की अत्यन्त बढ़ी हुई संख्या को देखते हुए बड़ी-बड़ी दुकानों तक के लिए भी प्रतिनिधि रूप में कुछ चुनिन्दा किताबों को रखने के अलावा और कुछ कर सकना असम्भव है और किताबों का चुनाव भी कोई आसान काम नहीं है। यदि हम मान लें कि गत वर्ष प्रकाशित १०,००० नई पुस्तकों में से आधी इतनी विशेषित थीं कि एक साधारण पुस्तक-विक्रेता के लिए उनका रखना आवश्यक न था तो उनमें से ५,००० पुस्तकें बचती हैं और ४००० वे पुस्तकें जिनका पुनर्मुद्रण हुआ था। तो यदि एक पुस्तक-विक्रेता इन ९००० पुस्तकों में से प्रत्येक की ६ प्रतियाँ भी मँगाता है तो उसे ५४,००० पुस्तकें खरीदनी होंगी। मैंने प्रकाशित पुस्तकों पर हुए औसत खर्च का हिसाब नहीं लगाया है, लेकिन अगर हम इस लागत को ४ शिलिंग मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें तो उस पुस्तक-विक्रेता को १०,८०० पौण्ड की पुस्तकें खरीदनी होंगी। किन्तु हम जानते हैं कि पुस्तक-विक्रेता इस तरह की खरीदारी नहीं करते। अगर ऐसा वे करने लगें तो उनका खात्मा ही हो जायगा। उनके पास किताबों का एक बुनियादी स्टाक होता है जिसे वे लगातार बेचते रहते हैं, और किताबों के रखने व प्रदर्शन के लिए जगह, उपलब्ध-पूँजी तथा एक सामान्य व्यापारिक वर्ष में कुल बिक्री के अपने अनुमान के आधार पर ही वे नई पुस्तकें रखते हैं। यह अन्तिम बात अर्थात् भावी बिक्री का अनुमान बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस पर आगे चलकर अच्छी तरह विचार किया जायगा। पुस्तक की दुकानों की असफलता का अक्सर यही कारण होता है कि खरीदारी और खर्च का बिक्री के साथ उचित सम्बन्ध कायम रखने में लापरवाही कर दी जाती है।

'बेकार' स्टाक

असफलता का दूसरा कारण 'बेकार' स्टाक है। अक्सर न बिकने वाली या मैली हो चुकी पुस्तकों को अलग करने में पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। यह काम विधिवत् किया जाना चाहिए। बड़ी और छोटी दुकानों में प्रचलित इस विषय की विभिन्न विधियों का पूर्ण विवरण आगे के लेखों में दिया जायगा। 'बेकार' स्टाक सभी पुस्तक-विक्रेताओं के लिए एक बड़ी समस्या है। पुस्तकों का खरीदार चाहे कितना ही निपुण और अनुभवी क्यों न हो उसकी अलमारियों में कुछ ऐसी किताबें इकट्ठी हो ही जाती हैं कि जो कभी नहीं बिकतीं। हो सकता है कि वे बहुत-अच्छी किताबें हों, पर उनकी माँग नहीं होती और इस तरह वे धीरे-धीरे पुरानी पड़ जाती हैं।

"पुस्तकों की बिक्री करना भी एक कला है और यद्यपि आज के इस यथार्थवादी युग में यह कथन अजीब मालूम होगा पर हममें बहुत से ऐसे हैं जिनके लिए अधिक-से-अधिक रुपया कमाने की अपेक्षा अपनी सेवा की उत्कृष्टता अधिक महत्त्वपूर्ण रही है।" ये आदर्श इस लेखमाला के लेखक के हैं। श्री टॉमस ए० जॉय बचपन से इसी व्यापार में पले हैं; उन्होंने किताबों को पैक करने और उनका बोझ उठाने, उन्हें खरीदने और व्यवस्थित करने आदि पुस्तक विक्रय सम्बन्धी सभी काम किये हैं। इनका सबसे बड़ा गुण, उनके अपने शब्दों में अपने काम के प्रति उनकी ईमानदारी रही है।

भारतीय परिस्थितियों को विशेष रूप से ध्यान में रख कर सम्पादित इस लेखमाला में आप पुस्तक-बिक्री की कलापूर्ण प्रविधियों के साथ ही इस व्यवसाय के कई उन विवादास्पद पहलुओं पर प्रकाश पाएंगे जिनकी जानकारी विशेषीकरण के इस आधुनिक युग में सफल पुस्तक—विक्रेता बनने के लिए प्रायः अनिवार्य ही है।

पुस्तक-विक्रेताओं का अक्सर यह अनुभव है कि यदि किसी पुस्तक की छः प्रतियाँ खरीदी हैं तो उनमें से ... बिकी हैं, या यदि तीन प्रतियाँ खरीदी हैं तो केवल ... बिक पाई हैं, जिसका मतलब है कि उन्हें कोई मुनाफा ... हुआ। प्रायः सभी किताबें पक्की तौर पर खरीदी ... यानी अगर वे नहीं बिकतीं तो उन्हें अपने हिसाब में ... नहीं जा सकता। पब्लिक में मुझे कुछ लोग ऐसे मि... जिनका खयाल है कि यदि पुस्तकें नहीं बिकतीं तो उन्हें ... प्रकाशकों को लौटाया जा सकता है, पर पुस्तक-विक्रेता ... सौभाग्यशाली स्थिति ... होता; उसे किताबें ... पड़ती हैं और उनकी ... अदा करनी पड़ती है, ... जो कुछ माल उसकी अ... रियों में बचा रह जा... उसका नुक्सान उसे खु... उठाना पड़ता है। ... है कि कभी-कभी कोई ... किसी पुस्तक की कुछ ... यदि वे बिगड़ी न हों ... वापस लेने के लिए तै... जाता है अथवा कुछ ... 'बिक्री अथवा वाप... शर्त पर भी दे देता है ... यह सब उदाहरण अ... हैं। व्यावहारिक रूप ... कोई पुस्तक किसी एक ... में नहीं बिकती तो अक्सर दूसरी दुकान में भी मुश्किल ... बिकती है और अन्त में दोनों दुकानदारों तथा प्रकाशक ... उस पुस्तक की ऐसी प्रतियाँ बच जाती हैं जिन्हें कोई नहीं ... चाहता। यह पुस्तक-व्यवसाय की एक ऐसी समस्या ... अभी तक हल नहीं हुई है यद्यपि इस विषय को लेकर ... विक्रेताओं और प्रकाशकों के बीच अनेकों बार विचार वि... हो चुका है और इस सम्बन्ध में अनेकों योजनाओं पर ... किया जा चुका है।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

"मेरी एक पुस्तक **गुप्तजी की यशोधरा** सन् १६४८ में प्रकाशक के यहाँ से प्रकाशित हुई थी और शर्त थी २० प्रतिशत रायल्टी। लेकिन दोनों के बीच कोई लिखा पढ़ी नहीं हुई थी। सभी पुस्तकें बिक गईं सन् १६५० तक। सन् १६५१, १६५२, १६५३ तक आउट आफ़ प्रिण्ट रही। अब तक उन्होंने एक पैसा भी नहीं दिया। खैर, मैंने उन्हें कई बार कहा, पर सर्वदा नकारात्मक उत्तर देते गए। बेबस होकर मैंने इस वर्ष अप्रैल मास में वकालतन नोटिस दिया और लिखा कि आप मेरा रायल्टी का रुपया दे दें तथा उसके पुनर्मुद्रण के लिए मुझसे लिखित आज्ञा ले लें। पर उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने मुकदमा दायर करना अच्छा नहीं समझा क्योंकि यह शोभा नहीं देता। आज मुझे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि उक्त प्रकाशक ने मना करने के बावजूद भी किताब छपवा ली है। इधर मेरी किताब संशोधित और परिवर्द्धित होकर छप रही है। प्रथम संस्करण में बाईस अध्याय हैं। उनके यहाँ से प्रथम संस्करण वाली पुस्तक दो-चार रोज़ में आ जायगी और मेरी संशोधित पुस्तक जनवरी तक निकल जायगी।"

—कृष्णकुमार सिन्हा,
६०, तूतबाड़ी, गया।

"···अपनी बात से इन्कार कर गए। उनका पत्र मेरे पास है जिसमें उन्होंने लिखा था कि एग्रीमेण्ट फ़ार्म मिलने पर ···जी को १२० रु० दे देंगे। उन्होंने लिखा है कि ···जी को रुपये वे नहीं दे सकते, इसलिए ···जी ने एग्रीमेण्ट वापिस कर दिया।···एक प्रकाशक लेखक की इच्छा के विरुद्ध मनमानी करता चला जाय, अपने दिये हुए पवित्र वचन से फिर जाय, यह कहाँ तक न्याय-संगत है?"

—कन्हैयालाल सहल,
बिड़ला आर्ट्स कालेज, पिलानी।

"प्रकाशन-समाचार के दिसम्बर अंक से ज्ञात हुआ कि एक प्रकाशक संघ के संगठन का प्रयास हो रहा है। यह बहुत अच्छी बात है। आप मुझे सलाह दें कि वह लेखक क्या करे जिनकी पांडुलिपि किसी प्रकाशक ने दबा ली हो?

जुलाई १०, १६५३ को मैंने अपनी पुस्तक 'व्यक्ति और समाज' की पांडुलिपि ···वालों को देखने के लिए भेजी थी। उसके पश्चात् उनकी प्राप्ति-स्वीकृति मिल गई, किन्तु अब तक फ़िर उनका कोई पत्र नहीं आया जब कि मैंने उन्हें बीसियों पत्र लिखे होंगे।···वे न तो पुस्तक लौटाते हैं, न कोई उत्तर ही देते हैं। आखिर, आज एक रजिस्टर्ड पत्र भेज रहा हूँ।"

—यशदेव शल्य,
लाइन बाज़ार, फ़रीदकोट।

हम तो इतना ही कह सकते हैं कि प्रकाशकों के ऐसे व्यवहार से ही लेखक-जगत् में क्षोभ फैलता है। उपरोक्त तीन पत्रों के विषय में सम्पादकीय टिप्पणी देखें। सं०

"कल मैं गया कालेज की लायब्रेरी में था। उस वक्त देखा कि आपका **प्रकाशन-समाचार** पहुँचा हुआ है। आज ही हमें भी मिला है। प्रकाशकों के लिए जो आपकी कोशिश है, सराहनीय है। मगर भाई जी, इसके दिसम्बर अंक में तीसरे कवर पृष्ठ पर जो इस प्रकाशन का विज्ञापन छपा है, जिसमें कमीशन की दरें २५% और ३३% प्रकाशित की गई हैं, यह दुकानदारों के हक में आपने अच्छा नहीं किया। **प्रकाशन-समाचार** पुस्तक-विक्रेताओं के वास्ते है और होना चाहिए, पर इसे आप वहाँ भी पहुँचाने में बाज नहीं आते जहाँ पुस्तक-विक्रेता आपकी छपी पुस्तकें बेचते हैं।···इससे विक्रेताओं को नुकसान पहुँचेगा।"

—गोपाल
एम. पी. बुक स्टाल, गया।

हम इस विचार से सहमत नहीं हैं। पुस्तकालयों में 'प्रकाशन समाचार' पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों के ही लाभ के लिए भेजा जाता है। कमीशन की दरें दे देने से उन्हीं दूकानदारों को दिक्कत पेश होगी जो पुस्तकालयों को अधिक से-अधिक कमीशन देने में परस्पर प्रतियोगिता करते हैं। पुस्तकालयों के लिए कमीशन की दरें नियत होनी चाहिएँ और 'एजुकेशनल कमीशन' से अधिक देने की बात ही न उठनी चाहिए। सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रेल द्वारा भेजी जाने वाली पुस्तकों का भाड़ा भी बहुत अधिक है। मालगाड़ी के कुल १५ क्लास हैं जिनमें पुस्तकें १४वें क्लास में हैं। यह शिक्षा पर एक तरह का कर है। शराब-जैसी चीजें १०वें क्लास में हैं। पुस्तकों के क्लास को घटाने के लिए कई वर्षों से जोरदार प्रयास किया जा रहा है। अब वस्त्र के बाद शिक्षा का नम्बर है और पुस्तकें ७वें क्लास से ज़्यादा रेट में नहीं रहनी चाहिएँ। बहुत प्रयत्न के बाद रेलवे-बोर्ड ने १-१०-५३ से पुस्तकों के वेगन-लोड पर १०वीं क्लास की रेट लगानी स्वीकार की परन्तु पूरे वेगन का भाड़ा लेने की शर्त लगाई जब कि उतनी पुस्तकें वेगन में समाती ही नहीं हैं। बहुत लिखा-पढ़ी के बाद फ़ैसला भरा गया और अब इस प्रश्न का शीघ्र ही निपटारा हो की आशा है। हमारी मांग है कि वेगन रेट कम-से-कम मन की ली जानी चाहिए। ज़्यादा जितना माल लादा उस पर उतने वज़न की ले ली जाय।

रेल पारसल से जाने वाली पुस्तकों का भाड़ा भी लगना चाहिए, जैसा कि हैन्डलूम कपड़े का लगता है। सम्बन्ध में भी काफ़ी पत्र-व्यवहार हो चुका है।"

—बजरंगलाल चांदगोठिया
गीता प्रेस, गोरखपुर

हमारा नया प्रकाशन

काव्य दर्पण—	पं० रामदहिन मिश्र	१०)
काव्यालोक—	,, ,, ,,	७)
काव्य विमर्श—	,, ,, ,,	७)
काव्य में अप्रस्तुत योजना—	,, ,, ,,	५)
काव्य शास्त्र की भूमिका—	,, ,, ,,	१)

- साहित्य और संस्कृति—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के सभ्यता, संस्कृति, कला और साहित्य सम्बन्धी विचार
- तिरिचमीर—पच्छिमी हिमालय की सर्वोच्च चोटी के साहसपूर्ण अभियान की सरस कहानी
- भूगर्भ काश्मीर—सुप्रसिद्ध कवि हंसकुमार तिवारी की काश्मीर यात्रा का मनोहर एवं ललित वर्णन
- हँसता जीवन— पं० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' के साहित्यिक और रसपूर्ण निबन्धों का संग्रह
- हमारा सांस्कृतिक साहित्य—प्रो० जगन्नाथ राय शर्मा द्वारा प्रस्तुत हमारे सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने वाले साहित्य की विस्तार पूर्ण चर्चा
- टोटका विज्ञान—रोगों की औषधियों तथा चुटकुले निदानों का निचोड़
- आचार्य विनोबा भावे—भूदान यज्ञ के प्रवर्तक की जीवन कथा
- भारत का ऐतिहासिक एटलस—नक्शे के माध्यम से भारतीय इतिहास का पूर्ण विवेचन
- भारतीय प्रशासन और नागरिक जीवन—भारतीय शासन और नागरिकता सम्बन्धी ज्ञान
- उपनिषद् कथा—अध्यात्म और शाश्वत सत्य को उपस्थित करने वाली आदर्श कहानियाँ
- प्रकाश की ओर—वैज्ञानिक अनुसंधानों की कहानी
- अपना पराया— छोटे बच्चों के दर्दमय जीवन का अनुभूतिपूर्ण उपन्यास

ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...के एक महान् उपन्यासकार का अनुभव

लेखक और प्रकाशक का सम्बन्ध

स्टीफन ज़्विग

...दूसरा घर पा लिया - वह प्रकाशन-गृह जिसने ...तक मेरी समस्त कृतियों का संरक्षण और संदीपन ...है। लेखक के जीवन में प्रकाशक का चुनना बहुत महत्त्व ...है और मेरे लिए तो यह चुनाव और अधिक सौभाग्य- ...नहीं हो सकता था। एक सुसंस्कृत कलानुरागी कवि ...ने धन को रेस के घोड़ों पर लगाने की अपेक्षा एक ...कार्य में उसका उपयोग करना निश्चित किया। ...ड वाल्टर हेमैल ने, जो कि कवि के रूप में विशेष ...नहीं रखता था, जर्मनी में, जहाँ कि प्रकाशन कार्य ...: व्यापारिक दृष्टि से ही किया जाता था, एक ऐसे ...न-गृह की नींव डालना तय किया कि जिसके प्रकाशन ...में किसी कृति का व्यापारिक मूल्य न होकर उसके ...की खूबी हो, कि भौतिक लाभ की अपेक्षा सतत क्षति ...न में रखकर काम किया जाय। हल्के साहित्य के ...वहाँ कोई स्थान न था चाहे उसमें कितना ही मुनाफा ...हो, जब कि अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और प्रायोगिक साहित्य ...के लिए सदा दरवाज़े खुले थे। केवल विशुद्धतम रूप की ...को ही स्वीकृत करना इस अनन्य प्रकाशन-गृह का ...था जो कि आरम्भ में केवल कुछेक वास्तविक कला-...को लेकर ही विकसित हुआ था। अपने पृथकत्व में ...गर्व अनुभव करके उसने अपना नाम 'डाइ इन्सेल' ...'द्वीप' रखा। उसकी पुस्तकें किसी एक कारखाने में ...एक-सी नज़र आने वाली न होती थीं, बल्कि ...कृति के मुद्रित रूप को एक ऐसी बाह्य अनन्यता प्रदान ...जो कि उसकी अन्तर्वर्ती परिपूर्णता के अनुरूप हो; ...प्रकार प्रत्येक पुस्तक का मुख पृष्ठ, उसकी छपाई, ...और कागज़ की किस्म सदा एक नई और वैयक्तिक ...पेश करती थी। यहाँ तक कि इस महत्त्वाकांक्षी ...-गृह के सूचीपत्र तथा उनकी लेख-सामग्री भी एक

उत्कट सोच-विचार की वस्तु बन चुकी थी। उदाहरण के लिए, तीस वर्ष के अपने सम्बन्ध में मुझे एक भी ऐसा मौका याद नहीं जब कि मेरी किसी भी पुस्तक में छपाई की एक भी ग़लती रह गई हो या इस प्रकाशन-गृह से मेरे नाम आये हुए पत्रों में एक भी पंक्ति संशोधित की गई हो। हर चीज़ की छोटी से-छोटी बारीकी तक को एक आदर्श के रूप में पेश करने की कोशिश की जाती थी।

मेरी खुशी और गर्व का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि जब छब्बीस वर्ष की उम्र में ही मुझे इस 'द्वीप' की स्थायी नागरिकता प्रदान की गई तो मैंने अपने आपको सम्मानित अनुभव किया। इस सम्बन्ध का बाह्य महत्त्व साहित्यिक उन्नति में था, अन्तरित रूप में इसका अर्थ था बढ़ी हुई जिम्मेदारी। जो कोई भी इस चुनिंदा दायरे में कदम रखता था, उसे आत्मानुशासन और आत्म-नियन्त्रण का अभ्यास करना पड़ता था, साहित्यिक उड़ान की उसे इजाज़त न थी और पत्रकारिता की जल्दबाजी का दोषी ठहराए जाने का वह दुस्साहस न कर सकता था, क्योंकि इस प्रकाशन-गृह का नाम, आरम्भ में हजारों और बाद में लाखों लोगों के लिए, न केवल पाठ्य-विषय की उत्कृष्टता बल्कि मुद्रण-कला सम्बन्धी प्रत्येक वस्तु की आदर्शभूत परिपूर्णता की गारंटी था।

किसी भी लेखक का युवावस्था में ही एक युवा प्रकाशन-गृह के सम्पर्क में आ जाना और उसी के साथ विकसित होने से बढ़कर उसके लिए और कोई सुखद घटना नहीं हो सकती है, क्योंकि इसी प्रकार के विकास में लेखक, उसकी कृति और बाहरी संसार के बीच एक मार्मिक सम्बन्ध स्थापित हो सकता है।···तीस वर्ष पश्चात् स्थिति बदली हुई नज़र आ रही थी; वह नाज़ुक कारोबार महानतम प्रकाशन-गृह बन चुका था और वह लेखक, जिसका आरम्भ में एक सीमित दायरा था, जर्मनी में सबसे ज्यादा पढ़ा जाने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में अंग्रेज़ी पुस्तकों का व्यवसाय

डॉ० कर्ट ईनॉक

डा० कर्ट ईनाक अमेरिका की सस्ते मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रसि संस्था 'द न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी' के अध्यक्ष हैं। यह भाषण उन्होंने अमेरि में भारत के दूतावास के यहाँ एक सभा में ९ अप्रेल १९५३ को दिया था

हिन्दुस्तान के आज के साहित्यिक जगत् का निरूपण करने से पहले मैं यह कह दूँ कि मैं न तो कोई विद्वान् हूँ, न लेखक और न पत्रकार। मैं महज़ एक अमेरिकन प्रकाशक हूँ जिसने १९५२ में यहाँ के पुस्तक-व्यवसाय के संगठन और आवश्यकताओं आदि का अध्ययन करने के लिए हिन्दुस्तान का दौरा किया। स्वाभाविक है कि मेरे अध्ययन का क्षेत्र अँग्रेजी भाषा की पुस्तकों तक ही सीमित रहा, लेकिन कुछ हद तक मैं भारतीय साहित्यिकों की गतिविधि से भी परिचित होने की कोशिश में रहा। मैं कुछ ऐसी कृतियाँ भी पाना चाहता था जिनका मैं अमेरिका में प्रकाशन कर सकूँ। समयान्तर से प्रकाशित होने वाले अपने प्रकाशन "न्यू वर्ल्ड राइटिंग" के लिए भी मैं हिन्दुस्तान के लेखकों के करीब आना चाहता था।

हिन्दुस्तान में अपने ज्ञानार्जन के दौरे में मेरी विशेष दिलचस्पी का एक कारण और भी था। मेरे विचार में अमेरिका में मेरी व मेरी-जैसी अन्य प्रकाशन-संस्थाओं ने अत्यधिक सफलता से सस्ती किताबें छापने और उन्हें वितरित करने के जो अनोखे ढंग अपनाए हैं, उन्हें इस देश में सफलतापूर्वक अपनाया जा सकता है—इस देश में जहाँ कि आबादी बहुत अधिक है और प्रति व्यक्ति के हिसाब से आय बहुत कम। मैंने यहाँ जो कुछ जाना, उसका सार यह है : हिन्दुस्तान में किताबों के लिए ऐसी एक 'भूख' है जिसे मैंने अमेरिका में अथवा दूसरे उन देशों में, जहाँ मैं रहा अथवा नहीं पाया। इसके साथ ही वहाँ लेखक, प्रकाशक और को एक सूत्र में बाँधने की व्यवस्था बहुत ही अपर्याप्त है

मुझे इस बात ने बहुत प्रभावित किया कि किताबें ज्ञान हासिल करने की उत्कट प्रेरणा वहाँ मौजूद है— विषयों का ज्ञान जिन्हें एक सजग मस्तिष्क आज की को समझने के लिए जानना चाहेगा—उद्योग-धन्धों और सन्दर्भ की पुस्तकों की, व्यक्तित्व के विकास और में सहायक पुस्तकों की माँग है। 'उत्कट प्रेरणा' इशारा बुद्धिजीवियों के छोटे वर्ग की ओर नहीं है सामान्य लोगों के असीम वर्ग की ओर—व्यापारी, और आज के नये शहरों के निवासी, आदि। ऐसी पुस्तकों दिलचस्पी, जिनसे किसी प्रकार का ज्ञान प्राप्त हो कहानी-उपन्यास में दिलचस्पी से मुझे कहीं अधिक दी कम-से-कम ऐसे स्तर के कहानी-उपन्यासों से जिनसे मनोविनोद ही होता है। ज्ञान-पान की इस जन अभि साथ ही सब प्रकार के प्रकाशित 'अक्षर' के लिए सम्मान मुझे दिखाई पड़ा। मुझे यह भी मालूम पड़ा कि हिन्दी में छपे हुए अखबारों व पुस्तकों को पाँव से छूना नहीं समझा जाता।

इस बात की सम्पुष्टि इसमें भी मिलेगी कि हिन्दी की किताबों की दुकानों में अमेरिका व यूरोप की पु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ साहित्यिक प्रकाशन

अंग्रेज़ी साहित्य परिचय—पं० दयाशङ्कर शर्मा एम०ए० तथा पं० कृपाशङ्कर शर्मा एम० ए०। आँग्ल भाषा का संक्षिप्त इतिहास लेखकों की आलोचना के साथ रोचक भाषा में दिया है। पृष्ठ-संख्या लगभग ३०० मूल्य ३)

मराठी साहित्य परिचय—लेखक प्रो० गोडबोले एम० ए०। मराठी साहित्य लेखकों की आलोचना व उनका हिन्दी पर क्या प्रभाव पड़ा है, लेखक ने यह सरलता से समझाया है। पृष्ठ-संख्या २५० मूल्य ३)

उर्दू साहित्य परिचय—ले० पं० हरिशङ्कर शर्मा। विद्वान् लेखक ने इस में उर्दू लेखकों का परिचय, उनकी हिन्दी-सेवा आदि के साथ-साथ उनकी श्रेष्ठ कविताओं का संग्रह भी दिया है। पृष्ठ लगभग ५००; सजिल्द; मूल्य ६)

अभिनव हिन्दी कोष—सम्पादक पं० हरिशङ्कर शर्मा—साहित्य में प्रचलित शब्दों के अर्थ के साथ-साथ पुस्तक के अन्त में संविधान शब्दावली भी दी गई है। पृष्ठ-संख्या लगभग ६००; आकार डबल क्राउन; मूल्य ८)

उर्दू हिन्दी कोष—सम्पादक कविरत्न पं० हरिशंकर शर्मा। पृष्ठ संख्या ६३०; आकार क्राउन; मूल्य ६)

शंकर-सर्वस्व—सम्पादक श्री हरिशङ्कर शर्मा कविरत्न। महाकवि स्वर्गीय श्री नाथूरामशंकर की कविता का संग्रह। आकार डिमाई; पृष्ठ-संख्या लगभग ५५०; मू० १२)

आधुनिक कविता की भाषा— आधुनिक हिन्दी के प्रमुख कवियों की काव्य-कृतियों के आधार पर भाषा की दृष्टि से उत्कृष्ट आलोचनात्मक ग्रन्थ। लेखक श्री बृजकिशोर चतुर्वेदी। पृष्ठ-संख्या ५४०; सजिल्द; मूल्य ६)

भारत की नदियाँ—लेखक ब्रजरत्न दास बी. ए., एल. एल. बी. मूल्य २)।

नवोत्सव मंजरी—ले० ब्रजरत्नदास, बी. ए. एल. एल. बी.। मूल्य २॥)

हिन्दी साहित्य में निबन्ध—लेखक श्री ब्रह्मदत्त शर्मा एम. ए.। मूल्य २॥)

गया प्रसाद एण्ड संस, प्रकाशक व विक्रेता
बांके विलास, आगरा (उत्तर प्रदेश)

अनुपात में कहानी-उपन्यासों की मात्रा बहुत ही कम रहती है। अपनी प्रकाशन संस्था (न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी) का भी यही अनुभव है: हिन्दुस्तान के पुस्तक-विक्रेताओं ने उपन्यासों के स्थान पर अपेक्षातर दूसरे देशों के पुस्तक-विक्रेताओं से गम्भीर पुस्तकें कहीं अधिक मात्रा में खरीदी हैं।

दूसरी ओर, अच्छी पुस्तकों की इस माँग को पूरा करने की व्यवस्था इस देश में असन्तोषजनक है। हिन्दुस्तान में काफी पुस्तकालय हैं। सार्वजनिक पुस्तकालय, विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय (जिनमें से कइयों में पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण संग्रह हैं) और ग्राम्य पुस्तकालय। इसके अतिरिक्त लोक-शिक्षा की बहुत-सी संस्थाएँ हैं जो छोटे-छोटे पुस्तकालय चलाती हैं। इन सब के लिए पुस्तकों की पर्याप्त संख्या प्राप्य नहीं है; विभिन्न प्रकार की रुचियों के लिए अलग-अलग प्रकार की पुस्तकों का भी अभाव है।

हिन्दुस्तान में किताबों की दुकानें कितनी हैं, इसका निश्चय करना कठिन है। डायरेक्टरियों में कुछ हजार दुकानदारों के नाम व पते मिलते हैं लेकिन मैं अपने दौरे में और भारतीय प्रकाशकों और वितरकों से अपने सम्पर्क से यही जान पाया हूँ कि देश में अच्छे और महत्त्वपूर्ण पुस्तक-विक्रेताओं की कुल संख्या पचास के ही लगभग है; इसके अलावा कुछ सौ के करीब ऐसी दुकानें भी हैं जो किताबें बेचती हैं और जिनका संचालन अभ्यस्त और चतुर व्यक्ति कर रहे हैं। इनमें से अधिकांश विक्रेता अपने ग्राहकों को नई पुस्तकों की सूचना नियमित रूप से नहीं पहुँचाते और नये प्रकाशनों को पर्याप्त संख्या में नहीं बेच पाते। इसी प्रकार, बहुत कम स्थानीय प्रकाशक अपने घुमक्कड़-प्रतिनिधि रखते हैं; वे अपने प्रकाशनों की बिक्री ज्यादातर चिट्ठी-पत्री के भरोसे पर ही करते हैं। विज्ञापन भी बहुत ही कम किया जाता है जब कि हिन्दुस्तान के प्रायः सभी बड़े मासिक व समाचार-पत्र पुस्तक-परिचय तथा समीक्षा को काफी महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं। थोक-विक्रेताओं की संख्या नगण्य है और जो हैं भी, उनका संगठन भी ढीला है। छोटे पुस्तक-विक्रेताओं से कम खर्च पर और निरन्तर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए थोक पुस्तक-विक्रेताओं की सेवाएँ बहुत आवश्यक हैं।

स्टेशनों और बड़े-बड़े होटलों में पुस्तकों की दुकानें हैं; पटरी पर बैठकर किताबें बेचने वालों की संख्या काफी है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थानीय मण्डियों में भी छोटी-मोटी किताबों की दुकानें जमीं हैं। लेकिन पुस्तक-बिक्री के इन छोटे साधनों का, जहाँ मुख्यतया पत्र और सस्ते दाम की व सेकण्ड-हैण्ड किताबें बिकती हैं, इस ढंग का विकास नहीं किया गया कि इन्हीं से बढ़िया किस्म की लेकिन दाम में सस्ती किताबें बिकें, जैसा कि अमेरिका में हो चुका है। इन छोटे दुकानदारों से मुख्य सम्बन्ध स्थानीय, अपेक्षातर बड़े लेकिन परचून में ही पुस्तकें बेचने वाले का होता है जो कभी-कभी स्वयं ही थोक में भी पुस्तकें बेचता है और कभी-कभी स्वयं ही पुस्तकों का प्रकाशन भी करता है।

इस स्थिति को भारत की आर्थिक दशा, यातायात की समस्याओं, स्थानीय भाषाओं की विविधता आदि को ध्यान में रखकर समझा जा सकता है। लेकिन इस तथ्य को नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता कि परचून की बिक्री के साधनों की एक बड़ी संख्या, जिनका सम्बन्ध सीधे प्रकाशकों से हो और जिनके समर्थन में काफी प्रचार-प्रसार और विज्ञापन आदि किया जाय, जनता में पाठक-वर्ग के विकास के लिए बहुत ही आवश्यक हैं। इसके महत्त्व का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि सस्ती किताबों के उत्पादन के कारण, जो लगभग एक लाख छोटे-मोटे दुकानदारों से खरीदी जा सकती हैं, अमेरिका में पढ़ने की आदत बहुत बढ़ गई है। इस क्रान्ति की कृपा से ही बहुत-सी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ, जो पहले कुछ हजार लोगों तक ही पहुँचती थीं, अब लाखों की तादाद में छपती हैं। अमेरिका में सस्ते दामों की किताबों का उत्पादन १९४५ में ६ करोड़ से बढ़कर १९५२ में २५ करोड़ की संख्या को छू गया है। यदि हम पुस्तकों को सांस्कृतिक विकास का आवश्यक साधन मानते हैं तो आवश्यक है कि हम अधिक-से-अधिक संख्या में ऐसी पुस्तकों का, इतने कम दामों पर, प्रकाशन करने की व्यवस्था पैदा करें कि अधिक-से-अधिक लोग उनसे लाभ उठा सकें।

अब मैं किताबों के मूल्य के प्रश्न पर आता हूँ। ऐसे देश में, जहाँ ५०० रुपये की तनख्वाह को ऊँची तनख्वाह माना जाता हो, जहाँ अधिकतर सरकारी क्लर्क और छोटे-मोटे अफ़सर ८५ से १०० रुपये तक प्रतिमास पाते हों, जहाँ विद्यार्थियों को खर्च के लिए कुल मिलाकर ६० से ७० रुपये माहवार से अधिक न मिलता हो, मूल्य का प्रश्न निश्चय ही टेढ़ा है। इसलिए यह अधिक खेद की बात है कि अं... की सस्ते दाम की अधिक किताबें इंग्लैण्ड के प्रकाशकों... कापीराईट के समझौतों के कारण हिन्दुस्तान में नहीं बेची... सकतीं। ब्रिटिश कॉमनवेल्थ का अंग होने के कारण हिन्दुस्तान में बहुत सी पुस्तकों के वितरण आदि सम्बन्धी अधिकार ब्रि... के प्रकाशकों के लिए सुरक्षित हैं और ब्रिटेन के प्रकाशकों... सस्ती किताबें छापने की ओर अमेरिका जैसे अभी महत्त्व... कदम नहीं उठाये हैं। अमेरिका के प्रकाशकों ने यूरोप... अमेरिका के उच्चकोटि के साहित्य का प्रकाशन कम दाम... आकर्षक पुस्तकों में किया है। बहुत ही अधिक विशि... वैज्ञानिक व टैकनिकल पुस्तकों को छोड़कर आज की दुनि... का सर्वोच्च उपन्यास व अन्य उपन्यासेतर गम्भीर साहित्य... प्रकाशकों ने छापा है और जैसा मैं पहले कह चुका... हिन्दुस्तान के पाठक-वर्ग में ऐसे ही साहित्य की अ... माँग है।

जैसा कि मैंने पहले कहा था, मैं अँग्रेज़ी की किताबों... बारे में ही बोलने का अधिकारी हूँ और जो कुछ मैंने... उन्हीं से सम्बन्धित है। इसका मतलब यह नहीं है कि... अंग्रेज़ी में प्रकाशित पुस्तकों को हिन्दुस्तान में कम महत्त्व... समझता हूँ। यह स्वाभाविक ही है कि अंग्रेज़ी सम्प... पिछले १५० वर्षों के घनिष्ठ सम्पर्क के कारण अंग्रेज़ी... की पुस्तकें अन्य अभारतीय भाषाओं की पुस्तकों की अ... कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान पाएँ। अभी तक अंग्रेज़ी... की सरकारी भाषा है और देश की आबादी के पढ़े-लिखे... द्वारा बखूबी बोली, समझी व पढ़ी जाती है। हिन्दुस्तान... कई लेखकों की कलापूर्ण कृतियाँ अब तक अंग्रेज़ी में... जाती हैं और देश के कई बड़े-बड़े समाचार-पत्र इसी... में हैं।

अंग्रेज़ी के भविष्य के बारे में कुछ निश्चयपूर्वक... कहा जा सकता। हिन्दुस्तान के आज़ाद होने पर हिन्दी... राष्ट्रभाषा घोषित किया गया और विधान के अनुसार १९... तक देश के समूचे शासन ने इसे अपना लेना है। लेकिन... इसका अभिप्राय आवश्यक रूप से यही नहीं है कि अंग्रेज़ी... भाषा का साहित्य, समाचार-पत्रों आदि का इसके बाद प्र... रुक जाने वाला है। हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री ने कहा... 'मेरा विश्वास है कि अंग्रेज़ी दुनिया में अपनी स्थिति...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हिन्दुस्तान में बड़े हद तक समझी जाने के हमारे भविष्य की कार्यवाहियों में महत्त्वपूर्ण भाग लेती है।

...र के महान् देशों में से एक होने के कारण आज ...र के दूसरे देशों से सांस्कृतिक, आर्थिक और राज-...नय हैं जिनके लिए अंग्रेज़ी की उपयोगिता उत्तरोत्तर ...जा रही है। हिन्दी के लिए अंग्रेज़ी को अपदस्थ ...और देश की जनता की दस से अधिक दूसरी महत्त्व-...ओं को शासन-क्षेत्र से स्थानान्तरित करने में अभी ...लगेगा। इन भाषाओं की अपनी-अपनी सांस्कृतिक ...है और हरएक भाषा अपने समृद्ध साहित्य की भी ...है।

...ओं की इस गुत्थी को सुलझाने के अतिरिक्त मौलिक ...पुस्तकों के निर्माण में, वैज्ञानिक पाठ्य-पुस्तकों के ...प्रकाशन में, अभी प्रकाशित करने में बरसों लगेंगे। ...रचनात्मक साहित्य के स्रष्टा लेखक भी हिन्दी को ही ...अपनाने में इससे भी अधिक समय लेंगे।

...अंग्रेज़ी भाषा का साहित्य मुख्यतया इंग्लैण्ड से ...। इसका कारण इंग्लैण्ड से अपेक्षया घनिष्ठतर ..., आर्थिक व राजनीतिक सम्बन्ध ही हैं। दूसरे कई-...भी हैं, जैसे मुद्रा, मूल्य, आयात की सुविधाएँ, ...आदि। यह भी सत्य है कि बाहर से आई अंग्रेज़ी ...की तुलना में हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी की पुस्तकों ...का धन्धा छोटा है। यद्यपि यहाँ छपाई और ...के साधन प्राप्त हैं, फिर भी अंग्रेज़ी की किताबें ...ही मँगवाने में सस्ती पड़ती हैं, विशेषतया ऐसे ...पुस्तकें जिनमें भारतीय रुचि की प्रधानता नहीं ...के आयात का महत्त्व इस बात से ज़ाहिर हो ...कुछ विदेशी प्रकाशकों ने हिन्दुस्तान में अपने ...रखे हैं अथवा स्थायी प्रतिनिधि नियुक्त कर रखे ...आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मैक्मिलन हिल, न्यू ...लाइब्रेरी। लेकिन प्रायःतर किसी हिन्दुस्तानी संस्था ...के आयात करने का और वितरण का अधिकार ...अपना समय-समय पर विशेष प्रतिनिधि भेजने का ही ...है।

हिन्दी कथा-साहित्य का मील-स्तम्भ

राहुलजी लिखते हैं : "आपकी कलम की दाद दिये बिना नहीं रह सकता। आपकी कहानियाँ बड़ी रोचक और भाषा प्रांजल एवं सजीव है।"

प्रमुख वितरक:

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय प्रकाशक संघ

मैं लेखक-प्रकाशक को तब तक प्रकाशक नहीं समझता जब तक कि पर्याप्त संख्या में पुस्तकें न प्रकाशित कर चुका हो, जैसे कि श्री जैनेन्द्र कुमार। मेरे मन में प्रकाशकों से सम्बन्धित दो समस्याएँ प्रमुखता से आती हैं : हिन्दी के प्रकाशनों की जिल्दबन्दी की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। दूसरे जिस प्रश्न की ओर विशेष ध्यान आवश्यक है, वह व्यापाराना कमीशन के निर्धारण का है।

नरोत्तम भार्गव,

अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

कमीशन की दर···हर प्रकाशक को चाहिए कि वह कमीशन की निश्चित दर करें, कोर्स पर अलग और सामान्य पुस्तकों पर अलग, ताकि पुस्तक-विक्रेता, एक कमीशन की दर पुस्तकालयों या स्कूलों को दें जो कि प्रकाशक-संघ नियत कर दे या कुछ न दें। अगर पुस्तक-विक्रेता अधिक कमीशन देते हैं, तो एक आवाज से प्रकाशकों को चाहिए कि उनको पुस्तकें देना बन्द कर दें। उन्हें दूसरों के लिए कुछ बलिदान भी करना होगा। यही कमीशन पुस्तक-विक्रेताओं की जीविका है और इस पर प्रकाशक ही कुठाराघात करते हैं।

प्रकाशक किसे मानें···इसके लिए प्रकाशक संघ ही नियत करे कि ४० या ५० पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्थाएँ प्रकाशक होने का हक रखें।

राजकुमार भार्गव

राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, पटना

प्रकाशकों और साहित्यिकों का आपसी सम्बन्ध दिन-प्रतिदिन ढीला पड़ता जा रहा है और राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिए दोनों का सम्मिलित सहयोग अनिवार्य है, पर दोनों के दृष्टिकोण दो हैं—एक के आगे अर्थोपार्जन और दूसरे के आगे जीविका-निर्वाह। जिसका नतीजा प्रायः यह होता है कि दोनों मूल उद्देश्य को भूल निम्न स्तर में उतर जाते हैं। प्रकाशक संघ बने और जरूर बने, किन्तु इस खाई को पाटना उक्त संघ का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए, अन्यथा आगे च प्रकाशक संघ से साहित्यिक समाज खार खा बैठेगा।

जहाँ तक उक्त संघ के कार्यालय की बात है, मैं चाहूँगा कि प्रधान कार्यालय दिल्ली में हो और इ शाखाएँ हर प्रान्त की राजधानी में हों।

रामकिशोर

श्री गिरिजा पुस्तकालय,

प्रकाशक-संघ में पुस्तक विक्रेताओं को भी सदस्य जाय, क्योंकि जो समस्या हल करनी है वह है बिक्री की। प्रकाशन-कार्य उतना कठिन नहीं हैं, जितना पुस्तकों की करना है।

आल इण्डिया बेसिस पर एक ऐसा संगठन बनाया जिसके द्वारा प्रकाशित होते ही पुस्तक की बिक्री शुरू जाय और ऐसा न हो कि अच्छी-से-अच्छी पुस्तक वर्ष तक पड़ी रहे।

प्रकाशक होल-सेलर होता है और बुकसेलर रि दोनों का जब तक सहयोग न होगा किताबों की बि बढ़ेगी और किताबें न बिकने से प्रकाशन रुकेगा। प्रकाशन के साथ-साथ सामूहिक बिक्री की ओर मुख्य देने की आवश्यकता है।

नारायण प्रसाद

ज्ञान मन्दिर,

अ० भा० प्रकाशक संघ के आपके प्रस्ताव पर प्रकाशकों के विचारों को भी मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा है। तुच्छ सम्मति में इस प्रकार के संघ की आवश्यकता है यदि हम लोग दत्त-चित्त होकर इस काम में लगेंगे तो प्र व्यवसाय की बड़ी उन्नति कर सकते हैं। हाँ, सभी सं में मुख्य कार्यकर्ता थोड़े ही होते हैं, शेष लोग उनको मात्र देते हैं।

बजरंग लाल चाँदगोठि

गीता प्रेस, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकविक्रेता प्रकाशकों की रीढ़ हैं, साथ ही प्रायः सभी विक्रेता प्रकाशक भी हैं, अतः सबको साथ लेकर लगभग ही श्रेयस्कर होगा। मेरी यह भी राय है कि कोर्स-अलावा प्रकाशक लोग सभी पुस्तकों पर २५ सै० से हैं तक कमीशन दें साथ ही सवारी गाड़ी का भाड़ा है। कारण आज बिना कमीशन दिए पुस्तकें कठिन है। खास कर स्कूलों, लाइब्रेरियों और थोक सभी को तो कमीशन देना ही पड़ता है।

बलदेव दास
बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता

प्रकाशकों की उन्नति बिना पुस्तक-विक्रेताओं के सहयोग सम्भव नहीं। यदि पुस्तक-विक्रेताओं को मिलाया प्रमुख नगर से एक प्रतिनिधि के रूप में अथवा अन्य ढंग से।

विभिन्न बोर्डों द्वारा अनुत्तरदायित्व ढंग से पुस्तकों की मूल्य निर्धारण एवं पक्षपात का विरोध।

पाठकों, लेखकों एवं प्रकाशकों के हित की आनुपातिक रक्षा।

स्टैंडर्ड अशुद्धि रहित प्रकाशन।

क्रय-विक्रय नियम, रायल्टी नियम इत्यादि का निर्धारण विक्रेताओं और पुस्तकालयों के लिए कमीशन की दरें।

हमारे विचार से सम्मेलन फरवरी मास में दिल्ली में ही हो।

ताराचन्द नाहटा
नाहटा बन्धु, मन्दसौर

"अखिल भारतीय प्रकाशक संघ प्रथम स्थापित किया जाना या अथवा स्थानीय (राजकीय अथवा प्रान्तीय) प्रकाशक मेरा अपना विचार है कि प्रथम स्थानीय प्रकाशक संघ स्थापना की जानी चाहिए। इस तथ्य को अगर आप करें तो देहली प्रकाशक संघ की स्थापना की ओर कदम उठाना चाहिए। इस प्रकार के विभिन्न स्थानीय संघों के निर्माण और कार्यान्वित करने में जो अनुभव होगा, उसके आधार पर अखिल भारतीय प्रकाशक संघ रखी जा सकेगी। अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के स्थापित करने में आपको आर्थिक, शासन-सम्बन्धी समय की कमी वग़ैरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। देश बहुत बड़ा है इसका ध्यान आपको रखना होगा।

देहली प्रकाशक संघ की स्थापना की ओर कदम उठाने के लिए आप यहाँ के समस्त प्रकाशकों को बुलाकर विचार-विनिमय कीजिए, परन्तु इससे पूर्व उन प्रकाशकों की एक सभा बुला लेनी उचित होगी जो समाजोपयोगी साहित्य के प्रकाशन में लगे हुए हैं।

रा० प्र० गोंडल
विद्या मन्दिर लि०, नई दिल्ली

संघ का निर्माण एक ऐसे नैतिक स्तर पर हो, जिसमें सब को बढ़ने और सब के फलने-फूलने की गुंजाइश रहे। तात्पर्य यह है कि संघ का उद्देश्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' रहे, सहयोगियों की छाती पर पैर रखकर आगे बढ़ने की कोशिश और रुपये की शक्ति से सहयोगी को असफल बनाने की कुचेष्टाओं का अन्त किया जाय।"

पाठ्यक्रम की पुस्तकों के सम्बन्ध में संस्थाओं और प्रकाशकों के बीच जो अनैतिकता और अमानवीयता के कार्य हुआ करते हैं, उन्हें रोका जाय।

पुस्तकों के मूल्य निर्धारण के नियम, रायल्टी के नियम, एककालिक पारिश्रमिक के नियम स्थिर किये जायँ।

संघ का मुख्य कार्यालय दिल्ली में ही रहे। इसलिए कि वह देश की राजधानी है, वहाँ पर हर प्रदेश के भाषा-भाषी विद्वानों का जमाव रहता है, विदेशों के सांस्कृतिक, साहित्यिक और व्यवसायी आदि हर क्षेत्र के मनुष्य आते रहते हैं। इससे हम विविध क्षेत्रों और देशों के साहित्य से परिचित रहेंगे। प्रकाशकों की संख्या भी वहाँ कम नहीं है।

हमारा सुझाव है कि प्रथम बैठक इलाहाबाद में हो। कुम्भ पर्वपर आसानी से लोग आ सकेंगे और इसी अवसर पर देश-विदेश के अनुभवी विद्वान् भी यहाँ एकत्र होंगे। संघ की स्थापना इलाहाबाद में हो और कार्यालय दिल्ली में रहे।

देवदत्त शास्त्री
जननी कार्यालय, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—**तुलनात्मक अध्ययन**, ले० श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, देवीशरण रस्तोगी। प्राचीन हिन्दी कवियों का तुलनात्मक अध्ययन।

—**पंजाब की लोककथाएँ**, ले० श्री सरदार प्रीतमसिंह पंछी। पंजाब की प्रसिद्ध लोककथाओं का संकलन।

—**ब्रज की लोककथाएँ**, ले० श्री आदर्शकुमार जैन। ब्रज की प्रचलित लोककथाओं का सुन्दर संग्रह।

—**मानवता की परख**, ले० श्री देवीदयाल सेन। क्रान्तिवादी सामाजिक रोचक उपन्यास।

—**युगपुरुष राम**, ले० श्री अक्षयकुमार जैन। मर्यादा-पुरुष राम की अमर जीवन-गाथा को औपन्यासिक रूप में सचित्र प्रस्तुत किया गया है।

—**रूसी क्रान्ति के अग्रदूत**, ले० श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह। ज़ारशाही के विरुद्ध संघर्ष करने वाले वीर हुतात्माओं की अमर जीवनियाँ।

—**विन्ध्यभूमि की लोककथाएँ**, ले० श्रीचन्द जैन, अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव। विन्ध्यभूमि की प्रचलित कतिपय लोककथाओं का संकलन। विन्ध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुकी है।

—**संतुलन**, ले० श्री प्रभाकर माचवे। हिन्दी काव्य और गद्य की विभिन्न धाराओं तथा प्रवृत्तियों पर विवेचनात्मक लेख।

—**हिन्दी निबन्धकार**, ले० श्री जगन्नाथ 'नलिन'। हिन्दी निबन्ध कला तथा प्रमुख निबन्धकारों की शैली और पद्धति का विवेचनात्मक परिचय।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी, हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद

—**हिन्दी-साहित्य (१९२४-४७)**, ले० डॉ० भोलानाथ। डिमाई आकार के लगभग ५०० पृष्ठों में छपेगा, ८) होगा।

किताब महल, इलाहाबाद

—**कीटाणुओं की कहानी**, ले० श्री जगपति चतुर्वेदी।

—**खून के धब्बे**, ले० श्री मोहनसिंह सेंगर। कहानी-[illegible] मूल्य लगभग २)

—**प्रभात फेरी**, ले० श्री नरेन्द्र शर्मा। कविता-संग्रह।

—**ब्रह्मचर्याश्रम**, ले० श्री कन्हैयालाल माणिकलाल [illegible] नाटक।

—**वनस्पतिशास्त्र**, ले० श्री धर्मनारायण। मूल्य [illegible] मानतः ६)।

—**संक्षिप्त हिन्दी कोष**, सं० श्री भोलानाथ [illegible] सामान्य जनता तथा छोटी कक्षा के विद्यार्थियों के [illegible] कोष। मूलकोष के अतिरिक्त इसके परिशिष्ट में लोकोक्ति, मुहावरा, पर्यायवाची तथा अँग्रेज़ी-हिन्दी कोष भी है।

—**स्कैंडल**, ले० श्री मोहनसिंह सेंगर, कहानी-संग्रह।

—**हिन्दी-साहित्य की जनवादी परम्परा**, ले० प्रकाशचन्द्र गुप्त। हिन्दी की जनवादी परम्परा-[illegible] निबन्धों का संग्रह।

तारामण्डल, पटना-१

—**चाँद**, ले० श्री भागवतप्रसादसिंह। बालो[illegible] कविताएँ। ।)

—**थरथराती आवाज़**, ले० श्री महेन्द्रनारायण [illegible] उपन्यास। १।।)

—**नन्ददास**, ले० श्री आरसीप्रसादसिंह। अष्ट[illegible] सुप्रसिद्ध कवि नन्ददास पर आधारित एक स्वतन्त्र ग्रन्थ।

—**मोहिनी**, ले० श्री भागवतप्रसादसिंह। काव्य। १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—शंकर विजय, ले० श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर'। काव्य। १)

...युग ग्रन्थागार, लखनऊ

—अनुभूत और अध्ययन, ले० श्री दुर्गाशंकर मिश्र। समालोचनात्मक निबन्धों का संग्रह। ३)

—...वन की राहें, ले० श्री ब्रह्मनारायण शर्मा 'विकल'। सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास। ३)

—मृत्युलोक में, ले० श्री ब्रह्मनारायण शर्मा 'विकल'। समस्यामूलक वस्तुवादी उपन्यास। ३॥)

—रसखान का अमर काव्य, ले० श्री दुर्गाशंकर मिश्र। कविवर रसखान का समालोचनात्मक अध्ययन एवं उनकी उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह।

...न प्रकाशन मन्दिर, लश्कर (ग्वालियर)

—आविदा, ले० श्री शम्भूनाथ सक्सेना। मनोवैज्ञानिक उपन्यास। ३)

—जीवन के प्रश्न, ले० श्री शम्भूनाथ सक्सेना। निबन्ध-संग्रह। १॥)

—रेशम उद्योग, ले० श्री शम्भूनाथ सक्सेना। गृह-उद्योग। १)

—हमारी शेरवानी, ले० श्री शम्भूनाथ सक्सेना। कथा-संग्रह। १॥)

...पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

—काव्य में प्रकृति चित्रण, ले० श्री रामेश्वरलाल खण्डेलवाल। साहित्यिक समालोचना। ३)

—...बरबाल, ले० श्री कृष्णचन्द्र 'भिक्खू'। उपन्यास। ४)

—राजदूत, ले० जुले वार्न। अनुवादक, श्री जगन्नाथ शर्मा 'प्रभाकर'। एक रूसी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद।

—हमारे रीतिरिवाज, ले० प्रो० जगदीशसिंह। अनुवादक श्री बालकृष्ण एम० ए०। समाजशास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थ। ३)

...प्रकाशन, मथुरा

—गोर्की की कहानियाँ, ले० मैक्सिम गोर्की। २)

...भण्डार, पटना-४

—...दी का क्रन्दन, ले० प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव। काव्य। २)

—...री यात्रा, ले० श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी'। ...री, १९५४

नाटक।

—तीन अनोखी चीजें, ले० श्री दिनेश्वरलाल 'आनन्द'। बालोपयोगी, मनोरंजक, सचित्र, जादू की कहानी। १)

—प्रवेशिका, पत्र और प्रबन्ध, ले० श्री दिनेश्वरलाल 'आनन्द'। निबन्धों की पुस्तक। ३॥)

—रिक्शावाला, ले० श्री राधाकृष्ण प्रसाद एम० ए०। उपन्यास। ५)

—विजयी शेखर, ले० श्री सीताशरणसिंह। बालोपयोगी साहस कथा, रोमांचक, सनसनीखेज, दिलचस्प वर्णन से पूर्ण।

—सत्याग्रह, श्री र० रा० दिनकर। गान्धी जी द्वारा प्रयुक्त सत्याग्रह की विद्वत्तापूर्ण व्याख्या।

—बाल-साहित्य, प्रत्येक का मूल्य ॥)

श्री विन्ध्याचलप्रसाद गुप्त द्वारा लिखित **सोने के सेब, परियों की रानी, नाचो भालू नाचो, राजा का बेटा, जय हिमालय, जादू की नगरी, दानवों के देश में, चल घोड़े चल, जादू का पलंग, सोने की बुलबुल, बाघिन का दूध, कुत्ते के गले में लाए।**

श्री दिनेश्वरलाल 'आनन्द' द्वारा लिखित **ढोला कुँअर, अनोखा भक्त, डाकू सरदार, फूलों का देश, मार के डर से भूत भागे, पेटी की परी, हंस जहाज।**

श्री सीताशरण सिंह द्वारा लिखित **तारों की दुनिया में, खिलौनों के लोक में, पानी के पेट में।**

श्री श्यामनारायण वर्मा द्वारा लिखित **सूर सुलतान अहमद, डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा।**

पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली

—ये और वे, ले० श्री जैनेन्द्र कुमार। साहित्यकारों और नेताओं के संस्मरण। ५)

रंगमहल कार्यालय, दिल्ली

—अपराजिता, ले० श्री आनन्द प्रकाश जैन। गृहस्थ जीवन पर लघु उपन्यास। ।≈)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई

—हमारे त्यौहार, ले० श्री सन्तराम 'विचित्र'। ॥)

—हिन्दी आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ, आलोचना पुस्तकमाला की चतुर्थ पुस्तक। लेखक : शिवनाथ, डॉ. जगदीश गुप्त, विजयेन्द्र स्नातक, डॉ. भगवत् स्वरूप मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शम्भूनाथसिंह और नलिनविलोचन शर्मा। भूमिका डा० देवराज। २)

—**पाश्चात्य आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ**, आलोचना पुस्तकमाला की पाँचवी पुस्तक। लेखक : डा० जयकान्त मिश्र, डा० रवीन्द्र सहाय वर्मा, विजयदेवनारायण साही, हर्षनारायण, राजनारायण बिसारिया, रामस्वरूप चतुर्वेदी, सुरेशचन्द्र सेन गुप्त, डा० रामअवध द्विवेदी और केशव आनन्द। ३)

राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ

—**भारत के आदि निवासी**, ले० श्री चन्द्रिकाप्रसाद जिज्ञासु। ऐतिहासिक समाज-शास्त्र।

—**महाराणा प्रताप**, ले० श्री द्विजेन्द्रलाल राय। अनुवादक श्री रूपनारायण पाण्डेय।

ये पुस्तकें आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से प्राप्य हैं।

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद

—**पंजाब की कहानियाँ**, श्री बलवन्त सिंह। पंजाबी जीवन पर तीन नावलेट (छोटे उपन्यास) और सात कहानियों का संग्रह।

सस्ता साहित्य मण्डल लि०, नई दिल्ली

—**आधुनिक भारत** ले० श्री शंकरदत्तात्रेय जावड़ेकर, अनुवादक श्री हरिभाऊ उपाध्याय। ५)

—**साहित्य और जीवन**, ले० श्री बनारसीदास चतुर्वेदी। साहित्य के आदर्श और अभ्युत्थान-सम्बन्धी लेखों का संग्रह। ३)

—पाँच बालोपयोगी प्रकाशन। प्रत्येक का मूल्य ।=)। ... **के बोल**, सं० श्री यशपाल जैन, **गंगा जी**, ... रामचन्द्र तिवारी, **गांधी जी का विद्यार्थी जीव**... श्री यशपाल जैन, **गौतम बुद्ध**, ले० श्री ... उपाध्याय, **मृच्छकटिक, कथासार**—श्री राजेन्द्र...

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—**काले बादल**, लेखक जॉन किन। अनुवादक श्री ... प्रसाद नागर। विश्व की जन-संस्कृति और मान... का आतंकित करने वाले एटम-पन्थी साहित्य ... का यथार्थ चित्रण।

श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा

—**हमारी नाट्य साधना**, ले० श्री राजेन्द्रसिंह गौड़, ... ए.। आलोचनात्मक। २।)

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई

—**अहल्या**, श्री द्विजेन्द्रलाल राय। अनुवादक ... नारायण पाण्डेय। नाटक। पुनर्मुद्रण। १।)

—**उस पार**, श्री द्विजेन्द्रलाल राय। अनुवादक ... नारायण पाण्डेय। नाटक। १।।।)

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस

—**हिन्दी समाचार-पत्रों का इतिहास**, ले० ... अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी। मूल्य लगभग ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना, संस्कृति, साहित्य

ए० ई० मुतुस्वामि, गद्य मंजूषा की सरल टीका, १२२, क्राऊन, हिन्दी पुस्तक भण्डार, ट्रिवेंड्रम १।)

रैनाथ 'अमन', उर्दू और उसका साहित्य, १२८, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २)

मृत राधे, लोकोक्ति मुहावरे, २४६, क्राऊन, सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १॥)

नारायण वाजपेयी, त्रिजुगी नारायण त्रिपाठी, लेखक और कवि, १९२, क्राऊन, मालवीय पुस्तक भवन, लखनऊ १॥)

ईश्वरप्रसाद अरोड़ा, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, प्रतापनारायण मिश्र, १२८, क्राऊन, ज्ञानमन्दिर, कानपुर १)

नारायणदास खन्ना, प्रेमचन्द : ग़बन, १८१, क्राऊन, मालवीय पुस्तक भवन, लखनऊ २॥)

ईश्वरप्रसाद दीक्षित, महाकवि भूषण, १९१, क्राऊन, साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद २॥)

प्रकाशचन्द्र गुप्त, नया हिन्दी साहित्य : एक भूमिका, २१६, क्राऊन, सरस्वती प्रेस, बनारस २॥)

नारायण टंडन, स्मृति की रेखाएँ : सहायक, विद्या मन्दिर, लखनऊ १।)

नारायण टंडन, गोदान : एक अध्ययन, १७४, क्राऊन, पु० मु०, बिद्या मन्दिर, लखनऊ १।॥)

नारायण टंडन, हिन्दी रचना की झाँकी, ४९१, क्राऊन, सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा ३॥)

नारायण टंडन, प्रबन्ध प्रभा, १७०, क्राऊन, सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा १॥)

सोमसुन्दरम्, तमिल और उसका साहित्य, १२८, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २)

शर्मा, कबीर साहित्य और सिद्धान्त, १७१, डिमाई, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २॥)

प्रसाद, डॉ०, भारतीय शिक्षा, ११६, डिमाई, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, ३)

श्वरीप्रसाद चतुर्वेदी डॉ०, रीतिकालीन कविता एवं शृङ्गार रस का विवेचन, ५६०, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ६॥)

राघव, डॉ०, प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, ३३६, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ४)

राघव, प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास, ५१८, डिमाई, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १२)

नारायण महेन्द्र, महाकाव्य एवं महाकाव्यकार, १९२, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २।)

लक्ष्मीनारायण लाल, डॉ०, हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, ३९२, डिमाई, साहित्य भवन लि० इलाहाबाद १०)

विश्वम्भरनाथ, महाकवि निराला : काव्य, कला, कृतियाँ, ३२०, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ३।)

मिश्र, बिहार गाता है, १०४, क्राऊन, श्यामशंकर प्रकाशन, दरभंगा १।)

शर्मा, मीराँ जीवनी तथा काव्य, ६४, क्राऊन, कल्याणदास ब्रदर्स, बनारस २॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह, परीक्षार्थी प्रबोध भाग ४, ३००, क्राऊन, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा
सत्यपाल गुप्त, साहित्य सुधा, २००, क्राऊन, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली–५
सावित्री सिन्हा, मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, ३१७, डिमाई, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
सुमित्रानन्दन पन्त, गद्य पथ, २१५, क्राऊन, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद

उपन्यास

ओंकार शरद्, मिटती छाया, १२४, क्राऊन, पु० मु०, जनसाहित्य, इलाहाबाद
गोविन्द वल्लभ पन्त, यामिनी, २५६, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ
देवीप्रसाद धवन 'विकल', कुबेर, २०८, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ
नकाबपोश भेदी, काला नकाब, १२२, क्राऊन, पु० मु०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
नकाबपोश भेदी, खजाने की चोरी, ११६, क्राऊन, पु० मु०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
वृन्दावनलाल वर्मा, विराटा की पद्मिनी, ३३० क्राऊन, पु० मु०, राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
यज्ञदत्त शर्मा, इन्साफ़, १६०, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
यज्ञदत्त शर्मा, मुनिया की शादी, १६८, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
सूर्या कमलानी, खूनी कौन, १२०, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
सूर्या कमलानी, पीताम्बर का खून, १४०, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
सूर्या कमलानी, प्रेम का चक्कर; १५१, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
सूर्या कमलानी, मौत के मुँह में, १३५, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
सूर्या कमलानी, हीरे की चोरी, १४२, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद

कविता

भगवत शरण जौहरी, स्वप्न और सत्य, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
महमूद अहमद 'हुनर', दीवान-गालिब, १२६, क्राऊन, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद
राजेन्द्र शर्मा, मंगल गीत, १००, क्राऊन, आभा प्रकाशन, दिल्ली
शरण बिहारी गोस्वामी 'अभय', स्वामी हरिदास, ३०० क्राऊन, वाणी प्रकाशन मन्दिर, वृन्दावन
श्रीनाथसिंह, गांधीजी, १६, क्राऊन, दीदी कार्यालय, इलाहाबाद
श्रीमन्त कुमार व्यास, अलगोजो, १२६, डिमाई, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर

कहानियाँ

अंजनी कुमार सिन्हा 'आजाद', दूर बहुत दूर, १००, क्राऊन, पु० मु०, गिरिजा पुस्तकालय, पटना
जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, सं०, हिन्दी की अमर कहानियाँ, १७४, क्राऊन, पु० मु०, सरस्वती प्रेस, बनारस
देवी प्रसाद अवस्थी 'मुनीश', विधाता का चक्र, ८२, क्राऊन, शान्ति प्रकाशन मन्दिर, कानपुर
नरेन्द्रनारायण लाल, धुँधली तस्वीर, १६०, क्राऊन, पु० मु०, गिरिजा पुस्तकालय, पटना
प्रतापनारायण श्रीवास्तव, दो साथी, १३४, क्राऊन, ज्ञानमन्दिर, कानपुर.
प्रेमनारायण श्रीवास्तव, हमारी भी कहानी है, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, दिल्ली
राजेन्द्र शर्मा, परिधि, १५४, क्राऊन, आभा प्रकाशन, दिल्ली

नाटक

दयानाथ झा०, कर्मपथ, १२०, क्राऊन, स्वावलम्बन संस्थान दारागंज, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प्रभाकर, सं०, रीढ़ की हड्डी, १६०, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली — १॥)

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी

...प्रसाद अरोड़ा, पंचामृत, १२८, क्राऊन, ज्ञान मन्दिर, कानपुर — १)
...किशोर नारायण, दस यात्राएँ, १२८, क्राऊन, पु० मु०, गिरिजा पुस्तकालय, पटना — १॥)
...भाई, मित्रों की खोज, ३२, १७×२७/८, विद्यामन्दिर लिमिटेड, नई दिल्ली — ॥।)
...पतिद, अनोखी यात्राएँ, ३८, क्राऊन, दीदी कार्यालय, इलाहाबाद — ।-)

राजनीति, अर्थशास्त्र, भूगोल, इतिहास

...कुमार सिन्हा, माध्यमिक आर्थिक और वाणिज्य भूगोल, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना — ४)
...० शर्मा०, डॉ०, सरल राजनीति विज्ञान, १६१, क्राऊन, मालवीय पुस्तक भवन, लखनऊ — ३=)
...कुमार, बीमा का प्रारम्भिक सिद्धान्त, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना — ५)
...कुमार, चन्द्रधारी, व्यापार संचालन और बाज़ार सूचनाएँ, २ भाग, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना
...१—३) भाग २—३॥)
...मालवीय, सरल भारतीय इतिहास, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद — १॥)
...गुप्त, विक्रय तत्त्व, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना — ४॥)
...प्रसाद, वाणिज्य-विधि की रूपरेखा, ५२५, क्राऊन, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना — ६)
...झा, भारतीय स्थानीय स्वशासन, १६६, क्राऊन, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना — ४)

साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण

पं० किशोरीदास वाजपेयी की यह नवीनतम पुस्तक है। इसमें वाजपेयी जी ने अपने साहित्यिक ...जीवन के घटाटोप अनुभवों का रोचक शैली में वर्णन किया है। पुस्तक हाथ में लेकर फिर छोड़ने को मन नहीं ...ता। इसमें सन् १९१६ से १९५२ तक की प्रमुख सभी घटनाएँ आ गई हैं।

प्रसंगप्राप्त जिन साहित्यिक जनों के संस्मरण इसमें आए हैं, उनमें प्रमुख ये हैं—१—आचार्य द्विवेदी, ...—बाबू श्यामसुन्दरदास, ३—बाबू गुलाबराय एम० ए०, ४—पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, ५—श्रीमती ...लक्ष्मी पण्डित, ६—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, ७—डा० सम्पूर्णानन्द, ८—डा० धीरेन्द्र वर्मा ...—स्व० पण्डित पद्मसिंह शर्मा, १०—स्व० पं० सकलनारायण शर्मा (महामहोपाध्याय), ११—स्व० पं० ...ग्राम शास्त्री साहित्याचार्य, १२—श्री नाथूराम 'प्रेमी', १३—स्व० कविवर आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव, ...—स्व० श्री रामरखसिंह सहगल (चाँद-प्रवर्तक), १५—श्री दुलारेलाल भार्गव, १६—पं० नन्दकिशोर ...वारी, १७—श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर', १८—पं० श्रीकृष्णबिहारी मिश्र, १९—स्व० मुन्शी प्रेमचन्द ...—डा० अमरनाथ झा, २१—डा० राजेन्द्रप्रसाद (वर्तमान राष्ट्रपति), २२—काका कालेलकर २३—श्री ...न्द्र, २४—गोस्वामी गणेशदत्त, २५—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, आदि।

मूल्य दो रुपये

मंगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाथ दुबे, डॉ०, भूगोल के भौतिक आधार, ३६०, डिमाई, किताब महल, इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, संसार शासन, ३६०, क्राऊन, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, चेकोस्लोवैकिया-दर्शन, ९०, क्राऊन, पु० मु०, भूगोल कार्यालय इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, जापान-दर्शन, ११४, क्राऊन, पु० मु०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामनारायण मिश्र, यूगोस्लैविया, ९६ क्राऊन, पु० मु०, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
रामावतार लाल, भारत की आर्थिक समस्याएँ, ४३२, क्राऊन, नॉवेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना
रामस्वरूप वसिष्ठ, भूगोल के भौतिक आधार, ३२१, डिमाई, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
गुलाबराम, गांधीय मार्ग, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

विविध

गोपालदेवी, केशविन्यास, ४६, क्राऊन, पु० मु०, दीदी कार्यालय, इलाहाबाद
घासीराम पीथावला मिस्त्री जाल विज्ञान, ९६, क्राऊन वाणी मन्दिर, जयपुर
दयाशंकर दुबे, ओंकारनाथ मित्र, ग्रामीण ज्ञानोदय, २००, क्राऊन, छात्रहितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद
मुनि अमरचन्द जी, अहिंसा दर्शन, ४५८, क्राऊन, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा
रा० र० खडिलकर, आधुनिक पत्रकार कला, २४०, क्राऊन, ज्ञानमण्डल लि० बनारस
सुरेशचन्द्र शास्त्री, संगीत माधुरी, १४४, क्राऊन, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

हमारे नये प्रकाशन

निबन्ध

गद्य-पथ—सुमित्रानन्दन पन्त ३)
निबन्ध-संग्रह – हजारीप्रसाद द्विवेदी ४)
मध्यकालीन धर्म-साधना—हजारीप्रसाद द्विवेदी ३)
मध्यकालीन प्रेम-साधना—परशुराम चतुर्वेदी ३)
साहित्यावलोकन—विनयमोहन शर्मा ३)
ऋतम्भरा—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या २॥)

आलोचना

हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास लक्ष्मीनारायणलाल १०)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय २॥)
महाकवि भूषण—भगीरथप्रसाद दीक्षित २॥)
तुलसी रसायन—भगीरथ मिश्र २॥)
प्रकृति और काव्य (संस्कृत-हिन्दी)—रघुवंश १३)

काव्य

ठण्डा लोहा—धर्मवीर भारती ३)
वर्षान्त के बादल—अंचल ३)

सं० पृथ्वीराज रासो—हजारीप्रसाद द्विवेदी

संस्कृति

भारतवर्ष में जाति-भेद—क्षितिमोहन सेन
कला और संस्कृति—वासुदेवशरण अग्रवाल
प्राचीन लोकोत्सव—मन्मथ राय
सौन्दर्य-शास्त्र—हरद्वारीलाल शर्मा

उपन्यास

मरु-प्रदीप—अंचल
सूरज का सातवाँ घोड़ा—धर्मवीर भारती

विविध

हिन्दी काव्यशास्त्र—आचार्य बालेन्दु
गार्हस्थ्य जीवन और ग्राम सेवा-परशुराम चतु
क्रिकेट प्रदर्शिका—अमर
योरोप के पत्र—धीरेन्द्र वर्मा
जानवरों की ऐतिहासिक कहानियाँ—मेहरा
महाबली हनुमान—राजवल्लभ ओझा
बापू का सपना—नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

साहित्य भवन लिमिटेड—इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

☐ प्रकाशन समाचार प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।

☐ इसका वार्षिक मूल्य २।।) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।

☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।

☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।

☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।

☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।

☐ विज्ञापन सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।

☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है: पूरा पृष्ठ: ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$" × ६" या २$\frac{3}{4}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ: २$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच: १" × २$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग: ५$\frac{1}{2}$" × ६"।

☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं:

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ: १७।।)। चौथाई पृष्ठ: १०)। एक कालम इंच: ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में, ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में: ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में: ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट सहित, १००)

☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग
प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No.D-

जैनेन्द्र-साहित्य

प्रकाशित

१८ खण्ड मूल्य—७२)

कुछ सम्मतियाँ

"......तुम गोर्की चाहते हो ? हिन्दुस्तान में कोई गोर्की है या हो सकता है तो वह जैनेन्द्र है।"

—प्रेमचन्द

—"जैनेन्द्र के विचार पढ़कर मैंने ऐसा आनन्द अनुभव किया जैसा टाल्सटॉय का पढ़ते समय हुआ है। बल्कि उससे भी विशेष......"

- किशोरीलाल मशरूवाला

"हिन्दी-साहित्य के कथाक्षेत्र में हमने (जैनेन्द्र) रवि और शरद बाबू को एक साथ ही पाया और अब पाया।"

—मैथिलीशरण गुप्त

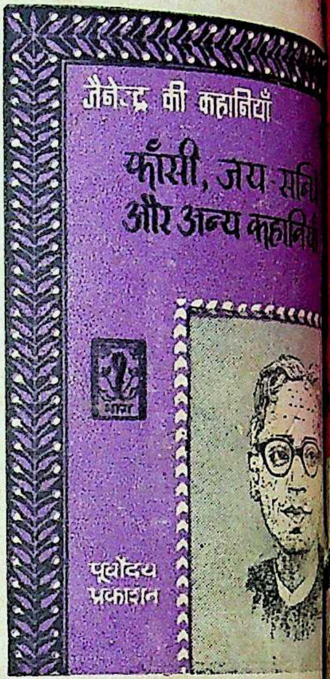

★निबन्ध

पूर्वोदय	मूल्य ४)
मन्थन	५)
साहित्य का श्रेय और प्रेय	७)
सोच विचार	५)
प्रस्तुत प्रश्न	४॥)
काम प्रेम और परिवार	३)

★संस्मरण

ये और वे	५)

★नाटक

पाप और प्रकाश	मूल्य २॥)

★उपन्यास

सुखदा	४)
विवर्त	४।)
व्यतीत	३।।)

निम्न उपन्यास

परख	१॥)
सुनीता	२॥)
त्यागपत्र	१।)
कल्याणी—	२॥)

भी इस माला में प्रकाशित होंगे।

★जैनेन्द्र की कहानियाँ

सात भागों में, प्रत्येक का मूल्य ३॥)

१ भाग—राष्ट्रीय और क्रान्तिकारी कहानियाँ
२ भाग—बाल मनोविज्ञान और वात्सल्य की कहानियाँ
३ भाग—दार्शनिक और प्रतीकात्मक कहानियाँ
४ भाग—प्रेम और विवाह-सम्बन्धी कहानियाँ
५ भाग—प्रेम के विविध प्ररूपों की कहानियाँ
६ भाग—विविध सामाजिक समस्याओं की कहानियाँ
७ भाग—टकराहट (एकांकी) और महत्त्वपूर्ण कहानियाँ

तीन आगामी उपन्यास
(मार्च में प्रकाशित होंगे)

जयवर्द्धन, दशार्क, अनाम-स्वामी

ग्राहक और विक्रेता पत्र-व्यवहार करें—

पूर्वोदय प्रकाशन

७, दरियागंज, दिल्ली

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, १ फ़ैज़ बाजार दिल्ली के लिए गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दरियागंज दिल्ली से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी, १९५४ अङ्क ६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक
ताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

नये चीन से हमारा सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ता जा रहा है। हमारे कई प्रतिनिधि-मण्डल चीन होकर आ चुके हैं और चीन के कई प्रतिनिधि-मण्डल हमारे देश में आ चुके हैं। यह एक बड़ा शुभ लक्षण है क्योंकि इसमें रंच-मात्र भी सन्देह की गुंजाइश नहीं है कि विश्व की शान्ति-सुख-समृद्धि आज बहुत बड़ी हद तक हिन्दुस्तान और चीन की मैत्री पर निर्भर है। सम्भवतः इसी को ध्यान में रखकर श्री अमृतराय ने अपनी चीन-संस्मरण की पुस्तक 'सुबह के रंग' समर्पित की है, हिन्दुस्तान और चीन की दोस्ती के नाम, जो हज़ारों साल पुरानी होकर भी नई है, जिसमें सदा नई-नई कोंपलें फूटती रही हैं और आज जिससे जीवन और शान्ति की कोंपलें फूट रही हैं।

चीन पर हिन्दी में तीन-चार पुस्तकें निकल चुकी हैं लेकिन 'सुबह के रंग-जैसी' एक भी नहीं है क्योंकि इसमें नये चीन को उत्पादन के आँकड़ों के माध्यम से न देखकर, सीधे-साधे, दैनंदिन जीवन के माध्यम से, ...र, उसके संगीत के माध्यम से देखा गया है। इसलिए पुस्तक अत्यन्त रोचक और हृदयग्राही है। प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए क्योंकि इससे मनोरंजन के साथ-साथ जीवन की एक नई दृष्टि भी मिलती है।

...सज्जा का तो कहना ही क्या, फिर भी दो सौ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल दो रुपया।

...स प्रकाशन, ९३ ज़ीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन

निम्नलिखित नये प्रकाशन हमारे थोक बिक्री-विभाग से प्राप्य हैं :

साहित्य

[५]हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ— संग्रह २)
[४]हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ— ,, २)
[४]हिन्दी के गौरव-ग्रन्थ— ,, २)
हिन्दी साहित्य का विकास—ब्रह्मदत्त तिवारी नागर २)
[४]मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ—डॉ॰ सावित्री सिन्हा ८)
कामायनी दर्शन—कन्हैयालाल सहल, विजयेन्द्र स्नातक ४)
[५]उर्दू और उसका साहित्य—गोपीनाथ 'अमन' २)
[५]तमिल और उसका साहित्य—पूर्ण सोमसुन्दरम् २)
कबीर, साहित्य—सिद्धान्त—यज्ञदत्त शर्मा २॥)
[६]द्विवेदी युगीन निबन्ध-साहित्य—गङ्गाबख्शसिंह ३)
[५]हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास—
लक्ष्मीनारायण लाल १०)
[५]महाकवि भूषण—भगीरथ प्रसाद दीक्षित २॥)
गोविन्द रामायण—गुरु गोविन्दसिंह जी ४)
हिन्दी काव्य-दर्शन— ४)
[२]मृगनयनी में कला और कृतित्व—सत्येन्द्र २।)
[५]सूर मीमांसा—डॉ॰ ब्रजेश्वर वर्मा ४।)
कबीर बीजक—कबीर साहब ५॥)
[८]बीसलदेव—डॉ॰ माताप्रसाद गुप्त, अगरचन्द नाहटा ३॥)
[८]कवित्त रत्नाकर—उमाशंकर शुक्ल ३॥)
निर्गुण काव्य दर्शन—सिद्धिनाथ तिवारी ५)
[७]हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास—ल॰सा॰ वार्ष्णेय १॥)
साहित्य-साधना की पृष्ठभूमि—बुद्धिनाथ झा कैरव ६)
रीतिकालीन कविता एवं शृङ्गार रस का विवेचन—
राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी ६॥)
हिन्दी साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक—
विश्म्भरनाथ उपाध्याय १॥)
हिन्दी महाकाव्य एवं महाकाव्यकार—रा॰च॰ महेन्द्र २।)
प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड—डॉ॰ रांगेय राघव ४)
[४]हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास—
भगवतस्वरूप मिश्र १२)
[७]कविवर रत्नाकर—कृष्णशंकर शुक्ल
[४]रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति—
मेघदूत—अनु॰ डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल

इतिहास : संस्कृति

माता-भूमि—डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल
[४]प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास—रां॰ राघव
आदि भारत—अर्जुन चौबे कश्यप
[६]पातंजलि योग दर्शन—हरिहरानन्द आरण्य
भारतीय राष्ट्रीयता—देवदूत विद्यार्थी
[५]विश्व-सभ्यता का इतिहास—रामनगीना त्रिपाठी
तथा ओमप्रकाश मालवीय
[७]आधुनिक यूरोप का इतिहास—फ़र्डिनेंड शेविल
[६]भारतीय संस्कृति में आर्येतरांश—
[७]सार्थवाह—डॉ॰ मोती चन्द
[७]यूरोप का आधुनिक इतिहास—(दो भाग)
डॉ॰ सत्यकेतु विद्यालंकार
[४]भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास—(दो भाग)
डॉ॰ सत्यकेतु विद्यालंकार
[४]एशिया का आधुनिक इतिहास— ,,
[५]भारत का प्राचीन इतिहास— ,,
भारतीय शिक्षा—डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद
[४]यूरोप का इतिहास—एल॰ मुकर्जी

उपन्यास

अमर बेल—वृन्दावनलाल वर्मा
बीज—अमृतराय
व्यथा—महावीरशरण अग्रवाल
धरती के लाल—अनु॰ वीरेन्द्र त्रिपाठी
होटल मॉडर्न—डॉ॰ सत्यकेतु विद्यालंकार
संकरा द्वार—आन्द्रे जीद
कुलीन घराना—इवान तुर्गनेव
बाप बेटे— ,,
पत्ते गिर पड़े—शिवसागर मिश्र
प्रेत बोलते हैं—राजेन्द्र यादव

(आगे तीसरे कवर पर देखिए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :
: अंक ६ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

प्रकाशन-जगत् की व्यावसायिक मज़बूती पुस्तक-विक्रेताओं आर्थिक और व्यवस्था-सम्बन्धी मज़बूती पर एक बड़े हद निर्भर है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से ही पुस्तकालयों और पाठकों तक पहुँचेंगी। आज स्थिति यह है कि प्रकाशकों अपने धन्धे के प्रति अधिक सुरुचिपूर्ण सजगता दिखाई है लेकिन जो सहायता उन्हें सुव्यवस्थित पुस्तक-विक्रेताओं से मिलनी चाहिए थी, उसका अभाव है।

हिन्दी-पुस्तकों के अधिकांश विक्रेताओं की कठिनाइयाँ प्रकाशन-जगत् के पनपने में बाधा बन रही हैं। पास पर्याप्त पूँजी का अभाव है। नये प्रकाशनों से परिचित रहने की व्यवस्था नहीं है। आम जनता पढ़ने की प्रवृत्ति नहीं है, पैसा भी नहीं है। जिन पुस्तकालयों अथवा पाठकों की खरीदारी पर वे निर्भर रहते दाम का एक खासा भाग वे कमीशन के रूप में ले लेते। प्रकाशकों से एक साथ अधिक पुस्तकें मँगवाने में उन्हें ... है, लेकिन डाक से कम पुस्तकें मँगवाकर इतना अधिक ... जाता है कि कोई फ़ायदा नहीं होता। प्रायः पुस्तक-... तब तक किसी नए प्रकाशन को मँगवाना भी नहीं ... जब तक कि दो-एक बार ग्राहकों द्वारा उसके सम्बन्ध ... न हो जाय। बिक्री मुख्यतः पुस्तकालयों से है, ... संख्या निश्चित है। आपसी प्रतियोगिता भी बहुत ... बेचने की होड़ में लाभालाभ का ध्यान नहीं रहता। ... ठीक है कि प्रकाशकों को स्वयं पुस्तकालयों अथवा ... तक अपने प्रकाशन बेचने के लिए नहीं पहुँचना चाहिए। विदेशों में व्यापार का यह नियम मान्य है। प्रकाशक जब स्वयं खरीदार तक पहुँचता है तो पुस्तक-विक्रेता इस प्रतियोगिता में नहीं टिक सकता। प्रकाशकों को अपने ही भावी हितों के संरक्षण में ऐसे नियम बना लेने चाहिएँ कि यदि कोई पुस्तकालय अथवा पाठक उन्हीं से पुस्तकें खरीदना चाहें तो या तो कोई कमीशन दिया ही न जाय, अथवा दिया जाय तो ६¼%से १०% से अधिक न हो। कमीशन की यह दर उस कमीशन से किसी दशा में अधिक न होनी चाहिए जो स्थानीय विक्रेता देने में समर्थ हैं।

इंग्लैण्ड में प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के बीच एक 'नेट एग्रीमेंट' है। इसके अनुसार पुस्तकों पर प्रकाशित मूल्य से कम पर इन्हें कोई पुस्तक-विक्रेता नहीं बेच सकता। इससे लाभ मुख्यतः पुस्तक-विक्रेताओं को ही होता है, क्योंकि उन्हें मुनाफ़े की निश्चित दर का आश्वासन मिल जाता है। इस समझौते को तोड़ने वाले पुस्तक-विक्रेता को प्रकाशक पुस्तकें बेचने को तैयार नहीं होते। जो कमीशन पुस्तकालयों को दिया जा सकता है, उसकी दरें भी निश्चित हैं। फलतः हानिकारी प्रतियोगिता का प्रश्न ही नहीं उठता।

किसी ऐसे समझौते की हमारे देश में बड़ी आवश्यकता है। क्या ऐसा सम्भव नहीं है कि जब तक प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के मज़बूत संगठन नहीं बन जाते, प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता को पुस्तकें बेचते समय प्रकाशक उससे यह लिखित आश्वासन ले लें कि वह (१) किसी पाठक को, चाहे वह कितने ही मूल्य की पुस्तकें खरीदे, कोई कमीशन न देगा और (२) किसी पुस्तकालय को २०%तक व्यापाराना कमीशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली पुस्तकों पर ६¼% और २०%से अधिक व्यापाराना कमीशन वाली पुस्तकों पर १० % से अधिक न देगा।

इस दिशा में कदम उठाना बहुत जरूरी है, क्योंकि पुस्तक-विक्रेता-वर्ग को जब तक पुस्तकों की बिक्री से लाभ न प्राप्त होगा, पुस्तकों की बिक्री की वही दयनीय दशा रहेगी जो आज है। पुस्तक-विक्रेताओं से ऐसा आश्वासन माँगते हुए प्रकाशकों को भी इसी प्रकार के आश्वासन देने होंगे कि वह किसी पुस्तकालय को अधिक-से-अधिक वही कमीशन देंगे, जो स्थानीय पुस्तक-विक्रेता स्वयं दे सकते हैं।

प्रकाशित हो गई ! **संशोधित संस्करण**

गुप्त जी की यशोधरा

ले०—कृष्णकुमार सिन्हा एम० ए०

डा० मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा' एक अमर कृति है और 'गुप्त जी की यशोधरा' में उसीकी समीक्षा की गई है। इसमें निम्नलिखित आलोचनात्मक निबन्ध हैं—(१) मैथिलीशरण गुप्त (२) गुप्तजी की काव्य-साधना (३) बौद्ध-साहित्य का परिचय (४) यशोधरा के अध्यायों का विश्लेषण (५) गुप्तजी की नारी-भावना (६) यशोधरा में विरह-वर्णन (७) यशोधरा में वैष्णव-भावना (८) रस-सिद्धान्त और यशोधरा (९) यशोधरा का विधान (१०) गीति-काव्य और यशोधरा (११) शीर्षक की सार्थकता (१२) प्रकृति-चित्रण और यशोधरा (१३) वात्सल्य और यशोधरा (१४) यशोधरा में गुप्तजी का सन्देश (१५) महाभिनिष्क्रमण की प्रेरक भावनाएँ (१६) कथावस्तु में राहुल का स्थान (१७) शिशु-राहुल (१८) यशोधरा में बुद्ध-दर्शन (१९) यशोधरा की आशावादी भावना (२०) यशोधरा में समसामाजिकता (२१) यशोधरा और चरित्र-चित्रण (२२) छायावाद और यशोधरा (२३) यशोधरा और उर्मिला (२४) यशोधरा और बुद्ध-चरित्र (२५) यशोधरा की भाषा-शैली (२६) यशोधरा की अलङ्कार-योजना (२७) यशोधरा की छन्द-योजना (२८) यशोधरा और प्रिय-प्रवास (२९) यशोधरा : एक कला की वस्तु (३०) आलोचकों की दृष्टि में यशोधरा। इसके अतिरिक्त यशोधरा की सभी कविताओं की विस्तृत व्याख्या भी है, जिससे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गई है।

मूल्य : ३)

प्रकाशक — **कला निकेतन** तूतबाड़ी, गया।

प्राप्ति-स्थान — **राजराजेश्वरी पुस्तकालय, गया**
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री

देहली के प्रमुख प्रकाशक

: : :

राजकमल प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स

राजपाल एण्ड सन्स

: : :

के हिन्दी - प्रकाशन

क

क म ला

ला

टाइप फाउण्ड्री

द्वारा निर्मित टाइपों में छपते हैं।

हिन्दी मराठी गुरुमुखी अंग्रेजी १० से

७२ प्वाइण्ट तक के कमला टाइपों के

बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श-विदेश से

...के निम्न लिखित देशों में प्रतिवर्ष कितनी पुस्तकें ...होती हैं, इसकी तालिका यूनेस्को द्वारा दी गई है :

	वर्ष	संख्या	देश	वर्ष	संख्या
[illegible]	१९४७	१३८४	न्यूज़ीलैण्ड	१९५०	३६२
[illegible]	१९५०	११०२२	पोलैण्ड	१९४९	४६०२
[illegible]	१९४८	५९५	पोर्चुगाल	१९४९	१९२०
[illegible]	१९५०	६००	फ्रांस	१९४९	९९९३
[illegible]	१९५०	३७८८	फिलिपाईन्स	१९४९	६३४
[illegible]	१९४९	१७४	फिनलैण्ड	१९४९	१८७६
[illegible]	१९५०	१७०७२	बल्गेरिया	१९५१	२१५५
[illegible]	१९५०	११३८	बेल्जियम	१९५०	४५७३
[illegible]	१९५०	८९०४	मोनाको	१९५०	६०
[illegible]	१९४९	३३१४	यूगोस्लाविया	१९४९	३५२८
...ाकिया	'५०	४४२६			
[illegible]	१९४७	८६१२	यूनियन आफ़ साउथ		
[illegible]	१९४९	३१६४	अफ्रीका	१९५०	१२४७
[illegible]			रूमानिया	१९४५	२७००
[illegible]	१९४९	११५	लेबानॉन	१९४९	३९६
[illegible]	१९४८	२५४८	सिलोन	१९५०	२०६
[illegible]	१९४७	१२२	स्विट्ज़रलैण्ड	१९५०	३५२७
[illegible]	१९४९	६७२२	स्वीडन	१९४९	३१९२

◇ ◇

...रिका में १९५३ में कच्ची जिल्द की सस्ते दाम की ...की २६ करोड़ प्रतियाँ बिकीं। इन में अधिकांश ...पहले छपी हुई किताबों का पुनर्मुद्रण थीं, कुछ लेकिन ...भी थीं।

...१९३९ की बसन्त ऋतु में इन सस्ती पुस्तकों का प्रकाशन ...में आरम्भ हुआ था। सबसे पहले प्रकाशित होने ...की दस-दस हज़ार प्रतियाँ छापी गईं और उनका मूल्य २५ सेंट (सवा रुपया) रखा गया। प्रकाशित होते ही वहाँ के प्रकाशन-जगत् में एक तहलका-सा मच गया और सभी प्रतियाँ खप गईं। एक वर्ष के भीतर ही ५०० विभिन्न थोक-विक्रेताओं के माध्यम से इनकी बिक्री की व्यवस्था हो गई। यह पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं के अतिरिक्त 'स्टेशनरी तथा अखबार बेचने वालों और विभिन्न प्रकार के स्टोरों से बिकने लगीं।

प्रकाशन ...री, १९५५

◇ ◇ ◇

टी० एस० इलियट ने अपने ६५ वें जन्म-दिन पर २६ सितम्बर १९५३ को न्यू राइटिङ्ग के सम्पादक जान लेहमैन से बातें करते हुए कहा—

"प्रकाशक होने का मैंने आनन्द उठाया है और मुझे सन्देह है कि अपनी आवश्यकताओं को इस खूबी से पूरा करने के लिए मैं इससे बेहतर धन्धा अपना सकता था। परन्तु इस बात को न भूलिए कि मैं ३९ वर्ष की उम्र में प्रकाशक बना, जब कि मेरे मन का, मेरे कवित्वमय व्यक्तित्व का, प्रायः निर्माण हो चुका था। मेरे विचार में किसी युवक के लिए, जो लेखक बनना चाहता हो और जिसने व्यावहारिक जीवन में कदम ही रखा हो इस व्यवसाय में पड़ना उचित नहीं। यह व्यवसाय साहित्य के बहुत करीब है—इससे आपकी संवेदना कुण्ठित हो सकती है।

"आप को हर वक्त घटिया स्तर की इतनी कृतियों को देखना पड़ता है कि चाय में चीनी चखने वाले अथवा चाकलेट बनाने वाले के समान साहित्य के लिए आप की भूख ही बिलकुल न रहे। साधारणतया लोगों को यह नहीं मालूम कि किसी प्रकाशक के समय का ९० % हिस्सा उन पांडुलिपियों को पलटने-देखने में, जिन्हें बाद में अस्वीकार कर दिया जाता है, ऐसी योजनाएँ बनाने में जो कार्यान्वित नहीं हो पातीं और सीमान्त के दिमागी चक्कर में डालने वाले उन लेखकों के सम्बन्ध में निश्चय करने में बीत जाता है जो प्रायः अच्छे, लेकिन बिलकुल अच्छे नहीं होते।"

क्या इधर, विशेषतः द्वितीय महायुद्ध के बाद, उत्कृष्ट साहित्यिक प्रतिभाओं का विकास हुआ है? इस पर इलियट ने सोच-विचार के बाद कहा—

"मैं समझता हूँ कि मुझे कोई ऐसी बात नहीं दीख पड़ती, खासकर कविता के क्षेत्र में। कभी-कभी मैं इस दृष्टिकोण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर झुक-सा जाता हूँ जिसका कि विशेष रूप से प्रतिपादन हुआ है, कि हमारे युग का सृष्टात्मक विकास गद्य-कथा के क्षेत्र में हुआ है···। यह ठीक है कि १९४० और १९४३ के बीच में अंग्रेजी कविता में कुछ विशिष्ट प्रतिभाएँ चमकी थीं। लेकिन उनसे जिस विकास की आशा की जाती थी, वह नहीं दिखाई पड़ा।

"यही बात मेरे विचार में अमेरिका की कविता के लिए कही जा सकती है···। नौ वर्ष पहले अमेरिका के कितने ही कवि थे जिनसे भविष्य में बड़ी आशाएँ थीं, लेकिन उनमें से प्रायः सभी ने अपने पनपने की क्षमता को पंगु कर लिया है, बहुत अधिक लिखकर अपने मूल्य को घटा लिया है, बड़ी बेदर्दी से अपना शोषण किया है, सोच-विचार में बहुत कम समय लगाया है, अपनी कृतियों की काट-छाँट करने की अधिक चिन्ता नहीं की।

"···जो चीज मैं एक बार कर चुका हूँ, उसे दुहराना नहीं चाहता। मुझे यह बात बड़ी अजीब लगती है कि किस तरह कई कवि एक पग भी आगे बढ़ाए बिना अथवा किसी नये तथ्य को खोजे बिना अपनी वृद्धावस्था तक लिखते चले गए हैं। जो बात आप कह या कर चुके हैं, उसे ही बार-बार करते जाने से क्या लाभ? मेरी स्वयं इच्छा रहती है कि प्रत्येक कविता, अथवा विशिष्ट कविता समूह पहले से विभिन्न हो, एक नवीन सृष्टि हो,···उसमें नवीनता हो, नई विजय हो।"

◇ ◇ ◇

१५ जनवरी १९५४ को दिल्ली के प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों की एक सभा श्री राजपाल एण्ड सन्ज की दूकान में हुई और दिल्ली-हिन्दी-प्रकाशक-संघ को बनाने का निश्चय किया गया। नियमावली की रूपरेखा निर्धारित करने के लिए एक समिति नियुक्त की गई और पदाधिकारियों का चुनाव हुआ।

पैसा परमेश्वर (नाटक)
लेखक—रामनरेश त्रिपाठी
वर्तमान सभ्यता में पैसे का नग्न-नृत्य देखना हो तो इसे जरूर पढ़िये। सजिल्द ३)
हिन्दी-मन्दिर प्रकाशन
२९ जैन मन्दिर, नई दिल्ली

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया बृहत् प्र[काशन]
तुलसी-शब्दसागर
सम्पादक-मण्डल
डा० धीरेन्द्र वर्मा, डी० लिट्० (पेरिस)
डा० बलदेवप्रसाद मिश्र, डी० लिट्० (नागपुर)
डा० माताप्रसाद गुप्त, डी० लिट्० (इलाहाबाद)
संकलन कर्ता
स्वर्गीय पण्डित हरगोविन्द तिवारी
सम्पादक
श्री भोलानाथ तिवारी एम० ए०
तुलसीदास की रचनाओं में प्रयुक्त लगभग २२००० ... बृहत्-कोष में समाविष्ट हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति के अतिरिक्त ... महाकवि की रचनाओं से उद्धरण भी दिये गए हैं। ... के लिए अपरिहार्य ग्रन्थ।
सजिल्द : : आकार 10"×7½" : : पृष्ठसंख्या लगभग ...
मूल्य बारह रुपये
हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इला[हाबाद]

क्या आप जानते हैं
'गुप्ता स्टोर्स'
थोक एवं खुदरा पुस्तक-विक्रेता
धातकीडीह, पो० जमशेदपुर
जहाँ कालेज, स्कूल एवं पुस्तकालयों के लिए ... कोटि की पुस्तकें सदा सुगमता से सुलभ ... उपलब्ध की जा सकती हैं। हमारे यहाँ हिन्दी ... बंगाली एवं अंग्रेजी भाषा की पुस्तकें प्राप्त की जा ... हैं। 'वाचनालयों एवं पुस्तक-विक्रेताओं को ... शन भी दिया जाता है।'
सोल एजेण्ट
किताब महल इलाहाबाद
गुप्ता बुकडिपो हजारीबाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...शन-व्यवसाय की दुनिया

जॉग हॉगन

न्यूज़ीलैंड की एक प्रमुख प्रकाशन-संस्था के अध्यक्ष श्री हॉगन अभी ही दुनिया का भ्रमण करके लौटे हैं। उन्होंने अपने अनुभवों का यह निचोड़ विशेष रूप से 'प्रकाशन समाचार' के लिए भेजा है।

...उद्योगों में, जो बिक्री और शायद मुनाफ़े के हिसाब ...किसी भी देश के व्यापार में अधिक महत्त्व के नहीं ...है, प्रकाशन और पुस्तक-बिक्री के व्यवसाय दुनिया के ...में आश्चर्यजनक सक्रियता और हलचल से भरे हैं। ...विशिष्ट बात यह है कि वे अपने क्षेत्र में विचित्र ...लोम व्यक्तियों को आकर्षित करने में सफल होते हैं ...में भक्तिपूर्ण उत्साह का प्रजनन करते हैं।

...बात न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलिया में पुस्तक-व्यवसाय ...दस वर्ष के निरन्तर विस्तृत होते हुए अनुभव और ...के अमेरिका, इंग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड, हॉलैण्ड और ...के पुस्तक-विक्रेताओं के बीच परिभ्रमण के आधार ...ही है। यह इच्छा और आशा कि मैं अमेरिका ...के सब प्रमुख प्रकाशकों को मिल सकूँगा, शीघ्र ही ...मावित हुई। इस इच्छा की पूर्ति के लिए तो ज़िन्दगी-...समय चाहिए। और जब तक पहले प्रकाशकों से भेंट ...की एक नई पौध आगे और पीछे जम चुकेगी। ...की कहीं कमी नहीं है, जो पूँजी के होने अथवा ...अभाव में, प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं के सम्मो-...पर मन्त्रचालित के समान दाव लगाने को तैयार ...है। चित्रकार के लिए लालच है कृतियों के बड़ी ...सुन्दर मुद्रण का; कथाकार के लिए छपे हुए अक्षर ...के लिए बहुत लोकप्रियता पाकर लाखों की ...बिकने वाली 'बेस्ट-सेलर' पुस्तकों के भेद को खोजने ...के लिए एक अच्छी, स्वच्छ, नई अर्वाचीन चीज़ ...का और बुद्धिजीवियों के लिए नए-से-नए परीक्षणों ...करने के असीम क्षेत्र का।

...और अगस्त के महीने न्यूयॉर्क अथवा लन्दन जाने के लिए अच्छे महीने नहीं थे जब कि प्रकाशन संस्थाओं के अधिकांश अधिकारी छुट्टी पर होते हैं अथवा चाहते हैं कि वे छुट्टी पर होते। बहुत समय इसीमें बीत गया कि जिन्हें पिछले सप्ताह मिला जा सकता था, वे चले जा चुके थे और जो लौटने वाले थे, वे अब तक लौटे न थे। मैनहट्टन की खाइयों की गलाघोंट आर्द्रता और गर्मी में किसी विकट और उत्साही प्रकाशक में भी पहाड़ों, झीलों अथवा समुद्र-तट पर जाने की इच्छा उपयुक्त समझी जाती थी अथवा इससे हटने की अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए दस बजे दफ़्तर आने, तीन बजे लौट जाने और सोमवार और शुक्रवार को भी छुट्टी माँगने को ठीक कहा जा सकता था। लेकिन सप्ताह के बाकी काम के दिनों में उन्हें पकड़ पाना कठिन हो जाता था। अमेरिका की यह मनोरञ्जक, यद्यपि आर्थिक दृष्टि से अतर्कसंगत प्रणाली कि हर काम के लिए तीन उच्चाधिकारी रखे जायँ, इसमें कुछ सहायक सिद्ध हुई। यदि आप तीसरी मञ्जिल पर एक्सपोर्ट सेल्ज़ मैनेजर को नहीं मिल सके तो चालीसवीं मञ्ज़िल पर ओवरसीज़ प्रमोशन-विभाग के डायरेक्टर को मिल लीजिए, अथवा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-विभाग के उपाध्यक्ष को किसी दूसरे स्थान पर जा ढूँढ़िए। अथवा हेनरी एम० स्नाइडर एण्ड कम्पनी के ही महानुभावों से भेंट कीजिए, जो आखिरकार अमेरिका की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रकाशन-संस्थाओं की अधिकांश पुस्तकों का अमेरिका से निर्यात करते हैं।

लेकिन लन्दन की बात ही दूसरी है। यहाँ दफ़्तर से कुछ ही कदम हटकर सर स्टैनले अन्विन, मि० माइकेल जोसफ अथवा मि० आर्थर बेकर[1] के व्यक्तिगत दफ़्तर हैं। अथवा टेम्पल प्रेस के दफ़्तर में ही विभिन्न विभागों के प्रमुखों

1. इंग्लैण्ड की तीन प्रमुख संस्थाओं के अध्यक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ मिलकर खाना खाइए अथवा किंग्सवुड (सरे) के विंडमिल प्रेस में एक मनोहारी सन्ध्या बिताइए और हाइने मैन, पीटर डेवीस और वर्ल्ड स वर्क्स[1] के सभी अधिकारियों से मिल लीजिए।

न्यूयॉर्क में तूल दिया जाता है बिक्री पर, विज्ञापन पर—लन्दन में साहित्य पर। कहने में यह बात ढंग की नहीं जान पड़ती, मानो ऐसा कहना पक्षपातपूर्ण और स्वेच्छापूर्ण उक्ति हो। यह भी ठीक है कि अनुभवों का यह निचोड़ जिन लोगों से आप मिलते हैं उन्हीं के प्रभाव का परिणाम है। शायद मुझे ही इतनी अधिक संख्या में उन अमेरिकनों से, जो सब बहुत ही भले व्यक्ति थे, मिलने का सौभाग्य हुआ जिनका अदम्य उत्साह पुस्तकों की अधिकाधिक बिक्री और प्रचार-प्रसार के लिए ही था। और फिर यह ठीक भी है कि जब तक पुस्तकें बिकें ही नहीं, उनके सर्जन और उत्पादन से लाभ भी क्या? यह भी सत्य है कि ब्रिटेन के प्रकाशन-क्षेत्र में मैं जिन-जिन लोगों से मिला, चाहे वे इन संस्थाओं में हिसाब करने के कर्मचारी ही क्यों न थे, जान पड़ता था कि जिस पुस्तक के विषय में वह बातचीत करने के और सिफारिश करने के लिए इच्छुक थे, वह उन्होंने अभी हाल ही में पढ़ी है। एटलांटिक सागर के उस पार पहली इच्छा यह प्रकट की जाती है कि इस दिलचस्प विदेशी को पुस्तकों के बारे में भाषण देने के लिए किसी टेलिवीजन के कार्यक्रम के लिए तैयार कीजिए। इसी पुराने, अनिर्णीत नुक्ते पर बहस शुरू हो जाती है कि पुस्तकों की अधिक बिक्री परस्पर बातचीत के बढ़ते हुए दायरे के अथवा सुआयोजित विज्ञापन के, व्यक्तिगत सिफारिश के अथवा बड़े पैसे खर्च करके प्रचार के आधुनिक ढंग के दबाव के परिणाम स्वरूप होती है।

किताबों की बिक्री के लिए सबसे बढ़िया मण्डियाँ आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में हैं। यहाँ के कार्य-कलाप के तरीके से तो यही सिद्ध होता है कि बड़े विस्तार का विज्ञापन न तो आवश्यक है और न महत्त्वपूर्ण ही। शायद अमेरिका के पाताल-लोक में विचित्र प्रकार के प्राणियों का वास है।

फल यह है कि प्रकाशन के ताने-बाने में इ[…] दृष्टिकोण का असर स्पष्ट दीख पड़ता है। अमे[…] प्रकाशक किसी मण्डी को भाँपकर उससे ला[…] (एक्सप्लायटेशन) में जुट जाते हैं। काम का शु[…] पहले व्यापार की सब सम्भावनाओं का वे विश्लेषण[…] ब्रिटेन के ये नए प्रकाशक अकस्मात् कार्य-क्षेत्र [में प्रवेश] करते हैं—निस्सन्देह उतनी असावधानी से नहीं [जितनी] हिन्दुस्तान में—जब कि किसी पुस्तक का प्रकाशन [आरम्भ] होता है और जब वह किसी भावी लॉर्ड मैकमिलन [के हाथ] पड़ जाती है। अमेरिकन का दिमाग सोचता है—[…] में इसकी बिक्री अच्छी रहेगी? अंग्रेज कहता है—[…] अच्छी बढ़िया पुस्तक है? दोनों ही एक प्रकार के [...] और शायद दोनों में जो अन्तर दिखाई पड़ता है, [वह] अधिक नहीं है। अन्ततः अच्छी बिक्री का अर्थ है [...] उस पुस्तक को पढ़ने के लिए उत्कण्ठा, जो तब तक [नहीं] होगी जब तक कि वास्तव में ही कोई बढ़िया पुस्तक [न लिखी] की जाय और सिद्धान्ततः बढ़िया पुस्तक के पाठक [अधिक] संख्या में होंगे। परन्तु इन दोनों मन्तव्यों के [...] भेद की बहुत सी परतें उभर आती हैं।

ये बातें छोटे और नए प्रकाशकों पर ही [...] होती हैं। इनकी काफी अधिक संख्या है, परन्तु [...] उनका अनुपात इतने अधिक महत्त्व का नहीं है। [...] बड़ी-बड़ी सुस्थापित प्रकाशन-संस्थाओं की ओर [...] यह भेद बहुत विशिष्टता से नहीं दिखाई पड़ता। [...] संस्थाओं को अपने में मिला लेने की प्रवृत्ति [...] अपेक्षा ब्रिटेन में अधिक है। ब्रिटेन के प्रकाशकों [...] की ओर अधिक ध्यान और उनके पास पूँजी का [...] कम होना भी इसके कारण हैं। यहाँ के प्रकाशन [...] आयोजना कुछ ऐसी उलझी हुई है कि किस संस्था [का कौन] मालिक है, यह जानना दूभर है। कुछ व्यक्ति [...] प्रकाशक, थोक-विक्रेता और यहाँ तक कि मुद्रक [...] आप जाइए, आपसे टकरा जाते हैं। प्रत्येक दि[न नए] संगठन बनते हैं और पुराने टूटते हैं। इन सम[...] आयोजनों का संकेत अक्सर लेखकों के परस्पर [...] कापी राइट, मण्डियों के अथवा निर्यात के लिए [...]

प्रकाशन [...]

---

१. इंग्लैण्ड की तीन प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं के नाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★पुस्तकालयों एवं पाठकों को नये वर्ष का

अपूर्व उपहार—

सुप्रभात—हिन्दी-पाठकों के लिए शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय का यह बिलकुल नया उपन्यास है। आज से ४५ वर्ष पूर्व इसका पहला संस्करण बंग-भाषा में छपा था। अब यह उपन्यास बंगला में भी लुप्त है। बड़े परिश्रम से मूल प्रति हमें प्राप्त हुई है। प्रामाणिक अनुवाद, सुन्दर छपाई, सजिल्द २)।

हमारे अन्य प्रकाशन

उपन्यास

…न्त (सम्पूर्ण)	शरत् चन्द्र चट्टोपाध्याय	५)
…हीन	,,	४॥)
…के दावेदार	,,	४)
…प्रश्न	,,	४)
…दाह	,,	४)
…जा	,,	४)
…दास	,,	२॥)
…देश	,,	२॥।)
…द्धा	,,	२॥)
…ना	,,	२)
…मतः	,,	२)
…दीदी, काशीनाथ	,,	१॥)
…दीदी तथा अन्य कहानियाँ	,,	१॥)
…था तथा अन्य कहानियाँ	,,	१॥)
…मास	,,	१॥)
…पोया तथा अन्य कहानियाँ	,,	१॥)
…ता तथा अन्य कहानियाँ	,,	१॥)
…का मूल्य	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३॥)
…की किरकिरी	,,	३॥)
…री	,,	२॥)
…नी दुनिया	,,	२)
…मांसि	,,	१)
…की मीमांसा	,,	१)
…और नाहर	,,	२॥)
…बी	,,	१॥)
…काका की कुटिया	चंडीचरण सेन	५॥)
…	मैक्सिम गोर्की	५)
…	नरेशचन्द्र सेन	३)

महाराष्ट्र प्रभात	हरिनारायण आप्टे	२॥)
घेरे के भीतर	गुप्ता	२)

नाटक

द्विजेन्द्रलाल राय नाटकावली		४॥)
धरती और आकाश	शम्भूनाथसिंह	१)
शाहजहाँ	डी० एल० राय	१॥)
नूरजहाँ	,,	१॥)
चन्द्रगुप्त	,,	१॥)

गांधी-साहित्य

विद्यार्थियों से	महात्मा गांधी	३॥)
महिलाओं से	,,	४)
स्वास्थ्य साधन	,,	१॥)
आत्म-संयम	,,	१॥)
समाज सेवा	,,	॥)

धार्मिक-साहित्य

मीरा की बृहद् पदावली		२॥)
सन्त दादू और उनकी वाणी		२॥)
सन्त वाणी		१)

विविध

पन्त का काव्य विकास	सुरेशचन्द्र वर्मा एम० ए०	२)
राजनैतिक समस्याएँ	राजनीतिज्ञ	२)
अभिनन्दन ग्रन्थ	'मधुर'	२॥)
मुरली मनोहर	,,	॥)

बाल-साहित्य

शिकारी कहानियाँ	१ला भाग	।=)
,, ,,	२रा भाग	।=)
ऐतिहासिक कहानियाँ	१ला भाग	।=)
,, ,,	२रा भाग	।=)
बापू जी : घर में		१)

नोट—पुस्तकालयों एवं संस्थाओं को नये वर्ष के उपलक्ष में विशेष रियायत दी जायगी। पत्र-व्यवहार करके जानकारी प्राप्त करें

श्री गांधी ग्रन्थागार, सी ७/१४० सेनपुरा, बनारस

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के वितरण में स्पष्ट होता है। प्रकाशन-जैसे अस्थिर धन्धे में ऐसा होना स्वाभाविक ही है कि व्यक्तिगत सफलताओं, आशाओं और सम्भावनाओं की हमेशा चर्चा होती रहे। आजकल के कई एक सफल प्रकाशक किसी समय असफलता का मुँह भी देख चुके हैं, लेकिन पुस्तक-व्यवसाय में एक बार चोट खाकर भी इससे बचकर चलना उनके लिए असम्भव-सा हो जाता है और कुछेक बड़े-बड़े ऐसे सम्पन्न व्यक्ति भी हैं, जो उन्हें इस ओर निरन्तर प्रेरणा देते रहते हैं।

डालर की कमी का विश्व-व्यापी संकट उस व्यवसाय में भी झलकता है जिसके अनुसार अमेरिका के प्रकाशक अपनी पुस्तकों को ब्रिटिश राष्ट्र-संघ के देशों में अमेरिका की राह से बेचते हैं। इन पुस्तकों के दाम स्टर्लिङ्ग की मुद्रा में भरने होते हैं। इस व्यवस्था के दाव-पेंच कई विभिन्न रूप अपनाते हैं और कई बार आयात-निर्यात की रुकावटों और बोर्ड ऑफ ट्रेड के आदेशों का अक्षरशः पालन करते हुए भी वस्तुतः उल्लंघन करते हैं। इंग्लैण्ड और अमेरिका के बीच पुस्तकों का लेन-देन देर से होता रहा है। अमेरिका के प्रकाशक इंग्लैण्ड में अपनी सहायक कम्पनियाँ और इंग्लैण्ड के अमेरिका में अपनी शाखाएँ खोलते रहे हैं। कई उदाहरण हैं कि जहाँ इन शाखाओं और विदेशी का कार्य-क्षेत्र मूल संस्थाओं में समान बढ़ गया और नई-नई दिशाओं में स्वतन्त्रता से काम करने लगीं। में इस प्रकार के सम्बन्धों में कई प्रकार के सम्बन्ध हो गए हैं—(१) कई ऐसे प्रकाशन हैं जो केवल उपन्यासों का पुनर्मुद्रण करते हैं, (२) कई ऐसी संस्थाएँ अमेरिका की पुस्तकों का बड़े स्तर पर आयात करती हैं और (३) अमेरिकनों की सहायक कम्पनियाँ स्थापित हो गई हैं जो अमेरिकन पुस्तकों के और वितरण में व्यस्त हैं। ऐसी कम्पनियाँ कुछ स्वतन्त्र कार्य भी करती रहती हैं जो इस नये में जीवित रहने और सफल होने के लिए आवश्यक पड़ते हैं।

उपन्यासेतर सामान्य साधारण पुस्तकों के प्रकाशन

हमारे प्रकाशन

उपन्यास

माया-जाल—श्री गुरुदत्त	५)
राग और त्याग—श्री कमल शुक्ल	५)

आलोचना और साहित्य

सूर-मीमांसा—डा० ब्रजेश्वर वर्मा	४)
कृष्णकाव्य की रूप रेखा—श्री 'व्रती'	३॥)
हिन्दी साहित्य का इतिहास : एक दृष्टि में —सन्त धर्मचन्द	१)
नवीन लोकोक्तियाँ और मुहावरे—सन्त धर्मचन्द	१॥)
संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण—डॉ० व्यास	२॥)
अतीत स्मृतियाँ—श्री सोहनलाल	१।=)

कहानी संग्रह

चारु चयनिका—सन्त धर्मचन्द	३)

व्याकरण

आदर्श हिन्दी व्याकरण—सन्त गोकुलचन्द्र	२)

(संस्कृत) व्याकरण प्रदीप—
प्रो० एम० के० सरकार तथा सन्त गोकुलचन्द्र
मैट्रिक संस्करण २॥=) कालेज संस्करण

बाल-साहित्य

छिक-छिक
अमर सन्देश
बापू दर्शन
चमकते तारे
सैरसपाटे

नाटक

मीरा—सन्त गोकुलचन्द्र
हिरौल—सन्त गोकुलचन्द्र
समाधि—श्री विष्णु प्रभाकर
आधुनिक एकांकी—सन्त गोकुलचन्द्र

ओरिएण्टल बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...बढ़ गया है। जनता की भावी दिलचस्पियों और ... की दिशाओं का सही अनुमान लगाना प्रकाशन- ... की ठोस सफलता और स्वतन्त्रता तथा पिछले प्रकाशनों ... कुछ पुस्तकों की लगातार बिक्री का आधार बन गया है।

...युद्ध के बाद नये प्रकाशकों में से कई-एक प्रमुखता पा ... हैं, वह आज के पाठकवर्ग की इस रुचि के कारण हैं जो ... क्षणिक और अस्थायी सिद्ध हो सकती है। खोज और ... साहसवादी कहानियों के लिए आज के उत्साह ने, जो कि ... "... हॉर्ड", "कॉन टिकी" और "द क्रु अलोसी" की ... ने शुरू किया था और जिससे इन पुस्तकों को छापने ... पुराने सुस्थापित प्रकाशकों को काफी लाभ हुआ है, ... और अमेरिका के दोनों देशों में इस प्रकार के प्रका- ... को काफी उत्तेजना दी है। प्रकाशन की इस दिशा ने ... कई रूप धर लिए हैं। इन नये प्रकाशकों में से अधि- ... अब ऐसी पुस्तकों की खोज में हैं जो शायद तुरन्त ही ... लाभप्रद न सिद्ध हों। लेकिन इस धन्धे में इनके टिके ... में सहायक हों।

मैं हालैण्ड में अधिक स्थानीय प्रकाशकों से नहीं मिल सका। प्रकाशन-व्यवसाय में हालैण्डवासी अपने दूसरे उद्योग-धन्धों के समान ही परिश्रम और सौष्ठव का आप पर प्रभाव डालते हैं। अपने उपनिवेशों से सम्बन्ध टूटने के कारण उनके व्यापार को जो क्षति पहुँची है उसे वह अपने परम्परागत, यूरोप के सब देशों और संसार-भर से व्यापार करने की व्यवस्था का पुनरायोजन करके पूरा करने में संलग्न हैं। पुस्तक-व्यवसाय के लिए यह बात उतनी ही सत्य है जितनी कि दूसरी चीजों के व्यापार में। किताबों की दुनिया में भी हालैण्डवासी अपनी स्थिर और शान्त बुद्धि और कलापूर्ण उत्साह के अतुल सामंजस्य का प्रदर्शन करते हैं।

हिन्दुस्तान के प्रकाशन और पुस्तक-विक्री के जगत् की एक झलक, जो मैंने मुख्यतया दिल्ली और बम्बई में देखी, आकर्षक भी है और हैरानी में भी डालती है। इस देश के नाम-मात्र के प्रकाशकों को—और नाम-मात्र के ही पुस्तक-विक्रेताओं को—गिन लेना असम्भव है। केवल देहली में ही २०० से ऊपर 'पुस्तक-विक्रेता' हैं; इनमें से शायद ६० के

प्रचार करने योग्य कुछ पुस्तकें

...ता और समाजवाद—आचार्य नरेन्द्र देव	१०)
...राष्ट्रीय विधान—श्री सम्पूर्णानन्द	६)
...निक पत्रकार कला—रा० र० खाडिलकर	३॥)
...हत्याकांड—	५)
...वाद, समाजवाद ग्रामोद्योग—भा० कुमारप्पा	५)
...और भारत—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१।)
...वर्ष का इतिहास—भाई परमानन्द	८)
...ता—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२॥)
...न की प्रगति—प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३॥)
...मनोविज्ञान—हंसराज भाटिया	४)
...—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी	२॥)
...का प्रयोजन—डॉ० भगवानदास	३।)
...(स्त्रियों के लिए)	३॥)
...—रामदास गौड़	१२॥)
...हिन्दी कोश—(सुगमवर्ग पहेली के लिए ता० २६—१—५४ से मान्य)	२०)
चिद्विलास—श्री सम्पूर्णानन्द	४॥)
पत्र और पत्रकार—श्री कमलापति त्रिपाठी	६)
गीति काव्य—प्रो० रामखेलावन पाण्डेय	५)
पश्चिमी यूरोप—अनु० छविनाथ पाण्डेय	४॥)
खाद का उपयोग—दुर्गाप्रसादसिंह	१।)
राजनीति शास्त्र—प्राणनाथ विद्यालंकार	४)
तुलसीदास और उनका युग—डॉ० राजपति दीक्षित	७)
विज्ञान के चमत्कार—प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२॥)
परमाणु शक्ति—प्रो० भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२॥)
सामयिकी—श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी	३॥)
हमारी खुराक—एम० आर० मसानी	१)
जियो जागो—(१४ से १२ वर्ष के बालकों के लिए)	४)
वक्रोक्ति और अभिव्यंजना—श्री रामनरेश वर्मा	४)
पारिभाषिक शब्द-कोश—सं० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४)
बयालीस—(उपन्यास) श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४)

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास ही अंग्रेज़ी अथवा देशी भाषाओं की कुछ पुस्तकें प्राप्य हैं। यह देखकर भी हैरानी होती है कि इनमें से कुछेक अंग्रेजी और अमेरिकन पुस्तकों का कितना बड़ा भण्डार बिक्री के लिए रखते हैं, लेकिन पूछने-जाँचने पर यही मालूम पड़ा कि मुनाफ़ा कमाना इनके लिए भी दुःसाध्य है।

हिन्दुस्तान में प्रायः हरेक ऐसा व्यक्ति, जिसके पास कोई पाण्डुलिपि अथवा चित्रों का ऐसा संग्रह हो, जिसे वह प्रकाशित हुआ देखना चाहता है और जिसके लिए वह किसी मुद्रक को तैयार कर सके, प्रकाशक बन जाता है। इसी कारण हिन्दुस्तान की कितनी ही पुस्तकों के प्रकाशकों को खोजना कठिन हो जाता है। बम्बई के एक बड़े पुस्तक-विक्रेता ने, जो चिट्ठी-पत्री से मिले हुए आर्डरों का काम बड़े स्तर पर करता है, वहाँ पहुँचने पर मुझे यह चेतावनी दी कि वह भी यह दावा नहीं कर सकता कि हिन्दुस्तान में छपी हुई प्रत्येक पुस्तक उसके यहाँ मिल सकती है। विदेशों में किसी के लिए ऐसा दावा करना नितान्त निरर्थक है।

हिन्दुस्तान में कुछ पुस्तकों का मुद्रण और प्रकाशन बहुत ही कुरुचिपूर्ण ढंग से होता है। अंग्रेजों के जाने के बाद पुस्तक-उत्पादन के स्तर में काफी गिरावट हुई, लेकिन अब इस स्थिति में सुधार हो रहा है। कुछ पुस्तकें बहुत सुन्दर और अच्छे ढंग की भी छपती हैं। भारत-सरकार के प्रकाशन-विभाग की नीति और पुस्तकों का यहाँ उल्लेख करना योग्य है। इस विभाग के दृष्टिकोण और प्रकाशन में जो व्यावसायिकता की पुट है वह किसी सरकारी विभाग के लिए असाधारण चीज है। इनके प्रकाशन आकर्षक और सुरुचिपूर्ण होते हैं। दूसरे उद्योग-धन्धों के समान हिन्दुस्तान के प्रकाशन और पुस्तक-बिक्री के व्यवसाय को उस हद तक सुव्यवस्थित होने में अभी काफी समय लगेगा, जब कि उसके प्रकाशन-स्तर और व्यापार-विस्तार को सन्तोषजनक कहा जा सके। इन दोनों क्षेत्रों में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब कुछ उत्साही व्यापारी जुटे हुए हैं।

हिन्दुस्तान को घटिया किस्म की रद्दी, अधिक तादाद में छपी पुस्तकों को निकालने की मण्डी समझने की अफ़सोसनाक मनोवृत्ति, विशेषतः अमेरिका के प्रकाशकों की ओर से ... पड़ रही है। दूसरी ओर, आयात की हुई बढ़िया ... अच्छी और टेकनिकल किताबों की यहाँ संख्या भी आ... पूर्ण और उत्साहप्रद है।

पुस्तक-बिक्री और प्रकाशन के दृष्टिकोण से ... व्यापार-क्षेत्र अपेक्षातर बहुत छोटा है। अंग्रेजी पढ़ने ... पाठकों की संख्या कम है और करीब ही हिन्दुस्तान के ... से विदेशी पुस्तक-व्यवसाय में कुछ बाधा पहुँचती है।

अब हम आस्ट्रेलिया की ओर आते हैं; जहाँ के प्रका... जगत् में पिछले दशक में बड़े परिवर्तन हुए हैं। युद्ध के ... में, इंग्लैण्ड के प्रकाशकों की ओर से आस्ट्रेलिया व न्यूजी... लैण्ड की मण्डियों के लिए पुस्तकों के स्थानीय प्रका... काम काफ़ी फैल गया था। युद्धोत्तर काल में, और काग... सुविधा से मिलने के कारण पुस्तक-प्रकाशन, पत्रादि, कॉ... तथा कागज़ की जिल्द की सस्ती किताबों की छपाई आ... उद्योग स्थापित हो गया है। इस व्यवसाय में उन्न... होती रही है और आजकल आपत्तिपूर्ण कॉमिक्स की प्र... बाढ़ की जगह उसी के समान आपत्तिपूर्ण सस्ते ... खूँरेज, अमेरिकन मूल के उपन्यासों की बाढ़ ने ले ली ... आस्ट्रेलिया में कई-एक सफल और सुव्यवस्थित प्रकाश... मुद्रण संस्थाएँ हैं। यह दुर्भाग्य की बात है कि उनके ... का एक महत्त्वपूर्ण अंश ऐसी पुस्तकों का पुनर्मुद्रण है, ... मूल प्रकाशन विदेशों में हुआ है।

मैं न्यूज़ीलैण्ड में लौट आया हूँ। यहाँ यह ऊपर ... लागू नहीं है। जो थोड़ा-बहुत स्थानीय प्रकाशन होता ... वह मुख्यतः मौलिक है और देश की संस्कृति और उ... लिए महत्त्व का है। यह भी सत्य है कि हमें अपनी ... अधिकांश पुस्तकों के लिए विदेशों से आयात पर निर्भ... पड़ता है। मैनहट्टन की खाइयों के और इसके विपरीत ... के राजसी ठाठ के मुकाबिले में हम महत्त्वहीन दिखाई ... हैं, परन्तु यहाँ की जनसंख्या के अनुपात में अब भी ... में पुस्तकों के लिए यह मण्डी ही सबसे बढ़िया है। ... बड़े प्रकाशकों का भविष्य शायद हमारे ही हाथों में है ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

श्री ...रमेशचन्द्र दुबे, सेक्रेटरी, आगरा यूनिवर्सिटी ...इंस्टीट्यूट ऑफ़ हिन्दी स्टडीज़, आगरा, ने निम्न लिखित ...सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है :

"आगरा विश्वविद्यालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास ...के उद्देश्य से एक हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की है। ...संस्कृत, अंग्रेजी और भारत की प्रादेशिक भाषाओं के साथ ...हिन्दी के तुलनात्मक अध्ययन का प्रबन्ध विद्यापीठ में रहेगा। ...इन भाषाओं की पाठविधि निर्धारित करने तथा पुस्तकालय ...को समृद्ध करने के लिए हमें उपयुक्त पुस्तकों की आवश्यकता ...है। प्रादेशिक भाषाओं में गुजराती, बंगला, मराठी, असमिया, ...उड़िया, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम मुख्य हैं। इन ...भाषाओं की नीचे लिखे अनुसार पुस्तकें अपेक्षित हैं :

१—नए भाषा सीखने वालों के लिए उपयोगी पुस्तकें,

२—प्रत्येक भाषा की उच्च स्तर की प्रमुख साहित्यिक ...कृतियाँ,

३—भाषा तथा साहित्य के इतिहास,

४—भाषाओं के हिन्दी-अंग्रेज़ी कोश, और

५—प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाएँ।

ऐसी पुस्तकों की सूची तथा नमूने की प्रतियाँ हम साभार ...स्वीकार करेंगे।

विद्यापीठ की ओर से **भारतीय साहित्य** नाम का एक ...सिक पत्र निकालने का आयोजन भी किया गया है। सभी ...प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य को हिन्दी के माध्यम से प्रस्तुत ...करना पत्र का ध्येय है। हिन्दी अनुवाद के साथ मूल ...रचना भी पूरी या अंश-मात्र नागरी लिपि में रहेगी। हिन्दी ...तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों की संक्षिप्त ...आलोचना और सूचना भी पत्र में देने का विचार है। ...इसमें लेखकों तथा प्रकाशकों का सहयोग हमें अपेक्षित है।"

❖

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग ने अच्छे प्रौढ़ और बाल-साहित्य को प्रेरणा और समर्थन देने के लिए पुरस्कारों की एक विस्तृत योजना बनाई है। ३० अप्रैल, १९५४ तक लेखकों और प्रकाशकों को विचारार्थ पुस्तकें व पांडुलिपियाँ भेजने के लिए निमन्त्रित किया गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग ३२ होनी चाहिए, अधिक-से-अधिक ४८ पृष्ठ। जो २० पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ समझी जायँगी, उनमें से ५ को एक-एक हज़ार रुपयों का और १५ को पाँच-पाँच सौ रुपयों का पुरस्कार दिया जायगा। अन्य उचित कोटि के स्तर की पुस्तकों की कम-से-कम एक-एक हज़ार प्रतियाँ भारत सरकार सामुदायिक योजना-विभाग के लिए खरीद लेगी। भारत की प्रादेशिक भाषाओं में एक-दूसरी भाषा की पुस्तकों के अनुवाद को भी प्रोत्साहन दिया जायगा। पुरस्कृत पुस्तकों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद छापने के लिए विशेषकर सहायता दी जायगी।

पुस्तकों की भाषा सरल होनी चाहिए और विषय का चुनाव ऐसा कि पाठकों को अपनी आर्थिक और सामाजिक उन्नति में सहायता पहुँचे और वे भारत के बेहतर नागरिक बन सकें। भारत की परम्परा तथा आध्यात्मिक मूल्यों का मान करते हुए उनका दृष्टिकोण विशेष रूप से वैज्ञानिक होना चाहिए।

प्रत्येक पुस्तक अथवा पांडुलिपि की चार-चार प्रतियाँ भेजी जायँ और साथ में सरकारी खजाने में प्रकाशकों की ओर से ५) जमा कराने की और लेखकों की ओर से २) जमा कराने की रसीद आनी आवश्यक है।

निर्णय के लिए एक समिति का निर्माण किया गया है जिसमें भारत सरकार के अर्थ-विभाग, सूचना-विभाग तथा सामुदायिक योजना-विभाग के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त निम्न लिखित सदस्य होंगे :

श्री हामिद अली खाँ (मक्तबा जामिया, दिल्ली), श्री हरि सर्वोत्तम राव और श्री सुधीर सरकार। शिक्षा-विभाग के मन्त्री श्री हुमायूँ कबीर इस समिति के अध्यक्ष होंगे।

पुरस्कारों की घोषणा २ अक्तूबर १९५४ को हो जायगी।

❖ ❖

आदर्श हिन्दी विद्यापीठ, चौपटियाँ, लखनऊ, की आगामी परीक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित होने जा रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

साहित्य और आलोचना

तुलसी और उनका काव्य [पं० रामनरेश त्रिपाठी] ७)
अङ्गराज [आनन्दकुमार] यू० पी० सरकार द्वारा पुरस्कृत ७)
पथिक (खण्ड-काव्य) [पं० रामनरेश त्रिपाठी] १)
हिन्दी छन्द प्रकाश [लेखक—रघुनन्दन शास्त्री] ४)
हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास ६)
[लेखक—प्रो० देवीशरण रस्तोगी]
हिन्दी साहित्य की कहानी [रामरतन भटनागर] ३||)
आलोचना के सिद्धान्त [कृष्णानन्द, यज्ञदत्त शर्मा] २||)
हिन्दी साहित्य का परिचय [चतुरसेन शास्त्री] ३)
साहित्य-विचार (निबन्ध-संग्रह) [प्रो० गोविन्दराम] २||)
साहित्य चयन [जैनेन्द्रकुमार] २)
गीतांजलि [रवीन्द्रनाथ ठाकुर] ३)

उपन्यास

तूफान की कलियाँ [कृष्णचन्द्र एम० ए०] ६)
अधूरा स्वप्न [गस्ताव फ्लाबेयर] ६)
पराजय [लेखक—कृष्णचन्द्र एम० ए०] ४||)
प्रवंचना [लेखक—गुरुदत्त एम० एस-सी०] ५)
निर्माण-पथ [लेखक—यज्ञदत्त शर्मा] ४)
चाँद के धब्बे [लेखक—शिवसागर मिश्र] ३)
चोली-दामन [लेखक—करतारसिंह दुग्गल] ३||)
महारानी झाँसी [लेखक—श्री शान्तिनारायण] ४)

जीवनदायी मनोवैज्ञानिक साहित्य

मनुष्य का विराट् रूप [लेखक—श्री आनन्दकुमार] ४||)
मानसिक शक्ति के चमत्कार [सत्यकाम विद्यालंकार] २|)
आत्म-विकास [लेखक—श्री आनन्दकुमार] ५)
[यू० पी० सरकार द्वारा पुरस्कृत]
चरित्र-निर्माण [लेखक—सत्यकाम विद्यालंकार] २||)
साधना [लेखक—रवीन्द्रनाथ ठाकुर] २)
कर्मयोग [लेखक—श्री र० रा० दिवाकर] २)
ब्रह्मचर्य सन्देश [लेखक—प्रो० सत्यव्रत] ४||)

गृहस्थ-जीवन तथा स्त्रियोपयोगी

जीवन-साथी [लेखक—सत्यकाम विद्यालंकार] ३||)
आदर्श पत्नी [लेखक—पं० सन्तराम बी० ए०]
गृहस्थ-जीवन रहस्य [महात्मा नारायण स्वामी]
वीर देवियाँ

कहानी-साहित्य

प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ [प्रेमचन्द]
सुदर्शन सुमन [लेखक—श्री सुदर्शन]
अन्नदाता [लेखक—कृष्णचन्द्र एम० ए०]
अन्धा छत्रपति [,,]
पूरे चाँद की रात [,,]
काँटे
गरजन की एक शाम [,,]
सीमा [,,]
विकट पथ के राही [लेखक—बालकृष्ण एम० ए०]

लोक-कथा-साहित्य

पंचतन्त्र [सत्यकाम विद्यालंकार]
हितोपदेश
नीति कथाएँ [लेखक—श्री आनन्दकुमार]
मनोरञ्जक कथाएँ ,,
भारतीय कथाएँ ,,
सदाचार की कथाएँ ,,

ऐतिहासिक साहित्य

चाणक्य और चन्द्रगुप्त [श्री हरिनारायण आप्टे]
वीर मराठे [लेखक—भीमसेन विद्यालंकार]
दुर्गादास राठौर [लेखक—कविराज जयगोपाल]
हरिसिंह नलवा ,,
शिवाजी ,,
वीर वैरागी [लेखक—स्व० भाई परमानन्द जी]
खून की होली [लेखक—ठाकुर राजबहादुरसिंह]
राष्ट्र पुरुष [लेखक—सत्यकाम विद्यालंकार]

नाटक

सम्राट् चन्द्रगुप्त [लेखक—श्री दशरथ ओझा]
जीवन और संघर्ष [लेखक—श्री उदयशंकर भट्ट]
सराय के बाहर [लेखक—कृष्णचन्द्र एम० ए०]

राजपाल एन्ड सन्ज़, काश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ २२६ से आगे]

...के अन्तर्गत शिशु, हिन्दी-प्रवेश, हिन्दी-प्रवीण तथा ...की एल परीक्षाएँ ली जायँगी। प्रकाशकों को सूचित किया ...है कि अपने यहाँ से प्रकाशित जिन पुस्तकों को वे ...र्थ भेजना चाहें, उनकी तीन-तीन प्रतियाँ कार्यालय के ...ते पर भेज दें। पुस्तकें निम्न विषयों की होनी चाहिएँ: ...लोचना, भारतीय संस्कृति तथा दर्शन, उपन्यास तथा ...-संग्रह, काव्य, काव्यशास्त्र, कृषि, भारतीय संविधान तथा ...ति-शास्त्र, सामान्य ज्ञान।

...पुस्तकें १५ मार्च, ५४ तक कार्यालय में पहुँच जानी ...हिएँ। जो पुस्तकें अब तक प्राप्त हो चुकी हैं, उन पर भी ...र किया जायगा, उन्हें पुनः भेजने की आवश्यकता ...हीं है।

◈ ◈

...बोर्ड ऑफ़ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीडियेट एजुकेशन, ...प्रदेश, की ओर से गज़ट में विज्ञापित किया गया है कि ...के पाठ्य-क्रम के लिए कोई पुस्तक स्वीकृत नहीं की जाया ...गी। किस श्रेणी में क्या-क्या विषय किस-किस स्तर तक ...ये जाय, इसका निर्णय बोर्ड द्वारा विस्तार पूर्वक प्रकाशित ...या जाया करेगा।

◈ ◈

...दिल्ली से 'समाज' नाम का कला, साहित्य और संस्कृति ...एवं राष्ट्रीय चेतना का अग्रदूत एक मासिक-पत्र श्री दुर्गा-...सिंह के सञ्चालन और श्री महावीर अधिकारी के सम्पा-...दन में प्रकाशित हुआ है। पत्र का मुख्य कार्यालय ए—६ ...प्लेस, नई दिल्ली-१ में है।

◈ ◈

...कलकत्ता की सुप्रसिद्ध पत्रिका 'रानी' का कार्यालय अब ...ल्ली में आ गया है और उसका फरवरी' ५४ का अंक ...'रानी-विशेषांक' के नाम से दिल्ली से प्रकाशित भी हो गया ...पत्रिका के व्यवसाय तथा सम्पादन-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार ...का है रानी कार्यालय, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६। इस ...नवीन पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन श्री दीनानाथ जी ...रहे हैं।

◈ ◈

केवल हिन्दी का ही गौरव नहीं समस्त
भारतीय साहित्य का मुकुट-मणि:
श्री आरसीप्रसादसिंह का
ताजे गुलाब के समान खिला हुआ
नवीन काव्य-ग्रन्थ:

नन्ददास

अपूर्व सजधज के साथ अभी प्रकाशित हुआ है।
मूल्य २।।) मात्र

तारामण्डल
पटना

विनोद रस्तोगी के नए नाटक
आजादी के बाद
(एक दृश्य नाटक)
पुरुष का पाप
(एकांकी-संग्रह)

जिनकी पत्र-पत्रिकाओं तथा विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है तथा जिनका ६ मास के अन्दर ही दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ है। मूल्य प्रत्येक का १।।)। डाकव्यय अलग। पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष सुविधा। आज ही आर्डर दें।

कमला प्रकाशन
७।१४०, स्वरूप नगर,
कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे चुने हुए प्रकाशन

साहित्य-शिक्षा और संस्कृति—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद : साहित्य-शिक्षा और संस्कृति पर गम्भीर विचारपूर्ण भाषणों का संकलन।

भारतीय-शिक्षा—डॉ० राजेन्द्र प्रसाद : शिक्षा-सम्बन्धी विचारपूर्ण भाषणों का संग्रह।

आदर्श-पत्र-लेखन—यज्ञदत्त शर्मा : व्यक्तिगत, व्यावहारिक, निजी तथा व्यापारिक पत्रों का बृहत् संग्रह।

मैं इनसे मिला (प्रथम भाग)—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' : हिन्दी के कुछ प्रमुख साहित्य-सेवियों के इण्टरव्यू।

मैं इनसे मिला (द्वितीय भाग)—पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' : हिन्दी के कुछ प्रमुख साहित्य-सेवियों के इण्टरव्यू।

मैंने कहा (सचित्र)—गोपालप्रसाद व्यास : शिष्ट सामाजिक हास्य एवं चुभते हुए साहित्यिक मौलिक निबन्ध।

रूप-दर्शन—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : प्रेम, विरह, मिलन, रूप-पिपासा, वेदना और आँसुओं में भीगी सरस सचित्र कविताएँ।

आँखों में—हरिकृष्ण 'प्रेमी' : उन्माद, प्रेम, विरह, उपालम्भ और वेदनापूर्ण काव्य-कृति।

भारत का सांस्कृतिक इतिहास (सचित्र)—हरिदत्त वेदालंकार : वैदिक काल से लेकर आज तक की भारतीय संस्कृति का क्रमबद्ध इतिहास।

प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास—डॉ० रांगेय राघव : प्रागैतिहासिक भारत की भौगोलिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का विस्तृत चित्रण।

रजवाड़ा (सचित्र)—देवेश दास : राजस्थान की कला, संस्कृति तथा गाथाओं का सजीव वर्णन।

अगले पाँच साल—जी०एस० पथिक : आज की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर गम्भीर लेख)।

सभा-शास्त्र—नरहरि विष्णु गाडगिल : सभा के नियम तथा संचालन पर अधिकृत ग्रन्थ।

शिवालक की घाटियों में (सचित्र)—श्री निधि सिद्धान्तालंकार : शिवालक की बीहड़ घाटियों में आपबीती घटनाओं का जीता-जागता चित्रण।

आँखों देखा रूस—सत्येन्द्रनाथ मजूमदार : रूस की नैतिक, सामाजिक, औद्योगिक और राष्ट्रीय प्रगतियों का रोचक वर्णन।

यूरोपा—देवेशदास : यूरोपीय देशों के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास का विवेचन।

आपका मुन्ना (प्रथम भाग, सचित्र)—सावित्री देवी वर्मा : भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल पालन-पोषण के मनोवैज्ञानिक सुझाव।

हिन्दी के प्रमुख प्रकाशक तथा विक्रेता

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

पुस्तक-परिचय के लिए 'प्रकाशन समाचार' को नये (केवल नये) प्रकाशनों की एक-एक प्रति परिचयार्थ (समीक्षार्थ नहीं) आना आवश्यक है।

भूगोल के भौतिक आधार : डिमाई आकार की ... जिल्द, आकर्षक छपाई और सुन्दर गेट-अप की ३२१ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली द्वारा हुआ है। मूल्य ६)। लेखक श्री रामस्वरूप वशिष्ठ। "प्रस्तुत पुस्तक व्यक्ति के भौतिक वातावरण के विभिन्न ... की व्याख्या करती है। हमारी पृथ्वी कैसी है, इसके विभिन्न आकार-प्रकारों के पीछे क्या रहस्य है, उनसे व्यक्ति का कैसा जीवन प्रस्फुटित होता है, आदि अनेक समस्याओं पर इस पुस्तक में विचार किया गया है।...यह पुस्तक भूगोल की पाठ्य-पुस्तक के रूप में लिखी गई है" (लेखक—भूमिका में)। पुस्तक चार खण्डों में विभाजित है—पृथ्वी-परिचय, स्थल-मण्डल, वायु-मण्डल और जल-मण्डल। भूगोल की उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों की दृष्टि से सभी सम्बन्धित पहलुओं पर विवेचन किया गया है। इसकी उपयोगिता पीछे अंतिम पृष्ठ में दी गई अनुक्रमणिका से बढ़ गई है। पुस्तक मानचित्रों और नक्शों से परिपूर्ण है जैसा कि इस विषय की पुस्तक में आवश्यक था।

❖ ❖ ❖

चाँद सूरज के बीरन : लोक-गीतों के प्रसिद्ध संग्राहक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी की आत्म-कथा का एक भाग है। इसमें जहाँ सत्यार्थी जी के जीवन की झाँकी देखने को मिलती है वहाँ पंजाब के गाँवों के कण-कण में बिखरी लोक-संस्कृति की सोंधी सुगन्ध भी हमारे मन को विभोर कर देती है। शैलीगत प्रयोग की दृष्टि से सत्यार्थी जी का यह प्रयास अभिनन्दनीय है। पौने-चार सौ पृष्ठों की एण्टिक कागज़ पर छपी और सुन्दर तथा आकर्षक आवरण और जिल्द वाली यह पुस्तक एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई है। मूल्य ५)।

❖ ❖ ❖

दिवालोक : में हिन्दी की नई पीढ़ी के जाने-माने कवि श्री शम्भूनाथसिंह की नवीनतम कविताओं का संग्रह है। श्री शम्भूनाथसिंह के इन गीतों में पाठकों को वेदना, कल्पना और भावना की त्रिवेणी का दर्शन होगा। गेयात्मकता की दृष्टि से ये गीत हिन्दी के नये काव्य का मेरुदण्ड कहे जा सकते हैं। बढ़िया एण्टिक कागज पर डिमाई साइज़ में छपा ८० पृष्ठों का साधना-मन्दिर, काशी का यह प्रकाशन राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से २) रुपये में वितरित हो रहा है।

❖ ❖ ❖

शब्दों का जीवन : में श्री भोलानाथ तिवारी ने शब्दों के आन्तरिक और बाह्य परिवर्तनों से सम्बन्धित भाषा-विज्ञान के तथ्यों का मनोरञ्जक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इससे पाठकों को जहाँ शब्दों की उत्पत्ति और विकास का ज्ञान होगा, वहाँ वे उनमें होने वाले परिस्थितिजन्य परिवर्तनों से भी अवगत हो जायँगे। सोलह पेजी क्राऊन साइज़ में १२४ पृष्ठ। सजिल्द, मूल्य २)। प्रकाशक राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

❖ ❖ ❖

परिधि : में कवि और कहानीकार श्री राजेन्द्र शर्मा की १५ कहानियों का संग्रह है। उनकी इन कहानियों में हमें जहाँ एक युवक लेखक की संवेदनशीलता का आभास मिलता है वहाँ पिछले १२–१४ वर्षों के सामाजिक, राजनीतिक जीवन की हल्की-सी झाँकी भी देखने को मिलती है। शर्मा जी की लेखनी में हल्के-से-हल्के विषय को कल्पना और यथार्थ के आवरण में प्रस्तुत करने की जो क्षमता है, वह उनकी विशिष्टता की द्योतक है। पुस्तक छपाई, सफाई, गेट-अप आदि दृष्टियों से उपादेय और संग्राह्य है। १५४ पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का दाम दो रुपये है। यह पुस्तक आभा प्रकाशन, ७/३ दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

❖ ❖ ❖

मंगल-गीत : श्री राजेन्द्र शर्मा के १०० गेय गीतों का संग्रह है। कवि की कल्पना यथार्थ और अनुभूति के सामंजस्य से अत्यन्त ही निखरे हुए रूप में हमारे सामने आई है। जीवन की सामाजिक विषमताओं का चित्रण करने वाले गीत भी इस संग्रह में हैं। श्री दीनदयाल 'दिनेश' के शब्दों में—"'मंगल-गीत' में एकत्रित राजेन्द्र शर्मा के १०० गीत उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-प्रतिभा, दार्शनिकता, सूक्ष्म प्रकृति-निरीक्षण और प्रकृति के साथ जीवन के सुन्दर समन्वय का समुचित परिचय देते हैं।" आभा प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित, क्राऊन सोलहपेजी साइज़ के ११८ पृष्ठों की एण्टिक पेपर, सुन्दर मुद्रण और आकर्षक कवर वाली इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये है।

◈ ◈ ◈

पुरुष का पाप और आजादी के बाद : कवि श्री विनोद रस्तोगी की कृतियाँ हैं। **पुरुष का पाप** नौ एकांकियों का संग्रह है, जिसमें गार्हस्थ्य जीवन और नारी की पृष्ठभूमि पर आधारित ६ एकांकी सम्मिलित हैं। सभी एकांकी उपादेय और पठनीय हैं। इन एकांकियों की आधार-भूमि मूलतः ऐतिहासिक तथा पौराणिक है। **आजादी के बाद** यथार्थ की पृष्ठभूमि पर लिखित एक दृश्य-नाटक है। दोनों पुस्तकें कमला प्रकाशन, स्वरूप नगर, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुई हैं। दोनों के ही द्वितीय संस्करण हमारे सामने हैं और प्रत्येक पुस्तक १।।) की है।

◈ ◈ ◈

'उर्दू और उसका साहित्य' तथा **'तमिल और उसका साहित्य'** नामक दोनों पुस्तकें सरस्वती सहकार, दिल्ली द्वारा आयोजित 'भारतीय-साहित्य-परिचय' नामक पुस्तक-माला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई हैं। इनमें से पहली के लेखक उर्दू के प्रसिद्ध पत्रकार और कवि श्री गोपीनाथ 'अमन' और दूसरी के श्री पूर्ण सोमसुन्दरम् हैं। पहली में उर्दू भाषा और साहित्य और दूसरी में तमिल और उसके साहित्य का संक्षिप्त परिचय रोचक एवं हृदयस्पर्शी शैली में दोनों विज्ञ लेखकों ने दिया है। भारत की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक एकता के लिए हमें अपनी सभी प्रादेशिक एवं जनपदीय भाषाओं का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तकें इस कार्य में सहायक होंगी। सरस्वती सहकार की ओर से इस माला का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन द्वारा हो रहा है। आकर्षक दुरंगा कवर, पक्की जिल्दें, साफ़ छपाई, पृष्ठ संख्या क्राऊन सोलह पेजी १२८। प्रत्येक का मूल्य २) मात्र।

◈ ◈ ◈

गुरु-दक्षिणा : श्री सन्तराम 'वत्स' द्वारा लिखित गुरु-दक्षिणा-सम्बन्धी ६ बालोपयोगी कहानियों का संग्रह है। प्रत्येक कहानी सचित्र, सरल और रोचक भाषा में प्रस्तुत की गई है। १७×२७ के ३२ पृष्ठ की आकर्षक ... यह पुस्तक प्रकाशक : आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से ... ।।।) में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈ ◈

सच्ची नागरिकता : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित और मनरो लीफ द्वारा लिखित। बाल-साहित्य ... प्रकाशन के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण दिशा की द्योतक है। ... लेखक ने प्रत्येक पृष्ठ पर चित्रों की सहायता से नागरिक ... और शासन-सम्बन्धी अनेक आवश्यक बातों की जानकारी बालकों और नव-शिक्षित प्रौढ़ों को कराने का महत्त्वपूर्ण ... किया है। आफ़सेट कागज़ पर रायल साइज़ के ८८ पृ... की चित्रों से सुसज्जित इस पुस्तक का मूल्य एक रुपया ... आने है।

◈ ◈ ◈

राजकमल विश्व-बाल-कथा माला नाम से राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ने बाल-साहित्य की एक पुस्तकमाला प्रका... शित करनी प्रारम्भ की है जिसकी चार पुस्तकें अभी ... प्रकाशित हुई हैं। रूस की कहानियाँ : **बरफ़ीले देश में ...** **पहला शिकार**। चीन की कहानियाँ : **तीरन्दाज़ 'ई' ...** **पीली बत्तक**। चारों पुस्तकें रायल साइज़ के आफ़सेट कागज़ पर १६ से २० पृष्ठों में छपी हैं। प्रत्येक पुस्तक में ... चित्र हैं। चित्र मौलिक, रूस व चीन के चित्रकारों के ... बालोपयोगी इन लोक-कथाओं का अनुवाद भी मौलिक ... व चीनी पुस्तकों से हुआ है। भाषा सरल है।

◈ ◈ ◈

बाजत आवे ढोल : लेखक—देवेन्द्र सत्यार्थी : प्र... शक : एशिया प्रकाशन, १००, बेयर्ड रोड, नई दिल्ली : मूल्य सात रुपये। भोजपुरी लोकगीत के ढोल का मर्मस्पर्शी ... पुत्र-जन्म पर बजने वाले नीमाड़ी लोकगीत के 'जंगी ढोल' ... चोट; उत्तर प्रदेश में विवाहोत्सव तथा कन्या-विदा के ... बजने वाले 'गहगढ़' ढोल की धमार; बंगला लोक-गीत ... एक विरहिन को स्मरण आने वाले अपने विवाह के समय ... ढोल की गूँज; दायें-बायें सूरज-चाँद लगे पंजाबी ढोल ... ध्वनि; राजस्थानी 'रंगीले' की अँगुलियों से, अँगूठी से, ... से बजने वाले चंग की धमक; और संथाल तथा उड़ीसा ... आदिवासियों के मन्दिर की सड़ंग-सड़ंग इस पुस्तक में ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस इलाहाबाद

द्वारा

अभी-अभी प्रकाशित

हरिनारायण मैणवाल कृत

"कृष्णा-वियोगिनी"

(एकांकी नाटक)

तीव्र सम्वेदना सम्हाले हुए, गागर में सागर भरे हुए, छोटे-छोटे, चुटीले एकांकी हिन्दी साहित्य में निस्संदेह नवीन हैं। विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त।

डी० सी० १२८ पृष्ठ ● मूल्य डेढ़ रुपया

लेखक का दूसरा संग्रह

"मोनिनी गोपा"

वैसा ही रुचिकर तथा भारतीय गौरव एवं भावात्मक आदर्शवाद से भरा हुआ जैसा पहला-संग्रह 'कृष्ण-वियोगिनी' है। विद्यार्थियों के लिए भी उपयुक्त।

डी० सी० ९६ पृष्ठ ● मूल्य एक रुपया

उर्दू-साहित्य हिन्दी में

सम्पादक : 'फ़िराक़' गोरखपुरी

१. नज़ीर की बानी—डी० सी० पृष्ठ २३६, २॥) ('नज़ीर' अकबराबादी की लोकप्रिय संगीतपूर्ण कविताओं का संग्रह)

२. राग-विराग—डी० सी० पृष्ठ २१०, २॥) (उर्दू साहित्य की जगतप्रसिद्ध, चुटीली तथा संगीतपूर्ण छन्द-बद्ध प्रेम कहानियों व नीति-पूर्ण उक्तियों का संग्रह—उर्दू-साहित्य की प्रसिद्ध मसनवियाँ भी इसमें हैं)

३. ज़ंजीरें टूटती हैं—डी० सी० पृष्ठ २५४, ३) (देश-प्रेम की भावना से लदी हुई उर्दू की आधुनिक नवीनतम कविताओं का संग्रह)

४. धरती की करवट—डी० सी० पृष्ठ १६०, २॥) ('फ़िराक़' की नवीनतम उर्दू कविताओं का कवि द्वारा ही संकलन)

उपर्युक्त पुस्तकों में बहुत कम उर्दू के कठिन शब्द आये हैं। प्रत्येक पुस्तक में भूमिका, कवि तथा काव्य-परिचय तथा सम्पूर्ण टिप्पणियाँ दी गई हैं।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

यात्रा और देश-दर्शन

हिमालय परिचय—गढ़वाल

(नक्शा तथा कई चित्रों सहित)

इसी पुस्तक पर हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार ने १२००) का नकद पुरस्कार लेखक को दिया है।

"यह पुस्तक न केवल राहुलजी की ही वरन् समस्त हिन्दी-संसार में अपने विषय की एक है…………इस पुस्तक से हिन्दी ज्ञान भांडार की वृद्धि हुई है………केवल रेफ्रेंस बुक के तौर पर ही इसे देखें तो इसका मूल्य और महत्त्व बहुत बड़ा है।" विद्यालयों, संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए तो यह पुस्तक अनिवार्य है।

डी० सी० ५६६ पृष्ठ ● कपड़े की जिल्द, दुरंगा कवर ● मूल्य दस रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़तार है। इस सुरुचिपूर्ण प्रकाशित पुस्तक में केवल लोक-गीतों का संकलन ही नहीं बल्कि लोक-गीत में रुचि रखने वाले और इस क्षेत्र में काम करने वालों के लिए एक निश्चित दिशा और प्रेरणा भी मौजूद है।

◈ ◈ ◈

रथ के पहिये : लेखक—देवेन्द्र सत्यार्थी : प्रकाशक : एशिया प्रकाशन, १००, बेयर्ड रोड, नई दिल्ली : मूल्य साढ़े पाँच रुपये। रथ के पहियों की धड़कन में गोंड जाति के गीत और नाच, उनकी चिन्ताएँ और संघर्ष, उनकी परम्पराओं और आधुनिक जीवन की धड़कन मिलती है। 'रथ के पहिये' की कहानी मोहेंजोदड़ो से आरम्भ होती है। उपन्यास का नायक मोहेंजोदड़ो म्यूज़ियम के क्यूरेटर का पुत्र है, जो अपने पिता के रास्ते से हटकर जंगल में चला जाता है। वह केवल गोंड संस्कृति का अध्ययन ही नहीं बल्कि गोंड जाति की प्रगति के लिए सक्रिय कार्य भी करता है। रथ के पहिये घूमने लगते हैं। अनेक पात्र अन्धकार से निकलकर प्रकाश में आते हैं, कई रथ से उतरते हैं, कई चढ़ते हैं पर यह रथ जीवन की कठिन राह पर संघर्ष करता हुआ चलता ही रहता है। सौन्दर्यानुभूति और संवेदनशीलता से ओत-प्रोत यह उपन्यास गोंड-जीवन का एक जीता-जागता टुकड़ा है।

◈ ◈ ◈

आनन्द प्रकाशन लिमिटेड, बनारस की ५ पुस्तकें

अदृश्य सहायक : प्रस्तुत पुस्तक प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक श्री सी॰ डब्ल्यू॰ लेडबीटर की एक अंग्रेज़ी पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है, जो रायबहादुर पण्डया बैजनाथ बी॰ ए॰ द्वारा सम्पन्न हुआ है। यह पुस्तक आधुनिक थियोसाफी नाम की ब्रह्म-विद्या-सम्बन्धी उत्तम और प्रामाणिक साहित्य की दिशा का निर्देश करने में सहायक का काम करती है। मूल अंग्रेज़ी पुस्तक से संसार के हज़ारों मनुष्यों को शक्ति शान्ति और मिली है। २१२ पृष्ठ की सुन्दर मुद्रण और आवरण की (द्वितीय आवृत्ति) इस पुस्तक का मूल्य २।।) है।

जीवन-दर्शन : यह पुस्तक श्री रोहित मेहता के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित १८ निबन्धों का संग्रह है। इन निबन्धों में लेखक ने नवीन और प्रगतिशील जीवन-दर्शन को आधार बनाकर थियोसाफी के रहस्यवाद को समझाने का प्रयत्न किया है। लेखक के मत से पाठकों को थियोसाफी-साहित्य में सम्पूर्ण रहस्यवाद का निचोड़ मिलेगा। पृष्ठ : १२४ मूल्य ...

बौद्ध धर्मः—इस पुस्तक में थियोसाफिकल सोसा... सन् १८६६ ई॰ में हुए २१वें वार्षिकोत्सव पर श्रीमती ... बेसेण्ट द्वारा दिये गए तीसरे भाषण का हिन्दी अ... प्रस्तुत किया गया है। इसकी अनुवादिका हैं श्रीमती ... देवी मेहता। इसकी उपयोगिता के विषय में स्वयं ... एनी बेसेण्ट ने लिखा था—"बौद्ध धर्म पर भाषण दे... मुझे उन सब भ्रान्त धारणाओं का ध्यान था, ... कारण भगवान् बुद्ध के लिए उनके अपने ही देशवासि... हृदय-द्वार बन्द हो गए; अतः मैंने बुद्ध वचनों ... प्रामाणिक माने जाने वाले ग्रन्थों के ही उद्धरण दे... भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयत्न किया है।" ६६ ... पुस्तक ।।।) मूल्य की है।

हिन्दू धर्म : इसमें श्रीमती एनी बेसेण्ट के हिन्दू... सम्बन्धी भाषण का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। ... भी अनुवाद श्रीमती कौशल्या देवी मेहता ने प्रस्तुत कि... पुस्तिका में हिन्दू धर्म और उसकी विशेषताओं ... में प्रकाश डाला गया है। ४६ पृष्ठ की इस पु... मूल्य ।।=) है।

संगीत-लहरी : इस पुस्तिका में भारत के कुछ ... तथा अर्वाचीन सन्तों और कवियों के पदों का संग्रह ... स्वर-लिपि भी दे दी गई है, जिससे लोग केवल इ... को पढ़कर आनन्द-लाभ करने के साथ-साथ ... मग्न हो सकें। थियोसाफिकल सोसाइटी, बनारस ... अधिवासियों ने भिन्न-भिन्न प्रसंगों पर इन गीतों ... भी है। समवेत-गान की दृष्टि से यह पुस्तक छात्रों ... उपयोगी है। संग्रहकर्त्री श्रीमती श्रीदेवी मेहता हैं। ... की इस पुस्तिका का मूल्य एक रुपया है।

◈ ◈ ◈

सोवियत रूस का सामाजिक तथा राजकीय ... प्रस्तुत पुस्तक वी॰ कारपेंस्की की पुस्तक का अनुवाद ... अनुवादक हैं श्री ओमप्रकाश पालीवाल। पुस्तक में ... रूस के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक ... प्रकाश डालकर वहाँ के समाजवादी लोकतन्त्री ... तन्त्र पर विचार किया गया है। पुस्तक ८ अ... विभक्त है। सोवियत रूस के सम्बन्ध में ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...पूर्ण जानकारी प्रस्तुत करती है। १६६ पृष्ठ की यह ... एस्टर्न पब्लिशर्स, मालरोड, कानपुर से १॥) में प्राप्त ... सकती है।

◈ ◈ ◈

...संताप:—इस पुस्तिका में श्री बालकृष्ण बलदुआ की ...कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं में गरीबी, दैन्य तथा ...के चित्र हमें जहाँ मिलते हैं, वहाँ विद्रोह की ...भी दृष्टिगत होती है। ७० पृष्ठ की यह पुस्तक केवल एक ...में करेण्ट बुक डिपो, मालरोड कानपुर से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

सम्पत्ति-कर क्या है:—इस पुस्तक के लेखक श्री कपूर-...शास्त्री और श्री भंवरलाल जैन (चोरडिया) प्रसिद्ध ...और इनकम टैक्स परामर्शदाता हैं। लेखकों ने इसमें ...सम्पत्ति-कर-सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी भूमिका, सम्पत्ति-कर ...पर लगेगा, कर-निर्धारित करने योग्य सम्पत्ति, सम्पत्ति ...मूल्यांकन, सम्पत्ति-कर में छूट तथा सुविधाएँ, सम्पत्ति-...अधिकारी, हिसाब कौन और कैसे पेश करे, कर-निर्धारण, ...की व्यवस्था, सम्पत्ति-कर की दरें, सम्पत्ति-कर कैसे गिना जाता है तथा सम्पत्ति-कर गणना सूचक चार्ट आदि १२ अध्यायों में विषय-सम्बन्धी पर्याप्त जानकारी दे दी है। ६८ पृष्ठ की यह पुस्तक पाटनी जैन एण्ड कम्पनी, जौहरी बाजार, जयपुर से १॥) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

उपन्यास सिद्धान्त—श्री श्याम जोशी की ६७ पृष्ठ की इस छोटी-सी पुस्तिका में उपन्यास-साहित्य के कला सिद्धान्त और इतिहास सम्बन्धी जानकारी दी गई। पुस्तक में 'कथा-साहित्य', 'उपन्यास के तत्त्व', 'उपन्यासों के प्रकार' तथा 'उपन्यास का विकास'-शीर्षक चार अध्याय हैं। पुस्तक की भूमिका में श्री जैनेन्द्र कुमार ने लिखा है—"पुस्तक साहित्य के विद्यार्थियों की सहायता की दृष्टि से लिखी गई है। इसमें पर्याप्त श्रम के प्रमाण हैं और वस्तु को हृदयंगम करके लिखा गया है। इस तरह पुस्तक बड़े काम की और उपयोगी बन गई है।" मोहन न्यूज़ एजेन्सी कोटा से ॥।) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

पगडण्डियाँ—मोहन न्यूज़ एजेन्सी, कोटा द्वारा प्रकाशित श्री राजेन्द्र सक्सेना की इस पुस्तक में उनकी १६ कहानियों का

बुनाई के नमूने

...पुस्तक का नवीन द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है। ...सभी बुनाई के नमूनों के बनाने की सम्पूर्ण विधि भी ...भाषा में दी गई है। पुस्तक पूर्णतया सचित्र है। पुस्तक ...प्रत्येक घर में होना आवश्यक है। मूल्य केवल चार ...है। वी० पी० से ४॥=)

नई बुनाई

...पैम्फ्लेट नं० १ में (१) पुरुषों के लिए जरकिन (२) ...के लिए दो सलाई का मोजा (३) छोटे बच्चे के लिए ...कोट, तथा (४) चार से ६ वर्ष तक के बालक के लिए ...की जरसी, इन चार वस्त्रों के बुनने की पूरी विधि दी ...है। मूल्य ॥) वी० पी० से १), दोनों वी० पी० से ५=)

आरसी

सचित्र पारिवारिक पत्रिका

विशेषकर स्त्री उपयोगी पत्रिका, जिसमें प्रतिमास बुनाई, कढ़ाई, सिलाई, पाक पर नियमित लेख रहते हैं। साथ में कविता, कहानी, हास्य, सिनेमा पुस्तक-परिचय आदि भी। समस्त परिवार के लिए मनोरंजक तथा उपयोगी। मूल्य ३) वार्षिक; वी० पी० से ३।); नमूने की प्रति ।=)

प्रकाशकों, विक्रेताओं तथा लेखकों की सुविधा के लिए आरसी में केवल पुस्तकों के लिए वर्गीकृत विज्ञापन स्तम्भ रखा गया है। मूल्य केवल एक आना प्रति शब्द, कम-से-कम २); मूल्य अग्रिम आना आवश्यक है।

पुस्तक विक्रेताओं को नमूना व्यापारिक दर पर भेजा जाता है।

सम्पादिका व व्यवस्थापिका

श्रीमती लीला प्रकाश बी० ए०, ११३-१३६, स्वरूपनगर, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रह है। पुस्तक की भूमिका में श्री जगदीश पलायनवादी ने लेखक की कहानी-कला पर विचार करते हुए लिखा है: "इन कहानियों की भाषा सजीव और प्रवाहयुक्त है, जो कि कहानी की रोचकता और प्रसाद गुण को नष्ट नहीं होने देती व पाठक का हृदय अन्त तक पकड़े रहती है।" ८६ पृष्ठ की यह पुस्तक १) में प्रकाशक से मिल सकती है।

✧ ✧ ✧

हिन्दी समाचार-पत्र सूची:—प्रस्तुत पुस्तक में उसके सम्पादक श्री वेंकटलाल ओझा ने हिन्दी-समाचार-पत्रों की सन् १८२६ से १६२५ तक की सूची संग्रहीत की है। इसका प्रकाशन सन् १६५० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हैदराबाद अधिवेशन के अवसर पर हुआ था। लेखक ने अपने वक्तव्य में कहा है—"इस सूची के दूसरे भाग में १६२५ से १६५० तक के समाचार-पत्रों का विवरण रहेगा।" ८२ पृष्ठ की यह पुस्तक 'हिन्दी-समाचार-पत्र संग्रहालय', कसारट्टा रोड, हैदराबाद (दक्षिण) से प्राप्त की जा सकती है।

✧ ✧ ✧

प्रेरणा प्रकाशन (सोजती गेट, जोधपुर) द्वारा **प्रेरणा** नाम की अभिनव मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका के कुछ अंक समय-समय पर विशेषांक के रूप में निकाले जाते हैं। जुलाई में **मेघदूत अंक** के नाम का सफल और अतीव लोकप्रिय विशेषांक प्रकाशित हुआ जिसमें कालिदास की इस अमर कलाकृति का राजस्थानी में श्री नारायणसिंह भाटी द्वारा किया हुआ अनुवाद मूल और हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया था। यह अंक अलग से रायल साइज के १०२ पृष्ठ की पुस्तक के रूप में २॥) में प्राप्य है, छपाई न्यूजप्रिंट पर हुई है। जनवरी १६५४ में **प्रेमचन्द के पात्र अंक** नाम का विशेषांक छपा है जो (२२४ पृष्ठ : रायल साइज की पुस्तक के रूप में ५) में प्राप्य है। नौ विभिन्न लेखक-लेखिकाओं ने प्रेमचन्द की १६ प्रसिद्ध कहानियों और ६ उपन्यासों के ५० प्रमुख चरित्रों का विश्लेषणात्मक चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त **प्रेमचन्द के स्त्री-पात्र, प्रेमचन्द के साहित्य में भारतीय जनता का चित्रण, नाम-संस्कार का सर्वश्रेष्ठ पुरोहित प्रेमचन्द और कथा-साहित्य और पात्र** नाम के विशेष निबन्ध भी हैं। इस कृति में सभी प्रतिनिधि चरित्रों को ले लेने का प्रयास किया गया है।

महादेवी-काव्य-परिशीलन
लेखक—श्री भागीरथी दीक्षित

श्रीमती महादेवी वर्मा के काव्य का निष्पक्ष परिशीलन एवं 'आधुनिक कवि, भाग १' के प्रत्येक पद की व्याख्या। साहित्य-रत्न तथा बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक सरल सहायिका है। पृष्ठ २००, सुन्दर आवरण।

मूल्य २॥)

प्रकाशक—श्री भगवतीप्रसाद सिंहानिया
१७ कैवेल स्ट्रीट, बम्बई—२

आधुनिकतम खोज सामग्री से समन्वित, गद्य तथा काव्य की प्रवृत्तियों तथा प्रमुख कवियों की आलोचना से युक्त, सांस्कृतिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि में साहित्यकारों का मूल्यांकन, पूर्ववर्ती साहित्यकारों की अपेक्षा उनमें भाव, भाषा, छन्द, विषय आदि का विकास, परिवर्तन तथा अन्तर के स्पष्टीकरण सहित
एक मूल्यवान प्रकाशन
हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सुप्रसिद्ध लेखक
डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
एम० ए० डी० फिल०, डी० लिट्०
कृत
'हिन्दी-साहित्य का इतिहास'
कालेज और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, लोक-सेवा आयोग (पब्लिक सर्विस कमीशन) के परीक्षार्थियों के लिए एक अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक।
मूल्य ११) : पृष्ठ २२०
प्रकाशक मालवीय पुस्तक भवन, लख...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

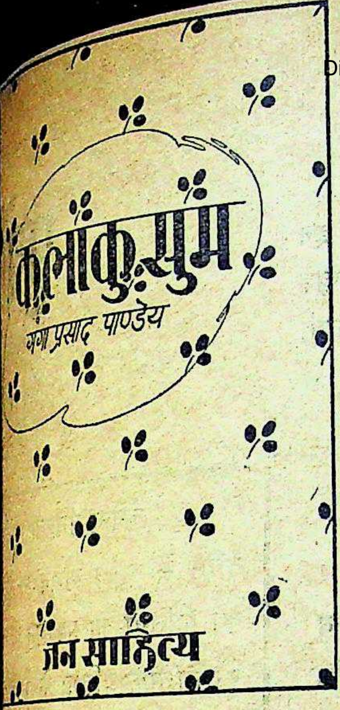

आलोचना तथा निबन्ध साहित्य की अनुपम उपयोगी पुस्तक

आकर्षक दो रंगा आवरण मूल्य दो रुपया २)

आकर्षक दो रंगा आवरण मूल्य अढ़ाई रुपया २।।)

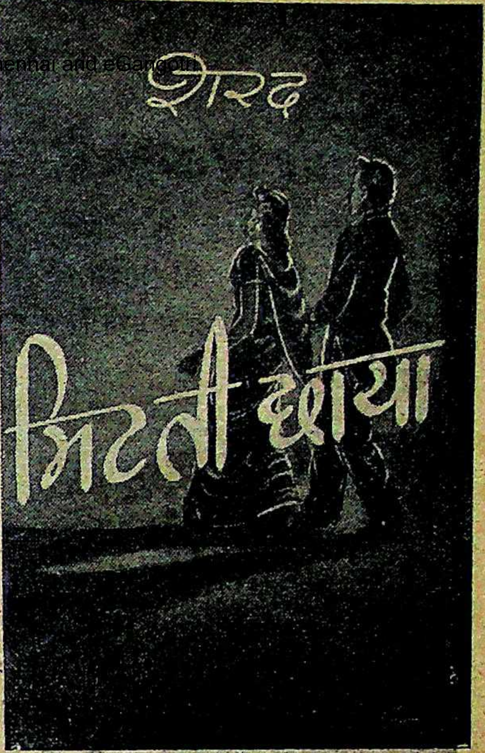

नारी चरित्र पर लिखा गया शरद का नवीनतम रूमानी उपन्यास

★गोर्की साहित्य★

मेरा बचपन | यह दुनिया | जीवन की पाठशालायें

प्रत्येक का मूल्य २।।)

विश्व का श्रेष्ठतम जनवादी उपन्यास

माँ

जिसकी २००० प्रतियाँ दो माह में समाप्त
पृष्ठ-संख्या तीन सौ बारह : मूल्य डेढ़ रुपया
पुस्तकालयों : पाठकों : विक्रेताओं
को हमारी एक अनुपम भेंट

आज ही लिखिए

जनसाहित्य, ३७, शिवचरणलाल रोड, इलाहाबाद—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैनेन्द्र के उपन्यास

'सुखदा', 'विवर्त' और 'व्यतीत' जैनेन्द्र के तीन नए उपन्यास हैं। इन उपन्यासों के लिखने से पहले लगभग १० वर्ष तक उपन्यासकार के रूप में लेखक के मौन पर पाठक उत्सुकता से प्रश्न किया करते थे। 'सुखदा' उपन्यास की रचना से वह मौन टूटा।

सुखदा

मूल्य ४)

सुखदा यथार्थवादी साहित्य की महान् परम्परा का श्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें भारतीय नारी के संक्रान्ति-कालीन जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है।

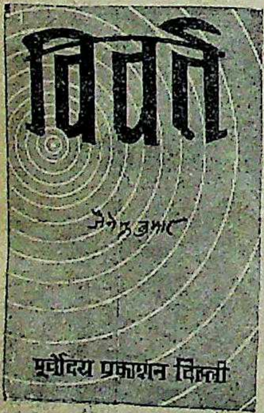

विवर्त

मूल्य ४।)

विवर्त सुखदा के तत्काल बाद का उपन्यास है। वह एक पराक्रमी और तपस्वी पुरुष की कहानी है, जो अपराध की राह पर चल पड़ता है; यही उसकी मानसिक ग्रन्थि है, विवर्त है।

व्यतीत

मूल्य ३॥)

व्यतीत में उदात्त मानवीय प्रेम की मर्म-स्पर्शी कहानी है। दिल्ली रेडियो से यह पूरा उपन्यास विस्तारित किया गया था और इसके श्रोता इसे पढ़ने को बहुत उत्सुक थे।

नाटक

पाप और प्रकाश

मूल्य २॥)

टालस्टाय के प्रसिद्ध नाटक 'दी पावर आफ डार्कनेस' का कलात्मक अनुवाद।

पूर्वो[...]

जैनेन्द्र-साहित्य हि[...]
दृष्टि से इस प्रकाशन का[...]
की कृतियों का प्रकाशन [...]
रचनात्मक प्रतिभा के [...]
एक युग की प्रवृत्ति के [...]
साधारण-जन तक के लिए[...]
अठारह भाग प्रकाशित [...]
संकलन हो गया है और [...]
दूसरे पूर्व प्रकाशित उप[...]

पूर्वोदय [...]
हिन्दी-[...]

बिक्री के नियमों [...]
में सोल-एजेन्ट [...]
व्यवहार करें।
पूर्वोदय-प्रका[...]
वाले [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वो...शन

...साहित्य हि... प्रकाशन है। हिन्दी-साहित्य की
...काशन का ... यह केवल एक महान् साहित्यकार
...प्रकाशन ह... में नई धारा लाने वाली मौलिक
...भा के साहि... सार जैनेन्द्र-साहित्य का प्रकाशन
...त्ति के प्रे... साहित्य के विद्यार्थी से लेकर
...क के लिए ... है। अभी तक जैनेन्द्र-साहित्य के
...काशित हु... सत निबन्धों और कहानियों का
...ा है और ... प्रकाशित हुए हैं। जैनेन्द्र जी के
...शित उपन्या... प्रकाशित होंगे।

पूर्वोदय प्र...
हिन्दी-उप... प्रयोग :

... नियमों ... विक्रेता और अपने-अपने प्रान्त
...एजेन्ट ब... पूर्वोदय-प्रकाशन से सीधे पत्र-
... करें।
...र्वोदय-प्रका... पुस्तकों को मंगाने
वाले ... दी जायगी।

जैनेन्द्र की कहानियाँ

सात भागों में—प्रत्येक का मूल्य ३।।)

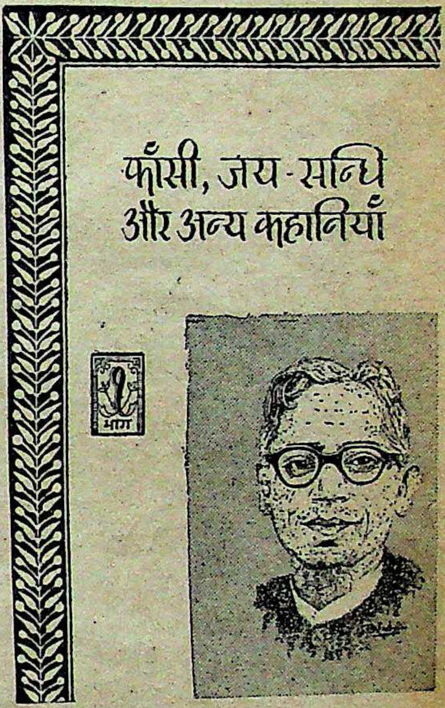

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा-साहित्य को नई दिशा देने का श्रेय जैनेन्द्र की कहानियों को है। प्रेमचन्द जी ने स्वयं लिखा था—

"जैनेन्द्र की रचनाओं ने हिन्दी उपन्यास और गल्प-साहित्य को गौरव प्रदान किया है। वे (कहानियाँ) संसार के किसी भी साहित्य के लिए गौरव की वस्तु हो सकती हैं।"

इन सात भागों में अब तक जैनेन्द्र की लिखी सारी कहानियों को संकलित किया गया है।

जैनेन्द्र के निबन्ध और प्रश्नोत्तर

जैनेन्द्र एक दार्शनिक विचारक हैं। उनके मौलिक दृष्टिकोण का महत्त्व सभी आलोचकों और विचारकों ने स्वीकार किया है। विविध विषयों पर उनके मौलिक विचारों को निम्नलिखित संग्रहों में प्रकाशित किया गया है :

पूर्वोदय : मूल्य ४) सांस्कृतिक निबन्ध और गांधी-दर्शन का मौलिक विवेचन।

प्रस्तुत प्रश्न : मूल्य ६।।) जीवन और जगत् की दार्शनिक समस्याओं का मौलिक विश्लेषण।

साहित्य का श्रेय और प्रेय : मूल्य ७) साहित्य सम्बन्धी निबन्ध।

मन्थन : मूल्य ५) जीवन और सृष्टि के तत्त्वों का विवेचन करने वाले निबन्ध।

सोच-विचार : मूल्य ५) अद्वितीय महत्त्व के लघु-निबन्ध।

ये और वे : मूल्य ५) भारत के साहित्यकारों और नेताओं के संस्मरण और रेखा-चित्र।

काम प्रेम और परिवार : मूल्य ३) सेक्स सम्बन्धी प्रश्नों का समाधान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली और

मार्तण्ड जी

डा० सुधीन्द्र

सर्वोदयी राष्ट्रीयता तथा गांधीवादी विचार-धारा का प्रमुखतम प्रकाशन 'मण्डल' और 'मण्डल' के अनन्यतम सेवक व अध्यक्ष हैं श्री मार्तण्ड उपाध्याय जिनके प्रति प्रकाशक-परिचय-माला की यह श्रद्धाञ्जलि अर्पित है।

यदि हिन्दी की इनी-गिनी श्रेष्ठ प्रकाशन-संस्थाओं का नाम लिया जाय तो उनमें 'सस्ता साहित्य मण्डल' का स्थान अग्रगण्य होगा। आज से सत्ताईस वर्ष पूर्व पराधीन भारत में, एक महापुरुष के आशीर्वाद से लघु रूप में इस संस्था की नींव अजमेर में डाली गई थी, तब शायद ही किसी को कल्पना रही हो कि एक दिन इसका रूप इतना व्यापक और कार्य-क्षेत्र इतना विस्तृत हो जायगा।

कहते हैं, संस्था व्यक्ति की विराट् छाया-मात्र होती है और निश्चय ही 'मण्डल' के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि उसकी स्थापना और विकास में अनेक मूर्धन्य व्यक्तियों का हाथ रहा है। उसकी स्थापना हुई स्वर्गीय जमनालाल जी बजाज की प्रेरणा से, उसे आशीर्वाद दिया विश्ववन्द्य गांधी-

जी तथा अन्य विभूतियों ने और उसकी नींव को ... घनश्यामदास जी बिड़ला, श्री हरिभाऊजी उपाध्याय, महावीर प्रसाद जी पोद्दार, स्वामी आनन्द, श्री ... लूणिया और श्री बैजनाथ महोदय आदि संस्थापकों ... उसके प्रारम्भिक कार्य-विस्तार के पीछे साधना ... श्री जीतमल जी लूणिया की। लेकिन उसके ... विकास के साथ जिस व्यक्ति का नाम अभिन्न रूप से ... वह हैं श्री मार्तण्ड उपाध्याय। 'मण्डल' और मार्तण्ड ... दोनों एक-दूसरे से इतने सम्बद्ध हैं कि एक के बिना ... कल्पना ही नहीं की जा सकती।

थोड़ी-सी स्कूली शिक्षा पाकर मार्तण्ड जी ने ... जीवन का प्रारम्भ बाईस वर्ष की अवस्था में इसी ... द्वारा किया और तब से लेकर अब तक २३ वर्ष से ... निष्ठा से परिश्रम पूर्वक 'मण्डल' के कार्य को करते ... हैं। उन्होंने अपनी भूमिका तैयार की साबरमती ... और बाद में जो-कुछ सीखा, वह 'मण्डल' में; और ... 'मण्डल' इतना पल्लवित हुआ है तो इसका बहुत ... उनकी सूझ-बूझ और सतत विकासशील प्रवृति को ... अत्यन्त संकोचशील हैं और क्रियात्मक सार्वजनिक ... प्रयत्नपूर्वक दूर रहते हैं। इतने सम्मेलन होते हैं, ... सभाएँ होती हैं, लेकिन क्या मजाल कि मार्तण्ड जी ... दिखाई दे जायँ। उनके इस संकोची स्वभाव से ... हानि हुई है तो एक लाभ भी। हानि यह कि ... जीवन के साथ अपना गहरा सम्बन्ध स्थापित नहीं ... और उनका विकास एकांगी रह गया है। लाभ यह ... कि उनकी शक्ति केन्द्रीभूत होकर 'मण्डल' पर लगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतन हर घड़ी 'मण्डल' के विकास के लिए होता है और इस प्रकार उनकी पूर्ण शक्ति का लाभ 'मण्डल' को प्राप्त हुआ है और हो रहा है।

'मण्डल' के साथ अनेक महापुरुषों के नाम सम्बद्ध हैं और गांधी जी के साबरमती आश्रम में तथा बाद के जीवन में जितने महापुरुषों के परिचय तथा संसर्ग का सुयोग मार्तण्ड जी को मिला है उतना शायद ही किसी दूसरे व्यक्ति को मिला हो, लेकिन इस व्यापक सम्पर्क से उनमें कभी भी व्यक्तिगत आकांक्षा उत्पन्न नहीं हुई और न उन्होंने कभी उस सम्पर्क का संस्था के लिए भी अनुचित लाभ लिया है।

'मण्डल' के अल्प साधनों को लेकर वह निरन्तर गतिशील रहे हैं और उन साधनों का पूरा-पूरा उपयोग करके 'मण्डल' को इतना आगे बढ़ाया है। पच्चीस हजार की पूँजी सन् १९२५ में भले ही पर्याप्त रही हो, लेकिन आज के युग में तो वह बहुत ही कम मानी जायगी। लेकिन अपनी कुशलता, व्यावहारिकता और मितव्ययता से उन्होंने इस अल्प पूँजी से आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाया है।

'मण्डल' की स्थापना के मूल में जो एक प्रेरणा, एक उद्देश्य और एक मिशन रहा है उसकी अपनी परम्परा है और उस परम्परा को मार्तण्ड जी ने बड़ी खूबी के साथ निबाहा ही नहीं आगे भी बढ़ाया है। एक समय था जब कि युग-प्रवाह में बहुत-सी प्रकाशन-संस्थाओं के पैर उखड़ गए थे, लेकिन मार्तण्ड जी ने सदा सध और साधकर संस्था को चलाया है।

युगपुरुष महात्मा गांधी के जीवन-दर्शी, जीवन-स्पर्शी-चिन्तन, मनन, विचार और कार्य को भारतीय जनता के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा सस्ते-से-सस्ते मूल्य में सुलभ करने के लिए 'मण्डल' की स्थापना हुई थी। जिस प्रकार आदर्श जीवन वह माना जाता है जो सरल, सादा किन्तु महान हो, उसी प्रकार आदर्श साहित्य वह है जो अल्प-व्यय-साध्य हो, किन्तु उच्च एवं विचारपूर्ण हो। यह कहना अतिरंजित अत्युक्तिपूर्ण न होगा कि हिन्दी में इस आदर्श को चरितार्थ करने वाली संस्था को ढूँढ़ने में दृष्टि 'मण्डल' की ओर ही जाती है।

'मण्डल' का प्रारम्भ गांधीजी की कृति दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास के साथ सन् १९२५ में हुआ था। सन् १९३४ तक उसका कार्यालय अजमेर में रहा और उन सात-आठ वर्षों में मण्डल ने सुविख्यात भारतीय तथा विदेशी लेखकों, विचारकों एवं लोक-नेताओं की ६७ पुस्तकें प्रकाशित कीं। त्यागभूमि नामक मासिक पत्रिका निकाली। निश्चय ही 'मण्डल' के जन्म से राष्ट्र निर्माण-कार्य-साधना की एक नवीन दिशा खुली। भारत की अकिंचन जनता को जितना प्राणवान साहित्य 'मण्डल' ने अल्प मूल्य में दिया उतना कितनी संस्थाएँ दे पाई हैं? जब देश में दर्जनों प्रकाशन-संस्थाएँ पुस्तकों का अधिक-से-अधिक दाम रखकर और लोक-रंजन की दृष्टि से पुस्तकें तैयार करके मुनाफा कमाती हैं, तब कमाई की इस सरल पद्धति के मोह से बचकर सत्साहित्य को मिशन के रूप में प्रचारित और प्रसारित करने का काम छोटा नहीं कहा जा सकता।

सन् १९३४ में 'मण्डल' का कार्यालय दिल्ली में आ गया और तब से अब तक वहीं है। पीछे निगाह डालकर देखें तो पता चलेगा कि अजमेर के दिन सचमुच बड़े ही संकट के दिन थे। 'मण्डल' का संचालन करने वाले व्यक्ति राजनीतिक क्षेत्र के थे और जब कोई राष्ट्रीय उथल-पुथल होती थी तो वे जेल के मेहमान बन जाते थे। विदेशी शासन की उन पर कोप दृष्टि थी और यह स्वाभाविक ही था कि उसका प्रभाव 'मण्डल' पर भी पड़ता। 'मण्डल' की कई पुस्तकें जब्त हुईं, पत्रिका से जमानत माँगी गई, उसके प्रेस पर ताला पड़ा और उसके कार्य में कदम-कदम पर रोड़े अटकाये गए, लेकिन जिस वृक्ष की जड़ मजबूत होती है उसे तूफ़ान भी सहज ही नहीं उखाड़ पाते। 'मण्डल' की नींव इतनी सुदृढ़ थी कि राजनीतिक बवंडर उसका कुछ भी बिगाड़ न कर सका, यद्यपि उसकी प्रगति अवश्य धीमी रही।

सन् १९३४ से लेकर '४४ तक का काल भी राष्ट्रीय आन्दोलनों और ब्रिटिश सरकार के अन्याय और अत्याचारों के कारण बहुत सुविधाजनक नहीं था। दिल्ली का क्षेत्र व्यापक होते हुए भी 'मण्डल' का कार्य तेजी से आगे नहीं बढ़ सका। फिर भी जिन बाधाओं का सामना अजमेर में करना पड़ता था, वे कम हुईं और कार्य की सुविधाएँ बढ़ीं।

इन सारी राष्ट्रीय हलचलों के बीच 'मण्डल' को आगे बढ़ाए ले जाने का श्रेय मुख्यतः मार्तण्ड जी को ही है। वे राजनीति में नहीं पड़े, जेल से बचे और राष्ट्रीय नेताओं के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों को जन सामान्य तक पहुँचाने के नये-नये रास्ते खोजते और निकालते रहे। उन्होंने गांधीजी की, जवाहरलाल जी की, राजा जी की तथा अन्य अनेक भारतीय नेताओं की पुस्तकें तो निकालीं ही, साथ ही गांधी जी के विचारों को समर्थन और पोषण देने वाले विदेशी चिन्तकों, जैसे ताल्स्ताय, क्रोपाटक्रिन और रस्किन आदि की भी चुनी हुई किताबें निकालीं। पुस्तकों के चुनाव के पीछे एक सूझभरी दृष्टि रही और जितनी भी पुस्तकें निकाली गईं, वे प्रायः उच्च कोटि की थीं। यह कहना अनुचित न होगा कि 'मण्डल' के अनेक प्रकाशनों ने पाठकों के नैतिक धरातल को ऊपर उठाया, उनमें राष्ट्रीय भावना का संचार किया और उन्हें देश-हित के लिए त्याग-तपस्या करने की प्रेरणा दी।

अब तक 'मण्डल' से लगभग २७० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनका मूल्य लगभग ३०० रुपये है। इन पुस्तकों की लोकप्रियता का अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि उनमें से लगभग डेढ़ सौ पुस्तकों के दो या दो से अधिक संस्करण हुए हैं।

'मण्डल' ने अपना ध्यान मुख्यतः गांधीजी की विचार-धारा पर केन्द्रित रखा है। इसका बहुत बड़ा लाभ यह है कि आज गांधी जी, विनोबा जी, काका साहब कालेलकर आदि की प्रामाणिक पुस्तकें हिन्दी में प्राप्त करनी हों तो 'मण्डल' के अतिरिक्त और किसी संस्था की ओर ध्यान नहीं जायगा।

'मण्डल' के प्रधान संरक्षक राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं और उसका संचालन एक समिति द्वारा होता है जिसके अध्यक्ष श्री घनश्यामदास बिड़ला हैं और उसमें काका कालेलकर, श्री वियोगी हरि, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री महावीर प्रसाद पोद्दार, श्री देवदास गांधी, श्री कमलनयन बजाज, श्री पारसनाथ सिंह आदि सदस्य के रूप में हैं। सबका विश्वास मार्तण्ड जी ने अपनी विवेकशीलता और कार्यदक्षता से इतना सम्पादन कर लिया है कि आज उसके संचालन तथा कार्य-पद्धति के विषय में चिन्ता नहीं करनी पड़ती। सच यह है कि मार्तण्ड जी ने अपने व्यक्तित्व को मण्डल में विलीन कर दिया है और आज स्थिति यह है कि उनका अपना कहने को कुछ भी नहीं है।

ईंट-चूने की इमारतों में उनका विश्वास नहीं और ...

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

विश्व-परिचय

(ले०—हरि बाबू कंसल एम० ए०)

सामान्य ज्ञान के विषय में ऐसा विस्तृत ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। इसमें संसार-भर का भौगोलिक, ऐतिहासिक, पारिभाषिक और सामाजिक विवरण तथ्यों सहित प्रकट किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत-सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान्य ज्ञान का अध्ययन करने पर तो लगता है कि भारत का समूचा मानचित्र चित्रपट की भाँति सामने आ गया है। विद्यार्थियों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं (Competitive Examinations) के छात्रों के लिए परम उपयोगी है। नगरपालिका, ग्राम-पंचायतों तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं वाचनालयों के लिए संग्रहणीय। अनेक विद्वानों द्वारा प्रशंसित—सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ६)। डाक-व्यय अलग।

सर्व प्रकार की संस्कृत हिन्दी साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों के

मुख्य-विक्रेता

मेहरचन्द मुन्शीराम

नई सड़क, पो० बाक्स ११६५, देहली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...है कि 'मण्डल' का अपना निजी स्थान नहीं है और ...मण्डल का अपना प्रेस ही है। नई दिल्ली के एक बड़े ...में 'मण्डल' का कार्यालय स्थित है। सुविधानुसार ...अच्छे प्रेसों में पुस्तकों की छपाई करा ली जाती है।

...प्रकाशन के क्षेत्र में नये-नये लोग आ रहे हैं और पुराने ...से आगे बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन अनेक ...ताओं के बावजूद 'मण्डल' की गति में युगानुसार वेग ...दिखाई नहीं देता। सम्भवतः इसका कारण यह है कि ...ण्ड जी तेज चलने के अभ्यासी नहीं हैं। 'मण्डल' का ...भले ही सीमित रह जाय, 'मण्डल' की गति भले ही ...धीमी हो, उसका क्षेत्र भले ही जितना वह बढ़ाना चाहते हैं ...उतना न बढ़े, लेकिन वह जो भी कदम उठायँगे बहुत सोच-...समझकर उठायँगे। इसमें देर हो जाती है, लेकिन ऐसी भूल ...की सम्भावना नहीं रहती, जिसके लिए बाद में पछताना ...पड़े।

मार्तण्ड जी का एक गुण दोष की हद पर पहुँच गया है, ...वह है उनका दूसरों पर विश्वास करने का स्वभाव। वह ...हर व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हैं। यहाँ तक कि कभी-कभी ...उन्हें धोखा भी हो जाता है। आदमी की परख उन्हें है, ...लेकिन फिर भी वह अपने स्वभाव में अविश्वास नहीं ला सकते।

'मण्डल' की पुस्तकों की प्रामाणिकता, शुद्धता और ...रूप-रंग की मनोहारिता का श्रेय मार्तण्ड जी की सूक्ष्म ...और जागरूकता को है। वह पुस्तक को प्रेस में देने से पहले ...ध्यान से पढ़ते हैं। अनुवाद होता है तो उसे अच्छी तरह से ...देख लेते हैं। कई बार तो ऐसा होता है कि वह सारी ...पाण्डुलिपि को रंग डालते हैं। बड़े-बड़े साहित्यकारों और ...नेताओं की पुस्तकों में भी आवश्यकता पड़ने पर संशोधन ...करने में उन्हें हिचक नहीं होती। वह मराठी, गुजराती और ...अंग्रेजी भली प्रकार जानते हैं और जब इन भाषाओं के ...अनुवाद प्रकाशित करते हैं तो बड़ी सावधानी से मूल पुस्तक ...का चुनाव करते हैं।

आदर्श और व्यवहार का जितना सुन्दर मेल मार्तण्ड जी ...में पाया है उतना बहुत कम व्यक्तियों में मिलता है।

मार्तण्ड जी पर बड़े कुनबे का भार है। लेकिन उधर ...उनका ध्यान उतना नहीं जाता जितना कि एक परिवारी ...व्यक्ति का जाना चाहिए। उन्हें चिन्ता है तो बस यही कि 'मण्डल' का कार्य किस प्रकार आगे बढ़े, अधिक सुचारुरूप से चले। वह अनुभव करते हैं कि विभिन्न विषयों की मौलिक पुस्तकें तैयार हों और भारतीय भाषाओं में जो सर्वोत्तम ग्रन्थ हों, वे अनुवाद होकर हिन्दी में आवें। वह यह भी चाहते हैं कि विदेशी भाषा के उत्तमोत्तम ग्रन्थ सस्ते से सस्ते मूल्य में, पर सुन्दर-से-सुन्दर ढंग से हिन्दी में प्रकाशित हों और इस प्रकार राष्ट्र-भारती का भण्डार श्रीसम्पन्न हो। लेकिन यह तभी सम्भव है जब कि शिक्षा का व्यापक प्रसार हो, हिन्दी के पाठक बढ़ें और साधन-सम्पन्न व्यक्ति सत्साहित्य के प्रकाशन को उतना ही महत्त्व देकर सहायता करें जितना कि वे राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक कार्यों को देते हैं। मार्तण्ड जी को यह भी चिन्ता है कि किस प्रकार अच्छा साहित्य गरीब-से-गरीब पाठक के भी घर में पहुँचे और वह उसके पठन-पाठन से लाभ उठा सकें।

आज यद्यपि समय अनुकूल नहीं दीख पड़ता है, पर इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है और जो सदाकांक्षाएँ आज पूरी नहीं हो रहीं हैं वे कल, कल नहीं तो परसों अवश्य पूरी होंगी।

श्रेष्ठ आठ प्रकाशन

वेलि क्रिसन रुकमणी री—
सं० : प्रो० आनन्दप्रकाश दीक्षित ४)

रीतिकालीन हिन्दी-कविता और सेनापति—
प्रो० रामचन्द्र तिवारी १॥)

रीतिकालीन हिंदी कविता—प्रो० रामचन्द्र तिवारी ॥)

श्री चन्द्रावली नाटिका—
सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १॥)

भारत दुर्दशा—सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १)

मुद्रिका (नाटक)—श्री सद्गुरुशरण अवस्थी १)

रचनानुवाद कौमुदी—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ३)

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी— „ १)

प्रकाशक :

विश्वविद्यालय प्रकाशन

नखास-चौक, गोरखपुर (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भाषियों की सांस्कृतिक दैन्यता की प्रतीक

हिन्दी-प्रदेश की पुस्तक-उपेक्षा

रामेश्वरनाथ तिवारी

लेखक हरप्रसाद जैन कालेज, शीतल टोला, आरा के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष हैं।

हिन्दी पुस्तकों की उचित खपत क्या, एक तरह से एकदम नहीं हो रही है—क्योंकि बीस करोड़ की आबादी वाले हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश में यदि किसी पुस्तक का अधिक-से-अधिक दो या चार हजार का एक संस्करण मर जीकर पाँच-छः वर्षों में, आधे युग में बिका तो क्या बिका—इस समस्या के कारणों का जब कभी मैं विश्लेषण करने बैठता हूँ तो इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि इसके मूल में आर्थिक परिस्थितियों की दैन्यता तो कम है, सांस्कृतिक दैन्यता अधिक है।

यदि हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश इसलिए किताबें नहीं खरीद पाता कि उसके पास पैसों की कमी है तो आप इस अभिमत की परीक्षा के लिए एक दिन सिनेमा के गेट पर खड़े हो जाइए। आप देखेंगे कि सिनेमा-हॉल प्रायः भर ही जाते हैं और यह तो मानना ही पड़ेगा कि सिनेमा-हॉल अधिकांशतः हिन्दी-भाषा-भाषियों को ही लेकर भरते हैं। सिनेमा की खिड़की पर टिकट कटाने के लिए जो महाभारत मचता है, उसे देखकर कौन कहेगा कि हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश के पास पैसे नहीं हैं?

इसीलिए मैं अपने मन में यह विश्वास पालता आया हूँ कि हिन्दी-जनता की हिन्दी पुस्तकों के प्रति उपेक्षा का कारण मात्र आर्थिक नहीं बल्कि कुछ और गहरा है। हिन्दी-प्रदेश में सांस्कृतिक एकता का वह गौरव-बोध नहीं है जो मराठी, गुजराती या बंगला-भाषा-भाषी प्रदेश के जनों में है। बिहार के कई बंगाली परिवारों को—जो विभिन्न आर्थिक वर्ग से आते हैं—निकट से जानने और देखने का मुझे अवसर मिला है। मैंने ऐसे हर परिवार में अपने साहित्यिकों के प्रति वरेण्य अनुराग का भाव देखा है। रवीन्द्र, शरत्, बंकिम, प्रभात, द्विजेन्द्र आदि की ग्रन्थावलियों का इन घरों में पाया जाना मैंने अपवाद नहीं मानो अनिवार्य विधान के रूप में देखा। रेलवे की कर्कश रेलों के बीच काम करता हुआ बंगाली शिक्षित जन अपने बंकिम और रवि ठाकुर को ... भूलता। जो अभिजात कुल के हैं या जो समाज की बहुत ... आर्थिक श्रेणी में गिने जाने के योग्य हैं, उनके यहाँ तो ... पुस्तकों का एक बृहद् निजी पुस्तकालय न रहना उनकी ... के विरुद्ध है। बंगला-भाषा-भाषियों की इस सांस्कृतिक ... के मूल में मेरे जानते एक तत्त्व प्रमुख रूप से काम ... है—वह है उनकी नारियों का शिक्षित और सुसंस्कृत हो...

शिक्षित होने पर भी ऐसा हो सकता है कि आदमी ... न हो। संस्कृति आती है संस्कार से और मुझे ऐसा लग... कि हिन्दी-प्रदेश का स्वाध्याय का वह संस्कार-कारण चाहे ... भी हो—एक तरह से लुप्त हो गया है। हिन्दी पढ़ने ... छात्र बी० ए० भी कर जाते हैं पर अपने किसी ... साहित्यिक से अपना तादात्म्य नहीं कर पाते। प्रेमचन्द ... प्रसाद उनके लिए बस कोर्स के दानव हैं। जिस दिन ... खत्म हुई, वह प्रेमचन्द और प्रसाद को भी अन्तिम न... कर लेते हैं। ऐसे संस्कार कृतघ्न हिन्दी-प्रदेश से यह ... उम्मीद की जा सकती है कि वह अपनी भाषा की पुस्त... खरीदेगा ही। स्कूल-कालेज के छात्रों की दृष्टि में दुनि... किताबों का बस दो वर्गों में विभाजन किया जा सकता ... कोर्स और बाहरी (जिसे अंग्रेजी का रूप देकर ही वह ... हैं—"आउटी")। मैंने यह बड़े विस्मय और खेद के ... देखा है कि घर से अपने खर्च के लिए डेढ़-दो सौ ... मँगाने वाले विद्यार्थी के पास इम्तहान के पास आ ... भी कोर्स की हिन्दी किताबें तक नहीं रहतीं। उनका ... अपने दोस्त से माँग मूँगकर चला लेने की ताक ... रहता है। इस सम्पन्न विद्यार्थी से यह उम्मीद की ...

[शेष पृष्ठ २५९ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

…काव्य-शास्त्र के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य शान्तिलाल … सूचित करते हैं कि उन्होंने हिन्दी का बृहत् पर्याय-शब्दकोष प्रकाशनार्थ तैयार किया है। डिमाई साइज …ने पर लगभग ३०० पृष्ठों में आएगा। जो प्रकाशक …प्रकाशित करना चाहें, उनसे सम्पर्क स्थापित करें। …पता है : आचार्य शान्तिलाल बालेन्दु, संचालक, …ज्ञानपीठ, ३१७, मल्हारगंज (लुहार पट्टी), इन्दौर।

◈ ◈

श्री नूरनबी अब्बासी (मार्फ़त फ़तेहपुरी मुस्लिम हाई …, दिल्ली—६) ने अमेरिका के प्रगतिशील उपन्यासकार …फ़ास्ट के प्रख्यात उपन्यास **फ्रीडम रोड** का हिन्दी …अनुवाद किया है। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈

श्री श्यामसुन्दर अशान्त, कोशी कॉलेज, खगडिया (…) के पास चार अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ हैं : (१) …शाहजहाँ (खण्डकाव्य), (२) **मुकुल** (अन्तर्द्वन्द्वा-…काव्य), (३) **असन्तोष** (उपन्यास) और (४) …नाम औरतें (कहानीनुमा स्केच)। जिन प्रकाशकों …में अभिरुचि हो, वे कृपया पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈

श्री इन्द्रभूषण शर्मा, ठण्डी सड़क, भरतपुर सिटी, के …उपन्यास हथकड़ी और **अनुभव** अप्रकाशित रखे हैं। …की भूमिका श्री विश्वम्भरनाथ उपाध्याय एम० ए० … अनुभव की भूमिका श्री हरिश्चन्द्र जी शर्मा एम० एस-…ने लिखी है।

◈ ◈

श्री कृष्णनन्दन 'पीयूष', सन्त-सदन, नया टोला, मुज़-…(बिहार) सूचित करते हैं कि उनके पास निम्न-लिखित रचनाएँ तैयार हैं जिनके लिए प्रकाशक की आवश्यकता है : (१) **इन्दु बेला** (कविता-संग्रह), (२) **कब्र के आँसू** (खण्ड-काव्य), (३) **कर्णिकार** (गीत-संग्रह), (४) **नीला धुआँ** (प्रयोगशील कविताओं का संग्रह), (५) **पन्थहारा** (उपन्यास)। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री रंजन परमार, ३११ रविवार पेठ, पूना—२, के पास प्रकाशनार्थ निम्न रचनाएँ हैं : प्रकाशक सम्बन्ध स्थापित करें : (१) **नवा प्रयोग** : श्री साने गुरुजी की नव निर्माणधारा पर आधारित उपन्यास का सरल भाषा में किया गया रूपान्तर। लगभग ७ फ़ार्म। (२) **रत्न-मंजूषा** : जैन साहित्य की एक अमर आख्यायिका के आधार पर लिखित एक नाटिका। लगभग ५ फ़ार्म। (३) **जयप्रकाश** : बालकों के लिए भारतीय समाजवाद के प्रणेता का जीवन-चरित्र। ६ फ़ार्म। (४) **बिखरे मोती** : एक नवोदित गुजराती तत्वज्ञानी के आत्म-चिन्तन-विषयक लघुलेखों का हिन्दी अनुवाद। लगभग १० फ़ार्म। (५) **नारी** : गुजरात के कहानीकारों द्वारा नारी-विषयक कथाओं का हिन्दी अनुवाद।

◈ ◈ ◈

श्री श्रीरञ्जन सूरिदेव, बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, सम्मेलन भवन, पटना—३, सूचित करते हैं कि उनके पास निम्नलिखित पुस्तकें प्रकानार्थ तैयार पड़ी हैं : (१) **अंगार-पथ** (काव्य संग्रह), (२) **साधना-संगीत** (१०८ गीतों का संग्रह), (३) **मेघदूत मीमांसा** (मेघदूत का आलोचनात्मक अध्ययन), (४) **उपासक दशासूत्र** (जैनागम संस्कृत-छाया और हिन्दी अनुवाद), (५) **विक्रमोर्वशी** (हिन्दी अनुवाद), (६) **रत्नावली** (हिन्दी अनुवाद)। **मेघदूत मीमांसा** प्रो० नलिनविलोचन शर्मा द्वारा समर्थित है तथा नाटकों का हिन्दी अनुवाद आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा।

◈ ◈ ◈

श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', भदावर विद्यामन्दिर, बाह, आगरा, सूचित करते हैं कि उनके पास निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं, जो प्रकाशक इन्हें प्रकाशित करना चाहें, लिखें : **जयघोष** : ७१ राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद पुस्तक मन्दिर

हास्पिटल रोड, आगरा

प्रेस में—

हिन्दी में जीवनियों का अभाव है और वह भी ऐसी जो जीवित और सप्राण हों। **रांगेय राघव** ने ऐसी ही पांच जीवनियां लिखकर जन-साधारण और विद्वानों, दोनों के लिए एक नया दृष्टिकोण उपस्थित किया है, जिससे इतिहास के अंधकार में से जीते-जागते व्यक्ति दिखाई देने लगते हैं—

(१) **देवकी का बेटा**—कृष्ण के कंस-वध तक का वर्णन है, किन्तु यह पौराणिक कथा नहीं है, इसमें राजनीति के कुचक्र, भारत की तत्कालीन परिस्थिति और दर्शन का विश्लेषण प्राप्त होता है।

(२) **यशोधरा जीत गई**—गौतमबुद्ध के विषय में अधिकांश उनके बुद्धत्व प्राप्त होने तक का वर्णन होता है, किन्तु यहाँ यशोधरा, एक गरिमावृत्ता नारी, उस व्यक्ति की कहानी को अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंग से सुनाती है, जिसमें हृदय की सूक्ष्मतम गतियों तक का स्पन्दन सुनाई देता है।

(३) **लोई का ताना**—लोई कबीर की सहचरी थी और कोई साधारण स्त्री नहीं थी, क्योंकि कबीर ने अपने कई पद लोई को सुनाए हैं। वही लोई अब कबीर की जीवनी के साथ उपस्थित है, और कबीर उसके साथ एक विद्रोही के रूप में है। वह युगों की चट्टानों के बीच फूटकर निकलता हुआ एक मीठे जल का सोता है।

(४) **रत्ना की बात**—रत्ना कवयित्री थी और उसी की एक बात ने भारत को तुलसीदास जैसा महाकवि दिया था। प्रस्तुत जीवनी में तुलसीदास का वर्णन है, वह तुलसी नहीं जो सब ओर से भय की प्राचीरों में आलोचकों द्वारा बन्द कर दिया गया है, परन्तु वह तुलसी जो भारत के मध्यकालीन इतिहास में धमनी की गति बनकर बजता हुआ सुनाई देता है।

(५) **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**—गिरते सांमतवाद और उ[...] नवयुग की संक्रान्ति में नये राग गाने वाला [...] प्रस्तुत रचना में जीवित-सा दिखाई देता है।

पाँचों जीवनियाँ नए दृष्टिकोण से लिखी गई हैं [...] उनकी औपन्यासिकता उन्हें जीवित व्यक्तियों के से [...] में से निकाल कर उनकी वास्तविक महानता को प्रगट [...] है। डा० रांगेय राघव ने हिन्दी में अनेक रचनाएं प्रस्तु[त की] हैं, और उनमें कथा वर्णित करने की शक्ति के [...] इतिहास का भी अपना अध्ययन है।

प्रत्येक पुस्तक लगभग २५० पृष्ठ। सजिल्द पु[...] मूल्य केवल ३) प्रत्येक।

हमारे अन्य नए प्रकाशन

(१) **विनय पत्रिका दर्शन**—प्रो० तपेशकुमार चतुर्वेदी
(विनय पत्रिका का आलोचनात्मक अध्ययन)

(२) **साहित्यालोचन**—प्रो० भारतभूषण 'सरोज'
(साहित्यालोचन का आलोचनात्मक अध्ययन, प्रश्नोत्तर [...]

(३) **हिन्दी साहित्य का इतिहास**—श्री राजनाथ शर्मा
(आलोचनात्मक अध्ययन, प्रश्नोतर में)

(४) **हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां**—ले० श्री [...] पाण्डेय तथा श्री जयकिशन प्रसाद
(द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)

(५) **अयोध्याकाण्ड**—श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'
(भूमिका तथा टीका सहित, पृष्ठ संख्या लगभग [...]

(६) **तीन क्रान्तिकारी शहीद**—ले०श्री रतनलाल [...]
(द्वितीय संस्करण)
(कर्तार सिंह, रामप्रसाद 'बिस्मिल' तथा सरदार भ[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांगेय राघव की अन्य रचनाएँ

५)

…ास

…शौंदे : सामाजिक

…विषादमठ : बंगाल के अकाल का सच्चा वर्णन ४)

…दों का टीला : ईसा से लगभग ३५०० पू० का

७॥)

…र्तन

…सीधा-सादा रास्ता : सामाजिक ६॥)

…चीवर : हर्षवर्द्धन और राज्यश्री कालीन ऐतिहासिक ५)

…प्रतिदान : महाभारत-कालीन ऐतिहासिक ४)

…अँधेरे के जुगनू : गौतम बुद्ध से लगभग ५०० वर्ष

…पूर्व का ऐतिहासिक ५)

…हुजूर : सामाजिक १॥)

…पराया : सामाजिक ३)

…) उबाल : सामाजिक (प्रेस में)

…) काका : सामाजिक २)

…) अधूरा किला : सामाजिक (प्रेस में)

…ानियाँ

…) इन्सान पैदा हुआ : २॥)

…) ऐयाश मुर्दे : ३।)

…) अंगारे न बुझे : २॥)

…) साम्राज्य का वैभव : २)

…) समुद्र के फेन : २॥।)

…) तूफानों के बीच : बंगाल के अकाल पर लिखे

…रिपोर्ताज

…टक १)

…) स्वर्ण भूमि का यात्री : महाभारत युद्ध के बाद

…का ऐतिहासिक २)

…) रामानुज : दक्षिण के आचार्य रामानुज पर लिखा

…ऐतिहासिक

…व्य १॥)

…) अजेय खण्डहर : खण्ड

…) मेधावी : प्रबन्ध (प्रस्तुत पुस्तक पर हिन्दुस्तानी

…एकेडमी, प्रयाग, ने पुरस्कार दिया था) २)

(३) राह के दीपक : कविताएँ २)

(४) पिघलते पत्थर : संग्राम की रचनाएँ २)

(५) आर्य्या : प्रबन्ध (प्रेस में)

(६) कामधेनु : १९३८ से १९५३ तक की चुनी हुई रचनाएँ (प्रेस में)

सचित्र काव्यानुवाद

(१) गीत-गोविन्द : लेखक द्वारा बनाए हुए चित्रों के साथ काव्यानुवाद (प्रेस में)

(२) ऋतु संहार : } लेखक द्वारा चित्रित और हिन्दी-

(३) मेघ सन्देश : } अंग्रेजी दोनों में अनूदित, (प्रेस में)

आलोचना-संस्कृति

(१) भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका : द्वितीयावृत्ति (प्रेस में)

(२) भारतीय चिन्तन : भारतीय सन्त परम्परा २॥)

(३) संगम और संघर्ष : संस्कृति और साहित्य का विवेचन २॥)

(४) गोरखनाथ : लेखक को इस पुस्तक पर डाक्टरेट दी गई थी (प्रेस में)

(५) प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास : प्रागैतिहासिक काल से प्राचीनकाल का खोजपूर्ण विवेचन : नवीन दृष्टिकोण १२)

(६) हिन्दी-साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्व पीठिका : प्रस्तुत पुस्तक में आरण्यकों, उपनिषदों और महाभारत के आधार पर मध्यकालीन संस्कृति की पूर्व पीठिका उपस्थित की गई है (प्रेस में)

(७) प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड : प्रस्तुत पुस्तक में धर्म, दर्शन, योग, प्रेय, रसवाद, यौन-समस्या, साहित्य के विभिन्नवाद, प्राचीन तथा मध्य-कालीन संस्कृति और साहित्य, काव्य-शास्त्र तथा भाषा पर विवेचन है और प्रगतिवादी साहित्य तथा विचार धारा का अभिनव विश्लेषण है ४)

३)

इन पुस्तकों के लिए लिखिए :

विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूमकेतु : ४१ प्रगतिशील कविताएँ, **नेता** : ५ मनोरंजक तथा शिक्षा-प्रद एकांकी, **मधु रजनी** : ७१ सरस गीतों का संग्रह, **समाधि का दीपक** : नारी-समस्या-सम्बन्धी ७ कहानियाँ, **हिन्दी साहित्यालोक** : हिन्दी के प्राचीन व नवीन श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाओं की परीक्षोपयोगी समीक्षा तथा अन्य साहित्यिक निबन्ध, **सोमनाथ** : ऐतिहासिक नाटक।

◈ ◈ ◈

श्री राधेश्याम पुरोहित, पो० शान्तिनिकेतन, प० बंगाल, सूचित करते हैं कि 'नवभारत टाइम्स' (कलकत्ता संस्करण) में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किशोर उपन्यास **राजा आर्थर की कहानियाँ** के लिए तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी २५ कहानियों के संकलन को प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक चाहिएँ।

◈ ◈ ◈

श्री विष्णु किशोर 'बेचन', भगवान पुस्तकालय, भागलपुर-२, सूचित करते हैं कि उनके पास निम्न कृतियों की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं : (१) **चीन की दीवार** : उपन्यास। चीनी क्रान्ति की सफलता एवं नवीन जाग[रण] यथार्थवादी चित्रण। (२) **हत्यारा कौन**: नाटक। [कि]... जीवन एवं संघर्षों से सम्बन्धित नवीन जनवादी ... यथार्थवादी नाटक। (३) **भीगी पलकें**: कविताएँ। ... नीक के मधुर गीतों का संकलन। (४) **मौत से आगे**: ... काव्य। नवीन प्रयोगात्मक प्रत्यक्षवादी कविता। (५) ... कहानियाँ। शान्ति-संघर्ष एवं चेतना की लहर से ... (६) **अध्ययन के विचार** : निबन्ध। साहित्यिक आलोचना ... (७) **कवि चन्द**: ऐतिहासिक नाटक।

◈ ◈ ◈

खेलों के सुपरिचित लेखक श्री हरिश्चन्द्र कैला के ... आधुनिक खेलों पर पुस्तक का मसविदा तैयार है ... क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, टेनिस, बेडमिंटन, वॉली... बॉस्केट बॉल—फील्ड और ट्रेक-प्रतियोगिताओं पर ... लेख हैं। प्रकाशक टी० सी० २/१ राजा बाजार, नई दि[ल्ली] के पते पर लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, के

कुछ प्रकाशन

नाटक

१. गरुड़ध्वज : पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र	२)
२. दो नाटक : (दलित कुसुम, पतित सुमन) सेठ गोविन्ददास एम० पी०	२॥)
३. दुःख क्यों ? : सेठ गोविन्ददास	२॥)
४. छः एकांकी नाटक : भूमिका सहित— सं० रामचन्द्र श्री वास्तव एम० ए०	२)
५. नल दमयन्ती : ब्रह्मदत्त शास्त्री एम० ए०	।।।)
६. नेताजी (सुभाष बोस) : विशम्भरनाथ उपाध्याय	१॥)
७. नवाबी सनक : (हास्यरस पर) जयनाथ नलिन	३।)

काव्य

१. तारों के गीत : प्रो० महेन्द्र भटनागर	।।।)
२. स्वप्न और सत्य : प्रो० भगवन्तशरण जौहरी	३)

गद्य व साहित्य

१. शाहनामा : रामचन्द्र श्रीवास्तव एम० ए०	५)

२. मुझे आपसे कुछ कहना है : श्री रानी
३. गांधीय मार्ग : गुलाबराय एम० ए०
४. हमारी भी कहानी है : सं० प्रेमनारायण श्रीवास्तव एम० ए०
५. हिन्दी-साहित्य की रूपरेखा : प्रेमनारायण टण्डन
६. हिन्दी के प्रतिनिधि कवि : प्रेमनारायण टण्डन
७. मातृ-भाषा के पुजारी : लक्ष्मीनारायण टण्डन
८. हमारे गद्य निर्माता : प्रेमनारायण टण्डन
९. हिन्दी साहित्य में निबन्ध : ब्रह्मदत्तशर्मा एम० ए०
१०. कथा-कलश : श्री नर्मदाप्रसाद खरे
११. उन्नत राष्ट्र : शिवधानसिंह चौहान
१२. यादगार : रामचन्द्र श्रीवास्तव
१३. आत्म-निर्माण : गुलाबराय एम० ए०
१४. जीवन पथ : गुलाबराय
१५. दशकुमार चरित : हरिदत्त शास्त्री एम० ए०

मिलने के स्थान

(१) गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा।
(२) पोपुलर बुक डिपो, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
(३) सरस्वती सदन, लश्कर, ग्वालियर।
(४) ओरिएन्टल पब्लिशर्स लि०, परेड, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

...प्रकाशकों के हृदय में असन्तोष की जो ज्वाला ...रही है, उसके सम्बन्ध में निम्नलिखित पंक्तियों द्वारा ...स्थिति का स्पष्ट दिग्दर्शन पाठकों के सम्मुख रखने का ...कर रहा हूँ।

...प्रकाशकों को कितनी मजबूरियों व परेशानियों का सामना ...पड़ता है, यह वे ही लोग अनुभव कर सकते हैं जो इस ...में संघर्ष कर रहे हैं। प्रकाशक के सामने सबसे बड़ी ...आर्थिक हुआ करती है। इसके बाद अच्छे लेखकों ...ढूंढ़ना, पुस्तक को सुन्दर रूप देना, पुस्तक के लिए बाज़ार ...नहीं ढूँढ़ना बल्कि बाज़ार तैयार कर उसे ग्राहकों के हाथों ...पहुँचाना, इन सब बातों का उत्तरदायित्व प्रकाशक पर ही ...है।

...कितनी बड़ी सेवा व त्याग प्रकाशक-वर्ग कर रहा है, वह ...ही उपेक्षित कर देने योग्य नहीं है! आजकल सभ्यता ...संस्कृति का जो प्रचार किया जा रहा है और हम अपने ...साहित्य पर जो गर्व करते हैं, उस सब का अधिकांश श्रेय ...प्रकाशकों को है। यदि प्रकाशकों की यह सेवाएँ न होतीं तो ...के लाल गुदड़ी में ही उपेक्षित पड़े रहते। जनता में जो ...सम्पन्न लोग थे, उन्हें खोजा और उन्हें वे प्रकाश में ...।

...परन्तु प्रकाशक, जिन्होंने यह सेवाएँ की, वे अपयश के ही ...बने रहे। उनको कोई पूछने वाला तक नहीं। उनको ...महानुभाव घृणा तक की दृष्टि से देखते हैं और उनको ...तक कहने में नहीं चूकते हैं।

...प्रकाशकों के लिए यह कठिन समस्या है कि उनके आत्म-...की किस तरह रक्षा हो। हम लोग व्यापारी अवश्य हैं ...व्यापारी तो संसार-भर है। हमारा व्यापार ऐसा है कि ...द्वारा ही राष्ट्र का निर्माण होता है, सुपठित व्यक्ति और ...समाज को मिलते हैं। हमारा यह उत्तरदायित्व है कि हम अपने-आपको संगठित करें, अपने सामाजिक व नैतिक अधिकारों को प्रकाश में लायें। जहाँ हम अपने अधिकारों के लिए कटिबद्ध हों वहाँ अपने कर्त्तव्य को भी ध्यान में रखें। अपने कार्य को परिमाण में ही नहीं वरन् गुण में भी उन्नत करें। हम अपने कार्य का स्तर इतना ऊँचा रखें कि विदेशी प्रकाशकों के बराबर आ जावें। उत्तम साहित्य का निर्माण करावें, उसको प्रकाश में लावें और जनता में उसका प्रचार करें ताकि जनता का बौद्धिक स्तर ऊँचा हो। इस प्रकार हम राष्ट्र की सेवा कर सकेंगे।

हम राष्ट्र की सेवा एक उत्तम ढंग से कर सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि सरकार के शिक्षा-विभाग के अधिकारी हम लोगों से सम्पर्क बढ़ावें। स्वयं सरकार भी इस व्यवसाय को अत्यधिक करों से दाबकर पंगु न बनाये। डाकखाने की दरें बढ़ाकर सरकार ने हमारा ही नुकसान नहीं किया है वरन् विद्यार्थियों का भी भारी नुकसान किया है। सरकार हमारी कठिनाइयों को सुने व समझे और हमारे कार्य का महत्त्व देखकर उसको पूर्ण सामाजिक मान्यता दे जिससे हम आत्म-सम्मान के साथ देश की सेवा कर सकें।"

जगदीशप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०

अध्यक्ष, गयाप्रसाद एण्ड संस, आगरा

"प्रकाशकों की बैठक के बारे में भी मैंने आपको लिखने का वादा किया था, किन्तु नहीं लिख सका।...मेरे खयाल से सम्पादकीय में जिन बातों का आपने ज़िक्र किया है, वह सही हैं—मोटे रूप में। सिर्फ़ एक बात की ओर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि क्या हम प्रकाशक लोग कहीं संगठित होकर मुख्य मोर्चा लेखकों और उनके अधिकारों के खिलाफ़ तो नहीं जमाएँगे? मेरे खयाल से जनता और अपने व्यापार के हित में भी प्रकाशकों और लेखकों का संयुक्त मोर्चा—कम-से-कम हिन्दी-भाषी इलाकों में—सम्भव और ज़रूरी है। बाकी बातों पर आपने भी प्रकाश डाला ही है।"

सच्चिदानन्द

पीपुल्ज़ पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई—४

"पुस्तकों का भाड़ा घटाने का जो प्रयत्न बहुत दिनों से किया जा रहा था, बहुत-सा पत्र-व्यवहार, परिश्रम और खर्च करने के बाद उसमें आंशिक सफलता मिल सकी है। यथा :

[शेष पृष्ठ २५९ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क्रान्तिकारी चीज) (निर्भय विचार)

साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण

पं० किशोरीदास वाजपेयी की यह नवीनतम पुस्तक है। इसमें वाजपेयी जी ने अपने साहित्यिक जीवन के घटाटोप अनुभवों का रोचक शैली में वर्णन किया है। पुस्तक हाथ में लेकर फिर छोड़ने को मन नहीं करता। इसमें सन् १९१९ से १९५२ तक की प्रमुख सभी घटनाएं आ गई हैं।

प्रसंगप्राप्त जिन साहित्यिक जनों के संस्मरण इसमें आए हैं, उनमें प्रमुख ये हैं—

१—आचार्य द्विवेदी
२—बाबू श्यामसुन्दरदास
३—बाबू गुलाबराय एम० ए०
४—पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल
५—श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित
६—राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन
७—डा० सम्पूर्णानन्द
८—डा० धीरेन्द्र वर्मा
९—स्व० पंडित पद्मसिंह शर्मा
१०—स्व०पं० सकलनारायण शर्मा(महामहोपाध्याय)
११—स्व० पं० शालग्राम शास्त्री साहित्याचार्य
१२—श्री नाथूराम 'प्रेमी'
१३—स्व० कविवर आनन्दीप्रसाद श्रीवास्तव
१४—स्व० श्री रामरखसिंह सहगल (चाँद-प्रवर्तक)
१५—श्री दुलारेलाल भार्गव
१६—पं० नन्दकिशोर तिवारी
१७—श्री रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'
१८—पं० श्रीकृष्णबिहारी मिश्र
१९—स्व० मुन्शी प्रेमचन्द
२०—डा० अमरनाथ झा
२१—डा० राजेन्द्रप्रसाद (वर्तमान राष्ट्रपति)
२२—काका कालेलकर
२३—श्री जैनेन्द्र
२४—गोस्वामी गणेशदत्त
२५—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, आदि।

मूल्य दो रुपये मात्र

वाजपेयी जी की अन्य पुस्तकें—

- ब्रजभाषा का व्याकरण ३)
- राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत) ४)
- हिन्दी निरुक्त (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत) ४)
- साहित्य-निर्माण (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत) २)
- अच्छी हिन्दी का नमूना २॥)
- अच्छी हिन्दी २)

डाक-खर्च पृथक्।

मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला

टॉमस ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह दूसरा लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

...जनरल बुकसैलर के यहाँ प्रायः सभी किताबें 'नैट' ...मूल्यों पर बेची जाने वाली होती हैं। मेरा खयाल है कि ...विषय को आरम्भ करने का यही सबसे आसान तरीका है ...शुरू में ही इस बात पर जोर दिया जाय कि 'नैट' मूल्य ...पर बेची जाने वाली पुस्तकों को सदा ही पूर्ण प्रकाशित मूल्य ...पर बेचा जाना चाहिए। चाहे कुछ भी हो, चाहे ग्राहक २) ...(अथवा २०००) की पुस्तकें खरीदे तो भी ऐसी पुस्तकों पर ...कोई कमीशन नहीं दिया जा सकता। यदि यह पुस्तकें किसी ...सार्वजनिक संस्था अथवा किसी स्कूल या कालेज या पुस्तकालय के ...लिए भी ली जा रही हों तो भी किसी प्रकार का कमीशन नहीं ...दिया जा सकता। इंग्लैण्ड में किसी भी पुस्तक-विक्रेता को ऐसी ...पुस्तकों पर अपने ग्राहकों को कमीशन देने के लिए प्रकाशक-...संघ से अनुमति प्राप्त करनी होती है।

...कई पुस्तकें ऐसी भी होती हैं जो 'नैट' मूल्य पर नहीं ...बेची जातीं। यह आम तौर पर स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकें होती ...हैं, जिन पर स्थिर किया हुआ मूल्य प्रकाशित रहता है। यदि ...पुस्तक-विक्रेता चाहे तो ऐसी पुस्तकों पर वह स्कूलों व अन्य ...संस्थाओं को कमीशन दे सकता है, किन्तु वह कमीशन पुस्तक ...विक्रेता को स्वयं मिले हुए कमीशन से कभी भी अधिक नहीं ...होना चाहिए; क्योंकि यह एक ऐसा अपराध है जिसे प्रकाशक-...संघ कभी क्षमा नहीं कर सकता। पुस्तक-विक्रेता की अपनी ...दुकान में खरीदी जाने वाली ऐसी पुस्तकों की एक-दो प्रतियों ...पर भी कोई कमीशन नहीं दिया जा सकता। चूँकि इन ...शैक्षणिक पुस्तकों पर पुस्तक-विक्रेताओं को 'नैट' मूल्य पर बेची ...जाने वाली पुस्तकों से अपेक्षाकृत कम कमीशन मिलता है, ...अतः जब वे इन पुस्तकों पर अपने ग्राहकों को कमीशन देते हैं

तो इसका मतलब है कि उन्हें अपने मुनाफे का एक अंश दे देना पड़ता है। किन्तु बड़े पैमाने पर शैक्षणिक पुस्तकें रखने वाले पुस्तक-विक्रेता 'नैट' मूल्य की पुस्तकें भी रखते हैं, जो कि पूर्ण प्रकाशित मूल्य पर ही उन्हीं अधिकारियों को बेची जाती हैं जिन्हें शैक्षणिक पुस्तकों पर कमीशन मिलता है। इसके अलावा कई पुस्तक विक्रेता लेखन-सामग्री और स्कूलों में काम में लाई जाने वाली अन्य चीजें बेचकर मुनाफा कर लेते हैं और शैक्षणिक पुस्तकों पर कमीशन दे पाते हैं।

दुकान का प्रबन्ध

किसी भी पुस्तक-विक्रेता को हमेशा यह देखकर खुशी होती है कि ग्राहक की माँगी हुई पुस्तक को तुरन्त अलमारी में से निकाल लाने पर ग्राहक को आश्चर्य हो रहा है। जहाँ बहुत सारी पुस्तकों का स्टॉक हो वहाँ पुस्तक-विक्रेता का यह काम किसी भी नए आदमी को एक चमत्कार ही प्रतीत होगा। प्रत्येक दुकान में, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, पुस्तकों को रखने की एक व्यवस्था होती है और सभी अच्छे पुस्तक-विक्रेता बड़े ध्यान से अपनी पुस्तकों का वर्गीकरण करते हैं। साधारणतः लेखकों के नाम से पुस्तकें छाँट-छाँटकर अलग-अलग रखी जाती हैं। किसी पुस्तक के लिए ग्राहक को मना करके फिर उसी पुस्तक को अपनी अलमारी में पाने से बढ़कर और कोई चिढ़ की बात नहीं हो सकती। सभी अच्छी दुकानों में पुस्तकों के पृथक् विभाग होते हैं—अलमारियों के ऊपर छपे हुए नाम लिखे रहते हैं और छोटे विभागों पर भी कागज पर छपे हुए नाम चिपकाए जाते हैं। जैसे कि एक विभाग है 'कथा-साहित्य', जिसके उपविभाग हैं: उपन्यास, कहानियाँ, जासूसी किस्से आदि। बाल-साहित्य का एक पृथक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग होना चाहिए, जिसके अन्तर्गत बालकों की आयु के अनुसार अथवा विषयानुसार उप-विभाग होने चाहिएँ, जैसे कि धर्म, इतिहास, भूगोल आदि। कथा-साहित्य के अतिरिक्त अन्य विषयों का वर्गीकरण इस प्रकार होना चाहिए : उद्यान-कला, पाक-शास्त्र, इतिहास, साहित्य, जीवन-चरित्र, अर्थ-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र आदि। इनके अतिरिक्त पुस्तकों के और भी कई विभाग हैं जो कि पुस्तक-विक्रेता को अपनी पुस्तकें देखकर स्वयं समझ में आ जायँगे।

पुस्तकों की किसी भी दुकान में नकद और उधार बिक्री का पूरा हिसाब तथा अधिक बिकने वाली पुस्तकों के नाम को नोट कर रखा जाना चाहिए।

नकद बिक्री करने और उसका हिसाब रखने के निम्नलिखित तीन आम तरीके हैं जो कि साधारणतः सभी जगह प्रयुक्त किये जाते हैं, पर जो कि व्यापार के आकार पर भी निर्भर करते हैं:—

(१) रोकड़िया की मेज, जिस पर बैठा रोकड़िया ग्राहकों को रेजगी देता है।

(२) रोकड़िया की दराज या कैश ड्रॉअर, जहाँ ग्राहकों का हाथ नहीं पहुँच सकता।

(३) रोकड़ या कैश रजिस्टर।

दुर्भाग्यवश इनमें से कोई भी साधन 'परिपूर्ण' नहीं है। परिपूर्ण साधन न केवल चोरी और बेईमानी से ही बचाएगा बल्कि ग्राहक को अधिक समय तक प्रतीक्षा में भी न खड़ा रहने देगा। अभी तक किसी ने भी ऐसा तरीका ईजाद नहीं किया है पर मेरे खयाल में रोकड़िए स्वयं ही सब मँहगे तरीकों से ज्यादा अच्छे होते हैं और इसीलिए काम अच्छी तरह चलता रहता है।

रोकड़िए की मेज या कैश डैस्क को दुकान के दरवाजे के पास ही रखना रुपया-पैसा अदा करने का निश्चय ही सबसे अच्छा तरीका है। कैशियर ग्राहकों को अक्सर यह भी बता सकता है कि कौन-सी पुस्तक किस विभाग में मिलेगी। किताबों की चोरी का डर कैशियर के सजग रहने पर निश्चय ही कम हो जाता है, क्योंकि सब लोगों को दुकान से बाहर जाने के लिए उसके पास से ही होकर निकलना पड़ता है और चोरों को हमेशा यह शक बना रहता है कि कैश डैस्क से उन पर नजर रखी जा रही है।

ईमानदारी को सुरक्षित बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि रुपये-पैसे का काम कैशियर के अतिरि[illegible] कोई कर्मचारी कभी न करे। अन्य कर्मचारियों का काम [illegible] बुक में किताबों का नाम उतारना और उसकी एक प्रति [illegible] कर ग्राहक को दे देना है, जिसे लेकर वह किताबों की [illegible] अदा करने कैशियर के पास पहुँचता है। कैशियर उस [illegible] का ऊपरी सिरा फाड़कर अपने पास रख लेता है और [illegible] हिस्सा ग्राहक को दे देता है जिसे लेकर वह अपनी [illegible] लेने जाता है। दुकान के कर्मचारियों द्वारा बेईमानी कर[illegible] सिर्फ एक ही तरीका है कि वे ग्राहक से पैसे ले लें और [illegible] यर को न दें और न उन किताबों का नाम अपनी कैश[illegible] उतारें। जैसा कि मैं कह चुका हूँ यदि यह एक सख्त [illegible] बना लिया जाय कि अन्य कर्मचारी रुपये-पैसे न छुएँ [illegible] निश्चय ही बेईमानी पकड़ी जा सकेगी। कर्मचारियों को [illegible] हिदायत मिलती रहनी चाहिए कि वे किसी भी ग्राहक को [illegible] कीमत अदा किये या अपने नाम में दर्ज करवाए [illegible] किताबें बाहर न ले जाने दें। हरेक दिन के अन्त में क[illegible] अपनी बिक्री का जोड़ लगाकर कैशियर के पास ले [illegible] और जब कैशियर अपने पास इकट्ठे रुक्कों से उन्हें मिला[illegible] है तो बिक्री का हिसाब एक खाते में उतार लिया जाता है।

भीड़ के दिनों में जब किताबों की बिक्री ज्यादा हो[illegible] एक ऐसे आदमी को रख लेना ठीक है जो उस दुक[illegible] अनुभवी कर्मचारी की मदद कर सके। अनुभवी कर्मचारी [illegible] को किताबें दिखाकर अपने सहकारी को दे देता है और वह [illegible] कैश-बुक में दर्ज करके ग्राहक के लिए बाँधकर तैयार [illegible] है। यह तरीका एक ऐसे आदमी को किताबें बेचने के [illegible] रखने से ज्यादा अच्छा है जिसे पुस्तक-विक्रय का पर्या[illegible] भव न हो और जो ग्राहकों के प्रश्नों का उचित उत्त[illegible] सके अथवा जिसे यह न मालूम हो कि कौनसी पुस्तक [illegible] विभाग में मिलेगी।

कैश-रजिस्टर रखना उन दुकानों के लिए तो ठी[illegible] जहाँ कि एक काउण्टर के पीछे से कर्मचारी काम करते [illegible] किन्तु पुस्तकों के व्यापार में, जहाँ कि कर्मचारियों को [illegible] निकालने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाना पड़ता [illegible] कैश-रजिस्टर सँभालने और ग्राहकों को रेजगारी देने आ[illegible]

[शेष पृष्ठ २५६ पर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित को जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

बिहार

—आर० के० कालेज लाइब्रेरी, मधुवानी (दरभंगा)।
—आर० डी० एण्ड डी० जे० कालेज लाइब्रेरी, मुंगेर।
—ए० एन० एस० कालेज लाइब्रेरी, बढ़ (Barb)।
—एन० डी० जैन कालेज लाइब्रेरी पो० आरा, (शाहाबाद)
—एस० आर० के० गोयनका कालेज लाइब्रेरी, सीतामढ़ी।
—एस० के० जे० लॉ कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फरपुर।
—एस० पी० जैन कालेज लाइब्रेरी, ससारम (शाहाबाद)।
—एस० सिन्हा कालेज लाइब्रेरी, औरंगाबाद।
—कालेज आफ मैकेनीकल एण्ड इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, सिन्द्री (मानभूम)।
—कोशी डिग्री कालेज लाइब्रेरी, खगडिया (मुंगेर)।
—गवर्नमेन्ट एग्रीकलचरल कालेज लाइब्रेरी, साबौर (भागलपुर)।
—गोपेशदत्त कालेज लाइब्रेरी (खूबलालसिंह लाइब्रेरी), डुमराव।
—गया कालेज लाइब्रेरी, गया।
—जे० के० कालेज लाइब्रेरी, पुरुलिया (मानभूम)।
—टी० एन० जे० कालेज लाइब्रेरी, भागलपुर।
—डी० ए० वी० कालेज लाइब्रेरी, सीवन (सारन)।
—नीतीश्वर... [illegible] महिला कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फरपुर।
—देवघर कालेज लाइब्रेरी, देवघर।
—नालन्दा कालेज लाइब्रेरी, बिहार शरीफ (पटना)।
—पटना कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—पटना ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—पटना लॉ कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—पटना विमेन्स कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—पटना विमेन्स ट्रेनिंग कालेज, लाइब्रेरी, पटना।
—प्रिन्स आॅफ वेल्स मैडकिल कालेज लाइब्रेरी, बांकीपुर, पटना।
—पी० के० राय मैमोरियल कालेज लाइब्रेरी, कटरासगढ़।
—पूर्णिया कालेज लाइब्रेरी, पूर्णिया।
—बिहार इंस्टीट्यूट आॅफ टैकनालोजी लाइब्रेरी, सिन्द्री।
—बिहार कालेज आॅफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, पटना।
—बिहार नेशनल कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—बिहार वेट्रीनरी कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—मगध महिला कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—मदनमोहन मालवीय कालेज लाइब्रेरी, खुसरूपुर (पटना)।
—मारवाड़ी कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—मुन्शीसिंह कालेज लाइब्रेरी, मोतीहारी।
—मैडकिल कालेज लाइब्रेरी, दरभंगा।
—युर्सूलाइन कान्वैंट कालेज, लाइब्रेरी, राँची।
—राँची कालेज लाइब्रेरी, पो० राँची।
—राजा साहब प्रसाद कालेज लाइब्रेरी, इनरिया।
—राजेन्द्र कालेज लाइब्रेरी, पुर्णिया।
—रामदयालुसिंह कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फरपुर।
—लंगटसिंह कालेज लाइब्रेरी, मुजफ्फरपुर।
—समस्तीपुर कालेज लाइब्रेरी, समस्तीपुर।
—साइंस कालेज लाइब्रेरी, पटना।
—सी० एम० कालेज लाइब्रेरी, दरभंगा।
—सुन्दरवती महिला महाविद्यालय लाइब्रेरी, भागलपुर।
—सैण्ट कोलंबस कालेज लाइब्रेरी, हजारी बाग।
—सैण्ट जेवियर कालेज लाइब्रेरी, राँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ौदा विश्वविद्यालय से सम्बन्धित पुस्तकालयों के ठीक नाम व पते इस प्रकार हैं :

—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, ओल्ड रेजिडेंसी आफ़िस बिल्डिंग्स, सेंट्रल ब्लाक, बड़ौदा २।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ आर्ट्स, बड़ौदा कॉलेज बिल्डिंग, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ साइंस, स्टेशन रोड, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ कॉमर्स, स्टेशन रोड, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन एण्ड साइकॉलोजी, स्टेशन रोड, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ सोशल वर्क, रेजिडेंसी के पास, पी० ओ० कैम्प, बड़ौदा २।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ होम साइंस, कैम्प रोड, बड़ौदा २।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ फाइन आर्ट्स, पुष्पा बाग, कैम्प रोड, बड़ौदा २।

—लाइब्रेरियन, फैकल्टी ऑफ़ टेक्नॉलोजी, कला भवन, बड़ौदा २।

—लाइब्रेरियन, कॉलेज ऑफ़ इण्डियन म्यूज़िक, डांस एण्ड ड्रामाटिक्स, सुरसागर टैंक के पास, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, इन्टरमीडियेट कॉलेज, स्टेशन रोड, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, मेडिकल कॉलेज, स्टेट जनरल हस्पताल, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, ओरियंटल इंस्टिट्यूट, ओल्ड रिकार्ड ऑफ़िस, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, संस्कृत महा विद्यालय, मेहता पोल रोड, बड़ौदा।

—लाइब्रेरियन, शेठ यू० पी० ए० आर० यूनिट, मेडिकल कॉलेज, स्टेट जनरल हस्पताल, बड़ौदा।

निम्न पुस्तकालयों के नाम प्रकाशक नोट कर लें :

—श्री कृष्ण पुस्तकालय, १० खटीकान स्ट्रीट, मुजफ्फर नगर।

—स्वतन्त्र पुस्तकालय, पाठक गंज, मलिहाबाद (लखनऊ)।

—ज्ञान विकास मन्दिर, ७३—ए स्वराज्यपथ, मेरठ।

—अभ्युदय वाचनालय तथा पुस्तकालय, सदर, मेरठ।

[पृष्ठ २५१ का शेष]

१—मालगाड़ी की पूरी वेगन का भाड़ा १ अक्तूबर से १०वीं क्लास का हो गया। पूरी वेगन की क्लैरी भाड़ा लगता था। वह भी अब १ फ़रवरी ५४ से लाइन एम० जी० का १६० मन का, बड़ी लाइन का तथा एन० जी० का १०० मन का हो गया।

२—'स्माल्ज़' में १४वीं की जगह १२वीं क्लास के लिए लागू हो गई—१ फ़रवरी से।

अब रेल-पारसल का आधा भाड़ा करवाने का जारी रखना है। मैंने जो पत्र श्री शास्त्री को दिया है, प्रतिलिपि भेज रहा हूँ।

बुकपोस्ट की रेट ज़रूर घटवानी है। आप लोग राजधानी में बैठे हैं। मैंने तो बहुत पत्र दिए हैं, अब भी दे रहा हूँ, पर आप लोग वहाँ पर मौजूद हैं। चेष्टा करेंगे तो सफलता मिल सकती है।"

बजरंग लाल चांद
गीता प्रेस, गोरख

प्रकाशक नोट कर लें

जिस लिफ़ाफ़े में डालकर आप हुए फ़ार्म पर अपनी सूचनाएँ लिख भेजते हैं, उसे बन्द न किया करें; बुक पोस्ट बनाने के लिए उसका मुख खुला रहना चाहिए। लिफ़ाफ़े पर "बुकपोस्ट" भी लिख दें ताकि हमारे खर्च का बोझ कुछ कम हो।

—व्यवस्थापक
प्रकाशन समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, बनारस

—सूक्ति सागर, सम्पादक तथा अनुवादक श्री १०८ नारायण स्वामी जी। संस्कृत साहित्य के समस्त ग्रन्थों के सुन्दरतम १६००० श्लोकों का सानुवाद संग्रह। मूल्य २५)

किताब महल, इलाहाबाद

—कामिनी, ले० नरेन्द्र शर्मा। कविता संग्रह।

—नाना, ले० एमिल जोला। प्रसिद्ध फ्रांसीसी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद।

—प्यार के भूखे, ले० निर्गुण। कहानी संग्रह।

—बृहत् पर्यायवाची कोष, सं० भोलानाथ तिवारी। अंग्रेजी 'थिसारस' के ढंग का लेखकों, कवियों और विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्त्व पूर्ण कोष जिस में पर्याय के अतिरिक्त विलोम शब्द भी हैं। मूल्य ७॥)

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—महाभारत की कहानी, ले० अध्यापक जगेन्द्र। इंटरमीडियेट कक्षाओं के निमित्त अपठित पुस्तक। मूल्य ॥।)

—मुक्तावली, सं० श्री गोपाल व्यास। हिन्दी के प्राचीन तथा अर्वाचीन प्रमुख कवियों के परिचयात्मक, आलोचनासहित, उत्कृष्ट संकलन। मूल्य १॥।)

—साहित्य सरिता, ले० श्री रुद्रदत्त मिश्र। प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह। मूल्य १॥=)

—हिन्दी का मान-मन्दिर, ले० डॉ० सत्येन्द्र। कवियों का प्रामाणिक संक्षिप्त जीवन परिचय।

गांधी ग्रन्थागार, बनारस

—धरती और आकाश, ले० श्री शम्भूनाथसिंह। नाटक।

—सड़क की बात, ले० श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० शिवकुमार श्रीवास्तव। कहानी।

चिंगारी प्रकाशन, बनारस

—जंजीर, ले० स्व० कुशवाहाकान्त। उपन्यास। ३॥)

—पतन की ओर, ले० रेनाल्ड्स। उपन्यास। २॥)

चौधरी एण्ड सन्स, बनारस

—आसावरी, ले० रमेशचन्द्र झा। कविता संग्रह। १।)

—पास की दूरी, अनु० रमेशचन्द्र झा। एक अंग्रेजी उपन्यास का अनुवाद। १)

—मिट्टी बोल उठी, ले० रमेशचन्द्र झा। ऐतिहासिक उपन्यास। मूल्य २)

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद

—आधा इंसान, ले० ख्वाजा अहमद अब्बास। विभाजनोपरान्त मसूरी की एक रूमानी कहानी जिसमें उच्च वर्ग के मुसलमान घराने का बड़ा सुन्दर चित्रण है। सचित्र लघु उपन्यास। २।)

—ओ मेरे सपने, ले० श्री जगदीशचन्द्र माथुर। माथुर साहब के नटखट एकांकियों का संग्रह जिनके हल्के-फुल्के हास्य में बड़े काम की बातें कह दी गई हैं। ३॥)

प्रीमियर बुक कम्पनी, दिल्ली

—अकार्बनिक रसायन शास्त्र, ले० पी० एल० सोनी। रसायनशास्त्र। ७)

—कार्बनिक रसायन, ले० पी० एल० सोनी। रसायन-शास्त्र। ६)

—भारतीय शासन और नागरिक जीवन, ले० डी० आर० भंडारी तथा डॉ० परमात्मा शरण। नागरिक शास्त्र। ३)

—मुद्रा और विनिमय के सिद्धान्त, ले० जी० पी० गुप्त। अर्थ शास्त्र। ६॥)

बम्बई बुक हाउस, बम्बई २

—मम्मी, ले० सादत हसन मिंटो। कहानी संग्रह। २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस

—**खेल खिलौने**, ले० राजेन्द्र यादव । कहानी । २।।)

—**शेरो-सुखन, भाग २**, ले० श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय । उर्दू कविता का संकलन । ३)

—**हिन्दू-विवाह में कन्यादान का स्थान**, ले० श्री सम्पूर्णानन्द जी । १।)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—**तेलुगु और उसका साहित्य**, ले० हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' । 'भारतीय साहित्य परिचय माला' की तीसरी पुस्तक । मूल्य २)

—**बाहर-भीतर**, ले० डॉ० देवराज । 'पथ की खोज' के प्रसिद्ध लेखक द्वारा लिखित नया सामाजिक उपन्यास ।

रामनारायण लाल, इलाहाबाद

—**अपनी-अपनी रुचि**, अनु० रायबहादुर लाला सीताराम । शेक्सपियर के 'एज यू लाइक इट' का हिन्दी रूपान्तर । १)

—**भारत को प्रयाग की देन**, ले० हरेन्द्रप्रताप सिन्हा । प्रयाग के बारे में सम्पूर्ण विवरण । अजिल्द ३) सजिल्द ४)

—**सम्पत्ति हस्तांतरण अधिनियम**, अनु० राधाकृष्ण । अंग्रेजी के 'ट्रांसफर आफ़ प्रापर्टी एक्ट' (अधिनियम सं० ४ सन् १८८२) का हिन्दी अनुवाद । १)

—**रामचरित मानस**, यह रामचरित मानस का लव-कुश काण्ड सहित गुटका संस्करण है । रामशलाका प्रश्नावली भी दी हुई है । १)

शामलाल हीरालाल, मथुरा

—**एकादशी माहात्म्य** ले० वनमालि चतुर्वेदी । १)

—**टार्जन और यौवन की खोज**, अनु० काशीनाथ अग्रवाल । १)

—**टार्जन और रूसी सुन्दरी**, अनु० काशीनाथ अग्रवाल । १)

—**रैदास रामायण**, ले० भोलानाथ मिश्र । २)

शारदा प्रकाशन, भागलपुर

—**आलमगीर**, ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री । मुगल साम्राज्य की राजनीति एवं ऐश्वर्य पर निरंतर १५ वर्षों के गम्भीर अन्वेषण के पश्चात् ऐतिहासिक तत्वों के आधार पर लिखित उपन्यास । ६)

—**विश्लेषण**, ले० श्री इलाचन्द्र जोशी । साहि प्रमुख अंगों एवं साहित्यिकों की साधना तथा उनकी रचनाओं पर आलोचनात्मक निबन्धों का अद्वितीय संग्रह ।

सरस्वती सदन, मसूरी

—**आचार्य चाणक्य**, ले० डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार । ऐतिहासिक उपन्यास । पृष्ठ संख्या ३५२ । सजिल्द ४)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—**इंग्लैण्ड में गांधी जी**, ले० स्व० महादेव भाई

—**कल्पवृक्ष**, ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल । भा संस्कृति, वैदिक, धार्मिक निबन्धों का संग्रह । २)

—**गांव सुखी हम सुखी**, ले० श्री विनोबा भावे । वासी भारतीय कैसी सुखी हो सकते हैं, इस समस्या समाधान । ।≈)

—**मुद्राराक्षस**, विशाखदत्त, सं० श्री विष्णु प्रभा संस्कृत साहित्य के मूलग्रन्थ का कथासार । ।≈)

साहनी प्रकाशन, दिल्ली

—**साहित्य, कला, समीक्षा**, ले० श्री मन्मथनाथ गु आलोचनात्मक प्रकाशन । ६)

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

—**नाट्यशास्त्र**, भरत मुनि । अनु० पं० भोला शर्मा । भरत मुनि-कृत नाट्यशास्त्र की हिन्दी टीका व्याख्या सहित संस्करण । भाग १ : सर्ग १ से ४ ।

साहित्य निकेतन, कानपुर

—**एकांकी**, ले० जगदीशनारायण चौबे । स्फुट ए का संग्रह । १)

—**सर्चलाइट आफ़ कमर्शियल ज्याग्रफ़ी** (हिन्दी ले० एल० एन० वर्मा । माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थि लिए प्रश्नोत्तर के रूप में ।

हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

—**चचा छक्कन**, ले० इम्तियाज़ अली ताज । हास्य की कहानियों का संग्रह । मूल्य लगभग १।।)

—**बिखरे मोती**, ले० सुभद्राकुमारी चौहान । क संग्रह । मूल्य लगभग । २।।)

—**मुकुल**, ले० सुभद्राकुमारी चौहान । कविता मूल्य लगभग २।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्दी भवन, इलाहाबाद

—गुंजन का अनुशीलन, ले० श्री बलदेवप्रसाद शुक्ल। ...सुमित्रानन्दन पंत के 'गुंजन' की पूरी टीका और आलो-...ना। लगभग २॥)

—नीरजा विवेचन, ले० पं० बलदेवप्रसाद शुक्ल। श्री ...हादेवी वर्मा की 'नीरजा' की पूरी टीका और आलोचना। ...लगभग ३)

—बदलते दृश्य, ले० श्री राजवल्लभ ओझा। लेखक ...यूरोप-भ्रमण की डायरी। लगभग ५)

—शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय : चिन्तन धारा और कला, ...डॉ० इन्द्रनाथ मदान। शरत् के उपन्यासों और कहानियों ...अध्ययन। लगभग २)

—नीति की कहानियाँ, भाग २, ले० श्री राकेश। ...लोपयोगी कहानियाँ। मू० लगभग ॥)

...न मन्दिर, कानपुर

—परिहास, ले० वचनेश। परिहास सम्बन्धी कविता ...। मू० लगभग १॥)

—हिन्दी का विकास, ले० श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी। ...न्दी के विकास में कानपुर की देन। ३)

[पृष्ठ २५४ का शेष]

...एक खास आदमी द्वारा किया जाना चाहिए। कई आद-...मियों द्वारा एक ही कैश-रजिस्टर काम में लाना भी सन्तोष-...जनक नहीं है। एक ही जगह से कई लोगों का पैसा निका-...लना और जमा करना भी ठीक नहीं है। वैसे भी जिन कर्म-...चारियों का काम ग्राहकों के लिए किताबें ढूँढ़ना है उनके ...दिमाग में ज्यादातर किताबों के नाम ही रहते हैं और उन्हें ...रुपये-पैसे का काम सुपुर्द करना उचित नहीं है; वे रेजगारी ...लेने-देने में गलती कर सकते हैं।

...रुपये-पैसे रखने का चाहे कोई भी प्रबन्ध किया जाय ...पर यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी कर्मचारी के ...मन में ऐसा प्रलोभन न हो कि जिसका वह अनुचित लाभ ...उठा सके।

[पृष्ठ २४६ का शेष]

कि वह प्रमुख हिन्दी प्रकाशनों को अपने पास रखेगा, पर उसके पास तो पुस्तक-प्रेम नाम की कोई चीज है ही नहीं, इसलिए जब वह कोर्स की ही किताब नहीं खरीदता तो बाहरी साहित्यिक या अन्यान्य विषयों की किताबों की तो बात ही छोड़िए।

इसलिए मेरा यह खयाल है कि आज हिन्दी-प्रदेश की संस्थाओं तथा अध्यापकों का—विशेषतः हिन्दी के—यह कर्तव्य है कि वह इस प्रदेश के जन-हृदय में पहले साहित्य-प्रेम, पुस्तक-प्रेम की लौ पैदा करें। हर नौकरीशुदा व्यक्ति को यह समझा देना जरूरी है कि जिस तरह दो आने का नमक खरीदना उसके शारीरिक खाद्य के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार अपनी आमदनी की सीमा में ही हिन्दी की चार आने की एक पत्रिका या एक रुपये की एक किताब प्रतिमास खरीदना उसके मानसिक खाद्य की दृष्टि से अनिवार्य है।

प्रकाशकों से निवेदन

● इस बात की ओर हमारा ध्यान खींचा गया है कि पिछले मास प्रकाशित हो चुकी अथवा इस मास प्रकाशित हो रही पुस्तकों की सूची में कुछेक पुरानी पुस्तकों का नाम भी अंकित हो जाता है। प्रकाशकों से हमारा सनम्र, सानुरोध निवेदन है कि हमारे और पाठकों के विश्वास को बना रहने दें, केवल नये प्रकाशनों की सूचियाँ ही हमें प्रकाशनार्थ भेजें।

सम्पादक

प्रकाशन समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

कैलाश बहादुर सक्सेना, विश्वनाथ हुक्कू, सरल वाणिज्य प्रणाली, ५३०, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
दाऊदयाल भार्गव, मुद्रा विनिमय एवं बैंकिंग, ६४०, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
मामचन्द्र गुप्त, मित्रसेन गुप्त, भारतीय अर्थशास्त्र एक दृष्टि में, ३१८, प्रीमियर बुक डिपो, दिल्ली

आलोचना, साहित्य

कृष्णशंकर शुक्ल सं०, वेलि क्रिसन रुकमणी री, २३०, क्राऊन, साहित्य निकेतन, कानपुर
भगवत्स्वरूप मिश्र डॉ०, हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास, ६२४, डिमाई, साहित्य-सदन, देहरादून
मदनमोहन शर्मा, साहित्य परिचय, ८०, क्राऊन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वरधा
सीताराम चतुर्वेदी आचार्य, भाषालोचन, ६००, क्राऊन, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, बनारस
सीताराम चतुर्वेदी आचार्य, समीक्षा शास्त्र, १३०४, डिमाई, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, बनारस
श्रीरामुलु गुप्त, संक्षिप्त सेवासदन : एक सरल अध्ययन, १३४, क्राऊन, लोकमान्य हिन्दी मन्दिर, विजयवाड़ा-२
श्रीरामुलु गुप्त मध्यमा सम्पूर्ण गाइड, २२०, क्राऊन, लोकमान्य हिन्दी मन्दिर, विजयवाड़ा-२

उपन्यास

अहमद अब्बास ख्वाजा, अंधेरा उजाला, १४२, क्राऊन, बम्बई बुक हाऊस, बम्बई-३
गोर्की, अनु० शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान, तीन पीढ़ी, ३७८, क्राऊन, सरस्वती प्रेस, बनारस
मोरावियां, अतृप्त वासनाएँ, ११८, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
वृन्दावनलाल वर्मा, अमर बेल, ४७७, क्राऊन, मयूर प्रकाशन, झाँसी
शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० कामताप्रसाद श्रीवास्तव, परिणीता, ११२, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया

कविता

अज्ञात संत, मीरा की पदावली, १६०, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया
अज्ञात संत, संत दादू और उनकी वाणी, १२८, क्राऊन, राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया
पोद्दार रामावतार अरुण, विदेह, ४००, डिमाई, किरण कुंज, समस्तीपुर
पोद्दार रामावतार अरुण, कोशा, १००, डिमाई, किरण कुंज, समस्तीपुर
शिवबहादुरसिंह, शिंजिनी, ११२, क्राऊन, साहित्य निकेतन, कानपुर
सम्पादित, प्राचीन काव्य संग्रह, २१२, क्राऊन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वरधा
सरनदास भनोत, काव्यामृत, १४६, क्राऊन, पु० मु०, प्रीमियर बुक कम्पनी, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानियाँ

…न्द्र एम० ए०, किरात कन्या, १७६, डिमाई, शारदा प्रकाशन, भागलपुर ३)

…वेदी, गंगा से गोमती तक, १७०, क्राऊन, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी, इलाहाबाद २)

…दयाल गोयन्दका, शिक्षाप्रद ग्यारह कहानियाँ, १२८, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।)

…न्द्र, आखिरी मंजिल, २५६, क्राऊन, शारदा प्रकाशन, भागलपुर २।।।=)

…पादित, नया कहानी संग्रह, भाग २, ६६, क्राऊन, पु० मु०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वरधा ।।।)

धार्मिक

…दयाल गोयन्दका, गीता, प्रत्येक अध्याय के माहात्म्य वाली, ४३२, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।।।=)

…दयाल गोयन्दका, गीता दैनन्दिनी १९५४; ४१६, ५½"×३½", पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।।=)

…दुर्गा सप्तशती सटीक, २४०, क्राऊन, पु० मु०, गीताप्रेस, गोरखपुर ।।।)

…त्र रत्नावली, ३२०, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।।)

…हनुमानप्रसाद पोद्दार, मानव धर्म, ६६, क्राऊन, पु० मु० गीता प्रेस, गोरखपुर ≡)

नाटक

…स्वरूप डॉ०, नल दमयन्ती १०३, क्राऊन, पु० मु०, प्रीमियर बुक डिपो, दिल्ली १।।।)

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी, जीवन-चरित्र

…प्रसाद अरोड़ा, उदयनारायण वाजपेयी, ३६, क्राऊन, ज्ञानमन्दिर, कानपुर, ।=)

…दयाल गोयन्दका, आदर्श भ्रातृ-प्रेम, १०४, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ≡)

…, नीति की कहानियाँ-भाग १, ३२, क्राऊन, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ।=)

…चन्द्र तिवारी, गंगा जी, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

…लाल जैन सं०, गांधी जी का विद्यार्थी जीवन, ४०, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

…नारायण मिश्र, किशोर नाटकावली, ११२, क्राऊन, हिन्दी भवन, इलाहाबाद १)

…म पागल, बन्दर मामा, ३६, क्राऊन, शारदा प्रकाशन, भागलपुर ।=)

…म पागल, हंस और हंसा, ३६, क्राऊन, शारदा प्रकाशन, भागलपुर ।=)

…, मृच्छकटिक ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

…रा सय्यदैन, आओ दोस्त बनाएँ, ८, ७½"+६½", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।।।)

…राम विचित्र, वीर सिपाही, १७३, क्राऊन साहित्य-सदन, देहरादून, ३)

…लाल पण्डित, हज़रत मुहम्मद इस्लाम, १६०, डिमाई, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी, इलाहाबाद ३)

…मानप्रसाद पोद्दार, भगवान् राम, १ तथा २, प्रत्येक का ५२, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रत्येक का ।)

…मानप्रसाद पोद्दार प्रेमी भक्त, ८८, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।-)

…मानप्रसाद पोद्दार, भक्त चन्द्रिका, ८८, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।-)

विविध

…प्रसाद जैन, सच्चा साम्यवाद और सच्चे सम्यवादी महावीर, १६, डिमाई, महावीर मुद्रणालय, अलीगंज -)

…शचन्द्र जैन डॉ०, चीनी जनता के बीच, २८२, क्राऊन, पीपुल्ज पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई ४, ४)

…कृष्ण मुरारी सक्सेना, भारत दर्शन, १२२, देशसेवा मण्डल, इलाहाबाद १)

…फरवरी, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादित, राष्ट्रभाषा प्रारंभिक बोधिनी, ४८, क्राऊन, पु० मु०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वरधा,
सम्पादित, राष्ट्रभाषा बोध, भाग २, ६४, क्राऊन, पु० मु०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वरधा
हनुमानप्रसाद पोद्दार, हिन्दी बालपोथी शिशु पाठ १, क्राऊन कार्टो, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर
हरिबाबू कंसल एम० ए०, विश्व परिचय, ४५०, क्राऊन, मेहरचन्द मुन्शीराम, दिल्ली

विज्ञान

जगपति चतुर्वेदी, कीटाणुओं की कहानी, १७२, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
जगपति चतुर्वेदी, शल्यविज्ञान की कहानी, १६६, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
जगपति चतुर्वेदी, विलुप्त जन्तु, १६०, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद,
प्रेमनाथ गर्ग, सिद्धनाथ मेहरोत्रा, भौतिक और रसायनशास्त्र (अकार्बनिक) २४०, क्राऊन, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

शिक्षा शास्त्र

उत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम, ४८, क्राऊन, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वरधा
मुरारीलाल शर्मा, शिक्षा-शास्त्र की रूपरेखा, २८४, क्राऊन, भारत पब्लिकेशन्स, आगरा

हमारा प्रतिनिधि : : दौरे पर

हमारे घुमक्कड़-प्रतिनिधि श्री बृजमोहन पंड्या आजकल उत्तर भारत के दौरे पर हैं। प्रत्येक स्थान पर वे पुस्तक-विक्रेताओं से मिलेंगे, और हमारे व अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों के आर्डर बनाने में उन्हें सहायता देंगे। हमारे प्रकाशनों की बिक्री-सम्बन्धी नियमावली अथवा हमारे विरुद्ध किसी प्रकार की शिकायत के बारे में कुछ भी आपको कहना हो तो इन्हें लिखित रूप में दे दें और कार्यालय से उत्तर पाने की प्रतीक्षा करें। "आलोचना", "प्रकाशन समाचार" और हमारे प्रकाशनों की बिक्री किस प्रकार बढ़े, इस विषय में आपके सुझावों पर विशेष रूप से विचार किया जायगा। श्री बृजमोहन पंड्या के दौरे का कार्यक्रम निम्न प्रकार होगा :

९ फरवरी से	१५ फरवरी	—राजस्थान और अजमेर
१७ फरवरी से	२० फरवरी	—मध्य-भारत
२२ फरवरी से	२६ फरवरी	—मध्य-प्रदेश
२७ फरवरी से	३ मार्च	—कलकत्ता
४ मार्च से	१० मार्च	—बिहार
११ मार्च से	१८ मार्च	—उत्तर प्रदेश

पुस्तक विक्रेताओं द्वारा इन्हें दी गई हर प्रकार की सहायता साभार स्वीकार की जायगी।

राजकमल प्रकाशन १, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(दूसरे कवर से : राजकमल प्रकाशन : थोक बिक्री विभाग)

...ता—बलवन्त सिंह २॥)
...ह बेलज्ज़त—द्वारकाप्रसाद एम० ए० २॥)
...व एक्सलेन्सी—दास्तवस्की २॥)
...गीत—अनन्त गोपाल शेवड़े ३)
...—यज्ञदत्त शर्मा ३)
...यां की शादी—,, ३)
...— ,, ३)
...ा और राजन—बलभद्र ठाकुर ४॥)
...य—अनीता चट्टोपाध्याय ३॥)
...ों की बात—दयाशंकर मिश्र २॥)
...ला—रवीन्द्रनाथ ठाकुर १॥।)
...ा भाई—शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय १)
...ी मां— ,, १)
...दान—विक्टर ह्यूगो ४)
...ज्ञिन—साधुशरण ५)

कहानियाँ

...न्द्र की कहानियाँ (७ भाग)—प्रत्येक का ३॥)
...ा की आधुनिक श्रेष्ठ कहानियाँ—मृदुला देवी ३॥)
...धि—राजेन्द्र शर्मा २)
...वान भला करे—ए० रमेश चौधरी २॥)
...ा राज अपने आदमी—रामकृष्ण २)
...े की विदा—शिवसहाय चतुर्वेदी २)
...व की शाम—ख्वाजा अहमद अब्बास २॥।)
...ा बेटा मेरा दुश्मन— ,, ३॥।)
...मले की क्रीम—वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता २।)
...ुगल—शौकत थानवी १॥।)
...ान—शफ़ीकुर्रहमान १॥।)
...ान की कहानियाँ—बलवन्त सिंह ३)

नाटक

...ई के पीछे—उदयशंकर भट्ट २॥)
...ी चन्द्रावली नाटिका—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र १॥)
...रत दुर्दशा— ,, १)
...मला की लहरें—लक्ष्मीनारायण मिश्र १॥)

रेशमी गांठें—जयदेव मिश्र १)
कृष्ण वियोगिनी—हरिनारायण मैनावाल १॥)
मानिनी गोपा— ,, १।)
[५]मुद्रिका—सद्‌गुरुशरण अवस्थी १)
[६]संघर्ष के बाद—विष्णु प्रभाकर ३)

निबन्ध

[४]गद्य पथ—सुमित्रानन्दन पन्त ३)
[७]निबन्ध-संग्रह—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, श्रीकृष्णलाल ५)
सुबह के रंग—अमृतराय २)
शिल्पलोक—रामचन्द्र शुक्ल १।)

कविता

दिवालोक—शम्भूनाथ सिंह २)
मंगल गीत—राजेन्द्र शर्मा २)
नज़ीर की बानी—फ़िराक गोरखपुरी २॥)
राग विराग— ,, २॥)
जंजीरें टूटती हैं— ,, २॥)
धरती की करवट—,, २॥)
दीवाने गालिब—'गालिब' २॥)
[१]विनोद और व्यंग्य—'अकबर' इलाहाबादी ४)

दर्शन

भारतीय धर्म व दर्शन—मिश्रबन्धु १॥)
[७]नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय—
फ़िलिप व्हीलराइट ५)

राजनीति

[४]राजनीति शास्त्र—डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार ६॥)
[५]राजनीति शास्त्र—(दो भाग) ए० डी० आशीर्वादम् १५)

बाल साहित्य

बरफ़ीले देश में—रूस की कहानियाँ : भाग १ १)
पहला शिकार— ,, भाग २ १)
पीली बत्तक—चीन की कहानियाँ : भाग १ १)
तीरन्दाज़ 'ई'— ,, : भाग २ १)
सच्ची नागरिकता—मनरो लीफ़ १॥।)
आओ, दोस्त बनाएँ—सईदा सैयदान ॥।)
नीली दाढ़ी—अरविन्द गुर्टू ॥।)

थोक बिक्री विभाग :

राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय अमर साहित्य

के सुलभ प्रामाणिक अनुवाद

राजकमल प्रकाशन

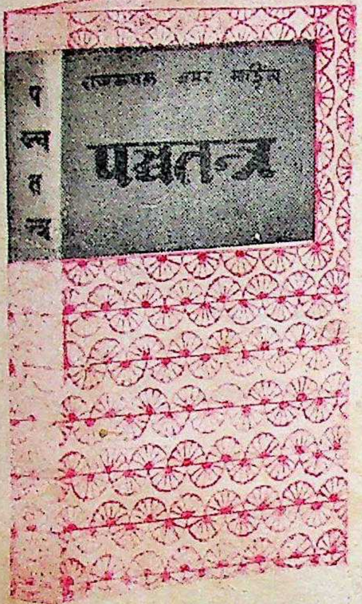

पञ्चतन्त्र
४॥)
अनु : डॉ॰ मोतीचन्द्र

अनु : पं॰ निरंजनदेव शर्मा
५॥)
दशकुमार चरित

अनु : डॉ॰ वासुदेवशरण
मेघदूत

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, १ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दरियागंज दिल्ली से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मार्च, १९५४ अङ्क ७

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

...स नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तका...ओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

...द्र-साहित्य
...८ भागों में
...मूल्य ७१)
...द्र की कहानियाँ'
...त भागों में
...का मूल्य ३॥)
जैनेन्द्र
के
...तीन उपन्यास
...त्यागपत्र, अनाम स्वामी
'जवानों'
...य संस्करण
मूल्य २)

जैनेन्द्र-साहित्य' के अन्तर्गत दार्शनिक सूझ के मौलिक साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार की समस्त कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है। उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में जैनेन्द्र की शैली ने जहाँ साहित्य को एक नया दिशा-बोध कराया वहाँ जैनेन्द्र के मौलिक दृष्टिकोण ने विचार-जगत् में एक हलचल पैदा की है। जैनेन्द्र के साहित्य में उपन्यास-सम्राट् प्रेमचन्द को गोर्की के दर्शन हुए; राष्ट्र-कवि मैथिली शरण गुप्त को शरद और रवीन्द्र की संयुक्त झाँकी दिखाई दी और गांधीवादी विचारक मशरूवाला को टालसटाय के विचारों से भी बढ़कर कुछ मिला।

अभी तक 'जैनेन्द्र-साहित्य' के १८ भागों में जैनेन्द्र के तीन उपन्यास, समस्त कहानियाँ और निबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं। जैनेन्द्र की अब तक की सारी कहानियों को 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' नाम से सात भागों में प्रकाशित किया गया है।

...त्मा भगवानदीन के ओजस्वी मौलिक विचारों से साहित्य-जगत् परिचित है। महात्मा जी एक ...नी साहित्यकार हैं। महात्मा जी की 'जवानो' पुस्तक को इतना पसन्द किया गया कि शीघ्र ...रण बिक गए। उनकी नई रचनाओं की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। महात्मा जी ...कहानी और निबन्ध सभी इस क्रम में शीघ्र ही प्रकाशित होंगे।

...र्वोदय प्रकाशन, ७ दरियागंज, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३ ३/४"×६" या २ ३/४"×८"। चौथाई पृष्ठ : २ ३/४"×३ ३/४"। एक कालम इंच : १"×२ ३/४"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५ १/२"×६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित, १००)।

- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :

: अंक ७ :

सम्पादक : श्रों प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

हिन्दी का सौभाग्य ही समझिए कि देश के कुछ ...तिवर्ष हिन्दी के प्रकाशनों को राज्य के पुस्तकालयों में ...ने के लिए पैसा खर्च करने लगे हैं। सब राज्य इस ...पैसा नहीं लगाते; मुख्यतया राजस्थान, उत्तर-प्रदेश, ...प्रदेश, मध्य-भारत और बिहार की सरकारें ही इस ...अधिक दिलचस्पी लेती हैं। तीनेक वर्षों से पुस्तकों ...न्य राज्यों की अपेक्षा सबसे अधिक रुपया बिहार-...र का शिक्षा-विभाग व्यय कर रहा है और इसलिए वह हिन्दी-जगत् के धन्यवाद और साधुवाद का पात्र है।

...यह बहुत ही खेद की बात है कि जिस सदुद्देश्य को ...लाखों रुपयों की रकम हिन्दी-साहित्य को जनता के ...सुलभ करने की खातिर विभिन्न राज्यों में खर्च की जा ...है, वह पूरा नहीं हो रहा। पुस्तकालयों में पुस्तकें रखने ...प्रकाशित साहित्य से सर्वसाधारण के ज्ञान में संवर्द्धन ...। जिस देश के अधिकांश निवासी निरक्षर हों और ...जहाँ हों उनके पास पुस्तकें खरीदने के लिए पैसा ...वहाँ पुस्तकालयों का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। ...और क्रय-शक्ति के अभाव से पीड़ित हमारे अभागे ...के भरे-पूरे पुस्तकालयों की बहुत ही आवश्यकता है ...कारण जो राज्य-सरकारें इस ओर अपना कर्तव्य ...रही हैं, वे निश्चय ही जन-हित के प्रति अपनी ...का परिचय दे रही हैं।

...किन जिस रूप में सरकारों द्वारा अपने इस इरादे को ...कार्यान्वित किया जा रहा है, उससे अर्थ का अनर्थ हो ...। जहाँ पुस्तकों की सरकारी खरीद के लिए 'टेंडर' माँगे जाते हैं; जो पुस्तक-विक्रेता सबसे अधिक कमीशन देने का वायदा करता है, उसीसे पुस्तकें खरीदी जाती हैं। कमीशन की यह बोली ३३ प्रतिशत तक बढ़ जाती है। अच्छा, ठोस, सुमुद्रित, सुप्रकाशित साहित्य तो १५ से २५ प्रतिशत से अधिक कमीशनों पर प्राप्य नहीं हो सकता, सो परिणाम यह है कि अधिक कमीशन की घटिया क़िस्म की चलती-फिरती, न्यूजप्रिंट पर छपी हुई पुस्तकें खरीद ली जाती हैं। उद्देश्य था जनता के लिए अच्छे साहित्य को सुलभ बनाने का, लेकिन बचत अथवा सरकारी कामकाज के नियमों की ओट में 'थर्ड-रेट' साहित्य का प्रचार-प्रसार हो रहा है। उत्तर-प्रदेश में यह नियम बना दिया गया है कि एक प्रकाशक की केवल एक पुस्तक ही राज्य सरकार खरीदेगी, किसी प्रकाशक ने वर्ष-भर में चाहे पचास उत्कृष्ट पुस्तकें ही क्यों न प्रकाशित की हों। इस प्रकार यहाँ भी उद्देश्य केवल भले बुरे प्रकाशकों का भरण-पोषण ही रह गया।

बिहार में १७ जिलों के पुस्तकालयों को पुस्तकें पहुँचाने का एकाधिकार इस वर्ष ११ पुस्तक-विक्रेताओं को दे दिया गया है। इस राज्य में पुस्तकालय आन्दोलन को सरकार का जिस मात्रा में समर्थन प्राप्त है, वह प्रशंसनीय है और शिक्षा-अधिकारियों की उत्तरदायित्वपूर्ण प्रगतिशीलता का द्योतक है। लेकिन पुस्तकें खरीदने की जो व्यवस्था बनाई गई है, उसने न केवल चारों ओर भ्रष्टाचारिता को ही पनपाया है बल्कि सत्साहित्य के प्रचार के सदुद्देश्य को ही निरर्थक करके रख दिया है। जिन पुस्तक-विक्रेता महोदयों को पुस्तकालयों को पुस्तकें पहुँचाने के लिए मनोनीत किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है, उनमें से अधिकांश अपने मुनाफे की खातिर इस उद्देश्य का जिस निर्ममता से गला घोंट रहे हैं, वह बिहार में आज चर्चा का विषय है। देश के शायद ही किसी अच्छे प्रकाशक की पुस्तकें इन लोगों ने खरीदी हों, क्योंकि अच्छी पुस्तक की पहचान की इन लोगों के पास एक ही कसौटी है: कमीशन अधिक होना चाहिए। क्या बिहार के पुस्तकालयों में राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर-प्रदेश, लखनऊ अथवा प्रयाग विश्व वियालयों के प्रकाशन-विभागों की पुस्तकें पहुँच रही हैं? इन सुप्रतिष्ठित सार्वजनिक संस्थाओं के अतिरिक्त जो दूसरी व्यक्तिगत संस्थाएँ सुन्दर सुरुचिपूर्ण प्रकाशन निकालकर हिन्दी की श्रीवृद्धि में, लाभालाभ के विचार को बहुत तूल न देते हुए, जुटी हुई हैं, उनमें से शायद ही किसी का कोई प्रकाशन पुस्तकालयों में पहुँचा हो।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि बाहर से जाने वाले व्यक्ति को एक ही दिन में इन पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा धाँधली के जो-जो तरीके, जिन जिन हथकण्डों का वर्णन सुनने को मिल जाता है, वह बिहार-सरकार के विभाग के जानने में नहीं आता, क्योंकि इसे रोकने के लिए कोई कदम उठाये गए हों, यह ज्ञात नहीं। बिहार में आज अच्छी पुस्तकों को खरीदने का तो प्रश्न नहीं रहा है। पुस्तकालयों को ऐसी पुस्तकें दी जा रही हैं जो ग्रन्थ सूची में नहीं है, लेकिन जो पु- विक्रेता महोदय के पास अरसे से पड़ी थीं और बिक न थीं। खानापूरी करने के लिए बिल में उन पुस्तकों का उल्लेख कर लिया जाता है जो सूची में हैं। यदि बिहार शिक्षा-विभाग पुस्तकालयों की जाँच करने का प्रबन्ध करे तो और भी कई करतूतों का पर्दाफाश होगा। कुछ पुस्तका- लयों में ऐसी कोई पुस्तक ही न मिलेगी जिसका बिल पास मौजूद है, लेकिन जिस बिल की रकम पुस्तकाध्यक्ष अधिकारी पुस्तक-विक्रेता के साथ मिली-भगत करके गए। ४०-५० प्रतिशत कमीशन वाली पुस्तकों की पुस्तकालय में भरमार मिलेगी।

RARE, SCARCE & OUT OF PRINT BOOKS

(ONLY ONE COPY OF EACH IN STOCK)

Rs.

MASTERPIECES OF RAJPUT PAINTING by O. C. Gungoly. Size 28"×14" Limited edition of 200 copies. Scarce. 500

INDONESIAN ART. Selected Specimens of ANCIENT AND MODERN ART and HANDWORK from the Indian Archipelago by Pleyte. 1901 PORT FOLIO. 19"×14" with 24 Full Size Plates. 125

TWENTY FIVE LINOCUTS by Rani Dey. This edition is Limited to 125 copies, Portfolio 14"×11". 150

WARING: MANCHESTER ART EXHIBITION. In 4 Vols. Pottery and *Procelain*, Decorative Art in Furniture, Glass and Enamel and Sculpture. 65 Chromolithos by Day with letterpress, Folio. 1858. 150

SELECT VIEWS ACQUATINT OF ANTIQUITIES etc. In INDIA, from drawings made on spot by Wm. Hodges, London. 1786 Size 28"×21½" with descriptive and Historical Accounts of each View. (Can be sent by Rail and not by Post). 350

MUSIC AND MUSICAL INSTRUMENTS OF SOUTHERN INDIA AND THE DECCAN by Day with 17 Full Page Coloured Plates. Limited Edition of 700 copies. 1891. 350

SKETCHES AND INCIDENTS OF THE SEIGE OF LUCKNOW. From Drawings Made during THE SEIGE by C. H. Meacham with descriptive Notices by George Couper. London. 1858. 27 Plates Size 23"×15". 100

PORTRAIT OF THE PRINCES AND PEOPLE OF INDIA by The Hon'ble Miss Eden with 24 Beuatiful Lithographs Size 20"×14".

JONES: GRAMMAR OF ORNAMENT. Illustrated by 112 Full-Page Plates in Gold and Colours ot Examples from Various Styles of Ornament and Text. Size 13"×9½". 1868.

TAJIMA: MASTERPIECES by K. JAKUCHU with Biographical Sketch of the Artist. 30 Plates 19"×12" Port Folio. Limited Edition. Beautiful Binding with Case.

RUSKIN: MODERN PAINTERS in 6 Volumes Size 12"×8" weight about 15 seers.

BRIGGS: MOHAMADEN ARCHITECTURE IN EGYPT AND PALESTINE with 252 Illustrations.

JOURNAL OF INDIAN ART AND INDUSTRY. A Set of 17 Vols bound in 15 with 1500 Full Page Coloured and Monochrome Plates FOLIO SIZE. Half Morocco bound. An Extremely Rare and Scarce Set.

INDIAN ANTIQUTTIES OR DISSERTATION. Ancient Geographical Divisions by Maurice in 7 Vols. 3,000pp. Illustrated London. 1800.

SHRI SARVA DEVA SABHA: The Court of all the Holy Gods or THE HINDU PANTHEON by Edward Moor with 105 Plates 12"×9½" Full Leather bound. weight about 3 seers. London. 1810.

Ask for our monthly lists. Books, once sold, are rather difficult to procure again.

DIXITSON & CO., (1917)

115/A, Tarak Pramanick Road, CALCUTTA-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श-विदेश से

[...]ार, ६ मार्च ५४, को राज्य परिषद् में भाषण देते [...] श्री राजेश्वर प्रसाद नारायणसिंह ने कहा : १९५२ में [...]कांग्रेस ने तय किया था कि पुस्तकों आदि पर महसूल [...] जाय और इस प्रस्ताव को संयुक्त-राज्य शिक्षा-विज्ञान [...]कृति-संगठन (यूनेस्को) ने सब राष्ट्रों को भेजा था। परन्तु [...] यहाँ यह महसूल बढ़ा दिया गया। परिणाम यह हुआ [...] जिस किताब का मूल्य १४ आना हो, उस पर १२ आना [...] लगता है। यहाँ शत-प्रतिशत महसूल बढ़ाया गया [...] भारतीय भाषाओं की पुस्तकों की वी० पी० पी० से [...] वाली बिक्री आधी रह गई। भारत में अमरीका से ६० [...]शत अधिक महसूल है। एक किताब का पैकेट लन्दन से [...] आठ आने में आता है; उसी पैकेट को दिल्ली से [...] भेजने में एक रुपया का खर्च होता है।

◈ ◈ ◈

आज की दुनिया में मनुष्य लगभग ३००० भाषाओं में [...] रहा है। भाषाओं की संख्या शायद इससे अधिक ही [...], लेकिन इतनी भाषाएँ तो गिनी जा चुकी हैं। यह सूचना [...]' द्वारा प्रकाशित कोरियर (१९५४ के प्रथम अंक) में [...] गई है।

◈ ◈ ◈

[...] के प्रकाशक-संघ ने पुस्तकों के वितरण की एक [...] योजना बनाई है। इस योजना को दो मानचित्रों द्वारा [...]या गया है। यदि ६ प्रकाशक ३० पुस्तक-विक्रेताओं [...] अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से पुस्तकें पहुँचाएँ तो प्रयास का [...] होगा जो सामूहिक प्रयास से बच सकता था। [...] प्रयास का मानचित्र भी दिया गया है जिसमें एक [...] वितरण-संस्था द्वारा छहों प्रकाशकों की पुस्तकें तीस [...]-विक्रेताओं तक पहुँचती हैं।

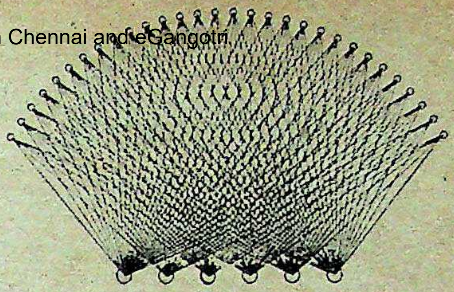

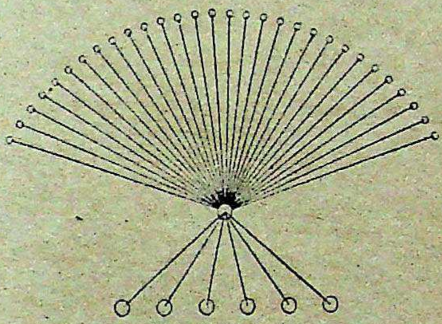

◈ ◈ ◈

इंग्लैण्ड में पुस्तकालयों को उन पुस्तकों पर कोई कमीशन नहीं दिया जाता जिन पर व्यापाराना कमीशन १ शिलिंग में २ पेंस + ५% से कम (अर्थात् लगभग २१% से कम) हो। हमारे

हिन्दी साहित्य और उसका विकास

लेखिका—प्रेमलता अग्रवाल 'सरस्वती'

इस पुस्तक पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है "...पुस्तकें यद्यपि छोटी हैं परन्तु थोड़े में साहित्यिक इतिहास का अच्छा परिचय लिखा है..."

विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। मूल्य केवल २)

लहर प्रकाशन

२, मिण्टो रोड, इलाहाबाद-२

[...]५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

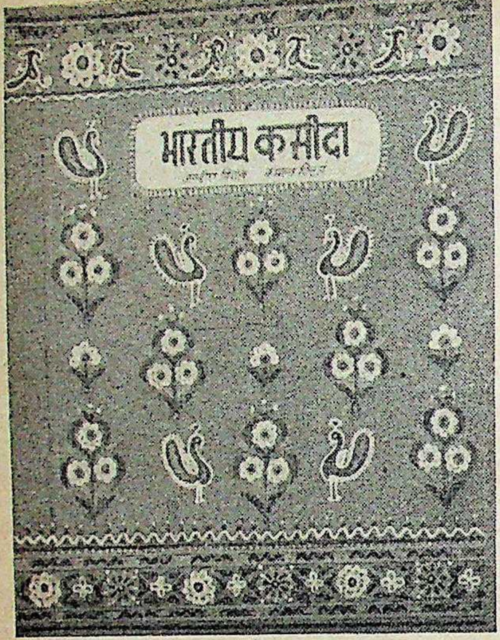

भारतीय कसीदे से परिचय के लिए विभिन्न नमूनों से युक्त, अपने विषय पर एकमात्र पुस्तक

भारतीय कसीदा

लेखक

जगदीश मित्तल : कमला मित्तल

भूमिका

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

सुरुचि सुमुद्रण की आदर्श इस पुस्तक में डच आफ़सेट काग़ज़ पर छपे कसीदे के २१५ नमूने, सर्वश्रेष्ठ इटालियन आर्ट पेपर पर प्राचीन भारतीय कसीदों के १८ हाफ़टोन चित्र, ७ रंगीन रेखा चित्र और ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ्य सामग्री।

मज़बूत जिल्द। नयनाभिराम तिरंगा कवर। आकार डबल डिमाई (९"×११")। मूल्य १५) विशेष संस्करण (आर्ट पेपर पर) २०)

प्राप्ति स्थान

प्रकाशक :	मुख्य वितरक :
सुरुचि प्रकाशन	राजकमल प्रकाशन,
'कनक', हिमायतनगर	१ फैज़ बाज़ार,
हैदराबाद दक्कन	दिल्ली

यहाँ शायद ही किसी अच्छे प्रकाशन पर पुस्तक-विक्रेताओं को एक-तिहाई कमीशन मिलता है; यह कमीशन पाए बिना पुस्तकों की एक अच्छी दुकान चलाना कठिन है। जहाँ कई कारणों से व्यापाराना कमीशन ही कम हो, बिक्री पर कमीशन भी अधिक देना पड़े तो पुस्तक-विक्रेता अपना काम भलीभाँति नहीं निभा सकता, न उसे अच्छे नये प्रकाशनों को मँगवाने और बेचने का हौसला ही होता है न इच्छा ही। विदेशों के मुकाबिले में यहाँ बिक्री भी कम है कीमतें भी कम हैं; केवल खुदरा खरीदारों को कमीशन देने का रिवाज है जो पुस्तक-विक्रेता को असहाय हुए है।

पुस्तकालयों में पुस्तकों को पढ़ने के रिवाज से प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं दोनों को कुछ हानि पहुँचती है। लोग पुस्तकालयों में जाकर पुस्तकें पढ़ लेते हैं, उनमें से एक पुस्तकें खरीद भी सकते हैं। ग्रामोफ़ोन का रिकार्ड महसूल दिये हुए सार्वजनिक संस्थाओं में नहीं बजाया सकता, न फिल्म प्रोड्यूसर को लाभ का भाग दिये बिना फिल्म ही कहीं दिखाई जा सकती है। प्रकाशक (लेखक) की अनुमति के बिना पुस्तकालयों में (सार्वजनिक स्थानों में) पुस्तकें रखी जाती हैं जिस पर प्रकाशक व लेखक प्रतिबन्ध नहीं लगाते। लेकिन वे इतनी अपेक्षा तो सकते हैं कि पुस्तकालयों को पुस्तकें बेचते वक्त पुस्तक-विक्रेता एक नियमित कमीशन से अधिक कमीशन न दें ताकि पुस्तक व्यवसाय से लेखक, प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता को लाभ मिल सके।

हम क्यों पुस्तकालयों को कम कमीशन देने के पक्ष में इसका एक और कारण भी है। इंग्लैण्ड में प्रकाशित पुस्तकों की कुल बिक्री का १०·१४ % भाग ही पुस्तकालयों द्वारा खरीदा जाता है। हिन्दुस्तान के लिए इस सम्बन्ध में निश्चित अनुपात मालूम नहीं है, लेकिन कुल बिक्री का कम-से-कम तीन-चौथाई भाग अवश्य पुस्तकालयों द्वारा जाता है। बिक्री के मुख्य-भाग में से ही लाभ का भाग जाय तो व्यापार का क्या होगा ?

✧ ✧ ✧

इधर हिन्दी में विदेशी पुस्तकों के अधिक संख्या में होने लगे हैं। इस प्रवृत्ति का स्वागत होना चाहिए, इसके साथ-ही साथ यह प्रवृत्ति भी है कि हिन्दी अनुवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक का नाम न दिया जाय; यदि दिया भी जाय तो मुख-पृष्ठ पर नहीं, अन्दर के कवर पर अथवा भूमिका में, जहाँ वह अनुवादक के नाम को ढक न पाए।

अभी हाल ही में कुसुम प्रकाशन, पटना, से ट्राट्स्की की हत्या नाम की एक पुस्तक १९५४ की बसन्त पंचमी को प्रकाशित हुई है। लेखक हैं श्री छविनाथ पांडेय। पुस्तक पर कहीं यह उल्लेख नहीं है कि यह पुस्तक किसी विदेशी पुस्तक का अनुवाद है; भूमिका में भी इस ओर संकेत नहीं है। अन्दर के पृष्ठ उलटने पर ऐसे वाक्य मिल जाते हैं : "जाँच और निगरानी के काम से आक्रमण के बाद की उस तीन वर्ष की अवधि तक ट्राट्स्की के यहाँ मेरा आना-जाना बराबर होता रहा"—जिनसे सन्देह होता है कि पांडेय जी ट्राट्स्की से तो न मिले होंगे, हाँ, इस पुस्तक का अनूदित होना सम्भव है। इसी प्रकार श्री यशपाल द्वारा अनूदित पक्का कदम के मुखपृष्ठ से मूल लेखक का नाम गायब है। श्री ओंकार शरद् ने अन्नपूर्णा पर पर्ल बक का नाम नहीं दिया है। श्री राहुल सांकृत्यायन द्वारा अनूदित चार पुस्तकों : शैतान की आँख, सोने की ढाल, विस्मृति के गर्भ में और जादू का मुल्क के कवर पर मूल लेखक के नाम की जगह अनुवादक के नाम को प्रमुखता मिली है। इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में लेखकों के साथ प्रकाशकों का भी हाथ है। इस औचित्य को दृष्टि में रखते हुए मूल लेखक का नाम ही ऊपर जाना चाहिए।

उत्तर प्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत

बाल मनोविज्ञान

लेखक

प्रो० अर्जुन चौबे काश्यप, एम. ए., एम. एड.

प्रस्तुत पुस्तक की रचना कालेज और यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों के लाभार्थ हुई है। इसकी भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध है। इसकी भूमिका उत्तर प्रदेश के शिक्षा मन्त्री माननीय श्री सम्पूर्णानन्द ने लिखी है। एक बार जरूर पढ़ें।

मूल्य : ६)

प्रकाशक

भारती पुस्तक भण्डार, चौक, गया

गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से पहले

एक आवश्यक पुस्तक

विवाह से पहले

(युवक-युवतियों को परामर्श)

लेखक : का० न० रामन्ना शास्त्री

हिन्दी और कन्नड़ दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित

यह पुस्तक

मनोविज्ञान, शरीर-विज्ञान, भ्रूण-विज्ञान, यौन मनोविज्ञान और आवश्यक विज्ञानों के आधार पर आधुनिकतम दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

भारतीय और विदेशी दोनों दृष्टिकोणों का स्वस्थ समन्वय

मूल्य २) मात्र

★

पत्र-पत्रिकाओं, अधिकारी विद्वानों, और हजारों दर्शकों द्वारा प्रशंसित एकांकी

पहेली

ले०:—राजेन्द्र रघुवंशी

भूमिका लेखक : अमृतलाल नागर

पहेली स्टेज पर : मोहन राकेश

★ पहेली : हमारे मध्यवर्गीय जर्जर समाज का जीता-जागता चित्र है; जीवन के हर क्षेत्र में हमारी जुआखोर मनोवृत्ति पर तीखा व्यंग्य है; शिष्ट हास्य और मनोरंजन से पूर्ण है और स्टेज के अनुभवों और खेलने के दृष्टिकोण से लिखा गया एकांकी है।

मूल्य बारह आना

विश्व साहित्य

५१६१, राजामण्डी, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-साहित्य में नये प्रयोग

● विश्व इस समय एक नई समाज-व्यवस्था चाहता है। भौतिकवादी दर्शन पर आधारित और विकसित पश्चिम की सभी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थायें आज असफल हो रही हैं।

●● व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में भारत का अध्यात्मवादी दर्शन क्या दे सकता है, यह आज का विचारणीय प्रश्न है। भारत के सभी विचारक-विद्वानों को मिलकर यह कार्य करना है।

●●● इस कार्य का श्रीगणेश "पांचजन्य—चिंतनशाला" की व्यवस्था-त्रयी (राजनीति-समीक्षा, अर्थ-समीक्षा, समाज-समीक्षा) द्वारा किया जा रहा है। इसके कुछ प्रतिष्ठित लेखक निम्नलिखित हैं :

डा० सी० कुन्हन राजा (तेहरान विश्वविद्यालय, ईरान), डा० सी० पी० रामास्वामी एय्यर, श्री राजगोपालाचार्य, श्री पी० कोदंडराव, पं० श्री० दा० सातवलेकर, श्री एम० एन० राय, श्री पीटर वाइल्स (न्यू कालेज, आक्सफोर्ड), श्री अशोक मेहता, श्री जे० सी० कुमारप्पा, पं० दीनदयाल उपाध्याय, श्री भगवानदास केला, आचार्य भगवतशरण अधौलिया, पं० रामनरेश त्रिपाठी, श्री अफजल हुसेन, श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, श्री राघवाचार्य स्वामी, आर्य रामचन्द्र जी० तिवारी, श्री एम० ए० वेंकटराव, डा० आर० भास्करन, श्री शंकर नारायणन्, श्री बालशास्त्री हरदास, श्री चिरन्तन तथा अन्य अनेक।

त्रयी-सम्पादक : श्री महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

परामर्शदाता-मंडल : "अर्थ समीक्षा"

डा० सी० कुन्हन राजा, पं० श्री० दा० सातवलेकर

पं० दयाशंकर दुबे, आर्य रामचन्द्र जी० तिवारी

पं० अटल बिहारी वाजपेयी।

राजनीति-समीक्षा और अर्थ-समीक्षा तैयार हैं। प्रत्येक का मूल्य ३) रु०,

डाक व्यय अलग।

विक्रेता पत्र-व्यवहार करें।

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड, लखनऊ कैंट, भारत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पुस्तकाध्यक्ष की दृष्टि में

प्रकाशक के कर्तव्य

बी० एगर्ड ईवान्स

इस लेख के लेखक इंग्लैण्ड को 'मिनिस्ट्री आफ वर्क्स' के मुख्य पुस्तकाध्यक्ष हैं। इसे पुस्तकालय-संघ के मुख पत्र से उद्धृतकिया गया है।

पुस्तकाध्यक्ष लोग प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञ हैं, न केवल इसलिए कि हमारा धन्धा उनके व्यवसाय पर आश्रित है, बल्कि इसलिए भी कि सभ्यता के विकास में उनका यदि सर्वाधिक नहीं तो भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग है। आज जो-कुछ वैज्ञानिक अन्वेषण हो रहा है, वह प्रकाशकों के बिना असम्भव होता। टेक्निकल उन्नति और विभिन्न उद्योगों में वैज्ञानिक छानबीन का कार्यान्वित किया जाना उनके सहयोग के बिना रुद्ध हो जायगा। इस कारण हम पुस्तकाध्यक्ष ही नहीं बल्कि सभी ही प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता स्वीकार करते हैं।

प्रकाशक लोग अपने ग्राहकों पर आश्रित होते हैं। टेक्निकल, वैज्ञानिक, अधिक मूल्य की और सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों के सबसे बढ़िया ग्राहक तो पुस्तकालय ही हैं। उद्योगपतियों के व्यक्तिगत पुस्तकालय अब कहीं-कहीं ही मिलेंगे। इस कमी की पूर्ति सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा बखूबी हो रही है।

पुस्तकालयों द्वारा प्रकाशकों का बहुत बड़ी सीमा तक निःशुल्क विज्ञापन भी होता है। प्रकाशकों की पुस्तकों का परिचय कितने ही ग्राहकों को पुस्तकालयों में ही मिलता है। कितने ही पाठक पुस्तकाध्यक्षों से पठनीय पुस्तकों की सूचियाँ तैयार करवाते हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि प्रकाशक महोदय पुस्तकाध्यक्षों की इच्छाओं और आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करें। पुस्तकाध्यक्षों की कुछ आवश्यकताओं और विचारों का मैं यहाँ स्पष्टता से बयान करूँगा—

(१) यदि मैं प्रकाशकों से अपनी बातें मनवाने की स्थिति में होऊँ तो मैं ऐसे सब प्रकाशकों को सजा दिलवाना चाहूँगा जो पुस्तकों पर इतनी चिकनी और चमकीली पुश्त की जिल्द बनवाते हैं कि उस पर कोई लेबल ही नहीं चिपक सकता।

(२) वे प्रकाशक भी उतने ही दण्डनीय हैं जो समूची पुश्त को छपाई से पाट देते हैं। प्रकाशक लोग हमारी इस जरूरत को क्यों नहीं समझते कि हमें प्रत्येक पुस्तक की पुश्त पर लगभग १ इंच की खाली जगह पुस्तक का क्रमांक आदि देने के लिए अवश्य चाहिए।

(३) ऐसे नासमझ प्रकाशकों के बारे में क्या कहूँ जो पुस्तक का नाम पुश्त पर आड़े ढंग से छाप देते हैं जिसे पढ़ने के लिए पाठक को अपने सिर को ही तिरछा करना पड़ता है।

भारतीय अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य भूगोल
पर हिन्दी में अपने ढंग की अनुपम पुस्तकें

भारतीय अर्थशास्त्र दिग्दर्शन

ले० श्री जगदीशप्रसाद गुप्ता, एम० ए०, बी० काम०
डिमाई, लगभग ३०० पृष्ठ, मूल्य केवल ३।।।)

सर्चलाइट आफ कमर्शियल जॉगरफी

ले० श्री लक्ष्मीनारायण वर्मा, एम० ए०
डिमाई आकार के २६४ पृष्ठ, मूल्य ३)

प्रश्नोत्तर रूप में विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम पर आधारित ये पुस्तकें सर्वसाधारण के लिए भी समानरूपेण उपयोगी हैं।

भाषा की सुबोधता एवं शैली की सरलता इनकी विशेषता है।

प्रकाशक एवं विक्रेता

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) कुछ ऐसे भी प्रकाशक हैं जो पुस्तकाध्यक्ष के दृष्टिकोण से उस के लिए सर्वाधिक उपयोगी स्थान को—अन्दर के पहले कवर को—अपने काम में ले आते हैं। इस पृष्ठ पर पुस्तकों के निर्देश-कार्ड रखे जाते हैं। इसे तो अवश्य खाली ही रखना चाहिए।

(५) यदि प्रकाशक पुस्तक पर प्रकाशन की वर्ष, तिथि भी प्रकाशित कर दिया करें तो हम उनके प्रति आभारी हों।[1] पुस्तकों में यथासम्भव विषय-सूची व अनुक्रमणिका अवश्य रहनी चाहिए जिसमें पाठक के लिए पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है।

(६) पुस्तकों का आकार क्या रखा जाय, इस प्रश्न पर मैं अधिक नहीं कहना चाहता, लेकिन मुझे यह आश्चर्य होता है कि प्रकाशन के धन्धे में कितने विभिन्न प्रकार चलते हैं। बहुत से प्रकाशकों ने, जो पुस्तकों की अधिक और मोटाई कम रखते हैं, शायद कभी किसी कालय की अलमारियों के खाने ही न देखे होंगे।

(७) मुझे उन प्रकाशकों के विरुद्ध उतना क्रोध जितनी उनके प्रति दया है, जो सस्ते घटिया किस्म के से चलती-फिरती पुस्तकें लिखवाकर छापते हैं। में इस प्रकार की हल्की पुस्तकों का ही अधिक और दुर्भाग्यवश इनकी बिक्री भी आसानी से हो जाती है।

(८) यह बात पुस्तकाध्यक्ष के लिए सबसे अधिक की है। प्रकाशकों के लिए यह आवश्यक होना कि प्रत्येक पुस्तक पर उस विषय की दूसरी पुस्तकों का कर दें तथा पुस्तकालय-सूची के लिए उसे पुस्तक का संकेत (क्लासिफिकेशन) अवश्य छापें। पुस्तकाध्यक्ष इस संकेत का निश्चय करने के लिए पैसे और समय खर्च करना पड़ता है; प्रकाशकों के लिए इस संकेत प्रकाशित करना अपेक्षाकृत आसान काम है।

१. हिन्दुस्तान में पुस्तकों पर प्रकाशन-तिथि देने से एक नुकसान भी है। पुस्तक-विक्रेताओं में प्रायः यह प्रवृत्ति है कि नई किताबें ही खरीदी जायँ; कुछ भी समय पहले छपी अच्छी पुस्तकों को भी वे नहीं मँगवाना चाहते। इस कारण कई-एक प्रकाशक अपनी पुस्तक के लिए—'पुरानी है—' इस इल्ज़ाम से बचने के उद्देश्य से पुस्तक पर प्रकाशन का वर्ष नहीं छापते।

हमारे प्रकाशन

कहानी

होली और दीवाली : इलाचन्द्र जोशी ४)
जिन्दगी के अनुभव : श्रीमती लुम्बा २)
डायरी के नीरस पृष्ठ : इलाचन्द्र जोशी ३)

उपन्यास

जिप्सी : इलाचन्द्र जोशी ८)
धरती की आँखें : लक्ष्मीनारायण लाल ४।।।)

नाटक

ऋतुराज : डा. रामकुमार वर्मा २।।)
तार के खम्भे : सत्येन्द्र शरत् २)
पर्वत के पीछे : लक्ष्मीनारायण लाल ३)

कविता

मधुशाला : बच्चन २)
मधुबाला : बच्चन २)
निशा निमंत्रण : बच्चन २)
एकान्त संगीत : बच्चन
सतरंगिनी : बच्चन
खैयाम की मधुशाला : बच्चन
सूत की माला : बच्चन
बंगाल का काल : बच्चन

हमारे आगामी प्रकाशन

मनोविज्ञान की रूपरेखा : मधुकर
आधुनिक मनोविज्ञान : मधुकर
मनोविज्ञान और शिक्षा : मधुकर
भारतीय दर्शन के मूल-तत्त्व : हिरियाना
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास : थिल्ली
कविता संग्रह : सुमित्रानन्दन पन्त
नीति शास्त्र : शान्ति जोशी

इतिहास तथा राजनीति शास्त्र

राजनीति प्रवेशिका : लास्की
राजनीति शास्त्र के आधार : पंत तथा गुप्त
आधुनिक यूरोप का इतिहास : शेविल
विश्व-सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास (...) : मालवीय तथा त्रिपाठी
नागरिक शास्त्र के आधार : पन्त
भारतीय संविधान तथा नागरिकता : ...

दर्शन तथा मनोविज्ञान

प्रारम्भिक मनोविज्ञान : मार्गन तथा गिलीलैंड
नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय : हीलर.इट

सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

...सन् '५४ के अंक में आपने यह सुझाव प्रकाशकों ...है कि खरीदार को कमीशन कम-से-कम दिया जाय। ...आपका यह परामर्श एकांगी है। आपने खरीदार ...को दृष्टिगत करके यह सुझाव नहीं दिया है। ...की क्रय-शक्ति शिथिल पड़ती चली जा रही है। ...व्यक्ति या कितने पुस्तकालय प्रतिवर्ष प्रकाशित होने ...पुस्तकों से लाभ उठा पाते हैं, क्या आपने यह भी ...किया है। नवीन प्रकाशनों की औसत बिक्री क्या है, ...ध्यान देने से आपको खरीदार की सारी स्थिति समझ ...जायगी। प्रमुख प्रकाशक होते हुए भी आप स्वयं ...प्रकाशनों का दाम अधिक रखते हैं। यदि इस स्थिति ...विचार न किया गया तो न तो हिन्दी के पुस्तकालय ...की दृष्टि से अच्छा भण्डार रख सकते हैं और न ...को 'प्रकाशन-समाचार' से ही कुछ लाभ होगा। ...प्रतिष्ठित साहित्यकार अपीलें निकालते हैं कि लोग स्वतः ...पुस्तक पढ़ने की आदत डालें। लेकिन हमारे ...भी इसके दूसरे पहलू पर प्रकाश नहीं डालते कि ...मूल्य की दृष्टि से सर्वसाधारण के खरीदने योग्य हैं या ...। हम तो यह जानते हैं कि सस्ते मूल्य से वस्तु की ...टर्न ओवर बढ़ता ही है और फिर यदि आपका ...ग्राहक की सुविधाओं की ओर नहीं जाता है तो क्या ...!

...दूसरी बात हम आज के साहित्य के विषय में कहना ...है। प्रकाशक और लेखक का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध ...है। अतः लेखक की रचना बहुत कुछ प्रकाशक की ...पर भी निर्भर है। साहित्य किसी भी वाद से अलग ...चाहिए। लेकिन आज स्थिति दूसरी ही है। आज ...के अन्दर साम्यवाद प्रगतिशील नामक साहित्यिक नाम ...रहा है। साहित्य के सभी अंग इससे अछूते नहीं है। इसकी छाप भी आप लोगों को ही है। बहुत से मौलिक विषयों पर भी इसकी छाप है। अभी तथाकथित भारतीय विद्वानों की आँखों से विकासवाद का चश्मा उतरा नहीं है। क्या भगवतशरण उपाध्याय, रांगेय राघव और जंगबहादुर-जैसे लेखकों की पुस्तकें सांस्कृतिक विषयों पर मौलिक सामग्री देती हैं, जिनमें केवल साम्यवादी दृष्टिकोण घुसा हुआ है ? यही दशा उपन्यास तथा गल्प-साहित्य की है। इसी कारण आज साहित्यकारों में साफ-साफ दो दल दीख रहे हैं, दक्षिण तथा वाम पंथी।

क्या ही अच्छा हो यदि आप सांस्कृतिक विषयों पर तत्तत् विषय के अधिकारी विद्वानों से ग्रन्थ लिखवाएँ। नीचे हम दो तीन ऐसे विद्वानों का नाम व पता दे रहे हैं जो कि आधुनिक शैली के सांस्कृतिक लेखक हैं—

१—श्री गंगाशंकर मिश्र एम० ए०, गंगा तरंग, नगवा, काशी। (अर्थशास्त्र, भारतीय समाज तथा इतिहास)

२—श्री जानकीनाथ शर्मा, गंगा तरंग, नगवा, काशी। (मानस तथा पुराणादि के लिए)

श्री सत्यप्रकाश संगर के

पठनीय

उपन्यास और कहानी-संग्रह

१. घर की आन (उपन्यास) ३॥)
२. नया मार्ग (कहानी-संग्रह) २)
३. अफ्रीका का आदमी (,,) २॥)
४. अवगुण्ठन (,,) २॥)

संगर की कहानी और उपन्यास परम्परागत परिपाटियों की बैसाखी लेकर साहित्य के मार्ग पर नहीं चलते, क्योंकि उसकी शैली में इतना बल है कि अपने ढंग से अपने कदमों पर चलकर भी वह पाठक के हृदय में पैठने के लक्ष्य तक पहुँच जाती है।

—यशपाल

प्राप्ति स्थान

राजकमल प्रकाशन

१ फ़ैज़ बाज़ार देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

देहली के प्रमुख प्रकाशक

: : :

राजकमल प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स

राजपाल एण्ड सन्स

: : :

के हिन्दी - प्रकाशन

क

क म ला

ला

टाइप फाउण्ड्री

द्वारा निर्मित टाइपों में छपते हैं।

हिन्दी मराठी गुरुमुखी अंग्रेजी १० से

७२ प्वाइण्ट तक के कमला टाइपों का

बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

३—श्री स्वामी राघवाचार्य, आचार्य पीठ, बरेली।
(भारतीय इतिहास एवं अर्थशास्त्र)
४—श्री डॉ० श्यामलाल पाण्डेय, प्रिंसिपल श्री दु...
विद्यालय, हुसैनगंज, लखनऊ। भारतीय राज...
अधिकारी विद्वान्। इनके पास दो ग्रन्थ प्रका...
और कई प्रकाशित हो चुके हैं।
५—श्री जनार्दन मिश्र 'पंकज', पटना सिटी स्कूल, ...
यह शान्ति निकेतन में भी प्रोफेसर रह चुके हैं।

ये सभी सज्जन सिद्धान्तवादी व्यक्ति होने के कार...
को अधिक महत्त्व देते हैं पैसे को कम। वैसे आज के
लेखक अर्थबुद्धि से ही लिखते हैं।"

इन्द्रचन्द्र,
मन्त्री, श्रीस्वाध्याय पुस्तकालय, ...

◈ ◈ ◈

"देश में इस समय बेकारी का बोल-बाला है और इस...
सैम्पल पैकेट, विशेषकर बुक पैकेटों पर डाक की ...
बढ़ोतरी चलनी में दूध दुहना ही होगा। एक तरफ तो ...
बेकारी दूर करने के विभिन्न उपाय सोच रही है और ...
ओर उक्त कदमों से बेकारी को प्रोत्साहन मिल रहा है ...
कि जो व्यापार ली हुई स्वतन्त्रता के बाद से और उन्...
ओर अग्रसर होना चाहिए जैसे कि कितने ही प्रकाश...
व्यापारी अनुभव कर रहे थे, वही रसातल की ओर जा ...

किसी भी वस्तु को बेचने के लिए साधारण तौर से ...
नमूने और सूचीपत्र भेजे जाते हैं। इस पर बढ़ाया हु...
उस नमक-कर के समान है जिसे बढ़ाना अब अनुचित ...
व्यापार के बढ़ाने के लिए सूचीपत्र और नमूने भेजना ...
ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिए जीवन; और उस...
अनिवार्य है। दिमागी खुराक पाने यानी ज्ञान प्रसार के ...
पुस्तकों का मँगाना और भेजना जिसका वहन कार्य प्रा...
विभाग ही विश्वस्त रूप से करता है। साहित्य ही मनु...
हर प्रकार की उन्नति का कारण होता है। इस व्यापार ...
संख्या में मनुष्य लगे हुए हैं और आगे भी आशा अच्...
किन्तु सरकार का ऐसा असामयिक कदम निरुत्साही ...
व्यापार, शिक्षा और ज्ञान के प्रचार पर ऊँचा टैक्स है। ...

लोक-सभा में प्रश्न उठने पर उत्तर भी क्या अ...
जो जनता को भ्रम में डालता है, जब कि वास्तव में ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...के दो पैसे कम है। क्या पिछले अर्थ-वर्ष में सरकार ...विभाग से दुगुने का घाटा था, जो इस कर में बढ़ोतरी ...आवश्यकता अनुभव की?

...देश को स्वतन्त्र हुए अधिक समय नहीं हुआ है। सर्वांग ...का प्रश्न सामने है और उस लक्ष्य तक पहुँचने में ...भुखमरी, आपसी असहयोग, नैतिक कमी, अशिक्षा ...इत्यादि कितनी ही सीढ़ियों को चढ़ना है, किन्तु इस ...की कर-वृद्धि उक्त सीढ़ियों पर और रोड़े बन जायगी। ...आशा है उक्त स्थितियों में सरकार डाक की दरों पर ...विचार करेगी और इस समय की दरों को न रखकर ...से पहले जैसे ही और पैकेट रेट के लिए इतना भी ...कोई जिस पैकिट पर एक रुपये की या इससे भी अधिक ...टिकट लगें उस पर रजिस्ट्री फीस अलग न ली जाय, ...इस स्थिति में आटोमेटिक रजिस्ट्री मानी अथवा कर ...जाय।"

कालीचरन गर्ग,

हाथरस, जि० अलीगढ़

◈ ◈ ◈

"प्रकाशन समाचार मासिक का सम्पादकीय पढ़ा। उसमें ...पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा पुस्तकालयों को दिये जाने वाले ...कमीशन के बारे में सुझाव रखा है, हम उसका पूर्ण समर्थन ...हैं। प्रकाशक-संघ की पहली बैठक में ही पुस्तकालयों ...को दिये जाने वाले कमीशन की दरें स्थायी रूप से बाँध दी ...जानी चाहिएँ। जैसा कि आपने लिखा है: (१) साधारण ...पुस्तकालयों, चाहे कितने मूल्य की पुस्तकें खरीदें, कोई कमीशन ...नहीं दिया जाना चाहिए। (२) पुस्तकालयों को २०% तक व्यापा-...रिक कमीशन की पुस्तकों पर ६¼% और २०% से अधिक ...व्यापारिक कमीशन वाली पुस्तकों पर १०% से अधिक ...कमीशन न देना चाहिए।

"आज"...(यहाँ पत्र-प्रेषक महोदय ने बम्बई, प्रयाग, ...पटना तथा लखनऊ के पाँच बड़े प्रकाशकों के ...नाम गिनाए हैं)...आदि कई प्रकाशकों ने ब्यावर के एक ...पुस्तकालय को पूरा व्यापाराना कमीशन दिया है। बम्बई के... ...ने केवल अपने प्रकाशनों पर बल्कि दिल्ली, इलाहाबाद, ...आदि के विभिन्न प्रकाशकों की पुस्तकों पर पूरा व्यापाराना ...कमीशन काट दिया है और इस तरह पुस्तक-विक्रेताओं के धन्धे की जड़ें हिलाने में प्रवृत्त हैं। क्या कोई कदम उठाया जा सकता है?"

लालचन्द,

चाँद बुक डिपो, ब्यावर।

"देश-विदेश में" शीर्षक स्तम्भ में पुस्तकालयों को कमीशन देने के सम्बन्ध में विदेशों के रिवाज के विषय में टिप्पणी पढ़ें।

प्रकाशित हो गई! संशोधित संस्करण

गुप्त जी की यशोधरा

ले०—कृष्णकुमार सिन्हा एम० ए०

डा० मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा' एक अमर कृति है और 'गुप्त जी की यशोधरा' में उसीकी समीक्षा की गई है। इसमें निम्न-लिखित आलोचनात्मक निबन्ध हैं—(१) मैथिलीशरण गुप्त (२) गुप्तजी की काव्य-साधना (३) बौद्ध-साहित्य का परिचय (४) यशोधरा के अध्यायों का विश्लेषण (५) गुप्तजी की नारी-भावना (६) यशोधरा में विरह-वर्णन (७) यशोधरा में वैष्णव-भावना (८) रस-सिद्धान्त और यशोधरा (९) यशोधरा का विधान (१०) गीति-काव्य और यशोधरा (११) शीर्षक की सार्थकता (१२) प्रकृति-चित्रण और यशोधरा (१३) वात्सल्य और यशोधरा (१४) यशोधरा में गुप्तजी का सन्देश (१५) महाभि-निष्क्रमण की प्रेरक भावनाएँ (१६) कथावस्तु में राहुल का स्थान (१७) शिशु-राहुल (१८) यशोधरा में बुद्ध-दर्शन (१९) यशोधरा की आशा-वादी भावना (२०) यशोधरा में समसामाजिकता (२१) यशोधरा और चरित्र-चित्रण (२२) छायावाद और यशोधरा (२३) यशोधरा और उर्मिला (२४) यशोधरा और बुद्ध-चरित्र (२५) यशोधरा की भाषा-शैली (२६) यशोधरा की अलङ्कार-योजना (२७) यशोधरा की छन्द-योजना (२८) यशोधरा और प्रिय-प्रवास (२९) यशोधरा: एक कला की वस्तु (३०) आलोचकों की दृष्टि में यशोधरा। इसके अतिरिक्त यशोधरा की सभी कविताओं की विस्तृत व्याख्या भी है, जिससे पुस्तक विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गई है। मूल्य: ३)

प्रकाशक
कला निकेतन
तूतबाड़ी, गया।

प्राप्ति-स्थान
राजराजेश्वरी पुस्तकालय, गया
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे आलोचनात्मक साहित्यिक प्रकाशन

[अन्य विषयों की पुस्तकों के लिए सूची-पत्र मँगावें]

छायावाद युग : प्रो० शम्भूनाथ सिंह
छायावाद की सम्पूर्ण विशेषताओं का नवीन संतुलित दृष्टिकोण से विस्तृत उद्घाटन करने वाला ग्रन्थ। प्रथम संस्करण : पृ० ४२८, सजिल्द मूल्य ६)

प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन : डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा : प्रसाद के सम्पूर्ण नाट्य साहित्य का सांगोपांग विवेचन। चतुर्थ संस्करण : पृ० ३००, सजिल्द : मूल्य ५।।)

तसव्वुफ या सूफीमत : आचार्य चन्द्रबली पाण्डे
सूफीमत के उद्भव, विकास और प्रभाव का गम्भीर विवेचन। द्वितीय संस्करण : पृ० २८६, सजिल्द : मू० ४)

हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद : प्रो० विजयशं...
प्रकृति, काव्य-वस्तु और शैली-सम्बन्धी विशेषताओं... विवेचन प्रस्तुत करने वाली पुस्तक। द्वितीय सं... पृ० १९६, सजिल्द : मू० २।।)

हिन्दी उपन्यास : प्रो० शिवनारायण श्री...
उपन्यास साहित्य का विस्तृत सर्वेक्षण तथा उपन्यास... उनकी विशिष्ट कृतियों की समीक्षा। तृतीय संस्करण... पृ० ४००, सजिल्द : मू० ४।।)

सामयिक साहित्य : प्रो० विश्वनाथ प्रसाद ...
वर्तमान साहित्य की गतिविधि का आलोचनात्मक... प्रथम संस्करण : पृ० २४०, सजिल्द : मू०...

चिन्तामणि (द्वितीय भाग) [काव्य में प्राकृतिक दृश्य, अभिव्यंजनावाद और रहस्यवाद] : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सूरदास [जीवनी, भक्ति पद्धति और काव्यालोचन] : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
आधुनिक-काव्य धारा [काव्य धारा के उद्भव और विकास का अनुशीलन] : डॉ० केशरी नारायण शुक्ल
आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत [काव्य-प्रवृत्तियों और उनकी प्रेरक शक्तियों का विवेचन] डॉ० केशरीनारायण शुक्ल
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल [आचार्य के सम्पूर्ण कृतित्व का आकलन] प्रो० शिवनाथ
भारतेन्दु-युगीन निबन्ध [उद्भव और विकास का विवेचन] प्रो० शिवनाथ
हिन्दी गद्य के युग-निर्माता [विशिष्ट गद्य लेखकों का मूल्यांकन] डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
हिन्दी कविता [भाव और शैलीगत विशेषताओं का विवेचन] कुँ० सूर्यबली सिंह
दृष्टिकोण [आलोचनात्मक निबन्ध] प्रो० विनयमोहन शर्मा
हिन्दी कवि चर्चा [विशिष्ट कवियों की समीक्षा] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे
रूसी साहित्य [विशद परिचय] डॉ० केशरी नारायण शुक्ल
भारतेन्दु के निबन्ध [संग्रह : विस्तृत आलोचनात्मक भूमिका] डॉ० केशरी नारायण शुक्ल
विद्यापति [आलोचना और सटीक पद्य संग्रह] कुँ० सूर्यबली सिंह
महादेवी वर्मा [कवयित्री की विशेषताओं का उद्घाटन] प्रो० लक्ष्मी सहाय सिन्हा
प्रसाद की कहानियाँ [विवेचना] श्री केदारनाथ शुक्ल
प्रसाद जी के उपन्यास तथा कहानियाँ [विवेचना] श्री सुशीलादेवी तथा विमला देवी
हिन्दी काव्य में सौंदर्य-भावना [सौन्दर्य भावना के विकास का अध्ययन] श्री शकुन्तला शर्मा
कहानी कला और प्रेमचन्द [विवेचना] प्रो० श्रीपति शर्मा
साहित्य संदीपनी [आलोचनात्मक निबन्ध] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे
राष्ट्र-भाषा पर विचार [मौलिक विवेचना] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे
आधुनिक आलोचना और साहित्य [आलोचनात्मक निबन्ध] श्री सीताराम जायसवाल
हिन्दी काव्य में प्रकृति [विवेचना] श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव
किंजल्क [आलोचनात्मक निबन्ध] सं० डॉ० केशरी नारायण शुक्ल

नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, चौक, बनारस-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और प्रकाशक

बाबू गुलाबराय एम० ए०

लेखक और प्रकाशक के बीच जिस सहयोग और विश्वास की आवश्यकता है उसका भारत में अभाव है। आशा है विद्वान् लेखक के सुझावों से यह तनाव कुछ कम होगा।

...में कई प्रकार के व्यवसाय चलते हैं। किन्हीं व्यवसायों ...जो प्रायः छोटे होते हैं, मजदूर, पूँजीपति, वितरण-कर्ता ...विज्ञापन-कर्ता सब एक ही में मिले हुए होते हैं। बहुत ...करने वाले स्वयं ही मिठाई या और कोई छोटी उपयोग ...वस्तु बनाते हैं और उसे मुहल्ले-मुहल्ले आवाज लगाकर ...ते हैं, किन्तु जहाँ उत्पादन बड़े परिमाण में होता है वहाँ ...पति को बाहर की मजदूरी का सहारा लेना पड़ता है। ...की आवश्यकताओं की पूर्ति में मजदूर और पूँजीपति ...का योग रहता है। दोनों में सुख-सुविधाओं तथा आय ...में संघर्ष रहता है। सरकार इस संघर्ष को यथा-...कम करने में योग देती है।

पुस्तक-व्यवसाय एक बड़ा व्यवसाय है और इसमें ...के दो अंगों का विशिष्टीकरण हो गया है। पुस्तक-...के दो ही मुख्य अंग हैं—लेखक और प्रकाशक। वैसे ...के व्यवसाय में लेखक के अतिरिक्त मशीनमैन, कागज-...कम्पोजिटर (जो अक्षर भगवान् को भी अपनी अंगुली ...ओं पर नचाते रहते हैं) और दफ्तरी महोदय आदि सभी ...महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है, किन्तु ये सब प्रकाशक के ...रहते हैं। ग्रन्थ-रचना का कार्य लेखक या कवि करते ...का सृजन-कार्य कई उद्देश्यों से प्रेरित होता है। उनमें ...होते हैं—'स्वान्तः सुखाय' (जैसे गोस्वामी तुलसीदास ...। यह प्रवृत्ति न्यूनाधिक मात्रा में इतर लेखकों में भी सृजन की अदम्य प्रेरणा के रूप में रहती है), 'अर्थ कृते' (जैसी आजकल प्रायः सभी मसिजीवी लेखकों में होती है), 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः' में ग्रन्थ-रचना भी है और 'यशसे' (जैसे कालिदास, भवभूति में)। आजकल के लेखकों में किसी-न-किसी रूप में तीनों ही प्रेरणाएँ होती हैं। कभी-कभी 'अर्थकृते' बेचारे लेखकों को दूसरों के लिए गुमनाम भी लिखना पड़ता है। उनकी स्वार्थसिद्धि तो होती है किन्तु सुकृत नहीं मिलता है।

लेखक ग्रन्थ-रचना करके अपेक्षाकृत रूप से छुट्टी पा जाता है। ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों को, जो कभी-कभी मेरी पाण्डुलिपियों की भाँति बड़ी अस्त-व्यस्त होती हैं, नयनाभिराम रूप में मुद्रण और आकर्षक कवर के साथ जिल्द बँधवाकर बाजार में लाने, उनके स्टॉक करने तथा विज्ञापन और आलोचना कराने एवं सम्मतियाँ एकत्रित करने तथा लेखकों और प्रकाशकों के भाग्य-विधायक कमेटी के मेम्बरों के द्वार खटखटाने और खुशामद करने का गुरुतर भार प्रकाशक पर रहता है। जैसे 'भारो हि महान् कवेः' कहा जाता है वैसे हम-को ईमानदारी से कहना पड़ता है 'भारो हि महान् प्रकाशकस्य'। किन्तु प्रकाशक यह सब-कुछ धर्मार्थ नहीं करते हैं। वे अपनी मेहनत और अपने रुपये को ब्याज समेत वसूल कर लेते हैं। कभी-कभी नुकसान भी उठाते हैं, जिससे लेखक मुक्त रहता है। प्रकाशक महाराज ही लेखकों के हाथों की खुजली, पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गई

प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं

प्रगतिशील साहित्य और प्रगतिवाद की चर्चा आजकल पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक गोष्ठियों में हर तरफ सुनाई देती है। किन्तु अभी तक इस विषय पर हिन्दी में कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक में आपको प्रगतिवादी दर्शन और प्रगतिशील साहित्य की युक्तिसंगत विवेचना मिलेगी।

हिन्दी के सुपरिचित आलोचक डा० रामविलास शर्मा ने साहित्य के उद्देश्य, साहित्य की परम्परा, साहित्य और यथार्थ, साहित्य और नारी-समस्या आदि विषयों पर सरल और रोचक शैली में प्रकाश डाला है। पुस्तक से न केवल प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय मिलेगा वरन् आधुनिक हिन्दी-साहित्य की मुख्य धाराओं और उन पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों की अच्छी जानकारी होगी।

पुस्तक की छपाई और गैट अप आकर्षक हैं। कागज ३२ पौंड ऐन्टिक है। आकार २०×३०÷१६ है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल तीन रुपया।

प्रकाशक

विनोद पुस्तक मंदिर,

हास्पिटल रोड, आगरा।

छापकर और रुपया देकर मिटाते हैं। लेखक और प्र... के शुभ सहयोग में ही साहित्य-समृद्धि की एक-मात्र आ... है। इसलिए दोनों को अपने-अपने कर्तव्य और अधिकारों... ज्ञान आवश्यक है।

लेखक और प्रकाशक दोनों के अलग-अलग कर्तव्य... अधिकार हैं। प्रकाशकों में स्वयं लेखक कम होते हैं, इस... वे लेखकों के परिश्रम और कठिनाई का अन्दाज़ा नहीं... सकते। ग्रन्थ-रचना की प्रसव-पीड़ा कुछ कम नहीं होती... लिए दिन और रात को एक करने वाले स्वेद-स्नात... तथा 'अभ्यासेन परिप्रश्नेन सेवया' और आजकल प्रयु... अर्जित ज्ञान के कोष का उपयोग करना और उसकी... लिए पुस्तकालयों में भटकना तथा गरीबी से संघर्ष क... बाल-बच्चों के कोलाहल क्रन्दन के बीच भूख-प्यास... तिलांजलि देकर लिखना इन सब बातों का प्रकाशक अनु...

दीवान ग़ालिब

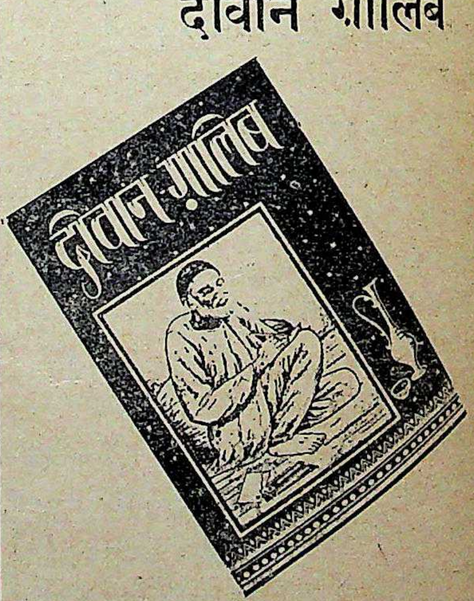

हिन्दी में इस पुस्तक का जो स्वागत... उसे देखकर हैरानी होती है।

लहर प्रकाशन

२, मिण्टो रोड, इलाहाबाद--२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं। 'विद्वानेव विजानाति विद्वज्जन परिश्रमम्'। बेचारे क्या जानें ? 'जाके पाँव न फटी बिवाई, सो का पीर पराई।' लेखक को भी प्रकाशक की कठिनाइयां आवश्यक है। कठिनाइयों के पारस्परिक ज्ञान से ही और प्रकाशक के सम्बन्ध अच्छे रह सकते हैं।

अच्छे सम्बन्धों के निर्वाह में जो चीज मुख्य रूप से सहायक होती है वह है—ईमानदारी से अपने-अपने कर्तव्य का पालन करना। लेखक का सबसे बड़ा कर्तव्य है कि वह ग्रन्थ रचना के लिए भरसक प्रयत्न करे। वह अपने नाम या प्रभाव का लाभ न उठावे। वैसे नाम तुलसीदास जी के शब्दों में राम से बड़ा होता है, किन्तु राम और उनके नाम का जो महत्त्व है वह उनके नाम से है। नाम के अनुरूप ही कृति का महत्त्व होना चाहिए। जिससे लोग यह न कहने पाएँ कि 'ऊँची दुकान फीका पकवान'। धन और परिणाम की अपेक्षा वह पुस्तक की गुणवत्ता की अधिक परवाह करे। 'चन्दन की चुटकी भली, न गाड़ी भरो कबार'। काव्य के प्रयोजनों में 'यशसे' को 'अर्थकृते' से पहले रखा गया गया है। लेखक को चाहिए कि वह दूसरे संस्करणों को पूरे परिश्रम के साथ अच्छा बनाने का प्रयत्न करे और प्रूफ-रीडिङ्ग में भी भाग ले। बहुत-से लेखक अच्छे प्रूफ रीडर नहीं होते (मैं भी उनमें हूँ), किन्तु बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं जो लेखक ही जानता है, प्रूफ-रीडर नहीं। उनमें लेखक प्रकाशक की सहायता करे। कुछ प्रकाशकों की यह नीति रहती है कि 'जैसी तेरी कौमरी वैसे मेरे गीत'। यह नीति गलत है, किन्तु प्रकाशक का भी कर्तव्य है कि कौमरी बाँटने में वह कंजूसी न करे।

लेखक के कुछ अधिकार भी हैं। लेखक के जो अधिकार हैं वे ही प्रकाशक के कर्तव्य बन जाते हैं। लेखक का सबसे बड़ा अधिकार है कि वह प्रकाशक से इस बात का आग्रह करे कि उसकी पुस्तक यथासम्भव अच्छी छपे। प्रकाशक को ध्यान रखना चाहिए कि उसकी कंजूसी के कारण घटिया कागज, पुराना टाइप, टूटी मात्राएँ, छापे की भूलें, उलटी-सीधी पंक्तियाँ और भौंडी जिल्द लेखक की पुस्तक के दूषण न बनें। आध्यात्मिक सौन्दर्य के साथ शारीरिक सौन्दर्य भी आवश्यक है। भगवान् में भी शील और शक्ति के साथ सौन्दर्य का गुण अपेक्षित समझा जाता है। हिन्दी के प्रकाशनों में बहुत उन्नति हो गई है, किन्तु कुछ प्रकाशक अपनी कुम्भकर्णी निद्रा में पड़े हुए कृपणता की अज्ञान-निशा से नहीं जागे हैं। वे संकुचित स्वार्थ से प्रेरित होकर पुस्तक की छपाई-सफाई की ओर अधिक यथोचित ध्यान नहीं देते। उनकी किताबें यदि बिकती हैं तो लेखक के नाम से। लेखक को कभी-कभी अपनी पुस्तकों के भद्दे प्रकाशनों से ऐसा ही लज्जित होना पड़ता है जैसा कभी-कभी फटे चीथड़े पहने, मक्खी भिनकती हुई रोटी का टुकड़ा हाथ में लिये, रोने में आँख और नाक का पानी एक करते हुए अपने बालकों से। प्रकाशक यह कह सकते हैं कि बहुत-से लेखकों की पाण्डुलिपियाँ भी (मेरी खास तौर से) ऐसी ही होती हैं। इसके लिए मैं यही कहूँगा कि प्रकाशक लेखकों को प्रेस-कापी तैयार करने वाले सहायक दें।

लेखक का दूसरा अधिकार है कि वह अपनी रायल्टी का पूरा-पूरा हिसाब देख सके और उसकी जाँच करा सके। लेखक स्वयं हिसाब के मामले में कच्चे होते हैं। प्रकाशक का यह नैतिक कर्तव्य होता है कि वह लेखक के हितों की स्वयं रक्षा करे और उसका शोषण न करे। 'आँख खोलकर चलो'

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का रजतजयंती प्रकाशन

तुलसी-शब्दसागर

सम्पादक-मण्डल

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डी० लिट्० (पेरिस)

डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र, डी० लिट्० (नागपुर)

डॉ० माताप्रसाद गुप्त, डी० लिट्० (इलाहाबाद)

संकलन कर्ता

स्वर्गीय पण्डित हरगोविन्द तिवारी

सम्पादक

श्री भोलानाथ तिवारी एम० ए०

तुलसीदास की रचनाओं में प्रयुक्त लगभग २२००० शब्द इस बृहत्-कोष में समाविष्ट हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति के अतिरिक्त यथास्थान महाकवि की रचनाओं से उद्धरण भी दिये गए हैं। तुलसी-अध्ययन के लिए अपरिहार्य ग्रन्थ।

सजिल्द : : आकार $10'' \times 7\frac{1}{2}''$ पृष्ठ संख्या लगभग ५००

मूल्य बारह रुपये

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नीति, जो साधारण दुकानदारी से चाहे मान्य हो, लेखकों के साथ लागू न होनी चाहिए। लेखक प्रकाशक के ऊपर निर्भर रहता है। यदि प्रकाशक उसको धोखा देता है तो वह विश्वासघात का पातक करता है। लेखक प्रकाशक की गोद में सिर रखकर सोता है। उसके सम्बन्ध में प्रातःस्मरणीय गोस्वामी तुलसीदास जी की उक्ति याद आती है:

जासु भरोसे सोइए राखि गोद में सीस।
तुलसी तासु कुचाल तें रखवारो जगदीस॥

प्रकाशकों की भी कई कोटियाँ होती हैं। पाँचों अंगुलियाँ एक-सी नहीं होतीं। प्रकाशक जितने बदनाम हैं उतने बुरे नहीं हैं। बद अच्छा बदनाम बुरा; किन्तु वे नितान्त दूध के धोए भी नहीं होते। प्रकाशक जिनसे कापीराइट खरीद लेते हैं उनकी कृतियों से मनचाहा लाभ उठाने का वे कानूनी और नैतिक अधिकार समझ लेते हैं, किन्तु वे यह नहीं सोचते कि यदि कोई गरीब लेखक अर्थाभाव से अपनी कृति बेच देता है तो उसकी विवशता से लाभ उठाना अनुचित है। कुछ अच्छी चलने वाली किताबों पर रायल्टी देने भी लग जाते हैं, किन्तु ऐसे विरले ही हैं।

रायल्टी के सम्बन्ध में मेरे कई प्रकार के अनुभव हैं: एक प्रकाशक तो ऐसे सज्जन हैं कि वे पहली अप्रैल को तो नहीं, शायद इस भय से कि लेखक यह न समझ ले कि 'एप्रिल फूल' बनाया जा रहा है, किन्तु दूसरी, तीसरी या ज्यादह-से-ज्यादह ५ अप्रैल तक हिसाब और चैक भेज देते हैं। उनके चैक का मैं आषाढ़ के प्रथम दिवस की वर्षा के समान स्वागत करता हूँ। 'बिन माँगे मिले सो दूध,' उनके ही दूसरे भाई-बन्धु हैं जो हिसाब करके महीने-दो महीने बाद स्वयं हेर-बुलाइकर चैक दे देते हैं। वे मेरी और भी बहुत सी बेगार कर देते हैं, मेरा चैक भुनवा देते हैं, पैड और निमन्त्रण-पत्र कागज समेत मुफ्त छाप देते हैं, साल-भर लड़के-बच्चों को किताबें उनके यहाँ से उधार आती रहती हैं। तीसरे एक ऐसे हैं, जो हिसाब तो ठीक समय पर कर देते हैं किन्तु वे 'जल-बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' की नीति बरतते हैं। उनके हिसाब की ईमानदारी में पूरा विश्वास रहता है, किन्तु 'हे ईश्वर, रोज की रोटी मुझे दे' की-सी दूसरे-चौथे दिन हाथ पसारकर प्रार्थना करनी पड़ती है। एक सज्जन ऐसे भी हैं जो मुझे समय-समय पर रुपया तो देते रहे हैं किन्तु हिसाब के नाम पर नित्य नया बहाना बनाते रहते हैं। आज स्वतन्त्र... हुए ६ वर्ष हो गए, किन्तु हिसाब बनने के शुभ दिन... नहीं हुए। लेखक बेचारा ऑडिटिंग नहीं जानता, ... में उसके पास कोई साधन भी नहीं रहता कि जिसके ... पर वह यह पता लगा सके कि कितनी पुस्तकें छपीं, ... कितनी बिकीं। लेखक को जो रुपया मिला उसका ... प्रकाशक के पास है, किन्तु किताबें जितनी छपीं उनका ... रेकार्ड नहीं। उसका पता लगाने के लिए लेखक को ... इतना ही अनुसन्धान करना पड़ेगा जितना कि तुलसी... के जन्म-स्थान का पता लगाने में। लेखक प्रका... द्वार पर हाजिरी दे, किन्तु प्रकाशक महोदय को अव... नहीं होता। ऐसे सज्जनों से रक्षा करने के लिए लेखकों... एक ऐसी संस्था की आवश्यकता है जो अपने सामूहिक ... बल से बेचारे लेखक को भटकने से बचाए। इन पंक्ति... लेखक इस बात की भी जानकारी चाहता है कि यदि ... ने उधार पुस्तकें किसी बुकसेलर को दे दी हैं और उसे ... रुपया वसूल नहीं हुआ तो उसका भार क्या लेखक पर ...

प्रकाशकगण यह कह सकते हैं कि कलम ... हाथ है, जो चाहे बुराई-भलाई लिख दें। किन्तु बहुत-से ... ऐसे निरीह व्यक्ति होते हैं जिनको अपने हित-अ... भी ध्यान नहीं रहता। ऐसे लोगों के हितों की रक्षा ... लेखकों और प्रकाशकों को पूर्ण सहयोग के साथ ... होना चाहिए। चौथी कोटि के प्रकाशक भी विरले ... लेकिन हैं अवश्य। उनको चाहिए कि वे स्वयं ही लेखकों के ... साथ न्याय करें, उनके समय को नष्ट न करें और ... उनकी मेहनत का पूरा-पूरा लाभ होने दें; वरन् इस... भी सन्तोष दें कि उनका हिसाब आइने की तरह साफ है ... उनके साथ अन्याय नहीं हुआ।

यदि हिसाब की सफाई प्रकाशकों की ओर से ... लेखक की ओर से पुस्तक को अधिक-से-अधिक उपयोगी ... की बात रहे तो ऐसी कोई बात नहीं रह जाती कि ले... प्रकाशकों के सम्बन्ध अच्छे न रहें। 'पयसा कमलं कमले... पयसा कमलेन विभाति सरः' अर्थात् जिस प्रकार पानी ... की और कमल से पानी की, कमल और पानी से ता... शोभा है, उसी प्रकार लेखक से प्रकाशक की, प्रकाशक ... की और लेखक और प्रकाशक से साहित्य की शोभा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...छ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

...ास
—...मेरिकन कॉलेज लाइब्रेरी, (डेनियल पुअर मैमोरियल लाइब्रेरी) तल्लाकुलम, मधुराइ।
—आंध्र क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, गुण्टूर।
—आंध्र जातीय कलाशाला कॉलेज लाइब्रेरी, मसूलीपटम।
—आंध्र मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, विज़ागापटम।
—आंध्र विमन्स संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, राजामुन्द्री।
—इस्लामिया कॉलेज लाइब्रेरी, वेनियामबड़ी (नार्थ अरकॉट)
—उस्मानिया कॉलेज लाइब्रेरी, कुरनूल।
—एग्रीकल्चरल कॉलेज लाइब्रेरी, बपटला।
—एग्रीकल्चरल कॉलेज एण्ड रीसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, ...लॉले रोड, कोयम्बटोर।
—एच० एच० दि राजा कॉलेज लाइब्रेरी, पुदूकोट्टाई।
—एथीराज कॉलेज फार विमन लाइब्रेरी, २२, कमांडरिन-चीफ रोड, मद्रास।
—एस० आर० आर० एण्ड सी० बी० आर० कॉलेज लाइब्रेरी, विजयवाडा।
—एस० वी० जे० वी० संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, कोव्वूर।
—एर्सकिन कॉलेज ऑफ नेचुरल साइंस लाइब्रेरी, वाल्टेयर।
—कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, अनन्तपुर।
— ,, ,, ,, गुइंडी, मद्रास।
— ,, ,, ,, ककोनडा।
—क्रिश्चियन मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, वेल्लोर।
—क्वीन मेरीज़ कॉलेज लाइब्रेरी, मिलापुर, मद्रास।
—जे० एल० एन० संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, तेनाली।
—गवर्नमैंट आर्ट्स कॉलेज, लाइब्रेरी, अनन्तपुर।
— ,, ,, ,, ,, कोयम्बटोर।
— ,, ,, ,, ,, मंगलोर (साऊथ कनाड़ा)
— गवर्नमैंट आर्ट्स कालेज माऊंट रोड, मद्रास।
— ,, ,, ,, ,, राजामुन्द्री।
— ,, ब्रेनन कॉलेज लाइब्रेरी, तेल्लीचेड़ी (नार्थ मलाबार)
— ,, कॉलेज फार विमन लाइब्रेरी, गुण्टूर।
—गवर्नमैंट कॉलेज लाइब्रेरी, कड्डाप्पा।
—गवर्नमैंट कॉलेज लाइब्रेरी, कुम्बाकोनम।
—गवर्नमैंट कॉलेज ऑफ टैक्नालोजी लाइब्रेरी, आर० एस० पुरम, कोयम्बटोर।
— गवर्नमैंट ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, मंगलोर।
— ,, ,, ,, , पालघाट (द० मलाबार)
— ,, ,, ,, , राजामुन्द्री।
— ,, विक्टोरिया कॉलेज लाइब्रेरी, पालघाट (द० मलाबार)
—गुरुवयरप्पन कॉलेज लाइब्रेरी, कोज़ीकोडे।
—जमाल मुहम्मद कॉलेज लाइब्रेरी, तिरूचिरापल्ली।
—जमोरिन्स कॉलेज लाइब्रेरी, कालीकट।
—जी० वी० जी० विशालाक्षी कॉलेज फार विमन, ऊदमलपेट।
—जे० वी० डी० कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टैक्नालोजी लाइब्रेरी, वाल्टेयर।
—टीचर्स कॉलेज लाइब्रेरी, सैदापेट, मद्रास।
—डब्ल्यू० जी० बी० कॉलेज लाइब्रेरी, भीमावरम (वैस्ट गोदावरी)
—डॉ० अलगप्पा चेट्टियर कॉलेज लाइब्रेरी, कड़ैकुडी।
— ,, ,, ,, ऑफ टैक्नालोजी लाइब्रेरी, गुइंडी, मद्रास—१५।
— ,, ,, ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, कड़ैकुडी।
— थियागराज कॉलेज लाइब्रेरी, मधुराइ।
—दि एम० डी० टी० हिन्दू कॉलेज लाइब्रेरी, तिरूनेलवेली
—दि गुडीवड़ा कॉलेज लाइब्रेरी, गुडीवड़ा (कृष्णा)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—दि नरसापुर कॉलेज लाइब्रेरी, नरसापुर।
—दि बसन्त थियासोफिकल कॉलेज लाइब्रेरी, मदनापल्ले।
—नरसिंह संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, चिट्टी गुड्डूर, मसूलीपटम।
—निर्मला कॉलेज फार विमन लाइब्रेरी, कोयम्बटोर।
—नेशनल कॉलेज लाइब्रेरी, तिरुचिराप्पल्ली।
—परिचैयाप्पा कॉलेज लाइब्रेरी, कांचीपुरम्।
— ,, ,, ,, , कीलपॉक, मद्रास—१०।
—पीठापुर राजा कॉलेज लाइब्रेरी, ककीनडा।
—पी० एम० जी० आर्ट्स कॉलेज लाइब्रेरी, पीलामेड, कोयम्बटोर।
—प्रेजिडेंसी कॉलेज लाइब्रेरी, ट्रिप्लीकेन, मद्रास।
—फारूक कॉलेज लाइब्रेरी, फारूक (द० मलाबार)।
—मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी (मिलर मैमोरियल लाइब्रेरी), ताम्बरम।
—मद्रास मेडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, पार्क टाउन, मद्रास।
—मद्रास लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, जी० टी० रोड, मद्रास।
—मद्रास वेटैरिनरी कॉलेज लाइब्रेरी, वेपेरी, मद्रास।
—मदुरा कॉलेज लाइब्रेरी (हार्वे लाइब्रेरी), मदुरा।
—मलाबार क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, कालीकट।
—महात्मा गांधी मैमोरियल कॉलेज लाइब्रेरी, उ... (द० कनाड़ा)।
—महाराजा कॉलेज लाइब्रेरी, विजयनगरम।
—महाराजा म्यूजिक कॉलेज लाइब्रेरी, विजयनगरम।
—महाराजा संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, विजयनगरम।
—मिसेज ए० वी० एन० कॉलेज लाइब्रेरी, विजगापट्टम।
—मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, गुण्टूर।
—मैस्टन ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, रोयापेट्टा, मद्रास—।
—यूनिवर्सिटी कॉलेज आफ आर्ट्स एण्ड कामर्स लाइब्रेरी, वाल्टेयर।

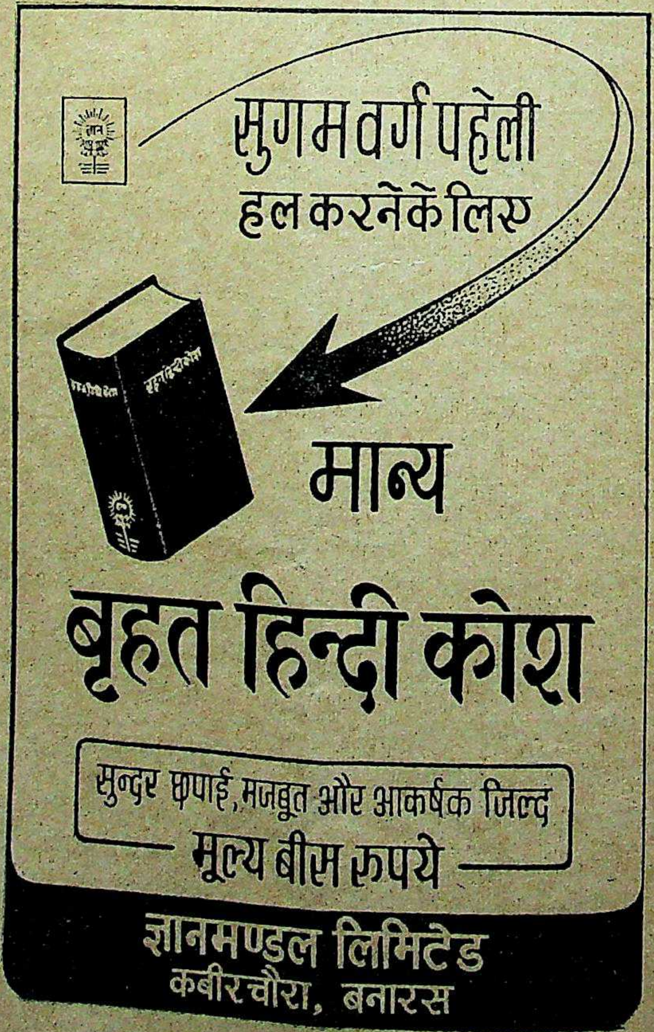

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेता संघ

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह तीसरा लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

जिस पुस्तक-विक्रेता-संघ का हम जिक्र करने जा रहे हैं, वह हिन्दुस्तान में तो मौजूद नहीं है परन्तु अन्य देशों में इसकी स्थापना से पुस्तक-विक्रेताओं को बहुत लाभ हुआ है। इस प्रकार का संघ इंग्लैण्ड में १८९५ में स्थापित किया गया था और तब से वह निरन्तर चलता रहा है। हम यहाँ इसके बारे में साधारण और जरूरी बातें करेंगे। इस लेख में दिये गए विवरण को हर पुस्तक-विक्रेता एवं शॉप-असिस्टेंट के लिए जानना जरूरी है।

पुस्तक-विक्रेता-संघ अन्य संघों की भाँति ही एक संघ है जिसे पुस्तक-विक्रेताओं की 'पार्लमेंट' कहना अनुचित न होगा। इस संघ का प्रकाशकों के संघ से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक जनवादी संघ है, जिसमें सभी सदस्य पुस्तक-विक्रेताओं को अपनी राय देने का मौका मिलता है और यदि वह लाभदायक और व्यावहारिक हो तो उस पर अमल भी किया जाता है।

एक अध्यक्ष होता है, जो कौंसिल का तथा संघ की तमाम कमेटियों का भी अध्यक्ष होता है। कौंसिल के दूसरे सदस्य पुस्तक-विक्रेता-सम्मेलन में चुने जाते हैं जो कि संघ की वार्षिक आम सभा होती है। हर शाखा की नामजदगी के आधार पर यह चुनाव किया जाता है। संघ की कई कमेटियाँ होती हैं और कौंसिल के अधिकतर सदस्य इनमें भाग लेते हैं।

कमेटी में निम्नलिखित चीजें होती हैं—

एमरजेंसी और कार्यकारिणी—कौंसिल के बाद यह सबसे महत्त्वपूर्ण कमेटी है। इसका काम है कि कौंसिल का अधिकांश ब्यौरा यही तय करे और हर काम व मामले को पूरी तरह जाँचने के बाद अन्तिम फैसले के लिए उसे कौंसिल के सामने पेश करे। यह कमेटी कौंसिल के प्रति जिम्मेवार है और अधिकार होने पर भी कौंसिल के अधिकारों को नहीं छीन सकती।

रुपये-पैसे का हिसाब—संघ के रुपये-पैसों का हिसाब यह विभाग करता है।

संयुक्त सलाहकार-समिति—प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता

पं० किशोरीदास वाजपेयी की पुस्तकें

१.	ब्रजभाषा का व्याकरण	३)
२.	राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)	४)
३.	हिन्दी-निरुक्त (भाषा-विज्ञान) (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)	२।)
४.	साहित्य-निर्माण (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)	२।)
५.	राष्ट्रभाषा का इतिहास	३)
६.	अच्छी हिन्दी	२॥)
७.	अच्छी हिन्दी का नमूना	२॥।)
८.	काव्य में रहस्यवाद	।=)
९.	साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण (नई पुस्तक)	२)

मँगाने का पता :

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

दोनों का प्रतिनिधित्व इस समिति में होता है। साथ ही एक लायब्रेरी-समिति भी होती है, जो पुस्तकालयों के लिए लायसेंस आदि के बारे में विचार करती है।

शाखा—शाखा की बैठकों में हरेक सदस्य शिरकत कर सकता है। प्रत्येक शाखा की एक वार्षिक बैठक होती है, जिसमें अध्यक्ष, समिति और कौंसिल के लिए प्रतिनिधि का चुनाव होता है। यह डेलिगेट शाखा और कौंसिल के बीच रिश्ता कायम रखता है और कौंसिल में हुए निर्णयों की रिपोर्ट अपनी शाखा को देता है।

असोसिएट सदस्यता—पुस्तकों के व्यापार में जो सहायक कर्मचारी हैं, वर्ष तक काम कर चुके हैं और जिनकी आयु २१ वर्ष की है इस संघ के सदस्य बन सकते हैं। साथ ही वे लोग भी इसमें शामिल हो सकते हैं जो पुस्तक-विक्रय अपने जीवन का लक्ष्य बनाना चाहते हैं, जिन्होंने छः महीने इस व्यापार में बिताये हैं और जो सोलह वर्ष की उम्र के हैं।

असोसिएट सदस्य संघ की कार्यवाहियों में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं। यदि वे संघ में कार्य करके अपनी रुचि प्रदर्शित करेंगे और उसे चलाएँगे तो जाहिर है संघ पर जितना अधिकार मालिकों का होगा उतना ही उनका भी। आज का सहायक कर्मचारी कल का बुक-शॉप-मैनेजर बन सकता है और बल्कि वह तो और भी बेहतर मैनेजर साबित होगा यदि असोसिएट सदस्यता के लिए वह तन-मन से काम करता है।

पूर्ण सदस्यता—पुस्तक-विक्रेता और अन्य व्यापारी, जिनके यहाँ किताबों के भी विभाग होते हैं, पूर्ण सदस्यता के लिए अर्जी दे सकते हैं। और यदि उनका स्टॉक, व्यवसाय और दुकान की स्थिति नियत स्तरों के अनुकूल हो तो वे पूर्ण सदस्य बनाये जा सकते हैं। ये 'स्तर' कुछ लचकीले हैं और चूँकि लोग उन्हें समझ नहीं पाते इसलिए काफी निराशा भी कुछ लोगों को होती है। जब एक ही शहर में या गली में एक और नई बुक-शॉप प्रतिस्पर्धी के रूप में खोलने की इजाजत दे दी जाती है तो कुछ पुस्तक-विक्रेताओं को उससे निराशा होती है और यह सब इसलिए होता है कि ये पुस्तक-विक्रेता 'सदस्यता' को 'व्यापार-मान्यता' से मिला देते हैं। दर-असल व्यापार को मान्यता देने का काम 'प्रकाशकों के संघ' का है 'पुस्तक-विक्रेता-संघ' का नहीं। ये चीजें बिलकुल अलग हैं। इसीलिए संघ किसी प्रतिस्पर्धी दुकान खोलने से नहीं रोक सकता।

जहाँ तक संघ की सदस्यता के 'स्तरों' का सवाल है 'पुस्तक-विक्रेता संघ' सदस्यता के सिलसिले में सिर्फ बुक-शापों का गुण देख सकता है और जाहिर है कि इस गुण का सम्बन्ध दुकान की स्थिति से है। इसलिए स्टॉक भी मूल्य की दृष्टि से नहीं आँका जाता, बल्कि किसी स्थान-विशेष पर उसका क्या मूल्य है, इस मापदण्ड से वह कूता जाता है।

पुस्तक-विक्रेता (मालिक) और उसके सहायक कर्मचारियों का अनुभव, स्टॉक व व्यवसाय का साधारण स्तर, अच्छी व्या-पार-निर्देशिका पुस्तकों का होना आदि इसमें जरूरी हैं। जब सदस्यता के लिए अर्जी आये तो संघ को चाहिए कि वह उसे सम्बन्धित शाखा को भेज दे और वह शाखा किसी ऐसे पुस्तक-विक्रेता को नियुक्त करे, जो आवेदक के यहाँ जाय और उसकी दुकान की स्थिति, स्टॉक आदि देखे और उससे सवाल पूछे। और यदि उस नियुक्त व्यक्ति द्वारा पेश की गई रिपोर्ट पक्षपातपूर्ण हो तो एक दूसरे व्यक्ति से यह काम कराया जाय। इसमें नितान्त भलमनसाहत और द्यानत-दारी बरती जानी चाहिए और जब उसकी सदस्यता कौंसिल द्वारा स्वीकृत कर ली जाय तो उसे सूचित कर दिया जाय और जब वह चन्दा अदा कर दे तो उसे सारे अधिकार दे दिए जायँ—उदाहरणतया बैठकों में वोट देने का हक, कमेटी में ओहदेदारी का हक आदि। साथ ही उसे 'बुक टोकन' रखने व बेचने का हक तथा 'बुक रेलीज' रखने व बेचने का हक दे दिया जाय।

भूल-सुधार

प्रकाशन समाचार के फ़रवरी अंक में पृष्ठ २४८ पर आगामी पुस्तकों की सूची में सुदर्शन प्रकाशन, आगरा और साहित्य निकेतन, कानपुर की पुस्तकें एक-दूसरे से बदलकर छपी हैं। पाठक कृपया ठीक कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तक-परिचय

रचना प्रकाशन, कानपुर, ने डॉ० प्रेम नारायण शुक्ल के हिन्दी साहित्य में विविध वाद नाम के प्रबन्ध का प्रकाशन किया है। ग्रन्थ में मानव-प्रवृत्तियाँ और उनका कृतित्व, मानव-प्रवृत्तियों के निर्माण की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि, कला और साहित्य का विवेचन, साहित्य की पश्चिमीय और भारतीय व्याख्याएँ, हित के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन, वादों के उदय की कथा और फिर समाजगत वाद, वैयक्तिकता से सम्बन्धित वाद, अध्यात्म से प्रभावित वाद, शैलीगत वाद तथा साहित्य के विविध वादों का पाण्डित्यपूर्ण विश्लेषण किया गया है। इस विवेचन को हिन्दी-काव्य के विस्तृत उद्धरणों से प्रामाणिक बनाया गया है। पुस्तक की छपाई, कागज आदि उच्चकोटि के हैं। रायल साइज में पृष्ठ संख्या ५२६ है, मूल्य ९)।

◈ ◈ ◈

डॉ० सूर्यकान्त द्वारा सम्पादित **प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोष** की द्वितीयावृत्ति का प्रकाशन **कपूर ब्रदर्स लिमिटेड**, नई दिल्ली, द्वारा हुआ है। यह संस्करण विशेषकर विद्यार्थियों के लिए उपयोगिता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, शब्द संख्या ३२,८३५ है। ४"×५३/४" आकारके पृष्ठों की संख्या ११२८ है, जिल्द पक्की है। पिछले पृष्ठों में मुहावरे और लोकोक्तियाँ, कहावतें, तथा विषयानुसार अंग्रेजी-हिन्दी की उपयोगी शब्दावली दे दी गई है। मूल्य ५) है।

◈ ◈ ◈

प्रथम पंचवर्षीय योजना को जन-साधारण के लिए सुबोध बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार के **पब्लिकेशन्स डिवीज़न**, दिल्ली ८, ने **सरल पंचवर्षीय योजना** नाम की एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिसके ७२ पृष्ठों में चित्रों आदि की सहायता से योजना की रूपरेखा स्पष्ट की गई है। मूल्य केवल ॥) है।

◈ ◈ ◈

श्री माया मन्मथनाथ गुप्त द्वारा लिखित **मंझधार** नाम का राजनीतिक उपन्यास **विद्या मन्दिर लि०, नई दिल्ली**, ने प्रकाशित किया है। पिछले चुनावों की पृष्ठभूमि में इस कहानी का ताना-बाना बुना गया है। पृष्ठ संख्या ९६, मूल्य १॥) है।

◈ ◈ ◈

विद्या मन्दिर लि०, नई दिल्ली ने ही **स्त्री का सौदा** नाम से विश्वविख्यात मोपासाँ की आठ सुन्दर कहानियों का संग्रह प्रकाशित किया है। १२६ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य १॥) है।

◈ ◈ ◈

श्री आर० आर० मालपाणी, वजीराबाद, नांदेड़ (दक्षिण) ने हैदराबाद निवासी श्री रामाधार शर्मा 'व्याकुल' की १३ कहानियों का संग्रह **जीवन के कुछ अध्याय** नाम से प्रकाशित किया है। ११० पृष्ठों के इस कहानी-संग्रह का मूल्य १॥) है।

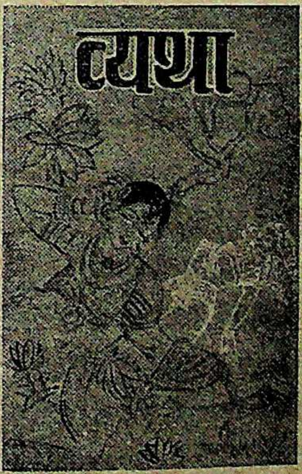

श्री महावीरशरण

अग्रवाल की

प्रसिद्ध कृति

'व्यथा'

[मौलिक उपन्यास]

मूल्य- सवा रुपया मात्र

अन्य रचनाएँ :

- **गुरुदेव :** मूल्य ढाई रुपये
- **नारी तुम केवल श्रद्धा हो :** मूल्य एक रुपये
- **नेत्र सुधार :** मूल्य तीन रुपया

● **होली के अवसर पर ही विक्रेताओं को ४०% कमीशन। एक्सचेंज के लिए कार्यालय को लिखें।**

श्री मंदिर कार्यालय

१५, दरियागंज, देहली—७

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, से श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के सात एकांकियों का संग्रह **पक्का गाना** के नाम से प्रकाशित हुआ है जो 'अश्क' के एकांकियों का चौथा संग्रह है। प्रस्तुत एकांकी रंगमंच और रेडियो पर सफलता से खेले जा चुके हैं। संग्रह में 'अश्क' के साहित्यिक जीवन के आरम्भ के नाटक भी हैं और बाद की कुशल लेखनी की चमत्कारपूर्ण कृतियाँ भी। 'कामदा' नाम का एकांकी सर्वप्रथम इस संग्रह में ही छपा है। एकांकियों की पृष्ठभूमि और वातावरण, पात्रों के चित्रण और बोलचाल की भाषा की सहज आत्मीयता, जो 'अश्क' की विशिष्टता है, इस संग्रह के कई एकांकियों में विशेष रूप से स्पष्ट हुई है।

डाक्टर सत्यप्रकाश द्वारा लिखित **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा** नाम की पुस्तक इसी मास **बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद**, पटना, ने प्रकाशित की है। इसमें पाँच अध्याय हैं; पहले में भारतीय वैज्ञानिक परम्परा का वैदिक कालीन प्राचीनतम रूप दिया गया है, दूसरे में भारत में गणित और ज्योतिष की परम्परा के विभिन्न रूप, तीसरे में कौटिल्य-कालीन वैज्ञानिक परम्परा का निरूपण, चतुर्थ अध्याय में रसायन की परम्परा और पँचम अध्याय में आयुर्वेद की परम्परा, औषधियों और वनस्पतियों का उल्लेख है। सामग्री की प्रामाणिकता और अध्यवसायी लेखक की बहुज्ञता में सन्देह नहीं है। तान्त्रिक प्रयोगों का विस्तार से अंकन ग्रन्थ की वैज्ञानिक वार्ता में खटकता-सा है, लेकिन यह पुस्तक भारत के गौरवमय अतीत की साक्षी स्वरूप दिलचस्पी से पढ़ी जायगी। रायल साइज के २६८ पृष्ठों के अतिरिक्त ३ पृष्ठों में सहायक ग्रन्थों की सूची छापी गई है। मूल्य अजिल्द का ७) और सजिल्द का ८) है। आर्ट पेपर पर ८ चित्र भी अलग से दिये गए हैं।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, ने श्री सुधाकर पाण्डेय द्वारा लिखित **हिन्दी साहित्य और साहित्यकार** का प्रकाशन किया है। पुस्तक २७ खण्डों में बँटी है। ८वीं शताब्दी के सिद्धों और नाथों के साहित्य से लगाकर ११वीं से १४वीं शताब्दी के आदिकाल, १३वीं से १७वीं शताब्दी के संत-काव्य, संत कवि, सूफी-काव्य-परम्परा, कृष्ण-भक्ति का साहित्य, दरबारी कवि, राम-भक्ति का साहित्य, शृंगार काल का परिचय, राष्ट्रीय कवि-परम्परा, नवयुग, हिन्दी-गद्य, भारतेन्दु युग, बीसवीं शताब्दी, हिन्दी काव्य में नयी चेतना, हिन्दी गद्य का स्वर्णकाल तथा आज के प्रमुख साहित्यकार आदि विषयों का ऐतिहासिक विवेचन २२"×३०" के १६ पेजी साइज के २६८ पृष्ठों में किया गया है। छपाई, गेट-अप, कागज बढ़िया है, मूल्य केवल ११)।

हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर ने दो चित्रावलियाँ प्रकाशित की हैं: **नेहरू चित्रावली** और **विनोबा चित्रावली**। 'नेहरू चित्रावली' में श्री जवाहरलाल नेहरू के बाल्यकाल से प्रधान मन्त्री होने तक के ८६ चित्र ६४ पृष्ठों में आर्ट पेपर पर छापे गए हैं और उसके बाद ६६ पृष्ठ तक उनके जीवन-चरित्र की रूपरेखा दी गई है। पुस्तक का मूल्य प्रचारार्थ केवल १) रखा गया है। **विनोबा चित्रावली** में पहले ४० पृष्ठों में आर्ट पेपर पर संत विनोबा की विभिन्न सक्रियताओं की, उनकी विभिन्न मुद्राओं तथा भाव-भंगिमा के ५६ चित्र प्रकाशित किये गए हैं तथा उसके बाद ८८ पृष्ठ तक उनकी जीवनी, उनकी प्रार्थनाओं में प्रयुक्त होने वाले गीत, भूदान यज्ञ का परिचय तथा उनकी उक्तियों व प्रवचनों का संग्रह दिया गया है। मूल्य प्रचारार्थ केवल ॥।) रखा गया है।

धुआँ और लपटें: श्री श्रीचन्द्र अग्निहोत्री द्वारा लिखित इस सामाजिक उपन्यास को **नेशनल पब्लिशिंग हाउस** दिल्ली ने प्रकाशित किया है। श्री यशपाल ने इसके विषय में अपनी सम्मति देते हुए लिखा है कि इसमें "साधनहीन, संस्कारग्रस्त ग्रामीण जीवन के चित्रों से आरम्भ हुई कहानी कानपुर-जैसे औद्योगिक नगर की सामाजिक समस्याओं का परिचय देती जाती है। श्रीचन्द्रजी ने ग्रामीण जीवन के चित्र व्यक्तिगत परिचय के आधार पर जितने गहरे रंगों में दिये हैं उतने ही चोखे चित्र वे कानपुर के मजदूर समाज और परिवार के लिए अबलाश्रम चलाने वाले सज्जनों को भी दे पाए हैं। संक्षेप में **धुआँ और लपटें** में कहानी में घटनाक्रम और भाव के अनुपात को ठीक से निभाया गया है और यह छोटी परन्तु रोचक रचना बन गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...गीत तुम्हारे हैं : 'साहिर' लुधियानवी उर्दू के म.ने-... प्रगतिवादी शायर हैं और उनके ४० रूमानी और राज-... गीतों का यह संग्रह प्रगति प्रकाशन दिल्ली से छपा ... गीतों में जगह-जगह आसान भाषा की प्रवाहशीलता की ... के मनोरम चित्रण प्रस्तुत किये गए हैं, जैसे 'दूर वादी ... दुखिया बादल, झुक के पर्वत को प्यार करते हैं', अथवा ... के ठहरे पानी में तारे आँखें झपकेंगे।' कुछ महज़ ...वादी कविताएँ भी हैं, जिनमें 'नन्हे बच्चों को उनकी ... बख्श दो, मुल्क की रूह को ज़िन्दगी बख्श दो', 'बनामे ... हैं जंगो जदल के मनसूबे' और 'उभर रहे हैं फिज़ाओं ... परचम।' इन कविताओं में संवेदनशील भावाभि-... नहीं मिलती। पिछले पाँच पृष्ठों में उर्दू के कठिन ...ों के अर्थ दिये गए हैं। डिमाई साइज़ के ८० पृष्ठ की, ... जिल्द और दोरंगे कवर की इस किताब का मूल्य ३) है।

◊ ◊ ◊

...दर्शन : सेठ गोविन्ददास द्वारा लिखित ६ दृश्यों की ...नाटिका है, अभिनेय नाटक नहीं। स्त्री-जीवन की ६ ... अवस्थाओं से—बालिका, अज्ञात यौवना, विवाहिता, गर्भिणी, पुत्रवती व वृद्धा नाम के ये दृश्य सम्बन्धित हैं। पुस्तक में १२ भाव-प्रधान चित्र भी हैं। **प्रगति प्रकाशन** दिल्ली से प्रकाशित, क्राउन-साइज़ की इस ८० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २।।) है।

◊ ◊ ◊

गोविन्द रामायण : श्री दशमेश गुरु गोविन्दसिंह केवल सन्त व राजनीतिक नेता ही न थे, उद्भट साहित्यिक भी थे। उन्होंने एक रामायण की रचना की थी जो सत्रहवीं सदी के हिन्दी काव्य का एक उत्कृष्ट नमूना है। सन्त इन्द्रसिंह चक्रवर्ती ने इसकी व्याख्या की है। श्री ओमप्रकाश आनन्द ने ३८ पृष्ठों के प्राक्कथन में गुरू गोविन्द सिंह के काव्य की पृष्ठभूमि और उनके साथ के कवियों पर प्रकाश डाला है। क्राउन साइज़ के २४० पृष्ठों की ४) मूल्य की इस पुस्तक के प्रकाशक हैं **साहित्य-रत्न-माला कार्यालय**, बनारस।

◊ ◊ ◊

हिन्दी-काव्य दर्शन : श्री हीरालाल तिवारी द्वारा लिखित क्राउन साइज़ के ६०० पृष्ठों की ६।) मूल्य की इस पुस्तक का प्रकाशन **साहित्य-रत्नमाला कार्यालय**, बनारस से हुआ।

प्रकाशन-इतिहास का गौरवमय अध्याय

हिन्दी साहित्य का आदिकाल—ले० आचार्य हजारी ...प्रसाद द्विवेदी।

हिन्दी के आदियुग का प्रामाणिक इतिहास। भाषा और साहित्य के आरम्भिक रूप का सुव्यवस्थित अध्ययन। डेढ़ सौ पृष्ठ। सजिल्द ३।); अजिल्द २।।)।

यूरोपीय दर्शन—ले० महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा भारत-प्रसिद्ध विद्वान् शर्माजी की यह पुस्तक सन् १९०५ ई० में प्रकाशित होने के बाद दुर्लभ हो गई थी। भूमिका में १९०५ ई० के बाद से आज तक के पाश्चात्य दर्शन का संक्षिप्त इतिहास भी दिया गया है। डेढ़ सौ पृष्ठ। सजिल्द ३।)।

विश्वधर्म-दर्शन—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। पुस्तक में संसार-भर के मुख्य-मुख्य धर्मों का विस्तृत परिचय। ...अनेक प्रामाणिक धर्म-ग्रन्थों का मन्थन करके निकाला हुआ नवनीत है। पाँच सौ पृष्ठ। सजिल्द; मूल्य १३।।)।

हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन—ले० डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल।

सरस शैलीकार विश्रुत विद्वान् डॉ० अग्रवाल ने महाकवि बाण के "हर्षचरित" के आधार पर तत्कालीन संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, समाज-स्थिति आदि का सचित्र साहित्यिक चित्रण किया है। तीन-सौ पृष्ठ। दो तिरंगे और एक सौ इकरंगे महत्त्वपूर्ण चित्र। आर्ट पेपर पर। सजिल्द ९।।)।

सार्थवाह—ले० संस्कृति-तत्त्ववेत्ता डॉ० मोतीचन्द्र।

प्राचीन काल में विदेशों से व्यापार करने की पथ-पद्धति का सप्रमाण विवरण दिया गया है। यह भारतीय भाषा का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। तीन सौ से अधिक पृष्ठ। तत्कालीन व्यापार-पथ के कई रंगीन मानचित्र। एक सौ अलभ्य चित्र आर्ट पेपर पर। मूल्य सजिल्द ११)

वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—ले० डॉ० सत्यप्रकाश : प्रयाग विश्वविद्यालय।

भारतवर्ष धातु, रसायन, ध्वनि, कृषि, औषधि, ज्योतिष, गणित, शल्य-चिकित्सा आदि तथा अन्य आविष्कार-विज्ञान में अग्रणी रहा है। इस सम्बन्ध की प्रामाणिक वैज्ञानिक परम्परा इस पुस्तक में आपको मिलेगी। बढ़िया आर्टपेपर पर कई चित्र। पक्की जिल्द। मूल्य ८)।

अपने प्रान्त की एकमात्र एजेंसी की नियुक्ति के लिए भी लिखिए। एजेंसी के नियम के लिए लिखापढ़ी कीजिए।

बिहार राष्ट्र-भाषा परिषद्, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। प्रस्तुत ग्रन्थ में भक्ति-काल, रीति-काल और आधुनिक काल के बीस प्रमुख कवियों (विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीराँ, केशव, बिहारी, भूषण, देव, घनानन्द, भारतेन्दु, रत्नाकर, हरिऔध, गुप्त, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी और दिनकर) की गवेषणात्मक समीक्षा की गई है। प्रत्येक काल के कवियों का विवेचन करने से पहले उस काल की पृष्ठभूमि समझाने के उद्देश्य से सिंहावलोकन दिया गया है। प्रत्येक कवि की समीक्षा करते हुए उसका पर्यालोचन और भाषा-शैली का वर्णन विस्तार से हुआ है। श्री रामचन्द्र वर्मा ने भूमिका में इस ग्रन्थ के २१-२२ वर्षों के नये लेखक की पैनी दृष्टि तथा प्रखर बुद्धि की प्रशंसा की है।

◈ ◈ ◈

बुनाई के नमूने : 'आरसी' नाम की स्त्रियोपयोगी मासिक पत्रिका की सम्पादिका श्रीमती लीला प्रकाश बी० ए० द्वारा लिखित इस पुस्तक का यह दूसरा संस्करण है। इसमें स्त्रियों के कपड़ों की बुनाई के पचास नमूने, टीकोजी, बच्चों के कोट, मोजा, टोपी, स्वेटर तथा जरसी आदि के नमूने दिये गए हैं। १३ बुनाई के चित्र आर्ट पेपर पर छापे गए हैं। पृष्ठसंख्या १००, मूल्य ४)।

◈ ◈ ◈

राज्यवर्द्धन : श्री श्यामकृष्ण वर्मा 'राजदाँ' द्वारा लिखित सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध काल से सम्बन्धित नाटक। न्यूज़ प्रिंट पर छपी १८८ पृष्ठ की २।) मूल्य की इस पुस्तक का प्रकाशन वाणी प्रकाशन, प्रयाग ने किया है। कवर पर पुस्तक का नाम न देकर केवल लेखक का नाम ही दिया गया है।

◈ ◈ ◈

संगीत, कल्याण-अंक : संगीत कार्यालय, हाथरस से प्रकाशित होने वाले मासिक-पत्र 'संगीत' का जनवरी १९५४ का अंक (वर्ष २०, अंक १) कल्याण-अंक के नाम से छपा है। कल्याण थाट की विभिन्न राग-रागिनियों का स्वर-लिपि सहित परिचय दिया गया है, गायन तथा वृन्द-वादन के लिए। 'संगीत' का वार्षिक मूल्य ५॥=) है; इस अंक का अलग से मूल्य प्रकाशित नहीं किया गया।

◈ ◈ ◈

अन्धेरा उजाला : ख्वाजा अहमद अब्बास का एक उपन्यास है, जो फिल्म-क्षेत्र के दिल और आँखों को चौंधिया... वाले खोटे, मुलम्मा-चढ़े सम्मोहन का पर्दा फ़ाश करता... सिनेमा के पीछे की दुनिया का भयावह चित्र। क्राउन साइज़ के १४१ पृष्ठ के इस उपन्यास का मूल्य है २।) और प्रका... शक हैं बाम्बे बुक हाउस, पोस्ट बाक्स नं० ३२४३, बम्बई ३। प्रूफ़-सम्बन्धी इतनी अशुद्धियाँ जिस लापरवाही से ... दी गई हैं उससे प्रकाशक के पते में भी भूल न रह गई ... नहीं कहा जा सकता। अनुवाद में भी लापरवाही बरती ... है : उर्दू के ऐसे वाक्य और शब्द : इस लिबास से भी ... कराना माहौल बना रहे', 'गुदाज़', 'तर्रारी', 'नुमायाँ', '...नत', 'तसव्वुर', 'ज़मीर', 'मलबूस' आदि हिन्दी-भाषियों ... समझ न आयेंगे।

◈ ◈ ◈

भारतीय संस्कृति, प्रथम भाग (प्राचीन संस्कृति) ... १८४, डिमाई साइज़, न्यूज़ प्रिंट पर, मोतीलाल मुद्रण... नयागंज, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुआ है और करेंट बुक डिपो, माल रोड, कानपुर द्वारा वितरित हो रहा है। ... २)। भारत की प्राचीन, मध्यकालीन एवं अर्वाचीन संस्कृति के आलोचनात्मक इतिहास का यह प्रथम भाग है। ... अध्यायों में संस्कृति का आधार, प्राचीन संस्कृति, ... घाटी की सभ्यता, वैदिक संस्कृति, वेदोत्तर एवं महा... संस्कृति, जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म, स्मृति, पुराण और ... प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग, विदेशों में भारतीय संस्कृति तथा दक्षिण भारत की संस्कृति-विषयक निबन्धों का संग्रह है।

◈ ◈ ◈

विदेह : बिहार के प्रसिद्ध तरुण कवि पोद्दार राम... 'अरुण' का महाराजा जनक के जीवन से सम्बन्धित ... सर्गों का महाकाव्य है। इसमें महर्षि जनक के सर्वांगीण ... को प्रस्तुत करने का कवि ने प्रयत्न किया है। भाषा, ...

प्रकाशन समाचार

की

बढ़ती हुई माँग के कारण इसके पिछले ... बिलकुल प्राप्य नहीं हैं। कृपया इनके लि... हमें न लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तथा काव्य-कला की दृष्टि से काव्य बहुत सुन्दर बन ...है। इस महाकाव्य से पाठकों को जहाँ राजर्षि जनक के ...सागर में मज्जन करने का सुअवसर मिलेगा वहाँ वे ...ला की सांस्कृतिक विभूति से भी परिचित हो सकेंगे। ...साइज़ के सुन्दर और एण्टिक कागज़ पर मोनो टाइप ...ित ३२० पृष्ठों का यह महाकाव्य आठ रुपये में ...के प्रकाशक किरण-कुञ्ज, समस्तीपुर, दरभंगा (बिहार) ...किया जा सकता है। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ...प्रमुख वितरक है।

◈ ◈ ◈

...की लाश : विष्णु किशोर झा 'बेचन' द्वारा ...उनकी १४ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की ...नियों में इन्सान की ज़िन्दगी की रूप-रेखा प्रस्तुत करने ...प्रयास किया गया है। प्रकाशक के शब्दों में "इन्सान ...बेगुनाह लाश चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि सचमुच ...आज के इन्सान पर हैवान ग़ालिब है।" १०२ पृष्ठ ...यह पुस्तक प्रकाशक भारती प्रकाशन, भगवान पुस्तकालय, ...पुर से केवल १=) में प्राप्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

...ता में श्री प्रवीण विजय जी गणिवार द्वारा लिखित ...श्री महिमा विजय जी महाराज द्वारा सम्पादित और ...शमार द्वारा अनूदित विचार-कणों का संकलन है। ...धर्म पर कुछ विचारकों की सम्मतियाँ भी संग्रहीत कर दी ...हैं। यह पुस्तक महेता कान्तिलाल रायचन्द भाई, मु० ...(अहमदाबाद) से केवल =) के टिकट भेजकर प्राप्त की ...सकी है।

◈ ◈ ◈

...ज्ञान मण्डल लिमिटेड बनारस द्वारा प्रकाशित बृहत् ...कोष सुगम वर्ग पहेली, धर्मयुग, की पहेलियों को हल ...के लिए मान्य हो गया है। इस कोष ने हिन्दी संसार ...शीघ्र ही अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। ...१०" आकार के १६०८ पृष्ठों में १,२५,५१८ शब्दों ...अर्थ दिये गए हैं। पिछले ३६ पृष्ठों में अँग्रेजी-हिन्दी की ...पारिभाषिक शब्दावली दी गई है। कोष का मूल्य २०) है।

कुछ प्रमुख व नवीन प्रकाशन

इतिहास

१. **भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास**—एस० आर० शर्मा एम० ए०। लेखक के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ Crescent in India का हिन्दी रूपान्तर। १०)

२. **आधुनिक यूरोप (१७८९-१९३९)**—डा० बी० एन० मेहता एम० ए०, पी-एच० डी०। इस विषय की सर्वोत्तम पुस्तक। चार पृथक् भागों में भी प्राप्य १४)

३. **भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास**—प्रो. बी. एन. लूनिया। प्राचीन से आधुनिक काल तक देश की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का रोचक व गम्भीर अध्ययन ६।।)

राज्य विज्ञान

१. **राज्य विज्ञान और शासन**—गार्नर की सुप्रसिद्ध पुस्तक Political Science & Govt का रूपान्तर १८)

२. **राज्य विज्ञान के मूल सिद्धान्त**—सूद तथा मेहता। द्वितीय परिवर्तित व संशोधित संस्करण ११)

३. **सरल आधुनिक संविधान**—इंगलैंड, अमेरिका, रूस व स्विट्ज़रलैंड के संविधानों का प्रश्नोत्तरी में अध्ययन २।।)

४. **भारतीय राजनीति व शासन**—देश की राजनैतिक जागृति व स्वतन्त्रता संग्राम का प्रश्नोत्तर रूप में अध्ययन ३।।)

अर्थ व वाणिज्य

१. **हमारी आर्थिक एवं वाणिज्य सम्बन्धी समस्याएँ**—डा. सिंह। चालीस प्रमुख तथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विवेचनात्मक निबन्ध ग्रन्थ। ५।।=)

२. **Essays on Economic & Commercial Problems** उपर्युक्त पुस्तक का अँग्रेजी संस्करण। ५)

३. **Agricultural Economics**—Dr. D. S Chauhan A scholarly exposition. Rs. 12/-

समाज-शास्त्र

१. **समाजशास्त्र**—डा० राजेश्वर अर्गल डी० लिट० ८)

भाषा

१. **निबन्धालोक**—राजेन्द्र शर्मा एम० ए०। विश्वविद्यालय स्तर के कुछ विशिष्ट विषयों पर सारगर्भित निबन्ध ४)

२. **नारायण हिन्दी शब्द सागर**—पचीस हजार से भी अधिक शब्दों के सर्वमान्य शब्दार्थों का सुलभ कोश ५।)

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

प्रकाशक, अस्पताल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर पुस्तकालय की शोभा : हमारे चार नये प्रकाशन

चीनी जनता के बीच

ले० प्रो० जगदीश चन्द्र जैन : मूल्य ४)

लेखक जनवादी चीन के सबसे बड़े पीकिंग विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक रह चुके हैं। पुस्तक में लेखक ने न सिर्फ आँखों देखी घटनाओं और यात्रा का वर्णन किया है, बल्कि चीन के इतिहास की रूपरेखा, चीन की वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अवस्था का तथा चीन की राजनीतिक पार्टियों, नेताओं, किसानों, मजदूरों, स्त्रियों आदि के बारे में लिखा है। पुस्तक में दिये गए बीसों चित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

भारत पर अमरीकी फंदा

ले० श्री नटराजन : मूल्य ३)

कश्मीर और कोरिया की घटनाओं और अमरीकी-पाक फौजी समझौते ने भारत के प्रति अमरीका की नीति के असली स्वरूप को हमारी जनता के सामने ला दिया है। पुस्तक में शुरू से लेकर आज तक की भारत सम्बन्धी अमरीकी नीति को तथ्यों, अकाट्य आँकड़ों और अधिकारपूर्ण विद्वत्ता के साथ पेश किया गया है। यही कारण है कि प्रसिद्ध गांधी वादी विद्वान श्री कुमारप्पा ने पुस्तक को जानकारियों का खजाना कहा है और अनेकों प्रमुख पत्रों ने पुस्तक की निष्पक्षता, रोचकता और लेखन शैली के पारंगत होने की प्रशंसा की है।

रंगरूट (उपन्यास)

ले० बरेन बसु : मूल्य ४)

सभी प्रमुख हिन्दी पत्रों, लेखकों और समालोचकों ने पिछले दस वर्षों में लिखे गए भारतीय उपन्यासों में श्रेष्ठ उपन्यास माना है। अनेक विदेशी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। उपन्यास में वर्णित घटनाओं के बारे में श्री चिन्ता प्रसाद के उपयुक्त स्केचों ने पुस्तक के रूप को उपयोगी और सुन्दर बना दिया है।

स्तालिन : एक जीवनी

ले० राहुल सांकृत्यायन : मूल्य ३)

महान स्तालिन के बारे में इसे हिन्दी में प्रामाणिक, शिक्षाप्रद और मौलिक जीवनी माना जा... अनेक हिन्दी पत्रों में प्रकाशित समालोचनाओं का ... है कि राहुल जी ने इस पुस्तक को लिखकर हिन्दी ... के एक खटकने वाले अभाव को दूर कर दिया है। ... सफाई सुन्दर है। आर्ट-पेपर पर स्तालिन के जीवन ... अनेक चित्र हैं। बड़े आकार के २७२ पृष्ठ की इस ... से पाठकों को दुनिया के एक युग की झाँकी मिल जा...

सूची पत्र के लिए लिखें : पुस्तकालयों को विशेष सुविधा : डाक खर्च अलग

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, बम्बई-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के वयोवृद्ध आचार्य द्वारा

हिन्दी-साहित्य-जगत् का विहंगावलोकन

आचार्य शिवपूजन सहाय

मौनी अमावस, २०१०, को आचार्य शिवपूजन सहाय ने यह लेख पत्र के रूप में "चेतना" (काशी) के सम्मेलन के अवसर पर भेजा था। आचार्य जी ने इसमें महत्त्वपूर्ण समस्याओं की ओर संकेत किया है।

इस समय अस्पताल में रोगशय्या पर हूँ। १९५२ के आरम्भ से ही रोग शय्याग्रस्त होने के कारण साहित्य की गतिविधि से कुछ अपरिचित सा हो गया हूँ। फिर भी अपने विचारों को लिख रहा हूँ। यद्यपि मेरे विचार बहुत अप्रगतिशील और असामयिक होंगे तथापि आप विद्वानों के सामने उन्हें रख देना मैं आवश्यक समझता हूँ— शायद ये कुछ काम के हों, क्योंकि गुणग्राही सज्जन तो तुच्छातितुच्छ में से भी कुछ सार-संग्रह कर ही लेते हैं।

काव्य, नाटक, उपन्यास, समीक्षा, निबन्ध आदि साहित्य के विशुद्ध रचनात्मक अंगों के विकास का प्रयास नहीं या कम हो रहा है, ऐसा अनुभव हो रहा है। मेरी छोटी बुद्धि में इसके कुछ कारण अवश्य हैं, जिन्हें मैं नीचे लिख रहा हूँ। विद्वान् साहित्यिक सज्जन विचारपूर्वक सार-ग्रहण करें और हिन्दी सेवा के निमित्त कृतसंकल्प हों।

(१) त्यागी, तपस्वी साहित्य-सेवियों का अभाव होता जा रहा है। स्वार्थ-साधना की प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। सेवा की शुद्ध भावना का क्रमशः ह्रास हो रहा है। श्रद्धाभक्ति घट रही है। श्रद्धेय और श्रद्धालु की संख्या छीज रही है।

(२) हजारों साहित्यकारों के पास उनकी रचनाएँ पड़ी हुई हैं, जिनमें कई रचनाएँ हिन्दी का गौरव बढ़ाने वाली हैं, उनके लिए अच्छे प्रकाशक नहीं मिल रहे हैं। हिन्दी-संसार की पैमाइश और छानबीन हो; असंख्य उत्तम पुस्तकों की पाण्डुलिपियां ऊपर होंगी।

(३) सुरुचिसम्पन्न और समर्थ प्रकाशकों की संख्या बहुत कम है। स्वार्थी प्रकाशकों ने साहित्यिकों का शोषण पहले भी किया है, आज भी कर रहे हैं। सार्वजनिक प्रकाशन-संस्थाओं में अर्थाभाव के कारण शिथिलता आ गई है। कितने ही लेखक हताश और हतोत्साह होकर स्वयं प्रकाशक बन गए हैं। इससे लेखकों की शक्ति बिखर जाती है।

(४) राजा महाराजा और रईस तो अब रहे नहीं कि साहित्य के पुजारियों को आश्रय मिले। कुछ दिनों में शायद सेठ-साहूकार भी न रहेंगे। तब तो केवल जनता और जनता

[illegible], १९५४

आधुनिक कवि पंत

लेखक

कृष्णकुमार सिन्हा एम० ए०

प्रस्तुत पुस्तक में पन्त पर तेईस आलोचनात्मक निबन्ध हैं जो पन्त-साहित्य के जिज्ञासुओं के लिए अत्यन्त ही उपयोगी हैं। इसके अतिरिक्त इसमें हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रकाशित आधुनिक कवि, भाग २ की कविताओं की विस्तृत व्याख्या की गई है।

मूल्य { सिर्फ आलोचना खण्ड—४)
आलोचना और टीका—४॥)

प्रकाशक

नोवेल्टी एण्ड कम्पनी

चौहट्टा : : पटना—४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सरकार का ही भरोसा रह जायगा। आज भी वही हाल है। जनता की चेतना तो कुछ जाग भी रही है, मगर हिन्दी के लिए अभी जनता की सरकार की चेतना नहीं जाग रही है। कारण सर्वविदित है।

(५) हमारा भारतीय साहित्य गो-माता के दूध-दही-घी और फलों के रस की धार से सींचे हुए मस्तिष्कों की उपज है। हमारे लेखकों और कवियों तथा पत्रकारों को आजकल दालदा-वातापी छल रहा है। चाय और अण्डे की उत्तेजना से निकला हुआ साहित्य क्षणजीवी ही होगा। भूखे और अधपेटे साहित्यकार कहाँ तक खोपड़ी खुरचेंगे?

(६) गुरु-शिष्य-परम्परा का युग लद गया है। अब तो सभी गुरु हैं, चेला कोई नहीं। पोले स्वाभिमान ने परामर्श या इसलाह लेने की प्रथा तोड़ दी है। इसलिए अधकचरी चीजें साहित्य के बाजार में अधिक चालू हो रही हैं। भाषा में तो घोर अराजकता फैल गई है। जो सच्चे पारखी और सुधी-समीक्षक हैं, वे मौन दर्शक मात्र रहने को विवश हैं।

(७) हिन्दी में इस समय भी कई अच्छे कथाकार, निबन्धकार, नाटककार, आलोचक आदि हैं। उन्हें सब तरह से निश्चिन्त करके उनसे हिन्दी के अभावों की पूर्ति कराने वाला कोई नहीं है। जो हैं भी वे हिन्दी की आवश्यकताओं का अनुभव कम करते हैं। अभावग्रस्त साहित्यिक लोग इस घोर महँगी के युग में जो-कुछ कर रहे हैं वही बहुत है। उनकी विषम आर्थिक स्थिति में उनसे विशेष सेवा की आशा कैसे की जाय?

(८) उपन्यास, नाटक, आलोचना, निबन्ध आदि सभी तरह की पुस्तकें पाठकों के लिए चाहिएँ। बालकों और स्त्रियों के लिए खास तौर से लिखे गए उपन्यासों की जरूरत है। ऐसे ही नाटक, निबन्ध, आलोचना आदि भी। दक्षिणी और पहाड़ी लोगों के लिए उनकी रुचि के अनुकूल उपन्यास बहुत कम हैं। हमारे लेखक अहिन्दी-क्षेत्रों और प्रवासी भारतीयों से भरे विदेशों में भ्रमण करके पाठकों की रुचि एवं प्रवृत्ति परखें तथा ललित साहित्य की रचना तदनुकूल करें। जंगल, पहाड़, रेगिस्तान, समुद्र आदि से जिनके जीवन का निकट सम्पर्क है उनके मन के लायक उपन्यास और नाटक भी हिन्दी में चाहिएँ।

(९) जो लेखक परिस्थितिवश प्रकाशक बन गए हैं वे अपनी छोटी पूँजी की रक्षा और वृद्धि में ही व्यस्त रह साहित्य-सेवा से कुछ विमुख हो जाते हैं। समस्त हि[न्दी] संसार में शायद दो-चार ही ईमानदार बुकसेलर हैं जि[न्हें] अपनी पुस्तकें बिक्री के लिए देकर लेखक निश्चिन्त हो स[कता] है। नहीं तो हिन्दी-संसार में ईमानदारी बहुत सस्ती [हो] गई है।

(१०) सब तरह की योजनाएँ बनती हैं, पर साहित्य की समृद्धि के लिए कोई योजना नहीं बनती। अगर कहीं कोई बनती भी है तो अनेक कठिनाइयों के कारण कार्यान्वित न[हीं] हो पाती। सरकारी योजनाओं में हिन्दी का कोई महत्त्व [ही] नहीं। काशी की 'सभा' और प्रयाग के 'सम्मेलन' के [...] जामिया मिलिया कोई विराट् कोष गढ़ रही है। का[शी] नरेश वाला विशाल महाभारत अब अप्राप्य है और [...] का महाभारत छपने वाला है।

(११) असंख्य पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी में हैं सही, [...] अधिकांश मुफ्तखोर हैं। दस-बीस साहित्यिक भी उनके [...] स्वतन्त्र जीवन नहीं बिता सकते। अनेक तो फालतू ही हैं। पत्रकार अधिकतर दुर्दिन झेल रहे हैं। होनहार युवकों [को] भी प्रोत्साहन देने वाले सम्पादक इने-गिने ही हैं। पा[ठकों] की संख्या लेखकों से कम नजर आती है। फिर भी हि[न्दी] लेखक साहस के साथ संघर्ष कर रहे हैं।

किमधिकं विज्ञेषु।

नम्र निवेदन है कि मेरे अनर्गल प्रलाप के लिए [...] क्षमा कीजिएगा। रोगशय्या पर जो सूझा सो लिखवाता [...] गया, फिर भी अभी बहुत-कुछ कहना और लिखवाना [है] परन्तु अनावश्यक विस्तार से आप लोग ऊबेंगे, इ[सलिए] तत्काल जो ध्यान में आया सो विद्वन्मण्डली की सेवा [में] उपस्थित कर दिया। नीर-क्षीर-विवेकी विद्वान् तो तत्त्व [...] ही लेंगे और मेरे दोष दूषणों को दूर करके मुझे क्षमा भी [...] देंगे। अन्त में यही निवेदन है कि हिन्दी के लिए [...] जैसा दुर्दिन कभी नहीं था। हम सब हिन्दी भक्तों को [...] कर ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि साहित्य के अ[...] अंगों की भलीभाँति पुष्टि हो और अहिन्दी-भाषियों की [...] वृत्ति हिन्दी के अनुकूल हो जाय तथा राष्ट्रभाषा के अ[भावों] की पूर्ति बराबर होती रहे। तथास्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

...नरेश पाठक, सह-सम्पादक, 'राष्ट्रवाणी', पटना १, ...ते हैं: "पिछले वर्षों में मैंने तीन उपन्यास, एक गीत-..., एक कविता-संग्रह तथा कई छिटफुट कविताएँ लिखी ... उनके प्रकाशन की बात भी कई प्रकाशकों से तय पा ...थी, परन्तु परिस्थितियों का दासत्व मुझे विवेकशून्य बना ...। फलतः मुझे सारी चीज़ें नष्ट कर देनी पड़ीं। मैंने इन्हें ... डाला। अतएव इन प्रकाशकों को मैं आप की सहायता ...क दुर्घटना की सूचना देना चाहता हूँ।....कितावों का ...निम्नांकित है: (१) **आवारे की डायरी**, उपन्यास। ...) विष कण्ठ, उपन्यास। (३) **तपोपथ**, उपन्यास। ...) विषवेणु, गीत-संग्रह। (५) **पीर**, रुबाइयों का संग्रह ... १०० छिटपुट कविताएँ।"

◈ ◈ ◈

...नारायण 'भाम' (नमक मण्डी, कृष्णा गली नं० १, ...न नं० ७६१-८-७, अमृतसर) लिखते हैं कि: "अपनी ... रचनाओं की ओर प्रकाशकों को आकर्षित कर रहा हूँ। ...पास निम्नलिखित पुस्तकें तैयार हैं; कोई भी प्रकाशक ...व्यवहार कर सकता है।... चारुमती, नाटक, पृष्ठ ७५। ...धार, नाटक, पृष्ठ १२५। मित्र, उपन्यास, पृष्ठ १६०। ...की अँगूठी, उपन्यास, पृष्ठ १२५। किरण, उपन्यास, ... १२०। मँझधार, उपन्यास, पृष्ठ ७५।"

◈ ◈ ◈

श्री धर्मपाल 'हिमांशु' (नीहारिका-निवेश, १३५/६, काली स्थान, पटना ६) लिखते हैं: "सामाजिक पृष्टभूमि पर आधृत एक उपन्यास वह भूल गई थी के लिए प्रकाशकों की अपेक्षा है।"

◈ ◈ ◈

कनखल (उत्तर प्रदेश) से श्री किशोरीदास वाजपेयी लिखते हैं: "मैं अपनी अच्छी हिन्दी पुस्तक सदा के लिए किसी अच्छे प्रकाशक को दे देना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे बस की चीज प्रकाशन नहीं है। जो सज्जन लेना चाहें, पत्र-व्यवहार करें।"

◈ ◈ ◈

बिहार की नई पीढ़ी के प्रख्यात कवि श्री 'सारङ्ग' शास्त्री को निम्नलिखित काव्य-पुस्तकों के प्रकाशनार्थ प्रकाशक की आवश्यकता है: (१) **बिहार के सात साहित्यिकों के संस्मरण**। (२) **शाद्वल** (द्वितीय संस्करण)। (३) **संबल** (४) **संवर्तिका**। ये काव्य शीघ्र छपने की राह में हैं। पत्र-व्यवहार करें:— आचार्य 'सारंग' शास्त्री, एस० पी० एस० सेमिनरी, सोनपुर, सारन (बिहार)।

प्रकाशन समाचार

की

...ने की प्रति मँगवाते समय चार आने के ...कट भेजना न भूलें।

श्री आरसी-साहित्य

नन्ददास (अभिनव काव्य-ग्रन्थ)	२।।)
कलापी (अपूर्व कविता-संग्रह)	२)
चित्रों में लोरियाँ (बाल-साहित्य)	१)
ओनामासी (कविता में वर्णमाला)	।)
कवि आरसी की काव्य साधना	२।।)

विशेष परिचय पत्र माँगने पर मिलेगा। सम्पूर्ण भारत में पुस्तक-विक्रेताओं की आवश्यकता है। भरपूर कमीशन और अनेक अन्य सुविधाएँ मिलेंगी।

तारामण्डल

पोस्ट बा० १०७, पटना—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

—एकांकी नाटिकावली, अभिनवभरत, आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, ऐतिहासिक एकांकी नाटिकाएँ। मूल्य ४)

—व्याख्याता (भाषण कला), आचार्य सीताराम चतुर्वेदी। मूल्य ४)

ऋता पब्लिकेशन्स, लखनऊ

—खादी का परदा, ले० रामकृष्ण; उपन्यास; मूल्य ६)

ओरियंट लाँगमैंस लिमिटेड, नई दिल्ली

—हिन्दी कविता पाठन, ले० रमणीकान्त शरर, एम० ए०, और वृजभूषण शर्मा। मूल्य २॥)

उदय प्रकाशन मन्दिर, बनारस

—माँ, अनु० लक्ष्मीनारायण सरोज। राजनीतिक उपन्यास। मूल्य ४॥)

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस

—सौदा, ले० प्यारेलाल। सामाजिक उपन्यास। मूल्य २॥)

किताब महल, इलाहाबाद

—जलचर पक्षी, ले० जगपति चतुर्वेदी। जलपक्षियों का वर्णन।

—भाषा साहित्य और संस्कृति, ले० डॉ० रामविलास शर्मा; निबन्ध संग्रह।

—सिंदूर बिन्दी, ले० इकबाल बहादुर। कहानी-संग्रह।

गयाप्रसाद एण्ड संस, आगरा

—प्रारम्भिक गतिविज्ञान, ले० डॉ० ब्रजवासी लाल, एम० ए०, पी-एच० डी०, (डाइनामिक्स) मूल्य ५)

—समतल त्रिकोण मिति, ले० डा० एम० रे० डी० एम० सी०, रमाकान्त चतुर्वेदी एम० ए०, हरस्वरूप शर्मा एम० ए०। मूल्य ४)

गोयल ब्रदर्स, दिल्ली

—मायावी मछली, सं० रमेश भाई साहन। बालो... कहानियाँ। पृष्ठ ४८। मूल्य ।≈)

श्री दुर्गा सप्तशती, धार्मिक। मूल्य २)

चौधरी एण्ड संस, बनारस

—चिता की राख, ले० श्री सुशील; उप... मूल्य ३॥)

—विचित्र प्रबन्ध, (मू० रवीन्द्रनाथ ठाकुर) ... कमला राय बी० ए०; मूल्य २॥)

तारा मण्डल, पटना—१

—आँधी के पत्ते, ले० श्री आरसी प्रसाद सिंह; ... संग्रह। ड० क्रा०, पृ० १६८; मूल्य २)

तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ

—श्री हरिवंश पुराण, (भाषा टीका सहित)। ... हरिस्वरूप व पं० गदाधर शर्मा; मूल्य ५०)

—श्री हरिवंश पुराण भाषा, सं० श्री हरि... पं० गदाधर शर्मा। मूल्य २५)

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—घर का वैद्य, ले० अमोलकचन्द्र; वैद्य... मूल्य ६)

—मिडवाईफर, ले० श्रीमती वसन्ती रानी। ... उपयोगी (दाई-गिरी)। मूल्य ३॥)

—सरल भागवत, ले० रघुवीरशरण बंसल; मूल्य ३)

—सरल रामायण, ले० रघुवीर शरण बंसल, मूल्य ३)

नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ

दत्ता, (मू० शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय) अनु० ... एस० वर्मा; उपन्यास; मूल्य २।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—देवदास, (मू० शरत्‌चन्द्र) अनु० जी० एस० वर्मा;
...; मू० २)

...प्रकाशन, प्रयाग

—आग और पानी, ले० श्री तेजबहादुर चौधरी;
...।

...प्रकाशन, लखनऊ

—मरुभूमि, महेशचन्द्र 'सरल'; उपन्यास; मूल्य ३॥)

...प्रकाशन, कानपुर

—हिन्दी काव्य तथा आलोचना पर आंग्ल प्रभाव (...–१९५०), ले० डा० रवीन्द्र सहाय एम० ए० ... डी०; डिमाई; आलोचना; पृष्ठ ५००; मूल्य ८)

...कुटीर, लखनऊ

—प्राणी शास्त्र : सरल अध्ययन, ले० आर० डी० ...; डिमाई; विज्ञान; पृ० ३२०; मूल्य ५)

...ायन, मुंघेर

—आविष्कार और अविष्कारक, ले० वीरेन्द्र नारायण एम-सी०; मूल्य ॥।)

—हस्त-रेखा विज्ञान, ले० रघुनाथ वीरेन्द्र; मूल्य २॥)

...प्रकाशन, देहरादून

—नया स्वर्ग, ले० कमल साहित्यालंकार । राष्ट्रीय ...संग्रह । मूल्य १)

—मीठा ज़हर, ले० कैलाश भारद्वाज; सामाजिक; ...१)

...प्रकाशन, मथुरा

—चेलकश, (मैक्सिम गोर्की), अनु० राजनाथ एम० ...; कहानी संग्रह; मूल्य २॥)

—मालवा, (मैक्सिम गोर्की), अनु० राजनाथ एम० ...; कहानियाँ; मूल्य २॥)

—वैरागी, (शरत्‌चन्द्र), अनु० प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव ..., और दो कहानियाँ; मूल्य २॥)

...फार्मेसी, दिल्ली

—इंजैक्शन तत्त्व प्रदीप, ले० डॉ० गणपतिसिंह वर्मा, ...ों द्वारा चिकित्सा सम्बन्धी; मूल्य ५)

...मल प्रकाशन, दिल्ली

—स्वप्नसिद्धि की खोज में, कन्हैयालाल माणिक ..., १९५४ लाल मुन्शी की आत्मकथा, तीसरा भाग ।

—हमारे त्यौहार, सन्तराम विचित्र ॥)

राष्ट्रधर्म प्रकाशन, लखनऊ छावनी

—अर्थ समीक्षा, सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ; अर्थनीति; सम्बन्धी; पृष्ठ २००; मूल्य ३)

—राजनीति समीक्षा, सं० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ; राजनीति; पृष्ठ २००; मूल्य ३)

राहुल प्रकाशन, मसूरी

—बहुरंगी मधुपुरी, कहानी संग्रह; मूल्य ३)

रीगल बुक डिपो, दिल्ली

—कसौटी पर, ले० डॉ० भगवद्‌शरण उपाध्याय । आलोचनात्मक निबन्ध; मूल्य ३)

—जायसी ग्रन्थावली, मनमोहन गौतम व कुमुद विद्यालंकार; मूल टीका सहित; मूल्य ६)

—तथागत, ले० कुमुद विद्यालंकार; कविता प्रबंध ।

—भाषा विज्ञान समीक्षा, ले० श्री द्वारिकाप्रसाद 'द्वारिकेश'; भाषा विज्ञान; मूल्य ३)

रेलवे टाइम टेबुल आफिस, बनारस

—अखिल भारतीय रेलवे टाइम टेबुल तथा गाइड, मुकुन्द दास प्रभाकर; मूल्य २॥)

वाणी प्रकाशन, प्रयाग,

—वर्षा मङ्गल, ले० श्यामकृष्ण वर्मा राजदां; पृष्ठ ८०; मूल्य १=)

विद्याविभाग, कांकरोली (राजस्थान)

—अष्टछाप वार्ता, सं प्रो० कंठमणि शास्त्री, पु० मु०; पृष्ठ ६७२; डिमाई; मूल्य ३)

—कुंभनदास पद संग्रह, संपादित; मूल्य २॥)

—गोविन्द स्वामी पद-संग्रह, सं० गो० श्री व्रजभूषण लाल; पृष्ठ २१५; डिमाई; मूल्य ३

विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

—देवकी का बेटा, ले० डॉ० रांगेय राघव; मूल्य ३)

—यशोधरा जीत गई, ले० डा० रांगेय राघव; मूल्य ३)

—हिन्दी भाषा का इतिहास, ले० श्री राजनाथ शर्मा; मूल्य २॥)

शारदा मन्दिर, दिल्ली

—जलती चट्टान, ले० गुलशन नंदा; मूल्य ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक

डा० प्रेमनारायण शुक्ल एम० ए०, पी-एच० डी०

डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

विषय सामग्री

*मानव-प्रवृत्तियाँ और उनका कृतित्व

*मानव-प्रवृत्तियों के निर्माण की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि

*कला और साहित्य

*साहित्य की विभिन्न परिभाषाएँ

*हित के विभिन्न रूप

*वादों का उदय

*स्व-जगत् सम्बन्धी (समाजगत) वाद

*स्व-स्वत्व (वैयक्तिकता) से सम्बन्धित वाद

*स्व-पर-भिन्न (अध्यात्म) से प्रभावित वाद

*शैलीगत वाद

*साहित्य में विविधवाद और लोक-कल्याण

पद्मजा प्रकाशन

रामबाग, कानपुर

—मोम के मोती, ले० श्रीमती रजनी
मूल्य ३॥)

श्यामाशंकर प्रकाशन, दरभंगा

—नर्सिंग होम, ले० श्री शंकर मिश्र;
मूल्य २)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—सूरसंगीत (भा० २), सूरदास कृत ६०
टीका सहित स्वरलिपियाँ। मूल्य १॥)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—अंधेरे में उजाला, टालस्टाय; अनु० क्षेमानन्द
सामाजिक समस्याओं पर लिखा गया नाटक; मूल्य १॥)

—चारादाना, ले० श्री परमेश्वरी प्रसाद गुप्त;
को चारा-दाना कैसा देना चाहिए, इस विषय पर
पुस्तक। मूल्य ।)

—नलोदय, कालिदास। अनु० श्री हरदयालु
संस्कृत-काव्य के आधार पर नल-दमयन्ती की
मूल्य ।=)

—साहित्य और जीवन, बनारसीदास चतुर्वेदी;
और साहित्यकारों के आदर्शों और अभ्युत्थान पर
डालने वाला लेख-संग्रह। मूल्य २)

साहित्य निकेतन, कानपुर

—एवरेस्ट विजेता—शेरपा तेनसिंह, ले०
नारायण कपूर; जीवनी और पर्वतारोहण का
सचित्र मूल्य ॥।)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—मुक्ति-मार्ग, मू० हावर्ड फास्ट, अनु०
अब्बासी, ऐतिहासिक उपन्यास; मूल्य ६)

साहित्य संस्थान, उदयपुर, राजस्थान

—ओझा निबन्ध (१, २, ३ भाग), ले०
गौरीशंकर ओझा।

साहित्य सदन, मुंघेर

—प्रातः किरण, ले० महादेव झा 'सुदेव'।
निबन्ध, पु० मु०, मूल्य १)

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

—भारतीय अर्थशास्त्र दिग्दर्शन, ले० श्री
प्रसाद गुप्ता एम० ए०, बी० कॉम; पृष्ठ ३००;

हिमालय हर्बल इंस्टीट्यूट, हरिद्वार

—नीम : बकायन, ले० रामेश वेदी; घरेलू
पृष्ठ १५०; मूल्य २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

...एल० शर्मा व जे० आर० मेहता, आयकर, २००, डिमाई, डी० आर० शर्मा एण्ड सन्ज़, जोधपुर ५)

...सिंह तथा सिंह, हमारी आर्थिक एवं वाणिज्य-सम्बन्धी समस्याएँ, ५५७, डिमाई, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ५।।=)

आलोचना, साहित्य

...नी, नूतन परिचय विवरण, २२४, क्राऊन, रतनलाल मगनलाल शाह, बडियाद २।।)

...नप्रसाद एम० ए०, हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पु० मु०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ५।।)

...कुमार चतुर्वेदी 'राकेश', विनय पत्रिका दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १।।)

...र शर्मा 'कमलेश' एम० ए०, अयोध्या काण्ड, (भूमिका तथा टीका), विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २।।)

...शुक्ल, हिन्दी साहित्य में विविधवाद, ५४२, डिमाई, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर ६)

...भूषण 'सरोज' एम० ए०, भाषा विज्ञान, पु० मु०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २।।)

...भूषण 'सरोज' एम० ए०, साहित्या लोचन, पु० मु०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २।।)

...झा 'सुदेव', पूर्वमेघ, ४०, क्राऊन, साहित्य सदन, सूर्यगढ़ा, मुंघेर ।)

...झा 'सुदेव', कर्मक्षेत्र, ७२, क्राऊन, साहित्य सदन, सूर्यगढ़ा, मुंघेर १)

...विलास शर्मा, डॉ०, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)

...चन्द्र नागर, महादेवी : विचार और व्यक्तित्व, ३५६, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद ३)

...शरण शर्मा, हिन्दी साहि के सितारे, १८०, क्राऊन, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़ २)

...सिंह, मुद्राराक्षस (कथासार), ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

इतिहास

...० मेहता, आधुनिक यूरोप, ६७०, डिमाई, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १४)

...आर० शर्मा व सत्यनारायण दुबे, भारत में मुस्लिम शासन का इतिहास, ७४६, डिमाई, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १०)

उपन्यास

...शुक्ल, राग और त्याग, ३२०, क्राऊन, ओरिएंटल बुक डिपो, दिल्ली ५)

...नाथ अग्रवाल, टार्ज़न और यौवन की खोज, १६४, क्राऊन, श्यामलाल हीरालाल, मथुरा १)

...अहमद अब्बास, आधा इन्सान, १०४, क्राऊन, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद २।)

...शास्त्री, 'आचार्य', श्रेणिक बिम्बसार, ३५८, क्राऊन, रीगल बुक डिपो, दिल्ली ५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वालाप्रसाद 'केशर', कसक, १८४, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, नीचीबाग, बनारस
जैनेन्द्रकुमार, कल्याणी, १४०, क्राऊन, पु० मु०, हिन्दीग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ४,
नरोत्तम नागर, काले बादल, अनु०, २२४, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
पृथ्वीनाथ शास्त्री, सिद्धार्थ, १५२, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव, चन्द्रनाथ, १२८, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
परदेशी, के० बी० लाल, कलंक, १५०, क्राऊन, चन्द्रकान्त प्रकाशन, कलाकार
रघुकुल तिलक, घर और बाहर, अनु० २७२, क्राऊन, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, कानपुर
रमेशचन्द्र झा, मिट्टी बोल उठी, १६०, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, नीचीबाग, बनारस
रीवन्द्रनाथ ठाकुर, घर और बाहर, २७० क्राऊन, पु० मु०, बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता
ललितकुमार सिंह, दाँव पेज, १५०, क्राऊन, बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता
विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, चाँदी का जूता, ८०, क्राऊन, पुस्तक प्रतिष्ठान, पटना
विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, आधी रात, १२८, क्राऊन, पुस्तक प्रतिष्ठान, पटना
श्रीचन्द्र अग्निहोत्री, हवेली की ईंटें, १८०, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली
हजारी प्रसाद द्विवेदी डॉ०, वाणभट्ट की आत्मकथा, ३६४, क्राऊन, पु० मु०, हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ४

कविता

कुमुद विद्यालंकार, तथागत, १५०, डिमाई, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
कुमुद विद्यालंकार, विद्यापति की पदावली, ५००, क्राऊन, रीगल बुक डिपो, दिल्ली
चन्द्रसिंह, लू, (राजस्थानी काव्य), १००, क्राऊन, चाँद जलेरी सी स्कीम, जयपुर
चन्द्रसिंह, बादली, (राजस्थानी काव्य), १००, क्राऊन, चाँद जलेरी सी स्कीम, जयपुर
त्रिलोकीनारायण दीक्षित, भाषा भारती, २३१, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
पृथ्वीनाथ शास्त्री, गीतांजलि, अनु०, २३२, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
मनमोहन गौतम, जायसी ग्रन्थावली, ८००, क्राऊन, रीगल बुक डिपो, दिल्ली

धार्मिक

'दासानुदास', रामचरित मानस तथा रामसरोवर, ६१३, क्राऊन, अशोककुमार, जार्ज टाऊन, इलाहाबाद
भगवानदास गौतम, वाल्मीकि रामायण, १३००, ड० डिमाई, श्यामलाल हजारीलाल, मथुरा
रामजी शरण विन्ध्याचल, श्री कृष्णायन, ८००, डिमाई, वागीश्वरीप्रसाद, हरपुर बाँदा, पो० मेहसी, चंपारण
वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० कल्पवृक्ष, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

नाटक

कृष्णदत्त भारद्वाज, चार अभिनव एकांकी, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर
भोलानाथ शर्मा एम० ए०, भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र, १६०, क्राऊन, साहित्य निकेतन, कानपुर
विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त, अमिट रेखाएँ, ६६, क्राऊन, पुस्तक प्रतिष्ठान, पटना
श्यामकृष्ण वर्मा राजदाँ, राज्यवर्द्धन, २००, क्राऊन, वाणी प्रकाशन, अलोपी बाग, प्रयाग
सीताराम चतुर्वेदी, सिद्धार्थ, १५२, क्राऊन, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी
सीताराम चतुर्वेदी, शबरी, ११६, क्राऊन, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी
सीताराम चतुर्वेदी, अनारकली, १३१, क्राऊन, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्द्र गुड्डू, नीली दाढ़ी, ४८, डिमाई, रीगल बुक डिपो, दिल्ली ।।।)
...श्वरी देवी वर्मा, हवाई परी, ३२, क्राऊन, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ ।=)
...इकेल ओवरमैन, मेजर, सावधान चलो, क्राऊन, गुलाबचन्द कपूर एण्ड सन्स, दिल्ली १)
...लाल बंसल, तीन क्रान्तिकारी शहीद, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
...भाई साहब, सोने का कड़ा, ४८, क्राऊन, गोयल ब्रदर्स, दिल्ली ।=)
...दर्शन, २८, कापी साइज, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ।।।)
...के तारे, २८, कापी साइज, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ।।।)
...सपाटे, २८, कापी साइज, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ।।।)
...मल्होत्रा, सुनो कहानी, १६, कापी साइज, प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून ।।)
...प्रसाद व्यास, आत्म निर्माण, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर १।।)

विविध

...खेती ज्यादा अनाज, २४, डिमाई, मक्तबा जामिआ लिमिटेड, दिल्ली ।।)
...क कारखाने सस्ता माल, १६, डिमाई, मक्तबा जामिआ लि० दिल्ली ।=)
...० एन० चोपड़ा, वीविंग गाइड, २२४, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ३।।)
...० एल० गुप्ता, प्रथम पंचवर्षीय जोजना, ६० क्राऊन, रामलाल एण्ड सन, आगरा ।।=)
...चरण शर्मा, तेजबहादुर उपाध्याय, सामुदायिक संगठन, १६६, क्राऊन, भारत प्रकाशक मन्दिर, अलीगढ़ १।।।)
...नाथ बी० ए०, छिन्न-पत्र, अनु०, २५६, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस ३।।)
...नन्दन प्रसाद, समाज स्वास्थ्य और दुर्घटनाएँ, ११२, क्राऊन, तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद १)
...की मिट्टी बहना रोको, २४, डिमाई, मक्तबा जामिआ लि०, दिल्ली ।।)
...मित्तल, कमला मित्तल, भारतीय कसीदा, ६×११, सुरुचि प्रकाशन, हैदराबाद, १५)
...नाथ शास्त्री, न्याय सिद्धान्त मुक्तावली, (हिन्दी अनु०), ३५८, क्राऊन, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस ५।)
...नाथ शास्त्री, भारतीय दर्शनशास्त्र, २०४, क्राऊन, मोतीलाल बनारसीदास, बनारस २।।)
...नाथ बी० एस०-सी०, रेडियो सर्विसिंग, ५१२, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६)
...बनें हम धनवान, १६, डिमाई, मक्तबा जामिआ लिमिटेड, दिल्ली ।=)
...गुप्त, भारत में मासिक कल्याण और सुरक्षा, ३५२, डिमाई, बरूल ब्रदर्स, देहरादून, ८।।।)
...सड़कें देश का धन, २० डिमाई, मक्तबा जामिआ लिमिटेड, दिल्ली ।।)
...भावे, गाँव सुखी हम सुखी, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...धर द्विवेदी, भारतीय नागरिक शास्त्र १–२ भाग, २२४, क्राउन, स्टुडैंट्स स्टोर्स, जबलपुर २=)
...धर द्विवेदी, भारतीय शासन व्यवस्था, १६७, क्राऊन, स्टुडैंट्स स्टोर्स, जबलपुर १।।=)
...ित, अखिल भारतीय रेलवे टाइम टेबल एण्ड गाइड, रेलवे टाइम टेबुल आफिस, बनारस २।।)
...के दिन आयेंगे, (पंचवर्षीय योजना विषयक) भाग १, १६, डिमाई, मक्तबा जामिआ लिमिटेड, दिल्ली ।=)
" " " भाग २, २८, " " " ।।)
" " " भाग ३, २८, " " " ।।)
...दास डॉ० गांधी, आसन-चिकित्सा, २६५, क्राऊन, जीवन प्रकाशन, वल्लभ विद्यालय, गुजरात ४)
...उपाध्याय, संस्कृत स्वयंशिक्षक, २७२, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद २।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

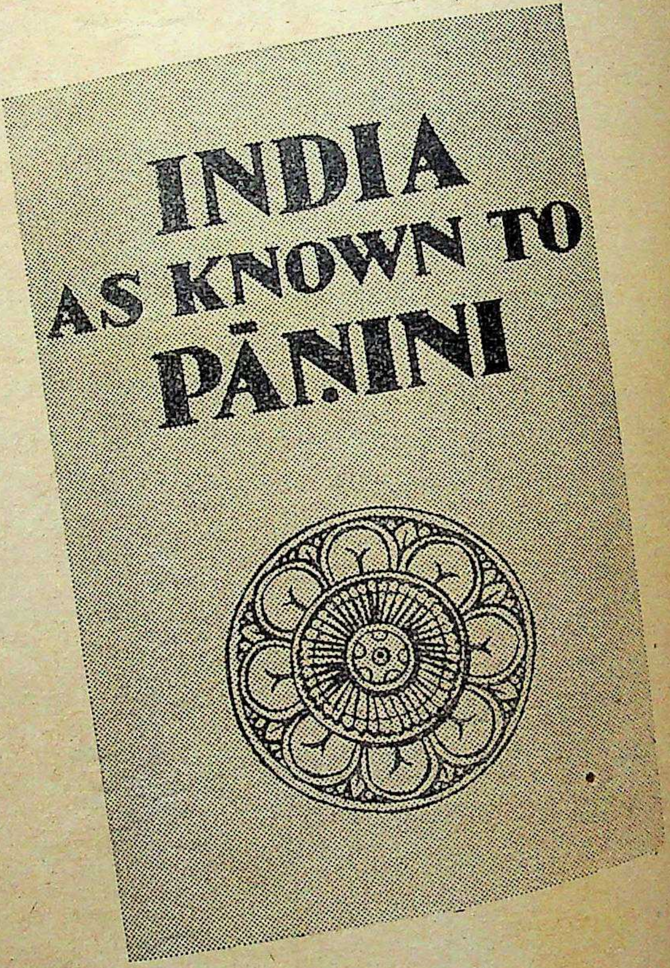

IMPORTANT CONTRIBUTION TO
INDOLOGICAL LITERATURE

INDIA
AS KNOWN TO PANINI

Ancient and dull Sutras of Panini's Ashtadhyayi have been made to yield enormous data of cultural and historical significance.

By

Dr. Vasudev Sharan Aggarwal.

A Publication of Lucknow University.

Royal 4 to, pp. 550/-+XX
Price Rs. 50/-only.

Please write for descriptive catalogue to distributors :

RAJKAMAL PUBLICATIONS LIMITED
1 Faiz Bazar, Delhi
Himalaya House, Hornby Road, Bombay

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा श्रेष्ठ प्रकाशन

…वेषणात्मक • ज्ञानवर्धक • समीक्षात्मक • प्रगतिशील मनोरंजक • साहित्यिक पुस्तकें

…० नगेन्द्र का आलोचना साहित्य

…ति शृङ्गार ४)
…काव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता १०)
…निक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ ३॥)
…चार और विवेचन ४)
…चार और अनुभूति ४)
…ति काव्य की भूमिका पूर्वार्द्ध ५)
…व और उनकी कविता उत्तरार्द्ध ६)
…-चिन्तन ३॥)
…रामशरण गुप्त ५)
…दमयी २)

…चार्य चतुरसेन शास्त्री कृत

…ली की नगरवधू २ भाग १२)
…दी भाषा और साहित्य का इतिहास ७॥)
…के नाम पर २)
…के दस भेद १)
…त में इस्लाम ५)
…ग्नि २)
…लाल की हाय २)
…स्तल २॥)
…त बच्चे १॥)
…ों का ओज १|||)
…सिंह २।)
…सिंह २।)
…कृति २॥)
…राष्ट्र का नवनिर्माण ५)

हमारे लाल दिन ४)
कैदी १)
व्यभिचार ४)
काम-कला के भेद ५)
पांच एकांकी २॥)
अमर अभिलाषा ४)

श्री उदयशंकर भट्ट कृत

यथार्थ और कल्पना २॥)
युगदीप २)
धूमशिखा २॥)
विजयपथ २।)

भगवतीप्रसाद वाजपेयी कृत

चलते-चलते ६)
उतार-चढ़ाव २॥)
खाली बोतल २)
गुप्त धन २)

श्रीमती शचीरानी गुर्टू कृत

साहित्य-दर्शन ८)
साहित्यिकी ५)

श्री रामकृष्ण शुक्ल शिलीमुखी कृत

शिलीमुखी ४)
निबन्ध-प्रबन्ध ४)

डा० देवराज कृत

साहित्य-चिन्ता ५)

हिन्दी ध्वन्यालोक

…त ग्रन्थ भारतीय आलोचना-शास्त्र के मेरुदण्ड—संस्कृत के युग-प्रवर्तक ग्रन्थ—"ध्वन्यालोक" का हिन्दी अनुवाद … हिन्दी में ही नहीं किसी भी भारतीय भाषा में अब तक इसका अनुवाद उपलब्ध नहीं है। मूल्य १०)

फुटकर पुस्तकें

…कौन और कैसे — अम्बेडकर ४)
…ना घर—श्रीमती होमवती २)
…री आशा —सत्यवती मैया १)
…की पहेलियां — " १।)
ऋण परिशोध—सत्यवती मैया ।||)
क्षितिज के पार " १)
अनागत—श्री सर्वदानन्द वर्मा २॥)
चमकते टीले—श्री जयनाथ नलिन १॥)
सभ्यता की देन—लक्ष्मीचन्द्र वाजपेयी १॥)
प्रेम समाधि—श्री यज्ञदत्त शर्मा २॥)
जैसे हमने देखा—क्षेमचन्द्र सुमन १॥)
काश्मीर की लूट—अमरनाथ गुप्त १॥)

गौतम साहित्य निकेतन, नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D—594

हमारे नये प्रकाशन

● **पंजाब की कहानियाँ**—बलवन्तसिंह की पंजाबी जीवन पर लिखी गई सात कहानियाँ और तीन छोटे उपन्यास एक ही संग्रह में। कहानियों की रोचकता पढ़ने पर ही ज्ञात होगी। सजिल्द, मूल्य ३)

● **उजाला**—लेखक—बलवन्तसिंह। प्रसिद्ध उपन्यासकार बलवन्तसिंह का नया और रोमानी उपन्यास। इस पीढ़ी का असफल प्रेम दूसरी पीढ़ी में सफल हुआ, यही इस उपन्यास की दिलचस्प कहानी है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥)

● **शैतान**—कैप्टेन शफीकुर्रहमान की एक ऐसे इन्सान की कहानियाँ जो शैतान हैं फिर भी पाठकों को प्यारा है। पक्की जिल्द और मूल्य १।।।)

● **महापुरुषों की प्रेम कथाएँ**—लेखक-इलाचन्द्र जोशी। प्रेम ही तो जीवन की अमरता है। प्रेम को महापुरुषों के जीवन में क्या स्थान प्राप्त है यह जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। बर्नार्ड शा, एनीबीसेन्ट, आम्बपाली, चंडीदास, शरत्-चन्द्र और ऐसे अनेक महान् व्यक्तियों के जीवन की प्रेम कथाएँ जो अब तक गुप्त रखी गई थीं। सजिल्द, मूल्य २॥)

● **ससुराल**—शौकत थानवी का नया और हास्यरस का प्रसिद्ध उपन्यास। पक्की जिल्द, मूल्य १।।।)

● **हमारा गांधी वापस करो**—प्रसिद्ध कथाकार ओंकार शरद की वे कहानियाँ जो गांधीजी के उसूलों पर लिखी गई हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १)

● **नारी का रूप**—अठारहवीं शताब्दी के रंगीन पेरिस की रंगीन कहानी। सजिल्द, मूल्य २॥)

लहर प्रकाशन, १ मिण्टो रोड, इलाहाबाद—१

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस दरियागंज दिल्ली से मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

[प्रका]शन नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक [बिक्रे]ताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

भारत की विविध भाषाओं के साहित्यिक विकास की रूपरेखा

भारतीय साहित्य परिचय

तेलुगु और उसका साहित्य

हनुमच्छास्त्री 'अयाचित'

सम्पादक : क्षेमचन्द्र 'सुमन'

इस पुस्तकमाला में
अब तक निम्न पुस्तकें
तैयार हो चुकी हैं

- उर्दू और उसका साहित्य
- तमिल और उसका साहित्य
- मालवी और उसका साहित्य
- तेलुगु और उसका साहित्य

अन्य भाषाओं की पुस्तकें शीघ्र ही तैयार हो रही हैं

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं का बिहार के शिक्षा-विभागीय अधिकारियों से

निवेदन

(यह निवेदन उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे हिन्दी की सत्रह प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं ने, जिनके नाम नीचे प्रकाशित किये जा रहे हैं, श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस०, मन्त्री, शिक्षा विभाग, बिहार-राज्य, के पास भेजा है । इस सम्बन्ध में सम्पादकीय टिप्पणी भी पढ़ें ।)

बिहार के शिक्षा-विभाग की हिन्दी प्रचार एवं प्रसार की योजना की सराहना करते हुए हम प्रकाशन विभागीय अधिकारियों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि इस वर्ष के लाखों रुपये के अनुदान में से हमारे प्रकाशन अधिकांश एकाधिकारी पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा नहीं खरीदे गए क्योंकि (१) हम उतना कमीशन देने में असमर्थ थे जिसकी ये पुस्तक-विक्रेता माँग करते थे और (२) हम पुस्तकें उधार पर देने के लिए तैयार न थे ।

हम अनुभव करते हैं कि पुस्तकालयों के लिए एकाधिकारी पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा पुस्तकें खरीदने का यह ढंग अनुपयोगी एवं अव्यावहारिक है क्योंकि पुस्तक-विक्रेता केवल उसी पुस्तक को खरीदेगा जिस पर उसे अधिक कमीशन मिले और पैसे भी न लगाने पड़ें । इस प्रकार मूल उद्देश्य की पूर्ति असंभव हो जाती है ।

इस प्रकार अच्छी पुस्तकें पुस्तकालयों में नहीं पहुँच पाती हैं और न हिन्दी में सत्साहित्य के प्रकाशकों को प्रोत्साहन ही मिलता है ।

बिहार के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वे पुनर्विचार कर इस ढंग को बदलें ताकि हिन्दी की अच्छी पुस्तकों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो ।

विनीत

राजबली पाण्डेय,
प्रधान मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

रामप्रताप त्रिपाठी,
सहायक मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

नाथूराम प्रेमी
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

मार्तण्ड उपाध्याय,
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।

देवनारायण द्विवेदी,
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, काशी ।

वाचस्पति पाठक,
भारती भण्डार, प्रयाग ।

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी,
साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद ।

बिहारीलाल भार्गव,
सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद ।

रामलाल पुरी,
आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ।

कैलाशनाथ भार्गव,
नन्दकिशोर ब्रदर्स, बनारस ।

उपेन्द्रनाथ अश्क,
नीलाभ प्रकाशन, प्रयाग ।

ज्ञानेश्वरसिंह,
जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता ।

रामचंद्र टंडन,
विवेक प्रकाशन, इलाहाबाद ।

त्रिलोकीनाथ मीतल,
अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

ओंप्रकाश,
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

प्रकाशवती पाल,
विप्लव कार्यालय, लखनऊ ।

सत्यदेव वर्मा,
मयूर प्रकाशन, झाँसी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :

: अंक ८ :

सम्पादक : श्रीं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

यह संवाद हिन्दी प्रकाशन जगत् में हर्ष के साथ सुना जायगा कि १ और २ मई १९५४, शनिवार, और रविवार को प्रस्तावित अखिल भारतीय प्रकाशक संघ के संगठन का सूत्रपात करने के लिए हिन्दी के कुछ प्रमुख प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं का एक प्रारम्भिक सम्मेलन दिल्ली में होने जा रहा है। इस सम्मेलन का संयोजन भारती भण्डार, प्रयाग, के व्यवस्थापनाध्यक्ष श्री वाचस्पति पाठक कर रहे हैं, और निमन्त्रण-पत्र पर सस्ता साहित्य मण्डल के श्री मार्तण्ड उपाध्याय, हिन्दी भवन के श्री धर्मचन्द नारंग, आत्माराम एण्ड सन्स के श्री रामलाल पुरी, राजपाल एण्ड सन्स के श्री विश्वनाथ, इण्डियन पब्लिशिंग हाउस के श्री कन्हैयालाल मलिक और हमारे हस्ताक्षर हैं। इससे सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की सफलता में हमें पूर्ण विश्वास बँधता है।

प्रकाशन समाचार के पहले अंक से ही एक सुदृढ़ संघ की आवश्यकता की ओर हम प्रकाशकों का ध्यान खींच रहे हैं। प्रायः सभी प्रमुख प्रकाशकों और सार्वजनिक संस्थाओं के अधिकारियों ने इस प्रश्न पर अपनी लिखित सम्मतियाँ भेजी थीं जिन्हें इस पत्र के विगत अंकों में प्रकाशित किया जा रहा है। संघ के स्थापन की आवश्यकता पर सभी सहमत हैं। हिन्दी का उत्तरदायित्व दिनों-दिन बढ़ रहा है। इस उत्तरदायित्व को समुचित ढंग से निबाहने के लिए हम प्रकाशकों को तैयार होना है, और इस तैयारी का पहला कदम प्रकाशकों के हितों का संरक्षण और संवर्द्धन करने वाले एक ऐसे अखिल भारतीय प्रकाशक संघ की स्थापना है जिसे देश की प्रकाशन-संस्थाओं की निष्ठा पूर्ण मात्रा में प्राप्त हो। संघ को उपयोगी और शक्तिशाली बनाने के लिए हम प्रकाशकों को अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का थोड़ा-बहुत त्याग भी करना पड़ेगा और इस ओर प्रकाशक अपनी जिम्मेवारी समझते हैं, इस पत्र में छपी प्रकाशकीय सम्मतियों से यह स्पष्ट हो चुका है।

संघ का यह प्रारम्भिक सम्मेलन अपने उद्देश्यों का स्पष्टीकरण तथा विधान का निर्माण करेगा; अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जिस कार्य-विधि को अपनाने की आवश्यकता है और जिन साधनों का प्रयोग होगा, उन्हें निर्धारित करेगा। यह सम्मेलन अपने पदाधिकारियों का निर्वाचन करेगा और प्रवेश तथा मासिक शुल्क आदि नियत करेगा। जो रूपरेखा अन्ततः निश्चित होगी, उसके अनुसार संघ के सदस्य बनने का हिन्दी के उन सभी प्रकाशकों को निमन्त्रण दिया जायगा जो संघीय नियमों का पालन करने के लिए तत्पर हों। संघ को न केवल प्रकाशकीय हितों के लिए, न केवल प्रकाशकीय अधिकारों की रक्षा के लिए सदा सतर्क रहना है परन्तु प्रकाशकीय मान-मर्यादा की रक्षा के लिए अपने कर्तव्यों के पालन में भी सजग रहना है, इसलिए संघ के सदस्य बनने को इच्छुक प्रत्येक प्रकाशक की प्रार्थना पर संघ की एक समिति ध्यानपूर्वक विचार किया करेगी।

आशा है कि जिन प्रकाशकों को सम्मेलन में आने का निमन्त्रण मिला है, वे समय निकालकर और सब प्रकार की बाधाओं को सहकर भी इस अवसर पर अवश्य पधारेंगे क्योंकि वे एक ऐसे संगठन की नींव डालने को इकट्ठे हो रहे हैं जिस पर हिन्दी के प्रकाशन-जगत् का भव्य प्रासाद खड़ा किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा।

प्रकाशन समाचार के गत अंक में हमने बिहार-राज्य के शिक्षा-विभाग के अधिकारियों का ध्यान सरकारी अनुदान से सम्बन्धित पुस्तकों की खरीद व बिक्री की महान् दुर्व्यवस्था की ओर आकृष्ट किया था। मानो हमारे विचारों के समर्थन में ही देश-भर की पन्द्रह सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन-संस्थाओं ने बिहार के शिक्षा-विभाग के मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई० सी० एस० के पास इस दुर्व्यवस्था के विरुद्ध एक विरोध-पत्र भेजा है। इस पत्र की प्रतिलिपि इस अंक के दूसरे कवर पर प्रकाशित की जा रही है।

आशा है कि हिन्दी के इन प्रमुख प्रकाशकों की सम्मिलित प्रार्थना पर ध्यान दिया जायगा और अगले वर्ष से पुस्तकों की खरीद का कोई ऐसा ढंग निर्धारित किया जायगा कि अच्छे साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहन मिले। हमारा सुझाव है कि प्रतिवर्ष नये प्रकाशनों को राज्य की सरकार स्वयं खरीदा करे। पुराने प्रकाशनों को सब पुस्तकालय बिहार के सभी पुस्तक-विक्रेताओं से स्वयं खरीद सकें, चाहे अनुदान का नगद रुपया देकर अथवा कूपन देकर, जिसे बाद में भुनवा लिया जाय। इन सुझावों पर विस्तार से विचार करके कोई ऐसा तरीका अवश्य ही अपनाया जा सकता है कि सत्साहित्य का प्रचार हो और अनुदान का रुपया सार्थक सिद्ध हो।

अपने परिपत्र नं० ए (२) | ६४८ | १५-१०२० | १९५३, दिनांक १७ फरवरी १९५४ के अनुसार उत्तर प्रदेश के शिक्षा-विभाग के अण्डर सेक्रेटरी श्री बी० एस० सिंह ने राज्य के ६१ सार्वजनिक पुस्तकालयों को १००) से लेकर ७५०) तक का अनुदान पुस्तकों की खरीद के लिए दिया। इस प्रकार का अनुदान नये प्रकाशनों की खरीद के लिए प्रतिवर्ष दिया जाता रहा है और पुस्तकालय अपनी मांग और आवश्यकताओं के अनुसार पुस्तकें खरीदते रहे हैं।

इस बार शिक्षा-विभाग ने अनुदान की कुल रकम, जो इक्कीस हजार रुपये की थी, एक ही प्रकाशन संस्था को देकर अनुदान पाने वाले पुस्तकालयों को आज्ञा दी कि केवल उसी प्रकाशन-संस्था की सूची के प्रकाशनों को खरीदा जाय। इस प्रकार के आदेश से पुस्तकों की खरीद के सरकारी अ[illegible] उपयोगिता ही समाप्तप्राय हो जाती थी, क्योंकि एक सी[illegible] में से एक विशिष्ट प्रकृति की ही पुस्तकें खरीदने की [illegible] पुस्तकालयों पर लाद दी गई। जैसा कि स्वाभाविक था, [illegible] अनुचित आदेश का पुस्तकालयों ने स्पष्ट शब्दों में [illegible] किया। कुछ समाचार पत्रों और सार्वजनिक कार्य[illegible] ने पुस्तकालयों के इस विरोध का समर्थन किया। परि[illegible] स्वरूप शिक्षा-विभाग को अपने आदेश में मौलिक [illegible] करने पर मजबूर होना पड़ा। परिपत्रांक ए (२) | १९[illegible] १५-१०२० | १९५३, दिनांक १७ मार्च १९५४ के अ[illegible] पुस्तकालयों को यह आज्ञा दे दी गई कि यदि उनके पा[illegible] प्रकाशन संस्था की पुस्तकें पहले ही मौजूद हों, तो वे [illegible] प्रकाशकों की पुस्तकें भी इस संस्था से खरीद सकते हैं।

यह काण्ड तो इस प्रकार निपट गया, लेकिन यहां [illegible] एक प्रश्न उठते हैं। किसी भी एक संस्था को वितर[illegible] एकाधिकार किस आधार पर दिया जाता है? किसी भी [illegible] की सरकार अपनी धारा-सभा की किस नीति के अनुसार [illegible] विशिष्ट मत की पोषक पुस्तकें खरीदने के लिए सार्व[illegible] धन का व्यय करती है? इस प्रकार सार्वजनिक धन के [illegible] के लिए क्या अन्य प्रकाशकों अथवा पुस्तक विक्रेताओं [illegible] सहायता लेना और विश्वास पाना अधिक उचित नहीं [illegible]

सभी प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं का हित [illegible] प्रश्नों के उचित समाधान में है। हमें आशा है कि प्रका[illegible] संघ का प्रारम्भिक सम्मेलन इन प्रश्नों से सम्बन्धित [illegible] सिद्धान्तों पर प्रकाशकों के व्यापक हितों की दृष्टि से वि[illegible] करेगा और कोई उचित समाधान ढूँढ निकालेगा।

प्रकाशन समाचार

की

पिछली प्रतियाँ अप्राप्य हैं कृपया उनके लिए हमें न लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...श-विदेश से

...र्च १९५४ से ६ मार्च १९५४ तक नागरी प्रचा-...सभा, काशी, का हीरक-जयन्ती समारोह मनाया ...उद्घाटन-भाषण राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने दिया। ...प्रमुखतम साहित्यिकों और राजनीतिज्ञों ने इस समारोह ...लिया। समारोह के चार दिनों में विभिन्न सांस्कृतिक ...न हुए।

...आज से साठ वर्ष पूर्व सभा की संस्थापना हुई थी। संस्था-...में से स्व० बाबू श्यामसुन्दरदास, स्व० पं० रामनारा-...मिश्र तथा ठाकुर शिवकुमारसिंह मुख्य थे। मुख्य उद्देश्य ...को मान्यता दिलाने का था जो आज राजभाषा के रूप ...ष्ठित है। सभा ने हिन्दी-प्रकाशन-जगत् की हिन्दी ...त्य का इतिहास (पं० रामचन्द्र शुक्ल), बीसल देव ..., पृथ्वीराज रासो, ढोला मारू का दूहा-जैसे ऐतिहासिक ...थों, तुलसी, सूर, जायसी, भूषण, देव तथा भारतेन्दु-...न्द्र कवियों की कृतियों के प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत ...के अभूतपूर्व सेवा की है।

...देश की अधिकांश हिन्दी-प्रचारक संस्थाएँ सभा द्वारा ...स्थापित अथवा प्रेरित हैं।

◈ ◈

...प्रदेश की सरकार ने हिन्दी-समिति की मन्त्रणा पर ...को के निम्नलिखित लेखकों को १७,३००) के पुरस्कारों ...वितरण किया है :

डॉ० सम्पूर्णानन्द पृथ्वी से सप्तर्षि मण्डल १०००)

डॉ० शिवदयालु गुप्त नेत्र-रोग विज्ञान १०००)

श्री केदारनाथ गुप्त मुद्राशास्त्र और बैंकशास्त्र, व्या-...सायिक संगठन, सार्वजनिक अर्थशास्त्र और आर्थिक ...निर्माण ७००)

प्रो० महेशचन्द्र प्रो० विश्वम्भरनाथ अवस्थी, भारत में औद्योगिक संगठन ५००)

श्री शंकरसहाय सक्सेना, श्री प्रेमनारायण माथुर भारतीय अर्थशास्त्र की रूप रेखा ८००)

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' रश्मिरथी ८००)

श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' बहती गंगा ५००)

श्रीमती हीरादेवी चतुर्वेदी मधुमास ४००)

श्री मदनमोहन सिंहल कौन बनोगे, बड़ों के बचपन ४००)

श्री शिवचन्द्र नागर उर्मि ५००)

श्री अत्रिदेव क्लिनिकल मेडिसिन ५००)

श्री सुधाकर पांडेय 'सदा सुहागिन रूठ गई' प्रेरणा के प्रतीक ५००)

सुश्री शान्ति सिंहल अलका ५००)

श्री गोकुलचन्द्र शर्मा धरती के ध्रुवतारे ५००)

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी प्रतिष्ठान ५००)

डॉ० राजेश्वरप्रसाद अर्गल समाज शास्त्र ८००)

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास ५००)

शीघ्र प्रकाशित होने वाला है

प्राकृतिक नियमों पर

नेत्रों के समस्त रोगों से निरोग करने वाला

संसार का प्रसिद्ध ग्रन्थ

[सचित्र]

मूल्य पाँच रुपया **नेत्र सुरक्षा** मूल्य पाँच रुपया

लेखक

डॉ० डब्लू० एच० बेट्स एम० डी० (अमरीका)

अनुवाद निर्देशक

डॉ० आर० एस० अग्रवाल

अनुवादक

डा० एम० एस० अग्रवाल

इस पुस्तक की माँग अधिक होने के कारण अपना आर्डर शीघ्र बुक करा लें।

श्री मन्दिर कार्यालय,

१५, दरियागंज, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य विश्वेश्वर तर्कभाषा [illegible])

श्री विद्यानिवास मिश्र छितवन की छाँह ५००)

श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित महाकवि भूषण ५००)

श्री महेन्द्रनाथ पांडे रोगी शुश्रूषा ४००)

श्री मन्मथराय हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव ८००)

श्री रमापति शुक्ल शैशव ३००)

श्रीमती विद्यावती मिश्र प्रतीक्षा ४००)

डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा सौन्दर्य-शास्त्र ८००)

डॉ० दयास्वरूप औद्योगिक ईंधन ८००)

श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अरे यायावर, रहेगा याद ५००)

डॉ० अयोध्यानाथ पांडे ज्वर चिकित्सा ५००)

श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र वितस्ता की लहरें ८००)

◈ ◈ ◈

विंध्य प्रदेश की सरकार ने इस वर्ष ८४००) के विभिन्न पुरस्कारों की घोषणा की है। पुरस्कार-विजेता साहित्यिकों के नाम इस प्रकार हैं :—

केशव (काव्य)

श्री ब्रजेश 'रस रसांग निर्णय' ५००)

श्री शेषमणि शर्मा "जग और जीवन" २००)

श्री पुरुषोत्तमदास कठल 'मील के पत्थर' १००)

रघुराज (समीक्षात्मक)

श्री कृष्णवंशसिंह बाघेल 'तुलसी पंचपत्र' ५००)

श्री रामाश्रय पयासी 'काव्यानुशीलन' २००)

श्री कृष्णचन्द्र वर्मा 'आचार्य केशवदास' १००)

ईसुरी (लोक-साहित्य)

श्री शिवसहाय चतुर्वेदी 'गौने की विदा' ५००)

श्री उमाशंकर शुक्ल 'बुन्देलखंड के लोकगीत' २००)

श्री श्रीचन्द जैन 'गुइयां परे हैं लाल' १००)

ठाकुर (ललित कला)

श्री बालचन्द जैन विन्ध्य-प्रदेश के प्राचीन कलाकेन्द्र और कृतियाँ २००)

श्री इकबाल बहादुर देवसरे भारतीय चित्रकला १००)

श्री जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव भू सैद्धान्तिकी १००)

बाल-साहित्य पुरस्कार

श्री विश्वनाथ अखिल भारतीय 'बाल मनोविज्ञान' ५००)

डॉ० बी० एल० चोपरा 'बाल विकास'

पद्माकर पुरस्कार

श्री मदनमोहन मिश्र 'विन्ध्यप्रदेश की अमर ...'

श्री रामशरणसिंह 'गौरव गीत'

श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव 'विन्ध्य वैभव'

व्यास पुरस्कार

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी 'रेखाचित्र'

श्री राजीवलोचन अग्निहोत्री 'शकारि विक्र...'

श्री रामसागर शास्त्री 'विन्ध्यदर्शन'

छत्रसाल पुरस्कार

श्री वासुदेव गोस्वामी 'विद्रोही वानपुर'

श्री बालचन्द जैन 'कलिंग चक्रवर्ती'

श्री रामाधनप्रसाद पाण्डेय 'हमारा संविधान'

रसनिधि पुरस्कार

श्री एस० के० देवसरे 'बेसिक कला और कौशल'

श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव 'शिशु बोध'

श्री कृष्णमुरारी सक्सेना 'भारत दर्शन'

◈ ◈ ◈

किताब-घर (सोजती द्वार के बाहर, जोधपुर) के व्यवस्थापकों ने यातायात के मन्त्री श्री लालबहादुर ... का ध्यान अपने २३ मार्च १९५४ के पत्र द्वारा ... आकृष्ट किया है कि क्योंकि प्रतिवर्ष जून व जुलाई ... में पाठ्य-पुस्तकों की विशेष बिक्री गर्मियों में छुट्टियों के ... स्कूल व कालेजों के खुलने पर होती है, इन महीनों में ... गाड़ी द्वारा किताबों के पार्सलों की बुकिङ्ग खुली ... चाहिए ताकि विद्यार्थियों को समय पर पुस्तकें पहुँच ... इन दो महीनों में किताबों की बुकिङ्ग को 'प्रायोरिटी' ... उचित है।

◈ ◈ ◈

यदि आप अब तक
प्रकाशन समाचार
के ग्राहक नहीं बने हैं तो शीघ्र ही
२॥) वार्षिक मूल्य भेजकर अपनी प्रति
सुरक्षित कर लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सतीशचन्द्र

मान्य लेखक 'युगान्तर' (झरिया) के सम्पादक हैं। उन्होंने पुस्तकों की बिक्री को बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण उपाय यहाँ बताया है।

...के पाठकों की ओर से हिन्दी-साहित्य के प्रति ...हैं कि हिन्दी में उच्चकोटि के प्रकाशन नहीं होते, ...विषयों पर प्रामाणिक पुस्तकें नहीं निकलतीं, अंग्रेज़ी ...के मानदण्ड के दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र नहीं ...होते, आदि-आदि। हिन्दी के लेखकों और पत्रकारों ...उनकी शिकायतें हैं। दूसरी ओर हिन्दी के प्रकाशक, ...और पत्रकारों की शिकायतें हिन्दी पाठकों के साथ हैं ...अच्छे साहित्य की कद्र नहीं करते, पुस्तकें और पत्रिकाएँ ...नहीं पढ़ते, उच्च-स्तर के साहित्य को प्रोत्साहन ...ते।

...शिकायतें दोनों पक्षों की ठीक हैं। आज हिन्दी के कथा ...न्यास साहित्य में गतिरोध है, वैज्ञानिक और औद्यो-...ग्रन्थों का अभाव है। मुश्किल से आधे दर्जन मासिक ...साप्ताहिक किसी तरह घर की पूँजी गँवाकर हिन्दी की ...सेवा निभा रहे हैं। मगर हिन्दी के इन अभावों का ...यह नहीं है कि हिन्दी के प्रकाशकों, लेखकों और पत्र-...के हृदय में लगन नहीं, विद्वत्ता नहीं है, सामर्थ्य नहीं ...कितने ही राष्ट्रभाषा प्रेमी पूँजीपति प्रकाशन के क्षेत्र में ...उच्चकोटि की पुस्तकें विभिन्न विषयों पर प्रकाशित कीं ...सारी-की-सारी पुस्तकें उनकी अलमारियों में ही सड़ती ...और वे पूँजी गँवाकर चुप रह गए। कुछ ने पाठ्य ...प्रकाशित कर किसी तरह अपना अस्तित्व कायम रखा या ...कमाये। पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलीं, (निकलती ...हैं) उनके मानदण्ड की सराहना जी खोलकर की गई, ...में उनमें से भी अधिकांश को असमय ही काल-...होना पड़ा। दिल्ली के साप्ताहिक नवयुग, मासिक ...बनारस के साप्ताहिक समाज, मासिक युगधारा, जनवाणी, प्रयाग से प्रकाशित साप्ताहिक संगम, पटना से प्रकाशित हिमालय आदि एक-दो नहीं दर्जनों उच्चस्तरीय पत्रों के प्रकाशन तो अभी हाल में हुए थे और अन्ततः उन्हें बन्द होना पड़ा। ऐसी दशा में स्वभावतः उच्चस्तरीय पुस्तकों और पत्रों के प्रकाशन में लोगों की दिलचस्पी नहीं रही जिसके फलस्वरूप पाठकों की शिकायतें हैं। अगर उन पुस्तकों और पत्रिकाओं का यथेष्ट आदर हुआ होता तो आज हिन्दी में न तो उच्चस्तरीय पुस्तकों का अभाव होता और न पत्रिकाओं का।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन

कुछ आधुनिक आविष्कार

ले० : डा० सत्यप्रकाश

विज्ञान ने बिजली, तार, टेलिफोन, बेतार के तार, टेलिविज़न, सूक्ष्मदर्शक और दूरदर्शक यंत्र, फ़ोटोग्राफी और चित्रपट, एक्सरे, विस्फोटक द्रव्य, पेट्रोल और पावर अलकोहल, सीमेंट और लोहा, विभिन्न गैसों और यंत्रों के सहारे हमारी सभ्यता को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। अधिकारी लेखक ने इन सब की कुतूहलपूर्ण कहानी अनेकानेक चित्रों के सहारे सीधी-सादी भाषा में अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत की है। विद्यार्थियों और साधारण पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी ग्रंथ।

सजिल्द : : क्राउन अठपेजी : : पृष्ठ ३२८ : : सवा सौ चित्र

मूल्य पाँच रुपए

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर पाठकों की शिकायतें क्यों ? जब पुस्तकें निकलती हैं, पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं तब तो वे खरीदते नहीं हैं और जब ग्राहकों के अभाव में प्रकाशन रुक जाते हैं तब शिकायतें करते हैं।

इसके तीन कारण हैं—अच्छे प्रकाशनों का प्रचार हर जगह नहीं हो पाता है। अभी भारत में ए० एच० व्हीलर, गुलाबसिंह और हिगिनबाथम नामक व्यापारिक संस्थाएँ ही सुगठित ढंग पर सारे देश में पुस्तक और पत्र-विक्रय का काम करती हैं। इन संस्थाओं का संगठन पूर्णतः व्यावसायिक दृष्टि-कोण से किया गया है तथा इनकी शाखाएँ बड़े-बड़े रेलवे स्टेशनों तक ही सीमित हैं। इन कारणों से एक ओर तो वे वैसे ही साहित्य को बेचना ज्यादा पसन्द करते हैं, जिनकी बिक्री अन्धाधुन्ध हो तथा जिनसे पर्याप्त कमीशन प्राप्त हो। यौन-भावना उत्तेजक साहित्य की बिक्री स्वभावतः अधिक होती है इसलिए इनके बुकस्टालों पर नब्बे प्रतिशत पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ उसी कोटि की रहती हैं। व्यावसायिक संस्था होने के कारण जनता की रुचि में परिवर्तन लाने का कष्ट ये उठाना नहीं चाहतीं। फलतः सत्-साहित्य के प्रचार में ये संस्थाएँ सहायक कम हैं बल्कि रोड़े अटकाने में ज्यादा हाथ बँटा...

दूसरा कारण है नवीन प्रकाशनों से आम पाठ... अनभिज्ञता। पुस्तकें और पत्रिकाएँ तो निकलती हैं प... तक वे पहुँच नहीं पातीं। दूसरी ओर पाठकों में साहित्य... इतनी दिलचस्पी नहीं कि वे खोज-खोजकर साहित्य... या पढ़ें।

तीसरा कारण है पाठकों की प्रवृत्ति का पतन। ... गोपन-सम्बन्धी विषयों के प्रति लोगों में स्वभावतः आ... होता है। सत् साहित्य इसे परिष्कृत करता है, शुद्ध ... और पाठक की प्रवृत्ति को मोड़ने की कोशिश करता है। ... लिए साहित्य की सूक्ष्मतम व्याख्या है सत्यं, शिवं, सु... किन्तु खेद है कि पाठकों की इसी कोमल भावना को ... कर कुछ लेखकों और प्रकाशकों ने पैसे कमाने का ... अख्तियार कर लिया है। आज वे धड़ल्ले के साथ यौन-... उत्तेजक, सिने-सम्बन्धी तथा जासूसी पुस्तकें और प... प्रकाशित कर रहे हैं। ऐसे साहित्य के प्रकाशन से एक ... तो लोगों में अनैतिकता का प्रचार होता है और हमारे ... की नींव कमज़ोर होती है दूसरी ओर स्वस्थ साहित्य के ...

हमारे प्रकाशन

कहानी

होली और दीवाली : इलाचन्द्र जोशी ४)
जिन्दगी के अनुभव : श्रीमती लुम्बा २)
डायरी के नीरस पृष्ठ : इलाचन्द्र जोशी ३)

उपन्यास

जिप्सी : इलाचन्द्र जोशी ८)
धरती की आँखें : लक्ष्मीनारायण लाल ४।।।)

नाटक

ऋतुराज : डा. रामकुमार वर्मा २।।)
तार के खम्भे : सत्येन्द्र शरत् २)
पर्वत के पीछे : लक्ष्मीनारायण लाल ३)

कविता

मधुशाला : बच्चन २)
मधुबाला : बच्चन २)
निशा निमंत्रण : बच्चन २)
एकान्त संगीत : बच्चन
सतरंगिनी : बच्चन
खैयाम की मधुशाला : बच्चन
सूत की माला : बच्चन
बंगाल का काल : बच्चन

हमारे आगामी प्रकाशन

मनोविज्ञान की रूपरेखा : मधुकर
आधुनिक मनोविज्ञान : मधुकर
मनोविज्ञान और शिक्षा : मधुकर
भारतीय दर्शन के मूल-तत्त्व : हिरियाना
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास : थिल्ली
कविता संग्रह : सुमित्रानन्दन पन्त
नीति शास्त्र : शान्ति जोशी

इतिहास तथा राजनीति-शास्त्र

राजनीति प्रवेशिका : लास्की
राजनीति शास्त्र के आधार : पंत तथा ...
आधुनिक यूरोप का इतिहास : शेलि...
विश्व-सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास (... : मालवीय तथा त्रिपाठी
नागरिक शास्त्र के आधार : पन्त
भारतीय संविधान तथा नागरिकता : ...

दर्शन तथा मनोविज्ञान

प्रारम्भिक मनोविज्ञान : मार्गन तथा गिलीलैंड
नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय : ह्वीलराइट

सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…पड़ती है ।

…सिक और साप्ताहिक पत्रों के विकास में डाकविभाग …बाधक हो रहा है पत्र-पत्रिकाएँ अधिकांशतः गुम हो …हैं । फलतः एक बार ग्राहक बनने के बाद डाक-विभाग …से लोग फिर ग्राहक नहीं बनते ।

अतः यदि हम वस्तुतः अच्छे साहित्य का प्रकाशन करना …ते हैं तो हमें देशव्यापक एक ऐसी संस्था का संगठन …ना होगा जो पाठक तैयार करे, पाठकों को नये साहित्य …रिचय कराए, उनके पास तक साहित्य पहुँचाए तथा …ठकों की रुचि परिमार्जित करने का प्रयत्न करे । ऐसी …एँ पुस्तक और पत्र बेचने का भी काम करें तो साहित्य-…के साथ-साथ पैसे की भी कमी न रहे ।

उदाहरणस्वरूप पटना को ही लिया जाय । पटना में …त्य-प्रेमियों की एक ऐसी संस्था कायम हो, जो पहले …ों से मिल-मिलकर एक लिस्ट तैयार करे कि वहाँ कितने …क प्रतिमास साहित्य के नाम पर कितना खर्च करना चाहते … पटना जैसे नगर में एक हजार व्यक्ति ऐसे अवश्य मिलेंगे …महीने में पाँच रुपये का साहित्य पढ़ना चाहेंगे । बशर्ते कि …र और किसी झंझट के मन-लायक साहित्य मिल जाय । …ऐसी संस्था को चाहिए कि वह प्रतिमास उतने का …हित्य उनके पास पहुँचा दे । बहुत से पाठक ऐसे हैं जो …जी के साहित्य पर प्रतिमास दस-बीस रुपये खर्च कर देते …र हिन्दी के नाम पर एक पाई भी नहीं । वैसे पाठकों के …र या तो अंग्रेजी का भूत सवार होता है या वे हिन्दी के …त्य से परिचित ही नहीं हैं । हिन्दी से उनका परिचय …ने पर उनमें से बहुत से पाठक हिन्दी की ओर अवश्य मुड़ …गे, ऐसा तो मेरा निजी अनुभव है ।

ऐसे पाठकों की संख्या आज सबसे अधिक है जो सस्ते …कर साहित्य पर पैसे खर्च कर डालते हैं । ऐसी संस्थाएँ …पाठकों की रुचि को क्रमशः परिमार्जित कर अच्छे साहित्य …की ओर मोड़ेंगी; पाठकों में मुफ्त या माँगकर पढ़ने की जो …ति है, उसे रोकेंगी । ऐसा करने से हिन्दी-पत्रों और पुस्तकों …प्रचार कई गुना अधिक बढ़ जायगी और राष्ट्रघातक साहित्य …प्रचार पर भी रोक लग जायगी । इन संस्थाओं से यह भी …भ कि पाठकों को एक बार ही पूरे रुपये नहीं देने होंगे तथा …रास्ते में गुम होने की शिकायत भी नहीं करनी पड़ेगी ।

ऐसी संस्था की उपयोगिता या सफलता के सम्बन्ध में तो कोई विवाद ही नहीं उठ सकता, मगर प्रश्न है पहले कदम कौन बढ़ाए । ऐसी संस्थाएँ कोई भी साहित्य-प्रेमी खोल सकते हैं । सौ-डेढ़ सौ की पूँजी से और अपने खर्च लायक पैसे भी कमा सकते हैं । पर प्रान्तीय या देश के आधार पर संगठित संस्थाओं से ज्यादा लाभ की सम्भावना है । उसे प्रभावशाली व्यक्तियों का सहयोग भी मिल जायगा और प्रान्तीय आधार पर संगठन मजबूत भी होगा । ऐसी संस्थाओं को प्रकाशकों का भी पर्याप्त सहयोग मिल जायगा । प्रकाशक ही सचेष्ट होकर ऐसी संस्थाओं का निर्माण करें तब तो और भी अच्छा । बल्कि आज हमारे देश में हमारी राष्ट्रभाषा की जो प्रगति हो रही है, उसे देखते हुए तो हम चाहेंगे कि स्वयं सरकार ही शिक्षा और साहित्य-प्रसार के लिए इस तरह की योजना कार्यान्वित करे । प्रान्तीय साहित्य-सम्मेलनों के सामने भी इन दिनों कोई खास काम नहीं है । वे चाहें तो ऐसा काम और भी अधिक सफल हो सकता है तथा सम्मेलन के उद्देश्य की पूर्ति भी हो सकती है । ऐसी जो संस्था बने उसका नाम हिन्दी-अध्ययन मण्डल रखा जा सकता है ।

इस विषय में पाठकों के सुझावों का भी आदर होना चाहिए ।

प्रकाशकों को चेतावनी

पथिक, मिलन, स्वप्न, पेखन आदि अपनी पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था में हिन्दी-मन्दिर प्रयाग से फिर से करा रहा हूँ । अतएव कोई प्रकाशक मेरी आज्ञा लिये बिना मेरी कोई पुस्तक न छापें, न प्रकाशित करें, न बेचें । यदि वे ऐसा करेंगे तो उनका काम चोरी का समझा जायगा और उन्हें कानून के सामने उत्तरदायी होना पड़ेगा ।

—रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग
१-३-५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-सरकार द्वारा संस्थापित

साहित्य अकादेमी का कार्यक्रम

साहित्य के पुनरुत्थान तथा साहित्यिक नवजागरण को प्रेरणा देने के उद्देश्य से नई दिल्ली में 'साहित्य अकादेमी' की स्थापना हुई है। उसके कार्यक्रम की यहाँ रूपरेखा दी गई है।

श्री जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में १२ और १३ मार्च ५४ को **साहित्य अकादेमी** की परिषद् की जो बैठकें हुई थीं, उनमें ऐसे कई निर्णय किये गए, जो जनता के हित की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण और आगामी वर्ष के कार्यक्रम से सम्बन्धित हैं। एक दीर्घकालीन कार्यक्रम रखने के बजाय परिषद् ने यह उचित समझा कि ऐसे कार्यों का एक हल्का सा कार्यक्रम चालू किया जाय, जो शीघ्र ही पूरे किए जा सकते हों और जिनसे आगे के लिए अधिक व्यापक कार्यक्रम की नींव रखी जा सके। यह कार्यक्रम इस प्रकार है :—

१. **अकादेमी** भारतीय भाषाओं की सम-सामयिक साहित्यिक कृतियों का राष्ट्रीय इतिहास प्रकाशित करेगी या प्रकाशित करवाएगी। सम-सामयिक कृतियों का अर्थ उन लेखकों की प्रकाशित कृतियाँ हैं जो या तो जीवित हैं या २० वीं शताब्दी में जीवित थे।

२. अकादेमी भारत की विभिन्न भाषाओं के चुने हुए सम-सामयिक गद्य-पद्यों के संकलन प्रकाशित करवाएगी।

३. **अकादेमी** आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास और इतिहास के बारे में अंग्रेजी और हिन्दी की अच्छी कृतियाँ प्रकाशित करवाएगी।

४. **अकादेमी** किसी ऐसी योजना को प्रोत्साहन देगी, जिससे किसी भारतीय भाषा की अच्छी कृतियाँ अनुवाद रूप में दूसरी भारतीय भाषा में भी उपलब्ध हो सकें।

५. **अकादेमी** हर भारतीय भाषा की सबसे अच्छी १० पुस्तकें चुनेगी, जिनका दूसरी भारतीय भाषाओं में अनुवाद करवाया जायगा।

६. **अकादेमी** एक त्रैमासिक पत्रिका निकालेगी जिसमें की अकादेमी कार्रवाइयों का विवरण दिया जायगा। साथ ही इसमें, आलोच्य अवधि में प्रकाशित, विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक कृतियों का तथ्यपूर्ण पर्यवेक्षण भी होगा।

७. भारतीय लेखकों को, अपनी पुस्तकें प्रकाशित कराने और उनका अनुवाद कराने में जो कठिनाइयाँ होती हैं, **अकादेमी** उनकी जाँच करेगी और उन्हें दूर करने के उपाय बताएगी।

८. कुछ चुने हुए भारतीय शास्त्र ग्रन्थों का विदेशी भाषाओं में और विदेशी शास्त्र ग्रन्थों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने तथा उन्हें प्रकाशित कराने के सम्बन्ध में **यूनेस्को** की जो योजना चालू है, उसे आगे बढ़ाने के लिए **अकादेमी** इस संस्था के भारतीय राष्ट्रीय-आयोग को सहयोग देगी।

९. पिछले तीन वर्षों में, प्रकाशित पुस्तकों में से पुरस्कारों के लिए, प्रत्येक भारतीय भाषा की एक-एक अच्छी पुस्तक चुनने के सम्बन्ध में, **अकादेमी** भारत-सरकार को सलाह देगी। शिक्षा-मन्त्रालय इस तरह की पुस्तकों पर पुरस्कार देने की घोषणा पहले ही कर चुका है।

१०. **अकादेमी** हर भारतीय भाषा के प्रख्यात लेखकों और विशेषज्ञों की एक सलाहकार समिति कायम करेगी जिससे उक्त कार्यक्रम को असली रूप देने में अकादेमी को इसकी सलाह मिलती रहे।

परिषद् में यह निर्णय भी किया गया कि न सिर्फ मान्य संविधान में उल्लिखित भाषाओं के कार्य से ही अकादेमी का सम्बन्ध होगा, बल्कि दूसरी भारतीय भाषाएँ भी उसके कार्यक्रम में शामिल की जायँगी। साथ ही भारतीयों द्वारा लिखित अंग्रेजी की साहित्यिक कृतियों को भी उसके कार्यक्रम में स्थान दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के वयोवृद्ध प्रकाशक

आचार्य रामलोचन शरण

श्रीवास्तव हिमांशु

पुस्तक-भंडार पटना के संस्थापक आचार्य रामलोचन शरण का परिचय देते हुए 'प्रकाशन समाचार' को आज विशेष हर्ष है।

हिन्दी का प्रकाशन-जगत् आचार्य रामलोचन शरण के प्रति विशेष रूप से आभारी है। आप न केवल प्रकाशकीय जगत् में अग्रणी हैं, वरन् बिहार के कई-एक प्रमुख लेखकों को भी आपसे ही सर्वप्रथम प्रश्रय मिला था। स्वर्गीय श्री रामदहिन मिश्र की भाँति आप भी अध्यापन कार्य से प्रकाशन क्षेत्र में उतरे और पिछले ३५ वर्षों में अटूट लगन और निःस्वार्थ निष्ठा से इस क्षेत्र में भारी सफलता प्राप्त की।

श्री रामलोचन शरण की आयु आज ६५ वर्ष की है। अल्पावस्था से ही आपने (१९०३ में) लिखना शुरू कर दिया था। प्रकाशन समाचार की ओर से इस परिचायात्मक लेख को तैयार करने के लिए कुछ जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य

से जब मैं उनके पास पहुँचा तो मेरा अभिप्राय जानकर उन्होंने कहा—"प्रकाशक मैं तो नहीं हूँ, प्रकाशक तो **पुस्तक-भण्डार** है।"

"आप प्रकाशक नहीं हैं?" मैंने साश्चर्य पूछा।

"नहीं, मैं लेखक हूँ।"

रामलोचन शरण जी ने १९१० से अध्यापन-कार्य आरम्भ कर दिया था। आपने उन दिनों हिन्दी-व्याकरण और रचना-विचार के विषय में कई पुस्तकें लिखीं और ये पुस्तकें विद्वानों और संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत व प्रशंसित हुईं। १९२० में आपने **पुस्तक भण्डार** के रूप में अपनी प्रकाशन संस्था की नींव डाली। इन दिनों आप दरभंगा जिला स्कूल (नॉर्थब्रुक इंग्लिश हाई स्कूल) में हिन्दी के अध्यापक थे। जब सरकारी नौकरी प्रकाशन के स्वतन्त्र कामों में बाधक होने लगी तो आपने स्कूल छोड़ दिया और **पुस्तक भण्डार** को पूरी शक्ति और समय देने लगे। स्वयं प्राइमरी और माध्यमिक स्कूलों के उपयुक्त पुस्तकें लिखने और लिखवाने लगे। आप ने तब ही **'बालक'** नाम के मासिक पत्र का प्रकाशन भी आरम्भ किया, जो अब भी १६,००० की संख्या में छपता है। इन्हीं दिनों आपने 'विद्यापति प्रेस', 'विद्यापति स्कूल' और 'विद्यापति गोष्ठी' की स्थापना की तथा पटना में 'हिमालय प्रेस' का श्रीगणेश भी किया।

१९२० और १९४७ के बीच बिहार के साहित्यिक व सांस्कृतिक जागरण में आचार्य रामलोचन शरण 'बिहारी' का असाधारण एवं अभूतपूर्व हाथ रहा है। राष्ट्रकवि दिनकर, बिहार के वयोवृद्ध साहित्यकार आचार्य शिवपूजन सहाय और अनोखी कलम के धनी श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी तथा कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य साहित्यिकों को आरम्भिक प्रश्रय तथा प्रेरणा देने का श्रेय आप ही को है। इस तथ्य को आचार्य रामलोचन शरण भूलते नहीं हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि जब बिहार के लेखकों की नई पौध प्रोत्साहन के अभाव में सूख रही थी, तब वही उन्हें प्रोत्साहन देने वाले थे। "दिनकरवा और बेनिपुरिया ठीक तुम्हारे ही जैसे लड़के थे जब मेरे यहाँ आए थे। शिवपूजन को भी कलम पकड़ने का ढंग नहीं मालूम था, और इन सबों को"—कहते-कहते उन्होंने गंजी से फाउण्टेन-पेन निकालकर वाक्य को पूरा किया—"इसी कलम ने ठीक किया।"

१९४८ में **पुस्तक भंडार** (पटना शाखा) के सब-के-सब कर्मचारियों ने किन्हीं कारणों से संस्था से असहयोग कर दिया। **भंडार** को इससे भारी धक्का लगा और यह आघात सहना असाध्य-सा हो गया। एक नये सिरे से **पुस्तक-भंडार** में आचार्य जी को प्राण डालने पड़े। अब वह आकर पटना में जम गए और तब से मानो उन्होंने 'क्षेत्रन्यास' (एक ही स्थान पर रहने का व्रत) ले लिया है। **पुस्तक भंडार का** मुद्रक प्रेस (लहेरिया सराय) और 'विद्यापति प्रेस' (... बन्द कर देने पड़े। उनके लिए आवश्यक हो गया कि ... अपना सारा ध्यान पटना-शाखा और 'हिमालय-प्रेस' ... केन्द्रित करें। 'हिमालय' जैसे मासिक साहित्यिक पत्र ... जिसने अल्प समय में ही बड़ी ख्याति प्राप्त की थी, बन्द ... देना पड़ा।

आचार्य रामलोचन शरण जी का स्वास्थ्य अब शि... रहने लगा है। वह घोर आस्तिक हैं। सीता और राम ... युगल जोड़ी का ध्यान उनमें सन्तोष और धैर्य बनाये हुए ...

आचार्य जी नई पीढ़ी के साहित्यकारों के प्रति ... आशावान हैं। क्या लेखन और क्या प्रकाशन, ... दिशाओं में नई शक्ति पुरानी शक्ति का स्थान ग्रहण ... यही वे चाहते हैं। आचार्य जी जब शान्त-स्वस्थ स्थि... रहते हैं तो बातचीत में माधुर्य और प्रबोध की ... अधिकाधिक होती है। कभी-कभी क्षुब्ध होकर खरी-खो... सुनाने से भी वे नहीं हिचकिचाते। स्वाभाविकतया आशा... प्रवृत्ति के होने पर भी जीवन में सहे आघात-प्रतिघातों ... उत्पन्न कटुता कभी-कभी उभर आती है और तब वह ... हैं "आज देश में साहित्यकार नहीं रह गए। अब कोई ... लिखेगा! अब कोई सूर और तुलसी नहीं बन सकता।"

पुस्तक भंडार ने केवल स्कूली किताबों का प्रका... ही नहीं किया है, बल्कि साहित्यिक पुस्तकें भी सैकड़ों ... संख्या में छापी हैं। राष्ट्रपिता गांधी जी की आचार्य रामलो... शरण के प्रति विशेष श्रद्धा थी। उनके एक पत्र का ... आप अपनी कई पुस्तकों में भी दे चुके हैं। इस प्रकाशन-सं... ने अब तक बड़े उतार-चढ़ाव देखे हैं। फिर भी आ... रामलोचन शरण के व्यवस्थापकत्व में यह बिहार की दो-... प्रमुख प्रकाशन-संस्थाओं में से प्रमुख है। जातीय भेद ... के यदि आचार्य जी शिकार न होते तो आज उनकी ... बिहार की प्रकाशन संस्थाओं में शिरोमणि होती।

कविवर बिहारी

ले० श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'—सं० श्री रामकृष्ण एम० ए० भूमिका ले०—आचार्य डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मूल्य ६)

बिहारी की विस्तृत समीक्षा। भाषा का इतिहास। पृथ्वीराज रासो की भाषा का विवेचन। ब्रजभाषा का व्याकरण। अन्य महत्वपूर्ण प्रकरण।

नीलम की अँगूठी

ले०—श्री विभूति भूषण मुखोपाध्याय। मूल्य ४)

प्रेम का मधुर तथा वास्तविक चित्रण करने वाला ऐसा शुद्ध रोमान्टिक और मनोवैज्ञानिक हिन्दी में दूसरा नहीं है।

बिहारी-रत्नाकर

ले० श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'। मूल्य ८)

बिहारी सतसई पर रत्नाकरजी कृत टीका। विभिन्न परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में स्वीकृत।

सभी पुस्तकें धर्मयुग, सरिता, सरस्वती, साहित्य, आज, आल इण्डिया रेडियो तथा अन्य पत्रिकाओं और विद्वानों द्वारा प्रशंसित हैं।

ग्रन्थकार

पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता

शिवाला—बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पुस्तक-विक्रेता और उनकी कठिनाइयाँ

नेमिचन्द्र जैन

सुसंस्कृत लेखक और आलोचक श्री नेमिचन्द जैन हिन्दी की पुस्तकों की एक दूकान भी चलाते हैं। उनके सुझावों को प्रकाशक पुस्तक-व्यवसाय के हित में अतीव उपयोगी पाएंगे।

...साल पहले जब संयोगवश पुस्तकों की एक दूकान ...करने की सम्भावना मेरे सामने आई तो अधिकांश मित्रों ...जिनमें दो-एक प्रतिष्ठित हिन्दी साहित्यिक भी थे—यही ...दी कि हिन्दी पुस्तकें रखना बेकार है, हिन्दी की पुस्तकें ...ती नहीं हैं। उस समय तो केवल अपने अनुभवहीन हठ ...कारण ही मैंने हिन्दी पुस्तकों का भी एक विभाग अपनी ...न में शुरू कर दिया था। किन्तु तबसे अब तक, यद्यपि ...अपने उस निश्चय पर तनिक भी दुःख नहीं है, हिन्दी-...कों की बिक्री के सम्बन्ध में इतने प्रकार की कठिनाइयों का ...ना पड़ता रहा है कि यदि मेरी निजी रुचि हिन्दी-पुस्तकों ...ओर न होती तो उस विभाग को बन्द कर देना ही शायद ...त होता।

कठिनाइयों की शुरुआत यहीं से हुई कि कहाँ से कौनसी ...कें प्रकाशित हुई हैं यह जानकारी कैसे प्राप्त की जाय। ...जी पुस्तकों के सम्बन्ध में यह कठिनाई दूर होने में तनिक ...देर न लगी। लंदन के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'बुकसेलर', को ...लिखने भर की देर थी कि उन्होंने एक नई पुस्तकों के ...के खुलने की सूचना अपने एक अंक में छाप दी और ...में जोड़ दिया कि प्रकाशक अपने सूचीपत्र भेजने की कृपा ...। बस फिर सूची-पत्रों का अम्बार लगने लगा। और ...के नवीनतम प्रकाशनों की जानकारी के लिए 'बुकसेलर' ...ग्राहक बनना पर्याप्त था। पुराने प्रकाशनों की जानकारी ...लिए 'बुकसेलर' के ही पुराने वार्षिक अंक इकट्ठे कर लिये ...और दो-तीन महीने में ही अंग्रेजी पुस्तकों का पता होने ...और उनके प्राप्त करने की सभी प्रारम्भिक कठिनाइयाँ दूर हो ...ईं।

किन्तु हिन्दी पुस्तकों के सम्बन्ध में ऐसा कुछ भी न हो सका। प्रयाग जैसे साहित्यिक केन्द्र में भी इस बात की जानकारी का कोई साधन न था कि किस लेखक की कौनसी पुस्तक कहाँ से प्रकाशित हुई है, अथवा आगे नई कौनसी पुस्तकें निकलने वाली हैं। और दिलचस्प बात यह है कि वह कठिनाई आज पाँच साल बाद भी वैसी ही बनी है। आज भी अधिकांश नई पुस्तकों का पता उनके प्रकाशित हो जाने के काफ़ी बाद किसी ग्राहक के उसकी माँग करने पर ही चलता है। प्रायः उत्तर में, मैं यही कह बैठता हूँ कि 'क्या यह पुस्तक निकल

द्विवेदी-जयन्ती के उपलक्ष्य में

पुस्तकों के मूल्य में कमी

पं० किशोरीदास बाजपेयी ने आचार्य द्विवेदी की जयन्ती (वैशाख शु० ४, ता० ६ मई १९५४) के उपलक्ष्य में अपनी नीचे लिखी पुस्तकों पर नीचे लिखे क्रम से छूट देने की इच्छा प्रकट की है—

१. ब्रजभाषा का व्याकरण	३)	२॥)
२. अच्छी हिन्दी	२॥)	२)
३. साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण	२)	१।॥)
४. कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास	१।)	१)

यह जरूरी नहीं है कि चारों पुस्तकें ही मँगाई जायँ; परन्तु वी० पी० तीन रुपए से कम की न होनी चाहिए। डाक-खर्च पृथक्। मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगला की आधुनिक प्रेम कहानियाँ ५)

नर-नारी के प्रेम और विरह-मिलन की पृष्ठभूमि पर रचित आवेश से चंचल, अनुभूति से तप्त और कल्पना की उड़ान से अनोखी कहानियों का संग्रह।

'कवि' ५)

साहित्यसम्राट् ताराशंकर

बंगाल और बिहार की प्रखरतापदग्ध देहात के जन्म-कवि के प्रति सुन्दरी वार-वनिता के व्याकुल प्रेम की करुण कहानी।

'भारत-संस्कृति' ४॥)

डा० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय

भारत की सनातन संस्कृति, भाषा और साहित्य का सरस, फिर भी गम्भीर विद्वत्तापूर्ण समालोचनात्मक विवरण।

बंगला की आधुनिक श्रेष्ठ कहानियाँ ३॥)

श्रेष्ठ कलाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का अनोखा संग्रह।

अखण्ड भारत प्रकाशन

३१—बी, महाराजा टागोर रोड, कलकत्ता ३१

गई है? अच्छा, कहाँ से प्रकाशित हुई है बता दीजिए।' ... समय, तथा उसके बाद भी, मैंने कई-एक बार स्वयं मिलकर अथवा पत्र लिखकर बहुत से प्रकाशकों से यह प्रार्थना की कि वे अपना सूचीपत्र भेजते रहा करें और नये प्रकाशनों की सूचना नियमित भेज दिया करें। एक बार दो-तीन सौ ... भी मैंने बहुत से प्रकाशकों को इसी आशय के भेजे। पर उनमें से दस-पन्द्रह से अधिक ने सूचीपत्र न भेजा होगा, और ... भी बस एक बार ही आकर रह गया।

हिन्दी की पुस्तकों की बिक्री में मेरे ख़याल में यह ... बड़ी बाधा है। जब विक्रेता ही स्वयं यह नहीं जानता कि क्या छप रहा है, कहाँ से छप रहा है, तो फिर उस पुस्तक के पाठक तक पहुँचने की सम्भावना निस्संदेह बहुत अल्प ही है।

हिन्दी का प्रकाशक तुरंत फल चाहता है—निस्संदेह उसकी छोटी पूँजी इसका मुख्य कारण है—उसे इतना धीरज नहीं कि वह ऐसे विक्रेता के पास अपने प्रकाशकों की सूचना भेजे जो कभी उससे पुस्तकें नहीं मँगाता। प्रचार के लिए ... इतना अल्पतम खर्च भी करने को प्रस्तुत नहीं है कि विक्रेता को सूचित तो करता रहे।

एक और बड़ी कठिनाई है हिन्दी पुस्तकों के थोक विक्रेताओं के अभाव की। बड़े-से-बड़े प्रकाशक से भी ... मँगाना विक्रेता के लिए सुविधाजनक कभी नहीं होता। ... सम्भावनाओं में से कि या तो अधिक संख्या में पुस्तकें मँगाई जायँ ताकि खर्च कम पड़े या बिलकुल न मँगाई जायँ, अनिवार्य रूप से दूसरी ही अधिकतर प्रभावशालिनी सिद्ध होती है। इसी से केवल पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशकों की ही अन्य पुस्तकें अधिक बिकती हैं। 'रिटेल' विक्रेता के लिए अधिक आवश्यक यही है कि वह अधिक-से-अधिक पुस्तकों की एक-एक, दो-दो प्रतियाँ मँगाए, कुछ पुस्तकों की अधिक प्रतियाँ नहीं। यह बात बिना थोक विक्रेताओं के सम्भव नहीं है और ... तक पुस्तक-व्यवसाय में थोक विक्रेता अपना उचित स्थान नहीं ग्रहण करते तब तक हिन्दी पुस्तकें इतनी ही कम बिकती रहेंगी और उसका कोई रास्ता न निकल सकेगा।

इसी सिलसिले में एक और बात का उल्लेख आवश्यक है—वह है प्रकाशकों में अपनी कमीशन की दरों के सम्बन्ध में जिम्मेदारी का नितांत अभाव। यह परिस्थिति अच्छे ... विक्रेताओं के जमने में बड़ी भारी बाधा है जो अंत में ... पुस्तकों की बिक्री की ही बाधा बन जाती है।

कुल मिलाकर परिस्थिति यही है कि केवल हिन्दी पुस्तकों ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिक्री के बल पर अच्छी दूकान चलाना बड़ा ही कठिन है। बिक्री इतनी कम होती है कि भलीभाँति आजीविका भी उससे नहीं जुट सकते। इसीलिए अधिक उद्योगी उसमें टिके रहना नहीं चाहेंगे। वे एक तो इस ओर ही नहीं, यदि किसी प्रकार आ भी फँसे तो शीघ्र ही निकलने का यत्न करेंगे, कम-से-कम प्रकाशन की ओर तो मुड़ जायँगे। इसीलिए हिन्दी के प्रायः सभी पुस्तक-विक्रेता विशेषकर पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त साधारण पुस्तकों विक्रेता या तो हैं ही नहीं या फिर स्वयं प्रकाशकों ने ही पुस्तकों के बदले में मिल सकने वाली पुस्तकों को लेकर ऐसी दुकानें खोल रखी हैं। वे अनिवार्य रूप से अपने प्रकाशनों का प्रमुख व्यवसाय नहीं हैं। इसलिए उनकी ओर ध्यान भी नहीं दिया जाता। अधिकांश को चलाता भी साधारण-सा अर्द्धशिक्षित पुरानी चाल का मुनीमनुमा व्यक्ति ही है।

बदले की पुस्तकों को लेकर चलने वाली दुकानों के कारण हिन्दी पुस्तकों पर हर ग्राहक कमीशन पा जाता है और उसकी आशा भी रखता है। यह चीज़ भी चाहे-अनचाहे पुस्तकों की प्रतिष्ठा को नीचे ही गिराती है। अंग्रेज़ी पुस्तकों का विक्रेता अनिवार्य रूप से हिन्दी पुस्तक-विक्रेता से अपने को अधिक ऊँचा समझता है—कम-से-कम आर्थिक रूप से तो होता ही है।

किन्तु इन सब समस्याओं का आखिर हल क्या है? तात्कालिक हल तो शायद कोई नहीं ही है। पर यदि हम अपनी कठिनाइयों को, अपनी सीमाओं और सुविधाओं दोनों को, ठीक तरह से पहचानना भी शुरू कर सकें तो यही बहुत है। इसका एक उपाय तो यह है कि हिन्दी के पुस्तक-विक्रेताओं का एक संघ हो जो व्यवसाय-सम्बन्धी समस्याओं पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार कर सके। यह शायद अभी दूर की बात है किन्तु जब तक हम सम्मिलित रूप से, अपने अनुभवों और कठिनाइयों पर न सोचेंगे तब तक बहुत अधिक सुधार की आशा नहीं है।

एक बात बिलकुल स्पष्ट है। हिन्दी की पुस्तकों के पाठकों का अभाव इतना नहीं है जितना पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचाने के साधनों का। पुस्तक-विक्रेता ही प्रकाशक और लेखक—बल्कि लेखक और पाठक—के बीच की वह कड़ी है जिस पर ध्यान दिये बिना इन चारों में से किसी की समस्या नहीं सुलझ सकती।

हमारे प्रकाशन

हिन्दुओं का जीवन दर्शन—ले० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् १-८-०

गांधीजी के जीवन प्रसंग—(सं० श्री० चन्द्रशंकर शुक्ल) बापू के ५४ देशी-विदेशी मित्रों व अनुगामियों द्वारा लिखित संस्मरण ६-०-०

गांधीजी के सम्पर्क में—(अनु० 'दर्शन') परिचयात्मक संस्मरण ३-४-०

गांधीजी की यूरोप यात्रा—ले० म्यूरियल लीस्टर अनु० श्री 'रंजन-शर्मा' २-४-०

हमारा देश—१०×७॥ इंच के आकार में दुरंगी छपाई। चित्रों के साथ भारत का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व शिक्षा-सम्बन्धी मार्मिक परिचय। ले० श्री भास्करराव विद्वांस। ४-०-०

जीवन विहार—आचार्य श्री काकासाहब कालेलकर का निबन्ध-संग्रह २-०-०

नेताजी—(श्री सुभाष बाबू की सचित्र जीवनी) अनु० 'दर्शन' ३-०-०

नगीने—(मौलिक कथा-संग्रह) ले० पं० 'सुदर्शन' ३-०-०

पनघट—(मौलिक कथा-संग्रह) ले० पं० सुदर्शन ३-८-०

अँगूठी का मुकदमा—(बालोपयोगी कथाएँ) ले० पं० सुदर्शन १-०-०

धर्मवीर दयानन्द—(सचित्र जीवनी) ले० पं० सुदर्शन १-४-०

गांधी बाबा—(सचित्र जीवनी) ले० पं० सुदर्शन १-४-०

आम्रपाली—(उपन्यास) ले० श्री रामचन्द्र ठाकुर ४-०-०

बीरबल—(उपन्यास) ले० ,, ,, ४-८-०

नर्तकी—(उपन्यास) ले० उमाकांत ५-८-०

शेषदान—(मौलिक कथा संग्रह) ले० श्री वीरेन्द्रकुमार २-१२-०

कृपा किरन—(मौलिक भजन-संग्रह) ले० रैहाना तय्यबजी १-८-०

दिल के तार—(गीत-संग्रह) ले० पं० सुदर्शन १-४-०

विद्यार्थियों से—श्री शंकरलाल पारीक १-८-०

भारत में अँग्रेज़ी शिक्षा का इतिहास—ले० श्रीधरनाथ मुकर्जी १-८-०

विद्यार्थी हिन्दी-मराठी कोश—सं० श्रीपाद जोशी २-०-०

पाप का पुण्य—(मौलिक कहानी संग्रह) 'रावी' १-१२-०

राष्ट्रभाषा शब्दकोष (गुजराती से हिन्दी) २-०-०

भारत के महापुरुष—ले० विद्यालंकार १-०-०

सिकन्दर—(नाटक) ले० सुदर्शन १-८-०

विद्रोही आत्माएँ—ख़लील जिब्रान, अनु० सुदर्शन २-८-०

अंजना—(नाटक) ले० सुदर्शन २-८-०

वीरांगना-अरुणा आसफअली—ले० 'दर्शन' २-०-०

सोवियत रूस में शिक्षा-प्रणाली—(सचित्र) १-४-०

वोरा एन्ड कम्पनी, पब्लिशर्स, लिमिटेड, बंबई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला

बुकशाप कर्मचारी

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह चौथा लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

अक्सर सुना गया है कि पुस्तकों के व्यापार में सही किस्म के सहायकों की आवश्यकता होती है लेकिन अब तक इस 'सही किस्म' की सच्ची परिभाषा न मालूम हो सकी। मेरे खयाल में तो आदर्श सहायक वही हो सकता है 'जो अच्छा विक्रेता हो, खुश-मिजाज व खुश शक्ल हो, और आम चीजों के बारे में विस्तृत ज्ञान रखता हो।' इस पर भी मतभेद हैं—कुछ कहते हैं कि यह शिक्षा का प्रश्न है, यानी उसके पास किसी विश्वविद्यालय की डिग्री होनी चाहिए, कुछ का कहना है कि सिर्फ बुद्धिमत्ता ही दरकार है और यदि अनुभव से लाभ उठाना जानने वाला हो तो और भी अच्छा। कुछ शक्ल व सूरत तथा बातचीत का आकर्षक ढंग ही आवश्यक गुण समझते हैं। वैसे इन सब गुणों का एक सहायक में होना आवश्यक है। यदि ये एक सहायक में मौजूद हैं तो उसके लिए लाभकारी हैं और यदि नहीं तो ये सब गुण ही किसी व्यक्ति को अच्छा विक्रेता नहीं बनाते, यह भी सत्य ही है।

पर्याप्त शिक्षा एक 'लाभप्रद' गुण है, परन्तु यह भी स्मरण रहे कि जब कोई व्यक्ति किसी विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहा हो और दूसरा 'सही किस्म' का काम किसी बुकशाप पर ही सीख रहा हो तो उसका व्यावहारिक अनुभव, जो वह बुकशाप पर प्राप्त करेगा उसके लिए बहुत फायदेमन्द साबित होगा। इसलिए मेरा सुझाव है कि पुस्तक-विक्रेता के कार्य के लिए कम-शिक्षित व्यक्ति भी रखे जा सकते हैं; सर्टिफिकेट के अभाव के कारण उन्हें उस अधिकार से वंचित न करना चाहिए।

पुस्तक-विक्रय के लिए नवयुवकों का चुनाव बड़ा कठिन काम है। और पहले कुछ महीनों के उनके काम से भी कोई अनुमान लगाना उपयुक्त नहीं। कभी-कभी तो उनकी कार्य में दिलचस्पी अचानक पैदा हो जाती है। इसके मैनेजर का प्रोत्साहन या किसी अनुभवी ग्राहक का प्रोत्साहन उनमें रुचि पैदा कर सकता है। अधिकतर पुस्तक-विक्रेता महसूस करते हैं कि ग्राहकों की दयालुता, प्रोत्साहन विचारशीलता ने उनके जीवन पर काफी प्रभाव डाला है। मैनेजर, उपव्यवस्थापक और बड़े सहायक भी कर्मचारियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं और यह भी सच है कि पुस्तक व्यापार के भविष्य की अधिकतर जिम्मेदारी उन्हीं पर होती है।

नये कर्मचारियों को नियुक्त करते समय यह हमेशा लाभप्रद सिद्ध होता है कि कुछ अरसे के लिए यदि सम्भव हो उनका कामकाज व रंग-ढंग देखे जायँ। ऐसा अक्सर देखा गया है कि कुछ हफ्तों या महीनों के काम के बाद ज़्यादा अच्छी तरह से मालूम हो जाता है कि वह अपने मतलब का है या नहीं। लेकिन यह भी स्मरण रहना चाहिए कि वह कुछ हफ्तों या महीनों का काम अन्तिम सफलता का प्रमाण नहीं हो सकता।

यदि नवागन्तुक यह शिकायत करे कि पुराने कर्मचारियों से उसकी नहीं निभती तो जाहिर है कि हमें अनुभवी कर्मचारियों का ही पक्ष लेना पड़ेगा और यदि वास्तव में नवागन्तुक का उन पुराने कर्मचारियों से निर्वाह नहीं होता तो उसे चाहिए कि वह वहाँ असामञ्जस्य पैदा करने के बजाय कहीं और चला जाय। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि यदि उसकी शिकायत वाजिब है तो उस पर ग़ौर भी किया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी बुकशाप पर आये नवागन्तुक और, विशेषतया जिन्हें इस काम का कोई तजरबा नहीं है, पहले-पहल तो अपने-आप को 'बेकार' ही समझेंगे। इसलिए उन्हें सही राह पर लाने का एक तरीका यह भी है कि उन्हें किसी ऐसी जगह काम करने दिया जाय जहाँ वे अनुभवी स्टाफ के निरीक्षणाधीन अच्छी तरह से काम कर सकें।

बुकशाप पर पहुँचने के बाद आधा घण्टा किताबों को साफ करना और उन्हें ठीक से जमाना आदि भी उपयोगी है। यदि यह काम बुद्धिमत्ता से किया जाय लापरवाही से नहीं तो वह ज्ञानवर्धन और स्मृति-शिक्षा में काफी मदद दे सकता है। नवागंतुकों को चाहिए कि वे आते ही यह जानने की कोशिश करें कि बुक-शेल्फों में क्या किताबें हैं और उनमें क्या लिखा हुआ है और जितनी जल्दी वे इस दैनिक कार्य में निम जायँगे और अपने कर्तव्य तथा जिम्मेदारियों का पालन करेंगे उतने ही सुख व चैन के साथ वे अपना काम चला सकेंगे।

दुकान में बिक्री

बड़ी-बड़ी पुस्तकें बेचने वाली संस्थाएँ पुस्तक-विक्रेता के अपने व्यक्तित्व, साहित्य के बारे में उसके ज्ञान, चीजों के विवरण के प्रति ध्यान, उसके आकर्षण और ग्राहकों के स्वागत करने के ढंग के कारण बन सकी हैं। इसीलिए पुस्तक-विक्रय आज सबसे ऊँची साहित्यिक अभिरुचि बन गया है और अच्छा विक्रेता जितना लाभ पुस्तकें बेचने में उठा सकता है उतना अन्य धन्धों से नहीं कमा सकता। पुस्तकों की बिक्री की भी अपनी एक परम्परा है और वह जीविकोपार्जन का साधन-मात्र नहीं बन जाना चाहिए क्योंकि यद्यपि पुस्तक-विक्रय की अर्थनीति कुछ ऐसी नहीं है कि कोई पुस्तक-विक्रेता या शॉप-कर्मचारी धन जोड़ लेगा बल्कि अच्छा

RARE, SCARCE & OUT OF PRINT BOOKS

	Rs.
JOURNAL OF INDIAN SOCIETY OF ORIENTAL ART VOL. XV. 1947 A. K Coomaraswamy Commemoration Volume. with 28 Plates	15
NRITTA MANJARI The 62 Fundamental Sequences of Bharata Natyam by Leela Row.	15
THE VIEW OF HINDUSTAN by Pennant in 2 Vols. London. 1798. 12″×10″ Vol. I. Western Hindostan 9 Plates. Vol. II. Eastern Hindustan. 14 Plates.	60
VIEWS IN INDIA Chiefly among the Himalaya Mountains, taken during tour in the direction of Mussoorie, Simla, the Sources of Jamuna and Ganges, etc, in 1829-31-32 with Notes and Descriptive Illustrations by Lt. G. White with 30 Full Page Plates, Size 14″×11″ London. 1836.	50
VIEWS IN INDIA, CHINA and on the Shores of the RED SEA: from Original Sketches by Elliot with Description by E. Roberts. 64 Plates 11″×9″ in Two Volumes. Full Leather Bound.	60
DITTO Both Volumes Bound in One. Half Leather.	50
HINDOSTAN. Its Landscape, Palaces, Temples, Tombs; The Shores of The Red Sea; and the Sublime and Romantic Scenery of THE HIMALAYA MOUNTAINS illustrated in a Series of VIEWS. 99 Plates Size 11″×9″ Full Green Morocco Binding All Round Gilt Edges. Illuminated Binding Weight 5 lbs.	100
SELECT VIEWS IN MYSORE. The Country of Tippoo Sultan; from Drawings taken on the Spot by Mr. Home with Historical Descriptions, London. 1794. with 29 Full Page Fine Plates, Plan of the Carnatic and Mysore June 5th, 1794. Size 13″×11″.	80
QUEST FOR SITA. of Ravana the Dark Angle and His Paradise at Lanka, of Hanuman and the Divine Vultures Jatayus and Sampati with drawings by Mervin Peake. Limited to 500 copies.	65
THE ART OF DRAWING in its various branches. by Thomas Smith. Illusttated 21 Coloured Illustrations. London. 1825.	40
A MANUAL OF COSTUMES as Illustrated by Monumental Brasses by Druitt with 110 Illustrations.	45
THE ART OF ILLUSTRATION by Blackburn with 95 illustrations.	15
THE PRACTICE OF OIL PAINTING and DRAWING by Solomon with 80 Illustrations.	16
COOMARASWAMY: INDIAN DRAWING. II Series Chiefly Rajput. with 26 Full Page Plates and 16 Figures. Only 405 copies were printed.	100
ILLUSTRATIONS OF ANCIENT BUILDINGS IN KASHMIR by Cole with 44 full page Photogravures, Size 13″×10″ London 1870.	75
ANCIENT MONUMENTS OF KASHMIR by Ram Chandra Kak with a Foreword by Younghusband and an Introduction by Prof. Foucher. 77 Illustrations.	45
HANDBOOK OF JEYPORE MUSEUM by Handley 4 Plain and 12 Coloured Plates of Brasswares, Pottery, Idols. Peasant Jewellery, etc. 1895.	60
EUROPEAN AND AMERICAN CARPETS AND RUGS by Faraday Profusely illustrated with numerous Coloured Plates Size 11″×9″.	50

Ask for our monthly lists. Books, once sold, are rather difficult to procure again.

DIXITSON & CO., (1917)

115/A, Tarak Pramanick Road, CALCUTTA-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेता होना एक बहुत ही सन्तोषजनक सफलता समझी जाती है।

सभी पुस्तक-विक्रेताओं के लिए पहली जरूरी शर्त तो है बुकशापों का अनुभव व ज्ञान। इसमें जरूरी यह है कि वह स्थानीय भाषा का ज्ञाता हो, विदेशी भाषा भी कुछ-कुछ जानता हो और संदर्भ-पुस्तकों के इस्तेमाल व उनके विषय के बारे में खासी जानकारी रखता हो। जो भी विक्रेता अधिक पुस्तकें पढ़ेगा वह उतना ही अच्छा विक्रेता होगा। चाहे उससे उसे 'व्यापार' के बढ़ने या मुनाफे में वृद्धि होने की सम्भावना न हो पर दुकान को चलाने में बहुत मदद मिलेगी। पुस्तकों के मध्य रहना, उनके प्रकाशकों से मिलना, उन्हें लिखना और सबसे अधिक, उन्हें खरीदना एक बहुत बड़े हर्ष व संतोष की बात है। अच्छे पुस्तक-विक्रेता व प्रकाशक वे ही होते हैं जो इस काम में पेशेवर दिलचस्पी लें और हर चीज को आर्थिक कसौटी पर ही न परखें।

चूँकि पुस्तकों व अन्य चीजों व माल की बिक्री में बहुत अन्तर है इसलिए हर विक्रेता के गुणों की सूची देना कठिन है। परन्तु सन्तोष, युक्ति, लोगों को समझ की क्षमता, उनका चरित्र, प्रामाणिकता व उत्साह आदि अच्छे गुण हैं। आइए, अब देखें कि एक अच्छे पुस्तक-विक्रेता को क्या 'करना' और क्या 'नहीं करना' चाहिए।

'करना'। ग्राहक पुस्तकों की जिन अलमारियों की ओर अथवा जिस विभाग में जाना चाहे उसे जरूर ले जाइए और एकाध क्षण ठहरिए ताकि यदि जरूरत हो तो उसकी कुछ मदद करें। महज हाथ से इशारा कर देना या जबानी बता देना अच्छे विक्रेता के लक्षण नहीं और न ही यह अच्छा है कि ग्राहक के पास गूँगे और हुदहुद की भाँति खड़े हो गए। उससे ग्राहक असमञ्जस में पड़ जायगा।

जब एक ग्राहक से आप सौदा कर रहे हों तो दूसरे को, जो प्रतीक्षा में खड़ा है भूल न जाइए बल्कि मुस्कराकर उनका स्वागत करना या कहना कि "जरा ठहरियेगा मैं अभी हाजिर हुआ" आदि बातें उसे शुरू से ही प्रभावित करेंगी। अच्छे विक्रेता का यही लक्षण है कि वह एक साथ कई ग्राहकों की ओर ध्यान दे। और इस काम में नम्रता बहुत सहायक होती है।

दुकान में या फोन पर आर्डर लेते वक्त नाम और पता ज़रूर नोट करिए। इसमें ज़रा-सी भी कमी बाद में परे[illegible] पैदा कर देती है।

अक्खड़ मिज़ाज या नितान्त भावुक ग्राहक के [illegible] सावधानी से पेश आइए। ग्राहक को भी बोलने का [illegible] दीजिए क्योंकि वह खुद को सुनाने में अधिक रुचि रखता है।

ग्राहक के सामने ही संदर्भों का प्रयोग कीजिए न [illegible] यह कि किसी कोने में चले गए। यदि ग्राहक यह देखे कि आप उसी का काम कर रहे हैं तो उसे अपना ठहर[illegible] बोझिल महसूस न होगा इसलिए संदर्भ-पुस्तकें दुकान[illegible] पास ही कहीं रखी रहनी चाहिएँ।

'नहीं करना'। ग्राहक से बात करते समय अथवा उसे [illegible] लिखते समय व्यापारिक भाषा व शब्दावली का प्रयोग हर्गिज़ न कीजिए।

इधर-उधर घूमिए नहीं और न ही किसी काम में बिल[illegible] कुल तल्लीन होइए क्योंकि आपने ज़रा भी यदि ध्यान [illegible] दिया तो ग्राहक बुरा मानेगा और सारा काम बिगड़ जाय[illegible]।

बहुत अधिक अच्छे बनने या चतुरता की बातें करने [illegible] कोशिश न कीजिए। क्योंकि ग्राहक वैसे ही दुकानों पर आते [illegible] डरते हैं, इसलिए उन्हें प्रोत्साहित करना विक्रेताओं का [illegible] काम है। उन्हें चाहिए कि वे ज़्यादा ऊँची-ऊँची और साहित्यि[illegible] बातें उनसे न करें।

जब दूसरे ग्राहक प्रतीक्षा में खड़े हों तो एक [illegible] अधिक बातें न कीजिए। ग्राहक की स्थिति या पोशाक [illegible] अनुसार अपनी नम्रता का स्तर ऊँचा-नीचा न कीजिए। [illegible] ग्राहक को ऐसा उत्तर न दीजिए कि वह उसे अखरे—[illegible] उसने कोई पुस्तक मांगी और वह आपके यहाँ न हो तो [illegible] न कहिए कि 'ओह वह तो बहुत पुरानी पुस्तक है' [illegible] 'नहीं, हम ऐसी किताबें नहीं रखते क्योंकि वे बिकती ही न[illegible]' या यह कि 'यह नाम तो मैंने कभी सुना ही नहीं।'

यही सूची और बढ़ाई जा सकती है पर इतना भी [illegible] मुफीद होगा, यदि इस पर अमल किया जाय। संक्षेप में [illegible] कि पुस्तक-विक्रेता को एक अच्छा मनोवैज्ञानिक होना चाहिए और विधियों व तरीकों का पूर्ण ज्ञान चाहिए। कौन पुस्तक कहाँ रखी है, स्टाक में है या नहीं, यह भी उसे ज्ञात होना चाहिए। यदि एक पुस्तक के लिए आप तीन-चार जगह ढूँढ़[illegible] फिरे तो ग्राहक पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। पुस्तकों के [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रोज़ाना आने वाले स्टाक पर दृष्टि रखने से व ...की व्यवस्था को ध्यान में रखने से हो जाता है।

...के समय सुझाव

...बुद्धिमतापूर्ण सुझाव ग्राहक को दिये जायँ तो बिक्री ...बढ़ाई जा सकती है। कुछ कर्मचारी तो विशेष तौर से ...माहिर हैं और इसीलिए वे अमूल्य हैं। थोपने और ...देने में अन्तर है। पहला तरीक़ा हानिकारक है जब ...दूसरा बहुत ही लाभदायक। यह काम पुस्तकें बेचने के ...तथा पुस्तकों के ज्ञान से ही होता है, किसी ईश्वरदत्त ...की इसमें आवश्यकता नहीं होती। मसलन, ग्राहक ...पुस्तक चाहता है वह आपके यहाँ नहीं है, उससे एकाध ...कीजिए तो आपको मालूम होगा कि वह उसी पुस्तक-...के लिए इच्छुक नहीं है बल्कि उसकी कहीं समीक्षा ...आया है और अपने किसी मित्र को जन्मदिवस पर उपहार ...चाहता है। अब वहाँ आप अपना सुझाव उसे दे सकते ...इसके लिए युक्तियुक्तता, बुद्धिमत्ता और मनोविज्ञान ...तथा पुस्तकों का ज्ञान होना चाहिए। सम्भव है आप ...अलमारियों से पड़ी पुस्तक उसे दें और वह पसन्द कर ले।

उदाहरणतया आपके यहाँ कोई विवाहित जोड़ा आया ...उनकी बातचीत से आपने जान लिया कि वे उपहारार्थ ...पुस्तकें खरीदना चाहते हैं। अब यदि आप उनसे यह भी जान ...कि उनके मित्रों अथवा कुटुम्बियों की क्या रुचियाँ हैं तो ...आसानी से पुस्तकें दिखा सकेंगे, बशर्ते कि अपने यहाँ ...स्टाक का आपको ज्ञान हो। लेकिन यह तो आसान है। ...तब है कि आप ज़रा से इशारे से भाँप जायँ और ...से फ़ायदा उठा लें।

मैं एक बार फिर दोहरा दूँ कि यह किताबें 'लादना' नहीं ...आप के सुझाव पर यदि ग्राहक किताब देखे और उसे वह ...जाय तो यह आपके सुझाव की बदौलत होगा। इसलिए ...देते समय यदि आप पुस्तक के बारे में बहुत-कुछ ...होंगे तो फ़ायदा रहेगा।

आपके यहाँ कुछ आने की पुस्तक खरीदने आया हुआ ...यदि कई रुपये की पुस्तकें खरीद कर ले जाता है तो ...कैसी खुशी होती है और उसे भी सन्तोष होता है। ...पुस्तक-विक्रय एक मित्रतापूर्ण व्यवसाय है, पर याद रखिए ...व्यवसाय है, कोई सामाजिक क्लब नहीं। यहाँ पर हर ...का महत्त्व होता है।

भारतीय कसीदे से परिचय के लिए विभिन्न नमूनों से युक्त, अपने विषय पर एकमात्र पुस्तक

भारतीय कसीदा

लेखक

जगदीश मित्तल : कमला मित्तल

भूमिका

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

सुरुचि सुमुद्रण की इस आदर्श पुस्तक में उच्च आफ़सेट काग़ज पर छपे कसीदे के २१५ नमूने, सर्वश्रेष्ठ इटालियन आर्ट पेपर पर प्राचीन भारतीय कसीदों के १८ हाफ़टोन चित्र, ७ रंगीन रेखा-चित्र और ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ्य सामग्री।

मजबूत जिल्द। नयनाभिराम तिरंगा कवर। आकार डबल डिमाई (९"×११")।

मूल्य १५) विशेष संस्करण, आर्ट पेपर पर, २०)

प्राप्ति स्थान

प्रकाशक :	मुख्य वितरक :
सुरुचि प्रकाशन 'कनक', हिमायतनगर हैदराबाद दक्कन	राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक का क्षेत्र

श्री राजनारायण अग्रवाल बी० ए०

लेखक आगरा की प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्था 'लक्ष्मीनारायण अग्रवाल' के अध्यक्ष हैं। पुस्तक-मुद्रण में लेखकों के हस्तक्षेप के विरुद्ध यह लेख ध्यान से पढ़ा जायगा।

आजकल कुछ गण्यमान्य लेखकों में एक नई प्रवृति का उदय हुआ है, जिसकी ओर ध्यान आकर्षित करना इस लेख का ध्येय है। बहुधा देखा जाता है कि कुछ ऐसे 'अति उत्साही' लेखक अपने प्रकाशक पर प्रकाशन-सम्बन्धी उन अंगों पर जिन पर साधारणतया निर्णय करना प्रकाशक का कर्तव्य व क्षेत्र है, अपना मत थोपने की अनधिकृत चेष्टा करते हैं। ऐसा करने में सम्भवत: वे बहुत ऊँचे, लब्धप्रतिष्ठ लेखकों की मान-मर्यादा का आभास करते हों। पुस्तक में दिलचस्पी तो स्वाभाविक ही है। सम्भव है किसी अंश तक पुस्तक की छपाई व गेट-अप आदि की दृष्टि से उसके वे मत सहायक हों पर जब वे सुझाव की भावना को उल्लंघन कर आग्रह का रूप धारण कर लेते हैं। तो क्या यह प्रकाशक के लिए तबियत बिगाड़ने वाली बात नहीं है?

आइए, अब कुछेक उन अङ्गों पर विचार करें जिन पर उक्त लेखकों द्वारा अपना मत थोपने की चेष्टा की जाती है। अक्सर लेखक इस बात पर आग्रह करते देखे जाते हैं कि उनकी पुस्तक फलाँ-फलाँ प्रेस-विशेष में ही छपने दी जाय। ऐसा करते समय वे तनिक भी अनुमान नहीं लगा सकते कि प्रकाशक को प्रेस निश्चित करते समय कितनी बातों का ध्यान रखना पड़ता है। उनके मत में किसी भी प्रेस से छपाई को कह देना व कार्य सम्पन्न करा लेना सरल काम है। छपाई की दरें तो निश्चय ही इसमें सर्वोपरि होती हैं पर साथ ही उसकी अन्य सहूलियतों को भी देखना पड़ता है। हो सकता है जिस स्थान-विशेष में वह प्रेस स्थित हो वहाँ कागज अथवा प्रूफ-संशोधन या जिल्दबन्दी की कोई सन्तोषजनक सहूलियत न हो। अथवा प्रकाशक के स्टाक में कागज हो और उस स्थान पर भेजने में व्यय अधिक पड़ता हो। अतिरिक्त यह भी सम्भव है कि भुगतान के मद्दे किसी विशेष से उक्त प्रकाशक को सुविधा मिलती हो, आदि-आदि पर कभी-कभी तो बात यहाँ तक अटक जाती है कि पुस्तक में कागज विशेष ही लगना चाहिए जिसका विशेष हो, चाहे वह उस समय प्राप्य हो अथवा नहीं।

फिर प्रश्न पुस्तक के मूल्य निर्धारित करने का आ... इस पर भी कुछेक लेखक अपना मत थोपते दीख पड़... लेखकों का एक वर्ग तो प्रकाशक पर इस बात का भार... दीख पड़ता है कि वह अपने निर्धारित मूल्य में वृद्धि... ताकि साथ ही रायल्टी में भी वृद्धि हो जाय। और... वर्ग उस पर यह बल देता है कि वह उसमें कटौती करे... पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र बिक जाय चाहे प्रकाशक को... बचत हो अथवा नहीं। मूल्य अथवा कमीशन की... निश्चित करते समय भी प्रकाशक को अनेक बातों को... में रखना पड़ता है। लागत तो देखनी ही होती है... लेखकों को आभास भी नहीं होता। तत्पश्चात् ... की सम्भावी संख्या, प्रकाशन की कोटि, अन्य तुल्य ... का मूल्य अथवा कमीशन की दरों को देखना पड़... इसका ज्ञान मेरी तुच्छ राय में लेखक की अपेक्षा प्रकाशक... अधिक होना अपेक्षित है। उसे होना भी चाहिए क्योंकि... इन सबके निकट सम्पर्क में रहता है व उसे बाजार की... का बोध रहता है।

पुस्तक के टाइटिल के चौथे पृष्ठ पर अथवा अन्य...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…र दिये गए विज्ञापन के मामले को भी यूँ ही नहीं …जाता। प्रकाशक से बहुधा यह आपत्ति की जाती है …सी स्थान-विशेष पर दिया गया प्रकाशक की अन्य …ों का विज्ञापन लेखक की अनुमति के बिना क्योंकर दिया …। अथवा लेखक की अन्य कृतियों (चाहे वे जहाँ से भी …हों) के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक का विज्ञापन न दिया …। प्रकाशक क्या इस बात में भी स्वतन्त्र नहीं कि अपनी …ों में विज्ञापन का रूप निर्धारित कर सके। इसके लिए …लेखक की पूर्व अनुमति अपेक्षित है क्या?

…हस्तक्षेप किये जाने वाले अङ्गों का एक और उपहासास्पद …नेक उदाहरण प्रेषित है। कुछ व्यावसायिक संस्थाएँ …ना एक ट्रेड मार्क किसी तस्वीर, मूर्ति अथवा ठप्पे के रूप …'अपना' लेती हैं। तत्पश्चात् इस चिह्न को भरपूर प्रचारित …ती हैं व सन्मान की दृष्टि से देखती हैं। उनकी शिष्ट …ता उसमें निहित होती है, उतनी ही जितनी कि एक …ाही की अपने बटेलियन के चिह्न में। प्रकाशन संस्थाएँ …े चिह्नों को पत्र-व्यवहार में व प्रकाशनों में भी छापती हैं। …ई लेखक इस पर भी आपत्ति लेते दीख पड़ते हैं कि वह उनकी पुस्तक पर न छापा जाय।

विनोद रस्तोगी कृत

आजादी के बाद

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, यथार्थवादी पृष्ठभूमि पर लिखित एक-दृश्य नाटक

पुरुष का पाप

नारी की पृष्ठभूमि पर आधारित ९ एकांकियों का सुन्दर संग्रह!

सम्मतियाँ

दोनों में आपकी लेखनी सफल रही है। बधाई!

—राहुल सांकृत्यायन

नाटक लिखने की आपमें विलक्षण प्रतिभा है।

—रामनरेश त्रिपाठी

प्रत्येक का मूल्य १॥) डाक व्यय अलग

पुस्तकालयों तथा पुस्तक विक्रेताओं को विशेष सुविधा!

शीघ्र ही आर्डर दें। दूसरे संस्करण भी समाप्तप्राय हैं।

कमला प्रकाशन

७/१४०, स्वरूपनगर, कानपुर।

पुस्तक की नमूनार्थ प्रतियों के वितरण में भी कुछ लेखक प्रतिबन्ध लगाते हैं जिसका रूप होता है कि किसी व्यक्ति-विशेष को उनकी पुस्तक क्यों दी गई अथवा अनुमति के अभाव में नमूनार्थ पुस्तकें क्यों भेजी गईं, आदि आदि। क्या प्रकाशक में इतनी भी क्षमता नहीं कि वह यह निर्धारित कर सके कि नमूने की प्रति कहाँ देना उपयुक्त है।

ऐसे कितने ही दृष्टान्त दिये जा सकते हैं जहाँ प्रकाशन-विधि के इन अंगों पर प्रकाशक पर प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं अथवा उस पर अनधिकृत दबाव डाला जाता है। यह मैं पहले ही कह चुका हूँ कि सम्भव है कि पुस्तक के हित में वे सहायक हों। यह भी सम्भव है कि किसी विशेष मामले में प्रकाशक के निर्णय की अपेक्षा लेखक का मत ही ठीक हो, पर प्रश्न यह है कि जब इस प्रकार के मत सुझाव न रहकर हुक्मनामे का रूप धारण कर लेते हैं तो क्या वह प्रकाशक के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं है? क्या प्रकाशक, यदि सचमुच वह प्रकाशक है और अपने व्यवसाय को समझता है, इन मामलों में निर्णय लेने की क्षमता नहीं रखता? क्या वह निरा मिट्टी का लोंदा है अथवा उसका कार्य केवल रुपया लगाने का है? ऐसे प्रकाशक जो सचमुच केवल अपने रुपये लगाने का कार्य करते हैं, मैं समझता हूँ, प्रकाशकों की कोटि में नहीं आते। वे यदि किसी कोटि में आते हैं तो 'महाजन' की जिसका कार्य केवल अपना रुपया लगाना होता हो, शेष से उसे प्रयोजन ही नहीं और न उसमें क्षमता ही होती है। पाण्डुलिपि को भली प्रकार तैयार करने व प्रकाशक को सौंपने के उपरान्त मेरे मतानुसार लेखक का नब्बे प्रतिशत कार्य समाप्त हो चुकता है। इसके बाद पुस्तक के लिए कागज का चयन, छपाई, गेट-अप, मूल्य-निर्धारण, बिक्री की व्यवस्था, नमूने की प्रतियों का वितरण आदि प्रकाशक के क्षेत्र की चीजें हैं। इनमें यदि सौभाग्य से लेखक किसी रूप से योग दे सके तो सोने में सुहागा वाली बात चरितार्थ होगी, पर इस क्षेत्र में लेखक का पदार्पण परामर्शदाता के रूप में होना समीचीन जान पड़ता है, न कि अधिकारी के रूप में। उसके परामर्श यदि प्रकाशक खपा सकें तब तो सर्वोत्तम, पर विरुद्ध दशा में उसका रुष्ट होना, प्रतिकार भावना लाना अथवा कुछ अन्यथा सोचना कुछ भला नहीं जान पड़ता; उससे उलझनें बढ़ेंगी ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

—यूनिवर्सिटी कॉलेज आफ लॉ लाइब्रेरी, नेल्लोर।
—राजा दोराइसिंहम मैमोरियल कॉलेज लाइब्रेरी, शिवगंगा।
—लेडी डोक कॉलेज लाइब्रेरी, मदुराइ।
—लेडी विलिंगडन ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, ट्रिप्लीकेन, मद्रास।
—लोयोला कॉलेज लाइब्रेरी, कैथड्रल, मद्रास ६।
—आई० एम० सी० ए० कॉलेज आफ फिजीकल एजूकेशन लाइब्रेरी, सइदापेट।
—विमेन्स क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, कैथड्रल, मद्रास।
—विरुधुनगर हिन्दू नादर्स सेंथीकुमार नादर कॉलेज लाइब्रेरी, विरुधुनगर।
—विवेकानन्द कॉलेज लाइब्रेरी, मईलपुर, मद्रास—४।
—वीरशैव कॉलेज लाइब्रेरी, बेल्लारी।
—वूरीज कॉलेज लाइब्रेरी, नेल्लोर (नार्थ अरकाट)।
—वेंकटागिरि राजा कॉलेज, लाइब्रेरी, नेल्लोर।
—वेद एण्ड संस्कृत कालेज लाइब्रेरी, नेल्लोर।
—श्री भावनारायण स्वामी संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, पोनूर, तेनाली (गुण्टूर)।
—श्री रामकृष्ण मिशन विद्यालय टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, कोयम्बटोर।
—श्री वेंकटेश्वर कॉलेज लाइब्रेरी, तिरूपती।
—श्री सरदु निकेतनम लाइब्रेरी, ब्रॉडीपेट, गुंटूर।
—श्री सी० आर० रेड्डी कॉलेज लाइब्रेरी, एलूरू।
—स्टेला मारिस कॉलेज लाइब्रेरी, मईलपुर, मद्रास।
—स्टैनले मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, मद्रास।
—सर ठिअगरायी कॉलेज लाइब्रेरी, वाशरमैनपेट, मद्रास।
—सर सुब्बान्नय्या एण्ड नारायण कॉलेज लाइब्रेरी, नरसराओपेट।
—सराह टकर कॉलेज लाइब्रेरी, पलायमकोट्टाइ।
—सलेम कॉलेज लाइब्रेरी, सलेम।
—सीतालक्ष्मी रामा स्वामी कॉलेज लाइब्रेरी, तिरुचिरापल्ली।
—सेक्रिड हार्ट कॉलेज लाइब्रेरी, ठेवरा (एर्नाकुलम)।
—सैंट एगनस कॉलेज लाइब्रेरी, मंगलोर।
—सैंट एन ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, मंगलोर।
—सैंट एलबर्ट्स कॉलेज लाइब्रेरी, एर्नाकुलम।
—सैंट एलोसिअश कॉलेज लाइब्रेरी, एर्नाकुलम।
—सैंट क्रिस्टोफर्स ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, वेपेरी, मद्रास।
—सैंट जॉन्स कॉलेज लाइब्रेरी, पलायमकोट्टा।
—सैंट जेवियर्स कॉलेज लाइब्रेरी, पलायमकोट्टाइ।
—सैंट जेवियर्स ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, पलायमकोट्टाइ।
—सैंट जोसफ कॉलेज लाइब्रेरी तिरूचिरापल्ली।
—सैंट जोसफ ट्रेनिंग कॉलेज फार विमेन लाइब्रेरी, गुण्टूर।
—सैंट टेरेसा कॉलेज लाइब्रेरी, एर्नाकुलम।
—सैंट मेरीज कॉलेज लाइब्रेरी, ट्यूटिकोरिन।
—हिन्दू कॉलेज लाइब्रेरी, गुण्टूर।
—हिन्दू कॉलेज लाइब्रेरी, मसूली पटम।
—होली क्रॉस कॉलेज लाइब्रेरी, तिरूचिरपल्ली।
—लक्ष्मीनारायण इंस्टीट्यूट आफ टैकनालोजी लाइब्रेरी, नागपुर।
—विदर्भ महाविद्यालय लाइब्रेरी, अमरावती।
—वैटिरिनरी कॉलेज लाइब्रेरी, जबलपुर।
—श्री दादा साहब धनवते नेशनल कॉलेज लाइब्रेरी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ली।
ओंकारेश्वर कॉलेज लाइब्रेरी, खंडवा।
शिवाजी कॉलेज लाइब्रेरी, शिवाजी नगर, मोरसी
रोड, अमरावती।
...ई आर्ट्स कॉलेज लाइब्रेरी, अकोला।
...कॉलेज फार विमन लाइब्रेरी, नागपुर।
...शारी महाविद्यालय लाइब्रेरी, जबलपुर।
...री लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, जबलपुर।
...र कॉलेज लाइब्रेरी, नागपुर।

◈ ◈ ◈

–प्रकाशक निम्न पुस्तकालयों का नाम भी अपनी सूचियों
... कर लें :
–गांधी सार्वजनिक पुस्तकालय, अजवाँ, पो० अजवाँ
ना)।
–ज्ञान प्रकाश पुस्तकालय, पत्थरगटी, हैदराबाद
...)।

...रती प्रकाशन भागलपुर–२ (बिहार)
के दो अमूल्य प्रकाशन
ग्रामीण-पुस्तकालय संचालक-कला
पर एकमात्र पुस्तक
पुस्तकालय : क्यों और कैसे ?
लेखक—श्री अनुज शास्त्री
[भूतपूर्व सम्पा०—निर्माण, नवसंदेश, योगी, एवं
अध्यक्ष—सिंहभूम जिला पुस्तकालय संघ]
मूल्य—डेढ़ रुपये मात्र
एवं
प्रगतिशील कहानियों का संग्रह
इन्सान की लाश
ले०—श्री विष्णुकिशोर 'बेचन', बी० ए०
(सम्पादक—भारती)
मूल्य—१=) मात्र
आज ही लिखें—
पुस्तकायन, चौक, मुंगेर

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

देहली के प्रमुख प्रकाशक

: : :

राजकमल प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स

राजपाल एण्ड सन्स

: : :

के हिन्दी - प्रकाशन

क

क म ला

ला

टाइप फाउण्ड्री

द्वारा निर्मित टाइपों में छपते हैं।

हिन्दी मराठी गुरुमुखी अंग्रेजी १० से

७२ प्वाइण्ट तक के कमला टाइपों का

बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

हिन्दी पुस्तक प्रकाशन तथा विक्रय को प्रगति देने, उसमें एक विधि लाने तथा उसके समक्ष उपस्थित कठिनाइयों पर विचार करने के लिए कुछ प्रमुख प्रकाशकों का एक **सम्मेलन** दिल्ली में १ तथा २ मई १६५४ को होने जा रहा है। इस विषय में इस पत्र में ही अनेक महानुभावों ने बहुत से सुझाव तथा कार्य की विधियाँ प्रस्तुत की हैं। इन सब विचारों को दृष्टि में रखकर ही **सम्मेलन** में विचार-विमर्श होगा।

भारती भण्डार, प्रयाग के श्री वाचस्पति पाठक इस **अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ** के प्रस्तावित **सम्मेलन** के संयोजक हैं तथा निमंत्रण-पत्र हिन्दी भवन के श्री धर्मचन्द नारङ्ग, आत्माराम एण्ड सन्स के श्री रामलाल पुरी, सस्ता साहित्य मण्डल के श्री मार्तण्ड उपाध्याय, राजपाल एण्ड सन्स के श्री विश्वनाथ, इण्डियन पब्लिशिंग हाऊस के श्री कन्हैया-लाल मलिक तथा राजकमल प्रकाशन के श्री ओंप्रकाश के हस्ताक्षरों से भेजा गया है। इस अवसर पर सब प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता महानुभावों से, जो अब तक किसी कारणवश अपने विचार न लिख सके, अनुरोध है कि अपने सुझाव यथाशीघ्र श्री वाचस्पति पाठक के नाम से **प्रकाशन समाचार** के पते से भेजें जिससे सम्मेलन लाभ उठा सके।

◆ ◆ ◆

श्री श्यामसुन्दर 'अशान्त', कोशी कालेज, खगड़िया (मुंगेर) लिखते हैं—"मेरे पास कुछ मनोरंजक लेखों, कहानियों और शब्द-चित्रों का एक संग्रह है। जिस प्रकाशक को इन शब्दचित्रों, कहानियों और लेखों का संग्रह प्रकाशित करना हो, वे मेरे पते पर पत्र-व्यवहार करें।"

◆ ◆ ◆

'सहकार भारती' की ओर से (इस संस्था की चतुर्थ वर्षगांठ, २६ जनवरी १६५४ के दिन) एक 'अखिल भारतीय कहानी प्रतियोगिता', राष्ट्रभाषा हिन्दी में आयोजित करने का निश्चय किया गया है। श्रेष्ठ कहानि[यों को] प्रकाशित कराने के अतिरिक्त पुरस्[कृत] किया जायगा। प्रथम पुरस्कार क्रमशः १०१ रुपये और द्वितीय पुरस्कार ५[१] का होगा जो धनराशि के रूप में सर्वश्रेष्ठ दो कहानि[यों पर] दिया जायगा। इसके अतिरिक्त २० अन्य छोटे पुरस्का[र] पुस्तकें भी क्रमागत श्रेष्ठ कहानियों पर दी जायँगी।

प्रतियोगिता में भाग लेने वालों का नाम, [पता,] निवास-स्थान का पूर्ण विवरण (जो कि कृतियों से पृथक् [हो]) तथा प्रवेश शुल्क सहित उनकी कहानियाँ—श्री मंत्री, [सहकार] भारती, पोस्ट बॉक्स १०३, राँची (बिहार) के पास [...] अप्रैल, १६५४ तक पहुँच जानी चाहिएँ। प्रति कहानी [के] साथ एक रुपये का पोस्टल आर्डर या 'रिप्लाई कूपन' [भेजना] अनिवार्य है।

◆ ◆

३ मार्च १६५४ को समस्तीपुर (दरभंगा) में [...] 'जनक-स्मृति समारोह' मनाया गया। इस उत्सव का समा[पन] मान्य श्री सत्यनारायणसिंह जी, मंत्री संसदीय विभाग, [केन्द्रीय] सरकार, ने किया। इस अवसर पर **किरण कुञ्ज**, समस्ती[पुर ने] कवि श्री अरुण द्वारा लिखित **विदेह** नाम का काव्य प्र[काशित] किया जिसके विषय में श्री सत्यनारायणसिंह जी ने [कहा] "मिथिला के उदीयमान यशस्वी अरुण का 'विदेह' [...] राजर्षिजनक की अर्चना में श्रद्धा की सुरभिपूर्ण श्रञ्जलि है।"

◆ ◆

नागरी भण्डार, बीकानेर, के द्वारा शिक्षा और [...] **विज्ञान** नाम के द्वैमासिक पत्र का प्रकाशन इस मास से [...] हो रहा है। पत्र में इस विषय से सम्बन्धित लेख हिन्दी [और] अंग्रेजी, दोनों में रहा करेंगे; पृष्ठ-संख्या लगभग १०० [...] पत्र का सम्पादन श्री प्रयाग मेहता तथा उदय पारीख [...] वार्षिक मूल्य १२) तथा एक अंक का मूल्य २) रहेगा।

◆ ◆

श्री इण्डिया आर्ट प्रेस (३७३ अपर चितपुर रोड, [कलकत्ता] ७) अप्रैल मास से **लहर** नाम के कहानी-प्रधान [मासिक] पत्र का प्रकाशन आरम्भ कर रहे हैं। वार्षिक मूल्य ५) [तथा] एक प्रति का ।।) है। पृष्ठ-संख्या १०० के लगभग र[हेगी]।

◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ता मण्डल द्वारा संचालित, भारतीय विद्यापीठ (... पायवाड़ी, गिरगाम, बम्बई ४) के कार्यकारी परीक्षा-... सूचित करते हैं कि अप्रैल १९५४ की परीक्षाओं के बाद ...पीठ की हिन्दी-परीक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों में परिवर्तन ... विचार है। जानकारी के लिए वर्तमान पाठ्य क्रम ...पत्रिका जो प्रकाशक मंगवाना चाहें, मंगवा लें।

...शकों से प्रार्थना है कि अपनी प्रकाशित पुस्तकों में से ...विद्यापीठ के पाठ्य-क्रम के अनुकूल समझते हों, उनकी ...प्रतियां शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। सिर्फ़ ऐसी ...कें भेजें जिन की काफ़ी प्रतियाँ प्रकाशकों के पास अथवा ...ओं के पास हों और जो पाठ्य-क्रम में लग जाने के बाद ...म दो साल तक 'अप्राप्य' न हो जायँ।

...रतीय विद्यापीठ की परीक्षाएँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ... हिन्दी विद्यापीठ, देवघर, अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विद्यापीठ, ..., मध्यप्रदेश सरकार, सुरक्षा-विभाग के सदर्न कमाण्ड ...र्टर्स, पंजाब विश्वविद्यालय और बम्बई सरकार के शिक्षा-... द्वारा मान्य हैं। इन परीक्षाओं में हर साल लगभग तीन हजार परीक्षार्थी शामिल होते हैं।

◆ ◆ ◆

हिन्दी भाषा प्रसार परिषद्, सांची विद्यापीठ (ज्ञान मन्दिर, नीमच छावनी) के सूचना मंत्री लिखते हैं कि परिषद् की प्रारम्भिक, प्रवेश, विशारद व मनीषी परीक्षाओं का पाठ्य-क्रम नये वर्ष के लिए निर्धारित करना है। उस में अद्यतन-साहित्य का समावेश करने वाले हैं। निम्न-विषयों की पुस्तकों की विशेष आवश्यकता है:

१—पुस्तकालय विज्ञान। २—अन्तर्प्रान्तीय भाषा-शिक्षण। ३—औद्योगिक विषय। ४—सामान्य ज्ञान एवं विज्ञान।

जो प्रकाशक अपने प्रकाशन एतदर्थ प्रस्तुत करना चाहें, वे पत्र व्यवहार करें।

◆ ◆ ◆

भारत में सामाजिक कल्याण व सुरक्षा के बारे में इस पत्र के पिछले अंक में **फरवरी मास के प्रकाशन** नाम के स्तम्भ में जो सूचना छपी थी, उसमें भूल से 'सामाजिक' के स्थान पर 'मासिक' तथा बंसल ब्रदर्स (प्रकाशक) के स्थान पर 'बरूल ब्रदर्स' छप गया है। पाठक नोट कर लें।

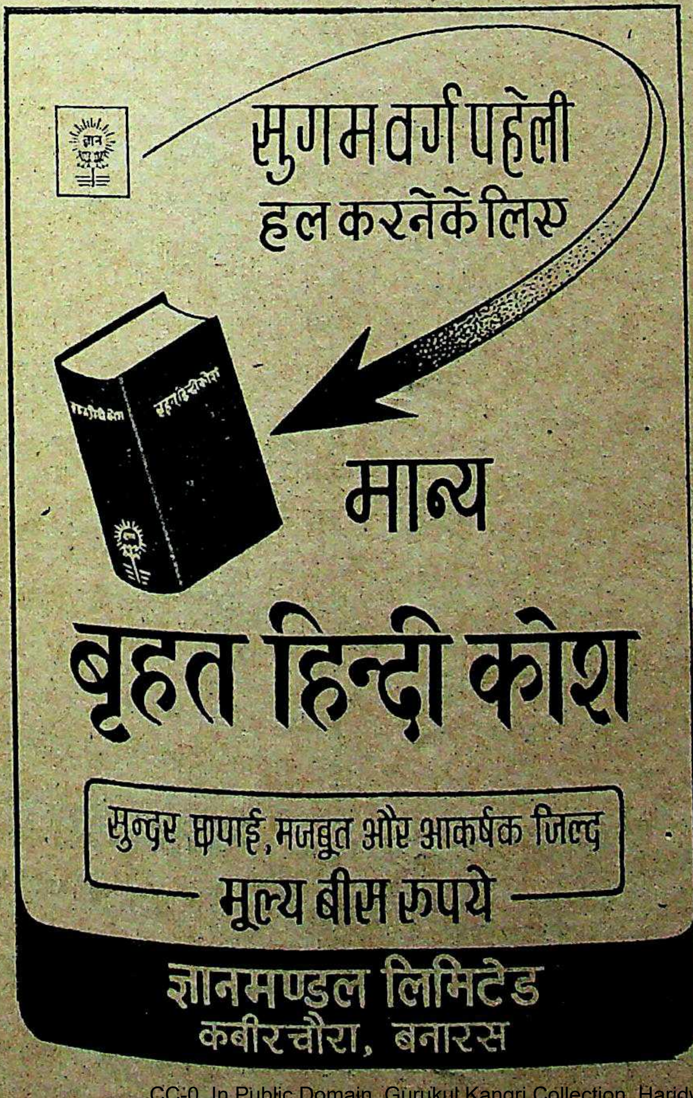

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

"अखिल भारतीय प्रकाशक संघ पर मेरी अशेष शुभाभिलाषाएँ स्वीकार कीजिए। मैं स्वयं अपनी कई पुस्तकों का लेखक और प्रकाशक रहा हूँ। साहित्य-पुस्तकों के प्रकाशन के कार्य दिनानुदिन दुरूह होते जा रहे हैं। प्रकाशक अच्छी पुस्तकों की खोज में कम-अधिक लेखक की प्रसिद्धि पर ध्यान देने लग गए हैं। नये लेखकों की प्रकाशित पुस्तकों की खपत का कोई सुप्रबन्ध नहीं दिखाई देता।···संघ अवश्यमेव सुप्रयत्न करके लाभकारी दिशा का संकेत करेगा। लेखक और प्रकाशक के सहयोग की पवित्र भावनाएँ रहें, तभी सत् साहित्य का प्रचार प्रसार सम्भव हो सकेगा। आप यथाशीघ्र संघ के कार्यों में प्रगति लाएँ।"

आचार्य 'सारंग' शास्त्री,
हिन्दी विभाग, एस० पी० एस० सेमिनरी,
सोनपुर, सारन (बिहार)।

◈ ◈ ◈

"हमारी समिति (अंडेमान-निकोबार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पोर्ट ब्लेअर) ने अंडेमान के भूगोल की एक पुस्तक लिखकर तैयार की है। आजतक इन द्वीपों के भूगोल की कोई भी पुस्तक हिन्दी में नहीं छपी है।···यहाँ भूगोल की पुस्तक का सर्वथा अभाव था।···अभी राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद यहाँ पधारे थे। समिति द्वारा उनके सम्मान में किये गए स्वागत-समारोह में भाषण देते हुए राष्ट्रपति ने हमारी पुस्तक के सम्बन्ध में कहा कि अंडेमान के छात्रों को तो यहाँ का भूगोल सीखने को मिलेगा ही, भारत में भी इन द्वीपों-सम्बन्धी ज्ञान इस पुस्तक द्वारा होगा। भारत में इन द्वीपों के बारे में लोग बहुत कम जानते हैं और वे अधिकतर इन्हें 'काला पानी' यानी कारागृह के रूप में ही जानते हैं। भारत के एकमात्र समुद्रपार प्रदेश, बंगाल की खाड़ी में राष्ट्र के प्रहरी स्वरूप स्थित, प्राकृतिक सौन्दर्य से ओतप्रोत अंडेमान प्रदेश का ज्ञान हमारे लोगों को बहुत कम है।···

"कृपया अपने पत्र में यथास्थान इसके विषय में घोषणा करें और इस प्रकार हमारे कार्य में सहायता दें।"

बालकृष्ण गुप्त,
संयुक्त मन्त्री।

हमारे प्रकाशन

श्री कृष्णकुमार सिन्हा एम. ए. का सा[हित्य]

१. गुप्तजी की यशोधरा
२. प्रसादजी का अजातशत्रु
३. प्रसादजी का चन्द्रगुप्त
४. प्रसादजी की ध्रुवस्वामिनी
५. हिन्दी कवियों की आलोचना
६. ब्रजभाषा के नवरत्न
७. सत्य हरिश्चन्द्र नाटक
८. प्रेमचंद और उनकी निर्मला
९. हरिऔध और उनका प्रिय प्रवास
१०. आधुनिक कवि पंत

प्रो० अर्जुन चौबे काश्यप की रचनाएँ

११. सामान्य मनोविज्ञान (दो भाग)
(उत्तर प्रदेश-राज्य द्वारा पुरस्कृत)
१२. संक्षिप्त सामान्य मनोविज्ञान
१३. बचपन-विकास का संक्षिप्त मनोविज्ञान
१४. विश्व के इतिहास और सभ्यता का परि[चय]

प्रो० लक्ष्मणप्रसाद सिन्हा की कृति

१५. समाजवाद बनाम पूँजीवाद

प्रो० रामेश्वरप्रसाद लिखित

१६. बुक-कीपिंग

प्रकाशक
राजराजेश्वरी पुस्तकालय
पो० बाक्स १६, गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तक-परिचय

तीय कसीदा : हैदराबाद के **सुरुचि प्रकाशन** ('कनक', नगर) ने भारतीय कसीदे का परिचय और उसके का यह उत्कृष्ट संस्करण प्रकाशित किया है। डॉ० रण अग्रवाल ने पुस्तक की पाण्डित्यपूर्ण भूमिका क-संस्कृति के उद्धार के लिए इस भारतीय-कला की ली और रूपों की खोज और संग्रह के महत्त्व का किया है। पुरातन काल में वस्त्रों में विविध आकृ- 'स्थापक' (ठप्पा) से, 'वानकर्म' से अर्थात् बुनते समय विध धागों के उपयोग से, बाँधनू की रंगाई के द्वारा 'सूचीकर्म' (सुईकारी) से उत्पन्न की जाती थीं। सूच्चीकर्म ही कसीदा है।

पुस्तक के लेखक व चित्रकार श्री **जगदीश मित्तल** तथा कमला मित्तल हैं। एक अध्याय में भारतीय कसीदे का और विकास दिया गया है। कसीदे की विशेष शैलियों लेख (काश्मीरी कसीदा, पंजाब की फूलकारी, उत्तर- और दिल्ली का रेशमी कसीदा, सिन्ध, कच्छ और वाड़ का कसीदा, उत्तर-प्रदेश की चिकनकारी, कर्नाटक ती, कारचोबी काम, काँथा, आसाम की कच्ची कढ़ाई, के रूमालों के मुरमुरे के टाँके, बनजारों का कसीदा, और सिरसा की कट्टम की कढ़ाई) दूसरे अध्याय में भारतीय टाँकों का विवेचन है तथा रेखा-चित्रों की से उन्हें समझाया गया है। रंग और अन्य उपयोगी अलग से एक अध्याय है।

पुस्तक में आर्ट पेपर पर १७वीं, १८वीं तथा १९वीं के कसीदा के सुन्दर नमूनों के १८ चित्र तथा देश के कसीदों के २१५ डिजाइन (तरह : भाँति) ५-६वीं से सदी तक के नमूनों के आधार पर दिये गए हैं। के उद्गम में उनके प्राप्ति-स्थान तथा काल का संकेत किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक कसीदाकारी में भारतीय रूपों के पुनरुत्थान का अनुपम प्रयास बनकर अभिनव ढंग से प्रकाशित हुई है। बढ़िया कागज पर छपी हुई, ९"×११½" आकार की ११६ पृष्ठों की पक्की, तीन रंगों की जिल्द की इस पुस्तक का मूल्य १५) है। मुख्य वितरण राजकमल प्रकाशन के द्वारा हो रहा है।

◈ ◈ ◈

भरतमुनि कृत **नाट्य-शास्त्र** के पहले तीन अध्यायों का मूल, भाषानुवाद तथा समीक्षा **साहित्य-निकेतन**, कानपुर से प्रकाशित हुई है; अनुवादक तथा समीक्षक हैं प्रो० भोलानाथ शर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, बरेली कालेज, बरेली। जैसा कि 'निवेदन' में कहा गया है, यह पुस्तक एम० ए० के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत की गई है। लेखक का विचार इसी शैली पर समग्र नाट्य-शास्त्र का अनुवाद करने का है।

हिन्दी में **नाट्यशास्त्र** के इस अनुवाद का स्वागत किया जायगा। १६–पेजी क्राऊन साइज के ११२ पृष्ठों की इस अजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।) है।

◈ ◈ ◈

शारदा प्रकाशन, भागलपुर-२, ने **विश्लेषण** नाम से श्री इलाचन्द्र जोशी के १८ निबन्धों का संग्रह प्रकाशित किया है; विषय हैं : उपेक्षिता उर्मिला, प्रसादजी की काव्यधारा और उसकी परिणति, कामायनी, प्रसादजी का कथा-साहित्य और कंकाल, प्रेमचन्दजी का व्यक्तित्व और साहित्य, जीवन-विजयिनी महादेवी, आधुनिक हिन्दी-साहित्य में मनोविज्ञान, साहित्य में भूत, वर्तमान और भविष्य, विश्व-साहित्य में मनोविज्ञान, युग समस्याएँ और साहित्यकार, समस्त कलाओं का मूल उत्स, कला में सौन्दर्य का आदर्श, साहित्य में प्रेमतत्त्व, वर्तमान हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, साहित्य में विषाद-रस, छोटी कहानी की विशेषता, मेरे उपन्यास। १६ पेजीक्राऊन साइज के १७२ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) है।

◈ ◈ ◈

शारदा प्रकाशन, ने ही आचार्य चतुरसेन शास्त्री के ऐतिहासिक उपन्यास **आलमगीर** का प्रकाशन किया है। उपन्यास का नायक औरंगजेब है तथा काल १७वीं सदी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरार्ध। पृष्ठसंख्या ३७०, आकार १६—पेजी क्राउन, मूल्य ५।।।=)।

◈ ◈ ◈

स्वास्थ्य सन्देश प्रकाशन, कालपी (उत्तर प्रदेश) ने लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ० सुरेन्द्रनाथ गुप्ता द्वारा लिखित शिशु आहार-व्यवस्था पर **आपके बच्चे की खुराक** नाम की पुस्तक प्रकाशित की है। पुस्तक में भोजन की आवश्यकता और उसके मूल अवयव, स्तनपान, स्तनपान-सम्बन्धी कठिनाइयाँ, मां के दूध के अतिरिक्त अन्यान्य खाद्य-पदार्थ, कृत्रिम पोषण, स्वस्थ शिशु के लिए कृत्रिम पोषण, स्वस्थ शिशु के लिए मिश्रित आहार, अपरिपक्व शिशु की आहार-व्यवस्था, जुड़वां बच्चों की आहार-व्यवस्था, बच्चों में मलावरोध, वमन, अतिसार, परिशिष्ट, पारिभाषिक शब्दावली शीर्षक अध्याय हैं। १४ चित्र भी हैं। १८० पृष्ठ, क्राउन आकार मूल्य ३।=) है।

◈ ◈ ◈

बंगला की आधुनिक श्रेष्ठ कहानियाँ नामक पुस्तक अखण्ड भारत प्रकाशन, ३१बी, महाराजा टैगोर रोड, ... ३१ द्वारा प्रकाशित और मृदुला देवी द्वारा सम्पादित ... के १५ श्रेष्ठ कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह है। पुस्तक के अन्त में श्री नारायण झा द्वारा ... का परिचय भी प्रस्तुत किया गया है। यह प्रयास ... सराहनीय है। डिमाई साइज के २२४ पृष्ठ की सुन्दर ... सुरुचिपूर्ण आवरण तथा मुद्रण से संयुक्त यह पुस्तक ... से ३।।) में मंगाई जा सकती है।

◈ ◈ ◈

भारत में सामाजिक कल्याण और सुरक्षा ... रघुराज गुप्त एम० ए० की हिन्दी में अपने विषय की ... मात्र रचना है। पुस्तक में सामाजिक कल्याण, ... पुनर्निर्माण, सामाजिक सुधार, सामाजिक कानून, ... शिक्षा का स्थान, शिक्षा-सुधार, भारत में शिक्षा-संस्था ... विकास और उसकी समस्याएँ, बुनियादी शिक्षा आदि ... जिक शिक्षा-सम्बन्धी विविध पहलुओं पर व्यापक ... विचार किया गया है। पुस्तक विविध विश्वविद्यालय ...

बुनाई के नमूने

पुस्तक का नवीन द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है। ५० ऊनी बुनाई के नमूनों के बनाने की सम्पूर्ण विधि भी सरल भाषा में दी गई है। पुस्तक पूर्णतया सचित्र है। पुस्तक का प्रत्येक घर में होना आवश्यक है। मूल्य केवल चार रुपये। वी० पी० से ४।।=)

नई बुनाई

पैम्फलेट नं० १ में (१) पुरुषों के लिए जरकिन (२) पुरुषों के लिए दो सलाई का मोजा (३) छोटे बच्चे के लिए मैटिनी कोट, तथा (४) चार से ६ वर्ष तक के बालक के लिए पूरी बाँह की जरसी, इन चार वस्त्रों के बुनने की पूरी विधि दी गई है।। मूल्य ।।) वी० पी० से १), दोनों वी० पी० से ५=)

आरसी

सचित्र पारिवारिक पत्रिका

विशेषकर स्त्री उपयोगी पत्रिका, जिसमें प्रति मास ... कढ़ाई, सिलाई, पाक पर नियमित लेख रहते हैं। ... कविता, कहानी, हास्य, सिनेमा पुस्तक-परिचय आदि ... समस्त परिवार के लिए मनोरंजक तथा उपयोगी। ... वार्षिक; वी० पी० से ३।।); नमूने की प्रति।=)

प्रकाशकों, विक्रेताओं तथा लेखकों की सुविधा के ... आरसी में केवल पुस्तकों के लिए वर्गीकृत विज्ञापन ... रखा गया है। मूल्य केवल एक आना प्रति शब्द, ... २); मूल्य अग्रिम आना आवश्यक है।

पुस्तक विक्रेताओं को नमूना व्यापारिक दर पर भेजा जाता है।

सम्पादिका व व्यवस्थापिका

श्रीमती लीला प्रकाश बी० ए०, ११३-१३६, स्वरूपनगर, कान...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...शास्त्र और अर्थ-शास्त्र के बी० ए० और एम० ए० ...[illegible] के लिए विशेष उपादेय सिद्ध होगी। पुस्तक के ...में समस्त विषयों पर प्राप्तव्य सहायक-ग्रन्थों की वर्गीकृत ...भी दे दी गई है। पारिभाषिक शब्दों के चुनाव में ...का विशेष ध्यान रखा गया है कि वे सुबोध हों। ...की सुविधा के लिए हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों के ...कोष्ठक में अंग्रेजी पर्याय भी साथ-साथ दे दिये गए हैं। ...पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। डिमाई साइज ...[illegible] पृष्ठों की मोनो टाइप में मुद्रित सुन्दर और स्थायी ...वाली यह पुस्तक ८।।।) में बंसल बन्धु, देहरादून से ...हो सकती है।

◈ ◈ ◈

...और अन्य कहानियाँ नामक पुस्तक में बिहार ...[illegible] कहानीकार श्री नरेश की १३ कहानियों का संग्रह ...किया गया है। कहानियाँ सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक ...भूमि पर गठित की गई हैं। कहानियों की भाषा सरल ...शैली रोचक है। डिमाई साइज की मोनो टाइप में ...[illegible] १२८ पृष्ठ की सजिल्द यह पुस्तक तीन रुपये में ...है।

◈ ◈ ◈

...महा सम्मेलन : प्रसिद्ध उपन्यासकार और ...लेखक श्री सरयू पण्डा गौड़ की कृति है। इसमें ...जी की १३ कहानियों और ६ निबन्धों का संग्रह है। ...जी की शैली अपनी अनूठी व्यंजना तथा अद्भुत ...अभिव्यंजकता के लिए हिन्दी पाठकों में अपना स्थान ...चुकी है। इस संग्रह की कहानियों तथा निबन्ध उनकी ..., व्यंग्यपरक चुटीली कला का भी पूर्ण परिपाक प्रस्तुत ...है। डबल क्राउन १६ पेजी साइज में मोनो टाइप और ...प्रिंट पेपर पर छपी १८४ पृष्ठ की यह अजिल्द पुस्तक ...) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

...की हत्या में हिन्दी के प्रख्यात लेखक श्री ...नाथ पाण्डेय ने प्रसिद्ध रूसी क्रान्तिकारी ट्राट्स्की की ...का वर्णन रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत ...है। ट्राट्स्की को अपना देश छोड़कर किस प्रकार ...की शरण लेनी पड़ी और वहीं उन्हें किस प्रकार एक कैदी की भाँति अपना जीवन बिताना पड़ा, इसकी कहानी पाठकों को इस पुस्तक में पढ़ने को मिलेगी। डबल क्राउन १६ पेजी सजिल्द के १६६ पृष्ठ की न्यूज प्रिंट कागज पर मोनो टाइप में छपी यह पुस्तक ३) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

शिक्षण-प्रयोग-माला : नाम से कुसुम प्रकाशन, पटना-३ से छोटी-छोटी तीन पुस्तिकाएँ शिक्षा की पद्धति पर प्रकाश डालने वाली प्रकाशित हुई हैं। इस पुस्तक के पहले भाग में 'प्रगति की दिशाएँ' दूसरे भाग में 'बुनियादी शालाएँ' और तीसरे भाग में 'पाठशालीय दिन, न कि घण्टे' शीर्षकों के अन्तर्गत शिक्षण के विभिन्न प्रयोगों पर श्री रामशरण उपाध्याय ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। पुस्तकें विशेषतः अध्यापकों के नाम की हैं। इनमें तीनों का मूल्य क्रमशः ।=), ।–), तथा ।) है। प्रकाशक से प्राप्य।

◈ ◈ ◈

काल कन्या : श्री रासबिहारीलाल का एक ऐतिहासिक नाटक है। इसमें इतिहास की उलझी हुई गुत्थियों में से नाटक की नायिका मस्तानी (कालकन्या) को कला के रंगमंच पर उपस्थित किया है। नाटककार ने बाजीराव और मस्तानी के सम्बन्ध की पवित्रता और उच्चता का स्वप्न इस नाटक में संजोकर रख दिया है। नाटक रंगमंच की दृष्टि से भी उपादेय बन पड़ा है। ६७ पृष्ठ की यह छोटी-सी पुस्तिका १।।) में प्राप्त हो सकती है। उक्त सातों पुस्तकें **कुसुम प्रकाशन, पटना-३** से प्रकाशित हुई हैं।

महादेवी-काव्य-परिशीलन

लेखक—श्री भागीरथी दीक्षित

श्रीमती महादेवी वर्मा के काव्य का निष्पक्ष परिशीलन एवं 'आधुनिक कवि, भाग १' के प्रत्येक पद की व्याख्या। साहित्य-रत्न तथा बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक सरल सहायिका है। पृष्ठ २००, सुन्दर आवरण।

मूल्य २।।)

प्रकाशक—श्री भगवतीप्रसाद सिंहानिया
१७ कैवेल स्ट्रीट, बम्बई—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर पंचांग : कलकत्ता के हरिहर प्रेस द्वारा प्रकाशित सम्वत् २०११ (अंग्रेजी सन् १९५४-५५) का पंचांग है। इसमें पंचांग-विषयक समग्र जानकारी का समावेश किया गया है। डिमाई साइज के ३६० का यह सुन्दर, सुमुद्रित पंचांग प्रकाशक **हरिद्वार प्रेस**, ३७/७ बेनिया टोला लेन, कलकत्ता, से १) में मँगाया जा सकता है।

◈ ◈ ◈

सर्चलाइट ऑफ कमर्शियल ज्योग्राफी : नामक यह पुस्तक उत्तर-प्रदेश की इण्टरमीजिएट परीक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए हिन्दी में प्रस्तुत की गई है। इसमें वाणिज्य-भूगोल-जैसे विषय पर सरल एवं रोचक शैली में प्रकाश डाला गया है। पुस्तक छात्रों के लिए विशेष उपादेय एवं संग्राह्य है। पुस्तक के लेखक श्री लक्ष्मीनारायण वर्मा एम० ए० और प्रकाशक **सुदर्शन प्रकाशन**, आगरा हैं। डिमाई साइज के २६८ पृष्ठ की न्यूज प्रिंट पेपर पर छपी यह पुस्तक प्रकाशक से ३) में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈ ◈

एकाकी : युवक कवि श्री जगदीशनारायण चौबे के हृदयवादी गीतों का संग्रह है। पुस्तक में कवि के वक्तव्य के अतिरिक्त हिन्दी के ६ विद्वान् कवियों तथा साहित्यकारों [cut off] शुभाशंसा तथा प्रस्तावना सूचक वक्तव्य भी दिये गए हैं [cut off] डबल क्राऊन सोलह पेजी साइज की एण्टिक कागज पर [cut off] ८० पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **सुदर्शन प्रकाशन**, आगरा [cut off] से एक रुपये में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

स्तालिन : श्री कृष्णकुमार एम० ए० द्वारा लिखित [cut off] और करैण्ट पब्लिशर्स, कानपुर द्वारा प्रकाशित रूस के [cut off] विधाता स्तालिन की ८४ पृष्ठ की छोटी-सी जीवनी है। न्यूज [cut off] प्रिंट पेपर पर छपी यह पुस्तक प्रकाशक से ८ आने [cut off] प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

आज के कवि : नामक पुस्तक में श्री ललितमोहन [cut off] अवस्थी ने केदार, शील, हंसकुमार तिवारी, भवानीप्रसाद [cut off] मिश्र, वीरेन्द्र मिश्र, शंकर शैलेन्द्र, कमलेश, शम्भूनाथसिंह [cut off] रमई काका, रंग, नीरज, निरंकार सेवक, साहबसिंह मेहरा और [cut off] रमानाथ अवस्थी के काव्य और जीवन के सम्बन्ध में प्रकाश [cut off] डालने का प्रयत्न किया है। पुस्तक संकुचित दृष्टिकोण [cut off] लिखी गई मालूम होती है; कवियों के क्रम और उनके [cut off] काव्य के मूल्यांकन में पक्षपातपूर्ण ढंग अपनाया गया है [cut off] पुस्तक को पढ़कर कवियों के सम्बन्ध में जानकारी तो [cut off] मिलती, हाँ, यत्र-तत्र आलोचक का मार्क्सवादी [cut off] उभरकर सामने अवश्य आ गया है। अच्छा होता, यह प्रयत्न [cut off] राजनीतिक मतवाद से ऊपर उठकर किया जाता। [cut off] सदोष है। डबल क्राऊन सोलह पेजी साइज के [cut off] पृष्ठ की न्यूज प्रिंट पेपर पर छपी यह पुस्तक करैण्ट पब्लिशर्स [cut off] माल, कानपुर, से ३) में मिल सकती है। कवियों के जो [cut off] इसमें छपे हैं, वे कुरूप हैं।

◈ ◈ ◈

फूल पत्ती : में मेरठ नगर के नये-पुराने ४४ कवियों [cut off] कविताओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है और साथ [cut off] अन्त में प्रत्येक कवि का सचित्र परिचय भी दे दिया गया है [cut off] पुस्तक मुद्रण और साज सज्जा की दृष्टि से अत्यन्त मनोहर [cut off] है। डिमाई साइज के चिकने कागज पर छपी, १०० पृष्ठ [cut off] की यह पुस्तक, पुस्तक के सम्पादक श्री मदनगोपाल [cut off] **गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, सदर, मेरठ** से दो रुपये में मिल सकती है [cut off]

श्री आरसी-साहित्य

१. प्रेम-गीत (११६ गीत) ... २)
२. आँधी के पत्ते (कहानी-संग्रह) ... २)
३. नन्ददास (अभिनव काव्य-ग्रन्थ) ... २॥)
४. कलापी (अपूर्व कविता-संग्रह) ... २)
५. चित्रों में लोरियाँ (बाल-साहित्य) ... १)
६. ओनामासी (कविता में वर्णमाला) ... ।)
७. कवि आरसी की काव्य-साधना ... २॥)

पुस्तक विक्रेता पत्र-व्यवहार करें।

तारामण्डल

पोस्ट बा० १०७, पटना—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

...राम एण्ड सन्स, दिल्ली

—अनुसन्धान का स्वरूप, सं० डॉ० सावित्री सिन्हा । ३)

—कथा मंजरी, ले० नागार्जुन । १)

—पंजाब की लोक-कथाएँ, ले० सरदार प्रीतमसिंह पंछी । ...)

—प्राणोत्सर्ग, ले० देवीदयाल चतुर्वेदी मस्त । १।)

—ब्रज की लोक-कथाएँ, ले० आदर्शकुमारी जैन । १)

—बूढ़े बच्चे, ले० रामचन्द्र तिवारी । १॥)

—मन की बात, ले० बाबू गुलाबराय । ३)

—मानव की परख, ले० देवीदयाल । ३॥)

—शराबी, ले० पांडेय बेचन शर्मा उग्र । ३)

—सामान्य अर्थ-शास्त्र, ले० बी० एम० भाटिया ।

—सिद्धार्थ, ले० हरमन हेस कृत तथा 'नोबल पुरस्कार' पुरस्कृत श्रेष्ठ रचना का अनुवाद । अनुवादक महावीर अधिकारी । ३)

—हिन्दी काव्यालंकार सूत्रवृत्ति, आचार्य विश्वेश्वर । ...)

...महल, इलाहाबाद

—...जिन्दगी, ले० निर्गुण । कहानी-संग्रह । ३)

—...बेला, ले० जगप्रकाश चतुर्वेदी । गीतों का संग्रह । १)

—...नाशी मसनद, ले० अमृतलाल नागर । हास्य । १॥)

—...पेरिस का रंगीला, मोपासाँ के एक उपन्यास का सुरुचिपूर्ण अनुवाद । ४)

—...प्रारम्भिक औद्योगिक रसायन, ले० नगेन्द्रनाथ मिश्र । इण्डस्ट्रियल केमिस्ट्री पर सरल शैली की सुबोध पुस्तक ।

...पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—...कामकला रति रहस्य, ले० चन्द्रकान्ता बी० ए० । काम-... १६पेजी क्राउन के २६४ पृष्ठ । ४)

—...नागरी शिक्षा, ले० हुकमचन्द्र गुप्ता । पृष्ठ २१० । ५)

—...प्रेम भरे पत्र, ले० रत्नप्रकाश शील । पृष्ठ ४०० । ५)

—हस्त-सामुद्रिक ज्योतिष, ले० रामेश्वर अशान्त । पृष्ठ ६३६ । ६)

जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता ७

—मनुष्य का रूप, ले० कन्हैयालाल ओझा 'स्नेह' । नया उपन्यास । ६)

—मीठी कसक, ले० उमाशंकर शुक्ल एम० ए० । कहानी-संग्रह । १॥)

प्रकाश गृह, कालाकांकर (उ० प्र०)

—जीवों की दुनिया, ले० श्री सुरेशसिंह । पृथ्वी के जीवों का संक्षिप्त वर्णन । सचित्र । डिमाई साइज के ४० पृष्ठ । मूल्य १) ।

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—विराज बहू, शरत्चन्द्र चैटर्जी के उपन्यास का श्री प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव द्वारा अनुवाद । २)

—वैज्ञानिक बाल-साहित्य, श्री राजेश दीक्षित द्वारा लिखित ६ पुस्तकें । प्रत्येक का मूल्य ।=) ।

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—एक कदम आगे, मनरोलीफ दो रंगों में छपी बालोपयोगी पुस्तक । प्रत्येक पृष्ठ पर चित्र । ८० पृष्ठ । मूल्य १॥) ।

—तेलुगु और उसका साहित्य, ले० हनुमच्छास्त्री अयाचित । भारतीय साहित्य परिचय माला की तीसरी पुस्तक । सजिल्द, पृष्ठ संख्या १२८ । मूल्य २)

—मालवी और उसका साहित्य, ले० श्याम परमार । भारतीय साहित्य परिचय माला की चौथी पुस्तक । सजिल्द, पृष्ठ संख्या १२८ । मूल्य २)

—शिक्षण प्रविधि, ले० शची माथुर एवं विश्वनाथ सहाय माथुर । संशोधित तथा परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण ।

—स्वप्न सिद्धि की खोज में, ले० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी । मुन्शीजी की आत्मकथा (पहला खण्ड :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधे रास्ते, दूसरा खण्ड : सीधी चढ़ान) का तीसरा खण्ड जिसमें उनके जीवन की प्रणय-लीला का रोचक व मार्मिक वर्णन है ।

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—**कश्मीर की कहानियाँ**, ले० कृष्णचन्द्र । कहानी-संग्रह । ३)

—**स्वराज्य के १० वर्ष बाद**, ले० कृष्णचन्द्र । व्यंग्यात्मक सचित्र कहानियाँ । ३)

—**सफलता के सिपाही**, ले० सन्तराम बी० ए० । प्रेरणात्मक स्फूर्तिदायक नवयुवकोपयोगी । १।)

—**हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य**, ले० प्रो० रोशनलाल सिंहल । महाकाव्यों की संक्षेप में कथावस्तु । १।)

रामनारायण लाल, इलाहाबाद

—**अलंकार-पीयूष (पूर्वार्द्ध)**, ले० डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' । अलंकार-शास्त्र का इतिहास तथा शब्दालंकारों के समस्त भेद और उपभेद पर प्रकाश डाला गया है । मूल्य लगभग १॥)

—**आठ सेर चावल**, श्री के० सन्तानम । विन्ध्य-प्रदेश के राज्यपाल की बारह कहानियों का श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल द्वारा अनुवाद । १॥)

—**बीजक**, कबीर की वाणियों का सर्वमान्य प्रामाणिक संग्रह, टीका और भूमिका । टीकाकार श्री विचारदास शास्त्री । २॥)

—**साहित्य संतरण**, ले० गंगा प्रसाद पांडेय । लेखक ने उच्चकोटि के साहित्यिकों की विभिन्न विषयक कृतियों पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला है । २)

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद

—**कलामे इक़बाल**, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित इक़बाल की चुनी हुई कविताएँ । २॥)

—**ज़िद्दी**, अस्मत चुग़ताई के उपन्यास का श्री 'हुनर' द्वारा अनुवाद । १।॥)

सरिता साहित्य सदन, बनारस

—**आयशा**, ले० रामसुन्दर लाल । ऐतिहासिक उपन्यास । १॥) ।

—**हसीनों की दुनिया**, ले० बलदेवराज शर्मा । ... संग्रह । २)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—**फिल्म संगीत**, सम्पादक लक्ष्मीनारायण गर्ग । इस ... की पुस्तक-माला का २४वाँ भाग । ७० फिल्मी गानों ... स्वरलिपियों के दिये हुए हैं । ४)

साहित्य निकेतन, कानपुर

—**दशरूपक**, धनञ्जय भट्ट कृत । अनुवादक डॉ० गो... त्रिगुणायत । हिन्दी काव्य और टीका सहित संस्करण ।...

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—**कर्म साधना**, ले० राम सागर मिश्र । भूमिका श्री वृन्दा... वन लाल वर्मा । उपन्यास ।

—**मुक्ति मार्ग**, हॉवर्ड फॉस्ट के 'फ्रीडम रोड' का ... अब्बासी द्वारा भाषान्तर । अमेरिका के काले दासों के मुक्ति मार्ग की साहसपूर्ण बलिदान-गाथा ।

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

—**प्रारम्भिक व्यापार प्रणाली**, ले० श्री विश्वम्भर सहाय ... ए०, एम० काम०, एवं श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ... ए०, बी० काम० । व्यापार-पद्धति पर कक्षा ७ व ... विद्यार्थियों के लिए । पृष्ठसंख्या लगभग १०० । ...

वाणी वितान, बनारस

—**नया साहित्य : नए प्रश्न**, ले० आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी । आलोचनात्मक ग्रन्थ । ५)

—**हिन्दी का अतीत**, ले० आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र । आलोचनात्मक ग्रन्थ । ४)

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

—**हिन्दी शब्द निर्णय**, ले० श्री किशोरीदास वाजपेयी । हिन्दी में प्रचलित शतशः शब्दों का निराकरण करके ... सुनिश्चित रूप की स्थापना की गई है । मूल्य ... कम—आठ दस आने रहेगा ताकि अबाध प्रचार हो । कम-से-कम सौ प्रतियों के खरीदार विक्रेता यदि पेशगी ... देंगे तो उन्हें लागत पर—आधी कीमत में—... मिलेगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र, भौतिक शास्त्र

...प्रसाद भटनागर, अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, ७००, डिमाई, किताबघर, कानपुर ६॥)
...प्रसाद गुप्ता, भारतीय अर्थशास्त्र दिग्दर्शन, २६८, डिमाई, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा ३॥)
...प्रसाद सिन्हा, समाजवाद बनाम पूँजीवाद, ७६, क्राऊन, कला निकेतन, गया १)
...ना० मिडारन, वी० पी० श्रीवास्तव, प्रायोगिक भौतिक शास्त्र, ३५२, डिमाई, श्रीराम मेहरा एण्ड कं० आगरा ४॥)

आलोचना, साहित्य

...चन्द्र वर्मा, अयोध्याकाण्ड की भूमिका, ११२, क्राऊन, अग्रसेन पुस्तक भंडार, इलाहाबाद २)
...विंद गौड़, हमारे नाटककार, ३२८, क्राऊन, श्रीराम मेहरा एण्ड कं०, आगरा ३)
...विलास शर्मा, डॉ०, भाषा, साहित्य और संस्कृति, २५२, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद ४॥।)
...सिंह मल्ल, आधुनिक गद्य, २२५, क्राऊन, वाणी वितान, बनारस २॥)
...नाथप्रसाद मिश्र आ०, भूषण, ४००, क्राऊन, वाणी वितान, बनारस ४)
...नाथप्रसाद मिश्र आ०, बिहारी, ३५०, क्राऊन, वाणी वितान, बनारस ३॥)
...दीन, तुलसी शब्द सागर, ५००, क्राऊन क्वार्टो, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद १२)

उपन्यास

...चोपड़ा, नाना, १७६, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद ३)
...बाबरा, नई राह, १२०, क्राऊन, राजश्री प्रकाशन, कलकत्ता-१ १॥)
...साहित्यालंकार, नया स्वर्ग, ७२, क्राऊन, प्रतिमा प्रकाशन, देहरादून १)
...आ० सैलानी, असफल हत्यारा, ८०, क्राऊन, प्रकाशनालय, बनारस ॥।)
...आ० सैलानी, खूनी की खोज, ८०, क्राऊन, प्रकाशनालय, बनारस ॥।)
..., रजनी गन्धा, २०६ क्राऊन, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली ३॥)
..., कायाकल्प, ३६५, क्राऊन, पु० मु०, सरस्वती प्रेस, बनारस ७)
...कर, पानी की दीवार, १६० क्राऊन, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली ३)
..., अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य, भाग १७, पु० मु०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता २॥)
..., अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य, भाग १८, पु० मु०, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता २॥)
...सांकृत्यायन, सूदखोर की मौत, १३८, क्राऊन, राहुल पुस्तक प्रतिष्ठान, पटना १॥)
..., नये अंकुर, १२५, क्राऊन, आलोक प्रकाशन, बीकानेर २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरत्चन्द्र, अनु० कामताप्रसाद श्रीवास्तव, देहाती समाज, १४०, क्राऊन, पु० मु०, प्रभात प्रकाशन, मथुरा
श्रीचन्द्र अग्निहोत्री, हवेली की ईंटें, २००, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

कविता

शम्भूदयाल सक्सेना, ओ री निंदिया, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
शम्भूदयाल सक्सेना, रेशमी झूला, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
श्रीमन्त कुमार व्यास, अलगोजो, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
सच्चिदानन्द श्रीवास्तव, 'आनन्द', जीवन सरिता, ६८, क्राऊन, अग्रसेन पुस्तक भंडार, इलाहाबाद
हरिऔध, मर्म-स्पर्श, १७६, डिमाई, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

कहानी

निर्गुण, प्यार के भूखे, २५६, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
प्रेमचन्द, अलग्योझा, ३२, क्राऊन, पु० मु०, सरस्वती प्रेस, बनारस
प्रेमचन्द, दो बैलों की कथा और बाबाजी का भोग, २४, क्राऊन, सरस्वती प्रेस, बनारस
मोहनसिंह सेंगर, मुर्दे की मौत, १६७, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी, प्रौढ़-साहित्य, जीवन-चरित्र

अनन्त बापूजी माण्डे, पहली पोथी, ५३, क्राऊन, पु० मु०, रामनारायणलाल, इलाहाबाद
अनन्त बापूजी माण्डे, शान्तिपुर साक्षरता की योजना, (चार्ट) पु० मु०, रामनारायणलाल, इलाहाबाद
आनन्दकुमार, अमर कथाएँ, ६६, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
आनन्दकुमार, लोक कथाएँ, ६६, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
चतुरसेन शास्त्री, आदर्श बालक, १२०, क्राऊन, राजहंस प्रकाशन, दिल्ली

विविध

अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, समाचार-पत्रों का इतिहास, ४०६, क्राऊन, ज्ञानमण्डल लि०, बनारस
आर्यनायकम्, रामकिशोर 'पाषाण', वर्तमान समय में समाज की हालत, १५, क्राऊन, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम
एन० पी० तिवारी, नवानो, ६६, क्राऊन, अग्रसेन पुस्तक भंडार, इलाहाबाद
एस० एन० श्रीवास्तव, आधुनिक अंग्रेजी शिक्षक, ७४, क्राऊन, अग्रसेन पुस्तक भंडार, इलाहाबाद
महेशप्रसाद श्रीवास्तव, दिल्ली से मास्को, ११२, क्राऊन, अग्रसेन पुस्तक भंडार, इलाहाबाद
रामनाथ दुबे, डॉ०, मानचित्र, २०८, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
लक्ष्मीनारायण गर्ग, सूर संगीत, भाग २, १०४, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस
व्यथित हृदय, हिन्दू तीर्थ, ४२३, क्राऊन, रामनारायणलाल, इलाहाबाद
वूल्जले, भारतीय पत्रकार कला, ३८८, क्राऊन, ज्ञानमण्डल लि०, बनारस
विष्णुनारायण भरतखण्डे, वामन नत्थो पन्त भट्ट, क्रमिक पुस्तक मालिका, भाग १, ५६, डिमाई, संगीत कार्यालय, हाथरस
सत्यन्, ओटना, तुनना, धुनना, १२८, क्राऊन, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३ ३/४" × ६" या २ ३/४" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २ ३/४" × ३ ३/४"। एक कालम इंच : १" × २ ३/४"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५ १/२" × ६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित, १००)।
- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग
प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D

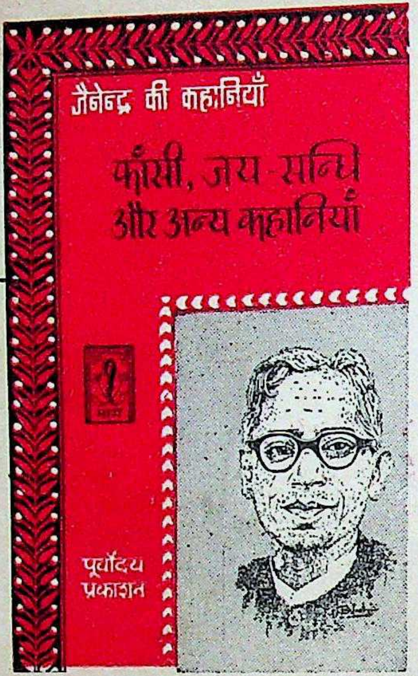

भारत के तत्त्वदर्शी विचारक और शैलीकार उपन्यासकार श्री जैनेन्द्रकुमार की विविध कलाकृतियों का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

जैनेन्द्र-साहित्य

१८ भागों में

मूल्य ७२।) मात्र

●

महात्मा भगवानदीन

कृत

जवानो (तृतीय संस्करण) मूल्य ३

महात्माजी की दूसरी पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित होंगी।

●

जैनेन्द्र की कहानियां

सात भागों में जैनेन्द्र की सम्पूर्ण कहानियों का संकलन, प्रत्येक भाग का मूल्य ३।।)

उपन्यास

सुखदा ४)

विवर्त ४।)

व्यतीत ३।।)

संस्मरण

भारत के महान् साहित्यकारों और युग-प्रवर्तक नेताओं के संस्मरण और रेखाचित्र

ये और वे ५)

आगामी उपन्यास

जयवर्धन, दशार्क, अनाम स्वामी

नाटक

पाप और प्रकाश २।।)

निबन्ध

पूर्वोदय

प्रस्तुत प्रश्न

साहित्य का श्रेय और प्रेय

मन्थन

सोच-विचार

काम, प्रेम और परिवार

पूर्वोदय प्रकाशन, ७ दरियागंज, दिल्ली

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मई १९५४ अङ्क ६
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

(एक प्रति ।)

...मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक...ओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

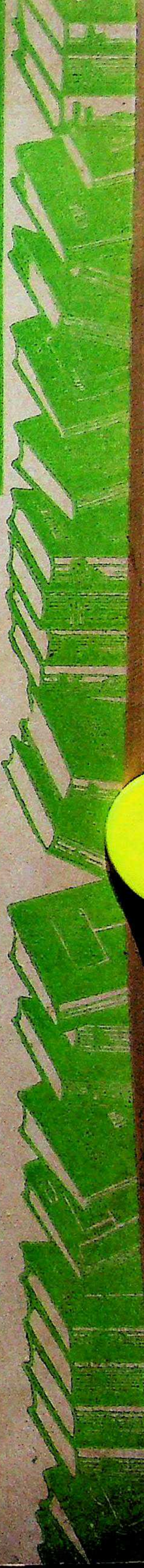

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के

उद्देश्य

- हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशनों के हितों का संरक्षण और सामूहिक प्रतिनिधित्व करना।
- प्रकाशन-व्यवसाय को समृद्धिशाली और गौरवान्वित बनाना।
- प्रकाशन व्यवसाय सम्बन्धी आधुनिक जानकारी एवं तथ्यों का प्रसार करना।
- हिन्दी-साहित्य के स्तर को उत्तरोत्तर ऊँचा करना तथा उसके अभावों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना।
- लेखक, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित करना।
- लोगों में हिन्दी पुस्तकों को पढ़ने की रुचि पैदा करना और पाठकों के क्षेत्र का विस्तार करना।
- उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए पत्र निकालना, पुस्तकालय स्थापित करना, पुस्तक-प्रदर्शनियाँ करना, तथा अन्य उचित सम्भावित प्रयत्न करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री इलाचन्द्र जोशी

की

दो नवीनतम कृतियाँ

शरत्चन्द्र : व्यक्ति और कलाकार

अमर उपन्यासकार शरत्चन्द्र हुए तो हैं इसी बीसवीं शती में, परन्तु उनका जीवन भी आदिकाल के ऋषि-मुनियों की तरह ही गुप्त रहा है। लेकिन हिन्दी के महान् औपन्यासिक श्री इलाचन्द्र जोशी ने उनसे व्यक्तिगत रूप में बातें करके उनके जीवन और साहित्य पर अध्ययनपूर्ण प्रकाश डाला है। शरत् के प्रत्येक पाठक के लिए यह पुस्तक कण्ठहार बन जाए तो आश्चर्य ही क्या ?

सजिल्द, रंगीन आवरण की पुस्तक का मूल्य केवल ३)

सूदखोर की पत्नी

दास्ताएव्स्की रूस ही का नहीं सारे विश्व का महानतम उपन्यासकार माना जाता है। दास्ताएव्स्की की रचनाएं विश्व-साहित्य में अपना सानी नहीं रखतीं। दास्ताएव्स्की के दो लघु उपन्यासों--"सूदखोर की पत्नी" और "मरघट का मसीहा"—को इस एक पुस्तक द्वारा ही सुलभ कर दिया गया है।

और सोने में सुगन्ध की एक बात कि इसके अनुवादक हैं श्री इलाचन्द्र जोशी।

मूल्य केवल २)

प्रकाशक

अशोक प्रेस, पटना—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :

: अंक ६ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ विशेषांक

हिन्दी प्रकाशकों का एक देशव्यापी संगठन बनाने का शुभ अनुष्ठान नई दिल्ली में इस १ और २ मई को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। इस संघ के आयोजन में दिल्ली के प्रकाशकों का, तथा देश के दूरस्थ भाग से हिस्सा लेने के लिए आये हुए जागरूक प्रतिनिधि प्रकाशकों का जो उत्साहपूर्ण सहयोग मिला है, उसी की नींव पर हिन्दी-प्रकाशन का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संघ की स्थापना के लिए बुलाये गए सम्मेलन में विभिन्न प्रस्तावों पर विचार-विमर्श के समय कुछ बातें बहुत स्पष्टता से उभर आईं। ज्ञात हुआ कि प्रकाशन-क्षेत्र में तीन प्रकार के प्रकाशक हैं।

एक प्रकार के प्रकाशक मुख्यतः पाठ्यक्रमादि की पुस्तकों के प्रकाशक हैं।

दूसरी प्रकार के प्रकाशक वे हैं जो न लेखक को उचित पारिश्रमिक देने के प्रश्न को महत्वपूर्ण समझते हैं, न मुद्रण व प्रकाशन के स्तर को ऊंचा करने के ध्येय को हिन्दी-प्रकाशन के लिए गौरवप्रद ध्येय मानते हैं।

इन दोनों प्रकार के प्रकाशकों के सामने आज विशेष चिन्ता व बाधा उपस्थित नहीं है। पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशकों का व्यवसाय खूब संगठित है और वे कठिनाइयों से टक्कर लेने की सामर्थ्य रखते हैं। दूसरे प्रकार के प्रकाशक पुस्तक-विक्रेताओं को अधिक कमीशन का प्रलोभन देना ही अपने प्रकाशनों के प्रचार का एक-मात्र साधन बनाए बैठे हैं।

प्रकाशकों का इन दोनों से भिन्न ऐसा वर्ग भी है जिनके प्रकाशनों से हिन्दी साहित्य को उत्तरोत्तर प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। व्यवसाय करते हुए भी ये प्रकाशक शीर्षस्थानीय ध्येयों और उत्तरदायित्वों को नहीं भूलते, लेखक को उचित आर्थिक तुष्टि देना कर्तव्य समझते हैं, मुद्रण व प्रकाशन की आधुनिक प्रवृत्तियों में रुचि रखते हैं। ये प्रकाशक न कमीशन की प्रेरणा पुस्तक-विक्रेताओं के सम्मुख रख सकते हैं, न पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशकों के समान व्यावसायिक दाव-पेंच से उलझने की क्षमता अथवा इच्छा रखते हैं।

कहना चाहिए कि ऐसे प्रकाशकों के प्रकाशन ही हिन्दी प्रकाशन जगत के उज्ज्वल पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परन्तु इनका मार्ग कंटकाकीर्ण और प्रकाशकीय समस्याओं के संकटों से भरा है।

सम्मेलन के दो दिन के विचार-विनिमय में स्पष्ट हो गया कि जिस अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का सूत्रपात हुआ है, वह मुख्यतः ऐसे ही प्रकाशकों का प्रतिनिधित्व करेगा; मुख्यतः उन्हीं के हितों के संरक्षण में प्रयत्नशील रहेगा जिनके लिए प्रकाशन व्यवसाय केवल धन्धा न रहकर एक 'मिशन' भी है। विश्वास है कि ऐसे सब प्रकाशक शीघ्र ही संघ के सदस्य बन जायंगे तथा इसे उच्चकोटि के हिन्दी प्रकाशन जगत् के प्रतिनिधित्व का शक्तिशाली माध्यम बना लेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ प्रकाशन

आर्यावर्त : श्री वियोगी २)
सावित्री : श्री गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेन्द्र' १॥)
रिमझिम : श्री हंसकुमार तिवारी १)
चट्टान : श्री राकेश २॥)
ज़िन्दगी का नशा : श्री वीरेन्द्र नारायण ।॥)
गुरुदक्षिणा : श्री डाक्टर जनार्दन मिश्र ॥)
देहाती दुनिया : श्री शिवपूजन सहाय २)
मज़दूरों की छाती पर : श्री कान्तिप्रसाद झा ३)
चिनगारी : श्री छविनाथ पाण्डेय ३॥)
अपना पराया : श्री कमलचन्द्रदास १।)
धरती माता : पर्ल बक ३)
विभूति : श्री शिवपूजन सहाय ३)
रजकण : श्री वियोगी १)
अपर्णा : श्री जानकीवल्लभ शास्त्री १)
गोधूलि : श्री नरेश २)
विलासिनी : श्री भगवतशरण उपाध्याय १।)
साहित्यिक निबन्धावली : श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा २।॥)
मनुष्य की मर्यादा : श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र २।॥)
हमारा सांस्कृतिक साहित्य : श्री जगन्नाथराय शर्मा ३।॥)
हमारी साहित्यिक समस्याएँ :
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ३)
हँसता जीवन : श्री भुवनेश्वरनाथ मिश्र माधव २)
सभ्यता और संस्कृति तथा अन्य निबन्ध :
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी १॥)
छायावाद और प्रगतिवाद : श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा ३)
साहित्य : श्री शिवनारायण शर्मा ३)
साहित्य की वर्तमान धारा : श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र २॥)
सन्त साहित्य : श्री भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' २)
काव्यालोचन के सिद्धान्त : श्री शिवनन्दन प्रसाद २॥)
हिन्दी मुहावरे : पं० रामदहिन मिश्र ३।)

काव्य दर्पण : पं० रामदहिन मिश्र
काव्यालोक १–२ : पं० रामदहिन मिश्र
काव्य में अप्रस्तुत योजना : पं० रामदहिन मिश्र
अलंकार मुक्तावली : श्री देवेन्द्रनाथ शर्मा
राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद : श्री शिवपूजन सहाय
आचार्य विनोबा भावे : श्री शुकदेव दुबे
भारत की आर्थिक समस्याएँ : श्री विश्वनाथ प्रसाद
देवेन्द्रनाथ शर्मा
सार्वजनिक अर्थशास्त्र और आर्थिक पुनर्निर्माण :
श्री केदारनाथ प्रसाद
गुफा से महल : श्री विश्वमोहन कुमार सिन्हा
भारतीय प्रशासन और नागरिक जीवन :
श्री उदयप्रकाश श्रीवास्तव
मेगास्थनीज का भारत विवरण : श्री योगेन्द्र मिश्र
भारत के युद्ध : श्री कमलचन्द्र दास
विजय नगर-साम्राज्य का इतिहास :
श्री वासुदेव उपाध्याय
विश्व इतिहास की भूमिका : प्रथम भाग :
श्री रामशरण शर्मा
विश्व इतिहास की भूमिका : द्वितीय भाग :
श्री रामशरण शर्मा
प्राचीन भारत का इतिहास :
श्री भगवतशरण उपाध्याय
आधुनिक भारत : श्री हरिहरप्रसाद राय
भू-स्वर्ग काश्मीर : श्री हंसकुमार तिवारी
तिरिच मीर :
आकाश-लोक : श्री जगपति चतुर्वेदी
नवीन बाल-मनोविज्ञान : श्री रासबिहारी राय शर्मा
टोटका विज्ञान : श्री स्वामी कृत्यानन्द
चिड़िया खाना : श्री सुरेशसिंह
रेंगने वाले : श्री आनन्दस्वरूप श्रीवास्तव

विशेष विवरण के लिए हमारा सूचीपत्र मांगें

ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना–४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की संस्थापना

भारत के प्रमुख हिन्दी-प्रकाशकों के संयोजन तथा सहयोग से अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ का सूत्रपात हुआ है, उसी का यह संक्षिप्त वृत्तान्त है।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की स्थापना करने के लिए आमन्त्रित प्रतिनिधि प्रकाशकों का सम्मेलन १ और २ मई १९५४ को नई दिल्ली के **हिन्दी-भवन** में सम्पन्न हो गया। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधि प्रकाशक सम्मिलित हुए और इसमें अनेक प्रस्ताव हिन्दी के प्रकाशनों के प्रचार, प्रसार तथा मानदण्ड को उच्च करने के सम्बन्ध में स्वीकृत किये गए।

अधिवेशन का प्रारम्भ करते हुए सर्वप्रथम इसके संयोजक श्री वाचस्पति पाठक ने संक्षेप में इस आयोजित सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और श्री रामचन्द्र टण्डन (सहायक मन्त्री, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद) का नाम उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता के लिए प्रस्तुत किया। इसका समर्थन श्री देवनारायण द्विवेदी (व्यवस्थापक, ज्ञानमण्डल लि० काशी) ने किया। सर्वसम्मति से टंडन जी को सम्मेलन का सभापति निर्वाचित किया गया। इसके बाद श्री ओंप्रकाश (राजकमल प्रकाशन, दिल्ली) ने सम्मेलन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों से आये हुए प्रकाशकों के सहयोग और शुभकामना के संदेश पढ़कर सुनाये। तदुपरान्त स्वागत-समिति के अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी (आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली) का स्वागत-भाषण हुआ।

स्वागताध्यक्ष के भाषण के उपरान्त अधिवेशन के अध्यक्ष श्री टण्डन जी का अत्यन्त सारगर्भित एवं गम्भीर भाषण हुआ। भाषण के बाद अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम श्री रामदहिन मिश्र (ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना), श्री हरिकेशव घोष (इण्डियन प्रेस, प्रयाग) श्री दिलावर सिंह शर्मा (गौतम बुक डिपो, दिल्ली), श्री मुरारीलाल केडिया (हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता), श्री मनमोहनदास (साहित्य भवन लि०, प्रयाग) तथा श्री रामनारायण त्रिवेदी (दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता)—हिन्दी के प्रख्यात प्रकाशकों के असामयिक देहावसान पर एक शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके बाद सम्मेलन विषय-निर्वाचिनी-समिति के रूप में बदल गया और बैठक में महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विचार हुआ। इनमें से मुख्य भारत-सरकार द्वारा बढ़ाई गई डाक की दरें कम करने, लेखकों और प्रकाशकों के पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे बनाने, विदेशी अश्लील साहित्य के देश में आयात पर प्रतिबन्ध लगाने, हिन्दी पत्रों के संचालकों द्वारा हिन्दी-प्रकाशनों को विज्ञापन की दरें कम कर के प्रोत्साहन दिए जाने और प्रादेशिक सरकारों द्वारा पुस्तकों की बिक्री पर कर लगाने के सम्बन्ध में थे।

अधिवेशन का सबसे अधिक विचारोत्तेजक प्रस्ताव वह था जिसमें प्रकाशकों द्वारा पुस्तक-विक्रेताओं को अधिक-से-अधिक २५ प्रतिशत और विक्रेताओं द्वारा विभिन्न पुस्तकालयों और शिक्षा-संस्थाओं को अधिक-से-अधिक १० प्रतिशत कमीशन देने का आदेश दिया गया है। इस प्रस्ताव को ६ मास तक कार्यान्वित करने का कार्य समिति को आदेश दिया गया।

२ मई की सुबह की बैठक में पाँच व्यक्तियों की एक उप-समिति ने अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ के विधान का मसविदा प्रस्तुत किया। गम्भीर सोच-विचार के और संशोधन तथा परिवर्तन के बाद विधान की अन्तिम रूप-रेखा को सर्व-सम्मति से स्वीकृत किया गया।

सम्मेलन में दिये गए संयोजक, स्वागताध्यक्ष तथा सभापति के भाषण तथा स्वीकृत प्रस्ताव इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किए जा रहे हैं।

विधान के अनुसार पदाधिकारियों के चुनाव का प्रश्न उपस्थित होने पर सभापति को सर्वसम्मति से यह अधिकार दे दिया गया कि वह प्रथम वर्ष के लिए (यद्यपि इसका विधान द्वारा अधिकार नहीं है) कार्यसमिति तथा पदाधिकारियों की स्वयं घोषणा कर दें। प्रधान ने अगले प्रातः निम्नलिखित कार्यसमिति की घोषणा की:

उप-सभापति :

१. श्री रामलाल पुरी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
२. श्री श्रीनिवास अग्रवाल, किताब महल, इलाहाबाद
३. श्री महेन्द्रजी, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा
४. श्री जयनाथ मिश्र, श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना

प्रधान मन्त्री : श्री वाचस्पति पाठक, भारती भण्डार, इलाहाबाद

संयुक्त मन्त्री :

१. श्री देवनारायण द्विवेदी, ज्ञान मण्डल लि०, बनारस
२. श्री ओंप्रकाश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
३. श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, साहित्य भवन लि०, प्रयाग

कोषाध्यक्ष : श्री दीनानाथ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

सदस्य :

१. श्री मार्तण्ड उपाध्याय, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
२. श्री धर्मचन्द्र नारंग, हिन्दी भवन, जालन्धर
३. श्री श्रीपत राय, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद
४. श्री देवकुमार मिश्र, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना
५. श्री मदनमोहन पाण्डेय, ज्ञानपीठ लि०, पटना
६. श्री माधव, मोतीलाल बनारसी दास, बनारस
७. श्री कैलाशनाथ भार्गव, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्ज, बनारस
८. श्री परमानन्द पोद्दार, आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता
९. श्री श्यामनारायण कपूर, साहित्य निकेतन, कानपुर
१०. श्री गोकुलदास धूत, नवयुग साहित्य सदन, इंदौर
११. श्री भवानी प्रसाद मिश्र, चेतना प्रकाशन लि०, हैदराबाद दक्कन

सम्मेलन की स्वागत-समिति की ओर से नई दिल्ली के एक बड़े रेस्तरां में सम्मेलन की समाप्ति पर एक विशाल जलपान का आयोजन हुआ, जिसमें इस सम्मेलन में आगत प्रकाशकों के अतिरिक्त राजधानी के लगभग १०० प्रख्यात कवि, आलोचक, पत्रकार, संसद-सदस्य और प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे।

Ask for List on Indian Mutiny & Shikar

NRITI MANJARI by Leela Row. The 62 Fundamental Sequences of Bharata Natyam. Rs. 15

JOURNAL OF THE INDIAN SOCIETY OF ORIENTAL ART Vol. XV 1947. A K Coomaraswamy Commemoration Volume Rs. 15

THE MAHABHARATA
As It Was, Is and Ever Shall Be (A Critical Study)
BY P. N. MULLICK
Illustrated *About 600 Pages*
Size 10" 6", Weight about 2lbs.
Rs. 6.

RARE, SCARCE, & OUT OF PRINT BOOKS ON INDIA, FINE ARTS, RELIGION & HISTORY
DIXITSON & Co., (1917)
115-A, Tarak Pramanick Road,
CALCUTTA-6

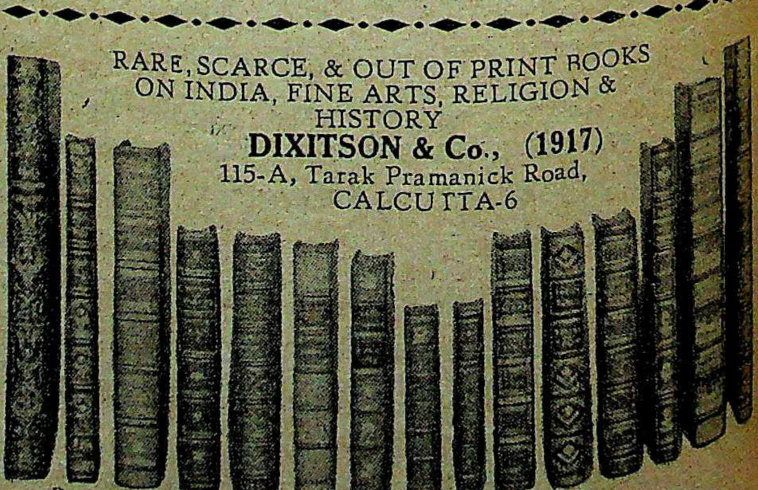

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के संयोजक

श्री वाचस्पति पाठक का वक्तव्य

भारती भण्डार, प्रयाग, के प्रकाशनाध्यक्ष श्री वाचस्पति पाठक अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के मुख्य संयोजक थे। सम्मेलन की कार्यवाही इनके वक्तव्य द्वारा प्रारम्भ हुई।

प्रिय बन्धुओ, आज हम सब एक जगह एकत्रित हुए हैं, और हम सब अपने सम्बन्ध में कुछ विचार करना चाहते हैं, अतः हम सबको पूर्ण मनोयोग से अपने सामने उपस्थित गम्भीर समस्याओं पर विचार करना चाहिए और उनका हल ढूँढ निकालना चाहिए। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह इस कार्य में हमें सफलता दें।

हमारा हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन का व्यवसाय ५० वर्षों से अधिक का नहीं है। इस काल का इतिहास हिन्दी-साहित्य के अभ्युदय के साथ जुड़ा है। हमारी राष्ट्रीय सेवा की भावना को न परतन्त्र भारत के शासकों द्वारा और न आज के लोकप्रिय अधिकारियों द्वारा कोई मान्यता मिली, न सहायता—हाँ, निन्दा के कटु-स्वर कभी-कभी अवश्य गूँज गये हैं। तो भी हमने इस अल्प काल में लगभग ५० हजार पुस्तकों का प्रकाशन उपस्थित कर दिया है।

किन्तु आज तक की स्थिति एक अनियन्त्रित और योजनाहीन स्थिति है। कोई भी व्यवसाय इस रूप में न पनप सकता है और न अपने उद्देश्य की वास्तविक पूर्ति ही कर सकता है। आज का युग ही संघर्ष का है। इसके लिए बिना संघबद्ध हुए काम नहीं चल सकता। मेरा अनुरोध है कि हम-सब अपने को एक सूत्र में पिरोकर सुनिश्चित उद्देश्य से अग्रसर हों।

आज हमारे सामने जो मुख्य समस्याएँ हैं उन पर भी हमें विचार कर लेना चाहिए।

निम्न समस्याएँ हमारी प्रमुख हैं :

१. हम प्रकाशक लोग लेखकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के संग उचित और एक ढंग का सहयोग स्थापित कर सकें।

२. हमारे व्यवसाय को उचित रूप से शिक्षा-संस्थाओं तथा राज्य-पुस्तकालयों का सहयोग मिलना चाहिए। इन संस्थाओं की कृपा-दृष्टि के लिए हीन प्रतिद्वंदिता हमारा गला घोंट रही है।

३. डाक की दरों का बढ़ाव हमारे लिए घातक हो रहा है। हमें इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार के हस्तक्षेप की मांग अवश्य करनी चाहिए।

४. बिक्री-कर भी विभिन्न राज्यों द्वारा पुस्तकों पर लगाया गया है, इससे इस व्यवसाय को भारी धक्का लगा है—इसके अनौचित्य की ओर राज्य-सरकारों का ध्यान दिलाना आवश्यक है।

५. पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेताओं के सम्बन्ध में एकरूपता लाना हमारे व्यवसाय के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमें सम्मिलित रूप से इस बारे में एक ऐसा निश्चय कर लेना चाहिए जिससे दोनों के हितों की रक्षा सम्भव हो सके।

आशा है आप उपरोक्त, और मेरी दृष्टि में न आये पर अन्य आवश्यक, कर्तव्यों का स्वरूप निश्चित करके अपने मार्ग को प्रशस्त करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत-समिति के अध्यक्ष

श्री रामलाल पुरी का भाषण

प्रकाशक-संघ के सम्मेलन की व्यवस्था करने के लिए दिल्ली के १४ प्रकाशकों की जो स्वागत-समिति बनी, आत्माराम एण्ड संस के संचालक श्री रामलाल इसके प्रधान चुने गए। उनके भाषण के मुख्य अंश यहाँ दिये गए हैं।

मित्रो और साथियो,

आज इस अवसर पर आप सबका स्वागत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आप लोग यहाँ इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित हुए हैं, यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आप सब उन समस्याओं और कठिनाइयों को अच्छी तरह अनुभव करते हैं, जो आज देश में प्रकाशकों के सम्मुख उपस्थित हैं।

देश के स्वाधीन होने के बाद से हम प्रकाशकों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। विदेशी शासन-काल में हमारा देश राजनीतिक और व्यावसायिक दृष्टि से जितना पिछड़ा हुआ था, उससे कहीं अधिक पिछड़ा था शिक्षा और ज्ञान में। अंग्रेजों के समय यहाँ राजभाषा अंग्रेजी थी, परन्तु अब संविधान के अनुसार कुछ ही वर्षों में अंग्रेजी का स्थान हिन्दी को ले लेना है। अवश्य ही इस निश्चय को क्रियान्वित करने में हम प्रकाशकों को महत्वपूर्ण भाग लेना होगा; परन्तु यह निश्चित है कि प्रकाशक इस कर्तव्य को तभी अच्छी तरह निभा पायेंगे जब उनकी अपनी स्थिति सुदृढ़ हो।

समय-समय पर सरकार की ओर से दिए जाने वाले वक्तव्यों से यह तो पता चलता है कि सरकार देश में शिक्षा का प्रचार करना चाहती है, और राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास करने को उत्साहशील है, परन्तु खेद की बात है कि सरकार के उच्च अधिकारी प्रकाशन व्यवसाय की कठिनाइयों का अनुभव नहीं कर रहे हैं। यही कारण है कि प्रकाशन व्यवसाय को जितना संरक्षण प्राप्त होना चाहिए, उसका सौवां भाग भी इस समय उसे नहीं प्राप्त हो रहा है।

संरक्षण की आवश्यकता

इस समय विदेशों में बड़ी मात्रा में सस्ता छपने वाला साहित्य इस देश में आकर इतने सस्ते दामों पर बिकता है कि भारतीय प्रकाशक उसके साथ मुकाबिला नहीं कर सकता। विदेशों से सस्ते उपन्यास, सस्ती डिक्शनरियाँ, और बच्चों का साहित्य देश में आने के कारण भारतीय प्रकाशकों को पनपने का मौका नहीं मिल रहा है। इसलिए यदि सरकार देश में प्रकाशकों की स्थिति को सुदृढ़ बनाना चाहती है, तो उसे अविलम्ब विदेशों से इस प्रकार की सस्ती पुस्तकों के आयात पर रोक लगा देनी चाहिए। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में इस प्रकार की रोक लगी हुई है और उससे वहाँ के प्रकाशकों को बड़ी सहायता मिली है। इसी तरह जिन विषयों पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन अभीष्ट है, उन विषयों की सस्ती विदेशी पुस्तकों का आयात बन्द होना चाहिए। जब तक इस प्रकार का आयात बन्द न होगा, लोग अंग्रेजी की सस्ती पुस्तकें खरीदकर काम चलाते रहेंगे। हिन्दी में छपी पुस्तकें अवश्य ही अपेक्षाकृत मंहगी होंगी क्योंकि अंग्रेजी पुस्तकों की तुलना में उनकी बिक्री बहुत कम है। इसका प्रभाव लेखकों पर भी पड़ रहा है। बहुत से उच्च कोटि के ऐसे लेखक हैं जो हिन्दी में लिख सकते हैं, पर वे अंग्रेजी में इसलिए लिखते हैं कि अंग्रेजी में लम्बा संस्करण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…के कारण उन्हें अच्छे पैसे मिलते हैं।

बिक्री का प्रश्न

हिन्दी भाषा की समृद्धि हिन्दी के लेखकों और प्रकाशकों …समृद्धि पर निर्भर है। यदि अच्छी पुस्तकें लिखी नहीं …गी, अथवा लिखी जाने पर भी प्रकाशित न होंगी, तो …की उन्नति नहीं होगी। अच्छी पुस्तकों का लेखन और …की बिक्री पर निर्भर है। इस समय हिन्दी पुस्तकों की …की बहुत कम है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार …कों की बिक्री बढ़ाने का सक्रिय प्रयत्न करे।

जब तक हिन्दी पुस्तकों की बिक्री नहीं बढ़ेगी तब तक न …गम्भीर विषय के अच्छे ग्रंथ प्रकाशित होंगे, न प्रकाशकों …उन्नति होगी और न हिन्दी लेखकों की ही आर्थिक दशा …गी। इस व्यवसाय में कठिनाई पड़ने पर बैंकों से …कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हो सकती। अनेक बार …शक इतनी आर्थिक कठिनाइयों में होता है कि वह नकद …प्राप्त करने के लिए बहुत कम दाम पर भी पुस्तकें बेचने …विवश हो जाता है। यह प्रवृत्ति भी पुस्तकों की खरीद में …तथा घूसखोरी का मूल कारण है, जिससे बदनामी …भी होती है।

अब मैं कुछ शब्द उत्तम पुस्तकों के निर्माण तथा उनकी …आदि के विषय में भी कहना चाहता हूँ। हमारे विश्व-…लयों में अनेक अनुसन्धानकर्ता डाक्टरेट की उपाधि के …र अनुसन्धान और परिश्रम करते हैं। वे पुस्तकें, जिन पर …क्टरेट की उपाधि दी जाती है, बड़े परिश्रम का फल होती …हैं और उन्हें उत्कृष्ट कोटि का होना ही चाहिए। मेरा …मत है कि अनुसन्धान के बाद डाक्टरेट के लिए स्वीकृत …किए गए सब ग्रन्थ अवश्य ही प्रकाशित होने चाहिएँ। इन …ग्रन्थों की बिक्री के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था भी सरकार …से होनी चाहिए।

…अच्छी पुस्तकों पर अधिक कमीशन सम्भव नहीं

आजकल सरकारी विभागों की ओर से बहुत सी पुस्तकें …जाती हैं। परन्तु इस प्रकार की खरीद में प्रकाशकों से …कमीशन–२५ से ४० प्रतिशत–की मांग की जाती है। …प्रकाशक को पुस्तक की छपाई भी अच्छी करानी है, उसे …भी बनाना है और लेखक को रायल्टी भी देनी है तो …लिए इतना कमीशन देना सम्भव नहीं। परिणाम यह होता है कि राज्य-विभागों द्वारा अच्छी पुस्तकें न खरीद कर घटिया पुस्तकें खरीदी जाती हैं, जिससे अच्छे लेखकों और अच्छे प्रकाशकों को हानि होती है। इस विषय में सरकार को पुस्तकों के चुनाव के लिए कुछ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि अच्छी पुस्तकें ही खरीदी जायँ और उन पर सामान्य व्यापारिक कमीशन के आधे से अधिक कमीशन की मांग न की जाय। सरकार को यह बात भली भांति अनुभव कर लेनी चाहिए कि प्रकाशक की जेब में पैसा आने पर ही वह उससे नये प्रकाशन कर सकता है। यदि उसे लाभ न होगा तो वह दो-चार पुस्तकें छापकर हिम्मत हार कर बैठ जायगा। आज हिन्दी में अधिकांश प्रकाशकों की यही दशा है।

वस्तुतः प्रकाशन-व्यवसाय में उतना लाभ नहीं है जितना दूर से दिखाई पड़ता है। पुस्तक के मूल्य का लगभग ३५ प्रतिशत छपाई पर व्यय हो जाता है। यदि पुस्तक सचित्र हो तो यह व्यय और भी अधिक होता है। १० प्रतिशत कार्यालय और दुकान के ऊपरी खर्चे पड़ जाते हैं। २५ प्रतिशत व्यापारिक कमीशन देना पड़ता है और १५ से २५ प्रतिशत तक लेखक की रायल्टी होती है। इस प्रकार कुल ५ से १५ प्रतिशत तक ही शेष बचता है, जिसमें रुपये का ब्याज, व्यवसाय का जोखम, प्रकाशक का अपना पारिश्रमिक और लाभ सभी-कुछ सम्मिलित है। यह हिसाब भी तभी सही समझा जा सकता है जब कि पूरे-का-पूरा संस्करण बिक जाय। यदि पूरा संस्करण न बिके तो प्रकाशक को घाटा उठाना पड़ता है। इतना ही नहीं, बल्कि यदि किसी पुस्तक के पहले तीन संस्करणों में से एक भी संस्करण असफल हो जाय तो प्रकाशक का सारा लाभ घाटे में परिवर्तित हो जाता है।

ऐसी दशा में जो लोग अच्छे प्रकाशक से ३० या ४० प्रतिशत कमीशन प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें केवल निकम्मी पुस्तकें ही प्राप्त हो सकती हैं, जिनके लेखक को उचित पारिश्रमिक न दिया गया हो और या फिर उन पुस्तकों के मूल्य बहुत अधिक रखे गये हों।

प्रकाशकों को रुपया उधार मिल सके

यदि देश में शिक्षा का प्रचार करना है, यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी को शीघ्र उन्नत करना है तो प्रकाशकों की आर्थिक स्थिति में सुधार करना आवश्यक होगा। इसके लिए प्रकाशकों को कठि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाई के समय आर्थिक सहायता देने का प्रबन्ध होना चाहिए। अन्य व्यवसायों में माल के आधार पर बैंक रुपया उधार देते हैं, परन्तु प्रकाशक पुस्तकों के स्टाक के बदले रुपया प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसी दशा में यदि प्रकाशन व्यवसाय को उन्नत करना अभीष्ट है तो सरकार को रुपया उधार देने की कुछ व्यवस्था करनी चाहिए। इसके लिए यह पद्धति अपनाई जा सकती है कि उच्च स्तर की हर नई पुस्तक प्रकाशित होने पर सरकार प्रकाशक से उसकी ५०० प्रतियाँ लेकर उनका मूल्य प्रकाशक को दे दे। यह राशि प्रकाशक के पास उधार रूप में रहेगी। पहली ५०० प्रतियाँ बिकने पर प्रकाशक इस राशि को लौटा कर अपनी पुस्तकें वापस ले लेगा। इस व्यवस्था में यह शर्त रहे कि प्रकाशक उस पुस्तक का नया संस्करण तभी कर सके, जब वह सरकार की धनराशि लौटा दे, अन्यथा नहीं।

प्रकाशकों को उच्च स्तर की बड़ी-बड़ी पुस्तकों के प्रकाशन में समर्थ बनाने के लिए दूसरी आवश्यकता यह है कि उन पुस्तकों की बिक्री खूब हो और उनका मूल्य भी इतना हो जिससे प्रकाशक को सन्तोष-जनक लाभ हो सके।

बुकपोस्ट की दरें घटाना आवश्यक है

हमारा देश इस बात के लिए बदनाम है कि संसार में सबसे अधिक अशिक्षा हमारे यहाँ है। इसका कारण दो सौ वर्षों के विदेशी शासन को बताया जाता है और इस बात का ढोल बजाकर प्रचार किया जाता है कि हमारी वर्तमान सरकार लोगों को शिक्षित करने के लिए सब सम्भव उपाय बरत रही है। हमें सरकार के इरादों पर सन्देह नहीं है, पर यदि थोड़ा भी विचार किया जाय, तो सरकार द्वारा अपनाई गई नीति उसके घोषित उद्देश्यों के ठीक विपरीत दिखाई पड़ती है।

सरकार ने दो कार्य ऐसे किये हैं जो निश्चित रूप से शिक्षा की उन्नति और प्रसार में बाधक हैं। इसमें से पहला कार्य है बुकपोस्ट की डाकदरों में वृद्धि। संसार के सभी सभ्य देशों में डाक द्वारा पुस्तकें भेजने की दर विशेष रूप से सस्ती रखी गई है। दर कम होने से दूर-दूर गाँवों में बिखरी हुई जनता भी नई छपने वाली पुस्तकों का लाभ उठा सकती है। विदेशी शासकों ने भी संसार के अन्य देशों के अनुकरण में बुकपोस्ट की दर कम ही रखी थी। परन्तु हमारी स्वतन्त्र सरकार ने डाक की जो नई दरें नियत की हैं (३ पौंड के

देश के विद्वानों द्वारा मुक्तकंठ से प्रशंसित, प्रामाणिक, उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियाँ

कामायनी सौंदर्य—डा० फतहसिंह—उ० प्र० सरकार [illegible] पुरस्कृत—दूसरा संशोधित, परिवर्धित संस्करण—कामायनी में [illegible] वैदिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक तत्त्वों को व्यक्त करने वाली [illegible] समालोचना—विश्व विद्यालयों में पाठ्य-पुस्तक- पृष्ठ संख्या [illegible] ४२४। अजिल्द ४) सजिल्द ४॥)। (प्रथम संस्करण—पृष्ठ [illegible] मूल्य २)

साहित्य और सौंदर्य—डा० फ़तहसिंह—इसमें [illegible] काव्य, भारतीय महाकाव्य, नेमिदूत का काव्यत्व, साहित्य और [illegible] सौन्दर्य और उसका शास्त्र, पूर्व की ओर—इन विषयों पर [illegible] आलोचनात्मक निबन्ध हैं जिनमें आलोचना की एक नई शैली [illegible] अवतारणा और अभिव्यंजना की गई है। इस शैली में वैदिक [illegible] से अनुभूति प्राप्त की गई है। पृष्ठ १५८। मूल्य १॥=)।

भारतीय समाजशास्त्र; मूलाधार—डा० फतहसिंह—इस कृति में लेखक ने भारतीय समाज के आध्यात्मिक, धार्मिक—[illegible] षतः याज्ञिक—तथा अन्य समस्त आधारों की मौलिक विवेचना की [illegible] इसके कुछ शीर्षक समाज का नामरूप, व्यक्ति का नामरूप—[illegible] अभिव्यक्ति—प्राणानयज्ञ—पुरुषयज्ञ—शिवलिंग-श्रमयज्ञ—वर्णव्यवस्था—श्रमणवाद—चारयुग—नारी, नारायण और बृहती, मन्वन्तरों [illegible] विकास सिद्धान्त आदि हैं। पृष्ठ ८+२३७। अजिल्द ४) सजिल्द [illegible]

वैदिकदर्शन—डा० फतहसिंह—श्री हरजीमल डालमिया [illegible] स्कार से पुरस्कृत—भारतीय दृष्टि से वैदिकदर्शन का नवीन, गम्भीर, [illegible] पम और गुह्य तत्त्वों को खोलने वाला व्याख्यान इसकी विशेषता [illegible] पृष्ठ २७५, अजिल्द ५)।

मेघदूत—प्रो० सुधीरकुमार गुप्त—हिन्दी अनुवाद और [illegible] णियों आदि सहित। मुख्य विशेषता—पौराणिक कथाओं की [illegible] पृष्ठभूमि की सप्रमाण अनपम और विषद व्याख्या—पृष्ठ ५३२, [illegible]

समस्त विषयों के उच्चकोटि के साहित्य के विज्ञापक, प्रापक (थोक तथा फुटकर), विक्रेता और प्रकाशक—

भारती मंदिर, ३१ सी नई बस्ती खुरजा (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...डेढ़ रुपया), वे अमेरिका और इंग्लैण्ड-जैसे समृद्ध ...की दरों से दुगुनी हैं। (इंग्लैण्ड में ३ पौंड बुकपोस्ट पर ...आने ७ पाई और अमरीका में १२ आने ६ पाई के स्टाम्प ...हैं)। हमारे देश में पाँच तोले से कम वजन की पुस्तक वी० ...से मंगाने पर कम-से-कम ८ आने डाकव्यय लगता है, भले ...पुस्तक का दाम कुल ६ आने हों। वजन अधिक होने के ...साथ डाकव्यय भी बढ़ता जाता है। यह डाकव्यय ...में रहने वाले गरीब पाठकों को ही देना पड़ता है। शहरों ...रहने वाले लोग किसी सीमा तक पुस्तक-विक्रेताओं से ...खरीदकर काम चला सकते हैं, पर देहाती पाठकों के ...तो इसके अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं है कि या तो वे ...शहर में आकर पुस्तकें खरीदें, और या डाक की नई मँहगी ...दें। इस एक गलत कदम से शिक्षा के प्रसार को जितना ...पहुँचा है, उसे हज़ारों नये स्कूल खोलकर भी पूरा ...किया जा सकता। पोस्टेज में वृद्धि करना देहाती गरीब ...के पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगाने के समान है। इस प्रकार ...और देश के करोड़ों लोगों के लिए पुस्तकों को दुर्लभ ...केवल दो-चार सौ स्कूल खोल देना ही क्या शिक्षा ...कहा जायगा ?

इस गलत कदम के परिणामों पर या तो सम्बन्धित अधि-...रियों ने विचार ही नहीं किया है, या वे बजट को पूरा ...की धुन में सन्तुलन खो बैठे हैं। वे यह भूल गए कि तीन ...वज़न की जो पुस्तक डेढ़ रुपये में दिल्ली से मेरठ पहुँचती है, वही पुस्तक इससे कम दामों में लन्दन से मेरठ पहुँच ...ती है।

अधूरा राष्ट्रीयकरण हानिकारक है

सरकार का दूसरा गलत कदम प्रकाशन व्यवसाय के राष्ट्रीय-...ण का है। सरकार शिक्षा-प्रचार तो करना चाहती है, पर ...ने प्रायः सभी काम ऐसे किये हैं, जो शिक्षा-प्रचार में भयंकर ...क हैं। केन्द्रीय तथा राज्य-सरकारों ने पाठ्य-पुस्तकों का ...शन अपने हाथ में लेकर प्रकाशकों के हितों पर ...आघात किया है। जिस चीज के प्रकाशन से हिन्दी-...शक जीते थे, जिनकी बिक्री खूब है और जिनका ...शन-और विक्रय सरल है उसे सरकार ने अपने हाथ में ...लिया। टैक्निकल पुस्तकों, विश्वकोषों, कॉलिज की ऊँची ...की पाठ्य-पुस्तकों, मौलिक साहित्यिक तथा अनुसन्धान

प्रकाशन क्षेत्र में नई स्थापना

: एक ही वर्ष में पाँच पुस्तकें पुरस्कृत :

१. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—डॉ० वार्ष्णेय २।।)
२. महाकवि भूषण—श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित २।।)
३. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास—डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल १०)
४. हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव—श्री मन्मथ राय २।।)
५. सौन्दर्य शास्त्र—डॉ० हरद्वारी लाल शर्मा ४)

पूर्व पुरस्कृत पुस्तकें

१. वीर सतसई—श्री वियोगी हरि १।)
२. शबनम —श्रीमती दिनेशनन्दिनी १।।)
३. प्रकृति और काव्य (हिन्दी खण्ड)—डा० रघुवंश ६।।)
४. संस्कृति संगम—आचार्य क्षितिमोहन सेन २।।)

सद्यः प्रकाशित पुस्तकें

१. दिल की बात—श्री गुरुदयाल मल्लिक ३)
२. तुलसी रसायन—डॉ० भगीरथ मिश्र २।।)
३. चाँदनी के खण्डहर—श्री गिरधर गोपाल १।।)

आगामी प्रकाशन

१. सूर-सागर सार—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (प्रेस में)
२. वीर काव्य-संग्रह—डॉ० टीकमसिंह तोमर (प्रेस में)
३. रीति-काव्य-संग्रह—डॉ० जगदीशप्रसाद गुप्त (प्रेस में)
४. हमारे लेखक—श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ (प्रेस में)

साहित्य भवन लिमिटेड

ज़ीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थों के प्रकाशन में सरकार ने हाथ नहीं लगाया, क्योंकि इन चीजों में लाभ अल्प तथा संदिग्ध है। तो क्या केवल छोटी श्रेणियों की पाठ्य-पुस्तकें छाप देने से ही हिन्दी राष्ट्र-भाषा बन जायगी ? "मीठा-मीठा गप-गप और कड़ुआ-कड़ुआ थू" करने से राष्ट्रभाषा समुन्नत नहीं हो सकती।

राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में मेरा अपना विचार है कि जब तक सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण का सिद्धान्त न अपना लिया जाय, तब तक सरकार को केवल उस काम को अपने हाथ में लेना चाहिए, जो व्यक्तिगत नवारम्भ द्वारा पूरा होना बहुत कठिन हो। मेरे विचार में स्कूलों की पुस्तकें छापने का काम ऐसा नहीं था, जिसमें सरकारी नवारम्भ की आवश्यकता होती। सरकार ने इस काम में हाथ डालकर प्रकाशकों के हितों का गला घोंट दिया है, और उनके उत्साह को भग्न किया है। आज भी देश के सामने अनेक योजनाएँ और समस्याएँ उपस्थित हैं, जिनकी पूर्ति और समाधान में सरकार अपनी शक्ति का सदुपयोग कर सकती थी। परन्तु ऐसा न करके उसने प्रकाशन व्यवसाय के अधूरे, अदूरदर्शितापूर्ण राष्ट्रीय-करण के द्वारा प्रकाशकों से प्रतियोगिता प्रारम्भ कर दी है। सरकार की यह नीति प्रकाशकों के लिए प्रतिकूल और इस लिए देश में शिक्षा-प्रसार की दृष्टि से हानिकर है।

कापीराइट कानून में सुधार की आवश्यकता

उत्कृष्ट पुस्तकों के प्रकाशन में एक और बाधा कापीराइट कानून की है। हम भारतीय प्रकाशकों की स्थिति इस समय ऐसी नहीं है कि हम विदेशी प्रकाशकों से किस्म में या मूल्य में प्रतियोगिता कर सकें। यहां तक कि हमारी सरकार और सरकारी प्रेस भी इस प्रकार की प्रतियोगिता में सफल नहीं हो सकते। फिर भी, देश का हित इसमें है कि हमारे देश का धन अनावश्यक रूप से विदेशों में न जाय। विदेशी शोषण से बचने का यत्न हमें स्वयं करना पड़ेगा। स्वाधीन होने के बाद अमेरिका ने शोषण से बचने की इस आवश्यकता को अनुभव किया था। उसने अपना कापीराइट कानून अलग से बनाया। इस कानून के अनुसार विदेशों में छपी सब पुस्तकें अमेरिका में स्वच्छन्दतापूर्वक, कापीराइट का बिना किसी प्रकार का मूल्य दिये नहीं छापी जा सकती थीं। इतना ही नहीं, विदेश में छपी किसी भी अंग्रेजी पुस्तकों का अमेरिका में आयात नहीं किया जा सकता था। इस कानून का फल यह हुआ कि अमेरिका में

हमारे प्रकाशन

कहानी

होली और दीवाली : इलाचन्द्र जोशी ४)
जिन्दगी के अनुभव : श्रीमती लुम्बा २)
डायरी के नीरस पृष्ठ : इलाचन्द्र जोशी ३)

उपन्यास

जिप्सी : इलाचन्द्र जोशी ८)
धरती की आँखें : लक्ष्मीनारायण लाल ४।।)

नाटक

ऋतुराज : डा. रामकुमार वर्मा २।।)
तार के खम्भे : सत्येन्द्र शरत् २)
पर्वत के पीछे : लक्ष्मीनारायण लाल ३)

कविता

मधुशाला : बच्चन २)
मधुबाला : बच्चन २)
निशा निमंत्रण : बच्चन २)
एकान्त संगीत : बच्चन
सतरंगिनी : बच्चन
खैयाम की मधुशाला : बच्चन
सूत की माला : बच्चन
बंगाल का काल : बच्चन

हमारे आगामी प्रकाशन

आधुनिक मनोविज्ञान : मधुकर
मनोविज्ञान और शिक्षा : मधुकर
भारतीय दर्शन के मूल-तत्व : हिरियाना
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास : थिल्ली
कविता संग्रह : सुमित्रानन्दन पन्त
नीति शास्त्र : शान्ति जोशी

इतिहास तथा राजनीति-शास्त्र

राजनीति प्रवेशिका : लास्की
राजनीति शास्त्र के आधार : पंत तथा गुप्ता
आधुनिक यूरोप का इतिहास : शेविल
विश्व-सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास (भाग १) : मालवीय तथा त्रिपाठी
नागरिक शास्त्र के आधार : पन्त
भारतीय संविधान तथा नागरिकता : पन्त

दर्शन तथा मनोविज्ञान

प्रारम्भिक मनोविज्ञान : मार्गन तथा गिलीलैण्ड
नीतिशास्त्र का आलोचनात्मक परिचय : ह्वीलराइट
नवीन मनोविज्ञान : मधुकर

सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के मूल्य का पैसा बाहर जाना रुक गया और शीघ्र यहाँ का प्रकाशन व्यवसाय उन्नत हो गया। इस समय में भी हमें इसी प्रकार के नये कापीराइट कानून की सकता है, जिसके अनुसार हम विदेशी पुस्तकों के अनुवाद उनके चित्र बिना किसी प्रकार का मूल्य दिये या अनुमति लिये छाप सकें। यह बात वैज्ञानिक पुस्तकों के चित्रों के में विशेष रूपसे लागू होती है, क्योंकि हमारे यहाँ उपयुक्त चित्रकारों की कमी है। अतः मेरा सुझाव है कि इस समय, कम-से-कम कुछ वर्षों के लिए, कापीराइट में इस प्रकार के परिवर्तन कर दे, जिससे ये बाधाएँ हो जायँ। इससे प्रकाशकों का सामर्थ्य बहुत बढ़ जायगा वे अच्छी पुस्तकें छापकर हिन्दी की अधिक सेवा करने में समर्थ होंगे।

छपाई की अच्छी मशीनों का अभाव

इसी प्रकार हमारे सामने एक और बड़ी समस्या छपाई अच्छी मशीनों की है। इस समय हम लोग यदि अधिक खर्च करके भी पुस्तक की अच्छी छपाई कराना चाहें तो नहीं करा सकते, क्योंकि विदेशों के मुकाबिले की छपाई के लिए हमारे पास अच्छी मशीनें नहीं हैं। सरकार विचित्र नीति के कारण देश में बहुत पुराने ढंग की 'रीबिल्ट' मशीनों का आयात हो रहा है। इन मशीनों में से कई माडल तीस चालीस-चालीस वर्ष तक पुराने हैं। इन मशीनों द्वारा हम विदेशी पुस्तकों का क्या मुकाबला कर हैं! भारतीय प्रकाशक को प्रायः दोष दिया जाता है पुस्तकों का निखार—गेट अप—अच्छा नहीं। परन्तु इस बात को कोई नहीं सोचता कि उसके पास मशीनें ही नहीं हैं जिनसे अच्छी छपाई हो सके। सरकार चाहिए कि वह इन पुरानी 'रीबिल्ट' मशीनों के आयात को दे। अच्छी मशीनों का या तो विदेशों से आयात किया और या फिर उनका निर्माण इसी देश में हो। परन्तु राष्ट्रीय हित इसी में है कि हम भारत को पुरानी मशीनों कबाड़खाना न बनने दें।

शिक्षा के प्रसार तथा राष्ट्रभाषा की उन्नति के हित में थोड़े से सुझावों को प्रस्तुत करते हुए मैं आप लोगों का स्वागत करता हूँ। मेरा विश्वास है कि इस दिशा में आप द्वारा किये गए प्रयत्न देश की उन्नति में सहायक होंगे।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

देहली के प्रमुख प्रकाशक

: : :

राजकमल प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स

राजपाल एण्ड सन्स

: : :

के हिन्दी - प्रकाशन

क

क म ला

ला

टाइप फाउण्ड्री

द्वारा निर्मित टाइपों में छपते हैं।

हिन्दी मराठी गुरुमुखी अंग्रेजी १० से

७२ प्वाइण्ट तक के कमला टाइपों का

बृहद् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइये।

कमला टाइप फाउन्ड्री देहली कमला टाइप फाउन्ड्री देहली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा सर्वत्र बिकने

साहित्य

प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ :
डॉ० रामविलास शर्मा ३॥)

भारतेन्दु युग : डॉ० रामविलास शर्मा ३)

'रास पंचाध्यायी' तथा 'भँवर गीत' :
(मूल, विस्तृत टीका और समालोचना) डॉ० सुधीन्द्र २)

साहित्य-समीक्षांजलि :
(२७ सुप्रसिद्ध लेखकों के २६ निबन्धों का संकलन)
डॉ० सुधीन्द्र ४)

पृथ्वीराज रासो : (पद्मावती समय)
प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए० १॥)

चिन्तामणि दर्शन :
(चिन्तामणि प्रथम भाग की टीका तथा समालोचना)
प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए० २)

हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ : (द्वितीय संस्करण)
श्री जयकिशनप्रसाद एम० ए० ५)

रस अलंकार पिंगल : (द्वितीय संस्करण)
प्रो० शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० २॥)

काव्य-शास्त्र : (काव्य के लक्षण, शब्द-शक्ति, रस, गुण और रीति, अलंकार, पिंगल तथा दोष)
प्रो० शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० ३॥)

विनय-पत्रिका-दर्शन : (तुलसीदासकृत 'विनय-पत्रिका' पर एक-मात्र आलोचनात्मक पुस्तक)
प्रो० तपेश कुमार चतुर्वेदी एम० ए० १॥)

शैलियाँ : (प्राचीन अर्वाचीन कवि एवं लेखकों का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा शैली)
प्रो० फूलचन्द जैन 'सारंग' एम० ए० १॥)

हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास : द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण)
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० २)

भाषा विज्ञान तत्त्व : (भाषा विज्ञान का सरल अध्ययन)
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए० १॥)

साहित्यालोचन सिद्धान्त : (साहित्यालोचन का सरल अध्ययन) प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०

हिन्दी और उसके कलाकार :
प्रो० फूलचन्द जैन 'सारंग' एम० ए०

हिन्दी आलोचना के भिन्न-भिन्न स्रोत और उनके विकास का इतिहास :
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०

हिन्दी निबन्ध : (४० उच्चकोटि के हिन्दी निबन्ध)
प्रो० रामजीलाल बधौतिया एम० ए०

हमारे प्रमुख साहित्यकार : श्री रामनारायण मिश्र एम० ए०

आलोचनात्मक अध्ययन (प्रश्नोत्तर में)—

तुलसीदास : प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

सूरदास : श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री एम० ए०

कवि प्रसाद : श्री शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए०

गद्यकार प्रसाद : श्री शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए०

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र :
श्री रामजीलाल बधौतिया एम० ए०

हिन्दी साहित्य का इतिहास :
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०

हिन्दी भाषा का इतिहास :
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०

भाषा विज्ञान : (द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण) प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

साहित्यालोचन : श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

बिहारी : श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

कामायनी : श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

प्रिय प्रवास : श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

साकेत : श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

आधुनिक तीन महाकाव्य : (कामायनी, प्रियप्रवास एवं [साकेत] एक ही जिल्द में) श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०

विनोद पुस्तक मन्दिर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला श्रेष्ठ प्रकाशन

टीका टिप्पणियाँ—

...व शतक समीक्षा : (समीक्षा तथा टीका)
श्री रामनारायण मिश्र एम० ए० १॥)

...वटी परिचय : श्री रामनारायण मिश्र एम० ए० ॥)

...त्रलेखा परिचय : श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० ।॥)

...वन यज्ञ परिचय : श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १॥)

हिन्दी गद्य निर्माण परिचय :
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १॥)

...चयन परिचय : श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १)

अयोध्या कांड : (तुलसीदास कृत) (तृतीय संस्करण)
(मूल, भूमिका व टीका सहित)
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० २॥)

उत्तर कांड : (तुलसीदास कृत)
(मूल, भूमिका व टिप्पणी सहित)
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० १।॥)

कवितावली : (तुलसीदास कृत) (मूल, भूमिका तथा टीका सहित, उत्तर कांड छोड़कर)
प्रो० फूलचन्द्र जैन 'सारंग' एम० ए० १।)

नाटक—

शकुन्तला नाटक : (भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
राजा लक्ष्मणसिंह १॥)

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक : (भूमिका, मूल तथा टीका सहित) भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र १)

मुद्राराक्षस नाटक : (भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र १॥)

चन्द्रावली नाटिका : (भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र १॥)

भारत-दुर्दशा : (भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र १)

उपन्यास—

(औपन्यासिक जीवन-चरित्र)
देवकी का बेटा : (श्रीकृष्ण) डॉ० रांगेय राघव ३)

यशोधरा जीत गई : (गौतम बुद्ध)
डॉ० रांगेय राघव ३)

लोई का ताना : (कबीर) डॉ० रांगेय राघव ३)

रत्ना की बात : (तुलसीदास) डॉ० रांगेय राघव ३)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : डॉ० रांगेय राघव ३)

भिखारिणी : (तृतीय संस्करण)
स्व० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' ४)

दोषी कौन ? : श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल' २)

दशकन्धर : श्री शान्तिस्वरूप गौड़ ३)

कहानियाँ—

कल्लोल : (द्वितीय संस्करण)
स्व० विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' ३)

प्रदर्शिनी : श्री देवीप्रसाद धवन 'विकल' २॥)

शतरंज की मुसीबत : श्री रतनलाल बंसल १)

किसके लिए ? : श्री रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी' १)

जब सारा आलम सोता है :
श्री पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' १॥)

काश्मीर की राजतरंगिणी कहानियाँ :
श्री बेनीप्रसाद बाजपेयी २)

राजस्थान की वीरांगनाएँ : श्रीमती शकुन्तला देवी वर्मा ।॥)

काव्य

धरती पर उतरो :
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० २॥)

जब रामराज आ जायगा :
श्री कृपाशंकर शर्मा एम० ए० १)

कंचन घट : श्री पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' २॥)

जीवन-परिचय—

तीन क्रान्तिकारी शहीद : (सरदार करतारसिंह, रामप्रसाद 'बिस्मिल' तथा सरदार भगतसिंह)
श्री रतनलाल बंसल १)

(अन्य प्रकाशित पुस्तकों की सूची मँगाइए)

हास्पिटल रोड, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ के लिए शुभ कामना तथा सहयोग के सन्देश

जो निमन्त्रित प्रकाशक किन्हीं कारणों से सम्मेलन में भाग लेने के लिए न आ सके, उन्होंने अपनी शुभ-कामनाएं भेजीं ।

"मैं संघ के उद्देश्यों से पूर्णतः सहमत हूँ ।"

रामप्रताप त्रिपाठी
हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
इलाहाबाद ।

"प्रकाशक-सम्मेलन, लेखक और प्रकाशक के सम्बन्ध में सामंजस्य ला सके ।"

महादेवी वर्मा
साहित्यकार संसद,
इलाहाबाद ।

"इस उपयोगी योजना का मैं हृदय से समर्थक हूँ । मेरी पूरी सहानुभूति है । आशा है, आपको पूरी सफलता मिलेगी ।"

नाथूराम प्रेमी
हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
बम्बई ।

"अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के सम्मेलन का आयोजन सराहनीय है । इसमें हमारी पूरी सहानुभूति है ।"

हरिप्रसन्न घोष
इण्डियन प्रेस (पब्लिकेशन्स) लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

"सफलता की हार्दिक शुभकामना । मेरी सेवाएँ आपके साथ हैं ।"

जयनाथ मिश्र
श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड,
पटना ।

प्रस्तावित संघ की उपयोगिता निस्सन्देह बहुत है । हम उसकी सफलता चाहते हैं और आशा करते हैं कि पहली-दूसरी मई को होने वाले सम्मेलन में ही संघ की कोई-न-कोई रूपरेखा बन जायगी । हम भविष्य में संघ की कार्यवाहियों में भाग लेने का यथासम्भव प्रयत्न करेंगे ।"

भवानीप्रसाद मिश्र
चेतना प्रकाशन लिमिटेड,
हैदराबाद ।

"संघ की स्थापना से (आचार्य रामलोचन शरण जी को) बहुत हर्ष है.........सम्मेलन में सर्वसम्मति से जो प्रस्ताव स्वीकृत होंगे, वे उन्हें मान्य होंगे । ' संघ की सफलता के लिए उनकी शुभकामनाएँ हम प्रेषित कर रहे हैं ।"

मैनेजर
पुस्तक भण्डार,
पटना ।

"आप लोगों का प्रयास सफल हो, यही कामना है । मेरे योग्य जो सेवा हो लिखियेगा ।"

गोविन्द
आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता ।

"जो प्रयत्न आप कर रहे हैं, वह सराहनीय एवं आवश्यक है । सम्मेलन में जो भी निर्णय आप करेंगे, वह हमारे लिए मान्य होंगे ।"

वृद्धिशंकर शर्मा 'हितैषी'
हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर ।

"सम्मेलन की सफलता के लिए शुभ-कामनाएँ ।"

गोकुलदास धूत
नवयुग साहित्य सदन,
इन्दौर ।

"मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के साथ हैं । ईश्वर इसे सफलता प्रदान करे ।"

रामेश्वर त्रिपाठी
नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के सभापति

श्री रामचन्द्र टण्डन का भाषण

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, के सहायक मंत्री श्री रामचन्द्र टण्डन सर्वसम्मति से सभापति चुने गए। उनका महत्वपूर्ण भाषण यहाँ उद्धृत किया जा रहा है।

मित्रो,

आज कल मेरे मित्र, इस सम्मेलन के संयोजक, श्री वाचस्पति पाठक ने मुझसे कहा कि मुझे इस सम्मेलन का कार्य संचालन करना है, तो मुझे कुछ संकोच हुआ। संकोच का कारण मैं बता दूँ। इस सम्मेलन में मैं हिन्दुस्तानी एकेडेमी के प्रतिनिधि के रूप में भाग ले रहा हूँ। यह विदित है कि एकेडेमी एकमात्र व्यावसायिक उद्देश्यों को सामने रखते हुए अपने कार्य का संचालन नहीं करती। बल्कि यह कहना अधिक ठीक होगा कि एकेडेमी की सेवाओं का अधिक मूल्यवान अंश वह है जिसके पीछे व्यावसायिक प्रेरणा नहीं है। फिर भी एकेडेमी का अपना बड़ा प्रकाशन-विभाग है और उसके संचालन में उसे उन सभी बातों की ओर ध्यान देना पड़ता है, जो कि प्रकाशन-व्यवसाय के साथ लगी हुई हैं। एकेडेमी को पूरा ध्यान रहता है कि सत्प्रकाशन की मर्यादाएँ न केवल बनी रहें बल्कि ऊँची उठें। इसलिए जो आग्रह मुझसे किया गया उस पर संकोच के साथ-साथ मुझे सन्तोष भी हुआ। मुझे इस बात का संकेत मिला कि आज का हिन्दी प्रकाशक-वर्ग, कम-से-कम उसका एक प्रभावशाली अंश, साहित्य-सेवा के प्रति जागरूक है और उच्चकोटि के साहित्य के प्रकाशन द्वारा हिन्दी के भण्डार को सम्पन्न करने के लिए प्रयत्नशील है। जो सम्मान आपने मुझे दिया है उसके लिए मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही आपका भी एक दायित्व है और वह है कि अपने पूरे सहयोग द्वारा उस ध्येय को अग्रसर करें जिसके लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं।

मुझे सचमुच इस बात पर आश्चर्य होता है कि आज से बहुत पहले एक सक्रिय, निष्ठ और उदार आदर्शों वाले हिन्दी प्रकाशक-संघ की (जिसका क्षेत्र प्रादेशिक और विशेष प्रकार के प्रकाशनों तक ही सीमित न हो) स्थापना की ओर सम्बन्धित व्यक्तियों का ध्यान क्यों नहीं गया। इस अवसर पर उसके कारणों में पैठने में विशेष लाभ या व्यावहारिकता नहीं है, यद्यपि यह अनुसन्धान रोचक होगा। यह स्पष्ट है कि व्यवसाय के भीतर पहले इतना संघर्ष नहीं रहा है। पहले प्रकाशक थोड़े थे और उनमें से बहुतों को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रायः किसी-न-किसी रूप में एकछत्रता प्राप्त थी और उन्होंने अपने हितों की रक्षा के लिए संघ बनाना आवश्यक नहीं समझा। कुछ अंशों में कारण राजनीतिक भी हो सकते हैं। अपने यहाँ ज्ञान के प्रसार के साधनों को वह उन्मुक्तता नहीं प्राप्त रही है जो स्वतन्त्र देशों में होती है। लेकिन निश्चय ही हमारी स्वतन्त्रता ने वातावरण बदल दिया है और अब समय आ गया है कि हमारा प्रकाशक वर्ग भी इस नये वातावरण के संदर्भ में अपनी प्रगति बदले और अपने व्यवसाय के आदर्शों को सामने रखते हुए अपना पुनर्संगठन करे। यह उचित ही है कि ऐसे प्रयत्न का केन्द्र हमारी राजधानी दिल्ली में हो।

प्रकाशन-व्यवसाय की अपनी अनेक समस्याएँ हैं। इसे स्वीकार करने में कुछ भी संकोच न होना चाहिए कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम अन्य उन्नत देशों के प्रकाशन-व्यवसाय से अपने यहाँ की स्थितियों का सन्तुलन करते हैं तो अपने को बहुत पिछड़ा हुआ पाते हैं। इसमें भी सन्देह नहीं कि पिछले कुछ वर्षों के भीतर हमारे यहाँ बहुत अन्तर आया है और प्रकाशनों का स्तर 'टेकनिकल' दृष्टि से ऊपर उठा है। इस बात का अधिकाधिक अनुभव किया जा रहा है कि अच्छे प्रकाशनों के लिए विशिष्ट ज्ञान अपेक्षित है। अच्छे प्रकाशकों को मुद्रण, कागज के उत्पादन, प्रोसेस के काम, जिल्द-बन्दी आदि के क्षेत्र में पाश्चात्य में जो यान्त्रिक उन्नति हुई है उससे न केवल परिचित होना चाहिए, बल्कि पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए। प्रकाशक-संघ के कार्य-क्षेत्र से बाहर की यह बात न होनी चाहिए कि वह अपने सदस्यों को व्यवसाय से सम्बन्धित नवीनतम 'टेकनिकल' जानकारी से अवगत करता रहे और इस प्रकार प्रकाशनों के उत्पादन-सम्बन्धी स्तर को ऊपर उठावे।

वितरण-सम्बन्धी समस्याएँ अलग हैं। उत्पादन का स्तर ऊँचा करना तभी सार्थक हो सकता है जब कि व्यवसाय की वितरण-व्यवस्था भी अधिक संगठित हो। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि वितरण की वृद्धि उत्पादन के स्तर को ऊँचा उठाने में स्वतः सहायक होगी। दोनों में घनिष्ठ पारस्परिक सम्बन्ध है। वितरण की दिशा में हमारे पुस्तक-विक्रेता एक अनिवार्य कड़ी हैं और निश्चय ही संघ को उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की ओर प्रवृत्त होना है। अच्छे साहित्य के प्रचार के लिए जिस प्रकार प्रकाशकों की जागरूकता आवश्यक है उसी प्रकार पुस्तक-विक्रेताओं की सचेष्टता भी आवश्यक है। प्रकाशकों की और पुस्तक विक्रेताओं की समस्याएँ भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, लेकिन दोनों को ही यह मानना पड़ेगा कि आपस में उनका चोली-दामन का साथ है। क्या ही अच्छा हो यदि साथ-ही-साथ पुस्तक-विक्रेताओं का भी एक संगठन बने, जिनमें दोनों व्यवसायों के अधिकृत प्रतिनिधि मिलकर आपस के सम्बन्धों को अधिक स्पष्ट कर सकें और परस्पर हितों की रक्षा कर सकें।

अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थी इस कहावत से परिचित हैं कि बुरा सिक्का अच्छे सिक्के को दूर भगा देता है। आज दुर्भाग्य से यह कहावत हमारे यहाँ पुस्तकों के व्यापार के सम्बन्ध में भी चरितार्थ होती है। कहने में यह बात कुछ अटपटी है, लेकिन आज अच्छे साहित्य के प्रचार को बड़ी बाधा पहुँच रही है ऐसे साहित्य के प्रचार द्वारा जिसे (मैं और कुछ न कहूँगा) कदाचित् उतना अच्छा न कहा जाय। जिम्मेदार प्रकाशक लेखकों के चुनाव में स्वभावतः सतर्कता रखता है, वह लेखकों के आर्थिक हक का उचित ध्यान रखता है, दूसरों के कापीराइट पर अतिक्रमण नहीं करता, छपाई की शुद्धता के प्रति सावधान रहता है, अच्छी सामग्री का उपयोग करता है। यह स्पष्ट है कि मूल्य के विषय में वह ऐसे प्रकाशकों से होड़ नहीं कर सकता जो उपर्युक्त बातों पर उतना ध्यान नहीं देते। कदाचित् यह दो वर्ग सदा रहे हैं और किसी-न-किसी रूप में सर्वत्र हैं। कदाचित् अच्छे प्रकाशनों में किसी दशा में भी आस्था न खोनी चाहिए। फिर भी व्यवहार में परिस्थिति यह है कि अच्छे साहित्य का प्रचार बहुत सीमित है। साधारण पाठक की रुचि में परिवर्तन लाने का उद्योग करना ही अन्ततोगत्वा सबसे श्रेय है। इस उद्देश्य से प्रयत्न होना चाहिए। लेकिन इसकी पूर्ति में पुस्तक-विक्रेताओं का सहयोग जितना मूल्यवान् हो सकता है वह स्पष्ट है। इसलिए जिम्मेदार पुस्तक-विक्रेताओं और प्रकाशकों के बीच अधिक पारस्परिक घनिष्ठता नितान्त अपेक्षित है।

प्रकाशकों और लेखकों के बीच के सम्बन्ध सुस्थिर और विशेष अच्छे हो सकें, इसके लिए भी उद्योग आवश्यक है। एक समय था कि लेखक को इसी बात से सन्तोष प्राप्त हो जाता था कि उसकी रचना किसी प्रकार प्रकाशित हो गई। उस समय लेखन कार्य ने एक स्पष्ट धन्धे का रूप नहीं ग्रहण किया था और प्रकाशक इससे लाभ उठाते थे। जहाँ पहले लेखकों को पारिश्रमिक भी दिया गया वहाँ वह बहुत नगण्य रहा, जिस अनुपात में उसकी कृति से प्रकाशक लाभान्वित हुआ। धीरे-धीरे लेखक अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ। ऐसा होना ही चाहिए था और ज्यों-ज्यों प्रकाशक अधिक जिम्मेदार हुए, उन्होंने लेखकों का आदर किया। आज इस बात की सम्भावना कम हो गई है कि लेखक को उसका उचित अंश आर्थिक तुष्टि के रूप में न मिले। लेकिन कुछ पुरानी कड़ुवाहटें अभी किंचित् चली आ रही हैं और प्रकाशक संघ का यह प्रयत्न होना चाहिए कि उन्हें शीघ्रातिशीघ्र दूर किया जाय। अच्छे प्रकाशक को यह न भूलना चाहिए कि अधिकाधिक लेखकों का सम्मान करके यह स्वयं अपना सम्मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता है। जिस प्रकार उसे पुस्तक-विक्रेताओं के साथ उन्हें सुस्थिर करना है उसी प्रकार लेखकों के साथ भी। लेखकों को पारिश्रमिक देने के प्रचलित प्रकारों में कदाचित् सब से सन्तोष-प्रद ढंग रायल्टी देने का है। यदि प्रकाशक संघ दोनों ही पक्षों के हितों को ध्यान में रखते हुए एक नमूने का अनुबन्धन-पत्र या प्रतिज्ञा-पत्र तैयार करके उसको प्रकाशित करे और मूलतः वह व्यवहार में आने लगे तो मेरा अनुमान है वर्तमान कटुताओं के निवारण में सहायता मिलेगी। हर हालत में प्रकाशकों को सचाई और लगन से लेखकों, पुस्तक-विक्रेताओं और अपने बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील होना है।

यह एक बहुत शुभ लक्षण है कि अच्छे साहित्य के प्रचार के विषय में अपने राज्यों की ओर से प्रवृत्ति दिखाई पड़ रही है। कई प्रदेशों के राज्यों द्वारा, उनके स्थापित पुस्तकालयों में हिन्दी की पुस्तकों के पहुँचाने का प्रयत्न हो रहा है। मैं इस बात में विश्वास रखता हूँ कि प्रकाशन व्यवसाय को अपने बल बूते पर खड़ा होना चाहिए और इसके लिए पाठकों के क्षेत्र के विस्तार का प्रयत्न ही सर्वश्रेष्ठ साधन है। फिर भी जिस मंजिल से हम गुजर रहे हैं, उसमें इस प्रकार की सहायता का बड़ा मूल्य है। जितना विशाल अपना देश है और जितनी बड़ी जनता तक हमें सभी प्रकार के उपयोगी और प्रीत्यात्मक साहित्य को पहुँचाना है, उसे देखते हुए मैं न कहूँगा कि राज्यों की ओर से पर्याप्त धन व्यय किया जा रहा है। इससे पांच-दस गुना अधिक तो निश्चय ही होना चाहिए। लेकिन जो भी धन इस मद में व्यय हो रहा है उसका उचित उपयोग हो सके, यह भी कम आवश्यक नहीं। पुस्तकों के चुनाव और क्रय के सम्बन्ध में राज्यों के अपने प्रबन्ध हैं, जिनमें सुधार सम्भव है। यदि एक सुसंगठित प्रकाशक संघ, यदि संयत और तर्कयुक्त ढंग से राज्य शासनों तक अपने सुझाव पहुँचावे तो मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि उन सुधारों को कराने में न समर्थ हो। राज्यों की, बल्कि केन्द्रीय शासन की सहायता एक दिशा में और अधिक अपेक्षित है। साहित्य-प्रचार के कार्य को देश में ज्ञान-प्रसार का कार्य समझना चाहिए। यदि हमारी सरकार इस ध्येय की पूर्ति में रेल और डाक की कुछ सुविधाएँ प्रस्तुत कर सके तो उससे बड़ा लाभ हो सकता है। इस समय डाक द्वारा सुरक्षित ढंग से प्रकाशनों को व्यक्तिगत पाठकों तक पहुँचाने में जो ऊपरी व्यय होता है, वह प्रकाशनों को महंगा बना देता है।

जैसे मैंने पहले निवेदन किया, प्रकाशन व्यवसाय की मुख्य समस्या है पाठकों के क्षेत्र का विस्तार करना। यह सही है कि हमारा देश गरीब है यद्यपि उस गरीबी को दूर करने की दिशा में काम हो रहा है। लेकिन यह भी सही है कि पढ़ने वालों का जो इस समय दायरा है या हो सकता है, उस तक पहुँचने के संगठित प्रयत्न की कमी है। रास्ते की अनेक कठिनाइयां हैं। संघ को इस बात पर विचार करना उचित होगा कि इस दिशा में क्या कोई सामूहिक प्रयत्न हो सकता है। यह स्पष्ट है कि हम केवल अच्छे साहित्य के प्रचार के समुत्सुक हैं। यह भी स्पष्ट है कि यदि हम पाठकों का विस्तृत क्षेत्र चाहते हैं तो हमें पुस्तकों के मूल्य को सुलभ करना होगा। क्या संघ की ओर से कोई सम्मिलित, आयोजित प्रयत्न ऐसा नहीं सम्भव है कि कम से कम थोड़ी सी पुस्तकें हजार-दो-हजार की संख्या में न छपकर लाख-दो लाख की संख्या में छपें और उन्हें सस्ते दामों में अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचाया जाय? यह ऐसा व्यावहारिक प्रचार-कार्य है जो पाठकों के क्षेत्र को विस्तृत करेगा और उन्हें पुस्तकों के क्रय के लिए अभ्यस्त करेगा। प्रत्येक दृष्टि से यह एक बड़ा कार्य है। इस कार्य में राज्याश्रय इस रूप में प्राप्त करने का प्रयत्न हो सकता है कि वह इस प्रकार के प्रकाशनों के वितरण में सहायता दे।

कुछ थोड़ी-सी कठिनाइयों की ओर मैंने आपका ध्यान दिलाने का प्रयत्न किया है। यह नहीं कि यह बातें यहाँ उपस्थित, ऐसे अनुभवी और सम्मान्य प्रकाशकों की दृष्टि से ओझल रही हों। यह भी नहीं कि सभी बातें इस संक्षिप्त निवेदन में आ गई हों। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जो नित्य के व्यवहार में उठती हैं और आगे उठेंगी। उन्हें सुलझाने का प्रयत्न एक स्थायी सुसंगठित संघ ही कर सकता है। विस्तार की बातों पर यह विचार सम्भव नहीं।

मेरी यही आशा है कि आप सभी लोग, अखिल भारतीय प्रकाशक संघ की स्थापना को एक गंभीर और पवित्र अनुष्ठान के रूप में देखेंगे और उसके लिए व्यवसाय के गौरव के उपयुक्त ध्येय निश्चित करेंगे, और यही नहीं, उन ध्येयों को साध्य बनाने का यथा शक्य प्रयत्न करेंगे।

मैं आप सब लोगों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का सर्व सम्मति से स्वीकृत

विधान

नाम

१. इस संस्था का नाम "अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ" होगा।

उद्देश्य

२ (अ) हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशकों के हितों का संरक्षण और सामूहिक प्रतिनिधित्व करना।

(आ) प्रकाशन-व्यवसाय को समृद्धिशाली और गौरवान्वित बनाना।

(इ) प्रकाशन-व्यवसाय सम्बन्धी आधुनिक जानकारी एवं तथ्यों का प्रसार करना।

(ई) हिन्दी साहित्य के स्तर को उत्तरोत्तर ऊँचा करना तथा उसके अभावों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना।

(उ) लेखक, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित करना।

(ऊ) लोगों में हिन्दी पुस्तकों के पढ़ने की रुचि पैदा करना और पाठकों के क्षेत्र का विस्तार करना।

(ए) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पत्र निकालना, पुस्तकालय स्थापित करना, पुस्तक-प्रदर्शनियाँ करना, तथा अन्य उचित सम्भावित प्रयत्न करना।

कार्यालय

३. संघ का प्रारम्भिक कार्यालय दिल्ली में रहेगा। पर कार्य-समिति उचित समझे तो अन्य उपयुक्त स्थानों पर शाखा-कार्यालय भी खोले जा सकेंगे।

सदस्यता

४. निम्नलिखित प्रकाशक इस संघ के संस्थापक सदस्य माने जाएंगे :[1]

(अ) सदस्यों के आगे प्रवेश के लिए कार्य-समिति पाँच सदस्यों की एक प्रवेश

---

१. जिन प्रकाशकों ने सदस्य होने की स्वीकृति सम्मेलन के अवसर पर दे दी थी, उनसे नियमानुसार शुल्क प्राप्त हो जाने पर संस्थापक-सदस्यों की सूची प्रकाशित कर दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसमिति बनाएगी, जिसका सुझाव प्राप्त होने पर कार्य-समिति अपना निर्णय देगी ।

(आ) प्रत्येक सदस्य को २५) प्रवेश शुल्क और २४) वार्षिक शुल्क देना होगा ।

(इ) संघ के उद्देश्यों को मानने वाले प्रादेशिक प्रकाशक-संगठन इस संघ से सम्बद्ध हो सकेंगे, और अपना एक अधिकृत प्रतिनिधि भेज सकेंगे ।

(ई) हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग), नागरी प्रचारिणी सभा (बनारस), बिहार-राष्ट्र-भाषा परिषद् (पटना), दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मद्रास), हिन्दुस्तानी एकेडेमी (इलाहाबाद), साहित्यकार संसद (इलाहाबाद), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा) आदि सार्वजनिक एवं अखिल भारतीय संस्थाएं सदस्य होंगी, और उनसे शुल्क नहीं लिया जायगा ।

(उ) संघ के नियमों का उल्लंघन सिद्ध होने पर सदस्य को कार्यकारिणी के निर्णय द्वारा सदस्यता से वंचित किया जा सकेगा ।

पदाधिकारी

५. संघ के नीचे लिखे पदाधिकारी होंगे :

(अ) १ सभापति । ४ उप-सभापति । १ प्रधान मन्त्री । ३ संयुक्त मन्त्री । १ कोषाध्यक्ष ।

(आ) कार्य की सुविधा के लिए सभापति और उप-सभापतियों में से एक, प्रधान मन्त्री और संयुक्त मन्त्रियों में से एक तथा कोषाध्यक्ष उस स्थान के निवासी होंगे जहाँ कार्यालय होगा ।

कार्य समिति

६. संघ की एक कार्य समिति होगी जिसके पदाधिकारियों सहित २१ सदस्य होंगे ।

कार्यकाल

७. पदाधिकारियों तथा कार्य समिति का कार्यालय अगले निर्वाचन तक रहेगा ।

वार्षिक अधिवेशन

८. कार्य समिति द्वारा निश्चित स्थान और तारीखों पर संघ का वार्षिक अधिवेशन हुआ करेगा । इसी अधिवेशन में कार्य समिति एवं पदाधिकारियों का चुनाव होगा ।

सभापति का चुनाव

९. कार्य समिति आगामी अधिवेशन से तीन मास पूर्व अपने सदस्यों से सभापति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए नाम प्रस्तावित करने को कहेगी और एक निश्चित समय में प्राप्त नामों में से बहुमत प्राप्त तीन नामों को चुनकर उन्हें संघ के सदस्यों तथा सम्बन्धित प्रादेशिक संगठनों को भेजेगी। सदस्य प्राथमिकता के हिसाब से क्रमांक देकर १५ दिनों के भीतर प्रधान कार्यालय को भेज देंगे। बहुमत प्राप्त सदस्य का नाम सभापति के रूप में घोषित कर दिया जायगा।

कार्य समिति का दायित्व

१०. (अ) संघ द्वारा निर्धारित नीतियों एवं प्रस्तावों को कार्यान्वित करना कार्य-समिति का दायित्व होगा।

(आ) नियमोपनियम बनाने का अधिकार कार्य समिति को होगा।

कार्य समिति का कोरम

११. (अ) कार्य समिति की कार्यवाही के लिए पाँच सदस्यों का कोरम आवश्यक होगा।

(आ) कार्य समिति की कार्यवाही पत्रों द्वारा मत मंगाकर भी की जा सकेगी। किन्तु समिति के कुल सदस्यों की संख्या के अनुसार बहुमत होना आवश्यक होगा।

कार्य समिति की बैठक

१२. कार्य समिति की बैठकें वर्ष में कम-से-कम तीन बार हुआ करेंगी।

पदाधिकारियों के कार्य

१३. (अ) सभापति : विभिन्न समितियों तथा सभा का संचालन करेंगे। समान मत होने पर सभापति को अतिरिक्त मत देने का अधिकार रहेगा।

(आ) उप सभापति : सभापति की अनुपस्थिति में कार्य समिति की बैठकों का और कार्य का संचालन कोई एक उप सभापति करेंगे।

(इ) प्रधान मन्त्री : कार्य समिति की बैठकें बुलाना, कार्य समिति के निर्णयों को कार्यान्वित करना एवं सभापति की सलाह और निर्देशन से संघ का कार्य-संचालन करना प्रधान मन्त्री का कार्य होगा।

(ई) संयुक्त मन्त्री : प्रधान मन्त्री के परामर्श से कार्य करना संयुक्त मन्त्रियों का कार्य होगा। किन्तु प्रधान मन्त्री की अनुपस्थिति में उनके कार्यों का सम्पादन संयुक्त मन्त्री कर सकेंगे।

(उ) कोषाध्यक्ष : कोषाध्यक्ष सम्पूर्ण आय-व्यय का विवरण विधिवत् रखेंगे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी एक वर्ष में एक बार संघ द्वारा मनोनीत आय-व्यय निरीक्षक द्वारा जाँच कराएंगे।

अर्थ-व्यवस्था

१४. संघ का रुपया कार्य समिति द्वारा निश्चित किये गए बैंक में जमा होगा और प्रधान मन्त्री, संयुक्त मन्त्री (जो कार्यालय में रहेगा) तथा कोषाध्यक्ष में से दोनों के सम्मिलित हस्ताक्षरों से निकाला जा सकेगा, लेकिन कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर होने अनिवार्य हैं।

असाधारण बैठक

१५. (अ) किसी निश्चित कार्य के लिए कार्य समिति के सात सदस्यों के लिखित आवेदन करने पर संघ का विशेष अधिवेशन बुलाया जा सकेगा।

(आ) पूरी सदस्यता के एक तिहाई सदस्यों द्वारा संघ का विशेष अधिवेशन बुलाया जा सकेगा।

बैठक की सूचना

१६. (अ) कार्य समिति की बैठक बुलाने के लिए १५ दिन पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा।

(आ) कार्य समिति की असाधारण बैठक की सूचना ७ दिन पहले दी जायगी।

(इ) संघ के विशेष अधिवेशन की सूचना २१ दिन पूर्व दी जायगी।

विधान परिवर्तन

१७. संघ के वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित सदस्यों में से तीन-चौथाई सदस्यों के बहुमत से विधान में संशोधन परिवर्तन या परिवर्द्धन किये जा सकेंगे लेकिन प्रस्तावित परिवर्तनों की सूचना कार्यालय द्वारा सदस्यों को कम-से-कम १५ दिन पहले दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशन संघ के

प्रारम्भिक सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव

पहले दो प्रस्ताव सभापति ने प्रस्तुत किए तथा सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए। यह प्रसन्नता की बात है कि अपने अन्तिम रूप से सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए :

आज के हिन्दी प्रकाशकों का यह अखिल भारतीय सम्मेलन निम्नलिखित प्रकाशकों की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता है। सम्मेलन संयोजक महोदय को यह अधिकार देता है कि वे सम्बन्धित परिवारों को प्रस्ताव की सूचना भेज दें।

श्री एच० के घोष	(इण्डियन प्रेस लि० प्रयाग)
पं० रामनारायण त्रिवेदी	(दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता)
श्री दिलावर सिंह	(गौतम बुक डिपो, दिल्ली)
श्री रामदहिन मिश्र	(ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना)
श्री मुरारी लाल केडिया	(हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता)
लाला मन मोहन दास	(साहित्य भवन लि०, इलाहाबाद)

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन हिन्दी-प्रकाशन जगत् के अग्रणी वयोवृद्ध प्रकाशक श्री नाथूराम जी प्रेमी की अस्वस्थता पर चिन्ता प्रकट करते हुए हार्दिक कामना करता है कि प्रेमी जी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें और प्रकाशन जगत् को चिरकाल तक अपनी पथ-प्रदर्शक प्रेरणा से लाभान्वित करते रहें।

यह सम्मेलन हिन्दी प्रकाशकों का एक संघ बनाने का निश्चय करता है और उसके लिए विधिवत् नियम तथा उद्देश्य बनाने के लिए निम्न व्यक्तियों की एक उप समिति नियुक्त करता है :

१. श्री मार्तण्ड उपाध्याय २. श्री देवनारायण द्विवेदी ३. श्री वाचस्पति पाठक ४. श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी तथा ५. श्री कृष्णाचन्द्र बेरी।

प्रस्तावक—श्री श्यामनारायण कपूर
अनुमोदक—श्री देवनारायण द्विवेदी

यह सम्मेलन सरकार की हिन्दी लेखकों को पुरस्कार देने की नीति पर हर्ष प्रकट करता है। सम्मेलन इस विषय में विभिन्न सरकारों से अनुरोध करता है कि पुरस्कृत पुस्तकों के प्रचार को प्रोत्साहन देने के लिए इनकी प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में खरीदें और अपने पुस्तकालयों में रखें। किन्तु यह सम्मेलन यह अनुभव भी करता है कि सरकार को इस दिशा में और अधिक उदारता से काम करना चाहिए।

प्रस्तावक—दीनानाथ
अनुमोदक—के० एल० मलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सम्मेलन केन्द्रीय सरकार द्वारा अप्रैल १६५३ से लागू डाक-दर की नीति पर चिन्ता और क्षोभ प्रकट करता है जिससे ज्ञान-प्रसार और पुस्तक व्यवसाय की राह में भारी बाधा प्रस्तुत हुई है। सरकार से अनुरोध है कि देश में शिक्षा-प्रचार के हित में पाठकों पर पड़े इस अनावश्यक कर-भार को हटाने के उद्देश्य से डाक-दर में उचित कमी करे।

प्रस्तावक—श्री श्रीनिवास अग्रवाल
अनुमोदक—श्री कृष्णचन्द्र बेरी

✧ ✧ ✧

यह सम्मेलन केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करता है कि वह पुस्तकों के लिए रेल-गाड़ी के भाड़ों की वर्तमान दरों में कमी करके उन्हें अखबारी दरों से भेजने की सुविधा दे।

प्रस्तावक—श्री कैलाशनाथ भार्गव
अनुमोदक—श्री गिरिधर शुक्ल

✧ ✧ ✧

यह सम्मेलन पत्र-पत्रिकाओं के व्यवस्थापकों से साग्रह अनुरोध करता है कि वे पुस्तकों के विज्ञापन-दर में यथोचित कमी लाकर हिन्दी पुस्तकों के प्रचार में योग दें।

प्रस्तावक—श्री मार्तण्ड उपाध्याय
अनुमोदक—श्री देवनारायण द्विवेदी
एवं—श्री ओंप्रकाश

✧ ✧ ✧

यह सम्मेलन केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करता है कि वह ऐसी व्यवस्था करे जिससे रेलवे स्टेशनों के बुक-स्टालों पर बिकने वाली पुस्तकों से कुरुचिपूर्ण साहित्य का बहिष्कार हो और उनके द्वारा स्वस्थ एवं सुरुचि-पूर्ण साहित्य का प्रचार हो।

प्रस्तावक—श्री श्रीनिवास अग्रवाल
अनुमोदक—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
एवं—अशोक जी

✧ ✧ ✧

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ कुछ प्रादेशिक सरकारों द्वारा पुस्तकों पर बिक्री-कर लगाने की नीति को ज्ञान प्रसार के मार्ग में बाधक अनुभव करता है तथा उन प्रादेशिक सरकारों से अनुरोध करता है कि वे इस कर को उठाकर शिक्षा और साहित्य की प्रगति में सहयोग दें।

प्रस्तावक—श्री व्रजबिहारी
अनुमोदक—श्री सौभाग्यमल जैन

✧ ✧ ✧

हिन्दी प्रकाशकों का यह सम्मेलन सरकार से यह अनुरोध करता है कि घटिया किस्म की अनाचार-युक्त, विदेशों से आयात होने वाली पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं पर प्रतिबन्ध लगाए। इससे न केवल लाखों रुपयों का अपव्यय ही हो रहा है वरन् अनाचार की वृद्धि के साथ-साथ हमारा नैतिक पतन हो रहा है एवं सत्साहित्य के प्रचार में बाधा भी उपस्थित हो रही है।

प्रस्तावक—श्री राजराजेश्वर प्रसाद
अनुमोदक—श्री सौभाग्यमल जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ का यह अधिवेशन पुस्तक प्रकाशन क्षेत्र में चल रही कमीशन सम्बन्धी धांधली को चिन्ता की दृष्टि से देखता है और चाहता है कि इस क्षेत्र में स्वस्थ वातावरण पैदा हो। इसलिये यह आवश्यक है कि एक ओर प्रकाशक और दूसरी ओर पुस्तक-विक्रेता हर क्षेत्र में अधिक-कमीशन देने की वृत्ति को किसी प्रकार बढ़ने न दें। सम्मेलन यह सुझाता है कि प्रकाशक विक्रेताओं को अधिक से-अधिक २५ प्रतिशत और विक्रेता शिक्षा-संस्थाओं, पुस्तकालयों आदि को अधिक-से-अधिक १० प्रतिशत कमीशन दें। फुटकर बिक्री में कमीशन बिल्कुल न दिया जाय। प्रकाशक स्वयं शिक्षा संस्थाओं आदि को उपरोक्त कमीशन से अधिक न दें।

सम्मेलन कार्य समिति को आदेश देता है कि वह तीन महीने के भीतर ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं की की एक सूची प्रस्तुत करे जो कमीशन सम्बन्धी उपरोक्त सुझावों को स्वीकार करते हों।

कार्य समिति ६ महीने के भीतर इस दिशा में अपने आदेश दे देगी।

प्रस्तावक—श्री मार्तण्ड उपाध्याय

अनुमोदक—श्री विश्वनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक महत्व की दो पुस्तकें

भारत सम्बन्धी लेख—कार्ल मार्क्स

● दो रंगी जैकिट ● आर्ट पेपर पर मार्क्स का चित्र ● पृष्ठ १३६ ● मूल्य—एक रुपया दो आना

बहुधा लोगों की यह धारणा बनी हुई है कि मार्क्स ने पश्चिमी दुनिया के समाजों का ही विश्लेषण किया है और उसी के आधार पर अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। यह बिलकुल बे सिर-पैर की धारणा है।

प्रस्तुत पुस्तक में भारत की विभिन्न समस्याओं पर सन् १८५३ में लिखे गए आठ लेख हैं। साथ में, गदर पर सन् १८५७ में लिखा गया एक लेख है। बाक़ी तीन अध्यायों में मार्क्स और एंगेल्स के विभिन्न ग्रंथों के भारत सम्बन्धी उद्धरणों का सुन्दर संकलन है। इनसे पता लगता है कि भारतीय इतिहास, राजनीति, आर्थिक व्यवस्था, धर्मों आदि के बारे में उनकी कितनी अधिक जानकारी थी और उनकी दृष्टि कितनी पैनी थी कि आज से १०० वर्षों, और इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना से भी ३२ वर्षों पूर्व, उन्होंने भारत के भावी विकास का मार्ग देख लिया था।

मार्क्सवाद और जातियों का प्रश्न—जोसेफ़ स्तालिन

● दो रंगा कवर ● आर्ट पेपर पर स्तालिन का चित्र ● पृष्ठ ६६ ● मूल्य—बारह आना

हमारे देश में आजकल, और विशेषकर आन्ध्र प्रान्त की स्थापना के बाद, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल आदि प्रान्तों के बनाये जाने की मांग बड़े जोरों पर है। सभी क्षेत्रों में इस प्रश्न पर गरमागरम बहसें चल रही हैं। कुछ लोगों का ख्याल है कि शासन की सुविधा के अनुसार प्रान्त बनाये जाने चाहिएँ। कुछ लोग धर्म को और कुछ भाषा को प्रान्तों के निर्माण का आधार बनाने की बातें करते हैं।

ऐसी परिस्थिति में, प्रस्तुत पुस्तिका का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। इसमें महान् स्तालिन ने इन धारणाओं की गहरी विवेचना की है और वैज्ञानिक ढंग से इन प्रश्नों के उत्तर दिये हैं कि जाति क्या है, वह समुदाय से कहां भिन्न है, उसके मूलभूत आधार क्या हैं, क्या दो जातियों की एक समान भाषा नहीं हो सकती, जातियों को आत्म-निर्णय का अधिकार किस हद तक देना चाहिए, आदि।

संग्रह करने योग्य दो पुस्तकें

चीनी जनता के बीच

ले० प्रो० जगदीश चन्द्र जैन : मूल्य ४)

लेखक जनवादी चीन के सबसे बड़े पीकिंग विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक रह चुके हैं। पुस्तक में लेखक ने न सिर्फ आंखों देखी घटनाओं और यात्रा का वर्णन किया है, बल्कि चीन के इतिहास की रूपरेखा, चीन की वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अवस्था का तथा चीन की राजनीतिक पार्टियों, नेताओं, किसानों, मजदूरों, स्त्रियों आदि के बारे में लिखा है। पुस्तक में दिये गए बीसों चित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

स्तालिन : एक जीवनी

ले० राहुल सांकृत्यायन : मूल्य ३)

महान स्तालिन के बारे में इसे हिन्दी में एकमात्र प्रामाणिक, शिक्षाप्रद और मौलिक जीवनी माना जाता है। अनेक हिन्दी पत्रों में प्रकाशित समालोचनाओं का मत यही है कि राहुल जी ने इस पुस्तक को लिखकर हिन्दी साहित्य के एक खटकने वाले अभाव को दूर कर दिया है। छपाई सुन्दर है। आर्टपेपर पर स्तालिन के जीवन सम्बन्धी अनेक चित्र हैं। बड़े आकार के २७२ पृष्ठों की इस किताब से पाठकों को एक युग की झांकी मिल जायेगी।

पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस लि०, बम्बई-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ में भाग लेने वाले

प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेताओं की सूची

अशोक प्रेस, पटना : श्री व्रज बिहारी

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली : श्री रामलाल पुरी
डॉ० विद्यासागर पुरी

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, प्रयाग : श्री गिरिधर शुक्ल

आधुनिक पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद : श्री नेमिचन्द्र जैन

इण्डियन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली : श्री कन्हैयालाल मलिक

इलाहाबाद लॉ जनरल क० लि०, प्रयाग : श्री एस० सी० गुप्त

ओरिएन्टल बुक डिपो, दिल्ली : श्री रमेश सन्त

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस : श्री अशोकजी

किताब महल, इलाहाबाद : श्री श्रीनिवास अग्रवाल
श्री हरिश्चन्द्र अग्रवाल

किताब महल, बम्बई : श्री मुरारी अग्रवाल

गौतम बुक डिपो, दिल्ली : श्री सत्यप्रकाश गौतम

गौतम ब्रदर्ज़, कानपुर : श्री श्रीनारायण गौतम

नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्ज़, बनारस : श्री कैलाशनाथ भार्गव

पद्मा प्रकाशन, कानपुर : श्री आनन्द मिश्र

पीपुल्ज़ पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई : श्री ओमप्रकाश शर्मा

पुस्तक कुटीर, बनारस : श्री कृष्णावतार शर्मा

प्रगति प्रकाशन, दिल्ली : श्री बलवन्त सहगल

भारती भण्डार, प्रयाग : श्री वाचस्पति पाठक

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी : श्री बाबूलाल जैन

भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली : श्री योगेन्द्र दत्त

मोतीलाल बनारसीदास, बनारस : श्री माधव

रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, दिल्ली : श्री एस० सी० गुप्ता

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली : श्री दीनानाथ, श्री विश्वनाथ

रामनारायण लाल, प्रयाग : श्री रामबाबू अग्रवाल

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : श्री ओंप्रकाश

विद्या मन्दिर, कानपुर : श्री अमृतलाल

विद्या मन्दिर (हिन्दी साहित्य भंडार), लखनऊ :
श्री तेजनारायण टण्डन

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली : श्री मार्तण्ड उपाध्याय
श्री यशपाल जैन

साहित्य निकेतन, कानपुर : श्री श्याम नारायण कपूर

साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर : श्री रामभरोसे अग्रवाल

साहित्य सदन, चिरगाँव : श्री सुमित्रानन्दन गुप्त

साहित्य भवन लि०, प्रयाग : श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली : श्री यज्ञदत्त शर्मा

सुषमा साहित्य मन्दिर, जबलपुर : श्री सौभाग्यमल जैन

हिन्दी विश्वभारती, लखनऊ : श्री हृदयेश्वर प्रसाद भार्गव

हिन्दी भवन, जालंधर : श्री धर्मचन्द नारंग

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग : श्री रामचन्द्र टंडन

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस : श्री कृष्णचन्द्र बेरी

ज्ञान-मण्डल लि०, बनारस : श्री देवनारायण द्विवेदी

प्रकाशक नोट कर लें

जिस लिफ़ाफ़े में डालकर आप छपे हुए फ़ार्म पर अपनी सूचनाएँ लिख कर भेजते हैं, उसे बन्द न किया करें; बुक-पोस्ट बनाने के लिए उसका मुख खुला रहना चाहिए। लिफ़ाफ़े पर "बुकपोस्ट" भी लिख दें ताकि हमारे खर्च का बोझ कुछ कम हो।

व्यवस्थापक—
प्रकाशन समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-संस्थाओं के परिचय

जिन प्रकाशन-संस्थाओं ने संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में भाग लिया, यहां उनका परिचय दिया जा रहा है।

अशोक प्रेस, पटना—इस संस्था की स्थापना प्रसिद्ध हिन्दी-लेखक सूर्यपुराधीश राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह के द्वारा हुई थी और प्रारम्भ में उनकी रचनाएँ ही यहाँ से प्रकाशित होती थीं, किन्तु अब धीरे-धीरे अन्य लेखकों की उत्कृष्ट कृतियाँ भी प्रकाशित होने लगी हैं। हिन्दी की प्रमुख मासिक पत्रिका 'नई धारा' भी इस संस्था के तत्त्वावधान में प्रकाशित होती है। बाल-साहित्य के प्रकाशन की दिशा में यह संस्था प्रशंसनीय सेवा कर रही है। संचालक—राजा राधिकारमणप्रसादसिंह। प्रतिनिधि—श्री ब्रजबिहारी।

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली—पहले अंग्रेजी की शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन करते थे और अब उसके साथ सन् १६४६ से हिन्दी-प्रकाशन के क्षेत्र में प्रशंसनीय सेवाएँ की हैं। इसके प्रमुख प्रकाशनों में 'हिन्दी कविता में युगान्तर', 'रोमाण्टिक साहित्य शास्त्र', 'काव्य के रूप', 'सिद्धान्त और अध्ययन', 'साहित्य, शिक्षा और संस्कृति', 'भारतीय शिक्षा', 'भारत का सांस्कृतिक इतिहास', 'प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास', 'भारत का चित्रमय इतिहास', 'मैं इनसे मिला', 'प्रबन्ध-सागर', 'साहित्य-विवेचन' तथा 'महाकवि सूरदास' आदि अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं। साहित्य के विभिन्न भागों की पूर्ति करने में इस संस्था ने अभूतपूर्व सेवा की है। संचालक—रामलाल पुरी। प्रतिनिधि—स्वयं।

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद—श्री गिरिधर गुप्त के संस्थापकत्व में यह संस्था प्रकाशन का कार्य बहुत अर्से से कर रही है। १८५७ के गदर का इतिहास तथा उस काल के प्रमुख नेताओं की जीवनियाँ लोकप्रिय हुई हैं। 'भारतवर्ष में अंग्रेजी राज के दो सौ वर्ष' एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। प्रतिनिधि स्वयं।

इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली—इण्डियन प्रेस, प्रयाग की दिल्ली-स्थित शाखा। मुख्यतः पाठ्य-पुस्तकों और बाल-साहित्य के प्रकाशक। संचालक—श्री कन्हैयालाल मलिक। प्रतिनिधि—स्वयं।

इलाहाबाद लॉ जनरल कम्पनी लिमिटेड, प्रयाग—इस संस्था ने प्रकाशन का कार्य कुछ ही समय हुए आरम्भ किया है, किन्तु जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, वे लोकप्रिय सिद्ध हुई हैं। इन प्रकाशनों में मुख्यतः उर्दू साहित्य को हिन्दी में रूपान्तर में प्रस्तुत किया गया है। श्री राहुलजी की भी एक पुस्तक छपी है। प्रतिनिधि—श्री एस० सी० गुप्ता।

ओरियण्टल बुक डिपो, दिल्ली—कुछ समय पहले पाठ्य-क्रम की पुस्तकों के प्रकाशक थे लेकिन अब साहित्यिक प्रकाशन निकाले हैं। बाल-साहित्य में भी अभिरुचि है। गुरुदत्त का 'मायाजाल', डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा का 'सूर-मीमांसा' तथा कमल शुक्ल का 'राग और त्याग' इसी संस्था से प्रकाशित हुए है। प्रतिनिधि श्री रमेश सन्त।

किताब महल, इलाहाबाद--कहानी, उपन्यास, आलोचना, नाटक, निबन्ध, समाज-शास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान तथा विज्ञान आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर उच्चकोटि के ग्रंथ प्रकाशित करने वाली इस संस्था ने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में महत्वपूर्ण कार्य किया है। पाठ्य-पुस्तकों का तथा साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन तेजी से होता है। इस संस्था से सर्वश्री क० मा० मुन्शी, राहुल सांकृत्यायन, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, परशुराम चतुर्वेदी, रांगेय राघव, रामरतन भटनागर, भोलानाथ तिवारी और नागार्जुन प्रभृति साहित्यकारों की उत्कृष्ट कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। व्यवस्थापक—श्रीनिवास अग्रवाल। प्रतिनिधि स्वयं।

गौतम साहित्य निकेतन, दिल्ली—मुख्यतः पाठ्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रकाशक होते हुए भी इस संस्था ने प्रामाणिक तथा लोकप्रिय साहित्यिक ग्रन्थों का प्रकाशन किया हैं, जिन में डॉ० नगेन्द्र की अध्ययनपूर्ण समीक्षात्मक कृतियाँ तथा आचार्य चतुरसेन शास्त्री के कुछ ग्रन्थ हैं। एक विशिष्ट प्रकाशन : 'ध्वन्यालोक',।

नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस—उत्कृष्ट साहित्यिक व शिक्षा-सम्बन्धी ग्रन्थों के प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता। शिक्षा-सम्बन्धी प्रकाशनों में श्री लालजी राम शुक्ल, आचार्य सीताराम चतुर्वेदी तथा रानी टंडन आदि की पुस्तकें इस संस्था ने प्रकाशित की हैं। श्री शम्भूनाथ सिंह के 'छायावाद युग' ने अभी हाल ही विशेष प्रतिष्ठा पाई है। व्यवस्थापक व प्रतिनिधि—श्री कैलाशनाथ भार्गव।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी—इस संस्था का नाम सर्वविदित है। सभा ने हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण में जो अभूतपूर्व कार्य किया है, वह लिखने की बात नहीं। सर्वप्रथम हिन्दी में इस सभा ने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित करके हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रशंसनीय सेवा की है। वैसे तो सभा से हिन्दी के सैकड़ों उत्कृष्टतम प्रकाशन हो चुके हैं, किन्तु इनमें 'हिन्दी शब्द-सागर' उल्लेखनीय है। इसके द्वारा प्रकाशित 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' हिन्दी के पत्र प्रकाशन की दिशा में प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करती है। प्रतिनिधि—श्री अशोक जी।

पद्मजा प्रकाशन, कानपुर—इधर इसकी ओर से 'हिन्दी साहित्य के विविध वाद' नामक उत्कृष्ट साहित्यिक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। संचालक—आनन्द मिश्र। प्रतिनिधि स्वयं।

पीपुल्ज़ पब्लिशिंग हाउस लि०, बम्बई—१९४२ में साम्यवादी विचारधारा के प्रकाशन निकालने के लिए संस्थापित। मार्क्सवादी दृष्टिकोण को उपस्थित करने वाली राजनीतिक, साहित्यिक तथा कला-सम्बन्धी पाँच सौ से ऊपर पुस्तकों व पैंफलेटों का प्रकाशन कर चुके हैं। वितरण के लिए भारत के प्रमुख नगरों में अपनी शाखाएँ हैं। 'नया पथ' नाम से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आजकल हो रहा है।

प्रगति प्रकाशन, दिल्ली—भारत-विभाजन के बाद स्थापित इस प्रकाशन संस्था ने सर्वश्री अज्ञेय, सेठ गोविन्द-दास, कृष्णचन्द्र, देवेन्द्र सत्यार्थी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, ख्वाजा अहमद अब्बास आदि हिन्दी, गुजराती तथा उर्दू के ख्यातिप्राप्त लेखकों की सुरुचिपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित की हैं।

संचालक—श्री प्राणनाथ नागपाल और श्री बलवन्त सहगल। प्रतिनिधि—श्री बलवन्त सहगल।

भारती भण्डार, प्रयाग—हिन्दी की प्रतिनिधि प्रकाशन-संस्था। इस प्रकाशन-संस्था से जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, राय कृष्णदास, भगवतीचरण वर्मा, बच्चन, नन्ददुलारे वाजपेयी, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि हिन्दी के मूर्धन्य कवियों, उपन्यासकारों, आलोचकों तथा नाटककारों की कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रकाशन व्यवस्थापक—श्री वाचस्पति पाठक। प्रतिनिधि स्वयं।

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस—पिछले वर्षों में इस संस्था ने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में अभिनन्दनीय कार्य किया है। भारतीय वाङ्मय की अनुपलब्ध एवं संग्रहणीय सामग्री

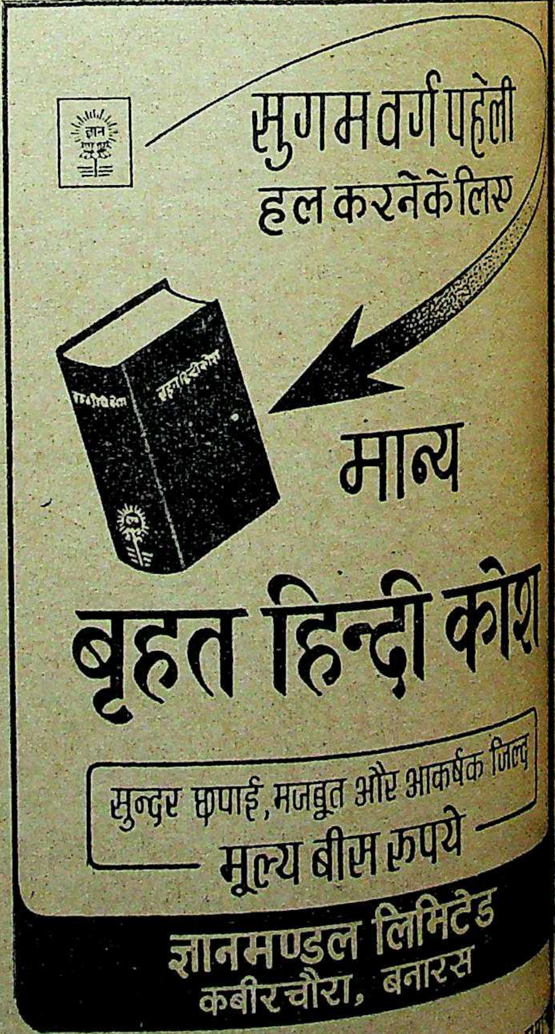

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित करने के साथ-साथ इसने हिन्दी की अनेक मूर्धन्य लेखकों की कृतियों का प्रकाशन किया है। इस संस्था की ओर से 'ज्ञानोदय' नाम से एक मासिक पत्र भी प्रकाशित होता है। संचालिका—श्रीमती रमा जैन। प्रतिनिधि—श्री बाबूलाल जैन।

भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली—हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार श्री गुरुदत्त द्वारा संस्थापित इस संस्था से प्रमुख रूप से उनके उपन्यास ही प्रकाशित होते हैं। अभी तक ६-७ उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। व्यवस्थापक व प्रतिनिधि—श्री योगेन्द्र।

मोतीलाल बनारसीदास, बनारस—इस संस्था के दिल्ली, पटना व बनारस में कार्यालय हैं। संस्कृत व हिन्दी के प्रकाशनों के प्रमुख प्रकाशक। विशेष रुचि सांस्कृतिक ग्रन्थों के प्रकाशन की ओर है। पाठ्यक्रम की पुस्तकों का प्रकाशन भी करते हैं। प्रतिनिधि श्री माधव।

रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, दिल्ली—दिल्ली की एक प्रकाशन संस्था जिसने मुख्यतः विदेशी साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थों के प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित किए हैं।

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली—इस संस्था के प्रकाशनों को देखकर इसके संचालकों की सुरुचि का परिचय सहज ही मिल जाता है। इसके प्रकाशनों में सर्वश्री रामनरेश त्रिपाठी का 'तुलसीदास और उनका काव्य', आनन्दकुमार का 'आत्म-विश्वास', हरिऔध का 'मर्म-स्पर्श' के अतिरिक्त उर्दू के विख्यात कहानी-लेखक श्री कृष्णचन्द्र की अनेक लोकप्रिय कृतियाँ हैं। इधर बाल और प्रौढ़-साहित्य के प्रकाशन में भी इस संस्था ने विशेष कार्य किया है। संचालक—श्री विश्वनाथ और श्री दीनानाथ। प्रतिनिधि—स्वयं।

रामनारायण लाल, इलाहाबाद—शिक्षा-क्षेत्र में इस संस्था की अत्यन्त उल्लेखनीय सेवाएँ हैं। संस्था से हिन्दी-साहित्य के गौरव की अभिवृद्धि करने वाले महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। संचालक—श्री बेनीमाधव अग्रवाल। प्रतिनिधि—श्री रामबाबू अग्रवाल।

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली—इस संस्था ने कुछ ही वर्षों में हिन्दी-प्रकाशन की दिशा में एक प्रशंसनीय सुरुचि का परिचय दिया है। इसके यहाँ से श्री के० एम० मुन्शी, आर० आर० दिवाकर, डॉ० रघुवीरसिंह, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० मोतीचन्द, मुल्कराज आनन्द, कृष्णचन्द्र, उदयशंकर भट्ट, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, देवेन्द्र सत्यार्थी, शिवदानसिंह

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का नया प्रकाशन

कुछ आधुनिक आविष्कार

ले० : डा० सत्यप्रकाश

विज्ञान ने बिजली, तार, टेलिफोन, बेतार के तार, टेलिविज़न, सूक्ष्मदर्शक और दूरदर्शक यंत्र, फ़ोटोग्राफी और चित्रपट, एक्सरे, विस्फोटक द्रव्य, पेट्रोल और पावर अलकोहल, सीमेंट और लोहा, विभिन्न गैसों और यंत्रों के सहारे हमारी सभ्यता को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। अधिकारी लेखक ने इन सब की कुतूहलपूर्ण कहानी अनेकानेक चित्रों के सहारे सीधी-सादी भाषा में अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत की है। विद्यार्थियों और साधारण पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी ग्रंथ।

सजिल्द : : क्राउन अठपेजी : : पृष्ठ ३२८ : : सवा सौ चित्र

मूल्य पाँच रुपए

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

राग और त्याग

प्रकाशित हो गया

श्री कमल शुक्ल जी का 'राग और त्याग' अब प्रकाशित हो गया है जिसकी हिन्दी संसार पर्याप्त समय से प्रतीक्षा कर रहा था। उपन्यास अत्यन्त रोचक है। इसकी शैली का चमत्कार, भाषा और भाव का मधुराकर्षण पाठक को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। पुस्तक का तिरंगा कवर भावपूर्ण है।

मूल्य ५)

ओरिएण्टल बुकडिपो,

नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक-संघ के स...लन की

सभापति प्रश्न को समझाने की मुद्रा में।

प्रकाशकों ... स्पष्ट है।

लेखक व प्रकाशक जलपान पर एक साथ जुटे।

जलपान के अवसर पर गम्भीर वार्त्ता और प्रसन्न मुद्रा।

श्री देवनारायण द्विवेदी
(ज्ञान-मण्डल लि०)

श्री मार्तण्ड उपाध्याय
(सस्ता साहित्य मण्डल)

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
(साहित्य भवन लि०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...घ के म...लन की दृश्यावली

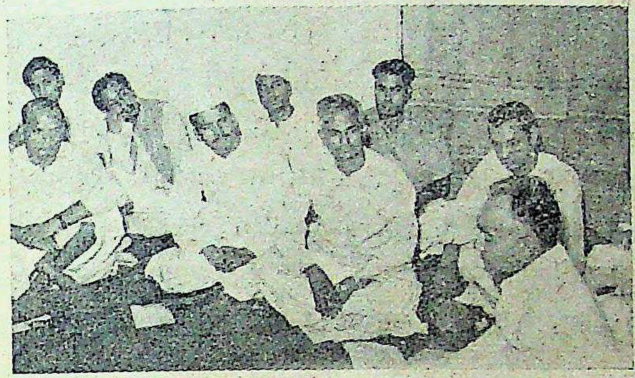

विधान को गढ़ते हुए कुछ प्रमुख प्रकाशक।

राष्ट्र-कवियों व लेखकों ने प्रकाशकीय आतिथ्य स्वीकार किया।

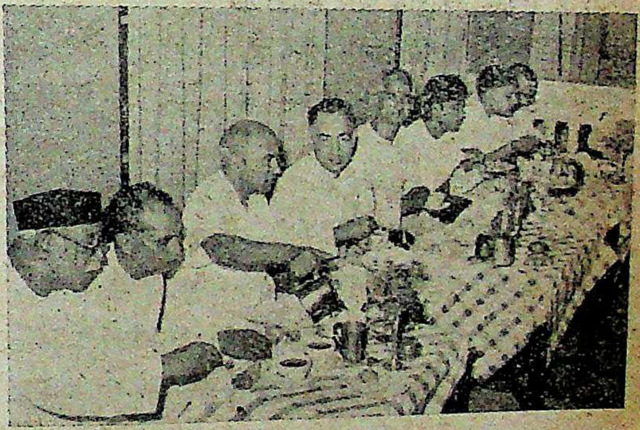

सभापति व अन्य प्रकाशक, जलपान में दत्तचित्त।

श्री नेमिचन्द्र जैन
(आधुनिक पुस्तक भण्डार)

श्री सौभाग्यमल
(सुषमा साहित्य मंदिर)

श्री ओंप्रकाश शर्मा
(पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण

पं० किशोरीदास वाजपेयी की यह नई रचना है। इस पर हम अपनी ओर से कुछ भी न कहकर पंचों की राय ही आप के सामने रखेंगे।

काशी के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पत्र **आज** की सम्मति है : "हिन्दी-जगत् के निर्भय और स्पष्टवादी लेखक पं० किशोरीदास वाजपेयी ने चार उन्मेषों के अन्तर्गत, सन् १६१६ से प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन के पूर्व तक के अपने मार्मिक अनुभव एवं हृदयस्पर्शी संस्मरण लिखे हैं। साहित्यसेवियों का जीवन अन्यान्य क्षेत्रों में काम करने वालों की अपेक्षा कितना कष्टपूर्ण और उपेक्षित होता है, इसके ज्वलन्त उदाहरण स्वयं वाजपेयी जी हैं और इसका उन्होंने स्पष्ट शब्दों में इस पुस्तक में उल्लेख किया है। कोरे प्रकाशक और साहित्यिक प्रकाशक के व्यवहार और विचार में कितना अन्तर होता है, इस सम्बन्ध में उन्होंने 'सुधा' तथा 'चाँद' के संचालकों के विषय में संस्मरण लिखा है।

पं० शालिग्राम शास्त्री तथा पं० पद्मसिंह शर्मा प्रभृति विद्वानों से साहित्यिक वाद-विवाद होते रहने पर भी उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार में जरा भी अन्तर नहीं आया। वाजपेयी जी 'साहित्य रत्न' न हो सकें, यह एक अजीब प्रसंग इस पुस्तक में है।

दूसरे 'उन्मेष' में, एक बहुरूपिये ने कैसे उन्हें तंग किया, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित से झड़प, एक प्रेस के मालिक वे कैसे बने और क्यों फिर उसे बेचना पड़ा, साहित्य महारथियों के दर्शन, 'सभा' को दान, 'सम्मेलन' का काशी-अधिवेशन, लिफाफा आन्दोलन, ब्रह्मास्त्र-प्राप्ति आदि उनके संस्मरणों में कई साहित्यिक सूचनाएँ हैं।

वाजपेयी जी ने अपनी स्पष्टवादिता का प्रमाण 'मेरा अंग्रेजी-ज्ञान' उपशीर्षक में निस्संकोच होकर दिया है। जैसे वे अक्खड़ और निर्भय हैं, वैसे ही अभिमानी और स्पष्टवादी भी। सम्पूर्ण पुस्तक में इनके जीवन की इन्हीं प्रवृत्तियों की झलक मिलती है।

साहित्यिक अनुभव और संस्मरण-विषयक कुछ ऐसी भी पुस्तकें हिन्दी में निकली हैं, जिनमें लेखक ने अपने उपेक्षित जीवन के कटु अनुभवों का उल्लेख न करके केवल गौरवपूर्ण जीवन की गाथा का ही पुल बाँधा है। यह पुस्तक इसका अपवाद है।

वाजपेयी जी का अनुभव पत्रकारों और साहित्य-सेवियों को अपना भविष्य-निर्माण करने में प्रेरक और सहायक होगा, ऐसी आशा है। पुस्तक की छपाई-सफाई भी सुन्दर है।"

भारत के हिन्दी-प्रकाशकों के प्रतिनिधि पत्र **प्रकाशन समाचार** (दिल्ली)ने लिखा है :

"यह पुस्तक ऐसी रोचक शैली और चुस्त भाषा में लिखी गई है कि पाठक इसे एक बैठक में समाप्त किये बिना नहीं रह सकता। उपन्यास से भी अधिक रोचक है। संक्षेप में हम इसे हिन्दी-जगत् के विगत चालीस वर्षों का सजीव विवरण कह सकते हैं।

इसमें जहाँ हमें हिन्दी के वर्तमान तथा दिवंगत अनेक साहित्यकारों के कार्यकलापों की जानकारी मिलती है, वहाँ हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रमुख संस्थाओं की गति-विधि का भी पर्याप्त परिचय प्राप्त हो जाता है।

१४४ पृष्ठों की, ऐण्टिक कागज पर मोनो टाइप में मुद्रित, इस सुन्दर पुस्तक का मूल्य दो रुपया मात्र रखा गया है।"

साहित्य-सन्देश : "वाजपेयी जी ने गर्व के साथ कहा है –'तद्दत्तं यन्न केनचित्।' ऐसी बात संसार में बहुत थोड़े आदमी ही कह सकते हैं।"

दक्षिण भारत की प्रतिनिधि पत्रिका **'अजन्ता'** (हैदराबाद) ने लिखा है : "हिन्दी-साहित्य की प्राचीन परम्परा के प्रतिष्ठित लेखकों में वाजपेयी जी का सम्मानपूर्ण स्थान है। आपके इन संस्मरणों में हिन्दी साहित्य के लगभग चालीस वर्षों के इतिहास की एक झलक मिल जाती है। लेखन-शैली चटपटी है। कई स्थलों पर तो 'नाटकीय छटा' छा गई है। पुस्तक आदि से अन्त तक रोचक एवं उद्बोधक है।"

सरस्वती (प्रयाग) के विचार में : "सन् १६१६ से १६५१ तक साहित्य-सेवा के क्षेत्र में वाजपेयी जी को जो कड़वी-मीठी अनुभूतियाँ हुई हैं, उनको ज्यों-का-त्यों प्रकाशित कर दिया गया है। पुस्तक में अनेक ऐसे संस्मरण हैं, जिन से एक युग की हिन्दी-सम्बन्धी अनेक गति-विधियाँ स्पष्ट रूप से सामने आ जाती हैं।"

मूल्य—दो रुपए मात्र है। मंगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मी, डॉ० एस० पी० खत्री तथा डॉ० उदयनारायण ...री आदि साहित्यकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। ...कमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'आलोचना' त्रैमासिक ...न्दी का प्रतिनिधि साहित्यिक पत्र है। बम्बई शाखा में इस ...काशन के अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश हैं, प्रकाशन-विभाग के ...क्ष श्री देवराज और वितरण विभाग के अध्यक्ष श्री ओंप्रकाश ...। प्रतिनिधि—श्री ओंप्रकाश।

...विद्या मन्दिर (हिन्दी साहित्य भण्डार), लखनऊ—...द्या प्रकाशन मन्दिर ने हिन्दी-साहित्य के अध्येता छात्रवृन्द की ...ठ्य सहायक पुस्तकों के द्वारा मुख्य सेवा की है। श्री प्रेम-...रायण टण्डन की ही कृतियाँ यहाँ से मुख्यतः प्रकाशित हुई ...। 'हिन्दी सेवी संसार' भी इसी संस्था का प्रशंसनीय प्रकाशन ...। व्यवस्थापक—श्री तेजनारायण टण्डन। प्रतिनिधि स्वयं।

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली—गांधीवादी और ...ष्ट्रीय साहित्य के प्रकाशन की दिशा में मण्डल की सेवाएँ ...र्विदित हैं। देश को सर्वोदय विचारधारा और अहिंसक ...माज की पुनर्रचना करने की ओर मण्डल के साहित्य ने ...शेष प्रेरित किया है। इस संस्था को राष्ट्र-पिता गांधी, ...वाहरलाल नेहरू, राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, चक्रवर्ती राज-...गोपालाचार्य, पट्टाभि सीतारमैया, काका कालेलकर, विनोबा ...भावे, हरिभाऊ उपाध्याय तथा वियोगी हरि आदि देश के ...अनेक गणमान्य नेताओं, महापुरुषों, विचारकों और साहित्य-...कारों की अनेक कृतियाँ प्रकाशित करने का महत्त्वपूर्ण श्रेय ...प्राप्त है। मन्त्री श्री मार्तण्ड उपाध्याय। प्रतिनिधि स्वयं।

साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर—थोड़े समय में ही ...श्री जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द', श्री गुलाबराय तथा डॉ० ...नगेन्द्र आदि की कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। संचालक—श्री ...रामस्नेही अग्रवाल। प्रतिनिधि स्वयं।

साहित्य निकेतन, कानपुर—'निकेतन' की ओर से ...अभी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन नहीं हुआ है, किन्तु जो भी ...पुस्तकें इसके यहाँ से प्रकाशित हुई हैं, वे महत्त्व की हैं। ...इन पुस्तकों में श्री श्यामनारायण कपूर की 'भारतीय वैज्ञा-...निक' अपने विषय की प्रामाणिक पुस्तक है। डॉ० त्रिलोकी ...नारायण दीक्षित की 'प्रेमचन्द' डॉ० जगदीश त्रिगुणायत ...की 'कबीर की विचार-धारा', श्री चन्द्रशेखर शास्त्री और डॉ० ...शान्तिकुमार नानूराम व्यास की 'संस्कृत साहित्य की रूपरेखा' ...आदि पुस्तकें महत्व की हैं। संचालक—श्री श्यामनारायण ...कपूर। प्रतिनिधि स्वयं।

नया प्रकाशन

पीक स्किल कांड : ले० : हावर्ड फास्ट

आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका दूसरे देशों की जनता को गुलाम बनाने की कोशिश कर रहा है, उसी तरह अपने खुद के देश में भी नीग्रो लोगों पर किस तरह के अत्याचार किये जाते हैं इसका बहुत ही हृदयद्रावक वर्णन श्री हावर्ड फास्ट ने अपनी इस पुस्तक में किया है। यह विवरण एकदम सच्चा है।

सुन्दर गेटअप; बढ़िया छपाई

पृष्ठ १२४, कीमत १ रु० ८ आ०

जन-साहित्य, सदन इन्दौर

हमारे अक्षर

बच्चों को रंगीन चित्रों द्वारा हिन्दी में अक्षर ज्ञान करवाने और एक से दस तक गिनती सिखाने के लिए भारत में आज तक बनी सभी पुस्तकों में श्रेष्ठ पुस्तक।

४८ पृष्ठ; स्वीडन में बने मोटे आफसैट कागज पर पाँच रंगों में छपाई और मोटे गत्ते की गीले कपड़े से धुल सकने वाली जिल्द।

मूल्य केवल १।)

प्रकाशक :

श्री एस० एल० प्रकाशन, १३ हाथीखाना दिल्ली।

वितरक :

राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाजार दिल्ली।

राजपाल एण्ड संज, काशमीरी गेट दिल्ली।

इंगलिश बुक स्टोर, कनाट प्लेस, नई दिल्ली।

सुन्दर पुस्तक भण्डार, गफार मारकीट, करौल बाग दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग—हिन्दी में उच्च-कोटि के साहित्यिक ग्रंथों के प्रकाशनार्थ पहले इस संस्था की स्थापना राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने की किन्तु अब यह एक लिमिटेड संस्था है। हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि में इसके प्रकाशनों का बहुत महत्वपूर्ण भाग रहा है। इस संस्था से सर्वश्री वियोगी हरि, आचार्य क्षितिमोहन सेन, विनयमोहन शर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, सुमित्रा नन्दन पन्त और श्री परशुराम चतुर्वेदी आदि विद्वानों की कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रकाशनाध्यक्ष—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी। प्रतिनिधि स्वयं।

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली—हिन्दी के तरुण उपन्यास-कार श्री यज्ञदत्त शर्मा द्वारा संस्थापित और संचालित इस संस्था से मुख्यतः उनके ही उपन्यासों का प्रकाशन होता है। इसके साथ-साथ अब इसकी विश्व के उत्कृष्टतम उपन्यासों के अनुवाद प्रकाशित करने की आयोजना है। इस आयोजना में दो उपन्यास 'धरती के लाल' और 'काला तीर' प्रकाशित भी हो चुके हैं। प्रतिनिधि स्वयं।

साहित्य सदन, चिरगाँव, झांसी—इस संस्था से राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की कृतियाँ ही मुख्यतः प्रकाशित हुई हैं, लेकिन अन्य प्रकाशन भी निकले हैं। 'यशोधरा', 'जय भारत' तथा 'भारत भारती' आदि के प्रकाशक।

सुषमा साहित्य मन्दिर, जबलपुर—इस संस्था से श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान की कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं। बाद में जो पुस्तकें प्रकाशित हुईं, उनमें श्री वृन्दावनलाल वर्मा का 'कभी-न-कभी' तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की 'विचार और वितर्क' उल्लेखनीय है। संचालक—श्री सौभाग्य-मल जैन। प्रतिनिधि स्वयं।

हिन्दी-विश्वभारती, लखनऊ—'विश्व भारती' नामक ज्ञानकोष के भागों को जिन पाठकों ने देखा होगा वे इस संस्था के कार्य तथा सूझबूझ से परिचित होंगे। इस संस्था ने अपने इस उपयोगी प्रकाशन के द्वारा हिन्दी-जगत् की भारी सेवा की है। इस ज्ञान-कोष के अतिरिक्त इस संस्था की ओर दो भागों में 'भारत के निर्माता' नामक ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुका है। संचालक—राजराजेश्वरीप्रसाद भार्गव। प्रति-निधि—स्वयं तथा श्री हृदयेश्वरीप्रसाद भार्गव।

हिन्दी भवन, जालन्धर—पंजाब जैसे अहिन्दी भाषी प्रदेश में हिन्दी की ज्योति को जगाने का श्रेय हिन्दी-भ[वन] को दिया जा सकता है। हिन्दी-भवन ने पाठ्य-पुस्तकों [का] प्रकाशन भी किया है, किन्तु साहित्यिक प्रकाशन [भी] उच्चकोटि के हैं। इनमें से डॉ० सूर्यकान्त का 'साहि[त्य] मीमांसा', डॉ० रामकुमार वर्मा का 'साहित्य-समालोचन[ा]', डॉ० सोमनाथ गुप्त का 'तुलसी' तथा 'नाटक साहित्य [का] इतिहास' उल्लेखनीय हैं। श्री मिलिन्द, प्रेमी, लक्ष्मीना[रा]यण मिश्र आदि के नाटक भी भवन ने प्रकाशित किए हैं। व्यवस्थापक—श्री धर्मचन्द्र नारंग। प्रतिनिधि स्वयं।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग—उत्तर भारत की महत्व-पूर्ण प्रकाशन-संस्था। हिन्दी के उल्लेखनीय सन्दर्भ ग्रन्थ प्रकाशित करके साहित्य-निर्माण में आदर्श पूर्ण योग-दान कर रही है। इसके प्रकाशनों में 'जायसी ग्रन्थावली', 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'चन्दबरदाई और उनका काव्य', 'पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त', 'हिन्दी, उर्दू या हिन्दुस्तानी', 'नाथ सम्प्रदाय', 'सौर परिवार', तथा 'हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता' आदि उच्चकोटि के ग्रन्थ हैं। सहायक मन्त्री—श्री रामचन्द्र टण्डन। प्रतिनिधि स्वयं।

हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय, बनारस—इस संस्था की ओर से हिन्दी में अनेक शिक्षा सम्बन्धी तथा उपादेय पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मुख्यतः पाठ्य-क्रम की पुस्तकों के प्रकाशक। इसकी एक शाखा कलकत्ता में भी है। 'बाल-साहित्य' के प्रकाशन में इस संस्था ने कार्य करना शुरू किया है, वो वास्तव में प्रशंसनीय है। संचालक—श्री कृष्णचन्द्र बेरी। प्रतिनिधि स्वयं।

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, काशी—बनारस के सुप्रसिद्ध समाज-सेवी एवं गुप्तदानी बाबू शिवप्रसाद गुप्त द्वारा संस्थापित इस संस्था ने हिन्दी-साहित्य में गम्भीर विषयों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित करके हिन्दी की विशिष्ट सेवा की है। इनमें बाबू सम्पूर्णानन्द का 'अन्तर्राष्ट्रीय विधान', डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का 'खण्डित भारत', बाबू रामदास गौड़ का 'हिन्दुत्व', डॉ० भगवानदास का 'दर्शन का प्रयोजन', आचार्य नरेन्द्रदेव का 'राष्ट्रीयता और समाजवाद', 'बृहत् हिन्दी कोश', आदि हिन्दी साहित्य में अपना उल्लेखनीय स्थान रखती हैं। हिन्दी का प्रसिद्ध दैनिक पत्र 'आज' भी इसी संस्था द्वारा प्रकाशित होता है। प्रकाशन व्यवस्थापक—श्रीदेवनारायण द्विवेदी। प्रतिनिधि स्वयं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

मेरे पास निम्नस्थ रचनाएँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं। जो प्रकाशक प्रकाशित करना चाहें, वे निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें :

१–**मुइयाँ पर हैं लाल,** बाघेली सोहरों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा संग्रह। विन्ध्य प्रदेशीय सरकार द्वारा पुरस्कृत पांडुलिपि। पृष्ठ ६०।

२–**विन्ध्य-गरिमा** तथा ३–**विन्ध्य-महिमा,** विन्ध्य क्षेत्र के महापुरुषों की जीवन झाँकियाँ। पृष्ठ ४०।

४–**विन्ध्य प्रदेश के कुछ अज्ञात कवि,** विन्ध्य प्रदेश के अज्ञात कवियों पर परिचयात्मक निबन्ध।

५–**विन्ध्य के लोक गीत : विरहा,** विरहों पर आलोचनात्मक निबन्ध तथा २०० विरहों का संकलन।

६–**पतझड़,** गीत-संग्रह।"

प्रोफेसर श्रीचन्द्र जैन, एम० ए०, दरबार कालेज, रीवा।

◈ ◈ ◈

पटना से श्री रश्मि लिखते हैं : "लगभग छः महीने हुए ......के संचालक के कहने पर मैंने अपनी ६ कहानियों का संग्रह अवलोकनार्थ उनके पास भेजा था। लगभग तीन महीने बाद उन्होंने पत्र लिखा कि वे फिलहाल प्रकाशित करने में असमर्थ हैं और इसलिए पांडुलिपि लौटाई जा रही है। परन्तु दो महीने तक पांडुलिपि न लौटने पर मैंने उन्हें पुनः दो पत्र लिखे जिनका उत्तर एक महीना बीत जाने पर भी मुझे नहीं मिल सका है। लेखकों के प्रति प्रकाशकों का यह रुख शोभनीय नहीं कहा जा सकता।"

◈ ◈ ◈

दतिया (विन्ध्य प्रदेश) से **श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव** एम० ए०, एल० टी०, उपाध्यक्ष वि० प्रा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, लिखते हैं : "मेरे पास निम्नलिखित पुस्तकों की पांडुलिपियाँ तैयार हैं। सुयोग्य प्रकाशक चाहिएँ :

—**हिन्दी-गद्यकाव्य का आलोचनात्मक इतिहास,** प्रायः ३०० पृष्ठ।

—**शैली के प्रयोग** (उत्तम गद्य-काव्य), प्रायः १०० पृष्ठ।

—**हमारे बालक** (बाल मनोविज्ञान और प्रौढ़ शिक्षा), प्रायः ८० पृष्ठ।

—**गोस्वामी तुलसीदास** (नाटक), प्रायः ८० पृष्ठ।

—**अपठित अभ्यास** (हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए), प्रायः ८० पृष्ठ।

—**विन्ध्य-वैभव** (बालोपयोगी कहानियाँ), प्रायः ८० पृष्ठ।

—**अलंकार पिंगल और रस,** सभी परीक्षाओं के लिए उपयोगी विवेचन, प्रायः ६४ पृष्ठ।

—**महात्मा गांधी** (लघु उपन्यास), प्रायः ८० पृष्ठ।

—**आजादी के नवरत्न,** कहानी, रेखाचित्र और जीवनी का सम्मिलित रूप, एक अभिनव प्रयत्न पृष्ठ १००।

—**समाज के अनुभव : विलासिता कैसे रोकें,** प्रायः १०० पृष्ठ।"

नीचे लिखी किताबें फौरन मँगाइये

१–तारा : [स्तालिन पुरस्कार प्राप्त उपन्यास]	२)
२–अधूरी मूरत : रांगेय राघव	२)
३–जीवन के दाने : ,,	१।)
४–अन्तर्राष्ट्रवाद राष्ट्रवाद : ल्युशाओची	।।।=)
५–भारत पर अँगरेजी पूंजी का शिकंजा : होमी० एफ० दाजी	।=)
६–समाजवाद का अर्थ : एमिल बर्न्स	।=)
७–एशिया तोड़ रहा जंजीर : मानायेंग राही	।=)
८–मन्त्रीजी की डायरी : शरदचन्द्र जोशी	।=)
९–रूस का लोह आवरण : डी० एन० प्रिट	।)
१०–पीक स्किल कांड : हावर्ड फास्ट	१।।)

आर्डर शीघ्र भेजें—

जन-साहित्य सदन, इन्दौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-प्रदर्शन तथा विक्रय-वृद्धि

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह पाँचवाँ लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपको 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

यह बहुधा देखा जाता है कि अधिकतर दूकानें बिक्री बढ़ाने की सबसे उत्तम पद्धति—पुस्तक-प्रदर्शन—की कला का पूर्ण सदुपयोग नहीं करतीं। यह बड़े खेद की बात है, क्योंकि यदि पुस्तकों का प्रदर्शन और प्रबन्ध अच्छा हो तो वह बड़ा आकर्षक लगता है। और जब कि पुस्तक-प्रदर्शन का महत्त्व सारे संसार में माना जाता है इसलिए यह ज्ञान करना कुछ कठिन है कि पुस्तक-विक्रय क्यों प्रगति नहीं कर रहा और पुस्तक-प्रदर्शन की कला पुस्तक-विक्रेताओं में क्यों नहीं महत्त्वपूर्ण समझी जाती।

बाहर अलमारियों में सजी पुस्तकें ही ग्राहकों को दुकान में आने के लिए आकृष्ट करती हैं इसलिए वे साफ और सुव्यवस्थित, सुप्रकाशित व आकर्षक ढंग से स्थापित होनी चाहिएँ। शीशे साफ होने चाहिएँ और पुस्तकें भी नियमित रूप से झाड़ी-पोंछी जानी चाहिएँ। इस ओर किसी प्रकार की असावधानी या लापरवाही नहीं बरती जानी चाहिए। अलमारी में पुस्तकों का जमाव साफ-सुथरा होना चाहिए, क्योंकि उसका प्रभाव सारी दुकान की व्यवस्था पर पड़ता है। इन तमाम बातों के लाभ स्पष्ट ही हैं।

प्रकाशक बार-बार पुस्तकें 'बिक्री अथवा वापसी' की शर्त पर विशेष प्रदर्शन के लिए भेजते रहेंगे और प्रदर्शन-सामग्री बहुधा मुफ्त ही भेजेंगे। अब स्थानीय व्यापारी भी आवश्यक साज-सामान अलमारी सजाने के लिए भेजेंगे। इससे न केवल बाहर बहुत बिक्री होगी बल्कि ग्राहक अन्दर आकर भी अपनी रुचि की पुस्तकें खरीदेंगे। अलमारियों के लिए, कर्ज लिये गए साजो-सामान के लिए यदि आभार प्रदर्शन भी कर दिया जाय तो वह दूसरे व्यक्तियों को भी कर्ज देने पर आमादा कर लेगा, क्योंकि आपके यहाँ रखी हुई चीजों से उसकी दुकानों का भी तो विज्ञापन होता है और इस प्रकार वे भी इससे लाभ उठाते हैं।

जहाँ तक सम्भव हो सके अलमारी में रखी पुस्तकों का दुकान के अन्दर जमी हुई पुस्तकों से कुछ मेल जरूर होना चाहिए। यानी जो पुस्तकें बाहर जमी हुई हैं वे ही या उसी विषय की अन्य पुस्तकों का स्टाक अन्दर भी होना चाहिए। ऋतुओं के अनुसार बाहर पुस्तकों का प्रदर्शन भी लाभप्रद ही होगा।

दुकान के अन्दर पुस्तकों का जमाव उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि बाहर अलमारी में। बाहर प्रदर्शित पुस्तकें यदि बाद में अन्दर दुकान पर भी प्रमुखता के साथ रखी जाएं तो लोगों की उनमें दिलचस्पी कुछ दिनों और बरकरार रखी जा सकती है। यदि पुस्तकों के जैकेट गन्दे हो जायँ या फट जायँ तो प्रकाशकों से वे बदलवाये जा सकते हैं। जब पुस्तकों का बेकायदगी के साथ इस्तेमाल किया गया हो (ग्राहक को दिखाने में या इधर-से-उधर रखने में) तो उसे स्टाक में भेजने के पहले अच्छी तरह देख लेना चाहिए कि कहीं उसके कवर पर कोई धब्बा या अँगूठे का चिह्न तो नहीं है। और यदि कोई चिह्न हों तो उन्हें रबड़ से मिटा देना चाहिए। जहाँ बहुत कीमती और सुन्दर पुस्तकें रखी हों और जिन्हें ग्राहक अक्सर उठाकर देखना चाहें वहाँ एक सूचना, जो युक्तिपूर्ण और सुशिष्ट हो, लगा देने से किताबों के खराब होने का भय कम हो जाता है। एक छोटी-सी सूचना "कृपया सावधानी से पुस्तक देखिये" लोगों को बुरी नहीं लगेगी। लेकिन ये सूचनाएँ जरूरत से ज्यादा बड़ी और अशिष्ट नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर द्वारा प्रकाशित

सम्पूर्ण शरत्-साहित्य

भारत के सर्वश्रेष्ठ कथा-शिल्पी स्व० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के सम्पूर्ण साहित्य का अतिशय प्रामाणिक और विशुद्ध अनुवाद ...मूल्य में प्रकाशित करने की हमारी योजना अब सम्पूर्ण हो रही है। २४ भाग निकल चुकने के बाद अनेक कारणों से इसका काम ...रहा। अब गत दो वर्षों में इसके नीचे लिखे सात भाग और निकल चुके हैं और शेष भाग यथासंभव शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेंगे—

...–**शरत्-पत्रावली**—इस भाग में शरत्-बाबू ने अपने साहित्यिक मित्रों और लेखकों को जो पत्र लिखे थे उनका संग्रह है, जिनसे पता लगता है कि वे कितने महान् थे और साहित्य के कितने मर्मज्ञ थे।

...–**जागरण, आगामी काल, आने की आशा में और रसचक्र**—ये चार अधूरे उपन्यास और अरक्षणीया सम्पूर्ण उपन्यास।

...-२८-२६—**चरित्रहीन**—सम्पूर्ण बृहत् उपन्यास।

...–**विराजबहू और बचपन की कहानियाँ।**

...–**शरत्-निबन्धावली**—एक से एक बढ़कर २३ निबन्धों और व्याख्यानों का संग्रह।

...-३३—**देनापावना और नया विधान** (प्रेस में)

प्रत्येक भाग का मूल्य डेढ़ रुपया है और प्रत्येक भाग में लगभग १६० पृष्ठ रहते हैं।

द्विजेन्द्र नाटकावली

भारत के श्रेष्ठ नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय के नाटकों के शुद्ध और प्रामाणिक अनुवाद :

ऐतिहासिक				पौराणिक		सामाजिक	
चन्द्रगुप्त	१।)	शाहजहाँ	१॥)	भीष्म	१॥।)	भारतमणी	१॥)
दुर्गादास	१॥)	नूरजहाँ	१॥।)	सीता	१।)	उस पार	१॥।)
मेवाड़ पतन	१=)	राणाप्रताप	२।)	अहल्या	१।)	सूम के घर धूम	।=)

सर जदुनाथ सरकार

मध्यकालीन इतिहास के सर्वश्रेष्ठ और ज्येष्ठ विद्वान के दो प्रामाणिक इतिहास :

औरंगजेब ७॥) | शिवाजी २॥)

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य के माने हुए मर्मज्ञ विद्वान के चार उच्चकोटि के ग्रन्थ :

हिन्दी साहित्य की भूमिका ३॥) | कबीर ४)

बाणभट्ट की आत्मकथा ५।) | प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद ३)

के० एम० मुन्शी

उत्तर प्रदेश के गवर्नर और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक के तीन श्रेष्ठ उपन्यास :

पाटण का प्रभुत्व ३) | गुजरात के नाथ ४॥) | राजाधिराज ४॥)

हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों का पूरा सूचीपत्र मँगाइए

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई ४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनी चाहिएँ। विनम्रता पूर्वक यदि निवेदन किया गया हो तब तो लोग उसे आदर पूर्वक स्वीकार करेंगे और यदि भद्दे ढंग से कुछ कहा जाय तो वह पुस्तक-विक्रय के लिए उपयोगी और लाभप्रद नहीं होगा।

बिक्री बढ़ाने जाने-पहचाने तरीकों में कुछ हैं—लेखकों द्वारा व्याख्यानों का आयोजन; बच्चों के लिए पुस्तक-सप्ताह मनाना; प्रदर्शिनी करना; सुविख्यात और गण्यमान्य व्यक्तियों को दुकान पर आमन्त्रित करना और उनकी पुस्तकों पर 'आटोग्राफ' लेना और अन्त में सूचीपत्रों का सदुपयोग करना। ये सभी तरीके बिक्री बढ़ाने के उत्तम साधन हैं। वे ग्राहकों का तथा पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं, उनमें दिलचस्पी पैदा करते हैं, व्यापार को आगे बढ़ाते हैं और व्यापार चलाने में बहुत मदद करते हैं। लेखकों के व्याख्यान उन्हीं लेखकों तक सीमित रखने चाहिएँ जिनसे आपके ग्राहकों की दिलचस्पी बढ़े और यह कार्य यदि अच्छी तरह सम्पादित किया जाय तो अवश्य सफल होगा। दुकानों में भी इन व्याख्यानों का आयोजन किया जा सकता है। चाहे आप उस समय बिक्री बन्द कर दें पर ग्राहकों की (जो उस व्याख्यान में शरीक हैं) पुस्तकों पर लेखक अपने 'आटोग्राफ' दे सकते हैं। मेरे खयाल में यदि सन्ध्या के समय ये आयोजन हों तो बहुत से पुस्तक-प्रेमी एकत्र हो सकेंगे और आपकी दुकान के लिए विशेष पाठक-समुदाय तथा मित्रगण बन सकेंगे और इस प्रकार आपके ग्राहकों की संख्या भी बढ़ जायगी।

बाल-साहित्य-सप्ताहों के आयोजन में स्कूलों के शिक्षक माता-पिता और लाइब्रेरियों से आपको काफी मदद मिल सकेगी।

पुस्तकों के साथ आगामी प्रकाशनों की सूचना अथवा सूचीपत्र अवश्य रख दिया जाना चाहिए।

व्यक्तिगत सम्पर्क का महत्त्व भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। पुस्तक विक्रेताओं को लोगों के पास जरूर जाना चाहिए। स्थानीय लाइब्रेरियनों, स्कूल-शिक्षकों, संस्थाओं व क्लबों के मन्त्रियों के पास गाहे-बाहे जाने और भेंट करने से मित्रता और साख बनाई जा सकती है जिसका लाजमी नतीजा व्यापार की प्रगति होगा।

अन्त में, सब प्रकार के पुस्तक-प्रदर्शनों व विज्ञापनों के अलावा इस सुनहरे नियम का अवश्य पालन किया जाना

हमारे कुछ प्रकाशन

संस्कृत

संस्कृत साहित्य की रूपरेखा : पाण्डेय और व्यास
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास : रामबिहारीलाल
भरतमुनिकृत नाट्य-शास्त्र : सर्ग १-३ सटीक
सम्पादक प्रो० भोलानाथ शर्मा
धनंजयकृत दशरूपक : सटीक—डॉ० त्रिगुणायत (प्रेस में)
संस्कृत प्रथम पुस्तक : रामबिहारीलाल
संस्कृत द्वितीय पुस्तक—रामबिहारीलाल
सांख्य कारिका सटीक अंग्रेजी-हिन्दी : सत्यनारायण पाण्डेय
काव्य दीपिका-अष्टमशिखा : पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय
संस्कृत गद्यमंजरी—पाण्डेय और व्यास

हिन्दी साहित्य

कबीर की विचारधारा : डॉ० त्रिगुणायत
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ : डॉ० त्रिगुणायत
प्रेमचन्द : डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित
संतदर्शन : डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित
वेलिक्रिसन रुक्मणी री : सटीक : पं० कृष्णशंकर शुक्ल
विद्यापति का अमर काव्य : डॉ० गुणानन्द जुयाल
पृथ्वीराज रासो, पद्मावती समय—सटीक : पं० विश्वनाथ गौड़
बुद्धि तरंग—पं० सद्गुरुशरण अवस्थी
कर्मभूमि समीक्षा : श्री हरस्वरूप माथुर
मृगनयनी समीक्षा—श्री हरस्वरूप माथुर
प्रसाद के नाटकीय पात्र—जगदीश नारायण दीक्षित

काव्य

मेघमाला : तार
शिंजिनी—शिवबहादुरसिंह
दो गीत—मृत्यु गीत—प्राणगीत : नीरज

विविध

भारतीय वैज्ञानिक—श्यामनारायण कपूर
साबुन विज्ञान—श्यामनारायण कपूर
एवरेस्ट विजेता शेरपा तेनसिंह—श्यामनारायण कपूर
महाराणा अमर सिंह (स्त्रीपात्र-हीननाटक)
संघर्ष (उपन्यास) स्वर्गीय कौशिक जी
कंटीले तार (उपन्यास) रामसरन शर्मा
भूगोल शिक्षण पद्धति—आत्मानन्द मिश्र

साहित्य निकेतन, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

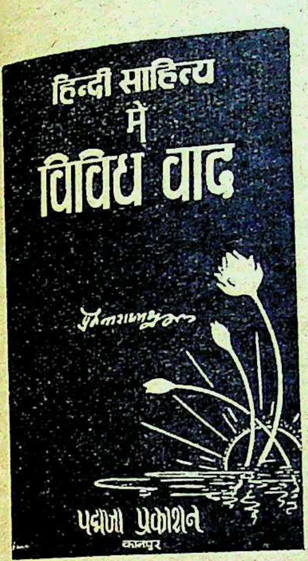

लेखक

डा० प्रेमनारायण शुक्ल एम० ए०, पी-एच० डी०

डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

विषय-सामग्री

मानव-प्रवृत्तियाँ और उनका कृतित्व

मानव-प्रवृत्तियों के निर्माण की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि

कला और साहित्य

साहित्य की विभिन्न परिभाषाएँ

...हित के विभिन्न रूप

वादों का उदय

...-जगत् सम्बन्धी समाजगत वाद

...-स्वत्व (वैयक्तिकता) से सम्बन्धित वाद

...-पर-भिन्न (अध्यात्म) से प्रभावित वाद

शैलीगत वाद

साहित्य में विविधवाद और लोक-कल्याण

पद्मजा प्रकाशन

रामबाग, कानपुर

चाहिए, 'अपने प्रतिस्पर्धियों का ध्यान रखो और दूसरे व्यापारियों पर भी निगाह रखो' उनसे कुछ-न-कुछ हमेशा सीखा जा सकता है। लोगों से सम्पर्क बढ़ाने व उनसे मिलने के नये-नये तरीके ईजाद किये जाने चाहिएँ। आपका काम है पुस्तकों के बारे में जनता को जानकारी दें और उपर्युक्त साधनों व विधियों का नियमित पालन अवश्य सफलता प्रदान करेगा।

बुक-टोकन

बुक-टोकन की प्रथा हमारे देश में प्रचलित नहीं है; लेकिन यदि हमारे यहाँ के पुस्तक-विक्रेता इसे शुरू करें तो उससे काफ़ी लाभ उठा सकते हैं। यह प्रथा इसलिए इंग्लैण्ड में शुरू की गई थी कि इसके द्वारा पुस्तकें उपहार-स्वरूप दी जायँ। इससे यह ज्ञात हो जाता है कि किस व्यक्ति को कौन सी पुस्तक दी जाय, जिसमें वह दिलचस्पी रखता है।

उपहार देने वाला, प्राप्त करने वाले को बुक-टोकन बज़रिये डाक भेजता है और प्राप्त करने वाला उसे अपनी पसन्द के पुस्तक-विक्रेता के पास ले जाता है या डाक से भेज देता है। टोकन का आधा पृष्ठ टिकट या टिकटों से भरा होता है और दाहिनी ओर के आधे भाग पर वह उन टिकटों के मूल्य के बराबर पुस्तकों या पुस्तक का नाम लिख देता है। टोकन के विक्रय तथा विनिमय के नियम उसके पीछे लिखे होते हैं। और इस प्रथा का प्रयोग पुस्तक-विक्रेता-संघ के सदस्यों तक ही सीमित होता है।

बुक-टोकन से एक और फ़ायदा भी होता है और वह यह कि वे पुस्तकें, जिनके मुख-पृष्ठ कुछ मैले या फटे हुए होते हैं बिक जाती हैं, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति उपहार के लिए कोई पुस्तक ख़रीदता है तो उसकी बाह्य स्थिति पर भी ध्यान देता है। वह नहीं चाहता कोई गन्दी पुस्तक अपने मित्र को उपहार में दे जब कि बुक-टोकन के विनिमय से यह लाभ होता है कि पुस्तक ख़रीदने वाला उसके अन्दर के विषय को, जिसे वह पढ़ना चाहता है, अधिक महत्त्व देता है बनिस्बत उसकी बाह्य दिखावट के। साथ ही, ख़रीदार टोकन के मूल्य के बराबर ही की पुस्तकें नहीं ख़रीदता; बल्कि उससे अधिक की भी ख़रीद सकता है, इसलिए वह भी एक अलावा लाभ समझा जा सकता है और यदि उसके पास टोकन न हो तो शायद वह वैसा न भी करे। परन्तु टोकन ही उसे दुकान तक खींच लाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोकन द्वारा बिकी हुई किताब का मुनाफा टोकन-विक्रेता, और उसके बदले पुस्तकें देने वाले विक्रेता के बीच बँट जाता है। टोकन किसी भी पुस्तक-विक्रेता को जो पुस्तक-विक्रेता संघ का सदस्य है 'बुक टोकन लिमिटेड' द्वारा दिये जाते हैं। पुस्तक विक्रेता से उनका तब तक कोई मूल्य नहीं लिया जाता जब तक कि ये बिक नहीं जाते, लेकिन उसे एक फॉर्म हर तीन महीने के बाद भरना होता है जिसमें बिके और अनबिके टिकटों का ब्यौरा लिखना होता है और बिके हुए टिकटों की कीमत पर उसे १२½% कमीशन दिया जाता है।

साथ ही इन नियमों में कुछ अपवादों की भी गुञ्जाइश है। मसलन यदि कोई पुस्तक-विक्रेता यानी कोई पुरानी किताबों का विक्रेता पुस्तक-विक्रेता-संघ का सदस्य नहीं है और टोकन देना चाहता है तो उसे काटकर टोकन दिए जा सकते हैं।

छः महीने बाद तक भी टोकन स्वीकार किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे बहुत पुराने न हो गए हों।

यदि ग्राहक के टोकन की तारीख खत्म हो जाय और वह उसके बदले नया टोकन लेना चाहे तो कुछ मुकर्रर पैसे लेकर उसका टोकन बदला जा सकता है। लेकिन इस किस्म की प्रवृत्ति को अधिक प्रोत्साहन देना ठीक नहीं, क्योंकि टोकनों का जितना जल्द विनिमय हो व्यवसाय के लिए वह उतना ही लाभदायक सिद्ध होगा।

बुक-टैलीज

यह प्रथा भी हमारे देश में नहीं है। इसका अभिप्राय है बच्चों को पुस्तकें खरीदने के लिए प्रोत्साहन देना। बुक-टोकनों का प्रयोग उनके लिए अधिक लाभदायक सिद्ध न हुआ, इसलिए यह तय किया गया कि इसी प्रकार की एक और पद्धति 'चलाई जाय।' एक 'आकर्षक' कार्ड तैयार किया जाय, जिसका मूल्य टोकन से कुछ कम हो और इसमें कुछ ऐसी नई और उत्प्रेरक चीजें हों, जिनसे बच्चे और प्रौढ़ दोनों आकृष्ट हो सकें और इसका प्रचलन नये साल या बड़े दिन अथवा ऐसे ही अन्य त्यौहारों या जन्मदिवसों पर न सीमित किया जाय बल्कि साल भर उसे चलाया जाय। यह योजना माता-पिता तथा शिक्षकों को भी अच्छी लगनी चाहिए और बच्चों के लिए वांछनीय शौक प्रतीत होना चाहिए न कि व्यर्थ और अवांछनीय। इसलिए शिक्षात्मक होने के साथ-साथ मनोरंजनात्मक होना भी जरूरी है। ... को किताब खरीदने के लिए आकृष्ट करने के लिए इस ... को सिर्फ यही नहीं करना है कि ऐसे साधन उपलब्ध ... किताब खरीदने के लिए पैसे बच जायँ बल्कि इसके ... दूसरा सहायक ब्याज भी दे। कुछ ऐसी दिलचस्प ... जरूर हो जो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को अच्छी लगें।

बुक टैलिज के फोल्डेड कार्ड्स होते हैं जो ४½ ... होते हैं। सामने का या ऊपर का भाग कुछ आकर्षक ... चाहिए, जिस पर लिखा हो 'बुक टैली' उसका पिछला ... वाउचर का होता है जिसका मूल्य ६ आने रखा जा ... है। पिछले पृष्ठ पर आकर्षक चित्र होने चाहिएँ और ... बच्चों की पसन्द आने वाले होने चाहिएँ।

पिछले ही पृष्ठ पर ही इस माला का विवरण ... जाना चाहिए और साथ ही आगामी प्रकाशनों की ... भी टैलीज। एक-एक या सेट की शक्ल में बेची जा सकती ... यदि टेली का मूल्य साढ़े सात आना रखा जाय तो ... खरीदी जाने वाली पुस्तकें छः आने की ही होनी चाहिए ...

पुस्तक-विक्रेता का कमीशन कुछ इस प्रकार ... चाहिए—टेली की नेट कीमत साढ़े सात आने है और ... से साढ़े छः आने लिये जाते हैं। टेली का विनिमय करने ... से ५ आने लिए जाते हैं। टैलीज खुले रूप में सभी ... बिकाऊ होती हैं इसलिए पुस्तक-विक्रेता-संघ के सदस्य ... लिए जो इस योजना में भाग लेना चाहता है कोई ... लम्बा-चौड़ा खर्च नहीं पड़ता। बुक-टोकन और बुक- ... दोनों कोई भी मुनाफा कमाने के लिए नहीं होता।

यह योजना इस प्रकार क्रियान्वित होती है—जि ... ही संख्या की टैलीज बेची और विनिमय की जाती है ... उनकी बिक्री का सारा मुनाफा पुस्तक-विक्रेता को मिलता ... उसी प्रकार जैसे कि अपनी पुस्तकें बेचकर साधारण ... मुनाफा प्राप्त करता।

जब लाखों की तादाद में बच्चे यह महसूस करने ... कि पुस्तकें संसार की सबसे अधिक उत्तम, बहुभाँति की ... अत्यन्त रुचिकर संपत्ति हैं जिन्हें अपने पास अवश्य ... देना चाहिए और जब वे किताबों की दुकानों पर नि ... रूप से जाया करेंगे तो पुस्तकों का व्यवसाय आज ... अपेक्षा कहीं अधिक लाभप्रद हो जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

"पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन व्यवसाय का गला घोंट अनेक राज्य-सरकारों ने पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया है। किन्तु ऐसा करने से पूर्व प्रायः प्रत्येक ऐसे राज्य ने अपनी शर्तों की पहले से घोषणा कर दी थी। इससे लेखकों तथा प्रकाशकों को यह सर्वथा स्पष्ट हो गया था कि राज्य-सरकार पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण करने जा रही है और तदनुसार उन्होंने सीमाओं में रहते हुए पाण्डुलिपियाँ पेश कीं।

दिल्ली राज्य के शिक्षा-विभाग ने जब लेखकों तथा प्रकाशकों से पुस्तकें आमन्त्रित कीं तो ऐसा जान पड़ता है कि न तो राज्य सरकार और न ही उसका शिक्षा-विभाग अपने उद्देश्य के विषय में स्थिर-मत था।

दिल्ली राज्य शिक्षा-विभाग को पाठ्य-पुस्तक प्रकाशकों ने १-२-५४ के हिन्दुस्तान टाईम्स में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार १ अप्रैल १९५४ को प्रकाशित पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियाँ स्वीकारार्थ पेश कीं। इस बीच स्थानीय एजुकेशनल पब्लिशर्स एसोसिएशन ने विभिन्न विषयों पर स्पष्टीकरण चाहे, लेकिन अधिकारी सर्वथा मौन रहे। ता० १-२-५४ के विज्ञापन में प्रकाशकों एवं लेखकों को आमंत्रित किया गया था कि वे पांचवीं से आठवीं श्रेणी के ६ विभिन्न पाठ्य-विषयों के लिए सात-सात प्रतियाँ छपी हुई अथवा पाण्डुलिपि में उपस्थित करें, और प्रति पुस्तक के साथ ४५ रु० की फ़ीस जमा कराएं। इस विज्ञापन में कहीं संकेत नहीं था कि सरकार पुस्तकों को स्वतः प्रकाशित करना चाहती है।

१४-२-५४ को दिल्ली राज्य की डिप्टी एजूकेशन मिनिस्टर श्रीमती शान्ता वशिष्ट ने दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी में (जिसका समाचार टाईम्स ऑफ इंडिया में १४-२-५४ में प्रकाशित हुआ) ऐसा भाषण दिया कहा जाता है कि राज्य सरकार ने १५ अप्रैल तक मिडिल कक्षाओं के लिए पाण्डुलिपियाँ पेश करने के लिए लेखकों को आमंत्रित किया है इस समाचार के आधार पर एजुकेश्नल पब्लिशर्स एसोसिएशन ने ५-३-५४ को एक रजिस्टर्ड पत्र संचालक शिक्षा-विभाग की सेवा में भेजा और इस सम्बन्ध में स्पष्टीकरण माँगा। किन्तु कहा जाता है कि इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया गया।

उपरान्त अप्रैल १९५४ के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में स्थानीय पत्रों में शिक्षा-विभाग ने इन्हीं पुस्तकों को छापने के टेंडर मांगे। किन्तु उस समय तक भी प्रकाशक सरकार की मंशा के विषय में स्थिर-मत नहीं थे। तिस पर प्रकाशकों ने पर्याप्त धन-राशियाँ व्यय कर ज्यों-त्यों पुस्तकें तय्यार कर ही ली थीं। उन्होंने इस सूचना का उद्देश्य यही समझा कि शिक्षा-विभाग कीमतें निश्चित करने के लिए सही अवस्था जानना चाहता है। फलतः १५-४-५४ को किताबें सबमिट करने के बाद प्रकाशक न्यायपूर्ण निर्णय की आशा में बैठ गए।

किन्तु जब एक अन्य सर्कुलर-पत्र मई के प्रथम पांच दिनों के अन्दर अलग-अलग दिनों में विभिन्न प्रकाशकों के पास पहुँचा, तो वे उसे पाकर हैरान हो गए। इस पत्र का आशय यह है कि यदि आपकी किताब पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकार हो जाय तो आप उसके कापीराईट किन शर्तों पर देने को तय्यार होंगे, और इसका उत्तर १० मई १९५४ तक दिया जाय।

प्रकाशकों ने प्रारम्भ से ही आवेदन किया था कि समय नितान्त थोड़ा है, किन्तु अधिकारी समय बढ़ाने को तय्यार न हुए थे। प्रकाशकों और लेखकों को अनथक श्रम करना पड़ा और अत्यधिक धन व्यय करके समयानुसार कार्य पूरा करना पड़ा। उन्हें आशा थी कि शिक्षा-विभाग न्याय करेगा लेकिन प्रस्तुत सर्कुलर-पत्र को प्रत्येक प्रकाशक अन्यायपूर्ण, अनैतिक एवं धांधली समझने लगा है। स्थानीय एजूकेश्नल पब्लिशर्स एसोसिएशन के सदस्यों ने इस विषय में व्यक्तिशः उत्तर न देकर सामूहिक उत्तर देने के लिए ८-५-५४ को एक सभा की है।

स्पष्ट है कि प्रस्तुत चरण में पहुँचकर शिक्षा-विभाग द्वारा कापीराईट खरीदने की मांग करना सर्वथा अनुचित है।"

—दिल्ली का ही एक प्रकाशक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

इलाहाबाद की लहर प्रकाशन नाम की प्रकाशन-संस्था ने अप्रैल मास में प्रकाशन-कार्य के अतिरिक्त हिन्दी-पुस्तकों की दुकान भी खोल ली है, जिसका पता है : **लहर प्रकाशन, लक्ष्मी टाकीज़, इलाहाबाद-२**। प्रकाशकों से प्रार्थना है कि इन्हें अपने प्रकाशनों की सूचियाँ भेजें।

◈ ◈ ◈

मालवीय पुस्तक भण्डार, हज़रत गंज, लखनऊ, के व्यवस्थापक सूचित करते हैं कि उनकी हज़रत गंज शाखा का उद्घाटन ५ मई १९५४ को हो गया है। प्रकाशकों को चाहिए कि वे अपने प्रकाशनों की सूची एवं व्यापारिक नियम भेजें।

◈ ◈ ◈

स्वर्गीय श्रीमान् सेठ हरजीमल डालमिया की पुण्य-स्मृति में प्रतिवर्ष श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार के नाम से हिन्दी के श्रेष्ठ मौलिक साहित्य तथा दर्शन-ग्रन्थ पर २१००) एवं १०००) रुपयों का पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष के साहित्य तथा दर्शन-पुरस्कारों के लिए प्रकाशित पुस्तकों की पांच-पांच तथा पांडुलिपि की तीन-तीन प्रतियां १५ दिसम्बर १९५४ तक निम्न पते पर भेज दी जानी चाहिएँ : **श्रीमती सरस्वती देवी डालमिया, सभानेत्री श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार समिति, ६ मानसिंह रोड, नई दिल्ली।**

◈ ◈ ◈

ज्ञानलता मण्डल द्वारा संचालित **भारतीय विद्यापीठ** (१९४ गायवाड़ी, गिरगाम, बम्बई ४) की ओर से गत अंक में पाठ्य-पुस्तकों की सम्मिशन से सम्बन्धित जो सूचना प्रकाशित हुई थी, उसमें छपा था कि "अप्रैल १९५४ की परीक्षाओं के बाद से विद्यापीठ की हिन्दी-परीक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों में परिवर्तन करने का विचार है।" इस संस्था के परीक्षा-मन्त्री ने सूचित किया है कि वास्तव में यह परिवर्तन अप्रैल १९५५ की परीक्षाओं के बाद होगा।

INDIA AS KNOWN TO PANINI

IMPORTANT CONTRIBUTION TO INDOLOGICAL LITERATURE

INDIA AS KNOWN TO PANINI

Ancient and dull Sutras of Panini's Ashtadhyayi have been made to yield enormous data of cultural and historical significance.

By

Dr. Vasudev Sharan Aggarwal.

A Publication of Lucknow University.

Royal 4 to, pp. 550/-+XX

Price Rs. 50/-only.

Please write for descriptive catalogue to distributors :

RAJKAMAL PUBLICATIONS LIMITED

1 Faiz Bazar, Delhi

Himalaya House, Hornby Road, Bombay

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्रकाशन

मीराँ : एक अध्ययन—पद्मावती शबनम। मीराँ के जीवन पर गहन अध्ययन, गम्भीर विवेचना एवं खोज द्वारा मीराँ के जीवन-वृत्त पर नया प्रकाश। मूल्य ३।।)

मीराँ बृहत्-पद-संग्रह—सम्पादिका—पद्मावती शबनम। मीराँ द्वारा गाए गये लगभग ६०० पदों का पाठभेद और पाठान्तरों के साथ अपूर्व संग्रह। प्रत्येक पद की प्रामाणिकता या अप्रामाणिकता की विवेचना। मूल्य ६)

नव-निबन्ध—परशुराम चतुर्वेदी। मध्यकालीन शृङ्गारिक कवियों पर आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह। मूल्य ३)

नागरिक और नागरिकता—शुभदा तैलंग। नागरिक-शास्त्र की शास्त्रीय और वैज्ञानिक विवेचना। व्यावहारिक जीवन में उतारने योग्य सरल शैली में लिखित। विद्यार्थियों और सर्वसाधारण नागरिकों के लिए सर्वथा उपयुक्त। मूल्य ४।।)

पार्लमेण्टरी सरकार—विश्वनाथराय। ब्रिटेन की शासन-पद्धति पर संक्षिप्त रूप में इतना सम्पूर्ण प्रकाश डालने वाली पहली पुस्तक। मूल्य ४)

पैरों में पंख बांधकर—रामवृक्ष बेनीपुरी। यूरोप यात्रा का सजीव हृदयग्राही वर्णन। मूल्य ४।।)

प्राथमिक जीवन विज्ञान—बक्शी ए. पी. सिन्हा तथा के. पी. गौड़। जीव-विज्ञान पर १५० चित्रों सहित विद्यार्थियों के लिए सरल और सुन्दर भाषा में लिखित। बिहार हाई स्कूलों के लिए स्वीकृत। मूल्य ३)

अवशेष—सुधाकर पाण्डेय। रंगमंच के उपयुक्त मौलिक नाटक। विद्यार्थी-जीवन की विषम समस्याओं का सुन्दर दिग्दर्शन। मूल्य २)

गांधीजी का भूत—हास्य के बादशाह बेढब बनारसी द्वारा सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर सुन्दर चुटकियां। मूल्य १।।)

महत्व के गुमनाम पत्र—बेढब बनारसी के कल्पित व्यंग्यात्मक पत्रों का सुन्दर संग्रह। मूल्य १।)

फुटपाथ—राधाकृष्ण चटर्जी, बनर्जी घोष, बोस के उपनाम से लिखने वाले चुटीले हास्य-लेखक की गम्भीर रचना। फुटपाथ पर जीवन व्यतीत करने वालों का सुन्दर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। मूल्य ३)

सजला (दो भाग)—राधाकृष्ण की सर्वश्रेष्ठ कहानियों का संग्रह। प्रति खंड २)

अंगूरों का गुच्छा—रमापति शुक्ल। बालोपयोगी सुन्दर कविताओं का संग्रह। मूल्य १)

पशु से मानव—उदयन एम० ए०। मानव के विकास पर बाल मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुन्दर शैली में प्रकाश। बालकों के लिए हिन्दी में अपने तरह की अनूठी पुस्तक। मूल्य १।)

हमारे यहाँ से बनारस की अन्य संस्थाओं के प्रकाशन उचित कमीशन पर प्राप्त हो सकते हैं

लोकसेवक प्रकाशन

बुला नाला, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

मध्य भारत

—कमला राजा गर्ल्स कॉलेज लाइब्रेरी, ग्वालियर।
—क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, इन्दौर।
—गजरा राजा मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, लश्कर, ग्वालियर।
—महात्मा गांधी मेमोरियल मेडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, इन्दौर।
—माधव कॉलेज लाइब्रेरी, उज्जैन।
—विक्टोरिया कॉलेज लाइब्रेरी, ग्वालियर।
—होल्कर कॉलेज लाइब्रेरी, इन्दौर।

मध्य-प्रदेश

—एग्रीकलचरल कॉलेज लाइब्रेरी, नागपुर।
—एस० बी० आर० आर्ट्स कॉलेज लाइब्रेरी, बिलासपुर।
—एस० बी० सिटी कॉलेज लाइब्रेरी, नागपुर।
—कॉलेज आफ साइंस लाइब्रेरी, नागपुर।
—कॉलेज आफ साइंस लाइब्रेरी, रायपुर।
—गवर्नमैंट इंजीनियरिंग स्कूल लाइब्रेरी, नागपुर।
—छत्तीसगढ़ कॉलेज लाइब्रेरी, रायपुर।
—जी० एस० कॉलेज आफ कामर्स एण्ड इकोनामिक्स लाइब्रेरी, अमरावती रोड, नागपुर।
—जी० एस० कॉलेज आफ कामर्स एण्ड इकोनामिक्स लाइब्रेरी, जबलपुर।
—जी० एस० कॉलेज आफ कामर्स एण्ड इकोनामिक्स लाइब्रेरी, वर्धा।
—जी० एस० कॉलेज आफ साइंस एण्ड एग्रीकल्चर लाइब्रेरी, खमगाँव।
—ट्रेनिंग आर्ट्स कालेज लाइब्रेरी, हवाबाग, जबलपुर।
—डिप्लोमा ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट फार मैन लाइब्रेरी, खंडवा।
—डी० एन० जैन कॉलेज लाइब्रेरी, जबलपुर।
—डिपार्टमैंट आफ जीआलोजी लाइब्रेरी, नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर।
—डिपार्टमैंट आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड लोकल सैल्फ गवर्नमैंट लाइब्रेरी, नागपुर।
—डिपार्टमैंट आफ पोलिटिकल साइंस लाइब्रेरी, नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर।
—डिपार्टमैंट आफ बायोकैमिस्ट्री लाइब्रेरी, नागपुर यूनिवर्सिटी, नागपुर।
—नागपुर महाविद्यालय लाइब्रेरी, नागपुर।
—प्रान्तीय शिक्षण महाविद्यालय लाइब्रेरी, जबलपुर।
—बुन्देलखंड डिग्री कॉलेज लाइब्रेरी, झांसी।
—महाकोशल महाविद्यालय लाइब्रेरी, जबलपुर।
—मैडिकल कॉलेज, लाइब्रेरी, नागपुर।
—यूनिवर्सिटी कॉलेज आफ लॉ लाइब्रेरी, नागपुर।
—यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, अमरावती रोड, नागपुर।
—रज़ा कॉलेज लाइब्रेरी, रामपुर।
—राजस्थान आर्यन कॉलेज लाइब्रेरी, बसीम (बरार)।
—लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, बिलासपुर।
—लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, रायपुर।

मनीपुर

—धनमंजुरी कॉलेज लाइब्रेरी, इम्फाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतननाथ सरशार के उपन्यास

हिन्दी के उपन्यास साहित्य के पाठकों में विरला ही ऐसा होगा जिसने 'आज़ाद कथा' का रसास्वादन न किया हो। इस उपन्यास-रत्न के मूल लेखक का नाम है स्व० श्री रतननाथ 'सरशार' और हिन्दी के उपन्यास-सम्राट् प्रेमचद ने इसका अनुवाद किया है। 'सरशार' और उनकी कृतियों की महत्ता के विषय में इतना ही कहना पर्याप्त है। अब पाठकों को इस समाचार से प्रसन्नता होगी कि 'सरशार' की निम्न कृतियों के हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हो गये हैं :

●

कामिनी—*यह प्रेम-रसपूर्ण एक गम्भीर सामाजिक उपन्यास है, जिसमें लखनऊ के नवाबी जमाने का बड़ा ही सजीव तथा मार्मिक चित्रण है। लेखक की शैली और भाषा का कमाल देखते ही बनता है। मूल्य ५)*

पी कहाँ तथा हुश्शू—*इसमें 'सरशार' के दो छोटे उपन्यासों को एक साथ प्रकाशित किया गया है। 'पी कहाँ' करुण-रस-पूर्ण रचना है। 'हुश्शू' हास्य-रस की कृति है। मूल्य ३)*

पर्वत की सैर—*लखनऊ की नवाबी के अवसान होने पर सामन्ती नवाबों के पतनशील चरित्र और अंग्रेजी सत्ता के आरम्भिक युग में उभरती हुई भ्रष्ट नौकरशाही का ऐसा वास्तविक चित्रण अन्य कोई लेखक नहीं कर पाया है। मूल्य ३)*

●

हिन्दी भाषा की सभी तरह की पुस्तकों के लिए विस्तृत सूचीपत्र की आज ही माँग कीजिए।

●

प्रेमचन्द की समस्त रचनाओं के लिए हमें लिखिए।

●

सरस्वती प्रेस, ५, सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद—१

सरस्वती प्रेस, पो० बा० नं० २२, बनारस

सरस्वती प्रेस बुकडिपो, फैज बाजार दिल्ली—७

सरस्वती प्रेस बुकडिपो, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैसूर

—इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।
,, ,, ,, , चिकमगलूर।
,, ,, ,, , चितलद्रग।
,, ,, ,, , हस्सन।
,, ,, ,, , कोलार।
,, ,, ,, , मराड्य।
,, ,, ,, , शिमोगा।
,, ,, ,, , दवनगर।

—एग्रीकल्चर कॉलेज लाइब्रेरी, हेब्बल, बंगलोर।

—ओरियंटल टीसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, मैसूर।

—कॉलेज आफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, बंगलोर।

—कॉलेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, बंगलोर।

—गवर्नमेंट लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।

—डी० आर० एम० इंटरमीडिएट कालेज लाइब्रेरी, दवनगर।

—टीचर्स कॉलेज लाइब्रेरी, मैसूर।

—डी० बनुमिया कॉलेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, मैसूर।

—दि नेशनल इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, मैसूर।

—नेशनल इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।

—फर्स्ट ग्रेड कॉलेज लाइब्रेरी, तुमकुर।
,, ,, ,, , मैसूर।

—बासप्पा इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, आनन्दराओ सर्कल, बंगलोर।

—बी० एम० श्रीनिवासिया कॉलेज आफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, बंगलोर।

—महाराजा कॉलेज लाइब्रेरी, मैसूर।

—महारानी कॉलेज फार विमेन लाइब्रेरी, बंगलोर।
,, ,, ,, , मैसूर।

—माउंट कारमल कॉलेज लाइब्रेरी, पैलेस रोड, बंगलोर।

—मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।
,, ,, ,, , मैसूर।

—विजय कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।

—शारदा विलास इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, मैसूर।

—श्रीकृष्ण राजेन्द्र सिल्वर ज्युबिली टैक्नालोजीकल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, बंगलोर।

—सैंट जोसफ कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।

—सैंट फिलोमेना कॉलेज लाइब्रेरी, मैसूर।

—सैंट्रल कॉलेज लाइब्रेरी, बंगलोर।

राजस्थान

—एम० के० एन० आर० कॉलेज लाइब्रेरी, जवनेर।

—एस० पी० यू० इण्टर कॉलेज लाइब्रेरी, फालना।

—एस० एम० के इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, जोधपुर।

—गवर्नमेंट इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, श्रीगंगानगर।
,, ,, ,, ,, , दाऊसा।
,, ,, ,, ,, , बंसवाड़ा।
,, ,, ,, ,, , सरदार शहर।
,, टीचर्स ट्रेनिंग ,, ,, , बीकानेर।

—चिड़ावा इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, चिड़ावा।

—जसवंत कॉलेज लाइब्रेरी, जोधपुर।

—डूंगर कॉलेज लाइब्रेरी, बीकानेर।

—दरबार इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, किशनगढ़।
,, ,, ,, , साँभरलेक
,, ,, ,, , टोंक।

—बिरला सैंट्रल लाइब्रेरी, पिलानी।

—बी० जे० एस० आर० इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, बीकानेर।

—महाराजा कॉलेज लाइब्रेरी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर।

—महाराना इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, भीलवाड़ा।

—महाराना भूपाल कॉलेज लाइब्रेरी, उदयपुर।

—महारानी कॉलेज लाइब्रेरी, जयपुर।

—महारानी गर्ल्स इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, कोटा।

—महारानी श्री जया कॉलेज लाइब्रेरी, भरतपुर।

प्रकाशक निम्न पुस्तकालयों के नाम भी अपनी सूचियों में लिख लें :

—भारत पुस्तकालय एवं वाचनालय, ५/१८ चेतगंज, बनारस।

—सार्वजनिक पुस्तकालय, मुकुन्दगढ़ (राजस्थान)

—राष्ट्रीय हिन्दी वाचनालय, कसार दट्टा (चेलापुरा) हैदराबाद (दक्षिण)

—गांधी पुस्तकालय, गांधी भवन, दतिया (वि० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

...पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद

—विन्ध्य ज्योति, वृजकिशोर 'श्याम'। ऐतिहासिक। ...)

—शिक्षण कला के मौलिक सिद्धान्त, ले० रमाकान्त ...। शिक्षकों के लिए। मू० १।।।)

...एल० प्रकाशन, दिल्ली

—अक्षर-ज्ञान, ले० आनन्द प्रकाश। बालोपयोगी। ...)

...इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

—कृषि शास्त्र, ले० तेजशंकर कोचक। ३।।)

—तर्कशास्त्र-आगमन, ले० भोलानाथ राय, अर्जुन ...। मूल्य लगभग ५)

—तर्कशास्त्र निगमन, ले० भोलानाथ राय, श्रीमती ...माधव। मूल्य लगभग ५)

...निकेतन प्रकाशन, कलकत्ता

—अभिनेत्री का सपना, ले० कलाकार सूरज। पृ० ...। काउन। मू० ३।)

—जीवन गीत, ले० जोशी निर्भीक, कविता, पृ० ६४। ...)

—मधुघट, ले० कलाकार सूरज। कविता-संग्रह। पृ० ...। मू० २।)

—मधुरव, ले० कलाकार सूरज, कविता-संग्रह। पृ० ...। मू० २)

...महल, इलाहाबाद

—कौशांबी के अन्तःपुर का विलास, ले० देवदत्त ...। मू० २)

—दीपवेला, ले० जगतप्रकाश चतुर्वेदी। कविता। ...)

—नवाबी मसनद, ले० अमृतलाल नागर, हास्यरस। ...१९५४

मूल्य २।।)

—पेरिस का रंगीला, ले० मोंपासाँ। उपन्यास। मूल्य ३।।)

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

—करामाती सितार, ले० गिरीशनाथ 'गिरीश'। बालोपयोगी मूल्य ।।।)

—जादू का झूला, ले० अशोक बी० ए०, बालोपयोगी कहानियाँ। मूल्य ।।।)

—नौजवान, ले० पं० गोविन्दवल्लभ पंत। सामाजिक उपन्यास। मूल्य ५)

—बीवी के लैक्चर, ले० 'तिलक'। कहानी-संग्रह। मूल्य २।।)

ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना

—जिन्दगी का नशा, ले० वीरेन्द्र नारायण। नाटक। मूल्य ।।।)

—सावित्री, ले० गौरीशंकर मिश्र एम० ए०, खण्ड-काव्य। मूल्य १।।)

गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा

—अंकुश, ले० हरिशंकर उपाध्याय। हिन्दी कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना एवं साहित्यकारों पर आलोचनात्मक निबन्ध। १)

—द्वापर की क्रान्ति, ले० श्री सिपाहीसिंह एम० ए०। पौराणिक नाटक। ।।।)

दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद

—घास की रोटी, ले० छविनाथ राय। बालोपयोगी कहानियाँ। मूल्य ।)

—पत्थर की करामात, ले० छविनाथ राय। दक्षिणी बालोपयोगी कहानियाँ। मूल्य ।)

—प्रजा-प्रेम, ले० छविनाथ राय। सम्राट् हर्षवर्धन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्धी बालोपयोगी कहानियाँ। मूल्य ।)

—लड्डुओं का टोकरा, ले० छविनाथ राय। बालोपयोगी कहानियाँ। मूल्य ।)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—चेल्कश, ले० मैक्सिम गोर्की, अनु० राजनाथ एम० ए०। कहानियाँ। मूल्य २।।)

—वैरागी, ले० शरत्चन्द्र, अनु० श्री प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव। उपन्यास। मूल्य २)

पी० सी० द्वादशश्रेणी एण्ड क० लि०, अलीगढ़

—आपके पड़ोसी नेहरू, ले० पी० डी० टन्डन।

—भारत का आर्थिक भूगोल, ले० के० एल० वार्ष्णेय।

बम्बई बुक डिपो, कलकत्ता

—सौ साल बाद, ले० विश्वनाथसिंह शर्मा। उपन्यास, पृ० २५०। क्राऊन। मू० ३।।)

—संजीवनी, ले० गुलाबरत्न वाजपेयी। मनोविज्ञान। पृ० २५०, क्राऊन। मूल्य २।।)

—स्वयं-सिद्धा, ले० श्री गुजन। उपन्यास। पृ० ३००, क्राऊन। मूल्य ३)

भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद

—हीरों की चोरी, ले० नकाबपोश भेदी। जासूसी उपन्यास। मू० ।।।)

भारती मन्दिर, खुर्जा

—मेघदूत की वैदिक पृष्ठभूमि और उसका संस्कृतिक संदेश, ले० सुधीर कुमार गुप्त।

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—बाबा बटेसरनाथ, ले० नागार्जुन। प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक का नवीनतम उपन्यास।

—बाहर भीतर, ले० डॉ० देवराज। 'पथ की खोज' के बाद लेखक का दूसरा नया उपन्यास।

रामनारायण लाल, इलाहाबाद

—औद्योगिक संगठन, ले० शंकर सहाय सक्सेना। मू० ३)

—निबन्ध मुक्तावली, ले० व्यथित हृदय। मूल्य २।।)

—बृज-भाषा व्याकरण, ले० धीरेन्द्र वर्मा। भाषा-विज्ञान के सिद्धान्त। मूल्य १।।)

—मनमोहन का जाल, ले० ला० सीताराम। शेक्स-पीयर के एक नाटक का अनुवाद। मू० ।।=)

विद्यामन्दिर, लखनऊ

—प्रसाद जी का चन्द्रगुप्त, ले० प्रेमनारायण टंडन। पु० मु०। मूल्य २।।)

—प्रेमचन्द : उनकी कृतियाँ और कला, ले० प्रेम-नारायण टंडन एम० ए०। आलोचना। मूल्य ३।।)

—रहस्यवाद : छायावाद, ले० प्रेमनारायण टंडन एम० ए०। पु० मु०। २।।)

—साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली, ले० प्रेम-नारायण टंडन, एम० ए०। पु० मु०। ५।।)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—काक शास्त्र, ले० शम्भुनाथ पांडेय एम० ए०। साहित्य। मूल्य ३।।)

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ले० डॉ० रांगेय राघव। उप-न्यास। मूल्य ३)

—रत्ना की बात, ले० डॉ० रांगेय राघव। उपन्यास। मूल्य ३)

—हिन्दी और उसके कलाकार, प्रो० फूलचन्द 'सारंग' एम० ए०। साहित्य। मूल्य ३)

शुद्धद्वैत एकेडेमी, कांकरोली

—दो सौ वैष्णव की वार्ता, १, २, ३ खण्ड, हरिराय। मू० १-म खण्ड १०), २-म खण्ड ८), खण्ड १०)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—कुब्जा सुन्दरी, ले० श्री राजगोपालाचार्य, शान्ति भटनागर। पु० मु०। मूल्य २)

—जमाने की माँग, ले० श्री विनोबा। भूदान विचार। मूल्य =)

—फूलों की खेती, ले० श्री नारायण दुलीचन्द मूल्य ३)

—हृदय मंथन के पांच दिन, सं० यशपाल जैन। जी के पाँच भाषण।

साहित्य निकेतन, कानपुर

—दो गीत : मृत्युगीत और जीवनगीत, प्रकाशन सम...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

, कविता संग्रह। मू० १॥)

परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

—आधुनिक हिन्दी साहित्य, ले० डा० लक्ष्मीसागर
, एम० ए० पी-एच० डी०। मू० ६)

बुक डिपो, इलाहाबाद

नागरिक शास्त्र और संविधान के आधार, ले० अंबा-
। मू० २)

—पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, ले० फ्रैंक थिल्ली,
अध्ययन। मूल्य ५)

भवन, जालंधर

—किशोर नाटकावली, ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र,
। पृ० १०७। मू० १)

—नीति की कहानियाँ, (प्रथम भाग) ले० राकेश।
योगी कहानियाँ। पृ० ३२।

—नीति की कहानियाँ, (द्वितीय भाग) श्री राकेश।
योगी कहानियाँ।

—बदलते दृश्य, ले० राजवल्लभ ओझा। पृष्ठ २६४।
६)

—शरच्चन्द्र चिंतन, डा० इन्द्रनाथ मदान। पृष्ठ
। मूल्य २॥)

साहित्य भण्डार, लखनऊ

गद्य-मंजूषा सहायक, ले० पं० योगेन्द्रनाथ शर्मा।
नारायण टंडन। मूल्य १)

यशोधरा : एक अध्ययन, लक्ष्मीनारायण टंडन,
ए०। पु० मु०। मूल्य १॥)

प्रकाशन, दिल्ली

—राजकुमार भोज, ले० ऋषभचरण जैन। बालो-
उपन्यास। पृष्ठ ६४, क्राउन। मूल्य १)

—षड्यन्त्रकारी, ले० ऋषभचरण जैन। उपन्यास।
१००, क्राउन। मूल्य ३॥)

मण्डल लि० बनारस

—भारतीय राजनीति : विक्टोरिया से नेहरू तक।
रामगोपाल पत्रकार। मू० १०)

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक साहित्य का लोकप्रिय प्रकाशन

राजकमल अमर साहित्य
संस्कृत के सनातन साहित्य के प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद। पञ्चतन्त्र, दशकुमार चरित, मेघदूत प्रकाशित।

राजकमल कथा-साहित्य
उच्च स्तर के नये उपन्यासों का कम मूल्य में प्रकाशन। ६ भाग प्राप्य। पृष्ठ १४४ से २५६; मूल्य प्रत्येक १॥=)

राजकमल मनोविज्ञान माला
मनोविज्ञान जैसे गूढ़ विषय का सुगम प्रतिपादन। ६ भाग प्राप्य। पृष्ठ ५० से १०० मूल्य प्रत्येक १)

राजकमल

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य

चन्द्रभूषण शाह, सत्य, अहिंसा की विजय, मनमोहन प्रकाशन मण्डल, बनारस
जयकिशन प्रसाद एम० ए०, हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पु० मु०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
डॉ० देवराज (भूमिका), हिन्दी आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ, ४२, रायल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
प्रेमनारायण टण्डन, सं० गोदानः समीक्षा, ८२, क्राऊन, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० कमलाराय बी० ए०, विचित्र प्रबन्ध, १७६, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
राजनाथ शर्मा एम० ए०, हिन्दी भारत का इतिहास, २०२, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
रूपनारायण पांडे, शरत् ग्रन्थावली, ३१-वाँ भाग, अनु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई
वि० भि० कोलते, मराठी संतों का सामाजिक कार्य, हिंन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई
श्याम परमार, मालवी और उसका साहित्य, १२८, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
शिवशेखर मिश्र, भारत का सांस्कृतिक विकास, २००, डिमाई, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
शिवशेखर मिश्र, रेवातट समय, ६००, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
सुधीरकुमार गुप्त, संक्षिप्त दशकुमार चरित, अनु०, भारती मन्दिर, खुर्जा, अजिल्द २॥।), सजिल्द
हनुमच्छास्त्री 'अयाचित', तेलुगु और उसका साहित्य, १२०, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

इतिहास, राजनीति

जे० वी० स्तालिन, मार्क्सवाद और जातियों के प्रश्न, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई
शरद्जोशी, मन्त्री की डायरी, जन-साहित्य सदन, इन्दौर
हावर्ड फास्ट, अनु० रनवीर सक्सेना, पीक स्किल काण्ड, जन-साहित्य सदन, इन्दौर

उपन्यास

कृपा केपि, अनु० रनवीर सक्सेना, तारा, जन साहित्य सदन इन्दौर
चन्द्रभूषण शाह, जय विश्वनाथ, ६४, क्राऊन, मनमोहन प्रकाशन मण्डल, बनारस
चन्द्रभूषण शाह, पन्द्रह अगस्त, मनमोहन प्रकाशन मण्डल, बनारस
ज्वालाप्रसाद 'केशर', कसक, १६२, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, बनारस
नकाबपोश भेदी, खून की होली, १२६, क्राऊन, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', भोर का तारा, रूपसी प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', रामनाथ, रूपसी प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', खुमार, १७६, क्राऊन, रूपसी प्रकाशन, इलाहाबाद
प्यारेलाल 'आवारा', मिट्टी, ३२० क्राऊन, रूपसी प्रकाशन, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांगेय राघव, देवकी का बेटा, १६४, क्राऊन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
रांगेय राघव, यशोधरा जीत गई, १६४, क्राऊन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
रांगेय राघव, लोई का ताना, १५२, क्राऊन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
विश्वनाथ मुखर्जी, छोटी माँ, ८८, क्राऊन, गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा १)
शरत्चन्द्र, अनु० प्रकाशचन्द श्रीवास्तव, **चन्द्रनाथ**, १४८, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)
शरत्चन्द्र, अनु० प्रकाशचन्द श्रीवास्तव, **विराज बहू**, प्रभात प्रकाशन, मथुरा २)
'सुशील', चिता की राख, ३१२, क्राऊन, चौधरी एण्ड सन्स, इलाहाबाद ४)

कहानी

निर्गुण, टूटे सपने, २२८, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद ३)
रामनारायण कपूर, जीवन की कला, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई २।)
हरिशंकर उपाध्याय, राह के रोड़े, ३२, क्राऊन, गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा ।।)

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी, प्रौढ़ साहित्य, जीवन-चरित्र

के० एम० मुन्शी, अनु० एल० पी० भारद्वाज, **बाल सोमनाथ**, रामकुमार बुक डिपो, लखनऊ १।)
सत्यचन्द्र विद्यालंकार, **मनुष्य की कहानी**, ५८, क्राऊन, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ।।=)
रामराव 'दिनेश', **चैतन्य महाप्रभु**, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
नारायणदास अग्रवाल, **उत्तर-प्रदेश गाँव-समाज**, ३६, क्राऊन, रामनारायणलाल, प्रयाग ।।)
राम बन्धु, **हमारे अक्षर**, ४८, डिमाई, एस० एल० प्रकाशन, दिल्ली १)
गौरीविशाल त्रिपाठी, **उत्तर प्रदेश जोत चकबन्दी**, ४२, क्राऊन, रामनारायणलाल, प्रयाग ।।)
मुनरो लीफ़, **एक कदम आगे**, ८०, रायल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १।।।)
हनुमानप्रसाद पोद्दार, **कहावतों की कहानियाँ**, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
विष्णु प्रभाकर, **ऐसे थे सरदार**, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...प्रसाद अग्रवाल एम० ए०, **एकत्र हस्तांतरनीय**, ३०, क्राऊन, रामनारायणलाल, प्रयाग ।=)

नाटक

...रैया, गांधारी, ३२, क्राऊन, गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा, ।।)
के० एम० मुन्शी, अनु० अमृतलाल नागर, **दो फ़क्कड़**, रामकुमार बुकडिपो, लखनऊ ३)
डा० कृष्णदत्त भारद्वाज एम० ए० पी-एच० डी, **प्रह्लाद**, ४४, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर ।।=)
डा० कृष्णदत्त भारद्वाज एम० ए० पी-एच० डी०, **मिथिला**, ४४, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर ।।=)
डा० कृष्णदत्त भारद्वाज एम० ए० पी-एच० डी०, **वृन्दा**, ३०, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर ।=)
...वती भारद्वाज प्रभाकर, **सोने की वर्षा**, २०, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर ।)

विविध

आर्यनायकम्, अनु० रामकिशोर 'पाषाण', **वर्तमान शिक्षा की गम्भीर स्थिति**, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम =)
...विसेंट, अनु० जलेश्वरप्रसाद, **जीवन की पहेली**, ८६, क्राऊन, आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस ।।।)
...० न० रामन्ना शास्त्री, **विवाह से पहले**, १५०, क्राऊन, विश्व साहित्य, आगरा २)
...खरे विष्णुनारायण, **क्रमिक पुस्तक मालिका**, ५०६, पु० मु०, संगीत कार्यालय, हाथरस ८)
...म, अनु० रामकिशोर 'पाषाण', **सेवाग्राम के काम पर कुछ विचार**, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम -)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामेश बेदी, **नीम : बकायन**, हिमालय हर्बल इंस्टीट्यूट, हरिद्वार
विश्वनाथ सहाय माथुर, शची माथुर, **शिक्षण प्रविधि**, पु० मु०, १६२, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
सत्यन्, **ओटना, धुनना और तांत बनाना**, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम

विज्ञान

जगपति चतुर्वेदी, **आविष्कारों की कहानी**, १७२, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
जगपति चतुर्वेदी, **शल्य विज्ञान की कहानी**, १६६, क्राऊन, किताब महल, इलाहाबाद
देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय, अनु० प्रमोधकुमार मजूमदार, **मन की बातें**, क्राऊन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई,
मधुकर, **नवीन मनोविज्ञान**, २२२, क्राऊन, सैंट्रल बुकडिपो, इलाहाबाद
रामजीदास गुप्त 'चंचल', **धान की खेती का जापानी ढंग**, ४०, क्राऊन, राजकमल कला प्रकाशन, बनारस

महादेवी-काव्य-परिशीलन
लेखक—श्री भागीरथी दीक्षित

श्रीमती महादेवी वर्मा के काव्य का निष्पक्ष परिशीलन एवं 'आधुनिक कवि, भाग १' के प्रत्येक पद की व्याख्या। साहित्य-रत्न तथा बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक सरल सहायिका है। पृष्ठ २००, सुन्दर आवरण।

मूल्य २॥)

प्रकाशक—
श्री भगवतीप्रसाद सिंहानिया
१७ कैंवेल स्ट्रीट, बम्बई—२

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी
की उपन्यास से भी अधिक रोचक
आत्मकथा
के तीन खण्ड
● आधे रास्ते ४॥)
● सीधी चढ़ान ४॥)
● स्वप्नसिद्धि की खोज में
प्रकाशित हो गए। तीसरा खण्ड इसी मास
प्रकाशित हुआ है।
राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$"×६" या २$\frac{3}{4}$"×८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १"×२$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$"×६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित : १००)।

- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D—

आदर्श पत्र लेखन
लेखक : यज्ञदत्त शर्मा
नित्य ही प्रयोग में आने वाले
लगभग १००० पत्र। मूल्य ७॥)

भारतीय शिक्षा
लेखक : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद
राष्ट्रपति के शिक्षा सम्बन्धी
विचारों का संग्रह। मूल्य ६)

प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास
लेखक : डॉ० रांगेय राघव
हरजीमल डालमिया पुरस्कार प्राप्त
भारत का प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास। मूल्य १२)

शिवालक की घाटियों में
ले० : विद्यानिधि सिद्धान्तालङ्कार
पर्वतीय सुषमा में साहस की
ओजस्वी यथार्थ कहानियां। मूल्य ५)

हिन्दी काव्यालङ्कार सूत्र
वामन विरचित
आचार्य विश्वेश्वर की हिन्दी टीका सहित।
सम्पादक : डा० नगेन्द्र। मूल्य १२)

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक प्रेमियों और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

"लेखनी है, या जादू की छड़ी है आपके हाथ में !"

—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

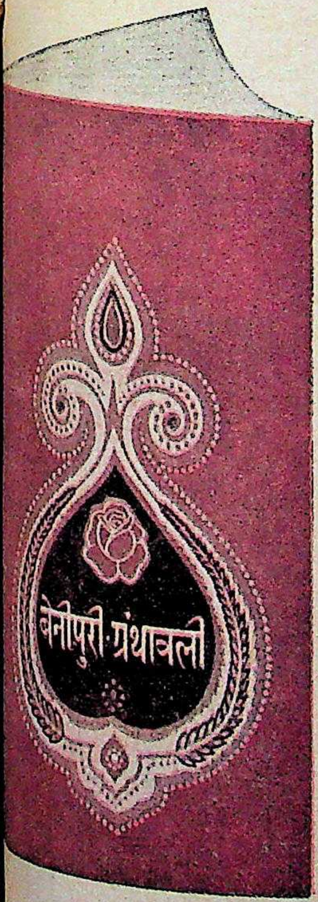

कलम के जादूगर श्री श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी की समस्त रचनाओं का अनुपम संग्रह

बेनीपुरी-ग्रन्थावली

• दस खंडों में •

प्रथम खण्ड प्रकाशित हो गया ।

पृष्ठ संख्या ६२४ : चित्र संख्या ११०

बढ़िया कागज : कलापूर्ण छपाई

पूरी रेक्सिन की जिल्द पर सुनहरा नामांकन

मनोहर तिरंगा आवरण

"इस ग्रन्थावली से किसी भी पुस्तकालय के गौरव एवं शोभा में वृद्धि होगी ।"

—'बिहार पुस्तकालय संघ' के अध्यक्ष

इस प्रथम भाग की छः पुस्तकों में ५३ शब्दचित्र, ७ कहानियाँ, २ उपन्यास और १ एकांकी हैं ।

मूल्य १२॥)

दसों भाग के लिए अग्रिम १००)

प्रमुख वितरक—
आत्माराम एण्ड सन्स,
कश्मीरी गेट : दिल्ली ।

बेनीपुरी-प्रकाशन : : पटना ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

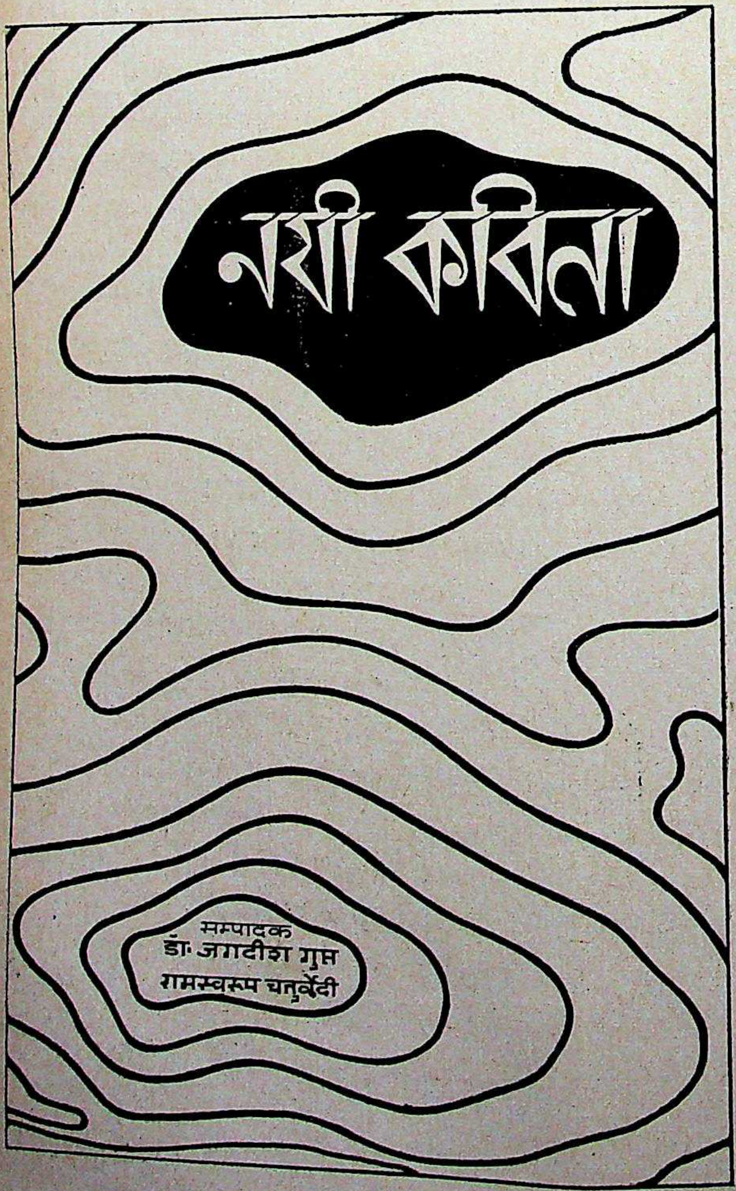

नयी कविता का प्रतिनिधि-पत्र, जिसका प्रथम अंक प्रकाशित हो गया है।

वर्ष में दो अंक निकलेंगे, और प्रत्येक अंक का मूल्य २) होगा।

डाक-खर्च अलग से चार्ज होगा।

प्रत्येक अंक डिमाई आकार के बढ़िया कागज पर छपेगा।

पहले अंक में बहुत-से नये-पुराने कवियों की कविताएँ हैं, तथा 'परिचय,' 'सव्याख्या' तथा 'अनुवाद' नाम के विशेष स्तम्भ हैं।

श्री सुमित्रानन्दन पन्त का तथा सम्पादकीय निबन्ध पठनीय हैं।

प्रकाशक हैं : कविता प्रकाशन समिति, मोतीमहल, दारागंज, इलाहाबाद, तथा व्यवस्थापक राजकमल प्रकाशन, १ फैज बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :
: अंक १० :

सम्पादक : श्रों प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

...सभा के पिछले अधिवेशन में भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत ...गया एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है जिसके अनुसार ...शकों को अपने प्रत्येक प्रकाशन की चार-चार प्रतियाँ ...धिकारियों द्वारा निर्दिष्ट संग्रहालयों में पहुँचानी आवश्यक ...। प्रायः सभी सभ्य और अर्वाचीन देशों में प्रकाशनों से ...न्धित ऐसे कानून प्रचलित हैं। ऐसे कानूनों का प्रचलन ...र स्वीकृति इसी मान्यता की समर्थक है कि पुस्तकें किसी ...देश की सभ्यता व संस्कृति की परिस्थिति व प्रगति की ...दर्पण हुआ करती हैं। पुस्तकें भूत तथा भविष्य में सम्बन्ध ...जोड़ने वाले सेतु के समान हैं; मानव के मौलिक, अति-...मानवीय संघर्षों की कहानी इनमें पढ़ी जा सकती है। विचार, ...तथा आकांक्षाओं की वाहक होने के कारण इनका महत्त्व ...दर्शन की दृष्टि से सर्वाधिक है।

भारत की सरकार ने उपरोक्त कानून बनाकर प्रकाशनों की ...विशिष्ट प्रकृति को स्वीकार किया है, यह हर्ष की बात है। ...में प्रकाशित हो रहा साहित्य आज के तथा कल के ...पाठकों के लिए इस प्रकार सुलभ तथा सुरक्षित हो सकेगा। ...शकों को भी ज्ञान-प्रसार के राष्ट्रीय महत्त्व के इस कार्य में ...योग देकर प्रसन्नता है।

देश के विधान के अनुसार किसी भी व्यक्ति की किसी भी ...में कोई सम्पत्ति बिना उचित मूल्य दिए सरकार नहीं ले ...ती। लेकिन ऐसा वैधानिक निर्देश रहते हुए भी यदि बिना ...के प्रकाशक अपनी पुस्तकों की चार-चार प्रतियाँ सरकार ...को देने के लिए तैयार हैं तो इसका कारण यही है कि वे ...अपने व्यवसाय की विशिष्टता को समझते हैं।

लेकिन खेद की बात है कि प्रकाशनों की इस विशिष्टता को हमारी सरकार केवल निःशुल्क प्रतियाँ लेने की सीमा तक ही स्वीकार करती है। प्रकाशनों की ही क्यों निःशुल्क प्रतियाँ ली जाती हैं, किसी अन्य उद्योग-धन्धे के उत्पादन की क्यों नहीं? कपड़े के कारखानेदारों से प्रत्येक नई किस्म के कपड़े के चार-चार थान क्यों नहीं लिये जाते? अथवा चार-चार मोटरें, चार-चार खिलौने, चार-चार बिजली के बल्ब? केवल इसीलिए कि किताबों में और अन्य 'चीजों' में मौलिक भेद है—एक मौलिक सांस्कृतिक, मानवीय दृष्टि से परम मूल्यवान भेद। स्पष्ट है कि इस भेद को पहचानने वालों का कर्तव्य राष्ट्रीय संग्रहालयों में देश के प्रकाशनों को जमा-जुटाकर ही समाप्त नहीं हो जाता।

दुर्भाग्य है कि हमारे देश में फिल्मों के निर्माण के उद्योग की जाँच के लिए सरकारी कमीशनें बैठ सकती हैं, लेकिन शिक्षा व ज्ञान के प्रचार के एकमात्र माध्यम—प्रकाशन-व्यवसाय—की कतई पूछ नहीं है। बीड़ी व सिग्रेट के उद्योगों में घाटा न हो, इस उद्देश्य से विदेशों से आने वाले सिगार-सिग्रेट पर रक्षणात्मक (प्रोटेक्टिव) कर लगाए जाते हैं, लेकिन विदेशों से आने वाली अनाचार व नैतिक भ्रष्टाचार फैलाने वाली पत्र-पत्रिकाओं पर किसी प्रकार की बाधा डालने की गुंजाइश नहीं है। चीनी, कपड़े, लोहे, कागज—सभी तरह के उद्योग-धन्धों की रक्षा के लिए हमारी सरकार तत्पर रहती है, होना भी चाहिए। लेकिन यह क्या विडम्बना है कि प्रकाशन के धन्धे को इतनी हेठी की नजरों से देखा जाय कि इसकी गणना न तो व्यवसाय में हो, न उद्योग में! कल के राष्ट्र की नींव आज के बालकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व वयस्कों के समुचित शिक्षण पर ही जमेगी और यह शिक्षण प्रकाशकों के सक्रिय सहयोग से ही सम्भव है। फिर इस उद्योग की इतनी उपेक्षा क्यों ?

प्रत्येक प्रकाशन की चार चार प्रतियों की निःशुल्क मांग करने वाले कानून के स्वीकृत होने से यह तो स्पष्ट है ही कि भारत सरकार प्रकाशनों की विशिष्टता को स्वीकार करती है। अन्य सभ्य देशों की सरकारें पुस्तकों की इस विशिष्टता को समझते हुए इनकी बिक्री पर टैक्स नहीं लगातीं, डाक की दरों को दूसरी चीजों की अपेक्षा बहुत कम रखती हैं, तथा सवारी व माल-गाड़ी से भेजी जाने वाली अन्य चीजों की अपेक्षा इन पर कम भाड़ा लेती हैं। इस व्यवसाय को कई रूप से और सहायता भी दी जाती है। लेकिन हमारे देश में न केवल ऐसी सुविधाओं का नितान्त अभाव है वरन् थोड़े बहुत अंशों में जो सुविधाएँ प्राप्य थीं, उन्हें भी वापिस लिया जा रहा है।

प्रकाशन-व्यवसाय का पहली पंचवर्षीय योजना में कहीं उल्लेख नहीं है। इस व्यापार व उद्योग की दशा जानने की किसी को फिक्र नहीं है। जो प्रकाशक एकमात्र व्यावसायिक, स्वार्थी मनोवृत्ति को अपना कर बढ़ रहे हैं, उन्होंने देश के शिक्षा जगत् को किस हद तक भ्रष्टाचारिता का शिकार बना लिया हुआ है, इसका पर्दाफ़ाश करने की इच्छा कहीं दिखाई नहीं पड़ती। प्रकाशन व्यवसाय की दशा बहुत ही चिंत्य और दयनीय है। सरकार का कर्तव्य है कि प्रकाशकीय समस्याओं को समझे और उन्हें सुलझाने के लिए साहसपूर्ण कदम उठाए।

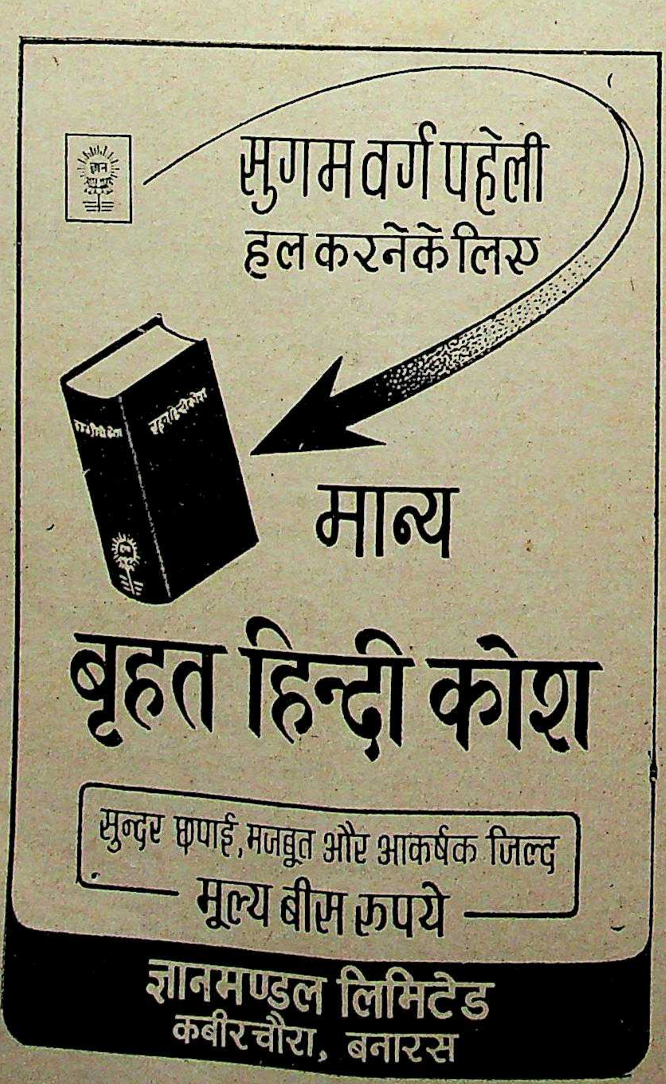

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के निर्माण पर

…प्रोत्साहनमय आशीर्वाद के सन्देश

…प्रकाशक संघ की सफलता की मैं कामना करता … और प्रकाशक दोनों एक-दूसरे के हित को ध्यान में …योग की भावना से कार्य करें तो कठिनाइयों पर …ई जा सकती है। इसके लिए दोनों ओर से प्रयत्न …ने चाहिएँ।"

मैथिलीशरण गुप्त

◈ ◈ ◈

"…इधर (विभिन्न प्रकाशकों) के सत्प्रयत्नों से …खिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की स्थापना हो …। …हिन्दी भाषा के प्रकाशकों को एकसूत्रता में गूँथने …का प्रयास अभिनन्दनीय और प्रशंसनीय है।…मैं उन …ओं के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करता हूँ जो इस कार्य में …रहे हैं…। संघ की उत्तरोत्तर उन्नति हो और …न्दी प्रकाशन के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक …यही मेरी अभिलाषा है।"

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

◈ ◈ ◈

"अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक-संघ की स्थापना …के साहित्य-जगत् की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। लेखकों …प्रकाशकों का घनिष्ठ सम्बन्ध है और दोनों के भाग्य …सम्बद्ध हैं। जिन महानुभावों ने इस संघ को जन्म …है, वे हमारी बधाई के पात्र हैं।

…स्वागत-समिति के अध्यक्ष श्री रामलाल पुरी तथा संघ के …श्री रामचन्द्र टंडन के भाषण सुनने का सौभाग्य हमें …हुआ था और वे दोनों ही संयत तथा उपयोगी तथ्यों …पूर्ण थे। पुरी जी के भाषण में हमारी सरकार की डाक …के बारे में उपेक्षापूर्ण नीति की जो आलोचना की गई …उसे हमने बड़ी लज्जा के साथ सुना और अपने को भी …दोषी अनुभव किया। संसद के सदस्यों की असावधानी से …की दरों में वृद्धि स्वीकृत हो गई और उसका दुष्परिणाम आज सम्पूर्ण देश को भोगना पड़ रहा है। प्रकाशन-व्यवसाय के पेट में छुरी भोंक देने वाले इस कुकृत्य के लिए हम सभी समान रूप से उत्तरदाता हैं। अब जब तक डाक की दरों में कमी नहीं होती, यह कलंक हम लोगों के—संसद सदस्यों के—सिर पर लगा रहेगा।

बन्धुवर रामचन्द्र टंडन का भाषण स्वभावतः आदर्शयुक्त व्यावहारिकता का एक उदाहरण था। संघ ने उनको अपना प्रथम सभापति चुनकर होशियारी का काम किया, क्योंकि टंडन जी जिस संस्था का संचालन करते हैं वह कोरमकोर व्यावसायिक नहीं है।"

बनारसीदास चतुर्वेदी

◈ ◈ ◈

"मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिन्दी के प्रकाशकों ने अपनी एक संस्था बनाई है। यह संघ का युग है, इस संस्था से प्रकाशकों को लाभ होगा; किन्तु मैं तो इसका स्वागत इसलिए करता हूँ कि इससे लेखकों को भी लाभ हो सकेगा। आज प्रकाशन के क्षेत्र में घोर अराजकता फैली हुई है। पुस्तकों पर स्वत्व किस का रहे; लेखकों को किस रूप में, कितना पारिश्रमिक दिया जाय; प्रकाशकों और विक्रेताओं में क्या सम्बन्ध रहे; कमीशन की दर क्या हो, रॉयल्टी की दर क्या हो—आदि प्रकाशन की प्रमुख समस्याओं पर कहीं भी एकमत नहीं है। लेखकों और प्रकाशकों में तनाव बढ़ रहा है। इसी तनाव से बचने के लिए कितने ही लेखकों ने स्वयं प्रकाशन प्रारम्भ किया है। इससे उनके द्वारा होने वाले साहित्य सृजन में निस्संदेह बाधा उपस्थित होती है। इससे साहित्य की हानि होती है। यदि यह संस्था लेखकों के प्रति सहानुभूति रखती हुई कुछ ऐसे नियम स्थापित कर सकी जो उन्हें अपनी रचनाएं विश्वस्त प्रका-

[आगे पृष्ठ ३९५ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

निम्नलिखित प्रकाशक प्रवेश व वार्षिक शुल्क भरके **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** के संस्थापक सदस्य बन चुके हैं। अन्य संस्थाओं से भी शीघ्र ही शुल्क प्राप्त होने की सूचना मिल चुकी है:

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
ओरिएन्टल बुक डिपो, दिल्ली।
किताब महल, इलाहाबाद।
ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना।
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर।
पद्मजा प्रकाशन, कानपुर।
पीपुल्ज पब्लिशिंग हाऊस, बम्बई।
पुस्तक भंडार, पटना।
भारती भण्डार, इलाहाबाद।
मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
राजपाल एन्ड सन्स, दिल्ली।
रामनारायण लाल, इलाहाबाद।
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी।
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
हिन्दी भवन, जालन्धर।
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस।

❖ ❖ ❖

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सूचित करते हैं कि पंजाब विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में स्वीकृत उनके निम्न लिखित चार प्रकाशनों के पंजाब में वितरण का अधिकार उन्होंने ओरिएंटल बुक डिपो (दिल्ली व जालन्धर) को दे दिया है: **सिद्धान्त और समीक्षा, हिन्दी गद्य-साहित्य, हिन्दी भाषा तथा साहित्य, तुलना।** ये पुस्तकें प्रकाशकीय कमीशन पर अब वितरक से प्राप्य हैं। इनके संक्षिप्त सं... छापने अथवा इन की कुञ्जी प्रकाशित क... के अधिकार प्रकाशकों के पास सुरक्षि... और इन अधिकारों की रक्षा कानून द... की जायगी।

❖ ❖ ❖

सहयोगी प्रकाशन मन्दिर लि० दतिया (वि० प्र०) मन्त्री सूचना देते हैं कि अपने निम्न प्रकाशनों को विक्र... में वे सुयोग्य पुस्तक व्यवसायियों की विशेष सहायता चाहते हैं। उन की कोई भी वाजिब शर्त उन्हें मान्य होगी:

१. हिन्दी की योग्यता कैसे बढ़ावें। पृष्ठ १३६, मू... १॥), स्टाक ४०० प्रति।

२. त्रिवेणी के संगम पर, कविता-संग्रह। पृष्ठ ... मूल्य १), स्टाक ८०० प्रति।

३. भारत-भक्ति, बालोपयोगी राष्ट्रीय गद्यकाव्य। वि... सरकार से पुरस्कृत। पृष्ठ ८०, मूल्य १), स्टाक ६००।

४. चटनी, हास्यरस की कविताएँ। पृष्ठ ८०, ... १।), स्टाक ६००।

५. वर्मा विद्यार्थी शब्दकोष, दैनिक जीवन के १... शब्द, हिन्दी से अंग्रेजी। मूल्य ।), स्टाक ८००।

६. वीरांगना लक्ष्मीबाई, पुराने रासो का सम्पा... पृष्ठ ६०, मूल्य ॥), स्टाक ७००।

७. विद्रोही बानपुर, गदर के इतिहास का एक अध्या... विन्ध्य सरकार से पुरस्कृत। मूल्य १), स्टाक ६००।

❖ ❖

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, शाहदरा, दिल्ली, सूचित करते ... कि आचार्य चतुरसेन कृत **अमर अभिलाषा** का तीसरा संस्क... एक अन्य प्रकाशक ने लेखक की आज्ञा प्राप्त किए बिना प्र... शित कर लिया था। इस पर लेखक ने प्रकाशक पर दि... अदालत में मुकदमा चलाया। अदालत ने प्रकाशक को अप... राधी मानकर दण्ड दिया है। कोर्ट ने उक्त पुस्तक की ... सब प्रतियाँ लेखक को सौंप देने की आज्ञा भी दी है। पुस्त... विक्रेताओं व ग्राहकों को सूचना दी जाती है कि इस ... के इस संस्करण की प्रतियाँ न खरीदें।

❖ ❖

राजस्थान में राजकमल प्रकाशन की पुस्तकों का वि...

[आगे पृष्ठ ३६४ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत-साहित्य की नई झाँकी

लेखक और उसकी कला

इल्या एहरनबर्ग : प्रस्तोता—सूर्यकुमार जोशी

सोवियत समाज की साहित्य-समीक्षा ने इधर नई करवट ली है। साहित्य में चिरंतन, व्यापक मूल्यों की पुनर्स्थापना होगी, इसका संकेत मिलने लगा है।

कुछ दिन पहले लेनिनग्राद के एक युवक इंजीनियर ने एक पत्र भेजा था। वह पूछता है: "क्या कारण है हमारे उपन्यास हमारे जीवन की तुलना में कमज़ोर होते हैं? वे हमको पकड़ते नहीं, हमारे दिल तक पहुँचते और उनके पात्र यथार्थ जीवन के पात्रों-जैसे नहीं इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें लेखक की कला-की विशेषताओं को समझना होगा।

प्रत्येक समाज में कलात्मक प्रस्फुटन, सफल एकस्वरता उच्च कलाकृतियों की प्रचुरता का एक काल होता है। काल उस समाज का शिखरबिन्दु कहलाता है। सोवियत-समाज आज अपने विकास के प्रथम प्रभात में ही है; कुछ घड़ियाँ केवल चंद घड़ियाँ ही हैं। हमारे लेखक अभी बच्चों की तरह हैं और इसीलिए हममें अभी तक कोई बाल्ज़ाक या टॉल्सटाय पैदा नहीं हुआ।

जब कोई पाठक किसी संध्या को एक पुस्तक खोलता है तो वह एक लम्बी यात्रा पर चल पड़ता है, चाहे उस पुस्तक के पात्र उसी नगर या उसी सड़क के रहने वाले क्यों न हों। पाठक कहाँ चल देता है? वह उस पुस्तक से क्या आशा रखता है?

हम सभी जानते हैं कि एक ऐतिहासिक उपन्यास ज्ञान की वृद्धि कर सकता है, इतिहास के पृष्ठों में नई जान डाल सकता है। पाठक के लिए किसी अपरिचित स्थान अथवा वातावरण के वर्णन का एक प्रशैक्षणिक मूल्य है। भूगोल की जानकारी ताज़ी होती है और उसे एक भिन्न जीवन-शैली का ज्ञान प्राप्त होता है।

यह जानने के लिए कि इस्पात किस तरह बनता है, आधुनिक मकान किस तरह बनाए जाते हैं, पाठक उस लेखक की अपेक्षा जिसने 'सामग्री संकलित' की है अथवा विशेषज्ञों की कही हुई बातों को आत्मसात् किया है, स्वयं विशेषज्ञ की बात सुनना पसंद करेगा। कृषि-कार्य के बारे में एक अनुभवी कृषि-विशेषज्ञ उपन्यासकार से ज्यादा अच्छा कह सकेगा, और एक सामरिक सिद्धान्त-शास्त्री स्तालिनग्राद के युद्ध का विश्लेषण किसी भी अत्यन्त परिश्रमी उपन्यासकार से कहीं ज्यादा अच्छी तरह कर सकेगा।

किन्तु एक क्षेत्र ऐसा है जिसमें लेखक को अपने साथी नागरिकों और समकालीन व्यक्तियों से अधिक जानना चाहिए और वह क्षेत्र है मनुष्य का अन्तर्जगत्। किसी पात्र के रूप-रंग और वातावरण, उसके घर और उसके काम करने की जगह का वर्णन आवश्यक है। किन्तु वह बहुत कठिन नहीं है। इस प्रकार का वर्णन एक साधन है, न कि साध्य। आधुनिक पाठक टॉल्सटॉय का उपन्यास एक मृत समाज के आचार-व्यवहार को जानने के लिए ही नहीं वरन् मानव की जीवित भावनाओं की जटिलताओं को समझने के लिए भी पढ़ता है।

त्रैखगोरनामा मिल में काम करने वाली उस युवती की मुझे याद है जो कि सोवियत लेखकों के एक सम्मेलन में बोली थी। उसने लेखकों को कपड़ा मिल में काम करने वाले मजदूरों के बारे में कहानियाँ व उपन्यास न लिखने के लिए धिक्कारा था। तब से करीब बीस बरस बीत चुके हैं और इस बीच ऐसी बहुत-सी किताबें लिखी गई हैं जिनके नायक कपड़ा-उद्योग में काम करने वाले मजदूर थे। किन्तु मिल की लाइब्रेरियों में इन पुस्तकों की बहुत ज्यादा माँग नहीं है। प्रत्यक्षतः इन उपन्यासों में मशीनों न कि मनुष्यों, उत्पादन-क्रियाओं न कि मानव-भावनाओं का वर्णन किया गया है।

किसी लेखक की सफलता अथवा असफलता का विश्लेषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

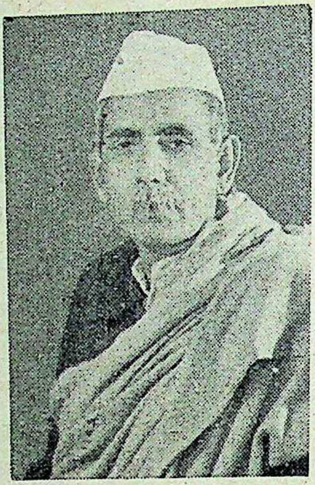

एक भारतीय आत्मा

पं० माखनलाल चतुर्वेदी

के

समस्त साहित्य के प्रकाशन का आयोजन

काव्य

हिम किरीटनी (प्रकाशित) २॥)

हिम तरंगिनी ,, ४॥)

माता ,, ४॥)

- पतझड़ ,, (प्रेस में)
- मधुमास ,, ,,

गद्य-साहित्य

साहित्य-देवता (द्वितीय संस्करण) (प्रेस में)

रंगों की बोली ,,

कथा-साहित्य

- कला का अनुवाद (प्रेस में)
- वज्रदंती ,,

- ईमान की छटपटाहट (प्रेस में)
- काल के अस्फुट स्वर ,,

नाटक-साहित्य

श्रीकृष्णार्जुन-युद्ध (प्रकाशित)

प्रवचन

आत्म दीक्षा--खंड १

आत्म दीक्षा--खंड २

पत्र-साहित्य

क्षण-पूजा

कृतज्ञ

स्वर में स्वर

विचार-साहित्य

कसमसाहट

- इनके अतिरिक्त १० अन्य ग्रन्थों की सामग्री एकत्रित कर संपादित की जा रही है जिनके प्रकाशन की सूचना शीघ्र दी जायेगी।
- सर्वप्रथम चिह्नित ६ पुस्तकें १५ अक्तूबर १९५४ तक प्रकाशित हो जायेंगी।

प्रकाशक एवं विक्रेता

विश्व विद्यालय प्रकाशन

नखासचौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समय क्या हमारे आलोचक किसी कलाकृति के जन्म से सम्बन्धित समस्याओं पर प्रकाश डालते हैं ? कुछ आलोचकों के लिए पुस्तकों की केवल दो ही श्रेणियाँ हैं—एक पुरस्कृत उपन्यास और दूसरे निन्दनीय उपन्यास।

प्रथम श्रेणी के उपन्यासों की आलोचना करते समय आलोचकगण बहुधा एक स्कूल के छात्र की तरह आरम्भ में कथावस्तु का वर्णन करते हैं और अन्त में अपनी स्वतन्त्रता का परिचय देने तथा 'अत्यधिक प्रशंसा' के भावी दोषारोपण से पहले ही बचने के लिए वे उपन्यास की खामियाँ गिनाते हैं और उनके लिए लेखक को दोषी ठहराते हैं।

उनकी अपनी राय में निन्दा किये जाने योग्य उपन्यासों की आलोचना करते समय वे सरकारी वकील बन जाते हैं। कलात्मक दृष्टि से असफल किन्तु अच्छे इरादे से लिखा हुआ वह उपन्यास, जिसके लेखक की नागरिक ईमानदारी पर शक नहीं किया जा सकता, उन आलोचकों की दृष्टि में लेखक का अपराध बन जाता है। ऐसे उपन्यासों की आलोचना करते समय वे आलोचक कथावस्तु का वर्णन नहीं करते, बल्कि इधर उधर से वाक्यों को उद्धृत करके उन्हें लेखक के खिलाफ़ शहादत के रूप में काम में लाते हैं।

किसी उपन्यास की प्रशंसा अथवा निन्दा करते समय ऐसे आलोचक यह सोचने के लिए नहीं रुकते कि किस प्रकार वह उपन्यास लेखक की अन्य कृतियों से सम्बन्धित है। वे परीक्षकों की तरह अंक प्रदान करते हैं; किन्तु लेखक की सफलता अथवा असफलता का कारण समझाने या यह बताने की चेष्टा नहीं करते कि कला कृतियों का किस प्रकार सृजन होता है, कि लेखक का स्वभाव उसकी कृति से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है।

कुछ आलोचकों के लेखों में सदा ही निन्दा और भर्त्सना रहती है। कोई लेखक इतने दिनों से अपनी चुप्पी के कारण निन्दित है तो कोई इसलिए क्योंकि युद्ध-सम्बन्धी उसके उपन्यास में घरेलू मोर्चे पर काम करने वाले वीरों का उल्लेख नहीं किया गया है, और कोई इसलिए क्योंकि उसके पात्र पूरी तरह आशावादी नहीं है अथवा जरूरत से ज्यादा आत्म-विश्वासी हैं। ऐसे लेखों के साथ ही पाठकों को कुछ लेखकों के आश्वासन भी मिलेंगे जिनमें कहा गया होगा कि अमुक निर्माण कार्य पर अथवा उद्योग के अमुक अंग पर उपन्यास लिखने की उन्होंने 'योजना' बनाई है और पत्रों के सम्पादक उन्हें राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के इस या उस अंग पर उपन्यास लिखने के लिए बाहर भेज रहे हैं।

आप लेखक को मोल्दाविया या याकूटिया या विदेश भेज सकते हैं। ऐसा लेखक पत्रकार का कार्य करने में अति उपयुक्त है। शब्द चित्र लिखना कठिन कार्य है और लेखन का एक महत्त्वपूर्ण अंग भी। किन्तु किसी लेखक को बाहर भेजते समय आपको यह आशा नहीं रखनी चाहिए कि वह अपने सूटकेस में एक नए उपन्यास की आत्मा बन्द करके लौटेगा। किसी उपन्यास को लिखते समय, हो सकता है कि, लेखक किसी शहर या कारखाने को देखने की जरूरत महसूस करे; किन्तु वह उस वस्तु या विचार का पूरक-मात्र ही है जिसने उसे उपन्यास लिखने की प्रेरणा प्रदान की थी।

इस प्रकार का साहित्य-सृजन मशीनों से बने माल के उत्पादन की तरह ही है। उस ग्राहक की तरह जो कि अपनी रुचि की चीज न पाकर या अपने मनपसन्द डिजाइन का कपड़ा न पाकर क्षुब्ध हो उठता है, बहुत-से ऐसे पाठक हैं जो कि अमुक निर्माण-कार्य का वर्णन न करने के लिए या किसी एक खास पेशे का वर्णन करने के लिए या किन्हीं विशेष मनोभावों को चित्रित न करने के लिए (चाहे उसने अन्य मनोभावों का चित्रण अच्छा किया हो) लेखक को दोषी ठहराते हैं।

लेखक कोई ऐसा यन्त्र नहीं है जो मशीन की तरह घटनाओं को अंकित करता जाय। वह इसलिए पुस्तक नहीं लिखता, क्योंकि वह लिखना जानता है या क्योंकि सोवियत लेखक-संघ के किसी सदस्य ने उससे पूछा है कि इतने दिनों तक उसकी कोई पुस्तक प्रकाशित क्यों नहीं हुई। लेखक जीविकोपार्जन के लिए भी नहीं लिखता। वह सिर्फ इसीलिए लिखता है क्योंकि वह महसूस करता है कि उसे कुछ कहना है, कोई ऐसी चीज है जो उसके अन्दर से निकल पड़ना चाहती है, क्योंकि उसने ऐसे लोगों, ऐसी चीजों और ऐसे मनोभावों को जाना है जिन्हें लिखना उसके लिए जरूरी हो गया है।

कला के क्षेत्र में आँकड़ों का वह स्थान नहीं है जो कि औद्योगिक उत्पादन के क्षेत्र में है। मुझे विश्वास है कि आप मेरे साथ सहमत होंगे कि एक अच्छा उपन्यास सौ बुरे उपन्यासों से ज्यादा कीमती है। न उपन्यास कोयलों की तरह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलकर खत्म होते हैं और न जूतों की तरह घिसकर।

कुछ आलोचक उपन्यास के पात्रों की गलतियों के लिए लेखक को दोषी ठहराते हैं। जब कोई लेखक जीते-जागते, ईमानदार, बहादुर और श्रेष्ठ पात्रों के बारे में लिखता है तो वह उनकी कमजोरियों को, उनकी भूलों या असफलताओं को नहीं छिपा सकता, क्योंकि वह जीते-जागते लोगों को चित्रित करना चाहता है, न कि गत्ते के बने हुए लोगों को।

क्या आलोचकगण लेखकों को वास्तव में ऐसा मूर्ख और राजनीतिक दृष्टि से गया-बीता समझते हैं जो यह नहीं देख पाते कि उनके पात्र गलतियाँ कर रहे हैं? जनता, समाज और जीवन व्यक्ति की गलतियां सुधारते हैं और उन गलतियों को दिखाकर लेखक पाठक को सही रास्ता पाने में मदद देता है। किन्तु लेखक प्रूफ-रीडर की तरह अपने पात्रों की गलतियाँ नहीं सुधार सकता।

लेनिनग्राद के इंजीनियर को क्षुब्ध बनाने वाले असफल उपन्यासों में अक्सर बहुत से पृष्ठ होते हैं किन्तु पाठक उन उपन्यासों के पात्रों के अन्तर्जगत् को नहीं जान पाता और उनके अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। यह मेरे खयाल से लेखक की अयोग्यता के कारण नहीं बल्कि पात्रों के असत्य चरित्र-चित्रण के कारण है।

कई बार पात्रों के चरित्रों के पूर्व-निर्धारण का कारण पाठक को किसी-न-किसी प्रकार प्रभावित करने की लेखक की इच्छा में होता है। लेखक भूल जाता है कि उपन्यास समाचार-पत्र का लेख नहीं बन सकता और कि अत्यन्त प्रभावोत्पादक पोस्टर भी एक सुन्दर चित्र का स्थान नहीं ले सकता। कई बार वास्तविक जीवन के एक टुकड़े को चित्रित करने में लेखक को डर होता है कि वह टुकड़ा बहुत शुष्क न हो जाय और इसलिए वह एक ऐसे आदर्श नायक के वर्णन से उसे भर देता है जिसमें समस्त सद्गुण विद्यमान हों। कई बार ऐसा भी होता है कि लेखक अपने पात्र को पूरी तरह नहीं जानता या समझता; अतः वह अपने-आपको उस पात्र की सफलताओं का वर्णन करने तक ही सीमित रखता है क्योंकि मानव-हृदय की गति की अपेक्षा मशीन की क्रिया को समझना अधिक आसान है।

एक असफल सोवियत उपन्यास में (जो कि उन उपन्यासों में था, जिनका मैं उल्लेख कर चुका हूँ और जो कि

हिन्दी-समीक्षा की विविध पद्धतियों का सैद्धान्तिक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण

हिन्दी-आलोचना : उद्भव और विकास

डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र एम० ए०, पी-एच० डी०

मूल्य १२)

१. संस्कृति-साहित्य में समीक्षा का स्वरूप :
२. हिन्दी में रीतिग्रंथ और साहित्य-समीक्षा :
३. आधुनिक समीक्षा-पद्धति का प्रारम्भ :
४. द्विवेदी-काल में आलोचना का स्वरूप :
५. मिश्र बन्धुओं की समीक्षा-पद्धति :
६. तुलनात्मक समालोचना :
७. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :
८. समीक्षा की वर्तमान शैलियाँ :
९. सौष्ठववादी अथवा स्वच्छन्दतावादी समीक्षा :
१०. मनोविश्लेषणात्मक समीक्षा :
११. मार्क्सवादी समीक्षा :
१२. समीक्षा की अन्य शैलियाँ :
१३. चरितमूलक समीक्षा :
१४. ऐतिहासिक समीक्षा-पद्धति :
१५. आधुनिक काल में साहित्य-शास्त्र :
१६. पुस्तक-सूची :

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

वीर सिपाही : भारतीय सैनिकों की वीरतापूर्ण सच्ची कहानियाँ भारतीय सेनाओं के लिए हैडक्वार्टर्स से स्वीकृत उपयोगी पुस्तक। मूल्य

यात्रा के पन्ने—राहुल सांकृत्यायन
त्रिवेणी (उपन्यास)—कंचनलता सब्बरवाल
जब आकाश रो पड़ा—राजबहादुरसिंह
अमिया (नाटक)—कंचनलता सब्बरवाल
ययाति—गोविन्दवल्लभ पंत
वज्रघोष (कहानियाँ)—राजबहादुर सिंह
रीतिकाल और रत्नाकर—
कहानी कला और उसका विकास—
नैषधीय चरितम् (धारावाही हिन्दी गद्यानुवाद सहित)
हिन्दी-साहित्य और उसके अंग

साहित्य सदन, देहरादून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विद्या-विभाग, कांकरोली
के
अलभ्य ग्रन्थ

कांकरोली का इतिहास—३)। रचयिता—प्रो० कण्ठमणि जी शास्त्री, शुद्धाद्वैत-सम्प्रदाय के तृतीय पीठ कांकरोली का सचित्र प्रामाणिक इतिहास।

रसिक रसाल—२)। रचयिता—प्रो० कुमारमणि शास्त्री, रचना-काल १७७६। काव्यप्रकाश के आधार पर रीति-कालीन साहित्य-ग्रन्थ।

प्राचीन वार्ता रहस्य गो० श्री हरिराय जी कृत भावप्रकाश सहित वार्ता-ग्रन्थ। प्र० भा० १) द्वि. भा. अष्टछाप ३), तृ० भा० १॥।)।

श्री महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता तथा आचार्य वंशावली—२)। गो० श्री गोकुलनाथ जी रचित, गो० श्री हरिराय जी कृत भावप्रकाश तथा केशव किशोर कृत आचार्य वंशावली।

जगतानन्द—१॥।)। कवि जगतानन्द कृत। कवि जगतानन्द के यावत्प्राप्य ग्रन्थों का संग्रह।

वल्लभ वंश-वृत्त तथा आन्ध्रजातीय (तैलंग) भट्ट वंश वृत्त—३)। संपादक—गो० श्री व्रजभूषण लाल जी महाराज तथा गो० कण्ठमणि जी शास्त्री। साहित्य रचना और इतिहास परिचय के साथ।

गोविन्द स्वामी पद संग्रह—३)। अष्टछाप के कवि गोविन्दस्वामी कृत यावत्प्राप्य पदों का संग्रह।

कुंभनदासपद-संग्रह—३)। अष्टछाप के कवि कुंभनदास कृत यावत्प्राप्य पदों का संग्रह, सरल भावार्थ सहित।

दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता—२८)। श्री गोकुलनाथ जी रचित, गो० श्री हरिराय जी द्वारा सम्पादित "भावप्रकाश" (तीन जन्म की लीला भावना) सहित तीन खण्डों में।

प्राप्ति स्थान :

संचालक,

विद्या विभाग,
कांकरोली (राजस्थान)

प्रकाशित भी नहीं हुआ) लेखक ने आरम्भ में ही नायक और नायिका (तीसरा पात्र है भी नहीं) का पेशा बताया है। दोनों लोहे की ढलाई के एक कारखाने में काम करते हैं। नायिका साहसी है और नूतनता की भावना की प्रतिनिधि है। नायक ईमानदार किन्तु रूढ़िवादी है। नायिका को एक नई उत्पादन-प्रविधि सूझती है जिसके फलस्वरूप छः प्रतिशत बचत होने की संभावना है। नायक को उस योजना में विश्वास नहीं। लेखक उत्पादन-सम्बन्धी सम्मेलनों का, उस अच्छे स्वभाव वाले बूढ़े फोरमैन का, जो कि नायिका की सूझ-बूझ का प्रशंसक है, और संशय में पड़े हुए उस इंजीनियर का विस्तृत वर्णन करता है जो कि नए तरीके को शक की नजर से देखता है। राजधानी से एक आयोग आता है, प्रादेशिक समिति एक सम्मेलन बुलाती है और अन्त में नायिका का नया विचार पूर्णतः विजयी होता है। नायिका की विजय से प्रभावित होकर नायक उसे बधाई देता है। लेखक ने बताया है कि नायिका के मुख पर लज्जा का भाव आ जाता है और वह उत्तर देती है, "ग्रीशा, अब हमें काम में और भी ज्यादा मेहनत के साथ जुट जाना चाहिए।" अगले परिच्छेद में बताया जाता है कि नायक-नायिका अपने नियत कार्य से अधिक कार्य कर दिखाते हैं और उन दोनों के एक पुत्र उत्पन्न होता है। मालूम होता है कि नायक नायिका एक-दूसरे से प्रेम करते थे और जब काम करने के नये तरीके के बारे में उनका मतभेद दूर हो गया तो उन्होंने आपस में शादी कर ली।

श्रम एक बड़ा और जिम्मेदारी का विषय है। हमारे समाज में श्रम को सृजनात्मक कार्य समझकर ऊँचा स्थान दिया गया है। अतः उपर्युक्त लेखक ने ढलाई के कारखाने, नये तरीके और मतभेद को अपना विषय बनाकर कोई गलती नहीं की है। किन्तु उसने अपने पात्रों को उनके निजी जीवन में अलग हटा दिया। नायक-नायिका के प्रेम का हाल हमें सरसरी तौर पर ही मालूम होता है, और यदि स्पष्ट कहा जाय तो नवजात शिशु की रोने की आवाज सुनकर हमें सचमुच आश्चर्य होता है! लेखक का खयाल था कि इस तरह वह अपने पात्रों को ऊँचा उठा रहा है किन्तु दरअसल उनकी गहराई, उनकी भावनाओं की पेचीदगी और उनके भावनात्मक विकास की पूर्णता चित्रित न करके उसने उनको नीचा गिरा दिया है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे बहुत-से उपन्यास हैं जो प्रकाशित हो चुके हैं और उनके अनेक संस्करण निकल चुके हैं। ऐसे बहुत-से नाटक हैं जिनके पात्र वस्त्र-प्रदर्शन का काम करते हुए कोयले, लोहे, या कपड़ों की बातें करते हैं। ऐसे नाटकों में दर्शकगण रंगमंच से नीचे बैठने पर भी रंगमंच को नीची नजर से देखते हैं।

क्या कारण है कि अनेक उपन्यासों और कहानियों में आज के समकालीन पात्रों का अन्तर्जगत् परिवेष्टित दिखाई देता है ? मेरे खयाल से दोष उन अनेक आलोचकों और सम्पादकों का है जो अभी तक यही मानते आए हैं कि पात्र को सीधे-सादे ढंग से पेश करना उसे ऊँचा उठा देना है, जब कि उसके चरित्र को गहरा और विस्तृत बना देना उसे नीचा बना देना है।

वर्षों से हमारी पत्रिकाओं में प्रेम की कविताएँ ही नहीं छपीं। लड़के-लड़की बड़े हुए हैं, उन्होंने आपस में प्रेम किया है, पीड़ा सही है और सुख जाना है किन्तु हमारी कविताओं में यह सब प्रतिबिम्बित नहीं हुआ है।

क्या कारण है कि हमारी कहानियों में प्रेमियों का आपसी झगड़ा, पारिवारिक क्लेश, किसी रिश्तेदार की बीमारी या मृत्यु, और यहाँ तक कि बुरे मौसम का भी जिक्र नहीं मिलता (ज्यादातर कहानियाँ "गर्मी के एक सुहावने दिन" या "मई मास की सुगन्धित संध्या" या "पतझड़ की निर्मल, स्वास्थ्यकर सुबह" से शुरू होती हैं)।

कुछ आलोचकों का आज भी यह अति सरल मत है कि हमारे सैद्धान्तिक आशावाद और हमारी जनता के साहस-पूर्ण कृत्यों के साथ अप्रतिदत्त प्रेम अथवा प्रेमी के अभाव का वर्णन मेल नहीं खाता।

लेखक की कला पर विचार करते समय यदि मैं बार-बार अपने महान् पूर्वजों का उल्लेख करता हूँ तो वह इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने समकालीन व्यक्तियों को एक खास गहराई के साथ देखा था। हम उनसे कला में सचाई, मनुष्य का गहरा ज्ञान तथा जीते-जागते व्यक्ति के रूप में उसके चित्रण करने का तरीका सीख सकते हैं।

हमारे एक आलोचक ने लिखा था : "समाजवाद ने मनुष्य के स्वभाव की अपूर्णता तथा विकृति के मूल कारण को दूर कर दिया है और सोवियत साहित्य का सकारात्मक पात्र ऐसी भूमि से उपजा है।" यदि उक्त आलोचक का कथन सच है और १९४८ की वास्तविकता आदर्श है (लेख १९४८ में लिखा गया था) तो यह समझ में नहीं आता कि क्यों आज भी हमारी जनता अपने समाज को पूर्णता की ओर ले जाने का यत्न कर रही है, और क्यों हम समाजवाद से साम्यवाद की ओर क्रमशः बढ़ने की बात करते हैं। क्या हम कह सकते हैं कि आज हमारे समाजवादी समाज में "मानव स्वभाव की अपूर्णता और विकृति के कारण दूर हो चुके हैं ?"

बहुत से आलोचकों, प्रकाशन-गृहों के समालोचकों और सम्पादकों का खयाल है कि यदि हमारे जीवन में कुछ अपूर्णताएँ मौजूद भी हैं तो भी लेखक को उनका उल्लेख नहीं करना चाहिए। ऐसे आलोचक और सम्पादक उन भावनाओं के संघर्ष के चित्रण का और भी बुरा मानते हैं जो कि अच्छे सोवियत नागरिकों के जीवन को बहुधा जटिल और क्लिष्ट बना देता है।

साहित्य जनता को शिक्षित बनाता है, उन्हें बेहतर जिन्दगी की ओर बढ़ाता है, उनकी भावनाओं को उन्नत बनाता है और उन्हें अपने सम्बन्धियों, मित्रों तथा समस्त मानव जाति के प्रति सद्व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। उपन्यास, कहानी और कविता समाज को जोड़े रखने के लिए भावना की मिट्टी के समान हैं।

हमारे काम का एक और पहलू है। लेखक को भीतरी संघर्षों और विरोधों का चित्रण करना चाहिए; उसे भावनाओं की अव्यवस्था के समस्त लक्षण जानने चाहिएँ, उसे मानव हृदय की गहराइयों में होने वाले सत् और असत् के संघर्ष पर प्रकाश डालना चाहिए।

क्या हमारे पाठकों के व्यक्तिगत जीवनों में विरोधों की कमी है ? क्या हमारी जनता में अतीत के ऐसे अवशेष नहीं हैं जिनके विरुद्ध संघर्ष किया जाना आवश्यक है ? क्या कभी ऐसा नहीं होता कि किसी एक व्यक्ति के शानदार सार्वजनिक कार्यों और उसके अपने निजी अव्यवस्थित जीवन के बीच संघर्ष हो ? आज ऐसे बहुत-से विषय हैं जो लिखे जाने के लिए लेखक ढूँढ़ रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तथा प्रकाशक

श्रद्धेय भगवानदास केला

अखिल विनय

'भारतीय ग्रन्थमाला' के संस्थापक श्री भगवानदास केला में लेखक-प्रकाशक का सफल सम्मिश्रण हुआ है। 'प्रकाशन-समाचार' की ओर से इन का अभिनन्दन !

...का जन्म पंजाब के करनाल ज़िले और पानीपत ...के अन्तर्गत बाबैल गाँव में, आसौज सुदी ८, सम्वत् ...दनुसार ता० २१ अक्तूबर १८९० ई० को हुआ। ...से अब केलाजी साढ़े तिरेसठ वर्ष के हैं। केलाजी ...लगभग दो सौ वर्ष पूर्व जैसलमेर (राजस्थान) से ...उस गाँव में बसे थे। जैसलमेर में उनकी हवेलियाँ अब ...हैं और उस गाँव में उनका निजी घर भी नहीं और ...सगा-सम्बन्धी ही। फिर भी अपने गाँव के प्रति उनका ...है। उनकी सहृदयता ने सारे गाँव को अपना सगा ...है और जहाँ पहले एक घर उनका अपना कहा ...था, अब कई घर उनके अपने हो गए हैं; चाहे ...ठहरो और जब चाहो वहाँ से चले आओ।

...के पिता श्री मथुरादास लेन-देन का कार्य करते ...पास के दूसरे गाँव में मुनीमी करते थे। इसीलिए ...कहकर पुकारा जाता था और चूँकि उस गाँव में ...बौहरे भी थे, उन्हें बनिये-बौहरे या जैसलमेरी ...) कहा जाता। विपत्तियाँ जब आती हैं तो कहकर नहीं आतीं। केलाजी के जन्म के अगले वर्ष ही उनके पिता का देहान्त हो गया। वे उन्हें देख नहीं सके, किन्तु गाँव के आदमियों से उनके शीलस्वभाव और भोलेपन की प्रशंसा उन्होंने सुनी थी और शायद यही कारण है कि ये गुण उनके स्वभाव के अभिन्न अंग बन गए हैं। बेचारी माँ

ने किसी प्रकार कुटौना-पिसौना करके, दूसरों की रजाइयों में धागे डालकर आदि कार्यों से अपनी इस ११वीं और अन्तिम तथा एक-मात्र जीवित संतान का लालन-पालन किया। माता ने एक-एक करके अपने बच्चों की मृत्यु अपनी आँखों के सामने देखी थी और वह केलाजी (उनके प्रिय नाम 'भगवाना') की दीर्घायुष्य के लिए भगवान् से याचना किया करती थीं।

केलाजी के जन्म के समय माता (रामप्यारी जी) की उम्र चालीस वर्ष या कुछ अधिक होगी। पचपन साल की उम्र हो जाने पर भी माता जी ने अपने पुरुषार्थ से घर की आर्थिक स्थिति ऐसी रखी कि मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा बनी रहे। वे कपास ओटतीं, सूत कातती और कपड़ा सीतीं थीं। सूत का कपड़ा बुनवा लिया जाता अथवा बदलवा लिया जाता था और इस प्रकार कपड़ा मोल लेने का प्रसंग कम ही आता था। अपने व्यवहार के कारण माताजी का गाँव-भर में बहुत आदर-मान था। अपने प्यारे पुत्र को लाड़-प्यार से उन्होंने पाला और शिक्षित कराया। लेकिन केलाजी अन्त समय अपनी माता के दर्शन न कर पाए; वे नागपुर में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे और वह चल बसीं। केलाजी पर वज्रपात हुआ, पर वे शीघ्र ही सँभल गए तथा भारत-माता को ही उन्होंने अपनी माता माना और प्राण-पण से इसकी सेवा में जुट गए। माता की पावन स्मृति में केलाजी ने 'भारतीय ग्रंथ-माला' की स्थापना की और साहित्य-सेवा को ही साध्य व साधन दोनों बनाया। अपनी साहित्यिक साधना को वे भारत-माता की सेवा ही मानते हैं। साहित्यिक अखाड़ेबाजी से दूर रहकर मूक साधना में ही आनन्द मानना उनकी निजी विशेषता रही है और यही कारण है कि एक समानधर्मा कलाकार के हृदय में उनके प्रति श्रद्धा ही है। 'भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन' पुस्तक लेकर वे हिन्दी-जगत् में अवतरित हुए; आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने उस पुस्तक की दाद दी और आज उसके ग्यारह संस्करण हो चुके हैं। हिन्दी में अपने विषय की यह पहली पुस्तक थी।

शिक्षा-दीक्षा

केलाजी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में ही हुई। उसमें एक ही अध्यापक थे—पण्डित अयोध्या प्रसाद जी और आज भी उन्हें 'मेरे गुरुजी' कहकर पुकारने में केलाजी को आनन्द तथा गौरव का अनुभव होता है। सन् १६०१ में उन्होंने इसी पाठशाला से हिन्दी की पांचवीं कक्षा पास की। उस कक्षा के दो अन्य साथी थे—लाला चिरंजीलाल और पण्डित ब्रह्मानन्द। बचपन के विद्यार्थी-जीवन के इन दोनों साथियों से अब (सन् १६५४) तक उनका स्नेह-सम्पर्क बना है। सहृदयता और मित्रता इसी का नाम है। मई १६४६ में जब वे गुरुजी (पं० अयोध्याप्रसाद) के दर्शन करने शाहाबाद (करनाल) गए तो वे दोनों साथी भी वहाँ पहुँच गए और गुरु-शिष्यों का वह मिलन (केलाजी के ही शब्दों में) 'अपूर्व आनन्ददायक रहा'।

उनके सुसंस्कारों की नींव इस प्रकार बचपन में ही अपने गुरुजी तथा माताजी द्वारा पड़ी। होश सँभालने पर तो उनके अपने ही अनेक प्रयोग हुए। १२ जुलाई १६१० को उन्हें अपनी माता के स्वप्न में दर्शन हुए और भारत-माता की सेवा की प्रेरणा मिली। वे इंजीनीयर बनना चाहते थे, किन्तु उन्हें अध्यापक बनना पड़ा। पहले बरेली के मिशन स्कूल में ३५) महावार की जगह मिल गई; वहाँ से ४०) पर भिवानी के म्युनिस्पिल स्कूल में अध्यापक हुए। भिवानी (पंजाब) में हिन्दी के प्रति अभिरुचि दिखाने के कारण वे प्रधानाध्यापक के कोपभाजन हुए। वे केलाजी को हिन्दी का पक्ष लेने के कारण राज-द्रोही मानते थे! हिन्दी-सेवा की भावना प्रबल हो गई और साफ रास्ता खुल गया। केलाजी ने हिन्दी के स्कूल में जाने का संकल्प कर लिया और कुछ समय बाद ही पोकरण (जोधपुर) के अंग्रेजी-हिन्दी स्कूल में हेडमास्टर के पद पर वे नियुक्त हो गए।

लेखक बने

केलाजी ने भी गद्य से पहले पद्य में लिखना आरम्भ किया। लेकिन उनका कवि-जीवन चिरस्थायी न हुआ। कविता करना बन्द करके पोकरण में रहते हुए ही लेखक-जीवन शुरु हो गया। उन दिनों अलीगढ़ से 'माहेश्वरी' मासिक प्रकाशित हुआ और उसी में निरन्तर लिखने लगे। फिर तो धीरे-धीरे अन्य पत्रों से भी सम्बन्ध होता गया। अध्यापकी के अनन्तर घुमक्कड़ बनने की मन में आई और वे पोकरण से चल दिए। स्वामी रामतीर्थ के विचारों से वे बहुत प्रभावित हुए और विदेश-यात्रा का विचार भी उनके मन में आया, किन्तु यह होते-होते रह गई।

बी० ए० में उन्होंने राजनीति और अर्थशास्त्र लिये थे और उन्हीं पर लेखनी चलाने की उनकी इच्छा हुई। वह मामूली इच्छा न थी बल्कि दृढ़ संकल्प था, और एक दिन वह सफल हुई। श्री दामोदरदास राठी की उदारता से उनकी पहली पुस्तक प्रयाग में श्री गिरिजाकुमार घोष के यहाँ जा सकी और छपी भी। इस प्रकार केलाजी लेखक के साथ साथ प्रकाशक भी बन गए। यह सन् १६१५ की बात है।

प्रकाशक केलाजी

केलाजी की पहली पुस्तक 'भारतीय शासन' में 'भारतीय' शब्द अपनी माता की यादगार था और यही शब्द लेकर उन्होंने 'भारतीय ग्रंथमाला' की स्थापना की। दूसरी पुस्तक 'भारतीय विद्यार्थी विनोद' में भी यह शब्द जुड़ा था और यह क्रम जहाँ तक सम्भव हुआ चलता रहा है। 'भारतीय ग्रंथमाला' से लगभग तीन दर्जन पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है, किन्तु उनके पीछे एक विशिष्ट उद्देश्य छिपा है। हिन्दी साहित्य की किसी कमी को दूर करने के लिए उक्त ग्रन्थमाला से पुस्तकें छपीं और प्रायः प्रत्येक पुस्तक का अपना इतिहास है। जिस विषय की पुस्तक किसी अन्य ने न छापी, वह 'भारतीय ग्रंथमाला' से छपी। यद्यपि यह भी सत्य है कि उक्त प्रकाशन-गृह से अधिकांश पुस्तकें केलाजी की ही प्रकाशित हुई हैं। लेकिन 'हमारी आदिम जातियाँ', 'सर्वोदय अर्थशास्त्र', 'मानव-संस्कृति' आदि पुस्तकें ऐसी हैं, जो हिन्दी में अपने विषय की पहली ही पुस्तकें हैं और 'भारतीय ग्रंथमाला' ने उन्हें छापने का साहस किया।

सन् १६५० तक केलाजी स्वयं ही पुस्तक लिखते, छपाते तथा ग्रंथमाला के आर्डरों की पूर्ति करते—अर्थात् ... लगाना, पत्र-व्यवहार आदि कार्य उन्हें ही करना पड़ता ... और आर्थिक स्थिति भी ऐसी ही थी। बात यह है ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केलाजी मूलतः एक लेखक हैं और अपने प्रकाशनों की चौथाई के लगभग प्रतियाँ तो वे अपने मित्रों, पत्र-सम्पादकों को भेंट में ही भेज देते थे। वह आदत अब भी वैसी ही है, यद्यपि प्रकाशन का कार्य अब उनके सुयोग्य पुत्र श्री ओमप्रकाश केला ने अपने हाथ में ले लिया है तथा उसे व्यवस्थित स्वरूप भी प्रदान किया है। 'भारतीय ग्रंथमाला' के साथ ही अपनी संस्था 'भारतीय प्रकाशन' का कार्य भी वे देखते हैं। पिता की विरासत में उन्हें लेखन-कला भी हाथ लगी है, और कुछ श्रेष्ठ पुस्तकें भी इधर उन्होंने लिखी हैं।

'भारतीय ग्रंथमाला' का ३६वाँ पुष्प श्री केलाजी की आत्म-कथा 'मेरा साहित्यिक जीवन' ही है और उसे 'ग्रंथमाला' की अन्तिम पुस्तक बताया गया है। अब वे अपना सारा ध्यान सर्वोदय-साहित्य की ओर ही केन्द्रित कर रहे हैं तथा 'सर्वोदय ग्रंथमाला' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है, जिसमें ६-७ पुस्तकें छप भी चुकी हैं। उनमें एक पुस्तक 'मेरा जीवन सर्वोदय की ओर' भी है, जिसमें शेष जीवन इसी साहित्य के प्रचार-प्रसार और सर्वोदयी विचार-धारा के पृष्ठपोषण में ही बिताने का इरादा व्यक्त किया गया है।

लेखक व प्रकाशक के सम्बन्ध केलाजी की निश्चित और स्पष्ट विचार-धारा यह है—"जिन लेखकों का विषय सर्व-साधारण की रुचि के अनुकूल है और जिन्हें प्रकाशक यथेष्ट आदर और पुरस्कार प्रदान करते हैं, उनका प्रकाशन-भार से मुक्त रहना ही ठीक है। परन्तु जिनका विषय जनता में यथेष्ट रुचिकर नहीं, जिनकी रचनाओं के प्रकाशन को प्रकाशक लाभप्रद न समझकर बहुधा अनादृत कर देते हैं, जिनको सहायता देने वाले धनी पुरुष, राज्य या अन्य साहित्य-संस्थाएँ भी देश में न हों, वे अपनी रचनाओं को यदि स्वयं भी छपाने की व्यवस्था न करें तो फिर उनके प्रकाश में आने की सम्भावना ही कैसे हो? देश में साहित्य का समुचित प्रकाश फैलाने के लिए तथा साहित्य-सेवियों की बेढब कुर्बानी न होने देने के लिए यह आवश्यक है कि लेखक अपने श्रम का प्रतिफल पाने के लिए बेहद आतुर न हों और उन्हें प्रकाशकों की भली-बुरी सभी शर्तें न माननी पड़ें।"

बहुमुखी प्रतिभा

केलाजी का व्यक्तित्व जितना विशाल है, उनका जीवन उतना ही सरल, पहनावा उतना ही सादा और बातचीत का ढंग उतना ही मधुर। अनुचित बात के लिए वे अपने निकटस्थ मित्रों की कठोर आलोचना करने से कभी नहीं चूकते। ६३॥ वर्ष की उम्र में, दमे से पीड़ित होने के बावजूद भी उनकी लेखनी चलती रहती है और देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक साहित्यिक यात्राएँ करते रहते हैं। वे लेखक भी हैं और सम्पादक भी। प्रेम महाविद्यालय (वृन्दावन) के मुख-पत्र 'प्रेम' का, और 'माहेश्वरी' (जातीय) का सम्पादन भी बहुत काल तक उन्होंने किया था। उनके हृदय की निष्कपटता, सरलता, सच्चाई एवं कार्य की लगन ने उन सभीको प्रभावित किया है जो एक बार भी उनके सम्पर्क में आए हैं। उनके सद्व्यवहार की कसौटी यही है कि वृन्दावन में रहे तो ९-१० वर्षों तक केवल एक ही प्रेस में उनकी पुस्तकें छपती रहीं और इलाहाबाद आने पर वहाँ भी १२-१३ वर्षों तक एक ही प्रेस से उनका यह सम्बन्ध बना रहा। अपने लेखक-जीवन के ४९वर्षों में उन्होंने कभी कटुता को अवसर नहीं दिया। प्रसिद्धि की उन्हें चिन्ता नहीं रही और उनकी लिखित लगभग ५० पुस्तकों में या पिछले २-३ वर्षों को छोड़कर कभी उनका चित्र ही नहीं छपा!

[पृष्ठ ३८५ से आगे]

शकों को देकर निश्चिन्ततापूर्वक नई रचनाओं के लिए प्रेरित कर सके, तो साहित्य का महान् लाभ होगा। इस संस्था के संचालन में वे लोग हैं, जिन्होंने प्रकाशन के क्षेत्र में प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। मैं आशा करता हूँ, वे लोग इस ओर विशेष ध्यान देंगे और परस्पर सहयोग से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाने में सफल होंगे।'

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी

[पृष्ठ ३८६ से आगे]

एक वर्ष के लिए सरदार-शहर की ज्ञान-मन्दिर संस्था द्वारा हो रहा था। परस्पर के एक समझौते के अनुसार यह प्रबन्ध अब टूट गया है।

❖ ❖ ❖

अनुज शास्त्री (भारती प्रकाशन, भगवान पुस्तकालय, भागलपुर-२) लिखते हैं कि जो प्रकाशक अपनी पुस्तकों की बिक्री मेरे प्रकाशन की पुस्तकों के विनिमय द्वारा करना चाहें, वे लिखें।

❖ ❖ ❖

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम बिक्री का एक कारण ?

हिन्दी के प्रकाशनों का मूल्य

अगरचन्द नाहटा

मान्य लेखक ने हिन्दी-पुस्तकों की कम बिक्री का मुख्य कारण हिन्दी के प्रकाशनों के मूल्याधिक को बताया है।

शताब्दियों से प्रभाव विस्तार करती हुई हिन्दी-भाषा ने स्वतंत्र भारत में राष्ट्रभाषा का स्थान व सम्मान पाया है, फलतः उसके साहित्य का विकास व क्षेत्र-विस्तार का बढ़ना स्वाभाविक है। विगत ७ वर्षों से हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं एवं विविध विषयक ग्रन्थों के प्रकाशन की उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। पर प्रकाशनों की भाँति उनकी खपत में उतनी अधिक वृद्धि नजर नहीं आती। यह हिन्दी के हितैषियों के लिए अवश्य ही चिन्ता का विषय है।

कुछ समय पूर्व हमारे कई चोटी के विद्वानों के हस्ताक्षरों से एक विज्ञप्ति प्रकाशित हुई थी कि हिन्दी के पाठक पत्र-पत्रिकाओं को खरीद करके ही पढ़ने का नियम लें। उनकी राय में खपत वृद्धि का यही एक मात्र उपाय था। अभी बिक्री कम हो रही है इसका कारण हिन्दी के पाठकों का इधर उधर से प्राप्त कर बिना खरीदे पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों को पढ़ लेना है। जब यह विज्ञप्ति प्रचारित हुई तो पढ़कर मुझे बड़ा विचार हुआ कि हमारे चोटी के विद्वानों ने निदान तो किया, पर रोग की जड़ को अभी शायद वे नहीं पकड़ पाये। आज देश के लोगों की, विशेषतः हिन्दी-पाठकों की, आर्थिक स्थिति क्या है ? हिन्दी की पुस्तकों का मूल्य कितना अधिक रहता है ? उनको मूल्य से ही खरीदकर पढ़ने वालों की संख्या कितनी हो सकती है ? खरीदकर नहीं पढ़ने की मनोवृत्ति के सिवाय अन्य आर्थिक कारण क्या व कितने सबल हैं ? जहाँ तक इन मूलभूत समस्याओं पर विचार नहीं किया जायगा, केवल ऐसी विज्ञप्ति निकाल देने से कितना व क्या फल हो सकता है, विज्ञप्ति में सही करने वाले विद्वान स्वयं वर्ष में कितने रुपयों के हिन्दी प्रकाशन खरीदते हैं ? बिना खरीदे तो वे नहीं पढ़ते न ! यह प्रश्न भी उन्हें पूछे जाने योग्य प्रतीत हुआ। पर किसी ने इस ओर विशेष ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा। गम्भीर विचार न होने के कारण उस विज्ञप्ति का परिणाम भी अधिक अच्छा हुआ हो, ऐसा मुझे तो नहीं लगा; पत्र-पत्रिकाओं में थोड़ी चर्चा होकर रह गई।

वह विज्ञप्ति प्रचारित होने से पूर्व भी यह समस्या मेरे लिए विचारणीय विषय बन चुकी थी। और मेरे विचार में इसका प्रधान कारण हिन्दी पुस्तकों का रखे जाने वाला वर्तमान मूल्याधिक ही लगा। फलतः मैंने 'राष्ट्रभारती' द्वारा हिन्दी के हितैषियों के समक्ष 'गुजरात की एक आदर्श प्रकाशन संस्था—सस्तु साहित्यवर्द्धक कार्यालय,' अहमदाबाद का परिचय रखते हुए सस्ते मूल्य में सुरुचिपूर्ण ग्रन्थों के हिन्दी में प्रकाशन की व्यवस्था करने की ओर ध्यान आकृष्ट किया था। पर खेद है उसका कोई सुपरिणाम जानने में नहीं आया।

गत युद्ध-काल के समय वस्तुओं के भावों में अत्यन्त वृद्धि हुई थी, उसके फलस्वरूप छपाई एवं कागजों के मूल्य चौगुने तक हो गये। फलतः पुस्तकों के मूल्य में वृद्धि होना स्वाभाविक था, पर आशा थी कि थोड़े दिनों में वस्तुओं के भावों में कमी होने पर यह अवस्था सुधर जायगी। इधर डेढ़ वर्ष से बाजार में कुछ मन्दी आई तो बेकारी बढ़ गई। जहाँ तक हिन्दी के प्रकाशनों के मूल्य का प्रश्न है, कुछ कमी ही होनी चाहिये थी, क्योंकि जो कागज पहले ब्लैक-मार्केट में दुष्प्राप्य व अत्यधिक महँगे हो गये थे, वे अब कन्ट्रोल रेट पर मिल रहे हैं, सुप्राप्य हो गये हैं। छपाई भी तब से कुछ घटी ही है, पर यह देखकर आश्चर्य होता है कि पुस्तकों के मूल्य में कमी के स्थान पर दिनोंदिन वृद्धि ही होती नजर आ रही है। इस का प्रधान कारण प्रकाशकों, विक्रेताओं व लेखकों की

[आगे पृष्ठ ३६८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ हमारा आलोचनात्मक प्रकाशन ★

सुमित्रानन्दन पन्त—शचीरानी गुर्टू : पन्तजी के काव्य और जीवन पर समालोचनात्मक लेखों का संग्रह। ६)

महादेवी वर्मा—शचीरानी गुर्टू : महादेवी वर्मा के काव्य पर प्रतिनिधि लेखों का संकलन। ६)

महाकवि सूरदास—नन्ददुलारे वाजपेयी : सूर के काव्य, जीवन और भक्ति का गम्भीर विवेचन। ४)

आलोचक रामचन्द्र शुक्ल—गुलाबराय तथा विजयेन्द्र स्नातक : आचार्य शुक्ल के जीवन, कृतित्व और समीक्षा शैली का मार्मिक विश्लेषण। ६)

काव्य के रूप—गुलाबराय : काव्य के विभिन्न रूपों का शास्त्रीय विवेचन। ४।।।)

सिद्धान्त और अध्ययन—गुलाबराय : भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा शैली का मार्मिक विवेचन। ६)

हिन्दी काव्य-विमर्श—गुलाबराय : हिन्दी के प्राचीन और नवीन कवियों का आलोचनात्मक परिचय। ३)

हिन्दी कविता में युगान्तर—डॉ॰ सुधीन्द्र : द्विवेदी युग की हिन्दी कविता के विकास का विशुद्ध और गम्भीर अध्ययन। ८)

रोमांटिक साहित्य शास्त्र—देवराज उपाध्याय : रोमांटिक साहित्य का शास्त्रीय, आलोचनात्मक अध्ययन, ३।।।)।

कामायनी दर्शन—कन्हैयालाल सहल तथा विजयेन्द्र स्नातक : कामायनी के प्रारम्भ छः सर्गों का भाष्य तथा मार्मिक विवेचन एवं विश्लेषण। ४)

साहित्य विवेचन—क्षेमचन्द्र सुमन, योगेन्द्रकुमार मल्लिक: हिन्दी साहित्य के विभिन्न अंगों का सैद्धांतिक तथा ऐतिहासिक विश्लेषण। ७)

साहित्य शिक्षा और संस्कृति—डॉ॰ राजेन्द्रप्रसाद : साहित्य शिक्षा और संस्कृति पर गम्भीर विचारपूर्ण भाषणों का संकलन। ५)

हिन्दी नाटककार—जयनाथ 'नलिन' : हिन्दी नाटक और उसके उन्नायकों की कला तथा कृतियों का गम्भीर विश्लेषण। ५)

कहानी और कहानीकार—मोहनलाल जिज्ञासु। हिन्दी कहानी और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों का मार्मिक विवेचन। ३)

हिन्दी साहित्य और उसकी प्रगति—स्नातक तथा सुमन : हिन्दी साहित्य और उसकी धाराओं का अध्ययन। ३)

वाद-समीक्षा—कन्हैयालाल 'सहल' : हिन्दी साहित्य के पांच प्रमुख वादों का मार्मिक विवेचन। ।॥)

तुलनात्मक अध्ययन—कृष्णचन्द्र शर्मा तथा देवीचरण रस्तोगी : हिन्दी के प्राचीन कवियों की काव्यधारा का तुलनात्मक अध्ययन। ३)

मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियां—डा॰ सावित्रीदेवी सिन्हा : मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियों की आत्मानुभूति की भावनापूर्ण व्याख्या। ८)

हिन्दी निबन्धकार—जयनाथ नलिन : हिन्दी निबन्ध कला और हिन्दी के प्रमुख निबन्धकारों की शैली पर विवेचनात्मक अध्ययन। ६)

कबीर साहित्य और सिद्धान्त—यज्ञदत्त शर्मा : कबीर के साहित्य का आलोचनात्मक परिचय। २॥)

सन्तुलन—प्रभाकर माचवे : हिन्दी के काव्य तथा गद्य की धाराओं तथा प्रवृत्तियों पर गम्भीर लेख।

हिन्दी काव्यालंकार सूत्र—आचार्य विश्वेश्वर : वामन के काव्यालंकारसूत्र की साहित्यपूर्ण हिन्दी व्याख्या। १२)

हिन्दी कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन—विराज एम॰ ए॰ : हिन्दी के प्राचीन तथा आधुनिक प्रमुख कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन। ३)

मन की बातें—गुलाबराय : मनोवैज्ञानिक विषयों पर सारगर्भित, विद्वत्तापूर्ण विवेचना पुस्तक। ३)

प्रेमचन्द—हंसराज रहबर : प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व का मार्मिक विवेचन। ६॥)

समीक्षायण—कन्हैयालाल सहल : साहित्य के विभिन्न विषयों पर आलोचनात्मक निबन्ध। ३)

भाषा विज्ञान दर्शन—कृष्णचन्द्र शर्मा, देवीशरण रस्तोगी : भाषा विज्ञान के सिद्धान्तों का सरल अध्ययन। १॥)

प्रगतिवाद की रूपरेखा—मन्मथनाथ गुप्त : साहित्य के विभिन्न पक्षों का प्रगतिपरक विश्लेषण। ७)

प्रबन्ध सागर—यज्ञदत्त शर्मा : उच्चकोटि के साहित्यिक कलात्मक, ऐतिहासिक, राजनीतिक निबन्ध। ५॥)

साहित्य-जिज्ञासा—ललिताप्रसाद शुक्ल : साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों पर गम्भीर और विश्लेषणात्मक लेख। ३)

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली ६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ ३९६ से आगे]

हुई लोभवृत्ति ही नजर आई। पुस्तक का लेखक जितना नामी है, पुस्तकों के मूल्य उसी अनुपात में अधिक नजर आते हैं। इसका कारण यही हो सकता है कि प्रकाशकों को उनके लेखकों को भेंटपूजा-पारिश्रमिक अधिक देना पड़ता है। फलतः प्रकाशक भी उससे अधिक लाभ उठाना चाहते हैं। वास्तव में होना यह चाहिये कि अच्छे लेखकों की कृतियों व पुस्तकों की चाह बढ़े जिस से प्रतियाँ अधिक छपें, खर्च कम पड़े, मूल्य कम रखा जाय। पाठकों को वे सस्ते मूल्य में मिलें। ऐसा होगा, तभी सुरुचि पूर्ण साहित्य का प्रसार हो सकेगा। जनता को अच्छी चीज पढ़ने को मिलेगी। इससे देश का नैतिक उत्थान व साहित्य स्वाध्याय की रुचि परिष्कृत होगी। पर हुआ इससे उल्टा ही। निम्नस्तर की पुस्तकें साधारण कागज व छपाई होने एवं प्रतियाँ एक साथ अधिक छपने से पड़ता कम में पड़ती हैं और अपेक्षाकृत सस्ते दामों में बिकती हैं। अतः जनता उन्हें ही अधिक खरीदती है। कई कहानी उपन्यास की पुस्तकें व पत्रिकाएँ भी सस्ते मूल्य में बिकती हैं। उनका कारण उनकी अधिक बिक्री ही है। अतः बिक्री बढ़े, इसका प्रयास आवश्यक है।

हिन्दी के प्रकाशनों के मूल्याधिक का एक अन्य कारण भी है कि हिन्दी टाइप में अक्षरों एवं मात्राओं की जोड़ने की दिक्कत के कारण कम्पोजिटरों को श्रम अधिक पड़ने से छपाई का खर्च अधिक पड़ता है। हिन्दी टाइप जगह भी अधिक रोकते हैं, अतः पेज बढ़ जाते हैं। दूसरे, आजकल प्रकाशन में फैशन ने प्रभाव जमा लिया है। कविता आदि के ग्रन्थों में तो केवल सुन्दर देखे जाने के लिए थोड़े मैटर से पृष्ठ को इस तरह सजाया जाता है कि आधे पृष्ठ का भी मैटर एक पृष्ट में नहीं आता। फलतः उन पुस्तकों के पृष्ठ दुगुने-तिगुने हो जाते हैं। इधर कागज भी ऐंटिक आदि बढ़िया चाहिये। जिल्द बढ़िया हो – ऊपर से एक कवर पृष्ठ का आकर्षण अत्यन्त आवश्यक हो गया है। फलतः मुद्रणादि खर्च अधिक पड़ने से पड़ता ऊँची पड़ेगी ही और अत्र मूल्य भी अधिक रखना ही पड़ेगा। मैं सुन्दर छपाई व बढ़िया कागजादि का विरोधी नहीं हूँ; अच्छी चीज का बाह्य आकर्षण भी आवश्यक है ही, पर मेरी राय में वह इतना अधिक खर्चीला भी न हो कि जिससे उसके मूल्याधिकता से जन-साधारण उसे खरीद न सके या खरीदने में कष्ट का अनुभव करना पड़े। अतः मर्यादा में रह कर मध्यम मार्ग अपनाना ही श्रेयस्कर समझता हूँ; या फिर यह राय दी जा सकती है कि उन ग्रन्थों के राज संस्करण व साधारण संस्करण दो तरह के संस्करण,—प्रकाशित किये जायँ जिससे जिन्हें सुन्दरता पसन्द होवे राज-संस्करण खरीदें; साधारण जनता साधारण संस्करण के लाभ उठा सके।

गत वर्ष दिल्ली के एक प्रकाशक की पुस्तकों के मूल्य की अधिकता के सम्बन्ध में व्यवस्थापक से बात-चीत की थी तो उन्होंने जिन मुख्य कठिनाइयों को सामने रखा, उन में प्रधान निम्न बातें थी :

(१) ग्रन्थों की सुन्दर छपाई, गेटअप आदि सुरुचिपूर्ण प्रकाशित करने में खर्च ही अधिक पड़ता है। खपत इतनी अधिक नहीं कि अधिक प्रतियाँ एक साथ छपाई जायँ जिससे खर्च कम पड़े।

(२) उनके विक्रय आदि की व्यवस्था में भी खर्च अधिक पड़ता है, आफिस व शाखाएँ केन्द्रीय स्थानों में रखनी होती हैं जिनका भाड़ा अधिक होता है। कर्मचारी आदि, खुदरा वी० पी० आदि के ऑर्डरों को भुगताने के लिए स्टाफ अधिक व योग्य रखना पड़ता है।

(३) पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन अधिक देना पड़ता है। साधारणतया पच्चीस से तेतीस प्रतिशत तक। अच्छे लेखकों को पारिश्रमिक भी उनके नाम व रचना के अनुरूप अच्छा ही देना होता है।

मैंने इन तीनों समस्याओं पर विचार किया और उन्हें अपने सुझाव भी दिये। सम्भव है उनको वे अधिक उपयुक्त व अनुकूल नहीं लगे हों क्योंकि विशेष सुधार नहीं नजर आया। जहाँ तक व्यापार का प्रश्न है, यदि माल खरीदी व खरच में ही पड़ता अधिक पड़ गया तो बेचने में उतनी हुशियारी काम नहीं आयेगी। अच्छा माल, सुविधानुसार मूल्य पर खरीदना, खरच में बचत कर पड़ता कम पड़े—वैसा प्रयत्न करना भी एक कला है। व्यापार की सफलता की यही प्रथम कुंजी है। हिन्दी के प्रकाशक इन सब बातों पर व्यापारिक दृष्टि से विचार करें। जिस तरह भी हो प्रकाशनों के मूल्य कम रखने का प्रयत्न करें। तभी हिन्दी-साहित्य जनता तक प्रचार हो सकेगा। प्रतियों की खपत बढ़ने से एक साथ अधिक प्रतियाँ छपाने पर खरचा-पड़ता कम पड़ेगा। अधिक विक्रय से कम मुनाफे में भी प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं दोनों को पोसा जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

...हिन्दी लेखकों और प्रकाशकों के सम्बन्ध जिस ...तक आ गये हैं—स्पष्ट कहूँ तो तन गये हैं—उस समय ...में किसी एक ऐसी अच्छी संस्था की आवश्यकता है ...दोनों के सम्बन्धों, आवश्यकताओं, हितों और सीमाओं को ...में रखकर दोनों पक्षों के बीच में फैली हुई ग़लतफ़हमी ...दूर करे। हर आदमी जानता है—प्रकाशक बिना लेखक के ...क्या और लेखक बिना प्रकाशक के अपनी पाण्डुलिपि ...करेगा क्या? उन अपवादों को छोड़ दीजिए जहाँ प्रकाशकों ...अपने लेखक नौकर रख लिये हैं या दूसरी ओर कुछ लेखक ...प्रकाशक भी हैं। हिन्दी में दोनों स्थितियों में लेखक ...महत्त्व निर्विवाद है। श्रम और पारिश्रमिक के सम्बन्ध दुनियाँ ...और आज के जीवन के हर क्षेत्र में इस तरह बदल रहे हैं ...जो कल थे, वे निश्चित रूप से आज नहीं है। कल का दो ...का मज़दूर आज चार आने में अहसान जताकर आता ...वही प्रकाशकों का भी है—वे अपने जीवन और व्यवसाय ...बढ़ते हुए स्तर के साथ हर जगह समझौता करने को ...हैं—बस, लेखक ही एक ऐसा प्राणी हैं जिससे वह ...शब्द का छत्ता निचोड़ कर कल नहीं परसों का व्यवहार ...चलाते जाना चाहता है। आजका श्रमी कम-से-कम शोषण ...को तैयार है। आज का हर प्रमुख अभिनेता और ...अपने चित्रों के निर्माता स्वयं बन रहे हैं; इस ...या आवश्यकता और आज के हर लेखक के प्रकाशक ...के प्रयत्न में कोई मौलिक अन्तर है? और भी उदाहरण ...जा सकते हैं। श्रम के आधार पर व्यवसाय करने वाले ...व्यापार ने इस स्थिति को समझा है और उसके साथ ...किया है लेकिन सच पूछा जाय तो हिन्दी का प्रकाशक ...पढ़ा-लिखा है कि वही कल का पण्डिताऊ व्यवहार ...बनिया मनोवृत्ति को घसीटे चल रहा है। निश्चित ...कुछ नये प्रकाशकों ने इस स्थिति को समझा है लेकिन

वे अपवाद हैं। मैं सामान्य स्थिति की बात कर रहा हूँ। इस दिशा में यदि आपका प्रकाशक-संघ कोई कदम उठाता है तो हम लोग उसका स्वागत करेंगे—यही नहीं, हम तो आग्रह करेंगे कि वह जितनी जल्दी हो सके, सही कदम उठाये।

अगली बात कहने से पहले मैं एक शंका का उत्तर चाहूँगा। यह ठीक है कि दुधारू गाय की तरह लेखक को जीवित रखना या कम-से-कम इतनी सुविधाएँ दिये चलना कि वह जीवित रह सके, प्रकाशकों का हित हो सकता है—लेकिन प्रकाशक-प्रकाशक मिलकर प्रमुख रूप से प्रकाशन की 'समस्याओं तथा प्रकाशन के सिलसिले में अधिक-से-अधिक सुविधाएँ प्राप्त करने के तरीके और तरकीबें सोचेंगे या लेखक-प्रकाशक के सम्बन्धों की बात? प्रकाशक समाचार के नये अंक को पढ़कर यही मुझे लगा भी कि प्रकाशक-प्रकाशक की आपस में, तथा सब की मिलकर बाजार में, क्या समस्या है, क्या तरीके उन्हें सुलझाने के हो सकते हैं, इसी सम्बन्ध में विचार किया गया है—प्रस्ताव किये गए हैं—लेखक और प्रकाशकों के सम्बन्ध की समस्या केवल 'ऐजेण्डा' में है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, २०११ की परीक्षा[ओं के] लिए

साहित्य रत्न : : प्रथम खण्ड के लिए

१. प्रश्नोत्तरी प्रथम खण्ड सं० २००२ से २०१० तक
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' २०)
२. दिग्दर्शन प्रथम खण्ड सं० २०११ के लिए
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' ७॥)
३. चिन्तामणी दर्शन प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए० ३)
४. कामायनी अध्ययन (प्रश्नोत्तर) प्रो० भारत भूषण 'सरोज' एम० ए० १)
५. प्रियप्रवास ,, ,, ,, ,, १)
६. साकेत ,, ,, ,, ,, १॥)
७. उद्धव शतक समीक्षा प्रो० रामनारायण मिश्र एम० ए० १॥)

साहित्य रत्न : : द्वितीय खण्ड के लिए

१. प्रश्नोत्तरी द्वितीय खण्ड सं० २००२ से २०१० तक
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० १३)
२. दिग्दर्शन द्वितीय खण्ड सं० २०११ के लिए ,, ६)
विशेष कवि सहित ८)
३. हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रश्नोत्तर में)
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० २॥)
४. हिन्दी भाषा का इतिहास ,, ,, २॥)
५. साहित्यालोचन
प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०
६. भाषा विज्ञान ,, ,,
७. भाषा विज्ञान तत्व (सरल अध्ययन)
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा एम० ए०
८. साहित्यालोचन सिद्धान्त ,, ,,
९. तुलसीदास (विशेष कवि के लिए) (प्रश्नोत्तर में)
प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०
१०. सूरदास श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री
११. कवि प्रसाद प्रो० शम्भूनाथ पाण्डेय एम० ए०
१२. गद्यकार प्रसाद ,,
१३. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,,
प्रो० रामजीलाल बघौतिया एम० ए०
१४. हिन्दी-साहित्य की प्रवृत्तियाँ (निबन्ध के लिए)
श्री जयकिशन प्रसाद एम० ए०
१५. साहित्य-समीक्षाञ्जलि डॉ० मुंशीराम
१६. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ
डा० रामविलास शर्मा
१७. आधुनिक हिन्दी निबन्ध
प्रो० राजनाथ शर्मा एम० ए०
१८. काव्य शास्त्र प्रो० शम्भूनाथ पाण्डेय एम० ए०

● अन्य पुस्तकों के लिए हमारी प्र[काशित सूची मँगाइये]

●

विनोद पुस्तक मन्दि[र]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[परीक्षाओं के] लिए हमारी प्रकाशित कुछ सहायक पुस्तकें

[विश]ारद परीक्षा के लिए

[म]ध्यमा दिग्दर्शन (चौथा नया संस्करण)
श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री एम० ए० ३॥)

हिन्दी प्रश्नोत्तरी सं० २००३ से २०१० तक
श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री एम० ए० ५॥)

इतिहास „ „ २००४ से २००६ तक ४॥)

भूगोल „ „ २००४ से २००८ तक ४)

कृषि-शास्त्र „ २००४ से २००८ तक २)

अर्थ-शास्त्र „ २००४ से २००६ तक ४)

गार्हस्थ्य-शास्त्र (प्रेस में)

धर्म-शास्त्र „

ब्रजमाधुरी सार टीका (नया संस्करण) २॥)

आधुनिक काव्य संग्रह टीका २॥)

तुलसी संग्रह टीका २)

जीवन यज्ञ परिचय १॥)

हिन्दी गद्य निर्माण परिचय १॥)

काव्य-शास्त्र प्रो० शम्भूनाथ पाण्डेय एम० ए० ४)

रस, अलंकार, पिंगल „ „ २॥)

१६. हिन्दी निबन्ध प्रो० रामजीलाल बघौतिया एम० ए० ३)

१७. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास (नया संस्करण)
(प्रेस में)

१८. हिन्दी और उसके कलाकार
प्रो० फूलचन्द जैन 'सारंग' एम० ए० ४)

१९. शैलियाँ „ „ १॥)

२०. हमारे प्रमुख साहित्यकार
प्रो० रामनारायण मिश्र एम० ए० २॥)

२१. हिन्दी साहित्य का इतिहास (प्रश्नोत्तर में)
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० २॥)

प्रथमा परीक्षा के लिए

१. प्रथमा दिग्दर्शन (नया द्वितीय संस्करण)
श्री वासुदेव शास्त्री, एम० ए० ३॥)

२. काव्य संग्रह टीका भाग १ ३)

३. काव्य संग्रह „ २ ४)

४. प्रथमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी सं० २००२ से २०१० तक ४)

५. प्रथमा इतिहास प्रश्नो० सं० २००२ से २००७ तक २)

६. प्रथमा भूगोल प्रश्नो० सं० २००२ से २००६ तक १)

७. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास १॥)

[हमारी प्रकाश]नों का बड़ा सूचीपत्र मंगाइये ।

[...]न्दि[...] [हॉ]स्पिटल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिक रूप से सामने नहीं आई है। इस बात की पुष्टि इस प्रमाण से और होती है कि प्रकाशक-संघ में न तो कोई लेखक-प्रकाशक और न कोई लेखक ही उसका मेम्बर है जो लेखकों की समस्या, माँग और स्थिति को निष्पक्ष रूप से सामने रख सके। एक शब्द में मेरा प्रश्न है कि प्रकाशक-संघ में लेखकों का 'रिप्रिजेंटेशन' कहाँ है ? या उसके लिए आप क्या 'एक्सक्यूज़' देते हैं ?

तो मोटे रूप में यह समस्याएँ और स्थितियाँ है जिन्हें यदि प्रकाशक-संघ सुलझाने और सँभालने का प्रयत्न करता है तो हम लोग उसकी स्थापना और कार्य का हृदय से स्वागत करते हैं। साथ ही यह भी स्वीकार करते हैं कि इस प्रकार का कोई भी 'इनीशियेशन' किसी प्रतिनिधि और समर्थ सामूहिक प्रयत्न द्वारा ही सम्भव है। आग्रह और आशा यह है कि वह प्रयत्न प्रकाशक-संघ के ही मध्यम से प्रारम्भ हो।

इसी सिलसिले में मैं अपनी भी एक कठिनाई आपके सम्मुख रख दूँ—आशा है आप इसे सुलझाने की दिशा में कोई उपाय बतायेंगे या स्वयं कोई कदम उठाएँगे।

राजधानी के एक 'सुप्रसिद्ध' प्रकाशक ने मेरा उपन्यास छापने को लिया, कुछ पैसा पाण्डुलिपि के साथ देने की बात थी। यह उपन्यास मैंने उन्हीं के कहने पर लिखा था। पाण्डुलिपि को उन्होंने एक ऐसी विचित्र बहस में डाल दिया कि एक साल उसमें निकल गया। खैर, आखिरकार पाण्डुलिपि प्रेस में दी गई। पता नहीं उन्होंने क्या सुविधा देखकर उसे दिल्ली से बाहर के एक ऐसे प्रेस को छपने दे दिया जहाँ उसकी रेड़ लग गई। क्योंकि जब उसके छपे हुए फ़र्मे मैंने देखे तो माथा ठोक लिया। किताब में काग़ज अच्छा लगा लेकिन पूरी पुस्तक किसी प्रूफरीडिंग के कोर्स में लगाने लायक थी—एक-एक पृष्ठ में दस-दस भूलें। कहीं-कहीं तो चैप्टरों का विभाजन भी नहीं हुआ था। शायद किसी अच्छे प्रेस की 'गेली' भी उससे अधिक शुद्ध छपी होगी। पुस्तक तैयार हो गई। मेरा विश्वास है, शायद हिन्दी में उतनी ग़लत किताब आजतक नहीं छपी। ऐसी किताब को बाज़ार में आने देने का क्या अर्थ है यह स्पष्ट था। मैंने आग्रह किया कि पुस्तक को दुबारा छपाया जाय। प्रकाशक महोदय का कहना था कि यह संस्करण वे बेच लें; दूसरा संस्करण मेरी इच्छानुसार ही छपा दिया जायगा। और इसी बहस में फिर एक दूसरा साल निकल गया। बात यहीं तय हुई कि इस संस्करण को वे बाज़ार में भेजे देते हैं, तथा फौरन ही पुस्तक की छपाई दुबारा हो... है—यह नया संस्करण ही भेंट या 'रिव्यू' इत्यादि के लिए भेजा जायगा! नक़द के रूप में उन्होंने केवल सौ रुपये दिये और आज की तारीख तक उपन्यास के चौथे फ़र्मे के बाद का पृष्ठ मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। मज़ा यह है कि इस प्रकार की कोई अशुद्धियाँ न रहें, इसलिए मैंने पहले भी उनसे कहा था कि अन्तिम रूप से प्रूफ़ मुझे ही दिखा दें—क्योंकि मैं जानता था कि उनकी परम्परा ही अधिक-से-अधिक अशुद्ध छापने की रही है।

अब स्थिति यह है कि उन्हीं प्रकाशक महोदय के अनुसार ही पुस्तक का पहला संस्करण इस प्रकार समाप्त हो गया कि उनके स्टॉक में एक भी प्रति नहीं है—दूसरी ओर न रॉयल्टी का कोई हिसाब है और न पुस्तक ही दुबारा छापी जा रही है। पुस्तक दुबारा छपने के आश्वासन पर ही मैंने अपनी प्रतियाँ तक उनसे नहीं लीं। दो-तीन महीने हो गये, उपन्यास बाज़ार में नहीं है। संस्करण समाप्त हो गया, इस बात पर अविश्वास करने का कोई कारण इसलिए भी नहीं है कि दो वर्ष तक लगातार उसकी पब्लिसिटी की गई है।

अब मैं उनसे कहता हूँ कि आप मेरी रॉयल्टी का हिसाब कीजिए और यदि आप उसे आगे छपने की स्थिति में नहीं हैं तो उस पुस्तक को मुझे दीजिए ताकि मैं किसी और जगह उसे छापने का प्रबन्ध करूँ। इन दोनों में कोई बात वे नहीं मान रहे। उनका कहना यह है कि पुस्तक हम आपको लौटा उसी स्थिति में सकते हैं जब आप, हमने जो-कुछ दिया है वह लौटा दें। उनका यह तर्क मेरी समझ में इसलिए नहीं आता कि पहले संस्करण की रॉयल्टी में से उलटे मेरे ही रुपये उनकी तरफ़ निकलते हैं। मैं क्यों 'सफ़र' करूँ ?

अब आप ही बताइये, इस स्थिति में मुझे क्या करना उचित है ? आशा है इस विषय में तथा इस प्रकार की अन्य समस्याओं को सुलझाकर प्रकाशक-संघ लेखक और प्रकाशक के सम्बन्ध को मधुर बनाने का प्रयत्न करेगा।"

राजेन्द्र यादव

'प्रकाशक-संघ' ज़रूर इस ओर कदम उठाएगा कि लेखक अपने अधिकारों से वंचित न रह जाएँ। प्रकाशकों से भी (उन्हीं के व्यापक हितों की दृष्टि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...किया जायगा कि वे अपने कर्तव्यों का ...पालन करें।

—सम्पादक

◈ ◈

...के प्रकाशन-समाचार में हमारा एक पत्र ...था जिसमें हमने मुख्यतः दो बातों पर प्रकाश ...एक तो आज का प्रकाशन सस्ता होना चाहिए ...'वादों' से परे साहित्य का प्रकाशन ...सम्पादकीय में आपने यत्किंचित् विचार व्यक्त ...पर हमें कुछ कहना है।

...कमीशन पाने से हमारा लक्ष्य थर्ड रेट के साहित्य ...नहीं है। अपितु फर्स्ट रेट के तथा प्रामाणिक ...प्रकाशकों के ग्रन्थ ही हमें अभीष्ट हैं और ...को भी ऐसा ही करना चाहिए। २५ प्रतिशत ...कमीशन है और वह प्रकाशक सुविधापूर्वक दे भी ...क्योंकि बड़े प्रकाशकों को पारस्परिक भारी खरीदारी ...राइडिंग कमीशन सामान्यतया मिलता ही है। फिर ...भाषा पद पर अभिषिक्त होने से प्रकाशकों का ...अपेक्षाकृत बढ़ गया है। कारण कि यदि प्रकाशकों ...व्यापार ही रहा तो फिर हिन्दी की पुस्तकों ...जुड़ी समाज में। हाँ, सरकारें अवश्य आपसे ...देंगी लेकिन आपको उनके खरीदने की पद्धति ...कहाँ है? प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकालयों ...उन्नति होगी। अधिक-से-अधिक मात्रा में लोग ...करें, एतदर्थ सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत ...की नितांत अपेक्षा है और तभी ही साहित्यकारों ...जाने वाले अनुरोध साकार सिद्ध होंगे। सार्व-...लय सांगोपांग देखने में कम ही आते हैं: या ...से या दिलचस्पी न होने से। हमारे लखनऊ ...बड़े-से-बड़ा कोई भी पुस्तकालय हिन्दी साहित्य की ...दृष्टि से सांगोपांग नहीं कहा जा सकता है। अतः ...होगा कि समर्थ जन व्यक्तिगतरूप से पुस्तकालय ...डालें। किन्तु यह तभी सम्भव हो सकेगा जब कि ...प्रकाशक का सहयोग मुक्तकंठरूप से प्राप्त होगा। ...राष्ट्रभाषा होने पर भी आज हिन्दी प्रकाशनों की ...है, वह किसी से छिपी नहीं है। आज तो साहित्य ...केवल विद्यार्थी-जीवन तक ही सीमित रह गया है। उसके बाद उसे कोई पढ़ना पसंद नहीं करता, भले ही सिनेमा के कई चक्कर अवश्य लग जाते हों।

व्यापारिक दृष्टि से भी उपर्युक्त कथन संगत है। प्रकाशक खरीदार को २५ प्रतिशत कमीशन दे और शेष व्यय खरीदार पर; या वह ग्राहक को १८ प्रतिशत दे—एफ० ओ० आर० सहित—यह दोनों बातें प्रकाशक आसानी से कर सकता है। इस प्रकार प्रकाशक को ओवर-राइडिंग कमीशन के साथ ६।) प्रतिशत बच जायगा क्योंकि सप्लाई माल-गाड़ी से होगी। इसके विपरीत ग्राहक को प्रसिद्ध प्रकाशकों से पृथक्-पृथक् २५ प्रतिशत मिल सकता है लेकिन फर्क केवल इतना है कि ग्राहक को एक जगह से पूरा माल लेने में खर्चे की बचत होती है।"

इन्द्र चन्द्र रस्तोगी,

मन्त्री, श्री स्वाध्याय पुस्तकालय, लखनऊ।

मुद्रण और प्रकाशन का स्तर अच्छा रखकर तथा लेखक को लाभ का उचित भाग देकर कोई प्रकाशक २९

[आगे पृष्ठ ४१० पर]

हिन्दी साहित्य के इतिहास की रूप रेखा

लेखक—श्री निर्मोही मूल्य १)

हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

भाषा विज्ञान की रूप-रेखा

लेखक—जगदम्बा प्रसाद त्यागी मूल्य १।।)

साहित्य रत्न द्वितीय खण्ड और एम० ए० के लिये

सुलभ खाद

लेखक—बालमुकुन्द जोशी मूल्य ।।।)

उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा ग्राम पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत

भारत तथा अन्य देशों के विधानों का अनुशीलन

लेखक—कैलाशनारायण चौधरी मूल्य ।।।)

नागरिक शास्त्र तथा राजनीति के लिये, मध्यमा, उत्तमा, इण्टर, बी० ए० के लिये।

तुलसी साहित्य सदन

४ नासिया रोड, इन्दौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

हिन्दी काव्यालङ्कार सूत्र आचार्य वामन-कृत काव्यालङ्कार सूत्रवृत्ति की आचार्य विश्वेश्वर द्वारा की गई पाण्डित्य-पूर्ण व्याख्या है। डॉ० नगेन्द्र की १८६ पृष्ठों की महत्वपूर्ण भूमिका इस पुस्तक का पहला अंश है। काव्यशास्त्र के गहन अध्ययन के परिणामस्वरूप भूमिकाकार इस तथ्य पर पहुँचे हैं कि भारत तथा पश्चिम के दर्शनों की तरह ही यहाँ के काव्य-शास्त्र भी एक-दूसरे के पूरक हैं। पूर्व तथा पश्चिम के काव्य-दर्शनों के सामंजस्य से एक आधुनिक काव्यशास्त्र की रूपरेखा के अंकन में डॉ० नगेन्द्र की यह भूमिका तथा वामन की कृति की यह सुबोध व्याख्या सहायक होगी।

संस्कृत-साहित्य के काव्यशास्त्रियों की कृतियों की हिन्दी टीकाएँ तथा अर्वाचीन दृष्टिकोण से उनका विश्लेषण करने वाली भूमिकाएँ प्रस्तुत करने की शृङ्खला में आचार्य विश्वेश्वर तथा डॉ० नगेन्द्र का ('ध्वन्यालोक' के बाद) यह दूसरा सफल और स्तुत्य प्रयास है।

डिमाई साईज के ५५२ पृष्ठों पर, छपी हुई पक्की जिल्द की इस पुस्तक का मूल्य १२) है। प्रकाशन 'दिल्ली विश्व-विद्यालय' की हिन्दी अनुसन्धान परिषद् की ओर से **आत्माराम एण्ड सन्स**, दिल्ली, ने किया है।

◈

शिक्षा की समस्या में राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी के शिक्षा सम्बन्धी ७८ लेखों का संग्रह है। इन लेखों को असहयोग और मौजूदा शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रयोग, हरिजनों की शिक्षा, निराकरण की दिशा, वर्धा-योजना आदि पाँच अध्यायों में विषय-क्रम से विभक्त किया गया है। अन्त में एक उपयोगी परिशिष्ट भी दे दिया गया है। शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गान्धी जी के विचारों का अधिकृत प्रतिनिधित्व करने वाली यह पुस्तक प्रत्येक विद्यालय, शिक्षक और विद्यार्थी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है। २०×३० साइज के ४२० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ... रुपये है। पुस्तक **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर**, ... मदाबाद से प्रकाशित हुई है।

◈

भस्म विज्ञान में प्रसिद्ध आयुर्वेदसेवी श्री ... नन्द ने भस्म विज्ञान और उससे सम्बन्धित ... व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। पुस्तक ... आयुर्वेद-प्रेमी पाठकों के लिए संग्राह्य है। ... के २२३+१०० पृष्ठों की यह सजिल्द पुस्तक ... **विज्ञान ग्रन्थमाला कार्यालय**, अमृतसर से ... सकती है।

◈

आसन चिकित्सा श्री हरकिशनदास ... आरोग्यार्थियों के लाभ के लिए यह पुस्तक लिखी ... १५ प्रमुख आसनों के करने के ढंग और उनके ... विषय में लिखा गया है। सभी आसनों के चित्र ... हैं। २९६ पृष्ठों की १६ पेजी क्राउन साइज़ ... पुस्तक **जीवन प्रकाशन**, वल्लभ विद्यानगर (गुज...) प्रकाशित की गई है और इसका मूल्य ४) है।

◈

हमारे आर्थिक प्रश्न नाम से शास्त्री एण्ड ... रोड, नागपुर द्वारा प्रकाशित १६६ डबल क्राउन ... यह पुस्तक प्रो० सुशीलकुमार दिवाकर द्वारा लिखी ... इसमें राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता, भारत में बेकारी, भूदान ... मिश्रित अर्थ-व्यवस्था, अहिंसात्मक अर्थ-पद्धति, ... यन्त्रीकरण, भारतीय कृषि-मजदूर, भारत में श्रमिक ... भारत में स्त्री-श्रम, सम्पत्ति-कर तथा राष्ट्रीय ... ११ अध्याय हैं।

◈

मधुवन में प्रो० सुशीलकुमार दिवाकर के ... लेखों का संकलन है। डबल क्राउन के १४० ... पुस्तक **शांति प्रकाशन**, सिवनी (मध्य प्रदेश) ... प्रकाशित की गई है।

◈

हमारे अक्षर : बच्चों को वर्णमाला से परिचित ... लिए इस सुन्दर, सचित्र पुस्तक का प्रकाशन श्री ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य चतुरसेन के विश्व साहित्य उपन्यास

सोमनाथ धर्मपुत्र वयं रक्षामः
आलमगीर अपराजिता वैशाली की नगरवधू

में प्रकाशित और विद्वानों द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचना घोषित। उपन्यास-साहित्य की नवीन सीढ़ी। **वैशाली की नगरवधू, दो खण्ड, १२)**

में प्रकाशित और महिला एवं सोशल वर्ग द्वारा मुक्तकण्ठ से प्रशंसित तथा आँसुओं की अबाध धारा में बारम्बार पठित। विशुद्ध प्रेम और कर्तव्यमय भारतीय निष्ठा का अनूठा चित्रण। **अपराजिता २)**

में प्रकाशित। निर्मम पत्थर औरंगजेब का महादुर्लभ प्रेममय कथानक। एवं मुगल दरबार का रोमांचकारी रहस्य। **आलमगीर ५।।।≈)**

में प्रकाशित और १९३० से प्रतीक्षित और विज्ञापित। जिसके सम्वादों को पढ़कर मानव समुदाय आपा खो बैठा। हाहाकार और सीत्कार भरा बेजोड़ कथानक, जो न कभी सुना, न कभी पढ़ा। **सोमनाथ ८)**

में प्रकाशित। लेखक के दर्द की तस्वीर और पाठक की कराह की धीमी सिसकारी, जिसे एक अविवाहिता मुस्लिम किशोरी ने ही सुना जो इस के पृष्ठों में आपके सम्मुख अपने रक्ताभ होठों से बोल रही है। **धर्मपुत्र ३।।)**

में प्रकाशित। जिस को ओर शताब्दियां प्रारम्भ से ही विमुख रहीं, उसी दानव-कुल-पुत्र रावण का प्रेम और शौर्य से विभषित विशुद्ध सांस्कृतिक कथानक। उपन्यास साहित्य की नवीन सीढ़ी का नवीन रूप। **वयं रक्षामः ८)**

लाइब्रेरियों को २६ अगस्त '५४ तक छहों उपन्यास-रत्न केवल सत्ताइस रुपये में। अथवा छहों उपन्यास पूरे मूल्य में और उनके साथ श्री आचार्य जी की पांच नवीन पुस्तकें 'लम्बग्रीव' (कहानी संग्रह) 'लालारुख' (कहानी संग्रह) 'पीर नाबालिग' (कहानी संग्रह), 'मौत के पंजे में जिन्दगी की कराह' (राजनैतिक), 'अनबन' (पति पत्नी-काम सम्बन्धी) बिना मूल्य। अग्रिम मूल्य के साथ स्टेशन आदि का पूरा पता लिखिए।

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, शहादरा, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४०४ से आगे]
प्रकाशन, १३ हाथीखाना, दिल्ली, ने किया है। बढ़िया कागज पर छपी और मोटी जिल्द में मढ़ी पुस्तक का मूल्य १।) है।

◇ ◇ ◇

'राजकमल अमर साहित्य' की तीसरी पुस्तक **मेघदूत** डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत एक समीक्षात्मक अध्ययन है। इसमें विद्वान् लेखक ने मेघदूत—एक दृष्टि, विराट् जगत्, कामरूप पुरुष, मेघ का दूत-कर्म, विरह, प्रवास और प्रेम, यक्ष और यक्षिणी, अलका और उज्जयिनी तथा शिव का स्वरूप शीर्षक ८ अध्यायों में **मेघदूत** से सम्बन्धित समस्त पक्षों पर विद्वत्तापूर्ण ढंग से प्रकाश डाला है। इनके बाद **मेघदूत** के मूल श्लोक देकर उनका सरल हिन्दी के अर्थ दिया गया है। 'टिप्पणी' शीर्षक अध्याय में **मेघदूत** में आये हुए विशेष पुरुषों, वस्त्रों, स्थानों और घटनाओं में सम्बन्ध में रोचक जानकारी प्रस्तुत करके अन्त में दो परिशिष्टों में 'मेघ' का वैज्ञानिक विवेचन करके उसके चार प्रकारों का विवरण और अर्वाचीन ऋतु-विज्ञान के अनुसार मेघों का शास्त्रीय विवेचन दिया गया है। चार रंगीन और दो सादे-कलापूर्ण चित्रों से पुस्तक विभूषित है। २०×३० साइज के २५६ पृष्ठ की सजिल्द और सुमुद्रित, **राजकमल प्रकाशन** दिल्ली द्वारा प्रकाशित, इस पुस्तक का मूल्य ४) है।

◇ ◇ ◇

हिन्दी-आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ : राजकमल प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'आलोचना पुस्तक-माला' की चौथी पुस्तक है। इसमें सर्वश्री शिवनाथ, डॉ० जगदीश गुप्त, विजयेन्द्र स्नातक, डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र, शम्भूनाथसिंह, नलिनविलोचन शर्मा के हिन्दी-समीक्षा की अर्वाचीन प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालने वाले विद्वत्तापूर्ण निबन्ध संकलित हैं। प्रारम्भ में डॉ० देवराज की गवेषणापूर्ण भूमिका है। २०×२६ साइज की आर्ट पेपर पर छपी ४२+१०+४ (५६) पृष्ठ की इस सुमुद्रित पुस्तक का मूल्य २) है।

◇ ◇ ◇

सरस्वती सहकार, दिल्ली द्वारा आयोजित और श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' द्वारा सम्पादित 'भारतीय-साहित्य परिचय' नामक पुस्तकमाला के अन्तर्गत **तेलुगु और उसका साहित्य** तथा **मालवी और उसका साहित्य** नामक दो पुस्तकें और प्रकाशित हुई हैं। इनके लेखक क्रमशः श्री हनुमच्छास्त्री ... चित' और श्री श्याम परमार हैं। दोनों पुस्तकों ... और मालवी भाषा और साहित्य के इतिहास का ... विश्लेषण किया गया है। २०×३० साइज के ... की ये पुस्तकें **राजकमल प्रकाशन** दिल्ली से दो ... प्रकाशित की गई हैं।

◇ ◇ ◇

साहित्य प्रकाशन (मालीवाड़ा दिल्ली) की ओर से ... साहित्य' के अन्तर्गत प्रकाशित श्री यज्ञदत्त शर्मा के **मधु**, ... **की शादी** और **इन्साफ** नामक उपन्यास हमारे ... इनमें से '**मधु**' में अंग्रेज़ी शासन-काल में पनपी वेश्या ... व्यवसायीकरण के सम्बन्ध में उपन्यासकार ने नये दृष्टि... प्रस्तुत किया है। **झुनिया की शादी** में भारतीय ... नारी और उसके जन्म से पैदा होने वाली आर्थिक ... रोमांचकारी गाथा अंकित की गई है और **इन्साफ** ... किसानों की हृदयस्पर्शी और शोचनीय अवस्था का ... जो आज जमींदारी समाप्त होने पर भी जमींदारों द्वारा ... प्रति पोसे जा रहे हैं। उक्त तीनों ही उपन्यास अपने ... लिये हुए हैं। तीनों की छपाई, सफाई और गेट-अप ... है। एण्टिक काग़ज़ पर छपे ये तीनों उपन्यास तीन-... में प्रकाशक से मिल सकते हैं।

◇ ◇ ◇

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित ... **और लपटें** तथा **भँवर-जाल** नामक उपन्यास ... अग्निहोत्री और कृष्णचन्द्र शर्मा 'भिक्खु' की कला-कृ... **धुआँ और लपटें** की कहानी साधनहीन, संस्कार-ग्रस्त ... जीवन के चित्रों से आरम्भ होकर कानपुर-जैसे औद्यो... की सामाजिक समस्याओं का परिचय देती हुई हमारे ... समाज की आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत ... कलात्मक विनोद की सृष्टि ही लेखक की विशेषता है ... **जाल** में लेखक ने 'सांख्य-दर्शन' के 'त्रिगुणात्मि... वाले सिद्धान्त को अपनाकर जीवन की अनेक उलझनों ... की चर्चा की है। दोनों उपन्यास २०×३० साइज ... काग़ज़ पर छपे हैं और इनका आवरण पृष्ठ तथा ... अच्छी बन पड़ी हैं। ये प्रकाशक से क्रमशः ३) ... में प्राप्त हो सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवार श्रीमती रजनी पनिकर का रोचक उपन्यास है। इसमें एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अविवाहित है और दो व्यक्तियों के प्रति आकृष्ट है। जिस विषय में वह दिन-रात सोचती रहती है। जो वह सोचती है, उसे ही आत्मकथात्मक शैली में श्रीमती पनिकर ने प्रस्तुत कर दिया है। श्री भगवतीचरण वर्मा ने यह सच ही लिखा है—"...यह उपन्यास लिख- कर लेखिका ने अपने अन्दर वाले कुशल और समर्थ कलाकार को व्यक्त किया है।" १६० पृष्ठ की २० × ३० साइज के पेपर पर छपा और सुन्दर तथा आकर्षक कवर का यह उपन्यास राजहंस प्रकाशन दिल्ली से तीन रुपये में मिल सकता है।

◈ ◈

राग और त्याग श्री कमल शुक्ल का पहला उपन्यास है। इसमें भारतीय मध्यवित्त परिवार की कहानी कही गई है। घटनाओं के विन्यास और पात्रों के चरित्र-चित्रण प्रायः घटना- प्रधान हैं। उपन्यास होते हुए भी लेखक ने इसमें इतनी शब्दावली और शालीन मनोवृत्ति का प्रयोग किया है कि बच्चे, बूढ़े, युवा सभी निःसंकोच पढ़ सकते हैं।

यह उपन्यास, जैसा कि पुस्तक के नाम से स्पष्ट है, केवल दोनों प्रवृत्तियों के संघर्ष की ही कहानी नहीं, बल्कि एक ...मार्ग दिखाने की सफल चेष्टा भी है। और ...कता की उपज है जिसका एकमात्र लक्ष्य समाज ... कल्याण है। चूँकि इस लक्ष्य ने लेखक को उत्तरदायित्व प्रदान किया है, उसकी लेखनी का मांगलिक ... रहे बिना नहीं रह सकता। आदर्शवाद की पृष्ठभूमि ... इस उपन्यास में चित्रात्मकता, चरित्रात्मकता और ...ता की अवहेलना न कर लेखक ने उपन्यास की मूल ...ताओं को भी सफलता के साथ निभाया है। श्री० ...प्रसाद वाजपेयी जैसे सिद्धहस्त लेखक के विचार में ... उपन्यास है जिसे बहू-बेटियों को सहर्ष भेंट किया जा सकता है। नवयुवक इसे पढ़कर कुछ सीख सकते हैं और ... इसे अपने बच्चों के मुँह से सुनकर मुस्करा उठेंगे।" ...२ पृष्ठ का एण्टिक पेपर पर छपा और आकर्षक साज- ... वाला यह उपन्यास इसके प्रकाशक ओरियण्टल ..., दिल्ली से ५) में प्राप्त हो सकता है।

◈ ◈

हवेली की ईंटें श्री श्रीचन्द्र अग्निहोत्री का सामन्तवादी समाज का चित्रण करने वाला उपन्यास है। इसमें लेखक ने सामन्तवादी समाज के प्रतीक पात्रों की सज्जनता और उनकी परम्परागत मान्यताओं से सहमत होते हुए भी उनकी असा- मयिकता को सिद्ध किया है। उपन्यासकार का उद्देश्य अपने समाज में आये परिवर्तन को सफल रूप से चित्रण करना- मात्र है। २० × ३० साइज के एण्टिक कागज पर मुद्रित, १६२ पृष्ठ। साहित्य प्रकाशन, दिल्ली से ३।।) में प्राप्य।

◈ ◈

मरुभूमि श्री महेशचन्द्र मिश्र 'सरल' का ऐसा उप- न्यास है, जिसमें आज के समाज की कहानी उसके पात्रों द्वारा सरल एवं स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत की गई है। लेखक के मत में चरित्र राष्ट्र और समाज की रीढ़ है, उसका साकार दिग्दर्शन करानेमें ही **मरुभूमि** के पात्र व्यस्त हैं। उनका यह भी कहना है कि यह उपन्यास मध्यवर्ग की एक ऐसी समस्या का निराकरण करता है, जिसे हम नित्य-प्रति के जीवन में देखकर भी अनदेखे से रहते हैं। २६४ पृष्ठ का सुरुचिपूर्ण मुद्रण और आकर्षक आवरण से युक्त यह उपन्यास **नीलकमल प्रका-**

मध्यभारत सरकार की कला-परिषद द्वारा पुरस्कृत
हास्य एवं व्यंग की कहानियों का अनूठा संग्रह—

गिलट के झुमके

लेखक—श्री श्याम सुन्दर व्यास एम० ए०

मूल्य १।।)

आकर्षक गेट-अप, सुन्दर कागज
पर सुन्दर छपाई।

पुस्तक विक्रेताओं के लिए आकर्षक कमीशन।

●

श्री महेश शरण जौहरी ललित का
नवीन कहानी संग्रह—

मुक्तिद्वार

१।।)

प्रकाशकः

विनय पुस्तक भंडार

२८ गौराकुंड, इन्दौर नगर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शन, ७२, हजरतगंज लखनऊ से ३॥) में मिल सकता है।

◈ ◈ ◈

राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि श्री **चन्द्रसिंह** की राजस्थानी कविताओं के संग्रह **बादली** और **लू** हमारे सामने हैं। **बादली** राजस्थानी भाषा का मौलिक तथा सरस काव्य-ग्रंथ है। इसका पहला संस्करण संवत् १९९८ में प्रकाशित हुआ था। २००४ में दूसरा संस्करण निकला और यह उसका तीसरा संस्करण है। पहले संस्करणों में मूल राजस्थानी पद्यों के साथ हिन्दी का पद्यानुवाद भी दिया गया था। इस संस्करण में हिन्दी-पद्यानुवाद न देकर गद्यानुवाद ही दिया गया है।

लू राजस्थानी भाषा का एक ऋतु-काव्य है। इसकी भूमिका में सुप्रसिद्ध भाषा-शास्त्री डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने लिखा है—"कवि श्री चन्द्रसिंह जी ने इन कविताओं में एक नई सृष्टि की है, जिसमें भाव के साथ-ही-साथ भाषा का वैशिष्ट्यमी लक्षणीय है। दोनों ही पुस्तकें २० × ३० साइज के एण्टिक पेपर पर मोनो टाइप में छपी हैं। आकर्षक तिरंगा कवर। **चान्द जलेरी जयपुर** से २-२ रुपये में प्राप्य।

◈ ◈ ◈

हिन्दुस्तानी एकेडेमी के तीन नए प्रकाशन

ब्रजभाषा : डा० धीरेन्द्र वर्मा

पेरिस विश्वविद्यालय द्वारा डी०लिट्० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध का मूल फ्रांसीसी से हिन्दी रूपान्तर।

हिन्दी कथाकोष :

हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त व्यक्ति, स्थान, नदी तथा इस प्रकार के अन्य नामों के परिचय एवं उनकी कथाओं का कोष।

हिन्दी वीरकाव्य : डा० टीकमसिंह तउमर

प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत प्रबन्ध।

●

जुलाई तक प्रकाशित होंगे।

●

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

अन्तर्द्वन्द्व श्री व्रजेश विद्यारत्न की १७ भावपूर्ण कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की एक यह विशेषता है कि यह एक ग्रामीण द्वारा लिखित, ग्रामीण द्वारा सम्पादित और एक ग्रामीण द्वारा मुद्रित तथा एक ग्राम से ही प्रकाशित है। १२० पृष्ठ की यह पुस्तक प्रकाशक—**मध्य मालव प्रकाशन मन्दिर** सुलतानिया (पचोर, म० भा०) से २) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

मध्यभारत का प्राथमिक इतिहास श्री रामकि... शर्मा एम० ए० सम्पादक 'मध्यभारत-सन्देश' द्वारा ... किया गया है। इसमें १७ अध्यायों में इतिहास पूर्वकाल से लेकर मध्यभारत-प्रदेश-निर्माण के समय तक की घटनाओं पर लेखक ने संक्षेप में प्रकाश डाला है। पुस्तक छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है। ८६ पृष्ठ की यह पुस्तक, **राजरानी प्रकाशन** ६४, खजूरी बाजार, इन्दौर से एक रुपये में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

नाट्य-कुसुमाञ्जलि में श्री विजयशंकर सक्सेना ... द्वारा लिखित 'चन्दबरदाई' देशभक्त, राजकवि, पृथ्वी... अमरसिंह राठौर, अज्ञातशहीद और बालरत्न नामक ५ ... पयोगी एकांकी नाटकों का संग्रह है। पुस्तक की भाषा ... और शैली सुबोध है। बच्चों के लिए यह एकांकी प्रेरणा... होंगे। **वीणापाणि प्रकाशन मन्दिर,** जयपुर से २) में प्राप्य।

◈ ◈ ◈

स्वप्न-सिद्धि की खोज में प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी की आत्मकथा का तीसरा भाग है। ऐसे साहित्यकार के व्यक्तित्व का सही मूल्यां... कन करने के लिए उनके जीवन का अध्ययन अनिवार्य है। इससे पूर्व इस आत्मकथा के आधे रास्ते तथा ... चढ़ाव नाम से दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इस ... में श्री और श्रीमती मुन्शी की प्रणय-प्रगति का कौतूहल... वर्णन भी है। ३४८ पृष्ठ की अच्छे कागज पर मुद्रित ... आकर्षक कवर वाली यह पुस्तक **राजकमल प्रकाशन** ... ने प्रकाशित की है। मूल्य ५) है।

◈ ◈ ◈

शेर ओ-सुखन नामक पुस्तक का दूसरा तथा ... भाग हमारे हाथ में है। इनमें से दूसरे भाग में ...

[आगे पृष्ठ ४१० ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भ-पुस्तकें तथा सूची-पत्र

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह छटा लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

...द की बात है कि अनेकों लोग, जिन्होंने बरसों ...ं दूकानों में काम किया है, अब तक भी "व्य-...औज़ारों" से परिचित नहीं जान पड़ते। इस बारे में ...ज्ञान देने की जिम्मेदारी पुस्तक-विक्रेताओं, व्यव-...और अनुभव-प्राप्त कर्मचारियों की है।

...विक्रेता की दूकान में काम करने वाले हर व्यक्ति ...न अथवा दूसरी आवश्यक पुस्तकों के देखने व ...ने का ज्ञान होना चाहिये। लगभग प्रत्येक पुस्तक ...ों में एक अभ्युद्देश-पुस्तक होती है क्योंकि प्रकाशक ...ों की सूचना बार-बार पुस्तक के जैकेट पर छपी ...ै और लेखक की अन्य रचनाओं का विवरण भी ...अन्दर के पृष्ठ में या जैकेट पर अङ्कित रहता है। बहुत ...ों में तो बड़ी महत्वपूर्ण पुस्तकों की 'बिबलियोग्राफी' ...ती है जिनमें से संभव है कि अधिकतर पुस्तकें पुस्तक ...के यहाँ स्टाक में भी हों।

...पहली महत्व की पुस्तक है 'हूज़ हू' जिसमें सन् ...महत्वपूर्ण जीवित लेखकों के ग्रंथों का विवरण ...है और पहले संस्करण की तारीख भी रहती है। ...पूर्ण पुस्तकें जो अभ्युद्देश का काम देती हैं, वे हैं ...सूचीपत्र और आगामी प्रकाशनों की घोषणाओं ...।

...सी पुस्तकों की यहाँ सूची देना न तो संभव है और ...योगी। हाँ, उपर्युक्त आवश्यक सूचीपत्रादि आम ...ताओं के लिए पर्याप्त हैं।

...पुस्तकों के विषय की जानकारी भी अत्यावश्यक ...और साथ ही उन्हें सुव्यवस्थित रखना भी लाभदायक ...क पर आसानी से मिल जायें। यह बात तो बहुत ही बुरी और अशोभनीय है कि एक आदमी दूसरे के पीछे भाग रहा है और पूछ रहा है—"तुमने देखा है वह सूची-पत्र? वह पुस्तक कहाँ रखी है? मुझे मिल नहीं रही।" साथ ही इन तमाम सूचीपत्रों व अभ्युद्देश पुस्तकों का प्रयोग भी सावधानी से किया जाना चाहिए क्योंकि बहुत सी संदर्भ पुस्तकें बहुत कीमती और भारी होती हैं। ज़रा सी असतर्कता से उनके खराब हो जाने या फट जाने का भय रहता है। जब किसी संदर्भ-पुस्तक के पृष्ठ निकल जाएँ या सिलाई ढीली पड़ जाय तो उसे तुरन्त जिल्दसाज के यहाँ भेज देना चाहिए। कम कीमत वाली संदर्भ पुस्तकें भी सावधानी से इस्तेमाल की जानी चाहिएँ। उदाहरणतया प्रकाशकों के सूची-पत्रों में से पन्ने नहीं निकाले जाने चाहिएँ। ऐसा तभी करना चाहिए जब कि उसके बदले में दूसरी प्रति रख दी जाय। ग्राहक को समझाने या और किसी काम के लिए ही पन्ने निकालना चाहिएँ।

पुस्तक विक्रेताओं का सूचीपत्र

सूचीपत्र पुस्तक विक्रेताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उनके बिना पुस्तकों की बिक्री असंभव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जाती है। अधिकांश ग्राहक सूचीपत्र के द्वारा ही आकृष्ट होकर पुस्तकें खरीदने आते हैं। वैसे सूचीपत्रों से बराह-रास्ते आप की बिक्री न हो पर किताबों के विज्ञापन का यही सरलतम एवं अत्यन्त सस्ता तरीका है। और भी ज्यादा लाभप्रद हमारे लिये यह है कि हम अधिक लम्बे सूचीपत्रों की अपेक्षा छोटे-छोटे सूचीपत्र प्रकाशित करें। सोलह पृष्ठों के एक सूचीपत्र के बजाय यदि आठ-आठ पृष्ठों के दो हों तो वे अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे। इससे फायदा यह होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि आप की पुस्तकों को ग्राहक दो बार देख लेगा और यदि पहली मरतबा आपका सूचीपत्र ग़लत समय पर पहुँचा हो और उसे न देखा गया हो तो दूसरी बार तो अवश्य लोग उस ओर ध्यान देंगे। माना कि इस में पोस्टिंग का खर्च दो बार होगा लेकिन दो बार भेजने से आप के व्यापार में कमी की बजाय वृद्धि ही होगी।

मिसाल के तौर पर, कई वर्ष पहले हमने एक कई पृष्ठों के सूचीपत्र तैयार करके भेजा और उसके कुछ ही सप्ताह बाद वही सूचीपत्र एक नये कवर "क्रिसमस उपहार" के साथ दुबारा भेजा और हमने देखा कि दूसरी बार हमारी अधिक बिक्री हुई। यदा-कदा हरेक पुस्तक-विक्रेता एक सुन्दर और सचित्र सूचीपत्र निकाल सकता है और यदि ब्लाक देना चाहे तो प्रकाशकों से वह भी माँग सकता है। मेरा विश्वास है कि वे इस कार्य में उससे सहयोग करेंगे। सूचीपत्र न केवल दिखावट में अच्छा होना चाहिए बल्कि उसकी पुस्तकों का संग्रह भी सुव्यवस्थित होना ज़रूरी है। साथ ही उसमें आप का व्यवसाय-विशेष भी प्रतिबिंबित होना चाहिए। सूचीपत्र तैयार करना अपने-आप में ही एक कला है जो धीरे-धीरे आती है। इस के लिए दूसरों के सूचीपत्रों को देखना व उन से सीखना लाभप्रद सिद्ध होगा।

पुराने जमाने में सूचीपत्र इस प्रकार बनाया जाता था—लेखक, पुस्तक का नाम, आकार, सन् और मूल्य, लेकिन आजकल तो उसे और भी आकर्षक बनाया जा सकता है। इस के लिए कोई गढ़े-गढ़ाए नियम या कायदे तो नहीं हैं लेकिन यदि इस प्रकार हो तो बेहतर होगा – पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, पुस्तक के सम्बन्ध में थोड़ा-सा परिचय, और मूल्य। यह बहुत कुछ आप के सूचीपत्र के प्रकार-विशेष पर निर्भर करता है। अपने सहधर्मियों के सूची-पत्रों का यदि आप अवलोकन करते रहें तो अच्छा रहेगा। सूची-पत्र में मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियाँ नहीं रहना चाहिए और इसके लिए कार्यसाधक प्रूफ़ पढ़ने वालों का होना आवश्यक है। इस प्रकार सुन्दर, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित सूचीपत्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपकी बिक्री में वृद्धि करेंगे।

•

[पृष्ठ ४०८ से

स्कूल के वर्तमान उर्दू शायरों और तीसरे भाग में मौजूदा के ग़ज़लगोओं और शायरे-आज़मों की रचनाओं उत्कृष्टता पर विचार करके उनकी चुनी हुई रचनाएँ की गई हैं। दूसरे भाग में 'सिंहावलोकन' शीर्षक के गंत पृष्ठ १७ से ६६ तक उर्दू कविता के प्रारम्भ से सन् तक की इश्क़िया शायरी पर बड़ी ही रोचक शैली में किया गया है। इन दोनों भागों से पूर्व इसका पहला मूल्य ८) भी प्रकाशित हो चुका है जिसमें प्रारम्भ से १६० तक के मुख्य मुख्य ग़ज़लगो शायरों का परिचय दिया गया ऐसे उपयोगी प्रकाशनों के लिए भारतीय ज्ञानपीठ, तथा सम्पादक श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय सचमुच बधाई पात्र हैं। सुन्दर आवरण और आकर्षक मोनो मुद्रण क्रमशः ३२४ और ३६४ पृष्ठों की यह दोनों पुस्तकें में प्रकाशक से प्राप्त हो सकती हैं।

◈ ◈ ◈

द्विवेदी पत्रावली में श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के महत्वपूर्ण पत्रों का प्रस्तुत किया गया है। इन पत्रों से द्विवेदी जी के साहि परिवारिक एवं सामाजिक जीवन की व्यापक झाकी मिल है। आज तक हिन्दी में इस प्रकार का कोई संग्रह नहीं अतः यह प्रयत्न प्रशंसनीय ही कहा जा सकता है। जी के पत्रों का संकलन करने में यदि सम्पादक श्री बना चतुर्वेदी, श्रीरामशर्मा, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री किशो वाजपेयी तथा श्री० श्रीनाथसिंह जी आदि महानुभावों का योग भी प्राप्त कर लेते तो यह पुस्तक और भी उपादे होती। फिर भी जब तक द्विवेदी जी के पत्रों का कोई णिक संग्रह प्रकाशित नहीं होता, तब तक पाठकों यह पर्याप्त प्रेरणा प्रदान करेगा। भारतीय ज्ञानपीठ, से यह पुस्तक २॥) में मिल सकती है।

[पृष्ठ ४०३ से

प्रतिशत से अधिक कमीशन पुस्तक विक्रेताओं को सकता। यदि प्रकाशक स्वयं ही पुस्तकालयों अथवा को यह कमीशन देने लगें तो पुस्तक-विक्रेता क्या स्पष्ट है कि पुस्तक-व्यवसाय पुस्तक-विक्रेताओं के के बिना नहीं चल सकता।

—सम्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर द्वारा प्रकाशित

सम्पूर्ण शरत्-साहित्य

भारत के सर्वश्रेष्ठ कथा-शिल्पी स्व० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के सम्पूर्ण साहित्य का अतिशय प्रामाणिक और विशुद्ध अनुवाद सुलभ प्रकाशित करने की हमारी योजना अब सम्पूर्ण हो रही है। २४ भाग निकल चुकने के बाद अनेक कारणों से इसका काम रुका रहा। गत वर्षों में इसके नीचे लिखे सात भाग और निकल चुके हैं और शेष भाग यथासम्भव शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेंगे---

शरत्-पत्रावली—इस भाग में शरत्-बाबू ने अपने साहित्यिक मित्रों और लेखकों को जो पत्र लिखे थे, उनका संग्रह है, जिनसे पता लगता है कि वे कितने महान् थे और साहित्य के कितने मर्मज्ञ थे।

जागरण, आगामी काल, आने की आशा में और रसचक्र—ये चार अधूरे उपन्यास और अरक्षणीया सम्पूर्ण उपन्यास।

२८-२६—चरित्रहीन—सम्पूर्ण बृहत् उपन्यास।

विराजवहू और बचपन की कहानियाँ।

शरत्-निबन्धावली—एक से एक बढ़कर २३ निबन्धों और व्याख्यानों का संग्रह।

देनापावना और नया विधान (प्रेस में)

प्रत्येक भाग का मूल्य डेढ़ रुपया है और प्रत्येक भाग में लगभग में १६० पृष्ठ रहते हैं।

द्विजेन्द्र नाटकावली

भारत के श्रेष्ठ नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय के शुद्ध और प्रामाणिक अनुवाद :

ऐतिहासिक				पौराणिक		सामाजिक	
चन्द्रगुप्त	१)	शाहजहाँ	१॥)	भीष्म	१॥।)	भारत-रमणी	१॥)
दुर्गादास	१॥)	नूरजहाँ	१॥।)	सीता	१)	उस पार	१॥।)
मेवाड़ पतन	१=)	राणाप्रताप	२)	अहल्या	१)	सूम के घर में धूम	।=)

सर जदुनाथ सरकार

मध्यकालीन इतिहास के सर्वश्रेष्ठ और ज्येष्ठ विद्वान् के दो प्रामाणिक इतिहास :

औरंगजेब	७॥)	शिवाजी	२॥)

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य के माने हुए मर्मज्ञ विद्वान् के चार उच्चकोटि के ग्रन्थ :

हिन्दी साहित्य की भूमिका	३॥)	कबीर	४)
बाणभट्ट की आत्मकथा	५)	प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद	३)

के० एम० मुन्शी

उत्तर प्रदेश के गवर्नर और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक के तीन श्रेष्ठ उपन्यास :

पाटन का प्रभुत्व	३)	गुजरात के नाथ	४॥)	राजाधिराज	४॥)

हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों का पूरा सूचीपत्र मँगाइए

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्री तेजनारायण सक्सेना (आई० एन० सक्सेना, ए० डी० जे०, बैतूल, म० प्र०) सूचित करते हैं कि उन्होंने कुछ हास्य प्रधान निबन्धों को लिखा है। पुस्तक के रूप में (नाम : बनयात्रा) प्रकाशित करने में शायद २०० पृष्ठ तक होंगे। जिन प्रकाशकों की रुचि हो, वे पत्र-व्यवहार करें।

❖ ❖ ❖

श्री धीरेन्द्र मोहन भट्ट शास्त्री (मार्फत दीपक, नेहरा, दरभंगा) लिखते हैं—"मैं अपनी पुस्तक **महर्षि चरक का काल** किसी अच्छे प्रकाशक को देना चाहता हूँ। जो प्रकाशक पुस्तक प्रकाशित करना चाहें, पत्र-व्यवहार करें।"

❖ ❖ ❖

श्री मेघराज अर्जुन (मार्फत विशनदास पंजमल, महावीर बाजार, क्लाथ मार्केट, दिल्ली) को अपने चार तैयार उपन्यासों के लिए प्रकाशकों की आवश्यकता है।

❖ ❖ ❖

श्री लक्ष्मीनारायण कुशवाहा, एम० ए०, साहित्यरत्न, मुकाम चौबे, बदायूँ, लिखते हैं : "मेरे पास निम्नांकित अप्रकाशित ग्रन्थ हैं : (१) **चित्तौड़ भवानी** (खण्ड-काव्य), (२) **नौनिहाल** (बाल-साहित्य), (३) **सावरकर शतक** (कविता), (४) **वीर गीत** (कविता), (५) **मधुरिमा** (गीत-संग्रह), (६) **प्रणय गीत** (गीत-संग्रह)।" प्रकाशक पत्रव्यवहार करें।

[पृष्ठ ४१३ से आगे]

—विवेक-वर्द्धिनी कालेज लाइब्रेरी, गौलीगुडा।

—वैटरीनरी कालेज लाइब्रेरी, हैदराबाद।

निम्न पुस्तकालयों के नाम भी प्रकाशक अपनी सूचियों में दर्ज कर लें :

—श्री महावीर जैन लाइब्रेरी, जवाहर गंज, जबलपुर।

—रात्रि हिन्दी पाठशाला पुस्तकालय, हर्डिकर बाग, हिमायत नगर, हैदराबाद दक्कन।

—भारत हिन्दी पुस्तकालय, अमरावती (म०प्र०)।

११वाँ (अप्रैल का) अंक प्रकाशित हो गया।

आलोचना

प्रत्येक अंक सन्दर्भ ग्रन्थ के समान [संग्रह]णीय है। ११वें अंक की विषय-सूची देखिए :

● सम्पादकीय

निबन्ध

● इलाचन्द्र जोशी : विश्व-उपन्यास साहित्य का अ[तीत] और भविष्य
● प्रभाकर माचवे : मराठी रस-मीमांसा : नई दिशाएँ
● डा० धर्मवीर भारती : साहित्य की नई मर्यादा
● बलदेव उपाध्याय : वेद में गीतिकाव्य का उद्गम

अनुशीलन

● चन्द्रबली पांडेय : वीरगाथा का विरोध क्यों ?
● रामचन्द्र तिवारी : सन्त-सम्प्रदायों की राजनीतिक परि[स्थिति]

मूल्याङ्कन

● डॉ० जगदीश गुप्त : माता, क्वासि, सुहागिन
● डॉ भगवतशरण उपाध्याय : माताभूमि
● वासुदेव उपाध्याय : सार्थवाह
● गंगाप्रसाद पांडेय : जिप्सी
● माताबदल जायसवाल : दक्नी हिन्दी
● परशुराम चतुर्वेदी : आलोचना : इतिहास तथा सिद्धान्त
● डॉ० शैलकुमारी : मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ
● राजेन्द्र यादव : परेड ग्राउण्ड
● मोहन राकेश : हँसते हैं, रोते हैं
● डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित : सन्तकाव्य
● मोतीसिंह : जीवन और शिक्षा
● प्रभुदयाल मीतल : महाकवि भूषण
● डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र : विश्वधर्म-दर्शन
● केशवचन्द्र वर्मा : हमारे साहित्य में हास्यरस
● माया भटनागर : कवि आरसी की काव्य-साधना

परिचय

देश की हत्या : राधा और राजन : चन्द्रावली ... शिवालक की घाटियों में : साहित्य-साधना की ... साहित्य विवेचन।

वार्षिक मूल्य १२) प्रत्येक अंक का ३)
पहले दो अंक प्राप्य नहीं हैं। अन्य अंक मँगवाइये।

राजकमल प्रकाशन,
१, फैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...छ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

...स्थान

...हारानी सुदर्शन कॉलेज फार विमेन लाइब्रेरी, बीकानेर।
...तीलाल सेठ इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, झुंझुनू।
...र्षि कॉलेज लाइब्रेरी, अलवर।
...महल गर्ल्ज इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, जोधपुर।
...स्थान महिला विद्यालय लाइब्रेरी, उदयपुर।
...ॉ कॉलेज लाइब्रेरी, जयपुर।
...इया कॉलेज लाइब्रेरी, चूरू।
...द्या-भवन गोविंदराम सेकसरिया टीचर्स कॉलेज लाइब्रेरी, उदयपुर।
...ारदा सदन इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, मुकन्दगढ़।
...ी कल्याण इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, सीकर।
...ी बांगड़ इंटर कॉलेज, डीडवाना।
...ी महारानी साहबा गर्ल्स लाइब्रेरी, कोटा।
...ी गजेन्द्र इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, बृजनगर ...लावाड़।
...ी स्वरूप गोविंद पारीक कॉलेज, लाइब्रेरी, जयपुर।
...ाई मानसिंह मैडीकल कालेज लाइब्रेरी जयपुर।
...रोही इंटर कॉलेज लाइब्रेरी, सिरोही।
...ी० आर० चमरिया इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, ...तेहपुर।
...ी० बी० पोद्दार कॉलेज लाइब्रेरी, नवलगढ़।
...न्द्र इंटरमीडिएट कॉलेज लाइब्रेरी, बूँदी।
...र्ट कॉलेज लाइब्रेरी, कोटा।

...-प्रदेश

...ार कालेज लाइब्रेरी, रींवा।
...राजा कालेज लाइब्रेरी, छतरपुर।

...राष्ट्र

...र्मसिंह जी कालेज लाइब्रेरी, राजकोट।

—बहाउद्दीन कालेज लाइब्रेरी, जूनागढ़।

हिमाचल-प्रदेश

—वल्लभ महाविद्यालय लाइब्रेरी, मंडी।

हैदराबाद

—इण्टरमीडिएट कालेज लाइब्रेरी, औरंगाबाद।
,, ,, ,, चंदेरघाट।
,, ,, ,, गुलबर्गा।
—ईवनिंग कालेज लाइब्रेरी, हैदराबाद।
,, ,, ,, सिकन्दराबाद।
—एग्रीकल्चरल कालेज लाइब्रेरी, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
—गवर्नमेण्ट सिटी कालेज लाइब्रेरी, हैदराबाद।
—ट्रेनिंग कालेज लाइब्रेरी, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
—निजाम कालेज लाइब्रेरी, हैदराबाद।
—पीपल्स एजुकेशन सोसायटीज कालेज लाइब्रेरी, औरंगाबाद।
—पीपल्स कालेज लाइब्रेरी, नान्डेड।
—फैकल्टी आफ इंजीनियरिंग लाइब्रेरी, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
—फैकल्टी आफ साइंस लाइब्रेरी, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
—बदरुका कालेज आफ कामर्स लाइब्रेरी, हैदराबाद।
—महबूब कालेज लाइब्रेरी, सिकन्दराबाद।
—मेडिकल कालेज लाइब्रेरी, उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद।
—वारंगल कालेज लाइब्रेरी, वारंगल।
—विमन्स कालेज लाइब्रेरी, रेजिडेंसी बिल्डिंग, सुलतान बाजार, हैदराबाद

[पृष्ठ ४१२ पर देखिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—कला का पुरस्कार, ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'। कहानी संग्रह।

—जल-समाधि, ले० गोविन्दवल्लभ पन्त। सामाजिक उपन्यास। ४)

—जर्जर हथौड़े, ले० बरुआ। राजनीतिक तथा सामाजिक उपन्यास।

—डूबते मस्तूल, नरेश मेहता। सामाजिक उपन्यास। ४)

—पृथ्वी परिक्रमा, सेठ गोविन्ददास। भ्रमण विषयक ग्रन्थ।

—फ्रान्स की लोक कथाएँ, ले० मन्मथनाथ गुप्त।

—बालनीति कथा, ले० विष्णुदत्त विकल। बालकोपयोगी।

—माला, ले० डॉ० सोमनाथ गुप्त। गद्य काव्य। ।।।)

—सन्तुलन, ले० प्रभाकर माचवे। साहित्यिक लेखों का संग्रह। ४)

—साहित्यानुशीलन, ले० शिवदानसिंह चौहान। साहित्यिक लेख। ५)

आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद

—देना पावना, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय। अनु० कमला प्रसाद राय बी० ए०। सामाजिक उपन्यास। तीसरा संस्करण। २।।।)

—रजनी-गन्धा, ले० लावण्यप्रभा राय। सामाजिक उपन्यास। २)

ओरिएंटल बुकडिपो, दिल्ली

—दोनों को उल्लू बनाया, ले० धर्मपाल शास्त्री। बच्चों के लिए रोचक कहानियाँ। ।।।)

—पतलून की बन गई निक्कर, ले० धर्मपाल शास्त्री। बालोपयोगी कहानियाँ। ।।।)

—'मुन्नो' के गीत, ले० धर्मपाल शास्त्री। छोटे बच्चों के गीत। ।।।)

गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली

—कर्तव्य दर्पण, ले० नारायण स्वामी। आर्यों के दैनिक कर्तव्य, आर्य नेताओं की जीवनी आदि। पुनर्मुद्रण।

—गोरक्षा परम कर्तव्य, ले० पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति। 'सरिता' में प्रकाशित श्री रतनलाल बंसल के लेख का प्रामाणिक उत्तर।

—मनुष्य धर्म, ले० कोटूराम गुप्ता। प्राणिमात्र के प्रति व्यवहार करने के नियमों की पूर्ण व्याख्या।

नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ

—परिणीता, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय। अनु० जी० [illegible] वर्मा। उपन्यास।

—सुनहरी परी, कुमारी कमला टण्डन। बालोपयोगी।

प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून

—ममता, ले० सुषमा भाटी। सामाजिक उपन्यास।

प्रगति प्रकाशन, दिल्ली

—कला के हस्ताक्षर, ले० देवेन्द्र सत्यार्थी। निबन्ध।

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—अन्ना करेनिना, लियो टाल्स्टाय। अनु० सूरजनारायण [illegible] उपन्यास।

भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली

—वाम-मार्ग, ले० गुरुदत्त। ऐतिहासिक उपन्यास।

रंगभूमि बुकडिपो, दिल्ली

—विवाहित मनोरंजन, सम्पादित। यौन एवं कामकला सम्बन्धी।

—सिनेमा संसार, सम्पादित। फिल्मकला।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

—निबन्ध रत्न, संकलन। चुने हुए निबन्धकारों के निबन्धों का उत्कृष्ट संग्रह।

—राष्ट्रभाषा, पहली व दूसरी पुस्तक, २१वाँ तथा २२[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्द्धित संस्करण। बालकोपयोगी तथा राष्ट्रभाषा सीखने वालों के लिए मनोरंजक पुस्तक।

—रेखाचित्र, संकलन। भारत के प्रतिष्ठित लेखकों एवं नेताओं के संस्मरण चित्र। १)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-बम्बई

—... , ले० डॉ० रांगेय राघव। राजकमल कथा साहित्य माला का ६वां सामाजिक उपन्यास। १।।=)

—लोपामुद्रा, ले० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी। सुप्रसिद्ध पौराणिक उपन्यास का नया संस्करण। ५)

—... और उसका साहित्य, ले० डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित। 'भारतीय साहित्य परिचय माला' की ५वीं पुस्तक। २)

—प्रेमचन्द : एक विवेचना, ले० डॉ० इन्द्रनाथ मदान। नवीन संस्करण। ३।)

—लेनिन और अब्राहम लिंकन, ले० डॉ० इन्द्रनाथ मदान। 'आदर्श जीवन माला' के दो नये प्रकाशन।

—हिन्दी गद्य-साहित्य, ले० शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान। नया संस्करण।

—हिन्दू सभ्यता, ले० डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी, अनुवादक डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। प्राचीन भारतीय इतिहास का अनुपम ग्रन्थ।

—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, ले० डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या। हिन्दी भाषा के प्राचीनतम अनुसन्धान की अद्वितीय, पांडित्यपूर्ण कृति।

रामनारायणलाल, इलाहाबाद

—निबन्ध मुक्तावली, ले० व्यथित हृदय। आजकल के विषयों पर निबन्ध की उत्तम पुस्तक। २॥)

—बाल विवाह निरोध, अनु० राधाकृष्ण। कानून की पुस्तक। ।)

—स्वास्थ्य प्रदीपिका, ले० डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा। स्वास्थ्य विज्ञान की श्रेष्ठ पुस्तक। ग्यारहवां संस्करण १॥)

... साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—खादी द्वारा ग्राम विकास, ले० प्रभुदास गांधी। ग्राम विकास कैसे हो तथा मिल-खादी का तुलनात्मक अध्ययन। १)

—रघुवंश, कालिदास। सं० हरदयालुसिंह। कथासार।=)

—नागानन्द, हर्ष। सं० हरदयालुसिंह। कथासार। ।=)

—आत्मोपदेश, एपिक्टेटस। तत्वज्ञान विषयक विचार। १)

—बापू की बातें, बापू की जीवन सम्बन्धी घटनाएँ। ।=)

—सरल व्यायाम, व्यायाम सम्बन्धी आसन व्यायाम से लाभ। ।=)

—द्वारिका, द्वारिका का सचित्र वर्णन। ।=)

—मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार, तन्दुरुस्ती रखने की जानकारी। १)

श्यामकाशी प्रेस, मथुरा

—अंग लक्षण, श्री भगवानदास मीतल। शरीर के अंगों से मनुष्य का भविष्य वर्णन।

संगीत कार्यालय, हाथरस

—फिल्म संगीत, २४ वाँ भाग, ले० लक्ष्मीनारायण गर्ग। ७० फिल्मी गाने, स्वरलिपियों सहित। ४)

—बाल संगीत शिक्षा, भाग २, ले० डॉ० बी० एन० भट्ट। स्वरसाधन, स्वरमेल, रागों के भेद, ताल, थाट, कोरस, लोकगीत, लक्षणगीत, आरकेस्ट्रा आदि। लोअर मिडिल सेक्शन के लिए। ॥)

साहित्य निकेतन, कानपुर

—संस्कृत साहित्य की रूप-रेखा, ले० पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय व डॉ० शान्तिकुमार व्यास। संस्कृत साहित्य के इतिहास का पुनर्मुद्रण। ४॥)

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद दक्कन

—दक्षिण का गद्य और पद्य, ले० पं० श्रीराम शर्मा। महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थ। पृष्ठसंख्या लगभग ६००। सजिल्द। मूल्य ११)

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस

—भारतीय राजनीति, विक्टोरिया से नेहरू तक, ले० श्री राजगोपाल पत्रकार। राजनीतिक इतिहास। मूल्य लगभग १०)

ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, शाहदरा, दिल्ली

—सोमनाथ, ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री। इतिहास रस का उपन्यास। ४० फर्मे। पक्की जिल्द। आकर्षक आवरण। ८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई मास के प्रकाशन

अर्थ-शास्त्र, समाज-शास्त्र

कृष्णदास जाजू, सम्पत्ति-दान-यज्ञ, ४०, क्राऊन, अ० भा० सर्वसेवा संघ, वर्धा,
कैलाशनाथ शर्मा, शम्भूरत्न त्रिपाठी, व्यावहारिक समाज-शास्त्र, २७२, क्राऊन, सरस्वती सेवा सदन, कानपुर,
जगमोहन गुप्ता, राजस्थान की जातियाँ, २५१, क्राऊन, विशाल भारत बुक डिपो, कलकत्ता,
जयप्रकाश नारायण, हमारी भूमि समस्या का हल, ६३, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ वर्धा,
दादा धर्माधिकारी, मानवीय क्रान्ति, ६०, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा,
धीरेन्द्र मजूमदार, दण्ड निरपेक्ष समाज रचना, ६०, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा,
लक्ष्मीनारायण भारतीय, नई क्रान्ति, ६८, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा,
विनोबा, जमाने की माँग, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,
विमला ठकार भूदान दीपिका, २८, क्राऊन अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा,
हरनाथ कल्ला, आयकर दर्शन, ४८२, डिमाई, कल्ला व्यास पब्लिकेशन्स, जोधपुर,

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

आदर्शकुमारी, व्रज की लोक कथाएँ, ६१, १७ × २७, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,
कृष्णचन्द्र गोयल, हिन्दी साहित्य के इतिहास का चार्ट, २७ × ३४, प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून,
गुलाबराय, मन की बातें, १७३, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,
चारुदेव शास्त्री प्रो०, शब्दापशब्द विवेक, ३८५, क्राऊन, भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर,
जगदीशचन्द्र जैन, भारतीय तत्त्व चिन्तन, २२०, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली,
जगदीशनारायण त्रिपाठी, शम्भूरत्न त्रिपाठी, हिन्दी रचना प्रकाश १ भाग, ११२, क्राऊन, पु० मु०, सरस्वती सेवासदन, कानपुर,
जगदीश नारायण त्रिपाठी, शम्भूरत्न त्रिपाठी, हिन्दी रचना प्रकाश २ भाग, २७२, क्राऊन, पु० मु०, सरस्वती सेवासदन, कानपुर,
प्रीतम पंछी, बनजारा बेदी, पंजाब की लोक कथाएँ, १७ × २७, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,
भगवतीप्रसाद वाजपेयी अभिनन्दन ग्रन्थ, २४०, डिमाई, वाजपेयी अभिनन्दन समिति, कानपुर,
माया गुप्त, बंगाल की लोक कथाएँ, १७ × २७, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,
विश्वनाथ शास्त्री, न्याय बोधिनी, ११२, क्राऊन, भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर,
शिवस्वरूप गुप्त, यशोधरा परिशीलन, ११२, क्राऊन, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...और समीक्षा, १५६, क्राऊन, पु० मु०, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, २॥)

उपन्यास

...देवन शर्मा, शराबी, १८४, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, ३)
...मीठा ज़हर, १२८, क्राऊन, प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून, १)
...बाहर-भीतर, १३२, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, १।।।=)
...मानव की परख, १८६, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली, ३)
...बाबा बटेसरनाथ, १४८ क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, १।।।=)
...चर्जी, अनु० जयकृष्ण शुक्ल, परिणीता, १२० क्राऊन, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद, १।।)
...चर्जी, अनु० जी० एस० वर्मा, देवदास, १४४, क्राऊन, नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ, २)
...चर्जी, अनु० प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव, विराज बहू, १४०, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा, २)
...चर्जी, अनु० प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव, वैरागी, १४८, क्राऊन,, प्रभात प्रकाशन, मथुरा, २)

कविता

...लालंकार, नया स्वर्ग, ७६, क्राऊन, प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून, १)
...डॉ०, रामस्वरूप चतुर्वेदी सं०, नयी कविता १, ६६, डिमाई, कविता-प्रकाशन-समिति, इलाहाबाद, २)
...चतुर्वेदी 'मस्त', प्राणोत्सर्ग, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, १।)
...गीत : मृत्यु-गीत और जीवन-गीत, ८०, क्राऊन, साहित्य निकेतन, कानपुर, १।।)
...मंगल, ८०, क्राऊन, वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, १)
...भारतीय, नई क्रान्ति के गीत, ५६, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा, ।)

कहानियाँ

...की लाश, १०४, क्राऊन, पु० मु०, भारती प्रकाशन, भागलपुर, १=)
...अनु० राजनाथ, चेलकश, २५६, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा, ३)
...कुब्जा सुन्दरी, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, २)

धार्मिक

...व्यवहार शुद्धि, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा, ।)
...तत्व चिन्तामणि भाग ३, ४२४, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर, ।।≡)
...रामायण गुटका मूल, ६८०, ३२ पेजी, क्राऊन, पु० मु० गीता प्रेस, गोरखपुर, ।।।)
...संस्कार-विधि, ३००, क्राऊन, पु० मु०, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, ।।।-)
...सन्ध्या रहस्य, ६६, क्राऊन, पु० मु०, गोविन्दराम, हासानन्द, दिल्ली, ।=)
...सामाजिक पद्धति, ६६, क्राऊन, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, ।=)
...अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य भाग २१ : "धर्म" क्राऊन,
...रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता—७, २।)
...प्रवर्तन, ६७, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा, ।)
...पोद्दार, रामायण बड़ी सटीक, १२००, ११×७, पु० मु०, गीता प्रेस गोरखपुर, ७।।)
...पोद्दार, रामायण मंझली सटीक, १००० क्राऊन, पु० मु० गीता प्रेस, गोरखपुर, ३।।)
...पोद्दार, विनय पत्रिका, ४७२, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर, १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिकृष्णदास गोयनका, पातंजल योगदर्शन, १७६, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर,

नाटक

गोविन्ददास, शेरशाह, १७८, क्राऊन, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली,

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० धन्यकुमार जैन, रवीन्द्र साहित्य भाग १७ तपती, १३६, क्राऊन, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर कलकत्ता,

बालोपयोगी

अरुण एम० ए०, हँसो बच्चो, क्राऊन, निष्काम प्रकाशन, मेरठ,

कमला रानी संत्री, हैदराबाद के ऐतिहासिक कलास्थान, ४२, हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार, सभा हैदराबाद,

काका, म्याऊँ, १६०, क्राऊन संगीत कार्यालय, हाथरस

जगन्नाथ, हमारा समाज भाग २, १०५, क्राऊन, पु० मु०, राजकमल प्रकाशन दिल्ली,

दयाशंकर दद्दा, नटखट नंदू, ३६, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,

नागार्जुन, कथामंजरी,१७—२७, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,

बालभट्ट, आटे बाटे, ३२, क्राऊन, सुशील कार्यालय, दिल्ली,

बालभट्ट, चौबे की चोटी, ३२, क्राऊन, सुशील कार्यालय, दिल्ली,

बालभट्ट, चौमुखा चिराग; ३२, क्राऊन, सुशील कार्यालय, दिल्ली,

बालभट्ट, पत्थर हजम,३२, क्राऊन, सुशील कार्यालय, दिल्ली,

बालभट्ट, मुल्ला की दाढ़ी, ३२, क्राऊन, सुशील कार्यालय दिल्ली,

बालभट्ट, फूंकूं भांके, ३२- क्राऊन, सुशील, कार्यालय, दिल्ली,

बालभट्ट, सोने की दीवार, ३२, क्राऊन, सुशील, कार्यालय, दिल्ली,

रवीन्द्रनाथ, ठाकुर, स्वर्ग की सैर,२८, क्राऊन, जनमित्र प्रकाशन, प्राप्तिस्थान : विजय प्रकाशन, दिल्ली,

रामचन्द्र तिवारी, बूढ़े बच्चे, ८०, (१७—२७) आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,

विमला लूथरा, दो एकांकी, २४, हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद,

स्वेट मार्डेन, अनु० नाथूराम शुक्ल, आगे बढ़ो, १२८, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,

सन्तराम विचित्र, लोकतन्त्र, ४८, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली,

हनुमानप्रसाद पोद्दार, दयालु परोपकारी, ६८, क्राऊन, गीता प्रेस, गोरखपुर,

हनुमानप्रसाद पोद्दार, बाल अमृत कथा, ३२, क्राऊन, गीता प्रेस, गोरखपुर,

हनुमानप्रसाद पोद्दार, बालचित्र रामायण भाग १, १० × ७½, गीता प्रेस, गोरखपुर,

विविध

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, स्वप्नसिद्धि की खोज में, ३४०, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

कृष्णदत्त वाजपेयी, उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति, ३३, रायल, सचित्र, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ,

भिसे आचार्य, पाटिल, खेती शिक्षा, १२०, डिमाई, पु० मु०, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा,

प्रकाशरानी भटनागर, सूची शिल्प-शिक्षा, १५०, क्राऊन, सरस्वती सेवा सदन, कानपुर,

मन्मथनाथ गुप्त, सेक्स का स्वभाव, २१०, क्राऊन, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली,

महेशनारायण सक्सेना, लक्ष्मीनारायण गर्ग, राग मंजरी, ३२, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस,

यशपाल जैन सम्पादक, हृदय मन्थन के पाँच दिन, ६०, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, प्रकाशन स[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है: पूरा पृष्ठ: ६"×८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{3}{4}$"×६" या २$\frac{3}{4}$"×८"। चौथाई पृष्ठ: २$\frac{3}{4}$"×३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच: १"×२$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग: ५$\frac{1}{2}$"×६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं:

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ: १७॥)। चौथाई पृष्ठ: १०)। एक कालम इंच: ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में: ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में: ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में: ६०)। मध्य का पृष्ट, दो रंगों में, ले-आउट-सहित: १००)।
- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D-594

सस्ते मूल्य में

उत्कृष्ट
मौलिक
उपन्यास

राजकमल कथा साहित्य माला में अब तक ६ उपन्यास प्रकाशित हो चुके थे। सभी उपन्यास नये हैं और पहली बार इसी माला में छपे हैं। इनकी पृष्ठ-संख्या १४४ से २५६ तक और मूल्य प्रत्येक का एक रुपया चौदह आने मात्र है।

इतने सस्ते दामों में इतने बढ़िया उपन्यास देने के कारण पाठकों ने राजकमल कथा साहित्य माला का स्वागत किया है। और फिर, इन उपन्यासों की लोकप्रियता भारत-भर के पुस्तक-विक्रेताओं से इनकी निरन्तर माँग आने से स्वयंसिद्ध है। अब इसी माला में तीन नवीन, सरस उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है

तीन नवीन सरस उपन्यास

'पथ की खोज' के ख्यातिप्राप्त लेखक डॉ० देवराज की नई कृति

बाहर-भीतर

'बलचनमा' के लेखक नागार्जुन की लेखनी का नया चमत्कार

बाबा बटेसरनाथ

कुशल कथाकार डा० रा... राघव का अभिनव उप...

उबाल

राजकमल

राजकमल प्रकाशन
१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली
हिमालय हाउस हार्नबी रोड, बम्बई

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जुलाई, १९५४ अङ्क ११
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक... और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

हंस प्रकाशन की ४ नई भेंटें

बिखरे मोती सुभद्राकुमारी चौहान को कौन नहीं जानता ? उन्हीं की एक-से-एक सुन्दर कहानियों का सेकसरिया पारितोषिक-प्राप्त संग्रह । मोनो की मोती के दाने-जैसी छपाई । पृष्ठ ११६— मूल्य रु० २॥)

• • • • •

मुकुल सम्मेलन के सेकसरिया पारितोषिक-प्राप्त कविता-संग्रह 'मुकुल' का नाम कोई नया नाम नहीं है। सुभद्रा जी की उसी अद्वितीय पुस्तक का यह नया और अत्यन्त सुन्दर संस्करण है । 'मुकुल' में वह अमर आल्हा 'झाँसी की रानी' भी शामिल है। पृष्ठ १३०— मूल्य रु० २॥)

• • • • •

साहित्य का उद्देश्य प्रेमचन्द के सभी साहित्य और भाषा-सम्बन्धी लेख और टिप्पणियाँ अब एक जगह पर आपको मिल जायँगी । पहले के संकलन 'कुछ विचार' में बहुत-सी नयी सामग्री जोड़कर 'साहित्य का उद्देश्य' प्रकाशित किया जा रहा है । पृष्ठ २८८— मूल्य रु० ४)

• • • • •

चचा छक्कन चचा छक्कन के रूप में इम्तयाज़ अली 'ताज' ने ऐसे चरित्र की सृष्टि की है जिसकी साहित्यिक अमरता सिद्ध है । कितने बौड़म मगर कितने प्यारे आदमी हैं चचा छक्कन ! जिस चीज़ में उनका हाथ लगा कि बस... हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं । पृष्ठ १०२— मूल्य रु० १॥)

हंस प्रकाशन, ९२ जीरो रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना-साहित्य की अनुपम कृतियाँ

१. मिट्टी की ओर : श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

वर्तमान कविता-साहित्य के संबंध में दिनकर जी के ओजस्वी भाषणों और सुचिंतित निबन्धों का संग्रह हिन्दी-कविता की वर्तमान प्रगति को समझने के लिए इस पुस्तक से बढ़कर दूसरी कोई पुस्तक नहीं मिलेगी। इस पुस्तक की सभी रचनाएँ पढ़ने एवं मनन करने योग्य हैं। मूल्य—४)

२. दिनकर की काव्य-साधना : प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव

दिनकर-साहित्य के प्रेमियों की संख्या अगणित है। यह पुस्तक उन्हीं के अध्ययन के अभिलाषियों की सहायता करती है। दिनकरजी के काव्य की सभी विशेषताओं की ओर लेखक ने बहुत ही प्रभावशाली एवं रोचक ढंग से पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। मूल्य—२॥)

३. साहित्य-समीक्षा : प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा

यह पुस्तक लेखक के महत्त्वपूर्ण निबंधों का संग्रह है। साहित्य के सभी अंगों पर समुचित रूप से प्रकाश डाला गया है। फिर भी, लेखक की शैली ऐसी है कि पढ़ते ही आनंद आ जाता है। जगह-जगह तीखा व्यंग्य, दो टूक उक्ति—लेखक की अपनी विशेषता है। मूल्य—२॥)

४. काव्य और कल्पना : डॉ० रामखेलावन पाण्डेय

इस पुस्तक के सभी निबंध लेखक के गम्भीर अध्ययन एवं पर्याप्त विवेचन के द्योतक हैं। सभी निबंध विचारोत्तेजक हैं। हिन्दी-साहित्य के पाठकों के लिए यह पुस्तक अपने ढंग की अकेली है। मूल्य—३॥)

५. निर्गुण-काव्य-दर्शन : प्रो० सिद्धिनाथ तिवारी

निर्गुण-काव्य के संबंध में एक स्थान पर इतनी सामग्री इस पुस्तक को छोड़कर कहीं और नहीं मिलेगी। लेखक ने निर्गुण-साहित्य के मूल्यांकन में केवल अध्ययन का ही सहारा नहीं लिया है, उसने काफी चिंतन के बाद इसकी सभी बारीकियों का अंकन किया है। मूल्य—५)

६. उपन्यास के मूल तत्त्व : प्रो० जयनारायण, एम० ए०

सफल उपन्यास के लिए किन-किन तत्त्वों का होना आवश्यक है तथा उपन्यास-लेखक को उपन्यास लिखते समय किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए—आदि बातें इस पुस्तक में बताई गई हैं। पुस्तक उपन्यास के पाठकों के लिए ही नहीं, अपितु उपन्यास-लेखकों के लिए भी पठनीय है। मूल्य—१)

७. चिंता-धारा : श्री जानकीवल्लभ शास्त्री

यह पुस्तक लेखक के कई चिंतन-प्रधान निबंधों का संग्रह है। सभी निबंध अध्ययनपूर्ण, सुचिंतित एवं मौलिक हैं। लेखक ने प्रभावोत्पादक एवं तार्किक ढंग से साहित्य के संबंध में अपने विचार प्रकट किये हैं। मूल्य—३)

८. साहित्य-विवेचन : श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र

आलोचना-साहित्य में यह पुस्तक निराली है। इस पुस्तक के सभी निबंध पाठक को सोचने एवं मनन करने के लिए काफी सामग्री प्रस्तुत करते हैं। साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अपने ढंग की अकेली है। मूल्य—२॥)

• • प्रकाशक • •

श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :

: अंक ११ :

सम्पादक : श्री प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

गुरुकुल-पत्रिका

...के प्रकाशन-जगत् की एक निन्दनीय तथा भर्त्सना योग्य ... यह है कि जिन पुस्तकों की बिक्री किसी अन्य प्रकाशक ... अच्छी हुई हो, उन्हें ही शब्दों के हेर-फेर के साथ ... कर लिया जाता है। इस प्रवृत्ति के पीछे प्रारम्भिक ... न लेने की भावना ही काम करती है। लेकिन ... तथा प्रकाशकों द्वारा इस प्रवृत्ति के कारण धन तथा ... का जो अपव्यय हो रहा है, वह यदि न होता तो हिन्दी-... अपनी कितनी ही विभिन्न कमियों को पूरा कर ... था।

... प्रवृत्ति मुख्यतः अनुवादों में तथा बिना रायल्टी की ... के प्रकाशन-क्षेत्र में दीख पड़ती है। बम्बई से प्रका-... 'शरत्-साहित्य' की सफलता के बाद आज शरच्चन्द्र ... कृतियों के हिन्दी-रूपान्तर भारत के प्रायः सभी ...स्थानों से हुए हैं। बंकिम के उपन्यासों के अनुवाद ... से छपे हैं। श्री कन्हैयालाल मुन्शी की बिना कॉपी-... पुस्तकें दो-दो तीन तीन संस्थाओं ने निकाली हैं। ... 'माँ' कहाँ-कहाँ से प्राप्य है, इसका शीघ्र ही कोई लेखा ... क्योंकि इस अमर उपन्यास के कितने ही नये संस्करण ... जा रहे हैं। पर्ल बक की 'गुड अर्थ' के तीन अनुवाद ..., 'मिट्टी की माया' तथा 'अच्छी धरती' के ... मिलते हैं। तुर्गनेव की 'नेस्ट ऑफ़ जेंटलफ़ोक' के इसी ... अनुवाद 'कुलीन घराना' तथा 'भद्रलोक का नीड़' के ... से प्रकाशित हुए हैं। बंगाल के श्रेष्ठ नाटककार ...राय के नाटकों के अधिकृत तथा प्रामाणिक अनुवाद ... श्री नाथूराम 'प्रेमी' ने प्रकाशित किये हुए हैं; अब ... नये अनुवादों के प्रकाशन की सूचना मिली है। देश के मूर्धन्य कवि रवि बाबू की कहानियों, कविताओं तथा उपन्यासों के जिस अनुत्तरदायित्वपूर्ण निर्ममता से हिन्दी-अनुवाद तथाकथित प्रकाशकों द्वारा हो रहे हैं, वह राष्ट्रीय कलंक के समान है।

इस प्रवृत्ति के पीछे हमें केवल दूषित व्यावसायिकता ही दिखाई पड़ती है। यह भी मालूम होता है कि 'प्रकाशन' का कितना संकुचित अर्थ यहाँ के तथाकथित प्रकाशकों द्वारा समझा जाता है। ऐसे प्रकाशक, जिन्हें इधर 'श्रमजीवी प्रकाशक' का नया नाम देकर पुकारा जा रहा है (शायद इसलिए कि इससे लोकप्रिय नारे का-सा बोध होता है), न प्रकाशन-व्यवसाय के प्रति ईमानदारी बरतते हैं, न साहित्य के प्रति, न लेखकों के प्रति और न हिन्दी के प्रति। दूसरों के श्रम पर अपनी जीविका चलाने के अतिरिक्त वे और कुछ नहीं कर रहे। इससे न तो साहित्य को कोई गौरव प्राप्त होगा, न हिन्दी को सम्मान; हाँ, कुछ प्रकाशकों की जेब अवश्य भरेगी।

ऐसे प्रकाशक ही इस प्रकार की पुस्तकों को, जिन पर रायल्टी नहीं देनी पड़ती और जिनके प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता, न्यूज़प्रिंट पर, घटिया तरीकों से छापकर, अधिक व्यापाराना कमीशन देने में सफल होते हैं। ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं को भी, जो केवल उन्हीं पुस्तकों को खरीदना व बेचना पसन्द करते हैं जिन पर अधिक कमीशन मिलता हो, 'श्रमजीवी पुस्तक-विक्रेता' का नाम दिया जा रहा है। प्रकाशन अथवा विक्रय के व्यवसाय में, 'श्रमजीवी' होने के अर्थ क्या हैं? 'श्रमजीवी' का अर्थ 'परिश्रम-जीवी' है, न कि 'पर-श्रम-जीवी'। जरूरत इस बात की है कि हम इस नारेबाज़ी में न पड़कर प्रकाशन की वास्तविक, सामयिक समस्याओं को समझें और उन्हें सुलझाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री पर

कमीशन मत काटिए

टॉमस ए० जॉय

'प्रकाशन समाचार' के लिए प्रेषित इस विशेष लेख के लेखक ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड के पुस्तक-विक्रेता-संघ के उपप्रधान और कोषाध्यक्ष हैं।

'नेट बुक सिस्टम' के आरम्भ होने तक इंग्लैण्ड के पुस्तक-विक्रेताओं की दशा अच्छी नहीं थी। इस प्रणाली के बन्धन के अनुसार कोई दुकानदार किसी भी खरीदार को पुस्तकों की खरीद पर कोई कमीशन नहीं दे सकता, चाहे खरीद कितनी ही बड़ी हो। चाहे खरीदार पाँच रुपये व्यय कर रहा हो अथवा पाँच हजार; उसे पुस्तकों पर छपा हुआ मूल्य ही देना होगा। इसके अतिरिक्त किसी संस्था अथवा पुस्तकालय की खरीद पर भी कोई कमीशन नहीं काटा जाता; केवल कुछेक उन पुस्तकालयों को छोड़कर जिन्हें प्रकाशक-संघ एक ऐसा विशेष अनुमति-पत्र (लाइसेंस) दे दे जिसकी मदद से वे कुछेक मनोनीत पुस्तक-विक्रेताओं से प्रकाशित मूल्य पर १० प्रतिशत कमीशन प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रणाली के, जिसे लगभग पचास वर्ष पहले व्यवहार में लाया गया था, आरम्भ होने से पहले दुकानदारों में अधिकाधिक कमीशन काटने की होड़ उन्हें दिवालिया बना रही थी। इससे जन-साधारण को भी नुकसान पहुँच रहा था, क्योंकि परिणामस्वरूप अच्छी दुकानों की संख्या दिन प्रति-दिन घट रही थी।

इंग्लैण्ड में प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता के लिए इंग्लैण्ड के प्रकाशक-संघ द्वारा प्रस्तुत एक अनुबन्ध (एग्रीमेंट) पर हस्ताक्षर करना आवश्यक है, जिसमें वह इस बात का आश्वासन दिलाता है कि वह कमीशन काटकर पुस्तकें नहीं बेचेगा और न किसी अन्य रूप में ग्राहक को तोहफ़ा आदि देगा। यदि कमीशन देने वाले किसी दुकानदार का पता च[लता है] तो सब प्रकाशक तथा थोक-विक्रेता उसे पुस्तकें देना [बन्द कर] देते हैं। लेकिन व्यवहार में सभी दुकानदार इस [बात से] खूब वाकिफ़ हैं कि पुस्तक-व्यवसाय की कुल भलाई [इस] समझौते पर आश्रित है। फलस्वरूप पुस्तक व्यवसाय [के इति]हास में इस समझौते से सम्बन्धित नियमों को भंग [करने की] कोई विशेष कोशिशें नहीं हुई हैं।

यदि किसी दुकानदार के पास कुछ ऐसी अनबिकी [पुस्तकें] रह जायँ जिन्हें वे पूरे प्रकाशित मूल्य पर ऐसी पुस्तकें [प्रकाशन] के एक वर्ष बाद तक बेचने में असमर्थ रहे तो वह इन पु[स्तकों की] वापसी के विषय में प्रकाशक से पूछ सकता है। यदि [प्रकाशक] इन्हें लेने के लिए तैयार न हो तो उन्हें किसी भी [मूल्य पर] बेचने के लिए वह स्वतन्त्र है। लेकिन प्रकाशक [को] सूचना दिये बिना यदि प्रकाशित मूल्य से कम [पर कोई] दुकानदार पुस्तकें बेचे तो उसे यह समझौता तोड़ने [का अप]राधी समझा जायगा। यदि किसी दुकानदार को कमी[शन देते] हुए पकड़ लिया जाय तो उसकी शिकायत प्रकाशक[-संघ और] पुस्तक-विक्रेता-संघ के सामने पेश की जाती है। [ये दोनों] संस्थाएँ ऐसी शिकायत की जाँच-पड़ताल करती हैं [और यदि] दुकानदार दोषी ठहरा तो उसे प्रकाशकों से व्यापारा[र्थ कमीशन] पर पुस्तकें मिलना बन्द हो जाता है।

इंग्लैण्ड में आजकल जो 'नेट बुक एग्रीमेंट' ला[गू है] उसकी कुछ प्रमुख धाराएँ निम्नलिखित हैं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम इंग्लैण्ड के प्रकाशक, इस इच्छा से कि जनता को (जिन में स्कूल, पुस्तकालय तथा संस्थाएँ भी हैं) प्रकाशित मूल्यों पर ही मिलें, आपको सूचित करते हैं कि हम आपको 'नेट' दामों पर बिकने वाली पुस्तकों पर व्यापाराना कमीशन उसी हालत में काटेंगे जब कि आप आश्वासन दिलाएँ कि

१. किसी 'नेट' पुस्तक को उसके प्रकाशित मूल्य से कम पर न बेचेंगे—सिवाय उन परिस्थितियों में, जो कि नीचे दी हैं :

२. किसी 'नेट' पुस्तक की 'सेकण्ड-हैण्ड' प्रति उसके प्रकाशन के ६ मास के भीतर नहीं बेचेंगे।

३. किसी पुस्तक की खरीद के एक वर्ष के भीतर उसकी प्रतियों को 'डेडस्-टाक' नहीं समझेंगे।

४. ऐसे 'डेड-स्टाक' को छपे हुए दामों से कम पर, अपनी खरीद पर अथवा खरीद से प्रस्तावित घटे हुए मूल्य पर (जो भी कम हो) तब तक नहीं बेचेंगे जब तक कि उसे पुस्तक के प्रकाशक को खरीदने के लिए न कहेंगे।

५. फुटकर व्यापारियों को उसी दशा में पुस्तकें बेचेंगे जब वे इस समझौते की १ से ४ तक की सब शर्तों के पालन का आश्वासन दें।

६. किसी ऐसे खरीदार को पुस्तक न बेचेंगे जो कि इसे कम दामों पर बेचे।

इन शर्तों में से किसी का भी उल्लंघन हुआ तो हम आपको खरीद पर व्यापाराना कमीशन नहीं काटा करेंगे।''

इस समझौते में समय-समय पर परिवर्तन व संशोधन होते रहे हैं। बाद के एक संशोधन में यह भी कहा गया है कि ग्राहकों को किसी प्रकार का नगदी अथवा भेंट के रूप में कमीशन देना, तीस रुपये से कम दाम की पुस्तकों पर पोस्टेज छोड़ना, 'नॉन-नेट' (अर्थात् जिन पर कमीशन काटने की छूट है) पुस्तकों पर दिये जाने वाले कमीशन की दरें घोषित होने से पहले पुस्तकें बेचना नियम-विरुद्ध है।

कहा जा सकता है कि इंग्लैण्ड के पुस्तक-व्यवसाय की उन्नति का श्रेय इस 'नेट-बुक-एग्रीमेंट' को ही है।

हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए

हमारा गौरवान्वित प्रकाशन :

भाषा-विज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित

डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या कृत

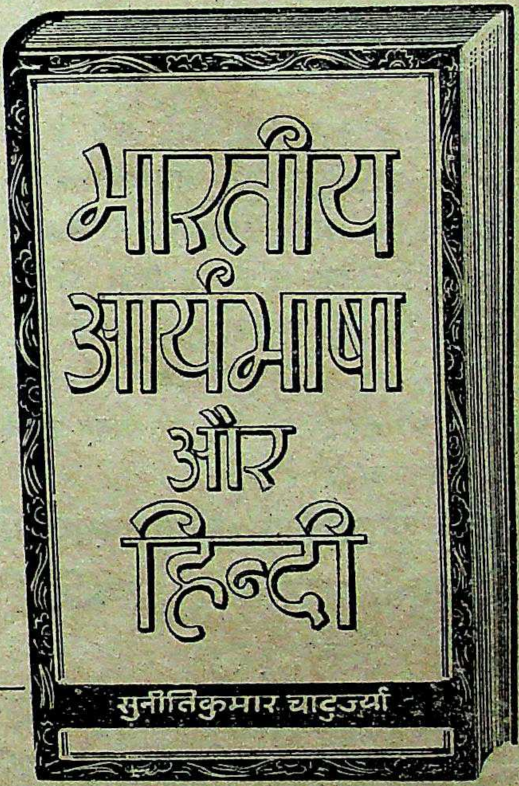

हिन्दी-भाषा का प्राचीनतम अनुसन्धान, तथा उसका अद्यतन इतिहास।

डिमाई आकार के लगभग पौने तीनसौ पृष्ठ। मूल्य ६)। ३० जुलाई १९५४ को प्रकाशित होगा।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों पर एक और टैक्स

भारत सरकार के इस नये कानून द्वारा प्रकाशकों को अपने प्रत्येक प्रकाशन की चार-चार प्रतियाँ सरकारी पुस्तकालयों को अपने खर्चे पर अमूल्य भेजनी पड़ेगी !

लोक-सभा के पिछले अधिवेशन में भारत-सरकार ने एक कानून पास करवाया है जिसके अनुसार सब प्रकाशकों को अपने सब नये प्रकाशनों की चार-चार प्रतियाँ सरकार द्वारा मनोनीत चार सार्वजनिक पुस्तकालयों को अपने खर्चे से अमूल्य भेजनी होंगी। प्रकाशकों पर पड़ने वाले इस नये 'कर' की ओर हमने अपने गत अंक के सम्पादकीय में प्रकाशन-जगत् का ध्यान आकर्षित किया था। इस कानून को अब २१ मई १९५४ के गजट में प्रकाशित करके लागू कर दिया गया है।

प्रकाशकों की जानकारी के लिए इस कानून का हिन्दी-रूपान्तर यहाँ दिया जा रहा है।

सार्वजनिक पुस्तकालयों (पब्लिक लायब्रेरी) को पुस्तकें प्रदान करने का अधि-नियम, १९५४

नम्बर २७, सन् १९५४

राष्ट्रीय पुस्तकालय तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों को पुस्तक प्रदान करने के लिए अधिनियम।

भारतीय गणराज्य के पाँचवें वर्ष में लोक-सभा द्वारा इसका विधायन, निम्न प्रकार से होगा—

१. आगम तथा क्षेत्र—(१) इस अधिनियम का नाम 'पुस्तक-प्रदान' (सार्वजनिक वाचनालयार्थ) अधिनियम, १९५४ होगा।

(२) जम्मू और काश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण भारत तक इसका विस्तार होगा।

२. परिभाषाएँ—इस अधिनियम के अन्तर्गत केवल उसी स्थिति में यदि प्रसंग कोई और न हो—

(अ) "पुस्तक" के अन्तर्गत वे सब ग्रन्थ, ग्रन्थ का अंश व भाग और पुस्तिका, चाहे किसी भी भाषा में हो और संगीत-विषयक प्रत्येक पत्र, मानचित्र, चार्ट अथवा चाहे वह अलग से मुद्रित हो अथवा लिथो पर हो, आते हैं किन्तु उनमें उस समाचार-पत्र का नहीं है जो प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट, १८६८ का XXV के ५वें भाग की किसी धारा के अ आता है।

(ब) "सार्वजनिक पुस्तकालयों" का अर्थ है कलकत्ता राष्ट्रीय पुस्तकालय और वे कोई भी तीन अन्य पुस्तकालय केन्द्रीय सरकार के अधिकृत गजट में विज्ञप्ति द्वारा नि किये जायँ।

३. सार्वजनिक पुस्तकालयों को पुस्तक-प्रदान

(क) यह कार्य इस अधिनियम के अन्तर्गत बनाये गये के अनुकूल होगा किन्तु प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ एक्ट १८६८ (१८६८ के XXV) की ७वीं आदेशों के प्रतिकूल नहीं होगा। प्रकाशक प्रत्येक पुस्त इस अधिनियम के क्षेत्र के अन्तर्गत प्रकाशित हो इस अधिनियम के प्रारम्भ होने के पश्चात् किसी भी के होते हुए अपने व्यय पर उसकी एक प्रति राष्ट्रीय पुस्तकालय और ऐसी ही एक प्रति अन्य तीन पुस्तकालयों को प्रकाशन-तिथि के तीस दिन के ही भेजेगा।

(ख) राष्ट्रीय पुस्तकालयों को भेजी हुई प्रति सम्पूर्ण की वैसी ही प्रति होनी चाहिए जिसमें वे तमाम मान चित्र होंगे जो हर पुस्तक में हैं, जो अन्य प्रतियों भाँति उसी रंग और प्रकार से छपी होनी चाहिएँ सजिल्द, सिली हुई और उत्तम कागज पर छपी होनी जिस पर कि पुस्तक की प्रत्येक प्रति छपी है।

(ग) अन्य किसी भी सार्वजनिक पुस्तकालय को भे

[आगे पृष्ठ ४२...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कृष्ट उपन्यास और कथा-साहित्य

उपन्यास

...सांकृत्यायन

४) ५) २।) २।) ३) ३।।) ५)

...त्रिपाठी 'निराला'

१।।) २।) ३)

...नाथ गुप्त

१।) १।।) १।।)

...भटनागर

३) २।।)

...लाल मुन्शी

३) ३) ३) ३) ४) २) ६) ६।।) ५) ४।।) ५)

...राघव

६।।) ७।।) ५) ३।।) ५)

नागार्जुन

रतिनाथ की चाची २।।)
बलचनमा ३)
नई पौध २।।)

प्रो० धर्मेन्द्र

रूप और ईश्वर २।।)
तैमूर २।।।)
रजिया १।।)

सूर्य्या कमलानी

मौत के मुँह में १)
प्रेम का चक्कर १)
खूनी कौन ? १)
हीरे की चोरी १)
पीताम्बर का खून १)
बैंक में डाका १)
कठपुतली का रहस्य १)
नागिन १)
अपराधों की छाया में १)
खूनी चक्कर १)
जाली वसीयत १)
वासना का जहर १)

एमिल जोला

नाना ३)
नाना की माँ ३।।।)

विविध

साइकिल चोर : बार्तोलीनी ३)
दिव्य जीवन : फ्रांज वर्फेल २)
अतृप्त वासनाएँ : अ० मोराविया २)
पेरिस का रँगीला : गा० द० मोपासां ३।।)

कहानी

'निर्गुण'

टूटे सपने ३)
प्यार के भूखे ३।।)
जिन्दगी ३)

मोहनसिंह सेंगर

मुर्दे की मौत २।।)
स्केण्डल ३)
खून के धब्बे २)
जीवन का सत्य २।।।)

रांगेय राघव

अंगारे न बुझे २।।)
इंसान पैदा हुआ २।।)
ऐयाश मुर्दे ३।)

भगवतशरण उपाध्याय

संघर्ष २)
गर्जन २)

रघुवरसिंह

शिकार की कहानियाँ २।।)

'निराला'

चतुरी चमार १।।)

राहुल सांकृत्यायन

वोल्गा से गंगा ४)
सतमी के बच्चे १।)

विविध

नगर के पथ पर : चन्द्रप्रभा द्विवेदी १।।।)
रोटी का टुकड़ा : शिवनारायण १।)
स्नेह-दान : हरिशंकर १।।)
खण्डहर की आत्माएँ : इलाचन्द्र जोशी ३)
सिंदूर बिन्दी : इक़बाल बहादुर २।।)

लोक-विज्ञान

जगपति चतुर्वेदी

विलुप्त जन्तु २)
ज्वालामुखी २)
जीने के लिए २)
बिजली की लीला २)
वनस्पति की कहानी २)
समुद्री जीव-जन्तु २)
भूगर्भ-विज्ञान २)
वैज्ञानिक आविष्कार : भाग १ २)
वैज्ञानिक आविष्कार : भाग २ २)
पेनसिलीन की कहानी २)
कोयले की कहानी २)
तत्त्वों की खोज में २)
विलुप्त वनस्पति २)
कीटाणुओं की कहानी २)
शल्य विज्ञान की कहानी २)
आविष्कारों की कहानी २)

विशेष जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाएँ

किताब महल (डिपो ४), जीरो रोड, इलाहाबाद।

पुस्तकें मँगवाते समय 'प्रकाशन समाचार' का हवाला अवश्य दीजिए। धन्यवाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४२२ से आगे]

प्रति उसी कागज पर छपी होनी चाहिए जिस पर बिक्री के लिए पुस्तक की सारी प्रतियाँ छपी हैं और उसका वही आकार-प्रकार व दशा होनी चाहिए जो अन्य बिक्री वाली पुस्तकों की है।

(घ) उपविभाग (क) के आदेश पुस्तक के द्वितीय अथवा बाद के उन संस्करणों पर लागू नहीं होंगे जिनमें 'लेटर प्रेस' अथवा नक्शों में, बुक-प्रिंट व अन्य कलमकारी में, जो कि पुस्तक के भाग हैं, कोई वृद्धि या परिवर्तन नहीं होगा और जिनका प्रथम संस्करण व उनका पूर्व संस्करण इस अधिनियम के अन्तर्गत भेजा जा चुका है।

४. प्रदत्त पुस्तकों के लिए रसीद—सार्वजनिक पुस्तकालय का इन्चार्ज (जो लायब्रेरियन हो या उसका कोई और नाम हो) या कोई और अधिकृत व्यक्ति उस कार्य के लिए नियुक्त हो जिसे कि विभाग ३ के अन्तर्गत एक प्रति भेजी गई है, वह प्रकाशक को उसकी एक रसीद लिखकर देगा।

५. दण्ड—कोई भी प्रकाशक जो इस अधिनियम की किसी भी धारा या नियम का उल्लंघन करेगा उसे पुस्तक के मूल्य तथा ५० रुपये तक का जुर्माना देना पड़ेगा और जिस न्यायालय में उस पर मुकद्दमा चलाया जायगा, उसे यह अधिकार होगा कि वह आदेश दे दे कि सारा जुर्माने का पैसा या उसका एक अंश, जो उससे वसूल किया जायगा, क्षति-पूर्ति के रूप में उस पुस्तकालय को दे दिया जाय जिसे प्रकाशक की ओर से पुस्तक प्रदान की जानी चाहिए थी।

६. अपराधों में हस्तक्षेप—(क) इस अधिनियम के अन्तर्गत किसी भी दण्ड के योग्य अपराध में कोई भी अदालत हस्तक्षेप नहीं करेगी; केवल उस शक्ल में ही वह हस्तक्षेप करेगी जब कि कोई अधिकारी, जिसे केन्द्रीय सरकार ने किसी साधारण या विशेष आज्ञा द्वारा वह अधिकार दिया हो, इस अवहेलना के विरुद्ध अदालत को शिकायत भेजे।

(२) इस अधिनियम के अन्तर्गत किये गए दण्ड के योग्य अपराध का मुकद्दमा प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट या फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की अदालत से नीची अदालत नहीं चला सकती।

७. सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर अधिनियम का लागू होना—यह अधिनियम उन पुस्तकों पर भी लागू

[आगे पृष्ठ ४५२ पर]

निम्न लिखित पुस्तक छप गई
जिसकी
हिन्दी-जगत् उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा कर रहा था

* भारतीय राजनीति *

विक्टोरिया से नेहरू तक

(१८५८ से १९४७)

लेखक—श्री रामगोपाल 'पत्रकार'

सजिल्द, मूल्य दस रुपये

पत्रकारिता पर चार पुस्तकें

भारतीय पत्रकार कला—
सम्पादक रोलैंड ई० वूलसले।

समाचार पत्रों का इतिहास—
ले० सम्पादकाचार्य पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

आधुनिक पत्रकार कला—
लेखक रा० र० खाडिलकर।

पत्र और पत्रकार—
ले० पं० कमलापति त्रिपाठी।

ये पुस्तकें प्रायः सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं के यहाँ मिलेंगी।

प्रकाशक

ज्ञान मण्डल लिमिटेड,
कबीर चौरा, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्य समिति की बैठक ११ जुलाई ५४, रविवार को बनारस में ज्ञानमण्डल के कार्यालय में प्रातः ८ बजे से होगी। संघ के प्रधान मन्त्री चाहते हैं कि सदस्यों द्वारा अपने आने के समय की सूचना ...लनारायण द्विवेदी (संयुक्त मन्त्री, अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ) को ज्ञानमण्डल लि०, ज्ञानवापी, बनारस, के पते पर दे दी जाय।

◈ ◈ ◈

उत्तर प्रदेश-सरकार ने हिन्दी की मूल पुस्तकों पर पुरस्कार देने की योजना बनाई है। इसमें समस्त राज्यों के लेखक भाग ले सकते हैं। प्राप्त पुस्तकों पर हिन्दी-परामर्शदात्री-समिति अपना निर्णय देगी। ये पुरस्कार हिन्दी-साहित्य-कोष से दिये जायँगे।

एक विज्ञप्ति में कहा गया है : "इस वर्ष पुरस्कार निम्नांकित विषयों पर लिखी जाने वाली पुस्तकों पर दिये जायँगे :

ललित कला : चित्रकारी व मूर्ति-कला, अर्थ-शास्त्र, राजनीति-शास्त्र, अध्यापन-शास्त्र, अपराध-शास्त्र, नृवंश-शास्त्र व ...।

विज्ञान : कृषि, भौतिक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, औषधि—पश्चिमी व पूर्वी (आयुर्वेद), भूगोल, वनस्पति-शास्त्र, उद्यान-विद्या व प्राणी विद्या।

साहित्य : कविता, नाटक, उपन्यास, प्रस्ताव, आलोचना ...विज्ञान।

आलोचना-सम्बन्धी पुस्तक, कला, समाज शास्त्र, विधि (...न, संविधान की आलोचना व हिन्दू-विधि के कुछ ... अंगों का आलोचनात्मक अध्ययन) मशीन-सम्बन्धी ...भूगोल, विज्ञान के नये आविष्कार, विशेषकर भौतिक, ...प्राणि-मनोविज्ञान, वैज्ञानिक मनोविज्ञान व नीति-... के अनुसन्धान, जो सरल भाषा में व व्याख्यात्मक चित्रों ... लिखे हों।

ये पुस्तक मूल होनी चाहिएँ। अनुवादों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा। मूल पुस्तकों के रचयिताओं के अपने अनुवादों पर भी विचार किया जाय।

जो पुस्तकें जनवरी १९५३ के बाद प्रकाशित हुई हैं उन्हीं पर विचार किया जायगा।"

◈ ◈ ◈

भारतीय हिन्दी-विश्वविद्यालय, पोस्ट बैग २७२५, बम्बई २ के रजिस्ट्रार श्री महेश्वर नाबर सूचित करते हैं : "भारतीय हिन्दी विश्वविद्यालय सन् १९५५ से अपने पाठ्य-क्रम में परिवर्तन करने जा रहा है। पाठ्य-क्रम के विचारार्थ जिन प्रकाशकों को पुस्तकें भेजनी हों, वे भेज दें।"

◈ ◈ ◈

मालवीय पुस्तक भण्डार, हजरत गंज, लखनऊ, को प्रकाशकों द्वारा, विशेषतः कृषि-उद्योग-धन्धों पर, प्रकाशित पुस्तकों के सूचीपत्रों की आवश्यकता है।

लज्जास्पद

कुछ ऐसी पुस्तकों की सूचना भी इन स्तम्भों में छप जाती है जिनका प्रकाशन बहुत पहले हो चुका होता है। प्रकाशकों द्वारा पूर्ति करके भेजे गए सूचना-पत्रों पर विश्वास करने के अतिरिक्त हमारे पास कोई ऐसा साधन नहीं है जिससे केवल नये प्रकाशनों की सूचना ही इन पृष्ठों पर प्रकाशित हो। यह प्रवृत्ति लज्जास्पद है। प्रकाशकों से विनम्र तथा सानुरोध प्रार्थना है कि वे केवल नये प्रकाशनों की सूचना ही हमें प्रकाशनार्थ भेजा करें।

भविष्य में जिस किसी भी सूचना पर हमें सन्देह होगा (कि प्रकाशकों ने जिन पुस्तकों का नाम दिया है, उन्हें प्रकाशित हुए अरसा हो चुका है), हम उसको प्रकाशित न कर सकेंगे।

—प्रकाशन समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लेखक-प्रकाशक की आत्म-कथा

किशोरीदास वाजपेयी

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी के प्रख्यात भाषाविद् एवं वैयाकरण हैं। उनके प्रकाशन-सम्बन्धी अनुभवों को यहाँ पढ़ें।

‘हिमालय एजेंसी’ एक प्रकाशन-संस्था है। पूँजी में यह संस्था बहुत छोटी है, पर काम में बहुत बड़ी है। प्रकाशन-समाचार में प्रकाशन-संस्थाओं के तथा उनके संचालक-प्रवर्तकों के परिचय निकल रहे हैं। मैंने यह उचित न समझा कि अपनी संस्था का परिचय किसी दूसरे से लिखवाऊँ। आत्म-कथा लिखने पर यदि कोई आत्म-प्रशंसा करने का अपराधी नहीं समझा जाता, तो फिर आत्म-संस्था का परिचय देना भी अपराध न समझा जायगा। दूसरे के मुँह से कहलाने की अपेक्षा अपनी बात स्वयं कह देने में सुख है, सुविधा है।

‘हिमालय एजेंसी’ की जन्म-कथा सुनिए। राष्ट्रीयता के झोंके में जब मैं दूसरी बार सरकारी नौकरी से अलग कर दिया गया तो रोटी की समस्या सामने आई। ‘ट्यूशन’ के लिए मुझे कोई पूछता न था! मेरी शर्तें ही ऐसी कड़ी थीं; अब तक ज्यों-की त्यों! बड़ी गाथा है, कहीं विस्तार से कहने की। ‘सैनिक’ (आगरा) तथा ‘हिन्दी-स्वराज्य’ (खंडवा) के मालिक-सम्पादक पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल और पं० सिद्धिनाथ माधव आगरकर ने मुझे लिखा कि आप इस समय कोई विज्ञापन छपवाना चाहें, तो हम मुफ्त में काफी दिन तक छापते रहेंगे। मैं विज्ञापन किस चीज का छपवाता? पुस्तक कोई प्रकाशित की न थी! सोचा, हिमालय के पदार्थ शिला-जीत तथा ब्राह्मी आदि—बाहर भेजने का काम शुरू करूँ। च्यवनप्राश आदि दवाएँ भी सामने आईं। परन्तु ‘फार्मेसी’ नाम मुझे पसन्द न पड़ा, क्योंकि उस नाम में एक असत्य नजर आया। मेरे पास न तो पैसे थे कि स्टाक करूँ और न दवाओं का बनाना ही आता था। सोचा यह था कि विज्ञापन शिलाजीत आदि का छपेगा और आर्डर आयँगे, तो अपने विश्वासी और प्रामाणिक किसी निर्माता से लेकर सप्लाई कर दिया करूँगा। अपने कमीशन से मतलब। इसीलिए ‘हिमालय एजेंसी’ नाम से विज्ञापन छपवाया। छः-छः महीने तक, अच्छी तरह, डबल कालम में, दोनों मित्रों ने मेरा वि[illegible] छापा। बहुत बड़ी मदद थी। आर्डर आने लगे और शिलाजीत आदि बाहर भेजने लगा। उस समय ‘प्रा[illegible] स्वराज्य’ मिल चुका था और अपने सूबे में ‘कांग्रेसी रा[illegible]’ था। मैंने अपील कर दी थी। अपील में मैं बहाल हो ग[illegible] और दस महीनों का वेतन भी मुझे मिला। इकट्ठे इतने रु[illegible] मिले, तो एक छोटा-सा प्रेस नीलाम में खरीद लिया।

आकर्षक छपाई के लिए

★

हिन्दुस्तान टाइप फौण्ड्री

कर्नलगंज, इलाहाबाद

★

★ ★

के द्वारा निर्मित हिन्दी और अंग्रेजी टाइपों का व्यवहार कीजिये, जो स्थायी और सुन्दर हैं।

एजेंसी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...मेरे लिए प्रेत बन गया! काम जानता न था। ...से बचे समय में जाकर देखता था, दिल बैठ जाता ...घाटा ही घाटा! काम आता न था, इधर उधर दौड़ता ...! नौकरी मिलने पर और प्रेस सिर लाद लेने पर वह ...वाला काम मन्द पड़कर बन्द हो गया। रोटी मिलने ..., बहुत है। यदि वह काम बन्द न करता तो आज चिन्ता ...न बिताने पड़ते।

प्रेस में काम न होने के कारण मैंने कुछ काग़ज़ लिख- ...पाने को दे दिए। 'लेखन-कला' छोटी-सी छपकर ...हो गई। लेखक तथा प्रकाशक एक ही व्यक्ति ठीक ...लगता; इसलिए प्रकाशक : 'हिमालय एजेंसी, कनखल' ...दिया। 'लेखन-कला' को हिन्दी-जगत् में बहुत आदर ...। यह बात सन् १९३८-३९ की है। आगे काम चलता ...; अगला आन्दोलन भी बुला रहा था। प्रेस का मैनेजर ...का मुखबिर बन गया और 'प्रेस एक्ट' में कई मुकदमे ...चलवा दिए, जो आगे चलकर खारिज हुए। परन्तु ...पेशियों में मेरी मांस-पेशियाँ ही ढीली नहीं पड़ीं, ...चरमरा उठीं और सब ढाँचा अस्त-व्यस्त हो गया।

अन्ततः प्रेस बेचकर खा गया। सन् ४२ के आन्दोलन में ...घोषणा हुआ, तो वह प्रेस-पूँजी बच्चों की रोटी में लग ...। ४२ में मेरे ऊपर संगीन मामला पुलिस ने चलाया था। ...मैं नज़रबन्द था। हथकड़ियाँ पहनाकर अदालत में ...गया। मुकदमा चला, पर पुलिस जो कुछ साबित करना ...थी, न कर सकी। मैं छूट गया।

...छूटकर मैंने 'ब्रजभाषा का व्याकरण' लिखा। छापे कौन? ...के 'रामनारायण लाल' को मैंने अपनी 'लेखन-कला' ...पाँच सौ में बेच दी। रुपये लेकर 'हिन्दी प्रेस' के ...को काग़ज़ खरीदने के लिए सौंप दिए। 'ब्रजभाषा का ...' सम्मेलन-भवन में लिखा जाने लगा और 'हिन्दी ...' छपने लगा। पुस्तक क्रान्तिकारी है ही। प्रकाशक— ...एजेंसी, कनखल'। देश भर में नाम हो गया। इसके ...छोटी-मोटी आधा दर्जन पुस्तकें 'एजेंसी' ने प्रकाशित ...। 'अच्छी हिन्दी' भी यहीं से प्रकाशित हुई। बहुत-से ...'हिमालय हिन्दी पुस्तक एजेंसी' लिख देते हैं। दवा की ...बात ही भूल गए; दूसरी दवाएँ तैयार करने लगे,

[शेष पृष्ठ ४५२ पर]

हमारे नवीन प्रकाशन

गांधी चरित मानस

रामचरित मानस के ढंग पर दोहे-चौपाइयों में राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी का पुण्य चरित्र, काव्यमय भाषा में। हिन्दी में बिलकुल नई चीज़। प्रत्येक घर और लायब्रेरी का शृंगार। मूल्य ५।।=)

बदलते दृश्य

श्री राजवल्लभ ओझा के विदेश यात्रा के संस्मरण। इसमें आप इंगलैंड, फ्रांस, इटली आदि पश्चिमी देशों के जीवन की सच्ची झलक पायेंगे। भव्य दृश्यों के साथ-साथ वहाँ के नग्न दृश्यों की झाँकी भी आपको मिलेगी। उपन्यास से भी अधिक रोचक। मूल्य ६)

शरच्चन्द्र—चिन्तन व कला

ले० डॉ० इन्द्रनाथ मदान, अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, पंजाब-यूनिवर्सिटी। महान्‌तम भारतीय उपन्यासकार श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय का आलोचनात्मक विवेचन। मूल्य २।।)

मनुष्य की कहानी

ले० श्री जयचन्द्र विद्यालंकार। मनुष्य के विकास अर्थात् पृथ्वी, जीव, समाज और सभ्यता की कहानी। मूल्य ।।=)

गुञ्जन : अनुशीलन

श्री सुमित्रानन्दन पन्त के प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ 'गुंजन' की विस्तृत व्याख्या। मूल्य ३)

हिन्दी भवन

जालन्धर तथा इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

हिन्दी में वैज्ञानिक कहानी की जो प्रतियोगिता उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रारम्भ की है, उसमें कहानी भेजने की अंतिम तिथि आगामी १ अक्तूबर है। यह प्रतियोगिता गृह-मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द के आग्रह पर प्रारम्भ की गई है, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'पृथ्वी से सप्तर्षि-मण्डल' पर राज्य सरकार द्वारा दिये गए पुरस्कार को इस इच्छा के साथ लौटा दिया कि उसके सूद से प्रत्येक तीसरे वर्ष हिन्दी में लिखी गई सर्वोत्तम वैज्ञानिक कहानी पर एक स्वर्ण पदक दिया जाय। कहानी फुलस्केप आकार के १६ पृष्ठों से कम न होनी चाहिए और राज्य के शिक्षा-सचिव को आगामी १ अक्तूबर या उससे पूर्व मिल जानी चाहिए।

◆ ◆ ◆

कवि आलोचक व चित्रकार डॉ० जगदीश गुप्त (मोती महल, दारागंज, इलाहाबाद) के पास निम्नलिखित कृतियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं। जिन प्रकाशकों को दिलचस्पी हो, मान्य लेखक से सम्पर्क स्थापित करें: (१) चित्र-गीत-संग्रह, (२) नई मुक्त छन्द की कविताओं का संग्रह, (३) व्रजभाषा के शताधिक छन्दों का संग्रह, कुछ रेखाचित्रों सहित, तथा (४) आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह।

◆ ◆ ◆

राष्ट्र कवि परिषद्, गाय घाट, बनारस, के प्रधान मन्त्री श्री गौरीशंकर गुप्त लिखते हैं: 'बापू की दिनचर्या' नामक मेरी पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार है। डबल क्राउन सोलह पेजी साइज के करीब ३-३॥ फार्म का मैटर है। अपने विषय की पहली, प्रामाणिक तथा मौलिक रचना है। जो प्रकाशक रॉयल्टी पर शीघ्र तथा सुन्दर प्रकाशित कर सकें, वे पत्र-व्यवहार करें। स्वनामधन्य राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरणजी गुप्त ने लिखा है····'बापू की दिनचर्या के विषय में यह पोथी लिखकर गौरीशंकर जी ने एक सत्कार्य किया है, इसमें सन्देह

१२वाँ अंक
१५ जुलाई को
प्रकाशित होगा।

आलोचना

१२वें अंक की विषय-सूची देखिये:

● सम्पादकीय

निबन्ध

● डॉ० रघुवंश : हिन्दी का यात्रा-साहित्य
● हर्षनारायण : मार्क्सवाद और साहित्य का स्थायी तत्त्व
● मसीहुज़्ज़माँ : उर्दू-आलोचना का विकास

प्रस्तुत प्रश्न

● गिरिजाकुमार माथुर : नई कविता का भविष्य

अनुशीलन

● डॉ० माताप्रसाद गुप्त : पद्मावत का पाठ और आईन ए-...
● अगरचन्द नाहटा : पृथ्वीराज रासो का विस्तार
● डॉ० टीकमसिंह तोमर : जटमल और उसकी गोरा-... कथा

मूल्यांकन

● बच्चनसिंह : वितस्ता की लहरें, धर्म की धुरी, अपना-... के पीछे
● लक्ष्मीकान्त वर्मा : धरती की करवट, बदली की रात
● रामखेलावन पाण्डेय ; प्रेत बोलते हैं
● अजितकुमार : अपना राज अपने आदमी, जिन्दगी के ... संघर्ष के बाद, चार के चार
● गंगाप्रसाद मिश्र : चाँद-सूरज के बीरन
● ति० शेषाद्रि : तमिल और उसका साहित्य
● राजेन्द्रप्रसादसिंह : प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड
● भारतभूषण अग्रवाल : गद्य-पद्य

परिचय

● नये नगर की कहानी ● भारतीय शिक्षण

वार्षिक मूल्य १२) प्रत्येक अंक का ३)

पहले दो अंक प्राप्य नहीं हैं। अन्य अंक मँगवाइये।

राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

◈ ◈ ◈

श्री रणधीर सिनहा (सिनहा लाइब्रेरी क्वार्टर्स, पटना १) …करते हैं कि साहित्यरत्न, साहित्यालंकार और एम० ए० …र्थियों के लिए उनके पास दो अप्रकाशित पुस्तकें …हैं (१) 'कुरुक्षेत्र' की मूल भावना, २०० पृष्ठ, …, तथा (२) गोदान और प्रेमचन्द, १०० पृष्ठ, …। जिन प्रकाशकों की इनके प्रकाशन में रुचि हो, वे …व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

…कमला नेहरू, मरू के टीले, धूल के फूल तथा बालुका …कण नाम की प्रकाशित काव्य-कृतियों के लेखक श्री …'द्विरेफ' पिलानी (राजस्थान) से सूचित करते हैं : "मेरा …महाकाव्य और है 'मीरा', जिसकी विस्तृत भूमिका श्री …दुलारे वाजपेयी ने लिखी है। उनकी दृष्टि में यह हिन्दी में …श्रेणी का प्रतिभा-समन्वित मौलिक महाकाव्य है और …विषय पर है। पृष्ठ संख्या ३०० है। मैं चाहता हूँ कि आपके पत्र के माध्यम से कोई प्रकाशक मुझसे 'मीरा' के प्रकाशनार्थ-पत्र व्यवहार करे।"

◈ ◈ ◈

श्री रमेश किरण एम० ए० (२ विजय ग्राम, मुजफ्फरपुर, बिहार) लिखते हैं :

"निम्न लिखित पुस्तकों के लिए प्रकाशकों की आवश्यकता है। इच्छुक संस्थाएँ पत्र-व्यवहार करें :—

(१) अनामा, गीत-संग्रह। डिमाई, १२ फार्म।

(२) श्यामा, गीत-संग्रह। डिमाई, १२ फार्म।

(३) उजली चादर, विचार-प्रधान कविताएँ। १६ पेजी क्राऊन, ८ फार्म।

(४) अक्षांश और देशान्तर, प्रयोगवादी कविताएँ। १६ पेजी क्राऊन, ८ फार्म।

(५) मकड़ी का जाल, कहानी-संग्रह।

(६) मूल्यांकन, आधुनिक काव्य पर आलोचनात्मक निबन्धों का संकलन।

किसी भी योग्य शर्त पर प्रकाशनाधिकार दे सकूँगा।"

◈ ◈ ◈

श्री रामनारायण अग्रवाल, मार्फ़त डॉ राजाराम व्यास,

साहित्य-संसार के ग्यारह अनमोल गौरव-ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मूल्य सवा तीन रुपये।
२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये।
३. **हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग १८८ इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी।
४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपए।
५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपए। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथों के सुन्दर मानचित्र भी।
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपए।
७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपए। बढ़िया आर्ट पेपर पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ संख्या पाँच सौ।
८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक—प० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ रुपए। गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ लगभग ४५० पृष्ठ।
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपए।
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेद, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपए। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी।
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपए। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक भी।

शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले दो ग्रन्थ

१. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी।
२. **रबर (प्रामाणिक वैज्ञानिक ग्रंथ)**—ले० श्री फूलदेवसहाय वर्मा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोकुलपुरा, आगरा, सूचित करते हैं कि उन्होंने टाल्स्टाय के Death of Ivan Illiach, एण्ड्रीव के Lazarus, डास्टावस्की के Notes from Underground तथा हावर्ड फ़ास्ट के Freedom Road का अनुवाद किया है। जिन प्रकाशकों की इन अनुवादों में दिलचस्पी हो वे लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

✧ ✧ ✧

श्री बागेश्वर प्रसाद वर्मा, मार्फ़त डी० के० पी० वर्मा, लोहानीपुर, पटना, ३ लिखते हैं : "इस समय मेरे पास दो उपन्यास, एक का शीर्षक है तीन कलाएँ, और दूसरे का विस्मृति की छाया, तैयार हैं। इसके अतिरिक्त सुन्दर और मधुर गीतों का एक संग्रह तथा एक कहानी-संग्रह भी तैयार है। इन पुस्तकों पर वयोवृद्ध साहित्यकारों की अमूल्य सम्मतियाँ भी मेरे पास मौजूद हैं। प्रकाशक महोदय अपने नियमों और शर्तों के साथ मुझसे बातचीत कर सकते हैं।"

✧ ✧ ✧

"मेरे पास निम्नांकित अप्रकाशित साहित्य-सामग्री है। मैं उसे अच्छे प्रकाशकों द्वारा साहित्य-क्षेत्र में रखना चाहता हूँ। जो प्रकाशक इच्छुक हों, वे पत्र-व्यवहार करने का कष्ट करें : असि, मुक्तक; तुला-दान, खण्डकाव्य; छान्दसी, छन्द-संग्रह; विसिनी, कविता-संग्रह; टीस मुक्तक; मानसी, गीत-मुक्तक; शिखरिणी, गद्यगीत, यवनिका, मुक्तक।

विश्वम्भर, कूँचा पांडा, बदायूँ।"

✧ ✧ ✧

श्री शारदा शान्ति साहित्य सदन केवलारी, पथरिया सागर (मध्य प्रदेश) के प्रधान मन्त्री श्री गणेश शंकर खरे सूचित करते हैं कि इस प्रकाशन-संस्था के पास निम्न पुस्तकें प्रकाशनार्थ पड़ी हैं। जो भी प्रकाशक उनको प्रकाशित करना चाहें, उपर्युक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें :

(१) शंकर समानार्थी शब्द-संग्रह, प्रथम खण्ड में लगभग १५०० शब्दों के समानार्थी शब्द तथा द्वितीय खण्ड में लगभग ५०० शब्दों के श्लेष-अर्थी शब्द संग्रहीत हैं।

(२) प्रमाणांजलि, "शंकर कवि की ३० प्रसिद्ध कवि-

[आगे पृष्ठ ४५२ पर]

श्रेष्ठ हिन्दी-पुस्तकें

वेलि क्रिसन रुकमणीरी

संपादक—प्रो० आनन्दप्रकाश दीक्षित, मूल्य ५)

आगरा, बनारस, लखनऊ, इलाहाबाद, अलीगढ़ तथा रा… विश्वविद्यालयों की एम० ए० (हिन्दी) परीक्षा के लिए स्वीकृत।

श्री चन्द्रावली नाटिका

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।

आगरा, बनारस, बिहार, पटना, कलकत्ता, अलीगढ़ तथा … विश्वविद्यालयों की एम० ए० (हिन्दी) तथा प्रयाग-विश्वविद्यालय … ए० (हिन्दी) परीक्षा के लिए स्वीकृत।

भारत-दुर्दशा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।

आगरा, बम्बई तथा पूना-विश्वविद्यालयों की बी० ए० तथा … बिहार, पटना तथा कलकत्ता-विश्वविद्यालयों की परीक्षा के लिए …

रीतिकालीन हिन्दी-कविता और सेनापति

प्रो० रामचन्द्र तिवारी, भूमिका ले० डॉ० भगीरथ मिश्र।

सेनापति के काव्य पर लिखी गई विस्तृत समीक्षा। हिन्दी-… सम्मेलन की साहित्यरत्न, बम्बई, इलाहाबाद, बनारस तथा … विश्वविद्यालय की एम० ए० (हिन्दी) परीक्षा के लिए।

रचनानुवाद कौमुदी

ले० डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, व्याकरणाचार्य। ३)

हाईस्कूल, इंटरमीजिएट, मध्यमा तथा संस्कृत की अन्य परीक्षाओं … लिए व्याकरण तथा निबन्ध की एक-मात्र पुस्तक। जर्मन त… शैली पर इसकी रचना हुई है और इसके द्वारा केवल ६ मास में … का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी

ले० डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, व्याकरणाचार्य। १)

संस्कृत के प्रारम्भिक छात्रों के लिए व्याकरण तथा भाषा … कराने वाली पुस्तक। अत्यन्त सुबोध विधि से इसकी रचना हुई है।

अन्य प्रकाशन

मुद्रिका (नाटक)—सद्गुरुशरण अवस्थी

रीतिकालीन हिन्दी-कविता—प्रो० रामचन्द्र तिवारी

प्राणों के स्वर (काव्य-संग्रह)—दामोदर

रश्मि-रेखा (काव्य)—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

विभावरी (काव्य)—नीरज

माटी का फूल (निबंध वार्ता)—रामअधार सिंह

विश्वविद्यालय-प्रकाशन,

नखास चौक, गोरखपुर (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

...कथा-साहित्य के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली ...माला की ७, ८, ९ संख्या की पुस्तकें 'बाहर ...', 'बाबा बटेसरनाथ' तथा 'उबाल' नाम से प्रकाशित ...। इनके लेखक क्रमशः डॉ० देवराज, नागार्जुन तथा ...राघव हैं। देवराज जी का उपन्यास सामाजिक पृष्ठ-...के आधार पर गठित हुआ है। इसमें जिन पात्रों का ...हुआ है वे हमारे समाज के प्रतीक हैं। कथानक का ..., भाषा की सजीवता और वर्णन की सादगी इसकी ...है। एक पात्र के द्वारा कहे गए ये शब्द आज के ...प्राणी की विश्वासपरकता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ...कहता है—"हमारी सफलता और असफलता, उन्नति ...अवनति को आँकने का अन्तिम अधिकार समाज को है, ...कोई कारण नहीं कि मैं अपने पर अर्थात् अपनी ...पर गर्व न करूँ।"

नागार्जुन जी लोक-संस्कृति-परक उपन्यास लिखने की ...में अपने 'बलचनमा' नामक उपन्यास के कारण अत्यन्त ...हुए हैं। 'बाबा बटेसरनाथ' में भी उन्होंने ऐसा ही ...चुना है। इसमें एक वट-वृक्ष वहीं के क्षेत्र के जीवन ...अपनी आत्म-कथा के माध्यम से कराता है। पाठक को ...समय ऐसा अनुभव होने लगता है जैसे वह भी ...के वर्णित क्षेत्र में भ्रमण कर रहा हो। नागार्जुन ...अपने कथानक और पात्रों के अनुरूप सहज, सादी ...भोलापन लिये हुए है। उपन्यास में सामाजिक तथा ...प्रगति की भी झाँकी सहज ही उभरकर सामने आ ...है।

'उबाल' भी एक सामाजिक उपन्यास है। इसका ...एक गाँव के छोटे-से घर से प्रारम्भ होकर नागरिक ...की चकाचौंध में आकर समाप्त होता है। इसके ...और सत्यपाल, विलास तथा सरस्वती आज के समाज के युवक-युवतियों के प्रतिनिधि पात्र हैं। इसकी कथा-धारा पहाड़ी सरिता की भाँति एक वेग लिये हुए है। भाषा की सरलता, चरित्रों की स्पष्टता और मानवीय भावों तथा प्रकृति का सरल चित्रण इसमें खूब देखने को मिलता है।

सारांशतः उक्त तीनों ही उपन्यास आज के युग के प्रतिनिधि कथाकारों की प्रतिभा का उज्ज्वल अवदान हैं। तीनों उपन्यास राजकमल प्रकाशन से प्राप्त हो सकते हैं और प्रत्येक का मूल्य १॥।=) है। छपाई सफाई और गेट-अप आकर्षक तथा मनोहारी है।

◆ ◆ ◆

श्री चतुरसेन शास्त्री का **'सोमनाथ'** नामक उपन्यास वर्णन-शैली, भाषा-चमत्कार तथा कथानक की उपादेयता की दृष्टि से भारत की अतीत संस्कृति का उज्ज्वल दर्पण कहा जा सकता है। इसमें प्रसिद्ध मन्दिर सोमनाथ पर गजनी द्वारा हुए आक्रमण को आधार-भूमि बनाकर उसके वैभव का वर्णन किया गया है। इसमें आप तेरहवीं शताब्दी में ध्वस्त सोमनाथ महालय को अपने मानस-नेत्रों से देख सकते हैं। साथ ही आबू पर सोमनाथ की स्पर्धा करने वाले जैन-मन्दिर के बनाने वाले गुजरात के प्रबल प्रतापी जैन-मन्त्री श्री विमलदेव के राज-द्रोह का वर्णन भी इसमें आपको पढ़ने को मिलेगा। ५३४ पृष्ठ के इस उपन्यास के अन्त में ६८ पृष्ठों में लेखक ने इस उपन्यास की आधार-भूमि पर भी विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह आधार-भूमि महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। सुन्दर जिल्द, तिरंगे कवर और आकर्षक मुद्रण से युक्त यह पुस्तक ज्ञानधाम-प्रतिष्ठान, शाहदरा (दिल्ली) से आठ रुपये में मिल सकती है।

◆ ◆ ◆

'मुक्ति-मार्ग' अमरीका के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री हावर्ड फास्ट के विश्व-विख्यात उपन्यास 'फ्रीडम रोड' का हिन्दी रूपान्तर है। इसके रूपान्तरकार हैं श्री नूर नबी अब्बासी। इसमें अमरीका की अल्पसंख्यक महान् जनता (जिसे 'नीग्रो' के नाम से पुकारा जाता है) के इतिहास के एक अत्यन्त महान् एवं शोकपूर्ण क्षण की कहानी है। युद्ध और शान्ति की समस्या का समाधान प्रस्तुत करना ही इस उपन्यास की विशेषता है। पुस्तक का महत्त्व इसीसे सिद्ध होता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अनुवाद संसार की प्रायः सभी भाषाओं में हो चुका है। अनुवादक की भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। ३५६ पृष्ठ का यह सजिल्द उपन्यास साहित्य-प्रकाशन, दिल्ली से ६) में प्राप्त हो सकता है।

◊ ◊ ◊

'नाटककार अश्क' में हिन्दी के प्रख्यात नाटककार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के समस्त नाटकों की समीक्षा और उनकी कला पर व्यापक प्रकाश डालने वाले विभिन्न विद्वानों के लेख संकलित हैं। प्रारम्भ में श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने 'नाटककार अश्क' शीर्षक के अन्तर्गत उनकी कला पर विचार किया है। इसमें समीक्षा, मूल्यांकन, अश्क के एकांकी, संकलन, परिचय और परिशिष्ट नामक छः अध्याय हैं। 'समीक्षा' नामक सारा अध्याय (जो इस पुस्तक का महत्त्वपूर्ण अध्याय है) श्री गोपालकृष्ण कौल ने लिखा है और शेष में दुष्यन्त-कुमार, कमलेश्वर, भैरवप्रसाद गुप्त आदि के लेख हैं। 'संकलन' शीर्षक अध्याय में श्री अश्क के अपनी कला के सम्बन्ध में लिखे गए सभी लेख सम्मिलित हैं। पुस्तक की उपयोगिता इसी बात से प्रकट है कि इसमें नाटककार 'अश्क' की सभी कृतियों पर व्यापक विचार किया गया है। ५०० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ७) और नीलाभ प्रकाशन प्रयाग से प्राप्य।

◊ ◊ ◊

ओसवाल प्रेस १८६, क्रॉस स्ट्रीट कलकत्ता ७, द्वारा प्रकाशित **'राजसिंह-चरित्र', 'दुर्गादास-चरित्र', 'भारतीय वीरांगना'** (प्रथम भाग) तथा **'भारतीय वीरांगना'** (द्वितीय भाग) हमारे सामने हैं। इनमें से पहली दो के लेखक राजस्थान के पुराने साहित्य-सेवी श्री ठा० केसरीसिंह बारहठ और अन्तिम दो के संकलनकर्ता श्री महालचन्द बयेद हैं। पहली दोनों राजस्थानी-मिश्रित ब्रजभाषा के काव्य हैं और दूसरी गद्य में लिखी जीवनियाँ। चारों पुस्तकों में ही राजस्थान के ओजस्वी इतिहास की झाँकी प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की दृष्टि से चारों पुस्तकें उल्लेखनीय हैं और प्रकाशक से क्रमशः २॥), १।॥), २॥), तथा २) में मँगवाई जा सकती हैं।

◊ ◊ ◊

'भस्म-विज्ञान' (चतुर्थ पाद) पंजाब के प्रसिद्ध चिकि-

• सुरुचिपूर्ण उपन्यास-साहित्य •

हमारे उपन्यास

पुस्तकालयों तथा विद्यालयों के

लिए उपयुक्त होंगे

प्रति मास दो नये उपन्यास

हमारा आकर्षण

यज्ञदत्त शर्मा के क्रान्तिकारी उपन्यास

महल और मकान — बदलती राहें

झुनिया की शादी — इन्साफ़

मधु — इन्सान

निर्माण-पथ — अंतिम चरण

पुस्तक-विक्रेता एजेन्सी-नियम इत्यादि के विषय में बातचीत करें।

सा हि त्य - प्र का श न,

मालीवाड़ा—दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिशरणानन्द जी वैद्य द्वारा लिखी गई है। इसके खण्ड की समीक्षा पिछले अंक में प्रकाशित हो चुकी इसमें अकीक, अभ्रक, कपर्दिका, कास्य, गोमेद, जस्ता, स्थाली पुटी ताम्र, कूपी पक्वताम्र, उष्मिद ताम्र, पारद, मण्डूर, माक्षिक, रजत, चाँदी, राजावर्त, लोह, वंग, सीसा तथा सुवर्ण आदि विभिन्न भस्मों के बनाने की विस्तार से लिखी गई हैं। पुस्तक प्रत्येक वैद्य तथा के लिए उपयोगी है। ४१६ पृष्ठ की यह सजिल्द १०) में आयुर्वेद विज्ञान ग्रन्थमाला कार्यालय अकाली अमृतसर से मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

ज्ञान मन्दिर प्रकाशन ग्वालियर से प्रकाशित 'सरल शास्त्र तथा भारतीय शासन'; 'खेती बाड़ी', -चिकित्सा', 'पंचायत राज', 'संसार के महापुरुष', पंचायत' तथा 'हिन्दी काव्य-शैली का विकास' पुस्तकें समीक्षार्थ हमारे पास आई हैं। इनमें से अन्तिम को छोड़कर शेष सभी पुस्तकें ग्राम-शिक्षण तथा प्रौढ़ के उद्देश्य से प्रकाशित की गई हैं। अन्तिम पुस्तक श्री दामोदरदास चतुर्वेदी ने केवल ६२ पृष्ठों में कविता और उसके विकास पर संक्षेप में प्रकाश डाला प्रत्येक पुस्तक का मूल्य क्रमशः १|||), |||), |||), १),) तथा |||) है। प्रकाशक से प्राप्य।

◈ ◈ ◈

इन्सान की ज़िन्दगी श्री श्यामलकिशोर झा की ८ कहा- का संग्रह है। सभी कहानियाँ आज के युग की सामा- विभीषिकाओं से प्रेरित होकर लिखी गई हैं। पुस्तक पर अमृतराय की भूमिका तथा डॉ० रामविलास शर्मा, डॉ० साहा और श्री नागार्जुन की सम्मितियाँ भी मुद्रित भारती प्रकाशन, भागलपुर से १।) में प्राप्य।

◈ ◈ ◈

वाम मार्ग : वाम पक्ष और वाम मार्ग लगभग पर्याय शब्द हैं, ऐसा लेखक का मत है। अन्तर केवल है। एक राजनीतिक क्षेत्र में और दूसरा धार्मिक क्षेत्र होता है। दोनों के-दोनों समाज में प्रचलित रीति- से भिन्न मत और व्यवहार का पोषण करते हैं।

[आगे पृष्ठ ४५२ पर]

प्रकाशन-क्षेत्र में नई स्थापना

: एक ही वर्ष में पाँच पुस्तकें पुरस्कृत :

१. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—डॉ० वार्ष्णेय २||)
२. महाकवि भूषण—श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित २||)
३. हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास—डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल १०)
४. हमारे कुछ प्राचीन लोकोत्सव—श्री मन्मथ राय २||)
५. सौन्दर्य-शास्त्र—डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा ४)

पूर्व पुरस्कृत पुस्तकें

१. वीर सतसई—श्री वियोगी हरि १)
२. शबनम—श्रीमती दिनेशनन्दिनी १||)
३. प्रकृति और काव्य (हिन्दी-खण्ड)—डॉ० रघुवंश ६||)
४. संस्कृति-संगम—आचार्य क्षितिमोहन सेन २||)

सद्यः प्रकाशित पुस्तकें

१. दिल की बात—श्री गुरुदयाल मल्लिक ३)
२. तुलसी रसायन—डॉ० भगीरथ मिश्र २||)
३. चाँदनी के खण्डहर—श्री गिरधर गोपाल २)

आगामी प्रकाशन

१. सूर-सागर-सार—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (प्रेस में)
२. वीर-काव्य-संग्रह—डॉ० टीकमसिंह तोमर (प्रेस में)
३. रीति काव्य-संग्रह—डॉ० जगदीश गुप्त (प्रेस में)
४. हमारे लेखक—श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ (प्रेस में)

साहित्य भवन लिमिटेड,
ज़ीरो रोड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-बिक्री की कला

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत यह सातवाँ लेख प्रकाशित हो रहा है : लेखक हैं इङ्गलैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

अक्सर ऐसा होता है कि दुकान में जगह की कमी के कारण किताबों का स्टाक वहीं न रखकर तहखाने या अलग कोठरियों में रखा जाता है। लेकिन ग़लत ढंग या अव्यवस्था से रखे गए स्टाक से काफी नुक़सान होता है; पुस्तकें अस्त-व्यस्त ढंग से पड़ी रहने से समय पर नहीं मिल पातीं और परिणामतः बिक्री मारी जाती है। इसलिए किसी विशेष तरीके का इस्तेमाल लाभप्रद होता है।

जहाँ आपका स्टाक रखा हो, वहाँ पुस्तकों के विषयादि की चिटें यदि लगा दी जायँ तो सुविधा हो जाती है। न मालूम आप मेरे सुझावों को कहाँ तक क्रियान्वित करके लाभ उठायँगे, लेकिन मैं कुछ संकेत यहाँ किये देता हूँ—एक तो पुस्तकों का मुख्य शेल्फ़ रखिये जिसमें पैकेट बनाकर या खुली किताबें रखते हैं। कार्ड-अनुक्रमणिका अथवा अन्य तरीकों से यह तरीका बेहतर है। इससे फायदा यह होता है कि चूँकि पुस्तक-विक्रेताओं की तेज नज़र होती है और वे बार-बार अपने स्टाक को देखते रहते हैं, इसलिए उन्हें झट याद आ जाता है कि स्टाक में क्या रखा है। दूसरे इस प्रकार के शेल्फों में किसी कार्ड-इन्डेक्स की भी जरूरत नहीं होती। बस, सदर्भाङ्क हल्की पेन्सिल से कवर के किसी कोने में लिख दीजिये जिससे कि शेल्फ का नम्बर मालूम हो जाय। दुकान के सभी शेल्फों पर नम्बर अंकित होने चाहिएँ क्योंकि इससे 'स्टाक टेकिंग' के समय बहुत आसानी होती है।

यह 'मुख्य' शेल्फ़ दुकान में किसी ऐसी जगह न होना चाहिए जहाँ से ग्राहक भी आसानी से किताबें निकाल लें, बल्कि दफ्तर में या किसी और कमरे में यह रखा जाना चाहिए जहाँ ग्राहक बार-बार न आते हों। बल्कि यदि डाक से भेजे जानी वाली पुस्तकों के कमरे में एक और दूसरा पुस्तक-बिक्री-विभाग में रखा जाय तो और भी बेहतर होगा। फिर इसमें एक यह भी फ़ायदा है कि यदि स्टॉक समाप्त हो जाय तो ग्राहक निराश न होगा, क्योंकि वह 'मुख्य' प्रति आप दे सकते हैं। 'मुख्य प्रति' के गुम जाने पर कुछ असुविधा जरूर हो सकती है पर मासिक निगरानी या देखभाल से वह मसला भी हल किया जा सकता है।

डाक से पुस्तक-विक्रय

आजकल डाक से पुस्तकें भेजने की बहुत सम्भावनाएँ हैं लेकिन इसमें आर्थिक लाभ बहुत कम होता है, क्योंकि मज़...

परिवारों और पुस्तकालयों में संग्रह योग्य
अनुपम कृतियाँ

ख़ैयाम का जाम

तिरंगा टाइटिल, मजबूत जिल्द, ११ चित्र मूल्य ५)

नवीनतम रचना

आपन मरन जगत् कै हाँसी

व्यक्ति और समाज के लिए स्वास्थ्यकर
हिन्दी और अवधी भाषा में हास्य व्यंग्य की
अनूठी पुस्तक। मू० ३)

बाल-साहित्य—**गांधी बन जाऊँ** ।।।)

कहानी-संग्रह

उन्माद २।।) यात्रा ३) पिकनिक २।।) बेल-पत्र १)

लेखिका— श्रीमती कमला चौधरी

प्रकाशक और विक्रेता

साहित्य-सेवा-सदन, छीपी तालाब, मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्य से पेट में बल डालने वाली
अपूर्व पुस्तक
'बेढब बनारसी' लिखित
★
बेढब की बहक
★
हास्य और व्यंग की सुन्दर गुदगुदी
करने वाली शायरी तथा कविताओं
-मात्र संग्रह। नयनाभिराम आवरण,
सफेद कागज, पृष्ठ सं० १३६, आक-
छपाई। सजिल्द, मूल्य २) मात्र।
★
संजीवनी
★
ले० गुलाबरत्न वाजपेयी
गुलाबजी की प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य
जीवन में नये मोड़ लाने वाले निबन्ध
। ओजस्वी भाषा, चुभती हुई शैली
जीवन को ऊँचा उठाने वाला साहित्य।
कर्षक गेट-अप, ग्लेज़ एंटिक कागज,
नोहर छपाई, पृष्ठ संख्या १८४। सजिल्द,
केवल २॥)।
पुस्तक-विक्रेताओं को २५ प्रतिशत
मीशन। दोनों पुस्तक साथ मँगाने पर
क-व्यय माफ़। सूचीपत्र मुफ्त मगावें।
प्रकाशक
कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स
ज्ञानवापी, बनारस।

व अन्य खर्चे बड़े भारी होते हैं। दूसरे यह काम कुछ कठिन और गुथीला भी होता है। डाक से आने वाले आर्डरों में बहुधा कुछ-न-कुछ कमी रह जाती है जिसका निवारण बड़ा कठिन कार्य है। कभी प्रतियों में गड़बड़, कभी पता अपूर्ण, कभी अस्पष्टता आदि। और ऐसा इसलिए भी होता है कि बेचारा ग्राहक क्या जाने किन पुस्तकों का कौन प्रकाशक है, या वह किस सन् में प्रकाशित हुई थी।

डाक से आने वाले आर्डरों की तामील का एक ही रहस्य है, और वह यह कि आप ग्राहक के लिए चीजें आसान से आसानतर बनायें, और सफलतापूर्वक किताबें डाक द्वारा बेचने की कुछ अच्छी पद्धति का पालन किया जाय।

पद्धति—डाक से आने वाले आर्डरों को दुकान का कोई जिम्मेदार व्यक्ति ही खोले, क्योंकि कभी-कभी लिफाफों में लोग चेक या पोस्टल सर्टिफ़िकेट या टोकन भेज सकते हैं। डाक खोलने के बाद इस प्रकार से नत्थी चेक या दूसरी चीज़ों को पत्र के ऊपर नोट कर लेना चाहिए। शिकायतों पर पूर्ण ध्यान दिया जाना चाहिये। यदि यहां लाल पेंसिल या स्याही से निशान लगा लिए जाएँ तो और भी अच्छा रहेगा। इसके बाद नियत व्यक्तियों के द्वारा उन आर्डरों की उचित तामील होनी चाहिए।

यदि आर्डर की सभी पुस्तकें आपके यहाँ न हों तो जो हों उन्हें भेज दीजिये और शेष के लिए उन्हें पत्र लिख दीजिये। आर्डर को तभी फाइल में लगाइये जब कि उसकी सारी पुस्तकें भेजी जा चुकी हों अन्यथा "अपूर्ण आर्डर" की विशेष फाइल में लगा रखिये।

पत्र-प्राप्ति की सूचना—इससे आपको बहुत सुभीता हो जाता है और समय भी बच जाता है। यह पत्र बड़ा नम्रतापूर्ण, संक्षिप्त होना चाहिए। व्यावसायिक शब्दावली का उसमें प्रयोग वर्जित समझा जाना चाहिए।

मसलन—"आपका पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। शीघ्र ही उसकी तामील होगी।" पुस्तक 'अप्राप्य' है या 'शीघ्र ही प्राप्य होगी' आदि शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। सबसे उत्तम बात जो मैंने अपने तजुर्बे से सीखी है वह है, पत्रों को पूरी तरह पढ़ना, क्योंकि बहुत-सी गलतियाँ तो पत्र अधूरा पढ़ने या अनुमान लगाने से भी हो जाती हैं। उदाहरणतया प्रेषक का पता-मात्र पढ़कर आर्डर की हुई पुस्तकें उसे भेज दी जाती हैं जब कि उसने पत्र के मध्य भाग में लिखा है कि पुस्तकें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके किसी मित्र के पते पर भेजी जायँ। यह गलती आपके लिये हानिकारक होगी। दूसरे यह कि आप पता पत्र में से 'बिल' या 'इनवाइस' पर नकल कीजिये और 'इनवाइस' से लेबल पर उतार दीजिए। फिर उसे पत्र से मिला लीजिये। यह काम पूर्ण और ठीक होगा।

प्रोफॉर्मा इनवाइस – इसका तब प्रयोग होता है जब आप ग्राहक से पैसे पेशगी लेना चाहें। इसे एक पत्र के साथ पुस्तकों के विवरण सहित भेज दीजिये।

सुझाव द्वारा बिक्री के बारे में मैं पहले काफी कह चुका हूँ। बहुधा त्यौहारों व उत्सवों के अवसर पर आपके पास किताबों के आर्डर आते हैं और तब आप, यदि माँगी हुई पुस्तकें आपके पास न हों तो, सुझाव दे सकते हैं कि ग्राहक दूसरी उसी विषय पर या वैसी ही पुस्तकें खरीद ले।

ऐसे मौकों पर ग्राहक खुद भी सुझावों का इच्छुक रहता है। इसलिए यदि सुझाव का समय न हो तो आप अपनी ही ओर से आर्डर की हुई किताबों के बदले दूसरी पुस्तकें भेज सकते हैं और साथ ही इस आशय का पत्र भी भेज सकते हैं। आवश्यक हो तो ऐसे पत्र छपा लिये जाने चाहिएँ ताकि आसानी हो। पत्र कुछ इस प्रकार अनुचित न हो... "आपकी अमुक पुस्तक अप्राप्य होने के कारण उसके ... हम अमुक पुस्तक भेजने का साहस कर रहे हैं, क्योंकि ... निकट है और पुस्तकें पहुँचने में देर न हो जाय ... हमने सोचा कि निराशापूर्ण उत्तर पाने की अपेक्षा आप ... पुस्तकें ज्यादा बेहतर समझेंगे। फिर भी यदि हमारी भेजी ... पुस्तकें आपको पसंद न हों या उनसे आपका उद्देश्य पूरा न ... होता तो उन्हें एक सप्ताह के अन्दर ही कृपया लौटा दें ..."

ग्राहकों की अभिरुचियों की क्रमबद्ध सूची : पुस्तकों की बिक्री में शायद यही पहलू ज्यादा उपेक्षा का शिकार ... हो। ग्राहकों की सूची उनकी रुचियों के अनुसार तैयार ... एक महत्त्वपूर्ण और कीमती चीज है। मसलन खेलों में, ... में, घुड़सवारी तथा फोटोग्राफी में दिलचस्पी लेने वाले ... की विषयानुसार सूची तैयार की जाय। अक्सर ऐसा ... होता है कि एक ही व्यक्ति, जो फोटोग्राफी में दिलचस्पी ... रखता है, नृत्य और नाटक में भी रुचि रखे, साथ ही ... बच्चे भी हों तो इस प्रकार इसके लिए तीन वर्ग बनाने ...

[आगे पृष्ठ ...

हिन्दी में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले कथाकार

श्री प्यारेलाल 'आवारा'

के नये उत्कृष्ट उपन्यासों का

बहुत ही सस्ते मूल्य में प्रकाशन

हर उपन्यास की पृष्ठ-संख्या १५० से १७५ तक

तिरंगा आवरण : मज़बूत जिल्द : बढ़िया कागज़

और मूल्य केवल बीस आने

इस योजना के अन्तर्गत 'आवारा' जी का नया सरस सामाजिक उपन्यास 'रेत के महल' (एंटिक कागज : बढ़िया छपाई : पृष्ठ-संख्या १६०) अभी प्रकाशित हुआ है।

'आवारा' जी के उपन्यास खूब बिकते हैं और इतना सस्ता होने के कारण तो अब और भी बिकेंगे।

पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को उचित कमीशन।

'रेत के महल' के अलावा 'आवारा' के सम्पूर्ण कथा-साहित्य के लिए हमें आज ही लिखिए।

रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद—३

श्री पं० ऋषिकेश चतुर्वेदी की

दोनों ओर से पढ़ी जाने वाली

प्रसिद्ध कृति

श्रीराम-कृष्ण काव्य

(द्वितीय संस्करण) मूल्य ।।।), सजिल्द १)

तथा

श्री सतीशचन्द्र चतुर्वेदी 'प्रेमी' का

सामाजिक उपन्यास

खँडहर : मूल्य १)

'खँडहर' के भूमिका लेखक उपन्यास-सम्राट

श्री वृन्दावनलाल वर्मा हैं।

पुस्तक-विक्रेताओं के लिये आकर्षक कमीशन। लिखें :

रत्नदीप प्रकाशन

चौबेजी का कटरा, किनारी बाजार, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तकों के प्रारम्भिक 'आदर्श' पृष्ठ

'इण्डियन स्टैण्डर्ड एसोसिएशन' ने पुस्तकों के प्रारम्भिक पृष्ठों का 'स्टैण्डर्ड' नियत करने के लिए तीन दस्तावेज प्रचारित किए हैं, जिन्हें यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

...स्टैण्डर्ड्स संस्था (Indian Standards ...tution) की ओर से भेजी गई तीन (प्रस्तावित) ...के अनुवाद हम उनकी अनुमति से यहाँ प्रकाशित ...हैं। इन दस्तावेजों की अधिकृत प्रतियाँ अंग्रेजी भाषा ...विशेष निवेदन पर भारतीय स्टैंडर्ड्स संस्था ...लाइन्स दिल्ली) से प्राप्त की जा सकती हैं। प्रस्तुत ...हमारा अपना है और इसकी प्रामाणिकता के लिए ...संस्था जिम्मेदार नहीं है।

इन तीनों दस्तावेजों में पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के प्रारम्भिक पृष्ठों (मुख पृष्ठ, उसका पिछला भाग, अन्दर का पृष्ठ, विषय सूची आदि) के लिए कुछ स्तर (Standards) स्थापित किये गए हैं ताकि पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के मुद्रण-सम्बन्धी (यानी मेक-अप, ले-आउट, टाइप आदि) स्तरों का पालन किया जाये। इन्हें पढ़कर आपको जो सुझाव देने हों वे आप भारतीय स्टैण्डर्ड्स संस्था को भेज दीजिये या हमें ताकि वे उपरोक्त संस्था को पहुँचा दी जायँ।

दस्तावेज (Document) ई. सी. २ (२८)

प्रस्तावना

...यह भारतीय स्तर (Standard) भारतीय स्टैण्डर्ड्स संस्था द्वारा मसविदे की कार्यकारिणी-समिति की स्वीकृति के बाद ता०..................को मंजूर हुआ और ता०.........................को डौक्यूमेंटेशन सेक्शनल कमेटी द्वारा अन्तिम रूप से स्वीकृत हुआ।

...किसी भी पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठ उसके अन्दर के विषय से पहले आते हैं और पुस्तक के बारे में उनमें कुछ सूचना होती है।

...सूची-पत्रों और अन्य पुस्तक-सूचियों (Bibliographies) में, जिनका ध्येय पाठकों को पठनीय सामग्री के चयन में सहायता देना होता है, साधारणतया किसी भी पुस्तक का समावेश उन प्रारम्भिक पृष्ठों में दी गई सूचना के आधार पर ही होता है। इन पृष्ठों का आकार-प्रकार (make-up) मुद्रण-कला के आविष्कार के बाद से कई स्थितियों से गुजरकर विकसित हो चुका है। आजकल प्रारंभिक पृष्ठों का मेक अप उन सभी विभिन्न स्थितियों के अनुकूल ही होता है जिनसे गुजरकर यह कला यहाँ तक आई है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वे बिना किसी सिद्धान्त के बना लिये जाते हैं। पुस्तकें इस्तेमाल करने वालों के लिए यह असुविधाजनक है। इसलिए यह वांछनीय है कि पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों की रचना और उसके बाद आने वाली विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के क्रम की कोई स्टैण्डर्ड् विधि बना दी जाय जिसका सब अनुकरण करें।

...आम तौर पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर दिये गए लेखक के नाम में असमान महत्त्व के इतने शब्द होते हैं कि उस व्यक्ति के लिए, जो लेखक की संस्कृति से अपरिचित है और किसी दूसरे दौर में पैदा हुआ है, यह बड़ा दूभर हो जाता है कि उस नाम के आवश्यक व अभिन्न शब्दों और अनावश्यक शब्दों में भेद कर सके। इसलिए इस स्तर (Standard) में यह प्रयास किया गया है कि यह काम आसान कर दिया जाय और नामों का प्रस्तुतीकरण कुछ यान्त्रिक तथा निश्चित प्रक्रिया द्वारा किया जाय—यानी टाइप के कुछ बहुत ही प्रमुख प्रकार नियत कर दिए जायँ

[आगे पृष्ठ ४४० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल का प्रगतिशील साहित्य

राहुल सांकृत्यायन

आज की राजनीति

आज की राजनीति का सही मानों में मूल्यांकन जिसमें ढोल की पोल खोल के रख दी गई है। ४॥)

घुमक्कड़ शास्त्र

घुमक्कड़ी के महा-पथिक द्वारा दिया गया घुमक्कड़ी का मनमोहक संदेश। ३।)

महेन्द्रनाथ

आदमी और सिक्के

पैसे के बूते पर इन्सान और आत्मा का दाम आँकने वाले समाज की कहानी। १॥=)

★

शिवदानसिंह चौहान

काश्मीर – देश व सं...

काश्मीर के प्रगतिशील ... आन्दोलन का सूक्ष्म विश्लेषण ... काश्मीर का पहला सां... भूगोल।

हिन्दी गद्य-साहित्य

प्रगतिशील आलोचना के समर्थक चौहान द्वारा श्रीमती ... चौहान के साथ मिलकर लिखा ... हिन्दी गद्य का इतिहास।

युग-छाया

चौहान द्वारा उत्कृष्ट हिन्दी ... कियों का संकलन। विस्तृत ... त्मक भूमिका।

★

शिह येन

बेद वृक्षों की छाया में

नये चीन के नये उप... शिह येन के एक सुन्दर उप... अनुवाद।

★

भैरवप्रसाद गुप्त

गंगा मैया

गंगा के तट पर बसने वाले भोले भारतीय ग्रामीणों का यथार्थ चित्रण। १॥=)

भवानी भट्टाचार्य

कजली

बंगाल के दुर्भिक्ष का संवेदनपूर्ण मार्मिक चित्रण। इस उपन्यास का विश्व की प्रायः सभी सभ्य भाषाओं में अनुवाद हुआ है। ४॥)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली—बम्बई—नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल का प्रगतिशील साहित्य

मुल्कराज आनन्द

एक था राजा

सामन्तशाही के अन्तिम चरणों की अतीव रोचक कहानी। ७॥)

हिन्दुस्तान की कहानी

सरल भाषा में देश का प्रथम इतिहास। जार्ज कीट के चित्रों से सुसज्जित। १॥)

इन्सान की कहानी

मानव की सभ्यता की प्रगति की कहानी। कलाकार एस० चावड़ा द्वारा चित्रित। २॥)

डॉ० रांगेय राघव

उबाल

समाज के झूठे 'ग्लैमर' का प्रवीण लेखनी द्वारा चित्रण। १॥=)

रूस की कहानियाँ

बरफ़ीले देश में

रूस की बाल-लोक-कथाएँ। एक प्रसिद्ध रूसी कलाकार द्वारा चित्रित। १)

पहला शिकार

बच्चों को प्रिय और खेल-खेल में शिक्षा देने वाली रूस की एक सुन्दर कहानी। एक प्रसिद्ध रूसी कलाकार द्वारा चित्रित। १)

★

चीन की कहानियाँ

पीली बत्तक

भारत के महान् पड़ोसी चीन की बाल-प्रिय कहानियों का संग्रह। सचित्र।

तीरन्दाज़ 'ई'

चीन की बाल-लोक-कथाओं का दूसरा संग्रह। सचित्र। १)

कृष्णचन्द्र

सुबह होती है

दक्षिण के प्रगतिशील क्षेत्रों का यात्रा-सम्बन्धी रिपोर्ताज। गल्प-कथा से अधिक रोचक। ३)

फूल और पत्थर

आज के सामाजिक अन्ध-विश्वास और राजनीतिक चार-सौ-बीसी पर व्यंग्यात्मक निबन्ध (सैटायर)। हतंगड़ी के कार्टूनों से सुसज्जित। २॥)

नागार्जुन

बाबा बटेसरनाथ

निर्मम यथार्थ का मार्मिक चित्रण करने वाले सिद्धहस्त कलाकार का नवीनतम उपन्यास। १॥=)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली—बम्बई—नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें लेखक के नाम के विभिन्न शब्दों को छापा जा सके।

५. प्रत्येक पुस्तक में इस स्तर द्वारा निर्धारित सब प्रारम्भिक पृष्ठों का होना अनिवार्य नहीं है।

६. पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों में सूची तथा अन्त में अनुक्रमणिका भी महत्त्वपूर्ण चीजें हैं और उनके बारे में अलग मानक स्तरों में निर्देश दिया गया है, जो अभी तैयार किये जा रहे हैं।

१. क्षेत्र—इस स्तर के अंतर्गत पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों में उनके द्वारा दी गई सूचना का प्रदर्शन तथा सम्पादकीय विधि आदि है। एक पृष्ठ के प्रत्येक विषय की स्थिति तथा अलग-अलग टाइप का भी इसमें समावेश किया गया है।

२. रचना के अन्दर के पृष्ठ

२.१. पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों में निम्न चीजें होनी चाहिएँ—

(क) आधा मुखपृष्ठ (वांछनीय)
(ख) पीछे का आधा पृष्ठ (वांछनीय)
(ग) मुख पृष्ठ पर चित्र (ऐच्छिक)
(घ) मुख पृष्ठ (अनिवार्य)
(ङ) मुख पृष्ठ के पीछे का भाग (अनिवार्य)
(च) समर्पण-पृष्ठ (ऐच्छिक)
(छ) समर्पण-पृष्ठ के पीछे का पृष्ठ (ऐच्छिक)
(ज) आमुख पृष्ठ के पीछे का पृष्ठ (ऐच्छिक)
(झ) आभार-प्रदर्शन का पृष्ठ (ऐच्छिक)
(ञ) सूची का (के) पृष्ठ (अनिवार्य)
(ट) भूमिका का (के) पृष्ठ (अनिवार्य)

२.२. पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों का क्रम उसी प्रकार का होना चाहिए जैसा कि २.१ में बताया गया हो उस शक्ल के अतिरिक्त जो कि २.२.१. में निर्धारित की जाय।

२.२.१—भूमिका, जिसमें मुख्यतः उद्देश्य, सीमा, स्तर, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या पुस्तक में वर्णित विषय का विकास हो, इसके बाद आनी चाहिए। सूची का (के) पृष्ठ और भी किसी प्रकार की भूमिका सूची के पृष्ठ (या पृष्ठों) के ठीक पहले होने चाहिए।

३. आधा मुख-पृष्ठ

३.१ आधे मुखपृष्ठ में निम्नांकित के अतिरिक्त और कुछ न होगा—

(क) जिस माला के अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशित की जा रही है उसके बारे में सूचना; और

(ख) पुस्तक का छोटा-सा नाम।

३.२ आधे मुखपृष्ठ की सुन्दरता को विकृत किए बिना—

(क) सिरीज (माला) के बारे में सूचना पृष्ठ के ऊपरी किनारे के जितने समीप हो सके दी जानी चाहिए, और

(ख) संक्षिप्त नाम पृष्ठ के ऊपरी आधे भाग में होना चाहिए और केन्द्र के जितना समीप सम्भव हो, होना चाहिए।

३.३. सिरीज के बारे में दी गई सूचना में निम्नांकित बातें हों—

(अ) सिरीज (माला) का नाम

(ब) सम्पादक का (के) नाम, यदि कोई है तो, और

(स) सिरीज (माला) के अन्तर्गत पुस्तक का अनुक्रमांक।

३.४. संक्षिप्त नाम, पुस्तक के पूरे नाम से ही लिया जायगा, जिसमें से आनुषंगिक नाम, तथा व्याख्यात्मक वा सूचनात्मक शब्द व दूसरे शब्द निकाल दिये जायँगे। उद्धरणार्थ उसे लेने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

उदाहरण—१. रंगनायन; एस० आर०, लायब्रेरी लेजिस्लेशन हैंडबुक ऑफ मद्रास लायब्रेरी एक्ट। मद्रास लायब्रेरी एसोसिएशन। १९५३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(संक्षिप्त नाम—लायब्रेरी लेजिस्लेशन)

२. रंगनाथन, एस० आर० सोशल बिब्लियोग्राफी ऑर फिजिकल बिब्लियोग्राफी फार लायब्रेरियन्स, दिल्ली-यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली, १९५२ (संक्षिप्त नाम—सोशल बिब्लियोग्राफी)

३. प्रूफ देखने तथा पाण्डुलिपियाँ तैयार करने के लिए लेखक की गाइड, न्यूयार्क जॉन वाइली, १९५०, (संक्षिप्त नाम—लेखक की गाइड)

आधे मुखपृष्ठ के पीछे का भाग

मुखपृष्ठ का सिलसिला दूसरी ओर पढ़े जाने के लिए आधे मुखपृष्ठ में निम्नांकित चीज़ों का उल्लेख करते हुए बिब्लियोग्राफी दी जानी चाहिए—

(क) अन्य नाम तथा सिरीज़ के लम्बे नाम, यदि पुस्तक किसी सिरीज़ की हो।

(ख) लेखक की अन्य पुस्तकों के नाम यदि लेखक ने लिखी हैं या जिन पुस्तकों को आयोजित किया हो।

(ग) पुस्तक के विषय के ही सम्बन्ध में प्रकाशक द्वारा प्रकाशित दूसरी पुस्तकों के नाम; और

(घ) पता (या पते), जहाँ से पुस्तक प्राप्त की जा सके।

प्रत्येक पुस्तक से सम्बन्धित सूचना में निम्न लिखित बातें होंगी—

(क) लेखक का का नाम (अनिवार्य) (घ) प्रकाशन-शैली (वांछनीय)
(ख) पुस्तक का नाम (अनिवार्य) (ङ) संयोजन (वांछनीय)
(ग) प्रकाशन का वर्ष (अनिवार्य) (च) मूल्य (वांछनीय)

मुखपृष्ठ

मुखपृष्ठ में निम्न लिखित बातें होंगी—

(क) पुस्तक का नाम (अनिवार्य)

(ख) लेखक का (के) नाम (यदि हों तो अनिवार्य)

(ग) लेखक का (के) संक्षिप्त परिचय, उदाहरणार्थ उनकी शैक्षणिक उपाधियाँ और शिक्षण-सम्बन्धी या सरकारी पद आदि की सूचना (ऐच्छिक);

(घ) सहयोगी, सम्पादक, अनुवादक, टीकाकार, भूमिका-लेखक, चित्रकार का (के) समुचित क्रमबद्ध व वर्णनात्मक शब्दों में नाम (यदि हों तो), (अनिवार्य)

(ङ) उद्देश्य (ऐच्छिक)

(च) प्रकाशक का चिह्न (ऐच्छिक)

(छ) प्रकाशकों का (के) नाम, प्रकाशन स्थान का नाम (अनिवार्य)

(ज) प्रकाशन का वर्ष (अनिवार्य)

मुखपृष्ठ की सुन्दरता को विकृत किये बिना ही :

(क) मुखपृष्ठ पर लिखी हुई चीज़ों का क्रम ५.१ के अंतर्गत ही होगा

(ख) पुस्तक का नाम ऊपरी कोने के जितना करीब हो सके होगा

(ग) लेखक या लेखकों के नाम पृष्ठ के ऊपरी आधे भाग में होंगे, और

(घ) प्रकाशन सम्बन्धी सूचना और प्रकाशन-वर्ष पृष्ठ के निचले कोने के यथा सम्भव पास होगा।

नाम यदि छोटा है तो उसे काफी बड़े टाइप में दिया जाना चाहिए।

यदि पुस्तक का नाम लम्बा है तो उसका संक्षिप्त नाम ही बड़े टाइप में लिखा जाना चाहिए।

लेखक या लेखकों के नाम केवल कर्ता-विषयक रूप में ही लिखे जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५.५.१. लेखक के नाम में आये हुए शब्द उसी क्रम से लिखे जायँगे जिसमें वह स्वयं उन्हें लिखता है।

५.५.२. लेखक के नाम का सबसे मुख्य शब्द जिसे बिब्लियोग्राफी या सूचीपत्र में देना होता है यानी वह नाम विशे संक्षेप किसी अक्षर विशेष में नहीं होना चाहिए वह बड़े (capital) टाइप में होगा लेकिन पुस्तक के नाम छोटा और पुस्तक के बाकी शब्दों तथा नाम के दूसरे शब्दों से अपेक्षया बड़ा होना चाहिए।

५.५.३. लेखक के नाम में प्रतिष्ठा-सूचक और सम्मान के शब्द 'इटैलिक्स' में होने चाहिएँ।

५.५.४. लेखक की पदवी या शिक्षासम्बन्धी डिग्री आदि बताने वाले शब्द अपेक्षाकृत कुछ छोटे टाइप में होने चाहिएँ और जहाँ तक सम्भव हो सके, नाम की पंक्ति से भिन्न होने चाहिएँ।

५.५.५ लेखक का अन्य व्यक्तियों, लिमिटेड संस्थाओं या अन्य पुस्तकों से सम्बन्ध प्रकट करने वाले शब्द अपेक्षाकृत टाइप में हों और लेखक के नाम की पंक्ति से भिन्न हों।

५.६ प्रकाशन वर्ष का सन् इण्डो-अरैबिक अंकों में होगा और ईस्वी सन् के अनुकूल होगा।

५.६.१ दूसरे किसी काल का सन् भी यदि चाहें तो साथ में दिया जा सकता है। उस स्थिति में काल विशेष का नाम रूप से दिया जाना चाहिए।

५.७. आनुषंगिक नाम या व्याख्यात्मक और परिचयात्मक शब्द जो उसमें हों, सहयोगियों के नाम, निशान, ३.३ और के अन्तर्गत आये हुए शब्द और लक्ष्य मुखपृष्ठ पर आये हुए अन्य शब्दों की अपेक्षा कम प्रधान होने चाहिएँ।

६. मुखपृष्ट का पिछला भाग

६.१. मुखपृष्ठ के पिछले भाग में निम्न लिखित बातें होंगीः —

(क) संस्करण (णों) के सम्बन्ध में सूचना (अनिवार्य)

(ख) पुस्तक का काल नम्बर (call number) (वांछनीय)

सुन्दर, सस्ती, ऐतिहासिक और गृह-उद्योग-धंधे की पुस्तकें

सिलाई-कटाई शिक्षा	३)	मीनाकारी शिक्षा	३)	चित्रकारी शिक्षा	
इलेक्ट्रिक गाइड	३)	ढलाई का काम	४)	मोटर मेकैनिक टीचर	
इलेक्ट्रिक वायरिंग	३)	मोटर ड्राइविंग टीचर	४)	चित्रकारी पेंटिंग शिक्षा	
सायकल (मरम्मत)	३)	घड़ीसाजी (मरम्मत)	३)	क्रीम पाउडर बनाना	
दस्तकारी रबर	२)	धनवान बनने के गुप्त रहस्य	३)	व्यापार दर्पण	
स्वास्थ्य और संभोग	१॥)	इच्छा स्तंभन के अनुभूत उपाय	१)	पति पत्नी	
पाक प्रवेशिका	१)	अभिनेत्री जीवन	१)	रेखा-विज्ञान (पामिस्ट्री)	
फिल्मी जल तरंग	१)	भारत माता का सन्देश	१)	महाराणा प्रताप (सचित्र)	
मानव धर्म प्रचारक	४)	वीर शिवाजी (सचित्र)	॥।)	झाँसी की महारानी (सचित्र)	
गुरु गोलवलकर	॥।)	डा० हेडगेवार (सचित्र)	॥।)	जन्म भूमि सजिल्द (सचित्र)	
हिन्दी-इंगलिश टीचर	३)	हारमोनियम तबला गाइड	१॥)	जादूगरों का उस्ताद	
१४ भाषा घर बैठे सीखिये	२॥)	मिस्मरेजम (मेस्मेरिज्म विद्या)	३)	योग आसन	
दुनिया की सैर	२)	ताश के जादू	२)	वशीकरण विद्या	
स्वास्थ्य शिक्षा	२॥)	साबुन शिक्षा	१॥)	स्टूडियो की कहानियाँ	
फिल्मी तितलियाँ	१॥)	घरेलू विज्ञान	२।)	सौन्दर्य श्रृंगार	
अकबर-बीरबल-विनोद	२॥)	फिल्मी परियाँ सचित्र रंगीन	३॥)	हिमालय यात्रा	

फिल्मी बाँसुरी : पीतल की ट्यून्ड की हुई मू० ३), बाँसुरी शिक्षक मूल्य ॥।), आने प्रत्येक पुस्तक पर डाक व्यय ॥।) अलग लेकिन अधिक की पुस्तकें पेशगी एडवांस भेजकर मँगाने पर डाक-व्यय हम देंगे १०) से अधिक की पुस्तकें मँगाने पर १२½% कमीशन भी दिया

चित्रगुप्त प्रकाशन, मंडी रामदास (P. S. D), मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) कापीराइट नोट (ऐच्छिक) और

(घ) मुद्रक का नाम व पता (अनिवार्य) ।

प्रकाशन-सौन्दर्य की आवश्यकताओं के अनुकूल ही :

(क) मुखपृष्ट के पिछले भाग का मदों का क्रम भी वैसा ही होगा जैसा कि ६. १ में हो ।

(ख) संस्करण-सम्बन्धी सूचना पृष्ठ के ऊपरी आधे भाग में होनी चाहिए ।

(ग) 'कॉल नम्बर' लगभग पृष्ठ के बीच में होना चाहिए और

(घ) मुद्रक के सम्बन्ध में सूचना पृष्ठ के नीचे के भाग में होनी चाहिए ।

प्रत्येक संस्करण के लिए उसका नम्बर या खुलासा और प्रकाशन-वर्ष देना आवश्यक है ।

'कॉल नम्बर' के ऊपर तथा नीचे दोनों ओर कम-से-कम $\frac{1}{3}$ स्थान (या ८.५ मिलीमीटर) खाली छोड़ा जाना चाहिए ।

यदि 'कॉल नम्बर' नहीं दिया जा रहा तो हो उसके लिए लगभग १ इंच का रिक्त स्थान पृष्ठ के लगभग-मध्य में छोड़ा जाना चाहिए ।

मुद्रक-सम्बन्धी सूचना बहुत ही कम प्रमुख टाइप में होनी चाहिए ।

अन्य कोई भी सामग्री, चाहे वह उद्धरण, लक्ष्य या आधुनिक लेखकों का जन्म सन् हो यदि पृष्ठ का प्रकाशन-सौन्दर्य इजाजत दे तो मुखपृष्ठ के निचले या ऊपरी आधे भाग में होनी चाहिए ।

समर्पण का पृष्ठ

समर्पण का पृष्ठ पूरी तौर पर कलात्मकता पर निर्भर होना चाहिए ।

समर्पण पृष्ठ का पिछला भाग

समर्पण पृष्ठ का पिछला भाग खाली होना चाहिए ।

सूची का पृष्ठ[1]

१. कम-से-कम आवश्यकता

१.१. सूची टैब्यूलर फॉर्म में तीन कालमों में दी जानी चाहिए, जिसमें क्रमशः निम्नांकित बातें हों :

(क) परिच्छेद का नम्बर

(ख) उसका नाम और

(ग) परिच्छेद के शुरू का पृष्ठ या सम्मिलित पृष्ठ ।

१.२. यदि पुस्तक में उसके पृष्ठों के क्रम के अलावा कुछ चित्र, नक्शे या कोई और सामग्री दी जाय तो उसे सूची-पृष्ठ के अलग भाग में दिया जाना चाहिए जिनमें तीन कालमों में निम्न-लिखित बातें हों :

(क) सीरियल नम्बर

(ख) पृष्ठ-क्रम में न दी गई सामग्री का नाम, और

(ग) उसकी स्थिति की सूचना

१.३. जब चित्रों की सूची भी आवश्यक हो, जैसा कि वैज्ञानिक और टेकनिकल प्रकाशनों में होता है, तो वह भी सूची-पृष्ठ में अलग से तीन कालमों में दी जानी चाहिए :

(क) सीरियल नम्बर

(ख) चित्र का शीर्षक और

(ग) चित्र का पृष्ठ

[1] इसके विवरण के लिए दस्तावेज ई० सी० २(३०) सूची के लिए प्रस्तावित भारतीय स्तर प्रचलन (ड्राफ्ट इंडियन स्टैण्डर्ड प्रेक्टिस) देखिये, जो इसके साथ ही टिप्पणी के लिए वितरित किया जा रहा है ।

१९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६.२. वृद्धि

६.२.१. प्रत्येक परिच्छेद के अन्तर्गत परिच्छेद का सारांश दिया जा सकता है, हर विषय के पहले उसका सेक्शन नम्बर दिया जाना होगा और या उसके बाद पृष्ठ के शुरू का नम्बर दिया जाना होगा।

६.२.२ यदि परिच्छेदों का विभाजन 'पुस्तक', 'भाग', 'उपविभाग' आदि में किया गया है कि उसके अनुकूल ही उसके व परिच्छेदों के विभाजन का ज्ञान भी सूची-पृष्ठ में ही करा देना चाहिए।

६.२.३ पुस्तक का संक्षिप्त नाम और लेखक का या लेखकों के नाम सूची-पृष्ठ के बिलकुल ऊपर दिये जाने चाहिएँ और उनका आकार-प्रकार उसी प्रकार का होना चाहिए जो मुखपृष्ठ पर दिया गया हो।[१]

६.२.४ सूची-पृष्ठ में प्रयुक्त टाइप और उसका जमाव ऐसा होना चाहिए कि संदर्भ में आसानी हो।

दस्तावेज (Document) ई. सी. २ (२६)

०.१ यह भारतीय स्तर (Standard) भारतीय स्टैण्डर्ड्स संस्था द्वारा मसविदे की कार्यकारिणी-समिति की स्वीकृति के बाद ता०........को मंजूर हुआ और ता०........को डौक्यूमेण्टेशन सेक्शनल कमिटी द्वारा अंतिम रूप से स्वीकृत हुआ।

०.२ विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाओं की संख्या, कुल मिलाकर ही नहीं वरन् विभिन्न-विषयक पत्रिकाओं की संख्या भी हाल ही में इतनी अधिक हो गई हैं कि किसी पाठक को उनमें से अपने लिए उपयोगी लेख चुनने के लिए उनमें प्रकाशित हजारों लेखों को पढ़ने में बहुत समय खर्च करना पड़ता है। दूसरे, सारी पत्रिकाएँ प्राप्त करने में भी बहुत कठिनाई होती है। इन्हीं दो कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से अब विभिन्न विषयों पर पृथक् पृथक् पत्रिकाएँ प्रकाशित करने की प्रथा शुरू हो गई है।

०.३ साथ ही यह ढंग भी प्रचलित हो गया है कि किसी भी पांडित्यपूर्ण पत्रिका में प्रकाशित लेखों के साथ उसका सारांश दिया जाने लगा है। इसी आशय का एक आदेश इण्डियन स्टैण्डर्ड्स : ४, १६४६ 'पत्रिका के मेकअप की रीति' में दिया गया है। उसी के सदृश एक और नियम भी लेखकों और वैज्ञानिक व टेकनिकल लेखों के लेखकों के लिए आदेश[२] १६५१ में दिया गया है।

०.४ विगत बीस-तीस वर्षों के दौरान में सारांश तैयार करने में जो अनुभव हुआ है उससे यह अंदाज हो गया है कि सारांश में किस प्रकार की और किस मात्रा में सामग्री की आवश्यकता होती है। इसलिए समय ने ही सारांशों के लिए नियम बना दिए हैं।

०.५ आशा की जाती है कि ये नियम लेखकों, सम्पादकों और अन्य सारांश तैयार करने वालों को सारांश तैयार करने में एक आशापूर्ण और एकता-मूलक पद्धति का अनुकरण करने में सहायता देगा, और इस प्रकार तैयार किये हुए सारांश पाठकों को और अधिक सहायता देंगे।

१. क्षेत्र

१.१ यह स्तर सारांश प्रस्तुत करने वाली पत्रिकाओं में प्रकाशित सारांशों के लिए क्रमबद्ध और कोष के रूप में, साथ ही तदर्थ (एड हॉक) सारांशों के लिए भी नियम निर्धारित करता है।

२. क्रमबद्ध सारांश प्रस्तुत करने वाली पत्रिका के लिए सारांश

२.० निम्नांकित नियम क्रमबद्ध सारांश प्रस्तुत करने वाली पत्रिका में प्रकाशित सारांशों पर लागू होंगे और विषयों तथा उनके सदृश क्लास-नम्बरों के लिए स्तम्भ-शीर्षक प्रस्तुत करने में सहायक होंगे।

१. इस आवश्यकता का अनुकरण सूची-पृष्ठ का फोटोग्राफिक अवतरण, जो अपने-आप में पूर्ण होगा, के लिए भी सहायक सिद्ध होगा।

२. कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज़ ऑफ इण्डिया की संयुक्त समिति द्वारा तैयार किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(Quality)

१.१ यदि पठनीय सामग्री में सम्मिलित क्षेत्र उस अंतिम श्रेणी से, जिसमें वह दर्ज है, कम है तो उन विषयों की ठीक-ठीक मर्यादा प्रकट की जानी चाहिए।

१.२ स्तम्भ-शीर्षकों के प्रसंग और उनके क्रम से ही, जो शीघ्र ही सूचना मिल जाती है वह उसमें नहीं शामिल की जानी चाहिए।

१.३ पठनीय सामग्री के नाम से जो सूचना स्पष्ट रूप से अदा की जाती है वह सारांश में शामिल नहीं की जानी चाहिए।

१.४ पठनीय सामग्री में दिये गए ज्ञान की मुख्य पूर्व सूचना संक्षेप में दी जानी चाहिए।

१.५ पठनीय सामग्री में दिये गए ज्ञान की गौण पूर्व सूचना, यदि हो तो, संक्षेप में दे दी जानी चाहिए।

१.६ पठनीय सामग्री में यदि कोई नया तथ्य खोजा गया है तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

१.७ कोई भी नया प्रकार या कृत्य या कानून-सम्बन्धी कोई लेख या शैली या कोई भी नई चीज, जो पठनीय सामग्री में वर्णित है, उसका उल्लेख होना चाहिए।

१.७.१ इस प्रकार के नये प्रकारों की आवश्यक बातों का, जिनका २. १.७ में उल्लेख है, वर्णन उसमें शामिल कर लिया जाना चाहिए, पर केवल उसी स्थिति में यदि वह छोटा है।

१.८ पठनीय सामग्री में परीक्षणात्मक तथ्य तथा चित्र, यदि कोई हो तो, उनको भी स्पष्ट करना चाहिए।

१.९ परीक्षणात्मक तथ्य केवल उसी शर्त पर सारांश में दोहराये जा सकते हैं जब कि वे पठनीय सामग्री के ही सार हों और संक्षेप में प्रकट किये जा सकते हों।

१.१० सारांश अपने-आपमें समझने योग्य हों। मूल लेख के संदर्भ की आवश्यकता न पड़े।

श्री गुरुदत्त जी का चिर प्रतीक्षित

उपन्यास

... वाम मार्ग ...

छपकर तैयार है।

· · चार्वाकीय धारा पर विवेचनात्मक ऐतिहासिक उपन्यास · ·

बढ़िया कागज़ पर सुन्दर छपाई, अत्यन्त ही सुदृढ़ जिल्द और आकर्षक, पॉलिश्ड जैकेट। पृष्ठ-संख्या लगभग ४८०, मूल्य ७)।

श्री गुरुदत्त जी की अन्य पुस्तकों के पूर्ण विवरण तथा व्यापाराना दरों के लिए हमें लिखें।

भा र ती सा हि त्य स द न,

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. १.११ सारांश में उस सामग्री का, जिसका कि सारांश दिया गया है, लेखा-जोखा या आलोचना नहीं की जानी चाहिए।

२.२ मात्रा

२.२.१ सारांश में इतने शब्द होने चाहिएँ कि छपने के बाद उनका क्षेत्र ८ और १० वर्ग इंच (या ५२ और ६५ वर्ग सेंटीमीटर) के बीच होना चाहिए।

२. २.२ सारांश की लम्बाई बढ़ानी पड़ेगी यदि पठनीय सामग्री का रूप संक्षिप्त सारांश में ठीक से अदा न हो पाये।

२.३ भाषा

२. ३.१ विशुद्धि या स्पष्टता में यदि बाधा न आय तो हर जगह पूरे वाक्यों का प्रयोग आवश्यक नहीं।

२. ३.२ शब्दों के आम तौर पर समझे जाने वाले संक्षिप्त रूप इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

२. ३.३ जहाँ तक हो सके मूल लेख की टेकनिकल शब्दावली का ही प्रयोग होना चाहिए।

३. तदर्थ (एड हॉक) सारांश

३. १ उस सारांश पर जो पूरा छप रहा हो, वे नियम सिवाय उनके जो २. १. १. और २. १.२ अंतर्गत आते हैं, लागू होंगे।

४. सारांश प्रस्तुत करने वाली पत्रिका के लिए कोश के रूप में कुछ सारांश

४.१ किसी भी सारांश पर जो कोश के रूप में किसी सारांश प्रस्तुत करने वाली पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, वे नियम २ के अंतर्गत है, लागू होंगे, उनको छोड़कर जो २. १.१ के अंतर्गत है।

४.२ पठनीय सामग्री में आये हुए विषय की ठीक सीमा दी जानी चाहिए।

दस्तावेज (Document) ई.सी. २ (३०)

प्रस्तावना

०.१ यह भारतीय स्तर भारतीय स्टैण्डर्ड्स संस्था द्वारा मसविदे की कार्यकारिणी-समिति की स्वीकृति के बाद ता०......... मंजूर हुआ और ता०..........को डौक्यूमेण्टेशन सेक्शनल कमेटी के द्वारा अंतिम रूप से स्वीकृत हुआ।

०.२ किसी भी पठनीय सामग्री की विषय-सूची का उद्देश्य यह होता है कि विषय-विभाजन, विभाग, परिच्छेद और पठनीय सामग्री के इसी प्रकार के दूसरे भागों का साधारण तौर पर जमाव (Lay-out) जाहिर हो जाय। पुस्तक का शायद उसके मूल के बाद सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला भाग उसकी विषय-सूची है पाठकों के कुछ खास वर्ग, जैसे वर्गीकरण करने वाले लायब्रेरियन इसे किताब के मूल अंश से भी अधिक बार देख लेते हैं। इसलिए विषय-सूची की तैयारी व उसके पेश करने के ढंग के लिए यह जरूरी है कि कुछ प्रामाणिक नियमावली निर्धारित की जाय ताकि संदर्भ व हवाले के लिए सुभीता और आसानी हो जाय।

१. सीमा

१.१ इस स्तर के अन्तर्गत निम्नांकित पठनीय सामग्री के लिए विषय-सूची तैयार करने, उसका रूप व संपादनादि के लिए बनाए गए नियम आते हैं:[1]—

(क) सामान्य पुस्तक, (ख) मामूली पृथक् विभागों से संयोजित पुस्तक, (ग) अंतिम पृथक् विभागों से जोड़ी गई पुस्तक, (घ) सीरियल (मालागत), और (ङ) पीरियोडिकल (सामयिक)।

२. शब्दावली

२. ० इस स्तर की उद्देश्य-पूर्ति के लिए निम्नांकित परिभाषा लागू होगी :

२.१ विषय-सूची

पुस्तक में दिये गए विषय-वस्तु के शीर्षकों की उसी क्रम के अनुसार सूची दी जाय। विषय-सूची में विभिन्न

1. इन शब्दावलियों की परिभाषाएँ, रंगनाथन (एस०आर०) क्लासिफाईड कैटॅलाग कोड, संस्करण ३,१९५१ में दी गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें पठनीय सामग्री पर निर्भर होंगी ।

१. सामान्य पुस्तक

शीर्षक

विषय-सूची का नाम 'सूची' या किसी भी भाषा का समानार्थक शब्द होगा ।

लेखक या लेखकों, सम्पादक या सम्पादकों के नाम और पुस्तक का संक्षिप्त नाम विषय-सूची के पृष्ठ पर ऊपर उसी ढंग में दिया जाना चाहिए जिसमें कि मुखपृष्ठ पर दिया गया है ।

इस आवश्यकता का अनुकरण सूची-पृष्ठ की फोटोग्राफ़िक आवृत्ति, जो अपने-आपमें पूर्ण होगी, के लिए सहायक सिद्ध होगा ।

रूप रेखा ।

किसी भी सामान्य पुस्तक की विषय-सूची में उसके अन्दर दिये गए परिच्छेदों की उसी क्रमानुसार सूची होनी चाहिए ।

प्रत्येक परिच्छेद के लिए अलग पैराग्राफ होगा ।

प्रत्येक परिच्छेद के लिए दिये गए पैराग्राफ में क्रमश: निम्न लिखित बातें होंगी :

(क) उसका नम्बर

(ख) उसका नाम

(ग) उसके प्रथम पृष्ठ का नम्बर या उसके पृष्ठों का शुरू और आखिर का नम्बर ।

यदि पुस्तक के परिच्छेद भागों में विभक्त हैं (या पुस्तकों, विभागों आदि में विभक्त हैं) तो सूची में उस भाग या परिच्छेद-विशेष का शीर्षक दिया जायगा (या तो वैसा ही जैसा कि पुस्तक के अन्दर है या संक्षिप्त) और हर पैराग्राफ के ऊपर उसके परिच्छेद स्पष्टतः लिखे जायँगे ।

कविवर 'आदर्श' के अनुपम ग्रंथ

विरह-गीत (करुण-रस-प्रधान काव्य) मूल्य ५)

"इस समय हिन्दी-कवियों में तो प्राय: कोई ऐसा लेखक नहीं है जिसकी कृति में दुःख और अन्धकार का इतना स्थान व्याप्त हो जितना इस पुस्तक में है ।"

—डॉ० अमरनाथ झा

समर-गीत (वीर-रस-प्रधान काव्य) मूल्य ४)

"As a poet too the bracing beauty of some of your songs has doubtless entitled you to be honoured as one of the most notable poets of this generation."

—Shri V. D. Savarkar

प्रगति-गीत (काव्य)	७)	माननीया श्रीमती पण्डित (जीवन चरित्र)	२।।)
राजर्षि-महिमा (खण्ड-काव्य)	२)	काला साँप (कहानी-संग्रह)	२)
रूपक (शृङ्गार-रस-प्रधान काव्य)	१।।)	व्यवधान (उपन्यास)	१।।)
गांधी-गीता (काव्य)	।।)		

प्रकाशक

आदर्श प्रकाशन मंदिर, दारागंज, प्रयाग (उत्तर प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४.२.३ हर परिच्छेद का खुलासा करने वाले पैराग्राफ़ के बाद उसके भागों की व्याख्या करने वाले पैराग्राफ़ भी दिये जा सकते

४.२.३.१. वर्णनात्मक पैराग्राफ का अर्थ है उन विभागों की सूची उसी क्रमानुसार जैसे वे पुस्तक के अन्दर दिये गए हैं।

४.२.३.२. प्रत्येक विभाग के नाम के पहले उसका नम्बर (यदि कोई हो तो) दिया जाना चाहिए और उसके बाद उस का नम्बर दिया जाना चाहिए जिस पर वह दिया गया है।

४.२.३.३ विभाग से सम्बन्धित पैराग्राफ का प्रत्येक अंश अलग वाक्य समझा जाना चाहिए।

४.३ यदि पुस्तक में उसके पृष्ठों के क्रम के अलावा कुछ चित्र, नक्शे या कोई और सामग्री दी जाय तो उन्हें सूची अलग भाग में दिया जाना चाहिए जिनमें तीन कालमों में निम्नांकित बातें हों—

(क) सीरियल नम्बर

(ख) पृष्ठ-संख्या-विहीन सामग्री का नाम

(ग) उसकी स्थिति (वह कहाँ दी गई है)

४.४ जब चित्रों की सूची भी आवश्यक हो, जैसा कि वैज्ञानिक और टेकनिकल प्रकाशनों में होता है, तो वह भी सूची अलग से तीन कालमों में दी जानी चाहिए :—

(क) सीरियल नम्बर

(ख) विवरण, और

(ग) चित्र का पृष्ठ

५. टाइप और ले-आउट

५.१ विषय-सूची में प्रयुक्त टाइप और ले-आउट ऐसा होना चाहिए कि आसानी से देखा जा सके।

५.२ विषय-सूची तीन कालमों में होनी चाहिए जिसमें क्रमशः यह सब दिया जाना चाहिए :

(क) परिच्छेद का नम्बर

(ख) उसका नाम, और

(ग) पृष्ठ या पृष्ठों की सूचना।

५.३ वर्णनात्मक पैराग्राफ यदि हों तो छोटे टाइप में होने चाहिएँ। वे या तो निरंतर दिये जायँ या उप-सूची के अंदर ही दिये जायँ।

५.४ यदि कोई भाग हो तो उसका नाम, उसकी स्थिति और टाइप के अनुसार स्तंभ-विशेष के शीर्षक की हैसियत देना चाहिए।

६. स्थिति

६.१ विषय-सूची पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों में दी जानी चाहिए, और उसकी स्थिति वही होनी चाहिए जैसी कि "पुस्तक के प्रारम्भिक पृष्ठों के मेक-अप के लिए पद्धति" नाम की इण्डियन स्टैंडर्ड में दी गई है।

६.२ विषय-सूची पुस्तक के दाहिने पृष्ठ पर दी जानी चाहिए।

२. पृथक्-पृथक् विभागों से निर्मित साधारण पुस्तक

७. आवश्यकताएँ

७.१ पृथक्-पृथक् विभागों से निर्मित साधारण पुस्तक की विषय-सूची में भी वे ही आवश्यक बातें होंगी जो सामान्य पुस्तकों के लिए होती हैं, पर निम्नांकित संशोधनों के साथ—

७.१.१—४.२.१ (ख) के अन्तर्गत और ५.२ (ख) के अन्तर्गत शब्द निम्नलिखित शब्दों द्वारा बदले जाने चाहिएँ—

"उसके नाम के बाद लेखक या लेखकों के नाम दिये जाने चाहिएँ।"

७.१.२ निम्नांकित अतिरिक्त धारा उसमें जोड़ दी जानी चाहिए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा चित्रमय तथा मनोरंजक बाल-साहित्य

...की लोक-कथाएँ (भाग १) नन्दलाल चत्ता		१)
...भूमि की लोक-कथाएँ ...चन्द जैन-अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव		१)
...की लोक-कथाएँ	आदर्शकुमारी जैन	१।)
...की लोक-कथाएँ	पंछी तथा बेदी	१।)
...की लोक-कथाएँ	मन्मथनाथ गुप्त	१॥)
...की लोक-कथाएँ	,, ,,	१॥)
...(चित्रों में)	सादी ॥।) रंगीन	१॥)
...की रानी (चित्रों में)		॥।)
...भारत (चित्रों में)		१)
...(चित्रों में)		१)
...चरित्र (चित्रों में)		१)
...अक्षर-ज्ञान (रंगीन)	रामलाल पुरी	१॥)
..., पढ़ो, लिखो	रमेश भाई	॥=)
...कहानियाँ	संतराम 'विचित्र'	१)
...पूसी	रमेश भाई	॥=)
...विनोद	आनन्दकुमार	१॥)

नीति-प्रमोद	आनन्दकुमार	१॥)
महाभारत की कहानियाँ	राजबहादुरसिंह	१)
कथा-भारती	सावित्री देवी वर्मा	१॥)
जंगल-ज्योति	,, ,,	१॥)
बालकों के चलन	संतराम 'विचित्र'	१।)
अमृत का झरना	लक्ष्मण त्रिपाठी	।)
चिड़ियाघर की सैर	पृथ्वीनाथ शर्मा	१॥)
गुरु-दक्षिणा	सन्तराम वत्स	॥।)
बाल-मेला	शम्भुनाथ 'शेष'	॥।)
चरित्र-निर्माण की कहानियाँ	राजबहादुरसिंह	१॥)
बाल-नीति कथा	विष्णुदत्त 'विकल'	१।)
बूढ़े बच्चे	रामचन्द्र तिवारी-सिद्धि तिवारी	१॥)
प्राणोत्सर्ग	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१।)
पानी बोला	रामचन्द्र तिवारी-सिद्धि तिवारी	२॥)
सुन्दर कहानियाँ	राजबहादुरसिंह	१)
कथा-मंजरी	नागार्जुन	१)

हमारा शीघ्र प्रकाशित होने वाला बाल-साहित्य

...की लोक-कथाएँ	श्याम परमार
...की लोक-कथाएँ	गोविन्द चातक
...प्रदेश की लोक-कथाएँ	सावित्री देवी वर्मा
...लोक-कथाएँ	हंसराज 'रहबर'
...लोक-कथाएँ	,, ,,
...की लोक-कथाएँ	(भाग २) सोमनाथ दर
...की लोक-कथाएँ	सन्तराम वत्स
...की लोक-कथाएँ	जगन्नाथ शर्मा
...की लोक-कथाएँ	अक्षयचन्द्र शर्मा
...लाल	मन्मथनाथ गुप्त
...की कहानियाँ	रामबाबू
...कहानियाँ	रामस्वरूप कौशल

देश-विदेश की अनोखी कहानियाँ	प्रवासीलाल वर्मा
बाल-एकादशी	शान्ति गुप्ता
सूम का घड़ा	सन्तोष गार्गी
सपूतों की कथाएँ	व्यथित हृदय
बकरी माँ	दयाशंकर मिश्र
मुर्गी माँ	,, ,,
दुनिया के आश्चर्य	धर्मपाल
अंकुर के सपने	,,
सरल कथामाला	रामस्वरूप कौशल
भारत देश की सच्ची कहानियाँ	,, ,,
स्काउटों का कौशल	,, ,,

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४४८ से आगे]

५.२.१ परिच्छेद का तथा लेखक या लेखकों के नाम इतने प्रमुख होने चाहिएँ ताकि दोनों आसानी से दिखाई दे जाएँ। यह इस प्रकार हो सकता है कि या तो उन्हें दो कालमों में रख दिया जाय और या दोनों के टाइपों में फर्क रखा जाए।

३. पृथक्-पृथक् विभागों से निर्मित सम्मिलित पुस्तक

८. आवश्यकताएँ—

८.१ पृथक्-पृथक् विभागों से निर्मित सम्मिलित पुस्तक की विषय-सूची में वे ही आवश्यक बातें होनी चाहिएँ जो किसी सामान्य पुस्तक में होती हैं; लेकिन उनमें निम्न लिखित सुधार कर लिये जाने चाहिएँ—

८.१.१—४.२ को और उसकी उप-धाराओं को निम्नांकित चीजों से बदल दीजिये—

६.४.२ पृथक् पृथक् विभागों से निर्मित सम्मिलित पुस्तक की विषय-सूची में उसमें सम्मिलित पुस्तकों के अलग विभाग किये जायँ और उसी क्रम से जिसमें कि वे अन्दर रखे गए हैं।

४.२.१ पुस्तक में सम्मिलित पुस्तक के विभाग में ये चीजें एक के बाद दूसरी होनी चाहिएँ :-

(अ) उसका सीरियल नंबर, (ब) उसके लेखक, और (स) उसका नाम

४.२.२ प्रत्येक सम्मिलित पुस्तक के लिए एक उप-विषय-सूची दी जानी चाहिए जैसा कि सामान्य पुस्तक में होता है।

४.२.३ प्रत्येक सम्मिलित पुस्तक के लिए ठीक उसके शुरू होने के पहले एक अलग सूची भी दी जा सकती है।

४. क्रम

९. आवश्यकताएँ

९.१ किसी सीरियल (माला) की विषय-सूची के लिए भी वे ही आवश्यक बातें अपेक्षित हैं जो कि किसी सामान्य पुस्तक में होती हैं; सिर्फ निम्नांकित सुधारों का होना जरूरी है—

९.१.१—४.२.१ के नीचे निम्नलिखित चीज जोड़ दीजिये—

'४.२.१.१ यदि सीरियल परिच्छेदों में विभाजित नहीं किया गया है तो विषय-सूची में उसके विभाग ही परिच्छेदों का स्थान ले लेंगे।'

५. किसी पत्रिका का अंक

१०. आवश्यकताएँ

१०.१ किसी पत्रिका के विस्तार के लिए विषय-सूची में वे ही आवश्यक बातें होनी चाहिएँ जो किसी साधारण पुस्तक में होती हैं, निम्नांकित सुधारों के साथ—

१०.१.१—३.२ की भाषा निम्नांकित भाषा से बदल लीजिये—

'पत्रिका का नाम, उसका अंक नंबर और वर्ष विषय-सूची के पृष्ठ के बिलकुल ऊपर दिया जाना चाहिए।'

६. पत्रिका के जिल्द बँधे अंक

११. आवश्यकताएँ

११.१ पत्रिका के जिल्द बँधे अंकों की विषय-सूची साधारण पुस्तक के समान ही होगी लेकिन निम्नांकित सुधारों के साथ—

११.१.१—३.२ को निम्न लिखित से बदल लीजिये—

'पत्रिका का नाम, उसका वर्ष नंबर, अंक नंबर और तारीख मुखपृष्ठ की ऊपरी पंक्ति में दिये जाने चाहिएँ।'

११.१.२—६.१ को यों बदल लीजिये—

'पत्रिकाओं के अंक की विषय-सूची उसके कवर के पहले, दूसरे या चौथे पृष्ठ पर कहीं भी दी जा सकती है बशर्ते कि पत्रिका के सभी अंकों में वह वहीं आती रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंक में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

पश्चिमी बंगाल

—आरामबाग नेताजी महाविद्यालय लाइब्रेरी, हुगली।

—आनन्दचन्द्र कालेज लाइब्रेरी, जलपाईगुरी।

—आर० जी० कर मैडिकल कालेज लाइब्रेरी, बेलगछिया रोड, कलकत्ता ४।

—आल इंडिया इंस्टिट्यूट आफ हाइजीन एण्ड पब्लिक हैल्थ लाइब्रेरी, ११०, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता।

—आशुतोष कॉलेज लाइब्रेरी, ६ रसा रोड, कलकत्ता-२६।

—आसनसोल कॉलेज लाइब्रेरी, आसनसोल (बर्दवान)।

—इंटरमीडिएट कॉलेज फार गर्ल्ज़ लाइब्रेरी, आसनसोल (बर्दवान)।

—एग्रीकल्चर कॉलेज लाइब्रेरी, झरग्राम (मिदनापुर)।

—एस० यू० एम० कॉलेज लाइब्रेरी, कलिम्पांग।

—उत्तरपाड़ा कॉलेज लाइब्रेरी, उत्तरपाड़ा (हुगली)।

—उलूबेरिया कॉलेज लाइब्रेरी, उलूबेरिया, (हावड़ा)।

—ऋषि बंकिमचन्द्र कॉलेज लाइब्रेरी, नईहाटी (२४ परगना)।

—कृष्णचन्द्र कॉलेज लाइब्रेरी, हेतमपुर (बीरभूम)।

—कृष्णनगर कॉलेज लाइब्रेरी, कृष्णनगर (नदिया)।

—कटवा कॉलेज लाइब्रेरी, कटवा (बर्दवान)।

—कंदीराज कालेज लाइब्रेरी, कंडी (मुर्शिदाबाद)।

—कलना कॉलेज लाइब्रेरी, कलना (बर्दवान)।

—कलकत्ता नेशनल मैडिकल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, ३२, गोराचन्द रोड, कलकत्ता।

—कूचबिहार विक्टोरिया कॉलेज लाइब्रेरी, कूचबिहार।

—के० एन० कॉलेज लाइब्रेरी, बरहामपुर (मुर्शिदाबाद)।

—खड़गपुर कॉलेज लाइब्रेरी, खड़गपुर (मिदनापुर)।

—कॉलेज लाइब्रेरी, गढ़बेटा (मिदनापुर)

—गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, बरहामपुर (मुर्शिदाबाद)

—गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, ५।३ महात्मा गांधी रोड, हावड़ा।

—गवर्नमेंन्ट कॉलेज लाइब्रेरी, दार्जिलिंग।

—गोखले मैमोरियल गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, १।१ हरीश मुकर्जी रोड, कलकत्ता।

—गोबरबंग हिन्दू कॉलेज लाइब्रेरी, गोबरबंग (२४ परगना)।

—गोयनका कॉलेज आफ कामर्स एण्ड बिजनैस एड्मिनिस्ट्रेशन, २१०, बौ बाजार स्ट्रीट, कलकत्ता।

—चन्द्रनगर कॉलेज लाइब्रेरी, ८ वैल्सली स्ट्रीट, कलकत्ता।

—चारुचन्द्र कॉलेज लाइब्रेरी, २२, लेक रोड, बालीगंज, कलकत्ता-२६।

—जंगीपुर कॉलेज लाइब्रेरी, जंगीपुर (मुर्शिदाबाद)।

—जलपाइगुरी प्रसन्नदेव महाविद्यालय, जलपाइगुरी।

—जियागंज श्रीपतसिंह कॉलेज लाइब्रेरी, जियागंज (मुर्शिदाबाद)।

—डिपार्टमेंट ऑफ एप्लाइड कैमिस्ट्री लाइब्रेरी, कलकत्ता यूनिवर्सिटी, ९२ अपर सर्कुलर रोड, कलकत्ता।

—डेविड हेयर ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, २५।३ बालीगंज, सर्कुलर रोड, कलकत्ता।

—तकी गवर्नमेंन्ट इंटरमीडिएट कॉइब्रेरी, तकी (२४ परगना)।

—ताम्रलिप्त महाविद्यालय लाइब्रेरी, तामलूक (मिदनापुर)।

—दीनबन्धु महाविद्यालय लाइब्रेरी, बनगाँव (२४ परगना)।

—नरसिंह दत्त कॉलेज लाइब्रेरी, १२९, बेल्लीशिअस रोड, हावड़ा।

—नीलरत्न सरकार मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, १३८, लोअर सर्कुलर रोड, कलकत्ता-१४।

—नेताजी महाविद्यालय लाइब्रेरी, आरामबाग (हुगली)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ से ४२४ आगे]

होगा जो सरकार द्वारा अथवा सरकार के अधिकार पर प्रकाशित होंगी, सरकारी उपयोग के लिए प्रकाशित पुस्तकें इनमें अपवाद होंगी।

८. नियम बनाने के अधिकार—केन्द्रीय सरकार अपने अधिकृत गजट में विज्ञप्ति द्वारा इस अधिनियम की उद्देश्य-पूर्ति के लिए नियम बना सकती है।

[पृष्ठ ४२७ से आगे]

कड़वी। इस कड़वेपन के कारण हैं।

इस तरह यह लेखक प्रकाशक बन गया। परन्तु कड़वा अनुभव है कि लेखक अच्छी चीजों का प्रकाशक भले ही हो, 'अच्छा प्रकाशक' नहीं हो सकता। मुसीबतों का ढेर! परन्तु मैं तो एक अजीब ढंग से फँस गया। अब छूटना चाहता हूँ, पर छूट नहीं पाता! विचित्र स्थिति है।

[पृष्ठ ४३० से आगे]

ताओं का संग्रह, (३) भारतीय दिग्विजय, (४) भारतीय मंगल, (५) स्मृति, तथा (६) पूर्णिमा।

उपरि लिखित संस्था को सम्वत् २०१२ (सन् १९५५) के पंचांग की आवश्यकता है। लेखकगण शीघ्र ही २०१२ का पंचांग भेजें।

[पृष्ठ ४३३ से आगे]

एक समय भारत में वाम-मार्ग का प्रचार बहुत भारी रहा था। उसी समय को पृष्ठभूमि बनाकर गुरुदत्त जी का यह नवीन उपन्यास है। भारतीय साहित्य सदन (३०।९०) कनाट सरकस, नई दिल्ली) द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास का मूल्य ७) है।

◈ ◈ ◈

चाबुक में पं० विनायकरावजी कोरटकर विद्यालंकार की १७ रोचक कहानियों का संकलन है। लेखक की सत्रह कहानियाँ इस पुस्तक में संगृहीत की गई हैं इनमें हैदराबाद की पुरानी नौकरशाही की वास्तविकता दिखाई गई है। मनुष्य-स्वभाव का अच्छा चित्रण है। समाज में जो बुराइयाँ घुन की तरह घर किये हुए हैं, उन पर अच्छी चोटें की गई हैं। पृष्ठ-संख्या १३६ है मूल्य सजिल्द १।।।) हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार-सभा हैदराबाद (दक्षिण) से प्रकाशित हुई है।

[पृष्ठ ४३६ से आ

(१) फोटोग्राफी (२) नृत्य व नाटक तथा (३) बाल-साहि

इसी प्रकार 'विवाह' की भी मेलिंग लिस्ट तैया जा सकती है। विशेष पुस्तकों की सूची मय ग्राहक के व पते के मुकम्मल रखी जा सकती हैं और समय-समय ग्राहकों को भेजी जा सकती हैं। ग्राहक उनमें से जो चाहे उन पर चिह्न लगाकर भेज देगा। जो ग्राहक आपको नहीं भेजते, उनका नाम धीरे-धीरे काटा जा सकता है आपका सूचीपत्र व डाक खर्च न व्यर्थ जाए।

इस प्रकार एक नियमित रूप से भेजे गए सूची स्मरण-पत्र आपकी बिक्री में भी वृद्धि करेंगे और कुछ ग्राहक भी आपके बन जायँगे जिनके द्वारा और ग्राहक मैं कठिनाई न होगी।

भारत सरकार के (Planning Commission)
प्लानिंग कमीशन द्वारा सरकारी कार्यालयों
और व्यापारी-संस्थाओं के लिए
विशेष उपयोगी मानी हुई
और
राजस्थान राज्य के वाणिज्य-उद्योग
कार्यालय द्वारा स्वीकृत
राष्ट्रभाषा हिन्दी में अद्वितीय

बिजनेस डायरेक्टरी

(सम्पादक—कान्तिलाल एन० शाह)

भारत के प्रत्येक गृह और बृहद् उद्योगों के लिए
अत्यन्त आवश्यक

मूल्य १४-१२-० वी० पी० से

अवश्य लिखें:
प्रकाशक : केट्टी कम्पनी
२१, दूसरा भोईवाड़ा, बम्बई २।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

भा० सर्वसेवा संघ, वर्धा

—व्यवहार शुद्धि, ले० श्री कृष्णदास जाजू, सामाजिक आचार विषयक। ।)

—भूदान क्रान्ति, ले० श्री कृपलानी। ।)

...द प्रकाशन लिमिटेड, बनारस १

—राजयोग के मूल तत्त्व, ले० राजाराम सखाराम भागवत, महेशचन्द्र शास्त्री। पंतजलि योगसूत्र और थियॉसोफ़ी के अनुसार राजयोग की मीमांसा। पृष्ठ संख्या लगभग १८०। २)

—सृजनात्मक शिक्षा, ले० रोहित मेहता, रामचन्द्र शुक्ल। शिक्षा का नये दृष्टिकोण से विवरण। ।)

...प्रकाशन मन्दिर, बनारस

—रोटी और रोमांस, ले० प्रताप। रोटी और सेक्स पर वर्तमान समाज का प्रज्वलन्त चित्रण। उपन्यास। ३।।)

...एंटल बुक डिपो, दिल्ली

—मौलश्री, ले० श्री कमल शुक्ल। देहात के जीवन पर एक रोचक उपन्यास। मूल्य लगभग ६)

—काले नगर में, ले० कमल शुक्ल। मध्य-वर्ग के एक परिवार की दुखभरी कहानी। २।)

...एंट लौंगमैन्स लिमिटेड, नई दिल्ली

—शिक्षा साधन, ले० भाटिया तथा अदावल। दर्शन और शिक्षा।

...री प्रकाशन, बनारस

—पतन की तस्वीरें, ले० रेनाल्ड्स। अनुवादकः कुमार। विश्वविख्यात कथाकार की अमर कृति "रोजा लैम्बर्ड" का रूपान्तर। उपन्यास। २।।)

—पराये बस में, ले० सुश्री नारायणी कुशवाहा। ग्राम्य जीवन पर लिखा गया रोचक सामाजिक उपन्यास।

—खून के छींटे, ले० सुगन्ध गुप्ता। रोमांचकारी जासूसी उपन्यास। मूल्य लगभग २)

देशसेवा मण्डल, इलाहाबाद

—कृषि हानिकारक कीट पतंग, ले० मोतीलाल सेठ। नया संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण। २)

नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

—कवि, ले० ताराशंकर वन्द्योपाध्याय। बंगला से अनूदित उपन्यास। ४)

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली

—खेलें कैसे?, ले० अग्रवाल। क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल, बैडमिंटन आदि खेलों का विवरण। ३।।)

—विज्ञान के मनोरंजक, ले० शरण।

—आँसू, ले० जमनादास अख्तर। नया संस्करण। ३।)

—अपना रास्ता स्वयं बनाओ, ले० गन्धर्व। चरित्र निर्माण। ३)

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—नष्टनीड़, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर। बंगला से अनूदित उपन्यास। २)

—तीन साथी, ले० रवीन्द्रनाथ ठाकुर। बंगला से अनूदित उपन्यास। १।।)

पुस्तकायन, मुंगेर

—काला राजकुमार, ले० राजेन्द्रप्रसाद सिंह 'हिमांशु'। बालोपयोगी कहानियाँ। ।=)

—मछली का देश, ले० राजेन्द्रप्रसाद सिंह 'हिमांशु'। बालोपयोगी कहानियाँ। ।=)

भारती प्रकाशन, भागलपुर

—अध्ययन के विचार, ले० बेचन। साहित्यिक निबन्धों का संग्रह। १।।)

—भीगीं पलकें, ले० बेचन। कविताओं व मधुर गीतों का संग्रह। १)

—भवंर के बीच, ले० श्यामल किशोर झा। उत्तर बिहार के कोशी अंचल के कथानक पर लिखा गया उपन्यास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—पुस्तकालय की महत्ता, ले० अनुज शास्त्री। पुस्तकालय विज्ञान। १।।)

राज प्रकाशन, पटना ४

—मेघदूत, ले० कलिदास। नागार्जुन द्वारा 'फ्री वर्स' में अनुवाद। मूल्य लगभग ३)

—हिन्दी गद्यशैलियों के नमूने, सं० डॉ डी० बी० शास्त्री, प्रो० कामेश्वर वर्मा। द्विवेदी युगीन साहित्य पर एक दृष्टि। मूल्य लगभग ५)

—हमारे गाँव और किसान; ले० देहाती। ग्रामोपयोगी पुस्तक। ।।।)

राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना ४

—खेती की कहावतें, ले० व्यथित हृदय। नया संस्करण। ।।।)

—रामानुज, ले० नलिन मोहन सान्याल। बालोपयोगी जीवनी। ।।)

—मौलाना, ले० ज्योतिलाल भार्गव। बालोपयोगी कविता संग्रह। ।।।)

रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद

—प्लेटफार्म नम्बर तीन, ले० प्यारेलाल 'आवारा'। लेखक का चालीसवाँ प्रयोगवादी उपन्यास।

—बरसात, मोपाँसा, अनुवादक रमेश वर्मा। मोपाँसा के लोकप्रिय उपन्यास "द रेन" का अनुवाद। १।।)

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—बिहारी, ले० भारत भूषण 'सरोज'। २।।)

—काव्यशास्त्र, ले० शम्भूनाथ पाण्डेय। ३)

—रस, अलंकार, पिंगल, ले० शम्भूनाथ पाण्डेय। तीसरा संस्करण। २।।)

—घन आनन्द, ले० राम वसिष्ठ। २।।)

लोकसेवा प्रकाशन मंडल, बाह (आगरा)

—विश्व ज्योति बापू, ले० रामगोपाल शर्मा। नया संस्करण। गांधीजी की जीवन-गाथा, काव्य के रूप में। १।।)

—वीरांगना, ले० रामगोपाल शर्मा। कविता संग्रह।

—संघर्षों के राही, ले० रामगोपाल शर्मा। प्रगतिशील गीतों का संग्रह। नया संस्करण। ।।)

—कविशाला, ले० रामगोपाल शर्मा। मधुशाला की शैली पर लिखे गए गीत। ।)

लक्ष्मी हिन्दी विद्यालय, चिलकलुरिपेट (आंध्र)

—कसौटी अध्ययन, ले० वैसानि श्रीरामुलु गुप्ता। एकांकी नाटकों का सरल अध्ययन। पृष्ठ लग[illegible] ३६।

संगीत कार्यालय, हाथरस

—संगीत शास्त्र, ले० जगदीश सहाय। विद्यार्थियों [illegible] लिए उपयोगी संगीत की पुस्तक।

—क्रमिक पुस्तक मालिका भाग—५, अनु० [illegible] प्रसाद। भातखण्डे द्वारा लिखित संगीत पुस्तक।

सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा

—कवि रत्नाकर और उनका उद्धवशतक, ले० राम[illegible] शर्मा। एम० ए० और साहित्यरत्न के परीक्षार्थियों [illegible] लिए।

—कवि सम्राट् हरिऔध: उनकी कलाकृतियाँ, ले[illegible] द्वारिका प्रसाद। हरिऔध की समस्त कृतियों का विश्ले[illegible]त्मक विवेचन।

—काव्यश्री, भाग २, अलंकार, ले० डॉ० सुधीन्द्र[illegible] अलंकारों का शास्त्रीय विवेचन, परिभाषा, उदाहरण[illegible] लक्षण एवं नये मौलिक प्रयोग।

—कामायनी दिग्दर्शन, ले० टी० नरसिंहाचारी। [illegible] व्याख्या एवं आलोचनात्मक निबन्ध।

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—सागभाजी की खेती, ले० ना० दु० व्यास।

—भारत विभाजन की कहानी, ले० रणधीर सक्सेना। भारत विभाजन सम्बन्धी दैनिक राजनीतिक वार्ता[illegible] का विशद वर्णन।

—गांधीजी की जीवनी, ले० लुई फ़िशर, अनु० चन्द्र[illegible] वार्ष्णेय। गांधीजी की जीवन-कथा, विदेशी लेखक [illegible] दृष्टिकोण से।

—हर्ष-चरित, कथाकार डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल। कथासार।

—सर्वोदय विचार, आचार्य विनोबा के विचार। सर्वोद[illegible] सम्बन्धी विचार।

—बाहुबली और नेमिनाथ, ले० माईदयाल जैन।

—तन्दुरुस्ती हजार नियामत, ले० महात्मा गांधी। गांधी[illegible] जी के तन्दुरुस्ती सम्बन्धी लेख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—ब्रह्मचर्य, भाग २, ले० महात्मा गांधी ।

…न प्रकाशन, आगरा

—नवीन चित्रकला, भाग १, २ तथा ३ ले० रामगोपाल शर्मा, रामनारायण वर्मा । ६टी, ७वीं तथा ८वीं कक्षाओं के लिए चित्रकला । ।।।), ।।।=), १)

—प्रयोगात्मक ज्यामिति ले० वासुदेव सहाय, मुकुट बिहारीलाल । प्रैक्टिकल, ज्योमेट्री पर हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक । १)

…हित्य संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

—ओझा निबन्ध संग्रह, भाग १, २, ३ व ४; ले० स्वर्गीय डॉ० गौरीशंकर ओझा । इतिहास, पुरातत्व और लिपि सम्बन्धी निबन्ध । ५)

—राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज, भाग ४, सं० अगरचन्द नाहटा । प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के विवरण । ५)

…प्रकाशन, इलाहाबाद

—साहित्य का उद्देश्य, ले० स्वर्गीय प्रेमचन्द । साहित्यिक निबन्ध । पृष्ठ संख्या २८८ । मूल्य ४)

हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस

—ठेठ हिन्दी का ठाठ, ले० स्वर्गीय महाकवि हरिऔध । ठेठ हिन्दी में लिखा सर्वप्रथम उपन्यास । ।।।=)

हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ

—शिवराज भूषण, ले० प्रतापनारायण टंडन । महाकवि भूषण के 'शिवराज भूषण' के उदाहरण खंड का सटिप्पण संस्करण । १।।)

—सरल भाषा विज्ञान, ले० जगमोहन टंडन तथा प्रताप नारायण टंडन । भाषा विज्ञान को प्रश्नोत्तर के रूप में सरल किया है । २)

—सरल व्याकरण, ले० योगेन्द्रनाथ शर्मा, तेज नारायण टंडन । अहिंदी प्रान्तों के लिए प्रश्नोत्तर रूप में सरल हिन्दी व्याकरण । ।।।)

—सूरप्रभा सहायक, ले० योगेन्द्रनाथ शर्मा, तेजनारायण टण्डन । १।।)

क्या काम ही प्रेम है ? क्या प्रेम अविनश्वर है ? क्या प्रेम यौन-संभोग की सीमा से बाहर एक अतीन्द्रिय चेतना है ?

जो रहस्यमय प्रेम संसार के सर्वोत्तम साहित्य का विषय है, उसी विचित्र प्रेम के बहुरंगी चित्रों का एकत्र समावेश :

बंगला की आधुनिक प्रेम कहानियाँ ४।।)

रवीन्द्रोत्तर युग के श्रेष्ठ कहानीकारों की अपूर्व प्रेम-कहानियाँ ।

बंगाल की आधुनिक श्रेष्ठ कहानियाँ ३।।)

श्रेष्ठ कहानीकारों की श्रेष्ठ कहानियों का अपूर्व संग्रह ।

अखण्ड भारत प्रकाशन.

३१ बी. महाराजा टैगोर रोड, कलकत्ता—३१ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति

केदारनाथ शर्मा सारस्वत, अनु०, काव्य-मीमांसा, ३१४, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

दीपनारायण द्विवेदी, छब्बीस कवियों की समालोचना, १६८, क्राऊन, पु० मु०, शिवाजी बुक डिपो, लखनऊ

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री डॉ०, सन्त कवि दरिया, प्रथम खण्ड, २५६, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

पद्मचन्द्र अग्रवाल, आधुनिक काव्य और दर्शन, २००, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा,

प्रतापनारायण टण्डन, अन्नपूर्णा का मन्दिर, ५२, क्राऊन, लक्ष्मी हिन्दी विद्यालय, चिलकलुरिपेट, (आन्ध्र)

प्रेमनारायण टण्डन सं०, हिन्दी के दो प्रमुखवाद, २००, क्राऊन, विद्या मन्दिर, लखनऊ

योगेन्द्रनाथ शर्मा, तेजनारायण टण्डन, गद्य मंजूषा सहायक, ११८, क्राऊन, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', रसदोषालंकार, २०, क्राऊन, रतन प्रकाशन मन्दिर, बाह (आगरा)

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', यशोधरा समीक्षा, १४५, क्राऊन, रतन प्रकाशन मन्दिर, बाह (आगरा)

रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहास, १६०, क्राऊन, रतन प्रकाशन मन्दिर, बाह (आगरा)

राम वसिष्ठ, गीतकार विद्यापति, २२०, क्राऊन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

रामावतार शर्मा महामहोपाध्याय, श्रीरामावतार शर्मा निबन्धावली, ३१६, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

वैसानि श्रीरामुलु गुप्त, शकुन्तला (गुप्त) की टीका, ७२, क्राऊन, लक्ष्मी हिन्दी विद्यालय, चिलकलुरिपेट (आन्ध्र)

शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान, हिन्दी गद्य-साहित्य, १३२, क्राऊन, पु० मु०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

श्री रामुलु गुप्त, तेजनारायण टण्डन, इंटर हिन्दी गाइड, २३६, क्राऊन, लक्ष्मी हिन्दी विद्यालय, चिलकलुरिपेट (आन्ध्र)

उपन्यास

प्यारेलाल 'आवारा', खुमार, १७६, क्राऊन, पु० मु०, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद

कमल जोशी, बहता तिनका, १४०, क्राऊन, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

गोविन्दसिंह, लाल हथेली, १६०, क्राऊन, चिनगारी प्रकाशन, बनारस

जमनादास अख्तर, आग, १७६ क्राऊन, पु० मु०, नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली

टाल्स्टाय, अनु० कमल, टाल्स्टाय की डायरी, ४५०, क्राऊन, राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया

टाल्स्टाय, अनु० तीन प्रोफ़ेसर, युद्ध और शान्ति, तीन खण्डों में, १२८०, राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया

प्यारेलाल 'आवारा', घायल, २५६; क्राऊन, पु० मु०, चिनगारी प्रकाशन, बनारस

प्यारेलाल 'आवारा', रेत के महल, १६०, क्राऊन, रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद

मैक्सिम गोर्की, अनु० कमल, पूँजीपति, ४५०, क्राऊन, राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...गोर्की, अनु० राजनाथ, गोर्की की कहानियाँ (१), २१६, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ३)
...गोर्की, अनु० राजनाथ, गोर्की की कहानियाँ (२), क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा ३)
...गोर्की, अनु० कामताप्रसाद, माँ, ४५०, क्राऊन, पु० मु०, राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया ४)
...नाथ टाकुर, कौन किसी का, १४४, क्राऊन, पु० मु०, नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली २।)
...राघव, उबाल, ११४, क्राऊन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १॥।=)
...राघव, भारती का सपूत, १५२, क्राऊन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
...शास्त्री, कर्म साधना, २२५, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४)
...वालपुरी, आखिरी काँटा, १६४, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १॥)
...वालपुरी, एक सपेरा, १४३, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली २॥)
..., प्रेम पुजारिन, १६०, क्राऊन, पु० मु०, नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली २।)
...फ़ास्ट, अनु० नूर अब्बासी, मुक्ति-मार्ग, ४००, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ६)

कविता

...नारायण मिश्र, शल्यवध, १४८, क्राऊन, श्री दूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, कलकत्ता २)
...शर्मा, बिखरे कण, ६०, क्राऊन, पर्वतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, योल, (कांगड़ा) १)
...नन्दन पंत, बालकृष्ण राव, डॉ० नगेन्द्र सं०, कवि भारती, ७४८, डिमाई, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी १५)
...महाजन, श्री गांधीचरित मानस, २२०, डिमाई, हिन्दी भवन, जालन्धर, इलाहाबाद ५॥=)

कहानियाँ

...चन्द्र, काश्मीर की कहानियाँ, १७४, क्राऊन, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
...किशोर झा, इंसान की ज़िन्दगी, १०४, डिमाई, भारती प्रकाशन, भागलपुर २ १॥)
...विद्यालंकार, चाबुक, १३६, क्राऊन, हिन्दी प्रचार-सभा, हैदराबाद १॥।)
...नाथ शर्मा 'कौशिक', कल्लोल, २२६, क्राऊन, पु० मु०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)

धार्मिक

...स्वामी, मनुस्मृति, ६९०, क्राऊन, पु० मु०, जवाहर बुक डिपो, मेरठ ५)
...शर्मा, कल्प सरित, २२४, क्राऊन, जवाहर बुक डिपो, मेरठ ॥।)

नाटक

...शरण मित्र, धरती माता, ५२, क्राऊन, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ १)

बालोपयोगी, किशोरोपयोगी

...रानी संघी, हैदराबाद के ऐतिहासिक कलास्थल, ७½" × १०", ४४, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद ।।)
...दास, सं० सूर्यकुमार जोशी, मालविकाग्निमित्र, ३२, क्राऊन, सस्ता-साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...दास, सं० हरदयालु सिंह, रघुवंश, ३१, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
... विद्यालंकार, मनुष्य की कहानी, ४८, क्राऊन, हिन्दी भवन, जालन्धर, इलाहाबाद ॥=)
..., सरल व्यायाम, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
..., सं० विष्णु प्रभाकर, स्वप्न वासवदत्ता, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
...नाथ शर्मा, तेजनारायण टण्डन, हमारे राष्ट्र निर्माता, ६४, क्राऊन, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकिशोर पाण्डेय, दक्षिण के महापुरुष, ७½"×१०", २८, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
रामनिरंजन पाण्डेय, गाँव की कहानियाँ, ७½"+१०", २८, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
वंशीधर विद्यालंकार, बालपद, ७½"×१०", २८, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
विश्वम्भरनाथ भट्ट, बाल संगीत दुसरा, ५१, रायल, पु० मु०, संगीत कार्यालय, हाथरस
विमला लूथरा, दो एकांकी, ७½"+१०", २०, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
श्रीराम शर्मा, बालकों की कहानियाँ, ७½"×१०", २८, हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
हर्ष, नागानन्द, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

विविध

अनन्त सदाशिव अलतेकर डॉ, गुप्तकालीन मुद्राएँ, २६६, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना
अनुज शास्त्री, पुस्तकालय, ७८, डिमाई पु० मु०, भारती प्रकाशन, भागलपुर
ओंप्रकाश केला, भारतीय अर्थशास्त्र का विवेचन, ८००, रायल, पु०मु०, भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद
देवसहाय त्रिवेद डॉ० प्राङ् मौर्य बिहार, २१४, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
द्वारिकासिंह, बुनियादी शिक्षा में स्वाश्रयता, २४, डिमाई, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम
धीरेन्द्र मजुमदार, नई तालीम और समाज का नवनिर्माण, ४४, क्राऊन, सर्वसेवा संघ, वर्धा
प्रभुदास गांधी, खादी द्वारा ग्राम विकास, ६०, डिमाई, सस्ता साहित्य-मण्डल, नई दिल्ली
मुरारिलाल शर्मा, प्रकृति सन्देश, ६०, क्राऊन, आलोक प्रकाशन, आगरा
रामगोपाल, भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक, ४८३, रायल, ज्ञानमण्डल लि०, बनारस
रामेश्वर 'अशान्त', आलू की खेती, ६०, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
रामेश्वर 'अशान्त' टमाटर की खेती, ३०, क्राऊन, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
सुरेशराम भाई, विनोबा कामिशन, २६८, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवासंघ, वर्धा
सुनीति रानी, फिल्मी हारमोनियम संग्रह, २०४, क्राऊन, जवाहर बुक डिपो, मेरठ
लक्ष्मीनारायण गर्ग, फिल्म संगीत २४वाँ भाग, २४१, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस
विशारद राजनीति पथ-प्रदर्शक, ३६४, क्राऊन, मालवीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ
सत्यकेतु विद्यालंकार डॉ० राजनीति शास्त्र, विशेष संस्करण, ३६८, डिमाई, पु० मु०, सरस्वती सदन, मसूरी
सत्यप्रकाश डॉ०, वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा, २६८, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठः ६" × ८"। आधा पृष्ठः ३$\frac{3}{4}$" × ६" या २$\frac{3}{4}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{3}{4}$" × ३$\frac{3}{4}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{3}{4}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{1}{2}$" × ६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित : १००)।

- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग
प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक

प्रकाशन-समाचार के आगामी अंक के प्रकाशन के साथ इस पत्र के जीवन का पहला वर्ष समाप्त हो रहा है। सितम्बर १९५४ के अंक से यह पत्र दूसरे वर्ष में पदार्पण करेगा।

निश्चय किया गया है कि सितम्बर, ५४ का अंक **सत्साहित्य-सूची-विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हो।

इस **विशेषांक** में हिन्दी में उपलब्ध निम्न विषयों की यथा-सम्भव प्रत्येक पुस्तक की सूची छपेगी।

अलंकार, रस तथा छन्द; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल; इतिहास—सांस्कृतिक; इतिहास-साहित्यिक; उपन्यास-कला; कबीर; कला-विवेचन; कहानी-कला; काव्य—प्रेम; काव्य—रीति; केशव; कोष; गुप्त मैथिलीशरण; घन-आनन्द; चन्द बरदाई; जयशंकर प्रसाद; जायसी; तुलसी; दिनकर; देव; नन्ददास; नाटक-कला; निबन्ध-कला; निबन्ध—साहित्यिक; निर्गुण साहित्य; निराला; पन्त सुमित्रानन्दन; प्रेमचन्द; बिहारी; भारतेन्दु; भाषा-विज्ञान और व्याकरण; भूषण; मतिराम; महादेवी; मीरा; रत्नाकर; रसखान; राजस्थानी साहित्य; लोक-साहित्य; वाद; विभाषा-साहित्य-परिचय; विद्यापति; शोध तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ; संस्कृत वाङ्मय; सन्त-काव्य; सिद्धान्त-ग्रन्थ; सिद्ध-साहित्य; सूरदास; हरिऔध।

प्रमुख लेखकों की साहित्यिक कृतियों की सूची भी इसमें प्रकाशित होगी, लेकिन सिद्धान्त-ग्रन्थों की सूची के संकलन का प्रयास ही मुख्य होगा।

सूची में प्रत्येक पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, पृष्ठ-संख्या, संस्करण, आकार, मूल्य, तथा प्रकाशक का नाम प्रकाशित किया जायगा।

प्रकाशकों से प्रार्थना है कि उपरिलिखित विवरण देकर अपने नवीनतम सूचीपत्रों की दो-दो प्रतियाँ हमें शीघ्रातिशीघ्र भेजें। वैसे इस विशेषांक में १४ अगस्त, १९५४ तक प्रकाशित तथा प्राप्य पुस्तकों को सम्मिलित कर लिया जायगा। अभी सविवरण सूची भेजने के बाद जो पुस्तकें छपें, प्रकाशक उनकी सूचना भी हमें १४ अगस्त १९५४ तक हमारे पास पहुँचा दें।

प्रकाशन-समाचार का **सत्साहित्य-सूची-विशेषांक** प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता तथा पुस्तकालय द्वारा सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय हो जायगा। इस **विशेषांक** का अलग से मूल्य १) रहेगा, लेकिन स्थायी ग्राहकों को २॥) के वार्षिक मूल्य में ही मिल सकेगा।

प्रकाशक अभी से अपने लिए विज्ञापन-स्थान भी सुरक्षित कर लें; विज्ञापनों को सीमित स्थान देना ही अभीष्ट है।

सत्साहित्य के प्रकाशकों का समर्थक

प्रकाशन-समाचार
१, फ़ैज बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

इस अंक का

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक

यज्ञदत्त साहित्य पर कुछ सम्मतियाँ

...प्रसाद द्विवेदी : यज्ञदत्त शर्मा में एक सफल उपन्यासकार की प्रतिभा है।

...me : Yagya Dutta Sharma has progressive outlook on life. His novels are of high educational value.

... : Sharmaji has given a new trend to Hindi Novels.

...टाइम्स : यज्ञदत्त शर्मा ने प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया है।

... : यज्ञदत्त शर्मा को चरित्र-चित्रण में असाधारण सफलता मिली है।

... : यज्ञदत्त शर्मा की भाषा मँजी हुई और कथानक सधा हुआ है।

...सन्देश : यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास बौद्धिक होते हुए भी मनोरंजक एवं सरल हैं।

...भारत : प्रेमचन्द के बाद यज्ञदत्त शर्मा ने ही ग्रामीण जीवन का इतना सफल चित्रण किया है।

... : यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास स्वस्थ मस्तिष्क की उपज हैं।

...समाज : ग्रामीण समाज का ऐसा सफल चित्रण करके प्रेमचन्द की परम्परा को पुनः चालू किया है।

... : सामाजिक समस्याओं पर उपन्यास लिखने में ख्याति पा चुके हैं।

यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास तथा हमारे अन्य गौरवपूर्ण प्रकाशनों

के विक्रय तथा एजेन्सी के लिए

पुस्तक विक्रेता पत्र-व्यवहार करें

साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डल के दो नवीन प्रकाशन

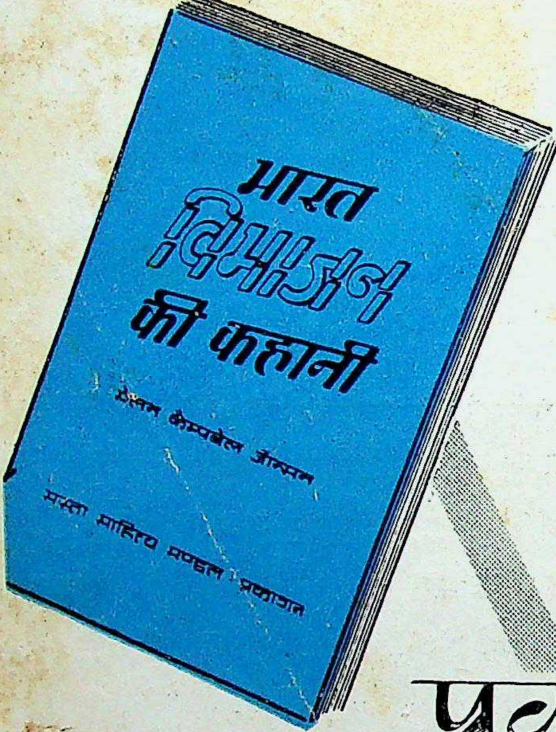

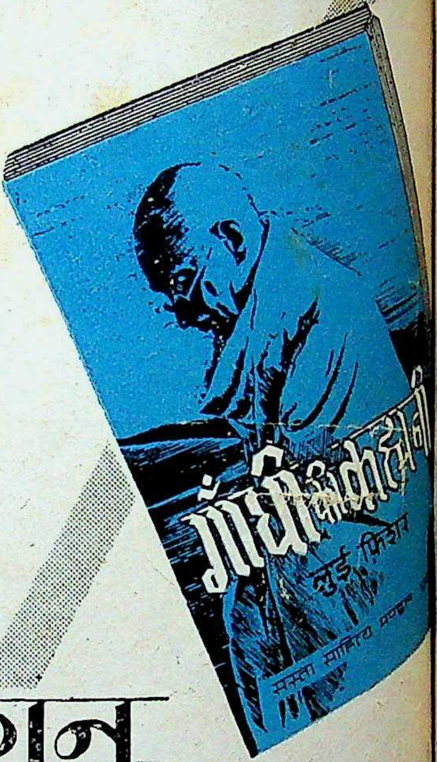

भारत-विभाजन की कहानी (सचित्र)

एलन कैम्पबैल जॉन्सन

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने हर रोज की डायरी के रूप में उन सब घटनाओं, वार्तालापों, संघर्षों आदि का उल्लेख किया है, जिनके आधार पर अन्ततः विभाजन हुआ। अनेक नवीन ऐतिहासिक तथ्यों, ज्ञातव्य बातों से परिपूर्ण यह कहानी उपन्यास से भी अधिक रोचक है।

मूल्य ४)

गांधी की कहानी (सचित्र)

लुई फिशर

अन्त से प्रारम्भ करके लेखक ने गांधी जी के जीवन की सारी कहानी बड़े ही आकर्षक और हृदय-... ढंग से कही है। सम्पूर्ण जीवन-कथा इतनी ... इतनी प्राणवान है कि एक बार पुस्तक के हाथ में ... पर बिना समाप्त किये उसे कोई भी नहीं छोड़ सकता। मूल्य ...

सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ उत्तम प्रकाशन

"लोकमान्य"—तिलक की यह जीवनी स्वतन्त्र भारत की उस पीढ़ी के लिए लिखी गई है जिन्हें लोकमान्य जैसे मान्य नायकों के जीवन से स्फूर्ति प्राप्त करना है। मूल्यः रु० १-४-० ।

२. "भगवान भला करे"—(कहानियाँ) इसके लेखक दक्षिण भारत के उदीयमान कलाकार श्रीरमेश चौधरी हैं। इनकी दक्षिण भारत की ही सामाजिक व्यवस्था की पृष्ठ-भूमि पर लिखी १२ कहानियाँ इसमें हैं। मूल्य रु० २-८-० ।

तमिल, तेलुगु तथा मलयालम भाषाएँ हिन्दी भाषा व नागरी लिपि द्वारा सीखने के लिए स्वयं शिक्षक—मूल्य तमिल रु० १-०-०, तेलुगु रु० ०-१२-०, मलयालम रु० १-८-० ।

४. "दक्षिण भारत"—उत्तर और दक्षिण के बीच साहित्यिक व सांस्कृतिक समन्वय के लिए उपयोगी मासिक पत्र, जिसमें दक्षिण की चारों भाषाओं के साहित्य, संस्कृति आदि सम्बन्धी लेख रहते हैं। वार्षिक मूल्य रु० ६-०-० ।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास-१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती-सेवा-सदन के कुछ साहित्यिक तथा छात्रोपयोगी प्रकाशन

साहित्यिक

हिन्दी-काव्य-प्रकाश	:	प्रो० गयाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०
विधवा (खण्ड काव्य)	:	रामाचार्य पाण्डेय
दुर्गा सप्तशती (काव्य)	:	रामाचार्य पाण्डेय
स्वातन्त्र कथा (खण्ड काव्य)	:	रामस्वरूप दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०
नीरिका (गीत संग्रह)	:	सुरेन्द्र

बी० ए० और बी० काम

भारतीय समाज, संस्कृति तथा संस्थाएँ	:	प्रो० कैलाशनाथ शर्मा एम० ए०
ए लेबोरेटरी मैन्यूल आफ एक्सपेरीमेण्टल साइकॉलोजी	:	प्रो० एल० पी० कुलश्रेष्ठ
एलीमेण्ट्स आफ बिज़नेस आर्गनाइजेशन	:	एन० डी० सक्सेना

इण्टरमीजिएट

व्यावहारिक समाज शास्त्र (होम इकनामिक्स)	:	कैलाशनाथ शर्मा, शम्भूरत्न त्रिपाठी
'शशिगुप्त' की आलोचना	:	अम्बिका प्रसाद वाजपेयी एम० ए०
'गुप्त धन' की आलोचना	:	कृष्णकान्त शुक्ल एम० ए०
'पूर्व की ओर' प्रकाश	:	प्रो० गयाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०
पञ्चधारा (कुणाल, पथिक, सिद्धराज, क्रौंचवध और पूर्व की ओर की समालोचना)	:	प्रो० गयाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

हाई स्कूल

हिन्दी-रचना-प्रकाश (तृतीय भाग)	:	जगदीशनारायण त्रिपाठी, शम्भूरत्न त्रिपाठी
सूची-शिल्प शिक्षा	:	प्रकाशरानी भटनागर
सामान्य ज्ञान सरल अध्ययन	:	जगदीशनारायण त्रिपाठी एम० ए०, दुलारेलाल शुक्ल एम० ए०
आर्थिक भूगोल सरल अध्ययन	:	जगदीशनारायण त्रिपाठी एम० ए०
ग्रामीण अर्थशास्त्र सरल अध्ययन	:	सूबेदारसिंह एम०ए०, प्रतापचन्द्र शुक्ल एम०ए०

जूनियर हाई स्कूल

हिन्दी-रचना-प्रकाश (प्रथम भाग)	:	जगदीशनारायण त्रिपाठी, शम्भूनाथ त्रिपाठी
हिन्दी-रचना-प्रकाश (द्वितीय भाग)	:	जगदीशनारायण त्रिपाठी, शम्भूनाथ त्रिपाठी
विनोद के पत्र (नैतिक शिक्षा)	:	प्रमोदचन्द्र तिवारी एम० ए०
गृह-शिल्प-शिक्षा	:	प्रकाशरानी भटनागर

प्राप्ति स्थान

कालेज बुक स्टाल

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, पी० रोड, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

…न सूची	१०
…कीय	११
…वेचन	१३
…न्दन ग्रन्थ तथा स्मारक ग्रन्थ	१७
…न, धर्म व दर्शन	१७
…स्त्र, वाणिज्य तथा व्यापार	२४
…य	३५
…व-शास्त्र तथा स्वास्थ्य विज्ञान	३५
…कथा	३६
…चना : सिद्धान्त	३७
…चनात्मक निबन्ध	४१
…चना : विविध सहायक ग्रन्थ तथा टीकाएँ	४५
…स : भारत	४८
…स : विदेशी	५०
…स : सांस्कृतिक	५१
…स : साहित्यिक	५२
…स-कला	५४
…	५५
…	५५
…ता : नवीन	५६
…ता : प्राचीन	७७
…नी-कला	७९
…-विवेचन	७९
… तथा ग्रामोद्योग	८१
…	८१
… तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ	८२
…काव्य	८३
…-साहित्य तथा सर्वोदय साहित्य	८४
गृह-विज्ञान तथा महिलापयोगी	९७
घनानन्द	९८
चन्द बरदाई	९९
चरित्र-निर्माण	९९
जीवनी	१००
जीवनी : साहित्यिक	१०३
जायसी	१०४
तुलसी	१०४
दिनकर	१०६
दीनदयाल गिरि	१०६
देव	१०६
नन्ददास	१०७
नाटक-कला	१०७
निबन्ध-कला	१०७
निबन्ध : विविध	१०७
निबन्ध-संग्रह	१०७
निराला	१०९
पत्रकारिता	१०९
प्रसाद	१०९
प्राणिशास्त्र	११०
प्रेमचन्द	१११
पुस्तकालय-विज्ञान	१११
बाल-मनोविज्ञान	१११
बिहारी	११२
भारतेन्दु	११२
भाषा-विज्ञान	१२१
भूगोल	१२२
भूषण	१२३
मनोविज्ञान	१२३
महादेवी वर्मा	१२४
महावीरप्रसाद द्विवेदी	१२४
मीरा	१२४
मैथिलीशरण गुप्त	१२५
यात्रा	१२५
यौन विज्ञान	१२८
रत्नाकर	१२८
रसखान	१२८
रस, छन्द, अलंकार	१२८
रेखाचित्र तथा संस्मरण	१३०
राजनीति तथा शासन	१३१
रामचन्द्र शुक्ल	१३४
लोक-साहित्य	१३४
व्याकरण तथा रचना	१३५
विद्यापति	१३६
विभाषा साहित्य	१४५
विविध	१४७
विज्ञान	१४८
वाद विवेचन	१५०
शिक्षा-शास्त्र	१५०
समाज-शास्त्र	१५१
संस्कृत-वाङ्मय	१५२
सुमित्रानन्दन पन्त	१५५
सूरदास	१५५
सेनापति	१५६
हरिऔध	१५६
हिन्दी-गद्य	१५६
हिन्दी-प्रचार	१५७
प्रकाशक सूची	१६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापन सूची

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, उत्तर बेनिया बाग, बनारस ९०
आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली २७-३०, ३८
आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २ १५९
ओरिएण्टल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली ६६
इण्डियन पब्लिकेशन्स, हिल रोड, अम्बाला छावनी ६६
एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली ८
कबीर-ग्रन्थ-प्रकाशन समिति, हरक, बाराबंकी ३१
कला निकेतन, ६० तूतबाड़ी, गया ३१
किताब घर, सोजती गेट बाहर, जोधपुर १३८
किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद-३ ६
किरण कुञ्ज, समस्तीपुर (बिहार) ११८
गयाप्रसाद एण्ड सन्स, बाँके विलास, आगरा २५, ३२
गुप्ता स्टोर्स, धात किडीह, पो० जमशेदपुर १३८
चिंगारी प्रकाशन, बनारस १ १४९
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास-१७ १
नवयुग साहित्य सदन, खजूरी बाजार, इन्दौर शहर ११५
नवसाहित्य प्रकाशन, नई सड़क, बनारस ९५
पद्मजा प्रकाशन, रामबाग, कानपुर १४३
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, इरविन अस्पताल के सामने, नई दिल्ली ७१, १३८
पुस्तकालय सन्देश (मासिक), पो० पटना-विश्वविद्यालय, पटना-५ ११८
प्रेम एण्ड को०, इतवारिया बाजार, इन्दौर शहर २६
बिहार राष्ट्र-भाषा-परिषद्, सम्मेलन भवन, पटना-३ १४३
भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड, अलीगढ़ ८९
भारती भण्डार, लीडर रोड, इलाहाबाद १३९
भारती साहित्य सदन, ३०/९० कनाट सर्कस, नई दिल्ली-१ ९८
भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस-५ ६९
मयूर प्रकाशन, मानक चौक, झाँसी ११५
मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली ११९
मेहरचन्द मुन्शीराम, नई सड़क, दिल्ली १२७, १४२
रंगभूमि बुकडिपो, १५०१ दरीबा, दिल्ली-६ ३१
रवि प्रकाशन (किताबघर, परेड), कानपुर ११४
राजकमल कला प्रकाशन, ४० बुलानाला, बनारस-१ १३८

राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली ७०, ९१-९४, ...
राजपाल एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली
राजश्री प्रकाशन, ५३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-१
राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा (म० प्र०)
रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन (३), इलाहाबाद-३
रेखा प्रकाशन, ४६८९ बल्ली मारॉं, दिल्ली
लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन, हिन्दी-विभाग, लखनऊ
विद्याधाम, १३७२ बल्लीमारान, दिल्ली-६
विद्या मन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ ५, ...
विद्या-विभाग, कांकरोली (राजस्थान)
विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा ६७, ११६-११७, ...
विभू प्रकाशन, १३ लखपतराय मार्ग, इलाहाबाद-३
विश्वभारती (शान्तिनिकेतन), ६।३ द्वारकानाथ ठाकुर लेन, कलकत्ता-७
विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर
वाणी प्रकाशन, प्रयाग
श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड, पटना-४
शारदा प्रकाशन, भागलपुर-२ आवरण ...
सरस्वती सदन, मसूरी (उ० प्र०) आवरण ...
सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली आवरण ...
साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली आवरण ...
सरस्वती-सेवा-सदन (कालेज बुक स्टाल), पी० रोड, कानपुर
सरस्वती प्रेस, पो० बा० २४, इलाहाबाद-१
साहित्य-निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर
साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
साहित्य सेवा सदन, छीपी तालाब, मेरठ
सुरुचि प्रकाशन, 'कनक' हिमायत नगर, हैदराबाद
हंस प्रकाशन, जीरो रोड, इलाहाबाद
हिन्दी भवन, जालंधर तथा इलाहाबाद
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, नामपल्ली, हैदराबाद
ज्ञानधाम-प्रतिष्ठान, शाहदरा (दिल्ली)
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक १ :
: पूर्णाङ्क १३ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

प्रकाशन समाचार की पहली वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सत्साहित्य **सूची विशेषांक** का प्रकाशन करते हुए हर्ष है। हिन्दी के प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों तथा मान्य लेखकों के अन्यतम सहयोग से ही इस पत्र का प्रथम वर्ष सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका है; इसका अनुग्रह और आभार हम हृदय से मानते हैं। पत्र का जो स्वागत हुआ है तथा चारों ओर इसकी उपयोगिता को जो मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया गया है, उसने अपने गम्भीर उत्तरदायित्व की ओर हमें निरन्तर सजग रखा है। हम हिन्दी-जगत् की इन आशाओं को यथाशक्य सत्य करने में तत्पर रहें, यही अभीष्ट है।

प्रकाशन समाचार का एक ध्येय हिन्दी में होने वाले प्रकाशनों को सूचीबद्ध करते रहना था। प्रायः सभी प्रमुख प्रकाशकों का सहयोग हमें इस ओर मिला है। 'प्रमुख' से हमारा संकेत उन प्रकाशकों से है जो अपने प्रकाशनों को देश के सभी कोनों में पहुँचाना चाहते हैं तथा हिन्दी के राष्ट्रभाषा के पद के अनुरूप अपने कर्त्तव्यों से सुपरिचित हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हिन्दी में होने वाले सभी प्रकाशनों की सूची इस पत्र के अंकों में छपती रही हो। कुछेक प्रकाशक सहयोग का आश्वासन देने के बावजूद केवल प्रमादवश ही अपने प्रकाशनों की सूचियाँ सदैव नहीं भेजते रहे हैं; कुछ अन्य प्रकाशक केवल पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशन के लिए ही पुस्तक व्यवसाय में हैं; उन्हें इस ओर दिलचस्पी नहीं कि हिन्दी की बन रही प्रकाशन-सूची को पूर्ण रखने में हाथ बटाएँ। सम्भव है कि ऐसी सूची के महत्त्व से वे अनभिज्ञ हैं। फिर भी यह तो निस्संकोच कहा ही जा सकता है कि हिन्दी के मुख्य, प्रतिनिधि-प्रकाशनों को **प्रकाशन समाचार** ने प्रतिमास सूचीबद्ध किया है।

हमारे सामने एक ध्येय प्रकाशन-जगत् के लिए उपयोगी लेख-सामग्री जुटाने का भी रहा है। हम अब तक मुद्रण आदि के सम्बन्ध में प्रामाणिक लेखावली का प्रकाशन नहीं कर पाए हैं, लेकिन देश-विदेश के अधिकारी लेखकों द्वारा लिखित बिक्री के पहलू से सम्बन्धित उत्तम सामग्री हमें प्रकाशनार्थ प्राप्त हुई और प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं ने इन लेखों को उपयोगी पाया। प्रथम वर्ष के अंकों में देश के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण पुस्तकालयों के नाम भी क्रमशः छापे गए। कई एक पुस्तकाध्यक्षों से हमें मालूम हुआ है कि इस सूची के प्रकाशित होने के बाद उन्हें प्रकाशन-सूचियाँ अधिकाधिक संख्या में प्राप्त होने लगी हैं। हमारा निरन्तर प्रयास रहेगा कि हम इसी प्रकार उपयोगी लेखों का प्रकाशन करते रहें।

लेखकीय मञ्च में प्रकाशित सूचनाओं से कई लेखकों और प्रकाशकों में परस्पर सम्बन्ध बना, इसका हमें व्यक्तिगत ज्ञान तथा विशेष हर्ष है। हम प्रकाशक-बन्धुओं से अनुरोध करेंगे कि वह **लेखकीय मञ्च** से अधिकाधिक लाभ उठाएँ। जिन प्रकाशकों को किन्हीं खास विषयों के लेखकों से सम्बन्ध की आवश्यकता थी, उनकी सूचनाएँ भी **प्रकाशन समाचार** में छपीं और उनका सम्बन्ध भी लेखकों से हुआ। इस प्रकार लेखक-प्रकाशकों के बीच एक कड़ी बनने से **प्रकाशन समाचार** का एक मुख्य ध्येय सफल हुआ है।

प्रकाशकीय समस्याओं के सामूहिक हल खोजने के लिए एक देशव्यापी संगठन की आवश्यकता पर बल और एतत्सम्बन्धी प्रचार **प्रकाशन समाचार** ने अपने प्रथम अंक से किया और यह हर्ष का विषय है कि इसी वर्ष **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** का सूत्रपात हुआ। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ में देश की गण्य-मान्य संस्थाएँ सम्मिलित हुई हैं। इस पत्र का समर्थन संघ को और प्रकाशकीय हितों की रक्षा के लिए किए जाने वाले हर सत्प्रयास को सदा मिलता रहेगा। प्रकाशन-जगत् की सब स्वस्थ परम्पराओं और आन्दोलनों का हम साथ देंगे। अपने इस निश्चय का हम यथापूर्व निर्भीकतापूर्वक पालन करते रहेंगे।

सितम्बर १९५३ से अगस्त १९५४ तक के एक वर्ष में **प्रकाशन समाचार** में १०३८ पुस्तकों के प्रकाशन की सूचना छपी। इनमें से अधिकांश पुस्तकें प्रथम बार ही प्रकाशित हुईं। विषयानुसार पुस्तकों की संख्या निम्न प्रकार है :

अर्थ-शास्त्र, राजनीति-शास्त्र, समाज-शास्त्र	६२
आलोचनात्मक तथा सांस्कृतिक पुस्तकें	१६२
इतिहास	२०
उपन्यास	१८१
कविता	७९
कहानी	५१
धर्म, चरित्र-निर्माण, जीवनी	६७
नाटक	४१
बालोपयोगी, किशोरोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी	१६६
मनोविज्ञान	१६
विज्ञान, आयुर्वेद, चिकित्सा-विज्ञान, भूगोल तथा शिक्षा-शास्त्र	३६
विविध	१५७
	१०३८

इस तालिका से हिन्दी-प्रकाशन-जगत् की मुख्य प्रवृत्तियाँ ही स्थूल रूप में उभर सकेंगी। सर्वाधिक प्रकाशन उपन्यासों का हो रहा है; यह तो आलोचक ही कह सकेंगे कि क्या इन उपन्यासों में से कोई एक भी देश के आज के संक्रान्ति काल को, आज के आन्दोलित समाज का अथवा किनारे की खोज में भटक रही भारतीय मानस की तरणी का चित्रांकन करने में सफल हुआ है। यह समस्या लेखकों की अधिक है; प्रकाशकों की कम; लेकिन सफल, अमरता के बीज लिये हुए उपन्यास की खोज प्रकाशकों के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्यिकों के लिए। उपन्यास से कुछ ही कम संख्या में बाल, किशोर तथा नव-शिक्षित प्रौढ़ों के लिए उपयोगी साहित्य का प्रकाशन हो रहा है; शायद इसलिए कि आज कुछ राज्यों की सरकारें ऐसे साहित्य की प्रति वर्ष खरीद किया करती हैं। आलोचनात्मक पुस्तकों का प्रकाशन कम संख्या में हो रहा है। हिन्दी-प्रकाशन-जगत् की यह विशेष घटना है। देश की अन्य भाषाओं में आलोचनात्मक साहित्य का प्रकाशन रचनात्मक साहित्य के अनुपात में कहीं कम होता है। इस प्रकाशन-प्रवृत्ति का प्रेरक कारण यह है कि इस प्रकार का साहित्य विद्यार्थियों द्वारा तथा विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालयों द्वारा अधिक मात्रा में खरीदा जाता है। विचारात्मक साहित्य तथा मौलिक विचार-प्रधान साहित्य का प्रकाशन 'न' के बराबर है। इस प्रश्न पर सभी हिन्दी-प्रेमियों को गम्भीरतापूर्वक सोचने की आवश्यकता है।

मूल्य के हिसाब से **प्रकाशन समाचार** की पहले वर्ष में प्रकाशित पुस्तकों का विश्लेषण निम्न प्रकार है :

१) मूल्य तक की पुस्तकें
१) से अधिक तथा २) मूल्य तक की पुस्तकें
२) से अधिक तथा ३) मूल्य तक की पुस्तकें
३) से अधिक तथा ४) मूल्य तक की पुस्तकें
४) से अधिक तथा ५) मूल्य तक की पुस्तकें
५) से अधिक मूल्य की पुस्तकें

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक के प्रकाशन द्वारा हमने यह प्रयास किया है कि उपन्यास-कहानी-नाटक तथा बाल-किशोर-प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य सभी उपलब्ध पुस्तकों को सूचीबद्ध कर लिया जाय। हमने इस सूची को यथा-सम्भव पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है लेकिन यह सूची सम्पूर्ण है ऐसा हमारा दावा नहीं है। फिर भी, एक ऐसा आधार तो हमारे सामने बन ही गया है जिस पर खड़े होकर कभी सम्पूर्ण सूची का प्रकाशन हम कर सकते हैं। **प्रकाशन समाचार** के द्वितीय वर्ष में ही दो और **विशेषांक** प्रकाशित किए जाएँगे जिनमें अन्य विषयों की सविवरण सूची इसी प्रकार छापी जायगी ताकि हिन्दी के प्रायः सभी साहित्य की सूची सुलभ हो जाय। हमें विश्वास है कि सबके आवश्यक सहयोग से हम इस ध्येय को पूरा कर पाएँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…समाचार की पहली वर्षगाँठ पर

आशीर्वचन

"प्रकाशन समाचार के विशेषांक के प्रकाशन का मैं स्वागत …। मुझे निश्चय है कि यह पत्र अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखेगा, …भाषियों तथा हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के इच्छुकों को अतीव …सिद्ध होगा।"

रंगनाथ दिवाकर,
राज्यपाल,
बिहार।

"प्रकाशन समाचार ने अपने शुभजन्म के प्रथम वर्ष में हिन्दी- … और राष्ट्रभाषा-साहित्य की जो सेवा की है, उसके लिए हम … हार्दिक बधाई देते हैं। आशा है (यह) विशेषांक हिन्दी- …में एक स्थायी शोध-साधन होगा। ईश्वर से प्रर्थना है कि वह … हिन्दी-साहित्य का एक आकर-ग्रन्थ सिद्ध हो। यह सत्प्रयास …अभिनन्दनीय है। हमारी शुभ-कामना है कि प्रकाशन समाचार … उन्नत और लोकप्रिय हो।"

शिवपूजन सहाय,
मन्त्री, बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,
पटना।

"प्रकाशन समाचार द्वारा आपने हिन्दी में एक नये क्षेत्र की …ताओं की पूर्ति की है। लेखक-प्रकाशक-पाठक—इस त्रिसूत्री के …सम्बन्धों पर ही हिन्दी-साहित्य की उन्नति निर्भर है। आपने …और सोचने के लिए सब को विवश किया है। मैंने पत्र का प्रत्येक …ध्यान से पढ़ा है और उसकी सूचनाओं से लाभ उठाया है। सत्सा- …के निर्माण, प्रचार और जानकारी के लिए आप के प्रयत्नों की और … उन्नति चाहता हूँ।"

वासुदेवशरण अग्रवाल (डॉक्टर)
काशी विश्वविद्यालय,
बनारस।

"प्रकाशन समाचार का प्रकाशन हिन्दी में अभूतपूर्व घटना है। …कों के लिए ही उपयोगी नहीं है, लेखकों और पाठकों को भी सामयिक साहित्य की प्रगति की गति-विधि से परिचित रखता है। नवीनतम प्रकाशनों की जानकारी से शोध-छात्रों का बड़ा हित होता है। मैं प्रकाशन समाचार की सफलता और दीर्घायु की कामना करता हूँ।"

विनयमोहन शर्मा
नागपुर विश्वविद्यालय,
नागपुर।

"प्रकाशन समाचार राष्ट्र-साहित्य की बहुत अच्छी सेवा कर रहा है। यह जानकर हर्ष हुआ कि यह अपने समुज्ज्वल द्वितीय वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। इसके लिए हार्दिक बधाई है।"

ललिताप्रसाद सुकुल,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कलकत्ता।

"प्रकाशन समाचार के सत्साहित्य सूची विशेषांक की योजना जितनी अनिवार्य, पवित्र और आकर्षक है, उसीके अनुकूल ही आप विशेषांक प्रकाशित करने में सफल हों, यही हमारी शुभकामना है।"

रामनाथ 'सुमन'
सम्पादक, सम्मेलन पत्रिका,
इलाहाबाद।

"मेरी हार्दिक कामना है कि प्रकाशन समाचार वर्ष-प्रति-वर्ष अधिक से अधिक सफलता प्राप्त करता जाय।"

सत्येन्द्र (डाक्टर)
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
कलकत्ता।

"प्रकाशन समाचार का प्रकाशन एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है। हिन्दी-प्रकाशन के क्षेत्र में इसकी अत्यन्त आवश्यकता थी और इसके द्वारा अब हम कुछ गौरव से विदेशीय प्रकाशन-सम्बन्धी योजनाओं के स्तर पर अपने को पहुँचते हुए अनुभव कर रहे हैं।…साधुवाद और बधाई दोनों ही देता हूँ, क्योंकि…(आपने) एक साहसपूर्ण कार्य का प्रारम्भ करके उसमें सफलता पाई और हम लोगों के लिए समस्त नवीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य की जानकारी सुलभ कर दी है।…(आपकी) योजनाओं के साथ मेरी शुभ कामनाएँ हैं।"

भगीरथ मिश्र (डॉक्टर)
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

"**प्रकाशन समाचार** राष्ट्रभाषा की बढ़ती हुई जरूरतों एवं गौरव के सर्वथा अनुकूल है। उसके प्रकाशन के लिए…(आप) हिन्दी-जगत् के बधाई के पात्र हैं। मैं **प्रकाशन समाचार** की लम्बी आयु एवं उत्तरोत्तर सफलता की कामना करता हूँ।"

देवराज (डॉक्टर)
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ।

"आपके **प्रकाशन समाचार** के (कुछ) अंक मुझे देखने को मिले हैं। यह कार्य अत्यन्त आवश्यक और लोकोपयोगी है। हार्दिक बधाई।"

मुन्शीराम शर्मा (डॉक्टर)
डी० ए० वी० कॉलेज,
कानपुर।

"**प्रकाशन समाचार** को योग्यता और सफलतापूर्वक एक वर्ष चलाने के लिए आपको हार्दिक बधाई। पत्र की पहली वर्षगाँठ के अवसर पर मैं भविष्य में उसकी इससे भी अधिक सफलता की कामना करता हूँ।"

हरिहरनाथ टण्डन,
सेंट जॉन्स कॉलेज,
आगरा।

"**प्रकाशन समाचार** हिन्दी में एक अभूतपूर्व सूचना-पत्र है। इससे हिन्दी-भाषा तथा साहित्य की गतिविधि को समझने में बड़ी सहायता मिल रही है। पुस्तकालय, समीक्षक, लेखक और प्रकाशक, सभी को इससे लाभ है। मेरी शुभ-कामनाएँ इस पत्र के साथ हैं। आप हिन्दी की बड़ी सेवा कर रहे हैं। इसके लिए धन्यवाद। प्रथम वर्ष की सफलता के लिए बधाई। भविष्य में उत्तरोत्तर उन्नति की आशा और आशिस्।"

हरदेव बाहरी (डॉक्टर)
प्रयाग विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

"(सत्साहित्य सूची) विशेषांक द्वारा हिन्दी का ही उपकार नहीं होगा, वरन् हिन्दी-साहित्य के अध्ययन में रुचि रखने वाले भारतीय अन्य भाषाओं के साहित्य के अध्येताओं का भी उपकार होगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं। आपकी इस परिकल्पना से भारतीय साहित्य के मध्य हिन्दी-साहित्य की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, जिसके लिए आप बहुत-बहुत [illegible] वाद के पात्र हैं।"

शिव[illegible]
विश्वभारती विश्ववि[illegible]
शान्ति-नि[illegible]

"…यह विशेषांक निरसन्देह उपयोगी सिद्ध होगा। आ[illegible] कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं। ऐसी चीज़ों की हिन्दी में [illegible] आवश्यकता है।"

लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (डाक्[illegible]
प्रयाग विश्ववि[illegible]
इलाहा[illegible]

"**प्रकाशन समाचार** हिन्दी-जगत् में बहुत अधिक महत्व [illegible] है। वास्तव में इसके प्रकाशन द्वारा हमारी एक आवश्यक माँग पूरी हुई [illegible] इसने वर्ष-भर में यह निश्चित सिद्ध कर दिया है कि उसने जिस [illegible] को सम्भाला है, उसका निर्वाह भी किया है। 'सत्साहित्य सूची वि[illegible]षांक' की योजना द्वारा उसने एक और भी महत्वपूर्ण कार्यभार लि[illegible] और मुझे पूरी आशा है कि **प्रकाशन समाचार** अपने इस कार्य में [illegible] पूर्ण सफल होगा। इस प्रकार वह हिन्दी-पाठकों की अनुपम सेवा [illegible] सकेगा।"

रघुवंश (डॉक्टर)
प्रयाग विश्ववि[illegible]
इलाहा[illegible]

"**प्रकाशन समाचार** ने गत एक वर्ष के जीवन में पुस्त[illegible] प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं, जिज्ञासुओं और अध्येताओं का [illegible] स्नेह पाकर जो सफलता प्राप्त की है, वह स्पर्धा के योग्य है। '[illegible] सूची विशेषांक' के प्रकाशन की योजना निस्सन्देह राष्ट्रभाषा के [illegible] गौरव की वस्तु है।…हम आपके सत्प्रयत्न को सब प्रकार से [illegible] चाहते हैं।"

रामप्रसाद त्रिपा[illegible]
सहायक मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मे[illegible]
इलाहा[illegible]

"**प्रकाशन समाचार** की निरन्तर और उत्तरोत्तर प्रगति [illegible] बधाई है। मेरी हार्दिक कामना है कि यही क्रम आगामी वर्षों में [illegible] बना रहे। साहित्य और सुरुचि के साथ सुहृत-जन का सम्पर्क [illegible] क्रमशः घनिष्ठ परिचय स्थापित करके आप बड़ा काम कर रहे हैं। [illegible] सफल हों।"

नरेन्द्र शर्मा
माहीम, बम्बई [illegible]

"**प्रकाशन समाचार**…हिन्दी-संसार की अच्छी सेवा कर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएँ स्वीकार कीजिए।"

शिवनन्दन प्रसाद,
पटना विश्वविद्यालय,
पटना।

"...प्रकाशन समाचार हिन्दी प्रेमियों को—विशेषतः दक्षिण ... प्रेमियों को—हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों का पर्याप्त परिचय ... के साथ हिन्दी साहित्य संसार की एक बड़ी कमी को दूर करने ...मुखी प्रयत्न कर रहा है।...मैं तो नियमपूर्वक **प्रकाशन** ...चार को अथ से इति तक पढ़ने वाली हूँ।"

पा० मंदाकिनी देवी
क्वीन मेरी कॉलेज,
मद्रास।

"**प्रकाशन समाचार** हिन्दी का एक नूतन प्रयोग है और उससे ...साहित्य की समृद्धि का अनुमान होता रहता है। पुस्तकालयों, ...लयों के छात्रों तथा अध्यापकों और अन्य अनुसन्धानेच्छु व्यक्तियों ...यह पत्र पथ-प्रदर्शक है...। (आपने) जहाँ हिन्दी-साहित्य के ...ऊँचा उठाया है, वहाँ प्रकाशन-सौन्दर्य के प्रति अभिरुचि भी ...की है। मैं **प्रकाशन समाचार** के नव-वर्ष के विशेषांक के लिए ...शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और उसकी सब प्रकार की सफलता ...ता हूँ।"

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'
आगरा कॉलेज,
आगरा।

"...हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में कदाचित् यह प्रथम मौलिक प्रयास ...लेखकों, प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के लिए इसकी उप...ता के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते। प्रकाशकों के व्यावहारिक ...को प्रबुद्ध करता हुआ यह उनकी सुरुचि को भी उचित दिशा... देता है। 'सत्साहित्य-सूची-विशेषांक' एक बड़े अभाव की पूर्ति ...इसमें कोई सन्देह नहीं। आपके इस सत्प्रयास के लिए अपनी ...शुभकामना प्रेषित करता हूँ।"

बच्चनसिंह,
सेण्ट्रल हिन्दू कॉलेज,
बनारस।

"...जिन थोड़ी-सी पत्रिकाओं का, स्थानाभाव से, मैं अपने वैयक्तिक ...में संग्रह करता हूँ, उनमें एक...**प्रकाशन समाचार** भी ...मैं इसे हिन्दी का एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन मानता हूँ। इसकी ...वर्षगाँठ पर हमारी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।"

केशरीकुमार,
राँची कॉलेज,
राँची।

"**प्रकाशन समाचार** पुस्तक-प्रेमियों एवं पुस्तकालयों की बड़ी सेवा कर रहा है। ऐसे एक पत्र की बड़ी आवश्यकता थी जो हिन्दी के प्रकाशनों से परिचित कराता रहे। इस पत्रिका ने इस अभाव की पूर्ति की है।...आपका सद्प्रयास सफल हो।"

गोपीनाथ तिवारी,
सेण्ट ऐण्ड्रूज़ कॉलेज,
गोरखपुर।

"**प्रकाशन समाचार** में नियमित रूप से साल-भर देखता रहा। **प्रकाशन समाचार** ने धुँधले में मशाल का काम किया है। हिन्दी-प्रकाशन के बिखरे फूलों को माला में गूँथकर सामने रखा है। सुविज्ञ पाठक को अब अपना मानसिक भोजन चुनने के लिए **प्रकाशन समाचार** से बढ़कर कौन-सा 'मेनू' मिलेगा?...भविष्य में यह अधिकाधिक विकसित और पुष्ट होकर प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं और पाठकों के बीच सह-सखा का काम करता रहे।"

बालकृष्ण बलदुवा,
कानपुर।

"**प्रकाशन समाचार** में पुस्तकों के प्रकाशन-व्यापार तथा हिन्दी की प्रगति का विवेचन बड़े प्रामाणिक ढंग से रहता है।...हम कॉलेज में इसी की पुरानी प्रतियाँ देखकर पुस्तकों को खरीदने की सूची तैयार करते हैं।...वह युग आएगा जब देश के स्कूल-स्कूल और कॉलेज-कॉलेज में इस पत्र के बिना कार्य न चल सकेगा। परमेश्वर आपको सामर्थ्य दे कि पत्र निरन्तर इसी गति से चलता रहे। शुभ कामनाएँ।"

रामचरण महेन्द्र,
हरबर्ट कॉलेज,
कोटा।

"**प्रकाशन समाचार** की मंगल वर्षगाँठ पर हार्दिक बधाई। सत्साहित्य के प्रकाशन तथा ज्ञान के लिए आपका यह कार्य सदा स्तुत्य होगा। ऐसा प्रथम बार सम्भव हो सका है कि लेखक, प्रकाशक, विक्रेता और पाठक एक बिन्दु पर आकर समन्वित हो सके हैं।"

लक्ष्मीनारायण लाल (डॉक्टर)
एस० एम० कॉलेज,
चन्दौसी।

"**प्रकाशन समाचार** की प्रथम वर्षगाँठ के अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए।...आशा है कि आने वाले वर्षों में **प्रकाशन समाचार** अपने रूप को अधिकाधिक निखार सकेगा। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।"

रामस्वरूप चतुर्वेदी,
इलाहाबाद।

"**प्रकाशन समाचार** ने हिन्दी-जगत् का मार्ग-प्रदर्शन किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, इसमें अणुमात्र सन्देह नहीं।···आशा है नवीन व र्ष में यह नवीन आशा एवं स्फूर्ति से पाठकों की सेवा करता रहेगा।"

सम्पूर्णानन्द श्रीवास्तव,
डी० ए० वी० इंटर कॉलेज,
बनारस।

"अहिन्दी भाषी स्थलों में **प्रकाशन समाचार** जैसे मासिक पत्र की नितान्त आवश्यकता थी। आपने इस पत्रिका को निकालकर वास्तव में इस आवश्यकता की पूर्ति की है। मैं इसकी अनुपमेय उपयोगिता स्वीकार करता हूँ तथा आपका हृदय से साधुवाद करता हूँ।"

न० चिं० जोगलेकर,
मूलजी जेठा कॉलेज,
जलगाँव।

"**प्रकाशन समाचार** द्वारा हिन्दी-पत्र-साहित्य में एक महान् अभाव की पूर्ति हुई है। इसका उद्देश्य प्रकाशकों को सत्कार्य प्रेरणा देना भी रहा है जिसके लिए हिन्दी-लेखकों को आभारी होना चाहिए। मैं आभार-प्रदर्शन के रूप में इसके नव-वर्ष-विशेषांक के लिए शुभ कामनाएँ भेजता हूँ।"

यशदेव 'शल्य'
मन्त्री, अ० भा० दर्शन परिषद्,
फ़रीदकोट।

"हिन्दी में एक बड़े अभाव की पूर्ति **प्रकाशन समाचार** द्वारा हुई है। अनेक अंशों में हिन्दी के पाठक, लेखक, आलोचक, पुस्तक-विक्रेता, प्रकाशक और शिक्षा-संस्थाएँ उसकी सुव्यवस्थित प्रकाशन सूचनाओं से लाभान्वित हुए हैं। आपके इस सफल प्रयास और भावी योजनाओं के लिए बधाई और मेरी शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए।"

श्याम परमार,
उज्जैन।

"आपका यह आयोजन वस्तुतः स्तुत्य है। मैं आपको हृदय से सफलता चाहता हूँ।"

गौरीशंकर गुप्त,
प्रधान मन्त्री, राष्ट्रकवि-परिषद्, बनारस।

"आपका यह प्रयास···साहित्य के दृष्टिकोण से एक भारी उपयोगिता रखता है। इसलिए इसकी उन्नति और अधिकाधिक सफलता के लिए···शुभकामना और आशीर्वाद का हार्दिक सन्देश भेजता हूँ।"

परशुराम शास्त्री,
प्रिंसिपल, श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय, जम्मू।

"**प्रकाशन समाचार** की प्रथम वर्ष की सुख-समाप्ति पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिए। इस पत्र के द्वारा आपने हिन्दी-लेखक, प्रकाशक और पाठक—तीनों का बड़ा उपकार किया है। आपके अंकों को मैं बराबर देखता रहा हूँ, और मुझे लगता है कि आपने हिन्दी-संसार में सुरुचि और संगठन का एक नया युग उपस्थित कर दि[…] पत्र मुझे सर्वथा निर्दोष और त्रुटिहीन प्रतीत होता है।···मेरी [...] कामनाएँ आपके साथ हैं।"

श्रीनाथ[...]
'दीदी' का[...]
इला[...]

"भूरि-भूरि शुभाशीर्वाद!···पिछले बारहों अंक मैंने ध्यान से [...] हैं। संकलित सामग्री और सम्पादकीय संयोजन, साज-सज्जा [...] छपाई-सफ़ाई—सभी दृष्टि से वह मुझे पसन्द आया। मेरी धारणा है [...] हिन्दी का प्रत्येक लेखक, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता, पुस्तकालय[...] कारी और साधारण एवं असाधारण पाठक—सभी के लिए **प्रका[शन] समाचार** का पारायण करते जाना अनिवार्य होना चाहिए।"··· [...] मित्रों से **प्रकाशन समाचार** देखते रहने का आग्रह करते हुए [...] ही मैंने प्रसन्नता का अनुभव किया है।"

नागार्जु[न]
[...]

"मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ! **प्रकाशन समाचार** की उत्त[रोत्तर] उन्नति चाहता हूँ। वास्तव में यह आपका अभिनव एवं अ[...] आयोजन है।"

सूर्यनारायण व्या[स]
सम्पादक : विक्रम उ[ज्जैन]

"सत्साहित्य सूची विशेषांक···एक महत्वपूर्ण कदम है।"

बंकटलाल ओ[झा]
मंत्री, हिन्दी-समाचार-पत्र-संग्रहालय, हैदरा[बाद]

"साहित्य सूची विशेषांक···सुन्दर आयोजन है। इससे हिन्दी [...] की प्रगति में गति आयेगी। बधाई स्वीकार करें।"

कामताप्रसाद जै[न]
सम्पादक : अहिंसा वाणी, [...]

"आपने प्रकाशन के क्षेत्र में **प्रकाशन समाचार** द्वा[रा] [...] प्रेरणा, चेतना निर्माण की है, वह बड़ी महत्त्वपूर्ण देन है।"

जमनालाल जै[न]
सम्पादक : जैन जगत, [...]

"मैं पत्र के प्रथम अंक से ही **प्रकाशन समाचार** का अवलोकन [...] करता रहा हूँ, और उसने एक वर्ष में ही अपने नव-प्रकाश [...] सफलता प्राप्त की है, उसके लिए मैं सहर्ष बधाई देता हूँ··· [...] भविष्य की हार्दिक कामना करता हूँ।"

गोवर्द्धनदास मे[...]
सम्पादक : भोपाल समाचार, भो[पाल]

[आगे पृष्ठ १५८ पर दे[खिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्दी-प्रकाशन-जगत् के

सत्साहित्य की सूची

इस सूची में विवरण का क्रम इस प्रकार है ;
पुस्तक का नाम, संस्करण, लेखक का नाम,
पृष्ठ-संख्या, आकार, मूल्य, प्रकाशक ।

अभिनन्दन तथा स्मारक-ग्रन्थ

...ोत्सव स्मारक संग्रह, १, सं० म० म० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, ५००, रायल, ३),	नागरी प्रचारिणी सभा
...्थी-अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डि०, २६०, २)	मण्डल
...ी अभिनन्दन ग्रन्थ, १ सं० सोहन लाल द्विवेदी, १८४, ७॥)	इण्डियन प्रेस
...न्थी-ग्रन्थ, १, सं० प्रेमनारायण माथुर, १७२, डि०, ५)	रामनारायण लाल
...जीवनराम अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० इन्द्रनारायण गुर्टू, ३१७, डि०$\frac{1}{4}$, १२)	जगजीवनराम अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति
...न्ती-स्मारक ग्रन्थ, १, सं० शिवपूजन सहाय, १०७०, रायल, १६)	पुस्तक भण्डार
...ेदी अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० सच्चिदानन्द वात्स्यायन, ६१६, डि०$\frac{1}{4}$, ३०)	आर्यावर्त प्रकाशन-गृह
...ेत अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल, डि०$\frac{1}{4}$, १०)	अवध पब्लिशिंग हाउस
...ण्डित नेहरू, १, रा०, १५)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...दार अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ११००, डि०$\frac{1}{4}$, ३०)	ब्रज साहित्य मण्डल
...ाबु अभिनन्दन ग्रन्थ, १, १७६, डि०, २)	सुषमा साहित्य मन्दिर
...हाकवि निराला अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० बरुआ, १८८, डि०, ५)	निराला अभिनन्दन समिति
...लवीय अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० आ० सीताराम चतुर्वेदी, ८११, का०$\frac{1}{8}$, १५)	मालवीय जीवन-चरित-समिति
...ुन्शी अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० देवेन्द्र सत्यार्थी, ५०२, रायल, १५)	राजकमल प्रकाशन
...ाजेन्द्र बाबू अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० आ० शिवपूजन सहाय, ५६६, १५)	आर्यनगर प्रचारिणी सभा
...म्पूर्णानन्द अभिनन्दन-ग्रन्थ, १, सं० आचार्य नरेन्द्रदेव, ५५०, का०, १५)	नागरी प्रचारिणी सभा

अध्यात्म, धर्म तथा दर्शन

...द्वैतवाद, २, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ४००, का०, ४)	कला प्रेस
...ध्यात्म पदावली, १, रामकुमार जैन, का०, ५)	भारतीय ज्ञानपीठ
...नुग्रह मार्ग, १, रमानाथ, ६२, का०, ।=)	पुष्टि-मार्ग कार्यालय, नाथद्वारा
...पनी बात, सं० चन्द्रभूषण, ६०, का०, ।।।)	इण्डियन प्रेस
...मर जीवन की ओर, लिली एलेन, अनु० शिवप्रसादसिंह, का० १।)	नागरी प्रचारिणी सभा
...मृत वर्षा, नारायण स्वामी, १७६, का०, २)	राजपाल
...चार और धर्म, १, प्रो० दीवानचन्द शर्मा, ५६, का०, ।।।)	राजपाल
...ाचार्य सायण और माधव, १, बलदेव उपाध्याय, २४०, डि०, ६)	सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मचिन्तन, १, राजगोपालाचार्य, ६३, क्रा०, १)
आत्म निर्माण, गुलाबराय, १७६, क्रा०, १।)
आत्म रहस्य, , १, रतनलाल जैन, २५०, क्रा०, ३)
आत्म-विद्या, माधवराव सप्रे, ३२२, क्रा०, ४)
आत्म-शिक्षण, श्यामबिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र, क्रा०, १॥)
आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग, ४, स्वामी विवेकानन्द, १२७, १।)
आत्मोपदेश, ६, एपिक्टेट्स, ६५, का०, १)
आदर्श जीवन, रामचन्द्र, क्रा० १॥)
आनन्द संग्रह, स्वा० सर्वदानन्द, १५६, क्रा०, २)
आत्मोद्धार, रामचन्द्र वर्मा, क्रा०, १॥)
आर्य निबन्ध-माला, धर्मदेव विद्यावाचस्पति, १००, क्रा०, १)
आर्य स्मृति, १, गंगाप्रसाद उपाध्याय, २००, क्रा०, १।॥)
आर्य समाज क्या है ?, सं० नारायण स्वामी, क्रा०, ।॥)
आस्तिक-वाद, ३, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ३४०, क्रा०, ३)
इस्लाम धर्म की रूप-रेखा, राहुल सांकृत्यायन, १॥)
ईशदूत ईसा, स्वामी विवेकानन्द, ।=)
ईशोपनिषद, १, गंगाप्रसाद उपाध्याय, १२८, क्रा०, ॥=)
ईश्वर भक्ति, ५, स्वा० सर्वदानन्द, १४४, क्रा०, २)
उपदेश कुसुम, शेखसादी, ४४, क्रा० ।)
उपनिषद्, १, राजगोपालाचार्य, ६३, क्रा०, १।)
उपनिषद् प्रकाश, स्वा० दर्शनानन्द, क्रा०, ४॥)
उपनिषदों की कथाएँ, दत्तात्रेय देव, ७०, क्रा०, १)
ऐतिहासिक भौतिकवाद, मन्मथनाथ गुप्त और रमेन्द्रगुप्त, ५२५, क्रा०, ५)
कर्त्तव्य, रामचन्द्र वर्मा, क्रा०, १॥)
कर्त्तव्य दर्पण, ३, नारायण स्वामी, १५६, क्रा०, १॥)
कर्त्तव्य शिक्षा, ऋषीश्वरनाथ भट्ट, २७०, क्रा०, १।॥)
कर्मयोग, २, स्वा० विवेकानन्द, १५४, १॥=)
कर्मयोग, १, रं० रा० दिवाकर, १४०, क्रा०, २)
कर्मयोग, सन्तराम, क्रा०, १।॥)
कर्मवाद और जन्मान्तर, अनु० लल्लीप्रसाद पाण्डेय, क्रा०, ३)
कल्याण पथ, चन्द्रमणि, ६३, क्रा०, ।॥)
कवितावली, स्वामी विवेकानन्द, अनु० ॥=)
कालचक्र, डा० सिद्धेश्वर शास्त्री, क्रा०, ॥)
कांकरोली (३ भाग), १, ब्रजभूषण महाराज, ४३०, क्रा०, ३)
चिद्विलास, २, सम्पूर्णानन्द २५६, क्रा०, ४॥),
गहरे पानी पैठ, १, अयोध्या प्रसाद गोयलीय, २२४, क्रा०, २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ता रहस्य, लोकमान्य तिलक, ८८५, रा०, १२)	तिलक मन्दिर, पूना
...ता की पृष्ठभूमि, सत्यदेव शास्त्री, ११२, क्रा०, १॥)	साहित्य भवन
...तत्व, १, स्वामी शारदानन्द, २४१, २।=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
...ता नित्य पाठ, रंगनाथ दिवाकर, ।॥)	पुस्तक भण्डार
...ता मर्म, कृष्णस्वरूप विद्यालंकार, ६२०, क्रा०, ७)	साहित्य निकेतन
...मृत, १, कृष्णदत्त पालीवाल, ३०८, क्रा०, ३॥)	मण्डल
...ता संवाद, ३, सियारामशरण गुप्त, १५४, डि०, १)	साहित्य सदन, चिरगाँव
...ता हृदय, स्वा० सहजानन्द, ६४६, क्रा०, १२)	किताब महल
...ता हृदय, भवानीप्रसाद तिवारी, १००, क्रा०१/१६, १)	सुषमा साहित्य मन्दिर
...प्रेम पीयूष-प्रवाह, नवनीत, क्रा०, १)	विद्याविभाग, कांकरोली
...न्द रामायण, इन्द्रसिंह चक्रवर्ती, २४२, क्रा०, ४)	साहित्य रत्नमाला कार्यालय
...जन, हरनाथ सहाय, क्रा०, १।)	अशोक प्रेस
...नीय बातें, १, स्वामी विवेकानन्द, ८७, १)	श्री रामकृष्ण आश्रम
...तानन्द, जगतानन्द, ११२, क्रा०, १।॥)	विद्याविभाग, कांकरोली
...वाद और अनीश्वरवाद, १, लक्ष्मण शास्त्री, १२४, क्रा०, १)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...क-दीपक, १, पं० बालमुकुन्द त्रिपाठी, ४००, क्रा०१/४, ७)	सुषमा साहित्य मन्दिर
...ति, संस्कृति और समाजवाद १, स्वामी विवेकानन्द, ८७, १)	श्री रामकृष्ण आश्रम
...न का काव्य, काका कालेलकर, २६२, क्रा०, २)	नवजीवन प्रकाशन
...न का सद्व्यय, अनु० हरिभाऊ उपाध्याय, १४४, क्रा०, १)	नवजीवन प्रकाशन
...न यज्ञ, ८, रामनाथ सुमन, २००, क्रा०, २)	साधना सदन
...न शोधन, किशोरलाल मशरूवाला, ४३२, क्रा०, ३)	नवजीवन प्रकाशन
...न सूत्र, ३, अनु० रामनाथ सुमन, २००, क्रा०, २)	साधना सदन
...त्मा, ३, गंगाप्रसाद उपाध्याय, २४०, डि०, ४)	कला प्रेस
...शास्त्र, गुलाबराय, क्रा०, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...भूमि, १, रामगोपाल मिश्र, ४६४, डि०, १०)	सम्मेलन
...वेद, ३, तिरुवल्लुवर, १४३, क्रा०, १॥)	मण्डल
...त हृदय, ५, अभयदेव, ११७, क्रा०, १।)	भारती मन्दिर
...त में बौद्धधर्म, राहुल सांकृत्यायन, १०१, क्रा०, १।)	किताब महल
...गाथाएँ, १, भरतसिंह उपाध्याय, १२१, क्रा०, १॥)	मण्डल
...न का प्रयोजन, ३, डॉ० भगवानदास, २६८, डि०, ३।)	ज्ञानमण्डल
...न-दिग्दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, ८५०, क्रा०, १२)	किताब महल
...नन्द ग्रन्थ-संग्रह, नारायण स्वामी, २०८, क्रा०, २)	राजपाल
...बोध, ६, अनु० रामचन्द्र वर्मा, ५००, क्रा०, ३)	हिन्दी साहित्य कुटीर
...वाणी (विवेकानन्द जी के भाषण), २२४, २=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
...मंजूषा, दामोदर देव, ।)	विद्याविभाग, कांकरोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान योग प्रकाश, ३, स्वा० लक्ष्मणानन्द, ३५८, २)
धम्मपद, २, गंगाप्रसाद उपाध्याय, १६०, क्रा०, १)
धम्मपद, त्रिपिटकाचार्य धर्मज्योति, ३१३, क्रा०, १।।)
धर्म दिवाकर, ३, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', २२४, क्रा०, २।)
धर्म-वर्णन, १, आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, १५२, क्रा०, १।।)
धर्म और दर्शन, २, बलदेव उपाध्याय, ३००, ३।।)
धर्म और विज्ञान, सं०, अनु० ला० भगवान दीन, क्रा०, २)
धर्म और समाज, १, प्रज्ञाचक्षु सुखलाल, २२४, क्रा०, १।।)
धर्म का आदि स्रोत, गंगाप्रसाद एम० ए०, १६०, क्रा०, २)
धर्म के नाम पर, १, कर्नल इंगरसोल, अनु० भदन्त आनन्द कौसल्यायन, १८८, क्रा० १।।)
धर्म तत्व, मिश्रबन्धु, क्रा०, १।।)
धर्म रहस्य, २, स्वा० विवेकानन्द, १४, १)
धर्म विज्ञान, २, स्वा० विवेकानन्द, ११५, १।।≈)
धर्म प्रसंग में स्वामी शिवानन्द १ भाग, स्वामी अपूर्वानन्द,
धर्म प्रसंग में स्वामी शिवानन्द २ भाग, स्वामी अपूर्वानन्द,
निर्भयता, किशोरलाल मशरूवाला, २१, क्रा०, ≡)
नीति दर्शन, १, राधामोहन गोकुलजी, २१६, डि०, ।।।)
न्याय प्रकाश, डॉ० गंगानाथ झा, क्रा०, ।।।)
न्याय शास्त्र निगमन, भानुप्रतापसिंह, २७०, क्रा०, ३)
पवहारी बाबा, २, स्वामी विवेकानन्द, ।।)
परमार्थ प्रसंग, स्वामी विरजानन्द, ३।)
पत्रावली (स्वा० विवेकानन्द) १ भाग, २४६, २=)
पत्रावली (स्वा० विवेकानन्द) २ भाग, २३६, २=)
परिव्राजक, ४, स्वा० विवेकानन्द, १२८, ।।=)
पातंजल योग-दर्शन, १, डॉ० भागीरथ मिश्र, ३४६, ६)
प्राच्य और पाश्चात्य, ४, स्वामी विवेकानन्द, १०६, १।)
प्रेम योग, ३, स्वा० विवेकानन्द, १२६, १।=)
प्रपंच परिचय, १, विश्वेश्वर, २४८, क्रा०, २)
प्रमाण वार्तिकम्, सं०, राहुल सांकृत्यायन, ६२३, ३०)
प्राचीन वार्ता रहस्य (तीन भाग), १, स० द्वारिकादास पारिख, १०३०, ५।।।)
प्राणायाम, स्वा० रामचारक, क्रा०, २।।)
प्रार्थना, १, वियोगी हरि, ३४, क्रा० ।।),
प्रार्थना मन्त्र, हरिशरण, ६६, क्रा०, ।।।-)
प्रार्थना सुमन, विश्वनाथ, ४२, क्रा०, ।।)
प्रेम-पन्थ, अनु० काशीनाथ त्रिवेदी, ८८, क्रा०, ।)
पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास, गुलाबराय, क्रा०, २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्वविज्ञान परिचय, अशोककुमार वर्मा, ३)	पुस्तक भण्डार
दर्शन, बेकन से कांट, अशोक कुमार वर्मा, ४)	पुस्तक भण्डार
में गंगा, १, अनु० रामप्रताप त्रिपाठी, १५०, का० ८, ३॥)	सम्मेलन
३, डॉ० भगवानदास, ६४१, का०, ६)	मण्डल
जगमोहन वर्मा, का०, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
स्वरूप सेवा, १, रमानाथ, ६८, का०, ।=)	पुष्टिमार्ग कार्यालय, नाथद्वारा
प्रकाश, विश्वनाथ, १०६, का०, १)	राजपाल
और बौद्ध-साधक, १, भरतसिंह उपाध्याय, १२६, का०, १॥)	मण्डल
के उपदेश, १, धर्म रक्षित, १४०, का०, २)	अजन्ता प्रेस
३, वियोगी हरि, १०२, का०, १)	मण्डल
दर्शन, राहुल सांकृत्यायन, १९४, का०, ३॥)	किताब महल
१, रमानाथ, ११८, का०, ॥)	विद्याविभाग कांकरोली
२६, म० राजपाल, ४३२, का० १॥)	राजपाल
३, स्वा० विवेकानन्द, १२३, १=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
कथा, २, गंगाप्रसाद उपाध्याय, १५६, का०, १)	कला प्रेस
गीता, १, राजगोपालाचार्य, ९९, का०, १॥)	हिन्दुस्तान टाइम्स
रामकृष्ण धर्म तथा संघ, २, स्वामी विवेकानन्द, ।॥=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
विन्दम्, १, राजगोपालाचार्य, ६२, का०, १)	हिन्दुस्तान टाइम्स
धर्म, १, हरिभाऊ उपाध्याय, ३६९, रा०, ५॥)	मण्डल
में बाइबिल, सं०, सन्तराम, का०, ४॥)	गंगा पुस्तक माला
में विवेकानन्द (विवेकानन्द जी के भारतीय व्याख्यान), २, ४१८, ५)	श्री रामकृष्ण आश्रम
ज्योतिष, १, नेमिचन्द्र जैन, ६३२, का० ६)	भारतीय ज्ञान पीठ
दर्शन, नित्यानन्द मिश्र, हरिमोहन झा, ५)	पुस्तक भण्डार
दर्शन परिचय, दत्त और चटर्जी, १०)	पुस्तक भण्डार
दर्शन, ४, बलदेव उपाध्याय, ८)	शारदा मन्दिर
नारी, २, स्वामी विवेकानन्द, १०१, ।॥)	श्री रामकृष्ण आश्रम
महापुराण, १, रामप्रताप त्रिपाठी, ८००, २०)	सम्मेलन
की शक्तियाँ तथा जीवन-गठन की साधनाएँ, ॥)	श्री रामकृष्ण आश्रम
और स्त्रियाँ, सं०, ४००, ३।॥)	सुषमा साहित्य मन्दिर
संस्कृति, ३, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ५५०, का०, ५)	कला प्रेस
का विराट रूप, १, आनन्दकुमार, ३१५, का०, ४॥)	राजपाल
जीवन का लक्ष्य, १, रामावतार शास्त्री, १८२, का०, १॥)	सम्मेलन
विचार, गंगाप्रसाद, ४५, का०, ।)	इण्डियन प्रेस
जीवन, २, स्वामी विवेकानन्द, ॥)	श्री रामकृष्ण आश्रम
सन्तों का सामाजिक कार्य, १, डॉ० विष्णु भिखाजी कोलते, १७२, का० १॥)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
जी की प्रकाट्य वार्ता, १, कण्ठमणि शास्त्री, १३७, का०, १।॥)	विद्याविभाग, कांकरोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महापुरुषों की जीवन गाथायें, ४, स्वामी विवेकानन्द, १२४, १।)
महाभारत, २, निराला, ३७६, क्रा०, ४।।)
महाभारत कथा, ३, राजगोपालाचार्य, ४८२, क्रा०, ५)
महात्मा टालस्टाय के विचार, १, शीतल सहाय, १२६, क्रा०, ।-)
मानव धर्म मीमांसा, १, किशोरीदास वाजपेयी, क्रा० २।),
मानवधर्म की आख्यायिकाएँ, ५, नानाभाई भट्ट, १४४, क्रा०, १।)
मानसिक आकर्षण द्वारा सफलता, ओ० हष्णुधारा, ।-)
मितव्यय, सं०, रामचन्द्र वर्मा, क्रा०, १।।)
मेरा जीवन तथा ध्येय, स्वामी विवेकानन्द, ।।)
मेरी समरनीति, स्वामी विवेकानन्द, ।≡)
मेरे विचार, १, श्री प्रकाश, क्रा०, ।।=)
मेरे गुरुदेव, ५, स्वामी विवेकानन्द, ५८, ।।=)
योग का इतिहास, शिवचैतन्यानन्द, ५०, क्रा० १।)
योग की कुछ विभूतियाँ, स्वा० रामचारक, २।।)
योग के चमत्कार, श्री रामनाथ सुमन, २)
योगामृत, १, श्री गोपालजी, १४८, १।)
योरोपीय दर्शन, १, रामअवतार शर्मा, ६६, रा०, ३।)
राजयोग, स्वा० विवेकानन्द, १३५, १=)
रामकृष्ण उपनिषद, १, राजगोपालाचार्य, ६६, क्रा० १।।)
रामधुन, सूर्यबलीसिंह, १)
रासलीलाविरोध परिहार, १, रमानाथ, ५५, क्रा० ।)
व्यवहारिक जीवन में वेदान्त, १, स्वामी विवेकानन्द, १०४, १-)
वायु महापुराण, १, रामनरेश त्रिपाठी, ५५८,
विजय पथ, रस्किन, अनु० रामनारायण विजयवर्गीय, १।।।)
विवेक और साधन, केदारनाथ, ४३, क्रा०, ।)
विवेकानन्द चरित, २, सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, ४६३, ६)
विवेकानन्द के संग में, २, शरच्चन्द्र, ४५०, ५।)
विवेकानन्द जी की कथाएँ, (संस्मरण) १४६, १।)
विविध प्रसंग, स्वामी विवेकानन्द, १०४, १=)
विश्व-धर्म दर्शन, १, साँवलिया बिहारीलाल वर्मा, ४२४, रा०, १३।।)
विश्व प्रपंच, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, १५०, १।।)
वेद का राष्ट्रगान, १, राजनाथ पाण्डेय, ६४, १।)
वेद रहस्य, ३ खण्ड, अरविन्द, अनु० अभयदेव, ३३८, १५६, १२२, क्रा०, सजिल्द ८) ४) ५)
वेद सन्देश, २, देवव्रत धर्मेन्दु, १९४, ।।।)
वेदान्त, १, राजगोपालाचार्य, ५३, क्रा०, १)
वेदान्त-सिद्धान्त और व्यवहार, स्वामी शारदानन्द, ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…कहानियाँ, २, बलदेव उपाध्याय, २)	शारदा मन्दिर
…दर्शन, १, डॉ० फ़तहसिंह, २७५, क्रा०, सजिल्द ६)	भारती मन्दिर
…धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी, धर्मदेव विद्यावाचस्पति, ६४, ।।=)	राजपाल
…विनय, १, अभयदेव, क्रा०, २),	भारती मन्दिर
…उपदेशमाला, ३, अभयदेव, क्रा०, ।।।),	भारती मन्दिर
…साहित्य, १, रामगोविन्द त्रिवेदी, ५१६, क्रा०, ६)	भारतीय ज्ञानपीठ
…मुक्ति सुधा, देवेन्द्र धर्मेन्दु, ५०, ≡),	शारदा मन्दिर
…धर्म, १, परशुराम चतुर्वेदी, १६०, ३।।)	विवेक प्रकाशन
…अद्वैतवाद, १, रामदास गौड़, २२५, क्रा०, २)	ज्ञानमण्डल
…रामानुज, दयानन्द, २, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ४८, क्रा०, ।=)	कला प्रेस
…भाष्यालोचन, १, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ३६०, क्रा०, ५)	कला प्रेस
…दर्शन, १, रमानाथ शास्त्री, २८६, क्रा० १।।≡)	विद्याविभाग, कांकरोली
…संस्कृति और कला, मुनि कान्तिसागर, १५, क्रा०, २)	सुषमा साहित्य मन्दिर
…रामकृष्ण उपदेश, २, ८२, ।।।)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…सन्देश, १, रामवचन द्विवेदी अरविन्द, १६८, २।।)	सुषमा साहित्य सदन
…कृष्णावतार, १, रमानाथ, ५६, क्रा०, ।=)	पुष्टिमार्ग कार्यालय, नाथद्वारा
…रामकृष्ण लीलामृत १ भाग, २, द्वारकानाथ तिवारी, ४३६, ५)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…रामकृष्ण लीलामृत २ भाग, २, द्वारकानाथ तिवारी, ४८६, ५)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…रामकृष्ण वचनामृत १ भाग, ३, अनु० निराला, ६२७, ६)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…रामकृष्ण वचनामृत २ भाग, २, अनु० निराला, ६३०, ६)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…रामकृष्ण वचनामृत ३ भाग, २, अनु० निराला, ६७०, ७।।)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…विचार, २, स्वामी विवेकानन्द, ।।=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…वक्तृता, स्व० विवेकानन्द, ४७, ।।=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…, २, स्वामी विवेकानन्द, १२८, १।)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…आचार्य का आचार-दर्शन, १, डॉ० रामानन्द तिवारी, २१५, डि०, ५०५)	सम्मेलन
…भारत, जय हो !, स्वा० विवेकानन्द, १२१, १=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…विवेकानन्द जी से वार्तालाप (संभाषणों का संग्रह), १, १५४, १।=)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…संग हो, १, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, ४२१, क्रा० ।।।)	सम्मेलन
…भजन माला, सूर्यबलीसिंह, १।)	काशी पुस्तक भण्डार
…संग्रह, देवीप्रसाद मुंसिफ, ५१, ।।)	इण्डियन प्रेस
…के मन्त्र, १, वेणीमाधव शर्मा, १७०, क्रा०, १।।)	हिन्दी साहित्य कुटीर
…सिद्धान्त-संग्रह, २, शंकराचार्य, अनु० गंगाप्रसाद उपाध्याय, १७०, क्रा०, १)	कला भवन
…राजयोग, १, स्वा० विवेकानन्द, ४२, ।।)	श्री रामकृष्ण आश्रम
…, १, डॉ० अवध उपाध्याय, १२६, क्रा० १।)	सम्मेलन
…दर्शन का इतिहास, उदयवीर शास्त्री, ५६८, क्रा०, ३०)	भारती मन्दिर
…मार्ग, महेन्द्रलाल, ७२, ।।)	इण्डियन प्रेस

…र, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखशान्ति के उपाय, १, स्वा० नारदानन्द सरस्वती, १०८, ।।।)
स्वाध्याय सुमन, स्वा० वेदानन्दजी महाराज, २६०, ३)
संजीवनी-सन्देश, १, टी० एल० वास्वानी, ११२, का० ।।=)
सन्ध्या मन्त्र, हरिशरणजी सिद्धान्तालङ्कार, ११४, ।।।)
संक्षिप्त कर्मयोग, १५१, ।।।)
सम्प्रदाय प्रदीप, गदाधरदास द्विवेदी, २३५, का० २)
हमारा धर्म और उसकी वैज्ञानिक रूप-रेखा, १, श्रीनारायण सिंह, सं० रामनाथ सुमन, २५४, का०, ३)
हमारा भारत, स्वामी विवेकानन्द, ।।)
हमारे स्वामी, चमूपति, ८०, का०, ।।=)
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार, ५, कुँवर कन्हैया जू, २३४, का०, २।।)
हिन्दुत्व, १, रामदास गौड़, ८६४, रा०, १२।।)
हिन्दुत्व, सावरकर, ५०, रा०, २)
हिन्दू जीवन-दर्शन, अर्जुन चौबे, ५०,
हिन्दू धर्म, २, स्वामी विवेकानन्द, १२८, १।।)
हिन्दू धर्म की बालपोथी, १, आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव, १८०, का०, १)
हिन्दू धर्म के पक्ष में, स्वामी विवेकानन्द, ।।=)
हिन्दू तीर्थ, २, पन्नालाल बख्शी, १५१, का० ।।।)
हिन्दू तीर्थ, २, व्यथित हृदय, ४२२, का०, २।)
हिन्दू धर्म की विशेषताएँ, सत्यदेव परिव्राजक, ८८, का०, ।।।)
हिन्दू धर्म की समीक्षा, लक्ष्मण शास्त्री, २००, का०, २)
ज्ञान और कर्म, १, गुरुदास बनर्जी, ४०४, का०, ३।।)
ज्ञान-गंगा, १, नारायणप्रसाद जैन, ७७२, का०, ६)
ज्ञानयोग, स्वा० विवेकानन्द, ३२५, ३)
ज्ञानयोग (२ भाग), स्वामी विवेकानन्द, अनु० जगन्मोहन वर्मा, ५)
ज्ञानेश्वरी गीता, ६, अनु० रामचन्द्र वर्मा, ५००, का०, ३)

अर्थशास्त्र, वाणिज्य तथा व्यापार

अर्थशास्त्र, १, मुरलीधर जोशी, सेवाराम शर्मा, ४३२, डि०, १०)
अर्थशास्त्र, प्रो० परमानन्द, ५)
अर्थशास्त्र का प्रारम्भिक ज्ञान, गिरिजाशंकर नागर, २।।)
अर्थशास्त्र, १, फ्रेडरिक बेन्हम, ६०६, डि०, १०)
अर्थशास्त्र के आधुनिक सिद्धान्त, २, ह्यूएट और गुरुचरण सिंह, ७५०, डि०, १२)
अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्त, १, केवलकृष्ण ह्यूएट, अनु० सन्तराम विचित्र, ६५०, डि०, ७।)
अर्थशास्त्र प्रवेशिका, श्री श्यामनारायण वर्मा, २।।)
अर्थशास्त्र शब्दावली, भगवानदास केला, २)
अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, श्रीमप्रकाश केला, ८)
अर्थशास्त्र की भूमिका, १, रामअवतार लाल, ४७८, ६।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गान्धीय मार्ग

बा० गुलाबराय एम० ए०

पृष्ठ संख्या १०१ मूल्य ३)

देश की समृद्धि का माप दण्ड कल कारखाने नहीं। प्राचीन भारत की प्रशंसा उसकी मौलिकता में थी। हमारे विद्यार्थी भावी भारत के भविष्य निर्माता हैं। उनको गान्धीवाद की सरल जीवनमयी शिक्षा की आवश्यकता है।

आधुनिक कविता की भाषा

ले० :—बृजकिशोर चतुर्वेदी

पृष्ठ संख्या ५४० मूल्य ६)

आधुनिक खड़ी बोली के लोकप्रिय ३० काव्य ग्रन्थों की समीक्षा

मीरा मन्दाकिनी

संकलनकर्ता व सम्पादक नरोत्तमदास स्वा०, एम०ए०

पृष्ठ संख्या १२५ मूल्य २)

भक्त शिरोमणि मीराबाई का संक्षिप्त संकलन और जीवन परिचय विशेषकर विद्यार्थियों के निमित्त

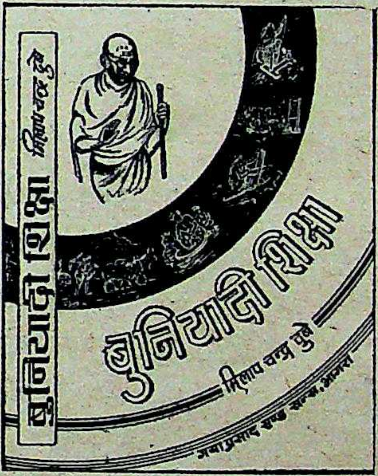

बुनियादी शिक्षा

लेखक:—मिलापचन्द दुबे

पृष्ठ संख्या २६२ मूल्य ४)

रचनात्मक प्रकृतियों के समस्त कार्यक्रमों में बुनियादी शिक्षा सर्वश्रेष्ठ है।

दशकुमार चरित

लेखक :—पं० हरिदत्त शास्त्री एम० ए०

पृष्ठ संख्या १३८ मूल्य १॥)

महाकवि दण्डी के दशकुमार चरित्र की सुललित कथाओं का संक्षिप्त परिचय।

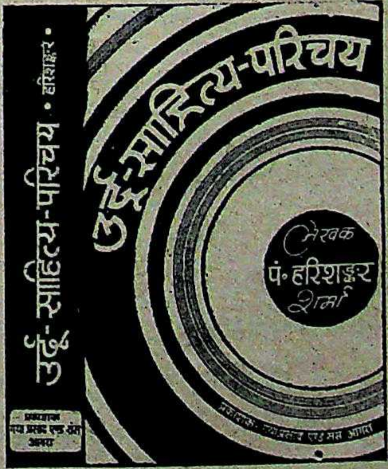

उर्दू-साहित्य-परिचय

ले०—पं० हरिशंकर शर्मा

पृष्ठ संख्या ४८७ मूल्य ६)

उर्दू न जानने वालों को देवनागरी लिपि में उर्दू साहित्य का अनोखा परिचय तथा उनकी प्रमुख रचनाओं का रसास्वाद

ग या प्र सा द ए ण्ड स न्स

हॉस्पिटल रोड बाजार, ... विलास, आगरा. ४०/७८ परेड, कानपुर. पाटंकर बाजार, ग्वालियर. चौड़ा रास्ता, जयपुर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्रता कीजिये !

हाईस्कूल के विद्यार्थियों के सफल अध्ययन के लिए

गुमाज़ गाइड

(तेरहवाँ संस्करण)

(विषयवार प्रमुख प्रश्नोत्तर सहित)

१. जनरल इंग्लिश प्रश्नोत्तर सहित मू० ।=)
२. अपठित हिन्दी (अलंकारादि) प्रश्नोत्तर सहित ,, ॥=)
३. एलीमेन्टरी गणित ,, ।)
४. हायर गणित ,, ॥=)
५. इतिहास ,, ॥।)
६. भूगोल ,, ॥=)
७. साइन्स ,, ॥=)
८. गार्हस्थ्य शास्त्र ,, ।)
९. ऐनाटॉमी एण्ड हाईजीन ,, ।=)
१०. कामर्स ,, ॥।)
११. सिविक्स ,, ॥=)
१२. अर्थ शास्त्र ,, ।=)
१३. ड्राइंग ,, ।)
१४. जनरल साइन्स ,, ।=)

विद्यार्थियों को ३३ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा

१) से कम मूल्य की पुस्तकें अधिक पोस्टेज लगने के कारण वी० पी० से नहीं भेजी जा सकेंगी। १) से कम की पुस्तकों के लिये मनीआर्डर से दाम पेशगी भेज देने चाहिएँ। बिना डाक खर्च के पुस्तकें भेज दी जायँगी।

शीघ्रता कीजिये !

अपने ढंग की अद्वितीय एवं बेजोड़ पुस्तक

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की सन् १९५४ सं० २०११ की

प्रथमा एवम् मध्यमा परीक्षाओं में निश्चित सफलता प्राप्त कराने वाली

प्रमुख प्रश्नों के हल सहित

एक ही में अनेक विषय वाली बेजोड़ पुस्तकें

प्रथमा-दर्शन (तृतीय परि० सं०)
पृष्ठ १८५ मू० २॥)

मध्यमा-दर्शन (तृतीय परि० सं०)
पृष्ठ ३५० मू० ३॥)

इनमें विद्वान् एवं अनुभवी लेखकों ने अनेक विषयों—जैसे साहित्य, गणित, इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, कृषिशास्त्र, स्वास्थ्य-रक्षा—पर तमाम प्रमुख प्रश्नों को सरल भाषा में हल किया है जिससे विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों पर पृथक्-पृथक् पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता नहीं रहती।

उपयोगिता के कारण ही विद्यार्थी जगत् ने इनकी अत्यन्त सराहना की है।

प्रथमा गार्हस्थ्य शास्त्र
(प्रमुख प्रश्नोत्तर सहित) मू० ॥।)

मध्यमा गार्हस्थ्य शास्त्र
(प्रमुख प्रश्नोत्तर सहित) मू० १)

भाषा विज्ञान की ओर
(प्रश्नोत्तर सहित) मू० ॥)

इतनी लाभदायक, सस्ती एवं बेजोड़ पुस्तकों के लिये अग्रिम रकम भेजकर अपनी प्रति शीघ्र मंगवा लीजिये। विद्यार्थियों को ३३ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

प्रेम एण्ड को

एजुकेशनल पब्लिशर्स

इतवारिया बाजार, इन्दौर शहर (म० भा०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली के
महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

टेलीफोन : २३०६२

तार : 'बुक्स' दिल्ली

पो० बो० १४२६

आलोचनात्मक साहित्य

हंसराज 'रहबर' ६।।)
शचीरानी गुर्टू ६)
शचीरानी गुर्टू ६)
नन्ददुलारे वाजपेयी ४)
गुलाबराय तथा
विजयेन्द्र स्नातक ६)
गुलाबराय ४।।।)
गुलाबराय ६)
गुलाबराय ३।।)
गुलाबराय १।।।)
डा. सुधीन्द्र ८)
देवराज उपाध्याय ३।।।)
कन्हैयालाल सहल तथा
विजयेन्द्र स्नातक ४)
क्षेमचन्द्र सुमन तथा
योगेन्द्रकुमार मल्लिक ७)
डा. राजेन्द्रप्रसाद ५)
रामकृष्ण शुक्ल शिलीमुख ३।।।)
कन्हैयालाल सहल ३)
जयनाथ 'नलिन' ५)
मोहनलाल जिज्ञासु ३)
कृष्णचन्द्र शर्मा तथा
देवीशरण रस्तौगी १।।)
अशोककुमार सिंह १।।)

दृष्टिकोण — कन्हैयालाल सहल १।।)
प्रगतिवाद की रूपरेखा — मन्मथनाथ गुप्त ७।।)
हिन्दी साहित्य और उसकी प्रगति — स्नातक तथा सुमन ३)
प्रबन्ध-सागर — यज्ञदत्त शर्मा ५।।)
आदर्श पत्र-लेखन — यज्ञदत्त शर्मा ७।।)
मैं इन से मिला (भाग १) — पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' २।।)
मैं इन से मिला (भाग २) — पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' ३।।)
मैंने कहा (सचित्र) — गोपाल प्रसाद व्यास ३)
वाद-समीक्षा — कन्हैयालाल सहल ।।।)
हिन्दी मुहावरे — रामनरेश त्रिपाठी १)
बिहारी-वैभव — कमला देवी गर्ग १।)
साहित्य-जिज्ञासा — ललिताप्रसाद सुकुल ३)
तुलनात्मक अध्ययन — कृष्णचन्द्र शर्मा तथा देवीशरण रस्तौगी ३)
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ — डा. सावित्री सिन्हा ८)
मन की बातें — गुलाबराय ३)
प्राचीन कवियों की काव्य-भावना — सुरेशचन्द्र गुप्त १।।)
कबीर : साहित्य और सिद्धान्त — यज्ञदत्त शर्मा २।।)
सूरदास : साहित्य और सिद्धान्त — यज्ञदत्त शर्मा २।।)
हिन्दी काव्यालंकारसूत्र आचार्य विश्वेश्वर सं. डा. नगेन्द्र १२)
अनुसन्धान का स्वरूप — डा. सावित्री सिन्हा ३)
भारतीय शिक्षा — डा. राजेन्द्रप्रसाद ३)
हिन्दी-निबन्धकार — जयनाथ 'नलिन' ६)
सन्तुलन — प्रभाकर माचवे ४)
हिन्दी कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन — विराज ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यानुशीलन — शिवदानसिंह चौहान ६)
आधुनिक कवियों की काव्य-भावना — सुरेशचन्द्र गुप्त १॥)
प्रसाद जी का जीवन, कला और कृतित्व — महावीर अधिकारी ६)
आदर्श भाषण-कला — यज्ञदत्त शर्मा ५)

नाटक

विषपान — हरिकृष्ण 'प्रेमी' १॥)
स्वप्न-भंग — हरिकृष्ण 'प्रेमी' १॥)
उद्धार — हरिकृष्ण 'प्रेमी' २)
शपथ — हरिकृष्ण 'प्रेमी' २॥)
छाया — हरिकृष्ण 'प्रेमी' १)
शतरंज के खिलाड़ी — हरिकृष्ण 'प्रेमी' १।॥)
समर्पण — जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द' १।॥)
शक-विजय — उदयशंकर भट्ट ३)
विश्वामित्र और दो भाव-नाट्य — उदयशंकर भट्ट ३)
उर्मिला — पृथ्वीनाथ शर्मा १)
सुभद्रा-परिणय — वीरेन्द्रकुमार गुप्त २)
शक्ति-पूजा — वी. मुखर्जी 'गुंजन' १)
शान्ति-दूत — देवदत्त 'अटल' १)
मानव प्रताप — देवराज 'दिनेश' २)
हर्षवर्धन — बैकुंठनाथ दुग्गल १)
पग-ध्वनि — आचार्य चतुरसेन शास्त्री १॥)
वितस्ता की लहरें — लक्ष्मीनारायण मिश्र १॥)

एकांकी

बादलों के पार — हरिकृष्ण 'प्रेमी' ३)
आदिम-युग — उदयशंकर भट्ट ३)
मनु तथा अन्य एकांकी — लक्ष्मीनारायण मिश्र ३॥)
ऐतिहासिक दृश्य — श्यामलाल १)
एकांकी समुच्चय — सं. जयनाथ नलिन ३)
सफर की साथिन — रामशरण शर्मा १।॥)

उपन्यास

विसर्जन — प्रतापनारायण श्रीवास्तव ६)
इन्सान — यज्ञदत्त शर्मा ४)
महल और मकान — यज्ञदत्त शर्मा ३)
बदलती राहें — यज्ञदत्त शर्मा ३)
मधु — यज्ञदत्त शर्मा
झुनियाँ की शादी — यज्ञदत्त शर्मा
इन्साफ — यज्ञदत्त शर्मा
चोर की प्रेमिका (सचित्र) — आर० कृष्णमूर्ति
परेड ग्राउँड — हंसराज 'रहबर'
अपराजिता — आचार्य चतुरसेन शास्त्री
विद्रूर — पृथ्वीनाथ शर्मा
हृदय-मंथन — सीताचरण दीक्षित
तीस दिन — सन्तोषनारायण नौटियाल
हरिजन — सन्तोषनारायण नौटियाल
जर्जर हथौड़े — बख्शी
जल-समाधि — गोबिन्दवल्लभ पन्त
डूबते मस्तूल — नरेश मेहता
शराबी — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
दिल्ली के लड्डू — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
सिद्धार्थ — हरमन हेस
बारक-छाया — लक्ष्मण त्रिपाठी
आत्मदान — विजयकुमार पुजारी
चुनौती — तक्षी शिवशंकर पिल्लै
पुनरुद्धार — कंचनलता सब्बरवाल
धरती के लाल — दी. मड हट्ड्वेलर्स अनुवाद
मानव की परख — देवीदयाल सेन
काले बादल — अनु. नरोत्तम नागर
हवेली की ईंटें — श्रीचन्द्र अग्निहोत्री
मुक्ति-मार्ग
कर्म-साधना — रामसागर शास्त्री
रजवाड़ा — देवेश दास

कहानी

नरक का न्याय — मोहनसिंह सेंगर
जीवन के मोड़ — महावीर अधिकारी
कारावास — यशपाल बी. ए.
चवन्नी वाले — सन्तोषनारायण नौटियाल
अमृत और विष — अरुण बी. ए.
मृत्यु में जीवन — अरुण बी. ए.
स्वप्न-भंग — होमवती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलादेवी चौधरी १)
कमलादेवी चौधरी ३)
कमलादेवी चौधरी ३)
...वित्त (मूल लेखक मोपांसा) अनु० सन्तोष गार्गी १॥)
...वेखोव् अनुवादक 'अरुण' १॥)
...म गोर्की अनुवादक 'अरुण' ३)
...का पुरस्कार पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
...वाड़ा देवेश दास ५)

काव्य

...दर्शन हरिकृष्ण 'प्रेमी' ६)
...ता के बोल हरिकृष्ण 'प्रेमी' २।)
...ों में हरिकृष्ण 'प्रेमी' २।)
...विजय के गीत जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द ३)
...-भारत चन्द्रिका प्रसाद मिश्र ।॥)
...रण महाकाव्य हरदयालु सिंह वर्मा ५)
...व्य-धारा सं० डा. इन्द्रनाथ मदान ३॥)
...संचय बालकृष्णराव २॥)
...त्सर्ग देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त' १।)
...जयानी के कवि कौल तथा त्यागी ३)
...गोविंद (पद्यानुवाद) विनयमोहन शर्मा ५)

इतिहास

भारत का सांस्कृतिक इतिहास हरिदत्त वेदालंकार ६)
भारत की सांस्कृतिक दिग्विजय हरिदत्त वेदालंकार १)
भारत का चित्रमय इतिहास महावीर अधिकारी ६)
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास
डा. रांगेय राघव १२)
भारतवर्ष का बृहद् इतिहास भगवद्दत्त १६)
आयुर्वेद का इतिहास सूरजचंद ८)
...वाड़ा देवेश दास ५)

जीवन तथा आत्म-चरित

हमारे राष्ट्रपिता (सचित्र) गोपालप्रसाद व्यास २)
जीवन-स्मृतियाँ क्षेमचन्द्र 'सुमन' ३)
महान भारतीय ब्रह्मवती नारंग २)
हमारे कर्मयोगी राष्ट्रपति इन्द्र विद्यावाचस्पति ॥)
...क्रांति के अग्रदूत राजेश्वर प्रसाद नारायणसिंह ४)

राजनीतिक

अगले पाँच साल जी एस. पथिक ५)
अगला कदम हरेकृष्ण महताब १)
भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास
गुरुमुख निहाल सिंह १०)

भूगोल

भूगोल के भौतिक आधार (सचित्र) रामस्वरूप वशिष्ठ ६)

नागरिक विज्ञान

सभा-शास्त्र नरहरि विष्णु गाडगिल ६)
सचित्र संविधान इन्द्र एम. ए. १॥)

संगीत

संगीत-परिचय रामावतार संगीताचार्य तीन भाग ३।)

ग्राम-साहित्य

ग्राम-साहित्य (भाग १) रामनरेश त्रिपाठी ४)
ग्राम-साहित्य (भाग ३) रामनरेश त्रिपाठी ६)

टेक्नीकल साहित्य

लोको-गाइड (सचित्र) द्वितीय संस्करण हरिचन्द रत्ता १०)
लोकोमोटिव वाल्व सेटिंग हरिचन्द रत्ता ५)
शकुन्तला कटाई कला सुमित्रा देवी गाबा ३॥)
कटाई-शिक्षा सुशीला कालरा ३)
कढ़ाई-शिक्षा सुशीला कालरा १॥)

काम विज्ञान

सेक्स का स्वभाव मन्मथनाथ गुप्त ३)

शिकार-साहित्य

शिवालक की घाटियों में श्री निधि सिद्धांतालंकार ५)

भ्रमण

आँखों देखा रूस सत्येन्द्रनाथ मजूमदार २)
यूरोपा देवेश दास ३)
पृथ्वी-परिक्रमा (सचित्र) सेठ गोविन्ददास १०)

व्यायाम

संगीत-व्यायाम प्रो. नारायण राव ३)

संस्कृत से अनूदित साहित्य

मेघदूत (पूर्व मेघ) साधुराम २॥)
नागानन्दम् साधुराम ५)
संस्कृत सुधा चूड़ामणि शास्त्री १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-मनोविज्ञान

बालक का भाव-विकास (सचित्र) प्रो. एस. पी. कनल ५)
अपने बालक को पहिचानिये युधिष्ठर कुमार १॥)
आपका मुन्ना ३ भाग (सचित्र) सावित्री देवी वर्मा
भाग १ पालन-पोषण ३।)
भाग २ समस्याएँ ५)
भाग ३ शिक्षण ५)

अर्थशास्त्र

सामान्य अर्थशास्त्र (प्रश्नोत्तर रूप में) बी. एम. भाटिया ६)

शिक्षा-विज्ञान

आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान ईश्वरचन्द्र शर्मा ५)

विज्ञान

पानी बोला (सचित्र) रामचन्द तिवारी-सिद्धि तिवारी २।)
प्रायौगिक भौतिक शास्त्र की मौखिक प्रश्नावली (सचित्र)
नानकशरण खरे तथा विष्णुकुमार गंगल ३)
गणित भाग भौतिक विज्ञान ए. एन. पुरी

पुस्तकालय विज्ञान

ग्रंथालय-मीमांसा डा. रंगनाथन् २)
ग्रंथालय प्रक्रिया डा. रंगनाथन् ८)
अनुवर्ग सूची कल्प डा. रंगनाथन् १२)

सचित्र लोक-कथामाला

काश्मीर की लोक-कथाएँ नन्दलाल चत्ता १)
विन्ध्य-भूमि की लोक-कथाएँ श्रीचन्द जैन—श्रीवास्तव १)
ब्रज की लोक-कथाएँ आदर्शकुमारी यशपाल १।)
पंजाब की लोक-कथाएँ पंछी तथा बेदी १।)
बंगाल की लोक-कथाएँ मन्मथनाथ गुप्त १॥)
फ्रांस की लोक-कथाएँ मन्मथनाथ गुप्त १॥)

सचित्र बालोपयोगी साहित्य

सचित्र अक्षर-ज्ञान (रंगीन) रामलाल पुरी १॥)
देखो, पढ़ो, लिखो रमेश भाई ॥≡)
वर्ण-बोध (सचित्र) १)

सचित्र शब्द-बोध रामेश्वरी एम. ए. ।≡, ॥≡
सरल कहानियाँ सन्तराम विचित्र १
चित्रमय बाल-कहानियाँ रजनीश विचित्र ॥
चालाक भैंस रमेश भाई ॥
नटखट पूसी रमेश भाई ।≡
बुद्धि-विनोद आनन्दकुमार १॥
नीति-प्रमोद आनन्दकुमार १॥
महाभारत की कहानियाँ राजबहादुर सिंह १
सुन्दर कहानियाँ राजबहादुर सिंह १
चरित्र-निर्माण की कहानियाँ राजबहादुर सिंह १
कथा-भारती सावित्री देवी वर्मा १॥
जंगल-ज्योति सावित्री देवी वर्मा १॥)
बाल कथा सुषमारानी शास्त्री (तीन भाग) १
गुरु-दक्षिणा (सचित्र) सन्तराम वत्स्य ॥
बाल-मेला (सचित्र) शम्भुनाथ 'शेष' ॥
बूढ़े बच्चे रामचन्द्र तिवारी १॥)
कथा-मंजरी नागार्जुन १
बाल नीति-कथा विष्णुदत्त विकल १
बालकों के चलन सन्तराम विचित्र १
चन्दा मामा का देश सन्तोषनारायण नौटियाल १
अमृत का झरना लक्ष्मण त्रिपाठी १
चिड़ियाघर की सैर पृथ्वीनाथ शर्मा १॥
शिशु-गान आर. बी. अवधेश १॥
रामायण (चित्रों में) सादी ॥।) रंगीन १॥)
झाँसी की रानी (चित्रों में) ॥)
महाभारत (चित्रों में) १)
शकुन्तला (चित्रों में) १)
कृष्ण चरित्र (चित्रों में) १)
बाल-ज्ञान सुषमारानी (दो भाग) १
भारतीय बालक सुषमारानी १
बाल-बोध (दो भाग) सुषमारानी १
बीरबल का बेटा मनोरमा मालवीय १

हिन्दी के उच्चकोटि के काव्य, नाटक, आलोचना-साहित्य, उपन्यास, बाल-साहित्य
तथा प्रौढ़-शिक्षा-सम्बन्धी सभी विषयों के ग्रन्थ हमारे यहाँ से प्राप्त करें।
आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रत के बुक-सैलर्स की सेवा में

...निम्नलिखित पुस्तकें अपनी माँग के अनुसार ...से मंगा सकते हैं। पैकिंग और वी० पी० तथा ...र्च आप को नहीं देना होगा—

...का नाम	लेखक	विषय	मू०	नैट
...	शरद्बाबू	उपन्यास	६)	२।)
...डियो गाइड	भास्कर	टैकनीकल	४)	१॥)
...ल्ली का रेडियो	उमराव सिंह	,,	१)	।)
...त्र विज्ञान	केशोराम	,,	१)	॥)
...संसार	सम्पादित	,,	४)	२)
...हिन्दी इंग्लिशटीचर	वीरेन्द्रत्रिपाठी	,,	५॥)	२॥)
...निका	राजनारायण	,,	६)	३)
...शिक्षा	,,	,,	१।)	।)
...टनी मुरब्बा तैयार करना		,,	१।)	।–)
...की कहानियाँ	६०० पृष्ठ	कहानियाँ	६)	२।)
...गाइड	सम्पादित	शिक्षा	१॥)	॥।)
...	,,	चुटकले	१)	।=)
...मनोरंजन	,,	कामकला	१)	॥)
...की कहानियाँ	,,	,,	१)	।=)
...री (बेलबूटे काढ़ने की शिक्षा और नमूने)			४)	१॥)

...मि बुकडिपो, १५०१ दरीबा, दिल्ली ६

...तृतीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण

गुप्तजी की यशोधरा

—श्री कृष्ण कुमार सिन्हा एम० ए०

...मैथिलीशरण गुप्त कृत 'यशोधरा' पर एक सर्वांगपूर्ण ...क पुस्तक लिखकर विद्वान लेखक ने एतद्विषयक अध्ययन ...करने में महत्वपूर्ण योग दिया है। इसमें तीस आलो-...निबन्ध और परिशिष्ट में टीका खंड भी है। इसकी भूमिका ...न्हैयालाल सहल ने लिखी है। इस पुस्तक की प्रशंसा ...में सर्वश्री डा० विश्वनाथ प्रसाद, डा० त्रिलोकी नारायण ...म० डा० सुधीन्द्र, प्रो० जगन्नाथ राय शर्मा, प्रो० कपिलदेव ...जगदीश नारायण दीक्षित आदि हैं। पृष्ठ संख्या है ३९२ ...डिमाई साइज, दो रंगा कवर। मूल्य सिर्फ सवा तीन रु०।

...प्रकाशक
...निकेतन
...वाड़ी, गया

प्राप्ति स्थान

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

आत्माराम एंड संस, दिल्ली

कबीर साहित्य समझने के लिए अपूर्व ग्रन्थ

कबीर बीजक (सकोश)

कबीर बीजक पर आज तक इतनी अच्छी सामग्री प्रकाशित नहीं हुई है।

इसकी कुछ विशेषताएँ

मूल में कबीर साहब के ५८६ पद
परिशिष्ट (क) में ३००० शब्दों का उदाहरण सहित प्रामाणिक शब्दार्थ तथा साथ ही में आवश्यक शब्दों के आध्यात्मिक अर्थ। प० (ख) में अंतर्गत कथाएँ। प० (ग) में संख्यावाची शब्दों के अर्थ। प० (घ) में योग सम्बन्धी शब्दों की व्याख्या। प० (ङ) में रूपक उलटबाँसियाँ तथा प्रतीकात्मक शब्दों की सुन्दर व्याख्या।

मूल्य ४॥) डाक व्यय १)

पुस्तक विक्रेताओं को उचित कमीशन

प्रकाशक

कबीर ग्रन्थ प्रकाशन समिति

हरक, बाराबंकी

अन्दमान का भूगोल

(मूल्य १२ आने)

छपकर तैयार है

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, की अन्दमान निकोबार शाखा द्वारा प्रकाशित)

भारत के एकमात्र समुद्र पार प्रदेश, बंगाल की खाड़ी में राष्ट्र के प्रहरी के स्वरूप स्थित, प्राकृतिक सौन्दर्य से ओत प्रोत अन्दमान-निकोबार द्वीपों की जानकारी के लिये हिन्दी में छपी पहली पुस्तक।

कमीशन की दरों तथा मंगाने के लिये लिखिये

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

वर्धा (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँग्रेजी-साहित्य-परिचय

लेखक :—दयाशङ्कर शर्मा एम० ए०
विद्याशङ्कर शर्मा एम० ए०
पृष्ठ ३६४ मूल्य ४)

अँग्रेजी साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास संश्लिष्ट तथा आलोचनात्मक परिचय सहित और प्रमुख साहित्यकारों का जीवन परिचय तथा प्रमुख रचनाओं की बानगी।

हिन्दुस्तानी कोष

लेखक :—पं० हरिशंकर शर्मा
पृष्ठ ६३१ मूल्य ६)

उर्दू न जानने वालों के लिए नागरी लिपि में उर्दू साहित्य का अनुशीलन करने का सुलभ साधन

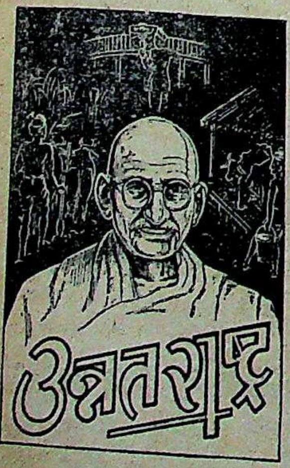

उन्नत राष्ट्र

लेखक :—शिवधानसिंह एम० कॉम व राजेन्द्रप्रसाद, एम०एस सी०
पृष्ठ १६० मूल्य १॥)

राष्ट्र निर्माण के आर्थिक और राजनीतिक पक्ष पर प्रकाश डालकर नवयुवकों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने की सफल उद्योग

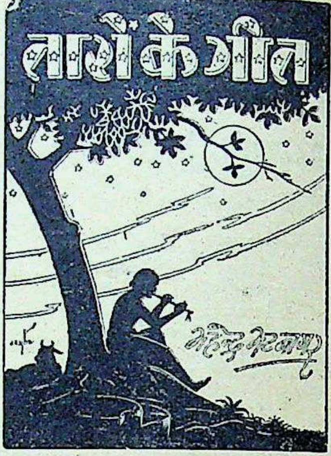

तारों के गीत

लेखक :—महेन्द्र भटनागर
पृष्ठ ४६ मूल्य ||)

सघन अन्धकार से घिरी निशा में घंटों मिल-मिलाते तारों का अवलोकन करने से उदित भिन्न-भिन्न भावों और विचारों को लेखक ने इन गीतों में व्यक्त किया है।

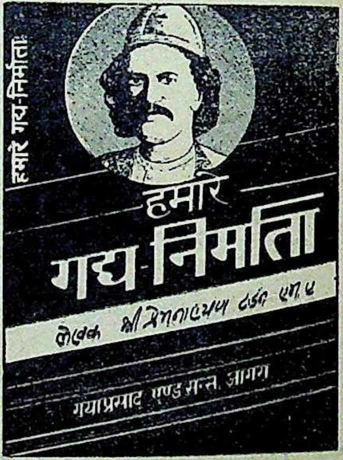

हमारे गद्य-निर्माता

लेखक :—प्रेमनारायण टंडन एम० ए०
पृष्ठ १८६ मूल्य २)

भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग और आधुनिक युग के प्रमुख ग्यारह हिन्दी गद्य लेखकों की साहित्य-सेवा, शैली और भाषा पर आलोचनात्मक "निबन्ध" और "शैली" तथा "हिन्दी गद्य" के विलास की विवेचना

नवाबी सनक

ले० श्री जयनाथ 'नलिन'
पृष्ठ १४६ मूल्य १)

शिष्ट हास्य का अनमोल ग्रन्थ नवाब साहब का इंसाफ बटेरों के शौकीन, लोमड़ियों का शिकार, शतरंज के खिलाड़ी, लखनवी बहादुर

ग या प्र सा द ए ण्ड स न्स

बाँके विलास, आगरा. ४०/७८ परेड, कानपुर. पाटंकर बाजार, ग्वालियर. चौड़ा रास्ता, जयपुर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[... २४ से आगे]

...शास्त्र के मूल सिद्धान्त, १, भगवानदीन अवस्थी, ४२२, ३)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...शास्त्र के प्रारम्भिक नियम, डॉ० कृष्णकुमार सिन्हा, ६)	गौतम बुक डिपो
...शास्त्र के सिद्धान्त, महिमचरण सक्सेना, २४०, का०, ३॥)	साहित्य निकेतन
...शास्त्र के सिद्धान्त, १, कालिकाप्रसाद भटनागर, ७००, डि०, ६॥)	किताब घर, कानपुर
...शास्त्र का परिचय, अमरनारायण अग्रवाल, ७१२, डि०, ७)	किताब महल
...शास्त्र प्रवेशिका, अमरनारायण अग्रवाल, १५६, १॥)	किताब महल
...निक बहीखाता, हृषीकेश नारायण, ७)	नन्दकिशोर
...निक अर्थशास्त्र, प्रो० जैन और भार्गव, ७)	नन्दकिशोर
...कर, १, आर० एल० शर्मा, २०० डि०, ५)	डी० आर० शर्मा, जोधपुर
...कर खाता तथा प्रकाशित खाता की आलोचना, हृषीकेश, १५७, ३।॥)	किताब महल
...क नियोजन, मधुकर, १६४, १॥)	किताब महल
...क अध्ययन, प्रो० केदारनाथ, ३॥)	पुस्तक भण्डार
...निक अर्थशास्त्र, प्रो० केदारनाथ, १०)	पुस्तक भण्डार
...गिक संगठन, के० के० अग्रवाल, १६२, २॥)	किताब महल
...ण्ड का आर्थिक इतिहास, १, मोतीचन्द्र गोविल, १३४, २)	अजन्ता प्रेस
...ण्ड का आर्थिक विकास, रामजी सहाय, ३।॥)	नन्दकिशोर
...ण्ड का आर्थिक इतिहास, विष्णु अनुग्रह नारायण, २।॥)	...न्थमाला कार्यालय
...सी तथा बैंकिंग, ए० एन० अग्रवाल, ५१६, ५)	किताब महल
...तीय अर्थशास्त्र, देवदत्त शास्त्री, ६००, ५)	किताब महल
...के आर्थिक विचार, भगवानदास केला, १॥)	भारतीय ग्रन्थमाला
...स्वराज्य, १, रामनारायण यादवेन्दु, ११४, का०, ४)	नालन्दा प्रकाशन
...अर्थशास्त्र, १, ब्रजगोपाल भटनागर, ३२४, का०, ४)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...शास्त्र, १, मुरलीधर जोशी, १६१, का०, २।)	सम्मेलन
...करेंसी और विनिमय, कान्तानाथ गर्ग, २६६, ३)	किताब महल
...विनिमय तथा बैंकिंग का परिचय, राजनारायण माथुर, ५००, ८)	नन्दकिशोर
...व्यवहार, संक्षिप्तीकरण तथा बाज़ार भाव, श्रीनारायण श्रीवास्तव, ३)	नन्दकिशोर
...म्भिक अर्थशास्त्र, श्रीनारायण अग्रवाल, २२२, २)	किताब महल
...म्भिक वही-खाता, शारदानन्द सिंह, ३)	पुस्तक भण्डार
...म्भिक अर्थशास्त्र, १, गुरुदेवशरण, मिसेज नैनीशरण, २२६, का०, ३)	सरस्वती सदन
...अर्थशास्त्र, नागर और श्रीवास्तव, १॥)	नन्दकिशोर
...की आर्थिक समस्याएँ, १, रामअवतार लाल, २१८, २)	अजन्ता प्रेस
...का प्रारम्भिक अध्ययन, बालचन्द श्रीवास्तव, ६)	नन्दकिशोर
...कीपिंग का परिचय, अमरनारायण अग्रवाल, ३८४, २॥)	किताब महल
...कीपिंग का प्रारम्भिक ज्ञान, नागर और गौतम, १।)	नन्दकिशोर
...का परिचय, १, वेदानन्द, २४०, का० २)	हिन्दी प्रेस, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंकिंग प्रवेशिका, श्रीनारायण श्रीवास्तव, २४७, २)	नन्दकिशोर
भारत का आर्थिक इतिहास, १, मोतीचन्द्र गोविल, २२६, ३)	अजन्ता प्रेस
भारतीय अर्थशास्त्र की भूमिका, १, नर्मदेश्वर झा, २६८, ६)	अजन्ता प्रेस
भारतीय अर्थशास्त्र, भगवानदास केला, ५),	भारतीय ग्रन्थमाला
भारतीय अर्थशास्त्र का विवेचन, ओमप्रकाश केला, १०)	भारतीय ग्रन्थमाला
भारतीय अर्थशास्त्र दिग्दर्शन, १, जगदीशप्रसाद गुप्ता, ३००, डि०, ३।।।)	सुदर्शन प्रकाशन
भारतीय ग्राम्य अर्थशास्त्र, १, शंकरसहाय, ४६२, डि०, ७)	सम्मेलन
भारतीय राजस्व, भगवानदास केला, ३)	भारतीय ग्रन्थमाला
भारत का आर्थिक भूगोल, पुरुषोत्तम जैन, २।।)	गौतम बुक डिपो
भारत का आधुनिक आर्थिक विकास, रामजीसहाय, २७१, ३)	किताब महल
भारत का औद्योगीकरण, प्रो० नाग, २४२, २।।)	किताब महल
भारत की आर्थिक समस्याएँ, १, सी० एल० बंसल, जगदीशप्रसाद गुप्त, क्रा०, ३।।)	नवनिर्माण प्रकाशन
भारतीय अर्थशास्त्र—प्रथम भाग, रमापति शुक्ल, ६।।)	नन्दकिशोर
भारतीय मुद्रा का इतिहास, १, गिरिराज प्रसाद गुप्त, २५०, ३।।।)	एस० चन्द एण्ड कं०
भारत का आर्थिक विकास, १, दयाशंकर नाग, २५०, ५।)	एस० चन्द एण्ड कं०
भारतीय अर्थशास्त्र, २, केवलकृष्ण ड्यूएट, ६०४, डि०, १०)	एस० चन्द एण्ड कं०
भारतीय अर्थशास्त्र, प्रो० केदारनाथ प्रसाद, ४)	पुस्तक भण्डार
भारतीय अर्थशास्त्र की रूपरेखा, २ भाग, १, शंकरसहाय सक्सेना, प्रेमनारायण माथुर,	श्रीराम मेहरा
व्यापार का प्रारम्भिक ज्ञान, नागर और गौतम, १।)	नन्दकिशोर
वाणिज्य अर्थशास्त्र, अमरनारायण अग्रवाल, ४०५, ४।)	किताब महल
व्यावसायिक संगठन, प्रो० केदारनाथ प्रसाद, ६)	पुस्तक भण्डार
विश्व का आर्थिक भूगोल, प्रो० परमानन्द प्रसाद, २।।)	पुस्तक भण्डार
राजस्व, भगवानदास केला, १।।)	भारतीय ग्रन्थमाला
सरल अर्थशास्त्र, कृपाशंकर गौड़, २।।)	गौतम बुक डिपो
सरल वाणिज्य प्रणाली, कैलाशबहादुर सक्सेना, विश्वनाथ हुक्कू, ५३०, क्रा० ५)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
सर्वोदय अर्थव्यवस्था, भगवानदास केला, १।।)	भारतीय ग्रन्थमाला
सुबोध अर्थशास्त्र सिद्धान्त, १, केवलकृष्ण ड्यूएट, जयदेव वर्मा, ५००, डि०, ६)	एस० चन्द एण्ड कं०
सुबोध भारतीय अर्थशास्त्र, १, केवलकृष्ण ड्यूएट, जयदेव वर्मा, ५५०, डि०, ६।।)	एस० चन्द एण्ड कं०
सम्पत्ति-शास्त्र, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, २)	नन्दकिशोर
सार्वजनिक अर्थ, प्रो० केदारनाथ प्रसाद, ५)	पुस्तक भण्डार
मार्क्सवादी अर्थशास्त्र, भूपेन्द्रनाथ सान्याल, २)	इण्डियन प्रेस
माध्यमिक सरल अर्थशास्त्र, १, टी० एन० सचदेव, २५०, डि०, ४।।)	एस० चन्द एण्ड कं०
मुद्रा एवं मौद्रिक संस्थाएँ, प्रो० हृषीकेश नारायण, ८)	पुस्तक भण्डार
मुद्राशास्त्र, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, २)	नागरी प्रचारिणी सभा
मुद्रा-शास्त्र और बैंक शास्त्र, प्रो० केदारनाथ प्रसाद, ६)	पुस्तक भण्डार
मुद्रा, साख तथा बैंक-व्यवस्था, श्रीवास्तव तथा तिवारी, २।।)	नन्दकिशोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ति कर क्या है ?, १, कपूरचन्द पाटनी, भँवरलाल चोरडिया, ६८, क्रा०, १॥)	पाटनी जैन कं०, जयपुर
...त अर्थशास्त्र, १, एम० पी० गर्ग, रामसरण, ५००, क्रा०, ५)	पापुलर बुक हाउस, जयपुर
...ती खुराक और आबादी की समस्या, १, श्री ओमप्रकाश, १३३, क्रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
...ती समस्याएँ, १, राजकुमारी बिन्दल, ८१, क्रा०, १॥)	हिन्द किताब्स
...दी टाइप राइटिंग, श्रीकृष्ण शाकल्य, १॥)	नन्दकिशोर
...दी में अर्थशास्त्र और राजनीति-साहित्य, भगवानदास केला, २)	भारतीय ग्रन्थमाला
...तरी आर्थिक एवं वाणिज्य-सम्बन्धी प्रणालियाँ, डॉ० सिंह, ५५७, डि०, ५॥=)	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

अष्टछाप

...छाप, ४, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, १३३, क्रा०, १॥)	रामनारायणलाल
...छाप-परिचय, २, प्रभुदयाल मीतल, ४००, डि०, ५)	अग्रवाल प्रेस
...छाप और वल्लभ सम्प्रदाय (भाग १-२), १, डॉ० दीनदयाल गुप्त, ६६०, रा० २०)	सम्मेलन

आरोग्य-शास्त्र तथा स्वास्थ्य-विज्ञान

...रोग्य शास्त्र, १, चतुरसेन शास्त्री, क्रा० $\frac{1}{2}$, २०)	गंगा पुस्तक माला
...हार और आहार-सुधार, डॉ० केदारनाथ सिंह, १)	गंगा पुस्तक माला
...दर्श आहार, ३, सतीशचन्द्र दास, १००, क्रा०, १)	आरोग्य मन्दिर
...युर्वेद का इतिहास, १, सूरमचन्द, ३००, डि०, ८)	कविराज सूरमचन्द
...युर्वेद का इतिहास, १, अत्रिदेव विद्यालंकार, २७५, क्रा०, ३॥)	सम्मेलन
...पवास से लाभ, ३, विट्ठलदास मोदी, १६०, क्रा०, १॥)	आरोग्य मन्दिर
...षधीयिक निघण्टु, २, डॉ० रामनाथ, १०)	मोतीलाल बनारसीदास
...फ परीक्षा, १, डॉ० रमेशचन्द्र, ७५, क्रा०, १।)	मोतीलाल बनारसीदास
...निकल मेडीसन, श्री अत्रिदेव गुप्त, हरिश्चन्द्र वर्मा, १०००, क्रा०, १२॥)	मोतीलाल बनारसीदास
...स्वदृता, अशोक वेदालंकार, १।)	गंगा पुस्तक माला
...-चिकित्सा, हरिश्चन्द्र झा, २)	पुस्तक भण्डार
...ल और शारीरिक शिक्षा, रामनारायण उपाध्याय, १)	पुस्तक भण्डार
...ा, प्रतापसिंह, क्रा०, २॥)	गंगा पुस्तक माला
...नी और शिशु, क्रा०, ।॥)	नन्दकिशोर
...ने की कला, २, विट्ठलदास मोदी, १४४, क्रा०, १।)	आरोग्य मन्दिर कार्यालय
...त्कालिक चिकित्सा, लालबहादुर लाल, क्रा०, १।॥)	गंगा पुस्तक माला
...सी इलाज, १, रामेश बेदी, ८२, क्रा०, १)	हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट
...ी शिक्षा, अत्रिदेव गुप्त, क्रा०, ४)	गंगा पुस्तक माला
...-सुधार, २, डॉ० आर० एस० अग्रवाल, १५१, क्रा०, ३)	श्री मन्दिर कार्यालय
...-जीवन, १, डॉ० आर० एस० अग्रवाल, ८, क्रा०, ≈)	श्री मन्दिर कार्यालय
...चर्या और गृह-प्रबन्ध, रानी टण्डन, क्रा०, २।)	नन्दकिशोर
...ति तन्त्र, डॉ० रामदयाल कपूर, क्रा०, ५)	गंगा पुस्तक माला
...णायाम विज्ञान और कला, डॉ० शोजाकुरोओटेब, १३६, १)	इण्डियन प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक जीवन की ओर, २, एडोल्फजस्ट, ३००, क्रा० ३)
बृहत् मेटीरिया मेडिका, १, मनोरंजन बनर्जी, ५२७, क्रा०, ५)
भोजन और स्वास्थ्य, ३, डॉ० सत्यप्रकाश, १६०, २॥)
मरु कुञ्ज, मथुरादास त्रिक्रमजी, १६२, १।)
मलेरिया, डॉ० मनमोहन धूप, १७५, क्रा०, २।)
माँ और बच्चा, डॉ० हीरालाल, क्रा०, १)
वर्मा एलोपैथिक गाइड, ४, डॉ० रामनाथ वर्मा, ६००, क्रा०, १०)
वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा, डॉ० रामनाथ वर्मा, ५५०, क्रा०, १२)
व्याधि-विज्ञान, दो भाग, ४, डॉ० आशानन्द पंचरत्न, ५७५, क्रा०, १८)
यूनानी तिब्बका फार्माकोपिया, हकीम मनसाराम शुक्ल, ५)
यूनानी चिकित्सा सागर, हकीम मनसाराम शुक्ल, १०)
रोगों की सरल चिकित्सा, २, विट्ठलदास मोदी, ३५०, क्रा०, ४)
शरीर और स्वास्थ्य, डॉ० गिरीशनाथ, क्रा०, १॥)
शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य-कला, आर० मेहरोत्रा, १०६, ।॥)
शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य, रानी टण्डन, क्रा०, २।)
शिशु-पालन, अत्रिदेव गुप्त, क्रा०, ३।॥)
शिशु-पालन, अशरफीलाल वर्मा, २)
सफाई, ५, गणेशदत्त शर्मा गौड 'इन्द्र', १०२, क्रा०, १)
सर्दी, जुकाम, खाँसी, ३, रैह्मस अल्सेकर, १००, क्रा०, १)
सरल व्यायाम, कालिदास माणिक, ।=)
स्वास्थ्य और दीर्घायु, १, छविनाथ पाण्डेय, १७७, २)
स्वास्थ्य कैसे पाया, १, विट्ठलदास मोदी, २१६, क्रा०, १॥)
स्त्रियों के रोग और चिकित्सा, डॉ० युद्धवीर सिंह, क्रा०, ३॥)
स्त्रियों के व्यायाम, गणेशदत्त 'इन्द्र' क्रा०, ३)
सुश्रुत शरीर स्थान, डॉ० जे० डी० शर्मा, ५)
सूर्य चक्षु व्यायाम, १, डॉ० आर० एस० अग्रवाल, १६, क्रा०, ।)
हमारे शरीर की रचना, ८, डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा, १०॥)
हृदय-परीक्षा, डॉ० रमेशचन्द्र, १२५, क्रा०, २)

आत्म-कथा

अर्द्ध-कथा, बनारसीदास जैन, ७२, १)
आधे रास्ते, १, कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, क्रा०, २२७, ४॥)
आत्म-कथा, १२, महात्मा गांधी, ५३०, क्रा०, ५)
आत्म-कथा, १, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, ६६०, रा०, १२)
आत्मचरित चम्पू, अक्षयवट मिश्र, ~२)
एक आत्म-कथा, १, मुन्शी लुत्फुल्ला, २४०, २)
कुछ आत्म-कथाएँ, ६, सं० महावीरप्रसाद अग्रवाल, १६२, क्रा०, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकायत नहीं, कृष्णा हथीसिंह, १८०, डि०, ४)	नवयुग साहित्य सदन
की आत्म-कथा, १, मैक्सिम गोर्की, ७००, ७)	जन-साहित्य
सूरज के वीरन, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, ३७६, का०, ५)	राजकमल प्रकाशन
स्मृतियाँ, २, सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन', १४८, का०, ३)	आत्माराम
पक की प्रजा, १, शान्तिप्रिय द्विवेदी, का०, ३॥)	इण्डियन प्रेस
की आत्म-कथा, १, भवानीदयाल संन्यासी, ६४३, का०, ८)	राजहंस
जीवन तथा ध्येय, २, स्वामी विवेकानन्द,	श्री रामकृष्ण आश्रम
बचपन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २।)	विश्वभारती, शान्तिनिकेतन
जीवन-प्रवाह, १, वियोगी हरि, ४२०, का०, ४)	मण्डल
प्रारम्भिक जीवन, २, महात्मा गांधी, १४४, का०, १।)	रामनारायणलाल
असफलताएँ, १, गुलाबराय, का०, २)	साहित्य रत्न मण्डल
कहानी, ८, जवाहरलाल नेहरू, ८६४, का०, ८)	मण्डल
आत्म-कहानी, १, डॉ० श्यामसुन्दर दास, २८४, २)	इण्डियन प्रेस
जीवन-यात्रा, १, राहुल सांकृत्यायन, ७८३, ८)	किताब महल
बोल पाते, १, सं० नर्मदाप्रसाद खरे, पूरनचन्द्र श्रीवास्तव, १२५, का०, १॥)	किताब महल
सिद्धि की खोज में, १, कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, ३४०, का०, ५)	राजकमल प्रकाशन
ता के पथ पर, २, हरिभाऊ उपाध्याय, २६८, का०, ३॥)	नवयुग साहित्य सदन
चट्टान, १, कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, ३०५, का०, ४॥)	राजकमल प्रकाशन
भी कहानी है, १, सं० प्रेमनारायण श्रीवास्तव, का०, २॥)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स

आलोचना : सिद्धान्त

चना : इतिहास तथा सिद्धान्त, १, डॉ० एस० पी० खत्री, ६०५, डि०, ११)	राजकमल प्रकाशन
चना-शास्त्र, १, मोहनबल्लभ पन्त, का०, २४८, ४)	मेहरचन्द लक्ष्मणदास
चनादर्श, डॉ० रामशंकर शुक्ल 'रसाल', २६३, का०, २॥)	इण्डियन प्रेस
चना के सिद्धान्त, २, कृष्णानन्द पन्त, यज्ञदत्त शर्मा, १६३, का०, २॥)	राजपाल
चना : उसके सिद्धान्त, डॉ० सोमनाथ गुप्त, का०, २४४, २॥)	मेहरचन्द लक्ष्मणदास
की परख, १, डॉ० एस० पी० खत्री, ११६, का०, २)	साहित्य भवन
के रूप, १, गुलाबराय, २८४, डि०, ४।।।)	आत्माराम
में अप्रस्तुत योजना, रामदहिन मिश्र, डि०, ५)	ग्रन्थमाला कार्यालय
में अभिव्यंजनावाद, २, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, डि०, ४)	जनवाणी
कला, गोपाललाल खन्ना, २६१, का०, २)	इण्डियन प्रेस
लोचन के सिद्धान्त, १, शिवनन्दन प्रसाद, का०, २॥)	ग्रन्थमाला कार्यालय
के तत्त्व और काव्य के सिद्धान्त, २, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, ३३६, डि०, ६)	जनवाणी
की परख, २, डॉ० एस० पी० खत्री, ३०२, का०, २॥)	साहित्य भवन
आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ, १, संग्रह रा०, ३)	राजकमल प्रकाशन
साहित्यालोचन के सिद्धान्त, १, लीलाधर गुप्त, २६४, रा०, ६)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
साहित्य शास्त्र (दो भाग), बलदेव उपाध्याय ७४४ तथा ४८०, १०) तथा ८)	शारदा मन्दिर

र, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपक-रहस्य, डॉ० श्यामसुन्दर दास, २२६, क्रा०, ३) — इण्डियन
रोमाण्टिक साहित्य-शास्त्र, १, देवराज उपाध्याय, २१०, डि०, ३।।।) — आत्मा
वक्रोक्ति और अभिव्यंजना, १, रामनरेश वर्मा, क्रा०, ४) — ज्ञानम
समीक्षा-शास्त्र, १, आचार्य सीताराम चतुर्वेदी, १३०४, डि०, २१) — अखिल भारतीय विक्रम प
समीक्षा के सिद्धान्त, १, डॉ० सत्येन्द्र, २२८, क्रा०, ३।।) — मेहरचन्द मुन्शी
साहित्य-विवेचन, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन', योगेन्द्रकुमार मल्लिक, ३७६, डि०, ७) — आत्मा
साहित्य-विवेचन के सिद्धान्त, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन', योगेन्द्रकुमार मल्लिक, २५०, क्रा०, २।।) — आत्मा
साहित्य-समीक्षा, २, गुलाबराय, १६७, क्रा० १।।।) — आत्मा
साहित्य-समालोचना, डॉ० रामकुमार वर्मा, १६१, क्रा०, १।।।) — हिन्दी
साहित्य-मीमांसा, ५, डॉ० सूर्यकान्त, ३७१, क्रा०, ४) — हिन्दी
साहित्य-साधना की पृष्ठभूमि, १, बुद्धिनाथ झा 'कैरव', ६) — ज्ञानपीठ लि
साहित्यालोचन, डॉ० श्यामसुन्दरदास, ४००, क्रा०, ५।।) — इण्डियन
साहित्यालोचन, १, भारतभूषण 'सरोज', १६१, क्रा०, २।।) — विनोद पुस्तक म
साहित्यालोचन सिद्धान्त, २, प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय', १०४, क्रा०, १।।।) — विनोद पुस्तक म
साहित्यालोचन के सिद्धान्त, १, रामनारायण यादवेन्द्र, २६८, क्रा०, ३) — लक्ष्मीनारायण अ
साहित्य की उपक्रमणिका, १, किशोरीदास वाजपेयी, १३६, क्रा०, ।।=) — हिन्दी ग्रन्थ र

[आगे पृष्ठ ४१ पर दे

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना का अग्रदूत
त्रैमासिक

देवनागर

राष्ट्रपति द्वारा संरक्षित।
संसदीय हिन्दी-परिषद् द्वारा संचालित।
डॉ० नगेन्द्र तथा 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित।
विभिन्न भारतीय भाषाओं के विद्वानों द्वारा निर्देशित।

वार्षिक मूल्य, डाक-व्यय सहित, ७)।

विज्ञापन का अद्वितीय माध्यम।
प्रति पृष्ठ केवल १००)।
पूरे पृष्ठ से कम का विज्ञापन नहीं लिया जाता।

प्रकाशक :

आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली।

प्रकाशन समाचार

को हिन्दी-जगत् के लिए अधिक-से-अधि
उपयोगी बनाने के लिए अपने सुझाव
भेजिए। हम आभारी होंगे।

प्रकाशन समाचार

का वार्षिक मूल्य केवल २।।) है। यदि अ
तक आप ग्राहक नहीं बने तो अभी ही
मनी-आर्डर द्वारा ढाई रुपये भेजिए।
वी० पी० पी० से मँगवाने पर
३) लगते हैं।

प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन
१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अभूतपूर्व नये प्रकाशन

अंग्रेज़ी-हिन्दी-कोष

आज अँग्रेजी के माध्यम से हिन्दी-शब्दावली से परिचय पाने में बड़ी कठिनाई अनुभव हो रही है। अंग्रेजी-हिन्दी के जो कोष उपलब्ध भी हैं, वे अधिकांश विद्यार्थियों के लिए ही सम्पादित किये गए हैं। इस दृष्टि से यद्यपि वे अच्छे भी हैं, फिर भी उच्चवर्ग के पाठकों, अध्यापकों, प्रशासकों, लेखकों, पत्रकारों और अनुवादकों को अंग्रेजी-हिन्दी के एक प्रामाणिक कोष का अभाव खटकता है। इसी व्यापक आवश्यकता के दृष्टिकोण को सामने रखकर सम्मेलन एक अंग्रेजी-हिन्दी-शब्द-कोष तैयार कर रहा है, जिसमें लगभग एक लाख अंग्रेजी शब्दों का रोमन लिपि में उच्चारण, अर्थ और उनकी सभी छायाएँ, मुहावरे और लाक्षणिक प्रयोग देकर अन्त में व्युत्पन्न शब्द और उनके भी अर्थ तथा पर्याय दिये गए हैं। अनेक स्थलों के अर्थ का स्पष्टीकरण उदाहरण देकर किया गया है। यह शब्द-कोष बड़े आकार (रायल साइज़) में लगभग १६०० पृष्ठों का होगा।

इस प्रामाणिक कोष के सम्पादक-मण्डल में महाप्राज्ञ डॉ० अमरनाथ झा, डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० उदयनारायण तिवारी, बाबू रामचन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टण्डन और डॉ० हरदेव बाहरी (प्रधान सम्पादक) हैं।

सम्पादन-कार्य दिसम्बर '५४ तक समाप्त हो जायगा। छपाई आरम्भ कर दी गई है। मूल्य लगभग २०)।

'सम्मेलन-पत्रिका' का 'लोक-संस्कृति विशेषांक'

लोक-सिद्धान्त, लोक-गीत, लोक-कला और लोकायन—इन चार विभागों में विभक्त यह विशेषांक पाँच सौ पृष्ठों का संग्रहणीय ग्रन्थ है, लोक-जीवन और लोक-संस्कृति की परम्परागत सूक्ष्मातिसूक्ष्म विशेषताओं और मान्यताओं का इसमें एकत्र समुच्चय है। अनुशीलनकर्ताओं, संग्रहालयों, पुस्तकालयों के लिए विशेषांक बहुमूल्य साधन है। म० म० गोपीनाथ कविराज, डॉ० भगवानदास, संगीताचार्य ओंकारनाथ ठाकुर, श्री के० एम० मुन्शी, सम्पूर्णानन्द आदि लोकमान्य विद्वानों के विचार-प्रधान लेख तथा कलात्मक छपाई, अनेक चित्र इस विशेषांक की विशेषता बने हैं। मूल्य केवल ५)।

शिशुपाल-वध-महाकाव्य (हिन्दी-अनुवाद सहित)

संस्कृत साहित्य के बृहत्-त्रयी काव्य में शिशुपाल-वध अपनी सर्वतोमुखी विशेषताओं के कारण चिरनूतन और अनुपम महाकाव्य माना गया है। पुराणों के यशस्वी अनुवादक श्री रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री ने संस्कृत के इस यशस्वी महाकाव्य का हिन्दी अनुवाद करके हिन्दी-साहित्य को समृद्ध बनाने की अन्यतम सफल चेष्टा की है।

मार्मिक टिप्पणियाँ, गूढ़ भावों के रहस्य, कवित्व और कृतित्व पर गवेषणापूर्ण विवेचन इस अनुवाद की विशेषता है। विद्यार्थियों एवं अनुशीलन-कार्य करने वाले विद्वानों तथा संस्कृत-काव्य के प्रेमियों के लिए यह अनुवाद-ग्रन्थ बड़े काम का है। मूल्य ८) मात्र।

आदर्श नगर-व्यवस्था

प्लेटो के विश्व-विख्यात ग्रन्थ 'पोलितेइया' का हिन्दी अनुवाद हिन्दी-साहित्य की वर्तमान निधि का अंग है। साहित्य, दर्शन, इतिहास, शिक्षा, राजनीति, प्रजनन आदि सार्वजनिक जीवन से निकट सम्पर्क रखने वाले विषयों का संचित आकार यह ग्रन्थ बरेली कालेज के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष श्री भोलानाथ शर्मा के अनुवाद-कौशल से और भी अधिक निखर उठा है। मूल्य १०)।

व्यवस्थापक, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ-विश्वविद्यालय के प्रकाशन

हिन्दी काव्य-शास्त्र का इतिहास, ले०—डॉ० भगीरथ मिश्र, एम० ए०, पी-एच० डी०

इसमें हिन्दी-काव्य-शास्त्र के इतिहास के साथ-साथ संस्कृत और पाश्चात्य काव्य-शास्त्र की पृष्ठभूमि के आधार पर हिन्दी में काव्य-शास्त्र-विषयक ग्रन्थ का मूल्यांकन है। आधुनिक काव्य-शास्त्र की समस्याओं का भी इसमें अध्ययन है। सजिल्द प्रति का मूल्य दस रुपये।

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, ले०—डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी०

इसमें अनेक दुष्प्राप्य प्रकाशित तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का अध्ययन करके अकबर के दरबार से सम्बन्ध रखने वाले प्रमुख कवियों का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। सजिल्द प्रति का मूल्य नौ रुपये।

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, ले०—डॉ० उदयभानु सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०

इसमें पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन लेखकों की बिखरी हुई सामग्री को बड़े परिश्रम के साथ एकत्र करके गम्भीर विवेचनयुक्त, व्यवस्थित और मौलिक निबन्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य सजिल्द दस रुपये।

आचार्य केशवदास, ले०—डॉ० हीरालाल दीक्षित, एम० ए०, पी-एच० डी०

इसमें आचार्य केशवदास की जीवनी तथा उनकी रचनाओं की विस्तृत समीक्षा है। मूल्य दस रुपये।

ब्रजभाषा-सूर-कोश, निर्देशक—डॉ० दीनदयालु गुप्त, सम्पादक श्री प्रेमनारायण टण्डन

प्रस्तुत कोश में सूरदास के समस्त प्रमाणिक ग्रन्थों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ और अर्थ की पुष्टि तथा स्पष्टता के लिए अनेक उदाहरणों के साथ-साथ ब्रजभाषा के प्रतिष्ठित कवियों के विशिष्ट प्रयोग भी दिये गए हैं। चारों खण्डों का मूल्य बारह रुपया।

प्राकृत-विमर्श, डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, पी-एच० डी०

पुस्तक के प्रथम भाग में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की रूप और ध्वनि-सम्बन्धी विशेषताएँ तथा उनके साहित्य का इतिहास है। दूसरे भाग में प्राकृत भाषाओं के चुने हुए उद्धरण पाद-टिप्पणी और छाया के साथ दिये गए हैं। मूल्य साढ़े चार रुपये।

रेवा-तट-समय पृथ्वीराज रासो, सम्पादक—डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी, एम० ए०, डी० फिल०

अनेक हस्तलिखित प्रतियों से मिलाकर २२३ पृष्ठों में पाठान्तर सहित प्रस्तुत किया गया है। आरम्भ में २३३ पृष्ठों की विद्वत्तापूर्ण भूमिका और अन्त में पौराणिक और भौगोलिक खोजपूर्ण परिशिष्ट हैं। साथ में तीन चित्र भी हैं। मूल्य छः रुपये।

पातञ्जल योग दर्शन, सम्पादक—डॉ० भगीरथ मिश्र, पं० हरिकृष्ण अवस्थी, श्री ब्रजकिशोर मिश्र

यह पुस्तक, कपिलमठ, मधुपुर : बिहार : के संस्थापक स्वामी हरिहरानन्द आरण्यक द्वारा, योग सूत्रों और व्यास-भाष्य की [illegible] टीका का हिन्दी-अनुवाद है। भूमिका में भारतीय मोक्ष दर्शन का स्वरूप और विकास देते हुए योग दर्शन की प्राचीनता और प्रभाव को स्पष्ट किया गया है। इसके अन्तर्गत सूक्ष्म शंकाओं को उठाकर समाधान किया गया है। सजिल्द प्रति का मूल्य नौ रुपये।

हिन्दी-साहित्य में भ्रमर-गीत-परम्परा, लेखिका—श्रीमती सरला शुक्ल, एम० ए०

इसमें भ्रमर-गीतों की काव्य-कला, सामाजिकता और दार्शनिकता की दृष्टि से विवेचना की गई है। मूल्य चार रुपये।

निबन्धकार बालकृष्ण भट्ट, ले०—श्रीगोपाल पुरोहित, एम० ए०

भट्ट जी के कथाकार तथा पत्रकार रूपों पर विचार करके निबन्धकार रूप का तारतम्य स्थापित किया गया है। मूल्य ढाई रुपये।

भारतीय संस्कृति में आर्येतरांश, ले०—श्री शिवशेखर मिश्र, एम० ए०

इस में अनार्यों की संस्कृति, भाषा, परम्पराओं आदि का तथा आर्यों की संस्कृति एवं परम्पराओं पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भाषा विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। मूल्य ढाई रुपये।

द्विवेदीयुगीन निबन्ध-साहित्य, ले०—श्री गंगाबख्श सिंह, एम० ए०

द्विवेदी युग में निबन्ध साहित्य की उन्नति के लिए किस प्रकार प्रयत्न किया गया और इस कार्य में किन व्यक्तियों का सहयोग रहा आदि विषयों की चर्चा इस पुस्तक में है। मूल्य तीन रुपये।

भारतीय संस्कृति का विकास, ले० शिवशेखर मिश्र, एम० ए०। मूल्य तीन रुपये।

विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, हिन्दी विभाग, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...से आगे देखिए]

...और अध्ययन, १, गुलाबराय, ३१८, डि०, ६)	आत्माराम
...रस, २, नृसिंह चिन्तामणि केलकर, अनु० रामचन्द्र वर्मा, १८०, डि०, १॥)	साहित्य रत्नमाला कार्यालय
...आलोचना के भिन्न-भिन्न स्रोत १, प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय', ८४, क्रा०, १।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...काव्य-शास्त्र का इतिहास, १, डॉ० भगीरथ मिश्र, ४७८, रा०, १०)	लखनऊ-विश्वविद्यालय

आलोचनात्मक निबन्ध

...लन, १, शिवनाथ, २००, क्रा०, १॥)	सम्मेलन
...स्मृति, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, १॥)	भारती भण्डार
...ति और अध्ययन, १, दुर्गाशंकर मिश्र 'पारिजात'	नवयुग ग्रन्थागार
...ल्यान का स्वरूप, १, डॉ० सावित्री सिनहा, १६०, क्रा०, ३)	आत्माराम
...नारीश्वर, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', २८६, डि०, ६)	जनवाणी
...के फूल, ३, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २०८, क्रा०, ३)	मण्डल
...निक हिन्दी साहित्य : एक दृष्टि, १, प्रकाशचन्द्र गुप्त, २१०, क्रा०, २॥)	आलोक प्रकाशन
...प्रदान, १, वाराणसि राममूर्ति 'रेणु', २७१, क्रा०, २)	भारती भण्डार
...निक आलोचना और साहित्य, १, सीताराम जायसवाल, १७६, क्रा०, २।)	नन्दकिशोर
...निक काव्य और दर्शन, १, पद्मचन्द्र अग्रवाल, २००, क्रा०, २॥)	सरस्वती पुस्तक सदन
...निक साहित्य, १, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, ४२०, डि०, ७)	भारती भण्डार
...चना की ओर, १, डॉ० ओम्प्रकाश कुलश्रेष्ठ, १५०, क्रा०, १॥।)	एस० चन्द एण्ड कं०
...चनाञ्जलि, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, १७४, क्रा०, १)	इण्डियन प्रेस
...कता और लेख, १, रघुवीरशरण 'मित्र', १४०, क्रा०, २)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
...धारा, १, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, १६४, क्रा० २॥)	साहित्य भवन
...वृक्ष, १, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, १६०, क्रा०, २)	मण्डल
...लता, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २१६, क्रा०, २॥)	ज्ञानमण्डल
...कुसुम, १, गंगाप्रसाद पाण्डेय, १४४, क्रा०, २)	जन-साहित्य
...की कलम, १, रघुवीरशरण 'मित्र', १७२, डि०, ३)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
...रहस्य, १, डॉ० गंगानाथ झा, ६६, क्रा० २)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...और काव्य, शान्तिप्रिय द्विवेदी, २२७, क्रा०, २)	इण्डियन प्रेस
...री, १, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, १७६, क्रा०, १॥)	रीगल बुक डिपो
...और कला तथा अन्य निबन्ध, ४, जयशंकरप्रसाद, १२८, डि०, १॥)	भारती भण्डार
...और कल्पना, १, रामखेलावन पाण्डेय, १५०, डि०, ३॥)	अजन्ता प्रेस
...कलना, २, गंगाप्रसाद पाण्डेय, १८१, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
...क, १, डॉ० केसरीनारायण शुक्ल, १३६, डि०, ४)	नन्दकिशोर
...पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, ३१६, क्रा०, १॥)	इण्डियन प्रेस
...विचार, प्रेमचन्द, १२४, क्रा०, २)	हंस प्रकाशन
...वली, १, पारसनाथसिंह, ३६०, क्रा०, ३)	भारती भण्डार

...र, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गद्य-पथ, १, सुमित्रानन्दन पन्त, २१६, का०, ३)
चिन्ता-धारा, १, जानकीवल्लभ शास्त्री, ३)
चिन्तामणि (भाग १), आ० रामचन्द्र शुक्ल, २७१, का०, ३)
चिन्तामणि (भाग २), आ० रामचन्द्र शुक्ल, २४५, का०, ३)
छितवन की छाँह, १, विद्यानिवास मिश्र, १४०, का०, २॥)
झूठ-सच, ४, सियारामशरण गुप्त, २८८, का०, २)
दृष्टिकोण, १, नलिनविलोचन शर्मा, डि०, ३)
दृष्टिकोण, १, कन्हैयालाल सहल, १२०, का०, १॥)
दृष्टिकोण, १, विनयमोहन शर्मा, २६२, डि०, ४)
दिल की बात, १, गुरुदयाल मल्लिक, २३१, का०, ३)
दोआब, शमशेरबहादुर सिंह, १७४, डि०, २)
नया हिन्दी-साहित्य, प्रकाशचन्द्र गुप्त, २१६, का०, २॥)
नयी कली-नया पराग, १, राकेश, ८०, का०, १)
नयी समीक्षा, १, अमृतराय, ३१६, डि०, ४॥)
नव-निबन्ध, १, परशुराम चतुर्वेदी, १६८, का०, ३॥)
निबन्ध-प्रबन्ध, १, रामकृष्ण शुक्ल, 'शिलीमुख', ३१८, का०, ५)
निबन्धिनी, १, गंगाप्रसाद पाण्डेय, १४६, डि०, ३॥)
पद्मवन, २, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, १५१, का०, ॥)
परिषद्-निबन्धावली, ३, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, २६४, का०, २)
प्रगति और परम्परा, १, डॉ० रामविलास शर्मा, १८०, का०, २)
पंच पात्र, १, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, २६२, का०, २)
प्रतीक (भाग १), १, सं०, अज्ञेय, डि०, ८)
प्रतीक (भाग २), १, सं०, अज्ञेय, डि०, ८)
प्रदीप, १, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, ३२०, का०, ३)
प्रबन्ध पद्म, २, निराला, १५०, का०, ३)
प्रबन्ध-पारिजात, १, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, २६२, का०, २।)
परीक्षार्थी-प्रबोध (भाग १), ३, २८७, का०, ३)
परीक्षार्थी-प्रबोध (भाग २), २, २८७, का०, ३)
परीक्षार्थी-प्रबोध (भाग ३), १, ३०६, का०, ३)
परीक्षार्थी-प्रबोध (भाग ४), १, २६०, का०, ३)
पूर्वोदय, १, जैनेन्द्रकुमार, २८०, का०, ४)
बंकिम निबन्धावली, बंकिमचन्द्र चटर्जी, १३६, का०, १॥।)
बुद्धि तरंग, १, सद्गुरुशरण अवस्थी, १८४, का०, २।)
भट्ट निबन्धावली (भाग १), ४, देवीदत्त शुक्ल, धनंजय भट्ट 'सरल' १५६, का, १॥)
भट्ट निबन्धावली (भाग २), २, धनंजय भट्ट 'सरल', का०, १४६, १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य और संस्कृति, डॉ० रामविलास शर्मा, २५२, क्रा०, ४।।)	किताब महल
...न्द, १, डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, १७६, डि०, ३।।)	अवध पब्लिशिंग हाउस
..., १, जैनेन्द्र कुमार, ६, क्रा०, ५)	पूर्वोदय प्रकाशन
...की बात, १, गुलाबराय, १७३, क्रा०, २।।)	आत्माराम
..., १, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी, ७४, क्रा०, १।।)	किताब महल
...भूमि, १, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ३४०, क्रा०, ५)	चेतना प्रकाशन
...-मिश्र-निबन्धमाला, माधव मिश्र, ४०० क्रा० ३।।)	इण्डियन प्रेस
...की ओर, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', २०६, डि०, ४)	अजन्ता प्रेस
...सिका, १, शिवनाथ, १५२, क्रा०, २।।)	किताब महल
...और साहित्य, शान्तिप्रिय द्विवेदी, २५७, क्रा०, २।।)	इण्डियन प्रेस
...रंजन, ८, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, १३८, क्रा०, १।।)	साहित्य रत्न भण्डार
...नीति से दूर, १, जवाहरलाल नेहरू, १७३, क्रा०, २)	मण्डल
...वतार शर्मा निबन्धावली, १, म० म० रामावतार शर्मा, ३२०, रा०, ८।।।)	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
...ओं के कर्त्तव्य, १, माओत्से तुङ्ग, ४२, क्रा०, ।=)	हंस प्रकाशन
...जीवन, १, काका कालेलकर, ३०८, क्रा०, ३।।)	मण्डल
...और वाङ्मय, १, प्रभाकर माचवे, ३१२, डि०, ७)	साहनी प्रकाशन
...विलास, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, ३)	पुस्तक भण्डार
...और वितर्क, २, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २४८, डि०, ३)	साहित्य भवन
...और विवेचन, २, डॉ० नगेन्द्र, १५२, डि०, ४)	गौतम बुक डिपो
...-विमर्श, २, आ० चन्द्रबली पाण्डेय, २१६, डि०, ३।।)	सम्मेलन
...-धारा, ४, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, २३७, क्रा०, ३।।)	साहित्य भवन
...और अनुभूति, २, डॉ० नगेन्द्र, १५४, डि०, ४)	गौतम बुक डिपो
...विमर्श, २, सद्गुरुशरण अवस्थी, १४६, क्रा०, १।।)	रामनारायणलाल
...विमर्श, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, क्रा०, २।।।)	भारती भण्डार
..., १, कन्हैयालाल सहल, १७४, क्रा०, ३)	साहनी प्रकाशन
..., २, इलाचन्द्र जोशी, २५०, डि०, ४)	सम्मेलन
..., इलाचन्द्र जोशी, १७२, क्रा०, ३)	शारदा प्रकाशन
...-साहित्य, ३, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, २६२, क्रा०, ४)	गंगा पुस्तक माला
...-निबन्धावली, १, शरत्, १६०, क्रा० १।।)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...मुखी, १, रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख', १४४, डि०, ४)	गौतम बुक डिपो
..., १, डॉ० रघुबीरसिंह, १६०, क्रा०, २)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...लोचना-समुच्चय, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी १७१, क्रा०, १।।)	रामनारायणलाल
...की समीक्षा, १, प्रभाकर माचवे, २८२, क्रा०, ५)	साहनी प्रकाशन
...रायण, १, कन्हैयालाल सहल १४२, डि०, ३)	आत्माराम
..., १, महावीरप्रसाद द्विवेदी, १८६, क्रा०, १।।)	भारती भण्डार
...ी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, २५७, क्रा०, २।।)	इण्डियन प्रेस

...र, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति-संगम, १, क्षितिमोहन सेन, १७६, का०, २॥)
संस्कृति और साहित्य, डॉ० रामविलास शर्मा, ३६०, का०, ३॥)
सन्तुलन, १, प्रभाकर माचवे, १६८, डि०, ४)
सम्भाषण, दुलारेलाल भार्गव, ॥)
संगम और संघर्ष, १, डॉ० रांगेय राघव, १६८, का०, २॥)
सभ्यता और संस्कृति तथा अन्य निबन्ध, डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, १॥)
सम्मेलन निबन्धमाला, ४, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', व्रजभूषण शुक्ल, १६४, का०, १॥)
साहित्य और सौन्दर्य, १, डॉ० फतहसिंह, का०, १।॥=)
साहित्य और जीवन, १, बनारसीदास चतुर्वेदी, १४३, का०, २)
साहित्य का उद्देश्य, १, प्रेमचन्द, २८७, का०, ४)
साहित्य की वर्तमान धारा, १, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, २॥)
साहित्य में संयुक्त मोर्चा, १, अमृतराय, १७५, का०, १॥)
साहित्य-सुधा, १, सत्यपाल चुघ, का०, ३)
साहित्य-विवेचन, १, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, २॥)
हमारी साहित्यिक समस्याएँ, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, ३)
साहित्य, १, शिवनारायण शर्मा, १४४, डि०, ३)
साहित्य, २, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १४८, का०, २)
साहित्य-शिक्षा, सं० पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, हेमचन्द्र जैन, १८०, का०, २)
साहित्य परिचय, १६८, का०, २)
साहित्य और समाज, १, जी. सुन्दर रेड्डी, ६६, का०, १)
साहित्य-परिचय, २, प्रेमनारायण टण्डन, ३००, का०, ३)
साहित्य का श्रेय और प्रेय, १, जैनेन्द्रकुमार, ४५६, का०, ५)
साहित्य-समीक्षांजलि, १, डॉ० सुधीन्द्र, २३८, डि०, ४)
साहित्यावलोकन, १, विनयमोहन शर्मा, २०४, का०, ३)
साहित्य-विचार, १, गोविन्दराम, १४२, का०, २॥)
साहित्य-चयन, ३, जैनेन्द्रकुमार, १६०, का०, २)
साहित्य-वातायन, १, शिवनन्दन प्रसाद, २८८, का०, १)
साहित्य-निबन्धावली, राहुल सांकृत्यायन, २२०, डि०, ३॥)
साहित्यायन, १, हंसकुमार तिवारी, १६०, का०, २॥)
साहित्यिका, १, हंसकुमार तिवारी, १४० का०, १॥)
साहित्य-चिन्तन, १, रामदास मिश्र 'विजय', २८०, का०, ३॥)
साहित्य-सन्दीपिनी, आ० चन्द्रबली पाण्डेय, का०, २॥)
साहित्य-चिन्ता, १, डॉ० देवराज, २२०, डि०, ५)
साहित्य-दर्शन, १, शचीरानी गुर्टू, ४००, डि०, ८)
साहित्य-समीक्षा, १, देवेन्द्रनाथ शर्मा, २३६, का०, २॥)
साहित्य-चिन्तन, १, गिरिजामोहन गौड़ 'कमलेश', २८०, का०, ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…, शिक्षा और संस्कृति, १, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, १६८, डि०, ५)	आत्माराम
…-जिज्ञासा, १, ललिताप्रसाद सुकुल, १७२, डि०, ३)	आत्माराम
…-सन्तरण, १, गंगाप्रसाद पाण्डेय, २३४, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
…, साधना और समाज, १, डॉ० भगीरथ मिश्र, २०३, डि०, ४।।)	अवध पब्लिशिंग हाउस
…-निर्माण, १, किशोरीदास वाजपेयी, १४३, क्रा०, २)	जनवाणी
… और अनुभूति, १, परमानन्द शर्मा, २४१, क्रा०, १।।)	जनवाणी
… की झाँकी, १, डॉ०, सत्येन्द्र, १३८, क्रा० १।।)	साहित्य रत्न भण्डार
…-कला-समीक्षा, १, मन्मथनाथ गुप्त, २८०, डि०, ६)	साहनी प्रकाशन
…-समीक्षा, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २३४, क्रा०, २।।)	किताब महल
… और समीक्षा, ३, सं० सन्तराम 'विचित्र', १५६, क्रा०, २।।)	राजकमल प्रकाशन
…-विचार, १, जैनेन्द्र कुमार, ३००, क्रा०, ५)	पूर्वोदय प्रकाशन
…-आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ, १, संग्रह, ४१, रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
…-साहित्य-समीक्षा, ५, गुर्ती सुब्रह्मण्य, २२३, क्रा०, २।।)	सम्मेलन
… के गौरव-ग्रन्थ, १, संग्रह, ७१, रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
…-साहित्य की जनवादी परम्परा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, १६१, क्रा०, २।।)	किताब महल
…, १, अज्ञेय, ११६, डि०, ३)	सरस्वती प्रेस
…, १२, आ० रामचन्द्र शुक्ल, १७८, क्रा०, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा

आलोचना : विविध, सहायक ग्रन्थ तथा टीकाएँ

…तशत्रु (प्रसाद), ३, प्रेमनारायण टण्डन, १२०, क्रा०, १।।)	विद्या मन्दिर
…-वन-टीका, २, तेजनारायण टण्डन, ११६, क्रा०, १।।)	विद्या मन्दिर
…धुनिक काव्य-संग्रह की टीका, २।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…धुनिक कवि (पन्त) एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १६८, क्रा०, २।)	विद्या मन्दिर
…धुनिक कवि पन्त, १, कृष्णकुमार सिनहा, ४२४, क्रा० ४)	अजन्ता प्रेस
…मा दिग्दर्शन (प्रथम खण्ड), २, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', राजनाथ शर्मा, द्वारिकाप्रसाद 'द्वारिकेश', ७।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…मा दिग्दर्शन (द्वितीय खड), १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', राजनाथ शर्मा, द्वारिकाप्रसाद 'द्वारिकेश', ६) विशेष कवि सहित ८)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…मा प्रश्नोत्तरी (प्रथम खण्ड) २००२ से २०१० तक, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', २०)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…मा प्रश्नोत्तरी (प्रथम खण्ड) २००६ से २०१० तक अलग-अलग, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' २।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…मा प्रश्नोत्तरी (द्वितीय खण्ड) २००२ से २०१० तक, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', १३)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…मा प्रश्नोत्तरी (द्वितीय खण्ड) २००६ तथा २०१० के पृथक्-पृथक्, मूल्य प्रत्येक का २)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…ल : एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ६२, क्रा०, १।)	विद्या मन्दिर
…भूमि-समीक्षा, १, हरस्वरूप माथुर, १८०, क्रा०, १।।।)	साहित्य निकेतन
…भूमि : एक अध्ययन, १, प्रेमनारायण टण्डन, १२०, क्रा०, १।।।)	विद्या मन्दिर

…म्बर, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि आरसी की काव्य-साधना, १, प्रताप साहित्यालंकार, क्रा०, २॥)
कवि प्रसाद, १, शम्भूनाथ पाण्डेय, १८०, क्रा०, २॥)
कामायनी की टीका, विश्वम्भर 'मानव', ४५५, क्रा०, ५)
काव्य कुसुमावलि, २, तेजनारायण टण्डन, ११६, क्रा०, १॥)
काव्य-संग्रह भाग १ टीका ३)
काव्य-संग्रह भाग २ की टीका, ४)
गद्य-सुमन-संग्रह-टीका, १, प्रेमनारायण टण्डन, ११६, क्रा०, १॥)
गद्य-मंजूषा-सहायक, २, तेजनारायण टण्डन, ११६, क्रा०, १।)
गबन : एक अध्ययन, ३, प्रेमनारायण टण्डन, ११०, क्रा०, १)
गबन व गोदान : एक अध्ययन, १, प्रेमनारायण टण्डन, १४८, क्रा०, १॥)
ग्राम्या : एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ११२, क्रा०, २।॥)
गांधी-गौरव-टीका, १, जयशंकरनाथ मिश्र, १ २ ६, क्रा०, १।॥)
गुप्त धन की आलोचना, कृष्णकान्त, शुक्ल, ॥)
गुञ्जन-अनुशीलन १, केशवप्रसाद शुक्ल, १६८, क्रा०, ३)
गुप्तजी की यशोधरा, ३ कृष्णकुमार सिनहा, ३०८, क्रा, ३।)
गोदान : एक अध्ययन, ४, प्रेमनारायण टण्डन १४८, क्रा०, १॥)
चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन, ३, प्रेमनारायण टण्डन १८८, क्रा०, २॥)
चिन्तामणि-दर्शन, १, हरिहरनाथ टण्डन, २८६, क्रा०,
चुने हुए मजमून-सहायक, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ५२, क्रा०, ॥)
छब्बीस कवियों की समालोचना, २, दीपनारायण द्विवेदी, १६८, क्रा०, १॥)
जय-पराजय-सहायक, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ११६, क्रा०, १॥)
झाँसी की रानी (संक्षिप्त) : एक अध्ययन, १, राजेश्वर गुरु, ६८, क्रा०, १)
झाँसी की रानी : एक अध्ययन, १, प्रेमनारायण टण्डन, ६२, क्रा०, १।)
तुलसी-संग्रह की टीका, २)
ध्रुवस्वामिनी : एक अध्ययन, १, गणेशप्रसाद गुप्ता, लक्ष्मीनारायण सिंह, ।॥)
ध्रुवस्वामिनी, २, मुरलीधर श्रीवास्तव ११६, क्रा०, १।)
ध्रुवस्वामिनी, सिद्धिनाथ तिवारी, २००, क्रा०, २॥)
ध्रुव स्वामिनी : एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ७२, क्रा०, १)
नया चमन-टीका, १, मुहम्मद इशाक सिद्दीकी, ६२, क्रा०, १॥)
नाटककार अश्क, १, गोपालकृष्ण कौल, ४६४, क्रा०, ७),
निर्मला : एक अध्ययन, ४, प्रेमनारायण टण्डन, ७२, क्रा०, ।॥)
निरंकुशता-निदर्शन, जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, क्रा०, १)
नूरजहाँ, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, २।)
नूरजहाँ-टीका, १, रामखिलावन चौधरी, १५६, क्रा०, २।)
नूरजहाँ महाकाव्य का अध्ययन, १, भगवतशरण उपाध्याय, डि०, ४)
परख : एक अध्ययन, १, कुमारी प्रसन्न सहगल, ५२, क्रा०, ।॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...: एक अध्ययन, २, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ५८, क्रा० ॥=)	विद्या मन्दिर
..., गयाप्रसाद उपाध्याय १॥)	कालेज बुक स्टाल
... दिग्दर्शन (हिन्दी, इतिहास, भूगोल तथा गणित), वासुदेव शर्मा शास्त्री, ३॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
... हिन्दी प्रश्नोत्तरी, ३, (सं० २००२ से २०१० तक), ४)	विनोद पुस्तक मन्दिर
... हिन्दी प्रश्नोत्तरी (सं० २००६ तथा १० के पृथक्), ॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
... हिन्दी पथ-प्रदर्शक, कुमुद विद्यालंकार, ४७७, क्रा०, ६)	रीगल बुक डिपो
... दिग्दर्शन १, व्रजेश 'सलिल' २५२ क्रा०, २॥)	साहित्य प्रकाशन
...िक रत्न गाइड, सत्यपाल 'निराश' ६८४, क्रा०, ७॥)	रीगल बुक डिपो
... (गोदान-समीक्षा), १, डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल, १५३, क्रा०, १॥।)	पद्मजा प्रकाशन
...: एक अध्ययन, प्रेमनारायण टण्डन, १२०, क्रा०, १॥)	विद्या मन्दिर
... ओर-प्रकाश, गयाप्रसाद उपाध्याय, ॥=)	कालिज बुक स्टाल
... माधुरी सार की टीका, २, २॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
... दिग्दर्शन, ४, वासुदेव शर्मा शास्त्री, ३॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
... में कला और कृतित्व, १, डॉ० सत्येन्द्र, १३६, क्रा०, २।)	साहित्य प्रकाशन मन्दिर
...: एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १३६, क्रा०, १॥।)	विद्या मन्दिर
...-समीक्षा, १, हरस्वरूप माथुर, १०६, क्रा०, १॥।)	साहित्य निकेतन
...-पथ का सरल अध्ययन, १, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, १३७, क्रा०, १॥।=)	हिन्दी भवन
...: एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, २३८, क्रा०, २॥।)	विद्या मन्दिर
...-परिशीलन, १, शिवस्वरूप गुप्त, १६०, क्रा०, २)	नवयुग पुस्तक भण्डार
...: एक अध्ययन, २, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १३८, क्रा०, १॥)	विद्या मन्दिर
...-रहस्य, २, जयनाथ 'नलिन' ३६, क्रा०, ॥)	हिन्दी भवन
... तथा भँवर-गीत, १, डॉ० सुधीन्द्र, १३२, क्रा०, २)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...: एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ११२, क्रा०, १।)	विद्या मन्दिर
...: एक अध्ययन, १, विश्वप्रकाश दीक्षित 'बटुक', ५३, क्रा०, ॥।)	हिन्दी भवन
...लाल वर्मा और उनकी उपन्यास-कला, १, रामचरण महेन्द्र, ४६, क्रा०, १॥)	सरस्वती पुस्तक सदन
...-दिग्दर्शन, १, सलिल, ८०, क्रा०, ॥।)	साहित्य प्रकाशन मन्दिर
... की आलोचना, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, ॥)	कालेज बुक स्टाल
...: एक अध्ययन, ३, प्रेमनारायण टण्डन, १२८, क्रा०, १।)	विद्या मन्दिर
... पथ-प्रदर्शक (खण्ड १), कुमुद विद्यालंकार, १३४५, क्रा०, १०)	रीगल बुक डिपो
... पथ-प्रदर्शक (खण्ड २), कुमुद विद्यालंकार, ८००, क्रा०, ८)	रीगल बुक डिपो
... रत्न बँगला पथ-प्रदर्शक, स्वामी दयानन्द नारायण, ३००, क्रा०, ५)	रीगल बुक डिपो
... रत्न संस्कृत पथ-प्रदर्शक (खण्ड २), शास्त्री जयनारायण गौतम, १०४, क्रा०, १॥)	रीगल बुक डिपो
... समीक्षा, व्रजभूषण शर्मा, ८१, क्रा०, १)	इण्डियन प्रेस
...शरण गुप्त, १, डॉ० नगेन्द्र, २१४, डि०, ५)	गौतम बुकडिपो
... चरित, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, १।)	नोवल्टी एण्ड कम्पनी
... (टीका) १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १६८, क्रा०, २)	विद्या मन्दिर

..., १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर-रामायण (टीका), १, प्रेमनारायण टण्डन, १२०, क्रा०, १।)
सूर-प्रभा प्रदीपिका, १, योगेन्द्रनाथ शर्मा, १३०, क्रा०, १॥)
सेवा-सदन : एक अध्ययन, ३, प्रेमनारायण टण्डन, १००, क्रा०, १।)
हिन्दी-नाटक और स्वप्न, शिवनन्दन प्रसाद, १॥)

इतिहास : भारत

अकबरी दरबार (भाग १), अनु० रामचन्द्र वर्मा, ३।)
अकबरी दरबार (भाग २), अनु० रामचन्द्र वर्मा, ४)
अकबरी दरबार (भाग ३), अनु० रामचन्द्र वर्मा, २)
अशोक की धर्म लिपियाँ, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा व श्यामसुन्दरदास, ३)
अयोध्या का इतिहास, १, सीताराम, १६६, रा०, ५)
अरब और भारत के सम्बन्ध, सैयद सुलेमान नदवी, अनु० रामचन्द्र वर्मा,३५०, डि०, ६)
आदर्श भूमि चित्तौड़, रुद्रनारायण, २४२, क्रा०, २)
आधुनिक भारत का इतिहास, १, बाँकेबिहारी शरण, २३३, क्रा०, ४)
आधुनिक भारत, १, हरिहरप्रसाद राय, ६।)
आधुनिक भारत, २, शं० र० जावड़ेकर, ३६४, क्रा०, ५)
इतिहास-प्रवेश, ४, जयचन्द्र विद्यालंकार, ७०६, क्रा०, ८)
अन्धकार-युगीन भारत, डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल, अनु० रामचन्द वर्मा, ५००, क्रा०, ३॥)
काश्मीर, देश व संस्कृति, १, शिवदानसिंह चौहान, २०७, डि०, ५)
काँकरोली का इतिहास, कण्ठमणि शास्त्री, ३)
काशी का मन्दिर, चंडीप्रसाद, ।=)
खारवेल प्रशस्ति, डॉ० काशीप्रसाद जायसवाल, १)
गुप्तकालीन मुद्राएँ, १, डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर, २६२, रा०, ६॥)
गुप्त भारत की खोज, २, पाल ब्रॉंटन, ४७२, क्रा०, ५)
गुप्त साम्राज्य का इतिहास, (दो भाग), वासुदेव उपाध्याय, क्रा०, ५॥)
जगत सेठ, १, पारसनाथसिंह, ५००, डि०, ६॥)
दिल्ली की कहानी और उसके वास्तु-स्मारक, १, डॉ० परमात्माशरण, क्रा०, १॥।)
पाटलिपुत्र की कथा, १, सत्यकेतु विद्यालंकार, ७२८, क्रा०, १०)
पंजाब का इतिहास, धर्मवीर, ७०१, क्रा०, ५)
पुरातत्त्व-परिचय, परमेश्वरीलाल गुप्त, ८०, डि०, १॥)
पुरावृत्त, १५४, १॥)
प्रयाग प्रदीप, १, शालिग्राम श्रीवास्तव, ३३४, क्रा०, ५)
प्राङ्मौर्य बिहार, १, डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, २२४, रा०, ७।)
प्राचीन आर्य वीरता, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी १॥),
प्राचीन भारत का इतिहास, डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी, ३७०, रा०, १०)
प्राचीन मुद्रा, राखालदास वन्द्योपाध्याय, अनु० रामचन्द्र वर्मा, २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...खण्ड का संक्षिप्त इतिहास, गोरेलाल तिवाड़ी, ३)	नागरी प्रचारिणी सभा
...त का चित्रमय इतिहास, भाग १, १, महावीर अधिकारी, ३३६, डि०, ६)	आत्माराम
...त का राष्ट्रीय इतिहास, श्यामकिशोर मालवीय, ३६६, क्रा०, २॥)	किताब महल
...त का बृहद् इतिहास, १, भगवत्दत्त, ३६०, रा०, १६)	इतिहास प्रकाशन मन्दिर
...त के युद्ध, १, कमलचन्द्रदास, १)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...त में मुस्लिम शासन का इतिहास, १, एस० आर० शर्मा, ७४६, डि०, १०)	लक्ष्मीनारायण
...त में अंग्रेजी राज्य के दो सौ वर्ष, १, केशवकुमार ठाकुर, ८००, डि०, १०)	आदर्श हिन्दी पुस्तकालय
...त में इस्लाम, १, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ३६८, क्रा०, ५)	गौतम बुक डिपो
...त में मुस्लिम शासन का इतिहास, १, एस० आर० शर्मा, ७४६, डि०, १०)	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
...त को प्रयाग की देन, १, हरेन्द्रप्रताप सिन्हा, ३३६, क्रा०, ४)	रामनारायणलाल
...तीय इतिहास की रूप-रेखा, श्रीराम शर्मा, २॥)	गौतम बुक डिपो
...तीय इतिहास की रूप-रेखा, श्रीराम शर्मा, १०)	गौतम बुक डिपो
...तीय इतिहास का परिचय, डॉ० राजबली पांडे, ४३०, डि०, ४।॥)	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
...तवर्ष का इतिहास, डॉ० अवधबिहारी पाण्डेय, ३)	नन्दकिशोर
...तवर्ष का इतिहास, ४, भाई परमानन्द, ६००, क्रा०, ८)	ज्ञानमण्डल
...ीन भारत का इतिहास, १, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, १०)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...त में जातिभेद, २, क्षितिमोहन सेन, १४४, क्रा०, २॥)	साहित्य भवन
...त का इतिहास-प्राचीनकाल, १, एल० मुकर्जी २१३, क्रा०, २॥)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
...त का इतिहास-मध्यकाल १, एल० मुकर्जी २१३, क्रा०, २॥)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
...त का इतिहास-आधुनिक काल, २, एल० मुकर्जी, २)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
...तीय सिक्के, १, वासुदेव उपाध्याय, १६०, डि०, ५)	भारती भण्डार
...कालीन भारत, डॉ० परमात्माशरण, ३)	नन्दकिशोर
...कालीन भारत, प्रो० हरिशंकर, २६६, क्रा०, ३)	किताब महल
...कालीन भारतीय संस्कृति, डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, १८८, क्रा०, ३)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...प्रदेश का इतिहास और नागपुर के भोंसले, १, २१०, क्रा०, २)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...प्रदेश का इतिहास, डॉ० हीरालाल, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...प्रदेश और बरार का इतिहास, सं० ३२०, क्रा०, २॥)	इण्डियन प्रेस
...वंश, अनु० भदन्त आनन्द कौसल्यायन, ४)	सम्मेलन
...दरबार या मआसिरुल उमरा (३ खण्ड), अनु० ब्रजरत्नदास, १४॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...राजमहलों का जीवन, भगवतीप्रसाद पांथरी, ७८, क्रा०, १।)	किताब महल
...भारत, १, गोरखनाथ चौबे, २४८, डि०, ३॥)	रामनारायणलाल
...साम्राज्य का क्षय और उसके कारण (दो भाग), २, इन्द्र विद्यावाचस्पति, ५२०, क्रा०, ६॥)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...मानी राज्य का इतिहास (२ रा भाग), मन्नन द्विवेदी, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...स्थनीज़ का भारत विवरण, १, योगेन्द्र मिश्र, २)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...कालीन भारत, कमलापति तिवारी, २)	नागरी प्रचारिणी सभा
...राजवंशावली, सं० मुन्शीदेवीप्रसाद मुंसिफ, क्रा०, ।=)	इण्डियन प्रेस

...र, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतलाम का प्रथम राज्य, १, डॉ० रघुवीरसिंह, ३६६, डि०, १०)
लावनी का इतिहास, १, नारायणनन्द सरस्वती, ३६०, क्रा०, ४॥)
लघु इतिहास प्रवेश, १, जयचन्द्र विद्यालंकार, ४६७, क्रा०, ५)
विजयनगर साम्राज्य का इतिहास, २, वासुदेव उपाध्याय, ४)
विशाल भारत का इतिहास, वेदव्यास, ३॥)
सभ्य मानव का इतिहास, परमेश्वरीलाल गुप्त, ३३०, क्रा०, २॥।)
सरल भारतीय इतिहास, श्यामसुन्दर द्विवेदी, १६६, क्रा०, १॥)
सरल भारतीय इतिहास, उमाकान्त मालवीय, २२०, क्रा०, १॥)
साम्राज्यों का उत्थान-पतन, भगवतशरण उपाध्याय, १७८, क्रा०, २॥)
सिक्खों का उत्थान और पतन, नन्दकुमार देव शर्मा, १॥)
शाहनामा, १, रामचन्द्र श्रीवास्तव, २६५, क्रा०, ५)
हमारा राजस्थान, १, पृथ्वीसिंह महता ५२८, क्रा०, ६)
हिन्दुस्तान की कहानी, १, जवाहरलाल नेहरू, ७२०, डि०, १०)
हिन्दुस्तान की कहानी, १, मुल्कराज आनन्द, १३४, क्रा०, २)
हिन्दू जाति का उत्थान और पतन, रजनीकांत शास्त्री, ४४४, क्रा०, ५)
त्रिपुरी का इतिहास, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, २२५, क्रा०, २॥)

इतिहास : विदेशी

आज का अफगानिस्तान, १, रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' १३२, क्रा०$\frac{1}{8}$, १)
आधुनिक यूरोप, १, बी० एन० मेहता, ६७०, डि०, १४)
आधुनिक यूरोप का इतिहास, एल० मुकर्जी, ३॥।)
आधुनिक यूरोप का बृहत् इतिहास, एल० मुकर्जी, ६)
आधुनिक यूरोप का इतिहास, १, फर्डिनेंड शेविल, ४२७, क्रा० $\frac{1}{8}$, १०॥)
आधुनिक यूरोप (चार खण्डों में), १, ब्र० न० मेहता, ६६६, डि०, १४)
इंकलाबी चीन, १, सिमोनोफ़, १८२, २)
इंग्लैंड का इतिहास (तीन भाग), डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, ८)
इंग्लैंड का सरल इतिहास, १, नन्दकिशोर, २॥)
ईरान, राहुल सांकृत्यायन, १७४, क्रा०, १॥।)
एशिया का आधुनिक इतिहास, १, सत्यकेतु विद्यालंकार, ६०८, क्रा०, ६॥)
ग्रेट ब्रिटेन का आधुनिक इतिहास, राधाकृष्ण शर्मा, ३६०, क्रा०, ४)
जर्मनी का विकास (२ भाग), सूर्यकुमार वर्मा, क्रा०, १॥)
दुनिया की कहानी (२ भाग), परमेश्वरीलाल गुप्त, ६०६, डि०, १०)
पश्चिमी यूरोप, २, रॉबिंसन, ३१८, डि०, ४॥)
फ्रांस का इतिहास, ४५०, क्रा०, ४)
यूनान का इतिहास, ब्रजनन्दनप्रसाद, ‍।॥)
यूरोप का आधुनिक इतिहास (भाग १), २, सत्यकेतु विद्यालंकार, ७६२, क्रा०, १०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आधुनिक इतिहास (भाग २), २, सत्यकेतु विद्यालंकार, ६३८, क्रा०, ६)	सरस्वती सदन
का इतिहास, १, एल० मुखर्जी, अनु० रामेश्वरी श्रीवास्तव	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
का इतिहास, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
यूरोप का संक्षिप्त इतिहास, जगतनारायण, १५८, क्रा०, १॥)	किताब महल
इतिहास की भूमिका (भाग १), १, रामशरण शर्मा, ५॥)	ग्रन्थमाला कार्यालय
इतिहास की भूमिका (भाग २), १, रामशरण शर्मा, ५)	ग्रन्थमाला कार्यालय
इतिहास की झलक, २, जवाहरलाल नेहरू, ८२४, रा०, २१)	मण्डल
इतिहास की झाँकी, १, आर० एन० चतुर्वेदी, २४८, क्रा०, ४॥)	हिन्दी विश्वभारती
इतिहास की रूपरेखा, प्यारेलाल शर्मा, ६)	नन्दकिशोर
इतिहास की रूपरेखा, श्रीराम त्यागी और हरस्वरूप, ६)	गौतम बुक डिपो
इतिहास की रूपरेखा (२ भाग), प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, ७८६, क्रा० ५), सम्मिलित ६)	अजन्ता प्रेस
के इतिहास और सभ्यता का परिचय, अर्जुन चौबे कश्यप, ५)	राजेश्वरी पुस्तकालय
सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास, १, रामनगीना त्रिपाठी, ओमप्रकाश मालवीय, २६२, रा० ७॥)	सेन्ट्रल बुक डिपो
विश्व इतिहास, रतिभानु सिंह नाहर, २००, क्रा०, १॥)	किताब महल
मध्य एशिया, राहुल, २७५, ५)	यूनिवर्सल प्रेस
का संक्षिप्त इतिहास, ४)	इंडियन प्रेस
का सरल इतिहास, सीताराम चतुर्वेदी, २),	नन्दकिशोर

इतिहास : सांस्कृतिक

सायण और माधव, बलदेव उपाध्याय, ४५०, ६)	शारदा मन्दिर
भारत, १, अर्जुन चौबे कश्यप, ७१५, क्रा०, ११)	वाणी विहार, काशी (वितरक) ज्ञानमण्डल
संस्कृति, पं० बलदेव उपाध्याय, ४८०, ५॥)	शारदा मन्दिर
का आदि देश, २, डॉ० सम्पूर्णानन्द, २५०, डि०, ३)	भारती भण्डार
की कहानी, १, मुल्कराज आनन्द, १७८, क्रा०, २॥।)	राजकमल प्रकाशन
कुमारपाल, १, लक्ष्मीशंकर व्यास, क्रा०, ४)	भारतीय ज्ञानपीठ
भारत, प्रो० हरिशंकर, १७८, क्रा०, २॥)	किताब महल
भारत की जनसत्ता और संस्कृति, १, बेनीप्रसाद वाजपेयी, २६७, क्रा०, ३॥।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
भारत के कलात्मक विनोद, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, १८०, क्रा०, ३)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
भारत की वेशभूषा, १, डॉ० मोतीचन्द्र, २७५, डि०¼, १२)	भारती भण्डार
भारतीय सभ्यता का इतिहास, ४ भागों में, ५)	नागरी प्रचारिणी सभा
भारतीय परम्परा और इतिहास, १, डॉ रांगेय राघव, ५५०, डि०, १२)	आत्माराम
भारतवर्ष की सभ्यता का इतिहास, (४ भाग), रमेशचन्द्र, क्रा०, ५)	नागरी प्रचारिणी सभा
विज्ञान, डॉ० बैजनाथपुरी, १११, क्रा०, १।)	किताब महल
मीमांसा, पं० बलदेव उपाध्याय, ५३०, ६)	शारदा मन्दिर
: आदिम साम्यवाद से दासप्रथा तक, अमृतपाद डाँगे, ३॥)	पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
का प्राचीन इतिहास, १, सत्यकेतु विद्यालंकार, ६७६, क्रा०, १०)	सरस्वती सदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का सांस्कृतिक इतिहास, १, हरिदत्त वेदालंकार, ३१२, डि०, ६)
भारत का सांस्कृतिक गौरव, शिवकुमारलाल व रामचन्द्र, ६६४, क्रा०, ६)
भारत-संस्कृति, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, ४॥)
भारत की अन्तरात्मा, १, सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
भारत की एक झलक, १, नरसिंहदास अग्रवाल, १२८, क्रा०, २)
भारत की प्राचीन संस्कृति, डॉ० रामजी उपाध्याय २८३, डि०, ७॥)
भारत की मौलिक एकता, १, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, १८२, डि०, ४)
भारत की संस्कृति का विकास, १, डॉ० मथुरालाल शर्मा
भारत की सांस्कृतिक दिग्विजय, १, हरिदत्त वेदालंकार, ८०, क्रा०, १)
भारत के तीर्थ, १, दयाशंकर दुबे, ४४०, क्रा०, ५)
भागवत सम्प्रदाय, पं० बलदेव उपाध्याय, ७००, ६)
भारतवर्ष का सांस्कृतिक इतिहास, १, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, ३)
भारत के प्राचीन राजवंश, १, विश्वेश्वर नाथ रेउ, ४५०, क्रा०, ४)
भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास, बी० एन० लूनिया, डि०, ६॥।)
भारतीय दर्शन-शास्त्र का इतिहास, न० कि० देवराज, रामानन्द तिवारी, ५४८, क्रा०, ६॥)
भारतीय संस्कृति और अहिंसा, १, धर्मानन्द कोसंबी, २८०, क्रा०, २)
भारतीय संस्कृति, १, डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र, २५७, क्रा०, २॥)
भारतीय संस्कृति, १, साने गुरुजी, ३०२, क्रा०, ३॥)
भारतीय संस्कृति, १, शिवदत्त ज्ञानी, ३७१, क्रा०, ५)
भारतीय संस्कृति, २, गोपाल शास्त्री, १४४, क्रा०, १॥)
भारतीय संस्कृति (भाग १) : प्राचीन संस्कृति : १, मोतीलाल मुकुल, १८४, डि०, २)
भारतीय संस्कृति का उत्थान, १, डॉ० रामजी उपाध्याय, २७५, क्रा०, २॥)
भारतीय दर्शन, पं० बलदेव उपाध्याय, ८)
भारतीय संस्कृति में आर्येतरांश, १, शिवशेखर मिश्र, ११६, डि०, २॥)
भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, (दो भाग), सत्यकेतु विद्यालंकार, ८१८, क्रा०, ७)
भारतीय संस्कृति की रूप-रेखा, १, गुलाबराय, २००, क्रा०, ३।)
भारतीय संस्कृति का विकास, शिवशेखर मिश्र, ३)
मनुष्य की कहानी, १, जयचन्द्र विद्यालंकार, ४८, क्रा०, ॥=)
मोहंजोदड़ो, सतीशचन्द्र काला, २)
राजस्थान की जातियाँ, १, १२)
हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, डॉ० बेनीप्रसाद, ४८८, क्रा०, ८)
हिन्दुस्तान की संस्कृति, १, राना जंगबहादुरसिंह, १३४, क्रा०, २।)
हिन्दू-विवाह में कन्या-दान का स्थान, १, सम्पूर्णानन्द, ६४, क्रा०, १)

इतिहास : साहित्यिक

अर्ध-शताब्दी इतिहास, १, २॥)
आधुनिक हिन्दी-साहित्य (भाग १), स० ही० वात्स्यायन, २५०, क्रा०, २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य (भाग २), डॉ० नगेन्द्र, वात्स्यायन, १४४, डि०, २)	हिन्दी साहित्य परिषद्, मेरठ
हिन्दी साहित्य का इतिहास, ८, कृष्णशंकर शुक्ल, ४००, का०, ४।=)	हिन्दी साहित्य सदन
हिन्दी-साहित्य की भूमिका, १, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, ५१६, डि०, ८)	प्रयाग विश्वविद्यालय
हिन्दी-साहित्य (१८५०-१९००), डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, ४०६, डि०, ६)	प्रयाग विश्वविद्यालय
हिन्दी-साहित्य का विकास (१९०० से १९२५ तक), ३, डॉ० श्रीकृष्णलाल, ४१४, डि०, ६)	प्रयाग वि० वि०
हिन्दी-साहित्य (१९२५ से १९५० तक), १, डॉ० भोलानाथ, डि०, ८)	प्रयाग विश्वविद्यालय
हिन्दी-साहित्य-परिचायिका, ३, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, १५२, का०, १॥=)	हिन्दी भवन
बोली हिन्दी-साहित्य का इतिहास, ४, ब्रजरत्नदास, ३१०, का०, ३॥)	हिन्दी साहित्य कुटीर
बोली के गौरव-ग्रन्थ, ४, विश्वम्भर 'मानव', २३६, का०, २॥)	हिन्दी भवन
विलियम कॉलेज, (१८००-१८५४), १, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, २३१, डि०, ६)	प्रयाग विश्वविद्यालय
का साहित्य, बिहार के पाँच धुरन्धर विद्वान्, ५)	पुस्तक भण्डार
न्दु युग, २, डॉ० रामविलास शर्मा, १८४, का०, ३)	विनोद पुस्तक मन्दिर
का प्राचीन साहित्य, १, डॉ० रामजी उपाध्याय, ४१, का०, ॥)	रामनारायणलाल
वीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग, १, डॉ० उदयभानु सिंह, ४३३, रा०, १०)	लखनऊ विश्वविद्यालय
भाषा का इतिहास, १, किशोरीदास वाजपेयी, २३१, का०, ३)	जनवाणी
विमर्श, ३, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ५००, का०, ५)	हिन्दी साहित्य कुटीर
हिन्दी-साहित्य, ५, ज्योतिप्रसाद मिश्र, 'निर्मल', यज्ञदत्त शर्मा, १४६, का०, १।)	सम्मेलन
परिचय, १, कुमुद विद्यालंकार, १००, का०, १॥)	रीगल बुक डिपो
प्रकाशन, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, २७१, का०, ३)	इण्डियन प्रेस
हिन्दी-साहिय, २, भवानीशंकर त्रिवेदी, ४७६, डि०, ७)	मेहरचन्द लक्ष्मणदास
हिन्दी-साहित्य, वेणीमाधव शर्मा, १॥)	नन्दकिशोर
लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, ३॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
साहित्य की रूपरेखा, निर्मोही, का०, १)	तुलसी साहित्य सदन
आलोचना : उद्भव और विकास, १, डॉ० भगवत्स्वरूप मिश्र, ६१४, डि०, १२)	साहित्य सदन
का सामयिक साहित्य, १, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डि०, ४)	नन्दकिशोर
भाषा और साहित्य का इतिहास, १, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', ५)	पुस्तक भण्डार
साहित्य का इतिहास, १, शकुन्तला अग्रवाल, का०, १=)	राजहंस
साहित्य की रूपरेखा, निर्मोही, का०, १)	तुलसी साहित्य सदन
साहित्य की रूपरेखा, प्रेमनारायण टण्डन, २२०, का०, २)	गयाप्रसाद
साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, ३, डॉ० रामकुमार वर्मा, ७१३, डि०, १०)	रामनारायणलाल
साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, ६, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, २४०, का०, २)	राम नारायणलाल
साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव, १, डॉ० सरनामसिंह, २७०, डि०, ५)	रामनारायणलाल
साहित्य का परिचय, १, आ० चतुरसेन शास्त्री, १८६, का०, ३)	राजपाल
साहित्य की ऐतिहासिक चर्चा, १, गंगाराम शर्मा, १४८, का०, १॥)	इण्डियन प्रेस
साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, ८४, का०, १)	इण्डियन प्रेस

म्बर, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, ५२२, क्रा०, ७॥)

हिन्दी-साहित्य, डॉ० श्यामसुन्दरदास, २२६, क्रा०, ३)

हिन्दी-साहित्य : नये प्रयोग, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन', २००, क्रा०, २)

हिन्दी-साहित्य का प्रामाणिक इतिहास, सूरजप्रसादसिंह, ३)

हिन्दी-साहित्य के आलोक में, सूरजप्रसादसिंह, ६)

हिन्दी-साहित्य की शैलियाँ, सूरजप्रसादसिंह, ६)

हिन्दी-साहित्य अनुशीलन, २, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', ३२०, क्रा०, ३॥)

हिन्दी साहित्य का आदर्श इतिहास, १, रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', १६०, क्रा०, १॥)

हिन्दी साहित्य के इतिहास का एक अध्ययन, १, सुगणचन्द शास्त्री, १६०; क्रा०, ३)

हिन्दी साहित्य का इतिहास, ६, ब्रजरत्नदास, २००, क्रा०, १।)

हिन्दी साहित्य का इतिहास, १, राजनाथ शर्मा, २०२, क्रा०, २॥)

हिन्दी साहित्य का इतिहासः एक दृष्टि में, २, धर्मचन्द सन्त, २६, क्रा०$\frac{1}{2}$, १)

हिन्दी-साहित्य की परम्परा, १, हंसराज अग्रवाल, ४५२, क्रा०, ५)

हिन्दी-साहित्य की रूप-रेखा, १, प्रेमनारायण टण्डन, २१०, क्रा०, २)

हिन्दी-साहित्य का सरल इतिहास, ३, प्रेमनारायण टण्डन, १३२, क्रा०, १।)

हिन्दी-साहित्य का सरल इतिहास, १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' १२४, क्रा०, २)

हिन्दी-साहित्य की प्रवृत्तियाँ, २, जयकिशनप्रसाद, ३२५, क्रा०, ५)

हिन्दी साहित्य का विकास, २, ब्रह्मदत्त तिवारी नागर, १६८, क्रा०, २)

हिन्दी साहित्य और उसका विकास, १, प्रेमलता अग्रवाल सरस्वती, २)

हिन्दी-साहित्य और उसकी प्रगति, १, विजयेन्द्र स्नातक, क्षेमचन्द्र 'सुमन' २२४, क्रा०, ३)

हिन्दी-साहित्य और साहित्यकार, २, सुधाकर पाण्डेय, २६८, क्रा०, १।)

हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, १, गुलाबराय, क्रा०, १।)

हिन्दी-साहित्य का इतिहास, आ० रामचन्द्र शुक्ल, ७७६, क्रा०, ७)

हिन्दी-साहित्य का इतिहास, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, २२०, क्रा०, १॥)

हिन्दी-साहित्य के इतिहास का सरल अध्ययन, गोपालप्रसाद व्यास, १६६, क्रा० २॥)

हिन्दी-साहित्य की भूमिका ३, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, ३००, क्रा०, ३॥)

हिन्दी-साहित्य की रूपरेखा, ८, डॉ० रामकुमार वर्मा, क्रा०, ।≈)

हिन्दी-साहित्य का विकास, १, कृष्णानन्द पन्त, राजकिशोर कक्कड़, क्रा० २॥)

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास, १, आ० चतुरसेन शास्त्री, ७३८, क्रा०, ७॥)

हिन्दी भाषा तथा साहित्य, १, डॉ० उदयनारायण तिवारी, १७४, क्रा०, २॥)

हिन्दी-साहित्य का सुबोध इतिहास, १७, गुलाबराय, ३४६, क्रा०, ३।)

हिन्दी-साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, १, देवीशरण रस्तौगी, ३८६, क्रा०, ६)

हिन्दी-साहित्य की कहानी, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २४०, क्रा०, ३॥)

हिन्दी-साहित्य का आदिकाल, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, १२३, ३।)

उपन्यास-कला

उपन्यास-कला, ३, विनोदशंकर व्यास, १६०, क्रा०, १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मूल तत्त्व, १, प्रो० जयनारायण, ७६, का०, १)	अजन्ता प्रेस
सिद्धान्त, १, श्याम जोशी, ६८, का०, ।।।)	मोहन न्यूज़ एजेन्सी, कोटा
उपन्यास, ३, शिवनारायण श्रीवास्तव, ३८८, का०, ४॥)	नन्दकिशोर
के उपन्यास, १, यज्ञदत्त शर्मा, का०, ३)	गंगा पुस्तक माला

कबीर

४, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, ३६६, का० ४)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
साहित्य का अध्ययन, १, पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, ४०७, का०, ५)	साहित्य रत्नमाला कार्यालय
का रहस्यवाद, डॉ० रामकुमार वर्मा, २१४, का०, २१४, ३॥)	साहित्य भवन
: साहित्य और सिद्धान्त, १, यज्ञदत्त शर्मा, १८४, डि०, २॥)	आत्माराम
की विचार-धारा, १, डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत, ४८४, का०, ७)	साहित्य निकेतन
बीजक, १, ३३६, डि०, ५॥)	कबीर ग्रन्थ-प्रकाशन समिति हरक, बाराबंकी
संग्रह, १, आ० सीताराम चतुर्वेदी, १३६, का०, १)	सम्मेलन
पदावली, ६, डॉ० रामकुमार वर्मा, ११४, का०, १)	सम्मेलन
साखी सुधा, १, रामचन्द्र श्रीवास्तव, ३००, का०, ३=)	श्रीराम मेहरा
का रहस्यवाद, ७, डॉ० रामकुमार वर्मा, २१४, का०, ३॥)	साहित्य भवन
साहित्य की भूमिका, १, डॉ० रामरतन भटनागर, ३५५, का०, २)	रामनारायणलाल
ग्रन्थावली, १०, श्यामसुन्दरदास ३३२, का०, ४)	नागरी प्रचारिणी सभा
वचनामृत, १, डॉ० मुन्शीराम, ३००, का०, ३॥)	साहित्य निकेतन
परिचय, १, तारकनाथ अग्रवाल, ।।।)	तारकनाथ अग्रवाल
साखी सुधा, १, रामचन्द्र श्रीवास्तव, ३००, का०, ३=)	श्रीराम मेहरा
३, कबीर, ३५५, का०, २॥)	रामनारायणलाल
सन्त कबीर, डॉ० रामकुमार वर्मा, १५८, का०, २)	साहित्य भवन
डॉ० रामरतन भटनागर, २१६, का०, २॥)	किताब महल
कबीर साहब का बीजक, ३, विचारदास शास्त्री, ४१०, का०, २॥)	रामनारायणलाल

कला

चित्रावली (४ भाग), उपेन्द्र महारथी, २)	पुस्तक भवन
२, हंसकुमार तिवारी, १६६, डि०, ५)	मानसरोवर
और संस्कृति, १, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, ३०६, का०, ४॥)	साहित्य भवन
और सौन्दर्य, १, रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख' १५२, डि०, ३॥।)	आत्माराम
कल्पना और साहित्य, १ डॉ० सत्येन्द्र, २८१, डि०, ४)	साहित्य रत्न भण्डार
और मानव, १, सीताराम मर्ढेकर, ७५, का०, ३)	(वितरक) राजकमल प्रकाशन
बी, बिहार शिल्प-कला-परिषद्, ५)	पुस्तक भवन
का चित्रित गौरव, १॥)	पुस्तक भवन
की चित्रकला, २, रायकृष्णदास, १३२, का० ⅔, ८)	भारती भण्डार
चित्रकला-पद्धति, ६८, १)	इण्डियन प्रेस

र, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय वस्तु-कला, १, परमेश्वरीलाल गुप्त, १५०, क्रा०, २)
भारतीय मूर्ति-कला, राय कृष्णदास, २५२, क्रा०, ३)
शिल्प-लोक, १, रामचन्द्र शुक्ल, क्रा०, १)
शिल्प-कथा, १, नन्दलाल बसु, ७८, क्रा०, १)
सौन्दर्य-शास्त्र, १, डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा, २४२, क्रा०, ३)

कविता : नवीन

अपलक, १, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', १०८, डि०, ३॥)
अंशु, १, चन्द्रवती प्रभा, ८८, क्रा०, १॥)
अजित, २, मैथिलीशरण गुप्त, ११०, डि०, १॥)
अनघ, ६, मैथिलीशरण गुप्त, १३६, क्रा०, १।)
अर्जन और विसर्जन, २, मैथिलीशरण गुप्त, ३२, क्रा०, ।=)
अनाथ, सियारामशरण गुप्त, ३४, क्रा०, ।=)
अलका, १, शान्ति सिंहल, ८८, क्रा०, २।॥)
अपने गीत, १, बालकृष्ण बलदुआ, ६६, क्रा०, १॥)
अरुणिमा, १, पोद्दार रामावतार 'अरुण', १००, डि०, १)
अपरा, २, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' १८४, रा०, ३॥)
अनागत, १, हंसकुमार तिवारी, ६८, क्रा०, २)
अनामिका, २, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', १०४, क्रा०, २॥)
अशोक वन, २, गोकुलचन्द्र शर्मा, १२०, क्रा०, १॥)
अर्चना, १, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', १२०, क्रा०, २॥)
अर्चना, १, शलभ, ४८, फुलस्केप अठपेजी, ।॥)
अग्नि-शस्य, १, नरेन्द्र शर्मा, १३०, डि०, २॥)
अमर लता, अर्जुनकुमार 'अशान्त', ।॥)
अभिसार, १, किशोर साहू, ७६, ३॥)
अवसाद, १, विश्वम्भर 'मानव' ५१, क्रा०, ।॥)
आपन मरन जगत् कै हाँसी, १, कमला चौधरी, १२५, डि०, ३)
आम-महुआ, १, केसरी, २)
आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, १३६, क्रा०, १)
आत्मोत्सर्ग, ३, सियारामशरण गुप्त, ७२, क्रा०, ॥=)
आधुनिक कवि (भाग १), ४, महादेवी वर्मा, १११, क्रा०, २॥)
आधुनिक कवि (भाग २), ५, सुमित्रानन्दन पन्त, १५३, क्रा०, २॥)
आधुनिक कवि (भाग ३), २, डॉ० रामकुमार वर्मा, १३०, क्रा०, २॥)
आधुनिक कवि (भाग ४), २, ठा० गोपालशरणसिंह, १३७, क्रा०, २॥)
आधुनिक कवि (भाग ५), १, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', १६८, क्रा०, २॥)
आज के गीत, १, बालमुकुन्द मिश्र, ४८, क्रा०, १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व, १, रामदास मिश्र 'विनय', ४८, [illegible]	हिन्दी प्रचारक मण्डल
क हिन्दी कविता, सं० नानूभाई बारोट, गिरिराज किशोर, १)	नवजीवन प्रकाशन
क काव्य-संग्रह, ५, डॉ० रामकुमार वर्मा, १६८, क्रा०, १।।)	सम्मेलन
क वीर-काव्य, १, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, गुर्ती सुब्रह्मण्य, ११६, क्रा०, १।।)	सम्मेलन
ना, १, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', १०४, क्रा०, २।।)	भारती भण्डार
६, जयशंकर प्रसाद, ७६, क्रा०, १)	भारती भण्डार
भरी धरती, १, ब्रह्मदेव ८५, डि०, १।।)	सुजाता प्रकाशन
ों में, २, हरिकृष्ण 'प्रेमी', ११६, क्रा०, २।)	आत्माराम
१, बालकृष्ण बलदुआ, २)	गंगा पुस्तक माला
१, अज्ञेय, २२०, डि०, ४)	सरस्वती प्रेस
के आँसू, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ८२, ३)	अजन्ता प्रेस
-शतक, जगन्नाथदास 'रत्नाकर', २००, २)	इण्डियन प्रेस
ालिका, १, शम्भुनाथ 'शेष', ६६, डि०, २)	मानवधर्म कार्यालय
ी रातें, १, रामानुजलाल श्रीवास्तव, १३६, ३।।)	इण्डियन प्रेस
, सं० शिवदास गुप्त, ।।।=)	गंगा पुस्तक माला
ाल, श्री कृष्णकुमार विद्यार्थी, ६६, क्रा०, १।।।)	अशोक प्रेस
ा, १, सुमित्रानन्दन पन्त, १४५, डि०, ५)	भारती भण्डार
रात और अन्य कविताएँ, श्री श्यामनन्दन सहाय 'सेवक', १।।)	अशोक प्रेस
और अनेक चरण, १, शेरजंग ११६, डि०, ३)	सरस्वती प्रेस
नि, डॉ० रामकुमार वर्मा, ५२, क्रा०, १।)	साहित्य भवन
ति और अर्घ्य, १, मैथिलीशरण गुप्त, ४४, क्रा०, ।।=)	साहित्य सदन, चिरगाँव
ास, १, आनन्दकुमार, २६६, डि०, ७)	राजपाल
न, केसरी, २)	पुस्तक भण्डार
दहन, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', २)	पुस्तक भण्डार
का क्रन्दन, मुरलीधर श्रीवास्तव 'शेखर'	पुस्तक भण्डार
, १, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', ६२, १।।)	अजन्ता प्रेस
-कदम बढ़ाये जा, २, गोपालप्रसाद व्यास, १)	हिन्दी भवन
का, १, मदनगोपाल सिंहल, ४८, क्रा०, ।।)	भारतीय साहित्य भवन
, १, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', ८०, ।।।)	भारती प्रतिष्ठान
लय, २, जयशंकरप्रसाद, क्रा० ।)	भारती भण्डार
, २, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', १४४, ५।।)	भारती प्रतिष्ठान
ता, 'हरिऔध'	गंगा पुस्तक माला
-कौमुदी, सं० श्री रामनरेश त्रिपाठी, ७००, क्रा,०८)	नवनीत प्रकाशन, बम्बई ७
, १, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', १४४, डि०, ३।।)	राजकमल प्रकाशन
ायन, द्वारिकाप्रसाद मिश्र, १२)	सारथी कार्यालय
कलानिधि, सं० बालकृष्ण गर्ग, १।।।)	बंगीय हिन्दी परिषद्

म्बर, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-कुञ्ज की कोकिलाएँ, बलभद्रप्रसाद गुप्त 'रसिक' २)
क्रान्ति-दीप, १, कमल साहित्यालंकार, ३२, क्रा०, ॥)
काबा और कर्बला, २, मैथिलीशरण गुप्त, १०३, क्रा०, १)
काव्य-संग्रह, ३, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', ३१६, क्रा०, २॥)
कामायनी, ८, जयशंकरप्रसाद, २६४, क्रा०, ३॥)
कानन-कुसुम, ५, जयशंकरप्रसाद, १२६, क्रा०, २)
कामिनी, नरेन्द्र शर्मा, ७०, क्रा०, १)
कारा-संगीत, १, ब्रह्मदेव, ४०, क्रा०, ॥)
किसान, सं० मैथिलीशरण गुप्त, ४७, क्रा०, ॥)
किंकिणी, राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ।॥)
कुरुक्षेत्र, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', १४६, डि० ३॥)
कुणाल-गीत, मैथिलीशरण गुप्त, १३६, क्रा०, १॥)
कुकुर मुत्ता, २, 'निराला', २४, क्रा० ॥=)
कुल ललना, डॉ० रामकुमार वर्मा,
कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी, १४४, ३)
कोशा, १, पोद्दार रामावतार 'अरुण', १००, डि०, ३)
कैकेयी, १, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', १६२, ३)
कंचन घट, १, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', १००, क्रा०, १॥)
कुञ्ज बिहारी, १, कुञ्जबिहारी चौबे, ८०, क्रा०, १)
खादी के फूल, १, सुमित्रानन्दन पन्त तथा 'बच्चन', १२६, डि०, ५)
गणदेवता, रामदयाल पाण्डेय, ३)
गंगावतरण, जगन्नाथदास 'रत्नाकर', १२३, १)
गुञ्जन, ७, सुमित्रानन्दन पन्त, १०८, डि०, २॥)
ग्रन्थि, २, सुमित्रानन्दन पन्त, ५०, डि०, ।॥)
गांधीजी, १, श्रीनाथसिंह, १६, क्रा०, ≡)
गांधी-चरित-मानस, १, विद्याधर महाजन, ५॥=)
गांधी-गौरव, १, रामदास मिश्र 'विनय', २०, ।)
ग्राम्या, ८, सुमित्रानन्दन पन्त, १०८, डि०, २)
ग्रामिका, ठाकुर गोपालशरण सिंह, २३०, ३)
गीतिका, ३, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', १६४, क्रा०, १॥)
गीताञ्जलि, सं० साधारण, अनु०—भवानीप्रसाद तिवारी, ११७, डि०, २॥)
गीताञ्जलि, सं० राज—अनु०, भवानीप्रसाद तिवारी, १२६, क्रा०, ४)
गुरुकुल, १, मैथिलीशरण गुप्त, ५००, ५)
गुरु तेग़बहादुर, २, मैथिलीशरण गुप्त, २७, डि०, ।=)
गोकुलदास, १, अजमेरी, ८०, क्रा०, ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

, १, ३२, ॥)	हिन्दी भवन
, सं० श्यामनारायण पाण्डेय,	नन्दकिशोर
, रामकुमार वर्मा,	गंगा पुस्तक माला
गरम, नागार्जुन, =)	हंस प्रकाशन
रात और अजगर, १, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', १११, क्रा०, ३।)	नीलाभ प्रकाशन
श्रीनारायण चतुर्वेदी, ३६, ।-)	इण्डियन प्रेस
लहर, सं० श्री श्यामनारायण प्रसाद, १॥)	नन्दकिशोर
, केदारनाथ, १॥)	गंगा पुस्तक माला
, ४, डॉ० रामकुमार वर्मा, १०४, क्रा०, १॥)	सम्मेलन
मोहनलाल द्विवेदी, ८६, २।-)	इण्डियन प्रेस
चित्रण, डॉ० विद्याभूषण 'विभु', ५६, क्रा०, ।=)	कला कार्यालय
, १, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० मुन्शी अजमेरी, ६८, क्रा०, ॥।-)	साहित्य सदन, चिरगाँव
, १, अज्ञेय, २२०, डि०, ४)	सरस्वती प्रेस
चौपदे, २, हरिऔध, २५०, क्रा०, १॥।)	हिन्दी साहित्य कुटीर
, १, बाबूराम पालीवाल, ६४, डि०, १॥)	राजकमल प्रकाशन
चौपदे, २, 'हरिऔध' २००, क्रा०, २।)	हिन्दी साहित्य कुटीर
फूल, १, पद्मनारायण आचार्य, २)	नागरी प्रचारिणी सभा
, १, श्री नानाजी, ६४, क्रा०, ॥=)	सुषमा साहित्य मन्दिर
, १, डॉ० नगेन्द्र, ४०, डि०, २)	गौतम बुक डिपो
, ठाकुर गोपालशरणसिंह, ३४१, ४)	इण्डियन प्रेस
आ जायेगा, १, श्री कृपाशंकर शर्मा, ७२,	विनोद पुस्तक मन्दिर
, १, रघुवीरशरण 'मित्र', ५६०, डि०, १५)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
वध, ३८, मैथिलीशरण गुप्त, ६४, ॥।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
, १, मैथिलीशरण गुप्त, ४४२, डि०, ७)	साहित्य सदन, चिरगाँव
, १, सियारामशरण गुप्त, १६, क्रा०, ।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
गोरे १, रघुवीरशरण 'मित्र', १०६, डि० २॥)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
, शिवसिंह 'सरोज', ।)	गंगा पुस्तक माला
और जमाना, १, किशोर, ६०, क्रा०, २)	(वितरक) भारती भण्डार
सपने, १, प्रो० अर्जुन चौबे काश्यप, ॥)	काश्यप प्रकाशन
के गीत, १, विनोद रस्तोगी, ६४, ॥।)	कमल प्रकाशन
, चन्द्रपालसिंह मयंक, ॥।)	नवयुग ग्रन्थागार
सरिता, १, सच्चिदानन्द श्रीवास्तव, ६८, क्रा०, १॥)	अग्रसेन पुस्तक भण्डार
, ठाकुर गोपालशरणसिंह, १२०, २॥)	इण्डियन प्रेस
, १, रामकुमार वर्मा, १२८, १।)	हिन्दी भवन
श्यामनारायण पांडेय, डि०,	नन्दकिशोर
, ६, जयशंकरप्रसाद, ६६, क्रा०, १)	भारती भण्डार

[आगे पृष्ठ ६२ पर देखिए]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा

१. **दक्खिनी का पद्य और गद्य**—ब्रज, अवधी और राजस्थानी आदि की तरह दक्खिनी भी हिन्दी की एक विशेष शैली है। खड़ी बोली के लिए इस शैली का विशेष महत्व है। दक्खिनी में ही खुसरो और कबीर की परम्परा को आगे बढ़ाया गया। हिन्दी खड़ी बोली के गद्य का सबसे पुराना नमूना दक्खिनी में ही मिलता है। इस संकलन में लगभग सौ लेखकों की अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह है। यह संकलन १२वीं शती से १९वीं शती तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक नई कड़ी जोड़ने वाला है। पुस्तक की भूमिका भाषा-विज्ञान के प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी ने लिखी है। संकलन-कर्त्ता हैं श्रीराम शर्मा। पृष्ठ संख्या लगभग छः सौ। मूल्य दस रुपये आठ आना।

२. **पञ्चामृत** (तेलुगु)—तेलुगु के पुराने पाँच प्रतिनिधि-महाकवियों का परिचय तथा उनकी उत्कृष्ट रचनाओं को नागरी लिपि में देकर अर्थ दिया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषी लोग तेलुगु के काव्य का आनन्द ले सकते हैं। लेखक तथा अनुवादक श्री बालशौरि रेड्डी। मूल्य चार रुपये।

३. **सबरस**—गोलकुण्डा के विद्वान् लेखक वजही की दक्खिनी शैली में लिखी गई हिन्दी-गद्य की सबसे पहली और उत्कृष्ट रचना। शब्दों के लिए विस्तृत टिप्पणी और विवेचनापूर्ण भूमिका। यह पुस्तक आज से चार सौ वर्ष पहले लिखी गई थी। प्रस्तुतकर्ता—श्रीराम शर्मा। पृष्ठ संख्या लगभग तीन सौ, डेमी साइज। मूल्य पाँच रुपये।

४. **कालिदास और उनकी कृतियाँ**—उस्मानिया विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष आचार्य वंशीधर विद्यालंकार की अंग्रेजी में लिखी हुई विद्वत्तापूर्ण पुस्तक।

५. **चाबुक**—(कहानी-संग्रह) श्री विनायकराव विद्यालंकार की कहानियों का संकलन। प्रत्येक कहानी समाज की वर्तमान बुराइयों पर तीखा व्यंग्य लिये हुए है। इस कहानी-संग्रह ने हिन्दी के कथा-साहित्य की श्रीवृद्धि की है। कहानियों में हैदराबाद और उसके आसपास का जीवन अंकित हुआ है। मूल्य पौने दो रुपये।

६. **तुलसीदास**—(नाटक) गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर लिखा गया नाटक। नाटक रंगमंच के उपयुक्त हैं।

व्यवस्थापक **पुस्तक-विक्रय-विभाग, हिन्दी प्रचार सभा,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...के महत्वपूर्ण प्रकाशन

बाल-साहित्य-माला

बाल-साहित्य-माला के अन्तर्गत सभा ने निम्न छः पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अठपेजी ...न साइज, ३२ पृष्ठ, रंगीन सचित्र छपाई। आकर्षक मुख पृष्ठ। प्रत्येक का मूल्य आठ आना।

१. **बालपद** (७ से १० वर्ष तक के बालकों के लिए कविताएँ) कवि—श्री वंशीधर विद्यालंकार।

२. **गाँवों की कहानियाँ** (उत्तर-भारत के गाँवों में कही जाने वाली आकर्षक कहानियाँ) लेखक—श्री रामनिरंजन पाँडे एम० ए०।

३. **दक्षिण के महापुरुष** (दक्षिण के ५ महापुरुषों का बालोपयोगी जीवन-चरित्र) लेखक—श्री राजकिशोर पाँडे एम० ए०।

४. **बालकों की कहानियाँ** (बच्चों के लिए मनोरंजक कहानियाँ) लेखक—श्रीराम शर्मा।

५. **दो एकांकी** (७ वर्ष से १० वर्ष तक की आयु के बालकों के खेलने के लिए प्रभावशाली दो एकांकी) लेखक—श्री विमला लूथरा एम० ए०।

६. **हैदराबाद के ऐतिहासिक और कलात्मक स्थल** (अजन्ता से लेकर हैदराबाद के चार मीनार तक का परिचय इस पुस्तक में मिलेगा) लेखक—कमला रानी संघी।

प्रेस में

१. **दक्खिनी का व्याकरण** — श्रीराम शर्मा
२. **दक्खिन का इतिहास** — श्रीराम शर्मा
३. **रहीम का अप्रकाशित काव्य : दम्पती बिलास**
४. **पंचामृत** — (मराठी)
५. **मराठी साहित्य का इतिहास**

सभी पुस्तकों पर उचित कमीशन दिया जाता है। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर कीजिये।

...र सभा, नामपल्ली रोड, हैदराबाद–१

CC-0, In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ५६ से आगे]

झुरमुट, १, विश्वम्भरशरण चतुर्वेदी, ४४, क्रा०, १) — मानव धर्म कार्यालय
झंकार, २, रघुवीरशरण 'मित्र', ६४, डिमाई, ।।।) — भारतीय साहित्य प्रकाशन
झंकार, मैथिलीशरण गुप्त, १६७, १।।) — साहित्य सदन, चिरगाँव
झाँकी, आनन्दप्रसाद, १००, १) — साहित्य भवन
झाँसी की रानी, सं० सुभद्राकुमारी चौहान, क्रा०, =) — सुषमा साहित्य मन्दिर
झाँसी की रणचण्डी, मुरलीधर दीक्षित, १७०, क्रा०, २।।) — सुषमा साहित्य मन्दिर
ठंडा लोहा, १, धर्मवीर भारती, ६६, डि०, ३) — साहित्य भवन
तक्षशिला, उदयशंकर भट्ट, २४४, ३) — इण्डियन प्रेस
तथागत, १, कुमुद विद्यालंकार, १५०, ३।।) — रीगल बुक डिपो
तपस्वी, देवदत्त शास्त्री, १४०, १।।) — देश सेवा प्रेस
तारों के गीत, १, महेन्द्र भटनागर, ४६, क्रा०, ।।।) — गयाप्रसाद एण्ड सन्स
तुलसीदास, ४, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', ६६, क्रा०, १।) — भारती भण्डार
तुलसीदास, १, कन्हैयालाल ओझा, १००, क्रा०, १।।) — राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर
तुमुल, श्यामनारायण पाण्डेय, १३७, २) — इण्डियन प्रेस
द्वन्द्व-गीत, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६०, १।।) — जनवाणी प्रकाशन
द्वापर, १, मैथिलीशरण गुप्त, २१४, २) — साहित्य सदन, चिरगाँव
दिवालोक, १, शम्भुनाथसिंह, ६६, डि०, २) — (वितरक) राजकमल प्रकाशन
द्विवेदी काव्यमाला (आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी), सं० देवीदत्त शुक्ल, ४५४, ४) — इण्डियन प्रेस
दीप, शकुन्तला सिरोठिया, ।।।) — किताब महल
दीप जलेगा, १, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', १७६, क्रा०, ३।।) — नीलाभ प्रकाशन
दीप-वेला, १, जगतप्रकाश चतुर्वेदी, ५७, क्रा०, १।) — किताब महल
दुर्गादास चरित्र, १, केशरीसिंह, २२४, क्रा०, २।।) — ओसवाल प्रेस
दुलारे-दोहावली, दुलारेलाल भार्गव, २) — गंगा पुस्तक माला
दूब के आँसू, १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', डि०, २) — विनोद पुस्तक मन्दिर
दूर्वा दल, ३, सियारामशरण गुप्त, ११६, फु० $\frac{१}{१६}$, १) — साहित्य सदन, चिरगाँव
देव-दर्शन, हरदयालुसिंह, २००, २) — इण्डियन प्रेस
देव सभा, रामचरित उपाध्याय, ८८, ।-) — हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
देव-वाणी, देवदत्त शास्त्री, ८०, ।।।) — धन्नालाल
देवार्चन, १, करील, ४१२, क्रा०, ५) — साहित्य रत्न भण्डार
दैनिकी, ३, सियारामशरण गुप्त, ७२, क्रा०, ।।=) — साहित्य सदन, चिरगाँव
दैत्यवंश, हरदयालुसिंह, २७१, ३।।) — इण्डियन प्रेस
दो गीत—मृत्यु-गीत और जीवन-गीत, नीरज, ८०, डि०, १।।) — साहित्य निकेतन
दो क्षण, १, प्रो० अर्जुन चौबे काश्यप, ।।) — काश्यप प्रकाशन
द्रोण, १, रामगोपाल शर्मा, 'रुद्र', ८४, क्रा०, १।।) — अजन्ता प्रेस
धड़कन, बालकृष्ण बलदुआ, २।।) — गंगा पुस्तक माला
धधकती ज्वाला, भोलानाथ तिवारी, ।-) — गंगा पुस्तक माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…ी पर उतरो, १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', ६०, डि०, २॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…चरित्र, सूर्यदेव मिश्र, ३)	नन्दकिशोर
…छाँह, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६०, १।)	अजन्ता प्रेस
…और धुआँ, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६०, क्रा०, २॥)	अजन्ता प्रेस
…स्वर्ग, १, कमल साहित्यालंकार, ६४, क्रा०, १)	प्रतिभा प्रकाशन
…कविता, १, सं० डॉ० जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी, ६३, डि०, २)	राजकमल प्रकाशन
…, गोपालसिंह नेपाली, ३)	पुस्तक भण्डार
…, ६, मैथिलीशरण गुप्त, ७०, क्रा०, ॥=)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, १, सियारामशरण गुप्त, १००, डि०, १॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…रोज़गार, गोपालप्रसाद व्यास, ३)	नवयुग साहित्य सदन
…धारा, मंगला मोहन, ।॥)	गंगा पुस्तक माला
…दास, १, आरसीप्रसादसिंह, २॥)	तारा मण्डल
…णी, १, व्रजकिशोर 'नारायण', ८८, क्रा०, १॥)	अजन्ता प्रेस
…धार, मानव, १२६, १।)	किताब महल
…, महादेवी वर्मा, १२२, १॥)	इण्डियन प्रेस
… निमन्त्रण, बच्चन, क्रा०, १३१, २)	सेंट्रल बुक डिपो
…, महादेवी वर्मा, ८०, डि०, ३)	साहित्य भवन
…, १, शान्तिप्रिय द्विवेदी, ४८, डि०, क्रा०, ।॥)	भारती भण्डार
…, गौरीशंकर मिश्र, 'द्विजेन्द्र', २)	पुस्तक भण्डार
…, १, चातक, १८४, क्रा०, १)	साहित्य रत्न भण्डार
…, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', डि०, ३)	विक्रम साहित्य भण्डार
…ली में, २, श्री सियारामशरण गुप्त, ५२, क्रा०, ॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, उमाशंकर वर्मा, ।)	पुस्तक भण्डार
…के गीत, १, परदेशी, ११२, क्रा०, २)	हिन्द किताब्स
…वन, २, नरेन्द्र शर्मा, ८२, डि०, २)	भारती भण्डार
…, ३०, रामनरेश त्रिपाठी, ७६, क्रा०, १)	राजपाल
…, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', क्रा०, ४)	गंगा पुस्तक माला
…, २, रघुवीरशरण 'मित्र', १७२, क्रा०, ३)	भारतीय साहित्य भवन
…, मैथिलीशरण गुप्त, ३२, क्रा०, ।=)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…का युद्ध, १, मैथिलीशरण गुप्त, क्रा०, ३)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, ५, सुमित्रानन्दन पन्त, ११३, डि०, ४)	भारती भण्डार
…ली, २, सुमित्रानन्दन पन्त, २६१, डि०, ५)	भारती भण्डार
…, जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, १४२, १)	इण्डियन प्रेस
…, २१, मैथिलीशरण गुप्त, ७०, क्रा०, ।॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, १, शान्ति मेहरोत्रा, ६६, क्रा०, २)	भारतीय ज्ञानपीठ
…, गोपालसिंह नेपाली, १)	गंगा पुस्तक माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिपदा, १, राजेन्द्रप्रसादसिंह, ४४, डि० क्रा०, ।।।)
प्रभात फेरी, नरेन्द्र शर्मा, १६२, क्रा०, २)
प्रथमजा, डॉ० मुंशीराम शर्मा १२०, क्रा०, १।।।)
प्रतिमा, राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ८०, १)
प्रतिध्वनि, १, रघुवीरशरण 'मित्र', १५२, डि०, ३)
प्रदक्षिणा, (पाठ्य सं०) ६, मैथिलीशरण गुप्त, ७६, क्रा०, ।।=)
प्रदक्षिणा, (विशिष्ट सं०) १, श्री मैथिलीशरण गुप्त, ७६, क्रा०, १)
प्रताप चरित्र, २, केशरीसिंह बारहठ, २२४, क्रा०, २।।)
प्रबन्ध पुष्पांजलि, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, १५० क्रा०, १)
प्रभाती, सोहनलाल द्विवेदी, ८८, क्रा०, २।।)
प्रवासी के गीत, ४, नरेन्द्र शर्मा, ६४, डि०, २)
पृथ्वीपुत्र, १, मैथिलीशरण गुप्त, ६४, क्रा०, ।।।)
पाथेय, ३, सियारामशरण गुप्त, १४०, क्रा०, २)
प्राणोत्सर्ग, १, देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', १४०, क्रा०, १।)
प्रारम्भिक रचनाएँ (दो भागों में), २, हरिवंशराय 'बच्चन', २८६, क्रा०, ३)
प्रारम्भिक रचनाएँ (तीन भाग), १, हरिवंशराय 'बच्चन', १४६, क्रा०, १।।)
प्राण-पूजा, भवानीप्रसाद तिवारी, ८०, क्रा०, १।)
प्राणदीप, १, नन्दकिशोर, ८८, डि०, १।।)
प्रांगण, १, बालकृष्ण बलदुआ, ११३, क्रा०, २)
प्रिय-प्रवास, ८, 'हरिऔध', ३५०, क्रा०, ३=)
पुरन्दर पुरी, डॉ० विद्याभूषण 'विभु', ६६, क्रा०, १।।)
पूजा-गीत, सोहनलाल द्विवेदी, ११३, २)
प्रेमांजलि, ठाकुर गोपालशरणसिंह, १४८, ४)
प्रेमगीत, १, आरसीप्रसादसिंह, ११६, २)
प्रेम पथिक, २, जयशंकर प्रसाद, २६, क्रा०, ।=)
प्रेम सन्देश, १, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', ८८, १=)
प्रेम-संगीत, ४, श्री भगवतीचरण वर्मा, २।।)
प्रेम दूती, १, विराज, ६४, ।।।)
प्रेरणा, २, रघुवीरशरण 'मित्र', १३६, डि०, २।।)
फाँसी, २, रघुवीरशरण 'मित्र', १८०, ३)
फेरि मिलिबो, २, अनूप शर्मा, २२२, ३)
बक संहार, मैथिलीशरण गुप्त, ४०, क्रा०, ।।)
बदलता युग, १, महेन्द्र भटनागर, ७६, क्रा०, १।।)
बदली की रात, १, बैरागी, ८८, ३)
बलिपथ के गीत, १, जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द', १४४, डि०, ३)
बरगद की बेटी, १, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', १५७, ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वभारती, शान्तिनिकेतन के तत्त्वावधान में प्रकाशित

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के ग्रन्थों का

प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

अब तक निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं :

मेरा बचपन

अनु० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

...रुदेव के बचपन का उन्हीं की लेखनी से सरल और ...भाषा में लिखा हृदयग्राही और मनोहर वर्णन। मूल्य २)

दो बहनें

अनु० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

...नारी मात्र के भीतर माँ भी होती है, प्रिया भी होती ...नारी-जीवन के इन्हीं दो रूपों पर आधारित भावपूर्ण ...विरल उपन्यास। मूल्य २।।।)

फुलवाड़ी

अनु० मोहनलाल वाजपेयी

...वि की उत्तरकालीन प्रौढ़ रचना। कला की कोमलता, ...शैली की विदग्ध प्रौढ़ता एवं मानव-चरित्र का सूक्ष्म ...विश्लेषण इस उपन्यास की विशेषता है। मूल्य २।।।)

चतुरंग

अनु० मोहनलाल वाजपेयी

...हृदय की चिरन्तन पहेली पर नये सिरे से प्रकाश डालने ...ला एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक उपन्यास। मूल्य १।।)

नटी की पूजा

अनु० भगवतीप्रसाद चन्दोला

कवि के सुप्रसिद्ध नाटक-इतिहास की कारा से उन्मोचित नारी की दुनिया। मूल्य २)

कथा

'कथा ओ काहिनी' नामक पुस्तक का केवल 'कथा' अंश मूल बंगला देवनागरी लिपि में। इन कविताओं में काव्य, कहानी और नाटक तीनों की त्रिवेणी बह रही है। मूल्य १)

अन्य ग्रन्थ

राजनीति-विज्ञान

ले० सुधीर लाहिड़ी और विनयेन्द्र वंद्योपाध्याय

राष्ट्रों का ऐतिहासिक विकास, विभिन्न आधुनिक शासन प्रणालियाँ एवं विधान व्यवस्थाएँ, व्यक्ति, समाज, राजनीतिक दलों के अधिकार, निर्वाचन के नियम और सिद्धान्तों का सरल एवं सहज भाषा में विवेचन। पुस्तक विशेष रूप से संग्रहणीय है। मूल्य १।।)

महायान

ले० भदन्त शान्ति भिक्षु

बौद्धधर्म की महायान शाखा के उद्भव, विकास तथा धार्मिक सिद्धान्तों का सरस और बोधगम्य विवेचन। मूल्य ३)

विश्वभारती

६।३ द्वारकानाथ ठाकुर लेन

कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्री वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैत वेदान्त-सिद्धान्त ही श्री सूरदास आदि अष्टछापी कवियों के साहित्य का मूल आधार है।"

क्या आपको विदित है ?

उसके मौलिक प्रामाणिक सिद्धान्त ग्रन्थ कहाँ प्राप्त होते हैं ?

विधि और निषेध दोनों उत्तरों में आप हमसे उचित सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी में उक्त विषय के एकमात्र ग्रन्थ-प्रकाशक और वितरक रूप में हम आपकी सेवार्थ सदा सन्नद्ध हैं।

पत्र-व्यवहार और सूची-पत्र मँगाने का पता—

संचालक

विद्या विभाग—कांकरोली

[राजस्थान]

आदर्श नागरिक बनाने वाली नवीनतम प्रकाशित पुस्तकें

(१) वीरता की कहानियाँ
(२) साहस की कहानियाँ
(३) आविष्कारों की कहानियाँ
(४) शिक्षाप्रद कहानियाँ

निम्नलिखित शीघ्र ही प्रकाशित होंगी :

(१) मनोरंजन की बातें
(२) स्वास्थ्य की बातें
(३) शिष्टाचार की बातें
(४) विज्ञान की बातें
(५) गांधी और बच्चे
(६) जवाहर और बच्चे
(७) दूसरे देशों के बच्चे
(८) आदर्श बच्चे

मूल्य प्रत्येक का दस आने

शुद्ध हिन्दी लिखने के नियमों को पढ़िये

"हिन्दी शुद्ध लेख"

लेखक : आर० सी० मौद्गल, बी० ए०,

मूल्य आठ आने

दी इण्डियन पब्लिकेशन्स

हिल रोड, अम्बाला छावनी।

हमारे प्रमुख प्रकाशन

सूर मीमांसा—डा० व्रजेश्वर वर्मा ४)
कृष्ण काव्य की रूपरेखा—श्री वेदमित्र 'व्रती' ३॥)
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य—डा० प्रतिपाल सिंह ७)
काव्य सम्प्रदाय और वाद—अशोककुमार सिंह ५)
हिन्दी साहित्य का इतिहास : एक दृष्टि में—संत धर्मचन्द १)
मायाजाल (उपन्यास)—श्री गुरुदत्त ४)
राग और त्याग ,, —श्री कमल शुक्ल ५)
मौलश्री ,, ,, ६)
काले नगर में ,, ,, २॥)
समाधि (नाटक)—श्री विष्णु प्रभाकर ३)
मीरा ,, श्री सन्त गोकुलचन्द १॥)
हिरौल ,, ,, १)
आधुनिक एकांकी (संकलन) ,, ३)
अतीत स्मृतियाँ (पुरानी खोजें) श्री सोहनलाल १।≈)
आदर्श चरितावली—श्री सन्त गोकुलचन्द २)
चारु चयनिका (कहानी संग्रह)—सन्त धर्मचन्द ३)
नवीन लोकोक्तियाँ और मुहावरे— ,, १॥)
संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण—डा० शान्ती कुमार नानूराम व्यास २॥)
पथ से दूर (उपन्यास)—कमल शुक्ल (छप रहा है) २॥)

बाल साहित्य

छिकछिक—श्री धर्मपाल १)
दोनों को उल्लू बनाया—श्री धर्मपाल ॥)
पतलून की बन गई निक्कर—श्री धर्मपाल ॥)
मुन्नों के गीत ,, ,, ॥)
अमर सन्देश—श्री जगदीश दीक्षित आनन्द ॥)
चमकते तारे—श्री सन्त गोकुलचन्द ॥)
सैर सपाटे— ,, ॥)
गांधी-दर्शन— ,, ॥)

ओरिएन्टल बुक डिपो

नई सड़क, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा परीक्षा की

सहायक पुस्तकें

सं० २०११ (सन् १९५४ के लिए)

दिग्दर्शन (गाइड्स)

१. प्रथमा दिग्दर्शन—(हिन्दी, इतिहास, भूगोल तथा गणित)
ले०-श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री [संशोधित संस्करण] ३।।)

२. मध्यमा दिग्दर्शन—लेखक—श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री
(केवल हिन्दी : नया चौथा संस्करण) ३।।)

३. उत्तमा दिग्दर्शन—प्रथम खण्ड (द्वितीय संस्करण)
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०
श्री द्वारिकाप्रसाद 'द्वारिकेश' एम० ए० } ७।।)

४. उत्तमा दिग्दर्शन—द्वितीय खण्ड
श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०
श्री द्वारिकाप्रसाद 'द्वारिकेश' एम० ए० } ६)
विशेष कवि सहित मूल्य ८)
[विशेष कवि में सूर, तुलसी, भारतेन्दु तथा कवि प्रसाद कोई भी एक मंगा सकते हैं। पृथक् से विशेष कवि का मूल्य २।।) प्रत्येक का है।]

प्रश्नोत्तर

५. प्रथमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी (तीसरा संस्करण)
सं० २००२ से २०१० तक ४)

६. प्रथमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी सं० २००६ तथा १० के पृथक् भी मिल सकते हैं। मूल्य प्रत्येक का ।।)

७. प्रथमा इतिहास प्रश्नोत्तरी सं० २००२ से ७ तक २)

८. प्रथमा भूगोल प्रश्नोत्तरी सं० २००२ से ६ तक १)

९. मध्यमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी
सं० २००३ से २०१० तक (चौथा संस्करण) ५।।)

१०. मध्यमा हिन्दी प्रश्नोत्तरी सं० २०१० केवल १)

११. मध्यमा इतिहास प्रश्नोत्तरी (द्वितीय संस्करण)
सं० २००४ से ९ तक ४।।)

१२. मध्यमा भूगोल प्रश्नोत्तरी सं० २००४ से ८ तक ४)

१३. मध्यमा कृषि प्रश्नोत्तरी सं० २००४ से ८ तक २)

१४. मध्यमा अर्थशास्त्र प्रश्नोत्तरी (द्वितीय संस्करण)
सं० २००४ से ९ तक ४)

१५. उत्तमा (साहित्य रत्न) प्रश्नोत्तरी (प्रथम खण्ड)
सं० २००२ से २०१० तक
लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० २०)

१६. उत्तमा प्रश्नोत्तरी [प्रथम खण्ड]
सं० २००६ तथा २०१० के पृथक् से भी मिल सकते हैं। मूल्य प्रत्येक का २।।)

१७. उत्तमा प्रश्नोत्तरी (द्वितीय खण्ड)
सं० २००२ से २०१० तक
लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए० १३)

१८. उत्तमा प्रश्नोत्तरी (द्वितीय खण्ड)
सं० २००६ तथा २०१० के भी पृथक् से मिल सकते हैं।
मूल्य प्रत्येक का २)

टीकाएँ

१९. सूर पदावली की टीका
(केवल वही पद जो प्रथमा परीक्षा में निर्धारित हैं) ।।=)

२०. काव्य संग्रह भाग १ की टीका ३)

२१. काव्य संग्रह भाग २ की टीका ४)

२२. ब्रजमाधुरीसार की टीका
[नया द्वितीय संस्करण : केवल वही कवि जो विशारद में सं० २०११ में निर्धारित हैं सूरदास, नन्ददास, हितहरिवंश, रसखान, बिहारी, देव तथा रत्नाकर] २।।)

२३. आधुनिक काव्य-संग्रह की टीका
[संशोधित नया संस्करण] २।।)

२४. तुलसी संग्रह की टीका २)

[अन्य आलोचनात्मक पुस्तकों के लिए सूचीपत्र अलग से मंगाइए]

विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त जी के दो सर्वोत्कृष्ट उपन्यास

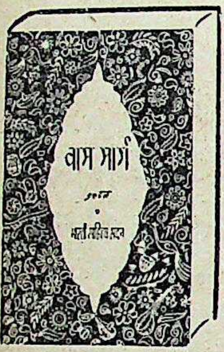

वाम मार्ग

चार्वाकीय विचारधारा को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की गई है। पुस्तक आद्योपान्त पठनीय और रोचक है। यह उपन्यास अभी-अभी प्रकाशित हुआ है। मूल्य ७)

बहती रेता

बौद्ध और आर्य विचार-धाराओं में समानता तथा विरोध इस पुस्तक की पृष्ठ-भूमि है। पुस्तक की रोचकता अन्यतम है। मूल्य ५)

हमारे अन्य प्रकाशन

१ विडंबना	श्री गुरुदत्त मू०	६)	४ विश्वासघात	श्री गुरुदत्त	मू०	५॥)
२ भावुकता का मूल्य	,, ,,	१)	५ देश की हत्या	,,	,,	५॥)
३ विकृत छाया	,, ,,	४॥)	६ अन्तिम यात्रा	,,	,,	१)

७ अलका (कविता संग्रह) ले० श्रीमती शान्ति सिंहल मू० २॥।)

भारती साहित्य सदन

३०।९० कनाट सरकस, नई दिल्ली—१

हिन्दी में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले कथाकार

प्यारेलाल 'आवारा'

- **मिट्टी**—देश की बेकारी की समस्या पर लिखा गया प्रगतिशील उपन्यास। सजिल्द : मू० ५)
- **ख़ुमार**—एक अतृप्त युवती की मर्मस्पर्शी गाथा जो अपने नायक को दिन के उजाले में तो नफरत करती है, पर रात की तनहाई में उसी के सीने से लग जाने के लिए बेचैन हो उठती है। दो महीने में पहला संस्करण समाप्त। तिरंगा कवर : सजिल्द मू० २)
- **सवेरा**—रोमान्टिक उपन्यास लिखने में 'आवारा' जी कितने सिद्धहस्त हैं, यह सब जानते हैं। आँसुओं में लिपटी इस उपन्यास की रोमानी कहानी अपने ढँग की अकेली है। सजिल्द : कलात्मक कवर : मू० २॥।)
- **मरघट**—कभी-कभी लेखक खुद भी उपन्यास का बेजोड़ नायक बन जाता है। हिन्दी के एक ऐसे ही लेखक की दर्दभरी दास्तान जो मुहब्बत के लिए जिया और मुहब्बत के लिए ही मरा। कलात्मक तिरंगा कवर : सजिल्द : मू० २।)
- **अमावस**—हिन्दु-मुस्लिम एकता का समर्थक उपन्यास। सजिल्द : मू० २)
- **जाड़े की रात**—जाड़े की रात बहुत ही मादक होती है, पर यह उपन्यास उससे भी मादक है। मू० २)
- **शीका काई**—एक ऐसे प्रदेश की कहानी जहाँ इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं है, जहाँ प्यार की बारिश होती है। तिरंगा कवर सजिल्द : मू० केवल १)
- **रेत के महल**—'रूपसी पुस्तकमाला' के अंतर्गत प्रकाशित 'आवारा' जी का अद्वितीय पारिवारिक उपन्यास। माँ बनने के लिए तड़पने वाली एक नारी का मार्मिक चित्रण। तिरंगा कवर : मू० १।)

पुस्तक-विक्रेताओं एवं पुस्तकालयों को उचित कमीशन। 'आवारा' जी के अन्य उपन्यासों के लिए भी हमें लिखें।

प्रकाशक एवं विक्रेता :

रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन (३), इलाहाबाद—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायरी का प्रामाणिक इतिहास

श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय

शायरी पृष्ठ सं० ६४० मू० ८)

सांकृत्यायन—

शायरी के छः सौ पृष्ठों में गोयलीय जी ने उर्दू-कविता के उसके चोटी के कवियों का काव्य-परिचय दिया है। यह एक साहित्य-पारखी के आधे जीवन के परिश्रम और साधना का हिन्दी को ऐसे ग्रन्थों की कितनी आवश्यकता है, इसे कहने ता नहीं। उर्दू-कविता से प्रथम परिचय प्राप्त करने वाले के तों का जानना अत्यावश्यक है।"

[१]	पृष्ठ सं० ७८४	मू० ८)
[२]	,, ,, ३२८	मू० ३)
[३]	,, ,, २६४	मू० ३)
[४]	,, ,, २५६	मू० ३)
[५]	,, ,, २५६	मू० ३)

मरनाथ झा—

साहित्य और कविता पर अंग्रेज़ी और उर्दू में कई अच्छी परन्तु हिन्दी में अब तक इसका कोई विस्तृत इतिहास नहीं हुआ है। शेर-ओ-सुखन के रचयिता धन्यवाद के पात्र हैं। परिश्रम से इस पुस्तक को लिखा है। इसमें सभी प्रमुख उल्लेख हैं; उनके जीवन की मुख्य बातें लिख दी गई हैं। से उर्दू कविता का पूरा परिचय मिलता है।"

पुरस्कृत ग्रन्थ

: श्री अनूप शर्मा — मू० ६)

साहित्य : श्री रामगोविंद त्रिवेदी — मू० ६)

: श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय — मू० ८)

री : ,, ,, — मू० ८)

मिनी : श्री बच्चन — मू० ४)

: श्री रामकुमार वर्मा — मू० २॥)

ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य — मू० ६)

राध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी — मू० ३)

: ,, ,, — मू० ३)

कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास — मू० ४)

: श्री बनारसीदास चतुर्वेदी — मू० ४)

सन् १९५४ के नवीन प्रकाशन

हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द जी
पृष्ठ सं० ६४ : मू० १)

जिन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
पृष्ठ सं० २९६ : मू० ४)

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथ सिंह विनोद
पृष्ठ सं० २२८ : मू० २॥)

खेल खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव
पृष्ठ सं० १५२ : मू० २)

अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जी साहित्याचार्य
पृष्ठ सं० ४०० : मू० ४)

चौलुक्य कुमार पाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास
पृष्ठ सं० २८८ : मू० ४)

हमारे अन्य प्रकाशन

खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर — मू० ६)

खोज की पगडंडियाँ : ,, ,, — मू० ४)

संघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर — मू० ३)

आकाश के तारे धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र — मू० २)

गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय — मू० २॥)

जैन जागरण के अग्रदूत : ,, ,, — मू० ५)

ज्ञानगंगा : श्री नारायण प्रसाद जैन — मू० ६)

मेरे बापू : तन्मय बुखारिया — मू० २॥)

मुक्तिदूत : श्री वीरेन्द्रकुमार जैन — मू० ५)

पंचप्रदीप : श्री शान्ति एम० ए० — मू० २)

भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर — मू० २)

विस्तृत जानकारी के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाइये

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

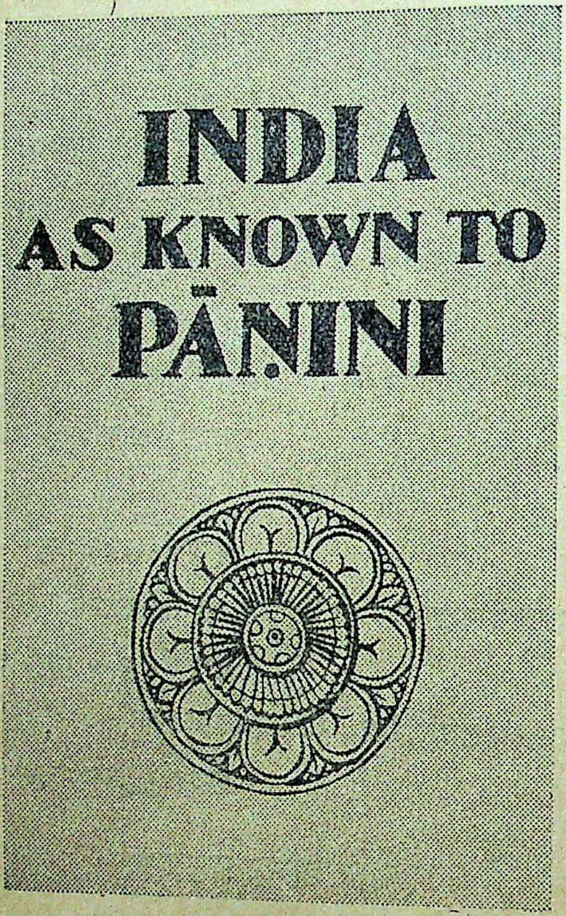

IMPORTANT CONTRIBUTION TO
INDOLOGICAL LITERATURE

INDIA
AS KNOWN TO PANINI

Ancient and dull Sutras of Panini's Ashtadhyayi have been made to yield enormous data of cultural and historical significance.

By

Dr. Vasudev Sharan Aggarwal.

A Publication of Lucknow University.

Royal 4 to, pp. 550/-+XX

Price Rs. 50/-only.

Please write for descriptive catalogue to distributors :

RAJKAMAL PUBLICATIONS LIMITED

1 Faiz Bazar, Delhi — Himalaya House, Hornby Road, Bombay

सरस्वती सहकार दिल्ली द्वारा आयो

भारतीय साहित्य परिचय

सम्पादक : श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

इस पुस्तकमाला के अन्तर्गत भारत की समृद्ध प्रादेशिक भाषाओं तथा जन उपभाषाओं के साहित्य का परिचय विवरण प्रस्तुत करने वाली २६ पुस्तकें प्र करने का आयोजन है।

अब तक

निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी

●

उर्दू और उसका साहित्य

लेखक : श्री गोपीनाथ 'अमन'

●

तमिल और उसका साहित्य

लेखक : श्री पूर्ण सोमसुन्दरम्

●

तेलुगु और उसका साहित्य

लेखक : श्री हनुमच्छास्त्री 'अयाचि

●

मालवी और उसका साहित्य

लेखक : श्री श्याम परमार

●

बंगला और उसका साहित्य

लेखक : श्री हंसकुमार तिवारी

●

अवधी और उसका साहित्य

लेखक : डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षि

●

प्रत्येक का मूल्य २)

प्रकाशक

राजकमल प्रकाश

दिल्ली बम्बई नई दिल्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ारे उपलब्ध प्रकाशन

मार्क्सवाद की सैद्धान्तिक पुस्तकें

...और मुनाफा : कार्ल मार्क्स ||=)
...न्धी लेख : ,, १=)
...—वैज्ञानिक और काल्पनिक : एंगेल्स ||)
...तियाँ : लेनिन १||)
...की क्रान्ति : ,, |||)
...न्ति और ग़द्दार ट्रॉट्स्की : लेनिन १)
...वाद—पूँजीवाद की चरम अवस्था : लेनिन १|)
...रीबों से : लेनिन |||)
...और क्रान्ति : ,, १|)
...र्स और उनके सिद्धान्त : एंगेल्स लेनिन स्तालिन १)
...संघ की क. पा. का इतिहास : स्तालिन ३)
...द के मूल सिद्धान्त : ,, १)
...क्रान्ति और रू. क. की कार्यनीति : ,, |)
...और ऐतिहासिक भौतिकवाद : ,, ||)
...का प्रश्न और मार्क्सवाद : ,, |||)
..., में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ : ,, |)
...का अन्तिम सन्देश : ,, -)
...वाद और समाजवाद : ,, १|)
...की लोकशाही डिक्टेटरशिप : माओत्से-तुंग -)
...न्ति व चीन की क. पार्टी : ,, ≡)

इतिहास, जीवनी

...(एक जीवनी) : राहुल साकृत्यायन ३)
...जनता के बीच (यात्रा वर्णन) : जगदीशचन्द्र जैन ४)
...: आदिम साम्यवाद से दासप्रथा तक : श्री अमृत डाँगे ३||)
...म्युनिस्ट पार्टी के ३० वर्ष : हुचियाओ-मू १|)

उपन्यास, संस्मरण

...: निकोलई औस्त्रोवस्की ४)
... रास्ते से : बरेन बसु ४)
... : जुलियस फुचिक १|)
...वाद का महायुद्ध : १)
...अजेय है : १||)

उदय पथ (कविता संग्रह) : कवि शील १)

सरल विज्ञानमाला

अन्तहीन कहानी (भाग १) : देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय |||)
अन्तहीन कहानी (भाग २) : ,, १)
इस दुनिया का चिड़ियाखाना : ,, |||)
यम से लड़ाई : ,, |||)
मन की बातें : ,, |||)
नख से शिख तक : ,, |||)

अन्य पुस्तकें

हम अच्छे कम्युनिस्ट कैसे बनें : ल्यू शाओ-ची १|)
जनवादी चीन का भूमि सुधार कानून (दस्तावेज़) १)
भारत पर अमरीकी फन्दा : एल० नटराजन ३)
भारत के किसान विद्रोह (१८५०-१६००) : ,, |||)
मार्क्सवाद क्या है ? ,, १)
औपनिवेशिक व्यवस्था का संकट : रजनी पामदत्त ||)
मालेंकोव की रिपोर्ट (दस्तावेज) : |)
सोवियत संघ में सार्वजनिक शिक्षा : ,, |)
हिमालय के उस पार (रूस का यात्रा वर्णन) |=)
समाजवाद और व्यक्ति : एम० डी० कम्मारी ||)
सवाल-जवाब (सोवियत संघ के बारे में) ||)
निराला (एक अध्ययन) : रामविलास शर्मा १)
लाल सेना (इतिहास और बनावट) : २)
समाजवाद का रास्ता : दिमित्रोव ||)

उपयोगी पुस्तिकाएँ

कम्युनिस्ट पार्टी के संगठन के सिद्धान्त (दस्तावेज) |)
कम्युनिस्ट इंटरनेशनल कार्यक्रम (दस्तावेज) |=)
ब्रिटेन के लिए समाजवाद का रास्ता (दस्तावेज) |)
क्या पूँजीवाद-समाजवाद साथ-साथ रह सकते हैं ? ≡)
मई दिवस का इतिहास : ए० ट्रैक्टनबर्ग |=)
वियतनाम का स्वतंत्रता संग्राम (दस्तावेज) |=)
सोवियत रूस में सदाचार : प्रजीव रिजवी |=)
हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की नीति (दस्तावेज) =)
हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम ,, =)
हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी का विधान ,, =)

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड
इरविन अस्पताल के सामने, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ अनमोल पुस्तकें जिनके बिना आपका पुस्तकालय सूना है

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के दो अमूल्य ग्रन्थ

आत्मकथा १२)
बापू के कदमों में ५)

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी-विरचित छः ग्रन्थ

कैदी की पत्नी	२)	तथागत	१॥)
माटी की मूरतें	१॥)	अम्बपाली	२)
लाल तारा	२)	कार्ल मार्क्स	२॥)

पं० छविनाथ पाण्डेय-लिखित दो अमूल्य ग्रन्थ

इन्द्र धनुष ३॥) माँ की ममता २॥)

राष्ट्रकवि दिनकर-विरचित सभी पुस्तकें

रेणुका	३)	कुरुक्षेत्र
रसवन्ती	२॥)	रश्मिरथी
हुंकार	२)	धूप छाँह
द्वन्द्‌गीत	१॥)	बापू
सामधेनी	२॥)	मिट्टी की ओर
धूप और धुआँ	२॥)	अर्धनारीश्वर
मिर्च का मजा	।।।)	चित्तौर का साका

अर्धनारीश्वर (निबन्ध संग्रह)

पं० मोहनलाल महतो वियोगी के दो अमूल्य ग्रन्थ

बूचड़खाना ३) प्रतिमा २॥)

श्री अनूपलाल मंडल के कुछ उपन्यास

मीमांसा	२॥)	समाज की वेदी पर	१॥)	वे अभागे	५) सविता
दर्द की तस्वीरें	२)	बुझने न पाय	४)	रूप-रेखा	१॥) साकी

श्री अनूप लाल मंडल हिन्दी के अग्रणी उपन्यासकार हैं जिनके उपन्यास भारत भर में प्रसिद्ध हैं और जिनके एक उपन्यास पर फिल्म भी तैयार हुई है।

कुछ बेजोड़ उपन्यास और कथा-साहित्य

लहरों के बीच	२॥)	रात की रानी	२)	गौने की विदा	२)
अविरल आँसू	५)	समानान्तर रेखाएँ	२॥)	निर्माण के चित्र	१।)
हे मेरे देश	१॥)	हरदम आग	२॥)		

प्रकाशक

श्री अजन्ता प्रेस लिमिटेड पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…से आगे]

…, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, १६४, डि०, ४)	प्रगति प्रकाशन
…, २, रघुवीरशरण 'मित्र', १८४, डि०, ३)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
…दि, १, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', डि०, १॥)	विक्रम साहित्य भण्डार
…, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६४, क्रा०, १॥)	अजन्ता प्रेस
…, सियारामशरण गुप्त, ८०, क्रा०, ॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…की बात, १, दामोदरदास खण्डेलवाल, १००, १)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, १, राजकुमार सिंह 'कुमार', ७२, क्रा०, १।)	ओसवाल प्रेस
…के वहक, १, बेढब बनारसी, १२५, क्रा०, २)	कल्याणदास
…, रामचन्द्र शुक्ल, २२६, २॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
…भारती, २४, मैथिलीशरण गुप्त, १८२, क्रा०, २)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, २, राय कृष्णदास, ४०, क्रा०, ॥)	भारती भण्डार
…की अनुभूति, १, जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द', ११६, डि०, २॥)	साहित्य प्रकाशन मन्दिर
…, १, मैथिलीशरण गुप्त, ३३, डि०, ।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, १, राजेन्द्रप्रसाद सिंह, १८४, डि०, ५)	भारती भण्डार
…सोहनलाल द्विवेदी, १४६, डि०, २।॥)	इण्डियन प्रेस
…, केसरी, ३)	पुस्तक भण्डार
…, १, मुंशी अजमेरी, ४०, ॥=)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, १, सुमित्रानंदन पन्त १५१, डि०, ५)	भारती भण्डार
…, १, रामसिंहासन सहाय 'मधुर', ७६, १)	अजन्ता प्रेस
…, रजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ६०, १।)	इण्डियन प्रेस
…, १, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', १४४, ५॥)	भारती प्रतिष्ठान
…के गीत, १, बालकृष्ण बलदुआ, ६४, क्रा०, १)	गंगा ग्रन्थागार
…का महत्त्व, ३, जयशंकरप्रसाद, २४, क्रा०, ॥)	भारती भण्डार
…, १, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', ६४, ॥)	भारती प्रतिष्ठान
…, १, हरिऔध, १७६, डि०, ४॥)	राजपाल
…जी का महाव्रत, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, १)	सुषमा साहित्य मन्दिर
…गीत, १, राजेन्द्र शर्मा, १००, क्रा०, २)	(वितरक) राजकमल प्रकाशन
…माला, १, देवेन्द्रनाथ पाण्डेय, ६६, २)	इण्डियन प्रेस
…, १, गिरिजाकुमार माथुर, ७२, १)	इण्डियन प्रेस
…, १, शम्भूनाथ सिंह, २)	नन्दकिशोर
…, ३, सियारामशरण गुप्त, १५०, क्रा०, २॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, ठाकुर गोपालशरण सिंह, १३०, २)	इण्डियन प्रेस
…, ठाकुर गोपालशरण सिंह, १२०, २॥)	इण्डियन प्रेस
…, माखनलाल चतुर्वेदी, १६१, डि०, ४॥)	भारती भण्डार
…(भाग १), रामनरेश त्रिपाठी, ६६, क्रा०, १)	हिन्दी मन्दिर

…, १६५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव, भगवतीचरण वर्मा, २)
मानव, जयनारायण झा 'विनीत', २)
मिट्टी और फूल, २, नरेन्द्र शर्मा, ६६, डि०, २)
मिलन, रामनरेश त्रिपाठी, १।)
मिलन-यामिनी, १, हरिवंश राय 'बच्चन', २३०, क्रा०, ४)
मेघनाद-वध, २, मैथिलीशरण गुप्त, ४२४, डि०, ६)
मेघमाला, तरल, १३४, क्रा०, २।।)
मेधावी, १, रांगेय राघव, २७४, क्रा०, ३)
मौन के स्वर, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, ४८, क्रा०, ।।।)
मौर्य-विजय, सियारामशरण गुप्त, ३२, क्रा०, ।=)
यशोधरा, १, मैथिलीशरण गुप्त, २६८, क्रा०, ३)
यथार्थ और कल्पना, १, उदयशंकर भट्ट, ८८, डि०, २)
यामा, ३, महादेवी वर्मा, २८०, रा०, १५)
युद्ध, १, मैथिलीशरण गुप्त, ५५, क्रा०, ।।।)
युग-दीप, १, उदयशंकर भट्ट, ७२, डि०, २)
युगवाणी, ३, सुमित्रानन्दन पन्त, १०१, डि०, २।।)
युगाधार, सोहनलाल द्विवेदी, १२६, ३।।)
रक्त-रंजित काश्मीर, शिवसिंह 'सरोज', ।।)
रंग में भंग, मैथिलीशरण गुप्त, २४, क्रा०, ।=)
रक्त-चन्दन, १, नरेन्द्र शर्मा, ७८, डि०, २)
रजत शिखर, १, सुमित्रानन्दन पन्त, १५६, डि०, ५)
रश्मि-रथी, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', १८६, डि०, ५)
रश्मि, महादेवी वर्मा, ६८, डि०, ३)
रतिविलाप, १, विराज, ८०, १।)
रसवन्ती, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', १०२, २।।)
रस-कलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', २।)
रस-सागर, १, भगवद्दत्त 'शिशु', ७७, डि०, २)
रागिनी, गोपालसिंह नेपाली, १)
राजसिंह चरित्र, १, केशरीसिंह बारहठ, २२४, क्रा०, २।।)
राठौर अमरसिंह, १, केशरीसिंह बारहठ, २२
रावण महाकाव्य, हरदयाल सिंह, २६६, डि०, ५)
राष्ट्रीय गायन, ज्योतिलाल भार्गव, ।=)
रेल भंजकों को जगने दो, पाब्लो नेरूदा, अनु० केदार, ।)
रेणुका, रामधारीसिंह 'दिनकर'; ५)
रूठी रानी, १, केशरीसिंह बारहठ, ४०, क्रा०, ।।।)
रूप-दर्शन, १, हरिकृष्ण 'प्रेमी', १८६, डि०, ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कुमार संभव का अनुवाद), श्यामनारायण पाण्डेय, १२६, २)	इण्डियन प्रेस
१, जयशंकरप्रसाद, ८०, क्रा०, १॥)	भारती भण्डार
शक्ति, राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ८०, ।।।)	इण्डियन प्रेस
१, जयशंकरप्रसाद, ८०, क्रा०, १॥)	भारती भण्डार
शक्ति, राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ८०, ।।।)	इण्डियन प्रेस
राजाराम श्रीवास्तव 'पुनीत', ६७, ॥=)	इण्डियन प्रेस
के गीत, १, चन्द्ररेखा वर्मा, ३६, १)	रीगल बुक डिपो
मैथिलीशरण गुप्त, ३८, क्रा०, ॥)	साहित्य सदन, चिरगाँव
के बादल, अंचल, ६२, डि०, ३)	साहित्य भवन
गुरुभक्तसिंह 'भक्त', क्रा०,	नन्दकिशोर
के बोल, १, हरिकृष्ण 'प्रेमी', १२२, क्रा०, २।)	आत्माराम
सोहनलाल द्विवेदी, ११७, २।-)	इण्डियन प्रेस
सोहनलाल द्विवेदी, ८८, २)	इण्डियन प्रेस
सोहनलाल द्विवेदी, ४५, १)	इण्डियन प्रेस
४, मैथिलीशरण गुप्त, ५२, क्रा०, ॥=)	साहित्य सदन, चिरगाँव
५, मैथिलीशरण गुप्त, १६, क्रा०, ।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
व्रजांगना, मैथिलीशरण गुप्त, ३२, क्रा०, ।=)	साहित्य-सदन, चिरगाँव
३, सियारामशरण गुप्त, ४५, क्रा०, ।=)।	साहित्य-सदन, चिरगाँव
स्तवन, १, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन', ३२, रा०, १।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
१, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', डि०, ५)	विक्रम साहित्य भण्डार
१, उदयशंकर भट्ट, ८०, १॥)	गौतम बुक डिपो
१, पोद्दार रामावतार 'अरुण', १६०, ५)	किरण कुञ्ज
१, पोद्दार रामावतार 'अरुण', १०६, २)	किरण कुञ्ज
उर्मिला, १, बालकृष्ण शर्मा नवीन, डि०, ७॥)	अतरचन्द कपूर
१, पोद्दार रामावतार 'अरुण', ३२०, ८)	किरण कुञ्ज
और व्यंग्य, १, पारसनाथसिंह, ३००, ड०, क्रा०, ४)	भारती भण्डार
१, श्यामनन्दनप्रसाद किशोर, ८०, क्रा०, १॥)	भारती भण्डार
और विहार, १, शिवसिंह 'सरोज', २)	गंगा पुस्तक माला
१, अभिराम, ११०, १)	इण्डियन प्रेस
२, मैथिलीशरण गुप्त, १३४, क्रा०, २)	साहित्य सदन, चिरगाँव
वीरा, १, भगवतसिंह 'विशारद', ५२, क्रा०, ॥=)	ओसवाल प्रेस
की वाणी, १, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', ५२, क्रा०, ॥)	सुलभ साहित्य सदन
वियोगी हरि, ६२, १।)	साहित्य भवन
१, श्री सूर्यनारायण मिश्र, १४६, डि०, ५)	भारती भण्डार
२, सुमित्रानन्दन पन्त, १४०, डि०, ३)	भारती भण्डार
मैथिलीशरण गुप्त, २७, डि०, ।=)	साहित्य सदन, चिरगाँव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदेही वनवास, ४, हरिऔध, ३००, का०, ३)
वैदेही, देवदत्त शास्त्री, १४०, १॥)
शकुन्तला, ११, मैथिलीशरण गुप्त, ४८, का०, ॥)
शक्ति, मैथिलीशरण गुप्त, ३०, का०, ।=)
शकुन्तला, १, पोद्दार रामावतार 'अरुण', ६४, १)
शशि-दर्शन, हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', ३)
शर्वाणी, १, अनूप शर्मा, २७०, डि०, ७॥)
शतरूपा, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, १४२, २)
शंकर-सर्वस्व, १, नाथूराम 'शंकर', ५०४, डि०, १२)
शिञ्जिनी, शिवबहादुरसिंह, ११६, का०, १॥=)
श्री राजेश्वरी ग्रन्थावली, राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह 'प्यारे', २१३, ५),
श्री वीर रामायण (महाकाव्य), २, स्वामी रामचन्द्र 'वीर', ८००, का०, ६)
शुकपिक, तारा पांडे, १)
शेफालिका, श्यामनन्दन किशोर, १॥)
शैवाल, १, रामशंकर शुक्ल 'हृदय', १२८, डि०, ३)
स्वप्न और सत्य, १, भगवन्तशरण जौहरी, ८६, डि०, ३)
स्वप्न वासवदत्ता, २, मैथिलीशरण गुप्त, १३०, का०, १)
स्याम सन्देसो, अमृतलाल चतुर्वेदी, ८६, ३)
स्वर्ण किरण, ३, सुमित्रानन्दन पन्त, १७७, डि०, ४)
स्वर्ण धूलि, १, सुमित्रानन्दन पन्त, १६६, डि०, ५)
स्वप्न, रामनरेश त्रिपाठी, १००, १)
स्वर्गीय संगीत, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', १।)
समश्लोकी गीता, ११०, ।)
सरस सुमन, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', ६४, ॥)
सन्त सिपाही, १, शिवसिंह 'सरोज', २०, का०, ।=)
सन्ताप, १, बालकृष्ण बलदुआ, ६४, का०, १)
संगिनी, १, कमल साहित्यालंकार, १५०, डि०, ३)
संचिता, ठाकुर गोपालशरणसिंह, २३०, ३)
संवर्त, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', २)
सरस कुसुम, १, गुरुभक्तसिंह 'भक्त', डि०, १॥)
सामधेनी, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६४, २॥)
साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, ४४२, डि०, ७)
सागरिका, १, गोपालशरणसिंह, १५२, डि०, ३॥)
सान्ध्यदीप, ४, महादेवी वर्मा, ६४०, का०, २॥)
सिद्धार्थ, २, अनूप शर्मा, २६४, ४)
सिद्धराज, १२, मैथिलीशरण गुप्त, १३६, क्राउन, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…ा, १, शम्भुनाथ 'शेष', ६४, डिमाई, २)	राजकमल प्रकाशन
…ा, ठाकुर गोपालशरणसिंह, १०७, २)	इण्डियन प्रेस
…ांजलि, १, अनूप शर्मा, २१६, २।।)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
…न, १, महावीरप्रसाद द्विवेदी, १३५, क्रा०, १)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…, देवदत्त शास्त्री, ८०, १।।)	जनरल स्टोर
…ला चरित, ३, प्रेमनारायण टण्डन, ६२, ।।।)	विद्या मन्दिर
…ा, १, हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', ११२, १)	भारती प्रतिष्ठान
…ामिन, १, विद्यावती 'कोकिल' १००, क्रा०, २)	(वितरक) भारती भण्डार
…-सरोवर, दामोदर सहायसिंह 'कवि किंकर', २)	पुस्तक भण्डार
…न्या चरित्र, ।=)	नन्दकिशोर
…-सरोवर, १, हरिशंकर शर्मा, १७५, १।।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…ग्राम, सोहनलाल द्विवेदी, २३२, १०)	इण्डियन प्रेस
…ी, ८, मैथिलीशरण गुप्त, ४०, क्रा०, ।।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…ाल, १, हरिवंशराय 'बच्चन', ३१८, डि०, ५)	भारती भण्डार
…ाव रुस्तम, डॉ० विद्याभूषण 'विभु', ५६ क्रा०, ।)	कला कार्यालय
…ी घाटी, श्यामनारायण पाण्डेय, २०३, २।।।)	इण्डियन प्रेस
…ौध सतसई, २, हरिऔध, १००, क्रा०, १)	हिन्दी साहित्य कुटीर
…ाहल, १, हरिवंशराय 'बच्चन', १७२, क्रा०, २।।)	भारती भण्डार
…ी प्रार्थना, सियारामशरण गुप्त, १६, –)।	साहित्य सदन, चिरगाँव
… की पैंडी, १, विराज, १२८, क्रा०, १।।)	साहित्य मन्दिर
…माला, १, नरेन्द्र शर्मा, ७२, डि०, २।।)	भारती भण्डार
…ा का भार, दीनानाथ व्यास, १।।)	गंगा पुस्तक माला
…ीचला, १, रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण', १००, डि०, २।।)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
…न्द, ३, मैथिलीशरण गुप्त, ४०५, क्राउन, २)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…दिब्बा, सं० मैथिलीशरण गुप्त, ५०, क्रा०, ।।।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…ी सन्देश, २, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', ५०, डि०, ।।)	सुलभ साहित्य सदन
…तरंगिनी, १, माखनलाल चतुर्वेदी, २००, डि०, ४।।)	भारती भण्डार
…ोल, १, शिवमंगलसिंह 'सुमन' १२२, क्रा०, २)	सरस्वती प्रेस
…ार, १, रामधारीसिंह 'दिनकर', ८७, २)	अजन्ता प्रेस
…सत्ता, २, मुन्शी अजमेरी, ४८, क्रा०, ।।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
…रणा, १, कमलधारीसिंह 'कमलेश', ८८, डि०, २।।)	साहित्य कुटीर, कलकत्ता
…ाम, चन्द्रप्रकाश वर्मा, १०३, क्रा०, १।।)	सुषमा साहित्य मन्दिर

कविता : प्राचीन

…खण्ड, १, भोलानाथ मिश्र, १२५०, क्रा०, १०)	श्याम काशी प्रेस
…ान चित्रावली, २, सत्यजीवन वर्मा, १३०, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
…संग्रह (भाग १), ३, करुणापति त्रिपाठी, १८४, क्रा०, १।।।)	सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुम्भनदास, १, कुम्भनदास, २४५, डि०, ३)
गंगा लहरी, १, अक्षयवट मिश्र, ।।)
गोरख बानी, २, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, २८६, डि०, ६)
गोविन्द स्वामी, १, गोविन्द स्वामी, २१५, डि०, ३)
गोविन्द गीतावली, सं० मथुराप्रसाद दीक्षित, १।।।)
चित्रावली, उसमान कवि, सं० जगन्मोहन वर्मा, १।।)
द्रौपदी विनय अथवा करुण बहत्तरी, १, कन्हैयालाल सहल, ६०, डि०, ।।।)
नटनागर विनोद, सं० कृष्णबिहारी मिश्र, १।)
नव सतसई सार, १, कैलाशनाथ भटनागर, २७५, क्रा०, २।।।)
प्रेमघन सर्वस्व (भाग १) १, प्रभाकरेश्वरप्रसाद उपाध्याय, दिनेशनारायण उपाध्याय, ६००, डि०, ६)
प्रेमघन सर्वस्व (भाग २), १; प्रभाकरेश्वरप्रसाद उपाध्याय, दिनेशनारायण उपाध्याय, ६६०, डि०, १०)
बाँकीदास ग्रन्थावली (तीन भाग), कविराज बाँकीदास, २।।।)
बीसलदेव रास, १, डा० माताप्रसाद गुप्त, अगरचन्द नाहटा, ३२०, क्रा०, ३।।)
महात्मा अक्षर अनन्य कृत प्रेम-दीपिका, १, ला० सीताराम, ८०, क्रा०, १)
लंका-दहन, लक्ष्मीनारायण सिंह 'ईश', १६०, १।)
रहिमन विलास, २, व्रजरत्नदास, २८०, क्रा०, २)
व्रजनिधि ग्रन्थावली, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ३)
व्रजमाधुरी सार, १०, वियोगी हरि, ३८८, क्रा०, ४)
व्रज-रज, २, राय कृष्णदास, ६४, क्रा०, ।।)
व्रज-काव्य-वैभव, सं० केसरीकुमार सिंह, ३)
वीर-काव्य, १, डॉ० उदयनारायण तिवारी, ५७०, क्रा०, ६)
सतसई सप्तक, १, सं० डॉ० श्यामसुन्दरदास, ६५०, रा०, ८)
सन्तवाणी, १
संत दादू और उनकी वाणी, १, अज्ञात संत, १२८, क्रा०, २।।)
सन्त सुधा-सार, १, वियोगी हरि, ६५३, डि०, ११)
सुन्दर दर्शन, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, ३१५, डि० ६)
स्वामी हरिदास, १, शरणबिहारी गोस्वामी 'अभय', ३००, क्रा०, २।)
सुन्दर सार, १, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, १।।)
सुदामा चरित, ३, प्रेमनारायण टण्डन, ६२, क्रा०, ।।।)
सूफ़ी काव्य-संग्रह, १, परशुराम चतुर्वेदी, २५६, क्रा०, ३)
हम्मीर रासो, कवि जोधराज, सं० डॉ० श्यामसुन्दरदास, २।)
हम्मीर हठ, चन्द्रशेखर कवि, ।।=)
हिम्मत बहादुर बिरुदावली, पद्माकर, ।।)
हिन्दी प्रेम-गाथा-काव्य संग्रह, २, गणेशप्रसाद द्विवेदी, गुलाबराय, ४१४, क्रा०, ६।।)
हिन्दी सन्त-काव्य-संग्रह, १, गणेशप्रसाद द्विवेदी, ३४४, क्रा०, ५)

विद्या विभाग, काँकरोली
पुस्तक भवन
सम्मेलन
विद्या विभाग, काँकरोली
पुस्तक भवन
नागरी प्रचारिणी सभा
भारती भवन
नागरी प्रचारिणी सभा
इण्डियन प्रेस
सम्मेलन
सम्मेलन
नागरी प्रचारिणी सभा
प्रयाग विश्वविद्यालय
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
नागरी प्रचारिणी सभा
रामनारायणलाल
नागरी प्रचारिणी सभा
सम्मेलन
भारती भवन
पुस्तक भवन
भारती भवन
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
गांधी ग्रन्थागार
राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स
मण्डल
किताब महल
वाणी प्रकाशन मन्दिर, वृन्दावन
नागरी प्रचारिणी सभा
विद्या मन्दिर
सम्मेलन
नागरी प्रचारिणी सभा
नागरी प्रचारिणी सभा
नागरी प्रचारिणी सभा
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
हिन्दुस्तानी एकेडेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी-कला

कहानी-कला, ४, विनोदशंकर व्यास, १५०, क्रा०, १॥)	हिन्दी साहित्य कुटीर
कहानी के तत्त्व, १, शिवनन्दन प्रसाद, ३४, क्रा०, १।=)	मानसरोवर
कहानी और कहानीकार, १, मोहनलाल 'जिज्ञासु', १६६, डि०, ३)	आत्माराम
कहानी-कला और कलाकार, १, व्यथित हृदय, १७६, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
कहानी-कला और उसका विकास, १, छविनाथ त्रिपाठी, २२०, क्रा०, ३)	साहित्य सदन
हिन्दी-कहानी की शिल्प-विधि का विकास, १, डॉ० लक्ष्मीनारायणलाल, ३६२, डि०, १०)	साहित्य भवन
हिन्दी-कहानी और कहानीकार, १, वासुदेव एम० ए०, २२४, क्रा०, ३॥)	वाणी विहार
हिन्दी-कथा-साहित्य, १, गंगाप्रसाद पाण्डेय, २३७, क्रा०, ३)	भारती भण्डार
हिन्दी-कथा-साहित्य, १, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, क्रा०, ४)	इण्डियन प्रेस

काव्य-विवेचन

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि, १, डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल, ४६०, रा०, ६)	लखनऊ विश्वविद्यालय
आधुनिक कविता की भाषा, १, ब्रजकिशोर चतुर्वेदी, ५४०, क्रा०, ६)	गया प्रसाद एण्ड संस
आधुनिक हिन्दी-काव्य में नारी-भावना, १, डॉ० शैलकुमारी, २७६, रा०, ७)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
आधुनिक काव्य और दर्शन, १, पद्मचन्द्र अग्रवाल, २०० क्रा०, २॥)	सरस्वती पुस्तक सदन
आधुनिक काव्य-धारा, डॉ० केसरीनारायण शुक्ल, ४॥)	नन्दकिशोर
आधुनिक काव्य-धारा का सांस्कृतिक स्रोत, १, डॉ० केसरीनारायण शुक्ल, २३१, डि०, ३॥)	नन्दकिशोर
आधुनिक कवियों की काव्य-साधना, ५, राजेन्द्रसिंह गौड़, ३५०, क्रा०, ३)	श्रीराम मेहरा
आधुनिक हिन्दी-कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, १, डॉ० नगेन्द्र, १२४, डि०, ३॥)	गौतम बुक डिपो
आधुनिक तीन महाकाव्य (कामायनी, प्रिय प्रवास, साकेत), १, भारत भूषण सरोज, २००, क्रा०, ३)	विनोद पु० म०
आधुनिक गीति-काव्य, १, सच्चिदानन्द तिवारी, १७६, क्रा०, २॥)	किताब महल
उत्तरी भारत की सन्त-परम्परा, १, परशुराम, चतुर्वेदी ८००, डि०, १२)	भारती भण्डार
उपन्यास-काव्य की रूप-रेखा, २, वेदमित्र व्रती, २५४, क्रा०, ३॥)	ओरियण्टल बुक डिपो
काव्य-चिन्तन, १, डॉ० नगेन्द्र, १४८, डि०, ३)	गौतम बुक डिपो
काव्य में प्रकृति-चित्रण, १, रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण', १, ११०, क्रा०, ३॥)	नैशनल पब्लिशिंग हाउस
काव्य में रहस्यवाद, किशोरीदास वाजपेयी, क्रा०, ।=)	हिमालय एजेंसी
तसव्वुफ और सूफी मत, २, आचार्य चन्द्रबली पाण्डे, ४)	नन्दकिशोर
तुलनात्मक अध्ययन, १, कृष्णचन्द्र शर्मा, देवीशरण रतौगी, १६७, डि०, ३)	आत्माराम
नवयुग-काव्य-विमर्श, १, ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल', क्रा०,	गंगा पुस्तक माला
निर्गुण काव्य-दर्शन, १, सिद्धिनाथ तिवारी, ५०४, क्रा०, ५)	अजन्ता प्रेस
निर्गुण धारा, १, बैजनाथ, विश्वनाथ, २५६, क्रा०, ३)	मानसरोवर
प्रकृति और काव्य (हिन्दी खण्ड), १, डॉ० रघुवंश, ५३२, क्रा०, ६॥)	साहित्य भवन
प्रकृति और काव्य (संस्कृत खण्ड), १, डॉ० रघुवंश, ५६८, क्रा, ६॥)	साहित्य भवन
प्राचीन और नवीन काव्य-धारा, २, सूर्यबलीसिंह, १४२,क्रा०, २)	नन्दकिशोर
प्राचीन कवियों का काव्य-भावना, १, सुरेशचन्द्र गुप्त, ६४, क्रा०, १॥)	आत्माराम
प्राचीन कवियों की काव्य-साधना, राजेन्द्रसिंह गौड़, २५०, क्रा०, २॥)	साधना सदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजभाषा-साहित्य का सौन्दर्य, १, प्रभुदयाल मीतल, ३००, डि०, ४)
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ, १, डॉ० सावित्री सिनहा, ३१७, डि०, ८)
मध्यकालीन धर्म-साधना, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २३८, क्रा०, ३)
मध्यकालीन प्रेम-साधना, १, परशुराम चतुर्वेदी, २००, क्रा०, ३)
रीति-काव्य की भूमिका (पूर्वार्द्ध), २, डॉ० नगेन्द्र, १७६, डि०, ५)
रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति, १, डॉ० रामचन्द्र तिवारी, १२०, क्रा०, १॥)
रीतिकालीन कविताएँ एवं शृंगार रस का विवेचन, डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, ५६०, क्रा०, ६॥)
सन्त काव्य, परशुराम चतुर्वेदी, ५७६, क्रा०, ६)
सन्त दर्शन, १, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, ३२०, क्रा०, ४॥)
सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन, १, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, ५००, रा०, १४)
सुकवि-संकीर्तन, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी,
सुन्दर-दर्शन, १, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, ३१३, डि०, ५)
हिन्दी-कविता, डॉ० रामरतन भटनागर, २६४, क्रा०, २॥)
हिन्दी भारती (भाग १), १, डॉ० रामरतन भटनागर, ४६४, क्रा०, ४)
हिन्दी भारती (भाग २), १, डॉ० रामरतन भटनागर, ४२८, क्रा०, ४)
हिन्दी काव्य धारा में प्रेम-प्रवाह, १, परशुराम चतुर्वेदी, २६६, क्रा०, ३।।।)
हिन्दी-काव्य पर आंग्ल प्रभाव, १, डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा, २८०, डि०, ५)
हिन्दी कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन, १, विराज, २४०, क्रा०,३)
हिन्दी-कविता में युगान्तर, १, डॉ० सुधीन्द्र, ५४६, डि०, २)
हिन्दी-कवियों की आलोचना, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, ४॥)
हिन्दी-कवि-चर्चा, आ० चन्द्रबली पाण्डेय, २८८, क्रा०, ३।।।
हिन्दी-काव्यकार, १, डॉ० इन्द्रनाथ मदान, ३२१, क्रा०, ३॥)
हिन्दी काव्य-शास्त्र, १, आ० शान्तिलाल 'बालेन्दु', २३२, क्रा०, ४)
हिन्दी-काव्य में सौन्दर्य-भावना, १, शकुन्तला शर्मा, २४०, क्रा०, ४)
हिन्दी-काव्य-दर्शन, १, हीरालाल तिवारी, ६००, क्रा०, ६।)
हिन्दी-काव्य की प्रवृत्तियाँ, १, ८२, डि०, २)
हिन्दी-काव्य में प्रकृति, १, रामचन्द्र श्रीवास्तव, १३१, क्रा०, २)
हिन्दी-काव्य में प्रकृति-चित्रण, १, डॉ० किरणकुमारी गुप्त, ५००, डि०, ६)
हिन्दी के वर्तमान कवि और उनका काव्य, १, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', २५० क्रा०, ४)
हिन्दी-महाकाव्य और महाकाव्यकार, १, रामचरण महेन्द्र, १८५, क्रा०, २।)
हिन्दी के प्रतिनिधि कवि, प्रेमनारायण टण्डन, लक्ष्मीनारायण टण्डन, ३३३, क्रा०, ४)
हिन्दी-काव्य-धारा, राहुल सांकृत्यायन, ४६६, क्रा०, ८)
हिन्दी-काव्य में निर्गुण-सम्प्रदाय, १, डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, ४४२, क्रा०, ७)
हिन्दी-गीति-काव्य, २, ओमप्रकाश अग्रवाल, २६८, क्रा०, ३)
हिन्दी-कवियों की काव्य-साधना, १, दुर्गाप्रसाद मिश्र, ४॥)
हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य, १, रोशनलाल सिंहल, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमाख्यानक काव्य (१५००-१७५०), १, डॉ० कमल कुलश्रेष्ठ, ४२७, क्रा०, ७।।)	चौधरी मानसिंह प्रकाशन

कृषि तथा ग्रामोद्योग

भोजन उपजाओ, शीतलप्रसाद तिवारी, क्रा०, २।।)	गंगा पुस्तक माला
पशु चिकित्सा, सुरेन्द्रसिंह, क्रा०, १।।)	गंगा पुस्तक माला
की खेती, रामप्रसाद, क्रा०, १)	गंगा पुस्तक माला
कृषि विज्ञान, १, शिवप्रसाद ढौंडियाल, ३२५, क्रा०, ५)	हिन्दुस्तानी बुक डिपो
४, शंकरराव जोशी, २२८, ३)	गंगा पुस्तक माला
मित्र, गंगाप्रसाद, ।।=)	गंगा पुस्तक माला
शास्त्र, १०, तेजशंकर कोचक, ४००, क्रा०, २।।।=)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
की कामधेनु, गंगाप्रसाद, ।।=)	गंगा पुस्तक माला
तथा तरबूज की काश्त, चारुचन्द्र सान्याल, ।–)	गंगा पुस्तक माला
का उपयोग, २, दुर्गाप्रसाद सिंह, १२०, क्रा०, १।)	ज्ञानमण्डल
विज्ञान, गुप्तनाथसिंह, १५०, १।)	नागरी प्रचारिणी सभा
, ३, भगीरथप्रसाद दीक्षित, २७४, ३।।।)	गंगा पुस्तक माला
और पंचायत, १, चन्द्रोपय दीक्षित, १२०, क्रा०, १।)	राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर
सुधार, ४, ओमप्रकाश त्रिखा, १३६, क्रा०, १।)	मण्डल
की खेती, बी० एस० निगम,	गंगा पुस्तक माला
बनाने की विधि, देवदत्त अरोड़ा, ३२०, रा०, ४)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
की खेती, व्यथित हृदय, ।।।)	गंगा पुस्तक माला
जीवन, गंगाप्रसाद पंचोली, १)	गंगा पुस्तक माला
, श्रीराम शर्मा, ।)	विशाल भारत बुक डिपो
का इलाज, ६, परमेश्वरीदास गुप्त, १४४, क्रा०, ।।)	मण्डल
की खेती और व्यवसाय, ७, ना० दु० व्यास, २२४, क्रा०, २।।।=)	मण्डल
में उद्यानकारी, १, अमरनाथ बिंदल, २०४, क्रा०, ३)	किताब महल
की खेती, चारुचन्द्र सान्याल, ।।)	गंगा पुस्तक माला
पालन, शम्भुनाथ सक्सेना, ४५, क्रा, ।।=)	नूतन प्रकाशन मन्दिर
शास्त्र, डॉ०, धर्मनारायण, ३६५, ६)	किताब महल
उत्पादन, १, शिवनाथ झा, ६२, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
शास्त्र, १, ए० सी० दत्त, डि०, १०)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
पशु-चिकित्सा, १, जगन्नाथ, सत्यदेव, ३२०; क्रा०, ४)	पुस्तक मन्दिर, मथुरा
भाजी की खेती, ८, ना० दु० व्यास, १३४, क्रा०, ३)	मण्डल
तथा अदरक की खेती, चारुचन्द्र सान्याल, क्रा०, ।=)	गंगा पुस्तक माला
से कागज़ बनाना, शम्भुनाथ सक्सेना, क्रा०, ।=)	गंगा पुस्तक माला

केशव

केशवदास, १, डॉ० हीरालाल दीक्षित, रा०, १०)	लखनऊ विश्वविद्यालय

र, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशव-पंचरत्न, १, लाला भगवानदीन, २६४, क्रा०, १।।)
केशव-कौमुदी (प्रथम भाग), ७, लाला भगवानदीन, २८५, क्रा०, २।।)
केशव-कौमुदी (द्वितीय भाग), ४, लाला भगवानदीन, मोहनवल्लभ पन्त, ३४०, क्रा०, २।।)
केशवदास, १, डॉ० रामरतन भटनागर, १८६, क्रा०, २।।=)
रामचन्द्रिका (पूर्वार्द्ध), ७, लाला भगवानदीन, ३७५, क्रा०, ३)
रामचन्द्रिका (उत्तरार्द्ध), ४, लाला भगवानदीन, २८५, क्रा०, २)
रामचन्द्रिका, १, लाला भगवानदीन, १६५, क्रा०, १।।)
रामचन्द्रिका, १, पुरुषोत्तम भार्गव, २६४, क्रा०, २।।)
संक्षिप्त रामचन्द्रिका, १, जगन्नाथ तिवारी, ६२, क्रा०, २)

कोष तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ

अजन्ता बाल हिन्दी शब्द कोष, ८, छविनाथ पाण्डेय, ४।।)
आरक्षिक शब्दावली, रामचन्द्र वर्मा और गोपालचन्द्रसिंह, ४०, रा०, ।।)
आदर्श हिन्दी शब्द कोष, आर० सी० पाठक, ८८०, ६)
उर्दू-हिन्दी कोष, ५, रामचन्द्र वर्मा, ४६४, क्रा०, ४।।)
कृषि शब्दावली, प्यारेलाल गर्ग, ।)
जीवन रसायन कोष, व्रज किशोर मालवीय, १००, क्रा०, १/८ ६)
तुलसी शब्द सागर, १, सम्पादक मण्डल, ५००, रा०, १२)
नालन्दा विशाल शब्द सागर, नवल जी, १५५२, १५)
नालन्दा हिन्दी शब्द कोष, नवल जी, ८२५, ३।।)
नारायण हिन्दी शब्द सागर, १, श्यामसुन्दर लाल दीक्षित, ७६०, क्रा०, ५।)
प्रचारक हिन्दी शब्द कोष, लालधर त्रिपाठी प्रवासी, १२)
प्रत्यक्ष शारीर कोष, एस० सी० सेन गुप्ता, २००, क्रा० १/८, ८)
पारिभाषिक शब्द कोष, १, मुकन्दीलाल श्रीवास्तव, ४६६, क्रा०, ४)
प्रामाणिक हिन्दी कोष, २, रामचन्द्र वर्मा, १६००, डि०, १२।।)
प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोष, डॉ० सूर्यकान्त, १०२८, ५)
बृहद् पर्यायवाची कोष, १, भोलानाथ तिवारी, ५५५, डि०, ७।।)
बृहद् हिन्दी कोष, १, कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकन्दी लाल श्रीवास्तव, १६४४, रा०, २०)
ब्रजभाषा सूर कोष (चार भाग), १, डॉ० दीनदयाल गुप्त, क्रा०, १२)
भार्गव आदर्श हिन्दी शब्द कोष, आर० सी० पाठक, ६८४, १२)
भार्गव बाल हिन्दी शब्द कोष, आर० सी० पाठक, ६५६, ३)
भाषा शब्द कोष, ३, डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', २०२४, १२)
भूतत्त्व विज्ञान कोष, १, एस० डी० सेन गुप्त, ५२, क्रा०, , २।।)
हिन्दी समाचार-पत्र-सूची, १, बंकठलाल ओझा, ८२, क्रा०,
विद्यार्थी हिन्दी-मराठी कोष, १, श्रीपद जोशी, क्रा०, २)
राजकाज शब्द कोष, १, सोमदेव उपाध्याय, डि०, १५)
राजकीय कोष, २, गोरखनाथ चौबे, ८२, क्रा०, १।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...डु, रूपलाल वैश्य, ६४, डि०, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...शब्द कोष, कान्तानाथ गर्ग, ६७, १॥)	किताब महल
...परिचय, १, हरिबाबू कंसल, ४४२, क्रा०, ६)	मेहरचन्द मुन्शीराम
...भारती, १, बच्चीलाल गुप्त, १०६, क्रा०, १॥)	मयूर प्रकाशन
...ज्ञान-भारती, १, रामनारायण यादवेन्दु, ५४०, डि०, १०)	अजन्ता प्रेस
...हिन्दी कोष, पारसनाथ तिवारी, ५५६, २॥)	श्याम प्रकाशन मन्दिर
...संक्षिप्त हिन्दी-कोष, पारसनाथ तिवारी, ४०४, ४)	श्याम प्रकाशन मन्दिर
...शब्द-कोष, १, सं० राहुल साकृत्यायन ४५०, क्रा०, १५)	सम्मेलन
...परिषद् शब्दावली, रामचन्द्र वर्मा और गोपालचन्द्र सिंह, ४०, ॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
...पत्र शब्द कोष, ३, डॉ० सत्यप्रकाश, १४६, डि०, १॥।)	किताब महल
...राष्ट्र-भाषा कोष, ६१७, ५)	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
...हिन्दी-कोष, १, भोलानाथ तिवारी, ६११, डि०, ३)	सम्मेलन
...हिन्दी शब्द-सागर, रामचन्द्र वर्मा, १३५०, १५)	नागरी प्रचारिणी सभा
...स्तानी कोष, १, हरिशंकर शर्मा, ६३१, क्रा०, ६)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
...स्तानी शब्द-कोष, ३)	पुस्तक भण्डार
...की पत्र-पत्रिकाएँ, १, अखिल विनय, २००, डि०, ३॥)	पिलानी इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन
...पुस्तक साहित्य, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, १२)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...मुहावरा कोष, १, भोलानाथ तिवारी, ५८८, डि०, ७॥)	किताब महल
...मुहावरा कोष, १, डॉ० आर० जे० सरहिन्दी, ५४०, क्रा०, ३)	रामनारायणलाल
...राष्ट्र-भाषा कोष, १, विश्वेश्वरनारायण श्रीवास्तव, देवीप्रसाद चतुर्वेदी 'मस्त', १५८०, क्रा०, १४)	इण्डियन प्रेस
...विश्वभारती, छः खण्डों में, कृष्णवल्लभ द्विवेदी, ३२९८, डि० ⅛, १०५)	विश्वभारती
...शब्द कोष, १, डॉ० सूर्यकान्त, १०२८, डि०, ५)	कपूर ब्रदर्स
...शब्दानुशासन, १, शिवप्रसाद शास्त्री, १६२, क्रा०, २)	माधव पुस्तकालय
...साहित्य की अन्तर्कथाएँ, भोलानाथ तिवारी, १८२, २॥)	किताब महल
...सेवी संसार, २, प्रेमनारायण टण्डन, ७००, क्रा०, ७॥)	विद्या मन्दिर

गद्य-काव्य

...त्मा से, १, रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, ६९, डि०, २)	राजकमल प्रकाशन
...सव, ४, चतुरसेन शास्त्री, २००, क्रा०, २॥)	गौतम बुक डिपो
...न, १, दिनेशनन्दिनी डालमिया, डि०, ३)	साहित्य भवन
...ली, १, दिनेशनन्दिनी डालमिया, क्रा०, १)	नन्दकिशोर
...जली, ३, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, २३२, क्रा०, ३)	राजपाल
...और गुलाब, रामवृक्ष बेनीपुरी, १२५, रा०, ५)	जनवाणी प्रकाशन
...य, रायकृष्णदास, क्रा०, ।=)	भारती भण्डार
...कथा, १, डॉ० रघुबीर सिंह, १८२, क्रा०, ३)	राजकमल प्रकाशन
...धूलि, १, डॉ० रघुबीर सिंह, ७२, डि०, १॥)	राजकमल प्रकाशन

...म्बर, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखे, १, सुदर्शन, ८०, क्रा०, १।।)
ठंडे छींटे, २, वियोगी हरि, १००, क्रा०, ।।।)
दुपहरिया के फूल, १, दिनेशनन्दिनी डालमिया, ८८, क्रा०, १।)
निर्झर और पाषाण, तेजनारायण काक, ६४, क्रा०, १।।)
निशीथ, १, ब्रह्मदेव, ३४, क्रा०, ।)
पगला, रायकृष्णदास, क्रा०, ।।)
प्रवाल, रायकृष्णदास, ३६, क्रा०, ।=)
पूजा, १, रामप्रसाद विद्यार्थी, रावी' क्रा०, २)
बिखुरी पंखुड़ियाँ, फूलकुमारी शुक्ल, १०६, डि०, १।।)
माला, १, डॉ० सोमनाथ गुप्त, क्रा०, ।।।)
स्पन्दन, १, दिनेशनन्दिनी डालमिया, डि०, ३।।)
साधना, १, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, १२६, क्रा०, २)
साधना, ४, रायकृष्णदास, ११३ क्रा०, १)
सारंग, १, दिनेशनन्दिनी डालमिया, डि०, २।।।)
संलाप, रायकृष्णदास, क्रा०, ।=)
शबनम, दिनेशनन्दिनी डालमिया, ८८, क्रा०, १।।)
शारदीया, दिनेशनन्दिनी डालमिया, १।।)
शेष स्मृतियाँ, २, डॉ० रघुबीरसिंह, १६१, डि०, ४)
शैतान, १, खलील जिब्रान, १०६, क्रा०, १।)
शुभ्रा, १, रामप्रसाद विद्यार्थी 'रावी', क्रा०, २)
श्रद्धाकण, १, वियोगीहरि, ६७, क्रा०, १)
हिमहास, १, डॉ० रामकुमार वर्मा, ८८, क्रा०, १।।)

गांधी-साहित्य तथा सर्वोदय-साहित्य

अनासक्ति योग, ६, म० गांधी, २२८, क्रा० १।।)
अनीति की राह पर, ७, म० गांधी, १६७, क्रा०, १)
अहिंसा की शक्ति, २, रि० बी० ग्रेग, १५६, क्रा०, १।।)
आरोग्य की कुञ्जी, म० गांधी, ।।)
आत्मकथा (सम्पूर्ण), १२, म० गांधी, ५३०, क्रा०, ५)
आत्मकथा (संक्षिप्त), १०, म० गांधी, २३०, क्रा०, १।।)
आत्मकथा (सं० उर्दू), म० गांधी, २३०, क्रा०, १।।)
आदर्श भारत की रूपरेखा, म० गांधी, १४३, २।।)
आश्रमवासियों से, २, म० गांधी, ६७, क्रा०, ।=)
आज का विचार, २, म० गांधी, ६६, क्रा०, ।=)
आरोग्य की कुञ्जी, गांधीजी,
ईशावास्योपनिषद्, ३, विनोबा, २०, क्रा०, =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

…त्स्मृति, ३, विनोबा, ७६, का०, ।।।)	मण्डल
…में गांधीजी, ३, महादेव देसाई, २०४, का० २),	मण्डल
…धर्मयुद्ध, २, महादेव देसाई, १०२, ।।।)	नवजीवन प्रकाशन
…का चमत्कार, मनुबहन, १३२, १।)	नवजीवन प्रकाशन
…वास-कहानी, १, सुशीला नैयर, ४५६, डि०, १०)	मण्डल
…की कमी और खेती, गांधीजी, ३१३, २।।)	नवजीवन प्रकाशन
…सेवा, २, अनु० रामनारायण चौधरी, १८०, ।।)	नवजीवन प्रकाशन
…माता, १, म० गांधी, ५७४, ४)	मण्डल
…बोध, १०, म० गांधी, ८६, का०, ।।)	मण्डल
…प्रवचन, ८, विनोबा, २४८, का०, १।।।)	मण्डल
…और विश्वधर्म, १, म० गांधी, ११२, १।)	नवजीवन प्रकाशन
…अमृत वाणी, प्रभुदयाल विद्यार्थी, १५६, १।।।)	अजन्ता प्रेस
…की कहानी, १, लुईफिशर, अनु० चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय ३६४, का०, ४)	मण्डल
…गौरव, गोकुलचन्द्र शर्मा, १)	नवयुग साहित्य सदन
…शिक्षा (३ भाग), म० गांधी, १४२, का०, १=)	मण्डल
…चित्रावली, २, जीतमल लूणिया, १४४, का०, १)	हिन्द साहित्य मन्दिर
…जी की देन, १, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, १०६, का०, १।।)	मण्डल
…मार्ग, १, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, २०, का०, =)	मण्डल
…विचार-दोहन, ६, किशोरीलाल मशरूवाला, १८८, का०, १।।)	मण्डल
…वाद और समाजवाद, ५, (प्रस्तावना डॉ० राजेन्द्रप्रसाद) १८१, का०, २)	मण्डल
…जी का विद्यार्थी जीवन, १, अशोक, ३२, का०, ।=)	मण्डल
…जी को श्रद्धांजलि, ३, विनोबा, ५१, का०, ।=)	मण्डल
…दर्शन, विश्वनाथ, ६३, ।।।)	राजपाल
…जी की संक्षिप्त आत्मकथा, अनु० काशीनाथ त्रिवेदी, २७०, १।।)	नवजीवन प्रकाशन
…जी, ५, जुगतराम दुवे, ११३, ।।।)	नवजीवन प्रकाशन
…साहित्य सूची, पांडुरंग गणेश देशपांडे, २५१, ३।)	नवजीवन प्रकाशन
…गौरव, १, रामदास मिश्र, २०, ।)	नवजीवन प्रकाशन
…और साम्यवाद, किशोरीलाल मशरूवाला, १६२, १।)	नवजीवन प्रकाशन
…गीता, प्रो० इन्द्र, २)	राजहंस प्रकाशन
…जी—जैसा मैंने देखा, आर० आर० दिवाकर, १।।)	राजहंस प्रकाशन
…चरित मानस, १, बा० गो० देसाई, ८०, का०, ।=)	नवजीवन प्रकाशन
…जी के संपर्क में, १, दर्शन, २४४, ३।)	वोरा एण्ड कम्पनी
…जी के जीवन प्रसंग, १, चन्द्रशंकर शुक्ल, का०, ६)	वोरा एण्ड कम्पनी
…जी की यूरोप यात्रा, १, म्यूरियल लिस्टर, का०, २।)	वोरा एण्ड कम्पनी
…वाद की रूपरेखा, ४, रामनाथ सुमन, भू० ले० डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, २)	साधना सदन
…वाणी, ४, सं० रामनाथ सुमन, ३००, ३।।)	साधना सदन

…म्बर, १९५४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी मार्ग, ३, आचार्य कृपलानी, २॥)
ग्राम सेवा, ७, म० गांधी, ७०, क्रा०, ।=)
ग्राम सेवा के दस कार्यक्रम, पुनर्मुद्रण, जगतराम दुबे, १३१, १)
जमाने की माँग, १, विनोबा, २८, क्रा०, =)
जड़मूल से क्रान्ति, किशोरीलाल मशरूवाला, १६८, १॥)
जीवन और शिक्षण, १, विनोबा, २२४, क्रा०, २)
तपोधन विनोबा, १, बाबूराम जोशी, २१२, १॥)
अफ्रीका का सत्याग्रह, ३, महात्मा गांधी, ४२६, क्रा०, ३॥)
दरिद्र नारायण, महात्मा गांधी, २)
दिल्ली डायरी, गांधीजी, ४१६, क्रा०, ३)
देवदूत गांधी, प्रभुदयाल विद्यार्थी, १)
देहाती घरों की सफाई, श्रीदत्त, १॥)
दण्ड निरपेक्ष समाज-रचना, १, धीरेन्द्र मजूमदार, ६०, क्रा०, ।)
धर्मचक्र प्रवर्त्तन, १, विनोबा, ६७, क्रा०, ।)
धर्म और नीति, १, महात्मा गांधी, ४०, ।=)
धर्मनीति, १, महात्मा गांधी, २५६, क्रा०, २)
नई क्रान्ति के गीत, १, लक्ष्मीनारायण भारतीय, ५३, क्रा०, ।)
नई तालीम और समाज का नवनिर्माण, १, धीरेन्द्र मजूमदार, ४४, क्रा०, ।)
नव-भारत, ३, रामकृष्ण शर्मा,
नेहरू चित्रावली, ८६, चित्र, १)
नीतिधर्म, २, महात्मा गांधी, ४८, क्रा०, ।=)
पन्द्रह अगस्त के बाद, १, महात्मा गांधी, २३६, क्रा०, अजिल्द १॥), सजिल्द २)
प्रार्थना-प्रवचन (दो भाग), १, महात्मा गांधी, ८३४, क्रा०, ५॥)
प्रार्थना का महत्त्व, महात्मा गांधी, १॥)
बच्चों के बीच बापू, आ० रामलोचन शरण, २)
बापू के समीप, आ० रामलोचन शरण, २)
बापू जी की कहानी (पाँच भागों में), आ० रामलोचन शरण, २॥)
बुनियादी शिक्षा, २, गांधीजी, १७२, १॥)
बालकों के बापू, आ० रामलोचन शरण, २)
बापू के कदमों में, राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, २७२, क्रा०, ५)
बापू, ५, घनश्यामदास बिड़ला, १२५, क्रा०, २)
बापू, रामधारीसिंह 'दिनकर', ६४, १॥)
बापू का बलिदान हमारे लिए खुली चुनौती है, नवीननारायण अग्रवाल, १।)
बापू की सीख, १, महात्मा गांधी, ८८, क्रा०, ॥)
बापू के आश्रम में, १, हरिभाऊ उपाध्याय, ६५, क्रा०, १)
बापू के चरणों में, २, ब्रजकृष्ण चाँदीवाला, १७३, क्रा०, २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...के आशीर्वाद, १, आनन्द टी० हिंगोरानी, ३१२, डि०, १०)	(वितरक) मण्डल
...की पावन स्मृतियाँ, १, १०१, रा०$\frac{1}{2}$, ६॥)	हिन्दुस्तान टाइम्ज़
...का नरलोक और देवलोक, ३, सीताराम गोस्वामी, ७४, क्रा०, १॥)	मयूर प्रकाशन
...से सीखो, विश्वनाथ, ४८, ॥=),	राजपाल
...के हरिजन, महात्मा गांधी, २)	गंगा पुस्तक माला
...का महा प्रयाण, सम्पतराय भटनागर, ।-)	गंगा पुस्तक माला
...के पत्र,—१, अनु० रामनारायण चौधरी, १३६, २।)	नवजीवन प्रकाशन
...के पत्र,—२, अनु० रामनारायण चौधरी, ४३२, ३॥)	नवजीवन प्रकाशन
...के पत्र मीरा के नाम, अनु० रामनारायण चौधरी, ४०६, ४)	नवजीवन प्रकाशन
...पोथी, महात्मा गांधी ३२, ≡)	नवजीवन प्रकाशन
...—मेरी माँ, मनुबहन, ५६, ॥=)	नवजीवन प्रकाशन
...की ईश्वर-प्रार्थना, १, महात्मा गांधी, २०, ।)	नवजीवन प्रकाशन
...और भारत, कमलापति त्रिपाठी, ५)	नन्दकिशोर
...और मानवता, कमलापति त्रिपाठी, ५)	नन्दकिशोर
...बापू और भाई, २, देवदास गांधी, ४८, क्रा०, ॥)	मण्डल
...के चरणों में, कमलापति त्रिपाठी, १॥)	नन्दकिशोर
...र्य (भाग १), ४, महात्मा गांधी, १६०, क्रा०, १)	मण्डल
...र्य (भाग २), १, महात्मा गांधी, १२८, १)	मण्डल
...लाल बापू, राजेन्द्रदेव सेंगर, ।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...वान् बुद्ध के चरण-चिह्नों पर, १, विनोबा भावे,	लोकोदय प्रकाशन
...न-यज्ञ, विनोबा भावे, १६०, १।)	नवजीवन प्रकाशन
...न-यज्ञ, ५, आचार्य विनोबा, ४७, क्रा०, ।।)	मण्डल
...म दीपिका, १, विमला ठकार, २७, क्रा०, =)	सर्व सेवा संघ
...देव भाई की डायरी (तीन भाग), नरहरि पारीख, ४१२, १६)	नवजीवन प्रकाशन
...प्रयाण, १, सीताराम गोस्वामी, २०४, क्रा०, २॥)	मयूर प्रकाशन
...प्रयाण, १, मनोहरलाल, भगवतीप्रसाद पांथरी, १२०, क्रा०, ४।।।)	सरस्वती प्रेस
...तीय क्रान्ति, १, दादा धर्माधिकारी, ५६, क्रा०, ।)	सर्व सेवा संघ
...स-सुधा, विनोबा भावे, १६२, डि०, १।)	सुषमा साहित्य मन्दिर
...समकालीन, १, महात्मा गांधी, ६४३, क्रा०, ५)	मण्डल
...प्रभात, ८, महात्मा गांधी, ५६, क्रा०, ।=)	मण्डल
...धार गांधी, २, रामनाथ सुमन, २००, २॥)	साधना सदन
...पुरुष : महात्मा गांधी (दो भाग), १, एस० मनोहरलाल, भगवतीप्रसाद पांथरी, ७७१, क्रा०, ११॥)	सरस्वती प्रेस
...पुरुष, कमलापति त्रिपाठी, १॥)	नन्दकिशोर
...त्मक कार्यक्रम, २, गांधीजी, ४४, ।=)	नवजीवन प्रकाशन
...नाम, महात्मा गांधी, ८४, ॥=)	नवजीवन प्रकाशन
...नाम की महिमा, १, महात्मा गांधी, १२८, क्रा०, १)	मण्डल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाम की महिमा, महात्मा गांधी, १४४, १)
राष्ट्र-वाणी, २, महात्मा गांधी, ११८, क्रा०, १)
राजघाट की सन्निधि में, १, विनोबा भावे, ८०, क्रा०, ।।।)
राष्ट्रपिता, २, जवाहरलाल नेहरू, १६८, क्रा०, २)
राष्ट्रपिता की अमृत वाणी, महात्मा गांधी, ।।।)
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी, २, गांधीजी, २६२, १।।)
राष्ट्रभारती, आ० रामलोचन शरण, २)
व्यवहार-शुद्धि, १, कृष्णदास जाजू, ७२, क्रा०, ।)
विनोबा चित्रावली, ६, ।।।)
विनोबा के विचार (दो भाग), ६, विनोबा भावे, ४०८, क्रा०, ३)
विचार-पोथी, २, विनोबा भावे, १०४, क्रा०, १)
सर्वोदय, ६, महात्मा गांधी, ४८, क्रा०, ।=)
सत्यवीर की कथा, ३, महात्मा गांधी, ३६, क्रा०, ।)
सत्याग्रह की मीमांसा, १, रंगनाथ दिवाकर, २६०, क्रा०, ३।।)
सत्याग्रह, श्री दिवाकर, ३)
सत्याग्रह और विश्वशान्ति, १, रंगनाथ दिवाकर, ६४, क्रा०, १।।।)
सर्वोदय का घोषणा-पत्र, ३, विनोबा भावे, ६२, क्रा०, ।)
सर्वोदय, १, रामचन्द्र अग्निहोत्री, १७०, डि०, १।।)
सर्वोदय के सेवकों से, १, विनोबा, ६२, क्रा०, ।)
सर्वोदय योजना, २, ४८, क्रा०, ।।)
सर्वोदय विचार, ७, विनोबा, १२८, क्रा०, १=)
सर्वोदय-तत्त्व-दर्शन, १, गोपीनाथ धवन, ३८४, डि०, ७)
सत्य का पुजारी, प्रकाश पंडित, ६४, ।।।)
स्वराज्य-शास्त्र, ३, विनोबा, ६८, क्रा०, ।।।)
सामाजिक क्रान्ति और भूदान, १, जे० बी० कृपलानी, ५४, क्रा०, ।)
स्थितप्रज्ञ-दर्शन, ३, विनोबा, १६६, १)
स्त्रियों की समस्या, ६, महात्मा गांधी, सं० रामनाथ 'सुमन', ज्ञानचन्द्र जैन, १।।)
सेवाग्राम, प्रभुदयाल विद्यार्थी, २)
सेवाग्राम की विभूतियाँ, ललिताप्रसाद श्रीवास्तव, १।।=)
सेगाँव का सन्त, श्रीमन्नारायण अग्रवाल, १।)
सम्पत्तिदान-यज्ञ, १, कृष्णदास जाजू, ४०, क्रा०, ≡)
सम्पत्तिदान यज्ञ, १, विनोबा भावे,
शराबबन्दी क्यों, भारतन् कुमारप्पा, ४८, ।।=)
श्रद्धांजलियाँ, ज्योतिलाल भार्गव, ३)
सच्ची शिक्षा, महात्मा गांधी, १५६, २।।)
सत्याग्रह आश्रम का इतिहास, महात्मा गांधी, ११३, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर और उनका साहित्य

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष
डा० हरवंशलाल शर्मा द्वारा लिखित।

विषय सूची

ूमिका
ूर का जीवन-चरित
ूरदास जी का साहित्य
ूर-साहित्य की पृष्ठभूमि
क्ति-आन्दोलन में दक्षिण का योग और वैष्णव सम्प्रदाय
ुराण-साहित्य और कृष्ण का विकास
श्रीमद्भागवत और सूर-सागर
७. सूर का चरित्र-चित्रण
८. सूर का दार्शनिक पक्ष
९. सूर का भक्ति-पक्ष
१०. सूर का पुष्टि सम्प्रदाय
११. सूर का काव्य (आलोचना)
—परिशिष्ट
सूर-साहित्य की कुछ ज्ञातव्य बातें

डिमाई आकार, पृष्ठ ५५०, सजिल्द ७)

• • • • • • • • • • • •

शेली

लेखक—श्री यतेन्द्र कुमार एम० ए०

ं साहित्य के अमर कवि पर्सी बिसी शेली का अत्यन्त सरस जीवन ौर मौलिक समालोचन एवं चुनी हुई प्रतिनिधि रचनाओं का ूपान्तर।

ाष्ट्रकवि 'दिनकर' लिखते हैं… "शेली की भावुकता, शेली का ा और शेली की कोमल गर्जना, ये सारी चीजें हिन्दी अनुवाद में ई हैं।"

ाक्संवादी आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा भूमिका में कहते हैं… ेन्द्रकुमार ने अपने अनुवाद में जिस हद तक शेली के विचारों ों की रक्षा की है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।"

ाहित्य महारथी श्री गुलावराय लिखते हैं …"शेली की कविताओं ्त अनुवाद के साथ उनके काव्य की आलोचना की गई है… े लेखक की चिन्तनशीलता और सहृदयता को परिचायक है।"

ाई आकार : सजिल्द : पृष्ठ लगभग २०० : मूल्य २॥)

किशोर व प्रौढ़ों के लिए

परमोपयोगी हिन्दी कथासा

बढ़िया गेट-अप, मोटे अक्षरों में छपाई, प्रत्येक का मूल्य ।।)

—किरातार्जुनीय
—पंचरात्र
—विक्रमोर्वशीय
—शिशुपालवध
—प्रतिमा
—मालविकाग्निमित्र
—कुमारसम्भव
—नागानन्द
—गीता

५ अमूल्य पुस्तकें

—हमारे धर्म ग्रन्थ
—उपनिषदों की कहानियाँ
—संस्कृत नाटकों की कहानियाँ
—युग-पुरुष
—भारतीय सन्त

लेखक प्रो० हरीश रायजादा, एम० ए०, एल-एल० बी०,

भारत प्रकाशन मन्दिर

सुभाष रोड, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमारे महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिदास की समस्त अमर कृतियों का मूल-सहित हिन्दी रूपान्तर
अनुवादक—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

कालिदास ग्रन्थावली ३०)

भारतीय नाट्य-परम्परा का पांडित्यपूर्ण विवेचन
लेखक—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

अभिनव नाट्य-शास्त्र १५)

पाश्चात्य तथा भारतीय समीक्षा-सिद्धान्तों का गम्भीर, विशद, प्रामाणिक उल्लेख
लेखक—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

समीक्षा-शास्त्र २१)

संस्कृत साहित्य के समस्त ग्रन्थों से सुन्दरतम १६००० श्लोकों का सानुवाद संग्रह

सूक्ति सागर २५)

हिन्दी-साहित्य का बृहद् इतिहास

चार भाग, लगभग ५००० पृष्ठ, बढिया कागज़
डबल क्राऊन, अठपेजी आकार, पक्की जिल्द
लेखक—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
नवम्बर १९५४ में प्रकाशित होने की आशा है
अधिक विवरण की घोषणा शीघ्र ही की जायगी

हमारे प्रकाशन भारत के सब अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्य हैं।

अखिल भारतीय विक्रम परिषद्
उत्तर बेनिया बाग, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजकमल प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजी प्रकाशनों की सूची

राजकमल अमर साहित्य

...इस गौरवास्पद प्रकाशन माला में संस्कृत के अमर साहित्य ...नाटक तथा कथाओं के सुलभ अनुवाद छप रहे हैं। प्रत्येक ...पाण्डित्यपूर्ण गवेषणात्मक समीक्षा भी रहती है।

... : डॉ० मोतीचन्द्र ४॥)
...र चरित : पं० निरंजनदेव शर्मा ५॥)
...(मूल सहित) : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ४)

...चना, भाषा-विज्ञान, समीक्षात्मक निबन्ध

...य आर्यभाषा और हिन्दी : डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ६)❀
...ना, इतिहास तथा सिद्धान्त : डॉ० एस० पी० खत्री ११)❀
...: एक विवेचन : डॉ० इन्द्रनाथ मदान ३।)❀
...का जीवन : भोलानाथ तिवारी २)❀
...यनी : गंगाप्रसाद पाण्डेय ३॥)❀
...न और समीक्षा : सं० सन्तराम 'विचित्र' २॥)❀
...-गद्य की प्रवृत्तियाँ : आलोचना-पुस्तक-माला २)❀
...-काव्य की प्रवृत्तियाँ : आलोचना-पुस्तक-माला २)❀
...के गौरव-ग्रन्थ : आलोचना-पुस्तक-माला २)❀
...-आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ : आलोचना-पुस्तक-माला २)❀
...त्य आलोचना की अर्वाचीन प्रवृत्तियाँ : आलोचना-पुस्तक-माला ३)❀
...जी और उनकी प्रतिभा : पं० सीताराम चतुर्वेदी ३)
...अभिनन्दन ग्रन्थ : १५)

साहित्यिक इतिहास

...भाषा तथा साहित्य : डॉ० उदयनारायण तिवारी २॥)❀
...गद्य-साहित्य : शिवदानसिंह चौहान, विजय चौहान २॥)❀

साहित्यिक निबन्ध, गद्यात्मक साहित्य

शेष स्मृतियाँ : डॉ० रघुबीरसिंह ४)❀
जीवन-कण : डॉ० रघुबीरसिंह ३)
जीवन-धूलि : डॉ० रघुबीरसिंह १॥)
घुमक्कड़ शास्त्र : राहुल सांकृत्यायन ३।)
सुबह होती है : कृष्णचन्द्र ३)
राष्ट्रभाषा हिन्दी : सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन' ३)

धार्मिक, सांस्कृतिक

भारतीय संस्कृति : शिवदत्त ज्ञानी ५)❀
अन्तरात्मा से : रंगनाथ दिवाकर २।)
अन्तर-निरीक्षण : महाराजा न० पोरबन्दर २॥)
धर्म-वर्णन : आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव १॥)

लोक-साहित्य, सांस्कृतिक परिचय

पाषाण नगरी : शिवसहाय चतुर्वेदी ३॥।)
धरती गाती है : देवेन्द्र सत्यार्थी (अभी अप्राप्य)
धीरे बहो गंगा : देवेन्द्र सत्यार्थी ६)
बाजत आवे ढोल : देवेन्द्र सत्यार्थी ७)
काश्मीर, देश व संस्कृति : शिवदानसिंह चौहान ५)

प्रतिनिधि संकलन

विचार-वल्लरी : विचार-प्रधान निबन्धों का संग्रह : सं० जैनेन्द्रकुमार २॥) ❀
गद्य-गौरव : प्रतिनिधि गद्य का संग्रह : सं० बलराज एम० ए० २॥)❀
पद्य-प्रवाह : प्राचीन-अर्वाचीन पद्य का संग्रह सं० सुशीलकुमारी २॥)❀
मानसरोवर : गद्य-पद्य का संग्रह : सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन' १॥।)❀
साहित्य-सञ्चय : गद्य-पद्य का संग्रह : सं० ओंप्रकाश २॥)❀
कहानी : नई पुरानी : प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह : सं० डॉ० रघुबीरसिंह २)❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजकमल प्रकाशन

राजकमल प्रकाशन राजकमल प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगछाया : प्रतिनिधि एकांकियों का संग्रह : सं० शिवदानसिंह चौहान २॥)

भारतीय साहित्य परिचय माला

भारत की सभी प्रादेशिक तथा हिन्दी की जनपदीय भाषाओं के भाषा तथा साहित्य का परिचय देने वाली अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखित प्रकाशन-माला का महत्त्वपूर्ण आयोजन। सम्पादक—क्षेमचन्द्र 'सुमन'। अन्य पुस्तकें लिखी जा रही हैं।

उर्दू और उसका साहित्य : गोपीनाथ 'अमन' २)
तमिल और उसका साहित्य : पूर्ण सोमसुन्दरम् २)
मालवी और उसका साहित्य : श्याम परमार २)
तेलुगु और उसका साहित्य : हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' २)
बंगला और उसका साहित्य : हंसकुमार तिवारी २)
अवधी और उसका साहित्य : डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित २)
मराठी और उसका साहित्य : प्रभाकर माचवे (प्रेस में)
पंजाबी और उसका साहित्य : अमृता प्रीतम ,,
प्राकृत और उसका साहित्य : डॉ० हरदेव बाहरी ,,
भोजपुरी और उसका साहित्य : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ,,

काव्य

अपलक : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ३॥)
क्वासि : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ३॥)
चेतना : बाबूराम पालीवाल १॥)
सुवेला : शम्भूनाथ 'शेष' २)
दिवालोक : शम्भूनाथ सिंह २)
मंगल-गीत : राजेन्द्र शर्मा २)
नई कविता : १ : सं० डॉ० जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी २)

उपन्यास

जय सोमनाथ : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ५)
भगवान् परशुराम : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ६॥)
लोमहर्षिणी : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ४॥)
लोपामुद्रा : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी
स्वप्नद्रष्टा : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी
एक था राजा : मुल्कराज आनन्द
कजली : भवानी भट्टाचार्य
हड़ताल : क्षेमचन्द्र 'सुमन'
टूटे हुए पर : खलील जिब्रान
प्रगति की राह : गोविन्दवल्लभ पन्त
बेंत-वृक्षों की छाया में : शिह येन
नये मोड़ : उदयशंकर भट्ट
रथ के पहिये : देवेन्द्र सत्यार्थी
कठपुतली : देवेन्द्र सत्यार्थी

राजकमल कथा-साहित्य

सुरुचिपूर्ण कथा-साहित्य के पाठकों के लिए इन मौलिक उपन्यासों को विशेष रूप से सस्ते मूल्य में प्रकाशित किया जा रहा

कायर : राजेन्द्र शर्मा
जीवन-दान : श्रीराम शर्मा 'राम'
आदमी और सिक्के : महेन्द्रनाथ
बहती गंगा : शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र'
गंगा मैया : भैरवप्रसाद गुप्त
चन्दा : इन्द्र वसावड़ा
बाहर-भीतर : डॉ० देवराज
बाबा बटेसरनाथ : नागार्जुन
उबाल : डॉ० रांगेय राघव

कहानियाँ

जीवन के अंचल से : लीलावती मुन्शी
फूल और पत्थर : कृष्णचन्द्र
परिधि : राजेन्द्र शर्मा
चार के चार : कमल जोशी

नाटक

वाह रे मैं वाह! : कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी
ध्रुव-तारिका : डॉ० रामकुमार वर्मा
समस्या का अन्त : उदयशंकर भट्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजकमल प्रकाशन राजकमल प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…विदास	: उदयशंकर भट्ट	२)
…न्तिकारी	: उदयशंकर भट्ट	१।)
…चलो रे	: उदयशंकर भट्ट	१)
…द्रोहिणी अम्बा	: उदयशंकर भट्ट	१॥)*
…गर-विजय	: उदयशंकर भट्ट	२)*
…र्दे के पीछे	: उदयशंकर भट्ट	२॥)
…नाद	: कृष्णलाल श्रीधराणी	१॥)
…छना	: भगवतीप्रसाद वाजपेयी	२॥)

आत्म-कथा

…धे रास्ते	: कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी	४॥)
…धी चढ़ान	: कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी	४॥)
…प्नसिद्धि की खोज में	: कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी	५)
…ाँद-सूरज के बीरन	: देवेन्द्र सत्यार्थी	५)

इतिहास

…न्दू-सभ्यता	: डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी (प्रेस में) अनु० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	
…लाम का प्रथम राज्य	: डॉ० रघुबीरसिंह	१०)
…न्दुस्तान की कहानी	: मुल्कराज आनन्द	२)
…न्सान की कहानी	: मुल्कराज आनन्द	२॥।)

सेक्स

…म्पत्य प्रेम	: डॉ० मेरी स्टोप्स	२॥)
…न्तति-नियमन	: डॉ० मेरी स्टोप्स	१॥)
…थायी प्रेम	: डॉ० मेरी स्टोप्स	२॥)

शिक्षा, मनोविज्ञान

…क्षण-प्रविधि	: विश्वनाथसहाय माथुर, शची माथुर	२॥)*
…च्चा : मेरा शिक्षक	: कैरोलीन प्रैट	१)
…ाल मनोविज्ञान	: हंसराज भाटिया	३॥)*
हमारे बच्चे : ६ से १२ वर्ष तक : एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक		४॥)

राजकमल मनोविज्ञान माला

इस मनोविज्ञान माला की पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुई हैं तथा विश्वविख्यात विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई हैं। इसमें एल्फ्रेड एडलर की जग-प्रसिद्ध पुस्तक—'व्हट लाइफ़ शुड मीन टु यू'—का अनुवाद 'हमारे जीवन का अर्थ' के नाम से ६ भागों में प्रकाशित हुआ है।

बचपन के पहले पाँच साल :	१)
हीन-भाव :	१)
बचपन—पाँच से दस साल :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग १) :	१)
प्रेम और विवाह :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग २) :	१)
व्यक्तित्व :	१)
स्मरण-शक्ति :	१)
मित्र बनाने की कला :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ३) :	१)
अध्ययन कैसे करें ? :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ४) :	१)
चिन्ता :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ५) :	१)
माता-पिता की समस्या :	१)
हमारे जीवन का अर्थ (भाग ६) :	१)

देश-परिचय माला

प्रौढ़ शिक्षा के लिए उपयोगी साहित्य

देश की जानकारी :	॥)
गाँव की बातें :	॥)
सहकारी आन्दोलन :	॥)
सफ़ाई :	॥)
खेतीबारी :	॥)
पशु-पालन :	॥)
साम्प्रदायिकता :	॥)
स्वतन्त्र देश के नागरिक :	॥)
हमारा विधान :	॥)
पंचवर्षीय योजना :	॥)
भारत के तीर्थ-स्थान :	॥)
स्वास्थ्य-रक्षा :	॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे त्यौहार	:	॥)
भारत-निर्माता	:	॥)
नगर-व्यवस्था	:	॥)
ग्राम-पंचायत (नाटक)	: राजेन्द्र शर्मा	१॥)
हमारा समाज	: भाग एक	१)
हमारा समाज	: भाग दो	१)
हमारे बापू	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)
हमारे नेहरू	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)
हमारे गुरुदेव	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)
मुन्शी प्रेमचन्द	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)
लेनिन	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)
अब्राहम लिंकन	: डॉ० इन्द्रनाथ मदान	॥=)

बाल-साहित्य

रंगीन चित्रों से विभूषित हमारे बाल-साहित्य में बच्चों के लिए अतीव आकर्षण है। ये पुस्तकें ऑफसेट और आर्ट-पेपर पर छपी हैं।

नन्हे लंगूर की कहानी	: वेलरी मैजिल	१॥)
पीली बत्तक	: चीन की कहानियाँ : १	१)
तीरन्दाज़ 'ई'	: चीन की कहानियाँ : २	१)
बरफ़ीले देश में	: रूस की कहानियाँ : १	१)
पहला शिकार	: रूस की कहानियाँ : २	१)
सच्ची नागरिकता	: मनरो लीफ़	१॥)
एक कदम आगे	: मनरो लीफ़	१॥)
आओ, दोस्त बनाएँ	: सईदा सय्यदैन	॥)
बचपन की कहानियाँ	: शरत्चन्द्र चैटर्जी	१॥)
चमचम चमके चन्दा मामा	: बाबूराम पालीवाल	१)
धुएँ की फाँसी	: एस० ए० ताहिर	१॥)
पञ्चतंत्र की कहानियाँ (१)	: शकुन्तला देवी	१)
पञ्चतंत्र की कहानियाँ (२)	: शकुन्तला देवी	१)
पञ्चतंत्र की कहानियाँ (३)	: शकुन्तला देवी	१)

महत्त्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका

आलोचना

सामयिक हिन्दी समीक्षा की सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि पत्रिका। वार्षिक मूल्य १२)। एक प्रति का ३)। वार्षिक विशेषांक का ५)। वर्ष के चारों अंकों को रजिस्ट्री से पाने के लिए १॥) अतिरिक्त।

हिन्दी के प्रकाशन-व्यवसाय का मासिक मुखपत्र

प्रकाशन समाचार

प्रतिमास हिन्दी के सब अच्छे प्रकाशनों की सूचना नियमित रूप से इसमें देखिए। वार्षिक २॥)। एक अंक का ।)।

राजकमल

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अनन्य प्रकाशन

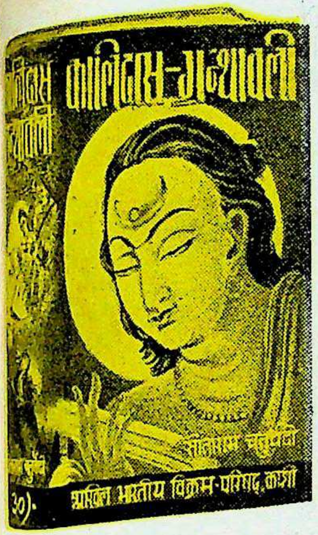

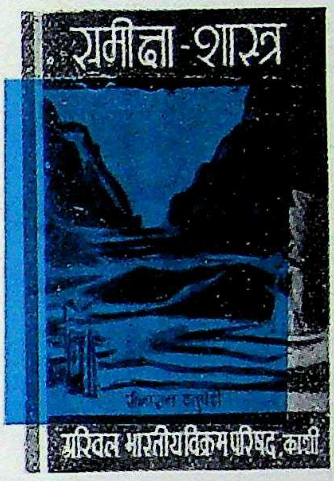

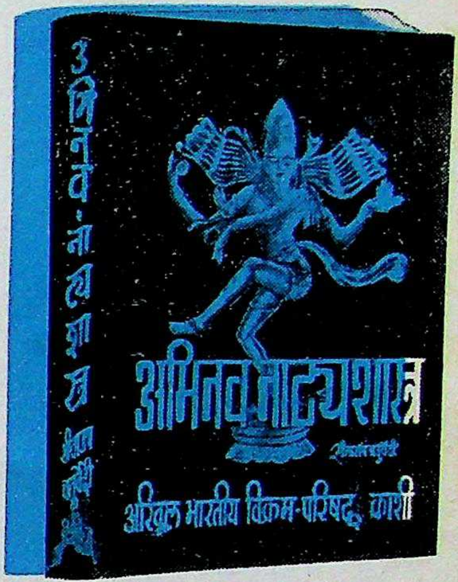

३०) २१) १५)

और

हमारे कुछ नए उपन्यास

हाथ की लकीरें	कामरेड	सुनसान राहें
ले० ओंप्रकाश	ले० मैक्सिम गोर्की	ले० ओंप्रकाश
२॥)	२॥)	२॥)

हर प्रकार की साहित्यिक पुस्तकों के मिलने का स्थान

प्रकाशक, वितरक व पुस्तक-विक्रेता

नवसाहित्य प्रकाशन

नई सड़क, बनारस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० विद्याभूषण विभु का अमूल्य बाल-साहित्य

आपके प्यारे बच्चों के लिए

५

अनोखे खिलौने

ता !

बाल-लीला	१)
बबुआ	
खेल के गीत	॥)
चार-साथी	
दो मनोहर कहानियां	।)
पंख-शंख	
विचित्र पद्य-संग्रह	॥।)
चंदा	
बच्चों का प्यारा खेल	
अक्षर बोध का नया ढंग	॥)

●

सुन्दर छपाई, अनेक रंगीन तथा सादे चित्र, आकर्षक मुख-पृष्ठ तथा मनोरंजक कविता के कारण बच्चे इन पुस्तकों को छोड़ना नहीं चाहते। खेलते-खेलते पढ़ना और पढ़ते-पढ़ते खेलना यही इन खिलौनों का उद्देश्य है।

●

डॉ० विभु का नाम ही इनकी अच्छाई की गारंटी है।

●

सूरदास के ३०० वर्ष बाद

बाल स्वभाव का मनोमोहक चित्रण करनेवाली एक अनोखी पुस्तक

मेरी कहानी

(एक द्वादश वर्षीय ग्रामीण बालक की आत्म-कथा)

ले०—डा० विद्याभूषण विभु एम० ए० डी० फिल०

(१) इसमें बाल्य-काल की अलौकिक फोटो, खेल कूद, खेल खिलौने, हँसी खेल, मनोविनोद, विचित्र सपने तथा अन्य बाल लीलाओं का विशद वर्णन।

(२) कुँवर कन्हैया की लीलाभूमि व्रज-मंडल का अद्भुत सौन्दर्य। पेड़ पौधे, जीव जन्तु, श्रीकृष्ण की बाललीला।

(३) प्रकृति के अनुपम चमत्कार—करील, मोर, बवंडर, आँधी, टिड्डियाँ, जुगनू, बीरबहूटी, बहुरूपिया बादल, तारों के खेल आदि।

(४) देहाती दुनियाँ का स्वाभाविक दृश्य—ग्राम्य जीवन, सामाजिक व्यवस्था, पर्व तथा उत्सव, होली, दिवाली, बारात।

(५) ऋतुओं का निराला आनन्द—
सावन के झूले, शरद की चाँदनी, बसन्त का फूल डोल।

(६) बचपन के कौतूहल-सँपेरा, बाजीगर, मदारी, कठपुतली आदि

(७) चित्रों का दर्शनीय एलबम—सिनेमा के फिल्मों का आनन्द घर बैठे मिलेगा।

(८) छोटा छंद, सरल भाषा, बच्चों की बातें, वृद्धों को बीते हुए बचपन की याद दिलाने वाली। बालकों को अपनी करतूतों का दिग्दर्शन कराने वाली, बच्चों की चहचहाट से घर गूँजने लगेगा, आनन्द की नदी बहने लगेगी। प्रत्येक घर में, प्रत्येक पुस्तकालय में, प्रत्येक बच्चे और बूढ़े के हाथ में ऐसी सुन्दर पुस्तक होनी चाहिये।

किसी देश, किसी भाषा, किसी साहित्य में ऐसी अनुपम पुस्तक न मिलेगी।

(शीघ्र प्रकाशित हो रही है)

इन प्रकाशनों के विक्रय तथा एजेंसो के लिये पुस्तक विक्रेता पत्र व्यवहार करें।

विभु-प्रकाशन

१३ लखपतराय मार्ग

इलाहाबाद—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[... से आगे]

...सिद्धान्त, ७४, ।।।)	नवजीवन प्रकाशन
...भूमि-समस्या का हल, १, जयप्रकाशनारायण, ६३, क्रा०, ।)	सर्व सेवा संघ
...गाँवों का पुनर्निर्माण, महात्मा गांधी, १५३, १।।)	नवजीवन प्रकाशन
...स्वराज्य, ५, महात्मा गांधी, १२७, क्रा०, ।।।)	मण्डल
..., हे राष्ट्रपिता, भोलानाथ तिवारी, ।-)	गंगा पुस्तक माला
...मंथन के पाँच दिन, २, महात्मा गांधी, ६८, क्रा०, ।)	मण्डल

गृह-विज्ञान तथा महिलोपयोगी

...गृह-विज्ञान, श्रीमती शान्तिरमण, १००, क्रा०, १।)	अजन्ता प्रेस
...निकेतन, ५) रामनाथ 'सुमन', क्रा०, ३)	साधना सदन
...पत्नी, सन्तराम बी० ए०, १३५, क्रा० २।।)	राजपाल
...पत्नी, रामनारायण 'यादवेन्दु', क्रा०, ३।)	गंगा पुस्तक माला
...पाक विधि, २, गिरीशचन्द्र जोशी, ३३६, ४)	हिन्दी पुस्तक एजेंसी
...ओं की पोथी, रामदास गौड़, १५४, क्रा०, १।।)	साहित्य भवन
..., ५, रामनाथ 'सुमन' क्रा०, १।)	साधना सदन
...शिक्षा, १, सुशीला कालरा, १७६, क्रा० $\frac{1}{2}$, ३)	(वितरक) आत्माराम
...शिक्षा, सुशीला कालरा, ६०, १।।।)	(वितरक) आत्माराम
...विज्ञान, १, डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा, ८२, क्रा०, १)	सम्मेलन
...मूल्य, १, किशोरीदत्त वैद्य, १३६, क्रा० १।।)	साहित्य निकेतन
...गीता, श्रीप्रकाश, १३६, क्रा० १।)	साहित्य सदन, चिरगाँव
...विज्ञान (भाग १), सत्यव्रत, ७८, क्रा०, ।।।)	साहित्य भवन
...विज्ञान (भाग २), सत्यव्रत ६४, क्रा०, १=)	साहित्य भवन
...चिकित्सा, किशोरीदत्त वैद्य, ६०, क्रा० १।)	साहित्य निकेतन
...जीवन रहस्य, महात्मा नारायण स्वामी, ११२, क्रा०, २।।)	राजपाल
...अर्थ शास्त्र, ए० एन० अग्रवाल, ४३२, क्रा०, ३।।)	किताब महल
...विज्ञान, कमरुन्निसार बेगम, कमलिनी कुपारी, १।।)	पुस्तक भण्डार
...जीवन और ग्राम-सेवा, परशुराम चतुर्वेदी, ७२, क्रा०, १)	साहित्य भवन
...की छाँह, श्रीमती शान्तिलता, १।)	अशोक प्रेस
...की रानी, ७, रामनाथ 'सुमन', १।।)	साधना सदन
...हिसाब और जानकारियाँ, कर्णिका दे, २।।)	पुस्तक भण्डार
...की सफाई, २।।)	पुस्तक भण्डार
...कला, १, अवध उपाध्याय, १०२, क्रा० २)	सम्मेलन
...करो और सुखी रहो, १, क्षितीन्द्रमोहन मित्र, ६)	मित्रा प्रकाशन
...बुनाई, लीला प्रकाश, डि०, ४।=)	आरसी प्रकाशन
...पाक विज्ञान, विश्वप्रकाश, १४४, क्रा०, २)	कला प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारी : गृह लक्ष्मी और कल्याणी, ३, श्रीरामनाथ 'सुमन', क्रा०, २।।)	साधना सदन
नारी जीवन : कुछ समस्याएँ, ४, श्री रामनाथ 'सुमन' क्रा०, १)	साधना सदन
नारी जीवन चक्र, १, राजकुमारी बिन्दल, ६०, क्रा०, १।।)	मयूर प्रकाशन
नारी अधिकार, १, महेन्द्रनाथ दत्त, ५१, क्रा०, ।।।)	महेन्द्र पब्लिशिंग कम्पनी
नारी का मूल्य, १, शरच्चन्द्र, ८८, क्रा०, ।=)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
नारी-भजन-सुधा, कलादेवी, ।।।)	कला प्रेस
पाक-चयनिका, १, राजनारायण मेहरा ४५०, क्रा०, ६)	रंगभूमि बुकडिपो
पाक-विज्ञान, श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर, २२४, ३)	साहित्य भवन
पाक-शास्त्र, अशरफीलाल वर्मा, ५)	पुस्तक भण्डार
बच्चे सुन्दर कैसे बनें, जगन्नाथप्रसाद, २०३, डि० ३।।।)	किताब महल
बुनाई के नमूने, लीला प्रकाश, डि०, ४।।=)	आरसी प्रकाशन
भारतीय कसीदा, १, जगदीश मित्तल, कमला मित्तल, ११३, डि०$\frac{1}{8}$, १५)	सुरुचि प्रकाशन (वितरक) राजकमल प्रकाशन
भारतीय गृह उद्योग, ३)	पुस्तक भण्डार
वनिता विलास, गिरजाकुमार घोष, क्रा०, ।।=)	गंगा पुस्तक माला
विधवाओं का इंसाफ, विश्वप्रकाश, १६०, १।।)	कला प्रेस
विवाह-शास्त्र, १, एस० एन० शर्मा, २५०, क्रा०, ५)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
विश्व की महान् महिलाएँ, १, शचीरानी गुर्टू, २०२, डि०, ५)	युग प्रकाशन
विश्व की महान् महिलाएँ, २, शचीरानी गुर्टू, २००, क्रा०, २)	हिन्दी साहित्य मन्दिर
व्रत चन्द्रिका, २, गौरीशंकर उपाध्याय, २)	शारदा मन्दिर
स्त्रियों के रिश्ते, विश्वप्रकाश, १५०, १।।)	कला प्रेस
स्त्री-पुरुष मर्यादा, किशोरीलाल मशरूवाला, २०२, १।।।)	नवजीवन प्रकाशन
स्त्री जीवन की समस्याएँ, ज्योतिर्मयी ठाकुर, ४)	गंगा पुस्तक माला
साबुन विज्ञान, १, श्यामनारायण कपूर, ३०८, डि०, ६)	साहित्य निकेतन
सूची शिल्प-शिक्षा, २, प्रकाशरानी भटनागर, १२८, क्रा० १।।)	सरस्वती सेवा सदन
स्त्रियों के कर्तव्य, ३, चन्द्रकला देवी, २००, क्रा०, ३।।)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
शकुन्तला कढ़ाई कला, २, सुमित्रादेवी गाबा, १६६, फु० $\frac{1}{8}$, ३।।।)	आत्माराम
शकुन्तला की नई कसीदाकारी (भाग ३), सुमित्रादेवी गाबा, ३।।।)	राजपाल
शिल्पकला, ४, विद्याधरी जौहरी, २६०, क्रा० ६)	हिन्दी भवन
शिशु पालन, डॉ० मुकुन्द स्वरूप शर्मा, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
शिशु पालन, १, राजगोपालाचार्य, ४६, क्रा०, ।।)	मण्डल
हमारी पुत्रियाँ कैसी हों, ४, आ० चतुरसेन शास्त्री, १४२, क्रा०, १)	मण्डल

घनानन्द

घनानन्द, १, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ६३८, क्रा०, ६)	नन्दकिशोर
घनानन्द कविता, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २३४, क्रा०, ३।)	नन्दकिशोर
घन आनन्द, १, रामवशिष्ट, २०७, क्रा०, २।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
घन आनन्द, शम्भुप्रसाद बहुगुणा, १८०, क्रा०, ४।)	साहित्यभवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द बरदाई

बरदाई और उनका काव्य, १, डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी, ३८४, रा०, ८)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
समय (सटीक), १, विश्वनाथ गौड़, ६६, क्रा०, १।)	साहित्य निकेतन
राज रासो के दो समय, १, डॉ० भगीरथ मिश्र, ७४, क्रा०, २।)	गंगा पुस्तक माला
राज रासो (१८ खण्ड), १, चन्द बरदाई, ६०)	नागरी प्रचारिणी सभा
राज रासो, १, प्रेमनारायण टण्डन, ८०, डि०, १)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
राज रासो, २, हरिहरनाथ टण्डन, ७६, क्रा०, १।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
की कथा, रोशनलाल सिंहल, १।)	राजपाल
समय पृथ्वीराज रासो, १, डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी, ४००, डि०, ६)	लखनऊ विश्वविद्यालय
पृथ्वीराज रासो, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, नामवरसिंह, २१५, डि०, ३।।)	साहित्य भवन

चरित्र-निर्माण

-निरीक्षण, १, महाराजा न० पोरबन्दर, ६६, डि०, २।)	राजकमल प्रकाशन
-निर्माण, २, विष्णुप्रसाद व्यास, १३६, क्रा०, १।।)	साहित्य प्रकाशन मन्दिर
-विकास, ३, आनन्दकुमार, ४०४, क्रा०, ५)	राजपाल
१, स्वा० कृष्णानन्द, ६३, क्रा०, १।)	आरोग्य मन्दिर प्रकाशन
विषयक लेखमाला, १, नलिनीमोहन सान्याल, १६६, क्रा०, १।।)	रामनारायणलाल
-निर्माण, १, रामशंकर शुक्ल 'रसाल', ११६, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
-गठन, जनार्दन झा, २१०, क्रा०, २)	राजपाल
-निर्माण, ४, सत्यकाम विद्यालंकार, १८८, क्रा०, २।।)	राजपाल
निराशा क्यों, १, गुलाबराय, १)	गंगा पुस्तक माला
, ३, भगवानदीन, क्रा०, ३)	पूर्वोदय प्रकाशन
की सफलता, १, छविनाथ पाण्डेय, ६२, ।।≡)	अजन्ता प्रेस
का रहस्य, १, डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, १५६, क्रा०, ।।≡)	श्रीराम मेहरा
-संग्राम, १, जयनारायण पाण्डेय,	ग्रन्थमाला कार्यालय
और सदाचार, टाल्स्टाय, ३६८, क्रा०, ३।।)	मण्डल
-शास्त्र, १, कृष्णकुमार, २६४, क्रा०, ४, ।।।)	गर्ग ब्रदर्स
-सुधा, १, कालिकान्त झा, ६०, क्रा०, ।।।)	बम्बई बुक डिपो
युवकों से दो बातें, ७, प्रिंस क्रोपाटकिन, ५४, क्रा०, ।=)	मण्डल
की महिमा, १, सूर्यबलीसिंह, १।।)	काशी पुस्तक भण्डार
-सन्देश, ४, प्रो० सत्यव्रत, २५६, क्रा०, ४।।)	राजपाल
शक्ति का चमत्कार, १, सत्यकाम विद्यालंकार, १२१, क्रा०, २।)	राजपाल
विचार में, १, वंशीधर, १००, क्रा०, १)	शिवलाल अग्रवाल
विलोचन, २, जयविजयनारायण सिंह, ५३०, क्रा, १।।)	रामनारायणलाल
और सभ्यता, ६, गणेशदत्त गौड़ 'इन्द्र', १४८, क्रा०, १)	मण्डल
-शक्ति, १, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, क्रा०, १।।)	भारतवासी प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वावलम्बी का बल, १, जयविजय नारायणसिंह, ७३८, क्रा०, २)
सदाचार दर्पण, १, लक्ष्मीधर वाजपेयी
सूक्ति-संचय, १, गुरुप्रसाद सुकुल
हमारी पुत्रियाँ कैसी हों, आचार्य चतुरसेन, १॥)
हिन्दू राष्ट्र का नवनिर्माण, १, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, ३६८, क्रा०, ५)
हिन्दुस्तानी शिष्टाचार, १, कामताप्रसाद गुरु, १२४, क्रा०, ॥=)

जीवनी

अब्राहम लिंकन, १, रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे, १५५, क्रा०, ॥=)
अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मदेव विद्यावाचस्पति, १२८, १)
अनमोल रत्न, रामबहोरी शुक्ल, ३।-)
अशोक, २, भगवतीप्रसाद पांथरी, ३०३, ४)
आविष्कार और आविष्कारक, १, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, १५४, क्रा०, १॥।)
आदर्श चरितावली, १, सन्त गोकुलचन्द्र, १६७, क्रा०, २)
आचार्य कृपलानी, १, सत्यकाम, ६६, क्रा०, १)
आचार्य कृपलानी, ८००, ६)
इटली के विधायक महात्मागण, १, रामदास गौड़, २४८, क्रा०, २)
ईशु ख्रिस्त, किशोरीलाल मशरूवाला, १०२, ॥।=)
ऋद्धि, ज्ञानेन्द्र मोहनदास, ३१८, २॥)
एक आदर्श महिला, २, विनायक तिवारी, ६६, क्रा०, १)
कठघरे से पुकारती वाणी, रामनाथ सुमन, १)
कार्ल मार्क्स, रामवृक्ष बेनीपुरी, १००, डि०, २॥)
गणेशशंकर विद्यार्थी, १, शम्भुनाथ सक्सेना, ८४, क्रा०, १)
गुरुदेव, १, महावीरशरण अग्रवाल, क्रा०, २॥)
गुरु गोविंदसिंह, वेणीप्रसाद, १॥)
गौतम बुद्ध, ईश्वरीप्रसाद शर्मा, ॥=)
गौतम बुद्ध, राधाकृष्ण, ५२, क्रा०, ८, ॥।)
चन्द्रशेखर आज़ाद, रतनलाल बंसल, १, डि०,
जीवन-स्मृतियाँ, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन' २५२, क्रा०, ३)
जैसा हमने देखा, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन', १६६, क्रा०, १॥)
जैन जागरण के अग्रदूत, १, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, ६२०, क्रा०, ५)
झाँसी की रानी, श्री शान्तिनारायण, ३५८, ४)
डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी, अमरेन्द्र, ८०, क्रा०, ॥।)
तांत्या टोपे, १, केशवकुमार ठाकुर, क्रा०, १)
तीन क्रान्तिकारी शहीद, २, रतनलाल बंसल, १६६, ३)
द्विजेन्द्रलाल राय, दुलारेलाल, ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राठौर, १, कविराज जयगोपाल,, १५६, डि०, २।।)	राजपाल
प्रेमचन्द, ७७, ।।।)	हंस प्रकाशन
२, सन्तराम विचित्र, १७०, क्रा०, २)	एस० चन्द एण्ड कम्पनी
१, बलदेवप्रसाद शुक्ल, १७८, क्रा०, २)	हिन्दी भवन
अमूल्य रत्न, १, कृष्णमोहन श्रीवास्तव, २२२, ४)	गंगा पुस्तक माला
जहूरबख्श, १)	गंगा पुस्तक माला
जहूरबख्श, १।।।)	गंगा पुस्तक माला
कुन्तला, हरिप्रसाद, १)	गंगा पुस्तक माला
।।।-)	नन्दकिशोर
रत के नये नेता, २, राहुल सांकृत्यायन, ३४४, क्रा०, ४)	यूनिवर्सिटी बुक डिपो
रत के निर्माता, २ (बड़ा), क्षेमचन्द्र 'सुमन', क्रा०, ३)	हंसराज शर्मा
रत के निर्माता, (छात्रों के लिए) क्षेमचन्द्र 'सुमन', क्रा०, १।।)	हंसराज शर्मा
रत के नेता, नित्यानन्द, ।=)	नन्दकिशोर
साहब पेशवा, १, केशवकुमार ठाकुर	आदर्श हिन्दी पुस्तकालय
रत्न, परिपूर्णानन्द, ।।)	नन्दकिशोर
रत्न, सन्तराम विचित्र, २२४, क्रा०, २।।)	सूरी ब्रदर्स
, विश्वनाथ उपाध्याय, ११८, क्रा०, १।।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
बोनापार्ट, राधेमोहन गोकुल, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
और यशोधरा, कामताप्रसाद गुरू, १०५, क्रा०, १।।)	सुषमा साहित्य मन्दिर
आर्य वीरता, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, ६।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
अशोक, क्रा०, ४।।)	मण्डल
स्मरण या हमारे **स्वर्गीय राष्ट्र-निर्माता**, रामनाथ सुमन, ५००, ४)	साधना सदन
के पुतले, १, व्यथित हृदय, १७१, क्रा०, ।।=)	रामनारायणलाल
की महारानी, २, 'उग्र', ८०, क्रा०, १)	भारती (भाषा) भवन
भीष्म, गोपालचन्द्र शास्त्री, ।।)	नन्दकिशोर
गंगाधर तिलक, १, शम्भुनाथ सक्सेना, ८४, क्रा०, १)	नूतन प्रकाशन मन्दिर
चरित, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, २।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
नामावली, ध्रुवदास, ।।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
की विदुषी नारियाँ, कृष्णकुमारी, १।।।)	गंगा पुस्तक माला
वैभव, इन्द्रबहादुर खरे, २४४, क्रा०, ३।)	सुषमा साहित्य मन्दिर
के महापुरुष, २, सन्तराम, १३२, क्रा०, १।।)	हिन्दी भवन
की वीर नारियाँ, ४, व्यथित हृदय, १३७, क्रा०, १।)	हिन्दी भवन
के स्त्री रत्न (तीन भाग), ५, नानाभाई भट्ट, ६४०, क्रा०, ७।।)	मण्डल
विभूति, १, एस० एन० सान्याल, १६०, क्रा०, २)	साहनी प्रकाशन
पितामह, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
गांधी, १, रोमा रोलाँ, १०३, २)	सेंट्रल बुक डिपो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेव गोविंद रानाडे, रामनारायण मिश्र, १।।)
महर्षि सुकरात, वेणीप्रसाद, १।।)
महाराणा राजसिंह, १, सुरेन्द्र शर्मा, १५१, क्रा०, १।)
महान भारतीय, ब्रह्मवती नारंग, २१०, क्रा०, २)
महापुरुषों के दर्शन, ४, प्रो० रामस्वरूप कौशल, २२२, ३।)
महादेव भाई—पूर्वचरित, नरहरि पारीख, ६२
मेजिनी का जीवन चरित्र, ला० लाजपतराय, ।।।)
मौर्यराज, १)
रणजीत चरित, १, सन्तराम, ११२, क्रा०, १।)
रणजीतसिंह, वेणीप्रसाद, १।।)
राणा जंगबहादुर, जगन्मोहन शर्मा, १।।)
रामकथा, १, रामदास मिश्र, ८०, १)
राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद, १, आ० शिवपूजन सहाय, क्रा०, २।।)
राष्ट्रनायक, वेणीमाधव शर्मा, ।।।=)
राजा भोज, विश्वेश्वरनाथ रेड, ४००, रा०, ६)
राष्ट्र पुरुष, १, सत्यकाम विद्यालंकार, १६३, ३)
रूसी क्रान्ति के अग्रदूत, १, राजेश्वरप्रसादनारायण सिंह, १७२, डि०, ४)
रेखाचित्र, १, प्रेमनारायण टण्डन, ६०७, ।।=)
रणजीतसिंह, सीताराम कोहली, अनु० रामचन्द्र टण्डन, ३१२, क्रा०, ३)
वल्लभ वंशवृत्त तथा आन्ध्र जातीय भट्ट वंशवृत्त, ७०, १२)
विश्व की विभूतियाँ, २, हरिभाऊ उपाध्याय, २७१, क्रा०, २।।)
विश्व की विभूतियाँ, सन्तराम, १६०, १।)
विद्यासागर, रूपनारायण पाण्डेय, ५६०, १)
विदेशी वीर विद्वान्, हरीशंकर शर्मा, १६१, क्रा०, १।।)
विज्ञान के नररत्न, व्यथित हृदय, ११२, क्रा०, ।।=)
विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ, उमेशचन्द्र मिश्र, २६२, क्रा०, ७)
वीर कुंजरसिंह, १, केशवकुमार ठाकुर, १)
वीर मराठे, ४, भीमसेन विद्यालंकार, २०२, क्रा०, २।।)
वीर वैरागी, भाई परमानन्द, १७६, क्रा०, २)
वीर देवियाँ, ।।।=)
वीर सिपाही, १, सन्तराम 'विचित्र, १६२, क्रा०, ३)
सरदार वल्लभभाई, नरहरि पारीख, ५५६, क्रा०, ६)
सनयात सेन, १, भूदेव शर्मा विद्यालंकार, १०४, क्रा०, ।)
सरदार भगतसिंह, रतनलाल बंसल, १)
सम्राट् चन्द्रगुप्त, बालमुकुन्द वाजपेयी, ।)
सरदार पटेल, श्यामवदन पाठक, ।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वित्री, हरिप्रसाद, २)	गंगा पुस्तक माला
...बच्चों का बालकाल, १)	गंगा पुस्तक माला
...भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री सुभाषचन्द्र बोस, १, किशोरदास वाजपेयी, क्रा०, ।।।)	हिमालय एजेंसी
...कों के संस्मरण, १, क्षेमचन्द्र 'सुमन', १०२, क्रा०, १।)	गौतम बुक डिपो
...राम, डॉ० हरिरामचन्द्र दिवेकर, २३८, क्रा०, ३)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...की विभूतियाँ, रामस्वरूप गुप्त, ।।।=)	नन्दकिशोर
...नि, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ।।।=)	नन्दकिशोर
...दय, मक्खनलाल गुप्त, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
...२, सर जदुनाथ सरकार, २२४, क्रा०, २।।)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
...की योग्यता, ५, गो० दा० तामस्कर ६६, क्रा०, १)	मण्डल
...कविराज जयगोपाल, १४०, २)	राजपाल
...बेणीमाधव शर्मा, ।=)	नन्दकिशोर
...र्य, १, बलदेव उपाध्याय, ३१८, ७।।)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...भाचार्य और उनके सिद्धान्त, १, व्रजनाथ शास्त्री, २७८, क्रा०, ३)	विद्याविभाग, कांकरोली
...की न्यूरी, लालबहादुर शास्त्री, १६६, डि, ३।।)	साहित्य भवन
...कथा, १, रामदास मिश्र विजय, ८०, १)	हिन्दी प्रचारक मण्डल
...जमनालाल बजाज, १, हरिभाऊ उपाध्याय, ४८८, क्रा०, ६।।)	मण्डल
...जमनालाल बजाज, २, हरिभाऊ उपाध्याय, १६६, क्रा०, २)	मण्डल
...ता, ८, श्री रामनाथ सुमन, २।।)	साधना सदन
...अमर नायक, १, प्रेमनारायण टण्डन, ७२, ।।।)	विद्या मन्दिर
...१, गौरीशंकर चटर्जी एम० ए०, ५०६, क्रा०, ७।।)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...राष्ट्रपिता, १, गणेशप्रसाद व्यास १५८, क्रा०, २)	आत्माराम
...कर्मयोगी राष्ट्रपति, १, इन्द्र विद्यावाचस्पति, क्रा०, ।।)	आत्माराम
...नलवा, कविराज जयगोपाल, १८२, २)	राजपाल
...ता, वनमाला परीख, २२२,	नवजीवन प्रकाशन
...शिलादित्य, भगवतीप्रसाद पांथरी, १७२, क्रा०, ३।।)	जगत शंखधर
...१, शर्मनलाल अग्रवाल, ६२, क्रा०, १।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स

जीवनी : साहित्यिक

...महावीरप्रसाद द्विवेदी, १, क्रा०, ।।)	ज्ञान मन्दिर
...के कवि, १, ललितमोहन अवस्थी, २२६, क्रा०, ३)	करेण्ट बुक डिपो
...के कवि, १, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, १२८, क्रा०, १।।)	ज्ञान मन्दिर
...कार बालकृष्ण भट्ट, १, श्री गोपाल पुरोहित, २१४, क्रा०, २।।।)	लखनऊ विश्वविद्यालय
...षा के नवरत्न, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, ३)	राजेश्वरी पुस्तकालय
...के धुरन्धर कवि, कन्नोमल एम० ए०, ६५, क्रा०, ।।)	इण्डियन प्रेस
...के पुजारी, २, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १४१, क्रा० १।।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इनसे मिला (भाग १), १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', २१६, क्रा०, २।।)
मैं इनसे मिला (भाग २), १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', २५८, क्रा०, ३।।)
राधाकृष्णदास, आ० रामचन्द्र शुक्ल, १)
श्री श्यामसुन्दरदास, १, ३)
श्री वियोगी हरि, १, मोतीलाल मालवीय, क्रा०, ।=)
शैलियाँ, १, फूलचन्द जैन 'सारंग', ११४, क्रा०, १।।)
स्नेह, सेवा और संघर्ष, १, रामेश्वर गुरु, जगदीशप्रसाद व्यास, १५०, क्रा०, १।।।)
हमारे प्रमुख साहित्यकार, १, रामनारायण मिश्र, २१५, क्रा०, २।।)
हमारे कवि, ४, राजेन्द्रसिंह गौड़, २६२, क्रा०, ३)
हिन्दी कलाकार, ३, डॉ० इन्द्रनाथ मदान, ३७८, क्रा०, ५।।)
हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार, शिवनारायण श्रीवास्तव, २१०, क्रा०, १।।।)
हिन्दी साहित्य के सितारे, १, सियारामशरण शर्मा, १८०, क्रा०, २)
हमारे कवि, (भाग १) १, विश्वम्भर 'मानव', ८८, क्रा०, १)
त्रिमूर्ति, १, नरोत्तमदास स्वामी, २७८, क्रा०, ३)

जायसी

जायसी ग्रन्थावली, ५, आ० रामचन्द्र शुक्ल, ३६१, डि०, ५)
जायसी, १, भारतभूषण 'सरोज', २००, क्रा०, २।।)
जायसी, डॉ० रामरतन भटनागर, २१२, क्रा०, २।।)
जायसी-ग्रन्थावली (सटीक), १, मनमोहन गौतम, ८१८, क्रा०,८)
जायसी-ग्रन्थावली, आ० रामचन्द्र शुक्ल, ६०० क्रा०, ५)
जायसी-ग्रन्थावली, १, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, ७४४, डि०, १२)
संक्षिप्त पद्मावत, डॉ० श्यामसुन्दरदास, २१२, क्रा० ३)

तुलसी

अयोध्या काण्ड (सटीक), १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १००, क्रा०, १)
अयोध्या काण्ड, १, वियोगी हरि, १६६, क्रा०, १)
अयोध्या काण्ड, ३, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', ३४४, क्रा०, २।।)
अयोध्या काण्ड-दिग्दर्शन, १, सलिल, ८०, क्रा०, ।।।)
अयोध्या काण्ड रामायण, तुलसीदास, १)
अयोध्या काण्ड (सटीक), १, ३०३, क्रा०, १।।)
अरण्य काण्ड, १, ३०३, क्रा०, १)
उत्तर काण्ड (सटीक), १, भवानीशंकर त्रिवेदी, १८०, क्रा०, २)
उत्तर काण्ड, १, पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', १५२, क्रा०, १।।।)
उत्तर काण्ड, १, १५६, क्रा०, ।=)
कवितावली, ८, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, १४०, क्रा०, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…वली, फूलचन्द जैन 'सारंग', १३६, क्रा०, १।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
…वली, २, २१०, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
…न्धा काण्ड, १, ३४, क्रा०, ≡)	रामनारायणलाल
…वली, तुलसीदास, क्रा०, १)	नागरी प्रचारिणी सभा
…वली, १, ३१६, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
…सी तुलसीदास, १, डॉ० श्यामसुन्दरदास, डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, २३०, क्रा०, ४)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
…सी तुलसीदास, ७, आ० रामचन्द्र शुक्ल, १८१, क्रा०, १।।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
…सी तुलसीदास की समन्वय-साधना, ब्योहार राजेन्द्रसिंह, क्रा०, ४)	नागरी प्रचारिणी सभा
…ी मंगल, २, ६३, क्रा०, ।–)	रामनारायणलाल
…, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, १६०, क्रा०, २)	प्रयाग विश्वविद्यालय
…, रामबहोरी शुक्ल, २८२, क्रा०, ३)	हिन्दी भवन
…-ग्रन्थावली (भाग १, खण्ड १–२), डॉ० माताप्रसाद गुप्त, ६४०, ५८०, क्रा०, १५)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
…-ग्रन्थावली (तीन खण्डों में), मूल्य दो खण्डों का, ११।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
…ी के चार दल (२ भाग), सद्गुरुशरण अवस्थी, क्रा०, ५।।≡)	इण्डियन प्रेस
…दास, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, डि०, ८)	प्रयाग विश्वविद्यालय
…दास, डॉ० रामरतन भटनागर, २६३, क्रा०, ३।।)	विद्या मन्दिर
…दास और उनकी देन, १, श्री रामनाथ 'सुमन', २०, डि०, ≡)	भारती भण्डार
…दास और उनका युग, १, राजपति दीक्षित, ४६३, क्रा०, ७)	ज्ञानमण्डल
…दास और उनका काव्य, १, रामनरेश त्रिपाठी, ३५०, डि०, ७)	राजपाल
…-दर्शन, ५, डॉ० बलदेव प्रसाद मिश्र, ३७५, क्रा०, ५)	सम्मेलन
…-रसायन, १, डॉ० भगीरथ मिश्र, २००, क्रा०, २।।)	साहित्य भवन
…-परिचय, कमलादेवी गर्ग, १)	बंगीय हिन्दी परिषद्
… : व्यक्तित्व और विचार, १, हरिकृष्ण अवस्थी, ६६, क्रा०, १)	विद्या मन्दिर
…ी संग्रह, १, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, १२४, क्रा०, १।)	सम्मेलन
…-साहित्य की भूमिका, १, डॉ० रामरतन भटनागर, ३८५, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
…ी सौरभ, डॉ० किरणकुमारी गुप्त, १४०, क्रा०, २)	साहित्य निकेतन
…वली, १, २२७, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
…ी मंगल, २, क्रा० ½, ≡)	रामनारायणलाल
…ी रामायण, १, क्रा०, ≡)	रामनारायणलाल
…काण्ड (सटीक) १, ३६३, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
…शिरोमणि महाकवि तुलसीदास, नलिनीमोहन सान्याल १४६, क्रा०, १।।)	रामनारायणलाल
…में राम-कथा, १, डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र, ३।।)	बंगीय हिन्दी परिषद्
…की राम-कथा, १, परशुराम चतुर्वेदी, १८८, क्रा०, ३।।)	किताब महल
…-दर्शन, डॉ० श्रीकृष्णलाल, क्रा०, ३।।)	आनन्द पुस्तक भवन
…-मीमांसा, रजनीकान्त शास्त्री, ३१४, क्रा०, ४)	किताब महल
…वली, ३, रामदत्त भारद्वाज, क्रा०, ३)	गंगा पुस्तक माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरितमानस, १, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, ५८६, डि०, ४)
रामचरितमानस, १, शम्भूनारायण चौबे, ५६८, डि०, ७)
रामचरितमानस की भूमिका, २, रामदास गौड़, ५१८, का०, ५)
राम-कथा, १, डॉ० कामिल बुल्के, ५३२, डि०, ८)
रामलला, १, ≡)
रामायण का अध्ययन, १, का०, १)
रामाज्ञा (प्रश्न) १, ७१, का०, ।।।)
लंका काण्ड, १, १४७, का०, ।≡)
विनय-पत्रिका, ६, वियोगी हरि, ५५४, का०, ६)
विनय-पत्रिका, (सटीक) २, ४७०, का०, ३।।)
विनय-पत्रिका-दर्शन, १, तपेशकुमार चतुर्वेदी, १०२, का०, १।।)
विश्व-साहित्य में रामचरितमानस, राजबहादुर लमगोड़ा, का०, १।।)
वैराग्य संदीपिनी, १, १६, का०, ।≡)
सुन्दर काण्ड, १, ६२, ।)
संक्षिप्त गीतावली, तुलसीदास, का०, ।।)
संक्षिप्त राम स्वयंवर, ब्रजरत्नदास, का०, १।।)
संक्षिप्त विनय-पत्रिका, १, ८५, का०, ।।।)
श्रीकृष्ण गीतावली, १, ६८, ।≦)

दिनकर

कवि दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन, १७२, का०, ३)
दिग्भ्रमित राष्ट्र-कवि, १, कामेश्वर शर्मा, डि०, २।।)
दिनकर और उनकी काव्य-प्रवृत्तियाँ, १, शिवचन्द्र शर्मा, २४१, का०, ३।)
दिनकर की काव्य-साधना, १, मुरलीधर श्रीवास्तव, १००, का०, २।।)

दीनदयाल गिरि

अन्योक्ति कल्पद्रुम, ३, टीकाकार ला० भगवानदीन, ३६२, का०, १।।।)
अन्योक्ति कल्पद्रुम, दीनदयाल गिरि, ।=)
दृष्टान्त तरंगिणी, १, टीकाकार ला० भगवानदीन, ६७, का०, ।।)
दीनदयाल गिरि, ७, भगवानदीन, २३७, का०, २।।)
दीनदयालगिरि ग्रंथावली, दीनदयाल गिरि, २३७, का०, १)

देव

देव और उनकी कविता (उत्तरार्द्ध), १, डॉ० नगेन्द्र, ३००, डि०, ६)
देव-सुधा, मिश्रबन्धु, २।।।)
देव और बिहारी, ५, कृष्णबिहारी मिश्र, २००, का०, ४।।)
देव-दर्शन, हरदयालुसिंह, १६८, का०, १।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रसायन, २, जानकीनाथ 'मनोज', २०८, क्रा०, २॥) — सम्मेलन
...कवि देव, १, भोलानाथ तिवारी, २३२, क्रा०, २॥) — किताब महल

नन्ददास

...(भाग १-२), १, उमाशंकर शुक्ल, ६) — प्रयाग विश्वविद्यालय
...दास, डॉ० रामरतन भटनागर, २३६, क्रा०, २॥) — किताब महल
...दास ग्रन्थावली, व्रजरत्नदास, ५) — नागरी प्रचारिणी सभा
...दास-कृत भँवर गीत, १, विश्वम्भरनाथ मेहरोत्रा, १०५, क्रा०, १) — रामनारायणलाल
...दास-कृत भँवर गीत (सटीक), १, प्रेमनारायण टण्डन, ८०, क्रा०, ।।।) — विद्या मन्दिर
...पंचाध्यायी भँवर गीत, १, डॉ० सुधीन्द्र, १३२, क्रा०, २) — विनोद पुस्तक मन्दिर

नाटक-कला

...निक हिन्दी नाटक, ४, डॉ० नगेन्द्र, १३८, क्रा०, १।।।) — साहित्य रत्न भण्डार
...की-कला, १, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, २६३, क्रा०, २॥) — रामनारायणलाल
...की-कला, १, रामयतन सिंह 'भ्रमर', १६२, क्रा०, २॥) — किताब महल
...दी नाट्य-परम्परा, १, दिनेशनारायण उपाध्याय, १२३, क्रा०, १) — रामनारायणलाल
...दी नाट्य-साधना, १, राजेन्द्रसिंह गौड़, २४८, क्रा०, २॥) — श्रीराम मेहरा
...दी नाटककार, १, राजेन्द्रसिंह गौड़, ३२८, क्रा०, ३) — श्रीराम मेहरा
...दी-एकांकी, २, डॉ० सत्येन्द्र, २३५, क्रा०, २॥) — साहित्य रत्न भण्डार
...दी-एकांकी एवं एकांकीकार, १, रामचरण महेन्द्र, २२४, क्रा०, १।।।) — सरस्वती पुस्तक सदन
...दी-नाटक : उद्भव तथा विकास, १, डॉ० दशरथ ओझा, ५०७, क्रा०, ७) — राजपाल
...दी-नाटक-साहित्य का इतिहास, २, डॉ० सोमनाथ गुप्त, २७०, डि०, ४) — हिन्दी भवन
...दी-नाट्य-साहित्य, ४, व्रजरत्नदास, ३००, क्रा०, २।।।) — हिन्दी साहित्य कुटीर
...दी-नाटककार, १, जयनाथ 'नलिन', ३१७, डि०, ५) — आत्माराम
...दी नाटकों का विकास, १, शिवनाथ, १२०, डि०, २॥) — किताब महल

निबन्ध-कला

...न्ध-कला, ५, राजेन्द्रसिंह गौड़, क्रा०, २॥) — साधना सदन
...न्ध-कला, १, डॉ० हरिवंश कोछड़, १२०, क्रा०, १॥) — शारदा मन्दिर
...न्धालोक, १, राजेन्द्र शर्मा, २६८, डि०, ४) — लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
...दी-निबन्ध और निबन्धकार, १, ठाकुरप्रसादसिंह, १४८, क्रा०, २) — हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
...दी-निबन्धकार, १, जयनाथ 'नलिन', ३००, डि०, ६) — आत्माराम
...दी में निबन्ध-साहित्य, जनार्दनस्वरूप अग्रवाल, ६८, क्रा०, १।) — साहित्य भवन
...दी-साहित्य में निबन्ध, ब्रह्मदत्त शर्मा, क्रा०, १॥) — गयाप्रसाद एण्ड सन्स

निबन्ध : विविध

...के क्षण, १, शकुन्तला सक्सेना, ७३, क्रा०, ।।।) — साहित्य रत्न भण्डार
..., १, आ० चन्द्रबली पाण्डे, १४०, डि०, ३) — सम्मेलन
...कण्ठाभरण, १, मिश्रबन्धु, १॥) — गंगा पुस्तक माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरआन में हिन्दी, आ० चन्द्रबली पाण्डे, ५६, क्रा०, ।।=)
जीवन-विहार, १, काका कालेलकर, क्रा०, २)
दिमागी गुलामी, राहुल सांकृत्यायन, ७४, क्रा०, ।।।)
बातचीत, आनन्दकुमार, १)
मैंने कहा, १, गोपालप्रसाद व्यास, १३४, डि०, ३)
स्वतन्त्र चिन्तन, १, कर्नल इंगरसोल, २३२, क्रा०, १।।)
हमारी उलझन, १, भगवतीचरण वर्मा, ११५, क्रा०, १।।)

निबन्ध-संग्रह

अतीत स्मृतियाँ, ४, सोहनलाल, ११२, क्रा०, १।=)
आदर्श निबन्ध, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, २)
आदर्श निबन्ध माला, १०, सन्त गोकुलचन्द, क्रा०, २।।)
आदर्श हिन्दी निबन्ध माला, १, विजयेन्द्र स्नातक, क्रा०, २।।)
आधुनिक निबन्ध, १, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, रामलालसिंह, २२१, क्रा०, ३)
नारायण निबन्धावली, नारायणप्रसाद, १)
निबन्ध-कुसुमाकर, २, क्रा०, १।)
निबन्ध-निधि, १, शिवनारायण श्रीवास्तव, क्रा०, २।)
निबन्ध-प्रकाश, १, श्यामबिहारी विरागी, क्रा०, २)
निबन्ध-प्रदीप, १, डॉ० सोमनाथ गुप्त, १७२, क्रा०, २)
निबन्ध-प्रदीप, रामयतनसिंह 'भ्रमर', ४३२, क्रा०, ४)
निबन्ध-प्रबोध, डॉ० रामरतन भटनागर, ४१६, क्रा०, २।)
निबन्ध-भारती, १, सिंहासनराय सिद्धेश, क्रा०
निबन्ध-माला, गुलाबराय, १६८, क्रा०, १।।)
निबन्ध-रत्नाकर, १, उदयभानु 'हंस', ८१८, क्रा०, ८)
निबन्ध-लहरी, २, कमलकान्ता वासुदेव, १६४, क्रा०, २)
निबन्धादर्श, १, गोकुलचन्द शर्मा, १३६, क्रा०, १।)
निबन्ध-संग्रह, १, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, २२०, डि०, ५)
पुरातत्त्व निबन्धावली, राहुल सांकृत्यायन, ३५४, २।।।)
प्रबन्ध पुष्कर, २, व्रजलाल गोस्वामी, १५३, क्रा०, १।।।=)
प्रदीप, १, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, ३२०, क्रा०, ३)
प्रबन्ध-प्रकाश, ६, शम्भूदयाल सक्सेना, २७१, क्रा०, २)
प्रबन्ध-प्रकाश (दो भागों में), १, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, क्रा०, ५)
प्रबन्ध-प्रभाकर, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २५६, क्रा०, २।)
प्रबन्ध-प्रभाकर, ६, गुलाबराय, ३८४, क्रा०, ४।)
प्रबन्ध-पूर्णिमा, डॉ० रामरतन भटनागर, ४०१, क्रा०, ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...आगार, २, यज्ञदत्त शर्मा, ५५६, डि०, ५।।)	आत्माराम
...संग्रह, कृपानाथ मिश्र, १।।)	पुस्तक भण्डार
...माला, अक्षयवट मिश्र, १।।)	पुस्तक भण्डार
...निबन्ध माला, १, नारायण सारस्वत, २७६, क्रा०, २।।)	रीगल बुक डिपो
...निबन्ध, १, इन्द्र एम० ए०, २०८, क्रा०, २।)	हिन्दी भवन
...निबन्ध, १, रामजीलाल बघौतिया, २५५, क्रा०, ३)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...निबन्ध, १, विजयशंकर मल्ल, राकेश गुप्त, १८४, क्रा०, २।)	नन्दकिशोर
...निबन्ध माला, (दो भाग), श्यामसुन्दरदास, ३)	नागरी प्रचारिणी सभा

निराला

...निराला, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २५२, क्रा०, २।।)	किताब महल
...कारी कवि निराला, १, बच्चनसिंह, क्रा०, २।।।)	युगाश्रय
...ला, १, डॉ० रामविलास शर्मा, २००, क्रा०,	पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
...कवि निराला, काव्य, कला, कृतियाँ, १, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, ३२०, क्रा०, ३।)	सरस्वती पुस्तक सदन
...निराला, १, गंगाप्रसाद पाण्डेय, ३८०, डि०, १०)	साहित्यकार संसद्

पत्रकारिता

...पत्रकार-कला, १, रा० र० खाडिलकर, २३६, क्रा०, ३)	ज्ञानमण्डल
...और पत्रकार, २, कमलापति त्रिपाठी, ४४२, क्रा०, ६)	ज्ञानमण्डल
...पत्रकार-कला, १, रोलैंड ई० वूल्सले, ३४३, क्रा०, ६)	ज्ञानमण्डल
...पत्रों का इतिहास, १, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, ३६५, क्रा०, ६)	ज्ञानमण्डल

प्रसाद

...शत्रु-समीक्षा, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, क्रा०, ।।)	नन्दकिशोर
...शत्रु (प्रसाद), ३, प्रेमनारायण टण्डन, १२०, क्रा०, १।।)	विद्या मन्दिर
...प्रसाद की काव्य-साधना, श्री रामनाथ 'सुमन', क्रा० ३।।)	छात्र-हितकारी पुस्तकमाला
...प्रसाद, डॉ० रामरतन भटनागर, २१४, क्रा० २।।)	किताब महल
...: एक अध्ययन, १, लक्ष्मीनारायण टंडन, ६२, क्रा० १।)	विद्या मन्दिर
...की टीका, विश्वम्भर 'मानव', ४५५, क्रा०, ५)	किताब महल
...-दर्शन, १, कमल साहित्यालंकार, १७४, क्रा० ३),	साहित्य ज्ञान मन्दिर
...-दर्शन, कन्हैयालाल सहल, विजयेन्द्र स्नातक, १७६, ४)	आत्माराम
..., १, भारत भूषण 'सरोज', ८४, क्रा०, १)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...: एक परिचय, २, गंगाप्रसाद पाण्डेय, १७२, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
...का सरल अध्ययन, १, सत्यपाल विद्यालंकार, ६७, क्रा०, १)	हिन्दी भवन
...सार, १, रोशनलाल सिंहल, १।)	राजपाल
...और प्रसाद की कविता-गंगा, शशिकुमार मिश्र, ४६०, डि०, ६।)	रवि प्रकाशन
...का विवेचन, ब्रजभूषण शर्मा, १६०, क्रा०, १)	इण्डियन प्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामायनी-अनुशीलन, रामलालसिंह, ३१६, क्रा०, ४)
कामायनी, डॉ० रामरतन भटनागर, २३८, क्रा०, २॥)
कामायनी-सौन्दर्य, डॉ० फतहसिंह, ४२४, क्रा०, अजिल्द ४) सजिल्द ४॥)
गद्यकार प्रसाद, १, शम्भुनाथ पाण्डेय, २००, क्रा०, २।)
चन्द्रगुप्त-समीक्षा, २, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, ५६, क्रा०, ॥।)
चन्द्रगुप्त, फूलचन्द पाण्डेय, २८६, क्रा०, २॥)
चन्द्रगुप्त : आलोचना, १, मुरलीधर श्रीवास्तव, ११६, क्रा०, १॥)
जयशंकरप्रसाद, ३, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, १७०, डि०, ३)
जयशंकरप्रसाद : एक अध्ययन, १, गोपीनाथ 'व्यथित', १२०, क्रा०, २॥)
प्रसाद और उनका साहित्य, ३, विनोदशंकर व्यास, २५०, क्रा०, २॥)
प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, १, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, २८३, डि०, ५॥)
प्रसाद के तीन ऐतिहासिक नाटक, ३, राजेश्वरप्रसाद अर्गल, १५६, क्रा० २॥)
प्रसाद के तीन नाटक, १, प्रेमनारायण टण्डन, १५५, क्रा०, १)
प्रसादजी के दो नाटक, १, कृष्णानन्द गुप्त, क्रा०,
प्रसाद का चन्द्रगुप्त, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, ३)
प्रसादजी का अजातशत्रु, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, ३)
प्रसादजी की ध्रुवस्वामिनी, कृष्णकुमार सिनहा, ११३, क्रा०, १॥=)
प्रसाद के नाटक, १, डॉ० रामरतन भटनागर, ४०६, क्रा०, ५)
प्रसाद के नाटकीय पात्र, १, जगदीशनारायण दीक्षित, ३१४, डि०, ५)
प्रसाद का कथा-साहित्य, १, डॉ० रामरतन भटनागर, ३५३, क्रा०, ४)
प्रसाद की विचार-धारा, १, डॉ० रामरतन भटनागर, ३५५, क्रा०,
प्रसाद का जीवन, कला और कृतित्व, १, महावीर अधिकारी, डि०, ६)
प्रसाद का विकासात्मक अध्ययन, १, किशोरलाल गुप्त, २६२, क्रा०, ३॥।)
प्रसाद के उपन्यास तथा कहानियाँ, १, सुशीलादेवी तथा विमलादेवी, २७४, क्रा०, २॥)
प्रसाद की कहानियाँ, केदारनाथ शुक्ल, २॥)
प्रसाद की कला, ४, गुलाबराय, ३००, क्रा०, ३)

प्राणि-शास्त्र

चिड़ियाखाना, १, कुँ० सुरेशसिंह, १॥।)
जीवों की कहानी, कुँ० सुरेशसिंह, १००, ४)
जंगल के जीव, १, श्रीराम शर्मा, क्रा०, ५)
जंतु जगत, व्रजेश बहादुर ५०२, ८)
जंतु विज्ञान (भाग २), चम्पतस्वरूप गुप्त, ७८६, १०)
दूध पिलाने वाले जन्तु, शुकदेव नारायण, २१६, ३)
पक्षी-परिचय, २, पारसनाथसिंह, ३१४, क्रा०, २)
प्राथमिक जीव-विज्ञान, १, बख्शी ए० पी० सिनहा तथा के० पी० वर्मा, ३)
रेंगने वाले, १, आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, १३।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..., १, जगपति चतुर्वेदी, १६०_ क्रा०, २)	किताब महल
...यें, १, श्रीराम शर्मा, क्रा०, १॥)	विशाल भारत बुक डिपो
...चिड़ियाँ, ३, कुँ० सुरेशसिंह १५०, फु० १/१६, ४)	भारती भण्डार
...नवर, २, कुँ० सुरेशसिंह, २०४, फु०, १/१६, ४)	

प्रेमचन्द

प्रेमचन्द, मन्मथनाथ गुप्त, रमेश वर्मा ७६७, क्रा०, ७॥)	किताब महल
कला और प्रेमचन्द, १, श्रीपति शर्मा १६२, क्रा०, २॥)	नन्दकिशोर
: एक विवेचन, २, डॉ० इन्द्रनाथ मदान, १२६, क्रा०, ३।)	राजकमल प्रकाशन
: साहित्यिक विवेचन, २, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, ११८, क्रा०, २=)	हिन्दी भवन
और उनका युग, १, डॉ० रामविलास शर्मा, १८४, क्रा०, ३)	मेहरचन्द मुन्शीराम
: उनकी कृतियाँ और कला, १, प्रेमनारायण टण्डन ३०८, क्रा०, ३॥)	विद्या मन्दिर
१, हंसराज 'रहबर' ३६६, डि०, ६॥)	आत्माराम
१, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, २०४, क्रा०, २॥)	साहित्य निकेतन
: उनकी कहानी-कला, २, डॉ० सत्येन्द्र, ३१२, क्रा०, ३)	साहित्य रत्न भण्डार
१, डॉ० रामरतन भटनागर, २५६, क्रा०, २॥)	किताब महल
: घर में, १, शिवरानी प्रेमचन्द, क्रा०, ५)	सरस्वती प्रेस
(प्रेमचन्द-पात्र-विशेषांक), १, २२४, रा०, ५)	प्रेरणा प्रकाशन
के योद्धा प्रेमचन्द, १, अमृतराय, क्रा०, ।=)	हंस प्रकाशन

पुस्तकालय-विज्ञान

सूची कल्प, १, डॉ० रंगनाथन्, ४६८, डि०, १२)	आत्माराम
प्रक्रिया, १, डॉ० रंगनाथन, २७०, डि०, ८)	आत्माराम
मीमांसा, १, डॉ० रंगनाथन्, ८०, डि०, २)	आत्माराम
..., २, अनुज शास्त्री, ७८, डि०, १॥)	भारती प्रकाशन
...-प्रवेशिका, १,	मिनर्वा बुक डिपो
... और उसका संचालन, २)	पुस्तक भण्डार
... क्यों और कैसे, १, अनुज शास्त्री १॥)	पुस्तकालय
...क्रामिक वर्गीकरण, १, प्रभातकुमार मुखोपाध्याय, भूपेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय १०६, रा०, २)	सम्मेलन

बाल-मनोविज्ञान

बच्चे से कैसे कहूँ, १, द्वारिकाप्रसाद, ६७, क्रा०, १॥)	नीलाभ प्रकाशन
बालक को पहचानिये, १, युधिष्ठिर कुमार, २२, डि०, १॥)	आत्माराम
...मुद्रा (तीन भाग), १, सावित्रीदेवी वर्मा, २३७, डि०, १३॥)	आत्माराम
बच्चे, १, जगदीशसिंह, ६३, क्रा०, १॥)	नैशनल पब्लिशिंग हाउस
विकास का संक्षिप्त मनोविज्ञान, १, अर्जुन चौबे काश्यप ४)	राजेश्वरी पुस्तकालय
के पहले पाँच साल, ३, मेकडानल्ड लेडाल ७५, क्रा०, १)	राजकमल प्रकाशन

...र, १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन : ४ से १० साल तक, मैरी चैडविक, ६०, क्रा०, १)
बच्चा : मेरा शिक्षक, १, कैरोलीन प्रैट, १०७, क्रा०, १।)
बच्चों से व्यवहार, १, नारायण प्रसाद अरोड़ा, १७६, क्रा०, १)
बच्चे के प्रारम्भिक वर्ष, १, जगदीशसिंह, २००, क्रा०, ३)
बाल अपराध मनोविज्ञान, १, शम्भुनाथ सक्सेना २००, क्रा०, २)
बाल-विकास (शिशु-पालन), डॉ० पी० एल० चोबरा ६४, क्रा०, ८, १।)
बाल विकास, राममूर्ति मेहरोत्रा १५८, क्रा०, २।।)
बाल का भाव-विकास, २, एस० पी० कनल, २०६, डि०, ५)
बालक के प्रति निर्दयता, स्वर्णलता रतिभानुसिंह नाहर, १६३, क्रा०, २।।)
बाल-मनोविकास, १, लालजीराम शुक्ल, ३२३, डि०, ६)
बाल मनोविज्ञान प्रवेशिका, १, १०८, क्रा०, १।।)
बाल मनोविज्ञान, १ १, अर्जुन चौबे काश्यप, ६७,
बाल मनोविज्ञान, लालजीराम शुक्ल, २,
माता-पिता की समस्या, मेक्डानल्ड लेडाल, ४८, क्रा०, १)
सरस बाल मनोविज्ञान, १, डॉ० कंचनलता सब्बरवाल १४३ क्रा०, १।।)
संक्षिप्त बाल मनोविज्ञान, १, कृष्णकुमार जमुआर, ११४, क्रा०, १।।)
हमारे बच्चे : ६ से १२ वर्ष तक, १, अनु० मुनीश सक्सेना, २८०, डि०, ४।।)
हमारे बच्चे,१, जगदीशसिंह, १०३, क्रा०, १।।)

बिहारी

कविवर बिहारी, १, जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ३६८, ड०, क्रा०, ६)
बिहारी, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २७४, क्रा०, ३)
बिहारी की वाग्विभूति, ३, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २००, क्रा०, १।।।=)
बिहारी रत्नाकर, १, जगन्नाथदास 'रत्नाकर', ३६०, क्रा०, ८)
बिहारी, १, भारतभूषण 'सरोज' १६८, क्रा०, २।।)
बिहारी-वैभव, १, कमलादेवी गर्ग, ८०, क्रा०, १।)
बिहारी-बोधिनी, ६, लाला भगवानदीन, ३१२, क्रा०, ३।)
बिहारी, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २०४, क्रा०, २।।)
बिहारी-सुधा, १, मिश्रबन्धु, ६४, क्रा०, ।।=)
बिहारी-दर्शन, लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी, क्रा०, ५)
बिहारी विभव, हरदयालुसिंह, २३३, क्रा०, १।-)
बिहारी सतसई, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी २।।)
बिहारी संग्रह, ३, वियोगी हरि, ५४, क्रा०, ।=)
संक्षिप्त बिहारी, १, रमाशंकर प्रसाद, १४२, क्रा०, २)

भारतेन्दु

चन्द्रावली नाटिका, ३, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ११८, क्रा०, १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए
हमारा गौरवान्वित प्रकाशन :
भाषा-विज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित
डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या कृत

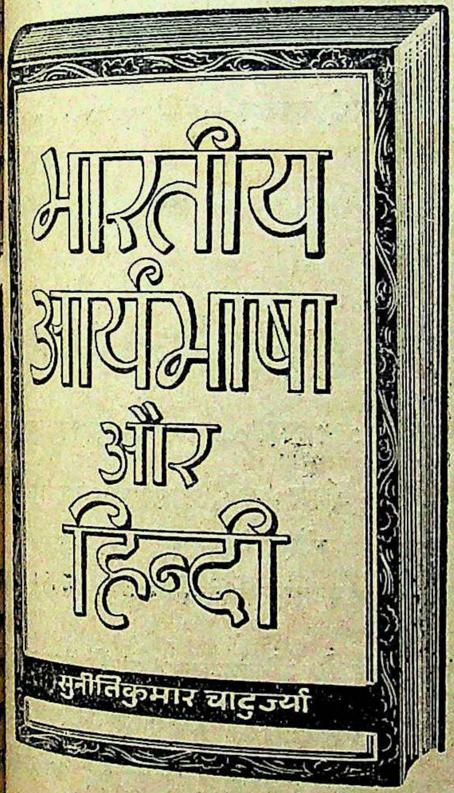

हिन्दी भाषा का प्राचीनतम अनुसन्धान,
तथा उसका अद्यतन इतिहास।

मूल्य ६)

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

हमसे प्राप्य प्रकाशन

पाठ्यक्रम में स्वीकृत पुस्तकें

वेलिक्रिसन रुकमणीरी	: सं० आनन्दप्रकाश दीक्षित	५)
श्री चन्द्रावली नाटिका	: सं० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१॥)
भारत दुर्दशा	: स० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	१)
रीतिकालीन हिन्दी कविता	: रामचन्द्र तिवारी	॥)
रीतिकालीन कविता और सेनापति	: रामचन्द्र तिवारी	१॥)
हिन्दी साहित्य में विविधवाद	: डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल	६)
रीतिकालीन कविता एवं शृंगार-रस का विवेचन	: डॉ० राजेश्वर	६॥)
हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य	: डॉ० कमलकुल श्रेष्ठ	७॥)
रचनानुवाद कौमुदी	: डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	३)
प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी	: डॉ० कपिलदेव द्विवेदी	१)

अन्य पुस्तकें

मुद्रिका (नाटक)	: सद्गुरुशरण अवस्थी	१)
माटी का फूल (निबन्ध)	: रामअधार सिंह	२)
विभावरी (कविता)	: नीरज	१॥)
रश्मि रेखा (कविता)	: बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	४)
रोगों की सरल चिकित्सा	: विट्ठलदास मोदी	४)
जीने की कला	: विट्ठलदास मोदी	१।)
उपवास से लाभ	: विट्ठलदास मोदी	१॥)
प्राकृतिक जीवन की ओर	: अडोल्फ जस्ट	३)
आदर्श आहार	: डॉ० सतीशचन्द्र दास	१)
सर्दी जुकाम खाँसी	: डॉ० रैस्मस	॥।)
स्वास्थ्य कैसे पाया	: विट्ठलदास मोदी	१॥)
उठो !	: स्वामी कृष्णानन्द	१।)
होटल माडर्न	: डॉ० सत्यकेतु	३॥)
आचार्य चाणक्य	: डॉ० सत्यकेतु	४)
संकरा द्वार	: आन्द्रे जीद	२॥)
भारत का प्राचीन इतिहास	: डॉ० सत्यकेतु	१०)
भारतीय संस्कृति और उसका इतिहासः		७)
प्राणों के स्वर	: दामोदर	२॥)

शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

हिन्दी का गद्य साहित्य—सद्गुरुशरण अवस्थी, रामचन्द्र तिवारी
काव्य-मीमांसा—डॉ० भगीरथ मिश्र
पतझड़ (काव्य-संग्रह)—माखनलाल चतुर्वेदी
कला का अनुवाद (कहानी संग्रह)—माखनलाल चतुर्वेदी

विश्वविद्यालय प्रकाशन,
नखास चौक, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेकानेक विद्वानों द्वारा प्रशंसित हमारा नवीनतम प्रकाशन :

कामायनी और प्रसाद की कविता-गंगा

लेखक—श्री शिवकुमार मिश्र एम० ए०

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने प्रसाद जी की काव्य-कला का क्रमिक विकास दिखाते हुए 'कामायनी' की सर्वाङ्गपूर्ण विस्तृत विवेचना की है। साथ में सम्पूर्ण महाकाव्य की अत्यन्त सरल और स्पष्ट टीका प्रस्तुत पुस्तक को और भी आकर्षक बना देती है। आलोचना-क्रम निम्नलिखित है :

—विषय प्रवेश : प्रसाद, जीवनी एवं काव्य-कला का क्रमिक विकास।

१. कामायनी : कथानक और उसकी ऐतिहासिकता
२. चरित्र चित्रण
३. दार्शनिक भित्ति
४. मनस्तत्व का विवेचन
५. प्रकृति वर्णन
६. भाषा शैली
७. रस और छन्द
८. वर्तमान का स्वर
९. नारी और प्रेम का स्वरूप
१०. 'काम' का स्वरूप
११. महाकाव्यत्व
१२. कामायनी और विश्व के कुछ अन्य महान काव्य : पैराडाइज़ लॉस्ट, इलियड तथा ओडेसी, डिवाइन कामेडिया, एनीड, फास्ट, प्रामेथियस अनबाउन्ड और एन्डमियन।
१३. कामायनी का सन्देश
१४ हिन्दी-साहित्य में स्थान

सम्पूर्ण महाकाव्य की टीका

पृष्ठ संख्या ४६०, साइज डिमाई, मूल्य ६)

रवि प्रकाशन, कानपुर

पत्र-व्यवहार के लिए—किताबघर परेड, कानपुर

दो श्रेष्ठ पुस्तकें

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

ले० डॉ० रामविलास शर्मा

[illegible]ह पुस्तक "भारतेन्दु-युग" नाम की पु[illegible] पुस्त[illegible] बिल्कुल भिन्न है। इसमें भारतेन्दु जीव[illegible]र उनके साहित्य की चर्चा है।

[illegible]ई आकार—सजिल्द, मूल्य ४॥≡)

सूर-साहित्य दर्पण

ले० : प्रो० जगन्नाथराय शर्मा

(एम० ए०, काशी और पटना)
गोल्ड मेडलिस्ट, विद्यालङ्कार
पटना—विश्वविद्यालय, पटना।

इसमें सूर के जीवन-वृत्त, उनके काव्य का र[illegible] काल, उनकी कविता के दार्शनिक एवं साहि[illegible] सौष्ठव, उनके सन्देश तथा उनकी भाषा एवं [illegible] का विवेचन है। भ्रमरगीत, रास, वात्स[illegible] शृङ्गार, एवं विरह-वर्णन का विवेचन मनो[illegible] शैली में किया गया है।

डिमाई आकार—सजिल्द, मूल्य ४॥≡)

विद्याधाम

१३७२, बल्लीमारान, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की चुनी हुई
उत्तमोत्तम
पुस्तकें

उपन्यास
कहानी
नाटक
निबन्ध
बालोपयोगी
स्त्रियोपयोगी
ग्रामोपयोगी
विविध

मिलने का स्थान :

नवयुग साहित्य सदन

खजूरी बाजार, इन्दौर शहर

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

...सम्पन्न तथा उपयोगी उपहार-भेंट और पुस्तकालयों के
...अनूठा ग्रन्थ जिसकी प्रशंसा देश-विदेश में हो रही है।

भारतीय कसीदा

लेखक
जगदीश मित्तल : कमला मित्तल

भूमिका
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

...विध भारतीय कलाकारों द्वारा वर्षों के कठोर परि-
...प्रणीत, इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दुस्तान के कई
...संस्थानों के सहयोग से सम्भव हो सका है।
...बढ़िया कागज़ पर छपे कसीदे के २१५ सादे और
...रंगीन नमूने।
...२८ हाफ़टोन चित्र, ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ-
...सामग्री।
...मजबूत जिल्द, नयनाभिराम तिरंगा कवर।
...आकार ९"×११"।
...मूल्य १५), विशेष संस्करण २०)।

...काशक :
...प्रकाशन
...हिमायतनगर, हैदराबाद

मुख्य वितरक :
राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज बाज़ार, दिल्ली।

प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री वृन्दावनलाल वर्मा

का

ख्यातिप्राप्त उपन्यास

मृगनयनी

को

एक बार पढ़ने के लिये हमारा आग्रह है। इस उपन्यास पर निम्न पाँच पुरस्कार प्रदान किये जा चुके हैं, जो आदर आज तक किसी भी हिन्दी-उपन्यास को प्राप्त नहीं हुआ :

१. हरजीमल डालमिया पुरस्कार २१००)
२. साहित्यकार संसद, प्रयाग, का श्री साहू जगदीश प्रसाद पुरस्कार १०००)
३. उत्तर-प्रदेश सरकार का साहित्य पुरस्कार १०००)
४. मध्य-भारत सरकार का साहित्य कला सम्बन्धी सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार १०००)
५. श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी स्वर्ण पदक (नागरी प्रचारणी सभा काशी)

श्री वृन्दावनलाल वर्मा का नवीनतम
ऐतिहासिक उपन्यास
टूटे काँटे
अभी अभी प्रकाशित हुआ है।
मूल्य ४)

मयूर प्रकाशन, झाँसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए

(बी० ए०, एम० ए०, विशारद, साहित्यरत्न, प्रभाकर आदि)

१. प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ—
डॉ० रामविलास शर्मा — ३।।)

२. भारतेन्दु युग—डॉ० रामविलास शर्मा — ३)

३. 'रास पंचाध्यायी' तथा 'भँवरगीत'—
(मूल, विस्तृत टीका और समालोचना)
डॉ० सुधीन्द्र — २)

४. साहित्य समीक्षांजलि—
(२७ सुप्रसिद्ध लेखकों के २६ निबन्धों का संकलन)
डा० सुधीन्द्र — ४)

५. पृथ्वीराज रासो—
(पद्मावती समय)
प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए० — १।)

६. चिन्तामणि दर्शन—
(चिन्तामणि प्रथम भाग की टीका तथा समालोचना)
प्रो० हरिहरनाथ टंडन एम० ए० — ३)

७. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ—
[द्वितीय संस्करण]
श्री जयकिशनप्रसाद एम० ए० — ५)

८. गीतकार विद्यापति—
प्रो० रामवशिष्ठ एम० ए० — २।।)

९. घनआनन्द—प्रो० रामवशिष्ठ एम० ए० — २।।)

१०. रस अलंकार पिंगल—[तृतीय संस्करण]
प्रो० शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० — २।।)

११. काव्य-शास्त्र—
(काव्य के लक्षण, शब्द-शक्ति, रस, गुण और रीति, अलंकार, पिंगल तथा दोष)
प्रो० शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० — ३)

१२. विनय-पत्रिका दर्शन—
(तुलसीदास कृत 'विनय-पत्रिका' पर एकमात्र आलोचनात्मक पुस्तक)
प्रो० तपेशकुमार चतुर्वेदी एम० ए० — १।।)

१३. हिन्दी और उसके कलाकार—
प्रो० फूलचन्द्र जैन 'सारंग' एम० ए०

१४. शैलियाँ—
(प्राचीन अर्वाचीन कवि एवं लेखकों का संक्षिप्त जीवन परिचय तथा शैली)
प्रो० फूलचन्द्र जैन 'सारंग' एम० ए०

१५. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास
[द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण]
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०

१६. भाषा विज्ञान तत्व—
(भाषा विज्ञान का सरल अध्ययन)
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०

१७. साहित्यालोचन सिद्धान्त—
(साहित्यालोचन का सरल अध्ययन)
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०

१८. हिन्दी आलोचना के भिन्न-भिन्न स्रोत और उसके विकास का इतिहास—
प्रो० प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय' एम० ए०

१९. हिन्दी निबन्ध—
(४० उच्चकोटि के हिन्दी निबन्ध : विशारद आदि के परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ पुस्तक)
प्रो० रामजीलाल बघौतिया एम० ए०

२०. हमारे प्रमुख साहित्यकार—
श्री रामनारायण मिश्र एम० ए०

२१. साहित्यिक निबन्ध—
(लगभग ४० उच्चकोटि के साहित्यिक निबन्ध : बी० ए०, एम० ए०, साहित्यरत्न आदि के परीक्षार्थियों के लिए एकमात्र सर्वश्रेष्ठ पुस्तक)
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए०

विनोद पुस्तक मन्दिर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ उपयोगी आलोचनात्मक साहित्य

प्रश्नोत्तर में

तुलसीदास—प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० २॥)
सूरदास—श्री वासुदेव शर्मा शास्त्री एम० ए० २॥)
कवि प्रसाद – श्री शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० २॥)
नाटककार प्रसाद—श्री शम्भुनाथ पाण्डेय एम० ए० २॥)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—श्री रामजीलाल बधौतिया एम० ए० २॥)
हिन्दी साहित्य का इतिहास—
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० २॥)
हिन्दी भाषा का इतिहास — २॥)
भाषा विज्ञान—
[द्वितीय संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण]
प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० २॥)
साहित्यालोचन— ,, २॥)
बिहारी—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम०ए० २॥)
कामायनी—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० १)
जायसी—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० २॥)
प्रियप्रवास—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० १)
साकेत—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० १॥)
उद्धव-शतक—श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० १॥)
आधुनिक तीन महाकाव्य—(कामायनी, प्रियप्रवास एवं साकेत एक ही जिल्द में)
श्री भारतभूषण 'सरोज' एम० ए० ३)
संस्कृत साहित्य का इतिहास—
श्री द्वारिकाप्रसाद एम० ए० २॥)
उद्धव-शतक समीक्षा—(समीक्षा तथा टीका)
[नया संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण]
श्री रामनारायण मिश्र एम० ए० १॥)

४०. पंचवटी : परिचय—
श्री रामनारायण मिश्र एम० ए० ॥)
४१. चित्रलेखा : परिचय—
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० ॥।)
४२. जीवनयज्ञ : परिचय—
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १॥)
४३. हिन्दी गद्य निर्माण : परिचय—
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १)
४४. संचयन : परिचय—
श्री राजनाथ शर्मा एम० ए० १)
४५. हिन्दी गद्य और उसकी शाखाएँ—
प्रो० 'सहृदय' एम० ए० १॥)
४६. आधुनिक कवि हृदय—
प्रो० 'सहृदय' एम० ए० १)
४७. अयोध्याकांड—(मूल, भूमिका व टीका सहित) २॥)
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०
४८. उत्तर कांड—(मूल, भूमिका व टिप्पणी सहित) १॥)
प्रो० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' एम० ए०
४९. कवितावली—
(मूल, भूमिका तथा टीका सहित, उत्तर कांड छोड़कर)
प्रो० फूलचन्द्र जैन 'सारंग' एम० ए० १)
५०. शकुन्तला नाटक—
(भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
राजा लक्ष्मणसिंह १॥)
५१. सत्य हरिश्चन्द्र नाटक—
(भूमिका, मूल तथा टीका सहित)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र १)

अन्य पुस्तकों का सूचीपत्र पृथक से मंगाइए :.

...न्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पीढ़ी के विख्यात कवि पोद्दार रामावतार 'अरुण' की स्थायी काव्य-कृतियों से भारत के किसी भी पुस्तकालय की शोभा बढ़ेगी। पुस्तक-विक्रेता, प्रकाशक, विद्वान समालोचक तथा सहृदय पाठक 'अरुण-काव्य' का अवलोकन कर प्रसन्नता का अनुभव करें।

१. 'विदेह महाकाव्य' : महामानव राजर्षि जनक पर लिखित सवा तीन सौ पृष्ठों के सजिल्द काव्य का मूल्य आठ रुपये।
२. 'कोशा' : पाटलिपुत्र की महान् सुन्दरी नर्त्तकी पर लिखित सौ पृष्ठों के सजिल्द कलात्मक काव्य का मूल्य तीन रुपए।
३. 'विद्यापति' : महाकवि विद्यापति पर लिखित प्रमाणित प्रबंध काव्य का मूल्य पाँच रुपए।
४. 'सूरश्याम' : महाकवि सूरदास पर लिखित अत्यन्त कलात्मक प्रबंध काव्य-संगीत का मूल्य साढ़े तीन रुपए।
५. 'उजली कोयल' : कवि के यूरोप भ्रमण की कथा।
६. 'कालिदास प्रबंध काव्य' : प्रेस में।

इसके अलावा दर्जनों काव्य। कीमती कागज पर सुन्दरतम छपाई तथा मजबूत जिल्द की विशेषता।

प्रकाशक—**किरणकुंज, समस्तीपुर (बिहार)**

प्रमुख वितरक—श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना ३

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली : बम्बई।

छप गई : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की : शोभता की

'राष्ट्रभाषा रत्न' गाइड (भाग १)

छप कर बिक्री के लिए तैयार है। इसमें १० प्रसिद्ध लेखकों द्वारा 'रत्न' परीक्षा के लिए स्वीकृत—यशोधरा, स्कंदगुप्त, सं० झाँसी की रानी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भाषा-विज्ञान, राष्ट्रभाषा व्याकरण, भारतीय शासन तथा नागरिक शास्त्र—पुस्तकों की टीका तथा समालोचना तथा प्रश्नोत्तर दिए गये हैं। लगभग १००० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य डाक-व्यय सहित १०) मूल्य मनी-आर्डर से भेजें। वी० पी० नहीं भेजी जायगी।

दूसरे भाग में शेष पाठ्य-पुस्तकों की टीकाएँ रहेंगी और वह दिसम्बर तक तैयार हो जायगा।

(समिति की परीक्षाओं की अन्य सम्पूर्ण गाइडें भी मिल सकेंगी)

तेजनारायण टंडन, विद्या मंदिर,

रानी कटरा, लखनऊ।

अप्रैल १९५२ से प्रकाशित

पुस्तकालय-सन्देश

भारतीय पुस्तकालय-आन्दोलन का मासिक-पत्र

यह हिन्दी का एकमात्र मासिक-पत्र है, जिसमें पुस्तकालयों की स्थापना से लेकर उनके विस्तार और उनके सुधार तथा उसके प्रत्येक अंग पर रचनाएँ प्रकाशित होती हैं। प्रत्येक पुस्तकालय के लिए आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

इस पत्र के परामर्शदाता हैं :

महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ० सम्पूर्णानन्द, श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, डॉ० दिवाकरप्रसाद विद्यार्थी आदि।

इसके स्थायी स्तम्भ :

नवीनतम प्रकाशन सूची, समीक्षा जगत्, पुस्तकालय परिचय, आदि।

प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के लिए विज्ञापन का सर्वश्रेष्ठ साधन

वार्षिक मूल्य ३)। एक प्रति।)

विज्ञापन तथा नमूने की प्रति के लिए पत्र व्यवहार करें।

पुस्तकालय-सन्देश (मासिक)

पो० पटना विश्वविद्यालय, पटना—५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ी कवि, नाटककार तथा उपन्यासकार

श्री उदयशंकर भट्ट की

नवीन कृतियों के प्रकाशन

नये मोड़

इस सामाजिक उपन्यास की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा हुई है।

३॥)

विद्रोहिणी अम्बा

प्रशस्त पौराणिक नाटक जिसमें प्राचीन तथा समकालीन नारी-समस्या का प्रगतिशील विवेचन किया गया है।

१॥)

सगर-विजय

अयोध्याधीश बाहु के पुत्र सगर का संघर्षपूर्ण नाटक।

२)

पर्दे के पीछे

आठ एकांकी नाटकों का संकलन। "भट्टजी की कला इन एकांकियों में आकर प्रस्फुटित हुई है, जैसे अपना सहज आधार पा गई हो।"

—शिवदानसिंह चौहान।

२॥)

मसिजीवी प्रकाशन

नई दिल्ली।

एकाधिकारी वितरक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली, बम्बई, नई दिल्ली

डॉ० रांगेय राघव की नई पुस्तकें

देवकी का बेटा	३)
यशोधरा जीत गई	३)
लोई का ताना	३)
भारती का सपूत	३)
रत्ना की बात	३)

•

पाँच और नई पुस्तकें प्रेस में

काव्य के मूल विवेच्य	३)
महाकाव्य विवेचन	३)
काव्य-कला और शास्त्र	३)
समीक्षा और आदर्श	३)
काव्य यथार्थ और प्रगति	३)

•

डॉ० रामविलास शर्मा की हिन्दी-साहित्य में क्रान्ति पैदा करने वाली नई पुस्तक

प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	३॥)

•

हम और भी हिन्दी लेखकों की उच्च कोटि की पुस्तकें विभिन्न विषयों पर हिन्दी जगत् को शीघ्र देंगे

प्रकाशक :

विनोद पुस्तक मन्दिर

हास्पिटल रोड, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानमण्डल लिमिटेड के प्राप्य प्रकाशन

राजनीति

- भारतीय राजनीति : विक्टोरिया से नेहरू तक — १०)
- राष्ट्रीयता और समाजवाद — आचार्य नरेन्द्रदेव — १०)
- गांधी हत्याकाण्ड — स० : रा० र० खाडिलकर — ५)
- अन्ताराष्ट्रिय विधान (२रा संस्करण) — सम्पूर्णानन्द — ६)
- पूंजीवाद, समाजवाद, ग्रामोद्योग — भा० कुमारप्पा — ५)
- जापान की राजनीतिक प्रगति — लक्ष्मणनारायण गर्दे — ४)
- रूस का पुनर्जन्म — सोमदत्त विद्यालंकार — १=)
- राजनीति शास्त्र (द्वितीयावृत्ति) — प्राणनाथ विद्यालंकार — ४)
- अपराध और दण्ड — परमेश्वरी लाल गुप्त — १।।)
- चीन और भारत — अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी — १।।)
- आजाद हिन्द फौज और उनके तीन अफसरों का मुकदमा — १)

विज्ञान

- विज्ञान की प्रगति — भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव — ३।।)
- विज्ञान के चमत्कार (२रा संस्करण) — ,, — २।।)
- परमाणु शक्ति — ,, — २।।)

पत्रकारी

- पत्र और पत्रकार — कमलापति त्रिपाठी — ६)
- भारतीय पत्रकार कला — रोलैंड ई० वूल्सले — ६)
- समाचार पत्रों का इतिहास — अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी — ६)
- आधुनिक पत्रकार कला — रा० र० खाडिलकर — ३।।)

इतिहास

- पश्चिमी यूरोप — राबिन्सन — ४।।)
- भारतवर्ष का इतिहास (चौथी बार) — भाई परमानन्द — ८)

जीवनी

- अब्राहम लिंकन — रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे — ।।=)
- इटली के विधायक महात्मागण — २)

आलोचनात्मक

- गीतिकाव्य — रामखेलावन पाण्डेय — ५)
- तुलसीदास और उनका युग — डॉ० राजपति दीक्षित — ७)

वेदान्त

- वैज्ञानिक अद्वैतवाद — रामदास गौड़ — २)
- चिद्विलास — डॉ० सम्पूर्णानन्द — ४।।)
- दर्शन का प्रयोजन (तृतीयावृत्ति) — डॉ० भगवान्दास — ३।)

उपन्यास-कहानी

- बयालीस — प्रतापनारायण श्रीवास्तव
- शव साधन — बलदेवप्रसाद मिश्र
- उलूक-तंत्र (हास्यरस) — ,,
- देशभक्त और देशद्रोही
- तूफान
- नूतन ब्रह्मचारी — बालकृष्ण भट्ट

कृषि

- खाद का उपयोग — दुर्गाप्रसाद सिंह

सर्वोदय साहित्य

- धरातल — शान्तिप्रिय द्विवेदी

निबन्ध

- कल्पलता — आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

स्त्रियोपयोगी

- नारीत्व — मारगरेट मूर ह्वाइट

साहित्यिक

- सामयिकी — शान्तिप्रिय द्विवेदी
- वक्रोक्ति और अभिव्यंजना — रामनरेश वर्मा

किशोर बालोपयोगी

- जियो जागो — यूस्टेस चेसर

मनोविज्ञान

- शिक्षा मनोविज्ञान — हंसराज भाटिया

विविध

- तैरने की कला — कालिदास माणिक
- हमारी खूराक (तृतीयावृत्ति) — एम० आर० मसानी
- सौर पंचांग
- सौर रोजनामचा
- शिव पंचांग

अन्य पुस्तकें

- हिन्दुत्व (हिन्दू धर्म का सार) — रामदास गौड़
- हिन्दू धर्म की बालपोथी — आनन्द शंकर बा० ध्रुव
- तुलसी साहित्य रत्नाकर
- कौशलेन्द्र कौतुक (कविता)
- मानवोत्पत्ति विज्ञान
- संक्षिप्त विष-विज्ञान
- हिन्दी कहानी और कहानीकार
- आदि भारत (राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास)

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र से आगे]

...ती वाटिका, १, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, १३०, क्रा०, १॥)	विश्वविद्यालय प्रकाशन
...ती (तीन भाग), १।)	बंगीय हिन्दी परिषद्
...न्धु, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, १४५, क्रा०, १।=)	रामनारायणलाल
...ी, १, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, २३, क्रा०, ।)	रामनारायणलाल
...ी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ३८, क्रा०, ।॥)	हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
...दुर्दशा नाटक, १, डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, ८४, क्रा०, १॥)	विश्वविद्यालय प्रकाशन
...दु तथा उनके पूर्ववर्त्ती कवि, १, किशोरीलाल गुप्त, ८२, क्रा०, ।॥)	साहित्य रत्न भण्डार
...दु कला, १, ४॥)	बंगीय हिन्दी परिषद्
...दु की कविता, १, शिवनाथ, बच्चनसिंह, १३०, क्रा०, २॥)	युगाश्रय
...दु के निवन्ध, १, डॉ० केसरीनारायण शुक्ल, २७६, डि०, ५)	नन्दकिशोर
...दु हरिश्चन्द्र, १, रामजीलाल बघौतिया, १६२, क्रा०, २॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...दु हरिश्चन्द्र, १, डॉ०, रामविलास शर्मा, डि०, ४॥।=)	विद्याधाम
...ेन्दु हरिश्चन्द्र, १, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, २२०, क्रा०, २॥)	साहित्य भवन
...न्दु हरिश्चन्द्र, डॉ० रामरतन भटनागर, २४३, क्रा०, २॥)	किताब महल
...दु हरिश्चन्द्र, १, ब्रजरत्नदास, ४४०, क्रा०, ५)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...न्दु हरिश्चन्द्र (संक्षिप्त), १, ब्रजरत्नदास, १६२, क्रा०, २)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...दु और उनके नाटक, १, केसरीकुमार रघुवंशलाल, ६३, क्रा०, १।)	रामनारायणलाल
...दु नाटिकावली (भाग १), २, ब्रजरत्नदास, ५२८, क्रा०, ३)	रामनारायणलाल
...न्दु नाटिकावली (भाग २) १, ब्रजरत्नदास, ५५०, क्रा०, ३)	रामनारायणलाल
...दु ग्रन्थावली (भाग १), ३, ब्रजरत्नदास, ७६०, डि०, ८)	नागरी प्रचारिणी सभा
...दु ग्रन्थावली (भाग २), २, ब्रजरत्नदास, ८६८, डि०, ८)	नागरी प्रचारिणी सभा
...न्दु ग्रन्थावली (भाग ३), १, ब्रजरत्नदास, ६७६, डि०, ८)	नागरी प्रचारिणी सभा
...दु की नाट्य-कला, १, डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल, ३१४, क्रा०, ३)	पद्मजा प्रकाशन
...दु-युगीन निबन्ध, शिवनाथ, २२८, डि०, २॥)	सरस्वती मन्दिर
...न्दु साहित्य, आ० रामचन्द्र शुक्ल, १॥)	पुस्तक भण्डार
...ास, ५, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, २०४, क्रा०, १॥।)	रामनारायणलाल
...दर, १, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, क्रा०, ।)	रामनारायणलाल
...हरिश्चन्द्र, १, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, १११, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
...हरिश्चन्द्र नाटक, कृष्णकुमार सिनहा, क्रा०, १।=)	राजेश्वरी पुस्तकालय
...न्द्र काव्य, जगन्नाथदास रत्नाकर, ।=)	नागरी प्रचारिणी सभा

भाषा-विज्ञान

...विज्ञान और व्याकरण दर्शन, १, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, ४७२, रा०, १२)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...हिन्दी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ७४, क्रा०, १॥)	साहित्य भवन
...ी हिन्दी, डॉ० बाबूराम सक्सेना, १४६, डि०, ३)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालि-प्रबोध, १, आद्यादत्त ठाकुर, १४६, २)	नागरी प्रचारिणी
प्राकृत विमर्श, १, डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल, ४००, रा०, ४॥)	लखनऊ विश्वविद्या
बिहारी भाषाओं की उत्पत्ति और विकास, १, नलिनमोहन सान्याल, १४४, का०, ।॥)	रामनारायण
भारत की भाषाएँ और भाषा-सम्बन्धी समस्याएँ, १, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, २१७, का०, ३)	हिन्दी
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, १, डॉ०, सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, २६०, डि०, ६)	राजकमल प्रका
भाषा रहस्य, डॉ० श्याम सुन्दरदास, ४११, का०, ५॥)	इण्डियन
भाषालोचन, सीताराम चतुर्वेदी, ६००, का०, ६)	हिन्दी साहित्य
भाषा-विज्ञान तत्व, २, प्रभुनारायण शर्मा, १०६, का०, १॥)	विनोद पुस्तक म
भाषा-विज्ञान, ७, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, ३०३, का०, ५)	किताब म
भाषा-विज्ञान, डॉ० श्यामसुन्दरदास, ३४७, का०, ४)	इण्डियन
भाषा-विज्ञान, २, भारतभूषण सरोज, १२७, का०, २॥)	विनोद पुस्तक म
भाषा-विज्ञान-दर्शन, १, कृष्णचन्द्र शर्मा, देवीशरण रस्तोगी, ११२, का०, १॥)	आत्मा
भाषा-विज्ञान की रूपरेखा, १, जगदम्बाप्रसाद त्यागी, का०, १॥)	तुलसी साहित्य
भाषा-विज्ञान समीक्षा, १, द्वारिकेश, २८८, का०, २॥)	रीगल बुक
भोजपुरी भाषा और साहित्य, १, डॉ० उदयनारायण तिवारी, ६८६, रा०, १३॥)	बिहार राष्ट्रभाषा प
राजस्थानी भाषा, १, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, का०, २॥)	साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्व विद्या
लिपि विकास, ३, राममूर्ति मेहरोत्रा, ७०, का०, ।॥)	साहित्य रत्न भ
शब्दों का जीवन, १, भोलानाथ तिवारी, ११५, का०, २)	राजकमल प्रका
सरल भाषा-विज्ञान, १, जगमोहन टण्डन, प्रतापनारायण टण्डन, १५६, का०, २॥)	विद्या म
सामान्य भाषा विज्ञान, १, डॉ० बाबूराम सक्सेना, ३०३, डि०, ६)	सम्मे
हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी, १, पद्मसिंह शर्मा, १६०, का०, २॥)	हिन्दुस्तानी एके
हिन्दी की प्रादेशिक भाषाएँ, १, रेडियो से प्रसारित भाषण, का०, ८०, डि०, ।॥)	पब्लिकेशंस डिवी
हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ३६२, रा०, १०)	हिन्दुस्तानी एके
हिन्दी भाषा का इतिहास, १, राजनाथ शर्मा, २०२, का०, २॥)	विनोद पुस्तक म
हिन्दी भाषा और लिपि, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, ८३, का०, १)	हिन्दुस्तानी एके
हिन्दी भाषा का विकास, ३, डॉ० श्यामसुन्दरदास, ११७, का०, १)	साहित्यरत्न माला कार्या
हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक इतिहास, द्वारिकेश, १०२, का०, १॥)	रीगल बुक
हिन्दी राष्ट्र, १, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, १०४, का०, १)	भारती भ

भूगोल

आर्थिक भूगोल प्रवेशिका, सं० रामनाथ दुबे, १८६, २)	किताब म
आर्थिक तथा वाणिज्य भूगोल (विश्व), डा० रामनाथ दुबे, ५४३, ६)	किताब म
दक्षिण तथा पश्चिम के तीर्थ स्थान, केसरीमल	गंगा पुस्तक मा
भारत का आर्थिक भूगोल, श्रीनारायण, २३१, का०, २)	किताब म
भारत का आर्थिक भूगोल, डॉ० रामनारायण दुबे, ३००, का०, ४)	किताब म
भारत का आर्थिक तथा वाणिज्य भूगोल, श्रीनारायण, ३५६, का०, २॥)	किताब म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...आर्थिक तथा वाणिज्य भूगोल, कृपाशंकर गौड़, ४॥)	गौतम बुक डिपो
...नदियाँ, व्रजरत्नदास, २)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
...प्रादेशिक तथा आर्थिक भूगोल, पुरुषोत्तम जैन, ५॥)	गौतम बुक डिपो
...भौतिक आधार, डॉ० रामनाथ दुबे, ३३१, क्रा०, ४॥)	किताब महल
...भौतिक आधार, १, रामस्वरूप वशिष्ठ, ३३०, डिं०, ६)	आत्माराम
...मार्ग-निर्देशिका, १, शम्भुनाथ सक्सेना, १२४, क्रा०, १)	नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर
...भूगोल प्रवेशिका, डॉ० रामनाथ दुबे, २२८, क्रा०, २)	किताब महल
...रूपरेखा, राहुल सांकृत्यायन, ४२२, डि०, ८)	किताब महल
...गोल, पुरुषोत्तम जैन, ६)	गौतम बुक डिपो
...गोल, २, जगमोहनप्रसाद, ११६, डि०, १)	हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा
...प्रान्त के तीर्थ-स्थान, प्रेमी, ५०, ३)	गंगा पुस्तक माला
...भूगोल, १, रामचन्द्र, १८४, क्रा०, २॥)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स

भूषण

...विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ३०३, क्रा०, ४)	नन्द किशोर
...भगीरथप्रसाद दीक्षित, १६१, क्रा०, २॥)	साहित्य भवन
...वाली, हरदयालुसिंह, २५८, क्रा०, १।)	इण्डियन प्रेस
...ग्रन्थावली, भूषण, मिश्रबन्धु, २)	नागरी प्रचारिणी सभा
...ग्रन्थावली, २, व्रजरत्नदास, ३६४, क्रा०,	रामनारायणलाल
...ग्रन्थावली, ३, देवचन्द्र, ३३५, क्रा०, २)	हिन्दी भवन
...भूषण, १, भगीरथप्रसाद दीक्षित, डि०, ।=)	भारती भण्डार
...वली और छत्रसाल दशक, ।)	रामनारायणलाल
...भूषण, ३, देवचन्द्र, क्रा०, ३॥।)	हिन्दी भवन
...वली, भूषण, ५२, क्रा०, ॥)	हिन्दी भवन

मनोविज्ञान

...कैसे करें, आर्थर डब्ल्यू, कार्नहॉसर, ६२, क्रा०, १)	राजकमल प्रकाशन
...प्रकाश, लालजीराम शुक्ल, ३)	नन्द किशोर
...मनोविज्ञान, लालजीराम शुक्ल, ४)	नन्द किशोर
...डॉ० जॉन कैनेडी, ७३, क्रा०, १)	राजकमल प्रकाशन
...विज्ञान, १, डॉ० महाजोत सहाय, १६०, क्रा०, १॥)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
...मनोविज्ञान, लालजीराम शुक्ल, क्रा०, ५)	नन्दकिशोर
...मनोविज्ञान, कृष्णकुमार जमुआर, ११२, क्रा०, २)	अजन्ता प्रेस
...मनोविज्ञान, १, जे० बी० मार्गन, ए० आर० गिलिलैण्ड, ३७६, क्रा०, ५)	सेंट्रल बुक डिपो
...विवाह, डॉ० डब्ल्यू बैरान वोल्फ, ७०, क्रा०, १)	राजकमल प्रकाशन
...न, चन्द्रमौलि सुकुल, २॥।)	गंगा पुस्तक माला
...न, ५, वुडवर्थ तथा मार्क्विस, ४१३, क्रा० ¹⁄₁₆, १२॥)	अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस
...र, १९५४	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोविश्लेषण और उनके जन्मदाता, १, सन्तोष गार्गी, परितोष गार्गी, १५२, क्रा०, २)
मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियाएँ, १, डॉ० पद्मा अग्रवाल, क्रा०, ४।।)
मानव मनोविज्ञान, १, डॉ० द्वारिकाप्रसाद, ४४३, क्रा०, ६)
मानसिक चिकित्सा, लालजीराम शुक्ल, ४)
मित्र बनाने की कला, सी० एच० टेयर, ८६, क्रा०, १)
व्यक्तित्व, जे० एम० ग्राहम, ८०, क्रा०, १)
व्यावसायिक मनोविज्ञान, १, डॉ० पद्मा अग्रवाल, २१७, क्रा०, ४।।)
स्वप्न-दर्शन, १, राजाराम शास्त्री, २२०, क्रा०, ३)
सरल मनोविज्ञान, १, हंसराज भाटिया, २४८, क्रा०, ३।।)
सरल मनोविज्ञान, ५, रामजीलाल शुक्ल, ३५६ डि०, ६)
संक्षिप्त सामान्य मनोविज्ञान, १, अर्जुन चौबे काश्यप, ५)
साधारण मनोविज्ञान, १, रामसूरजलाल, रामगोपाल मिश्र, ४४४, क्रा०, ७।।)
सामान्य मनोविज्ञान (दो भाग), १, अर्जुन चौबे काश्यप, १८)
सामान्य मनोविज्ञान, १, कृष्णकुमार जमुआर, ११४, क्रा०, १।।)
हमारे जीवन का अर्थ (६ भाग), डॉ० एलफ्रेड एडलर, क्रा०, प्रत्येक का १)
हीन भाव, डब्ल्यू० जे० मैकब्राईड, ६७, क्रा०, १)

महादेवी वर्मा

महादेवी, १, विश्वम्भर 'मानव', १६८, क्रा०, २।।)
महादेवी वर्मा, १, शचीरानी गुर्टू, ३४४, डि०, ६)
महादेवी वर्मा, १, लक्ष्मीसहाय सिनहा, १६२, क्रा०, २।।)
महादेवी : विचार और व्यक्तित्व, १, शिवचन्द्र नागर, ३५८, क्रा०, ३)
महादेवी-काव्य परिशीलन, १, भागीरथी दीक्षित, २००, क्रा०, २।।)
स्मृति की रेखाएँ : एक अध्ययन, १, प्रेमनारायण टण्डन, ६२, क्रा०, १।)

महावीरप्रसाद द्विवेदी

द्विवेदी-युगीन निबन्ध-साहित्य, १, गंगाबख्शसिंह, ३)
महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, १, डॉ० उदयभानुसिंह, ४३०, रा०, १०)
द्विवेदी मीमांसा, प्रेमनारायण टण्डन, २६६, क्रा०, २)
द्विवेदी पदावली, १, बैजनाथसिंह 'विनोद', २८८, क्रा०, २।।)

मीरा

मीरा : एक अध्ययन, १, पद्मावती 'शबनम', २८४, क्रा०, ३।।)
मीराबाई, १, डॉ० श्रीकृष्णलाल, १२७, क्रा०, १।।)
मीराबाई, मीरा और उनकी प्रेम-वाणी, १, ज्ञानचन्द्र जैन, क्रा०, २)
मीरा की पदावली, १, अज्ञात-सन्त, १६०, क्रा०, २।।)
मीरा-बृहत् पद-संग्रह, १, पद्मावती 'शबनम', ३८५, डि०, ६)
मीरा पदावली, विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु', १२८, क्रा०, २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...माधुरी, १, ब्रजरत्नदास, ४००, डि०, ४) हिन्दी साहित्य कुटीर
...मन्दाकिनी, २, नरोत्तमदास स्वामी, १२५, क्रा०, २) गयाप्रसाद एण्ड सन्स
...बाई की पदावली, ५, परशुराम चतुर्वेदी, २५६, क्रा०, ३) सम्मेलन
...स्मृति-ग्रन्थ, राज-संस्करण १५, साधारण संस्करण ६) बंगीय हिन्दी परिषद्
...की बृहत् पदावली, २॥) गांधी ग्रन्थागार
...: जीवनी तथा काव्य, १, श्रीधर शर्मा, ६४, क्रा०, कल्याणदास

मैथिलीशरण गुप्त

...जी और उनकी यशोधरा, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २) पुस्तक भण्डार
...जी की यशोधरा, १, कृष्णकुमार सिनहा, ४०८, क्रा०, ३) कला निकेतन
...जी की कला, ५, डॉ० सत्येन्द्र, १६०, क्रा०, २) साहित्य रत्न भण्डार
...जी की कृतियाँ, श्यामनन्दन प्रसाद, २४२, क्रा०, २॥) किताब महल
...जी के काव्य में रसधारा, १, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, २॥) पुस्तक भण्डार
...लीशरण गुप्त, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २२०, क्रा०, २॥) किताब महल
...: एक अध्ययन, ५, डॉ० नगेन्द्र, २२३, क्रा०, २॥) साहित्य रत्न भण्डार
...के नवम सर्ग का काव्य-वैभव, २, कन्हैयालाल सहल, १६८, क्रा०, २॥) साहित्य सदन, चिरगाँव
..., १, भारतभूषण 'सरोज', ११६, क्रा०, १॥) विनोद पुस्तक मन्दिर

यात्रा

...यायावर रहेगा याद, १, अज्ञेय, २२८, क्रा० ६) सरस्वती प्रेस
...की खोज में, १, रावी, १०४, क्रा०, १) इण्डियन प्रेस
...का की विजय, १, रामस्वरूप श्रीवास्तव, २) नन्दकिशोर
...की यूरोप यात्रा, डॉ० सत्यनारायण, ५) पुस्तक भण्डार
...का जापान, १, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, २२४, क्रा०, २॥) अजन्ता प्रेस
...री चट्टान तक, १, मोहन राकेश, १५२, क्रा०, २॥) प्रगति प्रकाशन
...ने देखा रूस, १, सत्येन्द्रनाथ मजूमदार, १४२, डि०, २) आत्माराम
...ड यात्रा, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, ॥) नन्दकिशोर
...पार के पड़ोसी, काका कालेलकर, ३२२, ३।) नवजीवन प्रकाशन
...खण्ड के पथ पर, मनोरंजन, ३) पुस्तक भण्डार
...की दीवारें, काका कालेलकर, ६१, ॥।=) नवजीवन प्रकाशन
...मीर दर्शन, रामचन्द्र वर्मा, ॥) नन्दकिशोर
...देश में, १, राहुल सांकृत्यायन, ४४६, ७) इण्डिया पब्लिशर्स
...के कूर शेर, १, जिम कार्बेट, १४६, क्रा०, ३॥) आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बम्बई १
...-दर्शन, शिवनन्दन सहाय, २) पुस्तक भण्डार
...-मानसरोवर, १, स्वामी प्रणवानन्द, ४४०, क्रा०, १०) सम्मेलन
...के पथ पर, १, चक्खनलाल गर्ग, १।) गयाप्रसाद एण्ड सन्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुमक्कड़ शास्त्र, १, राहुल सांकृत्यायन, १६०, क्रा०, ३।)	राजकमल प्रकाशन
चित्रकूट-दर्शन, १, देवदत्त शास्त्री, ६६, क्रा०, १)	जननी कार्यालय
चीनी यात्री सुंग युंग का यात्रा विवरण, जगन्मोहन वर्मा, १)	नागरी प्रचारिणी सभा
चीनी जनता के बीच, १, डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, २८२, ४)	पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
जापान वृतान्त, कृष्णदेव प्रसाद गौड़, ॥)	नन्दकिशोर
तिरिच मीर, १, अभियान दल के सदस्य,	ग्रन्थमाला कार्यालय
दिल्ली से मास्को, १, महेशप्रसाद श्रीवास्तव, ११२, क्रा०, २)	अग्रसेन पुस्तक भण्डार
दुनिया की सैर, योगेन्द्रनाथसिंह ३)	पुस्तक भण्डार
नेपाल-यात्रा, भिक्षु धर्मरक्षित, क्रा०, ४।।)	गंगा पुस्तक माला
पैरों में पंख बाँधकर, १, रामवृक्ष बेनीपुरी, २७४, क्रा०, ४।।)	लोक सेवक प्रकाशन
बदलते दृश्य, १, राजबल्लभ ओझा, २६४, डि०, ६)	हिन्दी भवन
बालकों का यूरोप, प्रो० कृपानाथ मिश्र, १)	पुस्तक भण्डार
बिहार के दर्शनीय स्थान (दस भाग) ५)	पुस्तक भण्डार
भूमण्डल-यात्रा, १, श्रीगोपाल नेवटिया, १४४, क्रा०, १।।।)	अजन्ता प्रेस
भूस्वर्ग काश्मीर, हँसकुमार तिवारी, क्रा०, १।।)	ग्रन्थमाला कार्यालय
मानसरोवर और कैलाश, सुशीलचन्द्र महाचार्य, १।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
माओ के देश में, १, राम आसरे, १३६, क्रा०, १।)	करेंट बुक डिपो
मेरी काश्मीर यात्रा, १, देवदत्तशास्त्री, २००, क्रा ३)	चौधरी
मेरी यूरोप यात्रा, राहुल सांकृत्यायन, ४३६, क्रा०, ३)	किताब महल
यात्रा के पन्ने, १, राहुल, ४४०, ६)	साहित्य सदन
यूरोप-यात्रा में ६ मास, रामनारायण मिश्र, गौरीशंकर, ५६३, क्रा०, ४)	इण्डियन प्रेस
यूरोपा, १, देवेशचन्द्रदास, क्रा०, ३)	आत्माराम
राहुल यात्रावली १ भाग, राहुल सांकृत्यायन, ४३६, क्रा०, ३)	किताब महल
लंका यात्रा, भिक्षु धर्मरक्षित, १४६, क्रा०, १।।)	किताब महल
लंका के मोती, रामचन्द्र वर्मा, ॥)	नन्दकिशोर
लोहे की दीवार के दोनों ओर, १, यशपाल, ३४५, डि०, ७)	विप्लव कार्यालय
विन्ध्याटवी के अँचल में, प्रयागदत्त शुक्ल, क्रा० १।)	गंगा पुस्तक माला
स्मरण यात्रा, काका कालेलकर, ३८६, ३।।)	नवजीवन प्रकाशन
स्वदेश-विदेश-यात्रा, सन्तराम, रामेश्वरी नेहरू, १७२, क्रा०, १।।।)	इण्डियन प्रेस
सागर-प्रवास, सूर्यनारायण व्यास, ३)	पुस्तक भण्डार
सुबह होती है, १, कृष्णचन्द्र, १५८, क्रा०, ३)	राजकमल प्रकाशन
संयुक्तप्रान्त की पहाड़ी यात्राएँ, १, लक्ष्मीनारायण टण्डन 'प्रेमी', क्रा०, ३)	गंगा पुस्तक माला
हवा पर, १, रामवृक्ष बेनीपुरी, ७४, क्रा०, १।।)	किताब महल
हिमालय की यात्रा, काका कालेलकर, २३६, २)	नवजीवन प्रकाशन
हिमालय परिचय, १, राहुल सांकृत्यायन, ५६६, क्रा०, १०)	इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस

[आगे पृष्ठ १२८ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-विक्रेताओं की बिक्री में वृद्धि के लिए

पतवार : उपन्यास : भगवतीप्रसाद बाजपेयी	५)
प्रेमचन्द और उनका युग : डॉ० रामविलास शर्मा	३)
सूर-समीक्षा : डॉ० रामरतन भटनागर	३)
समीक्षा के सिद्धान्त : डॉ० सत्येन्द्र	३॥)
काव्य-कौमुदी : श्रीधरानन्द	३॥)
हिन्दी-गद्य विकास और इतिहास : योगेन्द्रकुमार मल्लिक	१॥)
साहस सञ्जीवनी : उदयवीर शास्त्री	२)
देश-भर का दुश्मन : इब्सन के एक नाटक का अनुवाद	२)
इतिहास और कल्पना : प्रतिनिधि एकांकी-संग्रह	३)
निबन्ध प्रदीप : प्रतिनिधि निबन्ध-संग्रह	२)
आधुनिक कहानियाँ : प्रतिनिधि कहानी-संग्रह	३॥)

व्यापार सम्बन्धी जानकारी के लिए लिखिए।

मेहरचंद मुन्शीराम, नई सड़क, दिल्ली.

कला, भारतीय अक्षरों की रचना तथा प्रतीकों पर विश्व-विख्यात पुस्तक 'रेखा' जिसमें लेखक ने विस्तृत और समालोचनात्मक अध्ययन उपस्थित किया है, तथा अछूते क्षेत्र में पाँव रखने का सद्-प्रयत्न किया है। 'रेखा' की विश्व-विख्यात कलाकारों और मान्य पत्र-पत्रिकाओं ने जी खोलकर इसकी प्रशंसा की है। इनमें कुछ के नाम हम नीचे दे रहे हैं।

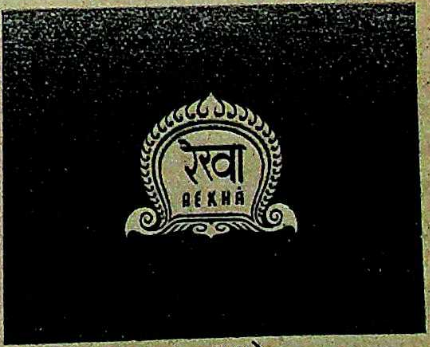

मूल्य ३॥)

श्री नन्दलाल बोस, शान्तिनिकेतन। श्री रविशंकर रावल, अहमदाबाद। अमृत बाजार पत्रिका, ३०-३-५२। जर्मन पत्रिका, Institut Fur Auslands-beziehungen, December—1952. टाइम्स आफ़ इण्डिया, दिल्ली ...-६-५२। हिन्दू, मद्रास, २७-७-५२। ऐस्ट्रोलौजिकल मेगज़ीन, खण्ड ४६ नवम्बर ...। भारत ज्योति, बम्बई १३-७-५२। आर्ट इन इन्डस्टीज़, कलकत्ता Vol, III No 3—1952. नवभारत टाईम्ज, दिल्ली, २७-६-५२। आजकल, दिल्ली, सितम्बर १६५२। फैडिरेटिड इण्डिया, बम्बई १६५२।

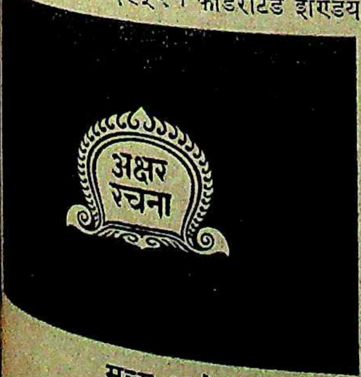

मूल्य १५)

"रेखा" का अक्षर-रचना भाग

कला सम्बन्धी इस अमूल्य, विलक्षण मौलिक प्रति का अधिक से अधिक प्रचार एवं प्रसार हो सके, इस उद्देश्य से हमने 'अक्षर-रचना' भाग को अलग से प्रकाशित किया है, ताकि कला-प्रेमी इसे कम कीमत से खरीद सकें।

रेखा प्रकाशन, ४६८६ बल्ली माराँ, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १२६ से आगे]

यौन-विज्ञान

अनबन, १, आ० चतुरसेन शास्त्री, क्रा०, २)
काम, प्रेम और परिवार, १, जैनेन्द्र कुमार, क्रा०, ३)
काम विज्ञान, दीनानाथ व्यास, ३।।।)
काम-कला के भेद, आ० चतुरसेन शास्त्री, क्रा०, ५)
जीवन साथी, २, सत्यकाम विद्यालंकार, २५२, क्रा०, ३।।)
दाम्पत्य प्रेम, १, डॉ० मेरी स्टोप्स, १४८, क्रा०, २।।)
दाम्पत्य जीवन, ५, रामनारायण यादवेन्दु, १६७, २।।।)
निग्रही परिचय, डॉ० पी० एल० चोपरा, ३२, क्रा०, ।≡)
व्यभिचार, ४, आ० चतुरसेन शास्त्री, ३१४, क्रा०, ४)
विवाह और काम-विज्ञान, १, डॉ० एम० जे० एक्सनर, १५८, क्रा०, २।।)
विवाह और प्रेम, २, गिरिजाशंकर द्विवेदी, १८६, २।।)
विवाह से पहले, १, का० न० रामनाथ शास्त्री, क्रा०, २)
यौन-विज्ञान और वैवाहिक जीवन, मन्मथनाथ गुप्त, ३३०, डि०, ५)
स्थायी प्रेम, १, डॉ० मेरी स्टोप्स, १६८, क्रा०, २।।।)
संतति नियमन, १, डॉ० मेरी स्टोप्स, ११३, क्रा०, १।।)
संतति निग्रह, क्यों और कैसे, डॉ० पी० एल० चोपरा, ८०, क्रा०, १।।।)
रति विज्ञान, २, सन्तराम, २७२, ४)

रत्नाकर

कविवर रत्नाकर और उनका उद्धव शतक, १, रामबाबू शर्मा, १।।)
उद्धव शतक परिशीलन, १, अशोककुमार सिंह, १४८, क्रा०, १।।)
उद्धव शतक मीमांसा, कृष्णचन्द्र वर्मा, २७६, क्रा०, २।।)
रत्नाकर (दो खण्ड), जगन्नाथदास 'रत्नाकर', ३)
रीतिकाल और रत्नाकर, १, कृष्णकुमार कौशिक, १८८, क्रा०, २।।)

रसखान

रसखान, १, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २)
रसखान और उनका काव्य, २, चन्द्रशेखर पाण्डेय, क्रा०, ।।।)
रसखान और घनानन्द, बा० अमीर सिंह, १।।)
रसखान का अमर काव्य, १, दुर्गाशंकर मिश्र

रस, छन्द, अलंकार

अलंकार प्रकाश और पिंगल कौमुदी, १, डॉ० आर्येन्द्र शर्मा, ४८ ।।)
अलंकार पीयूष : १, २, डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', ३२५, क्रा०, २।।)
अलंकार पीयूष : २, २, डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', क्रा०, २।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...प्रवेशिका, ३, चन्द्रशेखर शास्त्री, १२८, क्रा०, ।।=)	रामनारायणलाल
...मुक्तावली, १, देवेन्द्रनाथ शर्मा, क्रा०, ३।)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...मंजूषा, १०, लाला भगवानदीन, २८४, क्रा०, २)	रामनारायणलाल
...क, गोपीनाथ शर्मा, ६०, क्रा०, १)	किताब महल
...कौमुदी, १, श्रीधरानन्द, २८७, क्रा०, ३।।)	मेहरचन्द मुन्शीराम
...र्पण, २, आ० रामदहिन मिश्र, ४३४, रा०, १०)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...विमर्श, २, आ० रामदहिन मिश्र, ३४६, डि०, ७)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...लोक, २, आ० रामदहिन मिश्र, ३६४, डि०, ७)	ग्रन्थमाला कार्यालय
...कल्पद्रुम, २, प्रभात शास्त्री, ७६, क्रा०, ।।।)	सम्मेलन
...प्रदीप, ६, रामबहोरी शुक्ल, ३१६, क्रा०, ३।)	हिन्दी भवन
...भाग २ (अलंकार), डा० सुधीन्द्र, १।।)	सरस्वती पुस्तक सदन
...रचना (छन्द, रस, अलंकार), १, प्रेमनारायण टंडन, ३६, ।–)	विद्या मन्दिर
...रचना, १, प्रेमनारायण टंडन, ३६, क्रा०, ।–)	विद्या मन्दिर
...शास्त्र, १, शम्भुनाथ पाण्डेय, २३१, क्रा०, ३)	विनोद प्रकाशन मन्दिर
...परिचय, १, चन्द्रशेखर शास्त्री, १००, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
...कौमुदी : भाग १, २, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, १०२, ।।।)	नन्दकिशोर
...कौमुदी : भाग २, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, १६०, १।।।)	नन्दकिशोर
...कौमुदी : भाग ३, २, विश्वनाथप्रसाद मिश्र, २७०, ३)	नन्दकिशोर
...नियम रत्नाकर, जगन्नाथदास 'रत्नाकर', ।)	विद्या विभाग काँकरोली
...पिंगल, अवध उपाध्याय, १३५, क्रा०, १।।)	साहित्य भवन
...कार निरूपण, ११, चन्द्रशेखर शास्त्री, ४०, क्रा०, ।=)	सम्मेलन
...साहित्य का नायिका भेद, २, प्रभुदयाल मीतल, ४५६, डि०, ६)	अग्रवाल प्रेस
...षण, २, गुलाबराय, ६६, क्रा०, १)	साहित्य रत्न भण्डार
...षण, जसवन्तसिंह, १७०, क्रा०, १)	हिन्दी साहित्य कुटीर
...षण, ३, यशवन्तसिंह, ८४, क्रा०, ।।।)	रामनारायणलाल
...मुक्ता (मानस की पंक्ति अनुक्रमणिका), मुरलीधर अग्रवाल, १५४, क्रा०, १)	सुषमा साहित्य मन्दिर
...रंजन, ६), महावीरप्रसाद द्विवेदी, १३८ क्रा०, १।)	साहित्य रत्न भण्डार
...कार पिंगल, ३, शम्भुनाथ पाण्डेय, १८६, २।।)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...माला, १, आ० रामचन्द्र शुक्ल, ४६६, डि०, ७)	नागरी प्रचारिणी सभा
...कर, १, हरिशंकर शर्मा, ७०४, क्रा०, ५)	रामनारायणलाल
...रत्नाकर, बुद्धिनाथ शर्मा, १।।)	रामनारायणलाल
...विकास, रामचन्द्र वर्मा २८२, क्रा०, २।।)	साहित्य रत्न माला
...रत्नावली, ३, वेदमित्र व्रती, २४०, क्रा०, २।।)	साहित्य रत्न माला
...पिंगल, ६, आ० रामचन्द्र शुक्ल, ८८, क्रा०, ।।)	रामनारायणलाल
...अलंकार मंजरी, ६, सेठ, कन्हैयालाल पोद्दार, २७५, क्रा०, २)	सम्मेलन
...काव्यालंकार सूत्र, १, आचार्य वामन, ३७६, डि०, १२)	आत्माराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी छन्द प्रकाश, १, रघुनन्द शास्त्री, २४८, का०, ४)

रेखाचित्र तथा संस्मरण

अतीत के चलचित्र, ४, महादेवी वर्मा, १४४, का०, २)
अन्तिम यात्रा, १, गुरुदत्त, ७२, का०, १)
एक युग : एक प्रतीक, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, २१७, का०, ४)
क्या गोरी क्या साँवरी, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, का०, ७)
जीवन प्रभात, १, प्रभुदास गांधी, ५५८, का०, ५)
जैसा हमने देखा, १, क्षेमचन्द्र सुमन, २००, का०, २)
जो न भूल सका, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, २१४, का०, ३)
जो लिखना पड़ा, १, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, ११२, डि०, ३)
डायरी के पन्ने, ४, घनश्यामदास बिड़ला, ८८, का०,
दिल्ली में दस वर्ष, १, राजेन्द्रलाल हांडा, १७६, डि०, ३॥)
दैनंदिनी, १, सुन्दरलाल त्रिपाठी, ६६, डि०, २॥)
पथ-चिह्न, १, शान्तिप्रिय द्विवेदी, २८८, का०, २)
पुण्य स्मरण, १, हरिभाऊ उपाध्याय, १३६, का०, १॥)
पृथ्वी नजदीक से, १, (पृथ्वीराज कपूर सम्बन्धी संस्मरण) अमर, २)
फाँसी के तख्ते से, १, जूलियस फूचिक, का०, २|||)
भूले हुए चेहरे, १, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, १३२, का०, १|||)
माटी की मूरतें, १, रामवृक्ष बेनीपुरी, १३८, का०, १॥)
राजधानी में, १, राजेन्द्रलाल हांडा, १६२, का०, ३)
राजेन्द्र बाबू के संस्मरण, प्रभुदयाल विद्यार्थी, का०, २)
रेखाचित्र, १, बनारसीराम चतुर्वेदी, ४००, का०, ४)
रेखाचित्र, १, लीलावती मुन्शी, २५५, का०, ३)
रेखाएँ बोल उठीं, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, १७६, का०, ३)
रेल का टिकट, १, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, ११५, का०, २॥)
शृंखला की कड़ियाँ, ६, महादेवी वर्मा, १४६, का०, ३॥)
स्मृति की रेखाएँ, ४, महादेवी वर्मा, १४६, का०, १॥)
साहित्यिकों के संस्मरण, १, क्षेमचन्द्र, 'सुमन', १०१, का०, १।)
साहित्यिक संस्मरण, २, महावीरप्रसाद अग्रवाल, १६०, का०, १।)
साहित्यिक जीवन के अनुभव और संस्मरण, १, किशोरीदास बाजपेयी, १३६, का०, २)
सिंहावलोकन (दो भाग), यशपाल, ४७०, डि०, १०)
सूरतें और सीरतें, १, कपिल, ६६, का०, १)
संस्मरण, १, बनारसीदास चतुर्वेदी, २५२, का०, ३)
संस्मरण और आत्म-कथाएँ, १, धनीराम त्रिपाठी, ११३, का०, १॥)
हमारे अपराध, १, बनारसीदास चतुर्वेदी, २७२, का०, ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति तथा शासन

...की राज्य-व्यवस्था, २, शेषमणि त्रिपाठी, २७८, क्रा०, २॥)	सम्मेलन
...दम, १, हरेकृष्ण महताब, ६४, क्रा०, १)	आत्माराम
...का संविधान, कन्हैयालाल वर्मा, ६)	नन्दकिशोर
...पाँच साल, १, जी० एस० पथिक, ३४६, क्रा०, ५)	आत्माराम
...चालीस, १, सीताराम गोस्वामी, ३८८, क्रा०, ५)	मयूर प्रकाशन
...१८४२ का महान् विप्लव, १, दीनानाथ व्यास, २६८, क्रा०, ६)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...विधान, शारदाप्रसाद चौधरी, १२०, क्रा०, १॥)	नवयुग पुस्तक भण्डार
...और दण्ड, २, परमेश्वरी लाल गुप्त, १२८, क्रा०, १॥)	ज्ञानमण्डल
...क्रान्ति, ३, आचार्य कृपलानी, ॥=)	साधना सदन
...समस्याएँ, राहुल सांकृत्यायन, ६१, ।।।)	किताब महल
..., १, स्टीफेंन विसेंट बेनेट, डि०, २॥)	प्रगति प्रकाशन
...हिन्द का प्रस्तावित विधान, १, प्रो० नवीननारायण अग्रवाल, क्रा०, १॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...हिन्द फौज और उनके तीन अफसरों का मुकदमा, १, संकलन, २६८, क्रा०, २)	ज्ञानमण्डल
...संविधान, १, इन्द्रदत्त शर्मा, ३५५, डि०, ८)	मालवीय पुस्तक भण्डार
...एम० एस०, श्री गोविन्द सहाय, ।=)	गंगा पुस्तक माला
...तिक व्यवस्था का संकट, १, रजनीपाम दत्त, डि०, ॥)	पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
...पश्चिमी सरहद के आजाद कबीले, १, रतनलाल बंसल, क्रा०, ६)	विनोद पुस्तक मन्दिर
...राष्ट्र, १, शिवधानसिंह चौहान, राजेन्द्र प्रसाद, १६०, क्रा०, १॥)	गयाप्रसाद एन्ड सन्स
...चीन, १, सिमोनोफ, २)	हंस प्रकाशन
...मौत के दरवाजे पर, १, अबुकलाम आज़ाद, क्रा०, १)	रामनारायणलाल
...की आर्थिक योजना, श्री अमरनाथ अग्रवाल, ५८, ।।।=)	साहित्य भवन
...उद्योग और मिलों का मुनाफा, श्री खंडू देसाई, ।=)	नवयुग साहित्य सदन
...पर हमला, २, कृष्णा मेहता, १६८, क्रा०, २)	मण्डल
...का इतिहास (तीन भाग), १, पट्टाभि सीता रामैया, १७१२, रा०, ३०)	मण्डल
...का सरल इतिहास, १, राजबहादुरसिंह, २५६, क्रा०, ३)	राजहंस प्रकाशन
...का संक्षिप्त इतिहास, १, किशोरीदास बाजपेयी, १)	हिमालय एजेंसी
...की शासन पद्धति, ३, भगवानदास केला, २४०, क्रा०, २)	सम्मेलन
...ब्रिटिश इतिहास के पन्नों पर, १, डॉ० भगवशतरण उपाध्याय, १६८, क्रा०, २॥)	हंस प्रकाशन
...कथा-कांड, रा० र० खाडिलकर, ४६८, डि०, ५)	ज्ञानमण्डल
...की कहानी, ५, रामदास गौड़, १७६, क्रा०, १॥)	मण्डल
...सन्देश, ४, यशपाल, १३६, डि०, २)	विप्लव कार्यालय
...भाग्य, कृष्णाकिंकरसिंह, २४०, डि०, ८)	साहित्य भवन
...भारत, १, अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी, ११२, क्रा०, १)	ज्ञान मण्डल
..., १, स्वतन्त्रता के छठे वर्ष की प्रगति, १॥)	पब्लिकेशन्स डिवीजन
...निया, १, श्री उमेश, १३४, क्रा०, १॥)	गोयल ब्रदस

..., १९५४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जापान की राजनीतिक प्रगति, १, लक्ष्मण नारायण गर्दे, ४१६, क्रा०, ४)
न्याय का संघर्ष, ३, यशपाल, १२६, डि०, २)
नया सोवियत साम्राज्य, १, डेविड जे० डालिन, १२७, क्रा०, १।)
नाज़ी टेकनीक, एच० एन० मोटा, २॥)
नागरिकता की कहानी, दिनेश्वरलाल 'आनन्द', २।)
पहली पंचवर्षीय योजना, ५८, क्रा०, ।)
पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास, कन्हैयालाल वर्मा, ८॥)
पाकिस्तान, वर्तमान और भविष्य, गोविन्दसहाय, क्रा०, १।)
पार्लामेंटरी सरकार, बी० एन० राय, २३६, डि०, ४)
प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति, १, अनन्त सदाशिव अलतेकर, ३००, डि०, ५)
प्राथमिक नागरिक शास्त्र १, दिवाकर, अनु०, २३०, क्रा०, ४)
पूँजीवाद, समाजवाद और ग्रामोद्योग, १, भारतन कुमारप्पा, ४०२, क्रा०, ५)
बलिया में क्रान्ति और दमन, देवनाथ उपाध्याय, २१६, क्रा०, ३॥)
बाईसवीं सदी, राहुल सांकृत्यायन, ११६, क्रा०, १)
बात-बात में, १, यशपाल, १५२, डि०, २॥)
बिहार एक ऐतिहासिक दिग्दर्शन, जयचन्द्र विद्यालंकार, पृथ्वीसिंह मेहता, ३॥)
ब्रिटिश संविधान,डॉ० महादेवप्रसाद, २६४, क्रा०, ५)
ब्रिटेन में वार्डेन संस्था, १, ८०, डि०, ॥=)
बीसवीं सदी की राजनीतिक विचारधाराएँ, १, गुर्ती सुब्रह्मण्य, १३६, क्रा०, १॥)
भारत का भाग्य, सिरिल मोडक, रामनाथ सुमन, १॥।)
भारत पर अमरीकी फन्दा, १, एल० नटराजन, २६०, क्रा०, ३)
भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास, १, गुरमुख निहालसिंह, ४३२, डि०, १०)
भारतीय मज़दूर, १, बैजनाथ महोदय, क्रा०, २)
भारतीय राजनीति : विक्टोरिया से नेहरू तक, १, रामगोपाल पत्रकार, ४७५, रा०, १०)
भारतीय राजनीति और शासन पद्धति, कन्हैयालाल वर्मा, ८)
भारतीय राष्ट्रीयता, १, देवदूत विद्यार्थी, १)
भारतीय संविधान तथा नागरिक जीवन, राजनारायण गुप्त, ३७२, ४।)
भारतीय संविधान की रूपरेखा, महावीर त्यागी, २)
भारतीय संविधान और शासन, प्रो० विमलाप्रसाद, ३०४, डि०, ६॥)
भावी भारत की एक तस्वीर, किशोरीलाल मशरूवाला, ८८, १)
मार्क्सवाद, ४, यशपाल, २१४, डि०, ३)
मार्क्स के भारत सम्बन्धी लेख, कार्ल मार्क्स, १३२, १=)
मार्क्स और मार्क्सवाद, वी० पी० सिन्हा, १॥)
मार्क्स का दर्शन, भूपेन्द्रनाथ सन्याल, १०८, २)
मालिक और मज़दूर, ३, टाल्स्टाय, क्रा०, १॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूस की परम्परा, किशोरदास वाजपेयी, ॥)	हिमालय एजेन्सी
है, १, एडमंड स्टीवेंस, क्रा०, २॥)	प्रगति प्रकाशन
लाल शिकंजे में, १, लीलैण्ड स्टोव, १६४, क्रा०, १॥)	आधुनिक साहित्य प्रकाशन
नीति प्रवेशिका, २, हेरल्ड लास्की, १०८, क्रा०, २)	सेन्ट्रल बुक डिपो
नीति विज्ञान, १, जगन्नाथप्रसाद मिश्र, ३१८, डि०, ६)	अजन्ता प्रेस
नीति शास्त्र, २, प्राणनाथ विद्यालंकार, ३४४, क्रा०, ४)	ज्ञानमण्डल
नीतिक भारत (१९४६-५१), कन्हैयालाल वर्मा, ४॥)	नन्दकिशोर
नीति शास्त्र प्रवेशिका, कन्हैयालाल वर्मा, ॥)	नन्दकिशोर
नीति सिद्धान्त, गोरखनाथ चौबे, २०८, ४॥)	रामनारायणलाल
नीति शास्त्र, १, डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार, ६०८, क्रा०, ६॥)	सरस्वती सदन
राज्य की कथा, यशपाल, १२२, डि०, २)	विप्लव कार्यालय
नीति के सिद्धान्त, १, डॉ० महादेवप्रसाद शर्मा, ४१४, डि०, ८)	सम्मेलन
प्रबन्ध शिक्षा, सर० टी० माधवराव, अनु० रामचन्द्र, क्रा०, १)	नागरी प्रचारिणी सभा
ष्ट्रीयता और समाजवाद, १, आ० नरेन्द्रदेव, ७५४, क्रा०, १०)	ज्ञानमण्डल
यासतों का सवाल, १, बैजनाथ महोदय, १६६, क्रा०, २)	मण्डल
का पुनर्जन्म, १, सोमदत्त विद्यालंकार, ११०, क्रा०, १)	ज्ञानमण्डल
संगीनों की छाया में, १, रिसर्च विभाग एस० डी० एफ० ए०, ८८, क्रा०, ॥)	प्राची प्रकाशन, कलकत्ता
मी पत्रों का षड्यन्त्र, १, रतनलाल बंसल, क्रा०, ४)	विनोद पुस्तक मन्दिर
हीन पूँजीवाद, १, फ्रेडेरिक स्टर्न, क्रा०, २॥)	प्रगति प्रकाशन
चीन, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
नीति और राष्ट्रीयता, कन्हैयालाल वर्मा, १॥)	नन्दकिशोर
का राजनीतिक भविष्य, कृष्णकान्त मालवीय, १५६, क्रा०, २)	सुषमा साहित्य मन्दिर
-शान्ति के उपाय, १, पॉल हॉफमन, १८८, क्रा०, २॥)	प्रगति प्रकाशन
क, श्रीनारायण चतुर्वेदी, १४८, २)	इण्डियन प्रेस
पद्धति, डॉ० प्राणनाथ विद्यालंकार, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा
यन्त्र (भारत), इलियास अहमद, ८)	किताब महल
जवाद की ओर, जयप्रकाशनारायण, क्रा०, २॥)	गंगा पुस्तक माला
जवाद के मंच पर, जयप्रकाशनारायण	गंगा पुस्तक माला
राज्य विज्ञान (तीन भाग), १, कृपाराम बंवाल, डि०, १३)	एस० चन्द० एण्ड कम्पनी
सोचा समझा, १, यशपाल, १५२, डि०, २॥)	विप्लव कार्यालय
जवादी विचारधारा, बालकृष्ण बलदुआ, १॥)	गंगा पुस्तक माला
जवाद और व्यक्ति, एम० डी० कम्मारी, ६४, ॥)	पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
पटेल के भाषण, सम्पादक, नरहरि पारीख, उत्तमचन्द शाह, ४१२, १६)	नवजीवन प्रकाशन
वाद ही क्यों, राहुल सांकृत्यायन, ६१, क्रा०, ॥)	किताब महल
वियत भूमि (दो भाग), राहुल सांकृत्यायन, १०६७, क्रा०, १०)	किताब महल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता का जन्म, एच० एन० मोरा, २।।)
स्वतन्त्रता की ओर, ३, हरिभाऊ उपाध्याय, ३५२, क्रा०, ४)
स्वराज्य, गोरखनाथ चौबे, ५०, क्रा०, ।।।=)
स्वाधीनता की चुनौती, १, शान्तिप्रसाद वर्मा, डि०, ७)
हमारा झण्डा, १, राष्ट्रीय झण्डे का इतिहास, ।=)
हमारा स्वातन्त्र्य संघर्ष, १, प्रभा अग्रवाल, १७८, क्रा०, १।।)
हमारा नया संविधान, राजनारायण गुप्त, २५६, क्रा०, २।।)
हमारा संविधान, १, १।।=)
हमारा स्वाधीनता संग्राम, १, विष्णु प्रभाकर, ११८, क्रा०, १।।)
हमारी आजादी, रमाकान्त मिश्र, १०२, १।।)
हमारी स्वतन्त्रता, १, मोहनलाल महतो 'वियोगी', २२०, क्रा०, ३)
हिन्दुस्तान की समस्याएँ, ७, जवाहरलाल नेहरू, १६२, क्रा०, २।।)
हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का ऐतिहासिक विश्लेषण, केशव, क्रा०, २।।)
हिन्दू राज्य शास्त्र, ३, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, ४४०, क्रा०, ५)
हिन्दू राजतन्त्र (दो खण्ड), काशीप्रसाद जायसवाल, अनु० रामचन्द्र वर्मा, २)
हिन्दुओं के राजनीतिक सिद्धान्त, घोषाल, २५०, क्रा०, ४।।।≡)

रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, १, शिवनाथ, क्रा०, ४)
आलोचक रामचन्द्र शुक्ल, १, गुलाबराय, विजयेन्द्र स्नातक, २६६, डि०, ६)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, १, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', डि०,

लोक-साहित्य

आदि-हिन्दी की कहानियाँ और गीत, राहुल सांकृत्यायन, २।)
ईसुरी-प्रकाश, संयोजक, गौरीशंकर द्विवेदी, ११०, क्रा०, ८, २)
केते अकुहा भाषा केते उत्तला आशा, देवकीनन्दन प्रसाद, २।)
ग्राम साहित्य (भाग १), २, रामनरेश त्रिपाठी, ३४५, क्रा०, ४)
ग्राम साहित्य (भाग २), २, रामनरेश त्रिपाठी, ३४६, डि०, ६)
गाँव की ओर, १, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', ७०, ।।)
घाघ भड्डरी, १, रामनरेश त्रिपाठी, १६८, क्रा०, १।।)
ढोलामारू रा दूहा, रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी, ६००, रा०, ४)
द्रौपदी दुकूल, रामलला, ।।)
धरती गाती है, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, १६२, रा०, १०)
धीरे बहो गंगा, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, १६२, डि०, ६)
ना धरे आँखि जल आँखि-पाते, देवकीनन्दन प्रसाद, ५)
पाषाण नगरी, १, शिवसहाय चतुर्वेदी, २०३, क्रा०, ३।।)
पंजाब की लोक-कथाएँ, १, पंछी, बेदी, ६०, फु० $\frac{1}{8}$, १।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…की लोक कथाएँ, १, मन्मथनाथ गुप्त, ७०, फु० ⅙, १।।)	आत्माराम
…की लोक कहानियाँ, डॉ० सत्येन्द्र, ३।।)	ब्रज साहित्य मण्डल
…की लोक कथाएँ, १, आदर्श कुमारी जैन, ६६, फु० ८, १।।)	आत्माराम
…आवे ढोल, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, १६०, डि०, ७)	राजकमल प्रकाशन
…ग्राम साहित्य का विवरण, ।।)	ब्रज साहित्य मण्डल
…लोक-संस्कृति, डॉ० सत्येन्द्र, २२७, ४)	ब्रज साहित्य मण्डल
…लोक-संस्कृति का अध्ययन, १, डॉ० सत्यकेतु, डि०,	साहित्य रत्न भण्डार
…लोक साहित्य का अध्ययन, १, डॉ० सत्येन्द्र, ५७८, डि०, ८)	साहित्य रत्न भण्डार
…फूले आधी रात, १, देवेन्द्र सत्यार्थी, ४३४, डि०, १०)	राजहंस प्रकाशन
…की लोक कथाएँ, १, मन्मथनाथ गुप्त, ७० फु० ⅙, १।।)	आत्माराम
…पुर लोकगीत में करुण रस, १, दुर्गाशंकरप्रसादसिंह, ५००, क्रा०, ६)	सम्मेलन
…पुरी लोकगीत (भाग १–२), २ व १, सं० डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, ४०० व ५६२, क्रा० व डि०, ५) व ११)	सम्मेलन
…वी कविताएँ, १, श्याम परमार, क्रा०, ।=)	मालव लोक साहित्य-परिषद्
…वी लोकगीत, १, श्याम परमार, क्रा०, ३)	मालव लोक साहित्य-परिषद्
…वी लोकगीत, १, सं० रामइकबालसिंह राकेश, ४३२, क्रा०, ४)	सम्मेलन
…स्थानी लोकगीत, ३, सूर्यकिरण पारीक, ६५, क्रा०, १।।)	सम्मेलन
…क-कथाएँ, १, आनन्द कुमार, १०६, क्रा०, १।)	राजपाल
…प्रदेश के लोकगीत, श्रीचन्द जैन, ।।।=)	राजपाल
…दी लोकगीत, श्रीमती रामकिशोरी श्रीवास्तव, १११, क्रा०, १।।।)	साहित्य भवन

व्याकरण तथा रचना

…शास्त्र, १, गणेशदत्त 'इन्द्र', १२८, क्रा०, ३)	हिन्दी विश्व-भारती
…छी हिन्दी, ७, रामचन्द्र वर्मा, ३८४, क्रा०, ३)	साहित्य रत्नमाला कार्यालय
…छी हिन्दी, २, किशोरीदास वाजपेयी, १५७, क्रा०, २।।)	हिमालय एजेंसी
…र्श व्याकरण और रचना, सिंहासनराय 'सिद्धेश', १)	आदर्श पुस्तक भण्डार
…र्श हिन्दी व्याकरण, ७, सन्त गोकुलचन्द, २३२, क्रा०, २)	ओरियण्टल बुक डिपो
…र्श पत्र-लेखन, १, यज्ञदत्त शर्मा, ५३८, डि०, ७।।)	आत्माराम
…धुनिक पत्र-व्यवहार-पद्धति, १, गंगाप्रसाद मिश्र,	हिन्दुस्तानी बुक डिपो
…शाली हिन्दी, १, डॉ० सूर्यकान्त, ३५०, क्रा०, ४।।)	एस० चन्द एण्ड कम्पनी
…लोकोक्तियाँ और मुहावरे, १, धर्मचन्द सन्त, २३६, क्रा०, १।।)	ओरियन्टल बुक डिपो
…रचना प्रणाली, देवकीनन्दन शर्मा, ५)	नन्दकिशोर
…यों की रूप-रेखाएँ, १, बालबन्धु, ३६, क्रा०, ।=)	विद्या मन्दिर
…कैसे लिखें, ।।।)	कपूर ब्रदर्स
…भाषा व्याकरण, १, किशोरीदास वाजपेयी, २६६, क्रा०, ३)	हिमालय एजेंसी
…भाषा व्याकरण, १, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, १३४, क्रा० १।।)	रामनारायणलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल व्याकरण शिक्षा, सिंहासनराय 'सिद्धेश', ।।)
मुहावरे और लोकोक्तियाँ, ६, गिरीशचन्द्र जोशी, १५४, क्रा०,
रचनानुवाद कौमुदी, १, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी, २३६, क्रा०, ३)
रचना और निबन्ध, १, राजकिशोर पाण्डेय, १६०, क्रा०, १।।)
रचना तथा व्याकरण, २, चन्द्रमौलि सुकुल, १२६, क्रा०, १।।।)
रत्न हिन्दी-व्याकरण, बृहद्बल, १६८, क्रा०, २)
राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण, १, किशोरीदास वाजपेयी, १६६, ४)
लेखन-कला, दमयन्ती गर्ग, २५०, क्रा०, ४)
लोकोक्तियाँ, ७, व्यथित हृदय, १०८, क्रा०, ।।=)
लोकोक्तियाँ और मुहावरे, १५, बहादुरचन्द शास्त्री, १६०, क्रा०, १।)
व्याकरण दर्पण, आ० शिवपूजन सहाय, २)
व्याकरण प्रदीप, रामदेव, २४०, क्रा०, २)
व्याकरण प्रदीप, ८, एम० के० सरकार, सन्त गोकुलचन्द, ४३१, क्रा०, २।।=)
व्याकरण रचना-तत्त्व, सुरेशप्रसाद गुप्त, १।।।)
सरल पत्र-लेखन, ३, केशवप्रसाद शुक्ल, ८०, क्रा०, ।।=)
सरल हिन्दी रचना, २, बालबन्धु, ५२, क्रा०, ।।)
सरल पत्र शिक्षक, १, सन्त गोकुलचन्द, ६४, क्रा०, ।।-)
सरल व्याकरण, १, विपिन, १०५, क्रा० ।।=)
संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण, १२, कामताप्रसाद गुरू, २४३, क्रा०, २।।)
संस्कृत लोकोक्ति-सुधा, २, जगदम्बाशरण राम, १६०, क्रा०, १।।।)
सुबोध हिन्दी व्याकरण, सिंहासनराय सिद्धेश', १)
सुबोध हिन्दी व्याकरण, १३, रामदेव, २१८, क्रा०, २)
सुबोध संस्कृत व्याकरण, १०, इन्द्र एम० ए०, २८५, क्रा०, २।)
शब्दापशब्द-विवेक, १, चारुदेव शास्त्री, ३८५, क्रा०, ५)
हिन्दी-निरुक्त, १, किशोरीदास वाजपेयी, क्रा०, २।)
हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरु, ७२०, क्रा०, ७)
हिन्दी व्याकरण, ३, कृष्णचन्द्र विद्यालंकार, २२४, क्रा०, २)
हिन्दी मुहावरे, १, रामनरेश त्रिपाठी, १०४, क्रा०, १)
हिन्दी प्रयोग, ५, रामचन्द्र वर्मा, १६६, क्रा०, १।)
हिन्दी कारकों का विकास, विश्वनाथ, २।।)
हिन्दी रचना और उसके अंग, ४, प्रेमनारायण टण्डन, ३७५, क्रा० २।।)
हिन्दी रचना सर्वस्व, १, रामस्वरूप शास्त्री, ४७६, क्रा०, ४)
हिन्दी पद्य-रचना, रामनरेश त्रिपाठी, क्रा०, १)

विद्यापति

कीर्तिलता, विद्यापति ठाकुर, डा० बाबूराम सक्सेना, १२५, क्रा०, १।)

आदर्श पुस्तक भण्डार
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
विश्वविद्यालय प्रकाशन
हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा
सम्मेलन
रीगल बुक डिपो
जनवाणी
रीगल बुक डिपो
रामनारायणलाल
हिन्दी भवन
अशोक प्रेस
हिन्दी भवन
ओरियण्टल बुक डिपो
यूनिवर्सिटी बुक डिपो
हिन्दी भवन
विद्या मन्दिर
ओरियण्टल बुक डिपो
हैदराबाद हिन्दी प्रचार सभा
नागरी प्रचारिणी सभा
अजन्ता प्रेस
आदर्श पुस्तक भण्डार
हिन्दी भवन
हिन्दी भवन
भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर
हिमालय पुस्तक एजेन्सी
नागरी प्रचारिणी सभा
शारदा मन्दिर
आत्माराम
साहित्य रत्नमाला कार्यालय
नागरी प्रचारिणी सभा
विद्या मन्दिर
गौतम बुक डिपो
हिन्दी मन्दिर

नागरी प्रचारिणी सभा

[आगे पृष्ठ १४५ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

साहित्यिक

: साहित्यिक विवेचन नन्ददुलारे वाजपेयी २)
ी भाषाएँ और
न्धी समस्याएँ डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ३)
वाङ्मय के अमर-रत्न जयचन्द्र विद्यालंकार १)
कलाकार डॉ० इन्द्रनाथ मदान ५।।)
मीमांसा डॉ० सूर्यकान्त ४)
समालोचना डॉ० रामकुमार १।।।)
नाटक-साहित्य का
डॉ० सोमनाथ गुप्त ४)
रामबहोरी शुक्ल ३)
प्रदीप ,, ३)
प्रभाकर गुलाब राय ४।)
क निबन्ध इन्द्र एम० ए० ४)
साहित्य अनुशीलन अंचल ३।।)
: चिन्तन व कला डॉ० इन्द्रनाथ मदान २।।)

उपन्यास

भूले इलाचन्द्र जोशी ५)
था इलाचन्द्र जोशी ५।)
नित्यानन्द वात्स्यायन १)
कंचनलता ४)
पृथ्वीनाथ शर्मा ३।।)

नाटक

लक्ष्मीनारायण मिश्र १।।।)
,, १।।)
हरिकृष्ण प्रेमी १)
,, २)
,, १।।)
,, १)
सेठ गोविंददास १)
मिलिंद १)
वात्स्यायन १।।)
पृथ्वीनाथ शर्मा ।।।)

गांधी चरित मानस

(ले० श्री विद्याधर महाजन, एम० ए०)

रामचरितमानस के ढंग पर दोहे चौपाइयों में महात्मा गांधी का चरित्र, काव्यमय भाषा में। हिन्दी में बिल्कुल नई चीज़। मूल्य ५।।=)। नमूने की दो सम्मतियां—

"यह पुस्तक महाकवि जायसी के पद्मावत और कवि शिरोमणि तुलसीदास के रामचरितमानस की चौपाइयों और दोहों की शैली पर लिखी गई है। कवि ने हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम का बड़े मार्मिक और सफल ढंग से चित्रण किया है। जिस तरह तुलसी के द्वारा राम घर-घर पहुंचे हैं, इस पुस्तक के द्वारा गांधीजी की विचार-धारा फैलेगी। भाषा प्रवाहमयी और मार्मिक है।"

साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली

"आज के प्रदर्शन के इस युग में जब अधिकांश लेखक और कवि अपनी विद्वत्ता एवं ज्ञान की अहंमन्यता से भाषा को इतना दुरूह बना डालते हैं कि वह जनता से दूर रह जाती है, वहाँ इस कवि ने अत्यन्त सीधी-सादी भाषा में, सरलता के साथ काव्यात्मक गुणों की रक्षा करते हुए, एक उच्च कोटि का महाकाव्य प्रस्तुत किया है।…कोमल भावों को व्यक्त करने में असाधारण सफलता मिली है, पाठक को सहज ही अपनी विचार-धारा में बहा ले जाता है और उसके हृदय-पटल पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ता है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते कहीं-कहीं तो ऐसा ज्ञात होता है जैसे तुलसीदास रचित मानस का ही आनन्द ले रहे हैं।"

—विशाल भारत, कलकत्ता

हिन्दी भवन, जालंधर तथा इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत की जनता का हिन्दी-प्रेम

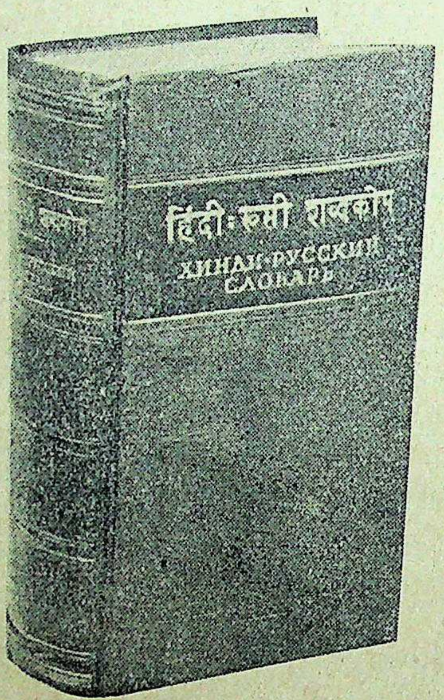

हिन्दी सीखने वाले सोवियत के लोगों की सुविधा के लिए हाल ही में सोवियत यूनियन ने बड़े आकार में और सजधज के साथ एक हिन्दी-रूसी शब्दकोश प्रकाशित किया है। इसका पहला संस्करण ५,००० छपा और उसमें से लगभग १००० प्रतियाँ हिन्दुस्तान में खप गई हैं।

इस शब्दकोश की एक-एक प्रति का सभी पुस्तकालयों में होना जरूरी है क्योंकि इससे रूसी सीखने वाले लोगों को बहुत मदद मिलेगी।

नयनाभिराम छपाई : अच्छा कागज : मजबूत जिल्द
पृष्ठसंख्या १२२४ : शब्द संख्या ३५०००

●

और मूल्य केवल ६।-) : डाक खर्च अलग

●

मंगाने का पता

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड

इरविन अस्पताल के सामने, दिल्ली।

स्मरण रहे !

गुप्ता स्टोर्स

थोक एवं खुदरा पुस्तक-विक्रेता

धात किडीह, पो० जमशेदपुर

जहाँ कालेज, स्कूल एवं वाचनालय की सभी पुस्तकें सदा सस्ते मूल्य पर प्राप्त की जा सकती हैं। बुकसेलरों को भरपूर कमीशन भी दिया जाता है।

सोल एजेएट :—	स्टाकिस्ट :—
किताब महल—इलाहाबाद	मोतीलाल बनारसीदास —पटना
गुप्ता बुकडिपो—हजारीबाग	ए० मुकर्जी एण्ड क० लि —कलकत्ता
गंगा पुस्तक माला कार्यालय — लखनऊ	पुस्तक भंडार—पटना

आवश्यकता है—अपने प्रकाशनों के लिए सभी स्टेशनों प स्टोकिस्टों की। शीघ्र ही पत्र व्यवहार करें। हमारे प्रकाशन :— (१) भीगी रात २॥) लेखक श्री सागरमल गुप्त (२) महबूबा २॥ लेखक श्री सागरमल गुप्त (३) अरुणा १॥।) लेखक श्री ओंकार बावरा (४) नई राह १।) लेखक श्री ओंकार बावरा।

दो अमूल्य रत्न शीघ्र ही प्रकाशित हो रहे हैं (१) 'कलश' (ऐतिहासिक उपन्यास) लेखक, श्री सागरमल गुप्त (२) 'फिल्म-कला' (The History of Indian Films) सम्पादक श्री सागरमल गुप्त।

राजश्री प्रकाशन—९३, नेताजी सुभाष रोड—कलकत्ता-१

प्रकाशकों से ! फोन नं० ३६३

राजस्थान में अपने सत् प्रकाशनों के प्रचार के लिये हमसे सम्पर्क स्थापित करिये।

किताब घर सोजती गेट बाहर **जोधपुर**

कृपया अपनी डाक-सूची (mailing list) में हमारा नाम भी नोट कर लें।

अपने ढंग की अनूठी पुस्तक

"धान की खेती का जापानी ढंग"

लेखक रामजीदास गुप्ता "चंचल"

राजकमल कला प्रकाशन

४०, बुलानाला, बनारस-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारती भण्डार

हिन्दी-साहित्य के श्रेष्ठ कलाकारों के प्रकाशन का संगम-स्थल है।

आप यहाँ से

...द, निराला, पन्त, महादेवी, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, रायकृष्णदास, लक्ष्मीनारायण मिश्र, रामकुमार ...अमृतलाल नागर, बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० मोतीचन्द्र, डॉ० अनन्त सदाशिव ...न्द्र, पारसनाथ सिंह, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, वासुदेव उपाध्याय, परशुराम चतुर्वेदी, डॉ० ...राज आनन्द, गोविन्दवल्लभ पन्त, विनोदशंकर व्यास, गंगाप्रसाद उपाध्याय, डॉ० उदयनारायण तिवारी आदि ...ों के विख्यात लेखकों की कृतियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

भारत की मौलिक एकता

(डॉक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल)

भारतभूमि के सांस्कृतिक पक्ष पर निबन्धों के रूप में व्यापक प्रकाश डालकर विद्वान् लेखक ने देश के जन, भाषा और साहित्य के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये हैं।

सुन्दर जिल्द : आकर्षक कवर : एण्टिक पेपर पर मुद्रण : मूल्य चार रुपये।

दीपदान

(डॉ० रामकुमार वर्मा)

...पुस्तक में प्रख्यात एकांकीकार के उत्कृष्टतम ५ ...कियों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। प्रारम्भ ...इन नाटकों की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने वाली ...गी एवं विद्वत्तापूर्ण भूमिका भी है।

...एण्टिक-पेपर : सुन्दर मोनो मुद्रण : आकर्षक ... : मूल्य तीन रुपये।

दीप-शिखा

(श्रीमती महादेवी वर्मा)

'दीपशिखा' का पहले सचित्र संस्करण उपलब्ध था, जो पर्याप्त मँहगा था। लेखिका की विस्तृत भूमिका सहित अब उसका यह सस्ता संस्करण प्रकाशित किया गया है।

एण्टिक पेपर पर मोनो टाइप में मुद्रित : मूल्य चार रुपये।

भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाँसी के तख़्ते से
जूलियस फ़ूचिक ● रु० २।।।)

तिरंगे कफ़न
अमृतराय ● रु० २।।)

हम वहशी हैं
कृशन चन्दर ● रु० १।।)

और इन्सान म...
रामानन्द सागर ● रु०

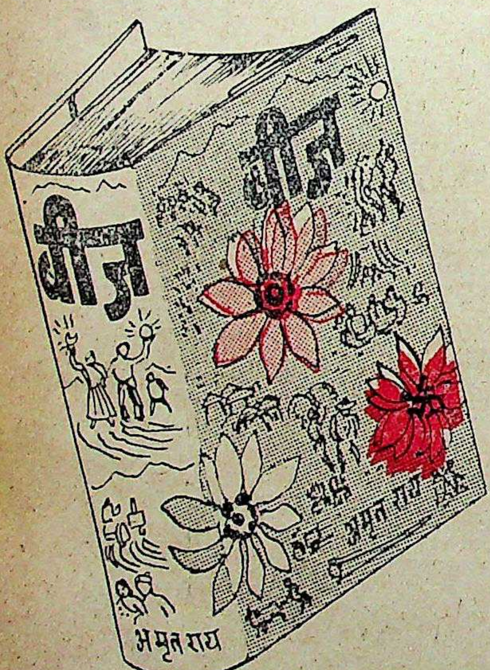

बीज अमृतराय का नया उपन्यास है। 'बीज' में आपकी नयी ज़िन्दगी के संघर्ष का बीज है।

हमारी-आपकी आँखों के सामने पुरानी दुनिया मर रही है और नयी दुनिया जन्म ले रही है। घर-बाहर सभी जगह यह संघर्ष चल रहा है। 'बीज' इसी संघर्ष की कहानी है। 'बीज' नये नैतिक मूल्यों का, एक नये जीवन-दर्शन का उपन्यास है, जिसमें समूची ज़िन्दगी को नये युग की आँखों से देखा गया है।

पिछले कई वर्षों में किसी नये उपन्यास की न तो इतनी सराहना हुई और न इतनी चर्चा। सभी पत्र-पत्रिकाएँ 'बीज' की चर्चा कर रही हैं। अगर आपने अब तक 'बीज' न पढ़ा हो तो आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से 'बीज' मांगिए या हमको लिखिए। पढ़कर देखिए, हमारा दावा है, ऐसी तृप्ति आपको इसके पहले दूसरे किसी उपन्यास से न हुई होगी। किन्हीं अर्थों में 'बीज' हिन्दी औपन्यासिकता के क्षेत्र में भी एक नया बीज है।

मोनो की सुन्दर छपाई, मोहक चौरंगा आवरण, पृष्ठ संख्या ५२७, मूल्य रु० ७।।)

'साहित्य का उद्देश्य': प्रेमचन्द के सभी साहित्य और भाषा-सम्बन्धी लेख और टिप्पणियाँ अब एक जगह पर मिल जायँगी। पहले के संकलन 'कुछ विचार' में बहुत सी नई सामग्री जोड़कर 'साहित्य का उद्देश्य' प्रकाशित किया गया है।

पृष्ठ २८८ मूल्य रु० ४)

बिखरे मोती ★★★

सुभद्राकुमारी चौहान को ... जानता ? उन्हीं की एक से एक ... नियों का सेकसरिया पारितोषिक-प्रा... मोनो की मोती के दाने-जैसी छपा...

पृष्ठ ११६ मूल्य रु०

मुकुल ★★★

सम्मेलन के सेकसरिया पारितो... कविता संग्रह 'मुकुल' का नाम ... नाम नहीं है। सुभद्रा जी की उत्... पुस्तक का यह नया और अत्य... संस्करण है। 'मुकुल' में वह अमर... 'झाँसी की रानी' भी शामिल है।

पृष्ठ १३० मूल्य रु०

सम्पूर्ण ...
अन्य प्र...
सूचीपत्र

ए...
विस्तृत...
लिखें।

हं स ...
६३...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ौर इन्सान मर	आलोक	इतिहास	खून के छींटे	नयी समीक्षा

ानन्द सागर • रु० २॥) | अमृतराय • रु० २॥) | भगवतशरण उपाध्याय • रु० २॥) | अमृतराय • रु० ४॥)

सुबह के रंग के लेखक हैं अमृतराय।

नये चीन पर हिन्दी में तीन-चार पुस्तकें निकल चुकी हैं लेकिन 'सुबह के रंग' जैसी एक भी नहीं है। 'सुबह के रंग' की अपनी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें नये चीन को उत्पादन के आँकड़ों के माध्यम से न देखकर, सीधे-सादे दैनंदिन जीवन के माध्यम से देखा गया है। इसीलिए पुस्तक बहुत रोचक और हृदयग्राही बन पड़ी है।

यह एक बड़ा शुभ लक्षण है कि नये चीन से हमारा सांस्कृतिक सम्बन्ध बराबर बढ़ता जा रहा है। शुभ और अत्यन्त शुभ और सो इसलिए कि आज बहुत बड़ी हद तक विश्व की सुख-शान्ति हिन्दुस्तान और चीन की मैत्री पर निर्भर है।

प्रत्येक व्यक्ति को 'सुबह के रंग' पढ़नी चाहिए, क्योंकि इसमें मनोरंजन के साथ जीवन को देखने की एक नई दृष्टि भी मिलती है। छपाई की सजधज का तो कहना ही क्या, फिर भी प्रायः २००पृष्ठों की पुस्तक का मू० रु० २)

चचा छक्कन के रूप में इम्तयाज अली 'ताज' ने एक ऐसे चरित्र की सृष्टि की है जिसकी साहित्यिक अमरता सिद्ध है। कितने बौड़म मगर कितने प्यारे आदमी हैं चचा छक्कन! जिस चीज़ में उनका हाथ लगा कि बस ....हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जाते हैं।

पृष्ठ १०२ मूल्य रु० १॥)

एवं विस्तृत लिखें।

शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी संसार में अपूर्व ग्रन्थ का प्रकाशन

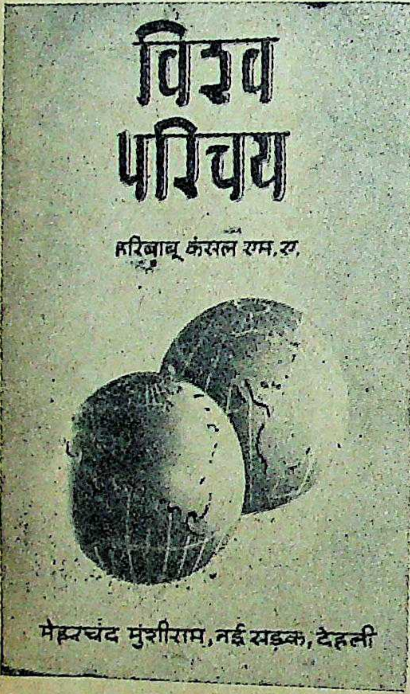

विश्व-परिचय

लेखकः—हरिबाबू कंसल, एम० ए०

सामान्य ज्ञान के विषय में ऐसा विस्तृत ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। इसमें संसार भर का भौगोलिक, ऐतिहासिक, पारिभाषिक और सामाजिक विवरण तथ्यों सहित प्रकट किया गया है। इसके अतिरिक्त भारत सम्बन्धी सम्पूर्ण सामान्य ज्ञान का अध्ययन करने पर तो लगता है कि भारत का समूचा मानचित्र चित्रपट की भाँति सामने आ गया है। विद्यार्थियों एवं प्रतियोगिता परीक्षाओं (Competitive Examinations) के छात्रों के लिए परम उपयोगी है। नगरपालिका, ग्राम पंचायतों तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं वाचनालयों के लिए संग्रहणीय। सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ६) रु०। डाक-व्यय अलग।

•

मेहरचन्द मुन्शीराम

नई सड़क, पो. बाक्स ११६५, देहली—६

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्रम्— सर्ग १-३-सटीक—प्रो० भोलानाथ शर्मा	२॥)
संतदर्शन—सन्त-काव्य के लिए उत्कृष्ट प्रकरण ग्रन्थ—डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित	अजिल्द ४), सजिल्द ४॥)
प्रेमचन्द—साहित्यिक, सामाजिक, दार्शनिक एवं राजनीतिक प्रवृत्तियों का अध्ययन—डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित	२॥)
कबीर की विचारधारा—२१००) के हरजीमल डालमिया पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत—डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत	७)
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ—कहानी कला एवं कहानियों की समीक्षा सहित—डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत	३॥)
वेलि क्रिसन रुकमणी री—सम्पादक और टीकाकार—पं० कृष्णशंकर शुक्ल	३)
संस्कृत साहित्य की रूपरेखा—(चतुर्थ संस्करण)—पाण्डेय और व्यास	५)
दो गीत—'मृत्यु गीत' और 'जीवन गीत'—नीरज	१॥)
शिञ्जिनी—गीत काव्य—शिवबहादुर सिंह	१॥।)
मेघमाला—गीत काव्य—तरल	२॥)
एवरेस्ट विजेता तेनसिंह—श्यामनारायण कपूर	॥।)
दशरूपक—धनञ्जय—सम्पादक और टीकाकार—डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत	५)

विस्तृत सूची के लिए लिखिए

साहित्य निकेतन, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी-एच० डी० के लिये स्वीकृत निबन्ध

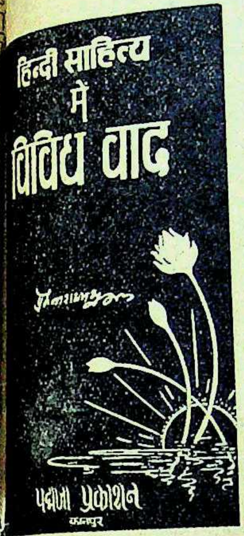

आकार $\frac{१८ \times २२}{८}$

पृष्ठ ४३४

मूल्य ६)

लेखक
डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल, एम० ए०, पी-एच० डी०,
डी० ए० वी० कालेज, कानपुर।

डी० फ़िल० के लिये स्वीकृत निबन्ध

आकार $\frac{१८ \times २२}{८}$

पृष्ठ २८०

मूल्य ५)

हिन्दी काव्य पर आँग्ल प्रभाव (१८७०—१९५०)

लेखक
डॉ० रवीन्द्रसहाय एम० ए०, डी० फ़िल०,
डी० ए० वी० कालेज, कानपुर।

प्रकाशक

पद्मजा प्रकाशन, रामबाग, कानपुर

साहित्य-संसार के बारह अनमोल गौरवग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मूल्य सवा तीन रुपये।
२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये।
३. **हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग १८८ इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी।
४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपए।
५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपए। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथ के दुरंगे मानचित्र भी।
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपए।
७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपए। बढ़िया आर्ट पेपर पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ संख्या पाँच सौ।
८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक—प० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ रुपए। गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ लगभग ४५० पृष्ठ।
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपए।
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेद, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपए। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी।
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपए। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक भी।
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। पृष्ठ ६२५। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द।

शीघ्र ही प्रकाशित होगा : **रबर (प्रामाणिक वैज्ञानिक ग्रंथ)**—ले० श्री फूलदेवसहाय वर्मा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कहानी-लेखक

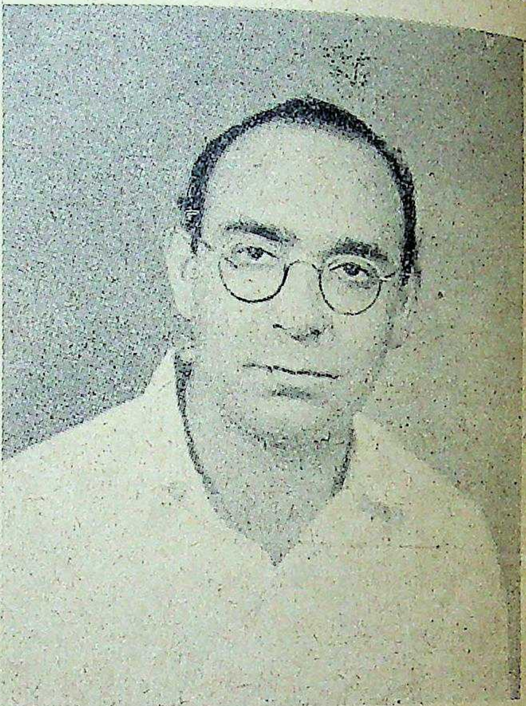

कृष्णचन्द्र

की

चार नई रचनाएँ

• उल्टा वृक्ष	(उपन्यास)	२।।)
• स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	(व्यंग्य)	३)
• काला सूरज	(नई कहानियाँ)	२।।)
• काश्मीर की कहानियाँ	(काश्मीर के जीवन और संघर्ष का चित्रण)	३)

•

इस मास के अन्य नए प्रकाशन

अर्जुन का तप (किरातार्जुनीय का सरस हिन्दी रूप)	अनु० इन्द्र विद्यावाचस्पति	२।।)
रघुवंश	अनु० इन्द्र विद्यावाचस्पति	२।।)
मेघदूत	अनु० सत्यकाम विद्यालंकार	२।।)

•

विस्तृत जानकारी के लिए बड़ा सूची पत्र मंगाएँ

राजपाल एण्ड सन्ज़, काश्मीरी गेट, दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३६ से आगे]

विद्यापति, शिवनन्दन ठाकुर, ६)	पुस्तक भण्डार
विद्यापति, १, रामवशिष्ठ, २१२, क्रा०, १॥)	विनोद पुस्तक मन्दिर
ति, सूर्यबलीसिंह, १७६, क्रा०, २॥)	नन्दकिशोर
ति ठाकुर, १, डॉ० उमेश मिश्र, २०८, क्रा०, १।॥)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
ति, २, जनार्दन मिश्र 'पंजक', १४३, क्रा०, १॥)	रामनारायणलाल
ति का अमर काव्य, १, डॉ० गुणानन्द जुयाल, १६६, क्रा०, २)	साहित्य निकेतन
ति, डॉ० रामरतन भटनागर, २१२, क्रा०, २॥)	किताब महल
ति की पदावली, १, बसन्तकुमार माथुर, ४६७, डि०, १०)	गंगा पुस्तक माला
ति पदावली (सटीक), १, कुमुद विद्यालंकार, ४५६, क्रा०, ६)	रीगल बुक डिपो
ति पदावली, श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी, ३।॥)	पुस्तक भण्डार
ति पद्य-संग्रह, १, सतीशचन्द्र राय, ६८, क्रा०, ।=)	सम्मेलन

विभाषा-साहित्य

जा, १, श्रीमन्तकुमार व्यास, १२६, डि०, २)	नवयुग ग्रन्थ कुटीर
इलाहाबादी, १, डॉ० सैयद एजाज हुसैन, १६०, २॥)	इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
और उसका साहित्य, १, डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित, १२८, क्रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
साहित्य परिचय, दयाशंकर शर्मा, विद्याशंकर शर्मा, ३६४, क्रा०, ४)	गयाप्रसाद एण्ड संस
साहित्य का इतिहास, १, डॉ० एस० पी० खत्री, १६८, डि०, ३)	सम्मेलन
देश के कबीर श्री वेमना, १, वाराणसि राममूर्ति 'रेणु', १५४, क्रा०, १।॥)	सम्मेलन
, सैयद कासिम अली, २४०, क्रा०, १॥)	सुषमा साहित्य मन्दिर
और उसका साहित्य, १, गोपीनाथ 'अमन', १२८, क्रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
व्य की नई धारा, २, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', २६६, क्रा०, २॥)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
कवि और उनका काव्य, १, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', २२४, क्रा०, ४)	काशी पुस्तक भण्डार
साहित्य का इतिहास (दो भागों में), डॉ० रामबाबू सक्सेना, ६२४, क्रा०, ७।)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
साहित्य का इतिहास, ४, ब्रजरत्नदास, ३१०, क्रा०, ३।॥)	सम्मेलन
साहित्य का परिचय, १, हरिशंकर शर्मा, ४८७, क्रा०, ६)	गयाप्रसाद एण्ड संस
शरी, १, नारायणप्रसाद जैन, ३८०, क्रा०, ५)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
रुक्मिणी री बेलि, १, नरोत्तमदास स्वामी, ३३८, डि०, ५)	श्रीराम मेहरा
कक तरंग, हरिमोहन झा, १४२, क्रा०, १॥)	अजन्ता प्रेस
की ओर, १, रामवचन द्विवेदी 'अरविन्द', ७०, $3\frac{3}{4}$×५, ॥)	सुलभ साहित्य सदन
लि, १, अनु० पृथ्वीनाथ शास्त्री, २३२, क्रा०, ३)	प्रभात प्रकाशन
दूरती हैं, १, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, २५४, डि०, ३)	इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
में वीर-रस, २, डॉ० मोतीलाल मेनारिया, १६३, डि०, ३)	सम्मेलन
और उसका साहित्य, १, पूर्ण सोमसुन्दरम्, १२८, क्रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
और उसका साहित्य, १, हनुमच्छास्त्री 'अयाचित', १२८, क्रा०, २)	राजकमल प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवान ग़ालिब, १, महमूद अहमद 'हुनर', १२६, २॥)
धरती की करवट, १, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, १६०, डि०, २॥)
नज़ीर की बानी, १, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, २३१, २॥)
पालि साहित्य का इतिहास, १, भरतसिंह उपाध्याय, ७५५, डि०, १०)
प्रेरणा [मेघदूत : राजस्थानी] १, १०२, रा०, १॥)
बंगला और उसका साहित्य, १, हंसकुमार तिवारी, १४६, क्रा०, २)
बंगला साहित्य की कथा, ४, भोलानाथ शर्मा, १८३, क्रा०, १॥)
बंगला के आधुनिक कवि, १, मन्मथनाथ गुप्त, १५४, क्रा०, १॥)
बग़ावत के गीत, १, 'जोश' मलीहाबादी, ४०, डि०, १)
बादली, चन्द्रसिंह १००, क्रा०, २)
बेलि क्रिसन रुकमणी री (सटीक), १, कृष्णशंकर शुक्ल, २३४, क्रा०, ३)
बेलि क्रिसन रुकमणी री (सटीक), १, आनन्दप्रकाश 'दीक्षित', १४२, क्रा०, ५)
बेलि क्रिसन रुकमणी री (सटीक), १, ठा० रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, ६१४, रा०, १०)
मराठी का वर्णनात्मक व्याकरण, १, प्रा० न० चि० जोगलेकर, २॥)
मराठी साहित्य का इतिहास, कृष्णलाल शरसोदे 'हंस', ३८८, क्रा०, ४॥)
मराठी साहित्य का इतिहास, १, श्रीनारायणवासुदेव गोडबोले, १६८, क्रा०, ३)
महाकवि अकबर और उनका उर्दू-काव्य, २, उमरावसिंह 'कारुणिक', २२५, क्रा०, १॥)
मालवी और उसका साहित्य, १, श्याम परमार, १२८, क्रा०, २)
मुस्कान, 'जोश' इलाहाबादी, १७१, ।=)
मुहणोत नैणसी री ख्याता, रामनारायण दूगड़, ७॥)
रघुनाथ रूपक तो रो, महताबचन्द खारैड, ३६०, २)
राजस्थानी भाषा और साहित्य, २, डॉ० मोतीलाल मेनारिया, ४३०, डि०, ६)
राजस्थान पिंगल साहित्य, १, डॉ० मोतीलाल मेनारिया, २७४, क्रा०, ५)
राजस्थानी भाषा का महत्त्व, सेठ रामदेव चोखानी, ।॥)
राजस्थान में हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज (४ भागों में), १, अगरचन्द नाहटा
राजरूपक, रतनू चारण वीर भाण, ६००, ५)
राग-विराग, १, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, २६०, डि०, २॥)
रूसी साहित्य, डॉ० केसरीनारायण शुक्ल, २५१, डि०, ४॥)
रुबायात उमर खय्याम, २, मैथिलीशरण गुप्त, ७२, क्रा०, १।)
लू, १, चन्द्रसिंह, १००, क्रा०, २)
विनोद और व्यंग, १, पारसनाथसिंह, ३००, क्रा०, ४)
विश्व-काव्य (२ भागों में), बालकृष्ण बलदुआ, ४६२, क्रा०, ५)
विदेशों के महाकाव्य, १, गोपीकृष्ण 'गोपेश', २४६, रा०, ६॥)
शरच्चन्द्र : चिन्तन व कला, डॉ० इन्द्रनाथ मदान, १६४, क्रा०, २॥)
शरच्चन्द्र : व्यक्ति और कलाकार, १, इलाचन्द्र जोशी, २४३, क्रा०, ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…, मन्मथनाथ गुप्त, २७२ क्रा०, ३)	किताब महल
…वली, १, शरच्चन्द्र, १६०, क्रा०, १॥)	हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर
…री, २, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, ६४०, क्रा०, ८)	भारतीय ज्ञानपीठ
…न, भाग १, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, ७८४, क्रा०, ८)	भारतीय ज्ञानपीठ
…न, भाग २, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, ३२८, क्रा०, ३)	भारतीय ज्ञानपीठ
…न, भाग ३, १, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, २६४ क्रा०, ३)	भारतीय ज्ञानपीठ
…न, भाग ४, १, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, २५६, क्रा०, ३)	भारतीय ज्ञानपीठ
…न, भाग ५, १, अयोध्याप्रसाद गोयलीय, २५६ क्रा०, ३)	भारतीय ज्ञानपीठ
…णी (राजस्थानी १), गोविन्दलाल माथुर, १४०, रा०, २।)	श्याम काशी प्रेस
…रजनी चरित्र (अलिफ लैला), १, अनु० रूपकिशोर, ५६०, क्रा०, ४)	नेशनल प्रिंटर्स
…न सौदागर, महेशप्रसाद, 'साधु', १।)	नागरी प्रचारिणी सभा
…सुदामा, २, स्वामी नारायणानन्द, १४४, क्रा०, १।)	ज्ञान मन्दिर
…फ़ालाँ रा कुण्डलिया, १, बारहठ ईसरदास, डॉ० मोतीलाल मेनारिया ७८, क्रा०, १॥)	हितैषी पुस्तक भण्डार
…-बँगला-शिक्षा, १, रामसकलसिंह, १३२, क्रा०, १॥)	बम्बई बुक डिपो
…नामा, व्रजरत्नदास, १॥)	नागरी प्रचारिणी सभा

विविध

…की समस्या, वैंकटेशनारायण तिवारी, २०६,	इण्डियन प्रेस
…भातीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, १, आ० भातखण्डे, २)	संगीत कार्यालय
…धान, १, वीरेन्द्र शेखर मेहता, १८७, डि०, १०)	मण्डल
…का मार्ग, लल्लीप्रसाद पाण्डेय, ११८, क्रा०, १)	इण्डियन प्रेस
…ज़ी, श्यामलाल पचौरी, १२८, १॥)	किताब महल
…, २, रामेश बेदी, १४७, क्रा०, २)	हिमालय हर्बल इंस्टीच्यूट
…स्वर-लिपि, १, हरिनारायण मुखर्जी, २०५, क्रा०, २॥।)	इण्डियन प्रेस
…र्यालय कार्य शिक्षक, श्यामलाल पचौरी, ५४, ॥=)	किताब महल
…-सम्भाषण, देवनाथ उपाध्याय, १५३, क्रा०, २॥)	किताब महल
…ण्डे संगीत शास्त्र (२ भागों में), १, आ० भातखण्डे, ११)	संगीत कार्यालय
…, गोपाल दामोदर तामस्कर, २६, क्रा०, ।-)	इण्डियन प्रेस
…ला अथवा जीवन-संदेश गीतांजलि, १, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, २००, डि०, ३॥।)	सम्मेलन
…और स्वरूप, १, घनश्यामदास बिड़ला, ४६, क्रा०, ॥=)	मण्डल
…-प्याज, १, रामेश बेदी, २००, क्रा०, २॥)	हिमालय हर्बल इंस्टीच्यूट
…गाइड, २, हरिचन्द रत्ता, ४४६, डि०, १०)	आत्माराम
…मोटिव वाल्व सैटिंग, १, हरिचन्द रत्ता, १५०, फु०$\frac{1}{8}$, ५)	आत्माराम
…-मार्ग, १, एस० वी० बनर्जी, ३)	संगीत कार्यालय
…, रामेश बेदी, १४६, क्रा०, १॥।)	हिमालय हर्बल इंस्टीच्यूट
…-परिचय (तीन भाग), १, रामावतार संगीताचार्य, २८०, क्रा०, ३।)	आत्माराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत-व्यायाम, १, नारायणराव, १४२, फु० १/८, ३)

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (५ भागों में), १, आ० भातखण्डे, ३३)

विज्ञान

अकार्बनिक रसायन, प्रो० फूलदेव सहाय वर्मा, ६॥)

आकाश लोक, १, जगपति चतुर्वेदी, क्रा०, १॥)

आकाश पर अधिकार, भारतीय, ॥=)

आविष्कारों की कहानी, डॉ० द्विवेदी, ॥=)

आविष्कारों की कहानी, १, जगपति चतुर्वेदी, १६६, क्रा०, २)

आधुनिक आविष्कार, कल्पतरु, १॥)

कीटाणुओं की कहानी, १, जगपति चतुर्वेदी, १७२, क्रा०, २)

गति विज्ञान, १, डी० पी० डी० शुक्ल, २६३, क्रा०, ६॥)

ग्रह लक्षण, जगदानन्दराय, ३४२, ६)

घन भूमिति, १, रमाकान्त चतुर्वेदी, हरस्वरूप शर्मा, क्रा०, १॥)

चलराशि कलन, १, हरिश्चन्द्र गुप्त, १६०, डि०, ४।)

चन्द्र सारिणी, डॉ० गोरखप्रसाद २)

जीव-विज्ञान, १, ज्वालाप्रसाद सिनहा, २८८, ३)

जीवन विज्ञान तथा भूगर्भ शास्त्र, डॉ० उमाशंकर, ६६६, ३॥)

ठोस ज्यामिती, १, ब्रजमोहन, १३६, क्रा०, १=)

दुग्ध-विज्ञान, १, गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर', १०२, १।), क्रा०

धातु विज्ञान, डॉ० दयास्वरूप, ६००, क्रा०, ३)

नियामक ज्यामिती, १, डॉ० एम. रे., रमाकान्त चतुर्वेदी, हरस्वरूप शर्मा, ३२०, क्रा०, ६)

पदार्थ विज्ञान परिचय, अच्युतानन्द उपाध्याय, ७॥)

परमाणु शक्ति, १, ११०, क्रा०, २॥)

प्रसिद्ध उड़ाके, भारतीय, ।॥)

प्राकृतिकी, डॉ० नन्दकिशोर, ४००, ३॥)

प्रकृति की नीति, लाला सीताराम, ११७, १)

पानी बोला, १, रामचन्द्र तिवारी, १६०, डि० २॥)

प्रायोगिक रसायन शास्त्र, पृथ्वीनाथ भार्गव, २॥)

प्रारम्भिक गति विज्ञान, १, डॉ० ब्रजवासीलाल, डि०, ४॥)

प्रारम्भिक चलन-कलन, १, डॉ० ब्रजवासीलाल, क्रा०, १)

प्रारम्भिक रसायन, प्रो० फूलदेवसहाय वर्मा, ६॥)

प्रारम्भिक रसायन, १, अमीचन्द्र विद्यालंकार, २५४, क्रा०, १॥)

प्रारम्भिक औद्योगिक रसायन, मिश्र, २७४, ५)

भारतीय वैज्ञानिक, श्यामनारायण कपूर, ३८०, क्रा०, ३) ३॥)

भूकम्प क्या है ? रामचन्द्र वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…शास्त्र, रसायन शास्त्र तथा ज्योतिष शास्त्र, हीरालाल, ४६२, ३।।।)	किताब महल
…और रसायन शास्त्र, १, प्रेमनाथ गर्ग, सिद्धनाथ गर्ग, सिद्धनाथ मेहरोत्रा, २४०, क्रा०, ३)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…त्पत्ति विज्ञान, १, चन्द्रिकानारायण शर्मा, ३३०, डि०, २)	ज्ञानमण्डल
…निक अकार्बनिक रसायन, १, डॉ० एस० घोष, एम० एल० गुप्ता, ७२४, डि०, ८।।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…प्रवेशिका, प्रो० फूलदेव सहाय वर्मा, ३)	नन्दकिशोर
…शास्त्र-द्वितीय खण्ड, फूलदेव सहाय वर्मा, ।।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
…, रा० र० खाडिलकर, ।।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
…की कहानी, श्री भारतीय, १।।)	नन्दकिशोर
…का विकास, १, रामचरित्रसिंह, ३२० २।।)	अजन्ता प्रेस
…हस्तामलक, रामदास गौड़, ४७२, रा०, १०)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
…वाद, दयानन्द पन्त, १२०, क्रा०, २।)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
…के चमत्कार, ३, भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव, २७२, क्रा०, २।।)	ज्ञानमण्डल
…की प्रगति, १, २२३, क्रा०, ३।।)	ज्ञानमण्डल
…वार्ता, गुलाबराय, २)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…-कला विनोद (चार भागों में), हरिहरप्रसाद, तिवारी, ३)	इण्डियन प्रेस
…हारिक विज्ञान, हरिशंकर शर्मा, ।।।)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…निक विकास की भारतीय परम्परा, १, डॉ० सत्यप्रकाश, २७५, रा०, ८)	बिहारी राष्ट्रभाषा परिषद्
…त्रिकोणमिति, २, डॉ० राम० रे०, रमाकान्त चतुर्वेदी, हरस्वरूप शर्मा, क्रा०, ४)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
…विज्ञान-परिचय, अरुण कुमार, ५)	पुस्तक भण्डार
…की कथा, १, डॉ० सत्यप्रकाश, २२७, क्रा०, १।।)	सम्मेलन
…रसायन शास्त्र, डॉ० सत्यप्रकाश, डि०, १४)	भारती भण्डार
…परिवार, डॉ० गोरखप्रसाद, ७६२, रा०, १२)	हिन्दुस्तानी एकेडेमी
…सारिणी, डॉ० गोरखप्रसाद, २)	नागरी प्रचारिणी सभा
…त्मक भौतिक विज्ञान, १, लक्ष्मीनारायण भट्ट, मुकुटबिहारी लाल,	नवनिर्माण प्रकाशन
…त्मक रसायन शास्त्र, १, लक्ष्मीनारायण भट्ट मुकुट बिहारीलाल,	नवनिर्माण प्रकाशन
…शल्य विज्ञान, डॉ० मुकुन्दस्वरूप, ८)	नन्दकिशोर
…विष विज्ञान, १, कविराज प्रतापसिंह, १५०, क्रा०, ३२, ।।।)	ज्ञानमण्डल

विश्व-साहित्य का अपूर्व रत्न
दो खंड ८) लन्दन रहस्य पृष्ठ ८००
जिसके लिये हिन्दी-जगत वर्षों से आकुल प्रतीक्षा कर रहा था। अब आपके समक्ष प्रस्तुत हो गया। सजिल्द आकर्षक तिरंगा आवरण।
चिनगारी प्रकाशन बनारस १.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई हमले और आप, ।।)
शल्य विज्ञान की कहानी, जगपति चतुर्वेदी, १६६, क्रा०, २)

वाद-विवेचन

काव्य-सम्प्रदाय और वाद, १, अशोककुमारसिंह, क्रा०, ५)
छायावाद, डॉ० रामरतन भटनागर, २४५, क्रा०, २।।)
छायावाद, १, प्रताप साहित्यालंकार, १६२, क्रा०, २।।)
छायावाद युग, १, शम्भूनाथसिंह, ३६२, डि०, ६।।)
छायावाद और रहस्यवाद, ३, गंगाप्रसाद पाण्डेय, १४५, क्रा०, १)
छायावाद और प्रगतिवाद, १, देवेन्द्रनाथ शर्मा, २०५, डि०, ३)
प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, १, डॉ० रांगेय राघव, ४००, क्रा०, ४)
प्रगतिवाद की रूपरेखा, १, शिवचन्द्र, २७२, क्रा०, ५)
प्रगतिवाद : एक समीक्षा, डॉ० धर्मवीर भारती, १२६, क्रा०, ३।।)
प्रगतिवाद की रूपरेखा, १, मन्मथनाथ गुप्त, ३६२, डि०, ७।)
रहस्यवाद, डॉ० रामरतन भटनागर, २५२, क्रा०, २।।)
वाद-समीक्षा, १, कन्हैयालाल सहल, ७२, क्रा०, ।।।)
हिन्दी के दो प्रमुख वाद, १, प्रेमनारायण टण्डन, १८०, क्रा०, २)
हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद, २, विजयशंकर मल्ल, १८८, क्रा०, २।।)
हिन्दी-साहित्य के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्त्तक, १, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, २०४, क्रा०, १।।)
हिन्दी-साहित्य के प्रमुख वाद, ३, प्रेमनारायण टंडन, १८०, क्रा०, २)
हिन्दी-साहित्य में विविध वाद, १, डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल, ५३४, डि०, ६)

शिक्षा-शास्त्र

अध्यापन-कला, ३, सीताराम चतुर्वेदी, २१०, २)
आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान, १, ईश्वरचन्द्र, शर्मा, २००, डि०, ५)
आधुनिक शिक्षा का विकास, १, सीताराम जायसवाल, २२६, ३)
इतिहास-शिक्षण, २, त्र्यम्बक पण्ढरीनाथ तैलंग, वेणीमाधव शर्मा, २१०, २)
गणित शिक्षा के सिद्धान्त तथा शिक्षा-प्रणाली, के० एल० किचलू, १६६, २)
नवीन शिक्षा विज्ञान, ३, लालजीराम शुक्ल, २००, २)
नवीन भारत के पब्लिक स्कूल, १, जगदीशचन्द्र शास्त्री, ६२, क्रा०, १।)
प्राचीन पश्चिमी शिक्षा का इतिहास, १, सीताराम जायसवाल, १८६, २।।।)
प्रौढ़-शिक्षा के प्रयोग व विधान, वेणीमाधव शर्मा, २६०, ३।।)
बुनियादी शिक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षण-विधि, द्वारिकासिंह, ६)
भारत में अँग्रेजी शिक्षा का इतिहास, जगदीशप्रसाद व्यास, ३११, क्रा०, ५)
भारतीय तथा यूरोपीय शिक्षा का इतिहास, १, सीताराम चतुर्वेदी, ४५०, क्रा०, ५)
भाषा की शिक्षा, ४, सीताराम चतुर्वेदी, ४००, क्रा०, ४)
भाषा कैसे पढ़ावें, योगेन्द्रनाथ शर्मा, १८८, क्रा०, २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षण-विधि, १, उमाशंकर श्रीवास्तव, २५६, क्रा०, २)	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
…य शिक्षा, १, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, डि०, ३)	आत्माराम
…य शिक्षा की प्रगति, १, शम्भूनाथ, १५७, २॥)	रामनारायणलाल
…य शिक्षा-सिद्धान्त, १, डॉ० सुबोध अदावाल, ३५०, क्रा०, ८	गर्ग ब्रदर्स
…शिक्षा पद्धति, आत्मानन्द मिश्र, २६०, क्रा०, ३॥)	साहित्य निकेतन
…-शिक्षण के सिद्धान्त, चन्द्रकान्त शाह, १६२, क्रा०, २)	किताब महल
…लीन पश्चिमी शिक्षा का इतिहास, १, सीताराम जायसवाल, २३२, २।।।)	नन्दकिशोर
…शिक्षा-समाज सेवा-प्रदीपिका, १, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, ५)	मगज राजधानी प्रकाशन
…िक अध्ययन की शिक्षा, १, वेणीमाधव शर्मा, २९५, २॥)	नन्दकिशोर
…-प्रविधि, २, विश्वनाथसहाय माथुर, शची माथुर, १६२, क्रा०, २॥)	राजकमल प्रकाशन
…-शास्त्र, सीताराम जायसवाल, ६)	नन्दकिशोर
…विज्ञान, २, लालजीराम शुक्ल, ३०६, ३।।।)	नन्दकिशोर
…-सिद्धान्त और प्रयोग, ३, सीताराम जायसवाल, २३०, २)	नन्दकिशोर
…प्रणालियाँ और उनके प्रवर्तक, २, सीताराम चतुर्वेदी, ३६८, डि०, ६॥)	नन्दकिशोर
…विवेचन, १, रामदास मिश्र 'विजय', ३२, क्रा०, ।=)	हिन्दी प्रचारक मण्डल
…मनोविज्ञान, १, हंसराज भाटिया, २५२, क्रा०, ४)	ज्ञानमण्डल
…मनोविज्ञान, २, लालजीराम शुक्ल, ५०४, डि०, ७)	नन्दकिशोर
…यों का संगठन, १, नवलकिशोर श्रीवास्तव, त्रिवेणी प्रसाद सिंह, १२६, क्रा०, १।)	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
…सिद्धान्त, १, उमाशंकर श्रीवास्तव, ३६७, क्रा०, ३)	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
…-शास्त्र, एम. डी. ज़फर, २१२, क्रा०, २॥)	किताब महल
…शास्त्र की रूप-रेखा, १, मुरारीलाल शर्मा, २८४, क्रा०, ३)	भारत पब्लिकेशन्स
…-सिद्धान्त, २, उमाशंकर श्रीवास्तव, १०६, क्रा०, १)	हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
…के दार्शनिक आधार, एस. पी. सिंह, १०२, २॥)	किताब महल
…-सिद्धान्त, चन्द्रकान्त शाह, १६२, क्रा०, २)	किताब महल
…शिक्षण-विधान, २, सीताराम चतुर्वेदी, १५०, क्रा०, १।)	हिन्दी साहित्य कुटीर

समाज-शास्त्र

…, मन्मथनाथ गुप्त, २७१, ३)	किताब महल
…नगर व्यवस्था, १, भोलानाथ शर्मा, ७४०, क्रा०, १०)	सम्मेलन
…नागरिकता और हमारा संविधान, राजनारायण गुप्त, १६०, १।)	किताब महल
…का सामाजिक इतिहास, २, विष्णु अनुग्रहनारायण, २॥)	ग्रन्थमाला कार्यालय
…भूखों मरें, १, प्रभाकर म. चवे, ६८, १)	अजन्ता प्रेस
…सामान्य ज्ञान, डॉ० साह, ४३२, १।।।)	किताब महल
…नीति, एस० बी० पुणताम्बेकर, ३)	नन्दकिशोर
…और नागरिक शास्त्र, १, शुभदा तेलंग, ४८५, क्रा०; ४॥)	लोक सेवक प्रकाशन
…शास्त्र, कन्हैयालाल वर्मा, १।।।)	नन्दकिशोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक शास्त्र के मूल तत्त्व, कन्हैयालाल वर्मा, ४।।।)
नागरिक शास्त्र, २, श्रीप्रकाश, २१०, क्रा०, २)
नागरिक शास्त्र और भारतीय संविधान, १५०, क्रा०, १।।)
नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त, राजनारायण गुप्त, २२४, ३।।)
नागरिक शास्त्र के मूल सिद्धान्त, १, पालीवाल, १५६, २)
नागरिक-शास्त्र, प्रो० केदारनाथ प्रसाद, ८)
नीति शास्त्र, १, क्षेमधारीसिंह, २१८, २।।)
भारत के समाज और इतिहास पर स्फुट विचार, १, श्रीप्रकाश, १८०, क्रा०, १।)
भारत में सामाजिक कल्याण और सुरक्षा, १, रघुराज गुप्त, ३२६, डि०, ८।।।)
भारतीय नागरिकता की भूमिका, कन्हैयालाल वर्मा, ७)
भारतीय नागरिकता और हमारा संविधान, राजनारायण गुप्त, १६०, १।)
राजस्व, १, भगवानदास केला, १५२, १।।)
व्यावहारिक समाज-शास्त्र, १, कैलाशनाथ शर्मा, शम्भूरत्न त्रिपाठी, ३००, २)
सचित्र संविधान, १, इन्द्र एम० ए०, ६६, १।।)
समाज सेवा, डॉ० एल० आनन्दराव, राधेश्याम विद्यार्थी, १।।)
समाज कल्याण, छविनाथ पाण्डेय, १।)
सभा शास्त्र, १, नरहरि विष्णु गाडगिल, २७२, डि०, ६)
सरल नागरिक शास्त्र, २, भगवानदास केला, ६७५, क्रा०, ५)
सामान्य ज्ञान परिचय, पूर्णमासीसिंह, १६२, १।।)
सेवा धर्म, अप्पा पटवर्धन, अनु० श्री हरिभाऊ 'उपाध्याय', २२५, १।।)
स्वतन्त्र भारत का शासन और नागरिक जीवन, मालवीय, १६७, क्रा० १।)
हमारे गाँव, १, शान्ति टॉम्ग्री, ६६, क्रा० १।।)
हमारे रीति-रिवाज, १, जगदीशसिंह, २५०, क्रा० ४)

संस्कृत वाङ्मय

अर्जुन का तप, अनु० इन्द्र विद्यावाचस्पति, २।।)
आर्योदय-काव्यम्, गंगाप्रसाद उपाध्याय, क्रा०, १।।)
ऐतरेय ब्राह्मण, १, अनु० गंगाप्रसाद उपाध्याय, ५७३, क्रा०, ५)
कवि और काव्य, पं बलदेव उपाध्याय, २१८, ३)
कालिदास-ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, ६३०, रा०, ३०
कादम्बरी-कथा-सार, १, गुलाबराय, ६५, क्रा०, ।।=)
काव्य दीपिका अष्टमशिखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय, ४८, क्रा०, ।।।)
काव्य मीमांसा, १, अनु० केदारनाथ शर्मा सारस्वत, ३६०, रा०, ६।।)
कालिदास और उनका रघुवंश, १, रामप्रसाद सारस्वत, १३०, क्रा०, १।।)
कालिदास की निरंकुशता, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, ६०, क्रा०, ।।)
काव्य-प्रकाश, २, स्व० हरिमंगल मिश्र, ५००, क्रा०, ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नानिधि अर्थात् हिन्दी नैषध चरित, सत्यजीवन वर्मा 'भारतीय', ३५८, क्रा०, ३॥)	सम्मेलन
...विन्द, १, डॉ० रांगेय राघव, ६४, क्रा०, ४)	साहनी प्रकाशन
...चरित, १, निरंजनदेव शर्मा, ४३०, क्रा०, ५॥)	राजकमल प्रकाशन
...चरित्र, १, हरिदत्त शास्त्री, १३८, क्रा०, १॥)	गयाप्रसाद एण्ड सन्स
...कारिकावली, धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, ३५८, क्रा०, ५)	मोतीलाल बनारसीदास
...न्द्रम्, साधुराम, २८०, डि०, ५)	आत्माराम
...सिद्धान्त मुक्तावली, १, धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, ३५८, क्रा०, ५)	मोतीलाल बनारसीदास
...बोधिनी, १, विश्वनाथ शास्त्री, ११२, क्रा०, १॥=)	भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर
...चन्द्रिका, ३, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, १७०, २)	शारदा-मन्दिर
...शतक, १, प्रभुदत्त स्वामी शास्त्री, ४०, क्रा०, ।=)	भारतीय साहित्य प्रकाशन
...चरितचर्चा, ५, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, १२०, क्रा०, २)	गंगा पुस्तक माला
...जलयोग दर्शन (सटीक) व्याख्या, हरिकृष्ण गोयन्दका, १७६, ॥)	गीता प्रेस
...नक पाणिनीय, विश्वनाथ शास्त्री, १)	मोतीलाल बनारसीदास
...न्त्र, १, डॉ० मोतीचन्द्र, ३१४, क्रा०, ४॥)	राजकमल प्रकाशन
...न्त्र, १, अनु० सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री, ३१६, क्रा०, ३॥)	देहाती पुस्तक भण्डार
...मुनि कृत नाट्य-शास्त्र (सर्ग १-३ सटीक), १, पं० भोलानाथ शर्मा, १६०, क्रा०, २॥)	साहित्य निकेतन
...भारतीम् (भाग १), रामबालक शास्त्री, ३८, क्रा०, ॥)	सम्मेलन
...नीति, अनु० ज्वालादत्त शर्मा, क्रा०, १)	गंगा पुस्तक माला
...संहिता पद्धति, भगवानदास मित्तल, क्रा०, १०)	मोतीलाल बनारसीदास
...प्रकाश निघण्टु, ३, विश्वनाथ द्विवेदी, क्रा०, ७)	मोतीलाल बनारसीदास
...य दर्शन शास्त्र, धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, १५०, क्रा०, १)	मोतीलाल बनारसीदास
...ृति, १६, भाष्यकार तुलसीराम स्वामी, ६८०, क्रा०, ५)	गोयल ब्रदर्स
...त (मूल सहित), १, अनु०, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, २५६, क्रा०, ४)	राजकमल प्रकाशन
...त (पूर्व मेघ), १, अनु० साधुराम, ११६, डि०, २॥)	आत्माराम

...त, १, अनु० सत्यकाम विद्यालंकार, २॥)

...त, अनु० संसारचन्द्र, महादेव शास्त्री, २१५, क्रा०, ५)

...त, अनु० राजा लक्ष्मणसिंह, ६२, क्रा०...

...विनोद, मेघमुनि प्रणीत, ...

...गिणी, ५, पं...

... काकली ४); कामिनी ५); गाड़ी ...र ३); पी कहाँ तथा हुस्शू ३); फांटामारा २॥); ...अरे यायावर रहेगा याद ६); तीर्थ यात्रा ३); जाई

...लिए पत्र लिखिए

...नं. २४, इलाहाबाद-१

डिमाई आकार के लगभग पौने तीन सौ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेणी संहार नाटक, महावीरप्रसाद द्विवेदी, १।।)
वेदसार, प्रो०, विश्वबन्धु, १।।)
वैदिक साहित्य परिशीलन, रजनीकान्त शास्त्री, २२४, डि०, ३)
वैदिक मनुस्मृति, २६, अनु० सत्यकाम सिद्धान्त शास्त्री, ३८२, क्रा०, ४)
सरल साहित्य संकलनम्, प्रो० धर्मचन्द्र सन्त, ३)
सांख्यकारिका (अंग्रेजी-हिन्दी टीका सहित), सत्यनारायण पाण्डेय, ४४, क्रा०, १)
सिद्धान्त कौमुदी, २, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, १६)
सुगम संस्कृत व्याकरण, आनन्द स्वरूप गुप्त, २७५, क्रा०, २।।)
संस्कृतानुवाद निबन्धादर्श, आ० पूर्णानन्द, क्रा०, १५०, १।।)
संस्कृत व्याकरण का मानचित्र, धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, डि०, १)
संस्कृत साहित्य का इतिहास, हंसराज अग्रवाल,
संस्कृत व्याकरण सार, २, रामचन्द्र शर्मा, ४८०, ६)
संस्कृत साहित्य का इतिहास, १, द्वारिकाप्रसाद, २००, क्रा०, २।।)
संस्कृत वाङ्मय, रामचन्द्र वर्मा, ४३२, क्रा०, ३।।)
संस्कृत वाङ्मय, २, पं० बलदेव उपाध्याय, ११२, १।)
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास, १, रामबिहारीलाल शास्त्री, २०६, क्रा०, २।।)
संस्कृत गद्य मंजरी, पाण्डेय और व्यास, १८२, क्रा०, २।)
संक्षिप्त वाल्मीकि रामायण, १, एस० सन० व्यास, १६४, क्रा०, २।।)
संस्कृत साहित्य का इतिहास, ३, पं० बलदेव उपाध्याय, ५००, ५)
संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, १, युधिष्ठिर 'मीमांसक', ४७०, डि०, ८)
संस्कृत साहित्य प्रवेश, डॉ० लक्ष्मीचन्द्र खुराणा, ३)
संस्कृत साहित्य की रूप-रेखा, पाण्डेय और व्यास, ४२०, क्रा०, अजिल्द ४।।।), सजिल्द ५।।)
सौन्दरानन्द महाकाव्य, १, अध्यापक रामदीन, क्रा०, १)
शिशुपाल वध, १, रामप्रताप त्रिपाठी, ६१५, डि०, ८)
[illegible] चन्द्रबली पाण्डेय, ५००, क्रा०, ४)
अर्जुन का तप, अर्जुन [illegible] उपाध्याय, ३७७, ७।।)
आर्योदय-काव्यम्, गंगाप्रसाद उपाध्याय, [illegible] २०३२ रा०, १५)
ऐतरेय ब्राह्मण, १, अनु० गंगाप्रसाद उपाध्याय, ५७३, क्रा०, ५)
कवि और काव्य, पं बलदेव उपाध्याय, २१८, ३)
कालिदास-ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, ६३०, रा०, ३०
कादम्बरी-कथा-सार, १, गुलाबराय, ६५, क्रा०, ।।=)
काव्य दीपिका अष्टमशिखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय, ४८, क्रा०, ।।।)
काव्य मीमांसा, १, अनु० केदारनाथ शर्मा सारस्वत, ३६०, रा०, ६।।)
कालिदास और उनका रघुवंश, १, रामप्रसाद सारस्वत, १३०, क्रा०, १।।)
कालिदास की निरंकुशता, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, ६०, क्रा०, ।।)
काव्य-प्रकाश, २, स्व० हरिमंगल मिश्र, ५००, क्रा०, ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न्यालोक, १, आ० विश्वेश्वर, ५००, डि०, ८) — गौतम बुक डिपो
...मित्रलाभ, २, विश्वनाथ शास्त्री, १५०, का०, १) — मोतीलाल बनारसीदास
...ऋग्वेद, १, रामगोविन्द त्रिवेदी, १६५०, १२) — इण्डियन प्रेस

सुमित्रानन्दन पन्त

...विहग, १, शान्तिप्रिय द्विवेदी, ४७२, का०, ५) — सम्मेलन
...और पल्लव, १, निराला, ६६, का०, १।) — गंगा पुस्तक माला
...आधुनिक कवि, फूलचन्द्र पाण्डेय, ५००, का०, — किताब महल
...युग और काव्य, यशदेव शल्य, ४००), का०, ५) — किताब महल
...काव्य चेतना में गुन्जन, वासुदेवनन्दन, २५७, का०, ३) — किताब महल
...काव्य-साधना, १, अरविन्द, १६८, का०, २॥) — शुक्ला बुक डिपो पटना
...नन्दन पन्त, ६, डॉ० नगेन्द्र, २२५, का०, २॥।) — साहित्य रत्न भण्डार
...नन्दन पन्त, १, शचीरानी गुर्टू, ३४६, डि०, ६) — आत्माराम
...नन्दन पन्त, विश्वम्भर, 'मानव', ४७४, का०, ५) — किताब महल

सूरदास

...सार, ७, आ० रामचन्द्र शुक्ल, १५८, का०, ३) — साहित्य सेवा सदन
...साधना और सूर साहित्य, १, डॉ० मुन्शीराम शर्मा, ४६६, डि०, ८) — (वितरक) पद्मजा प्रकाशन
...सूरदास, १, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, ५६, डि०, ४) — आत्माराम
...लहरी, महाकवि सूरदास, महादेवप्रसाद, १॥) — पुस्तक भण्डार
...वली, ८, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', ८८, का०, ॥।) — सम्मेलन
...और उनका साहित्य, १, शान्तिस्वरूप गौड़, २३३, का०, ३) — राजेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, आगरा
...हित्य-दर्पण, १, जगन्नाथराय शर्मा, डि०, ४॥।≋) — विद्या धाम
..., आ० रामचन्द्र शुक्ल, का०, ३॥) — नन्दकिशोर
..., २, डॉ० ब्रजेश्वर शर्मा, ५९३, का०, ८) — प्रयाग विश्वविद्यालय
...माला, २, डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, २४०, का०, ४, — ओरिएण्टल...
...क्षा, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २१३, का०, ३)
..., १, ६१०, का०, ५॥।)
..., १, ११२, का०...
..., २, द्वारि...

...कटाल तार १॥); कोकिला ४); कामिनी ५); गाड़ी
...और ३); पी कहाँ तथा हुस्सू ३); फांटामारा २॥);
...अरे यायावर रहेगा याद ६); तीर्थ यात्रा ३); जाई

...लिए पत्र लिखिए

...नं. २४, इलाहाबाद-१

डिमाई आकार के लगभग पौने तीन सौ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूर-संग्रह, २, बलदेवप्रसाद मिश्र, ६४, का०, ॥)
सूरदास : एक अध्ययन, १, भारतभूषण 'सरोज', १३८, का०, २॥)
सूर का भ्रमर-गीत-साहित्य, १, सुरेशचन्द्र गुप्त, का०, १॥)
सूर पंचरत्न, ७, ला० भगवानदीन, ३४०, का०, २॥)
सूरदास, १, वासुदेव शर्मा, १५१, का०, २॥)
सूर-साहित्य की भूमिका, २, डॉ० रामरतन भटनागर, वाचस्पति त्रिपाठी, २६२, का०, २)
सूर सागर (भाग १), २, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, डि०, १०)
सूर सागर (भाग २), १, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, डि०, १०)
सूरदास, १, डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, ६५, का०, १)
सूरदास, १, डॉ० रामरतन भटनागर, २५२, का०, २॥)
सूर शतक, १, डॉ० रामरतन भटनागर, १॥)
सूर-सुषमा, १, आ० नन्ददुलारे वाजपेयी, १।)
सूर पदावली की टीका (प्रथमा के लिए), ।=)
हिन्दी-साहित्य में भ्रमर-गीत-परम्परा, १, सरला शुक्ला, १७५, का०, ४)

सेनापति

कवित्त रत्नाकर, ३, उमाशंकर शुक्ल, २५३, डि०, ३॥)
कविवर सेनापति और उनका कवित्त रत्नाकर, १, डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, १६०, का०, १॥)
रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति, १, रामचन्द्र तिवारी, ११२, का०,

हरिऔध

कवि सम्राट हरिऔध और उनकी कला-कृतियाँ, १, द्वारिकाप्रसाद, २६१, का०, ३।)
प्रिय-प्रवास, १, भारतभूषण 'सरोज', ६१, का०, १)
प्रिय-प्रवास : एक अध्ययन, १, भवानीशंकर त्रिवेदी, १६०, का०, ४)
... हरिऔध, २, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', ३६३, डि०, ४)
अर्जुन का तप, ... प्रियप्रवास, ३, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, १८२, का०, १।)
आर्योदय-काव्यम्, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ... का०, ३॥)
ऐतरेय ब्राह्मण, १, अनु० गंगाप्रसाद उपाध्याय, ५७३, का०, ५)
कवि और काव्य, पं बलदेव उपाध्याय, २१८, ३)
कालिदास-ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, ६३०, रा०, ३०
कादम्बरी-कथा-सार, १, गुलाबराय, ६५, का०, ॥=)
काव्य दीपिका अष्टमशिखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय, ४८, का०, ॥।)
काव्य मीमांसा, १, अनु० केदारनाथ शर्मा सारस्वत, ३६०, रा०, ६॥)
कालिदास और उनका रघुवंश, १, रामप्रसाद सारस्वत, १३०, का०, १॥)
कालिदास की निरंकुशता, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, ६०, का०, ॥)
काव्य-प्रकाश, २, स्व० हरिमंगल मिश्र, ५००, का०, ६)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केतकी की कहानी, ब्रजरत्नदास, ।-)	नागरी प्रचारिणी सभा
गद्य-निर्माता, प्रेमनारायण टण्डन, १८६, क्रा०, २)	गयाप्रसाद एण्ड संस
गद्य-निर्माता, १, श्रुतिकान्त, राजेन्द्रकुमार, ६४, क्रा०, १।।)	साहित्य सदन
गद्य : विकास और इतिहास, १, योगेन्द्रकुमार मल्लिक, १००, क्रा०, १।)	मेहरचन्द मुन्शीराम
गद्य-साहित्य, २, शिवदानसिंह, चौहान, विजय चौहान, १३२, क्रा०, २।।)	राजकमल प्रकाशन
गद्य की प्रवृत्तियाँ, १, ७७, रा०, २)	राजकमल प्रकाशन
गद्य के युग-निर्माता, १, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, १७६, डि०, ३।।।)	नन्द किशोर
गद्य शैली का विकास, डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा, डि०, २।।)	नागरी प्रचारिणी सभा
का गद्य-साहित्य, १, सद्गुरुशरण अवस्थी, रामचन्द्र तिवारी,	विश्वविद्यालय प्रकाशन
गद्य-गरिमा, २, भारतभूषण 'सरोज', २।।)	गौतम बुक डिपो

हिन्दी-प्रचार

दिन में हिन्दी, रामस्वरूप कौशल, क्रा०, २)	गंगा पुस्तकमाला
लिपि माला, १, गौरीशंकर ओझा, ८)	विद्या विभाग, काँकरोली
भारती, १, डॉ०, त्रिलोकीनारायण दीक्षित, २३२, क्रा०, २।।)	किताब महल
भाषा की महत्ता, १, सैयद अमीर अली 'मीर', ५८, क्रा०, ।)	सम्मेलन
भाषा का सवाल, जवाहरलाल नेहरू, ४०, क्रा०, ।≈)	नवजीवन प्रकाशन
भाषा हिन्दी, १, सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन', २२२, क्रा०, ३)	राजकमल प्रकाशन
भाषा पर विचार, २, आ० चन्द्रबली पाण्डे, २६८, क्रा०, २।।।)	नन्दकिशोर
में नागरी, १, आ० चन्द्रबली पाण्डे, ७३, क्रा०, १।)	सम्मेलन
६, बद्रीनाथ भट्ट, १००, क्रा०, १।।)	गंगा पुस्तकमाला
का सामान्य ज्ञान, श्रीहरि, २४७, क्रा०, २)	किताब महल
पर फारसी का प्रभाव, २, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, १७४, क्रा० १।≈)	सम्मेलन
वालो सावधान, १, रविशंकर शुक्ल, क्रा०, ३।।)	नागरी प्रचारिणी स

१।।); कँटीले तार १।।); कोकिला ४); कामिनी ५); गाड़ी
...र ३); पी कहाँ तथा हुश्शू ३); फांटामारा २।।);
अरे यायावर रहेगा याद ६); तीर्थ यात्रा ३); जाई

लिए पत्र लिखिए

नं. २४, इलाहाबाद-१

डिमाई आकार के लगभग पौने तीन सौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १६ से आगे]

"....**प्रकाशन समाचार** भले ही प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की हित-चेतना लेकर चला हो, साधारण से पुस्तक-प्रेमी व्यक्ति से लगाकर उन संस्थाओं को, जो केवल सीमित जनता के लिए अपने प्रकाशन निकालती हैं, अत्यन्त उपयोगी है।...मैं आपके इस पत्र की हार्दिक सफलता चाहता हूँ।"

लक्ष्मीनारायण मालवीय,
सम्पादक : किसानी समाचार, नागपुर।

"प्रकाशक और लेखक—दोनों की हैसियत से ही मैं **प्रकाशन समाचार** का पाठक हूँ। इस पत्र का हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि में भारी योग रहा है।...फले-फूले।"

रामगोपाल पुरोहित,
सम्पादक : खाता वही, जयपुर।

"....**प्रकाशन समाचार** की प्रति प्रत्येक पुस्तकालय में रहनी चाहिए।"

सुरेन्द्र,
व्यवस्थापक : वालण्टियर, लश्कर।

"हिन्दी में **प्रकाशन समाचार** जैसे पत्र का अभाव मुझे बहुत खटकता था। आपके उसकी पूर्ति कर हिन्दी-प्रेमियों का अत्यन्त उपकार किया है।...मेरी शुभ कामना स्वीकार कीजिए।"

विश्वनाथ,
सम्पादक : शान्ति-सन्देश, खगड़िया (मुंगेर)।

"**प्रकाशन समाचार** हिन्दी-संसार के एक भारी अभाव की ... देता है। मेरे विचार में सचमुच उसका हिन्दी-जगत् में वही ... के भौतिक शरीर में धमनियों का होता है। मेरी

खासकर के पुस्तकालयों के अधिकारियों को सुन्दर और उपयोगी पुस्तकों के चुनाव में इससे बहुत मदद मिलती है।

जगदीशनारायण शर्मा,
प्रधान मंत्री, श्री लोकमान्य पुस्तकालय, लखनऊ

"**प्रकाशन समाचार** देश में सत्साहित्य के प्रकाशन में प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्रदान कर रहा है, वह सराहनीय है। **प्रकाशन समाचार** को नित्य उन्नत देखना चाहता हूँ।"

पुरुषोत्तमदास मोदी,
विश्वविद्यालय प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, गोरखपुर

"....**प्रकाशन समाचार** का इस प्रकार सुन्दर और व्यवस्थित रूप से निकलना राष्ट्रभाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति का द्योतक है।" (आप) राष्ट्रभाषा के इस प्रमुख पत्र को विश्व-भाषाओं के सर्वश्रेष्ठ पत्रों के आगे ला खड़ा करेंगे।"

सिंहासनराय 'सिंह',
आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता

"...आपने प्रकाशकों तथा लेखकों का बहुत बड़ा हित तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के एक अंग की पूर्ति की है, इस प्रयत्न के लिए आपको बधाई।"

तिलेश्वरनाथ शास्त्री,
श्रीदूधनाथ पुस्तकालय एण्ड प्रेस, कलकत्ता

"...इस मासिक पत्र ने बहुत आवश्यक क्षेत्र में नेतृत्व किया है और मैं जानता हूँ कि कितने ही पुस्तक-विक्रेता तथा प्रकाशक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ और उपयोगी लेखादि पढ़ने के लिए इसके प्रत्येक अंक की किस कदर प्रतीक्षा करते हैं।"

सदानन्द भकल,
पॉपुलर बुक डिपो, बम्बई ...

... लिए बधाई स्वीकार कीजिए।...आपका प्रकाशन ...

मोतीचन्द्र शर्मा,
हिन्दी भवन, ...

अखिल भारतीय ...

गयाप्रसाद एण्ड सन्स ...

साहित्य निकेतन ...

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ...

साहित्य रत्न भण्डार ...

इण्डियन प्रेस ...

सम्मेलन ...

अर्जुन का तप, ... प्रियम्...
आर्योदय-काव्यम्, गंगाप्रसाद उपाध्याय, ... का०, ३।।)
ऐतरेय ब्राह्मण, १, अनु० गंगाप्रसाद उपाध्याय, ५७३, क्रा०, ५)
कवि और काव्य, पं बलदेव उपाध्याय, २१८, ३)
कालिदास-ग्रन्थावली, सीताराम चतुर्वेदी, ६३०, रा०, ३०
कादम्बरी-कथा-सार, १, गुलाबराय, ६५, क्रा०, ।।=)
काव्य दीपिका अष्टमशिखा, चन्द्रशेखर पाण्डेय, ४८, क्रा०, ।।।)
काव्य मीमांसा, १, अनु० केदारनाथ शर्मा सारस्वत, ३६०, रा०, ६।।)
कालिदास और उनका रघुवंश, १, रामप्रसाद सारस्वत, १३०, क्रा०, १।।)
कालिदास की निरंकुशता, १, आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी, ६०, क्रा०, ।।)
काव्य-प्रकाश, २, स्व० हरिमंगल मिश्र, ५००, क्रा०, ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके पुस्तकालय के लिए

आपके पुस्तकालय में प्रेमचन्द, सुदर्शन, अज्ञेय, उषादेवी मित्रा आदि ख्यात नामा लेखकों के ग्रन्थ चाहिएँ। सरस्वती प्रेस द्वारा प्रकाशित गोदान, कायाकल्प, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, सुखदास, सेवासदन और प्रेमचन्द के अन्य सभी प्रकाशनों का पूरा सेट अस्सी रुपए में उपलब्ध है। आज ही। प्रेमचन्द के ग्रन्थ आपके पुस्तकालय की शोभा हैं, आपकी चेतना के परिष्कार और ज्ञान की अभिवृद्धि ...मोल सहायक हैं।

कथा साहित्य का अनुपम मासिक

कहानी

आज और अभी ग्राहक बनिये! १९५४ का वार्षिक विशेषांक छप रहा है। हिन्दी के सभी कहानीकारों की नवीनतम रचनाएँ इसमें संग्रहीत हैं। सचित्र लेखक परिचय और कहानी कला पर उपयोगी लेख भी हैं।

चार रुपए मनीआर्डर से भेजकर वार्षिक ग्राहक बनने वालों को यह विशेषांक बिना मूल्य प्राप्त होगा। केवल विशेषांक का मूल्य ढाई रुपये; वार्षिक चन्दा चार रुपए।

स्वयं ग्राहक बनें और मित्रों को ग्राहक बनाएँ

सरस्वती प्रेस, ५, सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद–१

इन पुस्तकों के लिए आर्डर भेजिए :

...सान ३); कार्ल और अन्ना १॥); कँटीले तार १॥); कोकिला ४); कामिनी ५); गाड़ी ...ों का कटरा ५) ... ...ौर ३); पी कहाँ तथा हुस्शू ३); फांटामारा २॥); ... अरे यायावर रहेगा याद ६); तीर्थ यात्रा ३); जाई

...लिए पत्र लिखिए

...नं. २४, इलाहाबाद-१

डिमाई आकार के लगभग पौने तीन सौ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने है !

शोहरत के पीछे भागने की तो जरूरत नहीं। काम कीजिए। शोहरत खुद आपके पीछे-पीछे भागती चली आयगी। यह बात आने ठीक है। यकीन न आये तो किसी भी यशस्वी साहित्यकार के जीवन पर नजर दौड़ाइए। सारी बात समझ में आ जायगी। ऐसे साहित्यकार हैं **देवेन्द्र सत्यार्थी** जो बीस साल से भी अधिक समय तक भारत के विभिन्न प्रदेशों की यात्रा करते रहे। इस यात्रा में उनका उद्देश्य लोकगीत संग्रह करने तक सीमित था, लेकिन यात्री ने लम्बी यात्राओं के पश्चात लौटकर देखा कि उसके झोले में लोक अतिरिक्त और भी बहुत कुछ आ गया है। यात्री की भाषा में जगह-जगह के शब्द घुल-मिल गए, वैसे ही जैसे उसके संस्मरणों में अनगिन के चेहरे अंकित होते गए। जमाने के गर्म-सर्द ने यात्री की अनुभव-मंजूषा में एक कभी न मिटने वाले साहित्य को जन्म दिया।

एक बार महापण्डित **राहुल सांकृत्यायन** ने हमारे इस यात्री साहित्यकार को लिखा : "आपके संग्रहीत गीतों को मैं पढ़ हूँ। आपकी लगन और विवेचन-शक्ति स्तुत्य है।" [७-२-'३५ के एक पत्र से।] डॉ० **हज़ारीप्रसाद द्विवेदी** ने भी तो लिखा था : " भारत' और 'मॉडर्न रिव्यु' में आपके दर्शन प्रायः हो ही जाते हैं। आपके लेख बहुत उत्तम कोटि के होते हैं। मैंने नाना श्रेणी के प उन्हें पढ़ते देखा है। महात्मा जी ने आपकी प्रशंसा में जो वाक्य लिखे हैं, बहुत ठीक लिखे हैं। अब हम लोगों—मित्रों—के कहने ला बात बची ही नहीं।" [१९-१०-'३५ के एक पत्र से।] श्री **रामनरेश त्रिपाठी** ने लिखा था : "सारा परि ... श्री ... प्रकार सुन्दर और व्यवस्थि घर हो गया। मुझे आपका वर्तमान जीवन बहुत प्यारा लग रहा है और स्पर्धा होती है, जैसे ... ाषा हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति का द्योतक है।" था, पर अब तो बाहर की अपेक्षा भीतर का वजन इतना बढ़ गया है कि हिलने-डुलने के ... इस प्रमग्र पत्र को विश्व-भाषाओं के सर्वश्रेष्ठ प भीतर का नहीं। बहुत ही भाग्यशाली पुरुष होंगे, जिनमें एक आप हैं, जिनके भीतर का भा- कम होता है"' आपकी सच्ची लगन वस्तु हो गई है। मैं आपको प्रणाम करता हूँ।" [२२-४-'४० के एक पत्र से] आचार्य **काका कालेलकर** ने लिखा था : "आपके मिल सकें एकत्र पढ़कर गुजरात महाराष्ट्र के मासिकों में कुछ लिखना चाहता हूँ।" फिर जब हमारे यात्री साहित्यकार की लोक-साहि तीन पुस्तकें 'धरती गाती है', 'धीरे बहो गंगा' और 'बेला फूले आधी रात' प्रकाशित हुईं तो यशस्वी कवि **सुमित्रानन्दन पन्त** ने लिखा: गाती है' आदि पुस्तकें मुझे मिल गई थीं। ऐसी सुन्दर कृतियों से हिन्दी साहित्य के भण्डार की श्रीवृद्धि करने के लिए मेरी बधाई स्वीकार [२८-२-'४९ के एक पत्र से।] 'बाजत आवे ढोल' हमारे यात्री साहित्यकार का चौथा लोक-साहित्य अध्ययन है। लोकगीत के निरन्तर ने हमारे साहित्यकार को कवि बनाकर छोड़ा। 'बन्दनवार' उसका प्रथम कविता-संग्रह है। 'चट्टान से पूछ लो', 'चाय का रंग', 'सड़ बन्दूक' और 'नये धान से पहले'—ये चार कहानी-संग्रह हमारे इस साहित्यकार को कहानी-लेखक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। 'एक यु प्रतीक', 'रेखाएँ बोल उठीं' और 'क्या गोरी क्या साँवरी'—ये तीन निबन्ध-संग्रह भी तो इसी साहित्यकार की लेखनी से ही हमें प्राप्त हु 'कला के हस्ताक्षर' बारह रेखाचित्रों का संग्रह है जिनके नायक कला के विभिन्न क्षेत्रों के ख्यातिप्राप्त कलाकार हैं। 'चांद सूरज के बीरन साहित्यकार की आत्मकथा का पहला भाग है।

'रथ के पहिये' के लेखक के रूप में इस साहित्यकार ने अपना पहला उपन्यास प्रस्तुत किया जिसकी हिन्दी में बहुत चर्चा हुई।

कठपुतली

देवेन्द्र सत्यार्थी का दूसरा उपन्यास

पृष्ठ संख्या ४४८ : बढ़िया एण्टिक कागज : कलापूर्ण गेटअप

प्रकाशक : ... ई दिल्ली

हमारा विश्वास है कि
यह कलाकृति हिन्दी उपन्या
ब्रह्मपुत्र, देवेन्द्र
का चित्रपट प्रस्तुत करेग ॥)
आता। प्रतीक्षा कीजिए ०, १॥)
मुख्य ि का०, ॥)
अपने नग

... हिन्दी भवन, काल
अखिल भारती ... सम्मेलन
गयाप्रसाद एण्ड सन्स
साहित्य निकेतन
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
साहित्य रत्न भण्डार
इण्डियन प्रेस
सम्मेलन

प्रकाशन समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगस्त, १९५४ अङ्क १२
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

...ल नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक...ओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

...दी-साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए हमारा गौरवान्वित प्रकाशन :
...भाषा-विज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या कृत

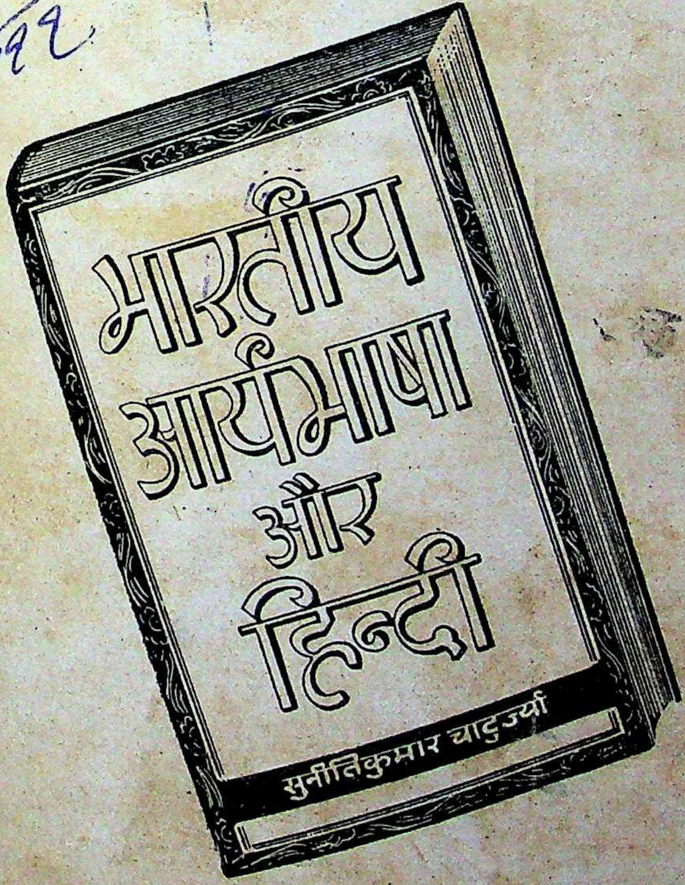

डिमाई आकार के लगभग पौने तीन सौ पृष्ठ। मूल्य ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक

प्रकाशन-समाचार के इस अंक के प्रकाशन के साथ इस पत्र के जीवन का पहला वर्ष समाप्त हो रहा है। सितम्बर १९५४ के अंक से यह पत्र दूसरे वर्ष में पदार्पण करेगा। निश्चय किया गया है कि सितम्बर, ५४ का अंक **सत्साहित्य-सूची-विशेषांक** के रूप में प्रकाशित हो।

•

इस विशेषांक में हिन्दी में उपलब्ध निम्न विषयों की यथा-सम्भव प्रत्येक पुस्तक की सूची छपेगी। अलंकार, रस तथा छन्द; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल; इतिहास—सांस्कृतिक; इतिहास–साहित्यिक; उपन्यास-कला; कबीर; कला-विवेचन; कहानी-कला; काव्य—प्रेम; काव्य—रीति; केशव; कोष; गुप्त मैथिलीशरण; घन-आनन्द; चन्द बरदाई; जयशंकर प्रसाद; जायसी; तुलसी; दिनकर; देव; नन्ददास; नाटक-कला; निबन्ध-कला; निबन्ध—साहित्यिक; निर्गुण साहित्य; निराला; पन्त सुमित्रानन्दन; प्रेमचन्द; बिहारी; भारतेन्दु; भाषा-विज्ञान और व्याकरण; भूषण; मतिराम; महादेवी; मीरा; रत्नाकर; रसखान; राजस्थानी साहित्य; लोक-साहित्य; वाद; विभाषा-साहित्य-परिचय; विद्यापति; शोध तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ; संस्कृत-वाङ्मय; सन्त-काव्य; सिद्धान्त-ग्रन्थ; सिद्ध-साहित्य; सूरदास; हरिऔध।

•

प्रमुख लेखकों की साहित्यिक कृतियों की सूची भी इसमें प्रकाशित होगी, लेकिन सिद्धान्त-ग्रन्थों की सूची के संकलन का प्रयास ही मुख्य होगा। सूची में प्रत्येक पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, पृष्ठ-संख्या, संस्करण, आकार, मूल्य, तथा प्रकाशक का नाम प्रकाशित किया जायगा।

•

प्रकाशकों से प्रार्थना है कि उपरिलिखित विवरण देकर अपने नवीनतम सूचीपत्रों की दो-दो प्रतियाँ हमें शीघ्रातिशीघ्र भेजें। वैसे इस विशेषांक में १४ अगस्त १९५४ तक प्रकाशित तथा प्राप्य पुस्तकों को सम्मिलित कर लिया जायगा। अभी सविवरण सूची भेजने के बाद जो पुस्तकें छपें, प्रकाशक उनकी सूचना भी १४ अगस्त १९५४ तक हमारे पास पहुँचा दें।

•

प्रकाशन-समाचार का **सत्साहित्य-सूची-विशेषांक** प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता तथा पुस्तकालय द्वारा सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप में संग्रहणीय हो जायगा। इस **विशेषांक** का अलग से मूल्य १) रहेगा, लेकिन स्थायी ग्राहकों को २।।) के वार्षिक मूल्य में ही मिल सकेगा।

•

प्रकाशक अभी से अपने लिए विज्ञापन-स्थान भी सुरक्षित कर लें; विज्ञापनों को सीमित स्थान देना ही अभीष्ट है।

सत्साहित्य के प्रकाशकों का समर्थक **प्रकाशन-समाचार**

१, फ़ैज बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष १ :

: अंक १२ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्य-समिति ने एक निश्चय द्वारा भारत के उन सभी प्रकाशकों को सम्मिलित होने का सानुरोध आमन्त्रण दिया है जो उद्देश्यों में विश्वास करते हों तथा संघ के अनुशासन के लिए तैयार हों। संघ के उद्देश्यों से कहीं, कभी मतभेद नहीं हो सकता, यह निर्विवाद है। इस अंक संघ के प्रधान तथा प्रधान-मन्त्री के वक्तव्य भी हुए हैं जिनसे स्पष्ट है कि प्रकाशक-संघ के द्वार प्रत्येक प्रकाशक के लिए, बिना किसी भी प्रकार के ...जन के, खुले हैं।

...इन उद्देश्यों की सम्पूर्त्ति अभीष्ट है तो हिन्दी के ...बड़े प्रकाशकों को मिलकर प्रयास करना होगा। आज देश की राष्ट्रभाषा है तथा उसके पदानुरूप गौरव ...का उत्तरदायित्व बहुत हद तक हिन्दी के प्रकाशकों ...स्पष्ट है कि प्रकाशक अपने इस नये कर्त्तव्य के प्रति ...हैं। प्रकाशक-संघ का आयोजन इसी सचेतता की ...है। प्रकाशक-जगत् की कई-एक बाधाओं तथा अभावों ...संघबद्ध, सामूहिक उपायों से ही सम्भव है। जहाँ ...त्मक कठिनाइयों का मिलकर सामना करना है, ...निश्चयात्मक सफलताओं को भी मिलकर ही कार्या-...ना है।

आदर्श-पक्ष के इस प्रश्न के अतिरिक्त व्यावसायिक पक्ष का प्रश्न भी आज बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रकाशन-व्यवसाय में आज हमारी अराजकता की वही स्थिति है जो आधी शती पहले पश्चिम के उन देशों में थी जहाँ कि आज यह व्यवसाय चरम उत्कर्ष की स्थिति पर पहुँच चुका है। संघबद्ध होकर, कुछ नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए पश्चिम के प्रकाशकों ने अपनी भाषा और साहित्य की सेवा भी की और व्यवसाय को भी लाभप्रद बनाया। जब तक हम अपने व्यवसाय को लाभप्रद बनाने में सफल नहीं होते, हम हिन्दी की सेवा उचित ढंग से और उचित परिमाण में नहीं कर सकेंगे।

हमारा पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी-जगत् में अखिल भारतीय स्तर पर प्रकाशकों को संघबद्ध करने का यह प्रयास सफल होकर रहेगा। संघबद्ध होते हुए हम लेखकों के, अथवा पुस्तक-विक्रेताओं के, अथवा शासकों के, अथवा प्रकाशकों के किसी वर्ग के विरुद्ध मोर्चा लेने की तैयारी नहीं कर रहे हैं, न किन्हीं पर-हितों पर हावी होने को लालायित हैं, वरन् हिन्दी में स्वस्थ, गौरवास्पद प्रकाशन की परम्परा के समर्थन में अपने उन हितों के संरक्षण में जुटना चाहते हैं जो व्यवसाय तथा हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य के लिए परम आवश्यक हैं।

हमें आशा है कि हिन्दी के प्रकाशक अधिकाधिक संख्या में अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के सदस्य बनेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त जी का चिर प्रतीक्षित

उपन्यास

वाम मार्ग

छपकर तैयार है।

. . . चार्वाकीय विचार धारा पर विवेचनात्मक ऐतिहासिक उपन्यास . . .

बढ़िया कागज़ पर सुन्दर छपाई, अत्यन्त ही सुदृढ़ जिल्द और आकर्षक, पॉलिश्ड जैकेट। पृष्ठ-संख्या ४६४, मूल्य ७)।

श्री गुरुदत्त जी की अन्य पुस्तकों के पूर्ण विवरण तथा व्यापाराना दरों के लिए हमें लिखें।

भा र ती सा हि त्य स द न,

३०/६० कनॉट सरकस, नई दिल्ली—१

साहित्य-संसार के ग्यारह अन-मोल गौरवग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मूल्य सवा तीन रुपये।

२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये।

३. **हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लग भग १८८ इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी।

४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपए।

५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपए। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथों के दुरंगे मानचित्र भी।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपए।

७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपए। बढ़िया आर्ट पेपर। पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ संख्या पाँच सौ।

८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक—प० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ रुपए। गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ लगभग ४५० पृष्ठ।

९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपए।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेद, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपए। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपए। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक भी।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। पृष्ठ ६२५ मूल्य साढ़े तेरह रुपये, सजिल्द।

शीघ्र ही प्रकाशित होगा : **रबर (प्रामाणिक वैज्ञानिक ग्रंथ)**—ले० श्री फूलदेवसहाय वर्मा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…ल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के प्रधान

श्री रामचन्द्र टण्डन का वक्तव्य

'प्रकाशक संघ' को लेकर कुछेक हलकों से जाने-अनजाने में नितांत निर्मूल भ्रांति फैलाने का प्रयत्न हुआ है। 'संघ' के प्रधान श्री टण्डन जी के इस वक्तव्य से यह भ्रांति हटेगी।

…में हिन्दी प्रकाशन को उस स्तर पर उठाना है जिस …अन्य उन्नत देशों में प्रकाशन-व्यवसाय पहुँचा हुआ …यह स्पष्ट है कि हमें बहुत कुछ सीखना है, और इस …की सिद्धि के लिए एक आयोजित प्रयत्न करना है। …प्रकाशकों के सुसंगठन की नितांत आवश्यकता है।

…इस दृष्टि से गत मई मास में दिल्ली में हिन्दी प्रकाशकों …सम्मेलन हुआ था, वह सही दिशा में एक पहला कदम …आश्चर्य तो यह है कि यह कदम और पहले क्यों नहीं …गया। अपने देश में प्रकाशकों के सामने अनेक कठि-…रही हैं और वह समय के साथ बढ़ती गईं। सम्मेलन …योजकों ने अनुभव किया कि जब तक व्यवसाय के हित में …प्रकाशक शीघ्र संगठित नहीं होते, उन कठिनाइयों का …न हो सकेगा। आयोजकों का यह प्रयत्न रहा कि …में अधिक-से-अधिक प्रकाशक सम्मिलित हो सकें। …सीमाओं को देखते हुए उन्होंने हिन्दी के प्रायः सभी …प्रकाशकों को विशेष आमन्त्रण दिया। सम्मेलन में उन …के सहयोग का भी स्वागत हुआ जो समाचारपत्रों में …पढ़कर वहाँ उपस्थित हुए थे। सम्मेलन में भाग लेने …तथा उससे सहानुभूति रखने वाले प्रकाशकों की नामा-…प्रकाशित हो चुकी है, और निश्चय ही कहा जा सकता …दूर दूर से आये हुए बड़े-छोटे लगभग पचास प्रकाशक, …सम्मेलन में भाग ले रहे थे, हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय का …निधित्व करते थे।

…सम्मेलन की एक बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित …। उसके जितने निश्चय हुए वह सभी बहुमत से न होकर …सम्मति से हुए। यह बात नहीं कि सम्मेलन की बैठकों …गर्मी न रही हो और विरोधी मत न प्रकट किये गए हों। …में उसमें भाग लेने वालों को हार्दिक बधाई का पात्र समझता हूँ कि प्रत्येक अवसर पर उन्होंने व्यवहारिक बुद्धि और समझौते की भावना से अपने निर्णय दिये। उन्होंने एक अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की स्थापना की; उसके उद्देश्य स्थिर किये; उसके विधान की रूपरेखा निश्चित की और उन अनेक कठिनाइयों के सम्बन्ध में अपने मतों को स्पष्ट किया तथा बहुत से प्रस्ताव स्वीकार किये जिनके कार्यान्वित होने पर हमारे प्रकाशन-व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

हमारे सामने बड़े कार्य हैं। हमें प्रकाशन-व्यवसाय-सम्बन्धी आधुनिक जानकारी एवं तथ्यों का प्रसार करना है; लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों को अधिक अच्छा बनाना है; हमें हिन्दी के पाठकों के क्षेत्र का विस्तार करना है; जिस पर प्रकाशन-व्यवसाय की उन्नति इतना निर्भर करती है। आज कोई भी व्यवसाय ऐसा नहीं है जिसका सरकार की नीति से निकट का सम्पर्क न हो। अतएव प्रकाशन-व्यवसाय के सांस्कृतिक तथा ज्ञान-प्रसार-विषयक महत्त्व को देखते हुए रेल-डाक के दरों के निश्चय में सरकार अधिक उदारता की नीति बरते, इसका संयत ढंग से किन्तु पूरा-पूरा प्रयत्न करना है।

तत्काल हमें बड़े परिणामों की आशा न करनी चाहिए, लेकिन धैर्य के साथ संयमित रूप से हम अपना कार्य करते रहें तो हम निश्चय ही अपने ध्येयों की सिद्धि तक पहुँचेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि प्रकाशक अधिक से-अधिक संख्या में संघ में अपना योग दें और उसके सदस्य बनें। संघ की कार्यसमिति ने, जिसकी बैठक इस मास में बनारस में हुई थी, अपने प्रधान मन्त्री को यह निर्देश किया था कि वह हिन्दी प्रकाशकों को, जो संघ के उद्देश्यों को स्वीकार करते हों, संघ में सम्मिलित होने का सानुरोध आमन्त्रण दें। मुझे विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन : नई नई पुस्तकें

★ **महापुरुषों की प्रेम कथाएँ**—लेखक इलाचन्द्र जोशी। प्रेम ही तो जीवन की अमरता है। प्रेम को महापुरुषों के जीवन में क्या स्थान प्राप्त है, यह जानने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। बर्नार्ड शा, एनीबीसेन्ट, आम्बपाली, चण्डीदास, शरत्चन्द्र और अनेक महान् व्यक्तियों के जीवन की प्रेमकथाएँ, जो अब तक गुप्त रखी गई थीं। सजिल्द, मूल्य २।।)।

★ **दीवान ग़ालिब**—उर्दू के कालिदास महाकवि ग़ालिब का दीवान प्रथम बार हिन्दी में छपा है। कठिन शब्दों के माने भी दिये गए हैं। सजिल्द, मूल्य २।।)।

★ **उजाला**—लेखक बलवन्त सिंह। प्रसिद्ध उपन्यासकार बलवन्त सिंह का नया और रोमानी उपन्यास। इस पीढ़ी का असफल प्रेम दूसरी पीढ़ी में सफल हुआ। यही तो दिलचस्प कहानी है इस उपन्यास की। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।।)।

★ **पंजाब की कहानियाँ**—बलवन्त सिंह की पंजाबी जीवन पर लिखी गई सात कहानियाँ और तीन छोटे उपन्यास एक ही संग्रह में। कहानियों की रोचकता पढ़ने पर ही ज्ञात होगी। सजिल्द मूल्य ३)।

★ **ससुराल**—शौकत थानवी का नया और हास्य-रस का प्रसिद्ध उपन्यास। पक्की जिल्द, मूल्य १।।।)।

★ **शैतान**—कैप्टेन शफीकुर्रहमान की एक ऐसे इन्सान की कहानियाँ जो शैतान है, फिर भी पाठकों को प्यारा है। पक्की जिल्द और मूल्य १।।।)।

★ **हमारा गांधी वापस करो**—प्रसिद्ध कथाकार ओंकार शरद की वे कहानियाँ जो गाँधीजी के जीवन पर लिखी गई हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १)।

★ **नारी का रूप**—अठारहवीं शताब्दी के रंगीन पेरिस की रंगीन कहानी। सजिल्द मूल्य २।।)।

प्रकाशक :

लहर प्रकाशन

२, मिंटो रोड, इलाहाबाद

है कि उनका आमन्त्रण स्वीकार करके प्रकाशक बड़ी संख्या में संघ के सदस्य बनेंगे।

इस अवसर पर मैं दो एक भ्रांतियों का निराकरण कर देना उचित समझता हूँ। कुछ लोगों की ऐसी धारणा है कि संघ केवल बड़े प्रकाशकों के हितों की रक्षा के लिए संगठित हुआ है। यही नहीं कि प्रत्येक प्रकाशक के लिए संघ का द्वार खुला है, बल्कि उसमें सभी वर्ग के प्रकाशक इस समय भी सम्मिलित हैं। यह ठीक है कि अनेक बड़े प्रकाशक संघ के सदस्य हैं, लेकिन उनका हित छोटे प्रकाशकों के हित से भिन्न है, इसकी कल्पना कर सकने में मैं असमर्थ हूँ। प्रकाशकों का हित एक ऐसा सामूहिक हित है कि उसमें छोटे-बड़े के भेदभाव के लिए कोई गुँजाइश नहीं। यदि संघ, क्या छोटे क्या बड़े सभी प्रकाशकों के हित को एक न मानकर कोई कार्यवाही करता है तो उसके प्रयत्न हास्यास्पद होंगे। मैंने संघ में ऐसा कोई भेदभाव नहीं देखा है।

यह भी कहा गया है कि इस संघ में शिक्षालयों की पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशकों का प्रवेश नहीं है। यह बात निराधार है। न केवल संघ के अनेक सदस्य, बल्कि उसकी कार्य समिति के कई सदस्य ऐसे हैं जो पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशक हैं। वस्तुतः पाठ्यक्रम की पुस्तकों के प्रकाशकों के बीच कोई विभाजक रेखा खींचना असंगत होगा। इस सम्बन्ध में संघ के उद्देश्य स्पष्ट हैं और उनमें कहीं प्रकाशकों का इस प्रकार विभाजन न मिलेगा।

हमारे समक्ष इस समय कार्य की अनेक दिशाएँ हैं मार्ग की कठिनाइयों को दूर करने की भी और ऐसे रचनात्मक कार्य की भी जिससे हमारे प्रकाशन देश तथा साहित्य के गौरव की वस्तु बनें। सफलता तभी सम्भव है जब कि सभी प्रकाशक एकनिष्ठ और सचेष्ट हों और मिल जुलकर व्यवसाय की मर्यादा को ऊँचा उठाने के लिए सक्रिय हों। मुझे आशा है कि संघ को प्रकाशक-बन्धुओं का अधिकाधिक सहयोग प्राप्त होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...कों से 'संघ में' सम्मिलित होने का

सानुरोध आमन्त्रण

श्री वाचस्पति पाठक

'संघ' की कार्य-समिति के एक निश्चय के अनुसार प्रधान-मंत्री ने भारत के हिन्दी-प्रकाशकों के नाम यह वक्तव्य निकाला है।

प्रकाशन-व्यवसाय के सामने आज अनेक कठिन ...एँ हैं। उसे लेखकों और पुस्तक-विक्रेताओं के संग ... और एक ढंग का सहयोग स्थापित करना है; ज्ञान- ...के मार्ग में बाधक डाक और रेल की ऊँची दरों के ...ने के पक्ष में सबल प्रयत्न करना है; विभिन्न राज्यों द्वारा ...ते गए बिक्री-कर के अनौचित्य पर जनता का ध्यान ...ना है तथा नित्य प्रति अपने हितों की रक्षा के प्रति ...क रहना है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रभाषा हिन्दी के ...त्य को सर्वाङ्गपूर्ण और समुन्नत बनाने की दिशा में उसका विशेष दायित्व भी है।

इस बात का निरन्तर अनुभव किया जा रहा था कि उप... समस्याओं के हल तथा अपने विशेष दायित्व के निर्वाह ...र प्रकाशकों की ओर से एक संगठित प्रयत्न की आव...ता है। अतएव गत मई मास में, दिल्ली में, प्रकाशन-...य की स्थिति पर विचार करने के लिए एक प्रारम्भिक ...न हुआ था, जिसमें हिन्दी के लगभग पचास प्रमुख ...कों ने भाग लिया था। सम्मेलन ने अखिल भारतीय ...प्रकाशक संघ की स्थापना की और सर्वसम्मति से एक ...विधान का निर्माण किया जिसके आधार पर काम करने से ...समय में ही प्रकाशन-संघ एक सुदृढ़ और क्षमता-सम्पन्न ...का रूप ले सकता है और वे समस्याएँ सुलझ सकती हैं ...कि आज प्रकाशकों को सामना करना पड़ रहा है। ...यह कार्य प्रकाशक-बन्धुओं के पूर्ण सहयोग से ही सम्पन्न ...कता है।

...के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

१. हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशकों के हितों का संरक्षण ...सामूहिक प्रतिनिधित्व करना।

२. प्रकाशन-व्यवसाय को समृद्धिशाली और गौरवान्वित ...ना।

३. प्रकाशन-व्यवसाय सम्बन्धी आधुनिक जानकारी एवं तथ्यों का प्रसार करना।

४. हिन्दी-साहित्य के स्तर को उत्तरोत्तर ऊँचा करना तथा उसके अभावों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करना।

५. लेखक, प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों में सामंजस्य स्थापित करना।

६. लोगों में हिन्दी-पुस्तकों के पढ़ने की रुचि पैदा करना और पाठकों के क्षेत्र का विस्तार करना।

हिन्दी में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले कथाकार
श्री प्यारेलाल 'आवारा'
के नये उत्कृष्ट उपन्यासों का
बहुत ही सस्ते मूल्य में प्रकाशन
हर उपन्यास की पृष्ठ-संख्या १५० से १७५ तक
तिरंगा आवरण : मज़बूत जिल्द : बढ़िया कागज़
और मूल्य केवल बीस आने
इस योजना के अन्तर्गत 'आवारा' जी का नया सरस सामाजिक उपन्यास 'रेत के महल' (एंटिक कागज़ : बढ़िया छपाई : पृष्ठ-संख्या १६०) अभी प्रकाशित हुआ है।
'आवारा' जी के उपन्यास खूब बिकते हैं और इतना सस्ता होने के कारण तो अब और भी बिकेंगे।
पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को
उचित कमीशन।
'रेत के महल' के अलावा 'आवारा' के सम्पूर्ण कथा-साहित्य के लिए हमें आज ही लिखिए।
रूपसी प्रेस एवं प्रकाशन, इलाहाबाद—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पत्र निकालना, पुस्तकालय स्थापित करना, पुस्तक-प्रदर्शनियाँ करना, तथा अन्य उचित सम्भावित प्रयत्न करना।

अभी ११ जुलाई को बनारस में संघ की कार्यसमिति की पहली बैठक हुई थी, और समिति ने मुझे आदेश दिया है कि उपर्युक्त उद्देश्यों का समर्थन करने वाले प्रत्येक हिन्दी-प्रकाशक को मैं साग्रह आमन्त्रण दूँ कि संघ का सदस्य बनकर वह उसे बल दें और प्रकाशन-व्यवस्था को पुष्ट करने तथा उसके मार्ग की बाधाओं को दूर करने के कार्य में योग दें।

जो प्रकाशन-संस्थाएँ आज तक संघ की सदस्यता स्वीकार कर चुकी हैं, उनके नाम नीचे दिये जा रहे हैं :

अजन्ता प्रेस लिमिटेड, पटना।
आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली।
ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली।
किताब महल, इलाहाबाद।
ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना।
नन्दकिशोर ब्रदर्स, बनारस।
नवयुग साहित्य-सदन, इन्दौर।
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
पद्मजा प्रकाशन, कानपुर।
पीपुल्ज पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
पुस्तक भण्डार, पटना।
भारती भण्डार, इलाहाबाद।
मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।
भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस।
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
रामनारायणलाल, इलाहाबाद।
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा।
सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद।
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी।
हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।
हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
हिन्दी भवन, जालन्धर।
ज्ञानपीठ लिमिटेड, पटना।
ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस।

मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी-प्रकाशक अधिकाधिक संख्या में संघ के सदस्य बनेंगे।

३१-७-५४ — वाचस्पति पाठक
प्रधान मन्त्री,
कार्यालय : — अखिल भारतीय हिन्दी
१ फैज बाजार, दिल्ली। — प्रकाशक संघ—

आकर्षक छपाई के लिए अपनी पुस्तक

नवीन प्रेस

६, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

को भेज दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अ)खिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ' की

कार्य-समिति के निश्चय

'अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ' की कार्य-समिति की पहली बैठक ११ जुलाई १९५४ को बनारस में हुई। कार्य-समिति के महत्त्वपूर्ण निश्चयों को सूचनार्थ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

कार्यालय के लिए स्वतन्त्र स्थान

* कार्य-समिति दिल्ली में प्रकाशक-संघ के कार्यालय के ...स्थान की आवश्यकता का अनुभव करती है लेकिन ...य किया जाता है कि धन की सुविधा होने तक स्थानीय ...ही इसकी यथापूर्व व्यवस्था करते रहें।

बैंक

* निश्चय किया जाता है कि पंजाब नेशनल बैंक लि० ...की दरियागंज शाखा में अखिल भारतीय हिन्दी प्रका-...संघ का हिसाब रखा जाय, तथा विधान की १४वीं ...के अनुसार श्री वाचस्पति पाठक (प्रधान मन्त्री), ...ओम्प्रकाश (कार्यालय स्थित संयुक्त मन्त्री), तथा श्री ...नाथ (कोषाध्यक्ष) के हस्ताक्षर इस बैंक को दिये जायँ। ...से दो के हस्ताक्षरों से, जिनमें कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर ...वार्य हैं, धन निकाला जा सकेगा।

प्रवेश उपसमिति

* निश्चय किया जाता है कि विधान ४ की धारा (अ) ...धारा के अनुसार कार्य-समिति के निम्नलिखित पाँच सदस्यों ...की प्रवेश उपसमिति बनाई जाती है:—

...श्री श्रीनिवास अग्रवाल (किताब महल, इलाहाबाद) ...(...नीक) श्री देवनारायण द्विवेदी (ज्ञानमण्डल लि०, ...), श्री मार्तण्ड उपाध्याय (सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली) श्री जयनाथ मिश्र (श्री अजन्ता प्रेस लि० ...), श्री आनन्द मिश्र (पद्मजा प्रकाशन, कानपुर)।

पुरस्कृत पुस्तकों की सरकार द्वारा खरीद

* निश्चय किया जाता है कि लेखकों को पुरस्कार देने ...सरकारी नीति पर संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन ने अपने ...प्रस्ताव में हर्ष प्रकट किया था, उस प्रस्ताव की प्रतिलिपियाँ प्रधान मन्त्री कुछ व्याख्या के साथ निम्नलिखित सरकारों को भेज दें: केन्द्रीय, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यभारत, विन्ध्य प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश।

बढ़ी हुई डाक दरों का विरोध

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में सरकार की डाक-दर की नीति पर जिस प्रस्ताव में चिन्ता और क्षोभ प्रकट किया गया है, प्रधानमन्त्री उसकी प्रतिलिपियाँ सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दें तथा संघ की ओर से एक शिष्ट-मण्डल दिल्ली में सुविधानुसार शीघ्र ही सम्बन्धित अधिकारियों से मिले। शिष्ट-मण्डल वहाँ स्थानीय लेखकों तथा नेताओं से भी सहयोग प्राप्त करे।

पुस्तकों के लिए रेलगाड़ी का भाड़ा कम कीजिए

* निश्चय किया जाता है कि रेलगाड़ी के भाड़ों की वर्तमान दरों में कमी करने के विषय में संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में जो प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था, उसे सम्बन्धित अधिकारियों को भेज दिया जाय तथा निश्चय पाँच के अनुसार जो शिष्ट-मण्डल डाक-विभाग आदि के अधिकारियों से मिलेगा, वही रेल-विभाग के मन्त्री से भी मिले।

पुस्तकों के विज्ञापन की दरें कम हों

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में पत्र-पत्रिकाओं के व्यवस्थापकों से जिस प्रस्ताव में पुस्तकों के विज्ञापन की दरों में कमी करने का अनुरोध किया गया है उसकी प्रतिलिपि सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं को प्रधान मन्त्री भेज दें तथा इस विषय में इण्डियन लैंग्वेजिस न्यूज़ पेपर्ज़ एसोसिएशन, बम्बई—१ तथा इण्डियन एण्ड ईस्टर्न न्यूज़ पेपर्ज़ सोसाइटी लि०, नई दिल्ली, से सम्पर्क स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलवे बुक-स्टालों पर सुरुचिपूर्ण प्रकाशन रखे जायँ

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में रेलवे स्टेशनों के बुक-स्टालों पर कुरुचिपूर्ण साहित्य की बिक्री के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव हुआ था, प्रधान मन्त्री उसकी प्रतिलिपियाँ इन रेलवे बुक-स्टालों के मालिकों तथा रेलवे मन्त्री के पास भेज दें। जो शिष्ट-मण्डल निश्चय छः के सम्बन्ध में रेलवे मन्त्री से मिले वही इस प्रश्न को भी उनके सामने उठाए।

पुस्तकों से बिक्री-कर हटे

* संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में कुछ प्रादेशिक सरकारों द्वारा पुस्तकों पर बिक्री-कर लगाने की नीति के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव स्वीकृत किया गया था, निश्चय किया जाता है कि उसकी प्रतिलिपियाँ केन्द्रीय, बंगाल, बम्बई, बिहार तथा मध्य-प्रदेश की सरकारों के वित्त तथा शिक्षा विभागों को भेजी जायँ।

विदेशों से अनाचार-युक्त पुस्तकों का आयात बन्द हो

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में जिस प्रस्ताव में सरकार से यह अनुरोध किया गया था कि घटिया किस्म की अनाचार-युक्त विदेशों से आयात होने वाली पुस्तकों, पत्र तथा पत्रिकाओं पर प्रतिबन्ध लगाए, उसकी प्रतिलिपियाँ भारत सरकार के गृह, शिक्षा तथा विदेश विभागों को प्रधानमन्त्री भेजें। इस सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग भी प्राप्त किया जाय तथा लोक-सभा के सदस्यों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाय।

कमीशन-सम्बन्धी प्रस्ताव पर विचार

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में पुस्तक-विक्रेताओं, पुस्तकालयों तथा फुटकर ग्राहकों को दिये जाने वाले कमीशन के विषय में जो सुझाव का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था, उसे अपने पत्र के साथ प्रधान मन्त्री प्रत्येक प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता को भेज दें। तीन मास की अवधि के अन्दर प्रधान मन्त्री ऐसे पुस्तक-विक्रेताओं की एक सूची तैयार करें संघ के इन सुझावों को स्वीकार करते हों। कार्य-समिति की अगली बैठक में प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं की प्रतिक्रिया को प्रधान-मन्त्री विचारार्थ प्रस्तुत करें।

हिन्दी पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन

* निश्चय किया जाता है कि आगामी शीत ऋतु में दिल्ली में हिन्दी प्रकाशनों की एक बड़ी प्रदर्शनी आयोजित हो। इस प्रदर्शनी की आयोजन-समिति में अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के सभी स्थानीय सदस्य रहें। यह प्रदर्शनी आयोजन समिति अपने अधिकारियों का चुनाव स्वयं कर ले और भारत सरकार तथा दिल्ली सरकार के शिक्षा-विभाग से सम्पर्क स्थापित करके उनका सहयोग पाने का प्रयास करे। इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए भारत के सभी प्रकाशकों को निमन्त्रित किया जाय।

सामूहिक प्रकाशन की योजना

* निश्चय किया जाता है कि अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की ओर से सम्मेलन एक सामूहिक प्रकाशन की योजना बनाए। इस प्रकाशन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों पर विचार तथा निर्णय निम्नलिखित सदस्यों की समिति करेगी। श्री रामचन्द्र टण्डन, श्री जयनाथ मिश्र, श्री वाचस्पति पाठक, श्री श्रीनिवास अग्रवाल, श्री ओंप्रकाश (संयोजक)।

बिहार-सरकार ग्रन्थ सूची के लिए एक प्रति ही स्वीकार करे

* निश्चय किया जाता है कि प्रधान मन्त्री बिहार सरकार के शिक्षा विभाग से यह प्रार्थना करें कि अपनी ग्रन्थ सूची के लिए प्रकाशकों से उनके प्रकाशनों की केवल एक-एक प्रति की ही माँग की जाय। क्योंकि इस प्रश्न पर बिहार सरकार के शिक्षा विभाग से बातचीत करने के लिए अधिक समय शेष नहीं है, बिहार सरकार का जो भी उत्तर प्राप्त हो, उसको संघ के सब सदस्यों में प्रचारित कर दिया जाय।

*निश्चय किया जाता है कि विश्वेश्वरानन्द संस्थान प्रकाशन (साधु आश्रम, होशियारपुर) से संघ की सम्मानित सदस्यता के विषय में जो प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुआ है, प्रधान मन्त्री उसका उत्तर देते हुए यह लिख दें कि संघ की सम्मानित सदस्यता के लिए कोई आवेदन-पत्र अपेक्षित नहीं है और संघ के वार्षिक अधिवेशन में ही सम्मानित सदस्यों का चुनाव हो सकेगा।

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन में जिन व्यक्तियों ने व्यक्तिगत रूप से भाग लेकर अथवा पत्र द्वारा सहमति जताकर संघ के संस्थापक सदस्य होना स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञदत्त-साहित्य पर कुछ सम्मतियाँ

[हजारीप्रसाद द्विवेदी—"यज्ञदत्त शर्मा में उप-... की प्रतिमा है, कथानक के सुकुमार स्थलों को पहि-... शक्ति है और पात्रों में आदर्श की प्रतिष्ठा करने ...ता ।"

...ibune—"Shri Yagya Dutta Sharma, ...well-known Hindi novelist, has pro-...ive outlook on life. His novels are of educational value."

...eader—"Shri Yagya Dutta Sharma has ...ed a new chapter in the history of ... novels."

...-युग—"श्री यज्ञदत्त शर्मा ने हिन्दी उपन्यास-... को नई धारा प्रदान की है। चरित्र-चित्रण में ...असाधारण सफलता मिली है।"

...भारत टाइम्स—"शर्मा जी ने गाँव की जनता ...जीवन की समस्याओं का सही चित्रण करके प्रेमचन्द ...परा को आगे बढ़ाया है।"

...हिन्दुस्तान—"श्री यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यासों की भाषा ...है और कथानक सधा हुआ है।"

...साहित्य-संदेश—"यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास बौद्धिक ...र भी मनोरंजक एवं सरल हैं। प्रगतिशील तत्वों का ...रहने पर भी उनमें प्रोपेगेन्डा की बू नहीं।"

...क्षिण भारत—"प्रेमचन्द के बाद शर्मा जी ने ही ...उन ग्रामीण समस्याओं पर प्रकाश डाला है जिनकी ...री आवश्यकता है।"

ज्ञानोदय—"यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास स्वस्थ मस्तिष्क की उपज हैं। उनमें परिस्थितियों व पात्रों की नैतिक रेखाएँ इतनी स्पष्ट हैं कि न्याय, अधिकार, स्नेह, सामाजिकता और प्रगति में मनुष्य का दृढ़ संकल्प कुछ और गहरा हो जाता है।"

यज्ञदत्त शर्मा के उपन्यास

महल और मकान, बदलती राहें, मधु, इन्साफ़, झुनिया की शादी, इन्सान, अन्तिम चरण, निर्माण पथ।

यज्ञदत्त शर्मा का अन्य साहित्य

प्रबन्ध-सागर, आदर्श पत्र-लेखन, आदर्श भाषण कला, कबीर-साहित्य और सिद्धान्त, सूर-साहित्य और सिद्धान्त, आलोचना के सिद्धान्त, हिन्दी के उपन्यासकार।

साहित्य प्रकाशन के अन्य उपन्यास

काले बादल—नरोत्तम नागर (अनुवाद)
धरती के लाल—वीरेन्द्र त्रिपाठी (अनुवाद)
हवेली की ईंटें—श्रीचन्द्र अग्निहोत्री (मौलिक)
मुक्ति-मार्ग—नूर नबी अब्बासी (अनुवाद)
कर्म-साधना—रामसागर मिश्र (मौलिक)

श्री यज्ञदत्त शर्मा के तथा हमारे अन्य गौरवपूर्ण प्रकाशनों के विक्रय तथा एजेन्सी के लिए पुस्तक-विक्रेता पत्र व्यवहार करें।

साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था, उनसे ३१ जुलाई १९५४ तक प्रवेश तथा वार्षिक शुल्क प्राप्त हो जाना आवश्यक है।

सरकार द्वारा बिना मूल्य पुस्तकें लिये जाने का विरोध

* निश्चय किया जाता है कि भारत सरकार ने चार सरकारी (सार्वजनिक) पुस्तकालयों के लिए प्रकाशकों से बिना मूल्य उनके प्रकाशनों की चार प्रतियाँ लेने के विषय में जो कानून बनाया है, सम्बन्धित अधिकारियों (प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू, गृह मन्त्री, शिक्षा मन्त्री तथा कानून मन्त्री) को संघ के प्रधान मन्त्री उसके विरोध में पत्र लिखें। इस सम्बन्ध में ओरिएण्ट लाँगमैन्ज लि० के कलकत्ता स्थित मैनेजिंग डायरेक्टर श्री जे० एम्० एडम्ज़ का जो पत्र कानूनी सलाह-मशवरे के सम्बन्ध में संघ के संयुक्त मन्त्री श्री ओंप्रकाश को प्राप्त हुआ है, उसे कार्य समिति की कार्यवाही में उल्लिखित कर लिया जाय।

कार्यवाही तथा विधान प्रकाशित हो

* निश्चय किया जाता है कि संघ के प्रारम्भिक सम्मेलन की कार्यवाही तथा उसमें सर्वसम्मति से स्वीकृत विधान संघ की ओर से प्रकाशित किया जाय।

लेखकों तथा प्रकाशकों के बीच आदर्श अनुब[न्ध] तैयार हो!

* निश्चय किया जाता है कि लेखकों तथा प्रकाशको[ं के] बीच के आदर्श अनुबन्ध (कण्ट्रैक्ट) को तैयार करने के [लिए] निम्नलिखित सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय— रामचन्द्र टण्डन (संयोजक), श्री श्रीपत राय, श्री श्रीनि[वास] अग्रवाल, श्री वाचस्पति पाठक तथा श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी।

समीक्षा के लिए एक प्रति ही ली जाय

* निश्चय किया जाता है कि सभी प्रमुख पत्र-पत्रिका[ओं] से अनुरोध किया जाय कि वे समीक्षा के लिए प्रकाशक[ों से] उनके प्रकाशनों की केवल एक-एक प्रति ही लेना स्वीका[र करें] तथा प्रति लेने के बाद यथासम्भव प्राप्त पुस्तक की सम[ीक्षा] भी शीघ्र ही छापी जाय अन्यथा कम-से-कम प्राप्ति-स्वी[कार] अवश्य प्रकाशित किया जाय।

संघ का सदस्य बनने के लिए प्रकाशकों [को] सानुरोध निमन्त्रण

* निश्चय किया जाता है कि कार्य-समिति की ओर [से] प्रधान मन्त्री भारत के उन सभी प्रकाशकों को, जो संघ [के] उद्देश्यों से सहानुभूति रखते हों, उन्हें स्वीकार करते हों [तथा] संघ के अनुशासन में रहने का आश्वासन दें, सानुरोध निम[न्त्रण] दें कि वे संघ के सदस्य बनें।

महादेवी-काव्य-परिशीलन

•

लेखक—श्री भागीरथी दीक्षित

•

श्रीमती महादेवी वर्मा के काव्य का निष्पक्ष परिशीलन एवं 'आधुनिक कवि, भाग १' के प्रत्येक पद की व्याख्या। साहित्य-रत्न तथा बी० ए० के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक सरल सहायिका है। पृष्ठ २००, सुन्दर आवरण। मूल्य २॥)

•

प्रकाशक—
श्री भगवतीप्रसाद सिंहानिया
१७ कैवेल स्ट्रीट, बम्बई—२

आगामी वार्षिक अंक

सत्साहित्य सूची-विशेषांक

प्रकाशकों से अनुरोध है कि कवर के दू[सरे] पृष्ठ के विज्ञापन को ध्यान से पढ़ें तथा तदनु[सार] अपने प्रकाशनों की सूचियाँ भेजें।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से प्रतिवर्ष साहित्य के विभिन्न ...की पुस्तकों पर पुरस्कार दिये जाते हैं। इस वर्ष नाटक ...ज्ञान विषय की पुस्तकों पर एक-एक हज़ार के दो पुर-...दिये जायँगे। अतएव समस्त हिन्दी-संसार के विद्वान् ...कारों और प्रकाशकों से नम्र निवेदन है कि वे ...लिखे और प्रकाशित किये हुए नाटकों और वैज्ञानिक ...की सात-सात प्रतियाँ ३० सितम्बर, १९५४ ई० तक ...कार्यालय में भेजने की कृपा करें। पुरस्कार केवल ...और प्रामाणिक ग्रन्थों पर ही दिये जायँगे। अनुवादित ...भेजने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक ग्रन्थ की सात ...से कम नहीं ली जायँगी। पुरस्कार-वितरण आगामी ...में परिषद् के वार्षिकोत्सव के अवसर पर होंगे। पुस्तकें सन् १९५० के पहले की नहीं होनी चाहिएँ। ...व्यवहार का पता—मन्त्री, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, ...-भवन, पटना-३।

◇ ◇ ◇

...भाषा पुस्तकालय (काशी नागरी प्रचारिणी सभा) के ...क लिखते हैं कि—

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का आर्यभाषा पुस्तकालय ...ग ६० वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। हिन्दी के विकास ...इस पुस्तकालय का बहुत बड़ा योग रहा है। देश के कोने-...से यहाँ प्रतिवर्ष छात्र आते रहते हैं। हिन्दी के प्राचीन ...तथा भारतेन्दु और द्विवेदीकालीन पत्र-पत्रिकाओं का ...अच्छा संग्रह इस पुस्तकालय में है, उतना अन्यत्र ...है। हिन्दी के प्रायः सभी विद्वान् और डाक्टर-गण ...इस पुस्तकालय के ऋणी हैं। पुरानी पत्र-पत्रिकाओं ...का अच्छा संग्रह होते हुए भी बहुत सी फ़ाइलें अपूर्ण ...संकलन नहीं हैं। अतः जिन सज्जनों के पास ऐसी पत्र-...ाएँ हों, वे आर्यभाषा पुस्तकालय को प्रदान करने की कृपा करें। पुस्तकालय में उन पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग तथा रक्षा भली भाँति हो सकेगी। इन पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाश में आने पर हिन्दी के बहुत से अज्ञात तथ्यों का उद्घाटन हो सकेगा। जो सज्जन ऐसी पत्र-पत्रिकाओं के प्राप्ति-स्थानों की भी सूचना देंगे, उनका भी पुस्तकालय बड़ा कृतज्ञ रहेगा।

पत्र-पत्रिकाएँ संयोजक, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस के पते पर भेजी जा सकती हैं।

गोविन्दप्रसाद केजरीवाल,
संयोजक
आर्यभाषा पुस्तकालय,
नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी।

◇ ◇ ◇

राजस्थान हिन्दी साहित्यिक-संघ (पिलानी, राजस्थान) के महामन्त्री श्री परमेश्वर द्विरेफ को अपनी समस्त पुस्तकों के लिए योग्य विक्रेताओं की आवश्यकता है।

◇ ◇ ◇

बिहार राज्य पुस्तकालय संघ के तत्त्वावधान में पुस्तकालय नाम का त्रैमासिक हिन्दी-पत्र प्रकाशित किया जा रहा है, जिसका प्रथम अंक १५ अगस्त १९५४ तक निकल जायगा। रॉयल अठपेजी साइज के ९० से १०० तक पृष्ठ रहेंगे। वार्षिक मूल्य ४) तथा एक अंक का १) रहेगा। प्रधान सम्पादक प्रो० जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, एम० एल० सी० तथा सम्पादक सर्वश्री परमानन्द दोषी एम० ए० (कार्यकारी), अनुज शास्त्री, जगन्नाथप्रसाद साहु तथा राय मथुराप्रसाद हैं। पता : पुस्तकालय, बिहार राज्य पुस्तकालय संघ, सिन्हा लाइब्रेरी रोड, पटना १।

◇ ◇ ◇

प्रकाशन समाचार

वी० पी० से भेजने का नियम नहीं है। इसलिए अपना वार्षिक चन्दा २॥) का मनिआर्डर से ही भेजें।

—प्रबन्धक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकों और प्रकाशकों के बीच

आदर्श अनुबन्ध (कंट्रैक्ट)

संघ की कार्यसमिति द्वारा मनोनीत श्री रामचन्द्र टंडन (संयोजक), श्री श्रीपतराय, श्री श्रीनिवास अग्रवाल, श्री वाचस्पति पाठक तथा श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी की उप-समिति ने इस 'अनुबन्ध' को सम्मत्यर्थ लेखकों तथा प्रकाशकों के सामने प्रस्तुत किया है।

यह अनुबन्ध आज तिथि —————— मास —————— सन् —————— को —————— —————— जो आगे इस पत्र में 'ग्रन्थकार' सम्बोधित होंगे और जिस शब्द के अन्तर्गत उनके उत्तराधिकारी, दायाद, प्रबंधक और प्रतिदाता भी समझे जायँगे, प्रथम पक्ष, और —————— —————— जो आगे इस पत्र में 'प्रकाशक' सम्बोधित होगा (होंगे) और जिस शब्द के अन्तर्गत उसके (उनके) उत्तराधिकारी, दायाद, प्रबन्धक और प्रतिदाता भी समझे जायँगे, द्वितीय पक्ष, के मध्य हुआ।

उभय पक्ष एक दूसरे के प्रति निम्न प्रकार से प्रतिज्ञा करते और वचनबद्ध होते हैं :

१. ग्रन्थकार ने प्रकाशक को —————— —————— —————— नामक ग्रन्थ, जो आगे 'ग्रन्थ' शब्द से उल्लिखित होगा, लिखकर उसकी पूर्ण तथा मुद्रण के लिए तैयार पांडुलिपि सौंप दी है, या —————— —————— शीर्षक (विषय का) एक ग्रन्थ, जो आगे 'ग्रन्थ' शब्द से उल्लिखित होगा लिखने तथा उसकी पूर्ण तथा मुद्रण के लिए तैयार पांडुलिपि —————— —————— तक देने की प्रतिज्ञा की है।

२. ग्रन्थ में लगभग —————— शब्द या —————— आकार के पृष्ठ हैं (होंगे)।

> अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ की कार्यसमिति ने ११ जुलाई ’५४ की बैठक में एक उप-समिति निर्वाचित करके उसे आदेश दिया कि लेखकों और प्रकाशकों के बीच एक आदर्श अनुबन्ध का मसविदा तैयार करें। इस उपसमिति द्वारा प्रस्तुत किये हुए इस अनुबन्ध का यह प्रारूप यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है ताकि लेखक तथा प्रकाशक इस पर अपनी सम्मतियाँ व्यक्त कर सकें। ये सम्मतियाँ यथाशीघ्र श्री रामचन्द्र टण्डन (हिन्दुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद) को भेज दी जानी चाहिएँ। इसके बाद यह उप-समिति इस अनुबन्ध को अन्तिम रूप देने का प्रयत्न करेगी।

३. ग्रन्थकार के प्रकाशक को निश्चित अवधि के भीतर ग्रन्थ की पाण्डुलिपि न दे सकने की स्थिति में प्रकाशक को अधिकार होगा कि वह ग्रन्थ का प्रकाशन अस्वीकार कर दे किन्तु ग्रन्थकार को यह स्वतन्त्रता न होगी कि इस अनुबन्ध की शर्तों पर ग्रन्थ के प्रकाशन की अस्वीकृति प्राप्त किये बिना ग्रन्थ को अन्यत्र प्रकाशित करा सके।

४. ग्रन्थ की सम्पूर्ण पाण्डुलिपि प्राप्त होने, या यदि पांडुलिपि खंडशः या अपूर्ण मिली है तो अन्तिम अंश के प्राप्त होने, से बारह मास के भीतर, जब तक युद्ध, हड़ताल, राजनीतिक या साम्प्रदायिक उपद्रव अथवा प्रकाशक के वश के बाहर की कोई बाधा न उपस्थित हो, प्रकाशक ग्रन्थ का प्रकाशन कर देगा। यदि प्रकाशक आवश्यक समझे तो ग्रन्थकार ग्रन्थ के प्रूफ देखेंगे, किन्तु प्रूफ देखने में ग्रन्थकार द्वारा लगाया हुआ समय उपर्युक्त बारह मास की अवधि से बाहर समझा जायगा।

५. आगे लिखे देन या पलटे के बदले में ग्रन्थ या उसके किसी अंश के पुस्तक रूप में प्रकाशन, पुनः प्रकाशन या पुनरावृत्ति का पूर्ण और एकाकी अधिकार व स्वत्व संसार-भर में केवल प्रकाशक ही में स्थित रहेगा।

६. ग्रन्थ के प्रकाशन और विज्ञापन का समय व प्रकार तथा समाचारपत्रों तथा अन्य लोगों को बिना मूल्य ग्रन्थ भेंट तथा उसकी संख्या आदि सम्बन्धी कुल ब्यौरा प्रकाशक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर द्वारा प्रकाशित

सम्पूर्ण शरत्-साहित्य

भारत के सर्वश्रेष्ठ कथा-शिल्पी स्व० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के सम्पूर्ण साहित्य का अतिशय प्रामाणिक और विशुद्ध अनुवाद सुलभ प्रकाशित करने की हमारी योजना अब सम्पूर्ण हो रही है। २४ भाग निकल चुकने के बाद अनेक कारणों से इसका काम रुका रहा। ...र्षों में इसके नीचे लिखे सात भाग और निकल चुके हैं और शेष भाग यथासम्भव शीघ्र ही प्रकाशित हो जायेंगे—

...रत् पत्रावली—इस भाग में शरत्-बाबू ने अपने साहित्यिक मित्रों और लेखकों को जो पत्र लिखे थे, उनका सग्रह ..., जिनसे पता लगता है कि वे कितने महान् थे और साहित्य के कितने मर्मज्ञ थे। प्रत्येक लेखक के पढ़ने योग्य।

...जागरण, आगामी काल, आने की आशा में और रसचक्र—ये चार अधूरे उपन्यास और अरक्षणीया सम्पूर्ण उपन्यास। जागरण में जमींदारी उन्मूलन के प्रगतिशील विचार, एक भविष्यद्रष्टा के तौर पर पढ़ने को मिलते हैं।

...-२६—चरित्रहीन—सम्पूर्ण बृहत् उपन्यास। पं० रूपनारायण पाण्डेय कृत विशुद्ध और प्रामाणिक अनुवाद।

...विराजबहू और बचपन की कहानियाँ—विराजबहू में एक सती सुन्दरी का अत्यन्त करुण चरित्र-चित्रण है और कहानियाँ बड़ी ही मनोरंजक हैं।

...रत-निबन्धावली—एक से एक बढ़कर साहित्यिक और राजनीतिक २३ निबन्धों और व्याख्यानों का संग्रह।

...—देनापावना और नया विधान—(प्रेस में)

प्रत्येक भाग का मूल्य डेढ़ रुपया है और प्रत्येक भाग में लगभग में १६० पृष्ठ रहते हैं।

द्विजेन्द्र नाटकावली

भारत के श्रेष्ठ नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय के शुद्ध और प्रामाणिक अनुवाद :

ऐतिहासिक				पौराणिक		सामाजिक	
...चन्द्रगुप्त	१।)	शाहजहाँ	१॥)	भीष्म	१।।।)	भारत-रमणी	१॥)
...दुर्गादास	१॥)	नूरजहाँ	१॥)	सीता	१।)	उस पार	१।।।)
...मेवाड़ पतन	१=)	राणाप्रताप	२।)	अहल्या	१।)	सूम के घर में धूम	।=)

सर जदुनाथ सरकार

मध्यकालीन इतिहास के सर्वश्रेष्ठ और ज्येष्ठ विद्वान् के दो प्रामाणिक इतिहास :

...औरंगजेब ७॥) शिवाजी २॥)

डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी-साहित्य के माने हुए मर्मज्ञ विद्वान् के चार उच्चकोटि के ग्रन्थ :

...हिन्दी साहित्य की भूमिका ३॥) कबीर ४)

...बाणभट्ट की आत्मकथा ४॥) प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद ३)

के० एम० मुन्शी

उत्तर प्रदेश के गवर्नर और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक के तीन श्रेष्ठ उपन्यास :

...का प्रभुत्व ३) गुजरात के नाथ ४॥) राजाधिराज ४॥)

हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों का सूचीपत्र मँगाइए :

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाकी विवेक पर निर्भर रहेगा।

७. ग्रन्थ का मूल्य प्रकाशक ही नियत करेगा और उसको अधिकार होगा कि वह अपने विवेक से प्रकाशित मूल्य में परिवर्तन कर दे या ग्रन्थ का कम मूल्य पर अथवा चार वर्ष के अनन्तर शेष माल के रूप में उत्तम-से उत्तम मूल्य पर जो उस समय प्राप्त हो सके, बेच दे। प्रकाशक ग्रन्थकार को शेष माल के मोल लेने का अवसर देगा।

८. आगे लिखे देन या पलटे के अतिरिक्त और किसी देन या पलटे के लिये बिना ही ग्रन्थ के दोहराने, संशोधन आदि में ग्रन्थकार प्रकाशक को हर प्रकार की सहायता देगा। प्रथम के पश्चात् जितने संस्करण ग्रन्थ के होंगे, उनको ग्रन्थकार उस समय तक के विषय-ज्ञान से परिपूर्ण करेगा। प्रकाशक की इच्छानुसार ग्रन्थकार ग्रन्थ की आवश्यक सूची व अनुक्रमणिका भी प्रस्तुत करेगा।

९. ग्रन्थ की पाण्डुलिपि हवाले करने के साथ ही ग्रन्थ को चित्रित करने के चित्र, फ़ोटोग्राफ़, नक्शे या अन्य वस्तु आदि बिना मूल्य, और मुद्रणाधिकार, कॉपी राइट से मुक्त, ग्रन्थकार जुटाकर प्रकाशक को देगा। प्रकाशक अपने व्यय से उनसे छापने वालों और जिल्द बाँधने वालों के लिए ब्लाक, प्लेट या स्टिरियो टाइप आदि बनवा लेगा। काम हो जाने पर उन चित्र, फोटो आदि को, माँगने पर, प्रकाशक ग्रन्थकार को लौटा देवेगा। किन्तु घोर असावधानी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से हुई किसी क्षति या उनके खोये जाने या नष्ट या भ्रष्ट हो जाने के कारण प्रकाशक उत्तरदायी न होगा।

१०. प्रकाशक अपनी जोखिम और व्यय से ग्रन्थ का मुद्रण और प्रकाशन करेगा और भारत में या उसके बाहर ग्रन्थ के मुद्रण, प्रकाशन और बेचने का प्रबन्ध और नियन्त्रण जैसा उचित समझेगा करेगा।

११. इस अनुबन्ध के अस्तित्व में प्रकाशक की लिखी अनुमति के बिना ग्रन्थकार ग्रन्थ के किसी अंश या सार या संक्षिप्त संस्करण को या विषय या लेखन-प्रणाली में ग्रन्थ के समान अन्य ग्रन्थ को, न तो स्वयं प्रकाशित करेगा न दूसरे के द्वारा प्रकाशित करावेगा।

१२. ग्रन्थकार अपने निम्नांकित अधिकार प्रकाशक को इस शर्त पर प्रदान करता है कि उनसे होने वाले लाभ का वह अंश जो प्रत्येक अधिकार के सामने अंकित है, प्रकाशक ग्रन्थकार को देगा :

(क) अनुवाद-सम्बन्धी अधिकार ....७५ प्रतिश

(ख) संकलन-सम्बन्धी अधिकार ....५० प्रतिश

(ग) चित्रपट-सम्बन्धी अधिकार ....८५ प्रतिश

१३. प्रकाशन होने पर ग्रन्थकार ग्रन्थ के प्रथम संस्कर की———प्रतियाँ भेंट स्वरूप पाने का अधिकारी होगा यदि अधिक प्रतियाँ ग्रन्थकार अपने निजी कार्य के लिए ले चाहेगा तो व्यापारिक भाव पर ले सकेगा।

१४. ग्रन्थ में राजद्रोही विषय वा अन्य प्रकार के मुद्रण धिकार, कापीराइट का व्यतिक्रम या मानभंग होने के का यदि प्रकाशक को हानि या क्षति हो तो उस हानि या क्ष को पूरा करने का उत्तरदायी ग्रन्थकार होगा।

१५. प्रकाशक ग्रन्थकार को अनुबन्ध-काल पर्यन्त स समय पर बिक्री के लिए नियत मूल्य पर बिकी पुस्तकों बिक्री पर———सैकड़े के हिसाब से रायल्टी मुनाफ़ा देगा। ग्रन्थकार को या प्रकाशन के हित में दूसरों भेंट की गई, समालोचनार्थ पत्र-पत्रिकाओं के पास भेजी ग लागत से कम मूल्य पर विक्रय की गई, तथा अग्नि, ज उपद्रव आदि में नष्ट-भ्रष्ट प्रतियों पर रायल्टी पाने का ग्रन् कार अधिकारी न होगा।

१६. प्रतिवर्ष———मास की अन्तिम ति से पूर्व प्रकाशक ग्रन्थकार को गत वर्ष की ग्रन्थ-बिक्री हिसाब देकर रायल्टी या मुनाफ़े की रक़म सूचित कर दे और निश्चित रक़म को वार्षिक हिसाब होने के ३ मास भीतर चुकता कर देगा। यदि ग्रन्थकार उपर्युक्त सूचना ३ मास के भीतर हिसाब के सम्बन्ध में कोई लिखित आप न करे तो यह समझा जायगा कि हिसाब उसे मान्य है।

१७. यदि किसी समय भण्डार में ग्रन्थ की केवल ५० इससे कम प्रतियाँ रह जावें और प्रकाशक दूसरे संस्करण प्रकाशन का निश्चय करे तो वह ग्रन्थकार को ग्रन्थ के दोहरा संशोधन, परिवर्तन या परिवर्धन करने के लिए, जिससे ग्र अधिक लाभकारी तथा सामयिक हो जावे, कहेगा, ग्रन्थकार उचित समय में यह सब आवश्यकीय कार्य कर देगा

१८. यदि किसी समय किसी भी कारण से प्रकाशक ग्र का अन्य संस्करण प्रकाशित करना हितकर न समझे तो ग्रन् कार को यह अधिकार रहेगा कि प्रकाशक की अनुमति ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...श्य से अन्य प्रकाशक द्वारा ग्रन्थ छपवा दे।

१६. ग्रन्थ के किसी संस्करण के समाप्त हो जाने से एक ... अन्दर प्रकाशक का कर्तव्य होगा कि वह ग्रन्थ के ... का निश्चय कर ले। यदि प्रकाशक ने यह निश्चय ... किया तो इस अनुबन्ध का अन्त हो जायगा और ग्रन्थ- ... को अधिकार होगा कि प्रकाशक से सतत: ग्रन्थ के सब ... स्टीरियो या इलक्ट्रोटाइप प्लेट या अन्य प्लेट आदि ... ग्रन्थ चित्रित किया गया है, बनवाई के पक्के दामों के ... पर क्रय कर ले, किन्तु यदि तीन मास के भीतर ग्रन्थकार ... को मोल लेकर मूल्य न चुका दे तो प्रकाशक को ... पश्चात् अधिकार होगा कि प्लेट ब्लाक आदि को गला ... या उनका जो चाहे सो करे वा अपने काम में लावे।

२०. ग्रन्थकार को अधिकार होगा कि रायल्टी मुनाफे का ... दिये जाने पर गतवर्ष का और किसी कारण से इस ... के अन्त होने पर ग्रन्थ-सम्बन्धी हिसाब प्रकाशक की ... में देख ले। ग्रन्थकार के लिखित आवेदन पर प्रकाशक ... या उसके नामांकित प्रतिनिधि को न्यायोचित समय ... ग्रन्थ के प्रकाशक तथा बिक्री-सम्बन्धी काग़ज़ों सहित ... करा दे।

२१. यदि ग्रन्थकार और प्रकाशक के बीच ऐसा मतभेद ... उत्पन्न हो जिसके क़ानूनी निर्णय की आवश्यकता हो ... मतभेद या प्रसंग एक पंचायत के सामने निर्णय के ... रखा जायगा। पंचायत में तीन व्यक्ति होंगे जिनमें एक ... द्वारा निर्वाचित होगा, दूसरा प्रकाशक द्वारा और ... इन दो निर्वाचित पंचों द्वारा चुना जायगा। इस पंचा- ... निर्णय ग्रन्थकार और प्रकाशक दोनों पर बाध्य होगा।

२२. अगर किसी अप्रत्याशित कारण से ग्रन्थकार और ... के बीच किसी मामले को अदालत में जाना पड़े तो ... अदालत —————— स्थान की होगी।

अतः ऊपर लिखी तिथि में उभय पक्ष ने अपने-अपने ... और मुद्रा इस अनुबन्ध-पत्र पर निम्न साक्षियों के ... कर दिए कि प्रमाण रहे।

ग्रन्थकार

पता

पता

———————————————

पता

प्रकाशक

पता

निम्नलिखित पुस्तक छप गई
जिसकी
हिन्दी-जगत् उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा कर
रहा था

❋ भारतीय राजनीति ❋

विक्टोरिया से नेहरू तक

(१८५८ से १९४७)

लेखक—श्री रामगोपाल 'पत्रकार'

सजिल्द, मूल्य दस रुपये

पत्रकारिता पर चार पुस्तकें

भारतीय पत्रकार कला—
सम्पादक रोलैंड ई० वूलसले। ६)

समाचार पत्रों का इतिहास—
ले० सम्पादकाचार्य पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी। ६)

आधुनिक पत्रकार कला—
लेखक रा० र० खाडिलकर। ३॥)

पत्र और पत्रकार—
ले० पं० कमलापति त्रिपाठी। ६)

ये पुस्तकें प्रायः सभी प्रमुख पुस्तक-
विक्रेताओं के यहाँ मिलेंगी।

प्रकाशक

ज्ञानमण्डल लिमिटेड,

कबीर चौरा, बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्साहित्य का प्रश्न

नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारें अब अधिक संख्या में पुस्तकें खरीद रही हैं लेकिन उनके लिए अच्छे-बुरे साहित्य का प्रश्न विशेष माने नहीं रखता। इस लेख में इस खेदजनक प्रवृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

सच्चा साहित्य राष्ट्रीय चेतना की भावात्मक अभिव्यक्ति है। यहाँ तक कि मिलन और विरह के गीतों के व्यक्तिगत उद्‌गार तक राष्ट्रीय चेतना और परिस्थितियों के अनुरूप ही प्रस्फुटित होते हैं। ऐसा साहित्य व्यक्ति-विशेष द्वारा लिखित होकर भी तत्कालीन राष्ट्रीय स्तर का द्योतक होता है। इसीलिए वह राष्ट्रीय थाती भी है। वास्तव में साहित्यकार स्वभावतया संवेदनशील होता है। वह परम्परागत संस्कार, वर्तमान अनुभूति और भावी कल्पना द्वारा प्रेरणा प्राप्त करता है और भाषा के माध्यम से अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देता है। उसका व्यक्ति जिस मात्रा व अनुपात से समाज को आत्मसात् करता है, उसी मात्रा व अनुपात से वह जीवित रहता है। ऐसी दशा में किसी भी राष्ट्रीय सरकार के लिए यह स्वाभाविक हो जाता है कि वह सच्चे साहित्य और साहित्यकार को अपना प्रश्रय और संरक्षण प्रदान करे।

परन्तु उपर्युक्त साहित्य से भिन्न कोटि का उपयोगी साहित्य भी होता है जिसके द्वारा राष्ट्र-निर्माण और विकास के साथ-साथ भौतिक श्री तथा शक्ति-वृद्धि की आशा की जाती है। इसी प्रकार साहित्य की एक तीसरी कोटि दर्शन की भी है जिसके द्वारा किसी राष्ट्र की मेधा-शक्ति और चिन्ता-धारा का परिचय मिलता है। ऐसे साहित्य का भी राष्ट्रीय जीवन में उतना ही महत्त्व है जितना शुद्ध साहित्य का। एक प्रेरणा प्रदान करता है तो दूसरा बल। इसलिए तीनों प्रकार के साहित्य को राष्ट्रीय सरकार का प्रश्रय और संरक्षण मिलना ही चाहिए।

अपने देश में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुए सात साल हुए हैं। जब यहाँ राष्ट्रीय सरकार नहीं थी, तब तत्कालीन सरकार के सामने राष्ट्रीय हित-जैसी कोई चीज़ नहीं थी। साम्राज्य की रक्षा द्वारा शोषण जारी रखना ही उसका चरम लक्ष्य था। इसलिए हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति को यदि सुरक्षा व संरक्षण न मिल सका तो उसके लिए हमारे मन में क्लेश वा क्षोभ चाहे जितना हो, हम उसकी शिकायत नहीं कर सकते। परन्तु अब जब कि हमारे देश में राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो चुकी है और प्रान्तों में लोकप्रिय सरकारें शासन कर रही हैं, हमें आशा करनी चाहिए कि उनके द्वारा राष्ट्रोन्नति में सहायक सभी कार्यों को यथेष्ट बढ़ावा और संरक्षण मिलता रहेगा।

इसमें सन्देह नहीं कि हमारी केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों का ध्यान इन-जैसी बातों की ओर आकर्षित हुआ है। परन्तु इस दिशा में अब तक जो-कुछ हुआ या हो रहा है, वह महत्त्व और आवश्यकता को देखते हुए संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का प्रोत्साहन कुछ साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा भी समय-समय पर मिला करता है किन्तु उनकी सीमा और उपलब्ध साधनों को देखते हुए उनसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

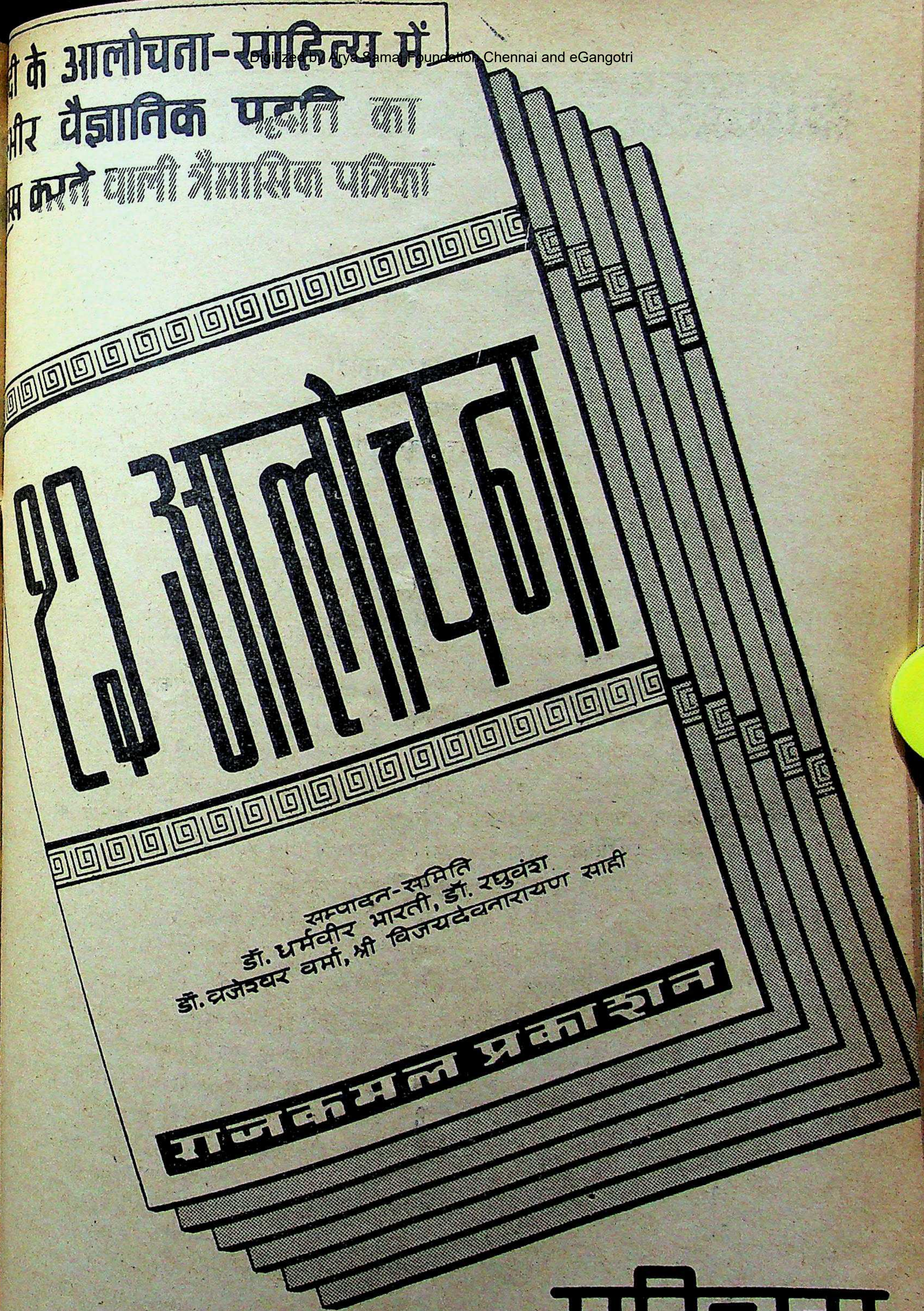

परिचय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-संसार की दृष्टि में आलोचना

"मुझे पूरी आशा है कि प्रयाग के नवयुवक साहित्यिकों के सम्पादकत्व में पत्रिका यशलाभ करेगी।"
—डॉ० अमरनाथ झा

"आप लोगों के हाथों में आकर उसे नवजीवन की स्फूर्ति मिल गई है।"
—परशुराम चतुर्वेदी

"आलोचना के 'आलोचनांक' के लिए बधाई!"
—नलिनविलोचन शर्मा

"आलोचना का (सातवाँ) अंक बहुत अच्छा निकला है। सम्पादकीय बड़ा प्रौढ़ है।"
—डॉ० देवराज

"आलोचना के पिछले दोनों अंक मैंने देखे हैं। उनमें संकलन और सम्पादन में विशेषत्व पाया है।"
—डॉ० रामरतन भटनागर

"आलोचना के लिए मेरी हार्दिक बधाई।"
—हंसकुमार तिवारी

"सामग्री के चयन और संग्रह के लिए अनेक बधाइयाँ! वास्तव में अब जाकर हिन्दी में उच्च-कोटि की समीक्षात्मक पत्रिका का अभाव दूर हुआ।"
—मोतीसिंह

"आपका सम्पादकीय (हिन्दी साहित्य में गतिरोध) पढ़ा, अभी कल ही। मैं सच कह रहा हूँ, हिन्दी का लेखक भी इतने उच्च धरातल पर सोच-विचार कर सकता है, इसका मुझे अनुमान न था। आप अपने सम्पादकीयों में हिन्दी को जो Sociological directions दे रहे हैं वह सर्वथा अभिनन्दनीय हैं। और कोई पत्रिका ऐसी नहीं दिखाई दे रही जो आपको इसमें सहायता दे।"
—हर्षनारायण

"आलोचना के लिए आपको हार्दिक बधाइयाँ।"
—वासुदेव उपाध्याय

"....अभी तक वह संकीर्णता में पड़ी थी। अब उसमें साहित्य की निर्मल प्राणमयी धाराओं का संचय देखने को मिलेगा।"
—'अंचल'

"आलोचना का नया अंक पिछली कड़ियों से अधिक सशक्त, सप्राण और सुहावना है।"
—रा० ना० विसारिया

"सचमुच आलोचना ऐतिहासिक कार्य कर रही है। भारतीय भाषाओं में ऐसी उच्चकोटि की पत्रिका नहीं निकल रही है।"
—जयेन्द्र त्रिवेदी

"....एक नई आशा का आलोक लिये अवतीर्ण हुआ है। 'गहन दायित्व' की चेतना हिन्दी समीक्षा का एक प्रबल तकाजा है।"
—पृथ्वीनाथ 'पुष्प'

"हिन्दी-समीक्षा के विषय में आपकी सचेष्ट दृष्टि एक सर्वसम्मत मानदण्ड प्रस्तुत कर सकेगी, ऐसा विश्वास है।"
—डॉ० रामचन्द्र तिवारी

"आलोचना वास्तव में उत्कृष्ट पत्रिका है।"
—डॉ० इन्द्रसेन

"आलोचना का विशेषांक देखने को मिला। बहुत सुन्दर निकला है। परिश्रम के लिए बधाइयाँ!"
—डॉ० प्रेमशंकर तिवारी

"संकीर्णता की परिधि से निकलकर आलोचना ने जो मार्ग अपनाया है, वह साहित्य के लिए श्रेयस्कर है।"
—कृष्णनन्दन पीयूष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना में प्रकाशित समीक्षा-जगत् के सुधी साहित्यकारों तथा अग्रणी आलोचकों द्वारा लिखित निबन्धों की सूची देखिए!

अगरचन्द नाहटा	: 'पृथ्वीराज रासो' का विस्तार	: १२
अरविन्द	: भविष्यत् काव्य	: ८
असितकुमार हाल्दार	: शान्तिनिकेतन की कला-शैली	: ७
आत्माराम रावजी देशपाण्डे	: मराठी नव-काव्य और रस-विचार	: ७
आनन्द प्रकाश दीक्षित	: रस की व्याख्याओं के दार्शनिक आधार	: ९
इलाचन्द्र जोशी	: युग-समस्याएँ और साहित्यकार	: ३
,,	: विश्व-उपन्यास-साहित्य का क्रमिक विकास और भविष्य	: ११
इन्द्रसेन, डॉ०	: श्री अरविन्द का साहित्य दर्शन	: ९
एक्स्ट्रॉस, आई० ए०	: समकालीन विश्व-साहित्य पर एक दृष्टि	: ८
,,	: वर्तमान संकट और मानवीय मूल्यों का विघटन	: १०
एजाज़ हुसैन, डॉ०	: उर्दू कविता में राष्ट्रीय भावना	: ८
एहतेशाम हुसैन	: उर्दू भाषा की उत्पत्ति और उसका विकास	: १
कामिल बुल्के, डॉ०	: 'रामचरित मानस' का रचना-क्रम	: ८
केशव आनन्द	: टी० एस० इलियट के काव्य-सिद्धान्त	: ९
कोस्तान्तिन फ़ेदिन	: लेखक और उसकी कला	: १
खत्री०, डॉ० एस० पी०	: अँग्रेजी काव्य-धारा : बीसवीं शताब्दी	: ७
,,	: प्राचीन यूनानी साहित्य-शास्त्र	: ९
गजानन माधव मुक्तिबोध	: कामायनी	: ५
गिरिजाकुमार माथुर	: काव्य में प्रयोगशीलता	: २
,,	: नई कविता का भविष्य	: १२
गुलाबराय	: भारतीय आलोचना पद्धति	: १
,,	: हिन्दी-साहित्य के इतिहास-ग्रन्थ और आचार्य शुक्ल की देन	: ५
गोपालकृष्ण कौल	: गोदान	: ५
गोपाल हाल्दार	: समसामयिक बँगला साहित्य	: २
,,	: बँगला साहित्य में आलोचना	: ४
चन्द्रबली पांडे	: जायसी की भूल	: ८
,,	: वीरगाथा का विरोध क्यों	: ११
जगदीश गुप्त, डॉ०	: छायावाद की भावभूमि	: ६
,,	: नई कविता में रस और बौद्धिकता	: ७
,,	: शुक्लोत्तर समीक्षा	: ९
जगदीशचन्द्र माथुर	: हिन्दी रंगमंच और नाटक-रचना का विकास	: ६
जयकान्त मिश्र, डॉ०	: पाश्चात्य समीक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियाँ	: ९
टीकमसिंह तोमर, डॉ०	: जटमल और उसकी 'गोरा बादल की कथा'	: १२
ठाकुरप्रसाद सिंह	: हिन्दी कहानी	: ५
डी० के० बेडेकर	: रस-सिद्धान्त का स्वरूप : १	: ३
,,	: रस-सिद्धान्त का स्वरूप : २	: ४
,,	: भरत-प्रणीत रस-सिद्धान्त : एक स्पष्टीकरण	: ९
ति० शेषाद्रि	: तमिल भाषा और साहित्य की समस्याएँ	: ७
देवराज उपाध्याय	: आधुनिक हिन्दी कहानी	: ५
,,	: उपन्यास-कला का आभ्यन्तरिक प्रयाण	: १०
देवराज, डॉ०	: समाजशास्त्रीय आलोचना	: १
,,	: हिन्दी-समीक्षा : एक दृष्टि	: ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवराज, डॉ०	: अतीत का साहित्य : क्लासिक की परिभाषा	: ६
,,	: समकालीन आलोचना : कुछ खतरे	: ७
,,	: प्राचीन साहित्य-शास्त्र की उपयोगिता	: ६
देवेन्द्र सत्यार्थी	: लोक-साहित्य की यथार्थवादी परम्परा	: ३
,,	: हिन्दी-साहित्य पर लोक-साहित्य का प्रभाव	: ६
धीरेन्द्र वर्मा, डॉ०	: हिन्दी का अपना साहित्य-शास्त्र	: ८
धर्मवीर भारती, डॉ०	: साहित्य की नई मर्यादा	: ११
नगेंद्र, डॉ०	: नव-निर्माण : हिन्दी साहित्य की व्यापकता के उपादान	: २
,,	: वामन के काव्य-सिद्धान्त	: ६
नरेन्द्र शर्मा	: श्री सुमित्रानन्दन पन्त	: १
,,	: प्रगतिवाद : साहित्य का नया दृष्टिकोण	: ४
,,	: दो महायुद्धों के बीच हिन्दी-कविता	: ५
नामवरसिंह	: हिन्दी-कविता के पिछले दस वर्ष	: ४
,,	: इतिहास का नया दृष्टिकोण	: ५
नेमिचन्द्र जैन	: आधुनिक साहित्य के मूल्यांकन की समस्याएँ	: ३
नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ०	: भारतीय काव्य-शास्त्र का नवनिर्माण	: ४
,,	: हिन्दी-आलोचना	: ५
नलिनविलोचन शर्मा	: हिन्दी उपन्यास	: ५
,,	: वर्तमान हिन्दी-आलोचना : उपलब्धि और अभाव	: ६
नरोत्तमदास स्वामी	: राजस्थानी भाषा और साहित्य	: ६
परशुराम चतुर्वेदी	: सन्त-काव्य की परम्परा	: ५
,,	: मानस की हेतु-कथाएँ	: ७
,,	: आलोचना और अनुसन्धान	: ८
पॉल वेलरी	: भविष्यत् साहित्य	: ८
प्रकाशचन्द्र गुप्त, डॉ०	: गोस्वामी तुलसीदास	: १
,,	: सूर का मानवतावाद	: २
,,	: कबीर के काव्य में सामाजिक विद्रोह	: ३
,,	: प्रेमचन्द्र : कहानीकार	: ४
,,	: आधुनिक हिन्दी-साहित्य का विकास	: ५
प्रभाकर माचवे	: साहित्य और ललित कलाएँ	: १
,,	: वस्तु और शिल्प-कला	: २
,,	: ऐतिहासिक उपन्यास	: ५
,,	: मराठी रस-मीमांसा : नई दिशाएँ	: ११
प्रेमशंकर तिवारी, डॉ०	: 'कामायनी' की कथा	: ८
बच्चनसिंह	: हिन्दी नाटकों का विकास	: ५
बलदेव उपाध्याय	: वेद में गीति-काव्य का उद्गम	: ११
ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ०	: हिन्दी-साहित्य के आदिकाल पर शोधकार्य	: ७
भगवत्सरूप मिश्र, डॉ०	: वाजपेयी जी की समीक्षा-पद्धति	: ६
भगीरथ मिश्र, डॉ०	: भारतीय आलोचना पद्धति	: २
,,	: रीतिकालीन काव्य : एक दृष्टिकोण	: ३
,,	: रीति-काव्य	: ५
,,	: हिन्दी रीति-शास्त्र	: ६

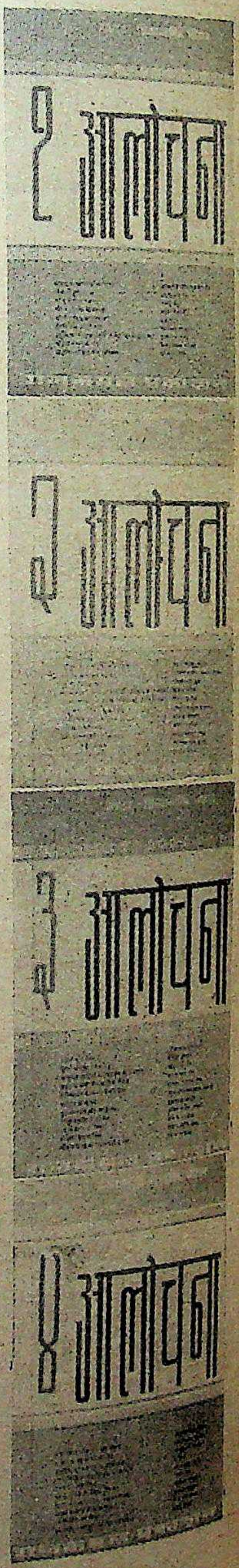

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

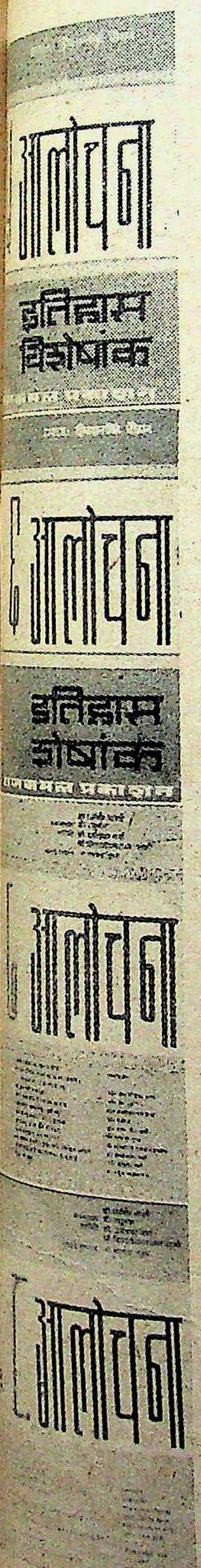

मसीहुज्ज़माँ : उर्दू आलोचना का विकास : १२
माताप्रसाद गुप्त, डॉ० : 'बीसलदेव रास' की पाठ-समस्या : ७
,, : 'पद्मावत' का पाठ और 'आईन-ए-अकबरी' : १२
यदुपति सहाय : अँग्रेजी समीक्षा : बीसवीं शताब्दी : १०
युङ्ग, सी० जे० : साहित्य और मनोविज्ञान : ७
रघुवंश, डॉ० : साहित्य में प्रयोगवाद : २
,, : आधुनिक युग का पूर्वार्द्ध : ५
,, : हिन्दी का यात्रा-साहित्य : १२
रवीन्द्रसहाय वर्मा, डॉ० : हीगेल के कला-सिद्धान्त : ६
राकेश गुप्त, डॉ० : भक्ति-भावना और रीतिकालीन कवि : १०
राजनारायण बिसारिया : प्रतीकवाद की स्थापना : ६
राजबली पाण्डेय, डॉ० : हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में भारतीय मध्ययुग : १०
रांगेय राघव, डॉ० : साहित्य में यथार्थवाद : ३
,, : रामचरित मानस : ५
,, : रस-तत्त्व और मार्क्सीय कसौटी : ६
रामअवध द्विवेदी, डॉ० : यूरोपीय साहित्य का हिन्दी-साहित्य पर प्रभाव : ६
,, : आई० ए० रिचर्ड्स के समीक्षा-सिद्धान्त : ६
रामचन्द्र तिवारी : सन्त-सम्प्रदायों की राजनैतिक परिणति : ११
रामरतन भटनागर, डॉ० : हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का विकास : ६
,, : रचना के स्रोत और समीक्षा के मानदण्ड : ८
,, : छायावादी काव्य-दृष्टि : १०
रामसुरेश त्रिपाठी : भाषा का विकास और प्रगतिवाद : ६
रामसिंह तोमर, डॉ० : प्राकृत अपभ्रंश-साहित्य और उसका हिन्दी-साहित्य पर प्रभाव : ८
रामस्वरूप चतुर्वेदी : अतियथार्थवाद : ६
राहुल सांकृत्यायन : मातृभाषाओं का महत्त्व : ६
,, : भाषा का प्रश्न : ७
लक्ष्मीकान्त वर्मा : नई कविता में वर्ग-उन्मूलन और वैयक्तिक कुण्ठाएँ : ७
लक्ष्मीनारायण लाल, डॉ० : हिन्दी-कथा-शिल्प में कथानक का ह्रास : ७
वात्स्यायन, स० ही० : समालोचना और नैतिक मान : ६
वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० : हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव : ६
विजय चौहान : प्रगतिवाद : ६
विजयदेवनारायण साही : मार्क्सवादी समीक्षा और उसकी कम्युनिस्ट परिणति : ६
विजयशंकर मल्ल : हिन्दी का निबन्ध-साहित्य : एक सर्वेक्षण : ५
विजयेन्द्र स्नातक : कामायनी की दार्शनिक पृष्ठ-भूमि : ५
,, : श्री गुलाबराय की समीक्षा-पद्धति : एक मूल्यांकन : ६
विनयमोहन शर्मा : छायावादी कवियों का आलोचनात्मक दृष्टिकोण : ६
विपिनबिहारी त्रिवेदी, डॉ० : पृथ्वीराज रासो का काव्य-सौष्ठव : ५
विश्वनाथप्रसाद मिश्र : हिन्दी में रस-मीमांसा : ६
विश्वम्भर मानव : बिहारी सतसई : ५
श्याम परमार : हिन्दी जनपदों में लोक-साहित्य संकलन की परम्परा : ६
शमशेरबहादुर सिंह : कला और साहित्य में प्रयोगवाद : २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

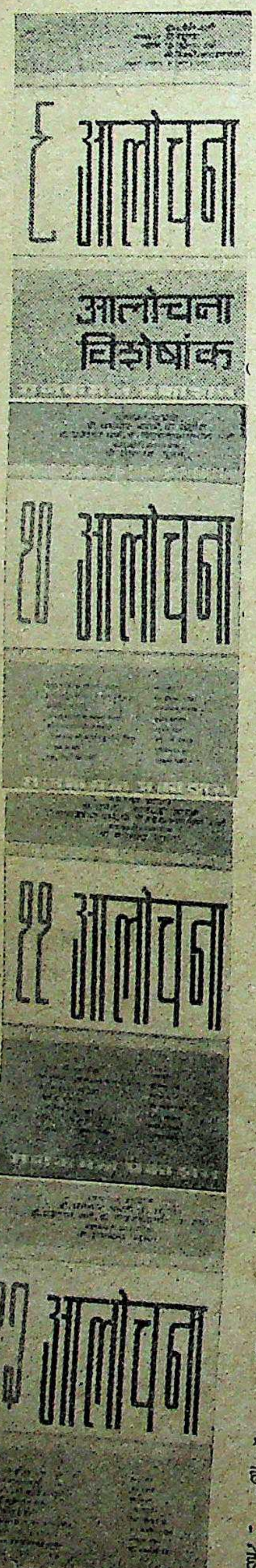

शम्भूनाथ मिश्र	: शान्ति-निकेतन की कला शैली और छायावादी काव्य	: ७
शम्भूनाथ सिंह	: महाकाव्य के उद्भव की सामाजिक व्याख्या	: ८
,,	: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की समीक्षा की मानवतावादी भूमि	: ९
शान्ति भिक्षु	: आलोचना में सहिष्णुता की मर्यादा : बौद्ध-संकेत	: ९
शिवदानसिंह चौहान	: साहित्य में पूर्ण मानव की प्रतिष्ठा	: ९
,,	: साहित्य में संयुक्त मोर्चा	: १
,,	: प्रतीकवाद : त्रिशंकुओं का साहित्य	: १
,,	: यथार्थ और साहित्य	: २
,,	: दो साहित्य-गोष्ठियाँ	: ३
,,	: प्रगतिशील साहित्य : प्रगतिवाद	: ३
,,	: साहित्य के इतिहास की समस्या	: ४
,,	: राष्ट्रीय साहित्य के निर्माण की समस्या	: ५
शिवनाथ	: आधुनिक आलोचना का उदय और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	: ६
श्रीकृष्णलाल, डॉ०	: भक्ति-काव्य	: ९
सत्येन्द्र, डॉ०	: प्रेमचन्द के बाद : उपन्यास साहित्य का प्रवृत्ति-विकास	: ५
,,	: हिन्दी-साहित्य के विकास-क्रम में लोकवार्ता की पृष्ठभूमि	: २
,,	: सूर-सागर	: ४
सम्पादकीय	: हिन्दी-समीक्षा का गहन दायित्व	: ५
,,	: साहित्य में गतिरोध	: ७
,,	: मूल्यगत संक्रमण और समीक्षा का मानदण्ड	: ८
,,	: हिन्दी-साहित्य का इतिहास : मध्ययुग	: ९
,,	: साहित्यकार और उसका परिवेश : मध्ययुग	: १०
,,	: इतिहास का पुनर्नवीकरण	: ११
सुमित्रानन्दन पन्त	: सन्तुलन का प्रश्न	: १२
सुरेशचन्द्र सेन गुप्त	: बेलिन्स्की की मान्यताओं का विकास	: १०
हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०	: संस्कृत के महाकाव्यों की परम्परा : १	: ९
,,	: साहित्य की साधना	: १
,,	: संस्कृत के महाकाव्यों की परम्परा : २	: ३
,,	: आदिकाल की सामग्री का पुनर्परीक्षण	: ४
,,	: गौडीय वैष्णव रस-सिद्धान्त	: ५
हंसकुमार तिवारी	: हिन्दी गीतिकाव्य का विकास	: ९
हरदेव बाहरी, डॉ०	: साहित्यिक हिन्दी का स्वरूप	: ६
,,	: हिन्दी-भाषा का उद्गम और विकास	: ३
,,	: स्त्रियों की भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण	: ६
हरद्वारीलाल शर्मा, डॉ०	: भारतीय सौन्दर्य-चिन्तन का क्रमिक विकास : सिन्धु-सभ्यता से रीतिकाल तक	: १०
,,	: सौन्दर्य-तत्त्व और आलोचना के मानदण्डों का विकास	: ७
हर्षनारायण	: इतिहास की मार्क्सोत्तर व्याख्याएँ और साहित्य-दर्शन	: ९
,,	: मार्क्सवाद और साहित्य का स्थायी तत्त्व	: ९
हेमलता जनस्वामी	: तेलुगु प्रदेश की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक समस्याएँ	: १२
त्रिलोचन शास्त्री	: हिन्दी कथा-साहित्य के पिछले दस वर्ष	: ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना में समीक्षित पुस्तकें

…' विजयदेवनारायण साही। 'अधूरा उपन्यास' डॉ० रघुवंश। 'अपना पराया' बच्चनसिंह। 'अपलक' धर्मवीर भारती। 'अपना राज अपने
…' अजितकुमार। 'अर्चना' नरेशकुमार मेहता। 'अर्वाचीन और प्राचीन के परे' डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल। 'आखिरी दाँव' गोपालकृष्ण
… 'आग और पराग' विजयदेवनारायण साही। 'आदि मार्ग' विश्वम्भर मानव। 'आधुनिक साहित्य' विजयशंकर मल्ल। 'आलोचना-इतिहास
…' परशुराम चतुर्वेदी। 'इतिहास के आँसू' उदयशंकर भट्ट। 'उत्तरा' डॉ० रघुवंश। 'उत्तराधिकारी' देवराज उपाध्याय। 'उत्तरी भारत की
…' नामवरसिंह। 'कल्पलता' देवराज उपाध्याय। 'कला' राय आनन्दकृष्ण। 'कला और मानव' हंसकुमार तिवारी। 'कला और संस्कृति'
… तिवारी। 'क्या गोरी क्या साँवरी' क्षेमचन्द्र सुमन। 'क्या वह दोषी था' शिवनाथ। 'कवि आरसी की काव्य-साधना' माया भटनागर। 'काम
… परिवार' नरोत्तम नागर। 'कालिदास ग्रन्थावली' सूर्य नारायण व्यास। 'काव्य के रूप' त्रिलोचन शास्त्री। 'क्वासि' डॉ० भगवतशरण
…। 'कैद और उडान' विश्वम्भर मानव। 'कोणार्क' विनयमोहन शर्मा। 'खरगोश के सींग' विजयेन्द्र स्नातक। 'खोज की पगडण्डियाँ'।
… भारतभूषण अग्रवाल। 'गेहूँ और गुलाब' ललितप्रसाद सुकुल। 'चतुरंग' इलाचन्द्र जोशी। 'चद्रावली नाटिका'। 'चरित नायक'। 'चाणक्य'
… नारायण साही। 'चाँद सूरज के बीरन' गंगाप्रसाद मिश्र। 'चाँदनी रात और अजगर' मार्कण्डेय। 'चार के चार' अजितकुमार। 'चित्र
…' गंगाप्रसाद मिश्र। 'छायावाद युग' बच्चनसिंह। 'जिन्दगी के अनुभव' अजितकुमार। 'जिप्सी' गंगाप्रसाद पाण्डेय। 'जीवनतरी'
…नारायण साही। 'जैसा हमने देखा' महावीर अधिकारी। 'झपकियाँ'। 'डायरी के नीरस पृष्ठ' ठाकुरप्रसाद सिंह। 'ढलती रात' लक्ष्मीकान्त।
… और उसका साहित्य' ति० शेषाद्रि। 'तूफान की कलियाँ' लक्ष्मीकान्त वर्मा। 'दक्खिनी हिन्दी' माताबदल जायसवाल। 'दूसरा सप्तक'
…ष्ण कौल। 'देश की हत्या'। 'दो बहनें' इलाचन्द्र जोशी। 'धरती की करवट' लक्ष्मीकान्त वर्मा। 'धर्म की धुरी' बच्चनसिंह। 'धूप
…' उदयशंकर भट्ट। 'नटी की पूजा' इलाचन्द्र जोशी। 'नये नगर की कहानी' ओंकारनाथ श्रीवास्तव। 'नये मोड़' डॉ० इन्द्रनाथ
…। 'नाथ-सम्प्रदाय' डॉ० रांगेय राघव। 'पथ की खोज' विश्वम्भर मानव। 'पथ चिह्न' विश्वम्भर मानव। 'पन्त का काव्य और युग' विनयमोहन
… 'परन्तु' रामकुमार। 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' गोपालकृष्ण कौल। 'प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड' राजेन्द्रप्रसाद सिंह। 'पर्दे के पीछे'
…। 'परेड ग्राउण्ड' राजेन्द्र यादव। 'प्लाट का मोर्चा' हंसकुमार तिवारी। 'पहेली'। 'पांच रुपये की आज़ादी' लक्ष्मीकान्त वर्मा। 'पाटलि-
…कथा' डॉ० भगवतशरण उपाध्याय। 'प्राचीन भारतीय वेषभूषा' डॉ० रांगेय राघव। 'पूर्वोदय' शिवनाथ। 'प्रेत बोलते हैं' राम खेलावन
…। 'प्रेमचन्द जीवन और कृतित्व' पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'। 'फुलवाड़ी' इलाचन्द्र जोशी। 'बदलो की रात' लक्ष्मीकांत वर्मा। 'बदलती
… 'बया का घोंसला और साँप' डॉ० रघुवंश। 'बहती गंगा' डॉ० रघुवंश। 'बान्धवी'। 'बीज' डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय। 'भगवान भला करे'।
… शिक्षा' डॉ० सुबोध अग्रवाल। 'भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण' डी० के० बेडेकर। 'मध्यकालीन हिन्दी कवियित्रियाँ'
…कुमारी। 'मध्यकालीन प्रेम साधना' डॉ० उदयनारायण तिवारी। 'मधु'। 'मधुर स्वप्न' डॉ० जगदीश गुप्त। 'मन्थन' नरोत्तम नागर। 'मनुष्य
…' डॉ० सत्येन्द्र। 'मरू प्रदीप' ठाकुरप्रसाद सिंह। 'महाकवि भूषण' प्रभुदयाल मीतल। 'महाकवि श्री निराला अभिनन्दन ग्रन्थ' श्याममोहन
…। 'महाकवि सूरदास' डॉ० भागीरथ मिश्र। 'महायान' प्रभाकर माचवे। 'महादेवी वर्मा : काव्य-कला और जीवन दर्शन' नामवरसिंह।
…भूमि' डॉ० भगवतशरण उपाध्याय। 'मृगनयनी' महावीर अधिकारी। 'मीमांसिका' रामगोपालसिंह चौहान। 'मीरां-बृहद पद संग्रह' अक्षयचन्द्र
… 'मेरा बचपन' इलाचन्द्र जोशी। 'मैं इनसे मिला' कन्हैयालाल सहल। 'मैंने कहा' विजयेन्द्र स्नातक। 'यथार्थ और कल्पना' डॉ०
…। 'युगदीप' डॉ० रांगेय राघव। 'रक्त के बीज' यशदेव शल्य। 'रजत शिखर' नलिनविलोचन शर्मा। 'रथ के पहिए' विष्णुस्वरूप।
… और राजन' डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय। 'रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति' परशुराम चतुर्वेदी। 'रीति-काव्य की भूमिका' डॉ० जगन्नाथ
… शर्मा। 'रेखाएँ बोल उठीं' क्षेमचन्द्र 'सुमन'। 'रेल का टिकट' डॉ० सुधीन्द्र। 'रोमांटिक साहित्य-शास्त्र' डॉ० देवराज। 'लहर और चट्टान'
… मुक्तिदूत। 'लाल धरती' विष्णु प्रभाकर। 'व्यक्ति और वाङ्मय' डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय। 'वितस्ता की लहरें' बच्चनसिंह। 'विभावरी'
… शर्मा 'कमलेश'। 'विवर्त' श्रीपतराय। 'विश्वधर्म दर्शन' डॉ० आद्याप्रसाद मिश्र। 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' डॉ० टीकमसिंह तोमर।
…' विजयेन्द्र स्नातक। 'शिक्षा साहित्य और जीवन' मोतीसिंह। 'शिशुपाल वध'। 'शिवालक की घाटियों में' बिन्दु अग्रवाल। 'संघर्ष के
…। 'संतकाव्य' अजित डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित। 'संत सुधासार' प्रभाकर माचवे। 'समस्या का अंत' विजयेन्द्र स्नातक। 'समीक्षा
…' गजानन माधव मुक्तिबोध। 'संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो' डॉ० माताप्रसाद गुप्त। 'स्वर्ण किरण' डॉ० रघुवंश। 'स्वर्णधूलि' डॉ० रघुवंश।
… बाहर' लक्ष्मीकान्त वर्मा। 'सांख्यदर्शन का इतिहास' उदयशंकर भट्ट। 'सार्थवाह' वासुदेव उपाध्याय। 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' नरोत्तम
…। 'साहित्य साधना की पृष्ठभूमि' हेमलता जनस्वामी। 'साहित्य विवेचन' हेमलता जनस्वामी। 'सुखदा' श्रीपतराय। 'सुबह होती है'
… शर्मा 'कमलेश'। 'सुमित्रानन्दन पंत' गजानन माधव मुक्तिबोध। 'सुहागिन' डॉ० भगवतशरण उपाध्याय। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'
… 'अश्क'। 'सोच विचार' नरोत्तम नागर। 'सोपान' विजयदेवनारायण साही। 'सौन्दर्य शास्त्र' हंसकुमार तिवारी। 'हँसते हैं रोते हैं'
…। 'हिन्दी-काव्य धारा में प्रेम प्रवाह' डॉ० उदयनारायण तिवारी। 'हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग' डॉ० हरदेव बाहरी।
… परिचय (१) गढ़वाल'। 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल' डॉ० दशरथ शर्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना के बिक्री सम्बन्धी नियम

—आलोचना त्रैमासिक पत्रिका है। प्रति-वर्ष चार अंक—अक्टूबर, जनवरी, अप्रैल और जुलाई में—प्रकाशित होते हैं।

—किसी भी अंक से पत्रिका का वार्षिक ग्राहक बना जा सकता है।

—नये वर्ष के आरम्भ के उपलक्ष्य में प्रति-वर्ष अक्टूबर मास में एक विशेषांक प्रकाशित किया जाता है जो पत्रिका के ग्राहकों को वार्षिक मूल्य के अन्तर्गत ही मिलता है।

—पत्रिका का वार्षिक मूल्य केवल १२) रुपया है। फुटकर अंक मंगवाने वालों को विशेषांक का मूल्य ५) देना होता है।

—पत्रिका के अंकों को स्थायी ग्राहकों के पास भेजने का डाकखर्च अलग से नहीं लिया जाता।

—प्रत्येक अंक को पोस्टल-सर्टिफ़िकेट लेकर ही साधारण बुक-पोस्ट से भेजा जाता है।

—डाक में किसी प्रति के गुम होने का उत्तरदायित्व हम पर तभी पड़ सकता है यदि हमने पोस्टल सर्टिफ़िकेट न लिया हो। बाद की जिम्मेदारी ग्राहकों की है।

—अपनी प्रतियाँ सुरक्षित पाने के लिए ग्राहकों को चाहिए कि वर्ष के चारों अंकों को रजिस्टरी से भिजवाने का खर्च १॥) (डेढ़ रुपया) मनीआर्डर से हमें अलग से भेज दें।

—स्थायी ग्राहक बनने के लिए उचित है कि १२) का वार्षिक मूल्य ग्राहक बनने की सूचना के पत्र के साथ ही मनीआर्डर से भेज दिया जाय।

—वी० पी० पी० से पत्रिका को मँगवाने की स्थिति में वी० पी० पी० और रजिस्टरी का ॥) का अतिरिक्त खर्च ग्राहक को देना होगा।

प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

१ फैज बाज़ार
दिल्ली

हिमालय हाऊस
हार्नबी रोड, बम्बई १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४८४ से आगे]

आशा नहीं की जा सकती ।

हम सभी जानते हैं कि हमारे लेखकों के पास चाहे शब्द अर्थ का कोश जितना बड़ा क्यों न हो, उनके पास द्रव्य-प्रायः नहीं के बराबर होता है । इस प्रसंग में इतना और कह देना असंगत न समझा जाना चाहिए कि यहाँ लेखक हमारा अभिप्राय पाठ्य-पुस्तकों और सस्ते मनोरंजन की ...ों के लेखकों से नहीं है । इसका दुष्परिणाम हमारे ...ने है । एक-से-एक प्रतिभा-सम्पन्न लेखक अपनी अनुदिन समस्याओं में उलझकर सच्चे साहित्य-कर्म से च्युत वा विरत जाते हैं। फलस्वरूप हम उत्कृष्ट देन से वंचित रह जाते ऐसी दशा में उन्होंने यदि कुछ दृढ़ता और साहस समेट लिखने का प्रयास किया भी तो प्रायः घटिया किस्म का ...हित्य दे पाते हैं जो न तो उनके मान-मर्यादा के अनुरूप ...ता है और न हमारे साहित्य का स्तर ऊँचा कर गौरव-वृद्धि कर पाता है । इसके लिए हम उन्हें इस अर्थ-पिशाच-में उतना दोषी भी नहीं ठहरा सकते, क्योंकि सम्मानपूर्ण ...का के अभाव में उन्हें बाध्य होकर अपने स्तर से नीचे ...ना पड़ता है । हमारा मतलब यह कदापि नहीं कि ऐसे ...ों के लिए कोई ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे ...के सामने कोई भौतिक समस्या ही न रह जाय और किसी ...ना-लोक के विचित्र प्राणी-मात्र रह जायँ । हमारा निवेदन ...ना इतना ही है कि ऐसी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए ...से उनके श्रम और साधना का एक प्रतिफल उनकी ...मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी हो । इसका सबसे ...वहारिक प्रयोग वा उपयोग यही हो सकता है कि उनकी ...ष्ट कृतियों की खपत की समुचित व्यवस्था रहे । इधर कुछ ...न सरकारों और केन्द्रीय सरकार द्वारा ऐसी कृतियों के ...कों को पुरस्कृत करने की व्यवस्था की गई जिनकी रचनाएँ ...ष्ट कृति समझी जाती हैं । हम ऐसे पुरस्कारों के महत्त्व स्वीकार करते हैं और यह मानते हैं कि इस प्रकार लेखक ...को अधिकाधिक उत्तम कृति प्रदान करने की प्रेरणा ...ती है । परन्तु सच बात तो यह है कि अन्य प्राणियों ...भाँति लेखक की भी भौतिक आवश्यकताएँ होती हैं चाहे ...वे ही वह न्यूनतम हों । इसलिए केवल प्रेरणा प्रदान कर ...लेखक से बहुत बड़ी आशा नहीं रख सकते । प्रेरणा के साथ-साथ पोषण भी आवश्यक तथा अनिवार्य है ।

आज दुर्भाग्यवश हमारे कुछ उत्साही 'हिन्दी-हितैषी' पुस्तकों की बाढ़ देखकर फूले नहीं समाते और देशीय ही नहीं विश्व-साहित्य के किसी भी अंग से होड़ लेने का दम भरते हैं । परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी साहित्य का उत्कृष्ट होना उसकी पुस्तकों की संख्या पर निर्भर नहीं करता, अपितु उसका स्तर ही उसका स्थान वा कोटि निश्चित करता है । यह एक तथ्य है कि हमारे पाठकों का ध्यान उत्कृष्ट साहित्य के अध्ययन की ओर कम जा पाता है । हमारे पाठकों में से अधिकांश या तो बाध्य होकर पाठ्य-पुस्तक वा गाइड पढ़ते हैं या सस्ते मनोरंजन के लिए बाजारू साहित्य पढ़ते हैं । ऐसे बाजारू साहित्य की बाढ़ और खपत से एक ओर जहाँ पाठकों की कुरुचि का परिचय मिलता है वहाँ दूसरी ओर हमारे अर्थ-लोलुप प्रकाशकों की कुप्रवृत्ति का भी उद्घाटन होता है । इस ओर से हमारी सरकारों की उदासीनता भी कम चिन्त्य नहीं है । किसी भी राष्ट्र के लिए इसे अहितकर समझा जाना चाहिए । इसलिए यह आवश्यक है कि इस

आदर्श नागरिक बनाने वाली
नवीनतम प्रकाशित पुस्तकें

(१) वीरता की कहानियाँ	(२) साहस की कहानियाँ
(३) आविष्कारकों की कहानियाँ	(४) शिक्षाप्रद कहानियाँ

निम्नलिखित शीघ्र ही प्रकाशित होंगी :

(१) मनोरंजन की बातें	(२) स्वास्थ्य की बातें
(३) शिष्टाचार की बातें	(४) विज्ञान की बातें
(५) गांधी और बच्चे	(६) जवाहर और बच्चे
(७) दूसरे देशों के बच्चे	(८) आदर्श बच्चे

मूल्य प्रत्येक का दस आने

शुद्ध हिन्दी लिखने के नियमों को पढ़िये

"हिन्दी शुद्ध लेख"

लेखक : आर० सी० मौद्गल, बी० ए०,

मूल्य आठ आने

दी इण्डियन पब्लिकेशन्स

हिल रोड, अम्बाला छावनी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि के प्रकाशन पर नियन्त्रण रखा जाय और सुरुचिपूर्ण स्वस्थ साहित्य के प्रकाशन को प्रश्रय तथा प्रोत्साहन प्रदान किया जाय। यही नहीं, सत्साहित्य को खरीदकर पढ़ने का वातावरण भी तैयार किया जाना चाहिए। जो थोड़े-बहुत सुरुचि-सम्पन्न पाठक हैं भी उनमें से कम ही ऐसे हैं जो पुस्तकों को खरीदकर पढ़ा करते हैं। इस तथ्य की ओर पाठकों का ध्यान जाना अभीष्ट है।

इस प्रसंग में हमारे सुधी पाठकों को प्रायः यह कहते हुए सुना जाता है कि आज की आर्थिक स्थिति में पुस्तकों के लिए बजट बनाना असम्भव-सा है। यहाँ पर हमारा उनसे विनम्र मतभेद है। हम आर्थिक कठिनाई और तज्जन्य परिस्थितियों की जटिलता को स्वीकार करते हैं। फिर भी, यदि सिनेमा और सिगरेट आदि के लिए बजट निकल आ सकता है तो कोई कारण नहीं कि पुस्तकों के लिए बजट न बन सके। यदि पाठकों की यह शिकायत हो कि उन्हें ऐसा साहित्य पढ़ने को नहीं मिल रहा है जिससे उनका ज्ञानवर्द्धन व मनोरंजन हो तो यह हमारे लेखकों के लिए विचारणीय है। परन्तु अपने अनुभव के बल पर यह कहा जा सकता है कि यदि ऐसी पुस्तक की खपत होती रहे तो सत्साहित्य को सुलभ कराने में हमारे लेखक और प्रकाशक पीछे नहीं रहेंगे। प्रायः पुस्तकों के मूल्य पर भी आक्षेप किया जाता है। इस सम्बन्ध में हम केवल इतना ही निवेदन करना चाहते हैं कि पुस्तकों की खपत पर पुस्तकों के मूल्य को नियन्त्रित करना सम्भव हो सकता है।

उपयुक्त समस्याओं और सम्भावनाओं पर विचार करते समय यह स्पष्ट हो जाता है कि सत्साहित्य की खपत से हमारे लेखकों तथा प्रकाशकों की समस्या जुड़ी हुई है। आदर्श अवस्था तो वह होगी जब हमारे सुरुचि-सम्पन्न पाठकों की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होगी और वे स्वयं पुस्तकें खरीदकर पढ़ने लगेंगे। परन्तु जब तक ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं हो जाती तब तक अधिकांश दायित्व को सँभालने का भार हमारी लोकप्रिय सरकारों पर ही निर्भर करता है। इसका एक सरल किन्तु प्रभावशाली उपाय यह भी हो सकता है कि हमारी सरकारें पुस्तकों की खरीद में पुरस्कृत पुस्तकों को सर्वप्रथम स्थान दें। यही नहीं, एक निश्चित संख्या में उनको खरीदकर अपने-अपने क्षेत्र के पुस्तकालयों में उनका वितरण करें। इस प्रकार ऐसे लेखकों और प्रकाशकों को उत्तमोत्तम पुस्तकों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

रुचि सम्पन्न तथा उपयोगी उपहार-भेंट और पुस्तकालयों के लिए अनूठा ग्रन्थ जिसकी प्रशंसा देश-विदेश में हो रही है !

भारतीय कसीदा

लेखक

जगदीश मित्तल : कमला मित्तल

भूमिका

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

दो प्रतिनिधि भारतीय कलाकारों द्वारा वर्षों के कठोर परिश्रम से प्रणीत, इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दुस्तान के कई उत्कृष्ट छापेखानों के सहयोग से सम्भव हो सका है।

- बढ़िया कागज पर छपे कसीदे के २१५ सादे और रंगीन नमूने।
- १८ हाफटोन चित्र और ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ-सामग्री।
- मजबूत जिल्द, नयनाभिराम तिरंगा कवर।
- आकार ६"×११"।

प्राप्ति स्थान

प्रकाशक :
सुरुचि प्रकाशन
'कनक', हिमायतनगर, हैदराबाद।

मुख्य वितरक :
राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि अखिल भारतीय रेडियो ने १३ भारतीय भाषाओं में रेडियो नाटक प्रतियोगिता करने का निश्चय किया है। प्रतियोगिता में रखे जाने वाले रेडियो-नाटकों की भूमिका अनिवार्यतः भारतीय ही होनी चाहिए।

प्रतियोगिता इन भाषाओं में होगी—हिन्दी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, असमी और काश्मीरी। हर भाषा के सर्वोत्तम पहले तीन रेडियो-नाटकों पर क्रमशः ५०० रु०, ३०० रु०, तथा १०० रु० के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार दिये जायँगे। नाटक उच्च स्तर के होने चाहिएँ। यदि वे घटिया किस्म के हुए तो हो सकता है कि कोई पुरस्कार न दिया जाय या केवल द्वितीय व तृतीय पुरस्कार ही दिये जायँ। एक पुरस्कार कई नाटक लेखकों के बीच बाँटा भी जा सकता है।

प्रतियोगिता के लिए भेजी जानेवाली पांडुलिपियाँ सभी रेडियो स्टेशनों में ली जा सकेंगी। विभिन्न भाषाओं में प्रतियोगिता का कार्य-संचालन नीचे लिखे अनुसार रेडियो स्टेशन होगा—

दिल्ली—हिन्दी, उर्दू और पंजाबी; बम्बई—गुजराती, मराठी और कन्नड़; कलकत्ता—बंगला, उड़िया और असमी; मद्रास—तमिल, तेलुगु और मलयालय; और श्रीनगर—काश्मीरी। रचनाएँ भेजने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त, १९५४ है। सितम्बर के अन्त तक निर्णय घोषिन कर दिया जायगा।

◈ ◈ ◈

श्री 'प्रवासी', मार्फ़त अवधनारायण मिश्र, इशाकचक, भागलपुर १, लिखते हैं कि उनके पास एक कविता-संग्रह, दो कहानी-संग्रह, एक एकांकी-संग्रह तथा एक बालोपयोगी कहानी-पुस्तक प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशकों से पैसे लेने का इरादा नहीं है, किन्तु एक निश्चित अवधि के अन्दर रचनाओं को प्रकाशित कर देने की ईमानदारी उन्हें बरतनी होगी। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री शंकर पुणतांबेकर, स्टेशन रोड, भेलसा (म० भा०) से लिखते हैं—निम्नलिखित पुस्तकों के लिए प्रकाशकों की आवश्यकता है। इच्छुक संस्थाएँ पत्र-व्यवहार करें: (१) **मनुष्य का मोल**, सात एकांकी। भूमिका, डॉ० रामकुमार वर्मा, पृष्ठ-संख्या १५०। (२) **मिट्टी का पुतला और कल्याणी**, दो एकांकी। पृष्ठ-संख्या १२५। (३) **हरियाली और काँटे**, सामाजिक उपन्यास। पृष्ठसंख्या २००।

◈ ◈ ◈

कुमारी मंजुदास मार्फ़त श्री जे० दास, जी—२—ओल्ड, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी, बनारस, के पास कहानियों का एक संग्रह **बिखरे फूल** है। कहानियाँ मौलिक तथा सुन्दर हैं; पुस्तक ७-८ फ़र्मे की होगी। लेखिका के बनाये गए कुछ चित्र भी पुस्तक में छापे जा सकते हैं। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

कु० छत्रसिंह, भांडेरी फाटक, दतिया, "आधुनिक शैली की ४१ सरस कविताओं का मेरा संग्रह, जो प्रकृति-वर्णन और राष्ट्रीयता के भावों से पूर्ण है, प्रकाशनार्थ तैयार है। कलात्मक रूप से शीघ्र छापने की इच्छा रखने वाले कोई प्रकाशक अपनी ही शर्तों पर प्राप्त कर सकेंगे।"

◈ ◈ ◈

"मेरे पास निम्न दो पुस्तकें हैं; जो भी प्रकाशक उनको प्रकाशित करना चाहें, निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें: (१) **महाकवि तुलसी**, एक परीक्षोपयोगी अध्ययन। पृष्ठ १५०। (२) **गांधी के अनमोल बोल**, गांधीजी के समय-समय पर कहे हुए सूत्रों का संकलन। जो कोई प्रकाशक किसी अन्य साहित्यिक या परीक्षोपयोगी पुस्तक लिखवाना चाहें, पत्र-व्यवहार करें।

सत्यदेव राव, जौन्स गंज, मैरोंगंज, अजमेर।"

[शेष पृष्ठ ४८८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

उपन्यास तथा कहानी

शराबी	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	३ ८ ०
सिद्धार्थ	हरमन हेसः अनु० महावीर अधिकारी :	२ ० ०
मानव की परख	देवीदयाल सेन	३ ८ ०
जर्जर हथौड़े	बरुआ	६ ० ०
डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	५ ० ०
अमृत और विष	अरुए० एम० ए०	२ ४ ०

साहित्यिक, काव्य-गद्यकाव्य

हिन्दी-निबन्धकार	जयनाथ 'नलिन'	६ ० ०
सन्तुलन	प्रभाकर माचवे	४ ० ०
हिन्दी-काव्यालंकारसूत्र	आचार्य विश्वेश्वर	१२ ० ०
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ	डॉ० सावित्री सिन्हा	८ ० ०
अनुसन्धान का स्वरूप	डॉ० सावित्री सिन्हा	३ ० ०
मन की बातें	गुलाबराय	३ ८ ०
प्राणोत्सर्ग	देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'	१ ८ ०
माला	डॉ० सोमनाथ गुप्त	० १२ ०

काम विज्ञान

सैक्स का स्वभाव	मन्मथनाथ गुप्त	३ ० ०

अर्थशास्त्र

सुगम सामान्य अर्थशास्त्र	बी० एम० भाटिया	६ ० ०

बालोपयोगी सचित्र पुस्तकें

सुन्दर कहानियाँ	राजबहादुर सिंह	१ ० ०
कथा मंजरी	नागार्जुन	१ ० ०
बाल मेला	शम्भूनाथ 'शेष'	१ ० ०
बूढ़े बच्चे	रामचन्द तिवारी	१ ८ ०

सचित्र लोक कथाएँ

विन्ध्य प्रदेश की लोक कथाएँ	श्रीचन्द जैन, अम्बाप्रसाद श्रीवास्तव	१ ० ०
ब्रज की लोक कथाएँ	आदर्श कुमारी यशपाल	१ ० ०
पंजाब की लोक कथाएँ	पंछी तथा बेदी	१ ० ०
बंगाल की लोक कथाएँ	मन्मथनाथ गुप्त	१ ८ ०

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली ६.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीराईट के नियम तथा

रूस में रायल्टी की व्यवस्था

आज के रूस में प्रचलित कापी-राईट आदि के कानूनों का परिचय इस लेख में दिया गया है।

…के ऑल यूनियन रजिस्टर ऑफ़ ऑथर्स कापी-राईट्स …की एक देशव्यापी संस्था का ध्येय लेखकों के अधिकारों …क्षा करना है। सब लेखक इस संस्था को अपने लेखन-कार्य …की सूचना देते हैं। रूस में प्रकाशन के व्यवसाय का …करण होने से लेखकों व प्रकाशकों के बीच का संघर्ष …हो चुका है, और दोनों का ही ध्येय जनता की सेवा …बन गया है।

लेखकों की कृतियों के कापीराईट से सम्बन्धित पहला …लेनिन के हस्ताक्षरों से १९१८ के नवम्बर मास में …त हुआ था। इस आदेश द्वारा, तथा बाद की सभी …री घोषणाओं द्वारा, शासन ने समाजवादी सिद्धान्तों के …र लेखकों को उनकी कृतियों के लिए पुरस्कार मिलने की …दी।

रूस में सब प्रकार की साहित्यिक रचनाओं को उनके स्तर अनुसार तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। …न-संस्था से अनुबन्ध होने पर लेखकों को इस विभाजन अनुसार पहली, दूसरी तथा तीसरी श्रेणी की रचनाओं के …प्रत्येक ४०,००० लिखित अक्षरों पर (शब्दों पर नहीं) …: ४०००, ३००० तथा १५०० रूबल (रूबल = …रुपया) दिये जाते हैं। पहला मौलिक संस्करण १५००० …ों का होता है, परन्तु रूस में कई-एक रचनाओं की एक …से तीन लाख तक प्रतियाँ छपती हैं। यदि एक संस्करण …ने वाली प्रतियों की संख्या १५,००० से अधिक हो …लेखक को अगले १५,००० के लिए मौलिक पुरस्कार का …प्रतिशत (अर्थात् १२००, ९०० तथा ४५० रूबल) …मिलते हैं। दूसरे तथा तीसरे संस्करण पर भी मौलिक पुरस्कार की ६० प्रतिशत रकम दी जाती है। १५,००० प्रतियों के चौथे, पाँचवें, छठे तथा सातवें संस्करण पर मौलिक पुरस्कार का ५० प्रतिशत, आठवें तथा अगले संस्करणों पर ४० प्रतिशत मिलता है। पुनर्मुद्रण की दशा में भी पुरस्कार इसी दर से दिया जाता है।

कविता के लिए उपर्युक्त श्रेणि-विभाजन के अनुसार मौलिक पुरस्कार प्रत्येक पंक्ति के हिसाब से ७, १४ अथवा २० रूबल का है, और प्रथम संस्करण १०,००० प्रतियों का माना जाता है। इससे बड़े संस्करण तथा पुनर्मुद्रण पर उसी हिसाब से पुरस्कार दिया जाता है जिस हिसाब से कि गद्य-कृतियों पर।

रंगमंच की अभिनेय कृतियों पर मौलिक पुरस्कार के अतिरिक्त बिकी हुई टिकटों से इकट्ठे धन पर प्रतिशत के हिसाब से पैसे भी लेखकों को दिये जाते हैं। संघ के कुछ राष्ट्रों में प्रत्येक 'शो' की आमदनी का १·५ प्रतिशत अंश लेखक को मिलता है। 'ऑपेरा' के लेखकों को २ प्रतिशत मिलता है। 'वेरायटी स्टेज' के लिए गद्य व पद्य लिखने वालों को आमदनी का ३ प्रतिशत मिलता है।

इस प्रकार रूस के कापीराईट नियमों से लेखकों को लोकप्रिय कृतियों के सृजन के लिए निरन्तर प्रेरणा मिलती रहती है; प्रत्येक लेखक को उसकी कृतियों की लोकप्रियता के अनुपात से ही पुरस्कार प्राप्त होता है।

लेखक की मृत्यु के उपरान्त उसकी कृतियों का कापीराईट १५ वर्षों के लिए उसके उत्तराधिकारियों के पास रहता है।

ऑल यूनियन रजिस्टर ऑफ़ ऑथर्स कापीराईट्स के पास इस वक्त दस हज़ार के लगभग लेखकों तथा कलाकारों का लेखा-जोखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

रूस के संस्कृत विद्वान् भारत के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का रूसी अनुवाद प्रकाशित करने की तैयारियाँ कर रहे हैं।

'कौटिल्य अर्थशास्त्र' का संस्कृत से रूसी अनुवाद श्री एस० एफ० ओल्डनबर्ग व श्री ई० ई० ओबर मिल्लर ने किया। रूस के सुप्रसिद्ध भारत-तत्त्ववेत्ता श्री वी० आई० काल्यानोव इसे शीघ्र ही प्रकाशित करने की फिक्र में है। श्री काल्यानोव 'महाभारत' के प्रथम भाग का रूसी उल्था प्रकाशित कर चुके हैं।

श्री काल्यानोव मैं अपने एक वक्तव्य में कहा है—"अपने गुरुओं की भाँति मैं भी भारतीय साहित्य को रूसी में अनुवाद करने को अत्यधिक महत्त्व देता हूँ। कारण यह है कि इससे भारतीय जनता की सदियों पुरानी उस संस्कृति का हमें परिचय प्राप्त होता है, जो विश्व-संस्कृति का मुख्य अंग है।"

◈ ◈ ◈

'कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इंग्लिश लिट्रेचर' के समान हिन्दी साहित्य के इतिहास के प्रकाशन की योजना काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने बनाई है। इस इतिहास को आठ जिल्दों में छापा जायगा और कुल पृष्ठ-संख्या ६००० होगी। सम्पादन-समिति में डॉ० अमरनाथ झा (मुख्य सम्पादक), डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० चन्द्रबली पाण्डेय, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० राजबली पाण्डेय (संयोजक), पं० परशुराम चतुर्वेदी, डॉ० दीनदयालु गुप्त, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० कृष्णलाल, डॉ० सम्पूर्णानन्द, डॉ० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० रामअवध द्विवेदी, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, श्री लक्ष्मीनारायण सुधाँशु तथा डॉ० रामकुमार वर्मा हैं।

यह इतिहास एक वर्ष में प्रकाशित कर देने की योजना है।

◈ ◈ ◈

कौरनेल विश्वविद्यालय में वर्तमान भाषा-विभाग के अध्यक्ष डॉ० जौन गम्पर्स, अमरीका की हिन्दी में लिखित प्रथम पाठ्य-पुस्तक को तैयार कर रहे हैं।

इस मास इस पुस्तक को पूर्ण करने के बाद डॉ० गम्पर्स भारत आएँगे जहाँ पर वे एक वर्ष तक हिन्दी की ग्रामीण बोलियों का तथा उनके परिवर्तन से किस प्रकार शहर की हिन्दी को रूप मिला, अध्ययन करेंगे।

◈ ◈ ◈

विश्व व्यापी अर्थसंकट के बावजूद संसार के सभी देशों में १९५३ के वर्ष में सार्वजनिक शिक्षा पर औसतन १६ प्रतिशत अधिक व्यय किया गया। यह सूचना यूनेस्को द्वारा प्रचारित की गई है।

◈ ◈ ◈

[४८५ पृष्ठ का शेष]

◈ ◈ ◈

श्री सुरेशचन्द्र सिन्हा 'नील' (८।ई० पुरुषोत्तम नगर, इलाहाबाद १) के पास एक बाल कहानी-संग्रह तैयार है। जिन प्रकाशकों की रुचि हो, पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री ताराकान्त प्रकाश, राँची (बिहार) के पास निम्न-लिखित पुस्तकें तैयार हैं; जो प्रकाशक इन्हें प्रकाशित करना चाहें, लेखक से पत्र-व्यवहार करें। कुणाल, इन्कलाब तथा सौतेली माँ नाम के तीन नाटक, अग्निवीणा, काज़ी नज़रूल इस्लाम की कविताओं का हिन्दी अनुवाद, जीवन-साहित्य, दस साहित्यिक लेखों का संग्रह, तथा बन्दिनी-स्वतन्त्रता, स्वरचित कविताओं का संग्रह।"

●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

स्तालिन (एक जीवनी)

ले० राहुल सांकृत्यायन : मूल्य ३)

बड़े आकार में साफ़-सुथरी छपी, अनेकों ब्लाकों से सज्जित, हिन्दी में स्तालिन की एकमात्र प्रामाणिक, रोचक और शिक्षाप्रद जीवनी। पृष्ठ-संख्या २७२।

चीनी जनता के बीच

ले० प्रो० जगदीशचन्द्र जैन : मूल्य ४)

लेखक खुद जनवादी चीन की सबसे बड़ी शिक्षा-संस्था पेकिंग यूनिवर्सिटी में सवा साल तक हिन्दी का अध्यापक रह चुका है। पुस्तक अनेकों ब्लाकों से सज्जित है और उसमें चीन की वर्तमान अवस्था, उसके इतिहास, भाषा-साहित्य, कला-संस्कृति, धर्म-दर्शन आदि की झांकियाँ दी गई हैं। पृष्ठ संख्या २५६।

भारत : आदिम साम्यवाद से दास-प्रथा तक का इतिहास

ले० श्रीपाद अमृत डांगे : मूल्य ३।।)

भारत के प्राचीन इतिहास को जनवादी और मार्क्सवादी तरीके से पेश करने का यह पहला प्रयास है जिसकी सराहना सभी विचारों के इतिहासकारों ने एक स्वर से की है। पृष्ठ-संख्या २२४।

भारत पर अमरीकी फंदा

ले० एल० नटराजन : मूल्य ३)

पुस्तक में अठारहवीं शताब्दी से लेकर आज तक के अमरीकी शासकों की भारत सम्बन्धी नीतियों का खुलासा स्वयं सरकारी दस्तावेजों, तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर रोचक, शिक्षाप्रद और निष्पक्ष तरीक़े से दिया गया है। पृष्ठ-संख्या २६०।

रंगरूट (उपन्यास)

ले० बरेन बसु : मूल्य ४)

पराधीन और युद्ध-कालीन भारतीय नौजवानों के भावों-विचारों, आकांक्षाओं और मजबूरियों का मर्मस्पर्शी चित्रण। पुस्तक अनेकों ब्लाकों से सज्जित है और इसका अनुवाद दुनिया की कई प्रमुख भाषाओं में हो चुका है। यह उपन्यास हमारी पीढ़ी के प्रतिगामी लेखकों के लिये एक चुनौती और प्रगतिशील लेखकों के लिये एक कसौटी बन गया है। पृष्ठ-संख्या ३३२।

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड

इरविन अस्पताल के सामने, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपम साहित्यिक पुस्तकें

निबन्ध और रेखाचित्र

संगम और संघर्ष—डॉक्टर रांगेय राघव २॥)
विचार धारा—डॉ० अमरनाथ झा (प्रेस में) ३॥।)
संस्कृति और साहित्य—डॉ० रामविलास शर्मा ३॥)
२ साहित्य निबंधावली—राहुल सांकृत्यायन ३॥।)
२ दिमागी गुलामी ,, ॥।)
निबंध प्रबोध—डॉ० रामरतन २।)
प्रबंध-पूर्णिमा ,, ३)
१ निबंध प्रदीप—रामयतनसिंह 'भ्रमर' ४)
हवा पर—रामवृक्ष बेनीपुरी १॥)
हमारे कवि—'मानव' १)
भारतीय चिंतन—रांगेय राघव २॥)
मशाल—रामवृक्ष बेनीपुरी १॥)
मीमांसिका—शिवनाथ २॥)
रेखाचित्र—मुंशी लीलावती ३)
भाषा साहित्य और संस्कृति—डॉ० रामविलास शर्मा ४॥)

काव्य शास्त्र

काव्यालोक—गोपीनाथ शर्मा १)
भाषा भारती—डा० त्रिलोकीनाथ दीक्षित २॥)
हिन्दी का सामान्य ज्ञान—श्रीहरि एम० ए०

आलोचना और साहित्यिक विकास

महाकवि देव—भोलानाथ तिवारी २॥)
सुन्दर दर्शन—त्रिलोकीनाथ दीक्षित ५)
मैथिलीशरण गुप्त—रामरतन भटनागर २॥)
२ हिंदी काव्यधारा—राहुल सांकृत्यायन ८)
२ मानस की राम कथा—परशुराम चतुर्वेदी ३॥)
२ सुमित्रानंदन पंत—विश्वम्भर 'मानव' ५)
२ कामायनी की टीका— ,, ५)
पंत की काव्य-चेतना में गुंजन—वासुदेव नन्दन ३)
आधुनिक गीति-काव्य—सच्चिदानन्द तिवारी २॥)
हिंदी नाटकों का विकास—शिवनाथ २॥)
महादेवी—विश्वम्भर 'मानव' (२॥
हिंदी भक्ति काव्य—डॉ० रामरतन भटनागर (प्रेस में) ॥२)
हिंदी गद्य— ,, ,, २॥)
हिंदी कविता—रामरतन भटनागर २॥)
साहित्य समीक्षा— ,, ,, २॥)
रामचन्द्रिका—परशोत्तम दास भार्गव २॥)
ध्रुवस्वामिनी—सिद्धनाथ तिवारी २॥)
कामायनी—रामरतन भटनागर २॥)
छायावाद— ,, ,, २॥)
रहस्यवाद— ,, ,, २॥)

विद्यापति—डॉ० रामरतन भटनागर २॥)
जायसी— ,, २॥)
तुलसीदास— ,, २॥)
सूरदास— ,, २॥)
नन्ददास— ,, ३॥)
केशवदास— ,, २॥)
कबीर— ,, २॥)
बिहारी— ,, २॥)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र— ,, २॥)
कवि निराला— ,, २॥)
प्रेमचन्द— ,, २॥)
कवि प्रसाद— ,, २॥)
गुप्तजी की कृतियाँ—श्यामनन्दन प्रसाद २॥)
चंद्रगुप्त—फूलचंद पाण्डेय २॥)
हिन्दी साहित्य—रामरतन भटनागर ५)
पन्त का युग और काव्य—यशदेव ५)
पंत : आधुनिक कवि—फूलचंद पाण्डेय ३॥)
एकांकी कला—रामयतन सिंह 'भ्रमर' २॥)
उद्धवशतक मीमांसा—कृष्णचंद वर्मा २॥)
मानस-मीमांसा—राजनीकांत शास्त्री ४)
बँगला के आधुनिक कवि—मन्मथनाथ गुप्त १॥)
कथाकार प्रेमचन्द— ,, ,, ७॥)
शरतचंद्र ३)
२ हिंदी काव्य धारा में प्रेम प्रवाह—परशुराम चतुर्वेदी ३॥)
१ संत काव्य—परशुराम चतुर्वेदी ६)
वैदिक साहित्य परिशीलन—रजनीकान्त शास्त्री ३)
हिन्दी साहित्य की जनवादी परंपरा—प्रकाशचन्द्र गुप्त २॥)

धर्म और दर्शन

२ दर्शन-दिग्दर्शन—राहुल सांकृत्यायन १२)
२ बौद्ध दर्शन— ,, ३॥)
२ प्रमाणवार्तिकम्— ,, ३०)
२ इस्लाम धर्म की रूपरेखा— ,, १॥)
धम्मपद—त्रिपिटिकाचार्य धर्मज्योति १॥)
गीताहृदय—स्वामी सहजानन्द सरस्वती १२)

भ्रमण जीवनी

२ मेरी जीवन-यात्रा—राहुल सांकृत्यायन ८)
२ राहुल यात्रावली भाग १—राहुल सांकृत्यायन ३)
२ मेरी योरोप यात्रा— ,, १॥।)
२ तिब्बत में बौद्ध धर्म— ,, १)
लंका-यात्रा—भिक्षुक धर्मरक्षित १॥)

किताब महल (डिपो ५) इलाहाबाद २
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

...चरित मानस' श्री विद्याधर महाजन द्वारा विरचित ...जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डालने वाला ...सोपानों का ब्रज और अवधी-मिश्रित काव्य है। ...भाषा सरल, सुबोध एवं शैली हृदयग्राही है। इस ...से जन-साधारण भी काव्यानन्द-लाभ उठाने के माध्यम ...धीजी के सिद्धान्तों के सरोवर में निमज्जन कर सकता ...इसका प्रकाशन हिन्दी भवन, जालन्धर-प्रयाग से हुआ ...। यह डिमाई साइज़ के एण्टिक कागज़ पर छपा है। ...पृष्ठ के इस सजिल्द ग्रन्थ का मूल्य ५॥=) ।

'बदलते दृश्य' में श्री राजवल्लभ ओझा ने अपनी ...यात्रा के संस्मरण प्रस्तुत किये हैं। यह यात्रा उन्होंने ...सरकार के आमन्त्रण पर उत्तर प्रदेशीय श्रमजीवी पत्र-...यूनियन का प्रतिनिधि होकर सन् १९५१ में की थी। ...पुस्तक में पाठकों को पश्चिमीय समाज-जीवन के विभिन्न ...पहलुओं की मीठी-कड़वी झलक मिलेगी। डायरी के रूप में ...यह संस्मरण-पुस्तक यात्रा-साहित्य में अपना विशेष ...बनाएगी, ऐसा हमारा विश्वास है। डिमाई साइज़ के ...पृष्ठ की एण्टिक कागज़ की सुन्दर मुद्रण और आकर्षक ...की यह पुस्तक ६) में मिल सकती है। इसका प्रकाशन ...हिन्दी भवन, जालन्धर-प्रयाग से हुआ है।

'विद्यार्थियों से' नामक पुस्तक में महात्मा गान्धीजी ...धर्म, चरित्र, हिंसा और अराजकता, राजनीति, शिक्षा, ...रचनात्मक कार्य, विवाह और सन्तति-निग्रह-सम्बन्धी ऐसे ...का संकलन प्रस्तुत किया गया है, जिनका विद्यार्थियों ...जीवन-निर्माण में उल्लेखनीय महत्त्व है। 'विविध' ...के अध्याय में 'माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य', 'मद्य-पान ...धूम्र-पान', 'व्यायाम' तथा 'विदेश-गमन' आदि विषयों ...सामग्री दी गई है। यह पुस्तक जहाँ विद्यार्थियों के जीवन-...में क्रान्तिकारी विचारों का निर्देश करती है, वहाँ समाज-सेवी कार्यकर्ता तथा शिक्षक भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इसका सम्पादन और अनुवाद क्रमशः श्री भारतन कुमारप्पा तथा श्री रामनारायण चौधरी द्वारा हुआ है। नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, द्वारा प्रकाशित क्राउन साइज़ के २२६ पृष्ठ की यह पुस्तक दो रुपये में प्राप्त हो सकती है।

'नई क्रान्ति के गीत' में श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय ने भूदान-सम्बन्धी चुनी हुई ३१ कविताओं का संकलन प्रस्तुत किया है। इसमें मो० क० गांधी तथा रवि ठाकुर के प्रिय गीतों के अतिरिक्त सर्व श्री मैथिलीशरण गुप्त, 'नवीन', 'दिनकर', रामनरेश त्रिपाठी, आदि प्रमुख कवियों की रचनाओं के साथ सन्त तुमड़ोजी के अमर वचन भी गुम्फित हैं। अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा द्वारा प्रकाशित ५४ पृष्ठ की यह पुस्तिका चार आने में प्राप्य है।

'दण्ड निरपेक्ष समाज-रचना' में श्री धीरेन्द्र भाई मजूमदार ने अहिंसक समाज के नव-निर्माण की रचना पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इससे भूदान-सम्बन्धी विविध पक्षों की जानकारी आसानी से हो सकती है। पुस्तिका प्रत्येक समाज-सेवी कार्यकर्ता के लिए एक सतर्क निर्देशक का काम कर सकती है। अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा द्वारा प्रकाशित ५८ पृष्ठ की यह पुस्तिका चार आने में मिल सकती है।

भारतवर्ष की विभूतियाँ ग्रेट इण्डिया पब्लिशर्स सीतावर्डी नागपुर से श्री डी० आर० टोलीवाल के सम्पादन में प्रकाशित हुई है। १८×२२—४ साइज के ३५६ पृष्ठ के इस ग्रन्थ में सन् १८५७ से १९५३ तक के भारत के उल्लेखनीय राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक उन्नायकों के जीवन और कार्यों के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी दी गई है। साथ ही प्रत्येक महापुरुष का चित्र भी देने का प्रयत्न किया गया है। इस ग्रन्थ से भारत के राष्ट्रीय, धार्मिक सामाजिक एवं साहित्यिक जीवन का इतिहास पाठक को प्राप्त हो सकता है। इस ग्रन्थ को सम्पादक ने सुविधा के अनुसार दो भागों में विभक्त किया है। पहले भाग में राजनीतिज्ञ, शासक और धारा-शास्त्रियों का परिचय दिया गया है और दूसरे में शिक्षा, वाणिज्य और विविध क्षेत्रों के उल्लेखनीय कार्यकर्ता। सुन्दर मुद्रण और आकर्षक कवर वाला यह ग्रन्थ १०) में मिल सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला—८

बाल-साहित्य

टॉमस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत १२ लेखों में से यह आठवाँ लेख प्रकाशित हो रहा है; लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

हर पुस्तक-विक्रेता, यहाँ तक कि विषय-विशेष की पुस्तकों का विक्रेता भी, अपने यहाँ बच्चों के साहित्य का एक अलग विभाग रख सकता है। मैंने देखा है कि इंग्लैण्ड में तो वे पुस्तक-विक्रेता, जिनके यहाँ बच्चों के लिए कोई किताब मिलती ही नहीं थी, अब बच्चों की किताबों के अलग बड़े विभाग चला रहे हैं; बल्कि यहाँ तक कि कुछ तो बाल-साहित्य बहुत अधिक संख्या में रखते और बेचते हैं।

दुकान कितनी ही छोटी क्यों न हो, बच्चों की किताबों का विभाग उसमें आसानी से बनाया जा सकता है और जरूर बनाया जाना चाहिए। जरूरी नहीं है कि एक वर्ष के दौरान में आपके यहाँ का स्टाक बहुत बड़ा हो बल्कि बेहतर यह है कि आप नये-नये प्रकाशन ही अपने यहाँ रखें।

चित्रों की पुस्तकें, कार्डबोर्ड की पुस्तकें आदि बालकों के लिए अच्छी होंगी। याद रहे कि पुस्तकों की छपाई व आकर्षण ही उनकी बिक्री की गारण्टी हो सकता है। गन्दी और भद्दी पुस्तकें बच्चों को आकर्षित नहीं कर सकतीं। इसलिए महँगी सही, पर अच्छे स्तर की पुस्तकें लीजिए जिनमें प्रख्यात कलाकारों के द्वारा चित्रादि बने हों। गन्दी व भयावनी लगने वाली पुस्तकें न तो माता-पिता ही बच्चों के लिए पसन्द करेंगे और न बच्चे ही उन्हें लेना चाहेंगे। इसलिए पुस्तकों की बिक्री में आकर्षण का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए तैयार करना व उनमें उनके प्रति रुचि पैदा करना एक बहुत बड़ा और महत्त्व का काम है। इसलिए पुस्तक-विक्रेताओं के कर्मचारियों का कर्तव्य है कि वे बच्चों के साथ बड़ी सावधानी, नम्रता व मुहब्बत का व्यवहार करें। बच्चे को देखकर उसे टाल देना या उसकी किसी ग़लती पर उसे झिड़क देना ग़लत होगा, बल्कि उन्हें तो आज़ादी होनी चाहिए दुकान में घूमने व पुस्तकें देखने की। ऐसा होगा तभी वे अपने बचपन से ही पुस्तक-प्रेमी बनेंगे और आगे चलकर आपकी बड़ी पुस्तकें खरीदेंगे। इसलिए उन्हें अभी से प्रोत्साहित करना न केवल आपकी दुकान के लिए बल्कि बालक के अपने भविष्य के लिए भी बड़ा लाभप्रद सिद्ध होगा।

बच्चों के साहित्य में भी यदि वर्गीकरण किया जाय तो लाभ होगा, क्योंकि सभी पुस्तकें एक साथ रखने से बच्चा उलझन में पड़ जायगा और उम्र का खयाल रखे बिना ग़लत किताब उसे दे दी जायगी। इसलिए विभिन्न आयु के बालकों के लिए मुनासिब व उनकी समझ में आने योग्य पुस्तकें यदि अलग अलग रखी जायँ तो अच्छा है।

इस प्रकार की व्यवस्था से बच्चों को भी सुभीता होगा, और उनके माता-पिता या प्रौढ़ व्यक्ति, जो उन्हें किताबें दिलवाने आयें, उनको भी बच्चों के लिए पुस्तकें चुनने में आसानी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय

प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं के लाभार्थ भारत के प्रतिष्ठित पुस्तकालयों की सूचियाँ इस स्तम्भ में नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही हैं। पिछले अंकों में कुछ सूचियाँ छापी गई थीं; वही क्रम जारी रखा जा रहा है।

—नेताजी सुभाष कॉलेज लाइब्रेरी, २२७।२ लोअर सर्कुलर रोड, कलकत्ता।
—पी० के० कॉलेज लाइब्रेरी, कोंटाई (मिदनापुर)।
—प्रसन्नदेव बालिका महाविद्यालय लाइब्रेरी, जलपाइगुरी।
—प्रेज़ीडेंसी कॉलेज लाइब्रेरी, कलकत्ता-१२।
—फकीरचन्द कॉलेज लाइब्रेरी, डाइमंड हार्बर (२४ परगना)।
—बंगवासी कॉलेज लाइब्रेरी, १६ स्कॉट लेन, कलकत्ता।
—बंगाल इंजीनियरिंग कॉलेज लाइब्रेरी, बोटानिक गार्डन, हावड़ा।
—बर्दवान राज कॉलेज लाइब्रेरी, बर्दवान।
—बरहामपुर गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, बरहामपुर, मुर्शिदाबाद
—बरहामपुर कृशनाथ कॉलेज लाइब्रेरी, बरहामपुर, (मुर्शिदाबाद)।
—बशीरहाट कॉलेज लाइब्रेरी, बशीरहाट (२४ परगना)।
—बाँकुड़ा क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, बाँकुड़ा।
—बाँकुड़ा सम्मेलिनी कॉलेज लाइब्रेरी, बाँकुड़ा।
—बारीश कॉलेज लाइब्रेरी, बारीश (२४ परगना)।
—बालूरघाट कॉलेज लाइब्रेरी, बालूरघाट (वैस्ट दीनाजपुर)।
—बैप्टिस्ट कॉलेज लाइब्रेरी, १८१, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।
—बोलपुर कॉलेज लाइब्रेरी, बोलपुर (वीरभूम)।
—महाराजा मणीन्द्रचन्द्र कॉलेज लाइब्रेरी, २० रामकांत बोस स्ट्रीट, शामबाज़ार, कलकत्ता।
—महीशदल कॉलेज लाइब्रेरी, महीशदल (मिदनापुर)।
—मालदा कॉलेज लाइब्रेरी मालदा।
—मिदनापुर कॉलेज लाइब्रेरी, मिदनापुर।
—मुरलीधर गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, हिन्दुस्तान रोड, बालीगंज, कलकत्ता-२६।
—मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, ८८, कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता।
—मोतीझील कॉलेज लाइब्रेरी, डमडम (२४ परगना)।
—यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, दरभंगा बिल्डिंग्स, सेनेट हाऊस, कलकत्ता।
—यूनियन क्रिश्चियन ट्रेनिंग कॉलेज लाइब्रेरी, बरहामपुर।
—रानाघाट कॉलेज लाइब्रेरी, रानाघाट (नदिया)।
—रामकृष्ण मिशन विद्यामन्दिर लाइब्रेरी, बेलूर (हावड़ा)।
—रामनन्द कॉलेज लाइब्रेरी, बिशनुपुर, (बांकुड़ा)।
—रामपुर हाट कॉलेज लाइब्रेरी, रामपुरहाट (वीरभूम)।
—रामसदय कॉलेज लाइब्रेरी, अमता (हावड़ा)।
—रायगंज कॉलेज लाइब्रेरी, रायगंज (वैस्ट दीनाजपुर)।
—ला मार्टिनियर लाइब्रेरी, ११ लंडन स्ट्रीट, कलकत्ता-१६।
—लेक मैडिकल कॉलेज लाइब्रेरी, सदर्न एवेन्यू, कलकत्ता।
—लेडी ब्राबोर्न कॉलेज लाइब्रेरी, कलकत्ता।
—लोरेटो हाऊस लाइब्रेरी, ७ मिडलटन रोड, कलकत्ता।
—विक्टोरिया इंस्टीट्यूशन फार गर्ल्ज़ लाइब्रेरी, ७८ वीं अपर सर्कुलर रोड, कलकत्ता।
—विक्टोरिया कॉलेज लाइब्रेरी, कूचबिहार।
—विक्टोरिया कॉलेज लाइब्रेरी, कुर्सियांग (दार्जिलिंग)।
—विजयनारायण महाविद्यालय लाइब्रेरी, इताचुना, (हुगली)।
—विद्यासागर कॉलेज लाइब्रेरी, ३६, शंकरघोष लेन, कलकत्ता।
—विद्यासागर कॉलेज, लाइब्रेरी, नवद्वीप (नदिया)।
—विद्यासागर कॉलेज लाइब्रेरी, सूरी (वीरभूम)।
—विमन्स क्रिश्चियन कॉलेज लाइब्रेरी, ६ ग्रीक चर्च रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राग और त्याग" के यशस्वी लेखक श्री कमल शुक्ल के दो नये उपन्यास छपकर तैयार हैं :

मौलश्री

यदि अश्लीलता से रहित किसी उपन्यास की खोज में हों, जिसे आपकी बहू-बेटियाँ भी बिना किसी हिच-किचाहट के पढ़ सकें, तो "मौलश्री" को आप सहर्ष भेंट कर सकते हैं। उपन्यास के मुख्य स्त्री-पात्र 'मौलश्री' के चरित्र को पढ़कर आप झूम उठेंगे, यह हमारा दावा है।

पृष्ठ संख्या लगभग ४००, मूल्य ६) मात्र।

काले नगर में

वर्तमान युग में एक मध्यवर्ग ही ऐसा है जिसे समाज के कठोर आघात पग-पग पर सहन करने पड़ते हैं। ऐसे ही मध्यवर्ग के एक परिवार की दुःख-भरी कहानी इस उपन्यास में पढ़कर सहृदय पाठक उपन्यास के मुख्य पात्रों से सहानुभूति प्रकट किये बिना नहीं रह सकेंगे।

पृष्ठ संख्या लगभग १५०, मूल्य २।।) मात्र।

हमारे आगामी प्रकाशन :

काव्य सम्प्रदाय और वाद

लेखक—अशोककुमार सिंह

बीसवीं शताब्दी पूर्वार्द्ध के महाकाव्य

लेखक—डॉ० प्रतिपाल सिंह

हमारे प्रकाशनों की सूची के लिए लिखें :

ओरिएण्टल बुक डिपो

नई सड़क, देहली।

—विमन्स कॉलेज लाइब्रेरी, २०४, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता-६।
—विश्व भारती सैंट्रल लाइब्रेरी, शांतिनिकेतन।
—शांतिपुर कॉलेज लाइब्रेरी, शांतिपुर (नदिया)।
—शिवपुर दीनबन्धु कॉलेज लाइब्रेरी, ४१२।१ ग्रांडट्रंक रोड, शिवपुर (हावड़ा)।
—श्रीपतसिंह कॉलेज लाइब्रेरी, जयगंज (मुर्शिदाबाद)।
—श्यामसुन्दर कॉलेज लाइब्रेरी, अहार बेलमा (बर्दवान)।
—संस्कृत कॉलेज लाइब्रेरी, १, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता-१२।
—स्काटिश चर्च कॉलेज लाइब्रेरी, ३४, कार्नवालिस स्क्वेयर, कलकत्ता-६।
—सलेशियन कॉलेज लाइब्रेरी, सोनदा (दार्जिलिंग)।
—सिटी कॉलेज लाइब्रेरी, १३ मिर्ज़ापुर स्ट्रीट, कलकत्ता।
—सिटी कॉलेज लाइब्रेरी, १०२।१ एम्हर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।
—सिलीगुरी कॉलेज लाइब्रेरी, सिलीगुरी (दार्जिलिंग)।
—सुरेन्द्रनाथ कॉलेज लाइब्रेरी, २४ हरीसन रोड, कलकत्ता।
—सुरेन्द्रनाथ लॉ कॉलेज लाइब्रेरी, २४ हरिसन रोड, कलकत्ता।
—सेठ आनन्दराम जयपुरिया कॉलेज लाइब्रेरी, १०, राजा नवकिशन स्ट्रीट, कलकत्ता-५।
—सेरामपुर कॉलेज लाइब्रेरी, सेरामपुर (हुगली)।
—सैंट ज़ेवियर्स कॉलेज लाइब्रेरी, ३०, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-१६।
—सैंट जोसफ कॉलेज लाइब्रेरी, ६६, बौ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।
—सैंट ज़ोसेफ कॉलेज लाइब्रेरी, नार्थ प्वाइंट, दार्जिलिंग।
—सैंट पॉल कॉलेज लाइब्रेरी, ३३।१, एम्हर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।
—सैंट्रल कलकत्ता कॉलेज लाइब्रेरी, ८ वैल्ज़ली रो स्ट्रीट, कलकत्ता।
—हावड़ा गर्ल्ज़ कॉलेज लाइब्रेरी, १४३, शिवपुर रोड, हावड़ा।
—हिंदू कॉलेज लाइब्रेरी, गोबरडंगा (२४ परगना)।
—हुगली मोहसिन कॉलेज लाइब्रेरी, चिनसुरा (हुगली)।
—हुगली विमन्स कॉलेज लाइब्रेरी, चिनसुरा (हुगली)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

इण्डिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ

—अकार्बनिक रसायन, ले० पंचानन डे। अकार्बनिक रसायनशास्त्र। ६॥)

—माध्यमिक रासायनिक गणना, ले० शम्भूदयाल। इंटरमीडियेट के छात्रों के लिए रासायनिक गणना की पुस्तक। १॥।)

—स्थिति विज्ञान, ले० आर० एस० वर्मा। इंटरमीडियेट के छात्रों के लिए स्थिति-विज्ञान की पुस्तक। ४)

इयन पब्लिशिंग हाउस, कासगंज

—विन्ध्य वैभव, ले० हरिमोहनलाल श्रीवास्तव। विन्ध्य के वीरों की विन्ध्य-सरकार से पुरस्कृत बालोपयोगी कहानियाँ। ॥=)

पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

—एक सूत्र, ले० गोविन्दवल्लभ पन्त। उपन्यास। ४)

—पतन, ले० भगवतीचरण वर्मा। उपन्यास का पुनर्मुद्रण। ४)

—कुण्डली-चक्र, ले० वृन्दावनलाल वर्मा। उपन्यास का पुनर्मुद्रण। ४)

—प्रेम द्वादशी, ले० प्रेमचन्द। कहानी-संग्रह का पुनर्मुद्रण। ३)

द्र कार्यालय, भिवानी

—मीनाकारी शिक्षक: द्वितीय भाग, ले० चन्दूलाल वर्मा। आभूषणों पर आलोक-चित्र बनाने की कला।

न प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर

—ग्राम सुधार पदावली, ले० स्व० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 'हरिऔध' जी के ग्रामीण-जीवन से सम्बन्धित गीतों का संकलन। १)

—लोकमान्य गंगाधर तिलक, ले० शम्भूनाथ सक्सेना। सरल, सुबोध प्रामाणिक जीवनी। भूमिका एन० वी० गाडगिल। १)

—गांधी वचनामृत, ले० शम्भूनाथ सक्सेना। गांधी जी की अमर सूक्तियों का संग्रह, और दस पृष्ठों का विवेचन। १)

देहाती पुस्तक-भण्डार, दिल्ली

—वीविंग कैल्कुलेशन, ले० एस० एन० चोपड़ा। हाथ-खड्डी। ४)

—मुजरिम, ले० सागर बालोपुरी। सामाजिक उपन्यास। २॥)

—बेगुनाह, ले० सागर बालोपुरी। सामाजिक उपन्यास। २॥)

—इलैक्ट्रिक लाइटिंग, ले० नरेन्द्रनाथ बी०एस सी०। ६)

नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ

—विचार-वीथिका, ले० दुर्गाशंकर मिश्र। साहित्यिक निबन्धों का संग्रह। ३॥)

—अनुभूति और अध्ययन, ले० दुर्गाशंकर मिश्र। साहित्यिक निबन्ध। ३॥)

—पतन की राहें, ले० ब्रह्मनारायण शर्मा 'विकल'। सामाजिक उपन्यास। २॥)

—स्त्रियों के कर्त्तव्य, ले० चन्द्रकला देवी पांडेय। स्त्रियोपयोगी, शिक्षाप्रद। ३)

पुस्तक-मन्दिर, मथुरा

—फलों की खेती व व्यवसाय, कृषि एवं उद्योग सम्बन्धी। १॥)

—साग-सब्जी की खेती व व्यवसाय, कृषि एवं उद्योग। १॥)

भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद

—कंकाल महल, ले० नकाबपोश भेदी। जासूसी उपन्यास। १)

भारती प्रकाशन, भागलपुर—२

नई प्रतिभाएँ: १, ले० दस नये कवि। कविता संग्रह। २)

—नई प्रतिभाएँ: २, ले० दस नये कहानीकार। कहानी-संग्रह। २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—नई प्रतिभाएँ : ३, ले० दस नये एकांकीकार । एकांकी-संग्रह । २)

भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ

—परीक्षा, ले० रघुवीरशरण 'मित्र' । एकांकी का द्वितीय संस्करण । २)

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस

—चौलुक्य कुमार, ले० लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० । ऐतिहासिक उपन्यास । ४)

—पहला कहानीकार, ले० रावी । ३)

मगध राजधानी प्रकाशन, पटना

—बुनियादी शिक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षण-विधि, ले० द्वारिकासिंह, डिप्टी डायरेक्टर, बेसिक एवं प्रायमरी एजुकेशन, बिहार । शिक्षण शास्त्र । ६)

—समाज शिक्षा—समाज-सेवा प्रदीपिका, ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री । डिप्टी डायरेक्टर, सोशल एजुकेशन । समाज अध्ययन । ४)

—निबन्ध पारिजात, ले० बमबमसिंह । निबन्ध-संग्रह । ३।।)

रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता ७

—जीवन-स्मृति, रवीन्द्रनाथ ठाकुर । अनु० धन्यकुमार जैन । रवीन्द्र साहित्य के १८वें भाग का पुनर्मुद्रण । २।)

राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, वर्धा

—मुहावरे और कहावतें, सम्पादित । संकलन । ।।।)

—राष्ट्रभाषा रचना भाग २, सम्पादित । हिन्दी लेखन सम्बन्धी जानकारी । ।।।)

शारदा मन्दिर, दिल्ली

—जलती चट्टान, ले० गुलशन नन्दा । सामाजिक उपन्यास । ३)

संगीत कार्यालय, हाथरस

—उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, ले० भारतखण्डे, अनु०: अरुणकुमार सेन । १९१६ में 'बड़ौदा ऑल इण्डिया म्यूजिक कान्फ्रेंस' में दिया गया संगीत सम्बन्धी भाषण । २)

—पिल्ला, ले० 'काका' । हास्यरस की कविताओं, पैरोडियों और फुलझड़ियों से ओतप्रोत सचित्र पुस्तक । २)

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

—जीवन-दर्शन, ले० अमरचन्द्र जी । उच्च जीवन के अभिलाषियों को शिक्षा । ४)

—सत्य-दर्शन, ले० अमरचन्द्र जी । सत्य के ऊपर दि[ये] गए प्रवचनों का संग्रह । २।)

—सन्मति महावीर, ले० श्री सुरेश मुनि । भगवान् महावी[र] का जीवन चरित्र व उपदेश । १।)

सस्ता साहित्य मण्डल, दिल्ली

—किरातार्जुनीय, भारवि । संस्कृत ग्रन्थ का कथासार ।=)

—बीमारी कैसे दूर करें ?, ले० मो० क० गांधी । प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोगों की चिकित्सा । ।=)

—जीवन और शिक्षण, ले० विनोबा भावे । विनोबा जी के जीवन और शिक्षण सम्बन्धी उपयोगी भाषण । २)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—धरती की सन्तान, ले० हर्षनाथ । ग्राम जीवन के कथा[]नक पर लिखा हुआ समस्यामूलक उपन्यास । ४)

साहित्य सदन, सूर्यगढ़ (जिला मुंगेर)

—द्वादशी, ले० महादेव झा । 'सुदेव' साहित्यिक निबन्धों का संग्रह । छात्रों के लिए उपयोगी । २)

—अध्यापक, ले० महादेव झा 'सुदेव' । प्रबन्ध कविता ।।)

सुदर्शन प्रकाशन, आगरा

—हमारे बालक, ले० हरिमोहनलाल श्रीवास्तव । बाल मनोविज्ञान पर सामाजिक शिक्षा के लिए सरस व सुबोध भाषा में । १)

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ४

—हिन्दी कथा साहित्य, ले० पदुमलाल बख्शी, 'सरस्वती' सम्पादक । उपन्यास-कहानियों की आलोचना । ४)

हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस

—भारतीय और योरोपीय शिक्षा का इतिहास, ले० आ० सीताराम चतुर्वेदी । ५)

ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर गेट (मुंगेर)

—हड्डियों का ढाँचा, ले० गोविन्दसिंह । सामाजिक उपन्यास । ४)

—पतन का अन्त, ले० ओ३म्प्रकाश । सामाजिक उपन्यास । गरीब मजदूर का चित्रण ।

—लाल चोली, ले० सोमनाथ 'अकेला' । क्रान्तिकारी उपन्यास । ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई मास के प्रकाशन

आलोचना, साहित्य, व्याकरण, संस्कृति, निबन्ध, अलंकार

नारायण तिवारी, भोजपुरी भाषा और साहित्य, ६२५, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना १३॥)

दत्त 'इन्द्र,' अक्षर शास्त्र, १२८, क्राऊन, हिन्दी विश्वभारती, लखनऊ ३)

प्रसाद एम० ए०, महकवि हरिऔध और उनकी कला-कृतियाँ, ३०४, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ३।)

उपाध्याय, बौद्ध दर्शन मीमांसा, ५२५, क्राऊन, विद्याविलास प्रकाशन, काशी ६)

मोहन शर्मा, सम्पादक, निबन्ध-रत्न, १६६, क्राऊन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बर्धा १॥)

न्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्र-साहित्य, (भाग २५), १३३, क्राऊन, रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, कलकत्ता २।)

बाबू शर्मा, कविवर रत्नाकर और उनका उद्धव-शतक, १२८, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा १॥)

नाथ सक्सेना, जीवन के प्रश्न, १४४, क्राऊन, पु० मु०, नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर २)

न्द्र, काव्य-श्री (अलंकार), ११४, क्राऊन, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा १॥)

इतिहास तथा राजनीति

प्रकाश, हमारी माँगें, १९६, क्राऊन, ज्ञानप्रकाश मन्दिर, जमालपुर (मुँगेर) ३)

० एन० चतुर्वेदी, विश्व इतिहास की झाँकी, २४८, क्राऊन, हिन्दी विश्वभारती, लखनऊ ४॥)

विभाग एस० डी० एफ० ए०, रूसी संगीनों की छाया में, ८८, क्राऊन, प्राची प्रकाशन, कलकत्ता ॥)

नोद, प्रणवीर प्रताप, १२८, क्राऊन, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली २)

ताराम गोयल, कम्युनिस्ट पुराण, ४६, डिमाई, प्राची प्रकाशन, कलकत्ता ।≡)

उपन्यास

मृतधर नल्ले, नारी, १२०, क्राऊन, अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली २॥)

श्वरीप्रसाद शर्मा, अनुवादक, अन्नपूर्णा का मन्दिर, १४४, क्राऊन, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई १॥)

ष्णबिहारी दुबे, प्रकृति और प्रारब्ध, १५०, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ २)

विन्दवल्लभ पन्त, नौजवान, क्राऊन, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ ५)

री वारेली, पाप का प्रतिकार, २५६, क्राऊन, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ४)

योतिमलानन्द, अगली साँझ, १८०, क्राऊन, विजय प्रकाशन, दिल्ली २॥)

नारायण पाण्डेय, अनुवादक, संध्या, ३५०, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ४)

मसागर शास्त्री, कर्म साधना, २२८, क्राऊन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४)

वण्य प्रभा राय, राजनीगन्धा, १६०, क्राऊन, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, प्रयाग २)

न्दावनलाल वर्मा, कुण्डली चक्र, २५६, क्राऊन, पु० मु०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली ४)

रभानुसिंह (प्रताप), अन्तर्द्वन्द्व, २७०, क्राऊन, नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ३॥)

जारीप्रसाद द्विवेदी, बाणभट्ट की आत्म-कथा, ३२८, क्राऊन, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ४॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

अयोध्याप्रसाद गोयलीय, शेरो सुखन, (भाग ५), २५६, क्राऊन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ३)
कमला चौधरी, आपन मरन जगत कै हाँसी, १२५, डिमाई, साहित्य सेवा सदन, मेरठ ३)
जगदीशचन्द्र मिश्र 'सुरेश,' विमना, ५४, क्राऊन, साहित्य सदन, सूर्यगंज (बिहार) १)
पन्नालाल जैन, धर्म शर्माभ्युदय, २५८, क्राऊन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ३)
बेढ़ब बनारसी, बेढ़ब की बहक, १३६, क्राऊन, कल्याणदास ब्रदर्स, बनारस २)
महादेव झा 'सुदेव,' रक्षा-सूत्र, ३२, क्राऊन, साहित्य सदन, सूर्यगंज (बिहार) ।)
रूपकान्त शास्त्री, महादेव झा 'सुदेव,' विनोबा पुकार, १६, क्राऊन, साहित्य सदन, सूर्यगंज (बिहार) =)

कहानी

तिलक, बीबी के लैक्चर, क्राऊन, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ २॥)
माईदयाल जैन, बाहुबली और नेमिनाथ, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
मार्कण्डेय, पान फूल, १५२, क्राऊन, नवहिन्द प्रकाशन, हैदराबाद २॥)
रमाकान्त मिश्र, आधुनिक कहानीकार और उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, रायल, लखनऊ प्रिंटिंग हाउस, लखनऊ ३॥)
वासुदेवशरण अग्रवाल, हर्षचरित, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
सम्पादित, कहानी-रत्न, १७०, क्राऊन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १॥)

कृषि

कृषि और सरल-विज्ञान, (भाग २), ११२, क्राऊन, राजकमल कला प्रकाशन, बनारस ।≡)

जीवनी

देवदास गांधी, अनुवादक, एक आदर्श महिला, ९६, क्राऊन, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १)

नाटक

रघुवीरशरण मित्र, भारत माता, १०४, क्राऊन, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ २)
रामचन्द्र वर्मा, अनुवादक, राणा प्रतापसिंह, १९६, क्राऊन, पु० मु०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई २।)
वाली बोस, सेवक, ५८, क्राऊन, अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली ।।।)
प्र० रा० भुपटकर, एकांकी-रत्न, १८१, क्राऊन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १॥)

बालोपयोगी

उषा मित्रा, पंचतन्त्र की कहानियाँ, ५२, क्राऊन, अमृत बुक कम्पनी, नई दिल्ली ।।।)
रामनारायण वर्मा, रामगोपाल शर्मा, नवीन चित्रकला, भाग १, २, ३, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा क्रमश : ।।।), ।।।-), ।।।=)
विष्णु प्रभाकर, बापू की बातें, ३२, क्राऊन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
श्रीचन्द्र दत्त, ज्योति-स्तम्भ, ३२, क्राऊन, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना ।।)

विविध

ओंकारनाथ शास्त्री, पागल, १६०, क्राऊन, साधना प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद ॥=)
जगदीश सहाय कुलश्रेष्ठ, संगीत शास्त्र, ८५, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस १)
प्रफुल्लकुमार मोदी, करलकवण, ४८, क्राऊन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी ।।।)
भातखण्डे, क्रमिक पुस्तक मालिका, ५४२, डबल डिमाई, संगीत कार्यालय, हाथरस ८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६''×८''। आधा पृष्ठ: ३$\frac{३}{४}$''×६'' या २$\frac{३}{४}$''×८''। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{३}{४}$''×३$\frac{३}{४}$''। एक कालम इंच : १''×२$\frac{३}{४}$''। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{१}{२}$''×६''।
- विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

साधारण स्थान

पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

विशेष स्थान

कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित : १००)।

- वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd No. D—594

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस एवं उत्कृष्ट साहित्य

- **आलमगीर**—(उपन्यास)

  मुग़ल बादशाहों में सबसे खूंरेज़, शक्तिशाली, धर्मोन्मत्त शाहंशाह औरंगज़ेब के शासन, चरित्र दरबार और स्वर्गोपम हरम की ज्वलन्त, रहस्यमय तथा षड्यन्त्रों से भरी चित्ताकर्षक कहानी, जिसे बार-बार पढ़ने पर भी आपको तृप्ति नहीं मिलेगी।

  लेखक—आचार्य चतुरसेन शास्त्री। मूल्य ५।||=)

- **किरात कन्या**—(कहानियाँ)

  सिद्धहस्त कवि तथा कहानीकार श्री द्विजेन्द्र एम० ए० की मर्मस्पर्शी कहानियाँ। सभी कहानियाँ अपनी अनोखी शैली, सुललित भाषा और चुस्त कथानक के कारण हिन्दी-कथा-साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान रखती हैं। एक बार पुस्तक हाथ में लेने के बाद सारी कहानियाँ बिना पढ़े आप नहीं छोड़ेंगे।

  कलाकार इन्द्र दुगड़ अंकित आवरण। आकर्षक जिल्द, डिमाई आठ पेजी। मूल्य ३)

- **आखिरी मंजिल**—(कहानियाँ)

  श्री राजेन्द्र की इन कहानियों में जहां रोमांस की रंगीनी और प्रेम का स्वप्नजाल है वहाँ क्षुधार्त्त मानवों की बिलखती कराह और दहेज की चक्की में पिसी निरीह नारी का व्योमभेदी चीत्कार भी है। आज ही मंगाएँ। आकर्षक तिरंगा कवर। सजिल्द पुस्तक। मूल्य २।||=)

- **विश्लेषण**—(आलोचनात्मक निबन्ध संग्रह)

  प्रेमचन्द और उनके उपन्यास, प्रसाद और उनके काव्य, कामायनी, महादेवी वर्मा, निराला, पन्त और उनके काव्य, साहित्य और काव्य की आधुनिक प्रवृत्तियां और भावधाराओं पर हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ और मर्मज्ञ आलोचक श्री इलाचन्द्र जोशी द्वारा साधिकार लिखित ये निबन्ध हिन्दी आलोचना साहित्य के अमूल्य रत्न हैं। प्रवेशिका से एम० ए० तक की परीक्षाओं के लिये परम उपयोगी तथा प्रत्येक विद्यार्थी और साहित्यप्रेमी के लिए संग्रहणीय।

  सजिल्द, सुन्दर गेटअप। मूल्य ३)

- **हंस और हंसा**—मूल्य ।=)
- **बन्दरमामा**—मूल्य ।=)

  दोनों पुस्तकें बाल-साहित्य में भाषा, शैली और रचना के दृष्टिकोण से अभिनव प्रयोग हैं।

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है • वयं रक्षामः—(उपन्यास)

आचार्य चतुरसेन शास्त्री का अद्भुत, विराट्, प्राग्वेदकालीन कथावस्तु पर आधारित उपन्यास। यह विश्व-उपन्यास-पद्धति को गहरी चुनौती है। इसके लिखने में लेखक ने अगाध अनुशीलन तथा अपनी अपरिसीम रचना-सामर्थ्य का परिचय दिया है। मूल्य ८)

शारदा प्रकाशन •
भागलपुर-१

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D—594
र्ष २ अक्तूबर, १९५४ अङ्क २ पूर्णाङ्क १४

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

क २।।) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

52

हित्यकार कन्हैयालाल मुन्शी की आत्मकथा के तीन खण्ड

गुरुकुल पत्रिका

आधे रास्ते
४।।)

सीधी चढ़ान
४।।)

मसिद्धि की खोज में
५)

न्यासों से भी अधिक रोचक

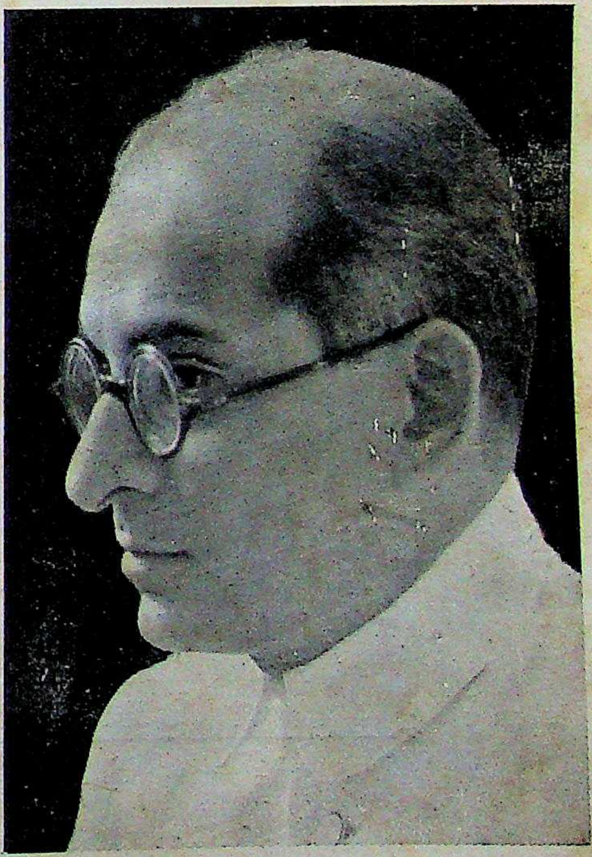

राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता और उसके बाद

भारत को स्वाधीनता मिलने के समय और इसके पश्चात दिए गए पंडित जवाहरलाल नेहरू के भाषणों का एक महत्त्वपूर्ण संग्रह। ४०३ पृष्ठ की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य: ५ रुपये, डाक खर्च अलग।

हमारा झंडा

"झंडा सभी राष्ट्रों के लिए एक अनिवार्यता है।" —बापू

भारत के राष्ट्रीय झंडे के विकास की कथा। मूल्य: ८ आने, डाक खर्च अलग।

भाइयो और बहिनो

१२ सितंबर और १४ अक्तूबर, १९४७ के बीच दिल्ली की प्रार्थना सभाओं में दिए गए गांधी जी के सारे उपलब्ध भाषणों का संग्रह एक जिल्द में। मूल्य सजिल्द: १ रु० ८ आने, डाक खर्च अलग।

हमारा संविधान

संक्षिप्त रूप में भारतीय संविधान का यह विवरण राजनीति के विद्यार्थियों एवं सामान्य जनता के लिए समान रूप से उपयोगी है। मूल्य: १ रुपया, डाक खर्च अलग।

मिलने का पता:

पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली-८

A.C.592.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक २ :
: पूर्णांक १४ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

अंक में हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार श्री ...नन्द हीरानन्द वात्स्यायन का एक लेख 'लेखक और ...' के नाम से छप रहा है। लेखक अपना उत्तरदायित्व ... वाले व्यक्तियों में से हैं और परखे बिना लेखनी ... आरोप उन पर नहीं लगाया जा सकता। उनके विचारों ...शक-वर्ग के सम्बन्ध में लेखक-वर्ग की धारणाओं ...निधि कहा जा सकता है। हम प्रकाशक-बन्धुओं से ... करेंगे कि वे इस लेख को ध्यान से पढ़ें।

...शकों का एक अंश अवश्य ही ऐसा है जिसकी ...एँ एवं कुप्रवृत्तियाँ निन्दनीय हैं। हिसाब-किताब ...न रखना, अधिक संख्या में किसी पुस्तक की प्रतियाँ ... कम बताना, वास्तविक लेखक का नाम न देकर ...ले उन व्यक्तियों का नाम दे देना जिनके हाथों में ...आदि की पुस्तकों की नियुक्ति के अधिकार हैं, आदि-...ई बातें अब भी कुछेक प्रकाशकों में देखी जाती हैं जो ... उनके हितों के लिए घातक ही सिद्ध होती हैं, पोषक ...लेकिन इधर प्रकाशकों में स्पष्ट ही अपने उत्तरदायित्व ...जागरूकता पैदा हुई है और आज पचासों ऐसी प्रका-...शनाएँ गिनाई जा सकती हैं जिनके व्यापार-व्यवहार ... कोई अंगुली नहीं उठा सकता।

...र दुर्भाग्य की बात है कि दुर्व्यवहारी प्रकाशकों के ...लेखक-वर्ग का एक अंश भी आपत्तिजनक तौर-तरीके ...ता है। इसके बहुत-से उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते ...हैं कहानी व एकांकी-लेखकों की एक ही कृति अलग-...नामों के विभिन्न संग्रहों में प्रकाशित होती रहती है; ... या कापीराइट की बिक्री पर अग्रिम पाकर भी ...को अपनी रचनाएँ नहीं देते; कई लेखक एक ही रचना पर कई-एक प्रकाशकों से अग्रिम वसूल कर लेते हैं; कई लेखक अन्य भाषाओं की कृतियों का अनुवाद करके उन पर अपने नाम की मुहर निस्संकोच लगा देते हैं। आज के हिन्दी-साहित्य के पाण्डित्य का छिछलापन इस अभ्यास से भी स्पष्ट हो जाता है कि जो लेख आकाशवाणी से भाषण-प्रसार के लिए लिखे जाते हैं, उन्हीं को पत्र-पत्रिकाओं में छपवा-कर पैसा वसूलने के बाद फिर पुस्तकाकार रूप में रायल्टी पर प्रकाशित कर दिया जाता है। घूम-फिर के वही निबन्ध फिर अन्य संकलनों में छपते रहते हैं। हिन्दी के एक ख्याति-प्राप्त प्रगतिवादी आलोचक की एक नई कृति हमें अभी देखने को मिली है जिसमें इसी लेखक-महोदय की एक तीन वर्ष पुरानी कृति को अक्षरशः उद्धृत किया गया है। इन दो पुस्तकों में भेद केवल इतना है कि अध्यायों के नाम तथा पुस्तक का नाम बदले हुए हैं तथा नई पुस्तक में दो नये अध्याय जोड़ दिये गए हैं (ये भी अन्यत्र छप चुके हैं)। पहली पुस्तक के कापीराइट का उल्लंघन हुआ है लेकिन लेखक ने तो अपनी रचनाओं की संख्या में एक की वृद्धि कर ही ली।

जिस प्रकार ऐसे अनुत्तरदायी लेखकों की वजह से समूचे लेखक-वर्ग को दोषी ठहराना अनुचित है, उसी प्रकार दुर्व्यव-हारी प्रकाशकों को वर्ग का प्रतिनिधि मानकर सभी को लांछित करना उचित नहीं। आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के श्रेष्ठ प्रतिनिधियों को सामने रखकर एक-दूसरे के विषय में मन्तव्य स्थापित करें। लेखन भी आज उसी प्रकार व्यवसाय है जैसे प्रकाशन। दो समध्येय व्यवसायों की सफलता के लिए चाहिए कि दोनों में सामञ्जस्य उत्पन्न हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नए प्रकाशन

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

लेखक
दशरथ ओझा एम. ए., पी-एच. डी.,

भूमिका लेखक
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

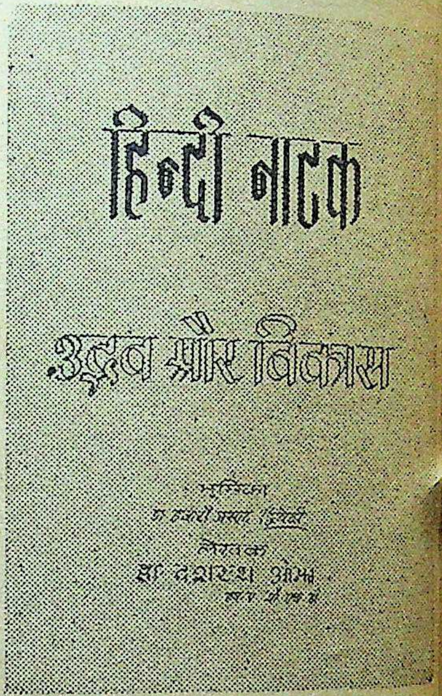

उपन्यास, कहानी

अपनी छाया : (आस्कर वाइल्ड के 'पिक्चर आफ डोरियन ग्रे' का हिन्दी रूपान्तर) ५)
उल्टा वृक्ष : (कृष्णचन्द्र का नया उपन्यास) ३)
काला सूरज : (कृष्णचन्द्र की नवीनतम कहानियाँ) २॥)

लोक-कथा

महापुरुषों की कथाएँ : (ले० आनन्द कुमार) १॥)
अमर कथाएँ : ,, १)
लोक कथाएँ : ,, १)
शिक्षाप्रद कथाएँ : ,, १)

सुगम अमर साहित्य

अभिज्ञान शाकुन्तल : (विराज एम० ए०)
किरातार्जुनीय : (इन्द्र विद्यावाचस्पति) २॥)
रघुवंश : (इन्द्र विद्यावाचस्पति)
कादम्बरी : (भगवतशरण उपाध्याय)
हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य : (प्रो० रोशनलाल सिंहल) १।)
१।)
पद्मावत की कथा : ,, १।)
बाल रामचरित मानस : ,, १।)
कामायनी सार : ,,

रामचरितमानस
[तुलसीकृत रामायण की सर्वोत्तम हिन्दी टीका]
टीकाकार—पं० रामनरेश त्रिपाठी
मूल्य १२)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और प्रकाशक

स० ही० वात्स्यायन

इतनी स्पष्टवादिता से इस कोटि के लेखक ने इससे पहले शायद ही प्रकाशक-वर्ग के विषय में अपने विचार व्यक्त किये हों! रेडियो-सम्भाषण की यह प्रतिलिपि लेखक के सौजन्य से ही यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

लेखक मुझसे शायद इस बात पर ईर्ष्या भी कर सकते कि प्रकाशक के साथ मेरा पहला साक्षात्कार मेरी पहली ना को लेकर नहीं हुआ। लेकिन मैं इसको अपना ाग्य ही मानता हूँ। क्योंकि बाद में स्वयं मुझे जो अनुभव और दूसरों के अनुभवों के जो प्रामाणिक वृत्तान्त मुझे े, उनके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि नये लेखक और ाशक का संघर्ष लेखक–जीवन का एक बहुमूल्य अनुभव है इस संघर्ष से अछूते रह जाना बच जाना नहीं, बल्कि त हो जाना है। शरीर पर के घाव जिस प्रकार सूर की ाई का परिचय देते हैं और व्रणहीन शरीर वीरता को सन्देहास्पद बना देता है, उसी प्रकार किसी लेखक के कभी ाशक से चोट न खाने का अर्थ भी यह लिया जा सकता है वह वास्तव में लेखनोपजीवी नहीं है, शौकिया लिख-लिखा ा है, निरा 'एमेच्योर' है। सच पूछिये तो मैं भी आरम्भ में न-जीवी नहीं था; मेरी पहली पुस्तक जब छपी तब मैं में सरकार की मेहमान-निवाज़ी से लाभ उठा रहा था दूसरी पुस्तक यद्यपि छपी मेरे जेल से आ जाने के बाद, ापि प्रकाशक से उसकी लिखा-पढ़ी कुछ अनुग्रहशील ादकों की मध्यस्थता से पहले ही हो गई थी। लेकिन इस ार लेखक-जीवन की मेरी दीक्षा में जो कमी रह गई थी, बाद के अनुभवों ने पूरा कर दिया। करेले के नीम चढ़ा ने में फिर भी कोई कसर रह गई होती तो वह भी मैंने े अपना प्रकाशक और प्रकाशक का साझीदार बनकर पूरी ली।

अक्सर सुना जाता है कि लेखन और प्रकाशन अन्योन्या-ित हैं। एक के बिना दूसरे का कल्याण तो हो ही नहीं ा, जीवन भी सम्भव नहीं है। यह कुछ वैसी ही बात वैसी यह कि विज्ञान प्रगति का साधन है। एटम बम और हाईड्रोजन बम वैज्ञानिक प्रगति के सूचक हैं, निःसंदेह; लेकिन प्रगति किस दिशा में? प्राणिशास्त्र और वनस्पतिशास्त्र में परस्पर आश्रय के दो रूप बताये जाते हैं: एक जिसे 'सहजीविता' कह सकते हैं—जिसमें दो प्राणी या उद्भिज एक-दूसरे को जीवन की सुविधा देते चलते हैं। दूसरी जिसे 'परोपजीविता' कहा जाता है और जिसमें एक प्राणी या उद्भिज दूसरे के सहारे जीता हुआ उसका प्राण-रस चूस लेता है और उसके विनाश का कारण बनता है। आदर्शों की बात अलग है—आदर्श में विज्ञान मूलतः कल्याणकारी है और प्रकाशन भी मूलतः कल्याणकारी है। लेकिन समकालीन वास्तविकता देखें तो मानना होगा कि प्रकाशन भी लोक-कल्याण से उतना ही दूर है जितना कि विज्ञान।

वाल्मीकि के समय प्रकाशक नहीं थे। उससे रामायण की कल्याणकारिता में कुछ कमी आई हो, ऐसा नहीं जाना गया। व्यास इस हद तक आधुनिक हो गये थे कि उन्होंने एक शीघ्र लिपिक को महाभारत बोलकर लिखा दिया था, लेकिन प्रकाशक तब भी नहीं थे। महाभारत-रूपी ज्ञान-महार्णव इसलिए सूख गया हो या उसके लेखक की उपजीविका मारी गई हो, इतिहास में इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। प्रकाशक और लेखक का सम्बन्ध साँप और नेवले का है, कि साँप और मेंढक का, कि साँप और छछूंदर का—इस बारे में बहस हो सकती है, लेकिन सच मानिये कि हर हालत में साँप प्रकाशक ही है। बाकी यह लेखक की प्रतिभा पर निर्भर है कि वह मेंढक की तरह लील लिया जाता है, या कि छछूंदर की तरह 'गीलै बनै न बनै बिनु गीलै' की स्थिति में प्रकाशक के गले में अटका रहता है, या कि फिर न्योले की तरह उस पर हावी हो उठता है। लेकिन कोरी सिद्धान्त-चर्चा छोड़कर अपने अनुभव पर आवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज या कभी भी

जब आप पुस्तकें खरीदें, ६२½% कमीशन दिया जावेगा, अच्छी पुस्तकों से एक्सचेंज भी किया जा सकता है।

आर्डर देने से पहले चौथाई रकम पेशगी आना आवश्यक है।

१ गृहदाह	शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय	४)
२ पथ के दावेदार	,, ,,	४)
३ चरित्रहीन	,, ,,	६)
४ श्रीकान्त	,, ,,	६)
५ शेष प्रश्न	,, ,,	४)
६ शुभदा	,, ,,	३)
७ बड़ी दीदी	,, ,,	१)
८ छुटकारा	,, ,,	१।)
९ देवदास	,, ,,	२)
१० आँख की किरकिरी	रवीन्द्रनाथ टैगौर	३॥)
११ नाव दुर्घटना	,, ,,	४)
१२ आनन्दमठ	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२)
१३ लोफर	सागर बालूपुरी	१॥)
१४ जुआड़ी	,, ,,	१॥)
१५ अधूरी प्यास	अम्बर	२)
१६ खानाबदोश		२)
१७ पापी	सत्यनारायण तिवारी	॥=)
१८ रहस्य महल (जासूसी)	,, ,,	॥)
१९ खूनी चाय (,,)	,, ,,	॥)
२० प्रेम ज्योति (कहानियाँ)	श्री 'प्रसाद'	१॥)
२१ द्वीप चक्र (जासूसी)	गोकुलदास शास्त्री	२)
२२ अपना दूध	भोलानाथ तिवारी, बी० ए०, साहित्य-रत्न	२॥)

हजारों मेल की जासूसी, सामाजिक, क्रान्तिकारी तथा बच्चों की पुस्तकों के लिए लिखें।

सुरेन्द्र एण्ड क०,- बुकसेलर्स एण्ड पब्लिशर्स, २७ कटरा, इलाहाबाद

अभी मैं जेल ही में था कि एक प्रकाशक ने एक पुस्तक की पाण्डुलिपि देखने को मंगाई थी। उसके बाद आज तक न तो वह पाण्डुलिपि देखने को मिली, न उसका कुछ और पता लग सका। अब तो वह प्रकाशक महोदय भी स्वनामधन्य हो गये हैं, इसलिए उनके बारे में अधिक कुछ कहना अशोभन होगा। और एक थे जिन्हें पाण्डुलिपि के साथ एक संस्करण के कागज के दाम भी दिये थे। तब तक इतना सीख लिया था कि पुस्तक की प्रतिलिपि जरूर अपने पास रखनी चाहिए इसलिए पुस्तक का तो उद्धार हो सका, लेकिन वह रुपया उन्होंने किस हिसाब में बराबर कर लिया, यह आज तक न जान सका। एक ऐसे भी मिले जिन्हें पुस्तक स्वयं उनकी ओर से छपा कर दी; यह सज्जन छपाई का हिसाब-विसाब तो क्या चुकाते, पुस्तक ही बेचकर खा गये। लेखक का दुर्भाग्य यह है कि वह जब ऐसे अनुभव सुनाता है, तो उसका स्वर भी अभियोक्ता का स्वर नहीं होता, क्योंकि सुनने वाले सब उसी को अभियुक्त ठहराते हैं—क्यों उसने ऐसी मूर्खता की! बचपन में कथा सुनी थी कि गुड़ एक बार भगवान् जी के पास फरियाद लेकर गया कि "भगवन्, मुझे बचाइये, जो मुझे देखता है खाने को दौड़ता है।" भगवान् जी ने ज़रा मुस्कुराकर कहा, "भैया, तनिक दूर खड़े होकर बात करो"—क्योंकि गुड़ को देखकर स्वयं उनके मुँह में पानी आ गया था। कुछ वैसी ही दशा विचारे लेखक की है।

जिन दिनों मैं लाहौर में था उन दिनों हमारे पड़ोस में एक नया बैंक खुला था। मुझे तो बैंक से काम ही क्या पड़ता, लेकिन एक मित्र ने बताया कि उस बैंक में जो कोई नया हिसाब खोलने जाता था, उसकी बड़ी खातिर होती थी। मैनेजिंग डायरेक्टर साहब स्वयं उससे मिलते थे और उसे चाय पिलाते थे। लेकिन एक बार रुपया जमा कराकर जो व्यक्ति फिर रुपया निकलवाने आता, उसको बिलकुल दूसरी ही स्थिति का सामना करना पड़ता। या तो मैनेजर या बड़े एकाउण्टेन्ट साहब की अनुपस्थिति के कारण चैक पास न हो सकता, या फिर चैक काटने वाले के हस्ताक्षरों में कोई त्रुटि निकल आती, कोई दूसरी अड़चन बता दी जाती। अब तो कड़े नियन्त्रण के कारण बैंकों में ऐसी हरकतें बहुत कम हो सकती हैं, लेकिन प्रकाशकों के लिए यह बायें हाथ का खेल है। आप अगर कुछ भी जाने हुए लेखक हैं तो पाण्डुलिपि लेकर प्रकाशक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...इये; आपकी खातिर करके वह पाण्डुलिपि तो हथिया ... अगर उसको आशा हो कि आप कापीराइट भी उसके ... दे सकते हैं, तब तो वह आपकी पत्नी के लिए साड़ी ... च्चों के लिए खिलौने से लेकर अन्न-कष्ट के समय ... के बढ़िया बासमती चावल आपके घर पहुँचाने तक ... के उपचार कर सकता है। लेकिन एक बार अधिकार ... दीजिये, बस उसके बाद राह चलते आपको पहचान ले ... समझिये कि मुरव्वत दिखा रहा है।

... फिर दूसरा पैंतरा यह हो सकता है कि पाण्डुलिपि ... सुनकर ही आपको एहसान से लाद दे। अगर आप ... लक हैं तब तो निश्चय मानिये कि उसका रवैया यही ... "अजी साहब, आजकल कौन जनरल पुस्तकें छापने ... कर सकता है? आजकल तो आप जानते हैं सिर्फ ... चलती हैं। हमने अमुक की पुस्तक छापी थी, पाँच ... भी नहीं बिकीं। और अमुक की पुस्तक—हम जानते थे ... की एक भी प्रति नहीं बिकेगी, लेकिन बिचारे की बुरी ... थी—हमने सहानुभूतिवश ही छाप दी। आखिर ... भी तो इन्सान है।"

... कुशल प्रकाशक इस पैंतरे की परिधि के अन्दर भी ... की नफ़ासत दिखा सकता है। जैसे, "अच्छा अब ... आये हैं तो रख जाइये पाण्डुलिपि। मैं देखूँगा—" ... क्लर्क से कह दे कि 'यह सज्जन फिर आयें तो भीतर ... ने देना या कोई बहाना बनाकर टाल देना'। या यह ... सकता है कि, "देखिये साहब, यह किताब छपने- ... की तो है नहीं। लेकिन आपने परिश्रम किया है— ... राइट हमारे नाम लिख जाइए—यह लीजिये पचास ... जाइये—हमारे पास पड़ी रहेगी—और नहीं तो यही ... लीजियेगा कि हमारे पास अधिक सुरक्षित है।"

...सी का और भी परिष्कृत और इसलिए और भी ... रूप यह होता है कि "साहब आप तो जानते हैं ... में चीज नहीं बिकती, नाम बिकता है। चीज कितनी ... अच्छी हो, जब तक उसके साथ कोई बड़ा नाम न हो, ... पूछता ही नहीं। और बड़ा नाम हो तो उसके साथ ... भी कबाड़ जोड़ दीजिये चल जायगा।" इसके बाद ... अपने कथन की पुष्टि में ब्यौरेवार बता देता है कि ... नेता के नाम से कौन-कौनसी रद्दी पुस्तकें छपीं या

देवेन्द्र सत्यार्थी

का

नया उपन्यास

कठपुतली

'कठपुतली' की कहानी उस नदी की तरह आगे बढ़ती है जिस पर उसके उद्गम-स्थल की छाप कभी नहीं मिटती, जो रास्ते की मिट्टी को बहाकर चलती है और इस मिट्टी और बालू द्वारा अपनी कर्मभूमि के दोनों ओर की भूमि को उपजाऊ बनाने का कर्त्तव्य निभाती है।

उपन्यास का नायक सुनील एक नाटककार है; एक तरफ़ इस नाटककार की कला-साधना अग्रसर होती है, दूसरी तरफ़ देश के विभाजन का नाटक खेला जा रहा होता है। परिस्थितियाँ सुनील को झकझोर जाती हैं, लेकिन वेदना और निराशा से भी आशा की किरण फूटती है। इस उपन्यास की सफलता उस भाव-भूमि की स्थापना में आँकी जानी चाहिए जहाँ हम विश्व मैत्री की शाश्वत थाती को स्वीकार करते हैं और जहाँ यह टेर सुनने को मिलती है कि परिस्थितियों का दास बन कर कठपुतली की तरह नाचने की बजाय क्यों न हम उस सन्तुलन को प्राप्त करें जिसकी खोज में इन्सान निरन्तर संलग्न रहा है।

पृष्ठसंख्या ४४८, मूल्य छः रुपये

एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली।

एकाधिकारी वितरक

राजकमल प्रकाशन

१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिकीं, या पुरस्कृत हुई हैं, और कौन-कौनसे महद्ग्रन्थ या तो पाण्डुलिपि के रूप में ही दीमकों द्वारा खा लिये गए हैं या छपकर चाट-पकोड़ी या परचून लपेटने के काम में आते रहे हैं—केवल इसलिए कि उनके लेखक पहले ख्यातनामा नहीं थे।

इतना लेखक का हौसला पस्त करने के लिए काफी होना चाहिए। इसके बाद वह या तो अपने काग़ज़-पत्तर लपेट-कर मुँह लटकाये चल देगा या फिर जैसी कि प्रकाशक आशा कर रहा है—किंकर्त्तव्य भाव से उसीसे पूछेगा, "तो फिर आप ही कुछ सलाह दीजिए न?"

प्रकाशक ने तो यह भूमिका रची ही है सलाह देने के लिए। वह कहता है: "आप तो साहित्यकार हैं, आदर्श के लिए लिखते हैं। नाम का मोह आपको तो है ही नहीं। मेरी राय तो यही है कि आप ऐसी तरकीब कीजिए कि आपकी चीज भी लोगों के सामने आ जाय और आपको कुछ लाभ भी हो जाय। असल चीज तो यही है कि उत्तम साहित्य अधिक-से-अधिक लोगों के सम्मुख आये, लेखक के नाम से क्या आता-जाता है? आखिर पुराणों-उपनिषदों के लेखकों का किसे पता है?"

इस तरह की थोड़ी और प्रभावोत्पादक बातचीत के बाद वह उपाय यह बताता है कि लेखक पाण्डुलिपि उसे दे दे, वह किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से अच्छे पैसे दिलवा देगा और उसके नाम से पुस्तक छपवा देगा। इससे लेखक को पारिश्रमिक भी मिल जायगा और उसकी पुस्तक भी प्रकाश में आ जायगी। उधर प्रसिद्ध व्यक्ति भी प्रसन्न और साथ-साथ थोड़ा और प्रसिद्ध हो जायगा, और प्रकाशक को भी थोड़ा सा लाभ हो जायगा। इस प्रकार सब को लाभ भी हो जाएगा और लोक-कल्याण भी—'बहुजन हिताय, बहुजन सुहाय' के आदर्श का इससे अच्छा निर्वाह और क्या हो सकता है।

इतनी बात तो प्रकाशक आसानी से कह सकता है। लेखक उसे समव्यथी न मानेगा तो भी व्यवहार कुशल यथार्थवादी तो मान ही लेगा! इससे आगे प्रकाशक यह बताना आवश्यक नहीं समझेगा कि वह 'प्रसिद्ध व्यक्ति' शायद किसी पाठ्य-क्रम समिति का सदस्य भी है, या कि काग़ज़ के कन्ट्रोलर का रिश्तेदार है या सीमेण्ट के परमिट दिला सकता है। उसे साधकर प्रकाशक भविष्य में अपना कौनसा काम निकलवाने की आशा कर रहा है, ऐसी घरेलू बातों से लेखक को क्या मतलब हो सकता है?

या यह भी हो सकता है कि 'प्रसिद्ध व्यक्ति' और कोई न होकर प्रकाशक की पत्नी ही हो—या कि स्वयं प्रकाशक ही हो और पुस्तक उसी के नाम से छपने की बात हो रही हो। ऐसा अक्सर देखा गया है कि प्रकाशक एक प्रकाशक के रूप में छोड़कर और हर रूप में प्रसिद्ध होना चाहते हैं—चाहे आलोचक के, चाहे कवि के, चाहे कवियित्री के पति के—या और नहीं तो कवयित्री के पाणिप्रार्थी के ही सही! वह भी न हो तो सम्पादकत्व तो कहीं गया नहीं है—जो पुस्तक प्रकाशक छाप रहा है, उस पर सम्पादक के रूप में अपना नाम तो वह दे ही सकता है।

प्रकाशक का या प्रकाशक और लेखक के सम्बन्ध का यह चित्र एकांगी जान पड़ सकता है। क्या ऐसा असम्भव ही है कि प्रकाशक लेखक का हितैषी हो और सत् साहित्य के प्रण-यन और प्रचार में योग दे सके? असम्भव तो नहीं है। विदेशों में इसके कई उदाहरण मिल जायँगे। भारत में भी कुछ निष्टावान् प्रकाशक हुए हैं और अब भी हैं। ऐसे भी प्रकाशक हुए हैं और हैं जिन्हें लेखकों ने सुहृद् के रूप में पाया है और जिनकी मैत्री भी दोनों के लिए आत्मिक तृप्ति का आधार बनी रही है। अपनी ही कहूँ: मैंने अभी जितनी तरह के प्रकाशकों का वर्णन किया है, सभी का निजी अनु-भव मुझे है लेकिन साथ ही ऐसे भी हैं जिनका मैं बन्धुवत् सम्मान करता हूँ। बल्कि यह कहूँ कि मेरे लिए वे सदैव पहले बन्धु रहे हैं और पीछे प्रकाशक। कह लीजिए कि वे बन्धु ही हैं जो कि प्रकाशन का काम भी करते हैं। अकृतज्ञ मैं नहीं होना चाहता—कोई भी लेखक अकृतज्ञ नहीं होता—लेकिन वस्तुस्थिति से आँखें मूँदना भी ठीक नहीं है। हिन्दी के अधिकतर प्रकाशक अभी अनपढ़ और संकीर्ण बुद्धि के हैं। जो अपवाद हैं, उन्हें बारम्बार नमस्कार!

कुछ पुस्तकालयों के नाम

—साहित्य मन्दिर (वाचनालय व पुस्तकालय), हिंगोली।
—मुकर्जी पुस्तकालय व वाचनालय, पिलखुवा (मेरठ)।
—भारत हिन्दी-पुस्तकालय, अमरावती (म० प्र०)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने घोषणा की है कि क्षितों के लिए पुस्तकों की दूसरी प्रतियोगिता में श्रेष्ठ ों पर २० हजार रुपया के ३५ पुरस्कार प्रदान किये ते। पुस्तकें ऐसी होनी चाहिएँ जो नवशिक्षित वयस्क की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति में क हो सकें। ५ पुरस्कार एक एक हजार रुपये के और पुरस्कार पाँच-पाँच सौ रुपये के होंगे। इसके अतिरिक्त खों द्वारा जो पुस्तक विशेष रूप से अच्छी समझी जायगी, की १००० प्रतियाँ सामूहिक योजना के क्षेत्रों में बंटवाने के खरीद ली जायंगी।

साधारणतया पुस्तक किसी भी विषय की हो सकती है। ने लेखकों की पुस्तकों पर भी विचार किया जा सकता है, ने अधिकार प्राप्त व्यक्ति द्वारा प्रेषित की जायें।

पुस्तकें वयस्क लोगों के लिए उपयुक्त सरल शैली में होनी ए। जो पुस्तकें पहली योजना (लोकप्रिय साहित्य को हन) के अंतर्गत पुरस्कारार्थ प्रेषित की जा चुकी हैं, र इस प्रतियोगिता में विचार नहीं किया जायगा।

साधारणतया पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या करीब ३२ होना र और किसी भी हालत में ४८ (डिमाई अठपेजी) से क नहीं होनी चाहिए। पुस्तकों की छपाई १६ पाइन्ट इप में होनी चाहिए। पुस्तकों की पांडुलिपियाँ भी क आकार-प्रकार की होनी चाहिएँ। पुस्तकों में पर्याप्त भी होने चाहिएं। यदि सम्भव हो तो पांडुलिपियों के दिये जाने वाले चित्र भी साथ ही भेजे जाएँ। किसी कारण से ऐसा सम्भव न हो, तो कम से कम , ठीक स्थान, (सीमा रेखाओं से अंकित) चित्र का (लाइन हाफ टोन, रंगीन या काला और सफेद) और और क्या होगा, यह अंकित कर दिया जाना चाहिए। की पुस्तकों की ४ प्रतियाँ और पाण्डुलिपियों की ३ प्रतियाँ प्रतियोगिता के लिए भेजी जानी चाहिएँ। लेखकों को प्रत्येक पुस्तक के साथ ३ रु० का ट्रेजरी चालान साथ भेजना चाहिए। यदि प्रकाशक पुस्तक भेजें तो ५ रुपये का ट्रेजरी चालान पुस्तक के साथ भेजना आवश्यक है। रुपया 'हेड XXVI, एजुकेशन मिस्सलेनियस—लिटरेचर फॉर न्यू इण्डिया' के खाते में जमा कराया जाय।

प्रत्येक प्रेषित पुस्तक या पांडुलिपि के अन्दर वाले टाइटिल पेज पर ये ज्ञातव्य बातें हिन्दी या अंग्रेजी में लिखी रहनी चाहिएँ—पुस्तक या पाण्डुलिपि का शीर्षक; लेखक का नाम; प्रकाशक का नाम व पता (पुस्तक छपी हो तो); पुस्तक प्रेषित करने वाले का नाम; ट्रेजरी चालान का नम्बर और रकम तथा भाषा।

◆ ◆ ◆

'अखिल भारतीय दर्शन परिषद्' की ओर से श्री यशदेव 'शल्य' ने एक दर्शन विषयक त्रैमासिक का प्रकाशन आरम्भ किया है, जिस में भारत भर के प्रमुख दार्शनिक विद्वानों के उत्तम निबन्ध संकलित हुआ करेंगे। पत्र के सम्पादक-मण्डल में निम्न व्यक्ति होंगे—डॉ० आर० एन० कौल, श्री प्रभाकर माचवे, प्रो० संगमलाल, श्री अर्जुन चौबे काश्यप तथा श्री यशदेव 'शल्य'। पत्र का वार्षिक मूल्य ६) रुपया होगा और वह निम्न पतों से प्राप्त किया जा सकेगा—(१) यशदेव 'शल्य' मन्त्री, अखिल भारतीय दर्शनपरिषद् फरीदकोट (पेप्सू)। (२) प्रो० संगमलाल पाण्डेय, दर्शन विभाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद। (३) प्रो० अर्जुन चौबे काश्यप, दर्शन विभाग, गया कालिज, गया (बिहार)।

◆ ◆ ◆

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग ने गांधी जयन्ती (२ अक्तूबर १९५४) के दिन हिन्दी की निम्नलिखित मौलिक और अनूदित पुस्तकों पर पुरस्कारों की घोषणा की है :

मौलिक साहित्य

पालि-साहित्य का इतिहास : श्री भरतसिंह उपाध्याय, २०००), प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

साहित्य दर्शन : श्रीमती शचीरानी गुर्टू, २०००), प्रकाशक—गौतम बुक डिपो, दिल्ली।

बापू की कारावास-कहानी : डॉ० सुशीला नैयर, २०००),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

झाँसी की रानी : श्री वृन्दावनलाल वर्मा, २०००), प्रकाशक—मयूर प्रकाशन, झाँसी।

माटी की मूरतें : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, २०००), प्रकाशक—श्री अजन्ता प्रेस, लि०, पटना।

कुरुक्षेत्र : श्री रामधारीसिंह 'दिनकर', २०००), प्रकाशक—श्री अजन्ता प्रेस लि०, पटना।

सिकन्दर : श्री सुदर्शन, २०००), प्रकाशक—हिन्द किताब्स लि०, बम्बई।

अनूदित साहित्य

हिन्दी ज्ञानेश्वरी : अनुवादक श्री रामचन्द्र वर्मा, १०००), प्रकाशक—हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस।

हिन्दी मेघदूत विमर्श : अनुवादक—श्री कन्हैयालाल पोद्दार, १०००), प्रकाशक—

रवि बाबू के कुछ गीत : अनुवादक—श्री रघुवंश एल० गुप्त, १०००), प्रकाशक—इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद।

प्रेम में भगवान् : अनुवादक—श्री जैनेन्द्रकुमार, १०००), प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

संकरा द्वार : अनुवादक – श्रीमती सुशीला देवी, १०००), प्रकाशक—सरस्वती सदन, मंसूरी।

जीवन-स्मृति : अनुवादक—श्री धन्यकुमार जैन, १०००), प्रकाशक—हिन्दी ग्रन्थागार, कलकत्ता।

अलबरूनी का भारत : अनुवादक—श्री सन्तराम, १०००), प्रकाशक—इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद।

आदर्श नगर-व्यवस्था : श्री भोलानाथ शर्मा, १०००), प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

महाभारत-कथा : अनुवादक—श्री पूर्ण सोमसुन्दरम्, १०००), प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

◆ ◆ ◆

भारत-सरकार ने प्रौढ़-शिक्षा के लिए हिन्दी की निम्नलिखित नौ उत्कृष्ट पुस्तकों के रचयिताओं में से प्रत्येक को ५००) के पुरस्कार की घोषणा की है :

गाँव सुखी, हम सुखी : श्री विनोबा भावे, प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

हमारा भोजन : श्री शारदाचरण मुखर्जी, प्रकाशक—महेन्द्र रसायन शाला, इलाहाबाद।

दो बैलों की कथा और बाबाजी का भोग : श्री प्रेमचन्द, प्रकाशक – सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद।

गौतम बुद्ध और उनके उपदेश : श्री भरतसिंह उपाध्याय, प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

ज्ञान की कहानियाँ : हिन्दी विभाग—कपूर ब्रदर्स लि०, नई दिल्ली।

मानव शरीर : श्री नेकीराम गुप्ता, प्रकाशक—मक्तबा जामिया लि०, नई दिल्ली।

पञ्चतन्त्र की कहानियाँ : श्रीमती शकुन्तला देवी, प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन : सम्पादक श्री अशोक, प्रकाशक—गंगा-पुस्तक-माला, लखनऊ।

भारत की कहानी : श्री भगवतशरण उपाध्याय, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

इन नौ पुस्तकों के अतिरिक्त असमिया की ३, बंगाली की ३, गुजराती की २, कन्नड़ की १, मैथिली की १, मलयालम की २, मराठी की ४, उड़िया की १, पंजाबी की १, तमिल की ३, तेलुगु की तथा उर्दू की १-१ पुस्तक पर ५००)-५००) का पुरस्कार दिया गया है। इन ३५ पुस्तकों में से ५००)-५००) के अतिरिक्त पुरस्कार के लिए पाँच और पुस्तकें चुनी जायँगी। इस पुरस्कार की घोषणा २६ जनवरी १९५४ को होगी।

जिन पुस्तकों की एक-एक हजार प्रतियाँ खरीदी जायँगी, उनका चुनाव भी किया जा रहा है।

◆ ◆ ◆

आत्माराम एण्ड सन्स के सञ्चालक श्री रामलाल पुरी की के प्रकाशन और वितरण-उत्तरदायित्व में हिन्दी-कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं के त्रैमासिक प्रकाशन का आरम्भ काव्यधारा के नाम से १५ नवम्बर १९५४ से हो रहा है। पत्र का सम्पादन शिवदानसिंह चौहान तथा गोपालकृष्ण कौल कर रहे हैं। विज्ञप्ति के अनुसार काव्यधारा का ध्येय "मनुष्य मात्र की प्रगतिशील आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व" करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

...ष्णापति त्रिपाठी, संयोजक: कोश-विभाग, नागरी प्रचा-... सभा, बनारस, लिखते हैं कि शीघ्र ही सभा अपने लग-...२५ वर्ष पूर्व प्रकाशित हिन्दी शब्दसागर का संशोधित, ...त, परिष्कृत तथा समयोपयोगी संस्करण प्रकाशित करने ...ही है जो राष्ट्रभाषा के महत्त्व और गौरव के अनुकूल ...। आज के युग में अनेक प्रकार के पारिभाषिक तथा ...वहारिक शब्दों का प्रयोग होना अनिवार्य है और उसके ...ही यह भी अनिवार्य है कि उन शब्दों के लिए शास्त्रीय ...प्रामाणिक शब्दकोश भी हो।

...प्रादेशिक भाषाओं के विद्वानों और हिन्दीभाषी विज्ञजनों ...भा का अनुरोध है कि वे यह परामर्श देने का अनुग्रह करें ...सभा की नई योजना के अनुसार शब्दसागर को आधुनिक-...शब्दकोश बनाने के लिए कौन-कौनसे परिवर्तन और ...करण आवश्यक हैं। साथ ही यह भी सूचित करने की कृपा ...कि शब्दचयन, शब्दसंकलन, शब्दसंग्रथन, अर्थनिर्देश तथा ...ख्या की योजना-पद्धति और क्रम क्या हो। हिन्दी शब्द-...र को आधुनिकतम उपयोग के अनुकूल बनाने के लिए, ...वे जो भी सुझाव उचित और आवश्यक समझें, भेजने का ...करें।

...कोशकार्य से सम्बन्ध और सम्पर्क रखने वाले महानुभावों ...अनुरोध है कि वे कृपा कर शीघ्रातिशीघ्र अपने-अपने (कम-...से-कम आरम्भिक) सुझावों को लिपिबद्ध करके संयोजक, कोश ...विभाग, नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी के पते पर भेजने का ...ग्रह करें। सभा के कोश-विभाग का कार्यारम्भ हो गया है।

◈ ◈ ◈

श्री कस्तूरीमल बांठिया (२००, भाटापाड़ा, कोटा, राज-...न) लिखते हैं कि उनके पास पुस्तपालन (बहीखाता) ...नाम की पांडुलिपि तैयार है। विषय प्रारम्भिक व्यावहा-...रिक बहीखाता-अभिलेखन सिखाना है; फुलस्केप आकार के टाइप किये हुए ९७ पृष्ठ हैं। लेखक अध्यापक नहीं, अपितु व्यापारी है। रायल्टी पर पुस्तक देने की इच्छा है, अनुबन्ध के साथ २००) रोक अग्रिम चाहिए।

◈ ◈ ◈

श्री के० कौल 'अज्ञानी' (चन्द्रेश्वर, दर बिल्डिंग्स, सीतला गली, आगरा) ने अप्टन सिंक्लेयर और लुइस ब्रॉमफील्ड के कुछ उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया है। इनके प्रकाशन में रुचि रखने वाले प्रकाशक इनसे पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

प्रो० केदारराय गुप्त (मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर) लिखते हैं कि उन्होंने बालोपयोगी कविताएँ, कहानियाँ तथा व्यंग्यात्मक स्केच लिखे हैं जिन्हें पुस्तकाकार मुद्रित करने के लिए वे प्रकाशक चाहते हैं। ये कहानियाँ व स्केच समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

◈ ◈ ◈

श्री एन० पी० लाल (शीतल-सदन, मुन्दी चक, भागलपुर) के पास उनका अप्रकाशित कहानी-संग्रह 'आस्तिक के आँसू' के नाम का पड़ा है। अधिकांश कहानियाँ मनोवैज्ञानिक हैं, कुछेक मध्यवर्गीय शहरी समाज को चित्रित करती हैं। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

श्री रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे (५२१, जहाँगीराबाद, जबलपुर-१) लिखते हैं: "मेरे पास एक सुन्दर मराठी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद तैयार है। पांडुलिपि टाइप्ड है और फुलस्केप पेपर के मामूली हाशिया छोड़कर एक तरफ टाइप किए हुए १३७ पृष्ठ हैं। मूल मराठी उपन्यास के लेखक हैं: श्री एन० एस० चौगुले।....उपन्यास का विषय सामाजिक है।....मैं चाहता हूँ कि कोई अच्छा प्रकाशक देखे और उचित पारिश्रमिक देकर इसे प्रकाशित करे।"

◈ ◈ ◈

श्री लमगोड़ा बी० ए० (मार्फत लैंएड कस्टम्ज ऑफिस, कटिहार) के पास 'प्रतिशोध' नाम का एक ऐतिहासिक नाटक प्रस्तुत है। कथानक तिष्यरक्षिता के चरित्र से सम्बन्धित है। प्रकाशित होने पर लगभग १०० पृष्ठों में आयेगा।

[आगे पृष्ठ १८४ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकों की सूची

गत सत्साहित्य-सूची-विशेषांक में स्थान व समय के अभाव से प्रकाशकों की सम्पूर्ण सूची न छप सकी थी, जो अब यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

अखण्ड भारत प्रकाशन, ३१ बी० महाराजा टैगोर रोड, कलकत्ता ३१
अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, उत्तर बेनिया बाग, बनारस
अखिल भारतीय सर्व-सेवा-संघ, मगनवाड़ी, वर्धा
अग्रवाल प्रेस, अग्रवाल भवन, मथुरा
अग्रवाल बुक डिपो, खारी बावड़ी, दिल्ली
अग्रवाल बुक डिपो, झाँसी
अग्रसेन पुस्तक भण्डार, २२ जॉन्स्टन गंज, इलाहाबाद
अजन्ता प्रेस लि०, नया टोला, पटना-४
अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, नया टोला, पटना
अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लिटरेचर पैलेस, लखनऊ
अभ्युदय प्रकाशन मन्दिर, ५ श्यामाचरण दे स्ट्रीट, कलकत्ता—१२
अभिनव ग्रन्थागार, पटना ४
अमृत बुक कं०, कनाट सर्कस, नई दिल्ली
अमीर बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली
अरविन्द सर्कल, रैम्पर्ट रो, फोर्ट, बम्बई
अरुण कार्यालय, मुरादाबाद
अरुणोदय प्रकाशन, देवाली, उदयपुर
अरोरबन्स प्रेस, १३ हाथीखाना, दिल्ली
अलाइड ट्रेडर्ज, कचहरी रोड, अजमेर
अवध पब्लिशिंग हाउस, पान दरीबा, लखनऊ
अशोक प्रेस, महेन्द्रू, पटना ६
अशोक प्रकाशन, ८ लूथर रोड, इलाहाबाद
अनाथ विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पूना—२
आगरा बुक स्टोर, ७३ लीडर रोड, इलाहाबाद—२

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली
आभा प्रकाशन, ७।३ दरियागंज, दिल्ली
आदर्श किताब घर, बुलबुली खाना, दिल्ली
आदर्श प्रकाशन मन्दिर, दारागंज, इलाहाबाद
आदर्श पुस्तक भण्डार, ५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता—७
आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, ४१६ अहियापुर, इलाहाबाद
आधुनिक पुस्तक भवन, ३०।३१ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता
आधुनिक पुस्तक मन्दिर, चौक, बनारस—१
आधुनिक साहित्य प्रकाशन, पो० बा० नं० ६६४, नई दिल्ली
आनन्द प्रकाशन लि०, कमच्छा, बनारस
आनन्द प्रकाशन, अचल रोड, अलीगढ़
आनन्द पुस्तक भवन, पहड़िया, बनारस
आनन्दलाल बिहारीलाल, पटनी बाजार, उज्जैन
आरती मन्दिर, सिमली, बनारस
आर्यावर्त प्रकाशन गृह, ४७ मुक्तराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता-७
आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर
आलोक प्रकाशन, के० ई० एम० रोड, बीकानेर
इंगलिश बुक डिपो, ताज रोड, आगरा
इण्टरनैश्नल एकेडेमी ऑफ इण्डियन कल्चर, ओल्ड असेम्बली रेस्ट हाउस, नागपुर
इण्डियन एकेडेमी, फतेहपुरी, दिल्ली
इण्डियन पब्लिकेशन्ज, हिल रोड, अम्बाला कैंट
इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, कासगंज (उ० प्र०)
इण्डियन पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली
इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद
इण्डियन बुक कं०, काश्मीरी गेट, दिल्ली
इण्डियन यूनिवर्सिटी पब्लिशर्ज, काश्मीरी गेट, दिल्ली

[आगे पृष्ठ १७४ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे आलोचनात्मक साहित्यिक प्रकाशन

[अन्य विषयों की पुस्तकों के लिए सूची-पत्र मँगावें]

छायावाद युग : प्रो० शम्भूनाथ सिंह
छायावाद की सम्पूर्ण विशेषताओं का नवीन संतुलित दृष्टिकोण से विस्तृत उद्घाटन करने वाला ग्रन्थ। प्रथम संस्करण : पृ० ४२८, सजिल्द मूल्य ६)

हिन्दी काव्य में प्रगतिवाद : प्रो० विजयशंकर मल्ल
प्रकृति, काव्य-वस्तु और शैली-सम्बन्धी विशेषताओं का स्पष्ट विवेचन प्रस्तुत करने वाली पुस्तक। द्वितीय संस्करण : पृ० १९६, सजिल्द : मू० २॥)

प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन : डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा : प्रसाद के सम्पूर्ण नाट्य साहित्य का सांगोपांग विवेचन। चतुर्थ संस्करण : पृ० ३००, सजिल्द : मूल्य ५॥)

हिन्दी उपन्यास : प्रो० शिवनारायण श्रीवास्तव
उपन्यास साहित्य का विस्तृत सर्वेक्षण तथा उपन्यासकारों और उनकी विशिष्ट कृतियों की समीक्षा। तृतीय संस्करण : पृ० ४००, सजिल्द : मू० ४॥)

तसव्वुफ या सूफीमत : आचार्य चन्द्रबली पाण्डे
सूफीमत के उद्भव, विकास और प्रभाव का गम्भीर विवेचन। द्वितीय संस्करण : पृ० २८६, सजिल्द : मू० ४)

सामयिक साहित्य : प्रो० विश्वनाथप्रसाद मिश्र
वर्तमान साहित्य की गतिविधि का आलोचनात्मक परिचय। प्रथम संस्करण : पृ० २४०, सजिल्द : मू० ४)

चिन्तामणि (द्वितीय भाग) [काव्य में प्राकृतिक दृश्य, अभिव्यञ्जनावाद और रहस्यवाद] : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	३)
सूरदास [जीवनी, भक्ति पद्धति और काव्यालोचन] : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	३॥)
आधुनिक-काव्य धारा [काव्य धारा के उद्भव और विकास का अनुशीलन] : डॉ० केशरीनारायण शुक्ल	४॥)
आधुनिक काव्यधारा का सांस्कृतिक स्रोत [काव्य-प्रवृत्तियों और उनकी प्रेरक शक्तियों का विवेचन] डॉ० केशरीनारायण शुक्ल	३॥)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल [आचार्य के सम्पूर्ण कृतित्व का आकलन] प्रो० शिवनाथ	४)
भारतेन्दु युगीन निबन्ध [उद्भव और विकास का विवेचन] प्रो० शिवनाथ	२॥)
हिन्दी गद्य के युग-निर्माता [विशिष्ट गद्य लेखकों का मूल्यांकन] डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा	३॥)
हिन्दी कविता [भाव और शैलीगत विशेषताओं का विवेचन] कुँ० सूर्यबली सिंह	३॥)
दृष्टिकोण [आलोचनात्मक निबन्ध] प्रो० विनयमोहन शर्मा	४)
हिन्दी कवि चर्चा [विशिष्ट कवियों की समीक्षा] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे	३॥)
रूसी साहित्य [विशिष्ट परिचय] डॉ० केशरीनारायण शुक्ल	४॥)
भारतेन्दु के निबन्ध [संग्रह : विस्तृत आलोचनात्मक भूमिका] डॉ० केशरीनारायण शुक्ल	५)
विद्यापति [आलोचना और सटीक पद्य संग्रह] कुँ० सूर्यबली सिंह	२॥)
महादेवी वर्मा [कवयित्री की विशेषताओं का उद्घाटन] प्रो० लक्ष्मीसहाय सिन्हा	२॥)
प्रसाद की कहानियाँ [विवेचना] श्री केदारनाथ शुक्ल	२॥)
प्रसाद जी के उपन्यास तथा कहानियाँ [विवेचना] श्री सुशीला देवी तथा विमला देवी	२॥)
हिन्दी काव्य में सौन्दर्य-भावना [सौन्दर्य भावना के विकास का अध्ययन] श्री शकुन्तला शर्मा	४)
कहानी-कला और प्रेमचन्द [विवेचना] प्रो० श्रीपति शर्मा	२॥)
साहित्य संदीपनी [आलोचनात्मक निबन्ध] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे	२॥)
राष्ट्र-भाषा पर विचार [मौलिक विवेचना] आचार्य चन्द्रबली पाण्डे	२॥।)
आधुनिक आलोचना और साहित्य [आलोचनात्मक निबन्ध] श्री सीताराम जायसवाल	२।)
हिन्दी काव्य में प्रकृति [विवेचना] श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव	२)
निकष [आलोचनात्मक निबन्ध] सं० डॉ० केशरीनारायण शुक्ल	४)

नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, चौक, बनारस-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १७२ से आगे]

इतिहास प्रकाशन मन्दिर, २६ पटेल नगर (साउथ), नई दिल्ली

इमा प्रकाशन, मुंगेर

इलाहाबाद प्रेस, ७८-८० त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद

इलाहाबाद लॉ जर्नल क० लि०, ५ प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद—२

ईश्वरलाल बुक डिपो, जयपुर

उदय प्रकाशन मन्दिर, ३३।७१ खालिसपुरा, दशाश्वमेध, बनारस

उपन्यास बहार आफिस, बनारस

उमाशंकर प्रकाशन, लाल बाग, दरभंगा

उषा प्रकाशन मन्दिर, बनारस

ऋता प्रकाशन, पो० बा० नं० १२, लखनऊ

एन० एम० भटनागर, सूरज पोल के बाहर, जोधपुर

एलाइड पब्लिशर्स, ग्राहम रोड, बैल्लर्ड एस्टेट, बम्बई—१

एल० एस० रस्तोगी एण्ड सन्स लि०, बिजनौर

एशिया प्रकाशन, १०० बेयर्ड रोड, नई दिल्ली

एस० गर्ग एण्ड कं०, नई सड़क, दिल्ली

एस० चन्द एण्ड क०, फव्वारा, चाँदनी चौक, दिल्ली

ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, अपोलो बन्दर, बम्बई—१

ओरिएण्टल बुकडिपो, १७०४ नई सड़क, दिल्ली

ओरिएण्ट लॉगमेन्ज लि०, निकल रोड, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई-१

ओरिएण्ट लॉगमेन्ज लि०, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता

ओरिएण्ट लॉगमेन्स लि०, कैन्सन हाउस, अजमेरी गेट एक्सटेन्शन, नई दिल्ली

ओस्वाल प्रेस, १८६ क्रास स्ट्रीट, कलकत्ता—७

कन्हैयालाल, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

कपूर ब्रदर्स, १६ए/२, वैस्टर्न एक्सटेंशन एरिया, करौल बाग, नई दिल्ली

कबीर ग्रन्थ प्रकाशन समिति, हरक, बाराबंकी

कमला प्रकाशन, ७/१४० स्वरूप नगर, कानपुर

कमलालय, कल्याणी, मुजफ्फरपुर

कला कुटीर, मखेपुर, भागलपुर

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बड़े महराज का मन्दिर, बनारस

कला निकेतन प्रकाशन, कलकत्ता

कला निकेतन ६०, तूलबाड़ी, गया

कला प्रेस, इलाहाबाद

कला मन्दिर, दारागंज, इलाहाबाद

कला व्यास पब्लिकेशन्ज, जोधपुर

कर्मयोगी प्रेस लि०, कमलानगर, सब्जी मण्डी, दिल्ली—६

करेंट बुक डिपो, मालरोड, कानपुर

कविराज सूरमचन्द, २६ पटेल नगर (साउथ), नई दिल्ली

कारवाँ प्रकाशन, ६३ बड़ा सराफ़ा, इन्दौर

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस

काशी पुस्तक भण्डार, बनारस

काशी विद्या पीठ, बनारस

किताब घर, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, हाईकोर्ट रोड, लश्कर, ग्वालियर

किताब घर, कदम कुआँ, पटना

किताब घर, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद

किरण कुञ्ज, समस्तीपुर, दरभंगा

किशोर पब्लिशिंग हाउस, परेड, कानपुर

कुमार प्रेस, मुरादाबाद

कुसुम प्रकाशन, पटना—३

कोटा बुक डिपो, कोटा

कौशाम्बी प्रकाशन, दारा गंज, इलाहाबाद

गंगा पुस्तक माला, लाटूश रोड, बनारस

गंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, बांके विलास, सिटी स्टेशन रोड, आगरा

गर्ग एण्ड क०, नई सड़क, दिल्ली

गर्ग बुक डिपो, खारी बावड़ी, दिल्ली

ग्रन्थकार, शिवाला, बनारस

ग्रन्थागार, पो० बा० ६६, जमशेदपुर—१

ग्रामोत्थान विद्यापीठ, संगरिया (राजस्थान)

गांधी ग्रन्थागार, सी ७/१४० सेनपुरा, बनारस

गिरधारीलाल एण्ड क०, दरीबा कलां, दिल्ली

गिरिजा पुस्तक मन्दिर, छपरा

गिरिजा पुस्तकालय, मछुवा टोली, पटना

गिरिजा बुक डिपो, सूरजपोल, उदयपुर

गीता प्रेस, गोरखपुर

गुप्ता बुक डिपो, बड़ा बाजार, हजारी बाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह 'भक्त', बलिया
नन्द कपूर एण्ड सन्स, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली
सिंह एण्ड सन्स, १ दरिया गंज, दिल्ली
ण्डिया पब्लिशर्ज़, सीतावर्डी, नागपुर
एण्ड क०, दरीबा कलां, दिल्ली
ब्रदर्ज़,
राम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली
बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली
कार्यालय, भिवानी
कार्यालय, जेजूसर, नवलगढ़ (जयपुर)
प्रकाशन लि०, पटना
संघ, वर्धा
नी सुब्बाराव, ईंटनगर, तेनाली
री प्रकाशन, पो० बा० ७८, बनारस
प्रकाशन, मण्डी रामदास, (पी० एस० डी०) मथुरा
प्रकाशन लि०, ८३१ बेगम बाज़ार, हैदराबाद
एण्ड सन्स, नीची बाग, बनारस
मानसिंह प्रकाशन, अजमेर
पब्लिकेशन्ज लि०, २/१ मिशन रो, कलकत्ता
हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, इलाहाबाद
शंखधर, पो० बा० २२, बनारस
कार्यालय, प्रयाग
स्टोर, गुना (म० भा०)
प्रकाशन, १६१/१ हरिसन रोड, कलकत्ता
पुस्तकालय, बांके बाजार, कटक
साहित्य, ३७ शिवचरणलाल रोड, इलाहाबाद
साहित्य मन्दिर, लोहानीपुर, पटना–३
साहित्य सदन, २३/२४ जेल रोड, इन्दौर
सेवक समिति, लखीमपुर खीरी
प्रकाशन, कदम कुआं, पटना
प्रकाशन, १२५ गिरगांव रोड, बम्बई–४
बुक डिपो, मेरठ सिटी
प्रकाशन, १८ ए० राजा राजकृष्ण स्ट्रीट, कलकत्ता–६
जीवन पुस्तकालय, कुँआ, पो० जनकपुर, महुतारी (नेपाल)
प्रकाशन, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)

जीवन मन्दिर, ५३/३ राजेन्द्र नगर, दिल्ली–५
जुबली बुक डिपो, परेड रोड, कानपुर
झलक पुस्तक माला, धनराज लेन, अमरावती
टाइम्ज़ ऑफ इण्डिया प्रेस, दरिया गंज, दिल्ली
टी० सी० जरनल लि०, सुन्दर बाग, लखनऊ
डिस्ट्रीब्यूशन आफिसर, पब्लिकेशन्स डिवीज़न, ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली

तरुण कार्यालय, इलाहाबाद
तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद
तरुण भारत ग्रन्थावली, दारागंज, इलाहाबाद
तरुण भारत ग्रन्थावली, गांधी नगर, कानपुर
तारा मण्डल, पो० बा० १०७, पटना–१
तिलक पुस्तक भण्डार, माधोपुर (संथाल परगना)
तिलक मन्दिर, पूना
तीर्थराम एण्ड सन्स, बाजार वकीलां, होशियारपुर
तुलसी साहित्य सदन, नसिया रोड, इन्दौर
तेजकुमार बुक डिपो, लखनऊ

सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

१. खण्डहरों का वैभव	मुनि कान्तिसागर	मू० ६)
२. खोज की पगडण्डियाँ	मुनि कान्तिसागर	मू० ४)
३. संघर्ष के बाद	विष्णु प्रभाकर	मू० ३)
४. आकाश के तारे : धरती के फूल	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	मू० २)
५. गहरे पानी पैठ	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	मू० २॥)
६. जैन जागरण के अग्रदूत	,, ,,	मू० ५)
७. ज्ञानगंगा	नारायणप्रसाद जैन	मू० ६)
८. मेरे बापू	हुकुमचन्द बुखारिया	मू० २॥)
९. मुक्तिदूत	वीरेन्द्र कुमार	मू० ५)
१०. पंच-प्रदीप	शान्ति एम० ए०	मू० २)
११. भारतीय विचार-धारा	मधुकर	मू० २)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, त्यागराय नगर, मद्रास–१७
दक्षिण भारती साहित्य प्रकाशन समिति, हैदराबाद
दास गुप्ता एण्ड क० लि०,५४/३ कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता–१२
दिगन्त पब्लिशर्ज, २०२ रासबिहारी एवेन्यू, कलकत्ता–२६
दीदी कार्यालय, इलाहाबाद
दुर्गा प्रेस, ३८/२० आदि विश्वेश्वर, बनारस
दूधनाथ पुस्तकालय प्रेस, ६३ क्रास स्ट्रीट, कलकत्ता
देश सेवा मण्डल, ५४ ह्विट रोड, इलाहाबाद
देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली
न्यू किताबिस्तान, १५ ए एलबर्ट रोड, इलाहाबाद
न्यू यूनियन प्रेस, मानिक चौक, झाँसी
न्यू लिटरेचर, २५७ चौक, इलाहाबाद
नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्ज़, चौक, बनारस
नरेन्द्र साहित्य कुटीर, इतवारिया, इन्दौर
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, पो० बा० १०५, अहमदाबाद
नवजीवन पुस्तक माला, दारागंज, इलाहाबाद
नवनिर्माण प्रकाशन, आगरा
नवनीत प्रकाशन, ३४१ तारदेव, बम्बई
नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर
नवयुग ग्रन्थागार, छितवापुर रोड, लखनऊ
नवयुग पुस्तक भण्डार, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ
नवयुग साहित्य सदन, खजूरी बाजार, इन्दौर
नवल किशोर प्रेस, हज़रत गंज, लखनऊ
नवशक्ति प्रेस, पटना
नवसाहित्य प्रकाशन, नई सड़क, बनारस
नारायणदास सहगल एण्ड सन्स, चौक फतेहपुरी, पो० बा० १२७४, दिल्ली
नारायण पब्लिशिंग हाउस, अजीतमल, इटावा
नारायण पब्लिशिंग हाउस, ६२६ यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
नावेल्टी एण्ड क०, चौहट्टा, पटना—४
निराला अभिनन्दन समिति, १८५ हरिसन रोड, कलकत्ता
निहालचन्द, बुकसेलर्ज, अलीगढ़
नील कमल प्रकाशन, हरदोई
नील कमल प्रकाशन, लखनऊ
नीलाभ प्रकाशन गृह, ५ खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद

नूतनदास, एण्ड क०, फिरोज़पुर कैंण्ट
नूतन प्रकाशन मन्दिर, मदन की गोट, लश्कर, ग्वालियर
नैशनल एकेडमी, डिप्टीगंज, दिल्ली
नैशनल एण्ड यूनिवर्सल प्रकाशन, पटना
नैशनल ट्रेडिंग सर्विस, लक्ष्मी भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर
नैशनल पब्लिशर्ज, नवलकिशोर रोड, लखनऊ
नैशनल पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली
नैशनल प्रेस, इलाहाबाद
नैशनल बुक क०, खजांची रोड, पटना—४
पटना पब्लिशर्ज, मछुआ टोली, पटना
पद्मजा प्रकाशन, राम बाग, कानपुर
पद्मा अग्रवाल प्रकाशन, चौक, बनारस
परमानन्द पब्लिकेशन्ज़, १७ नोबल चेम्बर्ज, पारसी बाजार स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई
प्रकाश गृह, कालाकांकर (यू० पी०)
प्रकाश गृह, नया कटरा, इलाहाबाद
प्रकाश पब्लिशर्ज, त्रिपोलिया बाजार, अलवर
प्रगति प्रकाशन, ७/२३ दरियागंज, दिल्ली
प्रचार प्रतिष्ठान, १३ काशी मित्रधार स्ट्रीट, कलकत्ता
प्रजा पब्लिशर्ज, ४६ कार्नवेलिस स्ट्रीट, कलकत्ता—६
प्रतिभा प्रकाशन, २०६ हैदर कुली, दिल्ली
प्रतिभा प्रकाशन गृह, भास्कर प्रेस, देहरादून
प्रभाकर साहित्यालोक, रानी कटरा, लखनऊ
प्रभात प्रकाशन, मथुरा
प्रमोद पुस्तक माला, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
प्रयाग प्रकाशनालय, ह्वीवेट रोड, इलाहाबाद
पाठक एण्ड सन्स, लाल बाग, दरभंगा
प्राची प्रकाशन, १२ चौरंगी स्क्वायर, कलकत्ता
प्राचीन साहित्य शोध संस्थान, उदयपुर विद्यापीठ, उदयपुर
पिलानी इण्डस्ट्रियल्ज़ कॉर्पोरेशन लि०, पिलानी (राजस्थान)
पीताम्बर बुक डिपो, चाँदनी चौक, दिल्ली
पीपुल्ज़ पब्लिशिंग हाउस लि०, इरविन हस्पताल के सामने, नई दिल्ली
प्रीमियर पब्लिशिंग क०, फव्वारा, दिल्ली
प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र बुक डिपो, ३८ म्युनिसिपल मार्केट, कनाट सर्कस, नई दिल्ली
...बी० द्वादशश्रेणी, अलीगढ़
...र्ग कार्यालय, नाथद्वारा
...न प्रकाशन भवन, अपरहाटी, रीवा
...जगत, कदम कुआं, पटना—३
...प्रतिष्ठान, पटना—६
...भण्डार, लहरिया सराय
...भण्डार, पटना—४
...भवन, त्रिपोलिया बाज़ार, जयपुर
...भवन, ज्ञानवापी, बनारस
...मन्दिर, मथुरा—१
...मन्दिर, बक्सर
...विहार, मार्फत वैशाली प्रेस, एनीबिसेन्ट रोड, पटना—४
...संसार, ७-बी० कोल्हापुर हाउस, सब्जी मण्डी, दिल्ली
...भवन, चौक, मुंगेर
...प्रकाशन, धनतोली, नागपुर
...प्रकाशन, ७ दरियागंज, दिल्ली
...एड क०, इतवारिया बाज़ार, इन्दौर
...ब्लिशर्ज़, छेदीलाल धर्मशाला रोड, लखनऊ
...स्तक माला, जबलपुर
...साहित्य निकेतन, नई सड़क, दिल्ली
...प्रकाशन, सोजती गेट, जोधपुर
...र बुक डिपो, लैमिंगटन रोड, बम्बई—७
...र बुक डिपो, चौड़ा रास्ता, जयपुर
...हिन्दी परिषद्, १५ बंकिम चैटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता—१२
...बन्धु, पल्टन बाज़ार, देहरादून
...बुक कार्पोरेशन, यूनिवर्सिटी रोड, बनारस
...पुस्तक भण्डार', चौक, कानपुर
...बुक डिपो, १६५/१ हरिसन रोड, कलकत्ता
...बुक हाउस, ५ मोहम्मदअली रोड, पो० बा० ३२४३, बम्बई—३
...भूषण प्रेस, मथुरा
...साहित्य मण्डल, मथुरा
...पब्लिशिंग हाउस, १२ हरिसन रोड, कलकत्ता
...शिक्षा समिति, ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना—४

बाल साहित्य कार्यालय, १६ शिवचरण लाल रोड, इलाहाबाद
ब्रिटिश इण्डिया पब्लिशिंग क०, स्टीफन हाउस, डलहौजी स्क्वायर, कलकत्ता—१
बिश्वनाथ पब्लिशिंग हाउस, ८ श्यामाचरण दे स्ट्रीट, कलकत्ता—१२
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, सम्मेलन भवन, पटना—३
बिहार साहित्य भवन लि०, ५ डफ़ लेन, कलकत्ता
बी० श्री रामुलु गुप्ता, गवर्नर पेट, बैजवाड़ा
बुकलैण्ड लि०, १ शंकरलेन, कलकत्ता
बेनीपुरी प्रकाशन, पटना—६
बेटर बुक क०, पटना
भगवतीप्रसाद सिंहानिया, १७ केवल स्ट्रीट, बम्बई—२
भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
भार्गव पुस्तकालय, बनारस
भारत जैन महामण्डल, वर्धा
भारत पब्लिकेशन्ज़,

उर्दू शायरी का प्रामाणिक इतिहास

श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुखन

भाग १ : पृ० ७८४ मू० ८)
भाग २ : पृ० ३२८ मू० ३)
भाग ३ : पृ० २६४ मू० ३)
भाग ४ : पृ० २२६ मू० ३)
भाग ५ : पृ० २६४ मू० ३)

शेरो-शायरी ८)

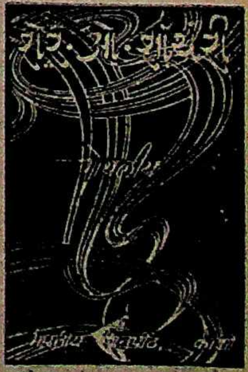

"गोयलीय जी के संग्रह की पंक्ति-पंक्ति से उनकी अन्तर्दृष्टि और गम्भीर अध्ययन का परिचय मिलता है। मैं तो समझता हूँ, इस विषय पर ऐसा ग्रन्थ वही लिख सकते थे।"

—राहुल सांकृत्यायन

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत पब्लिशिंग हाउस, बेलन गंज, आगरा
भारत प्रकाशन मन्दिर, सुभाष रोड, अलीगढ़
भारत बुक कं०, लालबाग, बनारस
भारत भवन प्रकाशन, पटना
भारतवासी प्रेस, प्रयाग
भारती पब्लिशर्ज, ५ श्यामाचरण दे स्ट्रीट, कलकत्ता
भारती प्रकाशन, भागलपुर—२
भारती प्रकाशन मन्दिर, आर्यसमाज रोड, गोरखपुर
भारती प्रतिष्ठान, १०८/१२१ पी रोड, कानपुर
भारती प्रेस, ८-बी० एलगिन रोड, इलाहाबाद
भारती भण्डार, आरा
भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
भारती भवन, देहरादून
भारती मन्दिर, ३१। सी० नई बस्ती, खुरजा
भारती साहित्य सदन, ३०।६० कनाट सर्कस, नई दिल्ली
भारती साहित्य प्रकाशन, २३२ सदर, मेरठ
भारतीय ग्रन्थमाला कार्यालय, दारागंज, इलाहाबाद
भारतीय पुस्तक भवन, ४२ जसवन्त सराय, जोधपुर
भारतीय (भाषा) भवन, चरखेवालाँ, दिल्ली
भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर
भारतीय साहित्य प्रकाशन
भारतीय साहित्य भवन, लाइब्रेरी रोड, दिल्ली
भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस
भाषा प्रकाशन, २५।५२ प्रभात रोड, नई दिल्ली—५
भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
मकतबा जामिया लिमिटेड, जामिया मिलिया, ओखला, दिल्ली
मगध राजधानी प्रकाशन, खजाँची रोड, पटना—४
मदनमोहन हिन्दी पब्लिशर्ज,
मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौर
मनमोहन प्रकाशन मण्डल, नारायण पार्क, शिवपुर, बनारस
मनोरम प्रकाशन संस्थान
मनोरमा पुस्तकालय, आरा (बिहार)
मयूर प्रकाशन, मानिक चौक, झाँसी
मलहीपुर ब्रांच प्रेस, सहारनपुर
मलहोत्रा ब्रदर्ज, ६० दरियागंज, दिल्ली

मसिजीवी प्रकाशन, मार्फत पंचोली पिक्चर्ज, चाँदनी चौक, दिल्ली
महावीर प्रकाशन, अलीगंज, एटा
महेन्द्र पब्लिशिंग कम्पनी,
माखनलाल दम्मानी, कोट गेट, बीकानेर
मानवधर्म कार्यालय, पीपल महादेव, दिल्ली
मानस मार्तण्ड प्रेस, पटना—३
मानसरोवर, गया
मानसरोवर साहित्य निकेतन, राजगली, मुरादाबाद
माया प्रेस, इलाहाबाद
मारवाड़ी प्रेस, हैदराबाद (दक्कन)
मालव लोक साहित्य परिषद्,
मालवीय पुस्तक भवन, अमीनाबाद, लखनऊ
मालवीय पुस्तक भण्डार, हजरतगंज, लखनऊ
मास्टर बलदेव प्रसाद, सागर
मिनर्वा बुक डिपो माल रोड, शिमला
मिश्र बन्धु कार्यालय, जबलपुर
मिश्रा बुक डिपो, सीता मण्डी
मित्रा प्रकाशन, इलाहाबाद
मूलनारायण एण्ड सन्स, ४ बहादुर गंज, इलाहाबाद
मेकमिलन एण्ड को० लि०, हार्नबी रोड, बम्बई—१
मेहरचन्द मुन्शीराम, नई सड़क, दिल्ली
मेहरचन्द लक्ष्मणदास, कूचा चेलाँ, दिल्ली
मेहरा पब्लिशिंग हाउस, ८० स्टोन स्ट्रीट, रुड़की
मोतीलाल बनारसीदास, कचौड़ी गली, बनारस
मोहन न्यूज एजेन्सी, कोटा
मोहनलाल दोसाभाई शाह, प्रकाशक, राजकोट
मोहिन्द्रा पब्लिशिंग कमेटी, ४ गौरमोहन मुकर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता ६
मोहिन्द्रा ब्रदर्ज, भटिंडा
युग प्रकाशन, १ फ़ैज बाजार, दिल्ली
युग मन्दिर, उन्नाव
युगान्तर प्रकाशन मन्दिर लि०, चौड़ा रास्ता, जयपुर
युगान्तर प्रकाशन समिति, पटना—३
युगाश्रय, विशेश्वर गंज, बनारस
यूनिवर्सल प्रेस, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनिवर्सल बुक डिपो, १६ फैज बाज़ार, दरियागंज, दिल्ली
यूनीवर्सिटी बुक डिपो (प्रकाशन विभाग), पटना—४
रणजीत पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स, चाँदनी चौक, दिल्ली
रंगभूमि बुक डिपो, दरीबा कलाँ, दिल्ली
रंगमहल कार्यालय, दिल्ली
रत्न एण्ड को०, प्रकाशक, दरीबाकलाँ, दिल्ली
रत्नदीप प्रकाशन, चौबेजी का कटरा, किनारी बाजार, आगरा
रत्नाकर प्रेस, ११-ए सैयद सेली लेन, कलकत्ता
रसायन फार्मेसी, ३ दरियागंज, पो० बा०, ११२५, दिल्ली-७
रवि प्रकाशन, (किताब घर) परेड, कानपुर
रवीन्द्र साहित्य मन्दिर, पी—१५ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता—७
राघव प्रकाशन मण्डल, दोस्तपुर, सुलतान पुर
राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली
राजकमल प्रकाशन, हिमालय हाउस, हार्नबी रोड, बम्बई—१
राजकमल प्रकाशन, एन० ३८ कनाट सर्कस, नई दिल्ली
राजकमल कला प्रकाशन, ४० बुला नाला, बनारस
राज प्रकाशन, मछुआ टोली, पटना—४
राजपाल एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली
राजपूताना बुक हाउस, स्टेशन रोड, अजमेर
राजभाषा सदन, मण्डी, (हिमाचल प्रदेश)
राज्यश्री प्रकाशन, ५३, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता—१
राजराजेश्वरी बुक डिपो, पो० बा० १६, गया
राजराजेश्वरी साहित्य मन्दिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार)
राजस्थान पुस्तकालय, कोटा
राजस्थान भाषा प्रचार सभा, सी० स्कीम, जयपुर
राजस्थान विश्वविद्यालय, उदयपुर
राजस्थानी पुस्तक मन्दिर, बेतिया, चम्पारण
राजहंस प्रकाशन, रुई मण्डी के पास, सदर बाज़ार, दिल्ली
राजा रामकुमार बुक डिपो, लखनऊ
राजेन्द्र कुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया
राजेन्द्र प्रकाशन मन्दिर, आगरा
रामकृष्ण आश्रम, धनतोली, नागपुर
रामनारायणलाल, कटरा, इलाहाबाद
रामप्रसाद एण्ड सन्स, अस्पताल रोड, आगरा
रामसुचितसिंह, गिरधर भवन, रायपुर
रामाकृष्णा एण्ड सन्स, बुकसेलर्स, जालन्धर
रामानुज बुक डिपो, गोल बाज़ार, बिलासपुर (म० प्र०)
रामा बुक डिपो, अलीगढ़
राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०, सदर बाजार, लखनऊ
राष्ट्रभाषा पुस्तक भण्डार, रवालवाड़ो, कंसारावाड, नडियाद
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी नगर, वर्धा
राष्ट्रीय प्रकाशन, गोल बाजार, रायपुर
राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, मछुआ टोली, पटना
राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ
राहुल प्रतिष्ठान, हैपी वैली, हार्न क्लिफ़, मसूरी
रीगल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली
रूपसी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद—३
रेखा प्रकाशन, ४६८६ बल्ली माराँ, दिल्ली
रेलवे टाइम टेबल प्रेस, बनारस
लखनऊ विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, लखनऊ
लहर प्रकाशन, २ मिण्टो रोड, इलाहाबाद
लहरी बुक डिपो, २५/१ रामकटोरा रोड, पो० बा० ३१, बनारस

सन् १९५४ के नवीन प्रकाशन

१. हिन्दू विवाह में कन्या-दान : श्री सम्पूर्णानन्द
पृष्ठ ६४ मू० १)
२. ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
पृष्ठ ३९६ मू० ४)
३. द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद
पृष्ठ २२८ मू० २॥)
४. खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव
पृष्ठ १५२ मू० २)
५. अध्यात्म पदावली : प्रो० राजकुमार जैन साहित्याचार्य
पृष्ठ ४०० मू० ४॥)
६. चौलुक्यकुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास, एम०ए०
मू० ४)
७. पहला कहानीकार : श्री रावी
पृष्ठ १९८ मू० २॥)
८. कालिदास का भारत [१] : श्री भगवतशरण उपाध्याय
पृष्ठ ३२८ मू० ४)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, अस्पताल रोड, आगरा
लक्ष्मी पुस्तक भण्डार, ७६ त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद
लक्ष्मी हिन्दी विद्यालय, चिलकलुरिपेट, गंटूर
लाजपतराय एण्ड सन्स, उर्दू बाजार, दिल्ली
लायल बुक डिपो, पाटंकर बाजार, लश्कर, ग्वालियर
लीला प्रकाश (मिसेज), 'आरसी', ११३–१३६ स्वरूप नगर, कानपुर
लोक चेतना प्रकाशन, ३७५ दुबे बिल्डिंग, राइट टाउन, जबलपुर
लोक साहित्य, सहयोगी प्रकाशन लि०, मथुरा
लोक सेवक प्रकाशन, बुला नाला, बनारस
लोक सेवा प्रकाशन मण्डल, बाह, आगरा
लोकोदय प्रकाशन, बनारस
लोकोदय प्रकाशन, वर्धा
लायल बुक डिपो, लुधियाना
वयस्क शिक्षा बोर्ड, पटना
वर्ड पब्लिशिंग एजेन्सी, (दूसरी मंजिल, कमरा नं० २) ३६, स्टैण्ड रोड, कलकत्ता-१
वागीश्वरीप्रसाद, हरपुर नाग, मेहसी, चम्पारण (बिहार)
वाणी प्रकाशन, ८४–ए अलोपी बाग, इलाहाबाद
वाणी मन्दिर, छपरा
वाणी वितान, ब्रह्मनाल, बनारस–१
विक्रम साहित्य भण्डार, आजमगढ़
विकास लि०, सहारनपुर
विजय प्रकाशन, १६१ चान्दनी चौक, दिल्ली-६
विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, मोती झील, मुजफ्फरपुर
विद्याधाम, १३७२ बल्लीमाराँ, दिल्ली
विद्या मन्दिर लि०, कनाट सर्कस, नई दिल्ली
विद्या मन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ
विद्या मन्दिर, चौड़ा रास्ता, जयपुर
विद्या भवन, खजांची रोड, पटना
विद्या भवन, हजरत गंज, लखनऊ

हिंदी संसार का अनमोल प्रकाशन

हिंदी-सेवी संसार

दूसरा **पृ० ७००**
संस्करण **मू० ७॥)**

संपादक—श्री प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०

इस संग्रहणीय ग्रन्थ में सात खंड हैं। पहले खंड में लगभग २००० हिन्दी सेवियों के, दूसरे खंड में लगभग ५०० हिन्दी संस्थाओं के, तीसरे खंड में प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों के, चौथे खंड में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के, पाँचवें खंड में हिन्दी के पदक और पुरस्कारों का, छठे खंड में हिन्दी में किये गए शोध और अनुसंधान-कार्य का, सातवें खंड में विदेशों में हिन्दी प्रचार की प्रगति का—सविस्तार सम्पूर्ण और पूरे पते सहित परिचय दिया गया है। इस सत्प्रयास की सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

आपका पुस्तकालय इस संदर्भ-ग्रन्थ के बिना अधूरा रहेगा।

मनीआर्डर से मूल्य भेज देने पर डांक-व्यय हम देंगे।

अन्य नवीन प्रकाशन

हिन्दी के दो प्रमुख वाद (रहस्यवाद : छायावाद की सम्पूर्ण विवेचना २)

•

प्रेमचन्द : कृतियाँ और कला (सम्पूर्ण कृतियों तथा कला का विशद विवेचन) ३॥)

•

सरल भाषा-विज्ञान (इस कठिन विषय को सरल भाषा में समझाया है) २।)

•

चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन ('प्रसाद' जी के प्रसिद्ध नाटक की आलोचना) २॥)

•

गोदान : एक अध्ययन (प्रेमचन्द जी के अन्तिम सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का सरल अध्ययन) १॥।)

•

यशोधरा : एक अध्ययन (दूसरा संशोधित संस्करण १॥)

विद्या मंदिर, रानीकटरा, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या भास्कर बुक डिपो, ज्ञान वापी, बनारस
विद्यारामानन्दम् प्रेस एण्ड बुक डिपो, मुलाक्काल, अलेप्पी (द० भारत)
विद्या विभाग, कांकरोली, मेवाड़
विद्या विलास प्रकाशन, बनारस
विनय पुस्तक भण्डार, २७/१ गौराकुण्ड, इन्दौर
विनोद पुस्तक मन्दिर, अस्पताल रोड, आगरा
विप्लव कार्यालय, शिवाजी रोड, लखनऊ
विभु प्रकाशन, १३ लखपतराय गली, इलाहाबाद
विवेक प्रकान, १० साउथ रोड, इलाहाबाद
विश्वभारती (शान्ति निकेतन), ६/३ द्वारकानाथ ठाकुर लेन, कलकत्ता
विश्वविद्यालय प्रकाशन, नखास चौक, गोरखपुर
विश्व साहित्य, ५१६१ राजा मण्डी, आगरा
विशाल भारत बुक डिपो, हरिसन रोड, कलकत्ता
विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भण्डार, साधु आश्रम, होशियारपुर
विज्ञान मन्दिर, ६ ब्राह्मण पाड़ा लेन, कलकत्ता
वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई-४
वैज्ञानिक पुस्तक प्रकाशन, नाथनगर, भागलपुर-६
वोरा एण्ड क० पब्लिशर्ज लि०, राउण्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई-२
शक्ति पब्लिकेशन्ज, मॉडल टाउन, लुधियाना
श्याम काशी प्रेस, मथुरा
श्यामलाल हजारी प्रसाद, मथुरा
श्यामशंकर प्रकाशन, लालबाग, दरभंगा
श्यामा साहित्य मन्दिर, १६२ जवाहरगंज, जबलपुर
शारदा प्रकाशन, भागलपुर-२
शारदा मन्दिर, २६/१७ गणेश दीक्षित, बनारस
शारदा मन्दिर, नई सड़क, दिल्ली
शारदा शान्ति साहित्य सदन, केवलारी, पथारिया, सागर
शिक्षा सदन, पो० बा० १००, पटना
शिव प्रकाशन, अस्पताल रोड, आगरा
शिवलाल अग्रवाल, अस्पताल रोड, आगरा
शिवाजी प्रकाशन मन्दिर, सुन्दर बाग, लखनऊ
शिवाजी बुक डिपो, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ
शिशिर पब्लिशिंग हाउस, २२/१ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता-६
शिशु ज्ञान मन्दिर, शिशु प्रेस, इलाहाबाद
शुक्ला बुक डिपो, पटना
शुद्धाद्वैत एकेडेमी, कांकरोली
शैलेन्द्र साहित्य सदन, रेलवे रोड, फर्रुखाबाद
श्री मन्दिर कार्यालय, १५, दरियागंज, दिल्ली
श्रीराम मेहरा एण्ड को०, मैथान, आगरा
सजनी प्रेस, इलाहाबाद
स्टुडैण्ट्स बुक डिपो, सोजती गेट, जोधपुर
स्टुडैण्टस स्टोर्ज, सुभाष रोड, जबलपुर
स्टैण्डर्ड बुक डिपो, चौक, कानपुर
सद्ग्रन्थ प्रकाशन, बिल्लीमारॉं, चाँदनी चौक, दिल्ली
सद्ग्रन्थ तत्त्व पब्लिशर्ज, ४६ भूपेंद्र बोस एवेन्यू, कलकत्ता-४
संगीत कार्यालय, हाथरस
सन्मति ज्ञान-पीठ, आगरा
समाज शिक्षा प्रकाशन, काशमीरी गेट, दिल्ली
'सर्वोदय', प्रकाशन विभाग, वर्धा
सर्वोदय साहित्य संघ, बनारस
सरस्वती प्रकाशन, बिरहाना रोड, कानपुर

राज्य द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ

१. वर्द्धमान	श्री अनूप शर्मा	मू० ६)
२. वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	मू० ६)
३. शेरो-शायरी	श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय	मू० ८)
४. शेरो-सुखन	श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय	मू० ८)
५. मिलनयामिनी	श्री बच्चन	मू० ४)
६. रजतरश्मि	डॉ० रामकुमार वर्मा	मू० २॥)
७. भारतीय ज्योतिष	नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य	मू० ६)
८. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ३)
९. संस्मरण	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ३)
१०. रेखाचित्र	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ४)
११. चौलुक्यकुमारपाल	श्री लक्ष्मीशंकर व्यास	मू० ४)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती प्रकाशन कार्यालय, मथुरा
सरस्वती पुस्तक भण्डार, १६५/१ हरिसन रोड, कलकत्ता
सरस्वती पुस्तक सदन, मोती कटरा, आगरा
सरस्वती प्रेस, पो० बा० २२ बनारस
सरस्वती प्रेस, पो० बा० २४, इलाहाबाद
सरस्वती प्रेस, खजांची रोड, पटना-४
सरस्वती प्रेस, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली
सरस्वती मन्दिर, जतनबर, बनारस
सरस्वती सदन, जलोरी गेट, जोधपुर
सरस्वती सदन, पाटंकर बाज़ार, लश्कर, ग्वालियर
सरस्वती सदन, नई सड़क, दिल्ली
सरस्वती सदन, लक्स माउण्ट, मसूरी
सरस्वती सेवा सदन, (कालेज बुक स्टाल) पी० रोड, कानपुर
सस्ता साहित्य भण्डार, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ
सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली
सहयोगी प्रकाशन मन्दिर, दतिया
साधना पथ,

हमारे प्रकाशन

कहानी

- युग की आवाज़ : सत्यपाल आनन्द ४।=)
- अमा निशा : करतारसिंह दुग्गल ३)
- विवाह चक्र : पृथ्वीनाथ शर्मा २॥)
- केसर क्यारी : सन्तसिंह सेखों २॥)

एकांकी

- एकांकी निकुञ्ज : राधेश्याम शास्त्री २)

निबन्ध—आलोचना

- सुन्दर निबन्ध : राधेश्याम शास्त्री २॥=)
- साहित्य प्रवेश : हंसराज अग्रवाल ३॥।)
- पुष्प-पराग : वदमित्र 'व्रती' श्रीनिवास नागर १)

साहित्य संगम

क्लाक टावर, लुधियाना।

साधना पब्लिकेशन्ज़, बगिया मनीराम, कानपुर
साधना सदन, लूकर गंज, इलाहाबाद
साहनी प्रकाशन, ५७ एस्लपेनेड रोड, दिल्ली-६
साहित्य कुटीर, ४१ शिवतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता
साहित्य कार्यालय, दिल्ली प्रेस, कनाट सर्कस, नई दिल्ली
साहित्यकार संसद, रसूलाबाद, इलाहाबाद
साहित्य निकुञ्ज, यूनिवर्सल प्रेस, शिवचरण लाल रोड, इलाहाबाद
साहित्य निकेतन, श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर
साहित्य निकेतन, दारागंज, इलाहाबाद
साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली
साहित्य प्रकाशन मन्दिर, हाई कोर्ट रोड, लश्कर ग्वालियर
साहित्य भवन लि०, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद
साहित्य मण्डल प्रकाशन, दरभंगा
साहित्य रत्नमाला कार्यालय, २० धर्मकूप, बनारस
साहित्य रत्न भण्डार, ४ महात्मा गांधी रोड, आगरा
साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
साहित्य सदन, पल्टन बाज़ार, देहरादून
साहित्य सदन, नरकटिया गंज, चम्पारण
साहित्य सदन, अबोहर (पंजाब)
साहित्य सदन, सूर्यगढ़, मुँघेर
साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ
साहित्य साधना कुटीर, संयोगितागंज, इन्दौर
साहित्य सेवा सदन, बनारस
साहित्य सेवा सदन, शिव सदन, छीपी तालाब, मेरठ
साहित्य सेवक संघ, छपरा
सिटी बुक हाउस, कानपुर
सिंह प्रकाशन, बिजनौर
सीता प्रकाशन, ५६/४६ कला भवन, बिरहाना रोड, कानपुर
सीता प्रेस, बनारस
सुदर्शन प्रकाशन, आगरा
सुलभ पुस्तक कार्यालय, बड़ा गणेश, बनारस
सुलभ साहित्य सदन, पटना-१
सुरुचि प्रकाशन, 'कनक', हिमायत नगर, हैदराबाद
सुशील कार्यालय, ४५६ खारी बावड़ी, दिल्ली-६
सुषमा साहित्य मन्दिर, १६२ जवाहरगंज, जबलपुर

[आगे पृष्ठ १८४ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किताबों की दुनिया

जिस उपन्यास की रचना का इतिहास ही अपने में अपूर्व वीरता, धीरता और अदम्य साहस का इतिहास छिपाये है, जो दुखान्त होने के बावजूद अडिग विश्वास और अथाह उत्साह की भावनाओं से आपको ओत-प्रोत कर देता है और जिसमें लेखक और योद्धा के आत्मिक सौंदर्य का सजीव चित्रण है—ऐसा उपन्यास पढ़ना चाहते हैं तो मंगाइये :

अग्नि-दीक्षा

ले० : निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

इसमें आपको लेखक के जीवन की भी एक झलक मिलेगी। समाजवादी युग में पैदा हुए नई इन्सान की झाँकी, उसकी कर्त्तव्य भावना के प्रति गहरी आस्था और फिर सौंदर्य, प्यार, परिवार और अनेक पात्रों की अलग-अलग विशेषताएं। यह उपन्यास दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है और लाखों की तादाद में खप चुका है। हिन्दी में यह पहली बार सज-धज के साथ प्रकाशित किया गया है।

मजबूत जिल्द : साफ छपाई : बढ़िया कागज

पृष्ठ संख्या ५०० : मूल्य ४) : डाक खर्च अलग

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, नई दिल्ली १.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १८२ से आगे]

सूरी ब्रदर्ज़, एस्लपेनेड रोड, दिल्ली
सेवा बुक डिपो, पहाड़गंज, दिल्ली
सैण्ट्रल बुक डिपो, जॉन्स्टन गंज, इलाहाबाद
हज़ूरिया एण्ड सन्स, माई हीराँ गेट, जालन्धर
हंस प्रकाशन, ६३ ज़ीरो रोड, इलाहाबाद
हंसराज शर्मा एण्ड सन्स, एस्प्लेनेड रोड, दिल्ली
हरिदास एण्ड को० लि० (प्रकाशन विभाग), मथुरा
हरिभवन, बाज़ार बज़ाज़ा, करनाल
हितचिन्तक प्रेस, बनारस
हितैषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर
हिन्द किताब्ज लि०, २०१/२६३ हार्नबी रोड, बम्बई
हिन्द चित्र प्रेस, वैस्ट कचहरी रोड, मेरठ
हिन्द प्रकाशन, तिलक पुतले के पास, महाल, नागपुर
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई-४
हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद
हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, फर्रुखाबाद (उ० प्र०)
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस
हिन्दी प्रचारक मण्डल, कैलाश भवन, घसियारी मण्डी, लखनऊ
हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञानवापी, बनारस
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०३ हरिसन रोड, कलकत्ता
हिन्दी पुस्तक भण्डार, हीराबाग, सी० पी० टैंक, बम्बई-४
हिन्दी प्रेस, कटरा, इलाहाबाद
हिन्दी भवन, जालन्धर
हिन्दी मन्दिर प्रकाशन, २९ जैन मन्दिर, नई दिल्ली
हिन्दी विश्वभारती, चारबाग, लखनऊ
हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथी गली, बनारस
हिन्दी साहित्य भण्डार, रानी कटरा, लखनऊ
हिन्दी साहित्य मण्डल, बाज़ार सीताराम, दिल्ली
हिन्दी साहित्य मन्दिर, ब्रह्मपुरी, अजमेर
हिन्दी साहित्य सदन, ८६६ सदाशिव, ताराचन्द मार्केट, पूना
हिन्दी साहित्य सदन, किरकारा, मक्खनपुरी, मेनपुरी (उ० प्र०)
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद
हिन्दी ज्ञानपीठ, ३१७ मल्हार गंज (लोहार पट्टी), इन्दौर
हिन्दुस्तान टाइम्ज़, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद
हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा
हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्ज़, शाहगंज, इलाहाबाद
हिन्दुस्तानी प्रेस, पटना
हिन्दुस्तानी बुक डिपो, फतेह गंज, अजमेर
हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ
हिमालय एजेन्सी, कनखल (उ० प्र०)
हिमालय पब्लिकेशन्ज़, पटना-४
हिमालय हर्बल इन्स्टीट्यूट, पो० गुरुकुल काँगड़ी, सहारनपुर
हैदराबाद राज्य हिन्दी प्रचार सभा, नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद

ज्ञान-धाम प्रतिष्ठान, शाहदरा, दिल्ली
ज्ञान प्रकाश मन्दिर, जमालपुर (मुंघेर)
ज्ञान प्रकाशन, ७/१६ दरियागंज, दिल्ली
ज्ञानपीठ लि०, खज़ांची रोड, पटना-४
ज्ञानमण्डल लि०, ज्ञानवापी, बनारस
ज्ञान मन्दिर, जवाहर गंज, जबलपुर
ज्ञान मन्दिर, कानपुर

[पृष्ठ १७१ से आगे]

श्री बृजगोपालदास अग्रवाल (दलसिंगार, आज़मगढ़) के पास कहानियों का एक संकलन 'पहला कदम' के नाम से तैयार है। संकलन का प्रकाशन किसी भी उचित शर्त पर दिया जा सकता है।

◊ ◊ ◊

श्री कन्हैयालाल 'चंचरीक' (मार्फ़त कमला टाइप फाउन्ड्री, सोहनगंज, सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-६) के पास निम्नलिखित पुस्तकों की अप्रकाशित पांडुलिपियाँ तैयार हैं; जो प्रकाशक उचित समझें, इन से पत्र-व्यवहार करें : (१) झुकि जा रे बदरा (लोक-कथाएँ), लोक-गीतों पर लिखे गए लेख, (२) ब्रज की लोक-कथाएँ (३) छवि के बन्धन : ३० कविताओं का संग्रह, (४) आकाश के फूल : २५ कविताएँ, नये प्रयोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

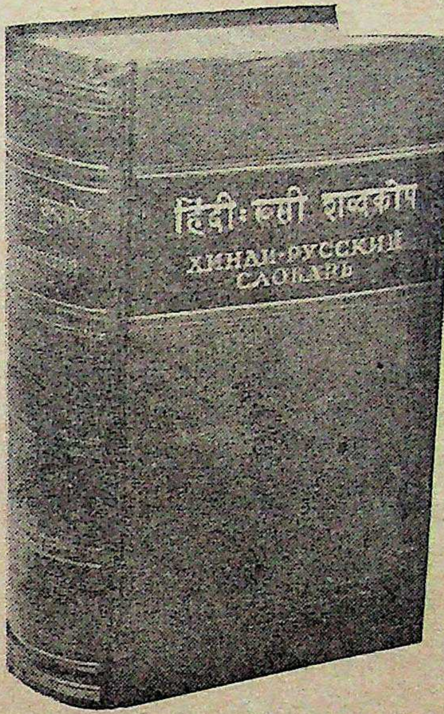

...की मौलिक एकता : भारती भण्डार, इलाहाबाद से ...त यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल की ...है। इसमें भारत की मौलिक एकता के सांस्कृतिक एवं ...तिक आधारों की विस्तृत विवेचना की गई है। देश ...भारत' संज्ञा के नामकरण से आरम्भ करके समस्त देश ...हुए तीर्थ और पुण्य क्षेत्रों, सुज्ञात नगरों तथा नदियों ...नान्त दिया गया है। आर्थिक क्षेत्र में भी देश के सब ...एक-दूसरे पर निर्भर रहते थे। देश की भाषाओं और ...का उद्गम-स्रोत्र भी एक ही था। लोक-कथाओं के रूप ...के दूरवर्ती भागों में एक-समान साहित्य ही दीख पड़ता ...आज की ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का सामना करने के लिए ...की मौलिक एकता से परिचित होना परम आवश्यक ...और इस परिचय को सुबोध ढंग से समझाना ही इस ...का विषय है। पुस्तक के परिशिष्ट में दो मानचित्र हैं; ...एन्टिक, पृष्ठसंख्या २०८, मूल्य ४) है।

◈ ◈ ◈

...हिन्दी-रूसी शब्दकोष नाम से डिमाई आकार के ...पृष्ठों का बड़ा कोष अभी ही मॉस्को में छपा है, जो ...त का प्रमाण है कि वहाँ हिन्दी-भाषा और साहित्य का... ...न कितनी गम्भीरता से हो रहा है। जिन रूसी साहित्य ...ने इसकी रचना की है, उन के अनन्य पाण्डित्य ...श्रम का भी यह प्रतीक है। शब्दार्थ देते हुए सम्बन्धित ...ों और अर्थ की हल्की-से-हल्की विभिन्न परतों को वाक्यांश ...ग करके समझाया गया है, जैसे 'में' के अर्थ में : शहर ...में, जहाज़ में, आपस में, आड़ में, पैर में जूता पह- ...डोल में रस्सी बाँधो, रस्सी में डोल बाँधो, इस ज़माने ...में, मार्च के अन्त में, वह चार दिन में आवेगा, ...नेतृत्व में, उसकी अध्यक्षता में, के उपलक्ष्य में, उप- ...में देना, रिश्वतखोरी में सज़ा देना, इस बात में क्या कहते हो?, यह घोड़ा कितने में पड़ा?, सस्ते मूल्य में। कोष में शब्दार्थ देते हुए किस प्रकार राज्य की निर्देशक नीतियों का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है, उसके उदाहरण यहाँ भरे-पड़े हैं : प्रत्येक का अर्थ देते हुए इस शब्द के प्रयोग में लिखा गया है : "प्रत्येक मनुष्य से उसकी शक्ति के अनुसार काम लेना और प्रत्येक मनुष्य को उसकी आवश्यकता के अनुसार उपज का भाग देना।" बंक (बैंक) से बंकशाह का अर्थ समझाते हुए : बंकशाहों का सर्वव्यापी प्रभुत्व; बाज़ार के अर्थ में काला बाज़ार, शेयर बाज़ार, बाज़ारों में अपना कब्ज़ा करना; चिन्तन-पठन से अमरीका के संयुक्त राष्ट्रों में स्वतन्त्र चिन्तन-पठन का खून, इत्यादि। इस अतीव महत्त्व-पूर्ण कोष का प्रत्येक पुस्तकालय में होना आवश्यक है। छपाई सुन्दर तथा निर्भूल है। मूल्य केवल ६।~)। पीपुल्ज पब्लिशिंग हाउस लि०, इरविन अस्पताल के सामने, दिल्ली, से प्राप्य।

◈ ◈ ◈

भारतीय राजनीति (विक्टोरिया से नेहरू तक) : ज्ञानमण्डल लि०, ज्ञानवापी, बनारस, ने पत्रकार श्री रामगोपाल एम० ए० द्वारा लिखित १८५८ से १९४७ तक के इस राजनीतिक इतिहास को प्रकाशित किया है। पुस्तक में इस अवधि की वैधानिक प्रगति के साथ-साथ भारतीय स्वातंत्र्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्राम के, तथा इसके प्रवर्तकों के, क्रमानुगत इतिहास का उल्लेख हुआ है। यह प्रामाणिक प्रकाशन राजनीति के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी तथा उपादेय है। रायल आकार के सुमुद्रित ४७३ पृष्ठों की पक्की जिल्द की, इस पुस्तक का मूल्य १०) है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस ने 'हाईस्कूल कक्षा के विद्यार्थियों के लिए' डॉ० राजबली पाण्डेय, अध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग, काशी हिन्दू विद्यालय, द्वारा लिखित **भारतीय इतिहास का परिचय** का प्रकाशन किया है। अधिकारी इतिहासवेत्ता ने १९वीं शती के इतिहास को लिखने की पिटी लकीर को छोड़कर 'ऐतिहासिक जीवन को क्रमबद्ध करने और उसे संगठित रूप देने की चेष्टा' की है। १९४७ के बाद के भारत में इतिहास के राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास की परम आवश्यकता है जो ऐसे ग्रन्थों से ही पूरी होगी। डिमाई से कुछ छोटे आकार के ४३० पृष्ठों की इस सुमुद्रित, सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल ४।।।) है।

◈ ◈ ◈

अरसा हुआ जब 'मिलाप', दिल्ली, के सम्पादक श्री रणवीर ने बाबा शंकरदास के नाम से कुछ आध्यात्मिक लेख प्रकाशित किए थे। पुस्तकाकार के रूप में अब वे लेख **शंकर लेखमाला** के नाम से प्रकाशित हुए हैं। १६ पेजी क्राउन साइज के ३४७ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य ३।।) है; प्रकाशक हैं—**श्रीमती शीला, मिलाप, नई दिल्ली।**

◈ ◈ ◈

मेरा साहित्यिक जीवन में श्री भगवानदास केला ने अपनी भारतीय ग्रन्थमाला, सर्वोदय ग्रन्थमाला की बात के अतिरिक्त अपने आसपास की और अपने विचारों और आदर्शों की कहानी आत्म-कथा के माध्यम से प्रस्तुत की है। हिन्दी के इस साधक ने स्वयं लेखन और प्रकाशन-व्यवसाय में किन-किन कठिनाइयों का सामना किया, इसकी भी झाँकी पाठकों को इस पुस्तक में मिलती है। पुस्तक प्रत्येक जागरूक पाठक, अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी और पुस्तकालयों के लिए उपादेय सामग्री उपस्थित करती है। क्राउन साइज के २६८ पृष्ठ की सुमुद्रित और सजिल्द यह पुस्तक, **भारतीय ग्रन्थमाला** दारा गंज, प्रयाग से प्रकाशित हुई है और ३) में मिलती है।

◈ ◈ ◈

राष्ट्र-भाषा-विचार संग्रह में इसके सम्पादक श्री प्रा० शं० दा० चितले, प्रा० न० चिं० जोगलेकर ने राष्ट्र भाषा हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालने वाले कुछ अहिन्दी भाषी विद्वानों के माननीय विचारों का आकलन प्रस्तुत किया है। पुस्तक के आरम्भ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग और राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति वर्धा आदि संस्थाओं के भाषा-नीति सम्बन्ध में प्रस्ताव, भारतीय संविधान का राज-भाषा-सम्बन्धी अंश, उसकी ३५१वीं धारा और उसके अर्थ के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतों की उपयोगी तथा महत्त्वपूर्ण सामग्री भी उपस्थित की है। राष्ट्र-भाषा-प्रचारकों के लिए यह पुस्तक उपादेय है। क्राउन साइज के १३० पृष्ठ की साधारण कागज पर छपी यह पुस्तक श्री शं० दा० चितले, ६२४, सदाशिव, पूना–२ से मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी के वर्तमान कवि और उनका काव्य नामक पुस्तक श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' द्वारा लिखित और **काशी पुस्तक भण्डार, बनारस,** द्वारा प्रकाशित है। इसमें 'कीर्तिकुंज' तथा 'मधुवन' नाम से दो भाग हैं। प्रारम्भ के ३६ पृष्ठों में 'प्रवेश' शीर्षक से हिन्दी की वर्तमान कविता और उसके कवियों के सम्बन्ध में लेखक ने आलोचनात्मक प्रकाश डाला है। पहले भाग में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त से लेकर 'अंचल' तक के १२ कवियों की कविताओं का आलोचनात्मक संकलन है और दूसरे में ८० के लगभग कवियों की केवल कविताएँ ही संग्रहीत है। कविताओं के देने में कोई सूत्रबद्धता नहीं। उदाहरणार्थ 'बालेन्दु' इस भाग में १९वें क्रम पर हैं और 'अज्ञेय', सोहनलाल द्विवेदी तथा सुभद्राकुमारी चौहान आदि बाद में। पुस्तक की भूमिका श्रीनारायण चतुर्वेदी ने लिखी है। २२४ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक प्रकाशक से ४) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

उर्दू के कवि और उनका काव्य भी श्री गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' द्वारा सम्पादित संकलन पुस्तक है। इसमें प्रवेश, उर्दू भाषा या शैली, उर्दू शैली की अभारतीयता, उर्दू काव्य में प्रेम, उर्दू काव्य की उत्कृष्टता, उर्दू काव्य का हिन्दी कवियों पर प्रभाव, उर्दू-हिन्दी के काव्य—दो समानान्तर

[आगे पृष्ठ १८८ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री ऋषभचरण जैन की प्राप्य कृतियाँ

१. हिज़ हाईनेस
देशी राज्यों से सम्बन्धित रोचक उपन्यास
मूल्य ४)

२. षड्यन्त्रकारी
ड्यूमा की एक प्रसिद्ध रचना का हिन्दी अनुवाद
मूल्य ३)

३. राजकुमार भोज
बालोपयोगी उपन्यास
मूल्य १)

४. ग़दर
ऐतिहासिक उपन्यास
मूल्य २॥)

५. रहस्यमयी
सामाजिक उपन्यास
मूल्य २)

६. सत्याग्रह
राजनैतिक उपन्यास
मूल्य १॥)

७—१६. वज्र ग्रन्थावली:—दिल्ली का कलंक २. दुराचार के अड्डे ३. बुर्दा फ़रोश ४. चांदनी रात ५. हर हाईनेस ६. तीन इक्के ७. मयख़ाना ८. नर्क धाम ९. चम्पाकली १०. हत्यारा। प्रत्येक का मूल्य १॥)

सब प्रकार की हिन्दी पुस्तकों के लिए हमें लिखें

अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित श्री ऋषभचरण जैन द्वारा लिखित उपन्यास हम से प्राप्य :
१. कण्ठहार ४) २. क़ैदी ३) ३. भाई २॥) ४. भाग्य २)

ज्ञा न प्र का श न
७११६, दरियागंज, दिल्ली—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ १८६ से आगे]
रेखाएँ क्यों ?, शेष—शीर्षक अध्यायों में उर्दू कवियों और उनकी कविता के बहुमुखी विकास पर प्रकाश डाला गया है। उर्दू-साहित्य से परिचय प्राप्त करने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक उपयोगी है। क्राउन साइज के २२४ पृष्ठों की यह पुस्तक काशी पुस्तक भण्डार, बनारस, द्वारा ४) में प्रकाशित की गई है।

◈ ◈ ◈

आधुनिक निबन्ध श्री नन्ददुलारे बाजपेयी और श्री रामलालसिंह द्वारा सम्पादित १५ निबन्धकारों के उत्कृष्ट निबन्धों का संकलन है। डॉ० रवीन्द्रनाथ टाकुर, डॉ० राधाकृष्णन् और रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर-जैसे हिन्दीतर-भाषी महानुभावों के निबन्ध भी समाविष्ट हैं। प्रारम्भ में सम्पादकों ने हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश डालकर निबन्धों के रूप पर विचार किया है। २२२ पृष्ठों की यह पुस्तक प्रकाशक स्टूडेण्ट्स बुक डिपो, सागर, से ३) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

सरल भाषा विज्ञान हिन्दी-साहित्य के अध्येता उच्च श्रेणी के छात्रों के उपयोग की दृष्टि से लिखी गई है। इसके लेखक श्री जगमोहनशंकर और प्रतापनारायण टण्डन हैं। भाषा-विज्ञान के सभी पक्षों पर उपयोगी प्रश्नावली तैयार करके उनके समाधान प्रस्तुत किये गए हैं। क्राउन साइज के १६० पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक प्रकाशक विद्या मन्दिर, लखनऊ, से २।) में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈ ◈

आपन मरन जगत् कै हाँसी में हिन्दी की प्रख्यात कहानी-लेखिका श्रीमती कमला चौधरी की अवधी, हिन्दी और उर्दू की २१ हास्य व्यंगमयी कविताओं का संकलन किया गया है। सभी कविताएँ पाठकों में व्यंग और हास्य का उद्रेक करके एक अजीब गुदगुदी उत्पन्न करने में समर्थ हैं। डिमाई साइज़ के ११२ पृष्ठों की यह पुस्तक प्रकाशक साहित्य सेवा सदन, मेरठ, से ३) में मिलती है।

◈ ◈ ◈

काले नगर में श्री कमल शुक्ल का सामाजिक उपन्यास है। लेखक ने समता और विषमता का चित्रण प्रस्तुत करके कर्त्तव्य और स्थिति का सन्तुलन उपस्थित करने की चेष्टा की है। उपन्यास के पात्र कनक और तुलसी नारी वर्ग के दो विभिन्न वर्गों के प्रतीक हैं। एक में जहाँ मानवीय सद्गुणों की प्रधानता दिखलाकर उसका नैतिक स्तर ऊँचा उठाया है, वहीं दूसरी ओर परिस्थितियों से आक्रान्त करके उसे उनकी अनुवर्तिनी बनने को विवश किया है। शुक्ल जी ने इस उपन्यास में मध्यवित्तीय वर्ग के समाज का सामूहिक विश्लेषण उपस्थित किया है और उन्हें इसमें सफलता मिली है। १६-पेजी क्राउन साइज के १३८ पृष्ठों की एंटिक पेपर पर छपा और आकर्षक आवरण वाला यह उपन्यास ओरियण्टल बुक डिपो, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित हुआ है और मूल्य २॥) है।

◈ ◈ ◈

मौलश्री में उपन्यासकार कमल शुक्ल ने भाग्यवादी, अवसरवादी और पौरुषवादियों की मौलिक भावनाओं का सुन्दर और स्पष्ट चित्रण किया है। परिस्थितियों के प्रबल थपेड़ों से आक्रान्त राकेश अपने पुरुषार्थ पर अटूट विश्वास करके जीवन की कण्टकाकीर्ण राह पर बढ़ता है। उसका उत्साह और साहस उसे अपने लक्ष्य की सिद्धि कराने में सहायक होते हैं। उपन्यास की नायिका मौलश्री नारी होते हुए भी विद्वत्ता और तर्क-शक्ति में पुरुषों से बाजी ले जाती है। अवसरवादी शास्त्री जी भाग्यवादी केसर, समस्यावादी राहुल और प्रोफेसर साहब आदि सभी मिलकर समाज के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। कुल मिलाकर उपन्यास सुन्दर, सुरुचिपूर्ण और मानसिक तर्क शक्ति को प्रबुद्ध करने वाला है। क्राउन साइज एण्टिक पेपर पर छपा ४०३ पृष्ठ का, आकर्षक आवरण वाला यह उपन्यास ओरियण्टल बुक डिपो, नई सड़क, दिल्ली से ६) में प्राप्त हो सकता है।

◈ ◈ ◈

ज़िन्दगी के गीत में श्री विनोद रस्तौगी की आशा और निराशा से परिव्याप्त कविताओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है। भावना के साथ-साथ भावुकता की छाया भी इसमें यत्र-तत्र बिखरी मिलती है। ६४ पृष्ठ की यह पुस्तक एक रुपये में कमला प्रकाशन, स्वरूप नगर, कानपुर, से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

मधुवन में प्रो० सुशीलकुमार दिवाकर के १४ सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक निबन्धों का संकलन है। इन निबन्धों में से कुछ तो समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। मुख्यतः जैन धर्म की सांस्कृतिक पीठिका ही इन निबन्धों की आधार-भूमि है। क्राउन साइज

[आगे पृष्ठ १६१ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा

—भूदान-यज्ञ-गीत-संग्रह, संकलन।

—सर्वोदय का इतिहास, ले० शंकरराव देव। सर्वोदय-विचार का इतिहास व विज्ञान।

—सर्वोदय और विश्वशान्ति, ले० जे० सी० कुमारप्पा। सर्वोदय और विश्वशान्ति पर आर्थिक विचार।

—सर्वोदय की ओर, ले० आचार्य विनोबा भावे। भूदान-मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति सम्बन्धी प्रवचन।

...र इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लि०, लखनऊ

—राजनीति शास्त्र, ले० ए० डी० आशीर्वादम्। अनु० गंगारत्न पाण्डेय। द्वितीय संस्करण।

...माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—साहित्य-विवेचन के सिद्धान्त, ले० क्षेमचन्द्र 'सुमन', योगेन्द्र मल्लिक। ३)

—कलाकार का पुरस्कार, ले० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'। कहानी-संग्रह। ३)

—डूबते मस्तूल, ले० नरेश मेहता। उपन्यास। ४॥)

—गृह-विनोद, ले० अरुण एम० ए०। सचित्र। ८)

—काव्य का रूप, ले० गुलाबराय। नया संशोधित संस्करण। ५)

—अमृत प्रभा, ले० राजेश्वरनारायण प्रसाद सिंह काव्य। ॥=)

—रेल का डिब्बा, ले० अरुण। एकांकियों का संग्रह। २)

—जल-समाधि, ले० गोविन्दवल्लभ पन्त। ३॥)

...न्द प्रकाशन लि०, बनारस—१

—थियॉसोफ़ी के मूल-सिद्धान्त भाग २, ले० सी० जिनराजदास, अनु० रामचन्द्र शुक्ल। थियॉसोफ़ी का वैज्ञानिक प्रतिपादन।

—मेरी प्रतिज्ञा, ले० सी० जिनराजदास, अनु० श्रीमती प्रकाश सिनहा। वीर-वाक्य, आनन्दमय विचार तथा वीरोचित कार्यों के उपदेश।

—भारतीय आदर्श, ले० श्रीमती एनीबेसण्ट, अनु० रामचन्द्र शुक्ल। शिक्षा, धर्म और तत्व-दर्शन तथा कला सम्बन्धी भारतीय आदर्शों का निरूपण।

आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता—७

—कन्या का तपोवन, श्री रामनरेश त्रिपाठी द्वारा लिखित सामाजिक नाटक।

गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—मुक्तिका, ले० जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'। मिलिन्द जी की रस, प्राण, जीवन और प्रेरणा का आनन्द देने वाली कविताओं का संग्रह।

—सांस्कृतिक प्रश्न, ले० जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'। साहित्य, संगीत कला आदि सांस्कृतिक विषयों पर लिखे गये विचारपूर्ण तथा श्रेष्ठ मौलिक निबन्धों का संग्रह।

गीता प्रेस, गोरखपुर

—गीता दैनन्दिनी १९५५, श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार द्वारा सम्पादित गीताभ्यास और मनन के लिए दैनिक कार्यक्रम तथा सत्संग की बातें। नवमुद्रण।

—चित्रमय बुद्ध लीला, ले० हनुमानप्रसाद पोद्दार। भगवान् बुद्ध का चरित्र, चित्रों में, तथा कविताएँ।

—चित्रमय चैतन्य लीला, ले० हनुमानप्रसाद पोद्दार। भगवान् चैतन्य का चरित्र, चित्रों में, तथा कविता।

—गुरू और माता-माता के भक्त बालक, ले० हनुमान प्रसाद पोद्दार।

चिनगारी प्रकाशन, बनारस

—सन्यासी, ले० श्रीमती एम० के० शंकर। सामाजिक उपन्यास।

—चिनगारी अतीत अंक, भारतीय इतिहास की रोचक कथाओं, कविताओं, तथा लेखों का संग्रह। पृष्ठसंख्या लगभग २५०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस

—तुलसी की जीवन-भूमि, ले० श्री चन्द्रबली पाण्डेय। तुलसी की जीवन वृत्ति तथा जीवनी। जन्म स्थान के सम्बन्ध में। ३)

—असीम, ले० शम्भूनाथ वाजपेयी। उपन्यास। ४)

नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर

—शिक्षा में पुनर्व्यवस्था, ले० भैरवनाथ झा।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

—रात अंधेरी है, ले० चन्द्र अग्निहोत्री। मौलिक सामाजिक उपन्यास।

—हिन्दी साहित्य रत्नाकर, ले० डॉ० विमलकुमार जैन। साहित्य-समीक्षा।

—बुज़दिल, एक फ्रेंच उपन्यास का शिवदानसिंह चौहान द्वारा किया गया अनुवाद।

—नया गुलाम, ले० कृष्णचन्द्र। एकांकी नाटक।

प्रभात प्रकाशन, मथुरा

—नष्ट नीड़, रवि बाबू के उपन्यास का अनुवाद।

—तीन साथी, रवि बाबू के उपन्यास का अनुवाद।

पुस्तक मन्दिर, बक्सर

—सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य-नाटक, ले० सिद्धनाथ कुमार। काव्य-नाटकों का संग्रह। ४।।)

भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़

—पूजा के फूल, ले० व्यथित हृदय। दस एकांकी नाटकों का संग्रह। १)

—मध्यकाल के पाँच श्रेष्ठ कवि, ले० रमाशंकर जैतिला, देवर्षि सनाढ्य। जायसी, सूर, तुलसी, केशव और घनानन्द की आलोचना। १।।)

—सूर के काव्य की आलोचना, ले० डॉ० हरवंशलाल शर्मा। सूरदास के काव्य की विस्तृत आलोचना। २।।)

भारतीय ज्ञानपीठ, बनारस-५

—अध्यात्म-पदावली, ले० राजकुमार जैन। आध्यात्मिक पद। ४।।)

—ध्वनि और संगीत, प्रो० ललितकिशोर सिंह। संगीत विषयक प्रकाशन। मूल्य लगभग ४)

यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, जालन्धर

—एकांकी संचयन, सं० डॉ० सावित्री सिन्हा। छः प्रमुख एकांकियों का संकलन। २।।)

—पञ्च-प्रसून, सं० शादीराम जोशी। पाँच एकांकियों का संग्रह। २।।)

—प्रमुख कहानियाँ, सं० लाजपतराय। हिन्दी की प्रसिद्ध कहानियों का संकलन। २।।)

—आठ कहानियाँ, सं० डॉ० ओंप्रकाश। हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों का संकलन। २।।)

राज प्रकाशन, पटना-४

—गाँव की बातें, ले०देहाती एम०ए०। ग्रामोपयोगी। ।।।)

—शिखंडी, ले०कामेश्वर शर्मा। उपन्यास। मूल्य लगभग ५)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—धरती और स्वर्ग, ले० डॉ० देवराज। सहज अनुभूतिपूर्ण कविताओं का संग्रह।

—अब्राहम लिंकन, ले० डॉ० इन्द्रनाथ मदान। 'आदर्श-जीवन माला' की छठी पुस्तक। ।।।=)

—भारतीय लोक-साहित्य, ले० श्याम परमार। भारतीय लोक साहित्य का वैज्ञानिक तथा विशद विवेचन।

विद्या मन्दिर, लखनऊ

—ग़बन : एक अध्ययन, ले० प्रेमनारायण टंडन। चतुर्थ मुद्रण। १।।)

—नूरजहाँ की टीका, ले० रामखेलावन चौधरी, तेजनारायण टंडन। २।।)

—काव्य-प्रभा, ले० प्रेमनारायण टंडन। रस, छन्द, अलंकार की परीक्षोपयोगी पुस्तक। २)

—सूर प्रभा दीपिका, ले० योगेन्द्रनाथ शर्मा, तेजनारायण टंडन। डॉ० दीनदयालु गुप्त द्वारा सम्पादित 'सूर प्रभा' की टीका। २)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

—तूफान, ले० खलील जिब्रान। अनुवादक नरेन्द्र चौधरी। पृष्ठसंख्या लगभग १००।

—गिरधर की कुंडलियाँ, संग्राहक आदर्श कुमारी। गिरधर की जीवन व उपदेशप्रद कुँडलियाँ।

—माटी की मूरत जागी, ले० रामचन्द्र तिवारी। पेड़-पौधों की कहानियाँ।

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—पतिता, ले० हरि कपूर। सामाजिक उपन्यास। मूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग ६)
दीप, ले० हरिवल्लभ । सामाजिक उपन्यास । ४)

सदन, देहरादून

ता और मनुष्य, ले० भगवतीप्रसाद वाजपेयी । नई
माजिक समस्याओं पर मौलिक उपन्यास । ५)
ीर और जायसी का रहस्यवाद, ले० डॉ० गोविन्द
गुणायत । तुलनात्मक आलोचना ।
युवकों से दो-दो बातें, ले० कर्नल टी० एफ़०
डोनल, अनु० मोहनसिंह । सदाचार, अनुशासन पर
भावपूर्ण लेख ।
ल फुलवारी, ले० रामचन्द्र श्रीवास्तव । पद्यबद्ध
ाल-कहानियाँ । ||=)

रत्नमाला कार्यालय, बनारस

लोक, ले० विभूतिभूषण बन्द्योपाध्याय, अनु० रामचन्द्र
र्मा। मृत्यु के बाद के पारलौकिक जीवन से सम्बन्ध
रने वाला उपन्यास । ४)

साहित्य भण्डार, लखनऊ

हिन्दी साहित्य की प्रश्नोत्तरी, ले० बालबन्धु । हिन्दी
साहित्य का सरल इतिहास । २)
मला, अनु० रूपनारायण पाण्डेय । श्री विभूतिभूषण
न्द्योपाध्याय के एक प्रसिद्ध बंगला उपन्यास का
अनुवाद । २)

ाम प्रतिष्ठान, शाहदरा (दिल्ली)

र्मपुत्र, ले० आ० चतुरसेन शास्त्री । सामाजिक उपन्यास ।

[... से आगे]
े प्रिंट पेपर पर मुद्रित १३२ पृष्ठ की यह पुस्तिका
न प्रकाशन, सिवनी (म० प्र०) से १) में प्राप्य हो ।

◇ ◇

विद्रोही बानपुर में श्री वासुदेव गोस्वामी ने सन् १८५७
ास के एक विस्मृत अध्याय को नये ढंग से प्रस्तुत किया
ाष्ट्रीय जागरण की प्रेरणा-भूमि बानपुर और उसके महा-
मर्दनसिंह के शौर्य पर प्रकाश डालने में लेखक ने अनेक
ासिक तथ्यों का आकलन प्रस्तुत किया है । राजनीति के
ों के लिए यह पुस्तक उपादेय एवं संग्राह्य है । क्राउन
के ७५ पृष्ठ की इस पुस्तिका को सहयोगी प्रकाशन
ा लिमिटेड दतिया ने १) में प्रकाशित किया है ।

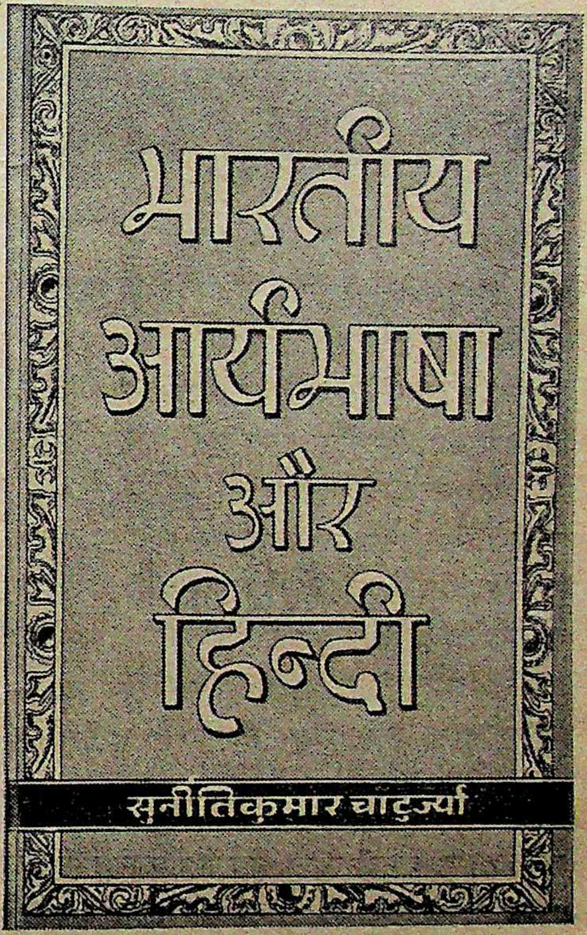

मूल्य ६) मात्र

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना, व्याकरण

जीवानन्द जैन, धर्मपाल शास्त्री, **सुगम हिन्दी व्याकरण**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

तेजनारायण टंडन तथा अन्य, **राष्ट्रभाषा गाइड**, ६२५, क्राऊन, विद्यामन्दिर, लखनऊ

तेजनारायण टंडन, योगेन्द्रनाथ शर्मा, **व्याकरण प्रश्नोत्तरी**, ८२, क्राऊन, विद्यामन्दिर, लखनऊ

पदुमलाल बख्शी, **हिन्दी कथा साहित्य**, क्राऊन, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई

प्रतापनारायण टंडन, **शिवराज भूषण (सटीक)**, १६४, क्राऊन, विद्यामन्दिर, लखनऊ

प्रेमनारायण टंडन, **प्रेमचन्द कृतियाँ कला**, ३०८, क्राऊन, पु० मु०, विद्यामन्दिर, लखनऊ

प्रेमनारायण टंडन, **हिन्दी के दो प्रमुख वाद**, १८०, क्राऊन, पु० मु०, विद्यामन्दिर, लखनऊ

प्रेमनारायण टंडन, **चन्द्रगुप्त : एक अध्ययन**, १८८, क्राऊन, पु० मु०, विद्यामन्दिर, लखनऊ

रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, **कविता में प्रकृति चित्रण**, २०६, क्राऊन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

हरवंशलाल शर्मा, डॉक्टर, **सूर और उनका साहित्य**, ६००, डि०, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़

उपन्यास

ऑस्कर वाइल्ड, **अपनी छाया**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

कृष्णचन्द्र, **उल्टा वृक्ष**, १५८, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

गोपालकृष्ण कौल, **जादूगरनी**, २५६, क्राऊन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

गोविन्दवल्लभ पन्त, **एक सूत्र**, २६६, क्राऊन, पु० मु०, गंगापुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ

चतुरसेन शास्त्री, **हृदय की प्यास**, २८८, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ

टाल्स्टाय, अनु० सूरजनारायण, **अन्ना केरनिना**, ३००, क्राऊन, प्रभात प्रकाशन, मथुरा

नकाबपोश भेदी, **मौत का फ़रिश्ता**, १२०, क्राऊन, देशसेवा मण्डल, इलाहाबाद

बाबूराव अनिलकर, आर० आर० सर्वटे, **भूतमहल का बन्दी**, १७६, क्राऊन, चिनगारी प्रकाशन, बनारस

रघुवीरशरण मित्र, **आग और पानी**, ५०८, क्राऊन, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ

रामसागर शास्त्री, **सती के नाम पर**, १३०, क्राऊन, विन्ध्य साहित्य प्रकाशन, रीवा

वृन्दावनलाल वर्मा, **प्रत्यागत**, ११४, क्राऊन, पु० मु०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली

कविता

दुर्गाप्रसाद रस्तौगी, **अखण्ड विश्व**, क्राऊन, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद

यतेन्द्रकुमार, **शेली**, १००, डि०, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़

सुरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव, **जागरण के गीत**, १००, डि०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

नन्द्र, काश्मीर की कहानियाँ, १७४, क्राऊन, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
नन्द्र, स्वराज्य के पचास वर्ष बाद, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
नन्द्र, काला सूरज, १२५, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २॥)
नन्द्र, यूक्लिप्टिस की डाली, क्राऊन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली २)
एलन, अनु० प्रसाद, जीवन प्रेरणा, क्राऊन, ९६, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली १)
ला, लिली, १४४, क्राऊन, पु० मु०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली २॥)
न्द प्रेम-द्वादशी, २०२, क्राऊन पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ ३)
न्द, प्रेम-प्रसून, २२८, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ ३॥)
नन्द श्रीवास्तव, जमाने की हार, १८०, क्राऊन, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २)
नन्दसिंह विमल, हृदय-पुष्प, क्राऊन, पूनम प्रकाशन, दरभंगा १)
त थानवी, अनु० शिवनाथसिंह शांडिल्य, हँसती बोलती, क्राऊन, छात्र हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद

धार्मिक

दास जाजू, व्यवहार-शुद्धि, ७२, क्राऊन, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
दयाल गोयन्दका, गीता छोटी, ३५२, ३½"×५¼", पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर =)॥
नारायण शास्त्री, दुर्गा सप्तशती, २४०, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ॥।)
नायक, स्वामी, हठयोग, २६४, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ ४।)
नन्द विदेह आचार्य, स्वस्ति याग, ९६, क्राऊन, वेदसंस्थान, अजमेर ॥।)
नप्रसाद पोद्दार, आरती संग्रह, ८०, क्राऊन, पु० मु०, गीता प्रेस, गोरखपुर ।)

नाटक

न्दवल्लभ पन्त, वरमाला, ९६, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ १।)
दीश दीक्षित, कालिदास के नाटक, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
कुमार वर्मा, डॉ०, पृथ्वीराज की आँखें, १२८, क्राऊन, पु० मु०, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ २।)
नारायण पाण्डे, सूम के घर धूम, पु० मु०, क्राऊन, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।।)
निवास मिश्र, पंचशर, क्राऊन, छात्र हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद १)
श्वरराव, अनु० चलसानि सुब्बाराव, रानी रुद्रमा, क्राऊन, तेलुगु टोटा प्रकाशन, विजयवाड़ा १॥)
कृष्ण 'प्रेमी', प्रकाशन स्तम्भ, १२८, क्राऊन, हिन्दी भवन, इलाहाबाद—३ १॥)

बालोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

नन्दकुमार, अमर कथाएँ, ९६, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
नन्दकुमार, महापुरुषों की कथाएँ, ९८, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
नन्दकुमार, शिक्षाप्रद कथाएँ, ९२, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
नन्दकुमार, लोक कथाएँ, १०६, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
ल्हा ऊदल की कहानी, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
नाथ मदान, डॉ०, लेनिन, २४, ५½"×८½", राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ॥=)
द्र विद्यावाचस्पति, रघुवंश, क्राऊन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति, किरातार्जुनीय, १०८, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
नारायण दुलीचन्द व्यास, सागभाजी की खेती, २५०, क्राउन, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली २।।)
भगवतशरण उपाध्याय, कादम्बरी, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
भगवतशरण उपाध्याय, भारत की कहानी, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
रोशनलाल सिंहल, हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
रोशनलाल सिंहल, पद्मावत की कथा, ९६, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
रोशनलाल सिंहल, कामायनी सार, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
श्रमदान, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
सन्तवाणी, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
विराज एम० ए०, अभिज्ञान शाकुन्तल, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १।)
विराज एम० ए०, कुमार सम्भव, क्राउन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

विविध

ए० के० जान्सन, अनु० रणधीर सक्सेना, भारत विभाजन की कहानी, क्राउन, ३५०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ४)
एस० एन० जौहरी, भोपाल पंचायत राज, क्राउन, छात्र हितकारी पुस्तकमाला, इलाहाबाद ३)
कृपलानी, आचार्य, सामाजिक क्रान्ति और भूदान, ६०, क्राउन, अ० भा० सर्व सेवा संघ वर्धा ।)
चतुर्भुज मामोरिया, भारत में नागरिक उड्डयन का विकास एवं प्रगति, ४३ क्राउन, रामलाल एण्ड सन्स, आगरा ।।)
ज्योतिर्मयी ठाकुर, सन्तान-निग्रह, क्यों और कैसे ?, क्राउन, नागरी प्रेस, इलाहाबाद ३)
जी० पी० श्रीवास्तव, हास्यरस, ११२, क्राउन, पु० मु०, गंगा पुस्तक माला, कार्यालय, लखनऊ २)
राधाप्रसाद, अगला कदम, १५६, क्राउन, चिनगारी प्रकाशन, बनारस २)
लुई फ़िशर, अनु० चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, गांधी की कहानी, क्राउन, ३६४, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ४)
सव्यासाची, बीमारी कैसे दूर करें, क्राउन, ४०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
विमला ठकार, भूदान दीपिका, २८, क्राउन, पु० मु०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा =)
विष्णु प्रभाकर, बद्रीनाथ, क्राउन, ३२, पु० मु०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)

प्रकाशन समाचार
के
इस वर्ष में
तीन विशेषांक छप रहे हैं।
प्रत्येक का मूल्य १) होगा।
ग्राहक बनकर वर्ष के बारह अंक केवल २।।) में लीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २॥) मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य ।) प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३$\frac{३}{४}$" × ६" या २$\frac{३}{४}$" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २$\frac{३}{४}$" × ३$\frac{३}{४}$"। एक कालम इंच : १" × २$\frac{३}{४}$"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५$\frac{१}{२}$" × ६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ ३०)। आधा पृष्ठ : १७॥)। चौथाई पृष्ठ : १०)। एक कालम इंच : ३)।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ: ४०)। कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५०)। कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६०)। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६०)। मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित : १००)।
- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D—594

प्रकाशन समाचार के
सत्साहित्य-सूची-विशेषांक में

उपन्यास, कहानी, नाटक व बाल तथा प्रौढ़-साहित्य की पुस्तकों को छोड़कर अन्य

८६ विषयों की ३३२५ पुस्तकों की सूची

नाम, संस्करण, लेखक, पृष्ठसंख्या, आकार, मूल्य तथा प्रकाशक के उल्लेख सहित प्रकाशित हुई है। इस विशेषांक की पृष्ठसंख्या १६२ है; अलग से मूल्य १) लेकिन २॥) का वार्षिक चन्दा देकर ग्राहक बनने वालों को

केवल चार आने में।

आज ही ग्राहक बनिये। वी० पी० पी० से ३) मात्र।

प्रकाशन समाचार का जनवरी मास का अंक
विशेषांक होगा

जिसमें हिन्दी के उपन्यास, कहानी तथा नाटकों की सविवरण सूची छपेगी। अलग से मूल्य १) लेकिन ग्राहकों को ।) में ही मिलेगा।

प्रकाशन समाचार का जून मास का अंक
विशेषांक होगा

जिसमें हिन्दी के बाल, किशोर तथा प्रौढ़-साहित्य की सूची छपेगी। अलग से मूल्य १) लेकिन ग्राहकों को ।) में ही मिलेगा।

प्रकाशन समाचार के द्वितीय वर्ष में इन तीन विशेषांकों के प्रकाशन द्वारा हिन्दी की प्रायः सभी पुस्तकों की सूची को सुलभ कर देने का प्रयास किया जा रहा है। आज ही ग्राहक बनिये। यह सूचियाँ अरसे तक पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं और साहित्य-सेवियों के काम आयेंगी।

विज्ञापकों के लिए अमूल्य अवसर
प्रकाशन समाचार

राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवम्बर, १९५४ अङ्क ३ पूर्णाङ्क १५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी

देवेन्द्र सत्यार्थी का नया उपन्यास

कठपुतली

सुन्दर छपाई : पृष्ठ संख्या ४४८
मूल्य : छः रुपये मात्र

एशिया प्रकाशन, १०० बेयर्ड रोड, नई दिल्ली

मुख्य वितरक :
राजकमल प्रकाशन, १ फ़ैज़ बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन से प्राप्य नई पुस्तकें

भाषा, साहित्य

भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी—
डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ६)
काव्य मीमांसा—केदारनाथ शर्मा सारस्वत ६॥)
सन्तकवि दरिया : एक अनुशीलन—धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी १४)
रामावतार शर्मा निबन्धावली—रामावतार शर्मा ८॥।)
भोजपुरी भाषा और साहित्य—उदयनारायण तिवारी १३॥)
हिन्दी निबन्धकार—जयनाथ नलिन ६)
रेवातट—डॉ० विपिनबिहारी त्रिवेदी ६)
भारतीय संस्कृति का विकास—शिवशेखर मिश्र ३)
समीक्षा-शास्त्र—सीताराम चतुर्वेदी २१)
भाषालोचन—सीताराम चतुर्वेदी ६)
हिन्दी-नाटक : उद्भव और विकास—डॉ० दशरथ ओझा ६)
हिन्दी कथा-साहित्य—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ४॥)
दक्खिनी का गद्य और पद्य—श्रीराम शर्मा १०॥)
विचार और वितर्क—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ३)
तुलसी रसायन—डॉ० भगीरथ मिश्र २॥)
कालिदास और उनका भारत—भगवतशरण उपाध्याय ४)
नाटककार अश्क—संकलन ७)
प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ—डॉ० रामविलासशर्मा ३)
हिन्दी-काव्य पर आंग्ल प्रभाव—डॉ० रवीन्द्रसहाय ८)
हिन्दी साहित्य में विविधवाद—डॉ० प्रेमनारायण शुक्ल ६)
महादेवी-विचार और व्यक्तित्व—शिवचन्द्र नागर ३)
हिन्दी काव्यालंकार सूत्र—आचार्य विश्वेश्वर १२)
सन्तुलन—प्रभाकर माचवे ४)
साहित्य का उद्देश्य—प्रेमचन्द ४)

भारतीय साहित्य परिचय-माला

उर्दू और उसका साहित्य—गोपीनाथ 'अमन' २)
तमिल और उसका साहित्य—पूर्ण सोमसुन्दरम् २)
तेलुगु और उसका साहित्य—हनुमच्छास्त्री 'अयाचित' २)
मालवी और उसका साहित्य—श्याम परमार २)
बंगला और उसका साहित्य—हंसकुमार तिवारी २)
अवधी और उसका साहित्य—त्रिलोकीनारायण दीक्षित २)

राजनीति, इतिहास

भारतीय राजनीति, विक्टोरिया से नेहरू तक—
रामगोपाल १०)
भारत में मुस्लिम-शासन का इतिहास—शर्मा व दूबे १०)
प्राङ् मौर्य बिहार—डॉ० देवसहाय त्रिवेद ७)
गुप्तकालीन मुद्राएँ—अनन्त सदाशिव अल्तेकर ६॥)
भारत विभाजन की कहानी—एलन कैम्पबेल जॉन्सन ४)
चौलुक्य कुमारपाल—लक्ष्मीशंकर व्यास ४)

उपन्यास

बाबा बटेसरनाथ—नागार्जुन १॥=)
बाहर भीतर—डॉ० देवराज १॥=)
कठपुतली—देवेन्द्र सत्यार्थी ६)
टूटे कांटे—वृन्दावनलाल वर्मा ४)
मौलश्री—कमल शुक्ल ६)
काले नगर में—कमल शुक्ल २॥)
जर्जर हथौड़े—बरुआ ६)
आचार्य चाणक्य—डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार ४)
डूबते मस्तूल—नरेश मेहता ५)
उबाल—डॉ० रांगेय राघव १॥।=)
देवकी का बेटा—डॉ० रांगेय राघव ३)
यशोधरा जीत गई—डॉ० रांगेय राघव ३)
लोई का ताना—डॉ० रांगेय राघव ३)
रत्ना की बात—डॉ० रांगेय राघव ३)
भारती का सपूत—डॉ० रांगेय राघव ३)
मुक्ति मार्ग—हावर्ड फास्ट ६)
नवाबी मसनद—अमृतलाल नागर २॥)
पेरिस का रंगीला—मोपासाँ ४)
मनुष्य का रूप—कन्हैयालाल ओझा ६)
कर्म साधना—रामसागर मिश्र ४)
नाना—एमिल जोला ३)
नाना की मां—एमिल जोला ३॥।)
सोमनाथ—चतुरसेन शास्त्री ८)

[शेष तीसरे कवर पर देखिये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: वर्ष २ :
: अंक ३ :
: पूर्णांक १५ :

प्रकाशन समाचार

सम्पादक : ओंप्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

पुस्तक प्रकाशन का धन्धा ही एक है जिसे अपनाते वक्त देश में किसी पूर्व-अनुभव, शिक्षा या रुचि-विशेष की नहीं समझी जाती। दो-एक लेखक आपके परिचित [illegible]सी प्रेस के संचालक से वाकफ़ियत हो, कागज़ बेचने उधार देने के लिए तैयार हो तो प्रकाशक बनने की पूरी प्रस्तुत है! जब अन्य काम-धन्धे छूट गए तो प्रकाशक [illegible]इए! अपने मित्र लेखक से उपन्यास की पांडुलिपि प्रेस में दे आइए, और छुट्टी! न पांडुलिपि को परखने-[illegible]ने की अवश्यकता समझी गई, न उसके लिए स्वयं [illegible] ही थी। न प्रेस को सपुंजन (ले-आउट) सम्बन्धी [illegible] देने की ज़रूरत का आपको पता था। अब प्रेस ऊपर [illegible]-बायें कितना ही हाशिया छोड़कर कम्पोज़ करे, [illegible] चाहे किसी ही विधि से दे, प्रत्येक नया अध्याय चाहे [illegible]से कितना ही फ़ासला छोड़कर शुरू करे, टाइप चाहे [illegible], सफ़ेद या इटालिक लगाए, आपकी बला से! सफ़ेद [illegible] काला हो जाना चाहिए और आपका नाम प्रकाशक [illegible] में छपना मात्र अभीष्ट है। प्रूफ़ को देखने के लिए किसी विशेषज्ञ की ज़रूरत है, हम अधिकांश ऐसा नहीं [illegible]। आप स्वयं देख लेंगे, अथवा प्रेस वाले देख लेंगे—[illegible] तो रोज़ का तजुर्बा है न—अथवा लेखक देख लेंगे, [illegible] तो लिखा है! अब चाहे उपन्यास का उनन्यास छपे, [illegible]शंकर प्रसाद का जबशंकर प्रसाद हो जाय। हिन्दी [illegible] में से नौ पुस्तकों में अशुद्धियों की इतनी भरमार रहती [illegible] जान पड़ता है हम सब लोग प्रकाशन-व्यवसाय में [illegible] करने पर तुले हुए हैं।

प्रेस से निबटने पर छपे हुए फ़र्मे किसी जिल्दसाज़ से उठाने के लिए कह दीजिए। जिल्द कैसी हो और क्योंकर हो; जैकेट पर, पुश्त पर अथवा आस्तीन पर क्या छपाई होगी और क्यों होगी; डस्ट-कवर पर कोई चित्र बनेगा तो क्या और क्यों बनेगा, इन बातों को प्रकाशक अक्सर नहीं समझते। इस सब धाँधली और आदि से अन्त तक की अराजकता का परिणाम क्या होता है—वही जो आज प्रकाशन-जगत् में दीख रहा है। अशुद्धियों से पटी हुई, किसी भी मुद्रक-योजना से विहीन, कई-कई रंग और तरह-तरह के कागज़ों पर छपी हुई—कहीं-कहीं तो टाइप की कमी होने पर दूसरी किस्म का टाइप भी बरत लिया जाता है—पुस्तकें, जिनकी घटिया, कच्ची जिल्दों पर लाल और नीले, काले और पीले रंगों में छपे हुए आवरण चढ़े रहते हैं! हिन्दी—राष्ट्रभाषा—के प्रकाशनों की जो दुर्गति हो रही है, वह पुस्तकों की किसी भी दुकान में प्रवेश करते ही स्पष्ट हो जायगी। केवल एक चीज़ ही विदेशी प्रकाशनों से बखूबी टक्कर लेती है और वह है पुस्तकों का मूल्य! मूल्य का निश्चय करते वक्त भी कोई जमा-खर्च नहीं किया जाता। फिर बिक्री में धाँधली शुरू होती है। कमीशन की एक दर तय नहीं है। २५% भी दीजिए और दुकानदार ने ज़रा दबाया तो ३३%! थोक-विक्रेता को ४० और जो नगद का लोभ दे; उसे ५० या ६०%! 'सेल और रिटर्न' पर हर ऐरे-ग़ैरे नत्थू-खैरे के यहाँ पुस्तकें फेंक आइए।

प्रकाशन जगत् को झकझोर के जागने-जगाने की ज़रूरत है। हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने पर यह आवश्यक ही नहीं रह गया, कर्तव्य बन गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नए प्रकाशन

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

लेखक
दशरथ ओझा एम. ए., पी-एच. डी.,

भूमिका लेखक
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

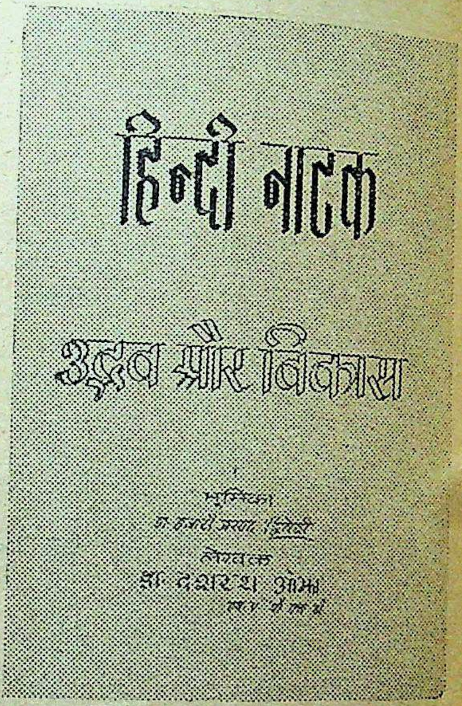

उपन्यास, कहानी

अपनी छाया : (आस्कर वाइल्ड के 'पिक्चर आफ डोरियन ग्रे' का हिन्दी रूपान्तर) ५)
उल्टा वृत्त : (कृष्णचन्द्र का नया उपन्यास) ३)
काला सूरज : (कृष्णचन्द्र की नवीनतम कहानियाँ) २॥)

लोक-कथा

महापुरुषों की कथाएँ : (ले० आनन्द कुमार) १॥)
अमर कथाएँ : ,, १)
लोक कथाएँ : ,, १)
शिक्षाप्रद कथाएँ : ,, १)

सुगम अमर साहित्य

अभिज्ञान शाकुन्तल : (विराज एम० ए०)
किरातार्जुनीय : (इन्द्र विद्यावाचस्पति) २॥)
रघुवंश : (इन्द्र विद्यावाचस्पति)
कादम्बरी : (डॉ० भगवतशरण उपाध्याय)
हिन्दी के प्रसिद्ध महाकाव्य : (प्रो० रोशनलाल सिंहल) १)
१)
पद्मावती की कथा : ,, १)
बाल रामचरित मानस : ,, १॥)
कामायनी सार : ,,

रामचरितमानस

[तुलसीकृत रामायण की सर्वोत्तम हिन्दी टीका]
टीकाकार—पं० रामनरेश त्रिपाठी
मूल्य १५)

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

के चतुर्थ-वर्ष का प्रथम अंक, पूर्णाङ्क तेरह,

●

उपन्यास-अंक

●

है। इसकी विषय-सूची देखिए। हिन्दी में उपन्यास-सम्बन्धी साहित्य की जो नितान्त कमी है, वह इस विशेषांक के प्रकाशन द्वारा पूरी होगी।

★

अलग से इस अंक का मूल्य ५)-होगा, लेकिन स्थायी ग्राहकों को १२) के वार्षिक मूल्य के अन्तर्गत ही मिलेगा।

★

सम्पादन-समिति

डॉ० धर्मवीर भारती, डॉ० रघुवंश, डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा, श्री विजयदेवनारायण साही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

उपन्यास-अंक की विषय-सूची

प्रथम खण्ड : वस्तु और शिल्प

१. उपन्यास : प्रबन्ध-काव्य का उत्तराधिकारी — देवराज उपाध्याय

२. औपन्यासिक दृष्टि का विकास — अजितकुमार

३. उपन्यास के उपकरण — डॉ० रामअवध द्विवेदी

४. उपन्यास में पात्र-गठन — डॉ० रामखिलावन पाण्डेय

५. उपन्यास और यथार्थ चित्रण — मोहन राकेश

६. उपन्यास और नैतिक मर्यादा — गुलाबराय

७. उपन्यास के दायित्व — रामस्वरूप चतुर्वेदी

द्वितीय खण्ड : हिन्दी-उपन्यास : विकास और विवेचना

८. मध्यवर्ग का विकास और हिन्दी-उपन्यास — बच्चनसिंह

९. हिन्दी-उपन्यास का शिल्प-विकास — डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल

१०. उदय-काल : तिलिस्मों से क्रान्ति तक — विजयशंकर मल्ल

११. प्रेमचन्द्र-युग : सामाजिक यथार्थ के बदलते रूप — डॉ० रामरतन भटनागर

१२. प्रेमचन्द्रोत्तर युग : विक्षुब्ध अहम् और नये परिधान — लक्ष्मीकान्त वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३. महत्वपूर्ण प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यास : १ : शेखर — विश्वम्भर मानव
१४. महत्वपूर्ण प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यास : २ : सुनीता — शिवनाथ
१५. महत्वपूर्ण प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यास : ३ : सन्यासी — यदुपतिसहाय
१६. हिन्दी-उपन्यास : उपलब्धियाँ और अभाव — डॉ० नन्ददुलारे वाजपेयी
१७. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ और अभाव — डॉ० देवराज
१८. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ और अभाव — श्रीपतराय

तृतीय खण्ड : उप-धाराएँ

१९. लघु उपन्यास : कला — डॉ० प्रेमशंकर तिवार
२०. हिन्दी के लघु उपन्यास — डॉ० ब्रजेश्वर वम
२१. ऐतिहासिक उपन्यास — राहुल सांकृत्याय
२२. इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यासकार — डॉ० जगदीश गुप
२३. वैज्ञानिक कथा-साहित्य — डॉ० सम्पूर्णानन्
२४. फ़ुटपाथ के उपन्यास — नरोत्तम नाग
२५. साम्यवादी उपन्यास — मोतीसिं

चतुर्थ खण्ड

२६. समकालीन भारतीय उपन्यास — प्रभाकर माच
२७. समकालीन विश्व-उपन्यास : स्तर और आयाम — आई० ए० एक्स्ट्रो
२८. उपन्यास का भविष्य — ज्योतिस्वरूप सक्सेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

के पिछले बारह अंकों की विषय सूची मंगवाइये। इन अंकों में प्रकाशित १६५ निबन्ध हिन्दी-आलोचना-जगत् के सुधी साहित्यकारों के विचारों की उत्कृष्टतम साची हैं। गत तीन-चार वर्षों में प्रकाशित हिन्दी के सर्वोत्तम १५७ ग्रन्थों की समीचा भी इन १२ अंकों में छपी है। पहले दो को छोड़कर शेष अंकों की प्रतियाँ अभी प्राप्य हैं।

★

वार्षिक मूल्य १२)। एक अंक का ३)। इतिहास-अंक ५)। इतिहास-शेषांक ३)। आलोचना-अंक ५)। उपन्यास-अंक ५)।

★

प्रत्येक अंक रजिस्टरी से पाने के लिए वर्ष का १।।) अलग।

★

आलोचना

आज ही ग्राहक बनिये

राजकमल प्रकाशन, १ फैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क और लेखक की शिकायतें

प्रभाकर माचवे

वात्स्यायनजी के गतांक में छपे लेख के उपरान्त हम मान्य लेखक का यह लेख इसीलिए प्रकाशित कर रहे हैं कि ऐसी खरी-खोटी सुनना प्रकाशक-वर्ग के अपने ही हित में है।

...न समाचार में श्री स० ही० वात्स्यायन का रेडियो-... पढ़कर मैं आश्वस्त हुआ कि आपका पत्र केवल ...कों की ही नहीं बल्कि लेखकों की हित-रक्षा पर भी ... देता है। हिन्दी में अपने पुस्तक-प्रकाशन-विषयक अनुभव व्यक्ति-नाम और संस्था-नाम जान-बूझकर हटा-... रहा हूँ, जिससे कुछ पता लगेगा कि हिन्दी के प्रकाशक ...द तक ग़ैर-जिम्मेदार हैं।

...रे नाम पर छपी पहली किताब सन् १९३७ में 'जैनेन्द्र के ...' थी। वह नाथूराम जी प्रेमी ने छापी थी। और चूँकि ...र्य मैंने जैनेन्द्र जी के प्रति अपने प्रेमादर को व्यक्त ...के लिए किया था, उससे आर्थिक प्रतिदान की मुझे ...ा ही नहीं थी। परन्तु उसके बाद कई वर्षों तक मैं लिखता ...। चूँकि मध्यभारत-मालवा में रहता था, और मध्यभारत ...त्य समिति 'मच्छर' और 'बेंजामिन फ्रैंकलिन की जीवनी' ...पुस्तकें छापने में अपनी शक्ति खर्च कर रही थी, एकाध ...मैंने अपनी रचनाएँ उनसे प्रकाशित कराने का प्रस्ताव ...भी, पर उनसे अनुत्साह पाकर मैं भी चुप हो गया। ...४०, बिहार के प्रकाशक अपने ही प्रदेश के लेखकों की ...एँ अधिक छापते थे। इस बीच में मेरठ साहित्य परिषद् ...के लेख-संग्रहों के दो खण्डों में मेरे पढ़े निबन्ध छपे; और ...सप्तक' (१९४३) में कुछ कविताएँ।

१९३९ से १९४२ तक गांधीजी के निकट सम्पर्क का ...य मिला। 'बापू के महादेव', 'विनोबा-दर्शन', 'गांधी ...-कथा' (मराठी) में संस्मरण आदि लेख तब छपे। और ...दूसरा महायुद्ध आया। मेरे मन को युद्ध और बंगाल का ...दोनों ने बहुत मथा। और 'हंस' में तब मैंने लिखा, ...प्रायः सभी पत्रों में। मेरी युद्धकालीन कहानियाँ एक ...के प्रकाशक साहब ले गए। 'संगीनों का साया' छपा; पर उसकी प्रतियाँ तक मुश्किल से मिलीं। उसे छापकर प्रकाशक बेच खा गए। लेखक को एक कानी कौड़ी देना उन्होंने ज़रूरी नहीं समझा। एक बार मिले थे तो चाय जरूर पिलाई, और मीठी-मीठी बातें कीं। इत्यलम्!

इसके बाद मैंने सेवाग्राम आश्रम में रहते हुए बापू की प्रिय एक अंग्रेजी किताब का सरल हिन्दी में अनुवाद किया था। वह बिहार के एक प्रकाशक ले गए। छापी और खा गए। एक प्रति तक नहीं भेजी, हिसाब तो दूर! बाद में मैंने 'साहित्य सन्देश' में पौने मूल्य में मिलने वाले पोस्टकार्ड की किताबों में अपनी पुस्तक देखी। मँगाई और एक प्रति यों खरीदनी पड़ी।

इस बीच में एक इलाहाबादी प्रकाशक साढ़े तीन सौ पृष्ठों की मेरी साहित्यिक निबन्धों की कतरनों की पांडुलिपि, १९४३ में, गायब कर चुके थे। एक लेखक की मार्फ़त व्यवहार हुआ था। लेखक कहते हैं वह 'सम्मेलन' से छपनी थी। पर वहाँ किसी सज्जन ने मेरी भाषा में 'मराठीपन की बू' देखी और आपत्ति की। बाद में उस दारागंजी प्रकाशक को उन्होंने दी। प्रकाशक कहता है उन्होंने नहीं दी। तात्पर्य उन दो 'भ' कारों के बीच में मेरी पांडुलिपि खत्म हो गई।

इसी बीच अपने कहानी-संग्रह या लेख-संग्रहों को मैंने कई प्रकाशकों के पास भेजा, जिनसे कई बार तुड़-मुड़कर, कागज़ फटकर पांडुलिपियाँ दो-दो वर्षों बाद लौट आतीं। दुर्भाग्य यह है कि उन प्रकाशकों में कुछ हिन्दी के गण्यमान्य कवि-कवयित्रियाँ आदि भी थे।

बाद में सन् '४८ में हिन्दी की एक मान्य संस्था की ओर से—या ज्यादा सही मानो में राहुलजी के लिए—मैंने आठ प्रान्तों की यात्रा की; एक विशिष्ट कोश के लिए तीन महीने काम मिशनरी की तरह से किया। काम 'हिन्दी सेवार्थ'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, तो रायल्टी या द्रव्य लाभ की तो बात ही नहीं थी। पाँच प्रतियाँ बड़ी मुश्किल से हमें बहुत दिनों बाद मिलीं। कोश की भूमिका में या अन्यत्र कहीं भी एक अक्षर से भी इस संस्था ने मुझे धन्यवाद का एक कोरा शब्द भी नहीं दिया। मेरा कर्तव्य मैंने किया, उनका उन्होंने। आज वह कोश हिन्दी के सभी कोशों में अपने सबसे अधिक 'सेन्सिबल', मध्यम मार्ग के कारण, सर्वप्रिय है। मैंने अपनी यात्रा का विस्तार से हाल 'श्रीकृष्ण सिनहा अभिनन्दन ग्रन्थ' में दिया है। जब हिन्दी की इतनी बड़ी संस्था की यह दशा है तो और प्रकाशकों को क्या कहें ?

इसके बाद मेरी दस से ऊपर पुस्तकें छपी हैं। परन्तु हिसाब के मामले में दो-तीन प्रकाशकों ने ही पारिश्रमिक या बिक्री के लाभांश मुझे दिए हैं। अन्य के बारे में जितना कम कहा जाय उतना उत्तम है।

संक्षेप में,

(१) एक से अधिक प्रकाशकों ने मेरी पुस्तकें बिना कानूनी अनुबन्ध-पत्र या कांट्रैक्ट के छापी हैं।

(२) सभी पुस्तक प्रकाशित होने के बाद रायल्टी देने के मीठे आश्वासन देते रहे हैं। एडवांस बहुत कम लोगों ने दिया।

(३) पुस्तक कितनी छपी है, यह कभी किसी प्रकाशक ने नहीं बताया।

(४) एक प्रकाशक ने तो पुस्तक प्रकाशित होने पर दो महीने तक प्रतियाँ भी नहीं दीं।

(५) एक प्रकाशक ने मुझसे सूची माँगी कि किन-किन साहित्यिक सुधी मित्रों, समालोचक सज्जनों को पुस्तक की प्रतियाँ भेजनी हैं, और बाद में उन सज्जनों को पुस्तकें भेज दी हैं, यह झूठ ही कह दिया। कभी भेजी ही नहीं।

(६) लेखक को २० प्रतियाँ कम-से कम मिलनी चाहिएँ। पर जो प्रकाशक कोई लेख खरीद लेते हैं या संग्रहों में दे देते हैं, वे एक प्रति से अधिक भेजते ही नहीं। एक प्रकाशक ने पुस्तक की ५ प्रतियाँ भेजीं। बाद में कभी कोई हिसाब तक नहीं किया।

(७) अधिकतर प्रकाशक पांडुलिपियाँ महीनों तक बेकार पटक रखते हैं। और हम लोगों की (यानी जिन्होंने १५-२० बरसों से इस साहित्य-सेवा की 'लाइन' में झख मारी है और जिन्हें कहीं अधिक अनुभव है) किताबों को ऐसे नौसिखु बेतजुर्बेकार या अननुभवी और साहित्य-ज्ञान से कोरे 'रीडरों' या कोर्स-बुक-व्यवसाय के दलालों (टाउटों) को दिखाते हैं कि कोई भी स्वाभिमानी लेखक अपनी पुस्तक किसी ऐसे प्रकाशक को दुबारा देने की इच्छा नहीं करेगा। यह सही है कि प्रकाशन व्यवसाय है और पुस्तक की बिक्री का पहलू भी है; पर इसका अर्थ यह तो नहीं कि गधे-घोड़े सब एक मोल बेचे जायँ। प्रकाशक लोग इस 'अन्धेर नगरी' को कब तक करेंगे ? हाफिज का एक शेर है —

अस्पे ताजी शुदा मजरूह बज़ेरे पालाँ
तौ के जरीं हमा गरदने-खामी बीनम् !

(अच्छे ऊँचे अश्व बेचारे को मजबूरी में क्या-क्या मुसीबत नहीं ढोनी पड़ती ! पर गदहे के गले में जरी का पदक झिलमिला रहे हैं।)

यह इतनी सख्त बातें मैं स्वानुभव से लिख रहा हूँ। मैं ग़लत चीज के सामने जिन्दगी में आज तक न झुका, न झुकूँगा, चाहे उसकी एवज में मुझे कितने ही कष्ट क्यों न झेलने पड़ें !

ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता

हमें इस समय कुछ ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता है, जो हमारी प्रकाशित पुस्तकों के आर्डर ला सकें। वेतन १०० रुपये से १५० रुपये तक मासिक। यात्रा का भत्ता ७ रुपये प्रतिदिन। नमूने की पुस्तकों के लिए १००० रुपये की जमानत देनी होगी।

शीघ्र आवेदन करें, अथवा स्वयं आकर मिलें।

आत्माराम एंड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के उत्थान में प्रकाशकों का योग-दान

परमानन्द दोषी एम० ए०, साहित्यरत्न

लेखक बिहार में पुस्तकालय-आन्दोलन के प्रसिद्ध कार्यकर्ता तथा त्रैमासिक "पुस्तकालय" के वर्तमान सम्पादक हैं। आप पटना-जिला-पुस्तकालय-संघ के अध्यक्ष भी हैं।

…क पुस्तकालय एक राष्ट्रीय सम्पत्ति है। इसके सर्वतो-…न्नयन एवं विकास के लिए सभ्य कहे जाने वाले सभी …ों का योग-दान अपेक्षित है; संस्थाओं और विशेषतः …-संस्थाओं का तो और भी। पुस्तकालयों की प्रधान …स्तकें होती हैं और पुस्तकों को प्रकाश में प्रकाशक ही …, अतएव पुस्तकालयों का सीधा और अटूट सम्बन्ध …ों से हुआ। प्रकाशकों के अभाव में आज पुस्तका-… स्थापना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है …युग में यद्यपि प्रकाशकों की अनुपस्थिति में भी कुछ …लय थे, तथापि वे आज के-से साधन-सम्पन्न पुस्तका-…समान नहीं थे। उस युग में न तो कागज का ही …र हो पाया था और न लोग अपने विचारों को …ंग से व्यापक और विस्तृत पैमाने पर प्रचारित करने …ा ही सीख पाए थे। बड़े-बड़े ऋषि-मनीषी ही एक …में चलते-फिरते पुस्तकालय के रूप में थे; उन्हें ही …ालयों की भाँति व्यवहृत किया जाता था। 'श्रुति' और …से हमें यही बोध होता है कि उस काल में श्रवण और …के बल पर ही विद्या और ज्ञान की परम्परा एक मनुष्य …से मनुष्य, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और एक युग से …युग तक चलते हुए कायम रह पाती थी। बाद में लिखने …ों का जन्म हुआ और लोग ताल-पत्र, भोज-पत्र, पत्थर …पर लिखने लगे और इन पत्रों को पुस्तक का रूप …गे। यही पुस्तकों का आदि रूप हुआ। इस प्रकार से …ें लिखने का कार्य बड़ा ही श्रम-साध्य था। एक पुस्तक …न की भाँति अनेक प्रतियाँ करना अत्यन्त दुष्कर कार्य …अतएव पुस्तकालयों का केवल रूप ही खड़ा किया जा …और वह भी इतनी स्वल्प संख्या में, जिसे नगण्य …ना अधिक उपयुक्त होगा। प्रकाशकों की उत्पत्ति उस काल तक नहीं हो पाई थी। फिर आया मुद्रण-कला और कागज के आविष्कार का युग। पुस्तकों की अनेक प्रतियाँ छापी जाने लगीं और पुस्तकें पर्याप्त संख्या में मिलने लगीं जिससे अधिकाधिक संख्या में आधुनिक ढंग पर पुस्तकालयों का उद्भव और निरन्तर विकास होना प्रारम्भ हो गया। आज के पुस्तकालयों की आधार-शिला तो प्रकाशन-संस्थाएँ ही हैं। इससे स्पष्ट है कि पुस्तकालय-जगत् प्रकाशन-जगत् का कितना ऋणी है। आज तो पुस्तकालय और प्रकाशन-संस्थाएँ, दोनों एक-दूसरे से अविच्छिन्न भाव से संलग्न हो गए हैं। आधुनिक विकसित वैज्ञानिक सुविधाओं ने पुस्तकालयों एवं प्रकाशन-संस्थाओं के लिए यथेष्ट सुविधाएँ सुलभ कर दी हैं।

पुस्तकालय की स्थापना, उसके विस्तार और विकास, पुस्तकालय-सेवाओं के उन्नयन आदि अनेकानेक पुस्तकालय-सम्बन्धी कार्यक्रमों में प्रकाशन-संस्थाएँ नानाविधि से सहयोग दे सकती हैं। नीचे की पंक्तियों में कुछ का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है।

आर्थिक सहयोग

किसी भी सार्वजनिक संस्था की जटिल समस्याओं में आर्थिक समस्या भी एक है। पुस्तकालयों के सम्मुख तो यह और भी भीषण रूप में उपस्थित रहती है। यदि चाहें तो प्रकाशक बहुत हद तक पुस्तकालयों की रक्षा इस समस्या से कर सकते हैं। ऊपर की पंक्तियों में कहा जा चुका है कि पुस्तकें ही पुस्तकालय की प्रधान पूँजी होती हैं; कोष का सर्वाधिक भाग पुस्तकों पर ही व्यय होता है। जन-साधारण के बीच ज्ञान और विद्या के वितरण का पुण्य कार्य करने वाले पुस्तकालयों को आर्थिक सहायता पुस्तकों का सस्ता संस्करण तथा विशेष कमीशन आदि की सुविधा के द्वारा प्रकाशक प्रदान कर सकते हैं। माना कि प्रकाशक भी अन्य व्यवसाय में लगे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों की भाँति व्यवसायी होते हैं, परन्तु पुस्तक-व्यवसाय की गरिमा की समानता अन्य व्यवसाय नहीं कर सकता। इस व्यवसाय में जो प्रतिष्ठा, महत्ता और दायित्व है, वह अन्य व्यवसाय में कहाँ? जहाँ दूसरे व्यवसायों में अधिकाधिक आर्थिक लाभ के द्वारा सिर्फ स्वार्थ-साधना ही एक-मात्र उद्देश्य रहा करता है, वहाँ इस व्यवसाय में आर्थिक लाभ को कम और परोपकार की भावना अधिक रहा करती है। यह बात निर्विवाद है कि साधारण ग्राहकों की अपेक्षा पुस्तकालयों को प्रकाशकगण अधिक कमीशन देते हैं; फिर भी उन्हें पुस्तक-विक्रेताओं की भाँति या उनसे कुछ ही कम के कमीशन आदि की व्यवस्था पुस्तकालयों के लिए करनी चाहिए।

गौरव-ग्रन्थ

विभिन्न विषयक, सुरुचि सम्पन्न, उच्चकोटि के विचारोत्तेजक तथा ज्ञानवर्द्धक ग्रन्थों के प्रकाशन से भी पुस्तकालयों को यथेष्ट लाभ पहुँचाया जा सकता है। सस्ता करने के फेर में पड़कर कुछ प्रकाशक गेट-अप, छपाई सफाई, कागज आदि के स्तर को बहुत निम्न कर देते हैं, यह बड़ी ही घातक प्रवृत्ति है। घोर व्यावसायिकता के चक्कर में पड़कर तथा आर्थिक लाभ की अनावश्यक प्रतिस्पर्द्धा के वशीभूत होकर कुछ प्रकाशक गन्दे, कुरुचिपूर्ण, अश्लील साहित्य के प्रकाशन की दिशा में अग्रसर होते देखे जाते हैं। यह बड़ी ही दूषित प्रवृत्ति है। साहित्य के नाम पर जहर देकर पाठकों को पथ-भ्रष्ट करना देशद्रोह है। अतएव प्रकाशकगण ऐसे साहित्य के लेखकों की कृतियों को प्रकाशित करके न तो उन्हें प्रोत्साहित ही करें और न जनता की रुचि को ही कुण्ठित करें। आये दिन ऐसी सेक्स-प्रधान पुस्तकों की बाढ़-सी आई हुई है, और ऐसे साहित्य के संग्रह से पुस्तकालय वासनालय बनते जा रहे हैं। इस दिशा में प्रकाशक पुस्तकालयों की बड़ी रक्षा कर सकते हैं।

नये प्रकाशनों की सूचना

पुस्तकालयों को प्रतिदिन नवीन प्रकाशनों की सूचना निरन्तर मिलती ही रहनी चाहिए। यह मुख्यतः तीन प्रकार के साधनों से हो सकता है—(१) पुस्तकों का सूचीपत्र, (२) प्रकाशन-सम्बन्धी सामयिक पत्र (साप्ताहिक, मासिक आदि), (३) विभिन्न स्वतन्त्र पत्र-पत्रिकाओं की समीक्षा द्वारा।

पुस्तकों का सूचीपत्र तो अचूक रूप से सभी प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता प्रकाशित करवाते तथा पुस्तकालयों पास भेजते रहते हैं। परन्तु निष्पक्ष सूचीपत्र का बड़ा अ है। सभी में अपने प्रकाशनों के प्रशंसात्मक विवरण- रहते हैं; विषय के अनुसार वर्गीकृत बृहद् सूचीपत्र बहुत देखने में आता है; अतएव प्रकाशकों को इसी प्रकार के बृ सूचीपत्र प्रकाशित कराकर पुस्तकालयों में निःशुल्क भेज चाहिए। प्रकाशन-सम्बन्धी सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ तीन- हैं, परन्तु **प्रकाशन समाचार** के सिवा किसी का भी सुचारूपेण नहीं चल रहा है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की समीक्षा के स्तम्भ में इत सीमित स्थान रहता है कि जिससे काम चलने का नहीं।

हमारे यहाँ समीक्षा-प्रधान प्रामाणिक पत्रों का नित अभाव है, जिससे एक ही विषय की अनेक पुस्तकों में कौन पुस्तक सर्वाधिक उपयोगी और प्रामाणिक है, इसका नि करने में भी पुस्तकालय-संचालकों को बड़ी दिक्कतें और क नाइयाँ होती हैं। विदेशों में सिर्फ इसी विषय की अनेकों प पत्रिकाएँ रहती हैं जिससे वहाँ के पुस्तकालय-संचालकों दिक्कतें बहुत हद तक कम रहा करती हैं। विदेशों की इ प्रवृत्ति को अपने देश में भी अनुकरण करके प्रकाशकगण ग्रन्थ लयों का पर्याप्त मार्ग दर्शन कर सकते हैं।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन

वर्तमान समय की पत्र-पत्रिकाओं को देखकर काफ निराशा होती है। कुछ अपवादों को छोड़कर उच्च कोटि पत्र-पत्रिकाओं का नितान्त अभाव है। आजकल तो पत्र-पत्रि काओं पर पूँजीपतियों तथा राजनीतिक पार्टियों का विशेषा धिकार है। फलतः ऐसे सामयिकों से न तो भाषा ही गौरवा न्वित हो सकती है और न वाचनालयों के पाठकों का मनो रंजन एवं ज्ञान वर्द्धन होना सम्भव है। आज भी अनेकों ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय छूटे पड़े हैं जिन पर विशुद्ध साहित्यिक भाव से बहुतेरे पत्र चलाये जा सकते हैं। समृद्धिशाली प्रका शकों को इस कार्य को भी अपने हाथ में अविलम्ब लेकर वाचनालयों की इस कमी की पूर्ति में सचेष्ट होना चाहिए।

पुस्तकालय-संचालन-सम्बन्धी साहित्य

पुस्तकालय-संचालन-सम्बन्धी साहित्य के अभाव में भी पुस्तकालयों को, विशेषतः ग्रामीण और नये-नये खुलने वाले पुस्तकालयों को, अनेकानेक दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल

हिन्दी की इस सर्वप्रिय सचित्र मासिका में विचारपूर्ण लेख तथा विख्यात कथाकारों और कवियों की कृतियां पढ़िए। "आजकल" से संयुक्त "विश्वदर्शन" में अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर निष्पक्ष लेख प्रस्तुत किए जाते हैं। वार्षिक मूल्य ६); एक प्रति ।।)

बाल भारती

...मुन्नों की सचित्र मासिका ...में सरल भाषा में प्रेरणा...क कहानियाँ, मीठी-मीठी ...विताएं, उपयोगी लेख और ...-चित्र प्रस्तुत किए जाते ...। वार्षिक मूल्य ४); एक ...ति ।=)

प्रसारिका

...चित्र त्रैमासिक

"प्रसारिका" (रेडियो संग्रह) आकाशवाणी के हिन्दी केन्द्रों से प्रसारित उच्च कोटि की चुनी हुई वार्ताओं, कविताओं तथा कहानियों आदि का त्रैमासिक संग्रह है। सुन्दर गेट-अप की इस सचित्र पत्रिका का मूल्य ८ आना है। वार्षिक मूल्य २)

मिलने का पता :

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली—८

ऐसे साहित्य के प्रकाशन के प्रश्न को किसी भी समर्थ प्रकाशक ने गम्भीरतापूर्वक सोचा हो, ऐसा नहीं दीख पड़ता। माना कि ऐसे साहित्य लिखने वालों की संख्या बड़ी ही स्वल्प है, फिर भी समर्थ प्रकाशकों को खोज-खोजकर अधिकारी लेखकों से पुस्तकें सृजन कराकर प्रकाशित करनी चाहिएं। हिन्दी में इस विषय की सात-आठ पुस्तकों से अधिक नहीं प्रकाशित हो सकी हैं, उनमें भी दो-तीन को छोड़कर शेष सभी पुस्तकें इस विषय में लेखकों के अनधिकार प्रवेश का सबूत देती हैं। इस विषय की पत्र-पत्रिकाएँ भी अधिकाधिक संख्या में प्रकाशित होनी चाहिएँ।

इसके सिवा प्रकाशकों को अपने प्रकाशनों के गेट-अप, छपाई-सफाई, शुद्धि आदि पर भी ध्यान देना है। उन्हें 'अधिक पुस्तकें पढ़ो', 'गाँव-गाँव घर-घर पुस्तकालय खोलो' आदि आन्दोलन स्वयं भी चलाने चाहिएँ और पुस्तकालय-संघों के इस प्रकार के कार्यों में योग भी देना चाहिए।

यही कुछ प्रमुख विधियाँ हैं जिनके द्वारा पुस्तकालयों को सहयोग देकर प्रकाशकगण पुस्तकालय-आन्दोलन को काफी आगे बढ़ा सकते हैं। प्रकाशकों के प्रकाशनों की सर्वाधिक खपत के माध्यम पुस्तकालय ही हैं, इस पर दो मत नहीं हो सकते। जितने अधिक पुस्तकालय खुलेंगे, पुस्तकालयों का जितना अधिक उत्थान हो सकेगा, पुस्तकालय-आन्दोलन जितना अधिक गतिशील हो सकेगा, पुस्तकों की माँग उतनी ही अधिक बढ़ेगी, प्रकाशकों का व्यवसाय उतना ही अधिक चमकेगा और उतने ही अधिक समर्थवान वे हो सकेंगे। विदेशों का प्रकाशन-व्यवसाय इसीलिए भी उन्नतावस्था में है, क्योंकि वहाँ का पुस्तकालय-आन्दोलन भी विकसितावस्था में है।

महाकवि अकबर और उनका उर्दू-काव्य

(१) उस की बीवी ने फ़क़त स्कूल ही की बात की।
ये न बतलाया कहाँ रक्खी है रोटी रात की॥

(२) हम ऐसी कुल किताबें क़ाबिले ज़ब्ती समझते हैं।
जिन्हें पढ़-पढ़ के लड़के बाप को खब्ती समझते हैं॥

इसी प्रकार की अनेक कविताओं का रसास्वादन करने के लिए उपरोक्त नाम की पुस्तक पढ़िये।

पाँचवाँ संस्करण, बढ़िया छपाई, मूल्य केवल २॥)

ज्ञान-प्रकाश-मन्दिर, पो० माछरा, जिला मेरठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

प्रो० विकासचन्द्र सिन्हा, एम० ए०, (अध्यक्ष हिन्दी-विभाग, टी० एन० जे० कॉलेज, भागलपुर ७) के पास 'दिनकर' के कुरुक्षेत्र पर एक समीक्षा-पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार है। कुरुक्षेत्र पटना तथा बिहार-विश्वविद्यालयों के एम० ए० (हिन्दी) कोर्स के लिए स्वीकृत पाठ्य-पुस्तक है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक शीघ्र पत्र-व्यवहार करें।

✧ ✧ ✧

श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी० (सचित्र, स्वतन्त्रता-संग्राम इतिहास, दतिया) के पास आज़ादी का अमर देवता : महात्मा गांधी नाम का छोटा उपन्यास तैयार है। यह एक अभिनव प्रयास है। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

✧ ✧ ✧

श्री अनुज शास्त्री (सम्पादक पुस्तकालय, पटना) लिखते हैं कि उनके पास तीन पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं, प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें : (१) मजबूत कदम (कहानी संग्रह), पृष्ठसंख्या लगभग ११२, (२) विश्व में पुस्तकालय-आन्दोलन, पृष्ठसंख्या लगभग ६४ तथा (३) श्री विष्णु किशोर बेचन द्वारा लिखित चीन के स्वतन्त्रता-संग्राम के आधार पर लिखित उपन्यास चीन की दीवार, पृष्ठसंख्या लगभग १६०। पता : श्री अनुज शास्त्री, पो० चाईबासा, जिला सिंहभूम (बिहार)।

✧ ✧ ✧

भोजन के द्रव्यों तथा वानस्पतिक औषधियों पर एक-एक पुस्तक प्रकाशित करने की योजना श्री रामेश बेदी (गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार) ने बनाई थी। इसकी ग्यारहवीं पुस्तक बरगद नाम से तैयार है। छपने पर लगभग १०० पृष्ठों की होगी। श्री बेदी इसके लिए किसी अच्छे प्रकाशक की तलाश में हैं।

✧ ✧ ✧

''मेरे पास निम्नलिखित स्वरचित पुस्तकें प्रकाशनार्थ प्रस्तुत हैं, जो महानुभाव उनके प्रकाशन का कार्यभार लेना चाहते हों, वे कृपया पत्र-व्यवहार करें :

१. नाटककार और शपथ समीक्षा, पृष्ठसंख्या लगभग २००। २. मित्र एक अध्ययन, पृष्ठसंख्या लगभग ८०। ३. कुणाल का संक्षिप्त अध्ययन, पृष्ठसंख्या ३२। ४. नीड़, काव्य। लगभग ६० पृष्ठों में रहस्यवादी, छायावादी धारा का गीत-काव्य।''

प्रो० प्रेमचन्द्र,
अध्यक्ष : हिन्दी-विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, (जयपुर)।

●

उर्दू-शायरी का प्रामाणिक इतिहास

श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय

शेरो-सुख़न

भाग १ : पृ० ७८८ मू० ८)
भाग २ : पृ० ३२८ मू० ३)
भाग ३ : पृ० २६४ मू० ३)
भाग ४ : पृ० २२६ मू० ३)
भाग ५ : पृ० २६४ मू० ३)

शेरो-शायरी मू० ८)

[१२०० शेर और १६० नज़्में]

प्राचीन और वर्त्तमान कवियों में सर्वप्रधान लोकप्रिय ३१ कलाकारों के मर्मस्पर्शी पद्यों का संकलन और उर्दू कविता की गति-विधिका आलोचनात्मक परिचय।

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

हिला सहायक संघ, उत्तर प्रदेश, के तत्त्वावधान में हित्यिक महिलाओं का एक सचित्र परिचय-ग्रन्थ : भारत की हित्यिक महिलाएँ उनकी श्रेष्ठ मौलिक रचनाओं-सहित शित होने जा रहा है। साहित्यिक महिलाएँ अपने सचित्र चय सहित अपनी तीन श्रेष्ठ मौलिक कृतियाँ प्रबन्ध-म्पादिका श्रीमती किशोरी त्रिवेदी (अवनि-अम्बर, पुखरायाँ, नपुर-) को भेजें।

◈ ◈ ◈

जोधपुर के प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं ने १७ अक्तू-र ५४ को एक सभा करके **जोधपुर पब्लिशर्स एण्ड बुक-लर्स एसोसिएशन** नाम की संस्था बनाने का निश्चय किया । 'डी० आर० शर्मा एण्ड सन्स', 'किताबघर' तथा 'भार-य पुस्तक भवन' के तीन प्रतिनिधियों की एक कार्य समिति नाई गई है, जो विधान एवं कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार रेगी। 'किताबघर' के प्रतिनिधि इस समिति के संयोजक नाये गए हैं।

◈ ◈ ◈

श्री लक्ष्मीनारायण, प्रचार मन्त्री, हिन्दी साहित्य सभा, ाह, आगरा) सूचित करते हैं कि सभा की मुख-पत्रिका के रूप में श्री रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के सम्पादकत्व में माली नाम से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन नवम्बर '५४ से आरम्भ हो रहा है। पत्रिका का वार्षिक मूल्य ७) होगा, लेकिन सार्वजनिक संस्थाओं तथा साहित्य-सेवियों से जनवरी '५४ तक ग्राहक बनने पर केवल १।।।) ही लिया जायगा।

◈ ◈ ◈

विद्या मन्दिर (चौक, लखनऊ) के तत्त्वावधान में शीघ्र ही डॉ० देवराज (लखनऊ विश्वविद्यालय) के सम्पादकत्व में युग-चेतना नाम से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन जन-वरी '५५ से प्रारम्भ हो रहा है। पत्रिका का ध्येय हिन्दी को उच्चतम कोटि की साहि-त्यिक संवेदना एवं बौद्धिक चेतना के प्रसार का माध्यम बनाना तथा हिन्दी की प्रतिनिधि सृजन-प्रवृत्तियों को प्रेरणा देना है। वार्षिक मूल्य ६) होगा; मिलने का पता : युग-चेतना, चौक, लखनऊ।

◈ ◈ ◈

पटना से बिहार प्रेस (दरिया प्रेस, पटना ४) की ओर से कथानिका के नाम से एक सचित्र कहानी-प्रधान मासिक पत्रिका का प्रकाशन होना प्रारम्भ हुआ है। सर्वश्री रामाधार सिन्हा शान्तिप्रिय, शत्रुघ्न राजीपुरी तथा देवेन्द्र क्रमशः प्रधान सम्पादक, सहायक सम्पादक तथा प्रबन्ध सम्पादक हैं। वार्षिक मूल्य ३ है।

◈ ◈ ◈

पुस्तकालय-सम्बन्धी प्रामाणिक साहित्य के प्रकाशन के लिए पटना में **पुस्तकालय प्रकाशन** नाम से एक संस्था का सूत्रपात हुआ है। पुस्तकालय-आन्दोलन के सफल कार्यकर्ता तथा पुस्तकालय-साहित्य के अधिकारी लेखक श्री परमानन्द दोषी, एम० ए०, **सम्पादक : त्रैमासिक पुस्तकालय** के निर्दे-शन में यह संस्था काम करेगी। पत्र-व्यवहार के लिए पता: व्यवस्थापक पुस्तकालय प्रकाशन, बालकिशन गंज, पटना ७।

◈ ◈ ◈

श्री शिवसुन्दर शुक्ल 'किशलय', परीक्षा मंत्री, आर्या-वर्त्त हिन्दी विद्यापीठ, भंसौली देवमई, फतेहपुर (उ० प्र०) सूचित करते हैं कि विद्यापीठ की परीक्षा समिति ने अगले वर्ष होने वाली परीक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तक सूची परिवर्तित करने का निश्चय किया है। विद्यापीठ प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तमा परीक्षाएँ संचालित करती है। प्रकाशकों से निवेदन है कि विचारार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ भेजें। विशेष विवरण के लिए कार्यालय से 'विवरण पत्रिका' मँगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके प्रश्न

१—हिन्दी तथा उर्दू भाषा के नामी कवि एवं पारसी नाटक-कम्पनियों के सुप्रसिद्ध नाटककार पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' ने कई पुस्तकें ('प्रास पुञ्ज', 'पद्य-परीक्षा', 'याद रखो', 'हिन्दी सुभाषित', 'नारायण शतक', 'पिंगल दर्शन', 'उर्दू सुभाषित' आदि) बेताब प्रिन्टिंग वर्क्स (मोहल्ला चाह रहट, दिल्ली) से प्रकाशित की थीं। बेताब जी के प्रकाशन अब किस पते से मिल सकते हैं ? यदि कोई सज्जन सूचना दें, तो आभारी होऊँगा।

१—प्रायः २५-३० वर्ष पहले कलकत्ता, बम्बई आदि शहरों में जो पारसी नाटक-कम्पनियाँ चल रहीं थीं, उनके लिए नाटक लिखने का काम करने वालों में सुप्रसिद्ध मुन्शी आग़ा हश्र काश्मीरी, मुन्शी विनायकप्रसाद 'तालिब', बाबू हरिकृष्ण 'जौहर', पं० राधेश्याम कथावाचक तथा पं० नारायणप्रसाद 'बेताब' थे। यदि इन नाटककारों से परिचित तथा उनके सम्पर्क में आए हुए सज्जन इनका तथा इनकी रचनाओं का संक्षिप्त विवरण दे सकें तथा ये बता सकें कि उनकी कृतियाँ कहाँ से प्राप्य हैं तो कृपा होगी।

सूरजमल बैद ओस्वाल,
न० ४ नारायण बाबू लेन, बड़ा बाजार, कलकत्ता-७।

१—अठारहवीं, उन्नीसवीं शती के पड़ी तथा खड़ी बोली में प्रकाशित गद्य-पद्य रचनाओं के मिलने का पता कोई महानुभाव बता सकें तो अतीव कृपा होगी। कोई सज्जन अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय से ऐसी पुस्तकों को बेचना चाहें तो वे भी मूल्य सहित इनकी सूची भेजें।

विमलचन्द कौड़ा,
५०, जोड़बाग नर्सरी, नई दिल्ली।

हमारी प्रकाशित तथा प्रचारित पुस्तकें

थपेड़े	श्री गोविन्दसिंह	२॥)
बदनाम गली	,,	२॥)
सुबह हो गई	,,	३)
धरती रोती है	,,	३॥)
भूखा इन्सान	श्री ओमप्रकाश बी० ए०	२॥।)
पहाड़ी के उस पार	,,	२॥)
फरियादी भाग १	,,	३॥)
,, भाग २	,,	३॥)
अधूरी तमन्ना	श्री सोमनाथ अकेला	३)
जिन्दगी के मोड़ पर	,,	२)
उलझन	श्री कमलापति प्रधान एम० ए०	१॥।=)
वीतरागी	श्री सिद्धविनायक द्विवेदी	२॥।)
इन्सान एक पहेली	पंडित हरीश	३॥)
विप्रदास (ग्लेज़)	श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय	२॥।)
देहाती समाज (,,)	,,	१॥)
शुभदा (,,)	,,	१॥)
देवदास (,,)	,,	१॥)
ब्राह्मण की बेटी (,,)	,,	१)
पंडित जी (,,)	,,	१॥)

हिन्दी प्रकाशन मंदिर
१३।८३ सुखलाल साहू गेट
बनारस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

"...भग पिछले तीन चार महीने से प्रकाशक संघ के बारे ...पकी पत्रिका में पढ़ रहा हूँ। प्रकाशक संघ के उद्देश्य ...े में ज्यादा कुछ न कहकर मैं सिर्फ यह कहना चाहता ...क्या आपका प्रकाशक संघ जिस प्रकार कमीशन की ...इत्यादि निश्चित करने के लिये उत्सुक है, क्या उसी ...संघ उन प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं के साथ ...सी प्रकार का दृढ़ कदम उठाने को तैयार है जो अन्य ...कों तथा विक्रेताओं से माल उधार माँग कर या बैंक के ...मुद्दत पर लेने के बाद फिर ये पेमेंट नहीं करते। अगर ...ी कृपया इसका खुला स्पष्टीकरण आप या संघ के ...करें। आशा है आप स्पष्टीकरण के साथ-साथ यह ...ी छापने का कष्ट करें।"

—विश्वनाथ अग्रवाल

जन साहित्य, इलाहाबाद।

प्रकाशन-समाचार का अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक ...से यही सम्बन्ध है कि प्रकाशन जगत् की जिन सु-...ओं का संघ परिणाम है, उनका यह पत्र समर्थक ...फिर भी जिस कुप्रवृत्ति की ओर मान्य लेखक ने ...ा ध्यान आकर्षित किया है, उस पर संघ का ध्यान ...आवश्यक है।

◈ ◈ ◈

"सत्साहित्य सूची विशेषांक निकालकर अपने हिन्दी-...त्य के इतिहास में एक उपेक्षित अपेक्षा की पूर्ति की है। ...का) यह रचनात्मक दृष्टिकोण स्तुत्य है।"

पोद्दार रामावतार 'अरुण'

समस्तीपुर।

◈ ◈ ◈

"कालेजों, स्कूलों तथा पुस्तकालयों के लिए विषयवार ...क प्रकाशित क्रमवार साहित्य की (सत्साहित्य सूची विशेषांक) ऐसी विस्तृत सूची आजतक हिन्दी में नहीं छापी गई है। ...इस स्थायी रचनात्मक सेवा कार्य के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।"

रामचरण महेन्द्र,

हरबर्ट कालेज, कोटा।

◈ ◈ ◈

"वास्तव में (सत्साहित्य सूची विशेषांक) ऐसा प्रकाशन हिन्दी के विकास की दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण है।"

सरस वियोगी,

राजस्थान साहित्यकार संसद, अजमेर।

◈ ◈ ◈

"निस्सन्देह कहा जा सकता है कि (सत्साहित्य सूची विशेषांक) पुस्तकालयों के लिए, खासकर, बहुत ही उपयोगी है। मेरी बधाई स्वीकार करें।"

अनुज शास्त्री,

सम्पादक पुस्तकालय, पटना १।

◈ ◈ ◈

प्रकाशन समाचार के द्वारा अपने हिन्दी जगत् का बड़ा भारी उपकार किया है...बधाइयाँ।"

ए० चन्द्रहासन,

त्रावंकोर युनिवर्सिटी, अर्नाकुलम।

प्रकाशन-समाचार

जनवरी १९५५ का

अंक

उपन्यास-कहानी-नाटक-सूची-विशेषांक

होगा।

इसके विषय में विस्तृत सूचना

इस अंक के अन्तिम कवर

पर देखिए।

प्रकाशक अपनी सविवरण सूचियाँ

शीघ्र ही भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-पुस्तकों के मुख-पृष्ठ

जगदीश मित्तल

लेखक ने कला-भवन, शान्ति निकेतन, से कला की शिक्षा प्राप्त की; अब कलाकार के रूप में सुपरिचित हैं। दो वर्ष से 'कल्पना' (हैदराबाद) के कला-सम्पादक हैं।

पुस्तक के मुख-पृष्ठों और वेष्ठनों को अलंकृत करने की प्रथा हमारे देश में तब से चली आ रही है जब से पुस्तकों की रचना शुरू हुई। ताल-पत्र पर लिखी प्राचीन पोथियों तथा पालकालीन, जैन और मुगल पुस्तकों के वेष्ठनों पर एक-से-एक सुन्दर नमूने मिलते हैं जिनमें कलाकारों ने अपना पूरा करण कौशल लगा दिया है। वेष्ठन सजाने का उद्देश्य पुस्तक को सुरक्षित करना तो रहता ही है पर इससे भी अधिक होता है उसे सज्जा की वस्तु बनाना। यह दृष्टिकोण केवल भारत में ही नहीं सारे संसार में मान्य है। किसी भी देश की प्राचीन अथवा अर्वाचीन पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर हमें अलंकरण अवश्य मिलेगा।

प्रसिद्ध विद्वान् सिडनी स्मिथ के अनुसार पुस्तक से बढ़कर कोई फ़र्नीचर नहीं। पुस्तक का मालिक चाहे कोई विद्वान् हो जो उसे केवल रेफ़रेंस के लिए रखता है या दिखाने के लिए संग्रह रखने वाला शौकीन, दोनों ही उसके भीतर देखने की अपेक्षा बाहर ही अधिक देखते हैं। कोई भी पुस्तक, चाहे वह कोष ही क्यों न हो, अलमारी में ही अधिक देर तक सजी रहती है। अतः पुस्तक के बाह्य अलंकार पर मनुष्य का ध्यान देना स्वाभाविक है।

छपाई के आविष्कार के बाद से मुख पृष्ठों के बनाए जाने पर पहले से अधिक ध्यान देना पड़ता है। पहले तो किसी विशेष ग्राहक के लिए उसकी रुचि के अनुसार पुस्तक हाथ से लिख और सजाकर तैयार की जाती थी, पर आज कलाकार और प्रकाशक दोनों को हजारों ग्राहकों की रुचि को भी देखना और जानना आवश्यक है। विक्रेता के पास पुस्तक को एक-दूसरे प्रकाशन से अलग अपना अस्तित्व बनाए रखना पड़ता है और अपने विषय का संकेत भी करना पड़ता है।

छापे के पहले पुस्तकें अलमारियों में अवश्य रखी जाती थीं पर वह अलमारियाँ शीशे की नहीं होती थीं कि पुस्तक दीखती रहें। सभी पूर्वीय देशों में पुस्तकें पड़े रख लिखी जाती थीं, उन पर दोनों ओर चमड़े, गत्ते या लकड़ी पर खुदाई अथवा नक्काशी किये हुए मजबूत पुट्ठे होते थे। यह पुस्तक की सुरक्षा के साथ संग्रहकर्ता के सौन्दर्य-बोध का भी परिचय देते थे। अरब तथा यूरोपीय देशों की पुस्तकें पीठ की तरफ सिली होती थीं। इनकी जिल्द आजकल की भाँति पीछे से बँधी होती थीं और उन पर सोने-चाँदी तथा रंगों का काम रहता था। सभी जगह इन्हें कपड़े के सुन्दर कामदार वस्त्रों में लपेट कर रखना पड़ता था। परन्तु अब अगल-बगल और पीठ दोनों का ध्यान रखना होता है।

बीसवीं सदी के आरम्भ से ही पुस्तक को अलंकृत करना एक विशेष कला बन गया है। अब ऐसे कलाकारों को सुरुचिपूर्ण मौलिक सूझ रखने के साथ, विषय की परख, बाजार की जानकारी और छपाई के नवीनतम साधनों का ज्ञान रखना आवश्यक है। यूरोप, चीन, जापान और अमेरिका में इधर दस-पन्द्रह वर्षों के बीच इस दिशा में अद्भुत उन्नति हुई है। प्रत्येक पुस्तक का मुख-पृष्ठ उसके भीतर के चित्र-सपुञ्जन (ले आउट) और टाइपों के चुनाव पर बड़ी बारीकी से ध्यान रखा जाता है। परन्तु अभी तक भारतीय भाषाओं में पुस्तक-निर्माण-कला—विशेषकर उसके मुख पृष्ठों के डिजाइनों पर—श्लाघनीय कार्य नहीं हुआ है।

पुस्तक के कवरों को सुन्दर बनाने की ओर सर्व प्रथम रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर और नन्दलाल बसु का ध्यान गया। उसके बाद भारत में पहले-पहल बँगला-पुस्तकों के सुन्दर संस्करण सामने आने लगे। भारतीय भाषाओं में बँगला-पुस्तकों के मुख-पृष्ठ, विशेषकर विश्वभारती और सिगनेट प्रेस के प्रकाशन, सचमुच सुन्दर होते हैं। कला-

[शेष पृष्ठ २१० पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

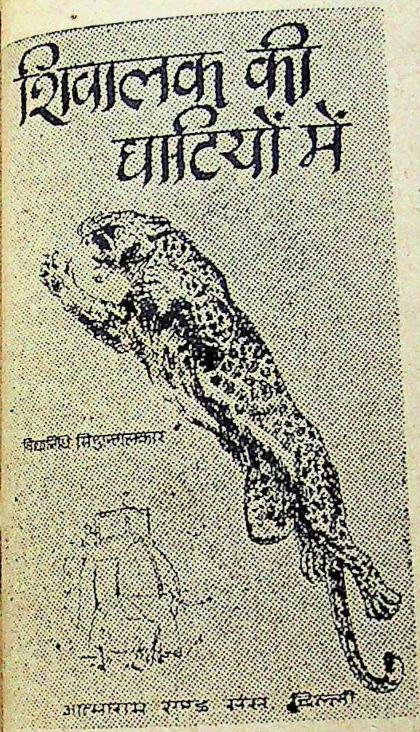

चित्रकार : श्री नरेन्द्र सेठी
प्रकाशक : आत्माराम एण्ड सन्स

चित्रकार : श्री नन्दलाल बसु के एक चित्र के आधार पर
प्रकाशक : विश्वभारती

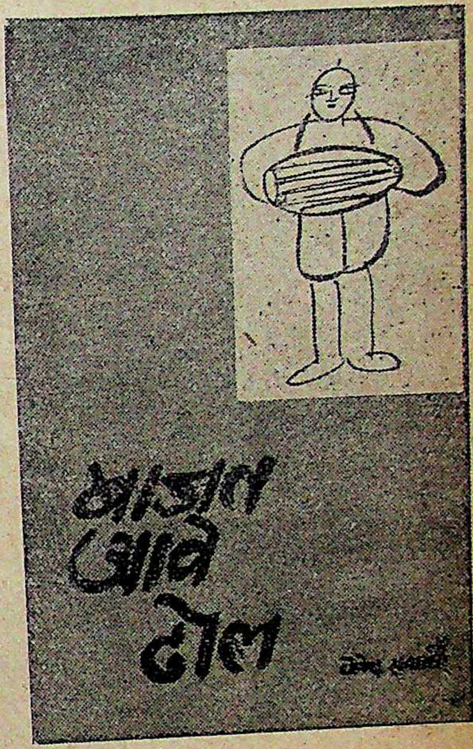

चित्रकार : श्री नगेन्द्र भट्टाचार्य
प्रकाशक : एशिया प्रकाशन

चित्रकार : श्री जगदीश मित्तल
प्रकाशक : नवहिन्द पब्लिकेशन्स

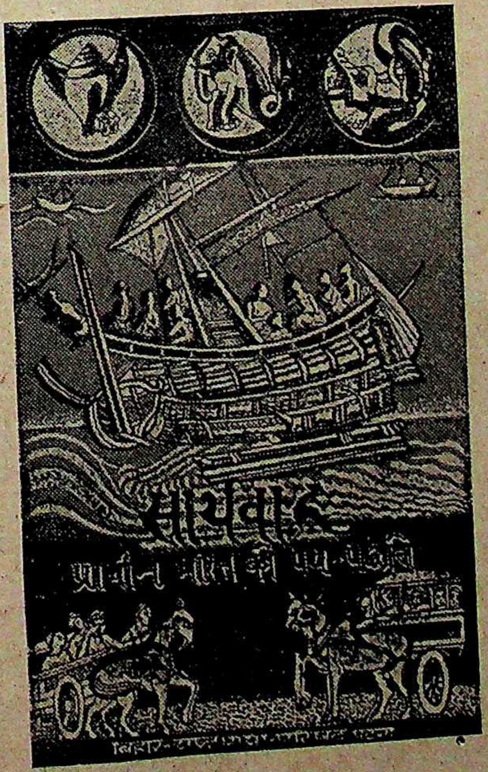

श्री अम्बिकाप्रसाद
प्रकाशक : बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद्

चित्रकार : श्री नरेन्द्र सेठी
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुनीति बाबू की इस प्रामाणिक और उपयोगी कृति को हिन्दी भाषा में सुलभ करके आपने बड़े अभाव की पूर्ति की है। लेखक का नाम ही ग्रन्थ के महत्त्व के लिए प्रमाण-पत्र है। हिन्दी की उच्च-कक्षाओं में सर्वत्र यह पाठ्य पुस्तक रूप में स्वीकृत होने योग्य है।"

वासुदेवशरण अग्रवाल एम० ए०,
पी० एच० डी०, डी लिट्०,
काशी विश्वविद्यालय।

"ग्रन्थ का छपाई-सफ़ाई और कलेवर सुन्दर, आकर्षक और राजकमल प्रकाशन के अनुकूल ही हैं।...यह प्रकाशन सर्वथा उपादेय है, इसके लिए आपको बधाई।"

बाबूराम सक्सेना, एम०ए०,
डी० लिट्०,
डीन आव दि फैकल्टी आव् आर्ट्स, प्रयाग विश्वविद्यालय।

"नागपुर विश्वविद्यालय के एम० ए० के पाठ्यक्रम में...हिन्दी-संस्करण निश्चय आ जायगा।...इस उपयोगी प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकार कीजिए।"

विनयमोहन शर्मा, अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
नागपुर विश्वविद्यालय।

"धन्यवाद!"

धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
प्रयाग विश्वविद्यालय।

"डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या द्वारा लिखित "भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी" नामक पुस्तक प्रकाशित करके आपने हिन्दी का उपकार किया। पुस्तक भारतीय भाषा-तत्त्व के विद्यार्थी के लिए निश्चय ही उपयोगी है।"

सत्येन्द्र एम० ए०, पी०-एच० डी०,
रीडर, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय।

"भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी" के लिए अनेक धन्यवाद। आप प्रकाशन की दिशा में सत्प्रयत्न कर रहे हैं। इसके लिए बधाई।"

मुन्शीराम शर्मा, एम० ए०,
पी०-एच० डी०,
डी० ए० वी० कालेज, कानपुर।

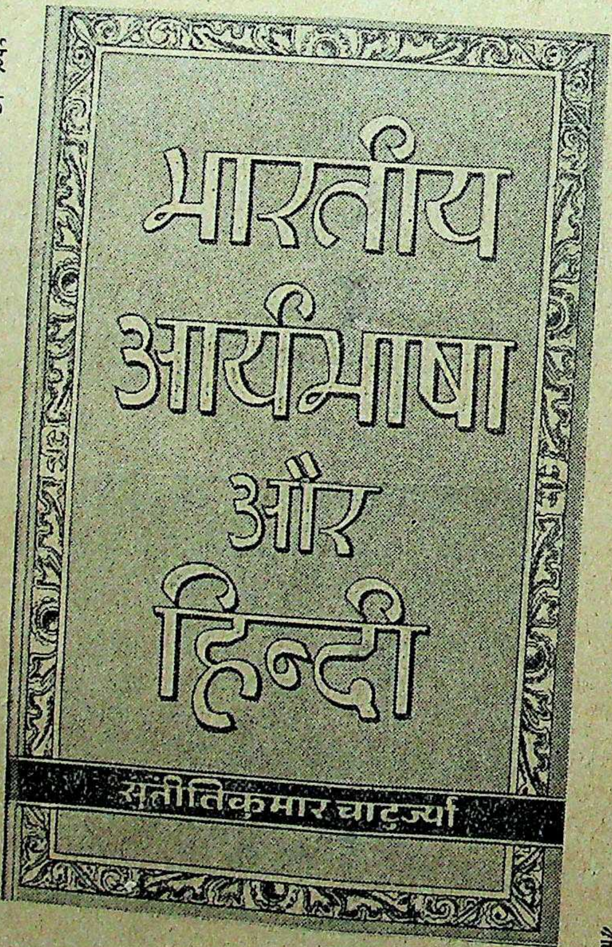

"भारतीय आर्यभाषा का इतना सम्पन्न अध्ययन, जो गम्भीर होते हुए भी विशद हो, अब तक हिन्दी में प्रस्तुत नहीं हुआ था। हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक विकास को समझने में इस प्रकाशन का अपूर्व महत्त्व है। हिन्दी का कोई भी विद्यार्थी इससे वंचित रहने की भूल नहीं कर सकता।"

पृथ्वीनाथ पुष्प, एम० ए०,
अमरसिंह कालेज, श्रीनगर।

"पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।"

एस० आर० शास्त्री, एम० ए०, बी० ओ० एल०,
मद्रास विश्वविद्यालय।

"यह हिन्दी की कदाचित् पहली पुस्तक है जो इतनी शुद्ध छपी है। आशा है, यह सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में आ जायगी।"

उदयनारायण तिवारी, एम० ए०, डी० लिट्,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चिरकाल से इसकी प्रतीक्षा थी। इसके प्रकाशन से ...एम० ए० के विद्यार्थियों की आवश्यकता पूरी हुई।.... ...और सुन्दर छपी है—भाषा-विषयक पुस्तकों में यह गुण ...महत्त्वपूर्ण होता है।"

...देव बाहरी, एम० ए०, पी०-एच० डी०, डी० लिट्०,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

"न केवल यह भाषा-शास्त्र के विद्यार्थी के लिए उचित ...बहुमूल्य प्रामाणिक सामग्री ...दान करती है, वरन् इस ...के विद्वानों के लिए भी ...क दृष्टि विकसित करने में ...क है।"

...भगीरथ मिश्र, एम० ए०,
पी०-एच डी०,
हिन्दी विभाग, लखनऊ
विश्वविद्यालय, लखनऊ।

"...लेखक का नाम ही पुस्तक ...माणिकता के लिए पर्याप्त ...हिन्दी में जिस मनोरम ...ज्जा के साथ आपने पुस्तक ...शित किया है, उसके ...आप बधाई के पात्र हैं।"

कन्हैयालाल सहल,
...ड़ला आर्ट्स कालेज,
पिलानी।

"...वस्तुतः अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन है। हमारे सब ...इस पुस्तक से लाभ उठाएँगे।"

रामेश्वर शुक्ल, 'अंचल'
राबर्टसन कालेज, जबलपुर।

"...भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी अपने ढंग की ...और अनुपम पुस्तक है। इस मौलिक एवं शोधपूर्ण पुस्तक के लिए राष्ट्रभाषा डा० चटर्जी की चिरऋणी रहेगी। एम० ए० और रिसर्च के विद्यार्थियों के लिए तो यह अत्यन्त उपयोगी है।"

डॉ० फतेहसिंह,
हरबर्ट कालेज, कोटा।

"चाटुर्ज्या महोदय के गम्भीर अध्ययन की यह पुस्तक निःसन्देह प्रतीक है।"

हरिदत्त शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत
विभाग,
डी० ए० वी० कालेज,
कानपुर।

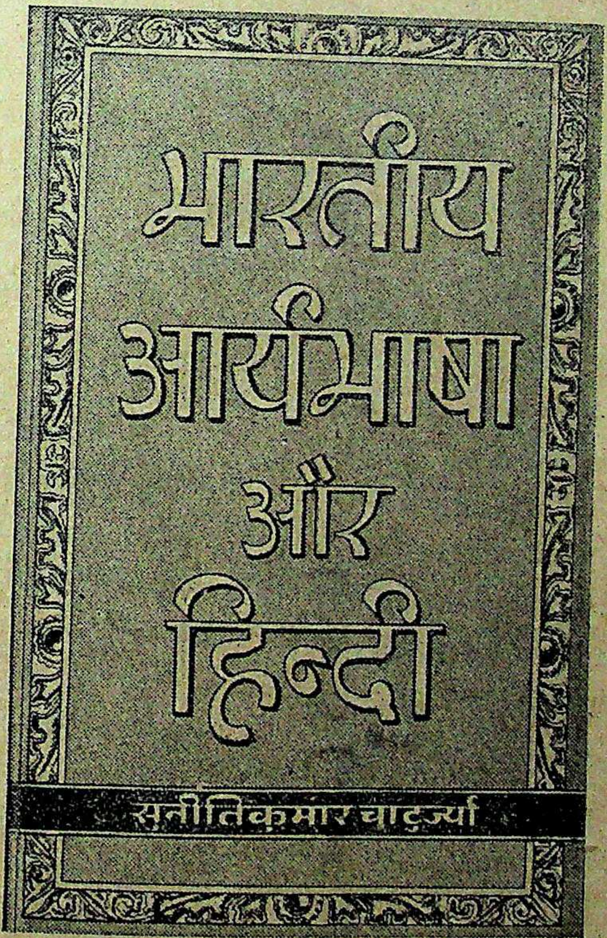

"भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी की प्रति मिली। राजकमल प्रकाशन संस्था अपनी विभिन्न प्रवृत्तियों द्वारा हिन्दी की जो सेवा कर रही है, वह निःसन्देह अभिनन्दनीय है।"

राजेश्वर गुरु,
हमीदिया कालेज, भोपाल।

"श्री चाटुर्ज्या की रचना वैज्ञानिक गवेषणा का रूप लेकर आई है।"

रामकृष्ण शुक्ल, 'शिलीमुख', अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
महाराजा कालेज, जयपुर।

"पुस्तक भाषा-विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय है।"

हरिवंश कोचर, एम० ए०, पी०-एच० डी०,
गवर्नमेंट डिग्री कालेज, नैनीताल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ २०६ से आगे]
कत्ता के सत्यजीत राय और माखनदत्त गुप्त ने सचमुच भारतीय दृष्टि और रुचि का ध्यान रखकर अभूतपूर्व मुखपृष्ठ बनाए हैं, जो कला की दृष्टि से किसी भी देश के मुखपृष्ठों से होड़ लगा सकते हैं। अभी दस वर्ष पहले तक मामूली 'पेण्टरों' द्वारा चार-पाँच रुपयों में बने अंग्रेजी पुस्तकों से टीपे हुए काम चलाऊ कवरों का चलन था, या फिर विशेष ध्यान दिया गया तो बहुत ज़्यादा अलंकृत तिरंगे हाफ़टोन चित्रों अथवा पाँच-छः रंगों के लाइन ब्लॉकों से छपे चित्रों का प्रयोग होता रहा। इसमें सुरुचि का तो पूर्णतया अभाव था ही, साथ ही खर्चा भी कई गुना अधिक पड़ जाता था।

इधर १० वर्षों के भीतर हिन्दी-प्रकाशन-जगत् में जो रुचि-सुधार हुआ है, उसके लिए **राजकमल** के सुरुचिपूर्ण प्रकाशनों का नाम लेना आवश्यक है। उनके इस क्षेत्र में सुरुचि के साथ उतरने के बाद नये और पुराने प्रकाशकों ने भी मुखपृष्ठों को सुरुचिपूर्ण बनाने के महत्त्व को समझा और अब दिल्ली के **राजकमल** के साथ, **आत्माराम एण्ड सन्स, राजपाल, प्रगति प्रकाशन, विश्वभारती प्रकाशन** और **बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्** के प्रकाशनों में अनेक सुन्दर छपी और सुरुचिपूर्ण कवर युक्त पुस्तकें मिल सकती हैं।

फिर भी इस विषय पर आज अधिक ध्यान देना आवश्यक है। स्वयं कलाकार होने तथा अनेक प्रकाशकों की कार्य-प्रणाली से परिचय प्राप्त करने के बाद जिस निश्चय पर मैं आज पहुँचा हूँ, उनमें विशेष बातों पर संक्षेप में ब्यौरेवार नीचे चर्चा की जा रही है। मुखपृष्ठ के साथ पुस्तक का भीतरी रूप भी जुड़ा हुआ है। अतः उसको ध्यान में रखकर ही सुझाव दिये जा रहे हैं :

(१) सुन्दर बनाने के फेर में कवर के डिज़ाइन, ब्लाक और मुद्रण में अधिक व्यय नहीं होना चाहिए; इसका बोझ पाठक पर पड़ता है। अधिक-से-अधिक तीन रंगों में लाइन ब्लाकों से मज़बूत कार्ट्रिज अथवा रंगीन कवर-पेपर पर छपे मुखपृष्ठ अधिक सुरुचिपूर्ण, सस्ते और प्रभावशाली होते हैं।

(२) आर्ट पेपर पर हाफ़्टोन चित्रों के छापने के पक्ष में मैं नहीं हूँ; इसमें कीमत तो अधिक पड़ती ही है साथ ही हाफ़टोन छपाई कवर पर इतनी खुलती नहीं और कवर व्यापार की दृष्टि से दूकान पर उभर नहीं पाता। भले ही दूकान से अलग देखे जाने पर वह सुन्दर दीखता हो। दूसरे, आर्ट पेपर इतना मज़बूत नहीं होता और हाथ के दाग धब्बे उस पर आसानी से पड़ जाते हैं। पहले तो आर्ट पेपर पर छपे कवर दूकान पर ही पुराने दीखने लगेंगे, नहीं तो ग्राहक के पास कुछ ही दिनों में गन्दे होकर फाड़ कर फेंक दिये जाने योग्य हो जायँगे। यह बात भी जान रखनी चाहिए कि हाफ़टोन की छपाई अच्छे प्रेसों में ही सम्भव है, अतः लाइन ब्लाक्स ही अधिक सुगम रहेंगे।

(३) कला की दृष्टि से कवर पर स्पष्ट लिखाई (lettering) के साथ विषयानुकूल हल्का-फुल्का डिज़ाइन होना चाहिए। सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक अथवा वैज्ञानिक पुस्तकों के कवरों में भेद होना ही चाहिए। हो सकता है कला की दृष्टि से एक डिज़ाइन सुन्दर हो और किसी सांस्कृतिक पुस्तक पर खप सकता हो, पर वैज्ञानिक पुस्तक के सर्वथा अनुपयुक्त हो। कविता और उपन्यास की किताबें स्वयं बोलें कि वे उपन्यास हैं अथवा कविता। अच्छे कवर की पहचान

[आगे पृष्ठ २१२ पर देखिए]

हमारे सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

१. खण्डहरों का वैभव मुनि कान्तिसागर मू० ६)
२. खोज की पगडण्डियाँ मुनि कान्तिसागर मू० ४)
३. संघर्ष के बाद [कहानी] विष्णु प्रभाकर मू० ३)
४. आकाश के तारे : धरती के फूल [द्वि० सं०] कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर मू० २)
५. गहरे पानी पैठ अयोध्याप्रसाद गोयलीय मू० २॥)
६. जैन जागरण के अग्रदूत ,, मू० ५)
७. ज्ञानगंगा [सूक्तियाँ] नारायणप्रसाद जैन मू० ६)
८. मेरे बापू [कविता] हुकुमचन्द बुखारिया मू० २॥)
९. मुक्तिदूत [उपन्यास] वीरेन्द्रकुमार मू० ५)
१०. पंच-प्रदीप [गीत] शान्ति एम० ए० मू०
११. भारतीय विचार-धारा मधुकर मू०
१२. जैनशासन पं० सुमेरुचन्द्र दिवाकर मू०
१३. धर्मशर्माभ्युदय पं० पन्नालाल मू०
१४. करलक्खण [सामुद्रिक शास्त्र] मू०

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली-६

पुस्तक-विक्रेताओं को नई सुविधाएँ

* डाक व्यय की बचत * ५ प्रतिशत अतिरिक्त कमीशन
* तीन मास के अन्दर वापसी

पुस्तक-विक्रेताओं को अधिकाधिक सुविधा प्रदान करने के लिये हमने स्थायी ग्राहक-योजना प्रारम्भ की है। जो पुस्तक-विक्रेता हमारे स्थायी ग्राहक बन जायेंगे, उन्हें हम अपने नये प्रकाशन की ५ से लेकर १० तक प्रतियाँ अपने डाक-व्यय पर वी० पी० से भेजेंगे। इन्हें लेना उनके लिए अनिवार्य होगा। इन प्रतियों पर सामान्य दर की अपेक्षा कमीशन भी ५ प्रतिशत अधिक दिया जायगा। इस योजना के अन्तर्गत मंगाई गई प्रतियों को स्थायी ग्राहक तीन महीने तक अपने खर्च पर वापिस भी लौटा सकता है, बशर्ते कि पुस्तकें नई हालत में हों और उन पर किसी प्रकार की मुहर न लगी हो।

एजेन्सी देते समय स्थायी ग्राहकों को प्राथमिकता दी जायगी और यत्न किया जायगा कि एजेन्ट स्थायी ग्राहकों में से ही हों।

आत्माराम एण्ड सन्स,

काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ २१० से आगे]
मैं यही मानता हूँ। कुल मिलाकर कवर भीतर के विषय का थोड़ा बहुत वातावरण मन में बनाने योग्य होना चाहिए। इसका यहाँ यह अर्थ नहीं कि भीतर के किसी सन्दर्भ का, या जैसा अक्सर बहुत से प्रकाशक करते हैं कई सन्दर्भों का, चित्रण एक साथ मुख पृष्ठ पर ही दिया जाय। साथ जो चित्र दिये जा रहे हैं उनके ऊपर भीतर की किसी कहानी का चित्रण नहीं, फिर भी उनके विषय को आप सहज ही जान सकते हैं। इससे चित्रकार को तो अलंकरण में छूट रहती ही है, साथ ही ग्राहक को भी पुस्तक चुनने में आसानी होती है।

आजकल अधिकतर मुखपृष्ठ यूरोपीय कैटलागों आदि के आधार पर बने रहते हैं। यह मौलिकता से हीन तो होते ही हैं, साथ ही भारतीय रुचि के सर्वथा अनुपयुक्त भी। इसके लिए मौलिकता-विहीन कलाकार तथा फरमायशी कवर बनवाने वाला प्रकाशक जिम्मेदार है।

(४) पुस्तक के आकार, भीतर के कागज, ले-आउट, टाइप और उपयोग के अनुसार ही कवर के नमूने को तय करना पड़ता है। 'उपयोग' से मेरा मतलब है किस रुचि अथवा वय के पाठकों के पास पुस्तक जायगी और उसका प्रयोग बार-बार होना है अथवा कभी-कभी। अतः कवर बनवाते समय चित्रकार को विषय आदि का निर्देश देने के साथ, जिल्द की किस्म, पृष्ठ-संख्या, कागज, छापों (टाइपों) और ले-आउट का ब्योरा भी समझाया जाय। विशेष कीमती पुस्तकों में भीतर के चित्र, ले-आउट, और कवर एक ही कलाकार के हों तो साम्य रहता है अन्यथा किसी भी एक चीज का मेल न बैठने से सारा मजा खराब हो सकता है और सारी पुस्तक की तुलना उस व्यक्ति से दी जा सकती है जो शेरवानी के भीतर बुशशर्ट पहने हो। पुस्तक के भीतर और बाहर दोनों को एक-दूसरे के साथ साम्य रखना ही होगा।

(५) पुस्तकों की 'सिरीज' छापते समय यह ध्यान अवश्य रखा जाए कि पुस्तक का मुखपृष्ठ तो सदा एक हो ही, साथ ही कागज, ले-आउट और टाइप भी एक ही हों। मोटी पुस्तकों की पीठ (spine) स्पष्ट अक्षरों में सरल अलंकरणयुक्त होनी चाहिए, क्योंकि पुस्तक की पीठ सदा सामने पड़ेगी। मोटी पीठ वाली 'सीरिज' पर यदि कोई आलंकारिक नमूना हो तो सुन्दर रहेगा। टाइम्स ऑफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित गांधी जी की जीवनी की आठ जिल्दें इसका सुन्दर उदाहरण हैं। इससे सेट की पुस्तकों की पीठ मिलकर एक सुन्दर चित्र की भाँति कमरे की शोभा बढ़ायेगी।

सबसे कठिन और साथ ही सरल उपाय है कि किसी वस्त्र के नमूने को मुख-पृष्ठ पर छापा जाए। इससे पुस्तक कम खर्च में कीमती और सुरुचिपूर्ण बन जाती है जैसा कि 'पान फूल' के डिजाइन में किया गया है। इसका पूरा नमूना पुस्तक के नाम के 'पान' और 'फूल' की तरहों को लेकर वस्त्र के रूप में सोचा गया है।

यदि डस्ट कवर रखना हो तो उसके भीतर गत्ते पर भी वही नमूना छापना अच्छा रहेगा या फिर कोई सरल-सा नमूना डस्ट कवर के भीतर पुस्तक की पीठ और दोनों बगलों पर होना चाहिए। इससे डस्ट कवर फट जाने पर भी पुस्तक का सौन्दर्य बना रहता है और पुस्तकालय से पुस्तक चुनते वक्त कठिनाई भी नहीं होगी।

(७) यदि पुस्तक पतली हो तो भी कम-से-कम सुन्दर अक्षरों में लेखक और पुस्तक का नाम पीठ पर होना आवश्यक है।

(८) कवरों के रंगों का चुनाव भी बहुत ही सूक्ष्म चाहता है। सुन्दर-से-सुन्दर कवर का डिजाइन रंगों के ग़लत चुनाव या खराब छपाई से चौपट हो जाता है। रुचि और विषय का ध्यान रखने के साथ रंगों का चुनाव ऐसा हो कि पुस्तक शीघ्र गन्दी न हो जाय, साथ ही दूकान पर स्पष्ट रूप से ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित कर सके। प्रत्येक पुस्तक की पीठ पढ़ते वक्त हाथ में, और अलमारी में रखे हुए रोशनी के प्रभाव से, गन्दी होती रहती है; अतः पीठ का रंग मैलखोरा या गहरा हो तो उचित है।

कलाकार होने के कारण मैं जब पुस्तक की ओर देखता हूँ तो सबसे पहले मेरी दृष्टि उसके कवर पर पड़ती है। यदि वह नहीं रुचा तो अनेक बार उस पुस्तक को मैं खरीदता ही नहीं, या कवर हटाकर पढ़ता हूँ। पुस्तक को मैं सर्व श्रेष्ठ उपहार मानता हूँ। पर यदि किसी अच्छे लेखक की पुस्तक का बाह्य रूप सुन्दर नहीं हुआ तो मैं अन्य कुछ वस्तु चुनता हूँ क्योंकि प्रत्येक उपहार उपयोगी होने के साथ सुन्दर हो, ऐसा

[आगे पृष्ठ २२५ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

…मेरे सपने प्रख्यात एकांकीकार श्री जगदीशचन्द्र माथुर …५ नटखट एकांकी-नाटकों का संग्रह है। प्रारम्भ में लेखक 'नाटक खेलने वालों से' शीर्षक के अन्तर्गत नाटक खेलने …लों के लिए कुछ आवश्यक निर्देश किये हैं और अन्त में …रिशिष्ट में 'मैं भी खेल चुका हूँ' शीर्षक से अपने नाटक …लने के अनुभव अंकित किए हैं। श्री माथुर के ये सारे …कांकी स्टेज की कला की दृष्टि से अभिनेय हैं, अतः पुस्तक …मस्त शिक्षण-संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के लिए संग्राह्य है। …७७ पृष्ठ की पुस्तक **नीलाभ प्रकाशन**, इलाहाबाद, से ३) में …प्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

सूर और उनका साहित्य डॉ० हरवंशलाल शर्मा द्वारा …स्तुत आगरा-विश्वविद्यालय का पी० एच-डी० का प्रबन्ध …है। इसमें सूर का जीवन-चरित, सूरदास जी का साहित्य, …सूर-साहित्य की पृष्ठभूमि, भक्ति-आन्दोलन में दक्षिण का योग और वैष्णव-सम्प्रदाय, पुराण-साहित्य और कृष्ण का विकास, श्रीमद्भागवत और सूरसागर, सूरदास के कृष्ण और गोपियाँ, सूर के दार्शनिक सिद्धान्त, सूरदास का भक्ति-पक्ष, पुष्टि-सम्प्रदाय और भक्त सूरदास, सूर का काव्य-पक्ष शीर्षक से ग्यारह अध्याय हैं, जिनमें महाकवि सूरदास के जीवन, कला और साहित्य पर व्यापक रूप से विचार किया गया है। परिशिष्ट में सूर-साहित्य-सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें भी समाविष्ट कर दी गई हैं। सूर पर प्राप्य अब तक के सभी ग्रन्थों में प्रतिपादित सभी सिद्धान्तों का समावेश करने के साथ-साथ विद्वान् लेखक ने इसमें उनके जन्म, काल तथा साहित्य के सम्बन्ध में नई मान्यताएँ भी प्रस्थापित की हैं। डिमाई साइज़ के ५९४ पृष्ठों की यह पुस्तक **भारत प्रकाशन**, अलीगढ़, से ७) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

कालिदास का भारत डॉ० भगवतशरण उपाध्याय द्वारा लिखित ऐतिहासिक अन्वेषणात्मक ग्रन्थ है। इसको विद्वान् लेखक ने भौगोलिक सामग्री, राजनीति और शासन तथा सामाजिक जीवन शीर्षक तीन खण्डों में विभाजित किया है। पुस्तक से कालिदासकालीन भारत की समग्र जानकारी भली प्रकार हो जाती है। संक्षेप में, इसमें भारत और उसकी धरती, वनस्पति और जन्तु, जनपदों का एकीकरण, राज्य और राजा, राजनीतिक विचार, राजसत्ता, सामन्त और दिग्विजय, अमात्य, राज्य कार्यागार और अधिकारी-वर्ग, विभागों का शासन, सामाजिक ढाँचा तथा विवाह, भोजन और पान, वेश और शृङ्गार, तथा सामाजिक व्यवहार और दूसरे सामाजिक प्रसंगों के सम्बन्ध में उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की गई है। क्राउन साइज़ के ३४२ पृष्ठ की मोनो टाइप में छपी यह सजिल्द पुस्तक **भारतीय ज्ञानपीठ**, काशी, से ४) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

चालुक्य कुमारपाल श्री लक्ष्मीशंकर व्यास द्वारा लिखित ऐतिहासिक पुस्तक है। चालुक्यकालीन इतिहास की आवश्यक सामग्री, वंश की उत्पत्ति और इतिहास, प्रारम्भिक जीवन तथा शिक्षा-दीक्षा, कुमारपाल का निर्वाचन और राज्याभिषेक, सैनिक अभियान और साम्राज्य विस्तार, राज्य और शासन-व्यवस्था, आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक और सांस्कृतिक अवस्था, साहित्य और कला आदि अध्यायों में महान् चालुक्य कुमारपाल के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी प्रस्तुत की है। यह उल्लेखनीय है कि पुस्तक की पाण्डुलिपि पर सन १९५२ में उत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर से ७००) का पुरस्कार भी प्रदान किया गया था। क्राउन साइज़ के २८६ पृष्ठ की मोनो मुद्रण और आकर्षक साज-सज्जा से युक्त यह पुस्तक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, से ४) में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

अध्यात्म पदावली में पं० राजकुमार जैन साहित्याचार्य ने परिश्रम से जैन, वैदिक और बौद्ध-परम्पराओं में अध्यात्म-विद्या की गरिमा का यथेष्ट गान और उसके द्वारा सम्प्राप्य आत्म-स्वातन्त्र्य के लाभ पर प्रकाश डाला है। प्रारम्भ में

[आगे पृष्ठ २१६ पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय पुस्तकें

संस्कृति-संगम : आचार्य क्षितिमोहन सेन २।।)
भारतवर्ष में जाति-भेद (नवीन सं०) : ,, ,, २।।)
शिल्प-कथा : आचार्य नन्दलाल बसु १)
कला और संस्कृति : डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ४।।)
प्राचीन लोकोत्सव : श्री मन्मथ राय २।।)
सौंदर्य-शास्त्र : डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा ३)
मुक्ति का रहस्य : श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र २)
महत्त्व किसे ? : सेठ गोविन्ददास १)
प्रेम की पराकाष्ठा : श्री सत्यजीवन वर्मा २।।)
शिवाजी : डॉ० रामकुमार वर्मा १)
❀कौमुदी महोत्सव : डॉ० रामकुमार वर्मा १।।)
चार ऐतिहासिक नाटक : डॉ० रामकुमार वर्मा १।।)
सात एकांकी : डॉ० एस० पी० खत्री २।।)
अनबुझी प्यास : श्री दुर्गाशंकर मेहता ७।।)
मरु-प्रदीप : श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ३।।)
गुनाहों का देवता : डॉ० धर्मवीर भारती ५)
सूरज का सातवाँ घोड़ा : डॉ० धर्मवीर भारती १।।)
मुक्ति की राह : अनु० डॉ० एस० पी० खत्री ६)
चाँदनी के खँडहर : श्री गिरिधर गोपाल २)
❀हिन्दी की कहानियाँ : डॉ० श्रीकृष्णलाल २)
गल्पमाला : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा १)
❀उपनिषदों की कहानियाँ (प्रथम) : श्री रामप्रताप शास्त्री २।।)
❀उपनिषदों की कहानियाँ (द्वितीय) : ,, २।।)
प्रायश्चित : श्री सत्यजीवन वर्मा २)
छायातप : डा० रघुवंश २।।)
आँसू और पसीना : डॉ० रामप्रताप बहादुर २)
आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ : अनु० डॉ० भारती २)
पूँजीपति : अनु० श्रीगोपालकृष्ण 'गोपेश' २)
मेरा देश : श्री अहमद 'नदीम' कासिमी २)

मन की मौज : श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ २।।)
गार्हस्थ्य जीवन और ग्राम-सेवा : श्री परशुराम चतुर्वेदी १)
कन्याओं की पोथी : श्री रामदास गौड़ १।।)
पाक विज्ञान : श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर ३)
❀गृह विज्ञान (प्रथम भाग) : श्री सत्यव्रत ।।।)
❀गृह विज्ञान (द्वितीय भाग) : श्री सत्यव्रत १=)
❀आत्मविद्या : श्री माधवराव सप्रे ४)
गीतादर्शन की पृष्ठभूमि : श्री सत्यदेव शास्त्री १।।)
बाल विकास : श्री राममूर्ति मेहरोत्रा २।।)
व्यापारिक पत्र व्योहार : श्री कस्तूरमल बाँठिया १=)
उद्योगपतियों की आर्थिक योजना : श्री अमरनाथ अग्रवाल ।।।=)
स्वराज्य : श्री गोरखनाथ चौबे ।।।=)
चीन का भाग्य : श्री कृष्ण किंकरसिंह ८)
श्रीमती क्यूरी : श्री लालबहादुर शास्त्री ३।।)
लक्ष्मीबाई : श्री दत्तात्रय पारसनीस (प्रेस में)
ब्रह्मचर्य जीवन : स्वामी योगानन्द १।।)
क्रिकेट-प्रदर्शिका : डॉ० 'भ्रमर' १)
योरोप के पत्र : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ।।=)
जानवरों की ऐतिहासिक कहानियाँ : श्री राममूर्ति मेहरोत्रा १)
महाबली हनुमान : श्री राजवल्लभ ओझा ।।।)
बिगुल : श्री सोहनलाल द्विवेदी १।।)
बापू का सपना : श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी १)
छुपे खिलौने : श्री शिक्षार्थी ।=)
नोंक झोंक : श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ ।।)
ठगों का चाचा : श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ ।।)
गड़बड़झाला : श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ ।।)
ख्याऊँ की दावत : श्री राजेन्द्रसिंह गौड़ ।।)
दिमागी डण्ड-बैठक : श्रीमती दुलारी (प्रेस में)

: नये वर्ष का नया आकर्षण :

—मार्च ५५ तक पुस्तकालयों को १५% कमीशन तथा रेलभाड़ा फ्री—

साहित्य भवन लि०, ज़ीरो रोड़, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ २१२ से आगे]

...का विश्वास है। पुस्तक को मैं ज्ञान-प्राप्ति के साथ सौन्दर्य-बोध कराने का अनुपम साधन मानता हूँ, क्योंकि आज पुस्तक हमारे दैनिक जीवन का अंग है।

अन्त में सब बातों का अनुभव करने के बाद मैं बतलाना चाहूँगा कि मुख-पृष्ठ के नमूने का निश्चय जल्दी में न करके समय हाथ में रखकर होना चाहिए। डिजाइन बनने से लेकर तैयार होने तक 'प्रकाशक, मुद्रक और कलाकार को अनेक बार मिलना आवश्यक है। और अन्त में सबसे आवश्यक हैं सर्वसाधन युक्त और सुरुचिपूर्ण मुद्रक और जिल्दसाज, जिनके रुचि लिये बिना सारा काम अन्त में ही बिगड़ेगा।

भूल-सुधार

प्रकाशन समाचार के सितम्बर तथा अक्तूबर मास के अंकों में प्रकाशकों की सूचियाँ छपी हैं। कुछ प्रकाशकों के नाम छूट गए हैं जिसका हमें खेद है। निम्न प्रकाशकों के नाम भी उन सूचियों में जोड़ लिए जाएँ:

कला मन्दिर, ५३८ नई सड़क, दिल्ली।
गिरधारीलाल, खारी बावली, दिल्ली ६।
राजेन्द्र प्रकाशन, भँवर पोखर, पटना ४।
विद्यामन्दिर, १०-६० ब्रह्मनाल, बनारस १।
शिवप्रसाद एण्ड सन्स, ७८ पान दरीबा, इलाहाबाद।

अक्तूबर मास के प्रकाशन समाचार में भारत सरकार पुरस्कार प्राप्त प्रौढ-शिक्षा की पुस्तकों की जो सूची छपी है, उनमें से दो पुस्तकों के प्रकाशक गलत छप गये थे। ठीक नाम इस प्रकार है:

गांधी जी का विद्यार्थी-जीवन, सम्पादक श्री अशोक, प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
हमारा भोजन, लेखक श्री शारदाचरण मुखर्जी, प्रकाशक राष्ट्रभाषा मन्दिर, चार बाग, लखनऊ।

सत्साहित्य सूची विशेषांक में 'गंगा पुस्तक-माला', लखनऊ को आरोग्य शास्त्र नाम की पुस्तक का प्रकाशक लिखा गया है। ज्ञानधाम प्रतिष्ठान, शाहदरा दिल्ली, सूचित करते हैं कि इस पुस्तक के प्रकाशक वे स्वयं हैं। 'गंगा-पुस्तक-माला' का पता लखनऊ के स्थान पर भूल से बनारस छप गया है। ज्ञानमण्डल लि०, बनारस, का ठीक पता इस प्रकार है: ज्ञानमण्डल लि०, कबीर चौरा, बनारस।

विज्ञप्ति

प्रकाशक बन्धुओं को खुशखबरी!

•

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने प्रकाशन के साथ-साथ अपना विशाल विक्रय-विभाग स्थापित किया है। जो प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता हमारे साथ सहयोग करेंगे, उनके नवीन प्रकाशनों की हम १००—१०० प्रतियाँ तक ले सकते हैं।

•

प्रकाशक बन्धु पत्र-व्यवहार करें।

•

साहित्य प्रकाशन
नई सड़क, मालीवाड़ा,
दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ २१३ से आगे]
भूमिका में विद्वान् सम्पादक के उक्त त्रिविध परम्परा-सम्मत अध्यात्म-रूपों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है। यह भूमिका २३१ पृष्ठों में प्रस्तुत की गई है। बाद में ६७ अध्यात्मपरक पदों का संग्रह है। २७४ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक ४||) में भारतीय ज्ञानपीठ, काशी से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

पहला कहानीकार प्रख्यात कहानी-लेखक श्री रावी की २८ छोटी-बड़ी कहानियों का संग्रह है। रावी की शैली सर्वथा अपनी है और उन्होंने लघु-कथा-लेखन में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है। इसी शैली का उज्ज्वल अवदान प्रस्तुत कथा-संग्रह है। २०० पृष्ठ की आकर्षक साज-सज्जा और सुन्दर आवेष्टन से युक्त यह पुस्तक केवल २||) में प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, से मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

अवधी और उसका साहित्य डॉ॰ त्रिलोकीनारायण दीक्षित द्वारा प्रस्तुत सरस्वती सहकार की 'भारतीय साहित्य-परिचय' नामक पुस्तकमाला के अन्तर्गत प्रकाशित छठी पुस्तक है। 'भारतीय साहित्य-परिचयमाला' की अन्य पुस्तकों की भाँति यह पुस्तक भी प्रत्येक साहित्य-प्रेमी, पुस्तकालय तथा विद्यालय के लिए संग्राह्य है। १४० पृष्ठ की सजिल्द, आकर्षक आवरण और मुद्रण से युक्त यह पुस्तक २) में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

राधिकारमणसिंह : व्यक्तित्व और कला में श्री ओंकार शरद् ने हिन्दी के प्रख्यात शैलीकार राजा राधिकारमणप्रसाद-सिंह के व्यक्तित्व और कला पर विचार किया है। इसमें व्यक्ति और व्यक्तित्व, कहानी और उपन्यास, हिन्दी कथा-साहित्य का विकास, राधिकारमणसिंह का साहित्य, राधिकारमणसिंह की विशेषताएँ, राधिकारमणसिंह की रचनाएँ, पात्र और चरित्र-चित्रण तथा भाषा और शैली शीर्षक आठ अध्याय हैं। १०२ पृष्ठ की क्राउन साइज़ की यह पुस्तक १||) में लहर प्रकाशन, प्रयाग, से मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

सुनिये काका साहब में रैहाना तैयब जी के २५ हल्के-फुल्के वैयक्तिक लघु-निबन्धों का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। यह सारे ही निबन्ध काका कालेलकर को सम्बोधित करके लिखे गए हैं। काका कालेलकर ने इसकी भूमिका में लिखा है—"इनमें सम्भाजी राव गायकवाड़ तथा बाल-गन्धर्व के बारे में जो लिखा गया है, वह सब लोग प्रेम से पढ़ेंगे और अपनी कीमती विरासत समझेंगे। वैसे इसमें भारत के एक परिवार के संस्मरण हैं, किन्तु भारत के पूरे जमाने का चित्र आ जाता है।" क्राउन साइज़ के २७० पृष्ठ की यह पुस्तक हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा, से २|) में मिलती है।

◈ ◈ ◈

पुनरुद्धार कुमारी कञ्चनलता सब्बरवाल का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें प्रसिद्ध शासक भारशिवों के वैराग्य, त्याग और आध्यात्मिकता को आधार-भूमि बनाकर कथानक का ताना-बाना बुना गया है। इस उपन्यास से अनन्त शिवभक्त त्यागी भारशिवों की स्मृति, उनका पुनीत कार्य, उनके अद्भुत पराक्रम की अमिट छाप पाठक पर पड़ती है। १६८ पृष्ठ का यह उपन्यास प्रकाशक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, से ३) में मिल सकता है।

सन् १९५४ के नवीन प्रकाशन

१. हिन्दू विवाह में कन्या-दान का स्थान : श्री सम्पूर्णानन्द
पृष्ठ ६४ मू॰ १)

२. ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
पृष्ठ ३९६ मू॰ ४)

३. द्विवेदी-पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद
पृष्ठ २२८ मू॰ २||)

४. खेल-खिलौने [कहानी] : श्री राजेन्द्र यादव
पृष्ठ १५२ मू॰ २)

५. अध्यात्म-पदावली : प्रो॰ राजकुमार साहित्याचार्य
पृष्ठ ४०० मू॰ ४||)

६. चौलुक्यकुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम॰ए॰
पृष्ठ २८८ मू॰ ४)

७. पहला कहानीकार [कहानी] : श्री रावी
पृष्ठ २०० मू॰ २||)

८. कालिदास का भारत [१] श्री भगवतशरण उपाध्याय
पृष्ठ ३९२ मू॰ ४)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदा न ख्वास्ता उर्दू के प्रख्यात कथाकार श्री शौकत थानवी का हास्यरसपूर्ण उपन्यास है। इसका अनुवाद श्री महमूद अहमद 'हुनर' ने किया है। थानवी की शैली, भाषा और कला का उत्कृष्ट नमूना इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। क्राउन साइज के १८४ पृष्ठ का यह उपन्यास लहर प्रकाशन, प्रयाग, से २।।) में मिल सकता है।

◆ ◆ ◆

प्रेत की छाया में बिहारी कथा-लेखक श्री ज्योतीन्द्रनाथ की नौ कहानियों का संग्रह है; इसमें सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक भाव-प्रधान कहानियाँ हैं। अधिकांश कहानियों की भाव-भूमि यथार्थ जीवन से ही सम्बन्धित हैं। पुस्तक का नामकरण संग्रह की पहली कहानी के नाम पर किया गया है। क्राउन साइज के १३४ पृष्ठ की यह पुस्तक अरुण पुस्तकमाला, लहेरियासराय, से मिल सकती है।

◆ ◆ ◆

विधाता की भूल श्री ज्योतीन्द्रनाथ की कहानियों का दूसरा संग्रह है। इसमें उनकी १५ कहानियाँ संग्रहीत हैं। सभी कहानियाँ एक निश्चित उद्देश्य और पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखी गई हैं। पुस्तक के भूमिका लेखक श्री रामवृक्ष बेनीपुरी के शब्दों में हम यही लिख सकते हैं—"एक जगह मैंने लिखा है, कला को खिलौना बनाओ, खुराक नहीं। मुझे खुशी इस बात की जानकारी से हुई कि ज्योतीन्द्रनाथजी मेरे इस कथन के एक अच्छे उदाहरण हैं।" क्राउन साइज के १७० पृष्ठ की मोनो टाइप में छपी यह पुस्तक राजेन्द्र प्रकाशन, भँवर पोखर, पटना—४, से २) में प्राप्य है।

◆ ◆ ◆

रूसी-क्रान्ति के अग्रदूत में श्री राजेन्द्रप्रसादनारायण सिंह ने रूसी आन्दोलन के १८ क्रान्तिकारियों का सचित्र और सजीव वर्णन प्रस्तुत किया है। जिन देशभक्तों का इसमें जिक्र है, वैसे न जाने कितने रूस में होंगे और उन्होंने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर हँसते हँसते अपने प्राण गँवाए होंगे। प्रस्तुत पुस्तक जागरूक पाठक के लिए एक भारी प्रेरणा का काम देगी। डिमाई साइज के १७० पृष्ठ की यह पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, से ४) में मिल सकती है।

साहित्य-संसार के ग्यारह अनमोल गौरव ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मूल्य सवा तीन रुपये।

२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये।

३. **हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग १८८ इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी।

४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये।

५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक चित्र तथा व्यापार-पथों के दुरंगे मानचित्र भी।

६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मूल्य आठ रुपये।

७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया आर्ट पेपर पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या पाँच सौ।

८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक—पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये। गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ लगभग ४५० पृष्ठ।

९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य पौने नौ रुपये।

१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी।

११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक भी।

१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। पृष्ठ ६२५, मूल्य साढ़े तेरह रुपये, सजिल्द।

शीघ्र ही प्रकाशित होगा : **रबर (प्रामाणिक वैज्ञानिक ग्रन्थ)**—ले० श्री फूलदेवसहाय वर्मा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखण्ड विश्व श्री दुर्गाप्रसाद रस्तौगी 'आदर्श' द्वारा प्रस्तुत एक गद्य-काव्य-कृति है। इसमें भारत ही नहीं अपितु विश्व की अखण्डता के प्रति कवि ने अपनी भावनाओं को संजोया है। प्रारम्भ में श्री शिवनाथ काटजू एम० एल० ए० का अंग्रेजी में वक्तव्य है, जिसमें कवि 'आदर्श' के काव्य पर व्यापक रूप से विचार किया गया है। कवि आदर्श ने स्वयं अपना वक्तव्य भी अंग्रेजी में ही दिया है। यह प्रवृत्ति निन्दनीय है। पुस्तक का मूल्य १॥) और प्राप्ति-स्थान आदर्श प्रकाशन मन्दिर, प्रयाग, है।

◆ ◆

अन्तिम ज्योति में श्री तख्तसिंह भटनागर द्वारा रचित उन कविताओं का संग्रह है, जो उन्होंने महात्मा गांधी के अमर बलिदान से प्रभावित होकर लिखी हैं। इसे कवि ने सन्ध्या, महानिशा, उषा और श्रद्धांजलि शीर्षक से ४ भागों में विभक्त किया है। प्रारम्भ में गांधी जी के जीवन की संक्षिप्त तालिका देकर उनकी ११ शिक्षाएँ भी कवि ने दे दी हैं। जनार्दनराय नागर के शब्दों में 'अन्तिम ज्योति' महात्मा जी के विधान का एक लोक-काव्य है। इसको लोक में चलना चाहिए।' क्राउन साइज के १३२ पृष्ठों की न्यूजप्रिंट पेपर पर छपी इस पुस्तक का मूल्य ॥।≈) है और यह एन० पी० भटनागर, उदयपुर, से प्राप्त हो सकती है।

◆ ◆ ◆

विदग्ध विहार तेजकरण बोथरा 'भूषण' की कविताओं का संग्रह है। श्री बोथरा राजस्थान के उदीयमान कवि हैं। अभी शैली, अभिव्यक्ति और छन्द-रचना में काफी अपरिपक्वता है। पता नहीं यह पुस्तक कवि ने किस उद्देश्य से लिखी है। कवि की कृति में पर्याप्त परिमार्जन की अपेक्षा है। १२८ पृष्ठ की यह पुस्तक स्वयं कवि से (सदर निवास, लाडनूँ से) १॥) में प्राप्य है।

◆ ◆ ◆

यशोधरा : एक अध्ययन में राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रख्यात कृति यशोधरा के सम्बन्ध में आलोचनात्मक प्रकाश डाला गया है। इसके लेखक श्री लक्ष्मीनारायण टण्डन और रामखेलावन चौधरी ने पहले भी ऐसी छात्रोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं। क्राउन साइज के १४६ पृष्ठ की पुस्तक १॥) में विद्या मन्दिर, लखनऊ से प्राप्य है।

शिवराज भूषण में श्री प्रतापनारायण टण्डन ने कवि भूषण की विख्यात कृति शिवराज भूषण की टीका देकर उसके काव्यत्व पर आलोचनात्मक प्रकाश डाला है। ३२ + ३६ + ६४ पृष्ठों की यह पुस्तक १॥) में विद्या मन्दिर, लखनऊ, से मिलती है।

◆ ◆ ◆

हिन्दुस्तानी गद्य-संग्रह में हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा, ने भारत के कवि, पत्र-लेखकों, विचारकों तथा महापुरुषों के गद्य का संकलन प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक सभा की 'हिन्दुस्तानी काबिल' परीक्षा में पाठ्य-पुस्तक भी है और वहीं से १) मिल सकती है।

◆ ◆ ◆

राष्ट्रभाषा परिचय विवरण में रतिलाल एम० शाह ने राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति-वर्धा की परिचय परीक्षा में नियत पुस्तकों की संक्षिप्त टीका तथा सार प्रस्तुत किया है। २७२ पृष्ठ की न्यूज प्रिंट पेपर पर छपी यह पुस्तक जनरल बुक-डिपो, नड़ियाद, से २॥) में प्राप्य है।

◆ ◆ ◆

चम्पा श्री भैयालाल शर्मा द्वारा लिखित १०८ पृष्ठ का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। कहीं-कहीं लेखक ने कल्पना का आश्रय भी लिया है। कथानक के आधार विन्ध्य भूमि के ऐतिहासिक तथ्य हैं। यह उपन्यास रसिकलाल शर्मा, टीकमगढ़, से १) में मिल सकता है।

◆ ◆ ◆

सहयोगी प्रकाशन मन्दिर लिमिटेड, दतिया, की ओर से प्रकाशित **वर्मा विद्यार्थी कोष, झाँसी की रानी,** तथा **भारत-भक्ति** नामक पुस्तिकाएँ हमें परिचयार्थ मिली हैं। तीनों के लेखक विन्ध्य-प्रदेश के साहित्य-सेवक श्री हरिमोहनलाल शर्मा। पहली पुस्तिका में छात्रों के उपयोग के लिए लगभग १२०० अंग्रेजी के शब्द और आवश्यक संकेत दिये गए हैं। दूसरी पुस्तिका झाँसी की रानी के जीवन पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रकाश डालती है और तीसरी में भारत-भक्ति से सम्बन्धित कुछ विचार समाविष्ट हैं। तीनों पुस्तिकाओं की पृष्ठ-संख्या क्रमशः २४, ३१, और ४८ है। उक्त संस्था से ये तीनों क्रमशः ।), ॥), ।।) में प्राप्य हो सकती हैं।

◆ ◆

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

अपर इंडिया पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ
—आधुनिक योरोप का बृहत् इतिहास, ले० एल० मुखर्जी, अनु० उमा भार्गव । ५)
—योरोप का इतिहास, ले० एल० मुखर्जी, अनु० उमा भार्गव । ५।।।)
आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
—चरित्र-निर्माण की कहानियाँ, ले० राजबहादुर सिंह । १।।)
—जल-समाधि, ले० गोविन्दवल्लभ पंत । सामाजिक उपन्यास । ३।।)
—बुझते दीप, ले० दयाशंकर मिश्र । राजनीतिक उपन्यास ।
—संसार के युग-प्रवर्तक, ले० इन्द्र एम० ए० । कवियों की जीवनियाँ । २।।)
—समाधान, ले० रामावतार त्यागी । राजनीतिक उपन्यास ।
—सूरदास : साहित्य और अध्ययन, ले० यज्ञदत्त शर्मा । आलोचनात्मक । २।।)
आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस
—नैवेद्य, ले० सी० जिनराजदास । अनु० रामचन्द्र शुक्ल । आध्यात्मिक । ।।)
—ब्रह्मविद्या का प्रचार क्यों ? ले० जगतनारायण । आध्यात्मिक । =)
ए० एल० प्रकाशन, दिल्ली
—खरगोश और बिल्ली, ले० दद्दाजी । बालोपयोगी । ।।।)
कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद
—चक्रव्यूह, ले० लक्ष्मीनारायण मिश्र । नाटक । २।)
...कुमार बुक डिपो, लखनऊ
—...स्त्री शिक्षा (४ भाग), पु० मु० । सन्तूलाल गुप्त ।
...नी पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—आधुनिक कपड़े की छपाई, ले० चन्द्रभानु सहगल । ४)
—कपड़े की बुनावट, ले० एस० एन० चोपड़ा । २।।)
—रंगाई, धुलाई व छपाई, ले० एस० एन० चोपड़ा ।
—वीविंग केल्कुलेशन, ले० एस० एन० चोपड़ा । २।।)
नवयुग पुस्तक भण्डार, लखनऊ
—प्रियप्रवास विवेचन, ले० शिवस्वरूप गुप्त । आलोचनात्मक । २)
—भोलानाथ, ले० शरच्चन्द्र । अनु० श्रीराम श्रीवास्तव । कहानी-संग्रह । १)
—स्वर्णदीप, ले० रामस्वरूप । उपन्यास । ३)
नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ
—अतृप्त वासना, ले० शैलेश । पु० मु० उपन्यास । ५)
—मंझधार, ले० दुर्गाशंकर मिश्र । निबन्ध । ३।।)
—मृत्यु की आवाज़, ले० शैलेश । उपन्यास । २।।)
—विचार-वीथिका, ले० सच्चिदानन्द पाण्डेय । उपन्यास । ३)
पुस्तक मन्दिर, मथुरा
—कम्पाउंड्री शिक्षा, ले० राजेश दीक्षित । चिकित्सा सम्बन्धी । २।।)
—खूंखार टोली, ले० वाल स्टवर्ड, अनु० दाऊदयाल गुप्त । जासूसी उपन्यास । २।।)
—स्वास्थ्य योगासन, ले० स्वा० सत्यानन्द । २)
भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
—कागज की टोपी, नकाबपोश मेदी । जासूसी । ।।)
मूलनारायण एण्ड संस, इलाहाबाद
—मेघदूत, अनु० दिवाकर । गीतानुवाद । २)
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
—अब्राहम लिंकन, डा० इन्द्रनाथ मदान । बालोपयोगी । ।।।=)
—भारतीय लोक-साहित्य, ले० श्याम परमार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—लोमहर्षिणी, ले० कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी। नया संस्करण। ४॥)

राजश्री पब्लिकेशंस, कलकत्ता

—फिल्म-कला, ले० सागरमल गुप्त। ३॥)

राष्ट्रधर्म प्रकाशन लि०, लखनऊ

—अर्थ-समीक्षा, ले० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ। ३)

—राजनीति समीक्षा, ले० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ। ३)

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

—आधुनिक राजनीतिक चिन्तन, ले० डॉ० बी० एन० मेहता। १२)

—हमारी आर्थिक एवं वाणिज्य सम्बन्धी समस्याएँ, ले० डॉ० रघुराजसिंह व विजयेन्द्रपाल सिंह। पु० मु० ५)

विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर

—कला का अनुवाद, ले० माखनलाल चतुर्वेदी। कहानी-संग्रह। २॥)

—हिन्दी का गद्य-साहित्य, ले० डॉ० रामचन्द्र तिवारी। इतिहास एवं आलोचना। ५)

शारदा मन्दिर, दिल्ली

—मोम के मोती, ले० रजनी पनीकर। उपन्यास। ३॥)

सरोज प्रकाशन, प्रयाग

—एशिया, ले० जनार्दनप्रसाद श्रीवास्तव। प्रायोगिक भूगोल। ८॥)

—साकेत-सन्त, डॉ० बलदेवप्रसाद मिश्र। खण्डकाव्य। १॥)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—पतिता, ले० सॉमरसैट मॉम, अनु० हरि कपूर। उपन्यास। ५)

—राजनेता, ले० चन्द्रदश पाण्डेय। उपन्यास। ६)

हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ

—नवरत्तन, ले० सुशीलकुमार शुक्ल। बालोपयोगी। ।=)

—भाग्य का खेल, ले० सुशीलकुमार शुक्ल। बालोपयोगी। ।=)

—सैलानी, ले० रामदास मिश्र। उपन्यास। २॥)

ज्ञान विकास मन्दिर, जमालपुर

—पतन का अंत, ले० ओंप्रकाश। उपन्यास। २॥)

—हमारी मांगें, ले० ओंप्रकाश। क्रान्तिकारी। ३)

राज्य द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ

१. वर्द्धमान	श्री अनूप शर्मा	मू० ६)
२. वैदिक साहित्य	पं० रामगोविन्द त्रिवेदी	मू० ६)
३. शेरो-शायरी	श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय	मू० ८)
४. शेरो-सुख़न	श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय	मू० ८)
५. मिलनयामिनी	श्री बच्चन	मू० ४)
६. रजतरश्मि	डॉ० रामकुमार वर्मा	मू० २॥)
७. भारतीय ज्योतिष	नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य	मू० ६)
८. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ३)
९. संस्मरण	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ३)
१०. रेखाचित्र	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	मू० ४)
११. चौलुक्यकुमारपाल	श्री लक्ष्मीशंकर व्यास	मू० ४)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

रुचि-सम्पन्न तथा उपयोगी उपहार-भेंट और पुस्तकालयों के लिए अनूठा ग्रन्थ

भारतीय कसीदा

लेखक

जगदीश मित्तल : कमला मित्तल

भूमिका

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

दो प्रतिनिधि भारतीय कलाकारों द्वारा वर्षों के कठोर परिश्रम से प्रणीत, इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दुस्तान के कई उत्कृष्ट छापेखानों के सहयोग से सम्भव हो सका है।

● बढ़िया कागज पर छपे कसीदे के २१५ सादे और रंगीन नमूने। ●१८ हाफ़टोन चित्र और ३२ पृष्ठ की ठोस पाठ सामग्री। ●मजबूत जिल्द, नयनाभिराम तिरंगा कवर। ●आकार "६ × ११"।

प्रकाशक :
सुरुचि प्रकाशन
'कनक', हिमायतनगर, हैदराबाद।

मुख्य वितरक :
राजकमल प्रकाशन
१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

०डी० उपाध्याय, डॉ०, अर्थशास्त्रः सिद्धान्त और विश्लेषण, ५७३, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा १०)
यदेव देशश्री, अर्थशास्त्र की सरल रूपरेखा, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ७)
ोहनलाल गुप्त, डॉ०, भारतीय कृषि की समस्याएँ, ४५०, डि०, सरोज प्रकाशन, प्रयाग ५)

आलोचना

नमचन्द जैन, कुरुक्षेत्र की अंतरात्मा, २२, क्रा०, साहित्य साधना कुटीर, इन्दौर ।=)
नमचन्द जैन, मुक्ति का रहस्यः एक अध्ययन, ४०, क्रा०, साहित्य साधना कुटीर, इन्दौर ॥)
ल, प्रो०, निबंधकार रामचन्द्र शुक्ल और चिंतामणि, २००, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २।)
न्द्रशेखर पांडेय, शांतिकुमार बाबूराम व्यास, डॉ०, संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, ३६०, क्रा०, साहित्य निकेतन, कानपुर ४॥)
लोकीनारायण दीक्षित, डॉ० अवधी और उसका साहित्य, १४०, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २)
मचन्द अग्रवाल, हिन्दी साहित्य के दार्शनिक आधार, २५०, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २॥)
वकुमार मिश्र, आंसू और उसका कवि, २२५, क्रा०, मालवीय प्रकाशन मंदिर, लखनऊ २॥)
ीन्द्र, डॉ०, कवि जायसी और उनका पद्मावत, २००, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २।)

उपन्यास

न्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, लोपामुद्रा, पु० मु०, ३३०, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ५)
न्द्र सत्यार्थी, कठपुतली, ४४८, क्रा०, एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली, वितरक : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ६)
श महता, डूबते मस्तूल, डि०, आत्माराम एंड संस, दिल्ली ४॥)
तचंद्र, अनु० जी० एस० वर्मा, परिणीता, १२०, क्रा०, पु० मु०, नवयुग पुस्तक भंडार, लखनऊ १॥)
रतचन्द्र, अनु० जी० एस० वर्मा, विराज बहू, १४४, क्रा०, पु० मु०, नवयुग पुस्तक भंडार, लखनऊ २)
नाथ, कमूं और जगनी, २१५, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४)
तहरिवल्लभ, प्रदीप, २००, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४)

कविता

राज, डॉ०, धरती और स्वर्ग, १०३, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३)
नारायण द्विवेदी, गीतांजलि, १६०, क्रा०, शिवप्रसाद एंड संस, इलाहाबाद २॥)
देवप्रसाद मिश्र, केशव-किशोर, १४४, क्रा०, सरोज प्रकाशन, प्रयाग १॥)
श्वरप्रसाद सिंह, अश्रुहास, ५७, क्रा०, भारती प्रकाशन, भागलपुर १)
श्वरप्रसादनारायण सिंह, अमृतप्रभा, आत्माराम एंड संस, दिल्ली १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

बेचन शर्मा पांडेय 'उग्र', कलाकार का पुरस्कार, आत्माराम एंड संस, दिल्ली ३)

धार्मिक

एनी बीसेंट, अनु. रामचंद्र शुक्ल, भारतीय आदर्श, १००, क्रा०, थियॉसॉफिकल सोसाइटी, बनारस १)

युगुलकिशोर पांडेय, महाभारत भाष्य, ६५०, रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा ६)

सी० जिनराजदास, प्रकाश सिन्हा, मेरी प्रतिज्ञा, ११५, क्रा०, थियॉसॉफिकल सोसाइटी, बनारस ।।=)

नाटक

अरुण, रेल का डिब्बा, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली २)

कन्चनलता सब्बरवाल, लक्ष्मीबाई, ११६, क्रा०, कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद १।।)

सत्येन्द्र, डॉ०, मुक्ति-यज्ञ, १३०, क्रा०, सरोज प्रकाशन, प्रयाग १।)

बालोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

इन्द्रनाथ मदान, डॉ०, लेनिन, २४, फु०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।।।=)

ज्योतिप्रसाद मिश्र, राष्ट्रपिता बापू, ४८, क्रा०, शिवप्रसाद एण्ड संस, इलाहाबाद ।=)

सुरेन्द्र शर्मा, महाराणा राजसिंह, १५६, क्रा०, स्टैंडर्ड बुक डिपो, कानपुर १)

श्रीराम, लोकमान्य तिलक, क्रा०, आत्माराम एंड संस, दिल्ली १)

हरिकृष्ण देवसरे, सफेद रसगुल्ले, ४०, क्रा०, प्रभा प्रकाशन, कासगंज ।।)

राजनीति

एडी आशीर्वादम, अनु. गंगारत्न पांडेय, राजनीति शास्त्र,५७६,डि०, पु०मु०, अपर इंडिया पब्लिशिंग हाऊस, लखनऊ ११)

चंद्रशेखर शास्त्री, आतंकवाद का इतिहास, ६३२, डि०, शिवप्रसाद एंड संस, इलाहाबाद १०)

विविध

अरुण, सचित्र गृहविनोद, डि०, आत्माराम एंड संस, दिल्ली ८)

ज्योतिर्मयी ठाकुर, लड़कियों का जीवन, ३२०, क्रा०, शिव प्रसाद एंड संस, इलाहाबाद ४।)

ज्योतिर्मयी ठाकुर, घरेलू शिक्षा, ३४४, क्रा०, शिवप्रसाद एंड संस, इलाहाबाद ४।)

ज्योतिर्मयी ठाकुर, सरल बुनाई, ३१२, क्रा०, शिवप्रसाद एंड संस, इलाहाबाद ४।)

ज्योतिर्मयी ठाकुर, सरल पाकविज्ञान, ३०४, क्रा०, शिवप्रसाद एंड संस, इलाहाबाद ४।)

यज्ञदत्त शर्मा, आदर्श-भाषण-कला, डि०, आत्माराम एंड संस, दिल्ली ७।।)

प्रकाशन समाचार के द्वितीय वर्ष में

तीन विशेषांक

प्रकाशित हो रहे हैं। तीनों का अलग-अलग मूल्य १) होगा, लेकिन २।।) का वार्षिक मूल्य भेजकर ग्राहक बनने वालों को ये तीनों अंक बिना अतिरिक्त मूल्य के मिल जाएंगे। वी. पी. पी. से ३) लगते हैं।

आज ही ग्राहक बनिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन से प्राप्य नये प्रकाशन

[दूसरे कवर से आगे]

…मगीर—चतुरसेन शास्त्री	५।।।=)
…मार्ग—गुरुदत्त	७)
…किल चोर—बार्तोलीनी	३)
…तो के खण्डहर—गिरिधर गोपाल	२)
… वृत्त—कृष्णचन्द्र	२।।)

कहानियाँ

… क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ—यशपाल	२)
…गी मधुपुरी—राहुल सांकृत्यायन	४)
… कसक—उमाशंकर शुक्ल	१।।)
…क –विनायकराव विद्यालंकार	१।।।)
…ा कहानीकार—रावी	३)
…ा सूरज—कृष्णचन्द्र	२।।)

नाटक

…रे सपने—जगदीशचन्द्र माथुर	३)
…ान—डॉ० रामकुमार वर्मा	३)
…दास के नाटक—जगदीश दीक्षित	१।)

कविता

…ो और स्वर्ग—डॉ० देवराज	३)
… कविता : १—स० डॉ० जगदीश गुप्त	२)
… की वहक –बेढब बनारसी	२)
… भारती—पंत, नगेन्द्र, राव	१५)
…ी चरितमानस—विद्याधर महाजन	५।।=)
…ओ-सुखन : भाग ४—गोयलीय	३)
…ओ-सुखन : भाग ५—गोयलीय	३)

दर्शन

…चात्य दर्शन का इतिहास—थिल्ली	५)
…तीय दर्शन के मूल-तत्व—हिरियन्ना	५)
…मन तर्क-शास्त्र—भोलानाथ राय	४।।।)
…मन तर्क-शास्त्र—भोलानाथ राय	४।।।)

आत्मकथा, चरित्र

…सिद्धि की खोज में—क० मा० मुन्शी	५)
…ी की कहानी—लुई फिशर	४)

विविध

भारतीय कसीदा—जगदीश मित्तल	१५)
प्राण-दण्ड—परिपूर्णानन्द	५)
वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—डॉ० सत्यप्रकाश	८)
आधुनिक पत्रकार-कला—खाडिलकर	३।।)
भारतीय पत्रकार-कला—बूलजले	६)
समाचार पत्रों का इतिहास—अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६)
मराठी सन्तों का सामाजिक कार्य—वि० भि० कोलते	२)
सेक्स का स्वभाव—मन्मथनाथ गुप्त	३)
भारतीय और यूरोपीय शिक्षा का इतिहास—सीताराम चतुर्वेदी	५)

समाज शास्त्र

भारत में सामाजिक कल्याण व सुरक्षा—रघुराज गुप्त	८।।)
समाज शास्त्र के सिद्धान्त—रघुराज गुप्त	१०)

कोष

तुलसी शब्द-सागर – स० हरगोविन्द तिवारी	१२)
हिन्दी रूसी कोष—मॉस्को प्रकाशन	६।–)

बाल साहित्य

सच्ची नागरिकता—मनरो लीफ़	१।।)
एक कदम आगे—मनरो लीफ़	१।।)
बाल गीत—सत्यदेव शर्मा	१)
चूहा राजा—रामकृष्ण शर्मा	।।)
लोहे की कहानी—	१।।)
चाँद की यात्रा—	१।।)
लेनिन—डॉ० इन्द्रनाथ मदान	।।।=)
अब्राहम लिंकन—डॉ० इन्द्रनाथ मदान	।।।=)
दो एकांकी—हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	।।)
बालकों की कहानियाँ—हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	।।)
गाँवों की कहानियाँ—हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	।।)
बालपद—हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	।।)
दक्षिण के महापुरुष—हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	।।)
हैदराबाद के ऐतिहासिक कलास्थल—,,	।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd No. D—594

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक में

८६ विषयों की ३३२५ पुस्तकों की सविवरण सूची प्रकाशित हुई थी।

●

प्रकाशन समाचार का जनवरी ५५ का अंक

उपन्यास-कहानी-नाटक-सूची-विशेषांक

होगा। हिन्दी में उपलभ्य सभी उपन्यासों, कहानी-संग्रहों, नाटकों तथा नाटक-संग्रहों की सविवरण सूची इसमें छपेगी।

●

प्रकाशकों से प्रार्थना

है कि उपरिलिखित विषयों की अपनी पुस्तकों का विवरण हमें शीघ्रातिशीघ्र भेज दें ताकि वर्गीकरण में दिक्कत न हो। जो पुस्तकें अनूदित हैं, उनके मूल लेखकों का तथा मूल भाषा का उल्लेख कर देने से सुभीता रहेगा।

●

विवरण

में पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, अनुवादक का नाम, पृष्ठसंख्या, संस्करण, आकार, मूल्य तथा प्रकाशक का नाम भेजना आवश्यक है।

●

सूचियाँ १० दिसम्बर तक अवश्य भेज दीजिए।

●

प्रकाशक अभी से अपने लिए विज्ञापन-स्थान सुरक्षित कर लें। ये विशेषांक अरसे तक पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा हिन्दी-प्रेमियों द्वारा देखे जाते रहेंगे।

प्र का श न स मा चा र

१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२ दिसम्बर, १९५४ अङ्क ४ पूर्णाङ्क १६

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

२।।) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

- 12-54

टो की कहानी

लेखक
व्लादिमीर देदीयर

अनुवादक
श्रीमती विद्याविभा
बी० बी० सक्सेना

संख्या
०

सजिल्द मूल्य
३।।)

काशक व मुख्य वितरक :
ल न्यूज़ एण्ड फ़ीचर्स
र्क होटल, कनाट सर्कस,
नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार में विज्ञापन देकर अपनी बिक्री बढ़ाइए

- ☐ **प्रकाशन समाचार** प्रत्येक मास के दूसरे सप्ताह में प्रकाशित हुआ करेगा।
- ☐ इसका वार्षिक मूल्य २।। मात्र है; डाक-व्यय अलग से नहीं लिया जाता। फुटकर अंकों का मूल्य । प्रति अंक है।
- ☐ पृष्ठों की संख्या प्रत्येक अंक में आवश्यकतानुसार घट-बढ़ सकती है।
- ☐ अंकों को साधारण बुक-पोस्ट से ही भेजने की व्यवस्था है।
- ☐ पत्र में छपने के लिए विज्ञापन-सामग्री हर मास की १५ तारीख तक कार्यालय में पहुँच जानी चाहिए।
- ☐ यदि विज्ञापन का ले-आउट, ब्लॉक आदि पत्र के विज्ञापन-विभाग से बनवाने हों तो इस सम्बन्ध का पारिश्रमिक अलग से देना होगा।
- ☐ विज्ञापन-सम्बन्धी झगड़ों का निबटारा दिल्ली की अदालतों में ही होगा।
- ☐ विज्ञापन-स्थान की लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है : पूरा पृष्ठ: ६" × ८"। आधा पृष्ठ: ३ ३/४" × ६" या २ ३/४" × ८"। चौथाई पृष्ठ : २ ३/४" × ३ ३/४"। एक कालम इंच : १" × २ ३/४"। कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग : ५ १/२" × ६"।
- ☐ विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं :

  साधारण स्थान

  पूरा पृष्ठ ३० । आधा पृष्ठ : १७।। । चौथाई पृष्ठ : १० । एक कालम इंच : ३ ।

  विशेष स्थान

  कवर का दूसरा व तीसरा पृष्ठ : ४० । कवर का चौथा पृष्ठ, एक रंग में : ५० । कवर का चौथा पृष्ठ, दो रंगों में : ६० । कवर के पहले पृष्ठ का दो-तिहाई भाग, एक अथवा दो रंगों में : ६० । मध्य का पृष्ठ, दो रंगों में, ले-आउट-सहित : १०० ।
- ☐ वर्ष में ६ विज्ञापन देने से १५ प्रतिशत की कटौती मिलती है।

बिक्री व विज्ञापन-विभाग

प्रकाशन समाचार : राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष २ :
: अंक ४ :

सम्पादक : ओंप्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद से राष्ट्र-भाषा हिन्दी के साहित्य-निर्माण की दिशा जैसे बदली है, वैसे ही प्रकाशन-क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन और परिवर्द्धन हुए हैं। जहाँ हिन्दी के प्रकाशकों ने सुरुचिपूर्ण मुद्रण और बाह्य आवरण की साज-सज्जा की ओर ध्यान दिया है, वहाँ साहित्य के अनेक अछूते अंगों की पूर्ति करने में भी वे कटिबद्ध होकर लग गए हैं। पिछले ६-७ वर्षों में उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता और आलोचना आदि की पुस्तकों के प्रकाशन के अांतरिक्त राजनीति, शासन, नागरिकता, भूगोल, अर्थशास्त्र, वाणिज्य आदि अनेक प्रमुख उल्लेखनीय विषयों पर भी बहुत-सा साहित्य प्रकाशित हुआ है।

हमारी पिछली प्रकाशन-प्रगति की सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में समग्र भारतीय साहित्य को सुलभ बनाने का सफल प्रयत्न किया गया। केवल अन्तरप्रान्तीय साहित्य ही नहीं, बल्कि विश्व-साहित्य की अनेक कृतियों का भी हिन्दी-भाषा में समावेश करने की चेष्टा हुई। परिणामस्वरूप एशियाई तथा यूरोपीय साहित्य के विविध स्वरूपों के परिचायक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। इसके साथ-साथ हिन्दी के कोष-साहित्य की अभिवृद्धि के लिए विभिन्न संस्थाओं तथा प्रकाशकों ने अनेक बहुमूल्य कृतियाँ प्रकाशित की हैं। यही नहीं विज्ञान, कला, पत्रकारिता, समाज-विज्ञान, शिक्षा-विज्ञान और इतिहास जैसे अछूते विषयों पर भी विगत सात वर्षों में अनेक उल्लेखनीय ग्रन्थों का निर्माण एवं प्रकाशन हुआ है। यहाँ तक कि बाल-साहित्य और प्रौढ़ शिक्षण जैसे विषयों की पुस्तकें भी हिन्दी में इतनी आई कि इससे हिन्दी के स्वर्णिम भविष्य का आभास होता है।

यही नहीं कि केवल प्रकाशकों ने ही साहित्य के प्रकाशन और उसके उन्नयन में दिलचस्पी ली, बल्कि भारत सरकार और विभिन्न प्रदेशीय सरकारों ने हिन्दी-भाषा और साहित्य की उन्नति के लिए अनेक प्रशंसनीय योजनाएँ बनाई। भारत सरकार के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, मध्य भारत तथा विन्ध्यप्रदेश की सरकारों ने पुरस्कार देने आरम्भ करके जहाँ हिन्दी लेखकों को प्रोत्साहित करने का प्रशंसनीय कार्य किया है वहाँ यदि ये सरकारें हिन्दी के प्रकाशनों की खपत करने के सम्बन्ध में भी कोई उपयोगी कदम उठाएँ तो प्रकाशकों को भी प्रोत्साहन मिले।

यह निर्विवाद सत्य है कि यदि सरकारों की ओर से हिन्दी-प्रकाशनों के क्रय और प्रसार को प्रोत्साहन तथा सहायता मिले तो हिन्दी का प्रकाशन और भी तेजी से हो सकेगा। स्वतन्त्र भारत के संविधान में हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया गया है। १०-१२ वर्ष के अन्दर-अन्दर समस्त राजकीय कार्य हिन्दी में ही होने लगेंगे। राजभाषा के रूप में हिन्दी के स्वीकृत हो जाने पर यह आशा करना स्वाभाविक ही है कि हिन्दी-प्रकाशन की सर्वांगीण उन्नति हो। यह तभी सम्भव है जब कि सभी प्रकाशक प्रकाशन को एक व्यवसाय न मानकर 'मिशन' मानने लगें और दूसरी ओर केन्द्रीय और राज्यीय सरकारें भी उपर्युक्त दिशा में अपना पूरा सहयोग प्रदान करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ वर्ष बाद सिलसिले से पुनः प्रकाशन

'उग्र'-साहित्य

१२ वर्ष बाद नया क्रान्तिकारी उपन्यास

गंगा माता

गं गा मा ता

जिनके नेतृत्व में पुरुषों के विरुद्ध बनारस की महिलाओं ने सत्याग्रह किया था!
जिनके नेतृत्व में लहू के लोभी लम्पटों से लाहौर की ललनाओं ने लोहा लिया!
जनवरी १९५५ में उपन्यास प्रकाशित होगा।
अग्रिम आर्डर देने वालों को विशेष सुविधाएँ।

'उग्रजी' की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

शराबी (मद्य-निषेध पर एक सामाजिक उपन्यास)	मूल्य	३ ८ ०
कला का पुरस्कार (भावपूर्ण सामाजिक उपन्यास)		३ ० ०

हमारे नये प्रकाशन

आदर्श भाषण-कला	यज्ञदत्त शर्मा	७ ८ ०
डूबते-मस्तूल (उपन्यास)	श्री नरेश मेहता	४ ८ ०
सचित्र गृह-विनोद	अरुण	८ ० ०
लोकमान्य तिलक	श्रीराम	१ ० ०
रेल का डिब्बा (एकांकी)	अरुण	२ ० ०
चम्पारन में महात्मा गांधी	डा० राजेन्द्र प्रसाद	५ ० ०

(प्रकाशकगण अपने प्रकाशनों की सूची की दो-दो प्रतियाँ भेजने का शीघ्र कष्ट करें।)

आत्माराम एण्ड सन्स

काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

अमरीका की यूनाइटेड स्टेट्स इन्फर्मेशन एजेन्सी के ान श्री स्ट्रेबर्ट ने एक नई योजना प्रसारित की है जिसके ुसार अमरीकन पुस्तकों की विदेशों में अधिकाधिक बिक्री लिए कच्ची जिल्द में महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लगभग एक ाई मूल्य में निर्यात की जायँगी। इसके साथ-ही-साथ इस न्सी द्वारा सजिल्द पुस्तकों का विदेशों में अमूल्य वितरण जारी रखा जा रहा है। अमरीकन सरकार के ऐसे प्रयत्नों ी भारतीय पुस्तक-विक्रेताओं में जो असन्तोष फैल रहा शायद उसी के परिणामस्वरूप भारत में अमरीकन पुस्तकों आयात १९५२ के ५,१८,३२९ डालर से घटकर १९५३ ८९,७१८ डालर रह गया है।

◈ ◈ ◈

कलकत्ता की **बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी** (१०-१-१ सय्यद ी लेन, कलकत्ता) ने निश्चय किया है कि राष्ट्रकवि श्री लीशरण गुप्त की प्रतिष्ठा और उनके जीवन की महत्त्व ना के अनुरूप एक बृहद् अभिनन्दन का आयोजन किया जिसमें १००० पृष्ठों का एक स्थायी महत्त्व का अभि-न-ग्रन्थ उनकी सेवा में अर्पित किया जाय।

बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी कलकत्ता की ही नहीं, पूर्वी भारत बहुत पुरानी संस्था है और प्रायः उन सभी साहित्यकारों स संस्था में बैठकर मनन और अध्ययन किया है जो एक े समय तक देश के इस भाग में प्रवासी रहे हैं। गत एक े बड़ा बाज़ार लाइब्रेरी ने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के नन्दन की योजना को मूर्त रूप देने के लिए देश के सभी ी साहित्यकारों से व्यापक सम्पर्क और परामर्श करने का बनाये रखा है। फलतः अब यह योजना सुगठित रूप से ी हुई है कि यह अभिनन्दन सार्वजनिक तौर पर इतने पैमाने पर किया जाय कि वह समूचे देश की भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर सके।

इस अभिनन्दन-ग्रन्थ का प्रधान सम्पादकत्व डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने स्वीकार किया है। सम्पादक-मण्डल में देश-भर के लब्धप्रतिष्ठ अधिकारी विद्वान लिये गए हैं। कलकत्ता के हिन्दी भाषी समाज के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सक्रिय सहयोग से अभिनन्दन-समिति का निर्माण शीघ्र हो जायगा।

लाइब्रेरी देश के सभी साहित्य-प्रेमियों से निवेदन करती है कि वे अभिनन्दन के इस महान् कार्य को अपने बहुमूल्य सहयोग और परामर्श देकर सफल बनाने में सहयोग दें।

◈ ◈ ◈

कलकत्ता से हिन्दी नाट्य समिति (६७-बी, बलराम दे स्ट्रीट) के मन्त्री सूचित करते हैं कि समिति को खेलने के लिए अच्छे नाटकों की आवश्यकता है। स्वीकृत नाटकों के लिए उचित पुरस्कार भी दिया जायगा।

◈ ◈ ◈

वर्ष में प्रकाशित प्रतिनिधि तथा श्रेष्ठ हिन्दी कविताओं को पुस्तक-रूप में संग्रहीत करने की एक योजना 'साहित्य निकेतन' कानपुर ने बनाई है। १९५४ की कविताओं के संकलन एवं संचालन का भार उन्होंने श्री देवीशंकर अवस्थी और श्री अजितकुमार को सौंपा है। कवियों एवं काव्य-संग्रहों के प्रकाशकों से निवेदन है कि वे इस वर्ष की अपनी श्रेष्ठ कविताओं के प्रकाशन की सूचना संकलन कर्ताओं को शीघ्र ही दें। संग्रह जनवरी के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हो जायगा।

●

यदि आप अब तक
प्रकाशन समाचार
के ग्राहक नहीं बने तो एक वर्ष का चन्दा २।।) आज ही भेज दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-ग्रन्थालय

रामस्वरूप गोयल

ग्रन्थालय-विज्ञान के उदीयमान लेखक श्री गोयल का यह लेख प्रस्तुत विषय पर उपयोगी और रोचक जानकारी से परिपूर्ण है। इस सम्बन्ध में हम इनके और लेख भी आगामी अंकों में क्रमशः प्रकाशित करेंगे।

कुछ मास पूर्व की बात है कि देहली पब्लिक लायब्रेरी में बाहर के कुछ ग्रन्थालयी ग्रन्थालय के कार्य में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आये थे। उनसे जब यह पूछा गया कि जन-ग्रन्थालय से क्या अभिप्राय है, तो उनमें से इसका कोई ठीक उत्तर न दे सका। मारवाड़ी पब्लिक लायब्रेरी अथवा महाबीर जैन पब्लिक लायब्रेरी जैसे ग्रन्थालयों को वे जन-ग्रन्थालयों की संज्ञा के अन्तर्गत ही समझते थे। यह अनभिज्ञता तो उन व्यक्तियों की थी, जो कहीं-न-कहीं ग्रन्थालय का कार्य-भार सँभाले हुए थे। फिर जन-साधारण के विषय में कहने की क्या बात? जन-साधारण भी जन-ग्रन्थालय से यही अभिप्राय समझता है कि वह किसी ट्रस्ट अथवा सार्वजनिक संस्था के मातहत सरकार से किसी अंशतः या पूर्णतः सहायता प्राप्त कर एवं चंदा और दान उगाहकर चलता हो, उसका सदस्य जनता में से कोई भी व्यक्ति हो सकता हो और सदस्यता के लिए व्यक्ति को अमानत जमा कराने के अतिरिक्त कोई चन्दा देना पड़ता हो। हमारे ग्रन्थालयी भाइयों में एवं साधारण जनता में जन-ग्रन्थालय के विषय में जो यह भ्रान्ति व्याप्त है, उसका विशेष कारण भारत में पीढ़ियों से चली आई हुई परम्परा है।

एक शताब्दी पूर्व समाज के कर्णधार नहीं चाहते थे कि शिक्षा सर्वव्यापी हो। शिक्षा का अधिकार वे केवल समाज के किसी विशेष अंग तक ही सीमित समझते थे। उस समय जन-साधारण के लिए शिक्षा अभिशाप समझी जाती थी, जिसका बचा-खुचा प्रभाव अब भी हम अपनी ग्रामीण महिलाओं के मध्य पा सकते हैं। उस समय की जनता भी इस विचार-धारा में विश्वास रखती थी। ऐसे वातावरण में साधारण जनता के लिए ग्रन्थालयों की स्थापना कैसे हो सकती थी। समय के साथ-साथ ज्यों-ज्यों समाज में जागृति आती गई और जन-साधारण में शिक्षा प्राप्त करने की लग्न उत्पन्न होती गई, त्यों-त्यों उनकी शिक्षा का भी प्रबन्ध होने लगा और ग्रन्थालय के दरवाजे भी खुलने लगे, एवं नवीन ग्रन्थालयों की भी स्थापना होने लगी। उन दिनों शिक्षा का प्रबन्ध करना, ग्रन्थालय खोलना जैसे सामाजिक हित के कार्यों का भार राज्य अपने ऊपर नहीं समझता था। ऐसे कार्य समाज के उदार व्यक्ति ही व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक रूप से करते थे। ऐसी परिस्थितियों में जितने भी नवीन ग्रन्थालय खुले, वह या तो मठों और मन्दिरों की ओर से होते थे अथवा कोई उदार धनी व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए अथवा अपने किसी स्नेही की स्मृति में खुलवा देता था। प्रारम्भ में इन ग्रन्थालयों से इने-गिने व्यक्ति ही लाभ उठा सकते थे, परन्तु बाद में ज्यों-ज्यों समाज की ओर से दबाव पड़ता रहा, त्यों-त्यों उनका उपयोग सीमित न रहकर विस्तृत रहने लगा। ग्रन्थालय में प्रत्येक व्यक्ति को आने की अनुमति मिलने लगी, मगर वहाँ से उन्हीं व्यक्तियों को पुस्तक पढ़ने के लिए मिल सकती थी जो जमानत जमा करके और चंदा देकर सदस्य हो गए हों। यह ठीक है कि इन ग्रन्थालयों के द्वार जनता के प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुल गए फिर भी ये हमारी जन-ग्रन्थालय की संज्ञा के बहुत पीछे रह जाते हैं। इन्हें हम व्यक्तिगत ग्रन्थालय अथवा शुल्क-ग्रन्थालय के नाम से पुकारते हैं। भारत में ऐसे ही ग्रन्थालयों की संख्या सबसे अधिक है। यहाँ पर स्वतन्त्रता से पूर्व भारत में जन-ग्रन्थालय जैसी संस्था का कोई अस्तित्व ही नहीं था और अब भी न के बराबर है। समाज में जिस चीज का अस्तित्व न हो, फिर जन-साधारण उससे तथा उसके गुणों से कैसे परिचित हो सकता है? यहाँ के ग्रन्थालयी भी जब विश्व की विचारधारा से अवगत न हों, तो वे किस प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-ग्रन्थालय का ठीक अभिप्राय जान सकते हैं।

इन ग्रन्थालयों में प्रायः यह देखा गया होगा कि वहाँ पुस्तकें ताले-लगी आलमारियों में बन्द रहती हैं और वहाँ या तो स्वयं ग्रन्थालयी या वहाँ का कोई परिचारक मारियों से पुस्तक निकालकर देता है। पुस्तक निकलवाने लिए पाठक को एक स्लिप भरनी पड़ती है और उस तक को निकलवाने के लिए बहुत समय तक इंतजार करना ता है। यदि वह पुस्तक पसन्द नहीं आई तो उसे पुनः प भरनी पड़ती है और इस प्रकार अपनी इच्छित पुस्तक त करने के लिए उसे बहुत लम्बा समय खर्च करना पड़ता । यद्यपि ग्रन्थालयों की यह स्थिति वांछनीय नहीं है, परन्तु हाँ यह बता देना असंगत न होगा कि यह स्थिति शताब्दियों सतत संघर्ष के बाद प्राप्त हुई है। प्राचीन ग्रन्थालयों में तकें जंजीरों से बाँधकर रखी जाती थीं। उस समय के थालयों का कार्य पुस्तक-संग्रह करना और उनकी सुरक्षा ना ही होता था। संरक्षण की यह प्रवृत्ति अपना पूरा मुत्व जमाये हुए थी। अति विशिष्ट जन ही इनको छू सकते , अध्ययन करने की बात तो बहुत दूर रही। समय की ति के साथ-साथ ग्रन्थों को प्रकाश मिलने लगा, जनता नके दर्शन करने लगी। यहाँ तक कि सुलभ साहित्य को र पर पढ़ने के लिए उन्हें सुविधा प्राप्त हो गई।

आज का जन-ग्रन्थालय इन सभी परम्परागत ग्रन्थालयों भिन्न है। वह आज के प्रजातन्त्रीय युग का प्रतीक है। या सेवा में, क्या पुस्तक-संग्रह में, क्या संचालन तथा गठन में प्रजातंत्रीय तत्त्वों में वह विश्वास रखता है। वह क ऐसी संस्था है जो जनता की हो, जनता के लिए हो तथा नता द्वारा संचालित होती हो।

जन-ग्रन्थालय जनता का हो, इसका अर्थ है कि उस र समाज के किसी विशिष्ट वर्ग का आधिपत्य न हो; जिस कार राज्य के आधिपत्य में प्रत्येक नागरिक का कुछ भाग होता है, उसी प्रकार जन-ग्रन्थालय पूरे समाज का अधिकार हो। आजकल शुल्क-ग्रन्थालय अथवा किसी संस्था के ग्रन्थालय र उन्हीं लोगों का आधिपत्य होता है जो ग्रन्थालय के सदस्य हों अथवा उस संस्था के। जो सदस्य नहीं हैं, वे उसमें किसी कार का हस्तक्षेप नहीं कर सकते। जन-ग्रन्थालय जनता का ने ही हो सकता है कि उसका व्यय समाज में से किसी कर-

मशहूर उपन्यास "हाउ दी स्टील वाज टेम्पर्ड" का हिन्दी अनुवाद

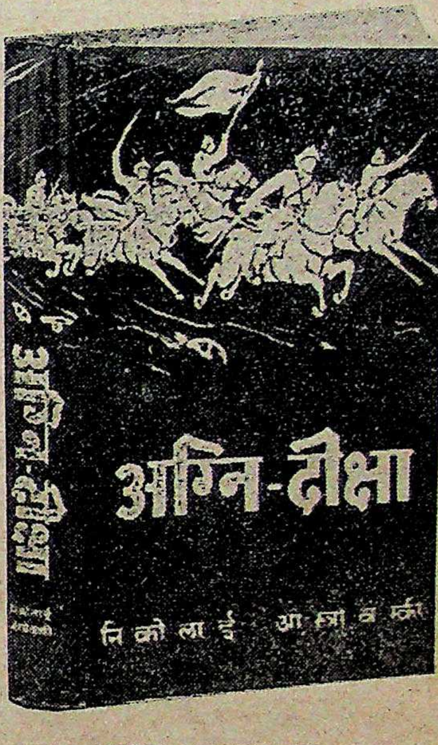

अनु० : अमृत राय

बड़ा आकार : अच्छा कागज़ : सुन्दर छपाई : मजबूत तिरंगा कवर : पृ० सं० ५०० : मू० ४) : डा० खर्च अ०

"मृत्यु के बाद भी अगर आप मानवता की सेवा कर सकें, तो इससे सुन्दर और क्या हो सकता है?" यह बात इस पुस्तक के लेखक निकोलाई आस्त्रोवस्की बराबर ही कहा करते थे। और अपनी इसी वीरोचित भावना के साथ लेखक ने यह किताब उस समय लिखी जब वह मरण-शय्या पर पड़े थे—लकवे से पंगु और अंधे हो गये थे, हिलना-डुलना तक मुश्किल हो गया था और मरणान्तक पीड़ा से कराह रहे थे।

और सही माने में उन्होंने अपनी उस भीष्म-प्रतिज्ञा को सच्चा बना दिया। मृत्यु के बाद भी उनकी किताबें न सिर्फ सोवियत रूस में, बल्कि दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं में लाखों की तादाद में छापी और पढ़ी जाती हैं और लाखों करोड़ों लोग उनसे प्रेरणा लेते हैं, हजारों लेखक उनसे सीखते हैं।

हिन्दी में पहली बार हमने इसे सजधज के साथ प्रकाशित किया है।

: आज ही मँगाइये :

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड

आसफ अली रोड, नई दिल्ली

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष द्वारा एकत्रित धन से चले। इससे एक लाभ यह है कि इस प्रकार धन एकत्रित करने से ग्रन्थालयों को आय का स्थायी साधन प्राप्त हो जाता है। चन्दे व दान से प्राप्त आय आकाश-वृत्ति के सदृश है तथा ग्रन्थालय से पूर्ण लाभ उठाने के लिए अपर्याप्त है। अतः जन-ग्रन्थालय की विशेषता यह है कि उस पर पूरे समाज का अधिकार हो तथा उसकी आय का प्रधान साधन स्थायी हो तथा कर-विशेष द्वारा संग्रहीत हो।

जन-ग्रन्थालय जनता के लिए हो, इसका अभिप्राय यह है कि उसके सदस्य जनता के प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी प्रकार का शुल्क दिये बन सकते हों। सदस्य बनने के लिए किसी प्रकार का भेदभाव न हो। क्या बालक, क्या वृद्ध, क्या पुरुष और क्या औरत, समाज का प्रत्येक घटक, चाहे उसका सामाजिक स्तर कैसा ही हो, चाहे वह किसी भी राजनीतिक विश्वास-धारा में विश्वास रखता हो, चाहे वह किसी धर्म का अनुयायी हो, चाहे उसका कितना ही सांस्कृतिक विकास हुआ हो, जन-ग्रन्थालय का सदस्य बन सकता है। भारत-स्थित आधुनिक ग्रन्थालयों में सदस्य बनने के लिए व्यक्ति को थोड़ा या बहुत चन्दा देना पड़ता है, पर जन-ग्रन्थालय में सदस्य बनने के लिए इस प्रकार की कोई कैद नहीं। नागरिकता ही सदस्य बनने के लिए पर्याप्त है।

जन-ग्रन्थालय जनता से संचालित हो, इसका अर्थ यह है कि जन-ग्रन्थालय का प्रशासन जनता के निर्वाचित सदस्यों द्वारा हो। जन-शिक्षा का विषय ऐसा ही है जैसा शहर की सफाई का, तथा स्वास्थ्य का। आज तक के अनुभव से यह सिद्ध है कि इन विषयों का सर्वाधिक हित इसी में है कि यह सब कार्य वहाँ के स्थानीय स्वायत्त शासन की देख-रेख में रखे जावें। इसका अर्थ यह हुआ कि ग्रन्थालय की देख-रेख स्थानीय स्वायत्त शासन के अधीन हो तथा उसका प्रशासन उस संस्था के निर्वाचित सदस्यों में से चुनी हुई समिति द्वारा हो।

इसके अतिरिक्त जन-ग्रन्थालय में पुस्तक एवं पाठक के बीच किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं होना चाहिए। पुस्तकें ताले में बन्द नहीं रहनी चाहिएँ, अपितु पाठक को पुस्तकों के बीच जाने की तथा अपनी इच्छित पुस्तकें ढूँढ़ निकालने की पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिए। इस open access प्रणाली से हमारे कर्णधार घबरा जायँगे और कहेंगे कि इस प्रणाली से ग्रन्थों के चोरी हो जाने की संख्या बढ़ जायगी। यह सत्य है। Open access न होने पर भी ग्रन्थों की चोरी नहीं रुक पाती, क्योंकि प्रत्येक समाज में थोड़े बहुत अपराधी होते ही हैं। मगर open access के प्रचलित कर देने पर ग्रन्थों के खो जाने में जो वृद्धि होती है उससे कहीं अधिक लाभ पुस्तकों के सर्वाधिक उपयोग किये जाने से हो जायगा। इसके साक्षी एक शताब्दी पूर्व से स्थापित पश्चिमी जन-ग्रन्थालय हैं।

जन-ग्रन्थालय को निःशुल्क, सर्वग्राही, स्थानीय स्वायत्त शासन के अधीन एवं कर से उगाहकर आय जुटाना इन सब के लिए एक विधि का होना अनिवार्य है। जन-ग्रन्थालय जैसे सशक्त सांस्कृतिक केन्द्र का उत्तरदायित्व ग्रन्थालयी समिति की इच्छा पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। भारत में केन्द्र राष्ट्रीय-ग्रन्थालय की योजना बनाए तथा संसद से तत्सम्बन्धी विधि पारित कराए। राज्य, जिनका नवीन विधान के अनुसार शिक्षा-विषय पर एक मात्र अधिकार है, अपने राज्य के अन्तर्गत जन-ग्रन्थालय स्थापित किये जाने की योजना बनाए और विधान सभा से तत्सम्बन्धी विधि पारित कराएँ। इंग्लैंड तथा अमरीका में सब जगह ग्रन्थालय विधि हैं और उसी के अनुसार ग्रन्थालयों का संगठन तथा परिचालन होता रहता है। भारत में मद्रास ही एक ऐसा राज्य है जिसने ग्रन्थालय विधि पारित की है। हैदराबाद में ग्रन्थालय विधि पर प्रथम वाचन हो चुका है और आशा है कि अगले अधिवेशन में वह पारित हो जायगी। पंजाब भी इस ओर कदम उठाता हुआ सुना गया है।

भारत में जन-ग्रन्थालय न के बराबर हैं। जो कुछ भी हैं मद्रास राज्य में हैं। यूनेस्को द्वारा स्थापित देहली पब्लिक लायब्रेरी भी पूरे अर्थ में जन-ग्रन्थालय नहीं कही जा सकती क्योंकि इसका उत्तरदायित्व स्थानीय स्वायत्त शासन की संस्था पर नहीं है, एवं इसकी आय का माध्यम कर द्वारा प्राप्त धन नहीं है। लेकिन आशा है कि जैसे-जैसे भारत में ग्रन्थालय विधियाँ पारित होती जायँगी, वैसे-वैसे जन-ग्रन्थालयों की संख्या में वृद्धि होती रहेगी और एक दिन आएगा कि भारत के ग्राम का प्रत्येक व्यक्ति जन-ग्रन्थालय में स्वत्व का अनुभव करने लगेगा और उसका अधिकाधिक उपयोग कर सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

बिहार का शिक्षा-विभाग सरकारी अनुदान से पुस्तकालयों द्वारा खरीदी जाने वाली पुस्तकों के लिए जिन पुस्तक-विक्रेताओं को इस वर्ष अधिकारी घोषित कर रहा है, उन पर ऐसी शर्तें लगाई जा रही हैं कि वे अनधिकृत ही रहना पसन्द करें। इन शर्तों के अनुसार १२½% कमीशन मूल्य पर काटनी होगी। बिक्री-टैक्स सरकार नहीं देगी; अर्थात् कटौती १५।।=) प्रति सैकड़ा हुई। इन पुस्तकों को पुस्तकालयों तक डाक अथवा रेल द्वारा भेजने का खर्च भी अधिकृत पुस्तक-विक्रेताओं को वहन करना होगा, जो रेल द्वारा भी पैकिंग और भाड़े में २½% से कम न होगा। इस प्रकार कुल खर्च १८=) सैकड़ा हो गया। जो पुस्तकें सरकार स्वयं खरीदेगी वे भी पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा बिना किसी प्रकार का खर्च वसूले पुस्तकालयों को पहुँचानी होंगी। पुस्तक-विक्रेताओं पर इस प्रकार २०% का खर्च डाला जा रहा है।

यह किसी से छिपा नहीं है कि अच्छी पुस्तकों पर २०% या २५% से अधिक कमीशन नहीं मिलता। २०% का खर्च डालकर क्या हमें फिर प्रेरित किया जा रहा है कि हम केवल अधिक कमीशन वाली पुस्तकें ही पुस्तकालयों में पहुँचाएँ?

हम अच्छी और सुरुचिपूर्ण पुस्तकें पुस्तकालयों को दे सकें, इसके लिए आवश्यक है कि (१) कमीशन को १२½% से घटाकर १०% कर दिया जाए, (२) बिक्री कर सरकार के जिम्मे हो, (३) जो बाहरी पुस्तकें सरकार हमारे द्वारा पुस्तकालयों को भेजना चाहती है, उन्हें खरीदने का अधिकार हमें ही दिया जाय, (४) यदि ऐसा सम्भव न हो तो सरकार इन पुस्तकों को पोस्ट अथवा रेल द्वारा भेजने का खर्च हमें दे।

विनीत,

एक पुस्तक-विक्रेता

लेखक-प्रकाशक सम्बन्धों पर एक दृष्टि

इधर, हिन्दी प्रचारक तथा प्रकाशन समाचार के अंकों में कतिपय लेखकों के लेख पढ़े। जैसी दूषित और कलुषित भावनाएँ उन्होंने प्रकाशकों के बारे में व्यक्त की हैं मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। हिन्दी की अच्छी प्रकाशन-संस्थाओं का यदि गहराई से अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होगा कि अधिकांश संस्थाओं के संस्थापक लिखने या पढ़ने की विशेष रुचि के कारण ही इस दिशा में अग्रसर हुए हैं। भले ही कुछ लोगों द्वारा यह कोरी व्यवसाय-भावना से ही चलाया जा रहा हो तथा ऐसे लोगों द्वारा लेखकों के साथ अनुचित और अप्रिय व्यवहार भी हुआ हो, पर इसके कारण प्रकाशक-मात्र की निन्दा करना न्याय नहीं है। यदि हम मान भी लें कि आर्थिक दृष्टि से लेखक को प्रकाशक से उचित पुरस्कार या पारिश्रमिक प्राप्त नहीं होता तो भी लेखक को प्रकाशकों द्वारा उनकी कृतियों के प्रचार-प्रसार स्वरूप यश लाभ तो होता ही है। संसार में यश-लाभ एक

आवश्यकता

वैतनिक आधार पर एक घुमक्कड़ प्रतिनिधि की आवश्यकता है। हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। अपनी योग्यता, अनुभव और परिचय के पूरे विवरण के साथ लिखिए।

बॉम्बे बुक हाऊस

पोस्ट बॉक्स ३२४३,

बम्बई ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़ा लाभ है, यह लेखकों को बताने की बात नहीं है। वह स्वयम् इसे समझते हैं। कह जा सकता है कि लेखक को अपनी कृति की श्रेष्ठता के कारण ही यश-लाभ होता है। किन्तु यह ठीक होते हुए भी क्या उसको सुरुचिपूर्ण ढंग से जनता तक पहुँचाने में प्रकाशक तथा विक्रेता का योग नहीं है?

ध्यान देने की बात है पुस्तकों के स्टाक का वास्तविक मूल्य नहीं के बराबर होता है। पुस्तकों के स्टाक की जमानत बैंक तक स्वीकार नहीं करते। यदि कोई प्रकाशक बिना योग्य उत्तराधिकारी के स्वर्गवासी हो जाता है तो उसके घर वाले हजारों के सैकड़े के रूप में भी नगद करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस व्यवसाय की वास्तविक कठिनाइयाँ वही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कुछ किया है।

जहाँ तक साहित्य-सेवा का प्रश्न है इसमें लेखक, प्रकाशक, पाठक तथा विक्रेता सभी हैं, पर किसकी क्या भावना है यह व्यक्ति की बात है, समूह की नहीं और व्यक्तियों के रूप में लेखक, प्रकाशक, विक्रेता तथा पाठक सभी में भावनाशून्य भोगवादी मिलेंगे। किसी भी प्रथम लेखक को अपनी कृति पाठकों तक पहुँचाने में प्रकाशक का सहयोग मिलने पर जब उसकी ख्याति हो जाती है तो फिर वह भी प्रकाशकों से पेशगी लेकर और अपनी शर्तों पर ही अगली पुस्तक प्रकाशन के हेतु देता है। ऐसे उदाहरण भी हैं कि लेखकों ने पेशगी लेकर भी पुस्तकें समय पर वादा करके लिखकर नहीं दीं, या लिखकर किसी दूसरे प्रकाशक से कुछ अधिक आशा होने पर उसे दे दीं। जहाँ तक कुत्सित व्यावसायिक मनोभावना का सम्बन्ध है साहित्य या अन्य किसी भी क्षेत्र में जो भी यह करता है, निन्दनीय है। लेखक तो साहित्य का स्रष्टा है। साहित्य से समाज का मनोरंजन होने के साथ पथ-प्रदर्शन भी होता है, अतः लेखकों पर शिष्टाचार और सभ्यता का महान् उत्तरदायित्व है। मुझे मान्य लेखकों द्वारा लेखनीबद्ध कई लेखों की भाषा कटु होने के साथ ही अतिशयोक्तिपूर्ण मालूम हुई, इसीसे अपने कुछ उद्गार हिन्दी पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

—रामदासमिश्र 'विजय'
अध्यक्ष,
हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ

हिन्दी-साहित्य के बारह अनमोल ग्रन्थ

१. **हिन्दी-साहित्य का आदिकाल**—ले० आचार्य डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी। मू० ३।) सजिल्द; पौने तीन रु० अजिल्द। पृ० १३२।
२. **यूरोपीय दर्शन**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मूल्य सवा तीन रुपये। पृ० सं० ११५ सजिल्द।
३. **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—ले० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल। मूल्य साढ़े नौ रुपये। दो तिरंगे और लगभग १८८ इकरंगे आर्ट पेपर पर छपे ऐतिहासिक महत्त्व के चित्र भी। पृ० २७४। सजिल्द।
४. **विश्व-धर्म दर्शन**—ले० श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। पृ० सं० ५०२। सजिल्द। एक चित्र भी।
५. **सार्थवाह**—ले० डॉ० मोतीचन्द्र। मूल्य ग्यारह रुपये। आर्ट पेपर पर छपे १०० अलभ्य ऐतिहासिक-चित्र तथा व्यापार-पथ के दुरंगे मानचित्र भी। पृ० सं० ३१४। सजिल्द।
६. **वैज्ञानिक विकास की भारतीय-परम्परा**—ले० डॉ० सत्यप्रकाश (प्रयाग-विश्वविद्यालय)। मू० आठ रु०। पृ० २८२। सजिल्द।
७. **संत कवि दरिया : एक अनुशीलन**—ले० डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, पी-एच० डी०। मूल्य चौदह रुपये। बढ़िया आर्ट पेपर पर सात तिरंगे और बारह पृष्ठ इकरंगे चित्र भी। पृष्ठ-संख्या ५३६। सजिल्द।
८. **काव्य-मीमांसा (राजशेखर-कृत)**—अनुवादक : पं० श्री केदारनाथ शर्मा सारस्वत, 'सुप्रभातम्'-संपादक। मूल्य साढ़े नौ रुपये। गवेषणापूर्ण प्रामाणिक भूमिका और परिशिष्ट के साथ। पृष्ठ संख्या ३६२। सजिल्द।
९. **श्री रामावतार शर्मा निबन्धावली**—ले० स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा। मू० पौने नौ रुपये। पृ० सं० ३३०। सजिल्द।
१०. **प्राङ्मौर्य बिहार**—ले० डॉ० देवसहाय त्रिवेदी, पी-एच० डी०। मूल्य सवा सात रुपये। प्राङ्मौर्यकालीन बिहार के मानचित्र के साथ ग्यारह इकरंगे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्र भी। पृ० सं० २२२। सजिल्द।
११. **गुप्तकालीन मुद्राएँ**—ले० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर। मूल्य साढ़े नौ रुपये। आर्ट पेपर पर गुप्तकालीन मुद्राओं और लिपियों के सत्ताईस सविवरण फलक भी। पृ० सं० २४०। सजिल्द।
१२. **भोजपुरी भाषा और साहित्य**—ले० डॉ० उदयनारायण तिवारी। मूल्य साढ़े तेरह रुपये। सजिल्द। पृष्ठ ६३०।

रायल अठपेजी साइज। जिल्दों पर रंगीन सचित्र रैपर बड़े आकर्षक हैं।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक-प्रकाशक-सम्बन्ध

आचार्य शिवपूजन सहाय

पाठक हमारी लेखक-प्रकाशक-सम्बन्ध-लेखमाला से सम्बन्धित श्री अज्ञेय तथा माचवे के लेख पिछले अंकों में पढ़ चुके हैं। इस अंक में हम आचार्य शिवपूजन सहाय का एक लेख सहयोगी 'साहित्य' (पटना) के वर्ष २, अंक ४ से साभार उद्धृत कर रहे हैं।

हिन्दी-संसार में इस बात की आम शिकायत है कि लेखकों और प्रकाशकों का पारस्परिक सम्बन्ध अच्छा न रहने से हिन्दी-साहित्य की यथेष्ट प्रगति नहीं हो पाती। इस शिकायत में सचाई-झुठाई का अंश कितना-कितना है, इसका पता तो ठीक-ठीक तभी लग सकता है जब मुख्य-मुख्य लेखक और प्रकाशक अपने साहित्यिक संस्मरण लिख डालें। प्रकाशक तो शायद कोई लिखने पर राजी होगा ही नहीं; लेखक को भी हिचक और शंका होगी। कारण, इस युग में सत्य का मुँह सोने से बन्द कर दिया जाता है। लेखक अपनी बिपता लिखेगा, प्रकाशक झट मानहानि का लक्ष्यवेधी बाण संधानेगा। हाँ, कवि और कथाकार चाहें तो इस विषय पर स्वाभाविक कविताएँ और कहानियाँ लिख सकते हैं। इस विषय के उपन्यास भी बड़े रोचक होंगे। ऐसी रचनाओं को प्रकाशित करने वाले कुछ उदार प्रकाशक हिन्दी-जगत् में हैं भी।

हिन्दी-जगत् अथवा जगतीतल में भले-बुरे सर्वत्र ही हैं। लेखकों और प्रकाशकों में न सभी बुरे हैं, न सभी अच्छे। बहुत-से लेखक महानुभाव भी ऐसे हैं जो प्रकाशकों को मट्ठा फूँक-कर पीने के लिए बाध्य कर चुके हैं। अगर प्रकाशकों से लेखक चूसे और ठगे गए हैं तो कितने ही लेखकों ने भी प्रकाशकों को चूना लगाया है और उलटे छुरे से मूँडा है। कहीं-कहीं जैसे को तैसा मिला है, कहीं जौ के साथ घुन पिस गया है, कहीं बुरे ने भले की राह बिगाड़ी है, कहीं दोनों ने लुटिया डुबोई है। किन्तु प्रकाशकों की तुलना में तो लेखकों की कोई हस्ती ही नहीं है। अधिकांश लेखक साधन-हीन, अभावग्रस्त और निर्धन हैं; प्रकाशकों में टुटपुँजिया बहुत कम हैं। यदि आज लेखकों और प्रकाशकों में परस्पर सहयोग एवं सद्भाव होता तो साहित्य की प्रगति कुछ और ही होती। किन्तु लेखक यदि प्रकाशकों की सहानुभूति एवं सहायता के लिए उत्सुक भी हैं, तो अधिकांश प्रकाशकों के व्यवहार-बर्ताव में कोई आकर्षण नहीं दीख पड़ता। इससे साहित्य के विकास-क्रम में बहुत बाधा पड़ रही है। साथ ही, लेखकों के असन्तोष से प्रकाशकों की भी यथेष्ट उन्नति नहीं हो पाती।

रायल्टी की प्रथा को सुव्यवस्थित एवं विश्वसनीय ढंग से चलाने का श्रेय इने-गिने प्रकाशकों ने ही प्राप्त किया है। अधिकांश प्रकाशक इस प्रथा का पालन अथवा निर्वाह समुचित रीति से नहीं कर पाते। वे स्वेच्छानुसार एकमुश्त रकम चुकाकर कापी-राइट ही खरीद लेते हैं। इससे लेखकों को किसी प्रकार का स्थायी लाभ नहीं होता। कितने ही लेखकों की रचनाएँ सस्ते दाम में खरीदकर प्रकाशक काफी पैसा बना लेते हैं; पर वे फिर कभी लेखक की ओर फूटी निगाह से भी नहीं देखते। इस तरह न साहित्य पनप सकता है और न प्रकाशकों को बरकत हो सकती है। लेखक और प्रकाशक आपस की ईमानदारी से ही साहित्य को समृद्ध कर सकते हैं। लेखक यदि प्रकाशक को धोखा देंगे तो साहित्य से कमाया हुआ पैसा कभी न रहेगा। यही हाल धोखेबाज प्रकाशक का भी होगा। लेकिन दोनों की दयानतदारी कुछ ही दिनों में रंग लायेगी। सवाल सिर्फ अभ्यास का है। सचाई के व्यवहार का अभ्यास शुरू में कष्टकर भले ही प्रतीत हो, पर अन्त में वह जौहर दिखाता ही है। हमारे लेखक और प्रकाशक यदि अब भी चेतते और हार्दिक सहयोग के भाव से साहित्य के नवनिर्माण में जुट जाते तो इस समय हिन्दी के बहुत से अभाव दूर हो जाते। जब तक दोनों परस्पर शंकित और संदिग्धचित्त रहेंगे तब तक अभीष्ट-सिद्धि की कोई आशा नहीं।

हमारे जो प्रतिनिधि कौंसिलों में हैं वे कभी कॉपी-राइट के कानून में कोई सुधार करना-कराना नहीं चाहते। उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता और उसके बाद

भारत को स्वाधीनता मिलने के समय और इसके पश्चात् दिये गए पंडित जवाहरलाल नेहरू के भाषणों का एक महत्त्वपूर्ण संग्रह। ४०३ पृष्ठ की इस सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य : ५ रुपये, डाक खर्च अलग।

भाइयो और बहिनो

१२ सितम्बर और १४ अक्तूबर, १६४७ के बीच दिल्ली की प्रार्थना सभाओं में दिये गए गांधीजी के सारे उपलब्ध भाषणों का संग्रह एक जिल्द में। मूल्य सजिल्द : १ रु० आठ आने, डाक खर्च अलग।

हमारा झंडा

"झंडा सभी राष्ट्रों के लिए एक अनिवार्यता है।" —बापू

भारत के राष्ट्रीय झंडे के विकास की कथा। मूल्य : ८ आने, डाक खर्च अलग।

हमारा संविधान

संक्षिप्त रूप में भारतीय संविधान का यह विवरण राजनीति के विद्यार्थियों एवं सामान्य जनता के लिए समान रूप से उपयोगी है। मूल्य : १ रुपया, डाक खर्च अलग।

मिलने का पता :

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

ओल्ड सेक्रेटेरियट, दिल्ली—८

दुनिया-भर की समस्याएं सूझती हैं, पर साहित्यकारों की समस्याओं के लिए उनके हृदय में किसी तरह की सहानुभूति नहीं। ऐसी शोचनीय स्थिति में राष्ट्रभाषा हिन्दी के साहित्य का नवनिर्माण जैसा चाहिए वैसा नहीं हो सकता। आज हिन्दी के राजभाषा हो जाने पर भी लेखकों की ऐसी दशा नहीं है कि वे स्वतन्त्र या स्वावलम्बी जीवन बिता सकें। पत्र-सम्पादकों के हाथ में कोई आर्थिक अधिकार नहीं और पत्र-संचालकों के मन में लेखकों की वास्तविक दशा की अनुभूति नहीं। कुछ गिने-चुने लब्धप्रतिष्ठ लेखक आर्थिक पुरस्कार पा जाते हैं, पर बहुतेरे उदीयमान लेखकों को यथोचित प्रोत्साहन नहीं मिलता। इससे उगती हुई पीढ़ी उत्साह के साथ आगे नहीं बढ़ रही। कई प्रतिभाशाली होनहारों को निराश एवं हतोत्साह होकर साहित्य-सृष्टि से विरक्त हो जाना पड़ता है।

यद्यपि प्रकाशकों के द्वारा लेखकों के शोषण की और लेखकों से प्रकाशकों के धोखा खाने की कहानियाँ जग-जाहिर हैं तथापि लेखक-प्रकाशक के परस्पर असहयोग से कभी साहित्य का कल्याण नहीं हो सकता। दोनों में परस्पर सहयोग की भावना का उदय होना अत्यावश्यक है। किन्तु पहले प्रकाशकों को ही आगे बढ़ना है, लेखकों का सहयोग उनकी सहृदयता पर ही निर्भर है। यदि प्रकाशक यह समझने लग जायँ कि लेखकों को सद्व्यवहार से अपनाये बिना अथवा उन्हें सन्तुष्ट रखे बिना हम सदा समृद्ध नहीं रह सकते, तो निश्चय ही लेखक निर्विकार चित्त से उनका साथ देंगे, और तब दोनों की सदाशयता से साहित्य का उत्तरोत्तर अभ्युदय होने लग जायगा। अब वह समय आ गया है कि ये दोनों ही मिल-जुलकर हमारे साहित्य के अभावों की पूर्ति में सम्मिलित शक्ति से दत्तचित हों। तथास्तु।

प्रकाशन समाचार
के लिए

अपना चन्दा २॥) मनी आर्डर से ही भेजें।
पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

पुतली श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का दूसरा उपन्यास है। न्यास का नायक सुनील एक नाटककार होते हुए अपनी ा की सफलता के लिए अनेक प्रकार के संघर्ष करता है। न की विषम परिस्थितियाँ उसे जहाँ-तहाँ घुमाती भी हैं, तु हर हालत में इसका नायक साहस नहीं छोड़ता। न्यास के दूसरे पात्र भी कठोर अग्नि में तपे से प्रतीत ते हैं। इसकी मूल भाव-भूमि यही है कि मनुष्य को स्थितियों से जूझकर जीवन में सन्तुलन स्थापित करने के र सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। उपन्यास की भाषा के पात्रों के अनुरूप आम फहम और सरल सुबोध है। ्या एण्टिक पेपर पर छपे, आकर्षक आवरण और साज- ा से युक्त ४४२ पृष्ठ का यह उपन्यास ६) में राजकमल ाशन से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

मनुष्य और देवता श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी का नतम उपन्यास है। इसमें लेखक ने जीवन के सुख-दुःख क्रन्दन-पीड़न से उत्पन्न नाना प्रतिक्रियाओं का लेषणात्मक समाधान प्रस्तुत किया है। उपन्यासकार की ता है कि हास-विलास और रागात्मक आनन्दोल्लास ो पुलकित करते हैं। सुअवसर और संयोग पाकर सभी ार फूल उठते हैं, किन्तु एक प्रकार के व्यक्ति इन सभी स्थाओं में अपने पवित्र उद्देश्य को भूलकर छिन्न-भिन्न ाते हैं और दूसरे प्रकार के परिणाम के फेर में न पड़- अपने व्रत और धर्म पर अडिग रहने में ही अपनी ता समझते हैं। मनुष्य और देवता में यही अन्तर है इसका व्यापक विश्लेषण ही उपन्यासकार जीवन के नाना ों के माध्यम से इस पुस्तक में करता है। साहित्य सदन दून से प्रकाशित २५६ पृष्ठ का यह उपन्यास प्रकाशक से) रुपये में मिल सकता है।

◈ ◈ ◈

काव्य सम्प्रदाय और वाद नामक पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में काव्य सम्प्रदायों पर विचार किया गया है और दूसरे में वादों पर। प्रारम्भ में लेखक श्री अशोक कुमार सिंह ने भारतीय काव्य-शास्त्र का इतिहास देकर रस-सम्प्रदाय, अलंकार-सम्प्रदाय, रीति-सम्प्रदाय, ध्वनि-सम्प्रदाय, वक्रोक्ति-सम्प्रदाय आदि सम्प्रदायों का विश्लेषण किया है और बाद में स्वच्छन्दतावाद, छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, तथा अभिव्यंजनावाद आदि पर व्यापक रूप से प्रकाश डाला है। साथ ही यह भी सिद्ध करने की चेष्टा की है कि साहित्य अतृप्त वासनाओं की पूर्ति का साधन है। क्राउन साइज के २३४ पृष्ठ की एण्टिक पेपर पर मुद्रित आकर्षक आवरण से युक्त यह पुस्तक ओरिएण्टल बुकडिपो दिल्ली से प्रकाशित हुई है और वहीं से ४।।) रुपये में मिलती है।

◈ ◈ ◈

धरती और स्वर्ग में डॉ० देवराज की स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद की प्रतिनिधि रचनाएँ सम्मिलित हैं। इसमें जहाँ पाठकों को प्रयोगवाद और प्रगतिवाद की झाँकी मिलेगी वहाँ वे अध्यात्मवाद से अछूती 'रोमांटिसिज़्म' की गन्ध भी पाएँगे। हम लेखक के इस मत से सर्वथा सहमत हैं कि "वादों के आतंक से मुक्त पाठक चुपचाप इन कविताओं के भीतर प्रवेश करके यदि उनमें कुछ भी रस पा सके तो मैं अपने प्रयत्न को विफल नहीं मानूँगा।" अधिकांश कविताएँ पठनीय हैं और मानव-मन को कुछ सोचने के लिए प्रेरित करती हैं। डिमाई साइज के १०४ पृष्ठ की इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) रुपये है और यह राजकमल प्रकाशन से प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

साँझ मेघदूत अनुवादक राजस्थान के प्रख्यात कवि श्री नारायणसिंह भाटी का राजस्थानी भाषा में लिखा गया और हिन्दी लिपि में छपा हुआ एक लोकप्रिय प्रकृति-काव्य है। राजस्थान के गाँवों में सन्ध्या के समय किस प्रकार का दृश्य होता है इसका रोचक वर्णन संवेदनशील शैली में कवि ने अपने इस काव्य में किया है। प्रत्येक पृष्ठ पर राजस्थानी के पद्यों का भावार्थ भी सरल हिन्दी में दे दिया गया है। अन्त में टिप्पणियां देकर कुछ राजस्थानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषताओं का परिचय कराया गया। साथ ही एक तालिका उन राजस्थानी शब्दों की भी दे दी गई है जो इस काव्य में प्रयुक्त हुए हैं। क्राउन साइज के ६६ पृष्ठ की आकर्षक आवरण और मुद्रण से युक्त यह पुस्तक पीथल प्रकाशण जोधपुर से दो रुपये में प्राप्त हो सकती है।

◈ ◈ ◈

हिन्दी काव्य की अन्तश्चेतना में प्रो० राजाराम रस्तौगी पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी काव्य से सम्बन्धित १६ समीक्षात्मक निबन्धों का संकलन है। प्राय: सभी निबन्ध लेखक की गम्भीरतम शैली का पूर्ण परिपाक प्रस्तुत करते हैं। इसमें लेखक ने प्रयोगवाद नामक नव-प्रचलित वाद का विश्लेषण करके हिन्दी काव्य का नया स्वर प्रतिपादित किया है। इसके भूमिका लेखक डा० विश्वनाथ प्रसाद के शब्दों में हम यही कह सकते हैं कि "पुस्तक का विषय जितना गम्भीर एवं चिन्तन-प्रधान है उसका प्रतिपादन भी उतना ही पाण्डित्यपूर्ण हुआ है।" पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बड़े काम की है। डिमाई साइज के २३० पृष्ठ की सुमुद्रित और सजिल्द यह पुस्तक केदारनाथ रामनाथ मेरठ से प्रकाशित हुई है और यहीं से ५ रुपये में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

शिक्षा दर्शन श्री बलदेव भाटिया और डॉ० सुबोध अदावाल की कृति है। इसमें लेखकों ने शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित समस्त उपयोगी जानकारी देने का प्रयास किया है। वैसे यह पुस्तक श्री बलदेव भाटिया कृत Philosophy and Education नामक अंग्रेजी पुस्तक पर आधारित है, किन्तु कहीं-कहीं स्वतंत्र रूप से भी लेखकों ने विचार किया है। अन्त में बेसिक शिक्षा पर भी एक अतिरिक्त अध्याय इसमें है, जिससे पुस्तक की उपादेयता और भी बढ़ गई है। यह पुस्तक शिक्षकों और छात्रों दोनों के ही लिए बड़े काम की सिद्ध होगी। पारिभाषिक शब्दों की सूची भी इसकी एक विशेषता है। क्राउन साइज के २४२ पृष्ठ की यह पुस्तक ओरियण्ट लौंगमन्स कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुई है और ५ रुपये में मिलती है।

◈ ◈ ◈

कम्युनिस्ट पुराण श्री सीताराम गोयल द्वारा लिखित और एशिया में स्वाधीनता संरक्षक संघ कलकत्ता द्वारा प्रकाशित है। इसमें लेखक ने कम्युनिज़्म का स्वमतानुसार अर्थ समझाकर उससे उत्पन्न होने वाले खतरों के प्रति जनता को सावधान किया है। स्टालिन की डायरियों को लेखक ने अपने विषय प्रतिपादन का आधार बनाया है। राजनीति में दिलचस्पी रखने वाले पाठकों को यह पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए। क्राउन साइज में न्यूज प्रिन्ट पर छपी १०६ पृष्ठ की यह पुस्तक प्रकाशक से ॥) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

मृत्यु की ओर एक सामाजिक नाटक है और इसके लेखक हैं सन्तोष। सांसारिक घटनाओं को आधार-भूमि बनाकर लिखा गया यह नाटक संसार की नश्वरता पर प्रकाश डालता है। लेखक ने बुद्धि, कर्म, दुर्भाग्य, क्रोध, लाभ, मान, धैर्य, घबराहट, शंका, दुविधा, अविश्वास के रूप में पात्रों का आयोजन करके अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। १०८ पृष्ठ की यह पुस्तक सज्जन प्रकाशन, पो० बा० न० २५६२, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई है और उनसे १॥) रुपये में मिलती है।

◈ ◈ ◈

गाँव का मेरुदण्ड किसान नामक पुस्तक में श्री हरगोविन्द गुप्त ने जनपदीय कथन में उसके जीवन की कहानी कही है। इसके वर्णन में बुन्देलखण्डी संस्कृति तथा वातावरण का पुट अधिकांश में मिलता है। इसकी अधिकांश खेती सम्बन्धी कहावतें ऐसी हैं, जो सब जगह अपने थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ एक जैसी ही प्रचलित हैं। पुस्तक किसानों और ग्राम-सेवकों के लिए बड़े काम की है और गृहपति प्रकाशन, चिरगांव, झांसी से १।) रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

◈ ◈ ◈

युक्लिप्टिस की डाली में उर्दू के प्रख्यात कहानीकार श्री कृष्णचन्द की ८ कहानियाँ संकलित हैं। पुस्तक को देखने से कहीं से भी यह आभास नहीं मिलता कि ये उनकी अनूदित कहानियाँ हैं या उन्होंने स्वयं ही हिन्दी में लिखी हैं। कृष्णचन्द की लेखन-शैली अपनी ही है, जिसकी छाप इन कहानियों में भी देखने को मिलती है। संग्रह सुन्दर छपा है और नैश्नल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से दो रुपये में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वदीप में श्री मोहन स्वामी की नौ आदर्श कहा-
का संकलन है। ये सारी कहानियाँ 'माता' में
शित हो चुकी हैं। आध्यात्मिकता के आवरण में लिपटी
हानियाँ पाठकों के लिए लाभप्रद हैं। मातृ-केन्द्र
बाद से प्रकाशित यह पुस्तक ।।।) में प्राप्य है।

◈ ◈ ◈

चरिया पिटक खुद्दक निकाय का पन्द्रहवां प्रसिद्ध
ग्रन्थ है। इसका अनुवाद भिन्नु धर्म रक्षित ने किया
साथ में मूल पालि भी दे दी गई है। पालि-
के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक बड़े काम की सिद्ध
। मास्टर खेलाड़ीलाल एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित
पुस्तक १।) रुपये में मिल सकती है।

◈ ◈ ◈

सुन्दर विचार में श्री हरिश्चन्द्र पण्डित ने लगभग
विषयों से सम्बन्धित अमूल्य विचारों का संग्रह प्रस्तुत
है। पुस्तक जन साधारण और विशेषतः विद्यार्थियों
ए बड़े काम की है। नेहरू पुस्तकालय शाहदरा द्वारा
शित यह पुस्तक १) रुपये में मिलती है।

◈ ◈ ◈

हमारे बालक में श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव ने
विक शिक्षा के लिए उपयोगी सरल बाल-मनोविज्ञान
किया है। इसमें बालक, हमारे देश में, खेल, अच्छी
, देश-प्रेम, बालक का विकास, बच्चे का दमन,
कैसे सुधरें आदि अध्यायों में कहानियों के रूप में
को मनोविज्ञान की शिक्षा देने का मार्ग सुझाया है।
में परिशिष्ट में बड़ों के विचार भी दे दिए हैं। सुदर्शन
न आगरा द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक वहाँ से १।=) में
जा सकती है।

◈ ◈ ◈

लेनिन राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित आदर्श-
माला की पाँचवीं पुस्तक है। इसके लेखक डॉ०
मदान ने इसमें रूसी क्रान्ति के अमर सेनानी
की जीवनी सरल और सुबोध शैली में प्रस्तुत की है।
पृष्ठ की सजिल्द और आकर्षक कवर वाली यह पुस्तक
|||=) में मिलती है।

◈ ◈ ◈

फ्रांस की लोक कथाएँ आत्माराम एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित सचित्र लोक-कथा-माला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई है। इसके लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त ने इसमें फ्रांस की आठ प्रसिद्ध लोक-कथाएँ दी हैं। प्रायः सभी कहानियाँ सरल शैली में लिखी गई हैं। इससे बच्चों का बहुत मनोरंजन होगा। ६६ पृष्ठों की यह पुस्तक प्रकाशक से १।) रुपये में मँगाई जा सकती है।

◈ ◈ ◈

देश-विदेश की लोक-कथाएँ भारत सरकार के पब्लिकेशन्स डिवीजन द्वारा आयोजित और प्रकाशित बालोपयोगी पुस्तक है। इसमें विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई सोलह लोक-कथाएँ संग्रहीत हैं। पुस्तक की सम्पादिका श्रीमती सावित्री देवी वर्मा के शब्दों में हम यही कह सकते हैं—"लोक-कथाएँ सदियों से मनुष्यों का मनोरंजन करती आई हैं। आशा है यह पुस्तक भी अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल होगी।" एक रुपये की यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए संग्राह्य है।

◈ ◈ ◈

उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति श्री कृष्णदत्त वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत और उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित कृति है। इसमें उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति पर संक्षिप्त रूप से विचार करके बाद में हस्तिनापुर, मथुरा, कन्नौज, भीतर गांव, प्रयाग, कौशाम्बी, अहिछत्र, अयोध्या, बनारस, सारनाथ, श्रावस्ती, कसिया, देवगढ़, बरवा सागर, झाँसी, कालपी, महोबा, कालिंजर, आगरा, फतहपुर, लखनऊ आदि मुख्य-मुख्य ऐतिहासिक स्थानों का संक्षिप्त परिचय दिया है। साथ ही मुख्य संग्रहालयों का विवरण भी दे दिया गया है। पुस्तक के अन्त में कुछ चित्र भी दे दिये गए हैं। यह प्रकाशन प्रत्येक छात्र तथा शिक्षालय के लिए संग्रहणीय है। मूल्य कहीं भी नहीं छपा।

◈ ◈ ◈

हिन्दी में उच्चारण नामक इस छोटी सी पुस्तिका श्री चन्दूलाल दुबे ने हिन्दी में शब्दों के उच्चारण के सम्बन्ध में सोदाहरण विचार किया है। पुस्तक विद्यार्थियों के लिए बड़े काम की है और साहित्य सेवा सदन, बोरगांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जिला बेलगांव) से चार आने में मंगाई जा सकती है।

✧ ✧ ✧

स्वास्थ्य प्रवेशिका नामक छोटी-सी पुस्तिका में श्रीमती अन्नपूर्णा देवी श्रीवास्तव ने स्वास्थ्य सम्बन्धी १४ विषयों के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी प्रस्तुत की है। यह पुस्तक यदि मोटे टाइप में छपी होती तो विद्यार्थियों के लिए बड़ी ही उपयोगी साबित होती। फिर भी पुस्तिका का अपना महत्त्व है। केवल दो आने में आधुनिक प्रेस दतिया से मँगाई जा सकती है।

✧ ✧ ✧

कर्म साधना श्री रामसागर शास्त्री लिखित और साहित्य प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित उपन्यास है। इसमें लेखक ने मानवीय आशाओं का वह रूप उपस्थित किया है जो अविरल गति से बहने वाले समय के इस प्रबल प्रवाह में सुदृढ़ जलयान का काम दे। इसकी भूमिका में श्री वृन्दावनलाल वर्मा ने ठीक ही कहा है कि "ऐसे उद्देश्यमूलक उपन्यासों की साहित्य और समाज को बड़ी आवश्यकता है।" क्राउन साइज के २१६ पृष्ठों का सजिल्द उपन्यास प्रकाशक से ४) रुपये में मँगाया जा सकता है।

✧ ✧ ✧

पतिता अंग्रेजी के सबसे बड़े जीवित कथाकार सॉमर्सेट मॉम के 'पेण्टेड वेल' नामक प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है। रूपान्तरकार हैं श्री हरिकपूर। उपन्यास की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं ओजमयी है। सन् '२० में इसके लेखक चीन गये थे। उसी समय उन्हें इस उपन्यास की पृष्ठपीठिका प्राप्त हुई और २६ वर्ष तक अपने मस्तिष्क में संजोए रखकर लेखक ने इसे उपन्यास का रूप दिया, जो आपके सामने है। क्राउन साइज के २६६ पृष्ठों का आकर्षक आवरण युक्त यह सजिल्द उपन्यास साहित्य प्रकाशन दिल्ली से ५) रुपये में प्राप्य है।

✧ ✧ ✧

सागर-सेतु की रचना महामण्डलेश्वर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ १०८ स्वामी चैतन्यगिरि जी महाराज के संन्यास आश्रम दिल्ली में हुए प्रवचनों के आधार पर की गई है। इसके लेखक श्री राजेन्द्र शर्मा ने यह अमृत सबके लिए सुलभ बना दिया है। पुस्तक में श्रीमद्भागवत्, महाभारत, विभिन्न उपनिषदों एवं पुराणों से ऐसी रोचक कथाएँ भी प्रसंगानुसार दे दी गई हैं, जिनसे आत्म-विद्या का रहस्य, महत्त्व और मूल्य सुगमता से ग्रहण किया जा सके। क्राउन साइज के ३०८ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक राजकमल प्रकाशन दिल्ली से ५) रुपये में मिल सकती है।

✧ ✧

देवलोक बंगला के ख्यातिप्राप्त कथाकार स्वर्गीय श्री विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय द्वारा लिखित और श्री रामचन्द्र वर्मा द्वारा अनूदित उपन्यास है। उपन्यास का कथानक इस लोक से कम और परलोक से अधिक सम्बन्धित है। भारतीय पुराणों तथा आध्यात्मिक विचारकों के विचारों के अनुसार लेखक ने मरने के बाद मनुष्य की जो गति होती हैं उस पर सुन्दर कथानक रचा है। अनुवादक ने अपना कार्य खूब परिश्रम से किया है। ३११ पृष्ठ का यह रोचक सजिल्द उपन्यास ४) में साहित्य रत्नमाला कार्यालय बनारस से मिल सकता है।

✧ ✧

कविता में प्रकृति चित्रण में प्रो० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' द्वारा कविता में प्रकृति-चित्रण के सैद्धान्तिक तथा समीक्षात्मक पहलू पर व्यापक विचार किया गया है। इस पुस्तक को विद्व लेखक ने काव्य और प्रकृति का चिरन्तन सम्बन्ध, काव्य में प्राकृतिक दृश्य-चित्रण (सिद्धान्त), काव्यों में प्रकृति-चित्रण, हिन्दी-कविता में प्रकृति-चित्रण (प्राचीन कविता), आधुनिक हिन्दी-कविता में प्रकृति-चित्रण, तथा उपसंहार नामक अध्यायों में विभक्त करके काव्य और प्रकृति के विभिन्न पक्षों पर व्यापक प्रकाश डाला है। प्रारम्भ में प्रो० विजयेन्द्र स्नातक की विद्वत्तापूर्ण भूमिका है। उनके शब्दों में 'स्पष्टता, सुबोधता, प्राञ्जलता और संक्षिप्तता की दृष्टि से यह प्रबन्ध अपना विशिष्ट स्थान रखता है।' सुन्दर मुद्रण से युक्त क्राउन साइज के २०४ पृष्ठ की यह पुस्तक नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से ४) में मिल सकती है।

✧ ✧ ✧

आह क्यू चीन के प्रेमचन्द लुहसूँ की अमरकृति 'दि ट्रू स्टोरी आफ आह क्यू' का हिन्दी रूपान्तर है। रूपान्तरकार हैं श्री नूर नबी अब्बासी। इस पुस्तक में चीन के एक ऐसे व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय ज्ञानपीठ के सुरुचिपूर्ण हिन्दी प्रकाशन

उपन्यास, कहानियाँ

दो हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ : डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ३)
संघर्ष के बाद : श्री विष्णुप्रभाकर ३)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर २)
पहला कहानीकार : श्री रावी २॥)
खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
मुक्तिदूत (उपन्यास) : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)

कविता

वर्द्धमान (महाकाव्य) : श्री अनूप शर्मा ६)
मिलनयामिनी : श्री हरिवंश राय बच्चन ४)
मेरे बापू : श्री हुकुमचन्द्र बुखारिया २॥)
पंचप्रदीप : श्रीमती शान्ति एम० ए० २)
नई भारती : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)

ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ६)
केवल ज्ञान प्रश्नचूडामणि : श्री नेमिचन्द्र जैन ४)
करलक्खण (सामुद्रिक शास्त्र) : प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी ।।)

ऐतिहासिक

खण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)
चौलुक्यकुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास एम० ए० ४)
कालिदास का भारत (१) : श्री भगवतशरण उपाध्याय ४)

दार्शनिक, आध्यात्मिक, धार्मिक

भारतीय विचारधारा : श्री मधुकर एम० ए० २)
अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन साहित्याचार्य ४॥)
वैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
जैन शासन : पं० सुमेरचन्द्र दिवाकर ३)

उर्दू-शायरी

शेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न (भाग १) : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेरो-सुख़न (भाग २) ,, ,, ३)
शेरो-सुख़न (भाग ३) ,, ,, ३)
शेरो-सुख़न (भाग ४) ,, ,, ३)
शेरो-सुख़न (भाग ५) ,, ,, ३)

संस्मरण-रेखाचित्र

हमारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र ,, ,, ४)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)

विविध

हिन्दू विवाह में कन्यादान : श्री सम्पूर्णानन्दजी १)
ज्ञानगंगा (सूक्तियाँ) : श्री नारायणप्रसाद जैन ६)
द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह विनोद २॥)
जिन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ४)
रजतरश्मि (एकांकी) : डा० रामकुमार वर्मा २॥)
ध्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोरसिंह ४)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गा कुण्ड रोड, बनारस ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कहानी है, जो एक व्यक्ति होते हुए भी उस समय के चीन का, वहाँ प्रचलित उन सामाजिक स्थितियों का, उनकी न्यूनताओं और कमजोरियों का सबल प्रतीक है। इसमें प्राचीन चीन की मेहनतकश जनता के तत्कालीन जीवन का सजीव चित्रण है। वहाँ की उच्च देश-भक्ति तथा क्रान्तिकारी भावना का सजीव चित्रण जिनको पढ़ना हो, उनके लिए यह उपन्यास प्रेरणा का काम करेगा। क्राउन साइज के ११६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक नैशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली से २) में मिल सकती है।

◇ ◇ ◇

तुलसी और उनका काव्य में भारत-सरकार के संसद्-कार्य-मन्त्री श्री सत्यनारायण सिनहा ने तुलसी-काव्य के सभी पक्षों के विषय में अत्यन्त उपयोगी जानकारी संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत की है। साथ ही संयोग और वियोग शृङ्गार के सम्बन्ध में भी व्यापक रूप से विचार किया है। यह पुस्तिका उनके कुछ भाषणों का संग्रह है। डिमाई साइज के ३८ पृष्ठ की यह पुस्तिका आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से प्राप्त हो सकती है।

◇ ◇ ◇

प्रत्यूष नवोदित तरुण कवि श्री शिवशंकर वाशिष्ठ की ८० कविताओं का संग्रह है। इसकी भूमिका में प्रसिद्ध कवि श्री नरेन्द्र शर्मा ने लिखा है—"कवि ने अपने शब्द-शिल्प में कई प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है, और इसलिए संग्रहीत रचनाओं को पढ़कर कवि की बहुमुखी प्रतिभा के प्रति मन में संशय कम विश्वास ही अधिक होता है।" इस संग्रह की प्रायः सभी कविताएँ पाठक पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ती हैं। डिमाई साइज के ११२ पृष्ठ की आकर्षक साज-सज्जा और मोनो-मुद्रण से युक्त यह पुस्तक चारु चरण प्रकाशन बम्बई से दो रुपये में मिल सकती है।

नवनीत (विशेष संस्करण)—बम्बई से प्रकाशित होने वाले हिन्दी डाइजेस्ट 'नवनीत' का यह विशेषाङ्क अपनी अनेक विशेषताएँ लिये हुए है। इसमें हमें जहाँ भारत के प्रख्यात साहित्यकारों के लेख पढ़ने को मिलते हैं वहाँ विश्व-ख्याति के दार्शनिकों के अमर वचन भी देखने को मिलते हैं। इसके प्रमुख लेखों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर का 'प्रथम पूजा', आनन्दकुमार स्वामी का 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्,' काका कालेलकर का 'ज्येष्ठ किंवा श्रेष्ठ', सर्वपल्ली राधाकृष्णन् का 'देखने की शक्ति', मौलाना आजाद का 'कोई बतला दो....', चक्रवर्ती राजगोपालाचारी का 'मातृभाषा और राष्ट्र भाषा,' घनश्यामदास बिरला का 'पानी में भी मीन पियासी,' यशपाल का 'सेनानी चन्द्रशेखर आजाद', डॉ० कैलाशनाथ काटजू का 'उपन्यास से भी रोचक....', तथा अम्बिका प्रसाद वाजपेयी का 'कुछ पौराणिक पहेलियाँ', आदि उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त कमल तथा जल से सम्बन्धित लेख भी उपयोगी जानकारी प्रस्तुत करते हैं। यत्र-तत्र बिखरे सूक्ति-वचन भी नवनीत की विशेषता को घोषित करते हैं। इसके लिए सम्पादक श्री रतनलाल जोशी बधाई के पात्र हैं। यह विशेषांक १॥) में नवनीत प्रकाशन तारदेव बम्बई ७ से प्राप्त किया जा सकता है।

◇ ◇ ◇

सरस्वती प्रेस इलाहाबाद की ओर से प्रकाशित होने वाले 'कहानी' मासिक ने जनवरी १९५५ का विशेषांक 'कहानी विशेषांक' नाम से प्रकाशित किया है। इसमें प्रारम्भ में प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त का 'कहानी कला' शीर्षक लेख है और बाद में सर्वश्री उग्र, महादेव शास्त्री जोशी, यशपाल, परशुराम, विष्णु प्रभाकर, रांगेय राघव, मण्टो, सर्वटे, निर्गुण, नादिम, बलवन्त गार्गी, इस्मत चुग़ताई, अमृतलाल नागर, कर्तारसिंह दुग्गल, अज्ञेय, रज़िया सज्जाद ज़हीर, अश्क, देवेन्द्र सत्यार्थी, चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, अमृतराय, राहुल, मन्मथनाथ गुप्त, इलाचन्द्र जोशी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, वृन्दावनलाल वर्मा, हंसराज 'रहबर' और केशव गोपाल निगम आदि हिन्दी तथा अन्य विविध प्रान्तीय भाषाओं के कहानीकारों की उत्कृष्टतम कहानियाँ सम्मिलित हैं। अन्त में 'मैं कहानी कैसे लिखता हूँ' शीर्षक के अन्तर्गत कुछ कहानिकारों के वक्तव्य भी छपे हैं। इस स्तम्भ की ओर यदि सम्पादक-मण्डल विशेष ध्यान देता तो यह अंक और भी उपादेय हो जाता। फिर भी यह अंक संग्रहणीय एवं पठनीय है। इस विशेषांक के लिए इसके तीन सम्पादक बधाई के पात्र हैं। विशेषांक का मूल्य २॥) है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण

सन्तराम 'विचित्र'

आज भारत के विभिन्न राज्यों में पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीय-करण के प्रयत्नों से जो विभिन्न समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं उन पर इस लेख में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

प्रायः सभी राज्यों में इस बात की सामान्य चर्चा हो रही है कि पाठ्य-पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिए। एक स्वतन्त्र देश में राष्ट्रीयकरण, और विशेषतः पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की माँग का विरोध करना शायद अ-राष्ट्रीयता कही जाय। किन्तु जिन अवस्थाओं में हमारे देश का विकास हो रहा है, उनमें प्रस्तुत व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण के विरुद्ध आवाज़ उठाना असामयिक नहीं जान पड़ता।

भारतीय पुस्तक-प्रकाशन और उसमें भी हिन्दी-पुस्तक-प्रकाशन के व्यवसाय का इतिहास इतना विस्तृत नहीं कि जिसे यहाँ आद्योपान्त दोहराया जाय और यदि यह कहा जाय कि इस इतिहास का वास्तविक निर्माण तो, वस्तुतः, स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त ही होने लगा है, तो यह अनुचित नहीं होगा। इसमें सन्देह नहीं कि प्रकाशन-व्यवसाय की आज जो गति है वह १९४७ से पूर्व के २० वर्षों से कई गुना अधिक है। किन्तु इसका आशय यह भी नहीं समझना चाहिए कि इन ५-६ वर्षों में ही देश व्यापी शिक्षा-विस्तार हो गया है। शिक्षा-विस्तार की दिशा में तो अभी हमारा देश लगभग पूर्ववत् ही है, किन्तु इतना अवश्य है कि प्रायः सभी राज्य-सरकारें ज्ञान-प्रसार की दिशा में अधिकाधिक वाचनालय एवं पुस्तकालय आदि स्थापित कर रही हैं। तिस पर, स्थानीय शासन प्रबन्ध और समाज-शिक्षा-प्रसार की दिशा में राज्य-सरकारें अधिकाधिक व्यय करने की चेष्टा कर रही हैं। इसका परिणाम यह है कि प्रकाशन-व्यवसाय के पर्याप्त प्रकाशन वाचनालयों, पुस्तकालयों तथा समाज-शिक्षा-केन्द्रों में स्थान पा रहे हैं। और इस ज्ञान एवं शिक्षा-प्रसार से आशा की जाती है कि जनता भी निकट भविष्य में प्रकाशन-व्यवसाय की उपयोगिता को समझने लगेगी, और प्रकाशन व्यवसाय की जनता सम्बन्धी बिक्री के परिमाण में वृद्धि होगी।

उक्त स्पष्टीकरण से पुस्तक-व्यवसाय की वर्तमान दशा का चित्रण होता है। इस व्यवसाय में राष्ट्रीय आय के रूप में कुल कितनी पूंजी लगी हुई है, इस सम्बन्ध में कोई आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इस व्यवसाय-सम्बन्धी आँकड़ों के विषय में सम्भवतः सरकार ने भी कोई यत्न नहीं किया। इसका मुख्य कारण तो यह है कि यह व्यवसाय पूर्णतः और अब भी इतना महत्त्वपूर्ण नहीं समझा गया कि जिसके विषय में सरकार को विशेषतया यत्नशील होना पड़ता। इससे भी अधिक, देश की केन्द्रीय एवं राज्य-सरकारों के समक्ष अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय और उद्योग हैं, जिनके राष्ट्रीयकरण से एक ओर तो राष्ट्र की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी और जनता के सामान्य कल्याण में भी वृद्धि हो सकेगी। परन्तु जब प्रकाशन-व्यवसाय की एक दिशा अर्थात् पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न प्रस्तुत होता है, तो मुझे ऐसा लगता है कि राष्ट्रीयकरण के समर्थक इस व्यवसाय की उपयोगिता को ही नष्ट कर देना चाहते हैं।

मैं उपर कह आया हूँ कि पुस्तक-प्रकाशन-व्यवसाय जो उत्पन्न करता है, उसकी खपत के स्रोत अधिकांशतः जनता से अतिरिक्त हैं, और प्रकाशन का सर्वाधिक उर्वर स्रोत पाठ्य-क्रम के लिए स्वीकृत होने वाली पुस्तकें हैं। इनमें भी स्कूलों के लिए स्वीकार होने वाली पुस्तकें ही अधिक विक्रय-योग्य हैं। विश्वविद्यालीय पुस्तकों की बिक्री अपेक्षाकृत कम है। अब विचारणीय यह है कि स्कूली अथवा विश्वविद्यालीय पुस्तकों को प्रकाशन-व्यवसाय से हटाकर राज्य-सरकारें यदि अपने अधीन कर लेती हैं, तो व्यवसाय को भारी धक्का पहुँचेगा। स्वतन्त्र-देश के अनुकूल साहित्य-सृजन के कार्य में बाधा होगी। जो गति आज हमें इस दिशा में दिखाई पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है, वह एकाएक अवरुद्ध हो जायगी।

मेरा निजी अनुभव है कि जो प्रकाशक एक-एक, दो-दो पीढ़ियों से पाठ्य-पुस्तकों का ही प्रकाशन कर रहे थे, उन्होंने पाठ्य-पुस्तक-प्रकाशन का आधार बनाकर सामान्य साहित्य के प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। सामान्य साहित्य के प्रकाशन को उन्होंने सहायक-दिशा के रूप में अपनाया है। किन्तु राष्ट्रीयकरण की प्रवृत्ति इस सृजन के लिए घातक सिद्ध होगी।

इतना-भर तो प्रकाशन-व्यवसाय के दृष्टिकोण से समझ लीजिए। अब दूसरा पक्ष है राज्य-सरकारों का। राज्य-सरकारों ने, एकाकी रूप में, इस सम्बन्ध में मुख्यतः इसी आधार पर पग उठाने चाहे हैं कि केन्द्रीय सरकार उनका समुचित पथ-निर्देशन नहीं कर सकी। इसके भी अनेक कारण हो सकते हैं, किन्तु स्वतन्त्रता आगमन के साथ ही केन्द्रीय सरकार पर खाद्य, वस्त्र और आवास-सम्बन्धी घोर अभावों की जो जिम्मेदारी आ पड़ी, उसने सम्भवतः, आज भी केन्द्रीय सरकार को चिन्ता-मुक्त नहीं किया। खाद्य आदि की भीषण समस्याओं के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय-समस्याओं ने भी केन्द्रीय सरकार को अति व्यस्त बना रखा है। इन अवस्थाओं में देश की शिक्षा-सम्बन्धी अत्यावश्यकता की ओर कम ध्यान देना स्वाभाविक है। फिर भी, केन्द्रीय सरकार से इस बात की आशा तो सहज ही की जा सकती है कि वह समग्र देश के लिए शिक्षा-सम्बन्धी नीति का निर्माण करे। इसमें सन्देह नहीं कि भावी नागरिकों के जीवन का आधार शिक्षा ही होगी, किन्तु यदि हर राज्य अपने-अपने दृष्टिकोण से इस दिशा में कार्य करेगा तो देश की सूत्र-बद्धता शिथिल हो जायगी।

केन्द्रीय सरकार ने व्यवसायों तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण को आगामी दस वर्ष के लिए स्थगित किया है। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार स्पष्ट घोषणा कर चुकी है; किन्तु आश्चर्य है कि कतिपय राज्य-सरकारें एक पंगु नवजात व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण करने जा रही हैं। इस राष्ट्रीयकरण के लिए बहुधा यह दोषारोपण किया जाता है कि प्रकाशक भ्रष्टाचार को अनुप्रेरित करते हैं। सम्भव है, ऐसा हो भी। किन्तु राज्य-सरकारें जब राष्ट्रीयकरण ही कर लेंगी, तो उस अवस्था में भ्रष्टाचार नहीं होगा, इसका क्या प्रमाण है? क्या उस अवस्था में भी भ्रष्टाचार नहीं हो सकता? राज्य-सरकारें पुस्तकें लिखवाएँगी, उन लिखी किताबों की पाँडुलिपियाँ प्रमाणित करने के लिए समितियाँ बैठेंगी। उन समितियों के सदस्य उस अवस्था में पक्षपात से रहित हो जायँगे, इसका क्या प्रमाण है? यह पक्षपात अथवा भ्रष्टाचार तो हृदय से सम्बन्ध रखता है। विगत नौकरशाही की परम्परा का अभी अन्त नहीं हुआ। जो प्रभाव अंग्रेजी शासन छोड़ गया है, उसका अन्त होने तक तो देश को इन दूषणों का सामना करते ही रहना पड़ेगा। किन्तु एक बुराई को दूर करने के लिए दूसरी बुराई को जन्म देना बुद्धिमानी नहीं।

पाठ्य-क्रमों के लिए जब पुस्तकें माँगी जाती हैं, तो प्रकाशक प्रतियोगिता के नाते सुन्दर-से-सुन्दर रचनाएँ उपस्थित करने की चेष्टा करते हैं। यह प्रतियोगिता प्रगतिशीलता की जननी है। राज्य-सरकारों के राष्ट्रीयकरण की नीति का प्रभाव लालफीताशाही होगा। सुन्दर रचनाओं का अभाव हो जायगा। सरकारी कामों में विलम्ब जैसी बातें तो अत्यधिक सामान्य हैं। किन्तु प्रकाशक जिस मुस्तैदी से माँगों की पूर्ति करते हैं और कर सकते हैं, उसका अंश भी सरकारी क्रिया-कलाप में दिखाई नहीं देगा।

मैंने संकेत मात्र में अपने विचार उपस्थित किये हैं, मुझे विश्वास है, प्रकाशक इस दिशा में अपने अधिक विचार प्रकट करेंगे। इससे व्यवसाय की सुरक्षा और समृद्धि होगी।

[पृष्ठ २४१ से आगे]

खरीद पर कमीशन नहीं देते, लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि इससे विक्रेता अपनी बेचने की सामर्थ्य से अधिक पुस्तकें खरीदने पर बाध्य होगा, क्योंकि कमीशन बिना पुस्तकें खरीदना तो निश्चय ही हानिकारक है। इसका नतीजा है आर्थिक हानि।

वह पुस्तक विक्रेता, जिसके यहाँ अनुभवी और कार्य-साधक कर्मचारी हैं, जो नियमित रूप से अपने सूचीपत्र ग्राहकों को भेजता है, दूसरे दूकानदारों से कहीं आगे निकल जायगा और अधिक लाभ प्राप्त कर सकेगा।

इसलिए अच्छे पुस्तक-विक्रेता को चाहिए कि वह सावधानी से पुस्तकें खरीदे (अच्छे कमीशन पर और बिकने योग्य संख्या में), कम किराये की दूकान ले और अत्यधिक मितव्ययता के साथ चले। तभी नई पुस्तकों की बिक्री एक अलग व्यवसाय के रूप में मुनाफा दे सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की बिक्री की कला

थोक-पुस्तक-विक्रेता

टामस० ए० जॉय

इस लेखमाला के अन्तर्गत यह अगला लेख प्रकाशित हो रहा है। लेखक हैं इंग्लैंड में पुस्तकों के एक सफलतम विक्रेता। पुस्तक-बिक्री के विषय पर आपकी 'बुकसेलिंग' नाम की विशिष्ट पुस्तक 'पिटमैन' ने प्रकाशित की है।

एक आदर्श थोक-विक्रेता की विशेषता यह है कि वह सभी प्रकाशकों की प्राप्य पुस्तकों का स्टॉक अपने यहाँ रखे। दुर्भाग्य-वश इस देश में यह सम्भव नहीं हो पाया है, लेकिन ऐसा होना जरूर चाहिए। छोटे-छोटे पुस्तक-विक्रेता तो थोक-विक्रेताओं पर ही निर्भर करते हैं, पर बड़े विक्रेता सीधे प्रकाशकों से किताबें खरीदते हैं। आमतौर पर थोक-विक्रेता किताबें उसी कमीशन की दर पर तो नहीं दे सकता जिस पर प्रकाशक देगा, लेकिन वे अक्सर २५% या २०% या प्रकाशक की सबसे अच्छी दरों पर अवश्य दे सकता है। पुस्तक-विक्रेता को चाहिए कि यदि वह व्यवसाय में 'जीवित' रहना चाहता है तो ज्यादा-से-ज्यादा कमीशन हासिल करने का प्रयत्न करे।

थोक-विक्रेता से किताबें खरीदने में कुछ लाभ हैं। पुस्तक-विक्रेता का समय बच जाता है, गाड़ीभाड़ा या पोस्टेज कम लगता है और खोज-बीन अधिक नहीं करनी पड़ती। स्टॉक भरने के लिए और ग्राहकों की आवश्यकता पूर्ति के लिए उसे कम-से-कम आर्डर-फार्म और पोस्टेज का उपयोग करना पड़ता है। साथ ही इसमें हानियाँ भी हैं। उदाहरण के तौर पर यदि इच्छित पुस्तकें थोक-विक्रेता के यहाँ न मिलीं या 'आउट आफ स्टॉक' हुईं तो समय नष्ट होता है और कमीशन भी १०% अथवा रुपए में दो आने अथवा तीन आने ही के हिसाब से मिलता है; फिर यदि थोक-विक्रेता जल्द जवाब न दे तो देर भी लग जाती है।

हर पुस्तक-विक्रेता को चाहिए कि समय-समय पर थोक विक्रेता के यहाँ जाय और किताबों पर नजर डाले। इससे दो लाभ होते हैं: एक तो यह कि थोक-विक्रेता के काम काज का आपको ज्ञान हो जाता है; यह भी सम्भव है कि आपको कुछ ऐसी पुस्तकें वहाँ दीख पड़ें जो पहले आपने न देखी हों और जो किसी ऐसे प्रकाशक के यहाँ की हों जिनका अपना कोई एजेण्ट शहर-शहर में घूमने वाला न हो और जो एक सीमित संख्या से कम पुस्तकें न देते हों। इसलिये महीनें में एक बार थोक विक्रेताओं और बड़े दुकानदारों की दुकान पर चले जाना बड़ा फायदेमंद साबित होगा। दूसरा दुकानदार क्या कर रहा है, यह देखना हमेशा लाभप्रद सिद्ध होगा। बहुत से पुस्तक-विक्रेता तो हर सप्ताह या इससे भी अधिक बार थोक विक्रेताओं के यहाँ किताबें खरीदने या देखने जाते हैं।

नई पुस्तक-बिक्री और उनकी अर्थनीति

मैंने बहुत से पुस्तक विक्रेताओं के जमा-खर्च की बहियाँ देखी हैं और वे बड़ी ही निराशाजनक हैं। यह भी निस्सन्देह है कि नई छपी पुस्तकें ही बेचना धन कमाने का कोई साधन नहीं। कुछ दूकानें ऐसी हैं जो कुछ असाधारण स्थितियों के कारण अच्छा खासा कमा लेती हैं; जैसे दूकान की स्थिति बहुत अच्छी जगह हो, किराया कम हो, इत्यादि। लेकिन आमतौर पर ऐसी बहुत ही कम दूकानें हैं जो केवल नई पुस्तकें बेचकर गुजर करें; पर यदि ऐसा वे कर सकें तो बहुत ही लाभप्रद होगा। यदि दूकान की बिक्री बढ़ाना है तो नई किताबों के अतिरिक्त पुरानी पुस्तकों का विभाग, पुस्तकें पढ़ने के लिए देने के वास्ते एक पुस्तकालय, स्टेशनरी-विभाग, पत्र-पत्रिका विभाग तथा अन्य चीजें भी दूकान में रखना चाहिए।

प्रकाशक अपनी पुस्तकों पर विभिन्न दरों से कमीशन देते हैं—कुछ पर अधिक, कुछ पर कम। विशेष विषयों—कानून, दवाई-सम्बन्धी या विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों पर और पाठ्य-पुस्तकों पर तो वे कम कमीशन ही देते हैं। कभी-कभी वे पुस्तकों की कम-से-कम संख्या (छः या तीन प्रतियाँ) से कम

[आगे पृष्ठ २४० पर देखिए]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रामाणिक हिन्दी कोश

सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

वस्तुतः प्रामाणिक और सर्वश्रेष्ठ शब्द कोश, जो कोश-रचना के ४५ वर्षों के दीर्घ अनुभव के आधार पर बना है। इसमें दूसरे कोशों की हजारों भूलें ठीक की गई हैं; और हजारों शब्दों की नई और शुद्ध व्याख्याएँ करके हिन्दी में कोश-रचना का एक नया आदर्श और नया प्रतिमान उपस्थित किया गया है। इसमें आजकल के नये प्रचलित और प्राचीन हिन्दी साहित्य के भी हजारों ऐसे शब्द आपको मिलेंगे जो अभी तक हिन्दी के किसी कोश में नहीं आये हैं। मूल्य १२॥), डाक व्यय २) अतिरिक्त।

कथा साहित्य का मुकुट मणि

देव-लोक

लेखक : विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय; अनुवादक : रामचन्द्र वर्म्मा

मनुष्य के इस लोक के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले तो सैकड़ों-हजारों उपन्यास आपने पढ़े होंगे, पर यह उपन्यास इस दृष्टि से बिल्कुल अनोखा और बे-जोड़ है कि इसमें मृत्यु के बाद वाले और परलोक के जीवन के चरित्र दिये गए हैं। यह उपन्यास आपको पर-लोक के जीवन का स्वरूप बतलाएगा, आपकी आत्मा का परमात्मा के साथ सम्पर्क स्थापित कराएगा और आपको ग्रहों, नक्षत्रों तथा विश्व-ब्रह्माण्ड की सैर कराके परम प्रसन्न तो करेगा ही, परम सुखी भी करेगा। विवरण पत्र और नमूना मुफ्त। मूल्य ४), डाक व्यय ।॥)।

डॉ० सम्पूर्णानन्द जी लिखते हैं: "मैं 'देव-लोक' पूरा पढ़ गया'.........'पुस्तक बहुत रोचक है, और इसमें सन्देह नहीं कि हमारे साहित्य में अपने ढंग की नई चीज़ है।"

हिन्दी काव्य दर्शन

लेखक

हीरालाल तिवारी

हिन्दी के सभी उत्कृष्ट कवियों और उनकी कृतियों के ठीक-ठीक स्वरूप और महत्त्व बतलाने वाली यह पुस्तक अपने ढंग की अनोखी और सर्व-श्रेष्ठ है। लेखक ने सफलता-पूर्वक कवियों की आत्मा तक पहुँचने का सफल प्रयास किया है। हिन्दी काव्य-जगत् का ठीक-ठीक महत्त्व और स्वरूप समझने में कालेजों के अध्ययनशील विद्यार्थियों को जितनी अधिक सहायता इस पुस्तक से मिलेगी, उतनी किसी अन्य पुस्तक से नहीं मिलेगी। इसकी लेखन-शैली और अभिव्यंजन प्रणाली इतनी मधुर और सरस है कि आप क्षण-भर में मुग्ध हो जायँगे और हर जगह लेखक की प्रशंसा मुक्त कंठ से करेंगे। पुस्तक क्या है, आलोचनात्मक साहित्य का अनुपम रत्न। पृष्ठ संख्या ६०० से ऊपर, मूल्य ६।), डाक व्यय १)।

साहित्य रत्न माला कार्यालय, २०, धर्मकूप, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की सूची

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम क्रमशः हिन्दी की सभी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस प्रकार की किसी भी सूची में अशुद्धियाँ रह जाना स्वाभाविक है। आशा है पाठकगण अशुद्धियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करके, सूची को पूर्णतया शुद्ध करने में हमें सहयोग देंगे।

अजमेर

दैनिक

(१) दरबार	अजमेर	
(२) परिवर्तन	,,	
(३) मीरां	,,	
(४) आजाद	,,	
(५) हलचल	,,	
(६) वीर राजस्थान	,,	

साप्ताहिक

(१) आजाद	अजमेर	
(२) दरबार	,,	
(३) परिवर्तन	,,	
(४) आर्य मार्तण्ड	,,	
(५) जनशक्ति	,,	

पाक्षिक

(१) ओस्वाल	अजमेर	
(२) विजेता	,,	

अन्य

(१) अभिमन्यु	अजमेर	मासिक
(२) अरोरवन्स सखा	,,	,,
(३) झलक	,,	,,
(४) बन्धु	,,	,,
(५) कुसुम	,,	,,
(६) कोली राजपूत	,,	,,
(७) सविता	,,	,,
(८) सिखवाल समाचार	,,	,,
(९) शान्ति	,,	,,
(१०) वीर बन्धु	,,	,,
(११) वीर पुत्र	अजमेर	मासिक
(१२) मैथिल बन्धु	,,	,,
(१३) मजदूर नवजीवन	,,	,,
(१४) नाम महित्या	,,	,,
(१५) वैष्णव ब्राह्मण मस्तण्ड	,,	,,
(१६) नया जैन	,,	,,
(१७) गौतन सखा	अजमेर	मासिक
(१८) आर्य परिवार	,,	त्रैमासिक
(१९) अग्रवाल हाईस्कूल मैगजीन	,,	वार्षिक
(२०) दयानन्द विद्यालय	,,	,,

ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता

हमें इस समय कुछ ट्रैवलिंग एजेंटों की आवश्यकता है, जो हमारी प्रकाशित पुस्तकों के आर्डर ला सकें। वेतन १०० रुपये से १५० रुपये तक मासिक। यात्रा का भत्ता ७ रुपये प्रतिदिन। नमूने की पुस्तकों के लिए १००० रुपये की जमानत देनी होगी।

शीघ्र आवेदन करें, अथवा स्वयं आकर मिलें।

आत्माराम एंड संस

काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसाम

साप्ताहिक

(१) अकेला — तिनसुकिया

(२) शंखनाद — गोहाटी

अन्य

(१) पूर्वज्योति — गोहाटी (मासिक)

उत्तर प्रदेश

अलमोड़ा

साप्ताहिक

(१) प्रजा बन्धु — अलमोड़ा

(२) समता — ,,

(३) शक्ति — ,,

अलीगढ़

दैनिक

(१) ज्वाला — अलीगढ़

(२) नागरिक — ,,

(३) नवीन — ,,

साप्ताहिक

(१) अमर खालसा — ,,

(२) दिल्लगी — ,,

(३) पंचायत राज — ,,

(४) प्रकाश — ,,

(५) साथी — ,,

(६) विश्वबन्धु — ,,

(७) युवक — ,,

पाक्षिक

(१) प्रवर्तन — ,,

(२) विप्लव — ,,

अन्य

(१) आयुर्वेद वाणी — ,,

(२) चौपाल — ,,

(३) ज्ञान धारा — ,,

(४) जायसवाल जैन — ,,

(५) संगीत — ,,

(६) शिक्षक बन्धु — ,,

(७) शिक्षक — ,,

(८) व्यापार भविष्य — अलीगढ़

(९) व्यवसाय — ,,

(१०) वार्ष्णेय — ,,

आगरा

दैनिक

(१) आगरा दैनिक व्यापार समाचार — आगरा

(२) अमर उजाला — आगरा

(३) बन्दे मातरम् — आगरा

(४) सैनिक — ,,

(५) संदेश — ,,

(६) उजाला — ,,

साप्ताहिक

(१) कांग्रेस — ,,

(२) देहाती — ,,

(३) ग्राम-जीवन — ,,

(४) जाट जगत — ,,

(५) महान् संदेश — ,,

(६) मित्र — ,,

(७) निराला — ,,

(८) प्रेम प्रचारक — ,,

(९) सैनिक — ,,

(१०) श्वेताम्बर जैन — ,,

(११) ताजा तार — ,,

मासिक

(१) अग्रवाल हितैषी — ,,

(२) बाघल संदेश — ,,

(३) चतुर्वेदी — ,,

(४) देवदूत — ,,

(५) जीवन प्रभा — ,,

(६) होमियोपैथिक दर्पण — ,,

(७) जैन संदेश — ,,

(८) खण्डेलवाल महासभा बन्धु — ,,

(९) नोंक-झोंक — ,,

(१०) नर्सिंग जर्नल — ,,

(११) पालीवाल जैन — ,,

(१२) पालीवाल संदेश — ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) पशुसेवक आगरा
(१४) पंकज ,,
(१५) राजपूत ,,
(१६) साहित्य संदेश ,,
(१७) ताज ,,

पाक्षिक
(१) कर्मयोग ,,
(२) नया कानून आगरा
(३) ओस्वाल ,,

आज़मगढ़

साप्ताहिक
(१) संदेश आज़मगढ़

इलाहाबाद

दैनिक
(१) अमृत पत्रिका इलाहाबाद
(२) भारत ,,
(३) दैनिक पत्रिका ,,
(४) हिन्द समाचार ,,
(५) जय हिन्द ,,
(६) परिवर्तन ,,
(७) सिपाही ,,
(८) स्वाधीन भारत ,,

साप्ताहिक
(१) अभ्युदय ,,
(२) भारत ,,
(३) देशदूत ,,
(४) जन कांग्रेस ,,
(५) जनपथ ,,
(६) जन क्रान्तियाँ ,,
(७) जन संदेश ,,
(८) जगत ,,
(९) मेरा किसान ,,
(१०) नई जीवन ,,
(११) नया रास्ता ,,
(१२) परम हंस ,,
(१३) प्रगति ,,
(१४) श्रमजीवी इलाहाबाद
(१५) उषा ,,
(१६) विकास ,,

पाक्षिक
(१) अछूत जनता ,,
(२) देश दशा ,,
(३) ग्राम सेवक ,,
(४) ग्रामवासी ,,
(५) नौरंगमहल ,,
(६) राष्ट्रवाणी ,,

अन्य (मासिक)
(१) अलका इलाहाबाद
(२) अपना देश ,,
(३) अँगूर के गुच्छे ,,
(४) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार ,,
(५) अमोघ उपन्यासमाला ,,
(६) आयुर्वेद चमत्कार ,,
(७) बालबोध ,,
(८) बालसखा ,,
(९) बारी मित्र ,,
(१०) वर्तमान कानून ,,
(११) भारत जननी ,,
(१२) भारतीय ,,
(१३) भूगोल ,,
(१४) बाल भारती ,,
(१५) बच्चों का औषधालय ,,
(१६) चमचम ,,
(१७) चाँद ,,
(१८) चाँदनी ,,
(१९) छाया ,,
(२०) चेतना ,,
(२१) छोटा नागपुर दूत पत्रिका ,,
(२२) क्युपिड ,,
(२३) सिनेमा ,,
(२४) दीपक ,,
(२५) धर्मग्रन्थमाला ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२६) दीदी	इलाहाबाद	
(२७) एवेन्जेलिकल पत्रिका	,,	
(२८) गुदगुदी	,,	
(२९) हैहय क्षत्रिय मित्र	,,	
(३०) हिन्दी मार्तण्ड	,,	
(३१) जागृत	,,	
(३२) जासूस	,,	
(३३) जासूस चार	,,	
(३४) जीवन सखा	,,	
(३५) जीजी	,,	
(३६) जन सेवक	,,	
(३७) कल्पवृक्ष	,,	
(३८) कर्मयोगी	,,	
(३९) खिलौना	,,	
(४०) किशोर भारतीय	,,	
(४१) कोकिला	,,	
(४२) लहर	,,	
(४३) लल्ला	,,	
(४४) किशोर भारती	,,	
(४५) मलाल	,,	
(४६) मनोरमा	,,	
(४७) मंजरी	,,	
(४८) मानस मणि	,,	
(४९) मनोहर कहानियाँ	,,	
(५०) मार्तण्ड	,,	
(५१) माया	,,	
(५२) मनोनीत बन्धु	,,	
(५३) मनोनीत समाचार पत्रिका	,,	
(५४) मोहिनी	,,	
(५५) म्युनिसिपल गजट	,,	
(५६) नई कहानियाँ	,,	
(५७) नवयुग सन्देश	,,	
(५८) नवयुवक	,,	
(५९) नवज्योति	,,	
(६०) नया साहित्य	,,	
(६१) नया मंजरी	,,	
(६२) प्रतिमा सीरिज	इलाहाबाद	
(६३) प्रजापति मित्र	,,	
(६४) प्रेम	,,	
(६५) रसीली कहानियाँ	,,	
(६६) साहु सूर्य	,,	
(६७) सजनी	,,	
(६८) सरस्वती	,,	
(६९) सतयुग	,,	
(७०) सेवा	,,	
(७१) सुषमा	,,	
(७२) शेर बच्चा	,,	
(७३) शिशु भारती	,,	
(७४) श्री चिकित्सक	,,	
(७५) श्री वैष्णव समाचार	,,	
(७६) स्वास्थ्य सुधा	,,	
(७७) शिकारी	,,	
(७८) सरिता	,,	
(७९) सुखी बालक	,,	
(८०) साथी	,,	
(८१) तरुण	,,	
(८२) तिथि	,,	
(८३) त्रिवेणी	,,	
(८४) तिरंगा	,,	
(८५) उपमा	,,	
(८६) वातायन	,,	
(८७) विद्यार्थी	,,	
(८८) विज्ञान	,,	
(८९) विनोद	,,	
(९०) विश्ववाणी	,,	
(९१) योगेन्द्र	,,	
(९२) अमर कहानी	,,	(द्वैमासिक)
(९३) अमर वीणा	,,	(वार्षिक)
(९४) भारतीय कला	,,	(त्रैमासिक)
(९५) भक्त लोक	,,	,,
(९६) हलवाई	,,	,,
(९७) हिन्दुस्तानी	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९८) झा होस्टल मैगज़ीन इलाहाबाद (वार्षिक)
(९९) जन-संदेश ,, (सप्ताह में दो बार)
(१००) मधुप (सचित्र) ,, ,,
(१०१) मजेदार कहानियाँ ,, ,,
(१०२) नव संदेश ,, ,,
(१०३) शिक्षा ,, (त्रैमासिक)
(१०४) साहित्यकार ,, ,,
(१०५) सहकारी ,, ,,
(१०६) सम्मेलन पत्रिका ,, ,,
(१०७) विन्ध्य भूमि ,, ,,
(१०८) कहानी ,, (मासिक)
(१०९) नई कविता ,, (षाण्मासिक)

एटा

साप्ताहिक

(१) नवीन भारत एटा
(२) सुदर्शन ,,
(३) विजय ,,

मासिक

(१) अप्सरा ,,
(२) बाराह सेनी ,,
(३) साधन ,,

इटावा

साप्ताहिक

(१) जनमत इटावा
(२) जन घोष ,,
(३) कर्तव्य ,,
(४) सुधारक ,,

उन्नाव

(१) अरुणोदय उन्नाव (मासिक)
(२) संग्राम ,, (सप्ताह में दो बार)

कानपुर

दैनिक

(१) आयुष्मान कानपुर
(२) भारत मित्र ,,
(३) चुनौती ,,
(४) दैनिक व्यापार ,,
(५) डेली कानपुर शुगर मार्केट टोन
(६) डेली कानपुर मार्केट कानपुर
(७) गुप्ता कमर्शल मार्केट रिपोर्ट
(८) जागरण
(९) जैहिन्द डेली शुगर मार्केट रिपोर्ट
(१०) नया युग कानपुर
(११) प्रताप ,,
(१२) सहयोगी ,,
(१३) वर्तमान ,,
(१४) वीर भारत ,,
(२५) विश्वमित्र ,,

साप्ताहिक

(१) अग्रगामी ,,
(२) आयुष्मान ,,
(३) देश दर्पण ,,
(४) कानपुर समाचार ,,
(५) कानपुर मार्केट टोन ,,
(६) किसान ,,
(७) किसान मजदूर ,,
(८) मजदूर जगत ,,
(९) प्रताप ,,
(१०) प्रकाश ,,
(११) रेलवे मजदूर ,,
(१२) राम राज्य ,,
(१३) राष्ट्रीय झलक ,,
(१४) राष्ट्रीय मोर्चा ,,
(१५) सहयोगी ,,
(१६) समाजवाद ,,
(१७) साथी ,,
(१८) शंखनाद ,,
(१९) सावधान ,,
(२०) श्रमिक ,,
(२१) वैश्य ,,
(२२) विद्यार्थी कांग्रेस ,,
(२३) युगान्तर ,,

अन्य (मासिक)

(१) अमर मैगज़ीन ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) झाँसी कानपुर
(३) बाड़ी रावत बन्धु ,,
(४) चाक क्षत्रिय ,,
(५) जे० के० पत्रिका ,,
(६) कल्याणी ,,
(७) माथुर वैश्य हितैषी ,,
(८) नया ब्राह्मण ,,
(९) न्याय ,,
(१०) हेमियोपैथिक जर्नल ,,
(११) श्रमजीवी ,,
(१२) व्यापार पत्रिका ,,

पाक्षिक
(१) धूप छाँव ,,
(२) परिवर्तन ,,
(३) रोडवेज ,,
(४) वीर संदेश ,,

गढ़वाल

साप्ताहिक
(१) कर्मभूमि लेन्सडाउन, गढ़वाल

गाज़ीपुर

साप्ताहिक
(१) परिवर्तन गाजीपुर
(२) लोक सेवक ,,

मासिक
(१) आराधना ,,

गोंडा

साप्ताहिक
(१) हलचल गोंडा

गोरखपुर

साप्ताहिक
(१) ज्ञान शक्ति गोरखपुर
(२) पुकार ,,

मासिक
(१) कल्याण ,,
(२) आरोग्य ,,

पाक्षिक
(१) जनतंत्र गोरखपुर
(२) निषाद सेवक ,,

जालौन

साप्ताहिक
(१) जयहिन्द जालौन
(२) लोकमत ,,
(३) वीरेन्द्र ,,

जौनपुर

साप्ताहिक
(१) समय जौनपुर
(२) विकास ,,

झाँसी

दैनिक
(१) जागरण झाँसी

साप्ताहिक
(१) देवी सम्पद ,,
(२) सनातन साम्राज्य ,,
(३) स्वतन्त्रता ,,

पाक्षिक
(१) बुन्देलखण्ड ,,
(२) स्वाधीन ,,

मासिक
(१) कर्णधार ,,

देहरादून

साप्ताहिक
(१) दून समाचार देहरादून
(२) प्रजा बन्धु ,,
(३) योग वाणी ,,

मासिक
(१) बुद्ध धारा ,,
(२) रजनी ,,
(३) सुषमा ,,
(४) वीर सन्देश ,,

पाक्षिक
(१) उत्तर खण्ड सन्देश ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवरिया

साप्ताहिक

(१) पंचदूत — देवरिया

नैनीताल

साप्ताहिक

(१) जाग्रत — नैनीताल

प्रतापगढ़

साप्ताहिक

(१) अवध — प्रतापगढ़

फरुखाबाद

साप्ताहिक

(१) नया युग — फरुखाबाद

मासिक

(१) कन्नौज समाचार — ,,

फैज़ाबाद

साप्ताहिक

(१) किसान — फैज़ाबाद
(२) नव भारत — ,,
(३) राष्ट्रीय सन्देश — ,,
(४) विरक्त — ,,

मासिक

(१) पंच परमेश्वर — ,,
(२) साकेत — ,,
(३) श्री सरजू पारीण — ,,

पाक्षिक

(१) बापूजी की देन — ,,

बनारस

दैनिक

(१) आज — बनारस
(२) अधिकारी — ,,
(३) आयुर्वेद कॉलेज पत्रिका — ,,
(४) सन्मार्ग — ,,

साप्ताहिक

(१) आज — ,,
(२) एशिया — ,,
(३) चेतना — ,,

क्रमशः

हमारा अभिनव प्रकाशन

उपन्यास

१. कवि : ताराशंकर वन्द्योपाध्याय ४)
२. अभागा : मैक्सिमम गोर्की ३॥)
३. कंकर : हंसराज रहबर ५।)
४. भद्रलोक का नीड़ : ईवान तुर्गनेव ४)
५. बहता तिनका : कमल जोशी २)
६. महामन्त्री चाणक्य : रणवीर बी० ए० २)

कहानियाँ

७. पैटमैन की बीवी : कमल जोशी २॥)
८. तस्वीर का फ्रेम : सत्यदेव शर्मा २)

साहित्यिक

९. विचार और समस्याएँ : शरण ६)
१०. निबन्ध कौमुदी : शरण ३॥)

विविध

११. आँखों देखा रूस : पं० जवाहरलाल नेहरू २।)
१२. पेखन : पं० रामनरेश त्रिपाठी १)
१३. गाँव और शहर : शरण ॥)

अन्य सभी प्रकार की पुस्तकों के लिए हमें लिखें।

न व यु ग प्र का श न

२८१, चावड़ी बाज़ार,
दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—कलाकार का पुरस्कार, ले॰ बेचन शर्मा उग्र, कहानी संग्रह, मू॰ ३)

—चरित्र निर्माण की कहानियाँ, ले॰ राजबहादुर सिंह, बालोपयोगी, मू॰ १)

—जीजीजी, ले॰ पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, उपन्यास, मू॰ ३)

—नल-समाधि, ले॰ गोविन्द वल्लभ पन्त, उपन्यास, मू॰ ४)

—निशिकान्त, ले॰ विष्णु प्रभाकर, उपन्यास। ५)

—बुझते दीप, ले॰ दयाशंकर मिश्र दद्दा, उपन्यास, ३॥)

—समाधान, ले॰ रामावतार त्यागी, उपन्यास, ३॥)

—साहित्यानुशीलन, ले॰ शिवदानसिंह चौहान, साहित्यिक लेख, ६)

—सूम का घड़ा, सन्तोष गार्गी, बालोपयोगी।

आनन्द प्रकाशन लि॰, बनारस

—थियासॉफी के मूल सिद्धान्त, ले॰ सी॰ जिनराजदास रामचन्द्र शुक्ल, आध्यात्मिक, २॥)

—ध्यान-अभ्यास और परिणाम, अनु॰ रामचन्द्र शुक्ल आध्यात्मिक, ॥।)

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—उमड़ती घटाएँ, ले॰ गुरुदत्त, उपन्यास, ६)

—बालगीत, ले॰ भारद्वाज, बालोपयोगी। ॥।)

—बीसवीं शताब्दी, ले॰ डॉ॰ प्रतिपालसिंह, आलोचना, ८)

—यथार्थ से आगे, भगवती प्रसाद वाजपेयी, उपन्यास, ५)

ज्योति प्रकाशन, बम्बई ४

—राणा की पत्नी, ले॰ डॉ॰ रांगेय राघव, उपन्यास

गयाप्रसाद एण्ड संस, आगरा

—अभिनव अंग्रेजी हिन्दी कोश, केदारनाथ भट्ट। ६)

नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस

—पश्चिमी शिक्षा का इतिहास, ले॰ डॉ॰ सीताराम, इतिहास, ६)

—भारतीय राजनीति और शासन विकास, ले॰ कन्हैयालाल वर्मा, राजनीति, ७॥)

—सफल एकांकी, ले॰ पद्मनारायण आचार्य, नाटक, १॥)

—हिन्दी कविता, ले॰ डॉ॰ सूर्यबली सिंह, आलोचना, ३॥)

नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ

—अनुभूति और अध्ययन, ले॰ दुर्गाशंकर मिश्र, निबन्ध, ३॥)

—चिता की लपटों से, ले॰ शैलेश, उपन्यास, ४॥)

—पतन की राहें, ले॰ ब्रह्मनारायण शर्मा, उपन्यास, २)

—फूल और कलियाँ, ले॰ रामेश्वर तिवारी, कहानी संग्रह, २॥।)

—मृत्यु-लोक, ले॰ शैलेश, उपन्यास, २)

—रसखान का अमर काव्य, ले॰ दुर्गाशंकर मिश्र, आलोचना, २)

—विचार वीथिका, ले॰ दुर्गाशंकर मिश्र, निबन्ध ३।)

—सेनापति का अमर काव्य, ले॰ दुर्गाशंकर मिश्र, आलोचना, ३॥।)

नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद

—अलग-अलग रास्ते, ले॰ उपेन्द्रनाथ अश्क, नाटक, २।)

नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर

—इन्सान मर गया, ले॰ शम्भुनाथ सक्सेना, कहानीसंग्रह, ३)

—जीवन के प्रश्न, ले॰ शम्भुनाथ सक्सेना, निबन्ध, २)

पुस्तक मन्दिर, मथुरा

—अकबर बीरबल विनोद, विनोद की कहानियाँ, २।)

प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ

—पशु-पालन और चिकित्सा, ले॰ चन्द्रनाथ मिश्र, ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—हजरत उमर, ले० अहमद बशीर, जीवनी, ।=)
—हजरत उस्मान, ले० अहमद बशीर, जीवनी, ।=)
—हजरत अली, जीवनी, ।=)

रश्मि प्रकाशन, कलकत्ता ७
—नव जातक, ले० गोर्की, अनु० कमल जोशी, उपन्यास, २)
—पत्थर की आँख, ले० कमल जोशी, उपन्यास, ३)

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
—सनसनाते सपने, ले० राधाकृष्ण, हास्यरस का उपन्यास, १।।।=)

रामनारायण लाल, प्रयाग
—धरती की सांस, ले० भगवती प्रसाद वाजपेयी, उपन्यास, ३)
—देवताओं की घाटी, ले० विष्णु प्रभाकर, एकांकी नाटक, २)
—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ले० गिरजाशंकर शुक्ल, समीक्षा, ५)
—अशोक, ले० विष्णु प्रभाकर, एकांकी नाटक, २)

रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
—औद्योगिक संगठन, ले० पी० एल० गोलवालकर, वाणिज्य, ५)
—मुद्रा एवं राजस्व, ले० गिरिराज प्रसाद, अर्थशास्त्र, १०)
—हमारे काव्यकार, ले० व्यथित हृदय, आलोचना, २।।)
—हमारे साहित्यकार, ले० व्यथित हृदय, आलोचना, १।)

रामकुमार बुक डिपो, लखनऊ
—बाल पृथ्वीवल्लभ, ले० के० एम० मुन्शी, अनु० एल० पी० भारद्वाज, उपन्यास, १।)
—बाल सोमनाथ, ले० के० एम० मुन्शी, अनु० एल० पी० भारद्वाज, उपन्यास, १।)

विद्या मन्दिर, लखनऊ
—अजातशत्रु : एक अध्ययन, ले० प्रेमनारायण टण्डन, पु० मु०, १।।)
—गबन : एक अध्ययन, ले० प्रेमनारायण टण्डन, पु० मु०
—रामचरित मानस की भूमिका, अनु० डॉ० केशरीनारायण शुक्ल, २।।)
—शिक्षण-विधियों की रूपरेखा, ले० रामखेलावन चौधरी, शिक्षण-सम्बन्धी, ।४।।)

सरोज प्रकाशन, प्रयाग
—आरम्भिक आपरीक्षण, ले० जनार्दन श्रीवास्तव, भूगोल, ३)
—प्राकृतिक भूगोल, ले० जनार्दन श्रीवास्तव, ५)

सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
—दशकुमार चरित, १, सं० विष्णु प्रभाकर, कथासार, ।=)
—दशकुमार चरित, २, सं० विष्णु प्रभाकर, कथासार, ।=)
—दादू की वाणी, सं० अशोक, कविता, ।=)
—मंगल-मार्ग, ले० गोकुलचन्द्र शर्मा, खण्ड काव्य, १।।)
—रहीम के दोहे, सं० अशोक, कविता, ।=)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली
—परिवार, ले० यज्ञदत्त शर्मा, उपन्यास, ६)
—प्रदीप, ले० हितहरि वल्लभ, उपन्यास, ४।।)
—फूल और काँटे, ले० नरोत्तम नागर, उपन्यास, ५)
—राजनेता, ले० स्टिफन ज्विग, चन्द्रदत्त पाण्डेय, उपन्यास, ६)

हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ
—कमला, अनु० रूपनारायण पांडेय, उपन्यास, ३।।)
—ग्राम भागवत, ले० आचार्य लालता प्रसाद, कथाएँ, १।)

हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ
—नूरजहाँ की टीका, रामखेलावन चौधरी, तेजनारायण टण्डन, पु० मु० २।।)
—महाकवि अकबर, सं० तेजनारायण टण्डन, समीक्षा, १।।)
—हिन्दी भाषा का इतिहास, ले० जगमोहन शंकर, प्रश्नोत्तर, १।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

एन० एल० कुलश्रेष्ठ, भारतवर्ष का आर्थिक भूगोल, ३५६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २॥)

आलोचना

अशोककुमार सिंह, काव्य संप्रदाय और वाद, २५०, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४॥)

अशोककुमार सिंह, काव्य संप्रदाय, १५२, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ३)

विश्वनाथ टण्डन, अशोक के फूल : एक अध्ययन, ४०, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ ।)

'क्षेम', छायावाद की काव्य-साधना, साहित्य सेवक कार्यालय, बनारस ४॥)

इतिहास

एस० एम० असगरअली, चित्रकला का इतिहास, १४०, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड संस, आगरा २)

एस० एम० असगरअली, मूर्तिकला का इतिहास, १७६, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)

त्रिलोचन पन्त, इंग्लैण्ड का वैधानिक इतिहास, ४००, डि०, नन्दकिशोर एण्ड सन्स, बनारस ६)

परमात्मा शरण, डा०, भारतवर्ष का इतिहास, भाग १, ३४०, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस ५)

बाबूराव जोशी, नव जागरण का इतिहास, पृ० २३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ३)

रामवृक्षसिंह, आधुनिक योरोप का इतिहास, ४००, डि०, नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, बनारस ६)

विद्यासागर शर्मा, भारतीय सहकारिता का इतिहास, १३२, क्रा०, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद २)

विद्यासागर शर्मा, सहकारिता का उदय और विकास, ११२, क्रा०, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद १॥)

उपन्यास

अलकजैण्डर ड्यूमा, तीन तिलंगे, ७००, क्रा०, पु० मु० नवयुग ग्रन्थागार, लखनऊ ७)

कन्हैयालाल मुन्शी, लोमहर्षिणी, पु० मु०, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ४॥)

दामोदर शास्त्री, पद्मिनी, ६८, क्रा०, विजय प्रकाशन, मथुरा १॥)

नकाबपोश भेदी, मृत्यु संकेत, १०४, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ।॥)

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० कमल, देवी चौधरानी, १६४, क्रा०, प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ २)

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० कमल, बंगशार्दूल सीताराम, १६०, क्रा०, प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ २)

मायादेवी शर्मा, जीवन के दो चित्र, नवजीवन पुस्तकमाला, प्रयाग १।॥)

यादवेन्द्रनाथ शर्मा चन्द्र, संन्यासी और सुन्दरी, २००, क्रा०, रामपुरिया प्रकाशन, कलकत्ता ३॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखालदास, वन्द्योपाध्याय, अनु० बजरंगबली, मयूख, साहित्य-सेवक कार्यालय, बनारस १।)
रूपनारायण पाण्डेय, अमला, १४०, क्रा०, विद्यामन्दिर, लखनऊ २)
हरिनाथ, पतिता, २७०, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४।।)
हर्षनाथ, कर्म और प्रगति, २७६, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ४।।)

कविता

जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद', मुक्तिका, १२६, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २।।)
देवराज डॉ०, धरती और स्वर्ग, १०४, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३)
विमलेश, प्राणों की छाया, ५०, डि०, ललित प्रकाशन, जयपुर ।।।)
विमलेश, वेदना, ७४, डि०, ललित प्रकाशन, जयपुर ।।।=)
सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, जागरण के गीत, ८०, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २)

कहानी

ब्रह्मानन्द श्रीवास्तव, जमाने की हार, १६०, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, बनारस २)
मोहनलाल गुप्त, मखमली जूती, १२८, क्रा०, प्रकाशगृह, बनारस १।।)

जीवनी

प्रभुदास गान्धी, जीवन प्रभात, ४३८, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ५)

धार्मिक

स्व० जिवराज दास, अनु० रामचन्द्र शुक्ल, नैवेद्य, ११२, क्रा०, आनन्द प्रकाशन लि०, बनारस ।।)

बालोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी

आदर्श कुमारी, गिरधर की कुंडलियाँ, ३२, क्रा०, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली ।=)
इन्द्रनाथ मदान, डॉ०, लेनिन, २४, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।।।=)
शिवमूर्तिसिंह 'वत्स', साहसी मित्र, ४०, विजय प्रकाशन, दिल्ली ।।।)
देवीप्रसाद, मीराबाई का जीवन चरित्र, ६४, डि०, बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता १।)
रामनारायण मिश्र, सरस्वती बाल व्याकरण, ४०, क्रा०, सरस्वती प्रकाशन, मथुरा ।)
हंसराज अग्रवाल, भारत विभूतियाँ, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना १)
हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, हमारे बालक, ५४, क्रा०, सुदर्शन प्रकाशन, आगरा ।।=)

मनोविज्ञान

निर्मला मोरजंग, मनोविज्ञान, २७६, क्रा०, जगत शंखधर, बनारस ४)

विविध

एस० ए० असगरअली, मिट्टी का काम, १००, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १।।)
जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद, सांस्कृतिक प्रश्न, ११२, क्रा०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २।।)
जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद, बिल्ली का नकठेल, १२०, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयप्रकाश नारायण, हमारी भूमि समस्या का हल, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
जवाहिरलाल जैन, सामाजिक क्रांति के दस कार्य-क्रम, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
जानकी शरण वर्मा, स्काउट मास्टरी और ट्रुप संचालन, १०४, क्रा०, तरुण प्रकाशन, इलाहाबाद १)
जानकी शरण वर्मा, स्वस्थ कैसे रहें, २२४, क्रा०, प्रकाशन, इलाहाबाद २।)
दादा धर्माधिकारी, क्रान्ति का अगला कदम, ५२, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
देवदत्त 'राकेश', कताई-बुनाई, १५०, क्रा०, रामाप्रकाशन मंदिर, बिजनौर १॥)
धीरेन्द्र भाई मजूमदार, शासन निरपेक्ष समाज, ६४, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
बद्री प्रसाद, साग-सब्जी की खेती, १२० क्रा०, पुस्तक मंदिर, मथुरा १)
बरुआ, अंखिया निहार के पगधूरि भार के, २२८, क्रा०, रामपुरिया प्रकाशन, कलकत्ता ४)
बलदेव भाटिया, सुबोध अदावाल, शिक्षा दर्शन, २४२, डि०, ओरिएंट लौंगमैन्स लि०, नई दिल्ली ५)
राजकुमार तिवारी, सरस्वती मान चित्रावली, ८०, डि०-४, सरस्वती प्रकाशन, मथुरा २)
राधाकृष्ण बजाज, गो सेवा की विचारधारा, ८०, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।=)
वसंत, संगीत विशारद, २४०, क्रा०, संगीत कार्यालय, हाथरस ५)
विनोबा, सर्वोदय की ओर, ७२, क्रा०, अ० भा० सर्व सेवा संघ, वर्धा ।)
संत गोकुल चन्द्र, आदर्श निबंधमाला, ३२२, क्रा०, पु० मु०, ओरिएन्टल बुकडिपो, दिल्ली २॥)
सुनीता अग्रवाल, घर घर की रानी, २१६, क्रा०, श्याम काशी प्रेस, मथुरा २)
हंसराज अग्रवाल, संस्कृत लोकोक्ति प्रयोग, क्रा०, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना ।॥)
हंसराज अग्रवाल, संस्कृत प्रबंध, प्रदीप, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना ५)
हंसराज अग्रवाल, विश्व दर्शनम्, शक्ति प्रकाशन, लुधियाना १)

विज्ञान और गणित

कृष्ण बहादुर, रंगनाथ, डॉ०, अकार्बानिक रसायन की रूपरेखा, ४५५, डि०, रामनारायण लाल प्रकाशक, प्रयाग ५)
चन्द्रनाथ मिश्र, भारतीय कृषि विज्ञान, ५००, क्रा०, प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ ७॥)
प्यारेलाल श्रीवास्तव, योगेन्द्र बिहारी लाल माथुर, डॉ, गति विज्ञान, ३२६, डि०, रामनारायण लाल प्रकाशक, प्रयाग ६)
संत प्रसाद टंडन, कृष्ण बहादुर, डॉ०, क्रियात्मक रसायन, ७८, डि०, रामनारायण लाल प्रकाशक, प्रयाग १)

प्रकाशन समाचार के द्वितीय वर्ष में

तीन विशेषांक

प्रकाशित हो रहे हैं। तीनों का अलग-अलग मूल्य १) होगा, लेकिन २।) का वार्षिक मूल्य भेजकर ग्राहक बनने वालों को ये तीनों अंक बिना अतिरिक्त मूल्य के मिल जायँगे। वी. पी. पी. से ३) लगते हैं।

आज ही ग्राहक बनिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा-विज्ञान पर विद्यार्थियों
के लिए
अनिवार्य पुस्तक

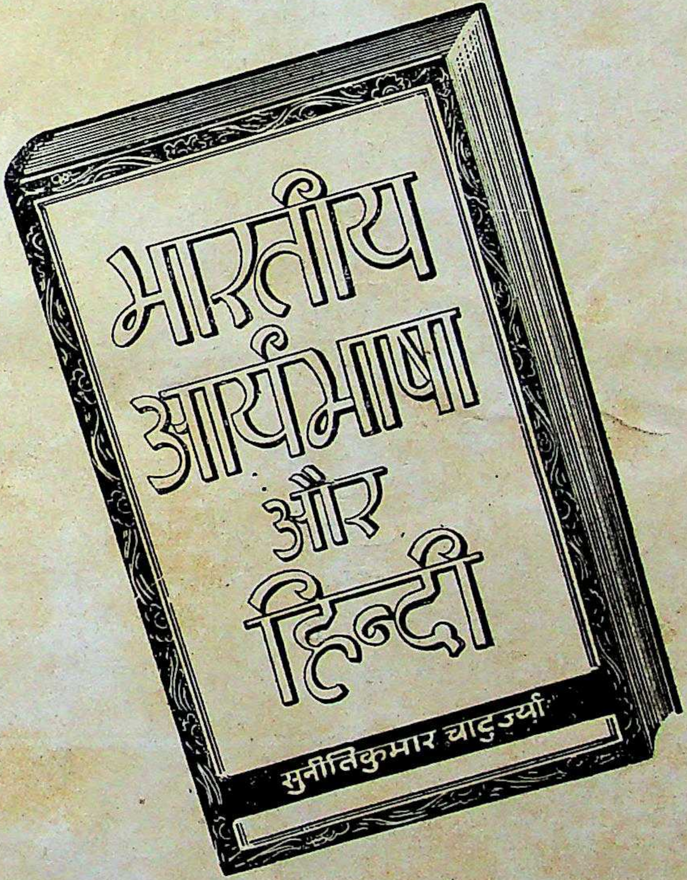

मूल्य छः रुपये

राजकमल प्रकाशन

१, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd No. D—594

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्साहित्य-सूची-विशेषांक में

८६ विषयों की ३३२५ पुस्तकों की सविवरण सूची प्रकाशित हुई थी।

●

प्रकाशन समाचार का जनवरी ५५ का अंक

उपन्यास-कहानी-नाटक-सूची-विशेषांक

होगा। हिन्दी में उपलभ्य सभी उपन्यासों, कहानी-संग्रहों, नाटकों तथा नाटक-संग्रहों की सविवरण सूची इसमें छपेगी।

●

प्रकाशकों से प्रार्थना

है कि उपरिलिखित विषयों की अपनी पुस्तकों का विवरण हमें शीघ्रातिशीघ्र भेज दें ताकि वर्गीकरण में दिक्कत न हो। जो पुस्तकें अनूदित हैं, उनके मूल लेखकों का तथा मूल भाषा का उल्लेख कर देने से सुभीता रहेगा।

●

विवरण

में पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, अनुवादक का नाम, पृष्ठसंख्या, संस्करण, आकार, मूल्य तथा प्रकाशक का नाम भेजना आवश्यक है।

●

प्रकाशक अभी से अपने लिए विज्ञापन-स्थान सुरक्षित कर लें। ये विशेषांक अरसे तक पुस्तकालयों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा हिन्दी-प्रेमियों द्वारा देखे जाते रहेंगे।

प्रकाशन समाचार

१ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली।

श्री देवराज मैनेजिंग डायरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ नवम्बर, १९५६ अङ्क २

प्रकाशन समाचार

र्षिक २॥) एक प्रति ।)

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुचाने वाला मासिक

हमारा नवीन प्रकाशन

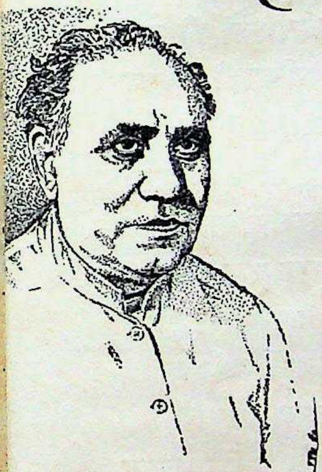

कला

ले० प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त

आकर्षक रूपरेखा, पौलिश्ड आर्ट पेपर का जैकेट। सजिल्द, मूल्य ५)

कला एक प्रेरणा है। यह किसी कार्य-सिद्धि के लिए अस्त्र है। जैसे महान् कार्यों की सम्पन्नता के लिए प्रयोग में लाई गई वस्तुएँ स्वयं आदर की पात्र बन जाती हैं, इसी प्रकार यदि कला का उद्देश्य श्रेष्ठ हो तो कलाकृति श्रेष्ठ है। निम्न कोटि के कार्यों की सिद्धि के लिए कला का प्रयोग कला को गिरा देता है और वह कला नष्ट हो जाती है।

इस विषय की विवेचना श्री गुरुदत्त का प्रस्तुत उपन्यास करता है। उपन्यास सुन्दर तो है ही। साथ ही भाषा की सरलता एवं उपन्यास की रोचकता इसकी, श्री गुरुदत्त के अन्य उपन्यासों के समान, विशेषता है।

हिन्दी जगत् में श्री गुरुदत्त इतने लोकप्रिय हो चुके हैं कि पाठकों को उनका परिचय देने की विशेष आवश्यकता नहीं। उनका प्रत्येक उपन्यास अन्यतम है। श्री गुरुदत्त केवल लिखने के लिए नहीं लिखते। उनका एक उद्देश्य होता है और उसके साथ ही एक दृष्टिकोण भी। समस्या चाहे राजनीतिक हो अथवा सामाजिक, चाहे आर्थिक हो अथवा कुछ और, उसका हल वे अपने दृष्टिकोण से करते हैं। उस दृष्टिकोण का आधार है हिन्दू संस्कृति अर्थात् वैदिक विचारधारा की श्रेष्ठता। इसके साथ ही अपने विस्तृत ज्ञान से वे विषय का ऐसा मंथन करते हैं कि उनका विश्लेषण अत्यन्त ही युक्तियुक्त होता है। रोचकता की दृष्टि से इतना कहना पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना प्रारम्भ करने पर बिना समाप्त किये छोड़ा नहीं जा सकता।

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री गुरुदत्त के उपन्यासों की पूरी सूची पृष्ठ संख्या २०६ पर देखें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूटों, ग्राम पंचायतों, स्कूल, लाइब्रेरियों, पुस्तकालयों, बेसिक ट्रेनिंग सैंटरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

(कृषि-सम्बन्धी तीस पुस्तकों का सैट)

कृषि-सम्बन्धी तथा देहात-सुधारक पुस्तकें

कृषि की उन्नति पर ही भारत की उन्नति निर्भर है। देहाती पुस्तक भण्डार का भारत के ८० प्रतिशत देहाती किसान भाइयों से यह निवेदन है कि वे देश में उपज बढ़ाने वाले आन्दोलन को सफल बनाने के लिये कृषि सम्बन्धी उत्तमोत्तम पुस्तकों का अध्ययन करें।

गेहूँ की बाल वाले प्रतीक किसान विकासमाला सीरीज़ की पुस्तकें

१. आलू की खेती	।।।)	७. अच्छी खाद	२।।)	१९. फसल रक्षक औषधियाँ	२।)
२. टमाटर की खेती	।।)	८. कपास की खेती	१)	२०. व्याधियों की रोकथाम	१।।)
३. गोभी की खेती	।।)	९. गन्ने की खेती	।।।)	२१. खेतीबाड़ी (किसान गाइड)	१।।)
४. जीरा, धनिया, अजवाइन	।।।)	१०. फूल फुलवारी	२।।)	२२. फलों की खेती	३।।)
५. तरकारियों की खेती	१।।)	११. धान की खेती	१।।)	२३. पशुओं का इलाज	६)
६. अच्छे बीज	।।।)	१२. सन्तरे की बागवानी	२।।)	२४. तरकारी सागभाजी-खेती	३।।)
		१३. आम की बागवानी	३)	२५. ट्यूब वैल गाइड	३।।)
		१४. आधुनिक कृषि विज्ञान	६)	२६. ट्रैक्टर प्राइमर	१।)
		१५. तिलहन की खेती	।।।=)	२७. पोल्ट्री फार्मिंग	४)
		१६. सोयाबीन की खेती	।)	२८. उन्नत सिंचाई	२)
		१७. तम्बाकू की खेती	।।)	२९. खेती और ट्रैक्टर	६)
		१८. खेत की तैयारी	२।)	३०. फल संरक्षण	२।।)

नोट : * कम-से-कम २५) की पुस्तकें एक साथ खरीदने पर =) फी रुपया कमीशन मिलेगा।

**** ३० पुस्तकों का पूरा सैट, जिसकी छपी कीमत ६५।।।=) होती है, एक साथ लेने पर ।) फी रु० कमीशन काटकर ।।–)।। पैकिंग खर्च जोड़कर ५०) में दिया जायगा। पूरा सैट मँगाने वाले सज्जन ५) एडवांस भेजकर अपने निकट के रेलवे स्टेशन का नाम लिखें, क्योंकि पोस्ट आफिस से मँगाने पर खर्चा ज्यादा लगता है।**

***** डाक-व्यय तथा बिल्टी का किराया हर हालत में ग्राहक को देना होगा। विशेष जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार करें तथा सूचीपत्र मुफ्त मँगायें।**

केवल ।) के टिकट पोस्टेज के लिए भेजकर ५००० पुस्तकों का २५० पृष्ठों का बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगायें।

वी० पी० द्वारा हर प्रकार की पुस्तकें मँगाने का पता :

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ४ :
: अंक ३ :

सम्पादक : श्रों प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन

ो कॉपीराइट में आमूल परिवर्तन करने के उद्देश्य से ॉपीराइट-सम्बन्धी विधेयक भारत सरकार की ओर से त किया गया है, उस पर राज्य-परिषद् एवं लोकसभा एक सम्मिलित समिति आजकल विचार कर रही है। विधेयक पर अपना मतामत प्रकट करने के लिए म्बिधित हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों की ी ली जा रही है। सुनने में आया है कि वर्तमान कानून ो महत्त्वपूर्ण परिवर्तन विधेयक द्वारा प्रस्तावित किये गए इस विचार-विमर्श के उपरान्त वे प्रायः सब-के-सब बदल गे। यदि ऐसा हुआ तो इसका यही अर्थ लगाया जा ता है कि विधेयक को बिना विशेष विचार-विनिमय के कसभा में पेश किया गया और केन्द्रीय परिषद् व सभा की मलित समिति ने बिना विशेष विचार-विनिमय के उसमें लक परिवर्तन भी प्रस्तावित कर दिए।

किसी भी कानून की स्वीकृति में इस प्रकार की जल्द- ी अनुचित है। आगामी निर्वाचनों के पहले लोकसभा एक अधिवेशन अभी और होगा; कोई अनिवार्यता नहीं के इसी अधिवेशन में, जिसमें सरकार का ध्यान अन्य व के प्रश्नों से उलझा रहना स्वाभाविक है, कॉपीराइट विधेयक को भी अन्तिम रूप में स्वीकार कर लिया जाय। चिन के बाद भी लोकसभा पर इस कानून को गढ़ने का रदायित्व छोड़ा जा सकता है।

'युनेस्को' ने 'इंटरनेशनल कॉपीराइट कन्वेंशन' में प्रासंगिक परिस्थितियों और दावों का विचार करते हुए सुझाव रखा था (जिसे संसार के कई देश मान भी चुके हैं) कि कॉपीराइट के स्वामित्व की अवधि लेखक की मृत्यु के उपरान्त २५ वर्ष तक ही सीमित हो। इस अवधि का काल कम हो या अधिक, यह विवाद लेखक और प्रकाशक के बीच का नहीं है वरन् लेखक के निजी और समाज के समष्टि-गत हितों में समन्वय अथवा संघर्ष का है। समाजवादी प्रवृत्ति के युग में किसी भी व्यक्तिगत हित का सामाजिक हितों की उपेक्षा करते हुए संरक्षण और संवर्धन-प्रवाह के विपरीत बढ़ने जैसी बात है। कहा जाता है कि लेखकों की ओर से विधेयक में उल्लिखित कॉपीराइट की अवधि को २५ वर्ष से बढ़ाकर ५० वर्ष करने की माँग की गई है। यह भी सुनने में आया है कि लोकसभा के एक विशिष्ट सदस्य ने, जो हिन्दी-लेखकों में अग्रणी हैं, एक गोष्ठी में यहाँ तक घोषणा कर दी कि यदि इस अवधि को बढ़ाकर ५० वर्ष नहीं किया गया तो वह इस प्रश्न पर इस्तीफा दे देंगे। शिक्षा-मन्त्री मौलाना अब्बुल कलाम आजाद का सतत विरोध इन लेखक महोदय ने किया है, लेकिन अफ़वाह है कि अपने त्यागपत्र की सार्वजनिक घोषणा के उपरान्त मौलाना साहब से यह मिले और प्रार्थना की कि कॉपीराइट की अवधि को २५ वर्ष से बढ़ाकर ५० वर्ष पर्यन्त करवाने में वह उनका समर्थन करें।

विधेयक में जिन-जिन अन्य नये प्रस्तावों को सम्मिलित किया गया था, कहा जाता है कि उनमें निम्नलिखित बातें फिर से बदल दी जायँगी : अनुवाद का कॉपीराइट १० वर्ष से बढ़ाकर २५ वर्ष की कॉपीराइट की अवधि तक बढ़ाने का प्रस्ताव रद्द हो जायगा; अनुवाद में कॉपीराइट की अवधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानमण्डल के ये अद्वितीय प्रकाशन

बृहत् हिन्दी कोश

सम्पादक

कालिका प्रसाद : राजवल्लभ सहाय

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

संशोधित व परिवर्धित द्वितीय संस्करण

शब्द-संख्या १,३६,००० : पृष्ठ संख्या १८००

आकार ९३/४" × ६५/८" आकर्षक और मजबूत जिल्द

लेदर क्लाथ २५) चमड़े की जिल्द ३२)

ज्ञान शब्द कोश

सम्पादक

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

शब्द-संख्या ७१००० : पृष्ठ संख्या १०००

आकार ९३/४" × ६५/८" परिवर्धित संस्करण

पूरे कपड़े की सुन्दर जिल्द—मूल्य १५)

पारिभाषिक शब्द कोश

सम्पादक

मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव

राजकीय कार्यों में प्रयुक्त पाँच हजार शब्दों की परिभाषा व हिन्दी अर्थ।

कपड़े की जिल्द ४)

आपके ग्रन्थ-संग्रह को अमूल्य बनाते हैं।

अपने पुस्तक-विक्रेता से खरीदिए व हमें लिखिए

ज्ञानमण्डल लिमिटेड

कबीर चौरा, वाराणसी

यथापूर्व १० वर्ष रह जायगी। बेचे हुए कॉपीराइट की लेखक द्वारा ७ वर्ष से १० वर्ष तक के बीच वापिस खरीद लेने की धारा भी उड़ा दी जायगी। कॉपीराइट रजिस्टर में बाद के किसी झगड़े को बोर्ड के सामने पेश करने के लिए यह अनिवार्य कर दिया गया था कि कॉपीराइट रजिस्टर में सम्मिलित पुस्तकों पर ही बोर्ड विचार कर सकेगा, यह धारा भी रद्द कर दी जायगी। इस प्रकार ले-देकर एक कॉपीराइट बोर्ड, कॉपीराइट रजिस्ट्रार तथा कॉपीराइट रजिस्टर के आयोजन के अतिरिक्त नया कॉपीराइट विधेयक पुराने कॉपीराइट में कुछ भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन न कर सकेगा।

यदि इन परिवर्तनों के विषय में हमारा अनुमान सही है तो हमारा यह कहना सुसंगत होगा कि इस विधेयक को पेश करने में सरकार ने जितनी जल्दबाजी की थी, उतनी जल्दबाजी उसे लोकसभा से स्वीकृत करने में भी दिखा रही है। उचित है कि इस कानून पर सांगोपांग विचार १९५७ की नई लोकसभा पर छोड़ दिया जाय।

उर्दू के महान् कथाकार

बलवन्तसिंह

की सुन्दरतम कहानियों का संग्रह

मैं ज़रूर रोऊँगी

इस संग्रह में बलवन्तसिंह की हर विषय और हर रंग की कहानियाँ एकत्र कर दी गई हैं।

मूल्य ३)

अन्य पुस्तकें

दीप-शिखा—महादेवी वर्मा के अपने बनाये चित्रों पर अपनी हस्तलिपि में बावन कवितायें पूरी पुस्तक आर्ट पेपर पर २२)

अमर आशा—श्रीमन्नारायण अग्रवाल की कविताएँ ३।।।)

साइन्स की कहानियाँ—कहानियों के रूप में विज्ञान की शिक्षा के लिए अद्वितीय पुस्तक ले० श्री उमाशंकर ३।।।)

किताबिस्तान

१७-ए. कमला नेहरू रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

कमल प्रकाशन के एक डायरेक्टर तथा दिल्ली की प्रमुख हिन्दी मुद्रण-संस्था नवीन प्रेस के व्यवस्था- श्री बद्रीनाथ सेठ का १ नवम्बर, १९५६ को सायं ६ कर ४ मिनट पर हृदय की गति रुक जाने के कारण न्त हो गया। श्री सेठ की, जिन्हें सब परिचित लोग ई साहब' के नाम से पुकारा करते थे, अकाल मृत्यु से ी की प्रकाशन, मुद्रण एवं पुस्तक-विक्रय संस्थाओं के धिकारियों व कर्मचारियों में शोक छा गया। आपकी उम्र ी केवल ४५ वर्ष की थी और अपने मधुर स्वभाव और ी ज़ुबान के कारण उनका प्रत्येक नया परिचय शीघ्र ही ष्ठता में बदल जाता था। श्री सेठ इस सीमा तक दूसरों दृष्टिकोण समझने का यत्न करते थे कि मृत्यु के दिन उनका द ही कोई शत्रु रहा हो।

श्री सेठ के हृदय गति रुक जाने दुखद-दुर्घटना दिल्ली के स्टैण्डर्ड राँ में हुई जहाँ अखिल भारतीय दी-प्रकाशक संघ अन्तर्रा- य प्रकाशक संघ सेक्रेटरी जनरल हॉन्स कॉन्ज़ेट स्वागत-समारोह भाग ले रहे थे। श्री के अपनी कुर्सी एकाएक लुढ़क जाने पर डॉ० हॉन्स कॉन्ज़ेट ने अपना भाषण समाप्त कर दिया।

श्री बद्रीनाथ सेठ अपने पीछे अपनी शोकग्रस्ता पत्नी तथा भोली पुत्री मोहिनी को छोड़ गए हैं। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति देंगे। अपने परोपकारमय-जीवन में सेठजी ने समवयस्कों का स्नेह तथा शुभकामनाएँ, बड़ों से आशीर्वाद और अपने छोटों का विश्वास सदैव पाया था।

◆ ◆ ◆

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशक संघ ज्यूरिख़, स्विट्ज़रलैण्ड, के प्रधान मन्त्री डॉ० हॉन्ज़ कॉन्ज़ेट ३१ अक्तूबर, १९५६ को बेंगकॉक जाते हुए दो दिन के लिए दिल्ली में रुके। **अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ** की ओर से उनका स्वागत विलिंग्डन के हवाई अड्डे पर किया गया तथा १ नवम्बर, ५६ को स्टैण्डर्ड रेस्तराँ में एक बड़े सहभोज का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के प्रमुख प्रकाशकों, पुस्तक-विक्रेताओं तथा मुद्रकों के अतिरिक्त भारत के केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के उच्च-अधिकारीगण, श्री वी० पी० अग्निहोत्री, डॉ० यदुवंशी, श्री रामधन शास्त्री, श्री अशोक जी आदि, कुछ प्रमुख लेखक तथा **प्रकाशक संघ** के प्रधान मन्त्री श्री वाचस्पति पाठक उपस्थित थे।

◆ ◆ ◆

प्रकाशन समाचार के अगस्त मास के अंक में शिक्षा-प्रसाराधिकारी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की ओर से उत्तर प्रदेश के गज़ट (हिन्दी) में प्रकाशित हुई एक सूचना की प्रतिलिपि छपी थी। सरकारी गज़ट में प्रकाशित सूचना को अक्षरशः तदनुरूप उतार लिया गया था।

इस सूचना में कहा गया था कि शिक्षा-प्रसाराधिकारी के कार्यालय में सरकारी खरीद के लिए विचारार्थ पुस्तकें ३० दिसम्बर, ५६ तक भेजी जा सकती हैं।

इसके काफ़ी दिनों बाद सुनने में आया कि पुस्तकें भेजने की अन्तिम तारीख ३० सितम्बर थी, न कि ३० दिसम्बर। गज़ट में प्रकाशित सूचना में दी गई तारीख में भूल हो गई थी। लेकिन तब **प्रकाशन समाचार** में इस भूल के निराकरण

(शेष पृष्ठ १८६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थी तथा पुस्तकालय

श्री द्वारका प्रसाद शास्त्री

'लहर प्रकाशन', प्रयाग से शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली 'पुस्तकालय संगठन तथा संचालन' नाम की पुस्तक के दो अध्याय यहाँ उद्धृत किये गए हैं।

भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद शिक्षा-पद्धति में सुधार करने के लिए डॉ० ए० लक्ष्मणस्वामी मुदालियर वाइस चांसलर, मद्रास यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन की नियुक्ति की गई। इस कमीशन में देश तथा विदेश के अनेक अनुभवी एवं प्रतिष्ठित विद्वान् सम्मिलित थे। इस कमीशन ने अखिल भारतीय पैमाने पर शिक्षा-सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया और देश के महान् शिक्षा-विशेषज्ञों से परामर्श करने के बाद उसने अपनी रिपोर्ट भारत सरकार के सामने पेश की। इस रिपोर्ट में स्कूल पुस्तकालय के सम्बन्ध में कहा गया है :

"साधारणतया प्रत्येक पाठ्य-पुस्तक यथासम्भव सुसंगत और संक्षेप में ज्ञान तथा सूचना प्राप्त कराने के लिए विशेष प्रणाली अपनाती है। इस प्रकार की प्रणाली में उसकी अपनी विशेषताएँ होती हैं। लेकिन किशोर मस्तिष्क के लिए यह प्रणाली पर्याप्त दीक्षा नहीं दे सकती जो बहुधा विस्तृततर और अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर विश्लेषण की माँग करता है तथा सम्बन्धों के विषय में अपेक्षाकृत अधिक सृजनशील मस्तिष्क से सोचता है जो कि पाठ्य-पुस्तक के लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों में नहीं मिल सकती। दूसरे, माध्यमिक स्कूलों में रुचि और सामान्य-ज्ञान का स्तर इस बुरी तरह से नीचा है—परीक्षाओं के लिए हाय-हाय करने वाले तथा लोक-सेवा-आयोग की रिपोर्ट इसके (सामान्य-ज्ञान) के लिए अकाट्य प्रमाण हैं—कि अपने विद्यार्थियों में सामान्य-अध्ययन की इच्छा और पढ़ने की आदत को प्रोत्साहन देना अत्यन्त प्राथमिकता देने का प्रश्न बन गया है। व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ यह है कि स्कूलों में सचमुच अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना की जाय और वैज्ञानिक और प्रभावशाली पुस्तकालय-सेवा की व्यवस्था की जाय। सही अर्थों में इसके बिना इस अध्याय में तथा दूसरे स्थान पर की गई सिफारिशों और प्रस्तावों को सम्भवतया कार्यान्वित नहीं किया जा सकता। व्यक्तिगत अध्यवसाय, सामूहिक अध्ययन की योजना चलाना, बहुत से शैक्षिक-व्यसन और शिक्षा-सम्बन्धी क्रिया-कलाप अच्छे सुचारु रूप से चलाने वाले पुस्तकालय के लिए आवश्यक शर्तें हैं। अतः प्रगतिशील प्रणालियों को व्यावहारिक रूप देने के लिए पुस्तकालय को एक आवश्यक यन्त्र समझना चाहिए।"[1]

लेकिन भारतीय स्कूलों में पुस्तकालय की स्थिति कितनी दयनीय है, इसका सजीव वर्णन करते हुए कमीशन का कथन है—

"प्रारम्भ में ही हम यह कह देना चाहते हैं कि अधिकांश स्कूलों में कोई भी ऐसा पुस्तकालय नहीं है जो पुस्तकालय के नाम को सार्थक कर सके। इनमें बहुधा पुस्तकें पुरानी हैं, वे समय की गति से पिछड़ी हुई और अनुपयुक्त हैं तथा उनका संचयन विद्यार्थियों की अभिरुचि से कोई सम्बन्ध नहीं रखता। इन्हें कुछ आलमारियों में बन्द कर दिया गया है। पुस्तकालय के कक्ष अनाकर्षक और संकीर्ण हैं। इनका अध्यक्ष प्रायः क्लर्क या कोई ऐसा उदासीन अध्यापक हुआ करता है जो इस काम को आंशिक रूप से करता है और जिसे न तो पुस्तकों से प्रेम है और न पुस्तकालय की कला से परिचय ही। इसलिए स्वभावतः ऐसे पुस्तकालय में कल्पनाशील और सुनियोजित पुस्तकालय-सेवा जैसी कोई वस्तु नहीं पाई जाती जो विद्यार्थियों के अन्दर अध्ययन करने तथा पुस्तकों के प्रति वास्तविक प्रेम उत्पन्न करने की प्रेरणा दे सके।"

१. हायर सेकेण्डरी एजुकेशन की रिपोर्ट : पृष्ठ ११०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

के

उच्चकोटि के नवीन अभिनव हिन्दी प्रकाशन

आलोचनात्मक अध्ययन

...न्दी काव्य विमर्श	: गुलाबराय	३।।)
...हित्य में सत्य तथा तथ्य	: अरुण एम० ए०	३)
...न्दी गद्य : विकास और विमर्श	: चन्द्रकान्त बाली शास्त्री	१।।)
...लोचना के पथ पर	: कन्हैयालाल सहल	४)

साहित्यक निबन्ध व कोष

...न्ध सागर	: यज्ञदत्त शर्मा	६)
...हित्यशास्त्र का परिभाषिक शब्द कोष	: राजेन्द्र द्विवेदी	८)

पत्रलेखन-जीवनी-संस्मरण

...दर्श पत्र लेखन	: यज्ञदत्त शर्मा	७।।)
...त्र लेखन कला	: बनारसी दास चतुर्वेदी	।।)
...द्मसिंह शर्मा के पत्र	: बनारसी दास चतुर्वेदी	६)
...मचन्द : घर में	: शिवरानी देवी 'प्रेमचन्द'	७।।)
...हापुरुषों के संस्मरण	: अरुण एम० ए०	३)

नाटक-एकांकी

...रास्त्री भोज	: देवराज दिनेश	१।।)
...माज के स्तम्भ (इब्सन)	सीताचरण दीक्षित	२)
...-पूर्व बंगाल	: बी० वी० वरेरकर	१।)
...वे	: हबीब तनवीर	१।)
...गार्गी के बाल नाटक	: पारितोष गार्गी	१।)
...आदिमयुग	: उदयशंकर भट्ट	४)

कथा साहित्य

...अधखिली (सचित्र)	: देवेश दाश	४)
...पाँच बेंत	: देवदूत विद्यार्थी, भारती विद्यार्थी	५)
...पर्णा	: गोविन्द वल्लभ पन्त	४)
...जी जी जी	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	२।।)
...पुनरुद्धार	: कंचनलता सब्बरवाल	३)
...निशिकान्त	: विष्णु प्रभाकर	५)
...झते दीप	: दयाशंकर मिश्र	३)
...कला का पुरस्कार	: पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'	३)

मनोरञ्जन विनोद

...सचित्र व्यंग-विनोद	: अरुण एम० ए०	६।।)
...गप्पों का खजाना	: अरुण एम० ए०	१)

धार्मिक

...कुरान और धार्मिक मतभेद	: सैयद जहूरुल हुसैन	२)

लोक साहित्य

रूसी लोक साहित्य	: वीर राजेन्द्र ऋषि	४)

काव्य

दर्द दिया है	: नीरज	५)
काव्य धारा	: शिवदान सिंह चौहान	६)
प्रथम-सुमन	: सत्यवती शर्मा	१)
क़दम-क़दम बढ़ाये जा	: गोपाल प्रसाद व्यास	१।)
अजी सुनो (सचित्र)	: गोपाल प्रसाद व्यास	५)
जिप्सी (पुश्किन)	: अनु० वीर राजेन्द्र ऋषि	२)
काव्य संग्रह	: दशरथ ओझा	२)

इतिहास

भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास	: हरिदत्त वेदालंकार	१।।)
रजवाड़ा (सचित्र)	: देवेश दास	५)
पृथ्वी परिक्रमा	: सेठ गोविन्द दास	१२)
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त	: इन्द्र विद्यावाचस्पति	७)
मुग़ल साम्राज्य की जीवन सन्ध्या (सचित्र)	: राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह (प्रैस में)	

राजनीतिक

राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धान्त	: योगेन्द्र कुमार मल्लिक	६)
नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त	: के० आर० बम्बवाल	५)

भूगोल

भूगोल के भौतिक आधार	: रामस्वरूप वशिष्ठ	६)
मानचित्र प्रवेशिका	: रामस्वरूप वसिष्ठ	३)

संगीत

उत्तरीय संगीत शास्त्र	: पतंजली देव शर्मा	२)

टैक्नीकल साहित्य

सैन्ट्रीफ्यूगल पम्पस (सचित्र)	: रामेश्वर दयाल	३)
कला की परख (सचित्र)	: के० के० जसवानी	४)

शिकार साहित्य

वनराज के राज में (सचित्र)	: श्री विराज	४)

विज्ञान

विज्ञान और सभ्यता	: रामचन्द्र तिवारी	५)

गृहस्थोपयोगी

बहन को सीख	: मुकुट बिहारी वर्मा	२)

आत्माराम एण्ड सन्स, प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमीशन ने इस बात को अनुभव किया है कि पुस्तकालयों की इस दुर्दशा का मूल कारण यह है कि शिक्षा-विभाग के अधिकारियों तथा स्कूल के प्रधानाध्यापकों ने अभी तक इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं अनुभव की। कमीशन ने लिखा है :

"जो बात परिस्थिति को असाध्य बना देती है, वह यह है कि अधिकांश अध्यापक और प्रधानाध्यापक और यहाँ तक कि शिक्षा के प्रशासक और अधिकारीगण भी यह नहीं सोचते कि ऐसी अवस्था कितनी असन्तोषजनक है और इसलिए उनके अन्दर इस सिलसिले में जल्दी करने की कोई प्रवृत्ति है ही नहीं।"[२]

उपर्युक्त उद्धरणों से सिद्ध हो जाता है कि कमीशन की दृष्टि में भारतीय विद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि उनकी स्थिति में सुधार किया जाय और विद्यार्थियों में पुस्तकालय-प्रेम (Library Habit) उत्पन्न किया जाय जिससे उनका बौद्धिक स्तर ऊँचा उठ सके।

पुस्तकालय-प्रेम कैसे उत्पन्न हो ?

जब यह बात सिद्ध हो जाती है कि स्कूल-पुस्तकालय विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए एक कल्याणकारी अङ्ग है तो प्रश्न उठता है कि विद्यार्थियों में पुस्तकालय-प्रेम कैसे उत्पन्न किया जाय ? उनमें Library Habit कैसे पैदा किया जाय जिससे वे स्वतः पुस्तकालय से लाभ उठाते रहें। यह एक अच्छी आदत है और हम सभी जानते हैं कि आदत बनाने के लिए कुछ कोशिश करनी पड़ती है जैसे कि अच्छे फलदार या फूल वाले वृक्ष को लगाने में। बुरी आदतें तो मनुष्य में उसी तरह पैदा हो जाती हैं जैसे खेत में फालतू घास-फूस (Weeds)। अतः यह अच्छी आदत विद्यार्थियों में छोटी कक्षा से ही डालनी चाहिए। इसके लिए पुस्तकालय-अध्यक्ष और अध्यापकों का पारस्परिक सहयोग आवश्यक है। पुस्तकालय-अध्यक्ष स्कूल के सच्चे उद्देश्य की पूर्ति में सहायता करे और अध्यापक-गण विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए इस प्रकार तैयार करें और उन्हें ऐसी सूचनाएँ दें जिससे विद्यार्थियों में पुस्तकालय-प्रेम का विकास हो।

इसके लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं :

(१) पुस्तकालय की प्रक्रिया से सामान्य परिचय होना,
(२) अध्ययन में पथ-प्रदर्शन मिलना,
(३) प्रचार और प्रोत्साहन।

(१) पुस्तकालय की प्रक्रिया से सामान्य परिचय होना—प्रतिवर्ष स्कूल और कालेज के खुलने पर जब नये विद्यार्थियों का प्रवेश हो जाय तो लाइब्रेरियन एक 'परिचय सप्ताह' का आयोजन करे। उस सप्ताह में बारी-बारी से प्रत्येक कक्षा के नये विद्यार्थियों को बुलाकर उनको पुस्तकालय के उपयोग करने की विधि बताये। वह विद्यार्थियों को पुस्तक-सूची देखने की विधि, पुस्तकों को आलमारियों से अपनी रुचि के अनुसार चुनने और वापस लौटाने की निर्गत-प्रणाली को समझावे। पुस्तकें आलमारियों में किस क्रम से रखी गई हैं, इसकी एक मोटी रूप-रेखा समझा दे जिससे वे अपनी रुचि की पुस्तकें चुनते समय शेल्फ़ की अन्य पुस्तकों को अस्त-व्यस्त न कर सकें। उन्हें ज्ञान हो जाय कि गलत स्थान पर रखने से पुस्तक खो जाती है और फिर आवश्यकता के समय नहीं मिल सकती। इसी समय उन्हें पुस्तकालय के नियम और उनके पालन करने की आवश्यकता बता दी जाय। उन्हें पुस्तकों के उपयोग की विधि बता दी जाय जिससे वे उन पर चिह्न बनाना, मार्जिन पर लिखना, पन्ने मोड़ना, या आवश्यक अंश फाड़ना आदि जैसे दुर्गुणों से दूर रहें और सावधानी से पुस्तकों का उपयोग करते रहें। इसी समय पुस्तकालय को स्वच्छ बनाये रखने के लिए पुस्तकालय-स्वास्थ्य (Library Hygiene) सम्बन्धी बातें भी बताई जायँ जिससे पुस्तकालय में आने पर वे कागज के टुकड़े इधर-उधर न फेंकें, स्याही के दाग-धब्बे फ़र्श पर न डालें। दीवारों पर कुछ अपशब्द न लिखें और भविष्य में शिष्टतापूर्वक नियमानुसार पुस्तकालय का उपयोग करें।

(२) अध्ययन में पथ-प्रदर्शन मिलना—जब विद्यार्थी पुस्तकालय से पूरी तरह परिचित हो जाते हैं तो उन्हें वहाँ जाने और उसका उपयोग करने में हिचक या झिझक नहीं रह जाती। लेकिन इसके बाद यह आवश्यक है कि पढ़ने में उनको पथ-प्रदर्शन भी मिले।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् ने इस सम्बन्ध में सिफारिश

२. हायर सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशन की रिपोर्ट : पृष्ठ ११०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि "अध्यापक तथा प्रधानाचार्य अपने विद्यार्थियों के मान्य अध्ययन रूपी नाड़ी पर सदैव अपनी उँगली रखे । कमीशन का कथन है कि अधिकांश अध्यापक वास्तव यह नहीं देखते कि विद्यार्थीगण क्या पढ़ रहे हैं या कुछ भी रहे हैं । इसके लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकालय पुस्तकें पढ़ने के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के लिए एक लेखा Record) रखा जाय । एक रजिस्टर में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए कुछ पृष्ठ छोड़ दिए जायँ और उनमें तारीख के अनुसार की पढ़ी पुस्तकों को लिख लिया जाय जिससे एक नजर जरूरत पड़ने पर यह ज्ञात हो सके कि किस विद्यार्थी ने कितनी पुस्तकें पढ़ी हैं और तदनुसार उसको आवश्यक सलाह और प्रोत्साहन दिया जाय । दूसरे, यह कि प्रत्येक विद्यार्थी को एक 'पुस्तकालय डायरी' रखने के लिए कहा जाय जिसमें वह जो पुस्तकें पुस्तकालय से पढ़े, उसका नाम (लेखक सहित) तारीख क्रम से लिखता जाय । उसमें वह संक्षिप्त उद्धरण और सारांश भी लिखे जो उसे सुन्दर लगें । उसके कुछ समय बाद वह उन पुस्तकों की संक्षिप्त आलोचना और मूल्यांकन भी लिख सकता है । यदि इस प्रकार की डायरी वह स्कूल की पढ़ाई के अंतिम वर्ष तक लिखता जाय तो यह उसके बौद्धिक विकास और साहित्यिक उन्नति का चित्र उपस्थित कर सकेगी जो कि न केवल उसके छात्र-जीवन के लिए मूल्यवान् होगी अपितु बाद के जीवन में भी उपयोगी होगी ।"[1]

"विद्यार्थियों को घर पर स्कूल का काम देने के लिए नरेन्द्रदेव कमेटी ने बहुत दबे हुए शब्दों में बहुत सीमित रूप में सिफारिश की है । लेकिन सत्य तो यह है कि अधिकांश विद्यार्थियों की घरेलू स्थिति अध्ययन के उपयुक्त नहीं है । वहाँ उन्हें शोर-गुल के बीच काम करना पड़ता है और कोई अच्छे साधन नहीं रहते । अतः अच्छा तो यह हो कि टाइम-टेबुल में कुछ फुरसत के घण्टे निकाल लिए जायँ जिनमें विद्यार्थी स्कूल-लाइब्रेरी में जाकर पुस्तकालय-अध्यक्ष और अध्यापक की सहायता से काम कर सकें । इस प्रकार उनमें पुस्तकालय के उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ेगी और पुस्तकालय उनके लिए एक प्रयोगशाला-सी बन जायगी ।"[2]

1. नरेन्द्र देव कमेटी की रिपोर्ट अन्तिम अंश ।
2. हायर सेकेण्डरी एजुकेशन कमेटी की रिपोर्ट, पेज ११२ ।

(३) प्रचार और प्रोत्साहन—पुस्तकालय की सफलता और सार्थकता इसी में है कि विद्यार्थी उसका भरपूर उपयोग करें । वे ही पुस्तकालय के उपभोक्ता हैं । अतः हर प्रकार के प्रचार और प्रोत्साहन द्वारा उनको पुस्तकालय की ओर आकृष्ट करना चाहिए । यहाँ पर यह पुस्तकालय-अध्यक्ष का कर्त्तव्य है कि वह पहले ऐसा प्रचार करे कि अधिक-से अधिक विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करने आने लगें । इसके वह निम्नलिखित उपाय कर सकता है :

(क) समय की माँग के अनुसार पुस्तकों तथा अन्य अध्ययन-सामग्री को पुस्तकालय में मँगाकर तैयार रखे और आई हुई सामग्री को -सूचना-बोर्ड पर लगता रहे और कक्षा में उसकी घोषणा करावे ।

(ख) स्कूल की पत्रिका में आवश्यक सूचना और लेख लिखे जिससे सभी छात्रों को सरलता से जानकारी प्राप्त हो सके ।

(ग) उत्तम पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन करे । प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों को जो आवश्यकता समझ पड़े,

(शेष पृष्ठ २०६ पर)

रामचरितमानस

(एकमात्र प्रामाणिक संस्करण)

सं० डा० माताप्रसाद गुप्त, एम० ए०, डी० लिट०

यह संस्करण मानव की सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर बड़े परिश्रम से तैयार किया गया है, और इसमें मानस के पाठ की चार शाखाओं के पाठांतर भी दे दिये गए हैं । थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं । आकार डिमाई अठपेजी ।

१. विशिष्ट संस्करण (पिंक बैंक कागज) ५)
२. सस्ता संस्करण (रफ़ कागज) ११)

पुस्तक विक्रेताओं के लिए विशेष सुविधाएँ हैं ।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मंच

जियॉलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इण्डिया, ३७ चौरंगी, कलकत्ता के अधिकारी श्री पी० जी० अड्याकर ने **जीवन-विकास** (एवोल्यूशन ऑफ़ मैन) नाम की एक मौलिक कृति की रचना की है तथा एच० एच० रीड लिखित **जियॉलोजी : एन इण्ट्रोडक्शन-टु-अर्थ हिस्ट्री** का हिन्दी-अनुवाद भी प्रस्तुत किया है। इन वैज्ञानिक पाण्डुलिपियों का प्रकाशन करने के इच्छुक प्रकाशक उपरिलिखित पते पर लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

डॉक्टर कुन्दनलाल अग्निहोत्री, जो **यज्ञ चिकित्सा**, **आरोग्य-शास्त्र**, **आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा** आदि पुस्तकों के सुप्रसिद्ध लेखक तथा अनुभवी डॉक्टर हैं, के पास निम्नलिखित पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं : **आहार चिकित्सा**, पृष्ठ लगभग ४००, केवल आहार-परिवर्तन रोगों से किस प्रकार बचा तथा उन्हें किस प्रकार दूर किया जा सकता है, इन तथ्यों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक। **महात्मा जी की ग्रामीण चिकित्सा**, पृष्ठ-संख्या लगभग १००, ग्रामीण अपने ग्राम में ही प्राप्त औषधियों से किस प्रकार अपनी चिकित्सा स्वयं कर सकते हैं, इसका उल्लेख करने वाली पुस्तक। **विश्व शान्ति स्थापक पंचशील**, भारत के प्रधान मन्त्री श्री नेहरू के पंचशीलों का विवेचन और निरूपण, पृष्ठ-संख्या लगभग ६०।

डॉक्टर अग्निहोत्री की **यज्ञ चिकित्सा** (यक्ष्मा का यज्ञ द्वारा इलाज) तथा **आरोग्य शास्त्र** के द्वितीय संस्करण के लिए भी प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

◈ ◈ ◈

(पृष्ठ १८१ का शेष)

का अवसर नहीं था क्योंकि सितम्बर मास का अंक विशेषांक था और उसके प्रकाशन तक भी अन्तिम तारीख का निश्चित् रूप से हम पता नहीं लगा सके। हमें मालूम हुआ है कि उत्तर प्रदेश के सरकारी गजट से उद्धृत इस सूचना में, तारीखों के सम्बन्ध में जो सरकारी भूल रह गई थी, उससे कई एक प्रकाशकों को हानि पहुँची है और वे अपनी पुस्तकें शिक्षा-प्रसाराधिकारी के कार्यालय में सबमिट नहीं कर सकें।

यदि शिक्षा-प्रसाराधिकारी के कार्यालय ने इस भूल का प्रतिवाद समय रहते ही गज़ट (हिन्दी) में प्रकाशित करा दिया था (जिसका हमें ज्ञान नहीं है) तो उचित है कि जो प्रकाशक इस सरकारी भूल के कारण भ्रमवश विचारार्थ पुस्तक नहीं भेज सके, उन्हें पुस्तकें भेजने का अवसर दिसम्बर तक अवश्य दिया जाय।

◈ ◈ ◈

प्रकाशन समाचार के सितम्बर, ५६ के **विशेषांक** के पृष्ठ पर उन प्रकाशकों की सूची दी गई थी जिनकी पुस्तकें बाल, किशोर तथा प्रौढ़ोपयोगी पुस्तकों की सूची में सम्मिलित की गई थीं। भूल से प्रकाशकों की इस सूची से ओरिएण्टल बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली के नाम का उल्लेख रह गया यद्यपि उनकी पुस्तकें सूची में सम्मिलित थीं। इस भूल को पाठक अपनी प्रतियों में सुधार लें।

◈ ◈ ◈

७ नवम्बर, १९५६ से वर्तमान मध्यप्रदेश के नागपुर, बुलढाना, वल, वर्धा, अकोला तथा अमरावती के पुस्तक-विक्रेता **राजकमल प्रकाशन** के इलाहाबाद-कार्यालय के स्थान पर बम्बई-कार्यालय से ही पुस्तकें मँगवा सकेंगे। पुस्तक-विक्रेताओं से प्रार्थना है कि अपने आर्डर इस तारीख के बाद निम्नलिखित पते पर भेजा करें : राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, हिमालय हाउस, हार्नबी रोड, बम्बई १।

◈ ◈ ◈

उपन्यास-सम्राट् श्री प्रेमचन्द की 'सेवा-सदन', 'प्रेमाश्रम', 'प्रेमपचीसी', 'प्रेमपूर्णिमा', 'सप्तसरोज', 'महात्मा शेख सादी', 'संग्राम', 'टॉलस्टाय की कहानियाँ', 'प्रेम चतुर्थी' और 'प्रेम प्रसून' आदि दस पुस्तकों के कॉपीराइट का विवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी और सरस्वती प्रेस, बनारस के बीच ज़िला जज, इलाहाबाद की अदालत में अरसे से चल रहा था। विद्वान् न्यायाधीश ने इस प्रकरण में प्रेमचन्द के पुत्रों को उनकी उक्त पुस्तकों के कॉपीराइट का अधिकारी निर्णीत करते हुए यह फैसला दिया कि हिन्दी पुस्तक एजेन्सी को ऊपर लिखी दस पुस्तकें प्रकाशित करने का कोई अधिकार नहीं है। साथ ही हिन्दी पुस्तक एजेन्सी को आदेश दिया गया है कि वह आगे से इन पुस्तकों को न छापें और जितनी प्रतियाँ उनके पास हों वे सब-की-सब लौटा दें। भविष्य में इन पुस्तकों को छापने पर वे अपराधी समझे जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चकोटि का साहित्य

उत्तर प्रदेश राज्य द्वारा पुरस्कृत

ऐतिहासिक

ालिदास का भारत [भाग २] : श्री भगवतशरण उपाध्याय ८)
ौलुक्य कुमारपाल : श्री लक्ष्मीशंकर व्यास ४)
ण्डहरों का वैभव : श्री मुनि कान्तिसागर ६)
ोज की पगडण्डियाँ : श्री मुनि कान्तिसागर ४)

उर्दू शायरी

ेरो-शायरी : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
ेरो-सुख़न [भाग १] : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)

कविता

र्द्धमान [महाकाव्य] : श्री अनूप शर्मा ६)
िलन यामिनी : श्री हरिवंशराय बच्चन ४)
ूप के धान : श्री गिरिजाकुमार माथुर ३)

कहानियाँ

ंघर्ष के बाद : श्री विष्णु प्रभाकर ३)
हला कहानीकार : श्री रावी २॥)

विविध

द्विवेदी पत्रावली : श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' २॥)
ज्योत रश्मि [एकांकी] : डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
ैदिक साहित्य : पं० रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
ारतीय ज्योतिष : श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)
्वनि और संगीत : प्रो० ललितकिशोर सिंह ४)

संस्मरण, रेखाचित्र

मारे आराध्य : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
ंस्मरण : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
ेखाचित्र : श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)

[विन्ध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत]

१९५६ का नया प्रकाशन

संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद : श्री अत्रिदेव विद्यालंकार ३)
रक्तराग : श्री देवेशदास आई० सी० एस० ३)
और खाई बढ़ती गई : भारतभूषण अग्रवाल २॥)
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? : श्री रावी २॥)

१९५४-५५ के नये प्रकाशन

जिन खोजा तिन पाइयाँ : श्री गोयलीय २॥)
खेल-खिलौने : श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन : श्री आनन्दप्रकाश जैन ३)
शेरो-सुख़न [भाग २, ३, ४, ५] श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय १२)
अध्यात्म पदावली : श्री राजकुमार जैन एम० ए० ४॥)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान [द्वि० सं०] : श्री सम्पूर्णानन्द १)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन [२] : पं० नेमिचन्द्र शास्त्री ५॥)
ज़िन्दगी मुसकराई : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
शरत् के नारी पात्र : श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प : श्री सिद्धनाथ कुमार एम०ए० २॥)

अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन

मुक्तिदूत [उपन्यास] : श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
गहरे पानी पैठ : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे :
धरती के फूल : श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' २)
मेरे बापू : श्री हुकमचन्द्र बुखारिया 'तन्मय' २॥)
पंच प्रदीप : श्रीमती शांति एम० ए० २)
भारतीय विचार धारा : श्री मधुकर एम० ए० २)
जैन जागरण के अग्रदूत : श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
ज्ञान गंगा [सूक्तियाँ] श्री नारायणप्रसाद जैन ६)

विस्तृत जानकारी के लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाइए

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधूरी पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने का नया रोग

सरदारमल थानवी

लेखक ने एक ऐसी प्रकाशकीय प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है जो विद्यार्थियों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के लिए अभिशाप है।

गत वर्ष आगरा के एक प्रकाशक बन्धु ने एक पाठ्य-पुस्तक के कुछ पृष्ठ छापे और उस पर मुखपृष्ठ आदि लगाकर और पूरा मूल्य छापकर बाजार में बेचना आरम्भ कर दिया। पुस्तक में एक छोटी-सी छपी हुई पर्ची अवश्य लगा दी गई थी जिसमें पुस्तक का शेष भाग निश्चित अवधि बाद उक्त पर्ची भेजने पर दे देने को लिखा था।

पुस्तक मँगवाने वाले पुस्तक-विक्रेताओं को ऐसी अपूर्ण पुस्तक भेजने की कोई सूचना नहीं दी गई पर उनसे पूरी पुस्तक का मूल्य वसूल कर लिया गया। ऐसा करके प्रकाशक ने तो अपूर्ण पुस्तक का पूर्ण मूल्य प्राप्त कर शेष भाग बिना पूँजी लगाये छाप लिया, पर छात्रों एवं पुस्तक-विक्रेताओं को कितना कष्ट हुआ यह शायद उसने अनुभव नहीं किया।

पाठ्य-पुस्तक होने से पहले-पहले तो पुस्तक बेचने में विशेष कठिनाई रही, पर कुछ समय पश्चात् जब छात्रों को शेष भाग प्राप्त करना सुलभ न हुआ तो उनमें असन्तोष बढ़ने लगा। फलतः विक्रय पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। परन्तु जब इसी पुस्तक का शेष भाग प्रकाशित होने के साथ-साथ सम्पूर्ण पुस्तक सजिल्द रूप में प्रकाशित हुई और वह भी उसी मूल्य में जिसमें कि पहले खरीदने वाले छात्रों को अधूरी, अजिल्द एवं दो अलग-अलग भागों में मिली तो उस पहले की अपूर्ण पुस्तक का विक्रय ठप्प हो ही गया पर जिन छात्रों ने नई सजिल्द पुस्तक देखी उन्होंने अपनी अजिल्द रद्दी पुस्तकें लौटाकर नई पुस्तक प्राप्त करने के लिए पुस्तक-विक्रेताओं से झगड़ना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार दुकानदार एवं उनके नियमित ग्राहकों में किट-किट व मनोमालिन्य पैदा हुआ और वह भी दुकानदार व छ[ात्रों] के बिना किसी दोष अथवा अपराध के।

छात्रों को इससे भी अधिक कष्ट इस कारण हुआ कि [...] लोगों की असावधानी से पुस्तक में लगी पर्ची गुम हो [...] अथवा किसी सहपाठी द्वारा फाड़ ली गई, फलतः विक्रेता[...] को शेष भाग प्राप्त न हो सका। कुछ छात्रों के अभिभाव[कों] की नौकरी अन्य स्थान पर हो जाने से उन्हें अपने परिव[ार] सहित अन्यत्र जाना पड़ा और छात्र को वह शेष भा[ग] मँगवाना दुर्लभ हो गया। विशेषतः कष्ट उन ग्रामीण छा[त्रों] को हुआ, जिन्होंने कि किसी व्यक्ति द्वारा शहर से पुस्त[क] मँगवाई जिसका कि पुस्तक-विक्रेता से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्[ध] न था। उन पुस्तक-विक्रेताओं को और भी अधिक क[ष्ट] उठाना पड़ा जो कि प्रकाशक से पुस्तक न मँगवाकर अन्[य] पुस्तक-विक्रेताओं से खरीद करते हैं, और फिर उन[के] ग्राहकों को तो और भी अधिक कष्ट उठाना पड़ा।

इस प्रकार इस अधूरी पाठ्य-पुस्तकों के रोग ने पुस्तक विक्रेताओं और छात्रों को कई प्रकार से हानि पहुँचाई है परन्तु प्रकाशक को इससे कितना लाभ हुआ हम नहीं कह सकते।

अन्य भी कई प्रकाशकों द्वारा अनेक ऐसी ही पाठ्य पुस्तकें नोट्स एवं सहायक पुस्तकें जयपुर, आगरा, दिल्ली आदि अनेक स्थानों से निकल चुकी हैं और निकल रही हैं, जिससे यह तो सिद्ध होता ही है कि प्रकाशकों को इस प्रणाली से अधिक लाभ होता है, परन्तु विद्यार्थियों को

(शेष पृष्ठ २०६ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों का कॉपीराइट

आर० ई० बार्कर

युनेस्को द्वारा प्रकाशित "बुक्स फ़ॉर ऑल" नामक पुस्तक से कॉपीराइट सम्बन्धी यह लेख अनूदित किया गया है। कॉपीराइट सम्बन्धी नया कानून लोक-सभा में पेश है, इस पृष्ठभूमि में यह लेख महत्त्वपूर्ण है।

(अक्तूबर अंक के पृष्ठ १७० से आगे)

हवाना कन्वेन्शन—जान पड़ता है कि मोन्तेवीदिओ समझौते का सिद्धान्त मूल देश के कानून को मान्यता देता है। सदस्य देश इस शर्त पर सुरक्षा देते हैं कि प्रथम प्रकाशन के देश में रस्में पूरी कर ली गई हों और पुस्तक की प्रत्येक प्रति में कॉपीराइट की सूचना दे दी गई हो। समझौते की स्वतन्त्र व्यवस्थाओं के अनुसार समझौते में शामिल राज्य लेखकों को सुरक्षा देते हैं।

वाशिंगटन कन्वेन्शन—समझौते की स्वतन्त्र व्यवस्थाओं के अनुसार समझौते में शामिल राज्य सुरक्षा देते हैं और 'यह वह सुरक्षा है जिसे समझौते में शामिल राज्य अपने कानूनों के अनुसार अपने नागरिकों को इस समय देते हैं अथवा बाद में देंगे' (तथाकथित राष्ट्रीय बर्ताव)। जिस देश में सर्वप्रथम सुरक्षा प्राप्त की गई होगी। उसी के कानून के अनुसार सुरक्षा की अवधि होगी, परन्तु जिस देश में सुरक्षा प्राप्त करने का दावा पेश किया गया होगा उसकी अवधि से ज्यादा नहीं होगी। जब कोई देश कॉपीराइट की दो क्रमिक अवधियाँ स्वीकार करता है तो आदान-प्रदान के लिए दोनों अवधियों का योग काम में लाया जायगा। रस्में प्रथम प्रकाशन के देश में उसके कानूनों के अनुसार पूरी करनी पड़ती हैं।

जहाँ तक बर्न समझौते का प्रश्न है केवल 'रोम मसविदा' (Rome Text) पर यहाँ विचार करने की जरूरत है क्योंकि व्यवहार्यतः इसके सभी पिछले समझौते, कुछ विशेष अपवादों को छोड़कर जिनका उल्लेख नीचे किया गया है, रद्द हो जाते हैं। 'ब्रुसेल्स मसविदा' का जो जनवरी १९५६ तक यूनियन के केवल १८ सदस्यों के बीच लागू होता था, जिक्र बाद में किया जायगा। यह समझौता 'राष्ट्रीय बर्ताव' का सिद्धान्त लागू करता है। आमतौर से 'रोम मसविदा' लेखक के जीवन तक और उसके बाद ५० वर्ष तक सुरक्षा देता है। परन्तु व्यक्तिगत मामलों में अवधि उस देश के कानून के अनुसार नियन्त्रित होती है जिसमें सुरक्षा प्राप्त करने का दावा किया जाता है, परन्तु वह अवधि पुस्तक के मूल देश में निर्धारित अवधि से ज्यादा नहीं हो सकती। कुछ शर्तों के साथ अनुवाद-अधिकार को भी उसी अवधि के लिए सुरक्षा मिलती है। बर्न यूनियन के किसी भी सदस्य देश में सर्वप्रथम प्रकाशित पुस्तकों को, लेखक की नागरिकता का बिना विचार किये, यूनियन के समस्त सदस्य देशों में बगैर रस्में पूरी किये अथवा कॉपीराइट की सूचना दिये, अपने-आप सुरक्षा मिल जाती है।

प्रथम प्रकाशन तथा 'साइमल्टेनियस' प्रकाशन

उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में पुस्तक का मूल देश आमतौर से प्रथम प्रकाशन का देश समझा जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि लेखक किसी अमेरिका गणराज्य का नागरिक न होते हुए भी, ऐसे गणराज्य में सर्वप्रथम अपनी पुस्तक प्रकाशित करके सुरक्षा का दावा कर सकते हैं।

बर्न समझौते के अन्तर्गत 'प्रथम प्रकाशन' में वे भी पुस्तकें आती हैं जो बर्न यूनियन के बाहर प्रकाशित हुई हों। परन्तु 'साथ-साथ' बर्न यूनियन के किसी सदस्य देश में भी प्रकाशित हुई हों। ब्रिटेन के कानून के अनुसार 'एक साथ' प्रकाशन का अर्थ प्रथम प्रकाशन के बाद चौदह दिन के अन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एजेन्ट ध्यान दें

हमारे यहाँ हर माह दो विश्व विख्यात लेखकों के उपन्यास छपते हैं

भारी कमीशन ३३⅓ प्रतिशत

हमारे नए अंक जो छपकर तैयार हैं आज ही मंगाइए, डाक खर्च माफ़

पुस्तकों के नाम	पृष्ठ सं०	मूल्य
छोटी माँ	८०	॥)
छुटकारा	८०	॥)
पन्डित जी	११८	॥–)

तीनों पुस्तकों के लेखक

शरतचन्द चटर्जी

दुर्गेशनन्दिनी	१६८	।॥)

लेखक

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय

तिलस्मी गढ़ी का रहस्य	९६	॥)
अपना दूध	२००	१)
नवीन जासूस	१४४	।॥)

इन सभी उपन्यासों की लगभग फिल्म बन चुकी है कृपया आर्डर के साथ २)रु० पेशगी भी भेजें।

सुरेन्द्र एण्ड को०

कटरा, इलाहाबाद

प्रकाशन। उदाहरणस्वरूप ब्रिटेन उस पुस्तक को पूर्ण कॉपी राइट सुरक्षा देता है जो पहले अमेरिका संयुक्त राज्य में प्रकाशित हुई हो, बशर्ते वह चौदह दिन के अन्दर ब्रिटेन में 'प्रकाशित' कर दी जाय। बर्न समझौते का 'रोम मसविदा' 'साथ-साथ' प्रकाशन को स्पष्ट नहीं करता परन्तु विभिन्न यूरोपीय न्यायालयों ने 'साथ-साथ' प्रकाशन की 'उसी दिन हुए' प्रकाशन के रूप में व्याख्या की है। ब्रुसेल्स मसविदे में जो अभी समस्त यूनियन में लागू नहीं, 'साथ-साथ' प्रकाशन की प्रथम प्रकाशन के बाद ३० दिन के अन्दर प्रकाशन के रूप में व्याख्या की गई है।

ऊपर के पैरा से अन्तिम दो वाक्यों के पहले के वाक्य में 'प्रकाशित' शब्द को दो अल्प-विरामों के अन्दर रखा गया है, क्योंकि इस शब्द की व्याख्या बहुत महत्त्वपूर्ण है। ब्रिटेन के कानून के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तक वह है जो किसी भी उचित माँग की पूर्ति के लिए पर्याप्त संख्या में जनता को सुलभ कर दी जाय। कानूनी परिभाषा के रूप में पुस्तक इतनी संख्या में सुलभ कर दी जाय कि वह 'दिखावा' (Colourable) मात्र न रहे। (यानी एक या दो प्रतियाँ सुलभ करना और यह दिखाना कि काफी संख्या में मौजूद हैं, पर्याप्त नहीं है)।

इसलिए ब्रिटेन के कानून के अन्तर्गत प्रथम अमेरिकी संयुक्त राज्य में प्रकाशित पुस्तक की प्रतियाँ ब्रिटेन में आयात की जा सकती हैं और अगर उनको ईमानदारी के साथ अमेरिकी संयुक्त राज्य के प्रकाशन के चौदह दिन के अन्दर बिक्री के लिए प्रस्तुत कर दी जाती हैं, तो पुस्तक को कॉपीराइट की सुरक्षा मिलेगी। यद्यपि कानूनी दृष्टि से नहीं परन्तु व्यावहारिक यही बात कुछ शर्तों के साथ कनाडा में आयात की जाने वाले अमेरिकी संयुक्त राज्य की पुस्तकों के सम्बन्ध में भी सच है। ब्रिटेन में इस प्रकार कॉपीराइट सुरक्षा-प्राप्त पुस्तकों को बहुत ही कम अपवादों के साथ अप्रत्यक्ष रूप से समस्त बर्न यूनियन में और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल (British Commonwealth) में सदैव सुरक्षा मिलती है।

इसके बावजूद यूरोप महाद्वीप में प्रयुक्त 'प्रकाशित' शब्द की व्याख्या के अनुसार वस्तुतः उनको सुरक्षा प्राप्त करने का हक नहीं। यूरोपीय महाद्वीप में प्रचलित धारणा केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

सम्पूर्ण शरत् साहित्य

अब तक इस 'सुलभ साहित्य-माला' में ३५ भाग प्रकाशित हो चुके हैं, प्रत्येक भाग का मूल्य १॥) मात्र है। अन्तिम ५ भागों में अमर कथा-शिल्पी स्व० शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय की निम्नलिखित रचनाएँ संग्रहीत हैं :

३१. शरत्-निबन्धावली ३२-३३. देना पावना और नया विधान

३४-३५. शेष-परिचय

द्विजेन्द्र नाटकावली

: श्रेष्ठ नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय के नाटकों के प्रामाणिक अनुवाद :

ऐतिहासिक				पौराणिक		सामाजिक	
चन्द्रगुप्त	१)	शाहजहाँ	१॥)	भीष्म	१॥।)	भारत रमणी	१॥)
दुर्गादास	१॥)	नूरजहाँ	१॥।)	सीता	१)	उस पार	१॥।)
मेवाड़ पतन	१≡)	राणा प्रताप	२)	अहल्या	१)	सूम के घर धूम	।=)

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

औरंगज़ेब :	ले० सर जदुनाथ सरकार	७॥)
शिवाजी :	" "	२॥)
हिन्दी साहित्य की भूमिका :	ले० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी	३॥)
कबीर :	" "	४)
बाणभट्ट की आत्मकथा :	" "	५।)
प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद :	" "	३)
पाटण का प्रभुत्व :	ले० क० मा० मुन्शी	३)
गुजरात के नाथ :	" "	४॥)
राजाधिराज :	" "	४॥)

हमारे नवीनतम प्रकाशन

जैन साहित्य और इतिहास :	ले० श्री नाथूराम प्रेमी	६)
कालिदास :	" पंडित विष्णु वि० मिराशी	५)
शिक्षा की समस्याएँ :	" श्रीप्रसाद एम० ए०	२)
पदमावत का काव्य-सौन्दर्य :	" श्री शिवसहाय पाठक	५)
कालिदास और भवभूति :	" श्री द्विजेन्द्रलाल राय	३)

: हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों का पूरा सूचीपत्र मँगाइये :

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, हीराबाग, बम्बई—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

‘सुलभ की गई’ ही नहीं है, वह ‘जारी की गई’ (यानी उत्पादित) भी है। उदाहरणस्वरूप बर्न समझौते के रोम तथा ब्रुसेल्स दोनों मसविदों में अनुच्छेद ४ में (Les oeuvres editees) फ्रान्सीसी पद है। इस वाक्यांश की विशुद्ध व्याख्या पर नेदरलैंड के न्यायालयों ने, द्वितीय विश्वयुद्ध के कुछ ही पहले एक डच प्रकाशक के दावे को स्वीकार किया था जिसने मारगरेट मिचेल (Margaret Mitchell) के ‘गॉन विद द विन्ड’ (Gone with the Wind) का अनधिकृत संस्करण प्रकाशित किया था। न्यायालयों ने यह राय जाहिर की कि केवल अमेरिकी संयुक्त राज्य के संस्करण की प्रतियाँ बर्न यूनियन में बिक्री के लिए रखी गई हैं और इसलिए पुस्तक का कॉपीराइट यूनियन में नहीं है। इसलिए बर्न यूनियन कॉपीराइट पाने के जिस तरीके को ‘छिपा तरीका’ कहते हैं पूरी तौर से सुरक्षित नहीं है।

सुरक्षा की अवधियाँ

‘सुरक्षा की अवधि’ का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इस सिलसिले में ब्रिटेन के कानून की विशेषता उल्लेखनीय है क्योंकि ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के सभी सदस्य देशों में यह पाई जाती है और इसका सम्बन्ध उस विषय से है जिसका उल्लेख अभी किया जायगा। ब्रिटेन के १९११ ई० के कॉपीराइट कानून के अन्तर्गत सुरक्षा की अवधि लेखक का जीवनकाल और उसके बाद ५० वर्ष तक है। परन्तु इस अवधि के अन्तिम २५ वर्षों की अवधि बिना अनुमति लिये कोई भी सम्बद्ध पुस्तक को प्रकाशित कर सकता है बशर्ते वह कॉपीराइट के मालिक को प्रकाशित मूल्य पर १० प्रतिशत रॉयल्टी अदा कर दे (अनुच्छेद ३)। इसके अलावा लेखक की मृत्यु के बाद किसी भी समय कोई भी व्यक्ति, जिसको कॉपीराइट का मालिक जनता को अलभ्य किसी पुस्तक को प्रकाशित करने की अनुमति नहीं देता, तो वह प्रिवी-कौंसिल की न्याय-समिति (Judicial Committee) के सामने शिकायत कर सकता है और उचित शर्तों पर कॉपीराइट के मालिक से लाइसेंस हासिल करने के लिए आदेश प्राप्त कर सकता है (अनुच्छेद ४)।

बर्न यूनियन के अन्य सदस्यों ने लम्बे अरसे से ब्रिटेन के कानून की इन व्यवस्थाओं का विरोध किया और १९४८ के ब्रुसेल्स सम्मेलन में यह स्पष्ट कर दिया गया कि ये बर्न समझौते में निहित उद्देश्य के अनुकूल नहीं[1]। कॉपीराइट की छोटी अवधि के समर्थकों का एक तर्क यह है कि इससे जनता को और सस्ते दामों में पुस्तकें सुलभ हो सकेंगी। इस विषय पर ‘ब्रिटिश बोर्ड ऑव ट्रेड कॉपीराइट कमेटी’ (British Board of Trade Copyright Committee) ने राय जाहिर की है उससे काफी प्रकाश पड़ता है: ‘हमको ऐसा सबूत मिला है, जिसको चुनौती देने का कोई कारण नहीं। वह सबूत यह है कि आमतौर से व्यवहार में प्रकाशक लोकप्रिय पुस्तकों के सस्ते संस्करण निकालने के पहले प्रकाशन की तिथि के बाद २५ वर्ष तक इन्तजार नहीं करते, लेखक की मृत्यु के बाद २५ वर्ष इन्तजार करने की बात जाने दीजिए।’[2]

अनुवाद का अधिकार

आरम्भ में उल्लिखित ‘सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौता’ (Universal Copyright Convention) की विशेषताओं पर विचार करने के पहले कॉपीराइट की अवधि के बारे में एक अन्तिम बात पर विचार कर लेना चाहिए। बर्न समझौते के अन्तर्गत (बर्न तथा पेरिस मसविदे) पुस्तक के मूल देश में प्रदत्त सुरक्षा की पूर्ण अवधि के अलावा लेखकों के अनुवाद-अधिकारों की सुरक्षा की एक विशेष अवधि है। बर्न मसविदे के अन्तर्गत अनुवाद के अधिकारों को प्रथम प्रकाशन के बाद केवल दस वर्षों तक सुरक्षा मिलनी चाहिए। पेरिस मसविदे के अन्तर्गत भी ऐसी सुरक्षा केवल दस वर्षों तक मिलनी चाहिए। लेकिन अगर पुस्तक का अनुवाद तत्कालीन राष्ट्रभाषा अथवा भाषाओं में किया जाता है तो लेखकों को पूर्ण अवधि की सुरक्षा मिलनी चाहिए। बर्लिन मसविदे के बाद अनुवाद के अधिकारों को पूरी अवधि की सुरक्षा दी गई है परन्तु बाद के मसविदे समझौते में शामिल होने वाले राज्यों को अनेक बातों में पिछले मसविदों से शासित होने की अनुमति देते हैं। आइसलैंड, आयरलैंड, जापान, थाईलैंड, तुर्की (ब्रुसेल्स मसविदे को स्वीकार करने के बाद से) और युगोस्लाविया अनुवाद के अधिकारों के सम्बन्ध में ऐसी शर्तें लागू करते हैं।

१. ब्रुसेल्स के स्वीकृति-पत्र में लेखक के जीवनकाल के साथ ५० वर्ष और जोड़ने की बात कही गई है।

२. कमाण्ड पेपर ८६६२, लन्दन एच० एम० स्टेशनरी आफिस, १९५२।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेदरलैंड पेरिस मसविदे द्वारा स्वीकृत शर्त को लागू ...या करता था, परन्तु उच्च प्रकाशकों ने देखा कि उनमें से ...क एक-दूसरे से सस्ते संस्करण एक साथ प्रकाशित कर ... हैं। यह इतना अत्याचार सिद्ध हुआ कि उन्होंने आपस ...तय करके प्रथम प्रकाशक को अधिकार दे दिये। यहाँ तक ... अन्त में इस शर्त को खुराफाती समझकर बिलकुल छोड़ ...या गया।[1]

'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौता'

(The Universal Copyright Convention)

... स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट के मामले में काफी ...बड़ी इस समय है। इस गड़बड़ी को दूर करने और ...स्त विश्व में कॉपीराइट सुरक्षा के सुधारने के उद्देश्य दूसरे ...श्वयुद्ध से पूर्व राष्ट्र-संघ (League of Nations) के ...वावधान में 'बौद्धिक सहयोग के अन्तर्राष्ट्रीय पीठ' (International Institute of Intellectual Cooperation) ... प्रयास किया। नवम्बर १९४५ में 'यूनेस्को' के संस्थापकों ... पुनः प्रयास किया, उस समय 'यूनेस्को तैयारी आयोग' (Unesco Preparatory Commission) लन्दन में कार्य ... रहा था। १९४६ में यूनेस्को के आम सम्मेलन (General Conference) के प्रथम अधिवेशन में यह ...च्छा जाहिर की गई कि 'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौता' (Universal Copyright Convention) की सम्भावना ... विचार किया जाना चाहिए और अधिक विस्तृत कॉपीराइट सुरक्षा को अव्यावहारिक समझा गया। १९४९ में ...रिस के आम सम्मेलन (General Conference) के चौथे ...धिवेशन ने तय किया कि यूनेस्को इसको जरूरी समझकर ...चार करे और समस्या तथा वर्तमान कानूनों तथा समझौतों ...रा प्रदत्त दलों के तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन ... व्याख्या करे। आम सम्मेलन ने यह भी तय किया कि यूनेस्को ... तत्त्वावधान १९४९ में यूनेस्को के ही स्वतन्त्र विशेषज्ञों की ...मिति की सिफारिशों के आधार पर युनेस्को 'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौते (Universal Copyright Convention) ... सम्भावना की जाँच करे।

बाद के तीन वर्षों में यूनेस्को ने प्रारम्भिक कार्य किया। ...पश्चात् सन् १९५२ में १९ अगस्त से ६ सितम्बर तक

१. लाडास, आप० जिल्द १, पृष्ठ ३९२।

कुछ नई संग्रहणीय पुस्तकें

रणजीतसिंह

श्री सीताराम कोहली

नवीनतम खोजों के आधार पर रणजीतसिंह पर प्रत्येक दृष्टि से प्रकाश डालने वाली शोधपूर्ण तथा अपने विषय की अकेली पुस्तक। मू० ६।।)

●

विचार विज्ञान

डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा

सामान्य पाठकों तथा विद्यार्थियों, दोनों ही के लिए अत्यन्त मनोरंजक शैली में तर्कशास्त्र को प्रस्तुत करने वाली पुस्तक। मू० ४)

●

हिन्दी वीर-काव्य-संग्रह

सं० श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी

डॉ० उदयनारायण तिवारी द्वारा संशोधित

वीरकाव्य के स्वरूप तथा विकास का संक्षिप्त परिचय एवं संग्रह। मू० ४।।)

●

अवधी कोष

श्री रामाज्ञा द्विवेदी

अवधी का प्रथम कोष। हिन्दी की जनपदीय भाषाओं के कोषों के अभाव की पूर्ति की दिशा में प्रथम चरण। मू० ७।।)

विस्तृत जानकारी के लिए सूचीपत्र मँगाइए

हिन्दुस्तानी एकेडेमी,

उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए अन्तर्राष्ट्रीय सरकारों के जेनेवा सम्मेलन में उसने मसविदे का संशोधित रूप पेश किया।[1]

सम्मेलन ने एक 'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौता' (Universal Copyright Convention) तैयार करके उसे स्वीकार किया। उसमें तीन मूल मसविदे भी शामिल किये गए पहले मसविदे में समझौते को राज्यविहीन नागरिकों या शरणार्थियों पर कैसे लागू किया जायगा यह बात स्पष्ट की गई है। दूसरे मसविदे में समझौते को अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की कृतियों पर लागू करने के सम्बन्ध में तथा तीसरे में समझौते के पुष्टिपत्रों को लागू करने की तारीख, उसके स्वीकार करने तथा उसमें शामिल होने की बातें स्पष्ट की गई हैं।

६ सितम्बर को समझौता स्वीकार किया गया। अब १२० दिन के अन्दर उस पर सभी राज्यों द्वारा हस्ताक्षर किया जाना ही बाकी रहा। कोई देश, जिसने समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किया वह भी अपनी स्वीकृति की शर्तें प्रस्तुत करते हुए समझौते में शामिल हो सकता है। स्वीकृति-पत्र यूनेस्को को देना चाहिए। निम्न देशों ने समझौते पर हस्ताक्षर किया है :—

अण्डोरा	१, २, ३	बेल्जियम	१, २, ३
अर्जेण्टाइना	१, २	ब्राजील	१, २, ३
आस्ट्रेलिया	१, २, ३	कनाडा	१, २, ३
आस्ट्रिया	१, २, ३	चिली	२
क्यूबा	१, २	लक्समबर्ग	१, २, ३
डेनमार्क	१, २, ३	मैक्सिको	२
एलसल्वाडोर	१, २, ३	मोनाको	१, २
फिनलैण्ड	२, ३	निकारगुआ	१, २, ३
फ्रान्स	१, २, ३	नीदरलैण्ड्स	३
जर्मनी	१, २, ३	नार्वे	१, २, ३
ग्वाटेमाला	१, २, ३	पेरू	१, २, ३
हैटी	१, २, ३	पुर्तगाल	१, २, ३
होलीसी	१, २, ३	स्पेन	१, २, ३

१. सम्मेलन के रिपोर्टर जनरल सर जॉन ब्लेक द्वारा तैयार पूरी रिपोर्ट कॉपीराइट बुलेटिन (जिल्द ५, नं० ३-४, पेरिस १९५२) में प्रकाशित की गई है। यूनेस्को के कॉपीराइट विभाग की प्रतिनिधियों ने बड़ी प्रशंसा की क्योंकि इसने समझौते का मार्ग तैयार किया था।

एक उच्चकोटि के श्रमजीवी साहित्यिक साधक के लिए ऐसी सहयोगिनी की आवश्यकता है जो स्वयं भी साहित्य-सेवा को अपना उद्देश्य मानती हो। साहित्यकार के पास साधना ही उसका धन है। लेखनी की तरह अभिन्न होकर वह भी इसी साधना का उत्तराधिकार और यश पा सकती है। इस संकीर्ण युग में यह स्वार्थ का नहीं, संवेदनशीलता के आदान-प्रदान का निमन्त्रण है। साहित्यकार उच्च वर्ग का है, किन्तु सांस्कृतिक सुरुचि के लिए जातपात का बन्धन ढीला कर सकता है।

पत्र-व्यवहार का पता—**शा०,**
मारफत, प्रकाशन समाचार
१५-ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...त	१, २	स्वीडन	२
...रलैण्ड	१, २, ३	स्विटज़रलैण्ड	१, २
...रायल	१, २, ३	ब्रिटेन	१, २, ३
...ली	१, २, ३	अमेरिका	१, २, ३
...पान	१, २, ३	यूरुगोम	१, २, ३
...इबेरिया	१, २	युगोस्लाविया	१, २, ३

१६ सितम्बर, १९५५ से समझौता लागू किया गया। ...े १२ देशों ने स्वीकार किया, जिनमें सात देश ऐसे भी ...मिल हैं जो बर्न समझौते में नहीं थे।

सन् १९५६ के आरम्भ तक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में १८ ... अण्डोरा, कम्बोडिया, चिली, कोस्टारिका, फ्रांस, जर्मनी ...डरल रिपब्लिक, हैटी, होलीसी, इसरायल, जापान, लाओस, ...क्समबर्ग, मोनाको, पाकिस्तान, फिलिपाइन, स्पेन, स्विट-...रलैण्ड तथा अमेरिकी संयुक्त राज्य आ गए। कई देश ...ष्ट करने की कार्रवाई कर रहे थे।

इस 'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौते' का उद्देश्य ...हले से विद्यमान समझौतों का स्थान लेना नहीं। समझौते ...े १७वें अनुच्छेद में निहित है कि यह बर्न समझौते की व्य-...स्था पर प्रभाव नहीं डालेगा। बल्कि यह अनुच्छेद बर्न ...यूनियन से अलग होने को रोकता है।

नया समझौता तथ्यों तथा उद्देश्यों के सम्बन्ध में पुरानों ...से काफी भिन्न है। पुरानों का उद्देश्य फौरन एक प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट कानून की स्थापना थी। दूसरी ओर इस सार्वभौमिक समझौते का उद्देश्य यह है कि सभ्यता, संस्कृति, कानून, प्रशासन की विस्तृत विभिन्नता वाले यहाँ तक कि कभी परस्पर विरोधी हितों वाले देशों के बीच सामंजस्य स्थापित कराने के लिए एक आधार और तरीका देना है। इस प्रकार समझौता प्रगति की दिशा में परस्पर सक्रिय सहयोग के लिए मार्ग तैयार करता है। अनुच्छेद १२ का भी यही उद्देश्य है, जो समझौते के संशो-धन के लिए सम्मेलन की व्यवस्था करता है। इस समझौते में निहित सामंजस्य भावना तथा परिवर्तनशीलता का ही फल है कि बर्न यूनियन तथा अमरीकी देशों के बीच स्थायी एवं पूर्ण निश्चित पारस्परिक सम्बन्धों की स्थापना का उद्देश्य पूरा हो सका। अब हमें यह देखना है कि इस 'सार्वभौमिक समझौते' को किस प्रकार लागू किया जाय कि कॉपीराइट सुरक्षा के इस समझौते में वे देश भी शामिल हो जायँ, जो अभी तक इसमें शामिल नहीं हैं।

राष्ट्रीय व्यवहार

समझौते के अनुच्छेद २ में वह बुनियादी सिद्धान्त दिया गया है जिसके अनुसार समझौते में शामिल प्रत्येक राज्य दूसरे देशों की साहित्यिक या कलात्मक कृतियों को अपनी निजी साहित्यिक एवं कला-कृतियों को भांति सुरक्षा प्रदान करेगा। दूसरे शब्दों में इस दूसरे अनुच्छेद में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कृतियों के साथ एक-सा व्यवहार करने की बात कही गई है। इस अनुच्छेद में व्यक्तिगत तथा क्षेत्रीय दृष्टि-कोणों से समझौते के कार्यान्वयन का क्षेत्र बताया गया है। इसके अनुसार समझौते में शामिल किसी भी देश के नाग-रिकों की प्रकाशित कृतियों तथा उस देश में प्रत्येक प्रकाशित कृतियों को समझौते में शामिल दूसरे देश में वह सुरक्षा मिलेगी, जिसे कोई सदस्य राज्य अपने नागरिकों की कृतियों को अपने यहाँ प्रथम प्रकाशित होने पर देता है।

दूसरे अनुच्छेद के बाद प्रथम तथा छठवें अनुच्छेदों में भी उसी की पुष्टि में व्यवस्था दी गई है। प्रथम अनुच्छेद के अनुसार राज्यों का यह कर्त्तव्य है कि वे साहित्यिक, वैज्ञानिक तथा कलात्मक कृतियों के लेखक के अधिकारों को सुरक्षा दें। छठे अनुच्छेद में 'प्रकाशन' के अर्थ को स्पष्ट किया गया है।

यह 'सार्वभौमिक समझौता' प्रतिगामी नहीं है। ऐसी कृति, जो देशीय कानून से (सार्वजनिक क्षेत्र में) आ चुकी है वह ज्यों-की-त्यों रहेगी। (अनुच्छेद ७) इसके अतिरिक्त कुछ मूल व्यवस्थाएँ हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में बड़ा महत्त्व रखती हैं। इनमें राष्ट्रीय व्यवहार का अर्थ, समझौते में दी गई सुरक्षा की अवधि तथा कुछ रस्मी बातें और अनुवाद का अधिकार आदि कुछ खास बातें हैं।

समझौते के अन्तर्गत सुरक्षा की अवधि

विदेशी साहित्यिक या कलात्मक कृति की सुरक्षा की अवधि भी समझौते में दी गई है। समझौते के अनुसार लेखक का जीवनकाल तथा उसके बाद २५ वर्ष सुरक्षा की अवधि रखी गई है। कुछ देश सुरक्षा की इस अवधि में लेखक के पूरे जीवनकाल को नहीं शामिल करते। वे कुछ प्रकार की खास कृतियों के सर्वप्रथम प्रकाशन की तिथि से सुरक्षा की अवधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १८९१ से समाज, साहि

एक गधे की आत्मकथा

श्री कृष्णचन्द्र एम० ए०

लेखक का यह नवीन व्यंग्यात्मक उपन्यास अपने ढंग का अद्वितीय है। उसने अपनी सूक्ष्म दृष्टि और चुटीली कलम से मानव-समाज का शायद ही कोई पहलू अपने व्यंग्य-बाणों [से अछूता छोड़ा हो। सरकार के विभिन्न विभागों में जन-साधारण से जो 'सौजन्यता' का बर्ताव किया जाता है उसकी सच्ची झलक भी आप [इसमें पायेंगे। पुस्तक में जो व्यंग्य-चित्र दिये गए हैं, शिष्ट हास्य के जीते-जागते नमूने हैं।

कलात्मक आवरण, सुन्दर छपाई, मूल्य ३) रु०

दीपावली अभिनंदन

शिक्षा में नए प्रयोग

प्रिंसिपल सूरजभान एम० एड० (लन्दन)

इस पुस्तक में भारत में मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता और अध्यापन-पद्धति के साथ उसके सम्बन्ध के विषय में बहुमूल्य सुझाव दिये गए हैं। भारत में बाल-कल्याण में रुचि रखने वाले प्रत्येक मनुष्य के लिए पठनीय है।

आकर्षक आवरण, सुन्दर छपाई, मूल्य ४)०रु

हिन्दी साहित्य के समस्त प्रमुख प्रकाशकों की पु

पुस्तकालयों, शिक्षा-संस्थाओं तथा पुस्तक-वि

राजपाल एण्ड सन्ज़, क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति के चार अध्याय

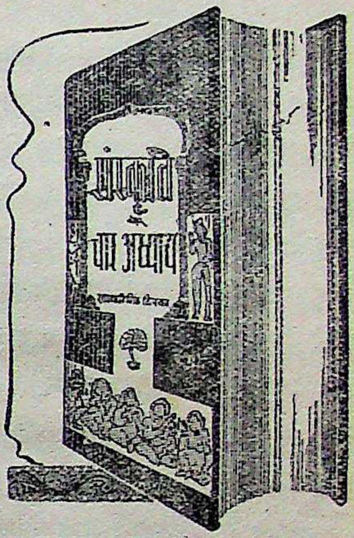

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

"मेरे मित्र और साथी 'दिनकर' ने अपनी पुस्तक के लिए जो विषय चुना है, वह बहुत ही मोहक और दिलचस्प है। यह ऐसा विषय है, जिससे अक्सर मेरा अपना मन ओत-प्रोत रहा है—यह विषय अत्यन्त विशाल है, और उसके दायरे में भारत और बाहर के तमाम मानवीय व्यापार आ जाते हैं।···मेरा विचार है कि 'दिनकर' की यह पुस्तक इन बातों को समझने में एक हद तक सहायक होगी, इसलिए मैं उसकी सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि इसे पढ़कर अनेक लोग लाभान्वित होंगे।" मूल्य १५)

('भूमिका' में) —पंडित जवाहरलाल नेहरू

अंग्रेजी साहित्य की रूपरेखा

श्री भगवतशरण उपाध्याय

विद्वान् लेखक ने अपनी इस नवीनतम कृति में हिन्दी भाषा-भाषी जनता को अंग्रेजी साहित्य के सम्बन्ध में जो बहुमूल्य जानकारी दी है वह अन्यत्र दुर्लभ है। अंग्रेजी साहित्य के विकास और उसकी व्यापकता को समझने के लिए पुस्तक बहुत सहायक सिद्ध होगी।

आकर्षक आवरण, सुन्दर छपाई, मूल्य २।।) रु०

दी पा व ली अ भि नं द न

...ँ उचित कमीशन पर मिलती हैं।
...ेष सुविधाएँ दी जाती हैं।

...गेट, दिल्ली ६.

हमारी 'स्थायी-ग्राहक-योजना' में सम्मिलित होकर हिन्दी साहित्य-सेवा में सक्रिय सहयोग दीजिए।

पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष सुविधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं। इनके अनुसार सर्वप्रथम प्रकाशन के कम-से-कम २५ वर्ष बाद तक कृतियों की सुरक्षा-अवधि मानी जानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त इस 'सार्वभौमिक समझौते' में तथाकथित 'अल्प अवधि' का नियम निहित है। इसके अनुसार समझौते में शामिल होने वाला देश विदेशी कृति को अपने यहाँ उतने ही समय तक सुरक्षा दे सकता है, जितने समय तक उस कृति को अपने मूल देश में मिला हो।

इसके बाद रस्मों में भी समन्वय की ही भावना मिलती है। दूसरे देशों के लेखकों के साथ राष्ट्रीय व्यवहार को लागू करने के परिणाम के अलावा समझौते में यह हल निहित है कि विदेशी लेखकों को कॉपीराइट की मान्यता के लिए कुछ देशों के राष्ट्रीय कानून के अन्तर्गत आवश्यक रस्मों से मुक्त किया जा सकता है। ज़रूरी बात केवल यह है कि (अनुच्छेद ३.१) कॉपीराइट ('सी' का निशान) की सूचना, कॉपीराइट के मालिक का नाम और प्रथम प्रकाशन का वर्ष दे दिया जाय। इसमें न खर्च पड़ता है और न देरी होती है और भाषागत विभिन्नताओं से होने वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिल जाती है।

अनुवाद के अधिकारों के लिए व्याख्या

जहाँ तक अनुवाद के अधिकार का सम्बन्ध है समझौते में लेखक के अधिकारों के पक्ष में नियम दिये हुए हैं और उनकी सुरक्षा की गारण्टी की गई है। लेखक की अनुमति बिना कोई अनुवाद नहीं कर सकता। परन्तु अगर किसी पुस्तक के प्रथम प्रकाशन की तिथि के बाद सात साल का समय बीतने पर समझौते में शामिल राज्य की राष्ट्रीय भाषा में उसका अनुवाद नहीं हुआ अथवा उस भाषा में अनुवाद के पिछले समस्त संस्करणों में से कोई बाजार में नहीं है, तो वह राज्य पुस्तक के अनुवाद के उक्त पूर्णाधिकार को रोक सकता है और इसके स्थान पर पूर्णाधिकार रहित और अहस्तान्तरणीय अनिवार्य लाइसेंस लागू कर सकता है। अनिवार्य लाइसेंस में लेखक के लिए उचित पारिश्रमिक और स्वयं अनुवाद में ईमानदारी ज़रूरी है।

'सार्वभौमिक समझौते' में अन्तर-राजकीय समिति के निर्माण की व्यवस्था की गई है जो समझौते को कार्यान्वयन और संचालन की समस्याओं का अध्ययन करेगी, समय-समय पर उसके संशोधन की तैयारी करेगी और अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट के सवालों से सम्बन्धित अन्य प्रश्नों पर विचार करेगी। यदि एक बार समझौते का औचित्य सिद्ध हो जाय तो उसमें सुधार की सम्भावना पैदा हो जाती है। अमेरिका के कॉपीराइट की व्यवस्थाओं का दुनिया के अन्य देशों से सम्बन्ध जोड़ने की दिशा में निश्चय ही यह समझौता एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

उचित उपयोग

अन्तर्राष्ट्रीय कॉपीराइट की स्थिति की समीक्षा के अन्त में सामान्य हित की कुछ बातों पर प्रकाश डालना अनुचित न होगा।

अनेक देशों के कॉपीराइट कानून में उन रचनाओं के उचित उपयोग (Fair use) की अनुमति दी गई है जिनका कॉपीराइट सुरक्षित है। अर्थात् ऐसी रचनाओं के अंशों या उद्धरणों का निजी अध्ययन, शोधकार्य, आलोचना और शिक्षा-पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। यह महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है। इसके द्वारा जनता के हितों की सुरक्षा होती है। वह उन पुस्तकों का उपयोग कर सकती है जिनका कॉपीराइट सुरक्षित है। इस सम्बन्ध में यह आवश्यक है कि उद्धरणों का जहाँ कहीं उपयोग किया जाय उसके स्रोत का पूर्ण उल्लेख किया जाय। चूँकि इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय कानून भिन्न-भिन्न हैं इसलिए सभी देशों में समान व्यवस्था न्यायसंगत और उपयुक्त होगी, साथ ही ऐसी कृतियों के पाठकों को सहायता भी मिलेगी जिनमें इस प्रकार के उद्धरण हों। अधिकतर राष्ट्रीय कानूनों में लेखक और शीर्षक का उल्लेख करने की व्यवस्था है लेकिन यदि इसके साथ ही प्रकाशक का नाम, स्थान और प्रकाशन का वर्ष भी दिया जाय तो यह उन लोगों के लिए बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है जो उल्लिखित कृतियों को प्राप्त करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए लन्दन में सैकड़ों प्रकाशन हैं और यदि कोई पुस्तक पुस्तकालय में आसानी से प्राप्य नहीं है तो पाठक को साथ ही पुस्तकालयाध्यक्ष को केवल प्रकाशन के स्थान के आधार पर पुस्तक को प्राप्त कर सकना बहुत कठिन हो जायगा। प्रकाशक का नाम होने पर बहुत कम परिश्रम करके इस कठिनाई को दूर किया जा सकता है। यदि उद्धरण के साथ पुस्तक की वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ-संख्या भी दी गई हो जिसमें से उद्धरण लिया गया है तो इससे विद्यार्थी को बहुत अधिक आसानी हो जायगी।

दोहरा कर

इस सम्बन्ध में दूसरी बात रायल्टी पर दोहरे कर की है। इसमें सन्देह नहीं कि यह अन्तर्राष्ट्रीय कर प्रणाली का एक पक्ष है जिसके द्वारा एक ही आय पर एक से अधिक देशों में कर लगता है। 'सार्वभौमिक कॉपीराइट समझौता' (जेनेवा १६५२) ने यह मत प्रकट किया था कि यूनेस्को उन तरीकों की जाँच-पड़ताल जारी रखेगा जिनके द्वारा कॉपीराइट शुल्क का दोहरा कर बचाया जा सके। इसके बाद 'कॉपीराइट बुलेटिन' में इस सवाल पर बहुत उपयोगी सामग्री प्रकाशित हो चुकी है।

जब साहित्य से प्राप्त आय पर दोहरा कर वसूला जाता है तो इससे आय में जो भारी कमी हो जाती है उससे संस्कृति के हित को निस्सन्देह बहुत क्षति पहुँचती है। राष्ट्रीय तटकर कानून में उपयुक्त व्यवस्था शामिल कर या उपयुक्त अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के द्वारा इसे दूर किया जा सकता है। विदेशी व्यापार और विनिभोग को प्रोत्साहन देने के दृष्टिकोण से कुछ देशों ने अपनी ओर से कुछ सुविधा प्रदान की है। इन देशों ने विदेश में किये गए भुगतान के बदले या विदेश से प्राप्त आय को करमुक्त कर दिया है, या उसमें कुछ छूट दे दी है; लेकिन सही अर्थ में यह छूट तभी प्राप्त की जा सकती है जबकि परस्पर रियायत के आधार पर द्विपक्षीय समझौते हों।

इन समझौतों में तटकर अधिकारियों को यह अधिकार दिया जा सकता है कि वे इन दो सिद्धान्तों को आधार पर कर वसूल कर सकते हैं (१) निवास या राष्ट्रीयता; या (२) आय के मूल स्रोत का स्थान।

इन जटिल और टेकनिकल सिद्धान्तों को किस प्रकार व्यवहार में लाया जाय यह समझना अधिक लाभदायक होगा। उदाहरण के लिए फ्रांस और ब्रिटेन के बीच हुए समझौते के अन्तर्गत एक फ्रांसीसी लेखक, जो ब्रिटेन का निवासी नहीं है परन्तु ब्रिटेन से रायल्टी प्राप्त करता है, इस आधार पर कि वह फ्रांस में आय-कर दे चुका होगा ब्रिटेन में आय-कर के भुगतान से छूट पा सकता है। इस प्रकार ब्रिटेन में उसे कुल जितनी आय होती है उसे मिल जाती है। इसी प्रकार ब्रिटिश लेखक भी इस आधार पर फ्रांसीसी कर से मुक्त हो सकता है कि वह ब्रिटिश कर का भुगतान करता है। इसके अलावा यदि एक ब्रिटिश लेखक का फ्रांस में स्थायी कारोबार है तो वह फ्रांसीसी कर से मुक्ति का दावा नहीं कर सकता और यदि वह, जहाँ तक कर-व्यवस्था का प्रश्न है, ब्रिटेन का निवासी समझा जाता है तो उसे दोनों ही देशों में कर चुकाना पड़ेगा। कुछ अन्तर-यूरोपीय समझौते भी हैं, जैसे, बेल्जियम और फ्रांस के बीच हुए समझौते में यह व्यवस्था की गई है कि यदि आय प्राप्त करने वालों के दोनों ही देशों में कारोबारी फर्में हैं तो उन्हें उन फर्मों की आय के मुताबिक उन देशों में आयकर चुकाना पड़ेगा।

यद्यपि पहला अन्तर्राष्ट्रीय कर समझौता १८४३ में हो चुका था लेकिन कर-समझौते करने की दिशा में व्यापक आन्दोलन प्रथम विश्व-युद्ध के बाद से ही आरम्भ हुआ है। इधर कुछ वर्षों में जो समझौते हुए हैं उनमें साहित्य से होने वाली आय को विशेष प्रकार की आय माना गया है, और मैक्सिको सिटी (१६४३) और लन्दन (१६४६) के तथाकथित "आदर्श समझौतों" में भी इस पक्ष पर कुछ ध्यान दिया गया है। राष्ट्रसंघीय तटकर समिति (League of Nations Fiscal Committee) द्वारा तैयार किये गए लन्दन-समझौते के कुछ उपयुक्त अंश निम्नलिखित हैं—

लन्दन में समझौते के प्रारूप का उद्धरण

अनुच्छेद १० (४) समझौता करने वाले दो राज्यों में से यदि एक राज्य का कोई व्यक्ति, कार्पोरेशन या कोई और दूसरे राज्य से कलात्मक, वैज्ञानिक या किसी सांस्कृतिक कृति का उपयोग करने के अधिकार के बदले या उसके प्रकाशन से जो रॉयल्टी प्राप्त करेगा उस पर रॉयल्टी देने वाले देश में कोई कर नहीं लगेगा।

समझौते के प्रारूप की व्याख्या का उद्धरण

लन्दन-समझौते के अनुच्छेद १० का चौथा अवतरण मैक्सिको के समझौते के तीसरे अवतरण के समान है। कलात्मक और वैज्ञानिक कृतियों से प्राप्त कॉपीराइट रॉयल्टी की आय पर, चाहे वह कहीं से भी प्राप्त की गई हो, केवल उसी देश में कर लग सकता है जहाँ रॉयल्टी पाने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्ति रहता है या जहाँ उसका स्थायी निवास-स्थान है, इस नियम का मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान में सुविधा प्रदान करना है। इसका अन्तिम वाक्य विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है।

यद्यपि दोहरा कर बचाने के लिए अनेक समझौते हुए हैं फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर उसमें अनेक त्रुटियाँ हैं। इस प्रकार के समझौतों में एक मुख्य कठिनाई यह होती है कि इनके अन्तर्गत सभी प्रकार की आय आ जाती है; संयोगवश कॉपीराइट रॉयल्टी भी इसमें शामिल है। साहित्यिक कृति की विशेष प्रकृति को और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पैदा करने में उनके महत्त्व को, ध्यान में रखते हुए यह आशा की जाती है कि इस समस्या पर शीघ्र ही समुचित ध्यान दिया जायगा; उम्मीद है कि केवल साहित्य की बिक्री से प्राप्त आय के सम्बन्ध में विशेष समझौते किये जायँगे।

रॉयल्टी का हस्तान्तरण

रॉयल्टी पर चाहे कर लगा हो या न लगा हो, उसके भेजने में जो विलम्ब होता है वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं। कुछ देश जैसे अमेरिकी संयुक्त राज्य और ब्रिटेन रॉयल्टी भेजने के लिए सामान्य रूप से अनुमति दे देते हैं और कोई विशेष रस्म अदा नहीं करनी पड़ती। कुछ देशों में जैसे फ्रांस और इटली में, यह आवश्यक है कि अनुमति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त अधिकारी के पास आवेदन पत्र भेजा जाय। कुछ अन्य देश जैसे यूनान और हाल ही तक स्पेन भी, विदेशी मुद्रा में हुई आय के बदले विदेशी मुद्रा देते हैं। कुछ अन्य देश जिनकी विदेशी-आय अपेक्षाकृत कम है, कोई भी मुद्रा दे सकने में असफल रहते हैं लेकिन वह अपने नागरिकों को भुगतान के सम्बन्ध में करार (Contract) करने की अनुमति दे देते हैं। इसके सबसे नये उदाहरण ब्राजील और अर्जेण्टाइना हैं। पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले देश-विदेश के हाथ अधिकार बेचकर कुछ अर्जन कर लेते हैं और यदि इस प्रकाशन की आय और अधिकार खरीदने में हुए व्यय की रकम को मिलाया जाय तो बचत इतनी नहीं होती कि सरकार इस दिशा में कोई कदम उठाये। ब्रिटेन में इसका परिणाम यह हुआ है कि ब्रिटेन के प्रकाशक बिना किसी रुकावट के अमेरिकी संयुक्त राज्य या किसी अन्य देश से प्रकाशन-समझौता करने के लिए पूर्ण स्वतन्त्र होते हैं।

लगभग सभी प्रकाशक-संगठनों ने रॉयल्टी प्राप्त करने में होने वाले विलम्ब पर विचार विमर्श किया। चूँकि अनुवाद या अन्य प्रकाशनाधिकार अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए आवश्यक हैं इसलिए मौजूदा प्रतिबन्धों में कुछ ढिलाई करना आवश्यक हो गया है। इसके अलावा यदि इन अधिकारों की कीमत का भुगतान नहीं किया जा सकता, या काफी विलम्ब करने के बाद ही भुगतान सम्भव है तो सम्भवतया जिनको ये अधिकार बेचने हैं वे अनिश्चित काल तक के लिए अपने को इन अधिकारों से वंचित रखने को तैयार नहीं होंगे।

अन्तिम बात का सम्बन्ध इस क्षेत्र में 'यूनेस्को' के एक और कार्य से है। अप्रेल १९५४ में 'यूनेस्को' संघ ने हेग में सदस्य राज्यों का सम्मेलन बुलाया था। इसके अन्तर्गत सशस्त्र संघर्ष छिड़ जाने पर सांस्कृतिक सम्पत्ति की सुरक्षा के सम्बन्ध में अन्तर्राष्ट्रीय समझौता करना था। इस समझौते के अन्तर्गत समझौता करने वाले देश युद्ध होने पर कला, स्मारक, पुस्तक और अन्य सांस्कृतिक सामग्री की सुरक्षा की जिम्मेदारी सँभालेंगे।

इस समझौते का निम्नलिखित अंश कॉपीराइट पर भी लागू किया जा सकता है और यह इस अध्याय की मूल भावना का सही प्रतिनिधित्व करता है: "सांस्कृतिक सम्पत्ति की क्षति से सारी मानवजाति आध्यात्मिक दृष्टि से बिलकुल निर्धन हो जाती है।" बौद्धिक सम्पत्ति के लिए कॉपीराइट की उपेक्षा से बढ़कर और कोई क्षति नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए परम आकर्षक, नयनाभिराम

सचित्र हिन्दी-प्रकाशन

चित्रों में लोरियाँ

तीन भाग। बढ़िया कागज़ पर आफ़सेट की विविध रंगों से विभूषित छपाई। साथ में बच्चों के योग्य मनोहारी गीत।

प्रत्येक भाग का मूल्य मात्र १)। हिन्दी में इन पुस्तकों को निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ बालोपयोगी पुस्तकें कहा जा सकता है।

चित्रों में पशुओं की लोरियाँ

बच्चों को रंगीन चित्रों द्वारा पशुओं का परिचय कराने के लिए अद्वितीय पुस्तक। प्रत्येक पृष्ठ पर एक-एक पशु का रंग-बिरंगा चित्र तथा साथ में दिये गए पद में उसके निवास स्थान, आदतों और खाने-पीने आदि का वर्णन। मूल्य मात्र १)।

चित्रांकन

बच्चों को ड्राइंग की प्राथमिक शिक्षा देने के लिए रंगीन, चित्रमय इससे अच्छी पुस्तक न मिलेगी। मूल्य मात्र १)।

रामायण चित्रावली

रामायण की विविध रंगों से विभूषित सचित्र कथा जिसे एक बार हाथ में लेने पर बच्चे छोड़ न पाएंगे। शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

पुस्तक-विक्रेता पत्र-व्यवहार करें।

शिशु साहित्य संसद प्राइवेट लि०

३२-ए, अपर सर्कुलर रोड, कलकत्ता-९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानमण्डल लिमिटेड के अपूर्व प्रकाशन

धर्म और दर्शन

सूफ़ीमत साधना और साहित्य	: राम पूजन तिवारी	१०)
विश्व के धर्म प्रवर्त्तक	: रघुनाथ सिंह एम० पी०	६)
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	: स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२)
हिन्दुत्व	: ,, ,,	१२॥)
चिद्विलास	: डा० सम्पूर्णानन्द	४॥)
दर्शन का प्रयोजन	: डा० भगवानदास	३।)

राजनीति

अन्तर्राष्ट्रीय विधान	: डा० सम्पूर्णानन्द	१०)
राष्ट्रीयता और समाजवाद	: आचार्य नरेन्द्रदेव	१०)
भारतीय राजनीति : विक्टोरिया से नेहरू तक :	रामगोपाल एम० ए०	१०)
चीन : कल और आज	: के० एम० पणिक्कर	४॥)
राजनीति शास्त्र	: प्राणनाथ विद्यालंकार	४)
जापान की राजनीतिक प्रगति	: लक्ष्मण नारायण गर्दे	४)

पत्रकारी

पत्र और पत्रकार	: पं० कमलापति त्रिपाठी पुरुषोत्तम दास 'पत्रकार'	६)
भारतीय पत्रकार कला	: रेलिंगड ई० बूलसले	६)
समाचार पत्रों का इतिहास	: पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी	६)
आधुनिक पत्रकार कला	: रा० र० खाडिलकर	३॥)

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	: हंसराज भाटिया	४)

भ्रमण

हालैण्ड में पच्चीस दिन	: रा० र० खाडिलकर	३।)

इतिहास

पश्चिमी यूरोप (प्रथम भाग)	: अविनाथ पाण्डेय एम० ए०	४॥)
भारतवर्ष का इतिहास	: एक इतिहास प्रेमी (भाई परमानन्द)	८)
गांधी हत्याकाण्ड	: सम्पादक विहंगम	५)
आजाद हिन्द फौज तथा उसके तीन अफसरों का मुकदमा		२)
जेल के वे दिन	: विजयलक्ष्मी पंडित	२॥)

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	: रामनरेश वर्मा एम० ए०	४)
गीति काव्य	: प्रो० रामखेलावन पाण्डेय	५)
तुलसीदास और उनका युग	: डा० राजपति दीक्षित	७)
सामयिकी	: शान्तिप्रिय द्विवेदी	३॥)
धरातल	: ,, ,,	२॥)
कल्पलता	: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२॥)

कहानियाँ

उलूक तंत्र	: बलदेवप्रसाद मिश्र	१॥=)
शवसाधन	: ,, ,,	२=)
तूफ़ान	: ,, ,,	२॥)

उपन्यास

पुनर्जीवन	: महात्मा टालस्टाय	६॥)
कर्तव्याघात	: देवनारायण द्विवेदी	४)
नूतन ब्रह्मचारी	: स्व० बालकृष्ण भट्ट	॥=)
देश भक्त और देशद्रोही	: ,,	२।)
बयालीस	: प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४)

जीवनी

सरदार पृथ्वीसिंह	: राहुल सांकृत्यायन	३॥)
अब्राहम लिंकन	: रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे	॥=)

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	: प्रो० भगवतीप्रसाद वाजपेयी	३॥)
विज्ञान के चमत्कार	: ,, ,,	२॥)
परमाणु शक्ति	: ,, ,,	२॥)

विभिन्न विषय

नारीत्व	: मारगरेट मूल ह्वाइट	३॥)
खाद का उपयोग	: दुतिप्रसाद सिंह	१।)
अपराध और दण्ड	: परमेश्वरी लाल गुप्त	१॥)
जियोजागो (प्रौढ़ शिक्षा के लिए सर्वोत्तम)	: यूस्टेस चेस्टर	४)
तैरने की कला	: माणिक जी	॥-)

कुछ अन्य उपयोगी प्रकाशन

हिन्दुधर्म की बालपोथी	: आनन्द शंकर बापूभाई ध्रुव	१)
तुलसी साहित्य रत्नाकर	: ,, ,,	४)
कौशलेन्दु कौतुक	: ,, ,,	१॥)
मानवोत्पत्ति विज्ञान	: ,, ,,	२)
जंगल	: आप्टन सिंक्लेयर	३)
संक्षिप्त विष विज्ञान	: ,, ,,	॥।)
आदि भारत	: प्रो० काश्यप	११)
हिन्दी कहानी और कहानीकार	: प्रो० वासुदेव एम० ए०	३॥)
होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान	: डा० बालकृष्ण मिश्र	५)
होम्योपैथिक चिकित्सा सिद्धान्त	: ,, ,,	२)

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीर चौरा, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

आधुनिक संविधान श्री के० सी० व्हीयर की सुप्रसिद्ध पुस्तक "Modern Constitutions" का हिन्दी रूपान्तर है। विद्वान् लेखक ने संसार के समस्त प्रमुख संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए संविधान की परिभाषा, वर्गीकरण, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप एवं संशोधन-प्रक्रिया का सोदाहरण विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। जिज्ञासुओं एवं राजनीति-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत करते समय श्री नेमिचन्द्र जैन ने मूल लेखक की भावनाओं एवं मन्तव्यों को ज्यों-का-त्यों उपस्थित करने का सफल प्रयास किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन**, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना से और मूल्य है ३)।

◆ ◆ ◆

ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली श्री डॉ० हरिहरप्रसाद गुप्त के शोध-प्रबन्ध (थीसिस) का किंचित् परिवर्द्धित रूप है। इसमें डॉ० गुप्त ने लगभग २५०० ग्रामोद्योग से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। हमारी ग्रामीण बोलियों में कई सहस्र ऐसे पारिभाषिक शब्द विद्यमान हैं, जिन्हें यदि हिन्दी के शब्द-भण्डार में सम्मिलित कर लिया जाय तो हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की बहुत-कुछ कमी दूर हो जायगी। डॉ० गुप्त ने अपना अध्ययन आजमगढ़ जिले की फूलपुर तहसील के परगना अहिरौला के ग्रामों में प्राप्त शब्दों तक ही सीमित रखा है, फिर भी इस प्रबन्ध में संकलित शब्दावली प्रायः समस्त अवधी एवं भोजपुरी क्षेत्रों में किंचित् हेर-फेर के साथ प्रचलित है। पुस्तक दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में खेतीबारी तथा अन्य समस्त उद्योगों की प्रत्येक प्रक्रिया का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है और द्वितीय खण्ड में समस्त पारिभाषिक शब्दों की अकारादि-क्रम से अनुक्रमणिका अनुच्छेद संख्या, व्याकरण एवं व्युत्पत्ति सहित दी गई है। आशा है इस महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध के प्रकाशन से अन्य क्षेत्रों में ग्रामीण शब्दावली के संकलनकर्ताओं को सहायता एवं प्रोत्साहन मिलेगा। प्रकाशक, **राजकमल प्रकाशन**, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना। मूल्य ६)

◆ ◆ ◆

प्रसाद संगीत में प्रसाद जी के नाटकों में बिखरे हुए समस्त गीतों एवं अन्यत्र बिखरी हुई चतुष्पदियों को कालक्रम के अनुसार संकलित किया गया है। प्रसाद जी के नाटकों को पढ़ते समय इन मधुर गीतों को एक स्थान पर पुस्तक रूप में संकलित देखने का मोह बार-बार होता था। सच पूछा जाय तो इन गीतों एवं चतुष्पदियों में हमें उनकी काव्य-प्रतिभा का जो निखार देखने को मिलता है वह काव्यगत सौन्दर्य की दृष्टि से उनकी अन्य काव्य-रचनाओं से रंचमात्र भी कम नहीं है। मार्मिक अभिव्यक्ति एवं माधुर्य की दृष्टि से तो ये बेजोड़ हैं, क्योंकि इनमें साहित्य के साथ संगीत भी आ मिला है। इसका प्रकाशन **भारती भण्डार**, इलाहाबाद से हुआ है। मूल्य २)

◆ ◆ ◆

कालिदास : श्री वासुदेव विष्णु मिराशी की मराठी पुस्तक के हिन्दी-रूपान्तर का द्वितीय संस्करण है। इस आलोचनात्मक ग्रन्थ में लेखक ने महाकवि कालिदास के विषय में अब तक प्राप्त समस्त सामग्री का उपयोग करके वैज्ञानिक ढंग से उनके जन्मस्थान, जीवनकाल, जीवनवृत्त इत्यादि पर समुचित प्रकाश डालने के पश्चात् उनकी काव्य एवं नाट्य-कृतियों का विश्लेषणात्मक परिचय देते हुए हमें उनकी काव्यगत विशेषताओं तथा विचारों से परिचित भी कराया है। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर लि०**, बम्बई से तथा मूल्य है ४)

◆ ◆ ◆

सच्ची शिक्षा : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद से प्रकाशित गांधीजी के १९२० से १९४८ तक समय-समय पर लिखे गए शिक्षा-सम्बन्धी लेखों का संग्रह है। तीन सौ से भी अधिक पृष्ठों वाली इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का मूल्य २) मात्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते का चमत्कार : सुश्री मनुबहन गांधी की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण डायरी (जो उन्होंने दिसम्बर १६४६ से ३० जनवरी १६४८ तक महात्मा गांधीजी के साथ उनकी शिष्या के रूप में रहकर लिखी थी और जिसे गांधीजी स्वयं पढ़ते और हस्ताक्षर करते थे) का एक अंश है। स्वतंत्रता के बाद साम्प्रदायिक दंगों को शान्त करने के लिए गांधीजी नोआखाली गए वहाँ से कश्मीर और कश्मीर से फिर नोआखाली जाने के लिए कलकत्ता आये, लेकिन पंजाब के नृशंस हत्याकाण्ड की खबरें पाकर वे वहाँ जाने के लिए कलकत्ते से दिल्ली लौट आये। प्रस्तुत पुस्तक में १-८-४७ से ८-६-४७ तक की डायरी प्रस्तुत की गई है। इसका प्रकाशन **नवजीवन प्रकाशन** अहमदाबाद से हुआ है और मूल्य १) है।

दूसरी पंचवर्षीय योजना : भारत सरकार के पब्लिकेशन्स डिवीजन द्वारा प्रकाशित पुस्तक में द्वितीय पंचवर्षीय योजना की प्रारम्भिक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। योजना के सम्बन्ध में समस्त ज्ञातव्य बातें ऐसे सरल रूप से और वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की गई हैं कि उसका अनुमानित स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। छपाई तथा काग़ज़ इत्यादि सभी-कुछ सुन्दर होते हुए भी मूल्य मात्र १)

नीलकण्ठ : श्री सिद्धेश्वर अवस्थी का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक लघु उपन्यास है। जिसमें एक ऐसे कलाकार का जीवन प्रस्तुत किया गया है जिसने कला एवं प्रेम की साधना में तिल-तिल गलते हुए अपने जीवन की आहुति दे दी। वर्णन की मार्मिकता एवं चित्रण की स्वाभाविकता उपन्यास पढ़ते समय मन को बरबस उलझाये रखती है। इसका प्रकाशन हुआ है **पद्मजा प्रकाशन**, कानपुर से और मूल्य ३) है।

जंजीरें और नया आदमी : हिन्दी में गाँवों की पृष्ठभूमि पर लिखने वाले प्रसिद्ध कथाकार श्री भैरवप्रसाद जी गुप्त का नया उपन्यास है जिसमें उन्होंने देशी तालुकेदारों और रजवाड़ों का विलासपूर्ण विकृत जीवन और सताये हुए निम्न वर्ग का उनके विरुद्ध अँगड़ाई लेता हुआ विद्रोह प्रस्तुत किया

हमारे सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन

१. **निबन्ध-भारती :** श्री सिंहासन राय 'सिद्धेश', (मूल्य ३)। श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री शिवपूजन सहाय, डॉक्टर नगेन्द्र, डॉक्टर हजारी प्रसाद, डॉक्टर रामकुमार वर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी आदि ने इस ग्रन्थ-रचना की प्रशंसा की है।
२. **सन् सत्तावन के अमर सेनानी :** रमाकान्त मिश्र, मूल्य १।।)
३. **रवीन्द्र की लघु कथाएँ :** श्री राधेश्याम पुरोहित, मूल्य ।।।)
४. **सदाचार की कहानियाँ :** पं० देवदत्त मिश्र, मूल्य १।)
५. **बड़े जब छोटे थे :** महेन्द्रनाथ मिश्रा, मूल्य ।।।)
६. **वीर बालक :** प्रोफेसर 'कमलेश', मूल्य १)
७. **हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार :** सिंहासन राय 'सिद्धेश', जीवनी, भाषा-शैली और साहित्य-सेवा के साथ, मूल्य ३)
८. **बलिदान :** (उपन्यास) श्री बैजनाथ राय एम० ए० मूल्य ४)
९. **कंस-बध :** धाराप्रवाहिक कविता में श्री कृष्ण-चरित्र, मूल्य ।।।)
१०. **कन्या का तपोवन :** (नाटक) पं० रामनरेश त्रिपाठी, सजिल्द २।।)

आदर्श पुस्तक भण्डार, ५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। भाषा में गाँवों की धरती की महक है और कथानक में यथार्थवादी रंग। 'गुप्त जी' का 'गंगा मैया' नामक उपन्यास पढ़कर जिन लोगों ने प्रशंसा के पुल बाँधे हैं उन्हें यह उपन्यास पढ़कर निश्चित रूप से यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उपन्यासकार की प्रतिभा उस उपन्यास की अपेक्षा इसमें अधिक निखरकर सामने आई है। इसका प्रकाशन हुआ है **हंस प्रकाशन**, इलाहाबाद से और मूल्य है ५)

◆ ◆ ◆

व्यंग कौतुक : रवि बाबू के एक कौतुक-नाट्य अर्थात् प्रहसन-संग्रह का अविकल हिन्दी-रूपान्तर है जिसे डॉ० महादेव साहा ने अत्यन्त परिश्रम एवं लगन से बिना मूल लेखक के भावों में कोई हेर-फेर किये प्रस्तुत किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **किताब महल प्रकाशन**, इलाहाबाद से और मूल्य है २)

◆ ◆ ◆

फेर काई चावणा : राजस्थान की विभिन्न जातियों एवं वर्गों की चिर-पोषित आकांक्षाओं के बारे में प्रसिद्ध लोकोक्तियों का कलात्मक विवरण एवं व्याख्या प्रस्तुत करने वाली रोचक पुस्तिका है। इन लोकोक्तियों से राजस्थान की विभिन्न जातियों तथा उपजातियों के परम्परागत सामाजिक जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इसके लेखक हैं कुँ० रघुनाथसिंह राठौर और प्रकाशन हुआ है **वाणी मन्दिर**, जयपुर से। मूल्य ।≡)

◆ ◆ ◆

निबन्ध के रूप और तत्त्व में श्री देवमित्र एम० ए० ने निबन्ध की परिभाषा, उसके मूलभूत तत्त्व, प्रकार आदि पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उसका अन्य साहित्य-रूपों से अन्तर स्पष्ट किया है। सम्पूर्ण विषय का संक्षिप्त वैज्ञानिक विवेचन कर चुकने के बाद हिन्दी निबन्ध-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एवं प्रमुख निबन्धकारों की लेखन-शैलियों से भी परिचित करा दिया गया है। इसका प्रकाशन हुआ है **नावेल्टी एण्ड कम्पनी**, पटना-४ से और मूल्य है १।।।)

◆ ◆ ◆

सृजन : श्री बद्रीनाथ तिवारी आदि के सम्पादकत्व में प्रकाशित त्रैमासिक साहित्यिकपत्र है। इसमें कविता, कहानी, निबन्ध, लेख, एकांकी एवं समीक्षा आदि समस्त साहित्य रूपों का समावेश किया गया है। सामग्री के चयन एवं रूप-

प्रेमचन्द के सहयोगी कथाकार
आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र की
हिन्दी साहित्य को गौरवपूर्ण देन !

मौत की खोज

१८ कहानियों का संग्रह, मू० २॥)

'मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि आचार्य मिश्र जी की कहानियाँ हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपना स्थान बनाकर छोड़ेंगी।'

—स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी

•

जय-पराजय

सात ऐतिहासिक कहानियाँ तथा ८ लघु-कथाएँ, मू०२।)

'एक लम्बे अरसे के बाद श्रेष्ठ ऐतिहासिक कहानियाँ पढ़ने को मिलीं।···आचार्य मिश्र की 'ऐतिहासिक लघु कथाएँ' एक नयी चीज हैं और हिन्दी साहित्य के एक बड़े अभाव की पूर्ति करती हैं।'

—डॉ० रामकुमार वर्मा

धूप-दीप

सात भावना-प्रधान कहानियों का संग्रह, मू० १।)

'मुझे लगता है कि अगली शताब्दी के क्लासिकल कहानी-संग्रहों में ये कहानियाँ अपनी टेकनीक के कारण ही नहीं, अपने ऐतिहासिक इंगित के कारण भी आदर का स्थान पा सकेंगी।'

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

आगामी प्रकाशन

१. डॉ० रामकुमार वर्मा : एकांकी संग्रह
२. आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र : उपन्यास
३. दुष्यन्त कुमार : कविता संग्रह

त्रिवेणी प्रकाशन

८० सी, मधवापुर, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जा आदि में पर्याप्त सुरुचि से काम लिया गया है। अक्तूबर '५६ में प्रकाशित सृजन का यह प्रथम अंक इसके भविष्य की ओर संकेत करता है। प्राप्ति-स्थान **सृजन कार्यालय**, ५६०, दारागंज, इलाहाबाद-६। मूल्य प्रति अंक १)

(पृष्ठ १८८ का शेष)

अत्यधिक हानि हो रही है, और यदि यह रोग बढ़ने दिया गया तो अधिक कठिनाइयाँ एवं असन्तोष उत्पन्न होगा, और निश्चय ही प्रकाशक भी इसके परिणाम से बच न सकेंगे।

कुछ प्रकाशकों ने छात्रों की कठिनाइयाँ बढ़ाने की एक और तरकीब निकाली है। उन्होंने पर्चो पर शेष पुस्तक प्राप्त करने की एक अवधि भी छाप दी है, जिसके बीत जाने पर फिर छात्र को शेष पुस्तक का भाग नहीं मिल सकता। इस प्रकार यह प्रयास किया गया है कि एक ही छात्र को उसकी तनिक-सी असावधानी से पुस्तक दुबारा खरीदने को बाध्य होना पड़े, ऐसा छात्र अनुभव करते हैं।

आशा है अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ इस नये रोग का शीघ्र निदान कर इसके निवारण करने का प्रयत्न करेगा।

(पृष्ठ १८५ का शेष)

उनकी पूर्ति में सहायक पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के अंक और लेखों की कटिङ्ग की व्यवस्था करे।

(घ) स्कूल में कहानी-घण्टा (Story hours) की योजना करे जिसमें प्रसिद्ध कहानी कहने वाले को आमन्त्रित करे।

(ङ) 'पुस्तक सप्ताह' 'पुस्तकालय सप्ताह' मनाने का आयोजन करे जिसमें विविध प्रकार के ऐसे कार्यक्रम रखे जायँ जिससे विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत का विकास हो।

इस प्रकार प्रचार द्वारा, अध्यापक के पथ-प्रदर्शन द्वारा, तथा अपनी इच्छा से ही प्रेरित होकर जो विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करने आवें उनको प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि पुस्तकालय-अध्यक्ष उनसे सहानुभूति और मृदुता का व्यवहार करे। जो पुस्तकें वे चाहें उनको मुस्तैदी के साथ सुलभ करते हुए उनका समय बचाने और उनकी कठिनाइयों को हल करने में अपना गौरव समझे, मानो वे उसके निजी बच्चों की कठिनाइयाँ हैं। किन्तु इस काम के लिए उसे पुस्तकालय की सभी पुस्तकों का विषय-क्रम से अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है।

ह मा रे दो प्र का श न

१. **अलका** (कविता-संग्रह) ले० श्रीमती शान्ति सिंहल मू० २।।)

२. **भूले-भटके** (उपन्यास) ले० श्री आरिगपूडि (दक्षिण भारतीय हिन्दी लेखक) मू० ३)

श्री गुरुदत्त जी की रचनाएँ

१. स्वाधीनता के पथ पर	६)	८. विश्वासघात	५।।)	१५. गुंठन	५)
२. पथिक	६)	९. विडम्बना	६)	१६. मानव	५)
३. उन्मुक्त प्रेम	६)	१०. देश की हत्या	५।।)	१७. उमड़ती घटाएँ	६)
४. स्वराज्य दान	६)	११. मायाजाल	५)	१८. लुढ़कते पत्थर	५।।)
५. विकृत छाया	४।।)	१२. प्रवंचना	५)	१९. आवरण	५)
६. भावुकता का मूल्य	६)	१३. वाम मार्ग	७)	२०. अन्तिम यात्रा	१)
७. बहती रेता	५)	१४. विलोमगति	५)	२१. कला	५)
				२२. सहस्रबाहु	६)

नोट—पुस्तक-विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों को उचित कमीशन दी जाती है।

भा र ती सा हि त्य स द न

३०/९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) के चौबीस अनमोल ग्रंथ

१.	हिन्दी-साहित्य का आदिकाल—आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	मूल्य २॥।)
२.	यूरोपीय दर्शन—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा	,, ३)
३.	हर्ष-चरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	,, ६॥)
४.	विश्वधर्म-दर्शन—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा	,, १३॥)
५.	सार्थवाह—डॉ० मोतीचन्द्र	,, ११)
६.	वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा—डॉ० सत्यप्रकाश	,, ८)
७.	सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन—डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री	,, १४)
८.	काव्यमीमांसा (राजशेखर कृत)—अनुवादक, पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत	,, ६॥)
९.	श्रीरामावतार शर्मा-निबन्धावली—स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा	,, ८॥।)
१०.	प्राङ्मौर्य बिहार—डॉ० देवसहाय त्रिवेद	,, ७।)
११.	गुप्तकालीन मुद्राएँ—डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर	,, ६॥)
१२.	भोजपुरी भाषा और साहित्य—डॉ० उदयनारायण तिवारी	,, १३॥)
१३.	राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धांत—श्री गोरखनाथ सिंह	,, ६॥)
१४.	रबर—श्री फूलदेव सहाय वर्मा	,, ७॥)
१५.	ग्रह-नक्षत्र—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आइ० सी० एस०	,, ४।)
१६.	नीहारिकाएँ—डॉ० गोरखप्रसाद	,, ४।)
१७.	हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ—श्री त्रिवेणीप्रसाद सिंह, आइ० सी० एस०	,, ३)
१८.	ईख और चीनी—श्री फूलदेव सहाय वर्मा	,, १३॥)
१९.	शैवमत—डॉ० यदुवंशी	,, ८)
२०.	मध्यदेश-ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सिंहावलोकन—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	,, ७)
२१.	प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण—(दूसरा खंड)। सम्पादक-डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी	मूल्य २॥)
२२.	शिवपूजन-रचनावली—श्री शिवपूजन सहाय	,, ८॥।)
२३.	राजनीति और दर्शन—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा	,, १४)
२४.	बौद्धधर्म-दर्शन—स्व० आचार्य नरेन्द्रदेव	,, १७)

[मजबूत जिल्दों पर कलापूर्ण आकर्षक बहुरंगे आवरण]।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सम्मेलन-भवन, पटना-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छपकर तैयार है ! शीघ्र आदेश भेजिए ! !

कृषि-विज्ञान-जगत् में अद्भुत क्रान्ति !

बागवानी के सभी पहलुओं का वैज्ञानिक विश्लेषण !!

हिन्दी में अद्वितीय अनुपम उद्यान-कृषि-विज्ञान ग्रन्थ !!!

उद्यान-कृषि-दर्शन

(बिहार-विश्वविद्यालय द्वारा बी० एस-सी० (कृषि) वर्ग के लिए स्वीकृत)

तीन भाग : तेतालीस अध्याय : पाँच सौ पृष्ठ

मूल्य केवल साढ़े सात रुपये

लेखक—श्री रामसागर राय, एम० एस-सी० (केलिफोर्निया)

विद्या-व्यसनियों की दृष्टि में

"......पुस्तक सर्वांग सुन्दर है। इससे बिहार का गौरव बढ़ेगा।"

—शिवपूजन सहाय

(संचालक, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना)

"......पुस्तक में...उद्यान के सभी पहलुओं को विस्तारपूर्वक एवं वैज्ञानिक ढंग से व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। मैं आशा करता हूँ, यह पुस्तक कृषकों के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होगी। विशेषकर इसलिए भी कि हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने में सहायता प्राप्त होगी।"

—श्यामनन्दन सहाय

(उपकुलपति, बिहार विश्वविद्यालय)

"......फलों की बागवानी पर यह एक उत्कृष्ट पुस्तक है।......यह पुस्तक अपने विषय की एक आदर्श पुस्तक कही जायगी।"

—अमरेन्द्र नारायण एम० एस-सी०

(कण्ट्रोलर आफ़ एक्जामिनेशन्स, बिहार विश्वविद्यालय)

"......इस पुस्तक की विशेषता यह है कि मनुष्य को स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक सामग्रियाँ उपलब्ध कराते हुए उसके जीवन में सौन्दर्य की चेतना को भी जागरित करती है। विज्ञान के साथ ही यह एक कला भी है। इस दृष्टि से ऐसी पुस्तकों का एक विशेष उपयोग है। आशा करता हूँ उद्यान-कृषि से सम्बन्ध रखने वाले लोग इसे पसन्द करेंगे।"

— डॉ० श्रीकृष्ण सिंह

(मुख्य मन्त्री, बिहार-सरकार)

"......यह पुस्तक कृषि-सम्बन्धी रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होगी विशेषकर, इसलिए भी कि हिन्दी भाषा में यह प्रथम प्रयास है और अपने ढंग का यह एक उत्तम ग्रन्थ साबित होगा।"

—डॉ० अनुग्रह नारायण सिंह

(वित्त, श्रम एवं कृषि-मन्त्री, बिहार-सरकार)

उत्तमोत्तम हिन्दी-पुस्तकों के प्रकाशक एवं विक्रेता

कला-निकेतन, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—फारस की लोक-कथाएँ।
—जापान की लोक-कथाएँ, श्री हंसराज रहबर।
आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता
—नागरिक शास्त्र और भारतीय शासन, श्री गजानन्द मिश्रा, २)।
—हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार, सिंहासनराय 'सिद्धेश' ३)
एशिया प्रकाशन, नई दिल्ली
—ब्रह्मपुत्र, उपन्यास, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी।
ओरिएण्ट लॉगमैन्स प्राइवेट लि०, नई दिल्ली
—आधार उपकरण, श्री देशपाण्डे।
ओरिएण्टल बुकडिपो
—मटरू सेठ, श्री राधेश्याम झिंगन, ।।।)।
—मोल का दूध, इन्द्रसेनसिंह 'भावुक', ।।।)।
—बर्मा, शर्मा तथा माथुर, पड़ौसीदेश माला, ।।।)।
—देवता, श्री कमल शुक्ल, २)।
कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, बनारस
—पद्मनाभिका, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी, निबन्ध, २।।)।
—बिजली, श्री बेढ़ब बनारसी, २।।)।
कुसुम कार्यालय, इलाहाबाद
—नाना, एमिल जोला, अनु० ओंकारशरद, ।।।)।
गीता प्रेस, गोरखपुर
—महत्त्वपूर्ण शिक्षा, श्री जयदयाल गोयनका, १)।
—महाभारत (मूल) आदि तथा सभा पर्व, ६)।
—व्रत परिचय, श्री हनुमान शर्मा, १।।।)।
—मानसिक दक्षता, श्री राजेन्द्र बिहारीलाल, १)।
चिनगारी प्रकाशन, वाराणसी
—लण्डन रहस्य (चौथा खण्ड) रेनाल्डस, पु० मु०, ४)।
—शशांक, श्री राखालदास वन्दोपाध्याय, अनु० शरतचन्द्र।
दास ब्रदर्स अम्बाला, कैण्ट
—हम पहले और अब, श्री सत्यप्रकाश मिलिन्द।
—हमारी योजनाएँ, श्री सत्यप्रकाश मिलिन्द।
नूतन प्रकाशन, ग्वालियर
—साग भाजी और फल, श्री शम्भूनाथ सक्सेना, ३)।
—पतझड़, श्री शम्भूनाथ सक्सेना, पु० मु०, ३)।
—आंधी और अंकुर, प्रो० छोटेलाल भारद्वाज।
—जीवन और संघर्ष, श्री दयानन्द जी थपलियाल।
नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
—धूल-धूसरित मणियाँ, सुश्री सीता, दमयन्ती व अन्य, लोकगीत।
—देव और उनकी कविता, डॉ० नगेन्द्र, ६)।
—आदर्श विद्यार्थी, श्री बालकृष्ण, १)।
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
—मध्य एशिया का इतिहास खण्ड १, श्री राहुल सांकृत्यायन, १२)।
—मध्य एशिया का इतिहास खण्ड २, श्री राहुल सांकृत्यायन।
भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद
—मौत की मल्लिका, श्री नकाब पोश भेदी, ।।)।
भारती भण्डार, प्रयाग
—पथ के साथी, श्रीमती महादेवी वर्मा, संस्मरण, ३)।
—क्षणदा, श्रीमती महादेवी वर्मा, निबन्ध, २।।)।
—युग चरण, श्री माखनलाल चतुर्वेदी।
—समर्पण, श्री माखनलाल चतुर्वेदी।
भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद
—बोलिविया, श्री रामनारायण मिश्र, भूगोल, ।।)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

११२।५९
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकतबा जामिश्रा लि०, नई दिल्ली
—समुद्र के किनारे, सुलताना आसिफ फैजी, १।)।
—खेल द्वारा शिक्षा, श्री अब्दुल गफ्फार मधोली अनु० श्री प्रकाश, १।)।
—गुलिस्तां, सादी साहब, ।।)।
—मौलाना रूम की कहानियाँ, मौलाना रूम।
मानकचन्द बुकडिपो, उज्जैन
—ग्रामोद्योग भाग १, श्री बाबूराव जोशी, ।।)।
—ग्रामोद्योग भाग २, श्री बाबूराव जोशी, ।।)।
—जाग उठे हैं गाँव-गाँव श्री शिवनारायण उपाध्याय 'शिव', ।।)।
—धरती गाती आज, श्री श्याम व्यास, ।।)।
—धरती का मंच, श्री श्याम व्यास, ।।।=)।
—युग है यह सहकार का, श्री श्याम व्यास, ।।)।
—हम गाँवों के गाँव हमारे, श्री श्याम व्यास, ।।)।
मसिजीवी प्रकाशन, नई दिल्ली
—एक नीड़ दो पंछी, उपन्यास, श्री उदयशंकर भट्ट।
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
—हिन्दी रीति साहित्य, डॉ० भगीरथ मिश्र।
—भारतीय भोजन विज्ञान, श्रीमती सावित्रीदेवी वर्मा।
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—थामस एल्वा एडीसन, जी ग्लैनवुड क्लर्क, जीवनी, २।।)।
—रेत और झाग, खलील जिब्रान, २)।
—यात्री, खलील जिब्रान।
—सिन्दबाद, श्री धर्मपाल शास्त्री।
—बाल पंचतन्त्र (दो भाग), श्री धर्मपाल शास्त्री।
—सूझ बूझ की कहानियाँ, (दो भाग), श्री आनन्दकुमार।
राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा
—राष्ट्र भाषा का सरल व्याकरण भाग १, श्री नरदेव वेदालंकार।।=)।
—प्रचलित, निबन्ध संग्रह।
राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ
—जन कवि घाघ, श्री श्रीचन्द्र जैन।।)।
—भड्डरी वचनावली, श्री श्रीचन्द्र जैन, ।।)।
—खेती धन की खान, श्री श्रीचन्द्र जैन, ।।)।

विनय पुस्तक भण्डार, इन्दौर
—अर्थशास्त्र के सिद्धान्त, श्री मगनबिहारीलाल गुप्ता, ६)।
—मानव शरीर रचना व आरोग्यशास्त्र, श्री रामस्वरूप जैन, २)।
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
—सामन्त बीज गुप्त, श्री वनकाम सुनील, ४)।
—सरल कृषिशास्त्र, पं० तोताराम शर्मा, ३)।
—निराला, श्री राजनाथ शर्मा, २।।)।
शिवलाल अग्रवाल एण्ड क० प्राइवेट लि०, आगरा
—अवध के नवाब, डॉ० आशीर्वादलाल श्रीवास्तव, १२)
शोध संस्थान, उदयपुर
—राजस्थानी भील गीत भाग २, सम्पा० श्री गिरिधारीलाल शर्मा, २।।)।
—राजस्थानी भील गीत, भाग ३, सम्पा० श्री गिरिधारीलाल शर्मा, २।।)।
—प्राचीन राजस्थानी गीत संग्रह, भाग २, सम्पा० गिरिधारीलाल शर्मा, २।।)।
संगीत कार्यालय, हाथरस
—संगीत पारिजात, पं० कालिन्द जी, ४)।
साहित्य निकेतन, कानपुर
—वैदिक साहित्य की रूप रेखा, पं० सत्यनारायण पाण्डेय व डॉ० रसिकबिहारी जोशी।
साहित्य प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर
—प्रवेशिका दिग्दर्शन, श्री उपमन्यु, २।।)।
—मनोरंजक लोक कथाएँ भाग ४, श्री श्रीचन्द्र जैन, ।।)।
साहित्य सदन, देहरादून
—भाई चारा, श्री यादवचन्द्र जैन, ३)।
—सूर दर्शन, श्री कृष्णलाल हंस, ७।।)।
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
—हिन्दी वीर काव्य संग्रह, श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी व डॉ० उदयनारायण तिवारी।
—विचार विज्ञान, डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा, ४)।
—महाराजा रंजीतसिंह, श्री सीताराम कोहली, ६।।)।
हिमालय एजेन्सी, कनखल
—संस्कृति का पाँचवाँ अध्याय, पं० किशोरीलाल वाजपेयी, १।।)।

112148
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर मास के प्रकाशन

आलोचना—साहित्य—संस्कृति—निबन्ध

ाबराय, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, पु० मु०, ३६०, क्रा०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ३।)
गदीश नारायण दीक्षित, प्रसाद के नाटकीय पात्र, पु० मु०, ३००, क्रा०, साहित्य निकेतन, कानपुर ४)
ारकनाथ बाली, कबीर साखी सार, २५०, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३॥)
शरथ ओझा डा०, हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास, पु० मु०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६)
ालकृष्ण भट्ट, साहित्य सुमन, पु० मु०, १४६, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ २॥)
हावीर प्रसाद द्विवेदी स्व०, साहित्य संदर्भ, पु० मु०, २६३, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ४)
ज्ञदत्त शर्मा, प्रबन्ध सागर, पु० मु०, ५०२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ६)
ाजनाथ शर्मा, साहित्यिक निबन्ध, पु० मु०, ४६२, डि०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ७॥)
राम अवध द्विवेदी, हिन्दी साहित्य के विकास की रूपरेखा, २१६, डि०, भारती भण्डार, प्रयाग ४)
विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पंत का नूतन काव्य दर्शन, ७८०, डि०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा १२)
वीर राजेन्द्र ऋषि, रूसी लोक साहित्य, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४)
शम्भूनाथ पाण्डेय डा०, रस अलंकार पिंगल, पु० मु०, १८८, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २॥)

इतिहास—राजनीति

आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव डा०, मुगल कालीन भारत, पु० मु०, ६८४, डि०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० प्राइवेट लि०, आगरा १०)
के० सी० ह्वीयर, अनु० नेमिचन्द्र जैन, आधुनिक संविधान, १७६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ३)
देवदूत विद्यार्थी, भारतीय राष्ट्रीयता, पु० मु०, १७०, क्रा०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा १॥)

उपन्यास

एंटन चेखव अनु० ओंकार शरद, बेनाम कहानी, १६०, क्रा०, कुसुम कार्यालय, इलाहाबाद ॥)
कमल शुक्ल, जिन्दगी एक दांव, २७१, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ४॥)
कृपा शंकर भारद्वाज, डूबती नज़र, ३००, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ४॥)
हरि नारायण आप्टे, चाणक्य और चन्द्रगुप्त, पु० मु०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गस्ताव फ्लबेयर, अधूरा स्वप्न, पु० मु०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ६)
गुरुदत्त, कला, ३७५, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ५)
गुरुदत्त, सहस्त्रबाहु, ३७८, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ६)
गुरुवचनसिंह, रेखाएँ, २८८, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ४||)
गुलशन नन्दा, सितारों से आगे, १६०, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ३)
गोर्की, अनु० नूरनबी अब्बासी, बेकरी का मालिक, १७६, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली ३)
गोविन्दसिंह, मुर्दों का पिरामिड, १२८, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, वाराणसी |||≡)
ज्वाला प्रसाद गुप्त, प्रत्यावर्तन : सिद्धार्थ, १२८, क्रा०, चिनगारी प्रकाशन, वाराणसी |||≡)
नकाब पोश भेदी, हवाई डाकू, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ||−)
बी० बी० सिंह गौड़, कैदियों का व्यापारी, २२६, क्रा०, भयंकर भेदिया कार्यालय, इलाहाबाद १)
रतननाथ सरशार, अनु० प्रेमचन्द, आज़ाद कथा, ६७०, डि० सरस्वती प्रेस, बनारस १२)
वृन्दावनलाल वर्मा, कोतवाल की करामात, पु० मु०, १४५, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ २|||)
श्रीराम शर्मा 'राम', चित्रकार, क्रा०, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ४)
श्रीराम शर्मा 'राम', जिन्दगी की राहें, २३१, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४)
श्रीराम शर्मा 'राम', धरती के आँसू, २४०, क्रा०, साहित्य सदन, देहरादून ३|||)
सागर बालूपुरी, मुर्दे भी काम करते हैं, १०४, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली १|||)
साने गुरु जी, अनु० कृष्णकुमार शर्मा, सती, पु० मु०, १६८, क्रा०, शिवाजी प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ३)
सुदेश रश्मि, एक ही रास्ता, १३२, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली २||)

कविता

जयशंकर प्रसाद स्व०, प्रसाद संगीत, १४४, क्रा०, भारती भण्डार, प्रयाग २)
नीरज, दर्द दिया है, १४०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४)
महादेवी वर्मा, नीरजा, १०४, क्रा०, भारती भण्डार, प्रयाग १||)
शाह नसीर फरीदी सम्पा०, वतन के गीत, २७१, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ४)
सिंहासन राय सिद्धेश, जागरण के गान, पु० मु०, ४८, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता ||)
हरिऔध, ग्राम सुधार पदावली, पु० मु०, ६०, क्रा०, नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर १)

कहानी

नया कहानी संग्रह भाग २, पु० मु०, ८४, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा |||)
नारायण श्याम राव चिताम्बर अनु०, एप्रिल फूल, पु० मु०, २०२, क्रा०, शिवाजी प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ ३)
प्रेमचन्द, प्रेम द्वादशी, पु० मु०, २०२, क्रा०, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ ३)
बालकृष्ण, शिकार की कहानियाँ, ११४, क्रा०, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली २)
भारती विद्यार्थी व देवदूत विद्यार्थी, पांच बेंत, २६७, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५)
ब्रिजलाल बियाणी, कल्पना कानन, पु० मु०, ८०, क्रा०, भारती भण्डार, प्रयाग २)
श्रीचन्द्र जैन, विन्ध्य भूमि की अमर कथाएँ, पु० मु०, ५४, क्रा०, मोहनलाल, पब्लिशर्स, रीवा ||≡)
श्रीचन्द्र जैन, महापुरुषों की कहानियाँ, ५०, क्रा०, मोहनलाल, पब्लिशर्स, रीवा |≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनी

आनन्द प्रकाश जैन, **महात्मा गांधी**, २२८, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३)
तुरसेन शास्त्री, **बा और बापू**, ८०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)
ई परमानन्द, **वीर वैरागी**, पु० मु०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २)
हेन्द्रनाथ मिश्रा, **बड़े जब छोटे थे**, ७२, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता ।।।)
माकान्त उपाध्याय, **सन् सत्तावन के अमर सेनानी**, १५२, क्रा०, आदर्श पुस्तक भण्डार, कलकत्ता १।।)
म्भूनाथ सक्सेना, **बाल गंगाधर तिलक**, पु० मु०, ७०, डि०, नूतन प्रकाशन मन्दिर, ग्वालियर १।)

नाटक

किशोरीदास वाजपेयी, **सुदामा**, पु० मु०, ६८, क्रा०, भारती (भाषा) भवन, दिल्ली २)
शवचन्द्र वर्मा, **श्रम देवता**, ६२, क्रा०, भारती भण्डार, प्रयाग १।)
हेश रावत, **न्याय मंत्री**, क्रा०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा १।।।)
वराज, **अभिज्ञान शाकुन्तल**, पु० मु०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
हबीब तनवीर, **टीपू सुलतान**, ३२, क्रा०, मक्तबा जामिआ लि०, नई दिल्ली ।।)
हरिकृष्ण प्रेमी, **कीर्ति-स्तम्भ**, पु० मु०, राजपाल एण्ड संन्स, दिल्ली ३।।)

बाल साहित्य-प्रौढ़ साहित्य

इन्द्रनाथ मदान, डा०, **जादू की अँगूठी**, पु० मु०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।।।)
कुदसिया जैदी, **सितारा**, ३८, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
चतुरसेन शास्त्री, **अच्छी आदत**, ३४, फुलस्केप, राजपाल-एण्ड सन्स, दिल्ली ।।।)
जगन्नाथ प्रभाकर, **काजल रेखा**, ३६, कापी साइज, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।।।)
डी० के० वर्मा, **खाद और खाद देने की विधि**, १००, डि०, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद १।।)
डी० के० वर्मा, **भारतीय फसलें**, १२८, डि०, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद ३)
धर्मपाल शास्त्री, **माटी का लड़का**, २४, कापी साइज, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ।।।)
न० ग० गन्धे, **भारतीय इतिहास के रत्न, भाग १**, ३४, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।=)
न० ग० गन्धे, **भारतीय इतिहास के रत्न, भाग २**, ८०, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।=)
नूरनबी अब्बासी, अनु०, **सुबह के बादल**, ८०, क्रा०, नवयुग प्रकाशन, दिल्ली १।।)
प्रकाश पंडित, **आओ सर्कस देखें**, ३२, फुलस्केप, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।।।)
प्रकाश पंडित, **चिड़ियाघर**, ३२, फुलस्केप, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।।।)
बाबूराव जोशी, **हम आज़ाद कैसे हुए ? भाग १**, ३६, क्रा०, मानकचन्द डिपो, उज्जैन ।।=)
बाबूराव जोशी, **हम आज़ाद कैसे हुए ? भाग २**, ३८, क्रा०, मानकचन्द डिपो, उज्जैन ।।=)
बालकृष्ण, **बुद्धि से काम लो**, ४६, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।।=)
भंवरलाल गर्ग, **समाज के कलपुरजे**, ५५, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।)
भंवरलाल द्विवेदी, **धरती की कहानी**, ३४, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।)
भंवरलाल द्विवेदी, **मैं नीरोग हूँ**, ३६, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।)
महादेव 'आज़ाद', **ज्ञान फुलवारी**, ३२, क्रा०, साहित्यालय, दिल्ली ।।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, डा०, **हम और हमारे बालक**, १११, क्रा०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० टाइवेप्र लि०, आगरा १।)
राधा व सुधा, **बोल-बोल बंसरी भिक्षा मिलेगी**, ३२, कापी साइज, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।।।)
राधा व सुधा, **मूंग और मोठ**, ३६, कापी साइज़, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।।।)
विष्णुदत्त 'विकल', **रामराज्य**, ३८, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।)
विश्वनाथसहाय माथुर, **हम और हमारे पड़ौसी**, ६०, क्रा०, मानकचन्द बुक डिपो, उज्जैन ।।।)
श्रीकान्त व्यास, **महाराष्ट्र की लोक कथाएँ**, ६०, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली १।।)
सन्तराम वत्स, **अच्छी आदतें**, ६४, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १)
सन्तराम वत्स, **जैसा चाहो वैसा बन जाओ**, ६४, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १)
सन्तराम वत्स, **बाहर कहाँ खोजें बन्दे**, ३२, कापी साइज, नैशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।।।)

विविध

उड़ते जुगनू, पु० मु०, ५२, क्रा०, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ।।)
एम० एस० अग्रवाल, **वैज्ञानिक कृषि**, ४००, डि०, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद ६)
एस० पी० सुखिया व जी० वी० शैरी, **सुव्यवस्थित गृह**, पु० मु०, २२३, क्रा०, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० प्राइवेट लि०, आगरा २।।)
कैथराइन बी० शिप्पैन, अनु० हंसराज रहबर, **समय की प्रगति**, ११५, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २।)
गोपेश कुमार ओझा, **हस्तरेखा विज्ञान**, ६००, क्रा०, गोयल एण्ड क०, दिल्ली ८)
चतुरसेन शास्त्री, **आदर्श भोजन**, ८४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)
चतुरसेन शास्त्री, **नीरोग जीवन**, ६८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)
चतुरसेन शास्त्री, **स्वास्थ्य रक्षक**, ८८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १)
जेम्षी बी० कानेएट, अनु० हंसराज रहबर, **आधुनिक विज्ञान और आधुनिक मानव**, ६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
पतंजली देव शर्मा, **उत्तरी संगीत**, ६६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २)
प्रभुदयाल गर्ग, सम्पा०, **ताल अंक**, पु० मु०, २१८, १०×६½, संगीत कार्यालय, हाथरस ४)
बी० एन० भट्ट, सम्पा०, **वाद्य संगीत अंक**, पु० मु०, १७५, रायल, संगीत कार्यालय, हाथरस ३)
श्रीचन्द्र जैन, **पत्र बोध**, पु० मु०, ४८, क्रा०, मोहनलाल, पब्लिशर्स, रीवा ।=)
श्रीचन्द्र जैन, **मुंइया परे हैं लाल**, ११२, क्रा०, विन्ध्य प्रकाशन मन्दिर, रीवा १।)
श्रीचन्द्र जैन, **विन्ध्य प्रदेश के आदिवासियों के गीत**, १६०, क्रा०, मिश्रबन्धु कार्यालय, जबलपुर ३)
रमेशचन्द्र विजय, **सरल रेडियो विज्ञान**, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५)
रामनारायण मिश्र, **अन्वेषण भूगोल**, ८४, भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद २।।)
रामेश्वरदयाल बंसल, **सैण्ट्रीफ्यूगल पम्प्स**, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३)
वामन नत्थोपन्त भट्ट, अनुवादक, **क्रमिक पुस्तक**, पु० मु०, ६२, ६×५½, संगीत कार्यालय, हाथरस १)
सूरजभान, **शिक्षा में नये प्रयोग**, १६०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रकाशन-जगत् की

सुरुचिपूर्ण प्रकाशन-परम्परा का प्रथम दशक !

दस वर्ष हुए, राजकमल प्रकाशन ने दिल्ली में प्रकाशन का कार्य एक नये दृष्टिकोण से, एक नये उत्साह से, एक नये ध्येय से आरम्भ किया था।

१७ दिसम्बर १९५६ को

राजकमल प्रकाशन के कार्य-जीवन के पहले दस वर्ष पूरे हो जायँगे। किसी व्यक्ति अथवा संस्था के जीवन में दस वर्ष क्या अर्थ रखते हैं? फिर भी इस प्रथम दशक में राजकमल ने तीन सौ के लगभग पुस्तकों और दो पत्रिकाओं (आलोचना, प्रकाशन समाचार) का प्रकाशन किया, हिन्दी-पुस्तकों के वितरण की सुव्यवस्था के लिए चार कार्यालय (दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना में) खोले, लेखकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं से सम्यग् व्यवहार की एक नयी परम्परा डाली। यदि इसे सफलता कहा जा सकता है तो यह केवल लेखकों, पाठकों, मुद्रकों पुस्तकालयों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के सहयोग से ही सम्भव हुई है। पुस्तक-जगत् के सब भागीदारों का सहयोग ही हमारा एकमात्र सम्बल है।

द्वितीय दशक के आरम्भ के उपलक्ष्य में

मालाकार

रवि बाबू के प्रेमगीतों का श्री सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा प्रस्तुत रूपान्तर श्री मनीषी दे के रेखाचित्रों के साथ प्रकाशित होगा।

इस उपहार-ग्रन्थ का मूल्य केवल १०) होगा।

राजकमल प्रकाशन.

दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D—594

जंजीरें और विद्रोह

वह एक अन्धकार युग था जब ईसा से ७३ वर्ष पूर्व, रोम के ए
गुलाम स्पार्टकस ने आज़ादी का सपना देखा था और इतिहास
पहली बार संगठित विद्रोह किया था। वह विद्रोह तत्काल सफ
नहीं रहा, पर जो रक्त गिरा बंजर धरती पर नहीं गिरा थ
इतिहास इसका साक्षी है। तत्कालीन रोमन समाज की पृष्ठभू
में उसी **आदिविद्रोही** की रोमांचकारी कहानी प्रसिद्ध अमरीक
यहूदी लेखक हावर्ड फ़ास्ट ने अपनी अनुपम शैली में कही है औ
उसका अनुवाद अमृत राय ने दोनों भाषाओं पर अपने असाधार
अधिकार से, मूल की शक्ति और सौन्दर्य की पूरी तरह रक्ष
करते हुए किया है। ऐसी रचनाएँ रोज़ नहीं आया करतीं, य
आप पढ़कर ही जान सकेंगे।

आकार डिमाई, पृष्ठसंख्या ३८४, सुन्दर दुरंगा गेट-अप, मूल्य ६।

गुलामी की उसी पुरानी जागीरदारी-सामन्ती प्रथा की कहानी आज के भारतीय परिवेश में भैरव प्रसाद गुप्त ने कही है। गाँव की कहानी कहने में गुप्त जी को जो दक्षता प्राप्त है, वह उनके बहुश्रुत उपन्यास 'गंगा मैया' से सिद्ध है। **जंज़ीरें और नया आदमी** उनका नया मार्का है।

पृष्ठ-संख्या ३७२, क्राउन अठपेजी, मूल्य ५)

हंस प्रकाशन
इलाहाबाद

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1939-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar